Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

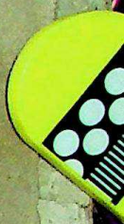

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीमद्भागवतके बारहों स्कन्धका उल्था

जिसको

श्रीकाशीवासी बाबू मक्खनलाल खत्री पंजाबी ने पण्डित जोखूराम और जगन्नाथप्रसाद की सहायता से हिन्दीभाषा में उल्था किया

श्रीकृष्णानुरागी महात्माओं और भारतवर्षीय महज्जनों के अनुरागार्थ

चौबीसवीं बार

लखनऊ

बाबू मनोहरलाल भार्गव, बी. ए., सुपरिंटेंडेंट के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा

सन् १९१६ ई० ॥

...रहो
...स्तेभार
...राजा व
...ने अप
...णात्र

...प्रकट हो कि इस पुस्तक की रजिस्ट्री ऐक्ट २५ सन् १८६७ ई० के अनुसार हुई है इसका नम्बर रजिस्टर ६६ है इस कारण हमारी आज्ञा के बिना कोई आपने का विचार न करे ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीसागरबारहवांस्कंध

मङ्गलाचरण

उल्थाश्रीमद्भागवत बीचबोली उर्दूके पहिले श्रीगणेशजीके
चरणोंकोयाद व ध्यानकरताहूं जिनकेध्यानकरनेसे सबकामना
आदमीकी पूरीहोतीहैं फिरआदि निराकारज्योति परब्रह्म परमे
श्वरको दण्डवत्करताहूं जिनकीमायासे सबजड़ व चैतन्यकी
उत्पत्ति व पालन व नाशतीनोंलोकमें होताहै व सबजीवोंमेंब्रह्मा
सेलेकर चींउटीतक उन्हींके तेजका प्रकाशरहताहै सबसे पहिले
वहीथे व महाप्रलय होनेपरभी वहीअविनाशीपुरुष स्थिररहैंगे व
श्रीकृष्णजी महाराजसांवलीसूरत मोहनीमूरतपर न्यवछावरहो
कर उनकेपैरोंपरशिरधरताहूं जिन्होंने अपनीइच्छासे वास्तेभार
उतारने पृथ्वी व मारनेकंस व जरासन्ध आदिक अधर्मी राजा व
राक्षस जो हरिभक्तोंको दुःखदेतेथे व दर्शनदेकर कृतार्थकरने अप
ने भक्त व सेवक वसुदेव व देवकीकेयहां मथुरानगरी में सगुणअ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वतारलेकर अनेकलीला जगत्में इसइच्छासेकी कि उसलील
की कथा व वार्त्ता संसारीलोग आपसमेंकहि व सुनकर भवसाग
पारउतरजावें व विष्णुभगवान्के चरणोंको दण्डवत् करताहूंजो
सबजीवोंकी उत्पत्ति व पालनकरतेहैं व श्रीमहादेवजीके पांवप
मस्तक रखताहूं जो आयुर्बल बीतनेके उपरांत सबजीवोंकानाश
करतेहैं व बाबाजवाहिरलाल सारस्वत ब्राह्मण रहनेवाले काशी
पुरी अपनेगुरुके चरणकमलको साष्टांग दण्डवत् करताहूं जिन
कीकृपासे श्रीराधाकृष्णके चरणारविन्द में इसदासको प्रेमउत्प
न्नहुआ व श्रीशारदादेवी व शेषनाग व नारदजीके चरणों प
शिर रखताहूं जो आठोंपहर उस मुरलीमनोहरका गुणानुवाद
गातेहैं व वसुदेव व देवकी व नन्द व यशोदाजीके चरणोंकीधू
अपनेमस्तकपर चढ़ाताहूं जिनके तपकरने से श्रीपरब्रह्म नार
यणने मर्त्यलोकमें नरतनुधारणकरके अपनेभक्तोंको दर्शनदि
या व श्रीवेदव्यास व शुकदेवजीके शरणहोताहूं जिन्होंने इस
अमृतरूपीकथा श्रीमद्भागवतको जगत्मेंप्रकटकिया व इन्द्रादि
देवता व सनकादिक ऋषीश्वर व श्रीबलराम व राधिका व रोहि
णीजीकेचरणोंपर गिरकर ब्रजगोकुल व मथुरादेशपर न्यवछा
वरहोताहूं जिसनगरीमें श्रीपरब्रह्मनारायणने अवतारलेकरबाल
चरित्र व रासलीलाकरके अपनेभक्तोंकोसुखदिया व जितने ग्वा
लबाल व गोपियां व ब्रजबासी व गौ बछड़े व कीट व पतंग व हि
रणआदिक बनचर जलचर व नभचरजीव मथुरा व गोकुलके
हैं सबको दण्डवत् करताहूं व श्रीयमुनाजीके चरणों को जिसमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धर्म्म व प्रजाए हुआ इसकाअपराधक्षमाकरो जो राजा गौ व
को प्रसन्नर करताहै उसकेमारनेकापाप दशब्राह्मणमारनेकेब
श्वमेधय विनाराजादेशमेंचोर व पापीबहुतउत्पन्नहोतेहैं जि
विरा कोमारा उसनेचोर व अधर्मियोंकोबढ़ाया भिएडीऋषि
नमेंऐसापरमेश्वरसेकहिकर मनमेंविचारा कि राजाकोइस
श.पकाहाल कहलाभेजनाचाहिये जिसमेंवहअपने परलोकका
यत्नकरै यहबातसुनकरसंसारीलोग शृंगीऋषिको बुरातोकहेंगे प
रऐसे धर्मात्माराजाकी मुक्तिबनानेकेवास्ते उसकोजितादेना चा
हिये ऐसाविचारकर भिएडीऋषिनेकुर्मुकनामअपनेशिष्यको बु
लाकरकहा तू राजाकेपासजा और हमारेतरफ़से आशीर्बाददेकर
कहिदे कि शृंगीऋषिनेतुमको इसतरहकाशापदियाहैइसलिये तु
म्हारीअकालमृत्युहोगी सो तुमचैतन्यहोकर अपनीमुक्तिका उ
पायकरो इतनीकथासुनाकर सूतजीनेऋषीश्वरोंसेकहादेखो जो
राजापरीक्षित अश्वत्थामाकेब्रह्मास्त्रसेबचा वजिसनेधर्म व पृथ्वी
की रक्षाकरकेकलियुगको अपनेआधीनकिया वहीराजाएक ब्रा
ह्मणकेशापदेनेसेमरगया ऐसामाहात्म्यब्राह्मणका है व परीक्षित
के मरनेकेउपरांतकलियुगनेसबजगहअपनाप्रवेशकरलिया व रा
जापरीक्षितनेकलियुगकागुणसमझकर उसेनहींमारा व अवगुण
कीतरफ़ध्याननहींकिया जो लोग धर्मात्मा व हरिभक्त होतेहैंवह
गुणकोलेकरअवगुणकीतरफ़नहींदेखते इंद्रलोकवस्वर्गववैकुण्ठ
व संसारमेंकोईसुख सत्संगकेबराबरनहींहोता व परमेश्वरका भेद
व चरित्र ब्रह्मा व महादेव आदिदेवता भी नहींजानसक्ते दूसरेको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्यासामर्थ्यहै जो जानसकैयहबातसुनकरशौन्सेकी कि उसलील
रौंने बहुतस्तुतिकरनेके उपरांत उनसेकहा आपधन्यकर भवसागर
श्वरकाचरित्र व अमृतरूपीकथा हमलोगोंकोकानोंप्त् करताहूंजो
करकृतार्थकरतेहैं यहबातसुनकरसूतजीबोले आजहमारेके पांवपर
नासुफलहुआ जो आपऐसेऋषीश्वर व मुनीश्वर मेरीबड़ाज्ञानाश
हैं हमाराजन्म ब्राह्मण व शूद्रसेमिलकरहुआथासो आपलोगस
हात्मोंकी संगतिकरनेसे मेरासबशोचदूरहोगया जो कोई मनुष्य
तनुपाकर परमेश्वरकीकथासुने व उनकेनामकास्मरण व भजन
करै संसारमेंउसीकाजन्मलेनासुफलहै देखो जिनचरणोंकाधोव
न गंगाजीहोकर तीनोंलोकके जीवोंकोतारतीहैं जो उनचरणोंकी
भक्तिरखकरत्रिभुवनपतिकानामलेवै वउनकीकथाकानोंसेसुनैउ
सकीबड़ाईकौनवर्णनकरसक्काहै मनुष्यजितनीदेरतक परमेश्वर
कीकथासुनकर नामस्मरणकरतेहैं उतनाकाल उनकेआयुर्बलमें
क्षीणनहींहोता मेरीक्यासामर्थ्यहै जो परमेश्वरके गुणोंकावर्णन
करसकूं जिसतरहआकाशमें पक्षी अपनेपराक्रमभर उड़कर आ
काशकाअन्तकोईनहींपासक्के उसीतरह ब्रह्मा व महादेव आदिदे
वता व ऋषीश्वरलोग अपनेज्ञान व सामर्थ्यभरपरमेश्वरकाध्या
न व स्मरणकरते हैं परउनकेअन्तको कोईनहींपहुंचसक्का॥

उन्नीसवां अध्याय॥

राजापरीक्षित को शृंगीऋषिके शापदेनेकाहाल मालूमहोना और परीक्षितका गंगाकिनारे
जाना और शुकदेव आदि ऋषीश्वरों का उसस्थान पर आना॥

सूतजीने शौनकादिऋषीश्वरोंसेकहाजिससमयराजापरीक्षि
तअहेरसेआकर अपनेधर्म्मकाविचारकरके चिन्तामेंबैठेहुये मन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धर्म्म व प्रजा पारेपीछे जो राजाहोंगे वहमेरेअधर्म्मकरनेकाहा
को प्रसन्न श्वरों व ब्राह्मणोंका अनादरकरके उनकाडरनहीं
श्वमेधय इसपापकरनेके बदले वहब्राह्मण मुझकोशापदेते या
विरा निकलजाता या कुछहानिहोती तो दूसरेराजा किसीब्रा
ह्म व ऋषीश्वरकोदुःखन देते उसीसमयकुर्मुकनामभिण्डीऋ
षिकेचेलेने वहांपहुंचकर कहा हे राजन् भिण्डी ऋषीश्वरने आ
शीर्वाददेकर तुमसेकहाहै कि मैं आपकेआनेकेसमय परमेश्वरके
ध्यानमेंऐसामग्नथा कि मुझेतुम्हारेआने व पानीमांगनेकी कुछ
सुधिनहींहुई और तुमनेक्रोधकरकेमेरेगलेमें मराहुआसांपडाल
दिया सोमैं उससेबुरा न मानकरतुम्हेंपानी न पिलानेसे बहुत ल
ज्जितहूं परन्तुशृंगीऋषिमेरेबेटेने अपनेअज्ञानसे तुमकोशापदि
याहै कि सातदिनमेंतुमतक्षकसांपके काटनेसेमरजाओगे इसलि
ये तुमअपनीमुक्तिबनानेका उद्योगकरो जिसमेंकर्मकीफांसीसेछू
टो राजायहबातसुन बहुतप्रसन्नहुआ व हाथजोड़करउसचेले
सेबोला शृंगीऋषिनेमेरेऊपरबड़ीकृपाकिया जोमुझेशापदेकर इ
समायारूपीसमुद्रसे कि हम काम व क्रोधके वशहोकर उसीमें डू
बरहेथे बाहरनिकाला व मुझको इतनेदिनोंमें आजतकइसबात
काध्याननहींहुआ कि मायामोहसे विरक्तहोकर परमेश्वरका भ
जन व स्मरणकरूं परअबइसशापका डरमानकरमनमेरा विरक्त
होगया सोत मेरीदंडवत्कहिकर ऋषीश्वरमहाराजसे विनयपूर्व
ककहिदेना किमैंअपनेदण्डकोपहुंचकर बहुतप्रसन्नहुआ परन्तु
वहहृदयसेमेराअपराध क्षमाकरैं राजानेयहबात उसचेलेसे कहि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर उसकोबहुतसाद्रव्य व रत्नादिकदक्षिणादेकेकी कि उसलील
कबातकाखेद राजाकोहुआ कि इसअधर्मके बदलेकर भवसागर
तुरन्तमेराप्राण निकलजाता सातदिनतकजीकर इस करताहूंजो
रखना क्याप्रयोजनथा इसलियेउचितहै कि सातदिन जे पांवपर
नेमेंहैं इसपापीतनुको अन्नजल न दूं किसवास्ते कि जिसनाश
से परमेश्वरका भजन व स्मरण न होवे वहतनुकिसीकामका नं
हींहोता ऐसाविचारकर राजानेमनमेंशोचा कि अब स्त्री व पुत्र व
राज्य व धनकामोह छोड़कर परमेश्वरकेध्यानमें लीनहोना चा
हिये इतनेदिनहमारे संसारी मायामोहमें वृथाबीतगये और मन
मेराविरक्तनहींहुआ और जबमैंसातवेंदिन तक्षकसांपकेकाटनेसे
मरजाऊंगा तबयहराज्य और धन मेरासाथछोड़देवेगा इसलिये
उचितहै कि मैं पहिलेसे इनसबकीमायामोहछोड़दूं और गंगाकि
नारेजो तीनोंलोकको तारतीहैं सातदिनपरमेश्वरकाभजन व ध्या
नकरके अपनीमुक्तिबनाऊं किसवास्ते कि संसारमें जिसनेजन्म
लिया वहएकदिनअवश्यमरेगा इन्द्रादिक देवताभी अमरनहींर
हते संसारमें जैसाकर्म्ममनुष्यकरताहै वैसादुःख व सुखभोगकर
चौरासीलाखयोनिमें जन्मपाताहै सो हमइससातदिनमें ऐसाक
र्मकरें जिसमेंआवागमनसेछूटकर भवसागरपार उतरजावैं राजा
ने यहबातविचारकर जनमेजयअपनेबड़ेबेटेको जो चौदहवर्षका
था राजगद्दीपरबैठादिया और राज्यकाजकाकाम मंत्रियोंकोसौं
पकरजनमेजयसेकहा हे बेटा गऊ व ब्राह्मणकीरक्षाकरकेप्रजाको
सुखदेना ऐसाकहकरराजाने मनअपनाविरक्तकरकेभूषण व वस्त्र
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धर्म्म व प्रजापालनकेसाथ राज्यकरनेलगे व अपनेन्यायसे प्रजा को प्रसन्नरक्खा व तीनबार सारस्वत ब्राह्मणको गुरूबनाकर अ श्वमेधयज्ञकराके कलियुगको दण्डदिया व बिवाहअपना राजा विराट्कीपौत्रीसेकरके वहदान व धर्ममेंइतनाखर्च रखतेथे कि ए कबेर यज्ञकरतेसमय उनकेपासद्रव्यनहींरहा तबश्यामसुन्दरका ध्यानकरनेसे बहुतधनउनको मिलकरयज्ञअच्छीतरह सम्पूर्णहु आ इसीतरहजब राजायुधिष्ठिरको तीसरेअश्वमेधयज्ञआरम्भके समयधनकाप्रयोजनपड़ा तबनारदमुनि उनके कहनेसे मुरलीम नोहरको हस्तिनापुरमेंलाकर युधिष्ठिरसेबोले हेराजन् पिछले यु गमेंराजामरुतने ऐसायज्ञकियाथा जिसकेयहां प्रतिदिनब्राह्मणों को एकएकथाली और लोटा व लुटिया व सुनहरीचौकी भोजन करतेसमयनईदेकर फिरवहसबजूंठबर्त्तन नगरकेउत्तरगड़हेमें फि कवादियेजातेथे यज्ञहोनेकेउपरांत जितनाबर्त्तन सोनेकानया ब चगयाथा वहआजतकउसनगरके दक्षिणतरफ गड़ाहुआहै तुमउ नबर्त्तनोंको मँगवाकरअपनायज्ञकरो सो राजायुधिष्ठिरने वही ब र्त्तनमँगवाकर यज्ञमेंखर्चकिया श्यामसुन्दरअपनेभक्तोंकी सब इ च्छापूर्णकरतेहैं इतनीकथासुनकर शौनकादिकऋषीश्वरोंनेपूछा कि राजापरीक्षितने कलियुगको किसवास्तेदण्ड दिया सूतजीने कहा जबपरीक्षित सातोंद्वीपकेराजोंकोजीतकर अपनेआधीनक रचुका तबउसनेविचारा कि राजायुधिष्ठिरके राज्यभोगनेतक द्वा परयुगथा अबकलियुगआया सो हमअपनेराज्यमें कलियुगको रहने न देवेंगे ऐसाविचारकर राजापरीक्षित यहहालदेखनेवास्ते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि हमारेराज्यमें कलियुगने प्रवेशकिया या नहीं दिग्विजयकर
नेनिकले सो जिसदेशमें पहुंचतेथे वहांमनुष्योंको अपनेकर्म्म व
धर्म्मसे परमेश्वरकाध्यान और चर्चाकेबीच न देखकर नारायण
जीकागुणगावतेथे किसवास्ते कि कलियुगनेअभीतकवहांप्रवेश
नहींकिया और राजासबप्रजाको कहतेथे कि तुमलोग इसीतरह
अपनेकर्म्म व धर्म्मपर स्थिररहना औरजिसजगह परीक्षितकीसे
नापहुंचतीथी उसकेदेशकेराजा उनकातेज और प्रतापदेखकर प
हिलेसेआनामिलते और बहुतसी भेंटदेकर विनयकरतेथे कि हम
लोगराजायुधिष्ठिरऔर अर्ज्जुनकेसमयसेतुम्हारेआधीनहैंयहबा
तसुनकर परीक्षित सबराजोंकासन्मानकरके किसीकोदुःख नहीं
देताथा और जो लोगउसके बड़ोंकायशगातेथे उनकोशिरोपांवदे
करबिदाकरदेताथा इसीतरहसे राजापरीक्षित दिग्विजयकरतेहुये
कुरुक्षेत्रमें नदीकिनारेपहुंचकरक्यादेखा कि वृक्षकेनीचेएकबैल
तीनपावटूटाहुआ एकपैरसेखड़ाहै व एकगौ दुबलीपतली रोती
और कांपतीहुई उसके पीछेखड़ीरहकर दोनों आपसमें कुछबात
करते हैं यहहालबैल व गायकादेखतेही राजाअपनेधर्म्म व दया
से एकवृक्षके ओटमेंखड़ाहोकर उनकीबातैंसुननेलगा और राजा
ने क्यादेखा कि एकशूद्र श्यामरंग भयानकरूप राजाकावेषबना
ये दूरसे उसबैल व गायकीतरफ़ चलाआताहै॥

सोलहवां अध्याय॥

धर्म्मरूपीबैल व गायरूप पृथ्वीका बातचीत करना और राजापरीक्षितका वृक्षके ओटसे सुनना॥

सूतजीने शौनकादिकऋषीश्वरोंसेकहा उसबैलरूपी धर्म्मने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गायरूपीपृथ्वीसे पूंछा तुझकोक्यादुःखप्राप्तहुआ जो रोतीहै क दाचित् तुझेमेरे तीनोंपैरटूटजानेकाशोचहो तो इसकायहकारण है कि कलियुगमें बहुतपापी मनुष्योंने उत्पन्नहोकर धर्म्म और कर्म्मअपनाछोड़दिया और शुभकर्म्मसंसारसेउठगया व कलियुगवासीलोगचाहतेहैं कि दमादसेरुपयालेकर अपनीकन्याकाबिवाहकरैं व पुत्रकोइसविचारसेपालननहींकरते कि तरुणहोकरबापकेसाथझगड़ाकरेगा और ब्राह्मणलोग वेदपढ़नेमें आलस्यरख कर शूद्रआदमीवेद और पुराणपढ़नेकीइच्छारखतेहैं और क्षत्रियोंने ब्राह्मणोंकीरक्षा व सेवाकरनाछोड़दिया व राजालोगपोतके बदले दोनोंभागअनाजका प्रजासेलेकर कहते हैं कि अपनाबेटा या बेटीबेंचकर और देव या इसवास्ते तू रोती है कि श्यामसुन्दर विहारीजोतेरेऊपर अपनाचरणकमलरखतेथे संसारसेवैकुण्ठको पधारे और कलियुगमें अधर्मीराजाहोकर तेरेऊपरभोगकरेंगे अपनेमनकाहालहमसे बतलाव यहवचनसुनकरगऊनेकहा तुम सबबातजानबूझकरमुझसेक्यापूछतेहो जिसकारण तुम्हारेतीनपैर तप व क्षमा व दयाकेटूटकर केवलसत्यएकपांवरहगयाहैउसीलिये मेरारोनाभीसमझो किसवास्ते कि मनुष्यकासुखधर्म्म व सच्चाईसेहै जबमनुष्यनेधर्म्म व सच्चाई और दया छोड़दिया तबवहपरमेश्वरकेभेदको कभीपहुंचनेनहींसक्ता और यहबातनहींजानता कि धर्म्मकरनेसेज्ञानहोताहै और कोईमनुष्यकहतेहैं कि मनमेरा संसारसेविरक्तनहींहोता सो विनज्ञानप्राप्तहुये संसारीमोहछूटना बहुतकठिनहै और मैं चारोंवर्णकेमनुष्य और राजालोगोंका शो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चकरतीहूं कि कलियुगआनेसे सबकिसीकोदुःखहोगा और आधि करोनामेरा इसवास्तेहै कि बृन्दाबनविहारी वैकुण्ठकोपधारे जब मुरलीमनोहरके चरणकमलरखनेसे शंख व चक्र व गदा व पद्म के आकारमेरेऊपरपड़जातेथेतबमैंबहुतआनन्दहोतीथी ऐसाकौ नजीव जगत्में है जिसनेश्यामसुन्दरकेअन्तर्द्धानहोनेसेशोच न हींउठाया और जो छत्तीसगुण उनमेंथे उनकावर्णन तुमसे कर तीहूं सत्यबोलना आचारसेरहना हृदयमेंधीर्य्यरखकर क्षमाकर ना संसारीमायामोहसेविरक्तरहना जो कुछपरमेश्वरदेवैं उसमें स न्तोषरखना मीठावचनबोलना इन्द्री व मनकोवशमेंरखना सब छोटे बड़ोंकोबराबरजानकर किसीकाअपमान न करना किसीके दुर्वचनकहनेसे बुरा न मानना किसीकाममेंजल्दी न करनासुनी हुईबातयादरखना अपनाकहाहुआवचन न भूलना ज्ञानकोस्थि ररखना व मनमेंवैराग्यरखकर स्त्री और पुत्रोंसेअधिकमोह नरख ना व धनपाकर किसीसेअभिमानकीबात न बोलना बलअधिक होनेसेघमण्ड न करनासबसेश्रेष्ठहोनासबविद्याओंकोजाननादूस रेकादुःखदेखकरदुःखितहोनाकिसीसे न डरनाजोकोईअपनादुः खकहे उसकाहाल प्रसन्नहोकरसुननाऔर भूतभविष्यवर्त्तमान तीनोंकालकी बातैंजानना अपने मनकाहाल किसीसे न बतला कर समुद्रकेसमानगम्भीररहना धर्म्मकीतरफसे मननहीं फेरना धर्म्म और वेदकीरक्षाकरना संसारमेंऐसीकीर्त्तिकरना जिसमें स बकोईभलाकहै आंखोंमेंशीलरखना किसीजीवकोदुःख न देना जोकोई दीनहोकर अपनाअर्थकहै उसकीइच्छापूर्णकरना परमे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नयन तापहारिणी चितवन मन्दमन्दमुसकराते छातीमें भृगुल ताका चिह्नतुमको दिखलाई देवैगा कदाचित् सम्पूर्ण रूपका ध्यान तुमसेएकबार न होसकै तोपहिले चरणोंसे आरम्भकरके एकएक अंगध्यानमें लावो धीरेधीरे सबरूप तुम्हारेध्यानमें आ जावेगा जब अच्छीतरह वहरूप तुम्हारेध्यान में आजावे तब तुम श्वासखींचनेकी साधनाकरके अपनाप्राण मस्तकपरचढ़ा लेना जिसमनुष्यकाप्राण ब्रह्मांडतोड़कर निकलजावे वहजीवसू र्यमण्डलमेंहोकर बैकुण्ठपहुंचताहै फिरउसका आवागमन नहीं होताजोलोग यज्ञ व तप व दान व तीर्थादिककरके अपनातनुत्या गकरतेहैं वह चन्द्रमाके द्वारपरहोकर देवलोकादिमें अपनेकर्मा नुसारजातेहैं व अपनेपुण्यके प्रमाणवहांका सुखभोगकर उनको फिरसंसारमें जन्मलेनापड़ताहै आवागमनसे नहींछूटते व मकर सेलेकरमिथुनकी संक्रान्ति छः महीनेतक सूर्यउत्तरायण रहतेहैं सो यहदेवताोंकादिनहै इसछः महीनेकेमरनेवाले मनुष्य सूर्य्यके द्वारपरहोकर वैकुंठकोजातेहैं व कर्कसेधनकी संक्रांति छः महीने तक सूर्य्यदक्षिणायन समझना चाहिये यह देवतोंकीरात्रिहै इस छःमहीनेके मरनेवालेलोग चन्द्रमाकेद्वारपर होकरदेवलोकादि में जैसाकर्म्मकियाहो जातेहैं वहांकासुख अवधिपर्यन्त भोगकर उनको फिरसंसारमें जन्मलेना पड़ताहै दोनोंतरहके धर्मकीराह हमनेतुमसे कहादिया इसकेसिवाय कोईतीसरीराह नहींहै हेराज न्जोकोईमनुष्यकेतनुमें परमेश्वरकाभजन व स्मरणकरके अप नी मुक्तिनहींबनाता उसकोफिर चौरासीलाख योनिमें जन्मले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नापड़ताहै जोकोईइसतनुमें परमेश्वरको नहींपहिचानता व आ
युर्दाय अपनी खेलकूद व संसारीमायामें फँसकर नष्टकरदेता है
उसकीवहगति समझनाचाहिये जिसतरह कोईमनुष्य बड़ेपरिश्र
मसे ऊंचेपहाड़परचढ़गया तबउसको थोड़ासापरिश्रम अपना म
नोरथ मिलनेवास्ते रहजाताहै उसीतरहजबजीवने मनुष्यका त
नुपाया तो जानोवह ऊंचेपहाड़परचढ़चुका कदाचित् उसनेइस
तनुमें थोड़ासापरिश्रम भजन व स्मरण परमेश्वरका करके अप
नाकाम नहींसँवारा तो जानोवहउस पहाड़सेनीचे पृथ्वीपर गिर
पड़ा फिरचौरासीलाख योनिमें जन्मपाकर उसपहाड़के ऊपरव
हपहुंचसक्ताहै जिसनेजन्म अपना व्यर्थखोया वह मरने के उप
रांतमनमें बहुतपछताकर कहेगा देखोमैंने क्या बुराकामकिया
जो परमेश्वरको नहींजाना व संसारीमायामोहमें लिपटकरनष्ट
हुआ फिरवहबातहाथसे जातीरहेगी इसलिये मनुष्यको यहध्या
नरखनाचाहिये कि प्रतिदिन आयुर्दायमेरी क्षीणहोकर मृत्युके
दिन निकटचलेआतेहैं जो दिनबीतगये वहफिर आनहींसक्ते य
हबात आठोंपहर मनमें विश्वासरखकर एकक्षणभी परमेश्वर
को न भुलावे व नारायणजीकेभजन व स्मरणमें अपनादिनका
टे व जिसने मनुष्यके तनुमें परमेश्वरका भजननहींकिया वहप
शुके समानहै जिसतरहऊंट व बैलकीपीठपर बोझालादकर एक
समयउसे दाना व घासदेतेहैं और वहउसीमें प्रसन्नरहकर दिन
अपना काटताहै और यहनहींजानता कि कहांसूर्य निकलतेहैं व
डूबतेहैं वहीगति उसमनुष्यकी समझना चाहिये व हे राजन् पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेश्वर थोड़ेध्यानकरनेमें मनुष्यसे प्रसन्नहोकर उसकोमुक्तिदेते हैं व श्रीकृष्णाजीने गीतामें अर्जुनसेकहाहै कि चारिसमयमें मनुष्यलोग अवश्यमेरा स्मरणाकरते हैं एकजबमनुष्य रोगी होकर दुःखपाताहै दूसरेजिसको मेरेमिलनेकी इच्छाहो तीसरेजब किसीका कुछकामअटके उसेकोईबस्तुकी मिलनेकेवास्ते इच्छाहो चौथेज्ञानी जो मुझेपहिचानकर मेरेभेदकोपहुंचाहै वहलोग अपना २ अर्थ सिद्धहोनेके वास्ते मेरास्मरण व ध्यानकरतेहैं सो मैं चारोंतरहके यादकरनेवालोंसे प्रसन्नहोताहूं परज्ञानीसे अधिक कि वहसदा मेरेध्यानमेंरहताहै हे परीक्षित तू मनमेंकुछ संदेहमतकर इससातदिनमें अवश्य तेरी मुक्तिहोगी हम श्रीमद्भागवत अमृतरूपी कथाकहतेहैं तुमचित्तलगाकरसुनो भवसागरपारउतरजावोगे ॥

तीसरा अध्याय ॥

शुकदेवजी महाराज का यहहाल वर्णन करना कि किस देवताकी आराधना करने से कौन फल मिलता है ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसेकहा जबराजा परीक्षितने यहसबहाल परमेश्वरके ध्यानकरनेकासुना तबघबड़ाकरमनमेंकहा किसतरहसे यहस्वरूप नारायणजीका मेरेध्यानमें आवेगा इसीचिन्तामें राजाकामुखमलीन होगया तब शुकदेवजीने राजाको उदासदेखकर ऐसाविचारा कदाचित् राजाके मनमें कोई इच्छा रहगईहो इसकारण राजाकामुख उदासहोगया है सो मैं अपनीबातोंसे इसके चित्तकाहाल मालूम करलेताहूं यह विचारकर शुकदेवजीबोले हेराजन् जो कोई अपनासत्य बढ़ा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याचाहे वह ब्रह्माजीकी व जो अपनेइन्द्रियोंको पुष्टकियाचाहे व
हराजाइन्द्रकी व जो प्रजाअधिक होनेकी इच्छारक्खे वह दक्षप्र
जापतिकी व जो द्रव्यकीइच्छारक्खे वह देवीजीकी जो अपनेरू
पका तेजबढ़ायाचाहे वह अग्निकी व अन्न व हाथी व घोड़ाआ
दिमिलनेकी चाहनारक्खे वह आठ वसुदेवताकी व जो कामदेव
की वृद्धिचाहे वहरुद्रकी व जो कोई अपनेतनुमें अधिकबलहोने
की इच्छारखताहो वह इलादेवीकी व सुन्दरताई अधिकचाहे वह
गन्धर्वोंकी व जिसे सुन्दरस्त्रीकी इच्छाहोतो उर्वशी अप्सराकी व
जो मनुष्ययशकी इच्छारखताहो वहजगत् भगवान्की वजो वि
द्याचाहे वह महादेवकी व जो अपनेपरिवारकी बढ़तीचाहे वहदि
व्यपितरोंकी व जिसको अपनेकुल व परिवारकी रक्षाकरनीहो व
ह पुण्यजीवोंकी व जिसको राजगद्दीकी इच्छाहो वह मनुकी व
जोकोई अपनेशत्रुका नाशचाहे वह निर्ऋतिराक्षसकी व जोको
ई अपनेशरीरमें वीर्यबढ़नेकी इच्छारखताहो वह चन्द्रमाकी व
जो कोई अपनी आयुर्दाय अधिकचाहे तो अश्विनीकुमारकी व
जो स्त्री सुन्दरपतिचाहे वह पार्वतीजीकीवजिसको किसीवस्तुकी
इच्छा न होवे वहपरमपुरुष नारायणजीकी व जिसकिसीको सब
बस्तु कि जिसकावर्णन ऊपरहोचुकाहै व सिवायउसके औरजिस
वस्तुकी इच्छाहोवे वह श्रीनारायणजीकी पूजाकरे उनकीकृपासे
सब मनोरथ पूर्णहोतेहैंसो हे राजन् जो मनुष्यअपना परलोक ब
नानेकेवास्ते परमेश्वरको नहीं यादकरता उसेकुत्ता व गदहाआ
दिपशुकेसमान समझनाचाहिये जिसतरह शूकरविष्ठाखाताहैउ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सीतरह मदिरापानकरनेवाले मनुष्यको समझो जिसजीवने मनुष्यका तनुपाकर अपनेकानोंसे परमेश्वरकी कथा व लीला व कीर्तननहींसुना औरलोगोंकी निन्दासुननेमें मनलगायाउसका कानबिच्छू व सांपके बिलकेसमानहै व जिननेजिह्वासे परमेश्वरका नामनहींजपा उसकीजिह्वा मेढुककेसमान जाननाचाहिये जो बृथावर्षाऋतुमें चिल्लायाकरताहै व जिसकाशिरदेवस्थान या ब्राह्मण व साधुकेआगे दण्डवत् करनेकेवास्ते नहींझुका उस कामस्तक बोझकेसमान तनुपर समझनाउचितहै व जिसनेधन पाकरअपनेहाथसे दाननहींदिया व हाथोंसेनारायणजी व देवता व साधु व ब्राह्मणकीसेवा व पूजानहींकी वहहाथ काठकी करछी समान जाननाचाहिये व जिनपैरोंसे तीर्थयात्रा व दर्शनकरने देवताओंके व साधु व ब्राह्मणके नहींगया वे पांववृक्षोंकी डाली समानहैं व जिसनेआंखोंसे प्रत्यक्ष या ध्यानमें परमेश्वर व देवता का दर्शननहीं किया उनआंखों को मोरपंखसमान समझनाचाहिये व जिसमनुष्यने परमेश्वरकी चढ़ीहुई तुलसीकापत्ता व साधु व ब्राह्मणों के चरणोंकीधूरि अपने शिरपरश्रद्धा व प्रेमसे नहीं चढ़ायावहलोगजीतेहुये मृतककेसमानहैं व जिसकिसीको हरिकथा व लीला व भजन सुनकरकरुणाकेजगह रोना न आवै उस काहृदय पत्थरकेसमान समझना चाहिये ॥

चौथा अध्याय ॥

राजापरीक्षित का शुकदेवजी महाराज से कथा व कीर्तन परब्रह्म परमेश्वरके वर्णन करनेके वास्ते विनय करना ॥

सूतजीनेकहा हेऋषीश्वरो जबराजा परीक्षितको श्यामसुन्द

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रके ध्यानकाहाल व भागवतपुराणकी महिमासुनकर सबशोच मनसेदूरहोगया तबउसने बहुत आनन्दहोकर राज्य व स्त्री पुत्रों की प्रीतिछोड़दी व शुकदेवजीसे हाथजोड़करकहा महाराज जो कुछआपने वर्णनकिया उसपर विश्वासकरके मुझे बड़ाहर्षप्राप्त हुआ व मैंनेध्यानअपना नारायणजीके चरणमेंलगायामुझको आज व सातदिनमें मरनादोनोंबराबरहैं इसबातकाडर मेरेमनसे जातारहा आपका सबपुराण व शास्त्रदेखा व पढ़ाहुआहै वब्रह्मा आदि पुरुषका हालआप अच्छीतरह जानतेहैं जिसतरह नाराय णजी इससंसारको रचकर पालनकरनेके उपरांत फिरउसकाना शकरदेतेहैं वहहालसुनाइये व परब्रह्म परमेश्वरने सगुणअवतार लेकर जोजो लीलासंसारमेंकीहै वह वर्णनकीजिये यहबात सुन तेही शुकदेवजी प्रसन्नहोकर पहिले श्यामसुन्दरके चरणों का ध्यानजिनकी पूजाकरने व नामलेने व कथासुननेसे मनुष्यपवि त्र व ज्ञानीहोताहै करके इसतरहपरस्तुतिकी हेदीनानाथ जितने योग व यज्ञआदि हैं विनाकृपा तुम्हारेअपनाफल नहींदेसक्के सो मैं उन परमेश्वरको दण्डवत् करताहूं जिनकेचरणोंका ध्यानब ड़ेबड़ेयोगी व मुनि व सनकादि व ब्रह्मा वमहादेवआदि देवतादि नरात्रि अपनेहृदयमें रखतेहैं वउनकेचरित्र व लीलाको नहींजा नते व जिनकीदया व कृपासे शवरी व गिद्ध व गोपियांआदिकछो टे २ जीव मुक्तिपदवी परपहुंचे व जोलक्ष्मी जीकेपतिहैं उनको नमस्कार करताहूं वही परमेश्वर अपनीकृपासे मेरीबुद्धिमें प्रका शकरके मेरावचन सत्यकरैं व उनकीशक्तिसेमुझे उनकाचरित्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहनेकेवास्ते सामर्थ्य प्राप्तहो फिर शुकदेवजीने वेदव्यासजी अपनेपिता व गुरुकेचरणोंकाध्यान व दण्डवत् करकेकहा हेराजन् कथा श्रीमद्भागवत जो वैकुण्ठनाथनेब्रह्मासेकही व ब्रह्मानेनारद मुनिसेवर्णन किया व नारदमुनिने व्यासजीकोबतलाया व व्यासजी हमारेपिताने मुझेपढ़ायाथा वहसबमैं तुझेसुनाताहूं जोबात तुमसुननाचाहतेहोवहसबहालउसीमेंलिखाहैमनलगाकरसुनो॥

पांचवां अध्याय॥

शुकदेवजी को कथा श्रीमद्भागवत व ब्रह्मा व नारद का संवाद आरम्भ करना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् किसीयुगमें एकदिन नारदमुनि ब्रह्माजी अपनेपिता केपास दण्डवत् करनेकेवास्तेगये उससमय ब्रह्माजी परमेश्वरके ध्यानमें बैठेथे नारदमुनिने उनकोदेखकर अपनेमनमें इसबातका संदेहकिया देखोसबसंसार उत्पन्नकरने पर भी यहकिसका ध्यानलगायेहैं इसध्यानकरनेसे मालूमहोता है कि कोईइनकाभी मालिकहोगा जिसकायह ध्यानकरतेहैं उसका हालबूझनाचाहिये यहबातविचारकर नारदजीने ब्रह्मासे ध्यानछूटनेकेउपरान्तपूछा आपकहतेहैं जो कुछ जिसकेभाग्यमें लिखाहै वहीबातहोगी और मैं देखताहूं कि आपइसतरह सबसंसाररचकर फिरउसकानाशकरदेतेहैं जिसतरह मकड़ी अपनेमुहसेडोरा निकालकरफिर उसकोखाजातीहै सो आपकेकहने व ध्यानकरनेसेमुझे ऐसाजानपड़ताहै कि आपसेभी कोईबड़ेहैं जिसका ध्यानकरके उसकीआज्ञानुसार सबकाकाम सृष्टिरचनेका करतेहो सो जिसकाध्यान आपकरतेहैं उसकानाम व गुणमुझेभी बतला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दीजिये यहबातसुनकर ब्रह्माजीबोले हेनारदजी तुमधन्यहो जो
परमेश्वरका चरित्रतुमने हमसेपूछा नारायणजीकी माया ऐसी
प्रबलहै जो तुम मुझकोजगत्का कर्ताकहतेहो मैं इसबातसेबहुत
लज्जितरहताहूं सो हे नारद मुझसे बड़े व मेरेमालिक भगवान्
जी हैं जिनसे अनेकब्रह्मा व ब्रह्माण्डप्रकटहोकर सारासंसार उ
न्हींकी मायासेउत्पन्न होताहै व मैं भी उसी परमेश्वरकी दया
व कृपासेसब जगत्कीरचना करताहूं देवतामनुष्यको उन्हींके प्र
तापसे बुद्धि व ज्ञानप्राप्तहोताहै सुनोजब नारायणजीकी नाभिसे
कमलका फूलनिकलकर हम उसफूलसे प्रकटहुयेतब मैंने बहुत
शोचकरकेविचारा कि कहांसे उत्पन्नहोकर यहांआयाहूं जबमु
झेकुछ हालइसका नहींमालूमहुआ तबउन्हीं परमेश्वरकाध्यान
करनेसे मुझेज्ञान प्राप्तहोकर यहबातजानपड़ी कि नारायणजीने
मुझे उत्पन्नकियाहै व सूर्य व चन्द्रमा व तारागणआदिक उन्हीं
के तेजसेप्रकाशितहैं व जितनीवस्तु संसारमेंहैं सब उन्हींकी कृपा
व मायासेप्रकटहुईहैं और यहजीवसबके शरीरमें उन्हींकाप्रकाश
है व नारायणजी अपनेतेजसे आपप्रकाशितहैं उसमेंकिसी दूसरे
कातेज नहींहै व उनकेआदि व अन्त व भेदकोकोई पहुंचनहीं स
क्ता कि उसपरब्रह्मपरमेश्वरका हालवर्णनकरने सकैपर नारायण
जीकी कृपासेजितना मुझेमालूमहै सो तुमसेकहताहूं सुनोजबना
रायणजीको इसबातकी चाहहोतीहै कि हम अकेलेहैं बहुतसेरूप
होजावेंतब उनकीइच्छासे बहुतरूप होजातेहैं जब मैं कमलकेफू
लसे उत्पन्नहुआ तबमुझको नारायणजीने आज्ञादी कि तू संसार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजसी अंगसेउतारडाला व एककोपीनपहिनकर गंगाकिनारे च
लेगये उससमयराजाने बहुतसाद्रव्य ब्राह्मणोंकोदानदेकर राज्य
व परिवारकामोह इसतरहछोड़दिया जिसतरह कोई उबान्त कर
के उसकीतरफ़ आंखउठाकरनहींदेखता यहहालसुनकरसबरानी
व स्त्री व पुरुष नगरवालेरोतेहुये राजाकेपीछे गंगाकिनारेपहुंचे व
रानियोंनेकहा महाराज तुम्हारेवियोगकादुःख हमलोगोंसे नहीं
उठायाजावेगा राजाउन्हैंविकलदेखकरबोले स्त्रीकोचाहियेजिस
बातमेंउसकेपतिकाधर्म्मरहै वहकामकरै उसकेधर्म्ममें विघ्ननडा
ले यहबातकहिकर सबकोबिदाकरदिया व किसीकीतरफ़ आं
खउठाकरनहीं देखा व हरद्वारमें गंगाकिनारे जाकर स्नानकरके
कुशासनपर उत्तरमुंहबैठकरमनमेंऐसासंकल्पकियाजोसातदिन
हमारीआयुपहै इससातदिनतक कुछअन्नजल न करूंगा राजा
कायहहाल जिसनेसुना वहबिनारोयेनहीं रहा व राजा श्रीकृष्ण
जीकेचरणोंकाध्यानधरकर विचारनेलगा कि यहसातदिन हरि
चर्चा व सत्संगमेंव्यतीतहोयँ तो बहुतअच्छाहै व राजाके शाप व
विरक्तहोनेकाहाल ऋषीश्वर व मुनीश्वरलोगसुनकर उदासहोग
ये अत्रिमुनि व वशिष्ठ व च्यवन व अरिष्टनेमि व भृगु व अंगिरा
व पराशर व परशुराम व मेधातिथि व देवल व पिप्पलायन व भ
रद्वाज व गौतम व मैत्रेय व अगस्त्य व वेदव्यास व नारद व विश्वा
मित्र व कात्यायन व बामदेव व जमदग्नि आदिकबहुतसेऋषीश्वर
व महात्मालोग राजापरीक्षितको धर्म्मात्मासमझकर गंगाकिना
रेभेटकरनेकेवास्तेआये राजानेउनकोदेखतेहीदण्डवत व पूजाक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रकेबड़ेआदरभावसेबैठाया व सबकिसीकोआसनदेकरबोले महा
राजमरतीसमय आपलोगोंमेंसे एकमहात्माकाभी दर्शन जिस
को प्राप्तहो वहआवागमनसे छूटकर भवसागरपारउतरजावै सो
मेराबड़ाभाग्यहै जो मरतीसमयआपलोगोंनेजिसतरहकृपा व द
याकरके मुझेदर्शनदियाउसीतरहदयालुहोकर सातदिनतकयहां
रहिये जिसमेंतुम्हारेरहनेसेमनमेरा संसारीमायामोहकी ओर न
जावै और आपलोगोंके सत्संगसे आठोंपहरचर्चा नामपरब्रह्म प
रमेश्वरकीबनीरहे व आपलोगकृपाकरकेमेरेभलेकेवास्तेयहांआ
ये हैं और कुछइच्छा व परवाह नहींरखते सो दया व कृपाकरके
कोई ऐसाउपायबतलाइये कि इससातदिनमें हमवहयत्नकरके
आवागमनसेछूटजावैं उनऋषीश्वरोंमेंसे एकनेकहा तीर्थस्नान
करनाबड़ापुण्यहै दूसरेऋषीश्वरबोले ब्राह्मणलोगइकट्ठेहुये हैं य
ज्ञकरो जिसमेंसबपापतुम्हाराछूटजावै तीसरेऋषीश्वरनेबतलाया
कुछतुम्हारेयहांद्रव्यहो उसेब्राह्मणोंकोदानकरदेव दानकरनेसे उ
त्तमकोई दूसराधर्मनहीं है चौथेऋषीश्वरनेकहा देवतों कापूजन
करने व मंत्रजपकरनेसे सबपापमिटजातेहैं इसीतरह सबऋषीश्व
रोंनेअपनेअपने ज्ञानपर्य्यन्त राजासेबतलाया परन्तुकोईबात प
क्कीनहींठहरी कि कौनसाकामकरनाचाहिये तबराजानेकहा आ
पलोगोंने जो बातविचारकिया सो सबउत्तमहै परइनसबबातोंकी
सामग्रीइकट्ठीकरनेको बहुतदिनचाहिये और मेरेमरनेमें केवल
सातदिनरहेहैं कोईऐसाउपायबतलाइये जो इसीसातदिनमें पूर्ण
होसकै इसबातको सबमहात्मालोग विचारकरनेलगे इतनीकथा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनाकर सूतजीनेकहा हे ऋषीश्वरो जिससमयनारदजी शापदे
नेकाहालसुनकर राजापरीक्षितकेपास गंगाकिनारेजातेथे उसस
मयराहमें शुकदेवजीसेभेंटहुई तबशुकदेवजी ने नारदमुनिसे पू
छा आपकहांजातेहैं नारदमुनिनेअपनेजाने और राजापरीक्षित
के शापदेने काहालसुनाकरकहा महाराजजो मुनि व ऋषीश्वर
राजाकेपासगयेहैं वहलोगराजाको उत्तमराहजो मुक्तहोनेकी है
नहींबतलाकर कोईऋषि यज्ञ व कोई तप व कोईदानादिक धर्म
करनेकेवास्तेकहैंगे परथोड़ेदिन रहनेसेराजापरीक्षित उसकामक
रनेसे भवसागरपार नहींउतरैगा इसलियेआपवहांजाके राजाको
भगवत्गुणसुनाकर भवसागरपारउतारदीजिये यह बातसुनकर
शुकदेवजीने पहिलेवहांजाना अंगीकारनहींकियातबनारदजीने
उनकोयहइतिहाससुनायामहाराजचलतीसमयमैंनेरास्तेमेंक्या
देखाकिएकमनुष्यआंखवाला कुयेंपरबैठाथाउससमयएकअंधा
राहभूलकर वहांचलाआया व उसकुयेंमें गिरकरमरगया औरउस
आंखवालेमनुष्यने अंधेको देखनेपरभी कुयेंकीतरफजानेसेनहीं
मनाकिया सोउसदेशकेराजानेयहहालसुनकरउसआंखवालेको
पकड़ बहुतसादण्डदेकरकहा तेरेआंखथी तैंने उसअंधेकोकुयेंकी
तरफजानेसेक्योंनहींबरजा सो आपबतलाइये उस आंखवालेने
उचितकिया या अनुचित यहइतिहाससुनकर शुकदेवजीने कहा
हे नारदमुनि उसआंखवालेनेबहुतअधर्म दण्डदेनेयोग्यकामकि
या कि उसकेदेखते वहअंधा कुयेंमेंगिरकरमरगया इसलियेवहउ
सपापकाभागीहुआ तबनारदजी बोले हे शुकदेवमहाराज देखो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजापरीक्षित अपनीमुक्तिबनानेकारास्ता नहींजानता और आ
पभगवत्भजनकरनेकेप्रतापसे सबराहजानतेहैं कदाचित्उसको
रास्तानहींदिखलाओगे तो उसकेनरकजानेकापापकिसकोहोगा
व तीनोंलोककेराजा जो ईश्वरहैं वहतुमकोइसपापके बदलेदण्ड
देवेंगे यानहीं यहबातसुनकरशुकदेवजीलाचारहुये व राजाकेपा
सजानाअंगीकारकरकेनारदजीसेकहाआपचलैं मैंभीपीछेआता
हूं सो जिससमय ऋषीश्वरलोग सातदिनमें राजाकेमुक्तहोनेका
उपायविचारकररहेथे उसीसमयशुकदेवजीमहाराज पन्द्रह वर्ष
कीअवस्था अतिसुन्दर परमहंसरूपबनाये आनन्दमूर्त्ति राजाके
पासआये उनकेतेजकोदेखकर सबऋषीश्वर व मुनि जो बड़े२म
हात्मा व बूढ़े वहांपहिलेसेबैठेथे उठखड़ेहुये व शुकदेवजीमहारा
जको बड़ेआदरभावसे बीचमेंऊंचेसिंहासनपरबैठाया तबराजाप
रीक्षितकेमनमें इसबातकासंदेहहुआ कि देखो शुकदेवजीकोछो
टीअवस्थाहोनेपरभी बूढ़े २ ऋषीश्वरोंनेउठकर बड़ेआदरसेबैठा
या सो इनकेप्रकाशसे मालूमहोताहै कि यह गुणमेंसबसेअधिक
हैं ऐसाविचारकर राजापरीक्षितभी खड़ाहोगया व उनकोदण्डव
त्करके हाथजोड़कर बड़ीअधीनतासेबोला हे कृपानिधान आप
नेबड़ीदयाकरके इसबेला जो मैं मरनेकेवास्ते गंगाकिनारेआया
हूं मुझको दर्शनदिया व आपऐसेमहापुरुषकाआना मेरेभाग्यसे
हुआ जबशुकदेवजी सिंहासनपरबैठचुके तबपराशरमुनि शुकदे
वजीकेदादाने राजापरीक्षितकासंदेह मिटानेकेवास्ते कहाहेराजा
शुकदेवजी अवस्थामेंछोटे व ज्ञानमेंसबसेबड़ेहैं व हमलोग जित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu.Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेबड़ेबड़े ऋषीश्वर व मुनियोंको यहांदेखतेहो सबको ज्ञानमेंइन
सेछोटासमझनाचाहिये इसवास्तेहमलोगोंनेउठकर इनकाआद
रकियाथाऔर यहतारणतरणहैंजबसेइन्होंनेजन्मलियातबसेवि
रक्तमन दिनरात परमेश्वरकेध्यानमें लीनरहकर श्यामसुन्दरका
गुणानुवादगातेहैं हे राजन् तेराकोईबड़ापुण्यसहायहुआ जोइस
समययहआये सबकर्मोंसे जो उत्तमधर्म्म तेरेभवसागर पारउतर
नेकेवास्तेहोगा वहकहेंगे जिससेआवागमनसे छूटजावेगा इतनी
कथासुनाकर सूतजीने शौनकादि ऋषीश्वरोंसेकहा कि तुमने
जोपूछाथा किशुकदेवजीको राजापरीक्षितने किसतरहपहिंचाना
उसकाहालतुमसेवर्णनकिया राजापरीक्षित शुकदेवजीका हाल
पराशरमुनिके मुखससुनकर बहुतप्रसन्नहुआ व उसने शुकदेव
जीकाचरणधोकर विधिपूर्वकपूजनकरके हाथजोड़करकहामहा
राज आपविरक्तरूप संसारसेकुछप्रयोजननहींरखते श्रीकृष्णजी
महाराजनेमुझकोपाण्डवोंके बंशमेंसमझकर तुम्हारेमनमें दया
उत्पन्नकरादिया जो आपकृपाकरके मुझकोभवसागरपार उतार
नेकेवास्तेयहांआये और आपकेदर्शनसे मैं कृतार्थहुआ जोकोई
तुम्हारेचरणछुवे वहमुक्तपदवीपासकाहै सो मैं दीनहोकर आपसे
विनयकरताहूं देवतालोगोंकीआयुष्कामप्रमाणहैकि इतनेदिनोंमें
मरैंगे और इसकलियुगमें मनुष्यकेआयुर्बलकाठिकाना नहीं है
कि कबमरेगा सो शृंगीऋषिकेशापदेनेसे अबमेरेमरनेमेंसातदिन
और बाक़ीरहेहैं सो आपअपनेमनकेमालिक हैं तुम्हारेऊपर कि
सीकाबशनहींचलता जो बिनाप्रसन्नताआपकोएकक्षणभीरख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सकै इसलिये मैं जल्दीकरकेआपसेपूंछताहूं कि मुझे भवसागर पारउतरनेकेवास्ते इससातदिनमेंक्याकरनाचाहिये और हम संसारीजीवने स्त्री व पुत्रों केमोहमें फँसेरहकर कभीमनमें इसबात काविचारनहींकिया कि अंतसमयकाभी शोचकरनाचाहिये जिसतरह क़साईबहुतसी बकरियांअपनेयहांरखकर उनमेंसेनित्यएकदोबकरीमारताहै व दूसरी औरबकरियोंको कभीइसबातकाडरनहींहोता कि हमारीभीएकदिन यहीगतिहोगीबड़ेहर्षसेप्रतिदिन दाना व घास व पानी खातीपीतीहैं उसीतरह हमसंसारीलोगसदामाता व पिता व भ्राता व पुत्रकामरनाआंखसेदेखकरकुछनहींडरतेकि हमकोभी एकदिनमरनाहोगा अधर्म्मकरनाछोड़कर परमेश्वरकाभजनकरैं और यहसबहालदेखनेपरभीअपनामनस्त्री औरपुत्रझूंठेव्यवहारऔरमायामोहमेंफँसायेरहतेहैं अबनारायणजीमेरेऊपरकृपाकरके मुझेमायामोहकीनींदसेजगायाकिमनमेरा विरक्तहुआजिसतरहशास्त्रकाबचनहै किकदाचित्कोईमनुष्यपांचदिन कार्तिककेअन्तमेंएकादशीसे पूर्णमासीतक गंगास्नानकरैतो उसेमहीनेभर नहानेकापुण्यप्राप्तहोताहै उसीतरह आपकोई ऐसाठपायबतलावैं कि इससातदिनमें जो मेरेमरनेकेहैं तुरन्तसुखकरै व जबमनुष्यमरनेकेनिकटपहुंचे तबउसकोअपनीमुक्तिबनानेवास्ते क्या उपायकरनाचाहिये किसवास्ते कि मरनेसमयगलेमेंकफ़इकट्ठाहोनेसेपरमेश्वरकानामउच्चारणनहीं होसक्ता औयमदूतोंकेडरसे मल व मूत्र निकलआताहै इसलियेआपसे विनयकरताहूं कि कोईऐसाधर्म्मबतलाइये जिसमेंजल्दीमुक्तिहोवे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरे ऋषीश्वरोंने जो कुछदान व यज्ञादिकउपाय बतलायाथा वहभीशुकदेवजीसे कहदिया जबयहसबबातसुनकर शुकदेवजी महाराजने मुसकरादिया व ऋषीश्वरोंकाकहनाअच्छानहींलगा तबराजापरीक्षित फिरहाथजोड़करबोले हेकृपानिधान इससमय तुम्हारेविचारमें कथापुराणसुनना यामन्त्रजपना याकिसीदेवता व श्यामसुन्दरके चरणोंकाध्यानकरनाहो सोबतलाइयेवैसा मैं करूं ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीमद्भागवत

दूसरा स्कन्ध ।

शुकदेवजीकरके श्रीमद्भागवत व परब्रह्मपरमेश्वरके अवतार धारण करनेकाहाल वर्णनकरना ॥

दो० जाकीरुपातेहोतहै निपट अयानसयान । सोमाखनके हियवसो नँदनन्दन भगवान ॥
जो द्वितीयके मध्यमें गूढकहेउ शुकदेव । श्यामसुँदरसो रुपाकरि मोहिंबताओ भेव ॥

पहिला अध्याय ॥

शुकदेवजी महाराजका राजापरीक्षितको धीर्यदेना व श्रीमद्भागवतकी स्तुति वर्णनकरना ॥

शुकदेवजीने राजापरीक्षितकावचनसुनकरकहा हेराजन् तुम ने जोपूछा कि अन्तसमयमनुष्यको अपनीमुक्ति बनानेकेवास्ते क्याकरनाचाहिये सोबहुत अच्छीबातपूंछीहै इसमेंसंसारीजीवों काभीभलाहोगा हेराजन्जोअज्ञानमनुष्य परमेश्वरकीमहिमा कोनहींजानता और केवलसुख व बिलासमेंडूबकर भ्रष्टहोरहाहै उसकेवास्ते सबदुःखसमझनाचाहिये किसवास्ते कि वहलोग संसारीविषय व सुखकेपदार्थोंकी चाहनारखतेहैं परबिनापरमेश्वर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीशुकदेवजी का राजा परीक्षित को कथा सुनाना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीनारायण की अनन्तशय्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीकृपा व दयाकेउनकोकुछसुखनहींमिलता वहइसीतरहअपनी आयुष्रातकोस्त्रीप्रसंग व दिनकोउद्यम व व्यापारमेंव्यतीतकरते हैं उन्हेंआठोंपहरसंसारीकामसेछुट्टीनहीं मिलती कि किसीक्षण नारायणजीकास्मरण व ध्यानजोउन्हेंउत्पन्न व पालनकरनेहैं करकेपरलोकअपनाबनावें व धन व परिवारसे अपनाभलाचाह तेहैं देखोमनुष्यजिसस्त्री व पुत्रकेमाया व मोहमेंफँसकर सबतरह कादुःखउठाताहै व झूंठसत्यबोलकर द्रव्यउत्पन्नकरकेजिनको पालताहै उनकामरनाभी अपनीआंखोंसे देखकर मनको इसम हाजालसे विरक्तनहींकरता व मरनेउपरान्त कोईबेटा व भाई व बन्धु उसकी सहायता नहींकरसक्के व पापकरनेकेबदले आप नरक भोगताहै ॥

क० कहाकोशलेश सुखपायो प्रभुतनय पाय कहा सुखदीन्हों प्रहलादहूके तातजू ।
कहासुखदियो प्रिय रावबकोदुखी कियाकहासुख सुकंठैदियाबालिबली भ्रातजू ॥
कहासुखदीन्हों धनहेतुभयो मथ्यनसिंधु कहा सुखकौरवको दियोराज्यख्यातजू ।
निजानन्दकन्द बिनलहेउ सुख लेशकिनकहेउवसर बन्धु क्षणदुख कोसंघातजू ॥

सो हेराजन् तुम्हाराजन्म भरतखण्डमेंहुआ जेमनुष्य इसख ण्डमें परमेश्वरकाभजन व ध्यानकरके वैकुण्ठकासुखपातेहैं उ न्हींलोगोंका संसारमेंजन्मलेनासफलहै देखोमुनि व ऋषीश्वर लोगसंसारीमायाछोड़कर बनमेंश्यामसुन्दरकास्मरण व भजन करके अपनाकालबितातेहैं सोहेराजन्सुनो जिसकीमृत्युनिकट पहुंचीहो उसकोभवसागरपार उतरनेकेवास्ते सिवायनारायण जीकीकथा व स्तुतिसुननेके दूसरीबातउत्तमनहींहै और वहमनु ष्यअपनामन स्त्री व पुत्र व धनादिक संसारीमायामें विरक्तरख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर इसबातपरस्थिरकरै कियहसबव्यवहार जगत्का झूठाहै व संसारीबस्तु सदावर्त्तमाननहींरहती व मरनेकेउपरान्त कोईबस्तु उसकेसाथनहींजाती केवलवहअकेलाजाताहै और स्त्री व पुत्र व धनादिक सबउसकोछोड़देतेहैं उसकासाथनहींकरते इसवास्ते बुद्धिमान् व ज्ञानीकोउचितहैकि उनकेछोड़नेसे पहिलेआप उन लोगोंको त्यागकरदेवै व भगवान्कीकथा शुद्धमनसे चित्तलगा करसुनै व मुरलीमनोहरके चरणोंमें ध्यानलगाकर उसीपरब्रह्म परमेश्वरकीप्रीतिउत्पन्नकरै और जोकुछकथा व लीलासुनै उस परविश्वासरखकर कभीउसकोझूठनजानै व उसकोसत्यजानकर किसीबातकासन्देह न करै तबवहमुक्तिपावैगा सोहेराजन् हम श्रीमद्भागवत जोसबपुराणोंसे उत्तमहोकर उसमेंकेवल श्यामसुन्दरकीलीला व स्तुतिलिखीहै और हमनेअपनेपिताव्यासजीसे उसकोपढ़ाथातुमकोसुनातेहैंजिसकिसीकीऐसीइच्छाहो किहम आवागमनसे छूटजावैंउसकेवास्ते श्रीमद्भागवत सुननेकेसिवाय कोईदूसराउपायउत्तमनहींहैसबशास्त्रसुननेकाफलकेवलभागवतसुननेसेप्राप्तहोताहै व सबवेदोंकासार इससमझनाचाहिये जिसकोयमराजकी फांसीसेछूटनाहो वहभागवतसुनै परमेश्वरकेचरणोंमें उसकोप्रीतिउत्पन्नहोगी और जोमनुष्यस्त्री व लड़कोंकेमोहमेंफँसारहताहै कदाचित्वहभीकथा सुननेकानित्यअभ्यास करैतोनिःसंदेहउसकामनविरक्तहोकर हरिचरणोंमेंप्रीतिउत्पन्नहोके भवसागरपारउतरजावे व जिसस्थानपरयहकथाहोतीहैउस जगहसबतीर्थ व देवतालोग सुननेवास्ते आकरइकट्ठे होतेहैं व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसकेसुननेसेअनेकजन्मका पापछूटजाताहै सो हे राजन्तुमभी इसकथाके सुननेसे मुक्तिपदवीकोपहुंचोगे कदाचित्तुमयहबात कहोकि तुम्हारेआनेसे पहिलेयहसब ऋषीश्वरजोयहां वर्त्तमान थे इन्होंने किसवास्तेहमको भागवतकथासुननेका सम्मतनहीं दियाइसकाकारण यहसमझनाचाहिये कि अभीतक ऋषीश्वरों कामनएकबातपर स्थिरनहींथा कभीयज्ञकरनेकेवास्ते व कभीज प व कभीतीर्थ व कभीदान व पूजाकीतरफ़ चलायमान होताहै और हमअपनामन रातदिनपरमेश्वरकेध्यान व स्मरणमें लगा कर श्रीमद्भागवतपढ़नेके सिवायदूसरीबातोंसे कुछप्रयोजननहीं रखते व अवधूतकीतरह अपनीआयुर्दाय संसारमेंकाटकर आनंद सेरहते हैं हेराजन् कदाचित्तुमयहजानतेहो कि मेरेमरनेमेंथोड़े दिनरहगयेसो इसबातसेमतडरो तुमकोअभीसातदिन मरनेमें हैं श्रीमद्भागवत चित्तलगाकर अच्छीतरहप्रेमसेसुनो तुम्हारीमुक्ति होगी खट्वांगनामराजा दोघड़ीमेंमुक्तहुआथा तुमकोसातदिन बहुतहैं क्योंतुमघबड़ातेहो कदाचित्कोई अपनेसच्चेमनसेपरलो कबनानाचाहे तो अढ़ाईघड़ीमेंमुक्तिपासक्ताहै व संसारीमायामो हमें हज़ारवर्षतक अपनीआयुर्दाय ब्यर्थबितावे तोमरनेउपरान्त नरकभोगताहै यहबातसुनतेही राजानेहाथजोड़करकहा महारा ज खट्वांगराजाने दोघड़ीमें किसतरहमुक्तिपाईथी उसकाहाल विधिपूर्वकवर्णनकीजिये शुकदेवजीबोले त्रेतायुगकेआदिमें ख़ द्वांगनाम राजासातोंद्वीपकाबड़ाप्रतापी व बलवान् व नीतिमान् व धर्म्मात्माअपनेकर्म्म व धर्म्मसेअयोध्यापुरीमें रहताथाउन्हीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिनोंमेंदैत्योंने इन्द्रादिकदेवतोंको लड़ाईमेंजीतकर इन्द्रासनसे निकालदियातब बृहस्पतिपुरोहितने देवतोंसेकहा जब राजाख ट्वांगतुम्हारीसहायताकरकेदैत्योंसेलड़ाईकरैं तबतुम्हारीजीतहो गी यहबातसुनतेहीइन्द्र देवतोंसमेतमर्त्यलोकमें राजाखट्वांगके पासआया व उससेअपनाहाल कहकरसहायताचाही तबराजाने उनकोदण्डवत्करके कहा हमाराबड़ाभाग्यहै जोतुमलोगहमसे दैत्योंकीलड़ाईके वास्तेसहायता चाहतेहोएकदिन इसशरीरका अवश्यनाशहोगा कदाचित्आप लोगोंकेकामआवे तोइससेक्या उत्तमहै ऐसावचनकहकरराजाने अपनेशस्त्रबांधलिये व इन्द्रादि कोंकेसाथजाकर दैत्योंसेलड़ाईकिया व उन्हैंजीतकरफिरदेवलोक की राजगद्दीइन्द्रको दियाजबदेवतोंने राजाकीकृपासे विजयपा या व निडरहोकर अपनाराज्यकरनेलगे तबराजानेदेवतोंसे विदा मांगी उससमयइन्द्रने प्रसन्नहोकर कहा हेराजन् तुमहमसेकुछ वरदानमांगो यहबातसुनकर राजानेविचारकिया कि हमनेसहा यताकरकेछूटाहुआ राज्यइनकादिलादियाहै इनसेकौनवस्तुमां गैं इन्द्रनेउसकेमनका हालजानकरकहा हेराजन् देवतोंकोबीती हुई व होनेवालीबातसब मालूमरहतीहै हमलोगदैत्योंके उपद्रव सेकिवहहमसे बलवान्हैंव्याकुलथे इसलियेतुमसेसहायताचाही थी ऐसावचनसुनकर राजानेअपनी बुद्धाईशोचके देवतोंसेपूंछा कि पहिलेतुमयहबतलाओ कि मेरेआयुर्बलमें कितनेदिनहैं तब मैंतुमसेबरदानमांगूं इन्द्रनेविचारकरकहा हेराजन् तुम्हारीआयु र्द्वायमें केवलचारघड़ीहैं यहबातसुनतेही राजानेदेवतोंसेकहाहम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहीवरदानमांगतेहैं किमुझेइसीक्षण अयोध्यामेंमेरेस्थानपर पहुंचादेव वहांकर्मभूमिहमारीहै अवमेरेमरनेकासमय निकटपहुंचावहांजाकरमैं ऐसाकर्म्मकरूंजिसमें आवागमनसेछूटकर भवसागरपारउतरजाऊं इन्द्रनेउसीसमय एकविमानबहुतवेगसेचलनेवाला राजाको दियासोराजा उसीविमानपरचढ़कर दोघड़ीमें अपनेस्थानपरपहुंचे हेराजन् उसनेभरतखण्डको देवलोकसे अच्छाजानाजोमरनेवास्ते अयोध्यापुरीमें आयासोतुमविश्वासकरकेजानो किभरतखण्ड बहुतअच्छास्थानहै व राजानेअयोध्यामेंआनकरउसीदोघड़ीमें द्रव्यादिकसबवस्तु ब्राह्मणोंकोइच्छा पूर्वकदानदेकर अपनेबेटेकोराजगद्दीपर बैठादिया व स्त्री व पुत्र व राज्यकामायामोह मनसेतोड़कर वैराग्यधारणकरके सरयूकिनारे जाबैठा व भगवान्जीके ध्यानमेंलीनहोके योगाभ्याससे अपना तनूत्यागकर वैकुण्ठकोसिधारासोहेराजन् उसकीमुक्तिदोघड़ीमें हुईतुझेअभी सातदिनबहुत हैं सोतुमअपनामन संसारीमायासे तोड़करपांचभूतात्मा व सबइन्द्रियोंको अपने वशमेंरक्खो व परमेश्वरकेविराट्रूपका ध्यानकिसबलोक उसीरूपमेंवर्त्तमानहैंकरोसातोंलोक ऊपरकेकमरसेऊपर व सातोंलोकनीचेके कमरसेनीचे उसआदिपुरुषकेसमझो व जितनीवस्तुतुम संसारमें देखतेहो उसरूपसेकोईबाहरनहींहै यहबातविचारकर उसतेजकेसाथजिसके प्रकाशसे सूर्य व चन्द्रमाप्रकाशितहैं ध्यानलगाओ व सबजीवोंमेंउसीतेजकाचमत्कारजानकर उसकोसिवायसब जगत्काव्यवहार झूठासमझोऔर जोकोईउसको सबजगहपरएकसादेखता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है उसेकिसीशत्रुकाडरनहींरहता व मित्रसेभीसहायताकी इच्छा
नहींहोतीसब जीवोंमेंउन्हींका प्रकाशउसको दिखाईदेता है श्री
कृष्णजीकेचरणोंका ध्यानहृदयमेंरखकर श्रीमद्भागवतमनलगा
के सुनोतुम्हारी मुक्तिहोजावेगी और शुकदेवजी महाराजका अ
भिप्रायइनसबबातोंसेयहथा कितक्षकसांपकाडर राजाकेचित्तसे
निकलजावे व जबराजाअपनेमनमेंविश्वासजानैकिनारायणजी
के सिवायदूसरीसंसारीवस्तुमें कुछप्रकाशनहींहै तबतक्षककाडर
छोड़करयहसमझैकिसको कौनकाटताहैजब इसतरहकाज्ञानमन
मेंआयातबवहजीवन्मुक्तहुआ यहबातसुनकेराजापरीक्षितने बहु
तआनन्दहोकर कहामहाराजमैं किसतरह बैठकरकौनसे रूपका
ध्यानकरूं शुकदेवजीबोलेहेराजन् तुमकमलासनबैठो व एक
चित्तहोकर अपनेहृदयमें परमेश्वरके छोटेरूपकाध्यान जिसको
सूक्ष्मरूप कहतेहैं करोकदाचित् अन्तष्करणमेंउसस्वरूपकाध्या
न न करसकोतोसबसंसारपरमेश्वरके विराट्रूपमेंजानकर उसका
ध्यानलगाओ व विराट्रूपका हालइसतरहपरहै पातालपरमेश्व
रके पांव व रसातललोक घुटना व सुतललोकजंघा व वितल व अ
तललोक चूतड़पृथ्वीकमर व आकाशनाभि व ज्योतिषचक्रजहांकरनेक
सूर्य व चन्द्रमारहतेहैं छाती व महर्लोकगला व जनलोकमुख वसे विरह
तपलोक माथा व ब्रह्माकासत्यलोक शिरउस आदिपुरुषका है इरकाध्य
न्द्रादिदेवता उनकीभुजा व दशोंदिशाकान व अश्विनीकुमारना मान् व
क व सबसुगन्ध नाककाछेद व अग्निमुख व आकाशआंखोंके री व्यव
हनेकागड़हा व सूर्यआंख व दिनरातिपलक भुजा व जलपांव का शो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब जगत्कास्वाद जिह्वा व यमराजदांत व माया उनकीहँसी व लज्जाऊपरकाहोठ व लालचनीचेकाहोठ व धर्मछाती व अधर्मपीठ व सबवृक्षशरीरका रोम व मेघघटा शिरकेबाल व नदिया शरीरकीनसैं व पहाड़तनुकीहड्डी व समुद्रपेट व हवाश्वासा व मन चन्द्रमा व पानी मेहकावीर्य्य व प्रात व सन्ध्यापरमेश्वरका कपड़ाहै और परमेश्वरके उसरूपमें मनुष्यबुद्धिसे घोड़ा व गदहा व खच्चर व ऊंटनखसे व हरिणआदिक पशुजंघासे व पक्षीआदि जिह्वासे व गन्धर्व व विद्याधर व चारण व अप्सरास्वरसे व भेड़िया आदिपैरके फिल्लीसे व यज्ञादिकपरमेश्वरके कर्मसे उत्पन्नहुयेहैं सो मनुष्यके तनुमें ज्ञानरहताहै व दूसरीयोनिपशु व पक्षी आदि में ज्ञाननहींहोता इसतरह जो परमेश्वरका विराट्रूपहै उसीको तुमध्यानकरो जबइसमें तुम्हारामन लगजावै तबपीछेसे छोटेस्वरूपका ध्यानकरना ॥

दूसरा अध्याय ॥

शुकदेवजी का यह बात वर्णन करना कि परमेश्वरने अपने भक्तोंके वास्ते जो उनके नामपर बनमें जाकर उनका भजन करतेहैं सब खाने व पहिरने का पदार्थ तैयार कररक्खा है ॥

शुकदेवजीने कहा हेराजन् पहिलारस्ता परमेश्वरके ध्यान करनेकायही विराट्रूपहै परजबपहिले अपनामन संसारीमाया वसे विरक्तकरलेवैतब नारायणजीकीतरफ मनलगताहै व परमेश्वरकाध्यान करनेसे संसारीमाया छूटिजातीहै और जो लोग बुद्धिमान् व ज्ञानीहैं वह आठोंपहर हरिचरणोंमें ध्यानलगाकर संसारी व्यवहारसेकुछ प्रयोजननहीं रखते कदाचित् तुमको इसबात का शोचहो कि जबकोईमनुष्य गृहस्थीछोड़के बनमेंजाकर ना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रायणजीकातप व स्मरणकरै तो उसको भोजन व बस्त्र व बर्त
विना दुःखहोगा तब परमेश्वरके भजन व ध्यानमेंउसकामनवि
सतरहलगैगा सोनारायणजीने ऋषीश्वर व तपस्वीअपने भक्
केवास्तेजोलोग विरक्तहोकर उनकेमिलनेकेलियेतप व योगक
तेहैं पहिलेसेसबबस्तु तैयारकररक्खाहै संसारमेंमनुष्यको बड़ेपी
श्रमसे सबबस्तुप्रयोजनकी मिलतीहैं व वनमेंपरमेश्वरकी कृपासे
विनापरिश्रमसबपदार्त्थ प्राप्तहोतेहैं पृथ्वीसोनेके वास्तेतैयार समना क्या
झकरवहां सुखसेसोवे नींदआवने उपरांतजिसतरह पृथ्वीपरसुखभक्तोंक
होताहैउसीतरह शय्या व तोशकपरभी समझनाचाहिये व तकिमझकर
येका कामटिहुनीसे निकलजाताहै व अनेकतरहकेफल व मेवेकियाव
खानेवास्ते वनमेंलगेरहतेहैं उनकोआनन्दसे खायाकरैउनका पेके पेटमें
टभरारहकर दूसरीवस्तुकेखानेकी इच्छानहोगी व उनकोवर्त्तन मैंभूर
भी न चाहियेउनके दोनोंहाथोंसे अच्छादूसरावर्त्तन भी न होगमाताकी
जिसकोचोर व ठगलेने व लूटने व पुरानेहोनेका डरनहींरहता साविचा
कपड़ापहिरनेके वास्तेवृक्षकीछाल उत्तमहैजिसकेफटने व धुलपरमेश्व
नेका कुछशोचनहींरहता कदाचित्छालसे शरीरछिपाया न जहालदेख
वेजाड़ा मालूमहोतोनगर व गांवकेनिकट घूरोंपरलत्ते व चिथड़े खानेप
पड़ेरहतेहैं उनकोउठालाकर पानीसेधोके अपनातनुछिपालेवे गाय व
पहाड़ोंकी दरोंकोरहनेवास्ते स्थानसमझै व तालाब नदीआदिक घास व
में पानीपीकर उसीमेंस्नानकरै व जोमनुष्यवनमें जाकरपरमेश्व वालेहैं
रकीशरणामें रहताहै शेर व भालूआदिकजीवोंसे उसकीरक्षा प खैंगे उस
मेश्वरकरतेहैं व हेराजन् हमकुछलालच व अपनेप्रयोजनकेवास्ते पानीकेस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व बर्त तुम्हारेपासनहींआये नारदजीने हमारेऊपर तुम्हाराबोझा डाल
ामनवि दियाथा इसलियेमैं आयाहूं और जोमनुष्यपरमेश्वरकेभजन व
ने भक्त ध्यानसेविमुख रहताहै उसेवैतरणीनदी व नरकोंकादुःख अवश्य
योगक भोगनापड़ेगा और जोलोगसंसारी मायासे विरक्तहोकर परमेश्व
वड़ेपी रकेध्यान व स्मरणमेंरहतेहैं उनकोगृहस्थीके पासकिवहलोग अ
ी कृपास पनेद्रव्यके घमंडमेंअन्धेरहतेहैं भोजन व वस्त्र मांगनेकेवास्तेजा
यार सम्ना क्याप्रयोजनहै धनीपात्रलोग उनकोपहिचान नहींसक्तेहरि
ोपरसुख भक्तोंका सबअर्थपरमेश्वर निकालदेतेहैं सोमनुष्यको यहबातस
व तक्मिझकरसन्तोष रखनाचाहिये कि जिसनारायणने मुझेउत्पन्न
व मेवेकियावहीजीविका देनेवालेहैंकभी भूंखानहींरक्खैंगे जबमैंमाता
नका के पेटमेंथा तबवहींपरमेश्वर मुझेभोजनपहुँचातेथे अबकिसतर
कोवर्त्तन मैंभूंखारहूंगा व उन्हींपरमेश्वरने उत्पन्नहोनेसे पहिलेहमारी
न होगमाताकी छातीमेंमेरेपीनेके वास्तेदूधतैयारकर रक्खाथासोथोड़ा
रहता साविचारकरके समझनाचाहियेकिकुचोंमेंसबमांसरहताहैविना
व धुल परमेश्वरकीदया व कृपाउनमें दूधकिसभांतिउत्पन्नहुआ व यह
ा न जहालदेखनेपरभी जोमनुष्यसन्तोषनरक्खे व परमेश्वरकोभूलक
चिथड़े खानेपहिरनेका शोचकरैउसे मूर्खसमझनाचाहिये देखोजोको
ालेवे गाय व बैल आदिपशुओंको अपनेद्वारपरबांधतेहैं वहलोगउन
आदिके घास व दानेकाशोचरखतेहैं नारायणजीजोसबकी जीविकादे
परमेश्व वालेहैं वहकिसतरह अपनेदासकीचिन्ताछोड़कर उसेभूंखा र
रक्षा प खैंगे उससमयतोपरमेश्वरने तुझकोनहींभुलाया जबतूएकबूंद
केवास ानीकेसमानथा फिरपरमेश्वरने अपनेमहिमासे तेरेहाथोंमेंदश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंगुलीउत्पन्नकरके दोनोंकाँधोंपर दोभुजाबनाई अबतूकिस
रहजानताहै कि नारायणजी मुझेभूलजावेंगे हेराजन् किसकी
सामर्थ्यहै जोपरमेश्वरकेगुणोंकाहाल जानसकेपहिले नित्यश्व
साचढ़ावनेका साधनकरै व योगाभ्यासकेसाथ अपनाप्राणब्रह्मांड
पर चढ़ावे व फूलकमलका ध्यानहृदयमें कि जिसमेंहज़ार पत्ते
होकरमुंह उनकानीचे है अपनेध्यानमें उसफूलकामुख ऊपरको
करै यहसाधनकरनेसे उसकामनइसतरह निर्मलहोजायगा जिस
तरह लोहामुर्चालगाहुआ सिकलकरनेसे चमकनेलगताहै औ
जबमनशुद्धहोजायगा तबउसफूलमें उसको परमेश्वरका छोट
स्वरूपदिखलाई देकरऐसा सुखमिलेगा जोउसनेकभीनहींपाय
था और उससुखपर वहमोहितहोकर दूसरीवस्तुकी चाहनानह
रक्खेगा जबवहइसपदवीको पहुंचातबअच्छा योगीश्वरहुआफि
र उसकोकुछयज्ञ व तपआदिकरनेका प्रयोजननहींरहता और
हपरमेश्वरका चमत्कारसबजीवोंमें एकसादेखकर किसीकेसा
शत्रुता व मित्रतानहींरखतासो हेराजन् पहिलेतुमविराट्रूपक
ध्यानकरो जबतुम्हारामन स्थिरहोजावेतब अपनेहृदयमें उसी
मलकाध्यानलगावो उसफूलमेंतुमको अंगुष्ठप्रमाण चतुर्भुजी
पपरमेश्वरका श्यामरंगनीलमणि ऐसाचमकताहुआ शंखच
गदापद्मचारोंहाथमें लियेजड़ाऊकिरीट व मुकुटमस्तकपर व
कराकृत कुण्डलकानोंमें व वैजयन्तीमाला व वनमालगलेमें
नवरत्नजड़ाऊभुजापर व कर्द्धनीघुंघुरूदार कमरकेबीच व पैरों
कड़ापहिने व पीताम्बरबांधे उपरनाओढेहुये लम्बीभुजा बां

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की रचनाकर उससमय मैंने मनमेंविचारकिया कि किसतरह संसारकी उत्पत्तिकरूं तबउन्हीं नारायणजीकी मायासे सात्त्विक राजसतामस तीनगुणप्रकटहुये और मुझकोअपनेहृदयमें बुद्धि का चमत्कारदिखलाईदिया तबमैंने उसीतीनोंवस्तुके सामर्थ्यसे सारासंसार व पांचोंतत्त्व उत्पन्नकरके पृथ्वीकोरचा व मिट्टी व आग व पानी व हवा व आकाशइनपांचतत्त्वोंसेसबजीवोंका शरीरबनाया और जो पृथ्वीमैंने कमलकेपत्तेसेबनाई थी वहपानीपर नहीं ठहरतीथी हज़ारवर्षतक बराबरहिलतीरही जबहमनेनारायणजी से पृथ्वीके हिलनेकाहालकहा तबउसी आदिपुरुषने अपनीशक्ति से पृथ्वीको पानीपरस्थिर करदिया तो हिलनाउसका बन्दहोगया उसीशक्तिकोब्रह्माण्ड व विराट्रूपकहतेहैं व वेदमेंलिखाहै किउस रूपकेहज़ारशिर व हज़ारहाथ व हज़ारपांव व हज़ारआंख व हज़ार कान हैं॥

छठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी को नारदजीसे नारायणजी के विराट्रूप का हाल कहना॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् ब्रह्माजीने नारदसेकहा नारायणजी के विराट्रूपका हालइसतरहपरहै कि सातोंलोक ऊपरके कमरकेऊपर व सातोंलोक नीचेकेकमरसे नीचेउनका तनुसमझनाचाहिये व अग्निमुख व वृक्षशरीरकेरोम व दशोंदिशाकान व समुद्र पेट व सूर्यआंख व पहाड़तनुकीहड्डी व नदियांशरीरकीनस व हवा श्वासा व इंद्रादिकदेवताभुजा व अश्विनीकुमारदेवतानाक व सब सुगंधनाककाछेद व आकाश आंखोंकागोलक व दिनरातपलके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भांजना व जलपैर व जगत्का स्वादजिह्वा व यमराजदांत व मा
या हँसी व लज्जाऊपरकाहोंठ व लालचनीचेकाहोंठ व धर्मछा
ती व अधर्मपीठ व मेघघटा शिरकाबाल व वर्षाकापानी वीर्यउन
के विराट्रूपमें समझनाचाहिये सिवायइसके और सब व्यवहार
जगत्के इसीरूपमें वर्त्तमानहैं इसलियेतपस्वी व ऋषीश्वरलोग
नारायणजीका प्रकाशसबजगह एकसासमझकर किसीकोदुःख
नहींदेते व हराबृक्षकाटनेसे अवश्यसमझनाचाहिये कि परमेश्वर
को दुःख पहुंचेगा संसारमेंहानि व लाभयश व अपयशदुःख व
सुख परमेश्वरकी इच्छासेहोताहै व जो कुछश्राद्धादिकमेंपितरोंके
नाम व यज्ञादिकमेंदेवतोंकेनाम परसंसारीजीवदेतेहैं वहउसीपर
मेश्वरकोपहुंचताहै व सबजीव जड़ व चैतन्यके उत्पन्न व पाल
न व नाशकरनेवाले वहीअविनाशीपुरुषहैं उनपरकोई दूसरामा
लिकनहींहै हेनारद जबसंसाररचनेकीआज्ञा मुझेमिली तबमैंने
नारायणजीकी दया व कृपासे दक्षप्रजापतिकोउत्पन्नकिया उ
ससे बहुतमनुष्यहुये व उन्हीं नारायणजीकेचरणोंका ध्यान अ
पनेहृदयमें रखनेसे मुझेसामर्थ्य संसाररचनेकीहै और वहीपरमे
श्वर आदि व मध्य व अन्तमें सदाएकतरहपररहकर घटने व ब
ढ़ने व पुरानेहोनेसे रहितहैं व कोई संसारीबस्तु उनकेरूपसेबाहर
नहींहै व बुद्धिइतनीसामर्थ्य नहींरखती जो उनकीस्तुतिकरसकै
व नारायणजीने अपनीइच्छा व लीलाकरने व संसारीजीवोंके
भवसागरपारउतरनेकेवास्ते मर्त्यलोकमें चौबीसअवतार धारण
कियेहैं सोमनुष्यकोचाहिये कि सदा उनअवतारोंकीलीलाआ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समें चर्चा रखकर बीचध्यान परमेश्वरके व नाम व स्मरण में लीनरहैं तब अन्तःकरण उनकाशुद्ध व पवित्रहोकर उसमेंपरमेश्वरका प्रकाशचमकै व आवागमनसे छूटकरभवसागरपार उतर जावें देखोउन्हीं परमेश्वरकाभजन व स्मरणकरनेकेप्रतापसे ऋषीश्वर व तपस्वीलोग जो कुछकिसीको शाप या आशीर्बाददेते हैं वहबात उसीसमय होजातीहै ऋषीश्वर व महात्मालोग मुझसेवेदादिक सीखकर संसारमें प्रकटकरतेहैं व परमेश्वरके वरदान देनेसे मेरावचन झूठा नहींहोता व मनमेरा पापकीतरफ़ नहींजाता व मेरीइन्द्रियां अधर्मकीचाहना नहींकरतींसो उसीपरमेश्वरका ध्यानकरनेसे यहतीन गुणमेरेमें प्रकटहुयेहैं व परमेश्वरने सबअंग मनुष्यका एकएक देवताको सौंपदियाहै सो एकएकरूप सब देवताँका अपनेलोकमें रहकर उनकाप्रकाश सूर्यकेसमानजिसतरह पानीभरे बर्तनोंमें पड़ताहै उसीतरह सबजीवोंके तनुमें समझनाचाहिये व तीसरा उनकाप्रकाश बीचमूर्त्ति व देवमन्दिरों में रहताहै व सूर्यकाप्रकाश व चन्द्रमाकी किरणोंपड़नेसे चांदी व सोना व तांबाआदिकी खानि जगतमें प्रकटहोतीहैं व जो पाप व अधर्ममनुष्यसे होतेहैं उनके प्रायश्चित्त धर्मशास्त्रमें लिखे हैं यह सबहाल कहकर ब्रह्माजीने जो चारश्लोक मूल श्रीमद्भागवत के नारायणजीके मुखारविन्दसे सुनेथे वहचारोंश्लोकनारदजी से कहकरबोले हे नारद वह परब्रह्मपरमेश्वर निरंकाररूप किसी के देखनेमें नहीं आवते व उनकोकोईहाथसे पकड़ने नहींसक्ता व किसीको ऐसी सामर्थ्यनहींहै जो उनकेसब अवतारोंकाहालवर्णं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नकरसके किसवास्ते कि सबजीवोंमें उन्हींकीज्योतिका प्रकाश है मैं परब्रह्मपरमेश्वरके चौबीसोंअवतारोंकाहाल जो सगुणरूप संसारमेंधारणकियेथे अपनी बुद्धिप्रमाणकहताहूं॥

सातवां अध्याय॥

ब्रह्माजी का नारदजी से चौबीसों अवतारोंका हाल वर्णन करना॥

ब्रह्माजीने नारदजीसेकहा कि पहिलाअवतार सनकसनन्दन व सनातन व सनत्कुमारका मेरेनाकसे उत्पन्नहुआहै कि वहलो गतप व ध्यानपरमेश्वरमें लीनरहतेथे उसतपकेप्रतापसे कईकल्प बीतनेपरभी सदापांचवर्षकी अवस्थाके बनेरहतेहैं दूसराअवतार बाराहजीका इसलियेधारणकिया कि जबमुझेसंसार रचनेकेवास्ते आज्ञाहुई तबमैंने नारायणजीकी कृपासेकमलके पत्तेकी पृथ्वी बनायासो हिरण्याक्षदैत्य वहधरतीउठाकर पातालमेंलेगया जबमैंने वैकुण्ठनाथसे विनयकिया कि विना मेरेधरती उत्पन्न कियेहुये जीवकहां रहैंगेतबउन्होंने बाराहरूपधरकर पातालमें जाके हिरण्याक्षको मारडाला व पृथ्वीकोवाहरलाकर अपनी महिमासे जलपरस्थिर किया सो यहधरतीकर्मोंका फलदेनेवाली है जैसाकर्मशुभ या अशुभकोई करैवैसाफलपावे तीसराअवतार यज्ञ पुरुषकालके संसारीराजाओंको यज्ञकरनेकेवास्ते राह बतलाकर कृतार्थकिया चौथाअवतार हयग्रीवका धारणकरके पातालमें जाकर मधुकैटभ दैत्यकोमारडाला और जोवेद वहदैत्यचुरा लेगयाथा उसेलाकर मुझेदिया पांचवां अवतार नारायणजी नेमूर्तिनामकन्याधर्म्म ऋषीश्वरसेधारणकरकेवदरीकेदारस्थान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उत्तराखण्डमें बैठेहुये इसइच्छासे तपकरतेहैं जिसमेंसंसारीलोग मुझेतपकरते देखकरआपभी परमेश्वरकातप व स्मरणकिया क रें छठवां अवतार कपिलदेवमुनिकालेके देवहूतीअपनीमाताको सांख्ययोग ज्ञान सिखलाकर मुक्तिदिया सातवांअवतार दत्तात्रे यजीकालेकर राजायदुको ज्ञानसिखलाया जिसकेप्रतापसे वह मुक्तहुआ व दत्तात्रेयजीने चौबीस गुरुकियेथे उनकाहाल एका दश स्कन्धमेंलिखाहै आठवांअवतार ऋषभदेवजीका लेकर स रावगी व जैन धर्मियोंकी जातिसंसारमें प्रकटकी नवांअवतार रा जा पृथुकालेकर वेन अपनेपिताको नरकजानेसे बचाया व गऊ रूपीपृथ्वीको दुहकरसब ओषधियां दूधकेसमान उसमेंसे निका लीं व पहाड़ोंको जो जगह २ पृथ्वीछेकेथे उठाकर उत्तराखण्डमें रखदिया व पृथ्वीसंसारी जीवोंके रहनेवास्तेखाली करकेनगर व गांवबसाया दशवां मत्स्यावतार लेकरराजा सत्यव्रतकोप्रलयका तमाशा दिखलाया ग्यारहवां कच्छपअवतार धारणकरकेसमुद्र मथतेसमय मन्दराचल पहाड़अपनी पीठपरलेकर चौदहरत्न उस मेंसे निकालेबारहवांअवतार धन्वन्तरिवैद्यकालेकररोगोंके नाश करनेकेवास्ते ओषधीसमुद्रसे निकालीं तेरहवां अवतार मोहिनी का धरकरदैत्योंको अपनेरूपपर मोहितकिया व अमृतका कल शा जो उन्होंनेधन्वन्तरि वैद्यसेबिनादेवतोंकेभागदेनेके छीनलि याथा लेकर वहअमृतदेवतोंको पिलाया चौदहवांनृसिंह अवतार धारणकरके हिरण्यकशिपु दैत्यकोमारा पन्द्रहवां बामनअवता रधरके तीनपग पृथ्वीबलिसे दानलेकर देवताओंको दिया सोल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हवांअवतार हंसपक्षीका लेकर सनत्कुमारको ज्ञानसिखलाकर गर्व उनका तोड़ा सत्रहवांअवतार नारायणनामलेकर ध्रुवभक्त को दर्शनदिया अठारहवांहरि अवतारधरकर गजेन्द्रकाप्राण ग्राहसे बचाया उन्नीसवां अवतार परशुरामजीका लेकर जोजोदुष्ट पृथ्वीपर हरिभक्तोंको दुःखदेतेथे उन्हें मारडाला व इक्कीसबारक्षत्रीराजाओंको दूसरेक्षत्रियों समेतमारके पृथ्वीउनकी छीनकर ब्राह्मणोंको दानकरदिया बीसवांअवतार रामचन्द्रजीका धारण करकेपापी रावणको दूसरेराक्षसों समेत जोगऊ व ब्राह्मणकोदुःख देतेथे मारडाला व लङ्काका राज्यबिभीषणको देकरहनुमान् जीको यशदिया व इक्कीसवां अवतार वेदव्यासजी का धारण करकेवास्ते भवसागर पार उतरनेसंसारीजीवों के चारवेद व महाभारत और अठारह पुराण बनाये व बाईसवां अवतार श्रीकृष्णजीकालेकर कौरव व पाण्डवों से महाभारतकराया व कंस व कालयमन व जरासन्धआदि अधर्मीराजाओंको मारकर पृथ्वीका भारउतारा व संसारमें बहुतसी लीलाकी जिसकावर्णन दशमस्कंधमेंलिखाहै व तेईसवां बौद्ध अवतार लेकरदैत्यों का यज्ञकर ना वारनकिया व कलियुगके अन्तमें चौबीसवां अवतारकलंकी धारणकरके तलवार हाथमें लियेहुये नीलेघोड़ेपर सवारहोकर अधर्मी व पापीलोगोंको मारैंगे व सतयुगका कर्म्म संसारमें आरम्भकरके धर्म्मकीवृद्धि करैंगे हेनारद चौबीस अवतारकाहाल अपनी बुद्धिके अनुसार हमनेतुमसेकहा जो मनुष्य अज्ञानीहोकर परमेश्वरको अच्छीतरहसे न जाने उसकेवास्ते प्राप्तहोनेज्ञान व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पावनेमुक्ति इनसब अवतारोंकीकथा व लीला अवश्य सुननाचा
हिये व जिसमनुष्यने ज्ञानीहोकर सबजीवोंमें परमेश्वरका प्रका
श एकसादेखा उसेब्रह्मज्ञानी जानकर जीवन्मुक्त समझना उचि
तहै हेनारद मैं ब्रह्मा संसारकीरचना करनेवाला व विष्णुजी सब
जीवोंकापालन व महादेवजी सबकानाशकरते हैं यहतीनों अव
तारभी नारायणजीकेहैं व सारासंसार परमेश्वरकी मायासे महा
जालमें प्रीतिसे अपनीस्त्री व लड़के व द्रव्यमें फँसारहताहै जिस
मनुष्यपरनारायणजी बड़ीकृपाकरतेहैं वहसत्संगकरकेइसमाया
जालसे छूटसक्ताहै नहींतोसंसाररूपीजालसे छूटनाबहुतकठिन
समझो व इसमहाजालसेछूटनेकेवास्तेसिवाय भजन व नामस्म
रण व कथासुनने व लीलाअवतार परब्रह्मपरमेश्वरके दूसराकुछ
उपायनहीं है व अवतारोंकीलीलाकासुननाचारोंवर्णकोचाहिये
व चतुःश्लोकतत्त्वज्ञान श्रीमद्भागवतकेजो हमनेनारायणजीसे
सुनेथे सो तुमसेकहा उन्हीं परमेश्वरका भजन व स्मरणकरनेसे
तुम्हारेमेंभी सबगुणप्रकटहोवेंगे हेनारद कईबेरमेरेसे ब्रह्मा व तुम
सेनारदसंसारमें उत्पन्नहोचुके हैं इसकाहालसिवाय परब्रह्म पर
मेश्वरके दूसराकोईनहीं जानता प्रत्येककल्पमें सबजीव अपने
कर्मानुसार फिरजन्मपावते हैं व जिसदेशमें देवस्थान नहींरहक
रपरमेश्वरकी कथानहींहोती व जिसघरमें कोईयज्ञ व होमनहीं
करता वहांकलियुगकाबास अधिकहोताहै व वहांकेमनुष्य क्रोध
व लोभ व अहंकारमें भरेरहतेहैं व यही क्रोधादिकपापकी जड़
होकरमनुष्योंसे अनेकतरहका अधर्मकरातेहैं व परमेश्वरकी मा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याको थोडासामहादेवजी व दक्षप्रजापतिदेवता व सनकादिक व भृगुऋषीश्वर व प्रह्लाद व राजाबलि व अम्बरीष व प्राचीनबर्हिषआदि जानते हैं व जिसजीवको अहंकारनहींहोता वहीमनुष्य परमेश्वरकीमायासे छूटकर भवसागरपार उतरजाताहै और जो लोगहरिभक्तहोकर परमेश्वरकी शरणमें रहतेहैं उनपरमायाका कुछबशनहीं चलता नारदजी यह प्रतापनारायणजीका ब्रह्मासे सुनतेही बहुतआनन्दहोकर बीणबजाते व परमेश्वरका गुणगा तेहुये चलेगये ॥

आठवां अध्याय ॥

राजा परीक्षितका श्रीशुकदेवजीसे धर्म व वेद व पुराण व योगाभ्यास आदिक का हाल पूंछना ॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर मनमें इसबातका बिचार किया देखो शुकदेवजीने नारायणजीकीकथा सुनना चारोंवर्णों कोकहा व मुझेउनसे उत्तमनहीं जानकर चारोंवर्णोंकेबराबरसम झा सो यहसन्देह छुड़ानेकेवास्ते पिछलेराजाओंकाहालजिन्हों ने परमेश्वरका भजन व स्मरणकरके अपनातन त्यागकिया है इनसे पूंछनाचाहिये ऐसाबिचारकर परीक्षितनेपूंछा हे महाराज अवतारोंकाहालसुनकर मेरामनबहुतप्रसन्नहुआ अबमुझे यह इच्छाहै कि सिवायलीला अवतारनारायणजीके दूसराहाल न सुनूंकिसवास्ते कि इसकथासुननेसे अन्तष्करण शुद्ध व पवित्रहो करपरमेश्वरका प्रकाश हृदयमेंप्रकटहोताहै व उसचमत्कारहोनेसेइसतरहसे क्रोध व लोभ व अहंकार व कामदेवकामद शरीरमें नहींरहता जिसतरह संसारीजीवोंके स्थानमेंराजाके आनेसे घ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनकाशुद्ध व पवित्रहोजाताहै सो आपकृपाकरकेयहहालवर्णन कीजिये कि नारायणजी आदि ज्योतिनिरंकार ने जो विराट्रूप धारणकिया जिसस्वरूपमें सबसंसारीवस्तुहैं व एकसेलेकर लाखोंस्वरूप अनेकप्रकारके होजातेहैं इसकाक्याभेदहै व पिछलेयुगोंमें जिनराजाओंने बीचस्मरण व ध्यानपरमेश्वरके लीनहोकर तनुअपना त्यागकियाहै व जितनेतत्त्वहैं उनकीगिनती व परमेश्वरकी पूजाकीविधि व जिसतरहयोगीलोग योगाभ्यासकरकेअपनाशरीर छोंड़तेहैं व वेदकाजैसाधर्म व रूपहो व इतिहासपुराणकामाहात्म्य व जैसेसंसारमें प्रलयहोतीहै व जिसतरहपर यज्ञादिक करतेहैं व ब्रह्माण्ड व ऋषीश्वरोंकाहालजिसप्रकार जीवनरकसे निकलकरआतेहैं व पाप व अधर्मकरनेवालोंका मरनेकेउपांत क्याहालहोताहै और यहजीवसंसारमें कौनकामकरनेसे मायाजालमें फँसकरनष्टहोते हैं व कौनकर्मकरनेसे मुक्तिमिलतीहै इनसबबातोंका हालकृपाकरके वर्णनकीजिये यहबातसुनकर शुकदेवजी बोले हेराजन् तुझेयहसबहाल पूंछनेसेक्या प्रयोजनहै राजाने हाथजोड़कर कहामहाराज मैं चाहताहूं कि परब्रह्म परमेश्वरके सम्पूर्ण अवतारोंकी लीला सुनूं व अपनाशरीर नारायणजीकी चर्चा व ध्यानमेंछोंड़कर भवसागरपार उतरजाऊं यहबचनसुन शुकदेवजीनेकहा हेराजन् मनुष्यकातनुपानाबहुतकठिनहै जोकोई मनुष्यका तनुपाकरनारायणजीकी लीला व कथा नहीं सुनताउसको सिवायपछितानेके और कुछ हाथनहीं लगता और जोबाततुमने पूंछीहै उसकाहालसुनो जब परब्रह्मपरमेश्वर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चाहतेहैं कि संसारउत्पन्न करकेजीवोंकी बढ़तीकरें व अपनारू
रूप आपदेखकर मोहितहोवें जिसतरहमनुष्य अपनामुखदर्पण
में देखताहै और शीशाउलट देनेसेफिर कुछदिखलाई नहीं प
ताउसीतरह परमेश्वर सारासंसार अपनीइच्छासे उत्पन्नकरनेके
उपरान्तफिर उसकानाशकरके अपनेरूपमें मिलालेतेहैं इसलि
येजगत्में ज्ञानीउसीको समझनाचाहिये जोमनुष्यनारायणजी
के चौबीसअवतारोंकीकथा व लीलाअपने सच्चेमनसेसुनकर उ
पर विश्वासरक्खै व चिउँटीसेलेकर हाथीतकसबजीवोंमें परमेश्व
रका चमत्कार एकसाजानकर किसीकोदुःख न देवेइतनीकथा
नाकर सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहाजोहाल परीक्षि
तने शुकदेवजीसे पूंछाहै वहीबात एकबारब्रह्मकल्पमें ब्रह्मानन्द
रायणजीसे पूंछीथी॥

नवां अध्याय॥

शुकदेवजीको ब्रह्माके उत्पन्नहोने व चार श्लोक श्रीमद्भागवतका मूलहाल कहना जो श्रीनारायणजी ने कहा था॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् जबएककमलका फूलपरमेश्वरके
नाभिसे निकला व उसफूलमेंसे ब्रह्माउत्पन्नहुये तबब्रह्माने य
बात जाननाचाहा कि मैं कहांसे उत्पन्नहुआहूं जबबहुतविचा
नेपरभी यहभेदब्रह्माको नहींमालूमहुआ तबहारमानकर उ
फूलपर बैठरहे इसलिये समझनाचाहिये कि मायाभगवान्
ऐसीप्रबलहै कि जिसमायाकी रस्सीमें ब्रह्माभी बँधकर उनका
दनहींजानसके दूसरेकीक्यासामर्थ्य है जो परमेश्वरकीलीला
आदि अन्तकोपहुंचसके फिर ब्रह्माजीने उसी फूलपर बैठेहुयेच

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्लोकमूल श्रीमद्भागवतके आकाशबाणीमें सुना उसीआज्ञानु
सार तपकिया जबब्रह्माजीको तपकरनेसे हृदयमेंज्ञानहुआ तब
उन श्लोकोंका अर्थजानकर संसारकी रचनाकिया। व उनचारों
श्लोकोंका अर्थयहहै हेब्रह्मा जोसबकेपहिलेथा वहमैंहूं मेरेसिवा
य दूसराकोई नहींहै व जोकुछतुमदेखतेहो वहभीमुझेसमझो व
महाप्रलयके होनेउपरान्तभी सिवायमेरे और कुछनहींरहैगासब
संसारीबस्तुकी जड़ मैंहूं जिसतरहसोनेका गहनाहाथ व पैर बना
क व कान व सब अंगोंके पहिरनेकेवास्ते बिलगबिलग तैयारकरा
ओतो सबभूषणकानाम पृथक्पृथक्होताहै जबवहसब गहनातो
ड़कर गलाडालो तबफिर केवलसोनारहजाताहै वहीहाल मेरास
मझनाचाहियेमैं अकेलारहकर जबचाहताहूं अपनीइच्छासे अ
नेकरूप धारणकरकेसंसारमें अपनेबहुतनाम प्रकटकरताहूं फिर
जब इच्छामेरीअकेले रहनेकेवास्तेहोतीहै तबअकेलाहोजाताहूं
और देखने व सुनने व बोलने व भलेबुरेज्ञान जाननेकी सामर्थ्य
जोसब जीवोंमें है वहसबप्रताप मेरेप्रकाशसेसमझनाचाहियेजिस
तरह आकाशका घेरासबजगहहै उसीतरह मैं सबसेबलवान् होक
रतीनोंलोक व चौदहोंभुवनको अपनेवशमेंरखताहूं व मेरेसिवाय
सबसंसारीवस्तुओंको झूंठीसमझनाउचितहै व पांचतत्त्वसे सबसं
सारीजीव उत्पन्नहोतेहैं जिसतरहसंसारका सम्पूर्ण व्यवहारमेरे
बिराट्रूपमेंहै उसीतरह सबकेतनमें ज्योतिकाप्रकाश जिसेप्राण
कहतेहैं समझोजबतक वह चमत्कारसबके शरीरमेंरहताहै तबत
कचलने व फिरने व खाने व पीने व बोलने व इन्द्रियोंके सुखभो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गनेकी सामर्थ्यउसे रहतीहै जबवह प्रकाशशरीरसे निकलगया
तबवही तनमृतकहोकर गलसड़जाताहै व फिर उसशरीरसे कुछ
नहींहोसक्ता ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य व शूद्रचारोंवर्णमें मेरा
काशएकसाहै ज्ञानकीदृष्टिसे उनमेंकुछभेदनहींजानकर इसतरह
सबजीवोंमें नारायणजीका स्वरूपएकसा समझनाचाहिये जिस
तरह सूर्यकी छायासोने व चांदी व मिट्टी व लोहेआदिके वर्त्तनों
में बराबरपड़तीहै व जिसतरहसोना व चांदी व काठ व पीतल अ
नेकरंगके दानोंको एकतागेमें पिरोनेसेमालाहोजातीहै उसीतरह
मेरा चमत्कारसबजीवों में तागाकेसमानसमझो जबवहतागामा
लाका टूटगया तबवह सबदाने बेआदरहोजातेहैं सो हे ब्रह्मा तुम
इसीतरह सबजगहमुझको जानकरजगत्की रचनाकरो संसारी
मायामें फँसकरआनन्दसे नहींरहोगे व तपकरनेसे तुमकोमेरा द
र्शनहोगा तुममनमें दयारखकर सबजीवोंकी रचनाकरना व सा
रासंसार तुमकोमानकर ऋषीश्वर व ज्ञानीलोग तुम्हारीस्तुतिक
रेंगे व संसाररचनेमें तुम्हें कुछपरिश्रम व दुःखनहीं मालूमहोगा
व तुममेरे चतुर्भुजीछोटे स्वरूपकाध्यान जोमहात्मा व ऋषीश्व
र व नन्द व सुनन्दआदिदासोंके मध्यमेंविराजमानहैकरना यह
आकाशबाणी सुनकर ब्रह्मा नारायणजीका चरणछूने उपरान्त
हाथजोड़कर बोले हेदीनानाथ मुझेयह वरदानदीजिये जिसमें
आपकोअपना मालिकजानतारहूं व संसारके उत्पन्नकरनेमेंमु
झे आशंकि न होवे ब्रह्माका यहवचनसुनतेही परब्रह्म परमेश्वर
ने उन्हें इच्छापूर्वक वरदानदेकरकहा हेब्रह्मा तुममेरीआज्ञायाद

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रखकर संसारीव्यवहार परछाहींकेसमान झूठासमझतेरहना ता तुमको मेरीमाया नहीं व्यापैगी ऐसा कहकर नारायणजी ब्रह्मा के ध्यानसे गुप्तहोगये इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हेरा जन् अर्थचारों श्लोक श्रीमद्भागवतकायहीहै जो मैंने तुमसेकहा व ब्रह्माजीने अपनेदूसरे बेटोंको यहहालनहीं बतलाया व नारद को ज्ञानी समझकर यह भागवतज्ञान उनसेकहाथा सो नार दजीने व्यासजीको उपदेशकिया व वेदव्यासजी हमारे पिताने उसको विस्तारपूर्वकलिखा व श्रीमद्भागवत नाम रखकर मुझे प ढ़ाया व इसीज्ञानको मैत्रेयऋषीश्वरने यमुनाकिनारे विदुरजी से कहाथा सो अबवहीकथा मैं तुमकोसुनाताहूं और हेराजन्जो मनुष्य अहंकारसे अपनेको मैं समझकर परमेश्वरका माहात्म्य नहीं जानता वही संसार व परलोकमें दुःखपाताहै ॥

दशवां अध्याय ॥

पंचतत्त्व से शरीरका तैयार होना व देवतोंका सबके अंगमें बास रहना ॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् इसभागवतमें दशप्रकारकी कथाहै उसका पृथक्पृथक् हालकहताहूंमनलगाकरसुनो संसारकीउत्प त्तिव जगत्का नाशहोनासंसारकोस्थिररखना सबजीवोंकापाल नकरना परमेश्वरकीलीलामन्वन्तरोंकाहाल ईश्वरकीकथा विर क्तमुक्तिनारायणजी सबजगत्के मालिकहैं हेराजन् इसनवलक्ष णकाहालसुनकरवैसीकरना केवलदशवेंलक्षणकेजाननेकेवास्ते हेजब आदिपुरुष परमेश्वरने जोशेषनागकी छातीपरशयनकर नेहैं अपनेकोअकेले देखकरमननहींलगनेसेचाहा किहम अनेक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तरहकारूप धारणकरके देखैं तबउन्होंने अपनीमायाको आज्ञा
दिया कि वास्ते अधिकहोनेसंसारके उपायकर उसीसमय उसमा
याने स्वर्गपाताल मर्त्यलोकबनाकर राजसतामस सात्विक तीन
गुण प्रकटकिया सो तामससे अहंकार व राजससेहाथ व पांव व
बाकूवलिंग व गुदापांचकर्म्मइन्द्रिय व सात्विकसेआंख वकान
वजिह्वा वनाक व त्वचापांचज्ञानइन्द्रियप्रकटहुईं सिवायइसके
तमोगुणसेपृथ्वी व आकाश व जल व अग्नि व हवापांचोतत्त्व व
सतोगुणसेशब्द व मूर्ति व स्वाद व सूंघना व बुद्धिसबके तनुमें
प्रकटहुई व दशोंइन्द्रिय शरीरकी एकएकदेवताको सौंपीगईं मु
हमेंअग्निदेवता जिह्वामेंवरुण कानमेंदिशा नाकमें अश्विनीकु
मार हाथमेंइन्द्र आंखमेंसूर्य्य लिंगमेंमित्रावरुण गुदामेंयमरा
ज पांवमेंविष्णु बुद्धिमें ब्रह्माजीका बासरहताहै सबदेवतोंने चा
हा कि अपनेसामर्थ्यसे हमलोग इसमूर्तिको जिलाकर बुलावें
वहँसावें इसलियेउन्होंने अपनेपराक्रमसे बहुतउपायकियाजब
उनकेसामर्थ्यसे वहमूर्ति हिलभी न सकी तबउन्होंने हारमान
कर हवाकीतरफ जिसकोस्वामी कहतेहैं इशाराकिया जबउस
हवासेभी कुछनहींहोसका तबसबदेवता ध्यान चरणनारायण
जीका जिनकीकृपासे वहमूर्ति तैयारहुईथी करकेबोले हेजगत
कर्त्ता बिनादया व कृपाआपकी हमलोगोंसे कुछनहीं होसक
जेश्र आदिज्योति निरंकारने थोड़ासा अपनाप्रकाशउसमूर्ति
प्रवेशकरकेकहा तुमउठो तबउस तेजकेबलसे सब देवतोंको
पने २ स्थानपर सामर्थ्य उठनेबैठने व बोलने आदिकी प्रा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होकर वहमूर्तिचलने फिरनेलगीसो हेराजन् बीचशरीरमनुष्यके हरएकअंगमें देवतालोगबासकरके यहइच्छारखतेहैं कि हाथसें दानदेकर जिह्वासे परमेश्वरकाभजन व स्मरणकरके कानोंसे उनकीकथा व लीलासुनैं व पैरोंसेतीर्थयात्रा व देवस्थानपर जाकर आंखोंसेप्रकट व ध्यानमेंपरमेश्वरका दर्शनकरें जिसमेंहमलोगोंकाभीभलाहो व मनुष्यकेतनुमें रजोगुण या तमोगुण या सतोगुण एकवस्तुआठोंपहर वर्तमानरहतीहै व एकगुणकेसमय दूसरागुण नटकेखेलकेसमान छिपजाताहै और यहहालहमनेतुमसे ब्रह्मकल्पकाकहा व इसीतरहसबकल्पमें संसारकी उत्पत्तिहोतीहै॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीमद्भागवतभाषा

तीसरा स्कन्ध ॥

विदुरजीका उद्धवभक्तसे राहमेंभेंटहोना व विदुरका मैत्रेयऋषीश्वरसे यमुना किनारे मिलना व जय विजय व कपिलदेव अवतार की कथा ॥

पहिला अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी व विदुर आदिक का समझाना राजादुर्योधन को राज्यभाग बांटदेने वास्ते राजायुधिष्ठिरके और नहीं मानना उसको कहना किसीका ॥

शुकदेवजीने कहा हेराजन् जोबाततुमने हमसेपूंछीथी इसी बातकाउत्तर नारायणजीने लक्ष्मीसेकहाथा व लक्ष्मीजीने शेषनागको बतलाया व शेषजीने वात्स्यायन ऋषीश्वरकोसुनाया व वात्स्यायनजीने मैत्रेयऋषीश्वरको उपदेशकिया व मैत्रेयजीने विदुरसेकहा इतनीकथा सुनकरराजापरीक्षितने पूंछा हेस्वामिन् विदुरजी व मैत्रेय ऋषीश्वरसे किसजगहपर भेंटहुईथी उनदोनों मनुष्यज्ञानी व परमभक्तपरमेश्वरके मिलतीसमय बड़ाआनन्द

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुआहोगा उनकाहालसुनाइये शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जिस समय राजाधृतराष्ट्रने युधिष्ठिर आदिअपने भतीजोंकोदूसराजा नकर दुर्योधन आदि अपनेपुत्रोंको प्यारासमझा व दुर्योधननेअ र्जुन आदिपांचोभाई पाण्डवोंको लाहकेकोटमेंटिकाकर आग लगवादिया व भीमसेनके खानेकेवास्ते विषकालड्डू बनवाकरभे जा व अधर्मसेजुआ खेलकरसब राज्यवधनउनकाजीतालिया व द्रौपदीऐसी पतिव्रतास्त्रीको राजसभामेंनंगी करनेकेवास्तेउसका चीरदुश्शासनसे खिंचवाया व युधिष्ठिर आदिपांचो भाइयोंको तेरहवर्षका बनबासदिया व श्रीकृष्णजीकी इच्छाकरनेसे सबज ाहपर उनकाप्राणबचा जबबनबासकरके युधिष्ठिरआदि फिरआ तबभी उनकाहिस्सा राजादुर्योधन नहींदेताथा इसलिये श्रीकृ ाजी व कृपाचार्य्य व विदुरआदिकसबकोधृतराष्ट्रने बुलाभेजा ा वहलोगकौरव व पाण्डवोंका झगड़ाछुड़ावनेके वास्तेपंचहो करराजा दुर्योधनकी सभामेंगयेउससमय श्रीकृष्णजी महाराज ा भीष्मपितामह और द्रोणाचार्यने धृतराष्ट्रकोसमझाया कि हे जन् तुम्हारेबेटे व भाईकेबेटोंमें कुछभेदनहीं है दुर्योधनआदि मकोस्वर्गमें लेजानेनहींसक्ते व न युधिष्ठिर आदिकतुम्हें नरक हुंचावेंगे इसलियेतुमको उचित है कि संसारीव्यवहार झूंठास झकरयुधिष्ठिरादिक पांचोभाइयोंके खाने व खर्चकरनेकेवास्ते छगांव उनकोददेव इसबातमेंतुम्हारायशहोगा राजाधृ हबातसुनकर उसपर कुछध्यान न कियाजब विदुरर्जराष्ट्रने सभामें बैठेथे धृतराष्ट्रअपने भाईकीमति अधर्मपरा ने जोउ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थार्थबात समझकरकहा कि हे भाईतुम युधिष्ठिरादिका हिस्सा
डालो किसवास्ते कि वे साधुलक्षण किसीकेसाथ बैरनहींरखव
सबकोअपना मित्रजानतेहैं व युधिष्ठिर व भीमसेन व अर्ज्जुन
नकुल व सहदेव पांचोंभाइयोंको ऐसीसामर्थ्यहै चाहैं तो उनमें
एकमनुष्य दशोंदिग्पालोंको लड़ाईमेंजीतलेवे सिवायइसके
कृष्णजी वैकुंठनाथ उनकेसहायकहैं और तुमदुर्योधनअपनेबे
का मोहकरके जो समझतेहो कि मेरेसौपुत्र बड़ेबलवान् लड़ने
लेहैं सो श्यामसुन्दरके विमुखरहनेसे उनकाकिया कुछनहीं हो
क्ता इसअधर्ममें तुम्हाराधन व धर्मदोनों नष्टहोगा व दुर्योधन
म्हारा बेटा श्रीकृष्णजीसे बैररखताहै इसलियेउसकेसाथ प्रीति
रने व उसकाकहा माननेमें अपनेवास्ते अच्छा न समझो व यु
ष्ठिर आदि पांचोंभाइयोंका हिस्साराज्यबांटिदेव व दुर्योधनसे
राज्य व धनकेमदमें अन्धाहोरहाहै राजसिंहासन छीनलेव इ
में तुम्हारेकुल व परिवारका कल्याणहै नहींतो श्रीकृष्णजीसे
करने में तुम्हारा पतालगनाकठिनहै जब विदुरजीके समझाने
भी धृतराष्ट्रकुछनहीं बोलेतब दुर्योधननेक्रोधकरके आज्ञादी
विदुरकोमेरी सभासेबाहर निकालदेव यहहमारेकुलमें दासी
होकर सबबातोंमें पाण्डवोंका पक्षकरताहै व पालनइसका हम
रते हैं और सभामेंहमारेबराबर बैठकरहमको ज्ञानसिखलात
विदुरसे दुर्योधनकी सनकर जब उसकेसिपाहियोंने विदुरजी
विदुरजी व कालनाचाहा व धृतराष्ट्रनेदुर्योधनको ऐसावचनक
मनुष्यज्ञानी नहीं कियातब विदुरजीने समझाकदाचित् कोई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सभासेबांहपकड़कर उठादेगा तो अधिकअपमानहोगा इसलिये आपयहांसे उठजानाउचितहै व वृन्दाबनविहारी कौरवोंकानाश करनाचाहतेहैं इसीवास्तेधृतराष्ट्र आदिककौरवोंके मनमेंअधर्म समाकर अच्छीबात समझानाइनको बुरामालूमहोताहै ऐसा विचारकर विदुरजीवहांसे उठकेद्वारेपर चलेआये व उन्होंने यह समझके धनुर्बाणादिकशस्त्र अंगसेउतारकर वहांधरदिया किशस्त्र समेत चलेजानेमें दुर्योधनकोइसबातका संदेहहोगाकि यहपांडवोंकी तरफजामिला व उसीजगहविदुरजीने अपनावस्त्र भी उतारडाला केवल एकलँगोटी व चादरपहिनके हस्तिनापुरसे उत्तराखण्डमें तीर्थयात्रा करनेकेवास्ते चलेगये व दूसराकारण शस्त्रास्त्र रखदेनेका यहहै कि विदुरजीपरमभक्त होनहारके जाननेवाले समझेकि अबदुर्योधनआदि कौरवोंकानाश होनेवालाहै व मैंने इनकेकुलमें जन्मलियाथा इसलियेमुझे पहिलेसे अपनाशस्त्र रखदेनाचाहिये जिसमेंयुद्धकरना न पड़े सो विदुरजीने वर्षदिनतक भरतखण्डकी तीर्थयात्रा करतेहुये यमुनाकिनारे पहुंचकर वहां सबदेवतोंका दर्शनकिया व समीपकुटीमैत्रेय ऋषीश्वरके बहुत दिनतकटिकेरहे उन्हींदिनों विदुरजीके पीछे हस्तिनापुरमें महाभारतहोकर दुर्योधनआदि कौरवामारेगये व राजायुधिष्ठिरने श्रीकृष्णाजी की कृपासेराजगद्दीपाया जब उद्धवभक्त श्यामसुन्दरके वैकुंठधामजानेकेउपरान्तद्वारकासे बदरिकाश्रमकोजाते हुये मैं विदुरजीसेभेंट हुई सोदोनोंमनुष्य परमभक्तपरमेश्वरसमें गलेमिले व विदुरजीउद्धवभक्तसे हालमारेजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदिक व राजसिंहासनपर बैठनायुधिष्ठिरका सुनकरपहिलेपी
ताये फिरइच्छाश्यामसुंदरकीइसीतरहपरसमझकरसंतोषकिय

दूसरा अध्याय ॥

विदुरजी को उद्धवभक्त से श्यामसुन्दर का हाल पूछना ॥

शुकदेवजी बोले कि हेराजन् विदुरजीनेउद्धवसे मिलनेकेउ
रान्तपूछा हे उद्धवतुम श्रीकृष्णजीसे एकक्षणबिलग नहींहोते
आजक्या कारणहै जो मैं तुमकोअकेले देखताहूं कहो श्याम
दर मेरेप्राणप्यारे बलरामजी व प्रद्युम्न व अनिरुद्ध व साम्ब व
रसेन व वसुदेव व देवकी व अक्रूरआदिक सब यदुबंशियों समे
अच्छेहैं व युधिष्ठिर व अर्ज्जुनआदिक पाण्डव व कुन्ती व द्रौ
दीसहित धृतराष्ट्र मेराभाई अन्धाजिसने बेटोंकेमोहमें फँसकर
पनेनरकजानेका उपायकियाथा सबलोगकुशलसेहैं और मैं
नताहूं कि श्यामसुन्दरने पृथ्वीकाबोझ उतारनेकेवास्ते अवत
लेकर धृतराष्ट्रआदिक कौरवोंका ज्ञानहरलियाहै व जो राजा
ग अपनेराज्य व सेना व धनकाअभिमान करकेअधर्मकरते हैं
न्हींलोगोंके मारनेकेवास्ते श्रीकृष्णजी वैकुंठनाथने अवतार
याहै सो तुमश्यामसुन्दरका हालबतलाओ कि उनकीचर्चाक
में तीर्थस्नानका फलमिलताहै यहबातसुनतेही उद्धवभक्त
खनेहैं आंशू भरकर रोनेलगे और कुछउत्तरनहीं दिया जबवि
विदुरसव कोउदास व रोतेहुयेदेखकर जानाकि श्रीकृष्णजी अ
विदुरजी व पे इसलिये मेरेपूंछनेसे उद्धवउनका ध्यानकरके रो
मनुष्यज्ञानी परांतउद्धवने आंखैं पोंछकरकहा कि विदुरजी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केशवमूर्त्तिका हालक्यापूंछतेहोश्रीकृष्णरूपीसूर्य्यअस्तहोकरक
लियुगरूपी रात्रिनेप्रवेशकिया मैं अपने व दूसरेयदुवंशियोंका
अभाग्यतुमसे क्याकहूं परब्रह्म परमेश्वरने अपनीइच्छासे वसुदे
वजीके घरजन्मलिया सो हमलोगोंने उनकामाहात्म्य नहींजान
करउनकोभीएक यदुवंशीअपना भाईबन्दसमझाथा अबउनकी
महिमाजानकर सिवायपछितानेके कुछहाथनहीं लगता मैं उन
कीबड़ाई तुमसेकहांतक वर्णनकरूं उन्होंने सोलहहजारएकसौ
आठ स्त्रियोंसे विवाहकरके गृहस्थाश्रमका धर्म्मकिया सो प्रयोज
न उनकाअवतारलेने व लीलाकरनेसे यहथा कि जिसमेंसंसारी
मनुष्य व अधर्मीलोग उसलीला व कथाकोआपसमेंकह व सुन
कर भवसागरपारउतरजावें देखोउन्होंने कैसे २ बलवान् दैत्य व
और मैं जराजाओंको मारकरमुक्तिदिया और वास्तेभारउतारने पृथ्वीकेअ
पनीइच्छासे अवतारलेकरकौरव व पाण्डवोंसे महाभारतकराया
व दुर्योधनआदिक सब कौरवोंका नाशकिया व युधिष्ठिरआदि
पांचोभाई पाण्डवअपने भक्तोंकी रक्षाकरकेउन्हें राजगद्दीदिया
व छप्पनकरोड़ यदुवंशियोंको दुर्वासा ऋषीश्वरसे शापदिलवा
कर आपसकीलड़ाईमें मरवाडाला सो वहबात यादकरके मुझेब
ड़ादुःखहोताहै हे विदुरतुम निश्चयकरके जानो जबसेश्यामसुंद
रयदुवंशियोंको नाशकरके वैकुण्ठकोपधारे तबसेसचाई व धर्म
संसारसे उठगया व मैंनेबहुतविनतीकरके उनसेकहा कि
भरआपकीसेवा व टहलमेंरहा मुझेभीअपनेसाथलेजा
लेजाकर बोले तू बदरीकेदारमें जाकरमेराध्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और जोकुछ ज्ञानउन्होंने मुझे बतलाया उसकाहाल ग्यारहवें स्कन्धमें लिखाहै व तत्त्व व ज्ञानमुझसे यहकहा किहमकोजान कर सबसंसारका नाशसमझो व जीवात्माकभी नहींमरता इस लियेमेरेवियोगका शोच न करनाचाहिये मरनाकैसाहोताहै जि सतरह एककपड़ेको उतारकर दूसरावस्त्रपहिनलेवे उसीतरह यह जीव एकचोलेको छोड़कर दूसरेतनुमें प्रवेशकरताहै ॥

तीसरा अध्याय ॥

उद्धवजीका विदुरजी से श्यामसुन्दर की स्तुति व बड़ाई वर्णन करना ॥

उद्धवनेविदुरसे कहादेखो श्यामसुन्दर ऐसेदीनदयालुथे कि जिसपूतना राक्षसीने उनकाप्राणमारनेकेवास्ते अपनेकुचोंमें बि षलगाकर दूधपिलाया उन्होंने उसराक्षसीकोभी मारकरवैकुण्ठ में भेजदिया ऐसेदीनानाथका चरणछोड़कर दूसरेकिसकीशरण में जानाचाहिये उन श्यामसुन्दरने पृथ्वीकेबोझाउतारनेकेवास्ते अपनीइच्छासे संसारमेंअवतार लेकरवसुदेवजीसेकहा तुम हम को नन्दजीके यहांलेजाकर छिपायआवो यहसबलीला उनकी थीजिसमें कोईमुझेनारायणजी न जानेनहीं तो उनकोकिसका डरथाकालकोभीऐसीसामर्थ्यनहींथी जोउनकासामनाकरसका व नन्दजीकेघर जाकरकैसी २ लीलायेंकरके ब्रजबासियोंकोसुख दिया नन्दजीकेबछरे व गायेंचराकर जिसतरहआगलकड़ीमेंगुप्त विदुरसे तरह अपनेकोछिपाया और जो जो दैत्य व राक्षसभे विदुरजी व उनके मारनेवास्तेआयेथे सबकोमारकर भवसागर मनुष्यज्ञानी द्धकाअभिमान तोड़ागोपी व ग्वालोंको वैकुण्ठ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का दर्शनकराके अपनाचतुर्भुजीरूप दिखलायानन्दजीकोसांप
काटनेसेबचाया व गोपियोंकेसाथ रासमण्डलाकियाशंखचूड़ व
केशी व बकासुर व अघासुर आदिदैत्योंको मारकरवैकुण्ठ भेजा
व जबअक्रूरके साथमथुराकोचले तबराहमें स्नानकरतेसमययमु
नाजलमें अक्रूरकोअपने चतुर्भुजीस्वरूपका दर्शनदिया व मथु
रामें पहुंचकरराजाकंसके धोबीकोमारा व बाहुकदरजीको बीच
बदलेपहिरावने कपड़ोंकेप्रसन्नहोकर वैकुण्ठमेंभेजा व सुदामा
मालीपर खुशहोकर ऐसावरदानदिया कि तेराधनकभी न घटै
और कुब्जाकोचन्दन लगानेकेबदले टेढ़ीसेसीधीकरकेदेवकन्या
समानरूपदेकर उसकीइच्छापूर्णकिया व धनुषमहादेवजीकाऊ
खके समानतोड़कर कुबलयापीड़ हाथीकोलड़कोंके खेलसमान
मारडाला और कुश्तीलड़कर चाणूर व मुष्टिकआदि पहलवान
व राजाकंसको उसकेआठभाइयों समेतमारकर मुक्त पदवीदिया
और जिसपरमेश्वरकी सेवामेंब्रह्मा व महादेव व कालादिक सब
रहतेहैं उनत्रिलोकीनाथ ने राजाउग्रसेनको अपनाभक्तजानकर
उसकीआज्ञासेवकोंके समानमाना व जिसतरह बालकखेलतेस
मयचिउँटीकोमारडाले उसीतरह ऐसे२ बलवान् दैत्य व राक्षस व
राजाओंको मारकरअन्तर्द्धानहोगये दशवें व ग्यारहवें स्कन्धमें
हाल उससब लीलाकालिखाहै हे विदुरजी ऐसेदीनानाथ जिन्हों
ने यहसबलीला संसारीजीवोंके भवसागरपार उतरनेके
या उनकेचरणोंका ध्यानछोड़कर मेराचित्तदूसरी
ता और वहसांवलीसुरतिमोहनीमूर्त्तिमुझेएकक्षण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौथा अध्याय॥

उद्धवजीको विदुरजीसे श्यामसुन्दर की स्तुति व वियोगका हाल वर्णन करना॥

उद्धवनेबीच विरहसागर श्रीकृष्णजीके डूबकरकहा कि हे विदुर श्यामसुन्दरके ज्ञानसिखलानेसे संसारीमायामोह मेराछूटगयापरमुझको मुरलीमनोहरके वियोगकाजितनादुःखहै वहकहा नहींजातातुमको सुननाहोतो मैत्रेयऋषीश्वरसे जो उससमय वहांपरथे जो थोड़ेदिनोंमें यहांआवेंगे भेंटकरकेपूंछलेना वहसब हालतुमसेकहेंगे और जिससमयमुरलीमनोहर अन्तर्द्धानहोना चाहतेथे उससमय मैत्रेयऋषीश्वरने प्रभासक्षेत्रमें जाकर श्रीकृष्णजीको दण्डवत्कीया तबश्यामसुन्दर बोले हेमैत्रेयजीहमनेतुम्हारेमनका सबहालजाना तुमधैर्य्यरक्खो मेरीमायातुमको नव्यापैगी किसवास्ते कि तुममेरेभक्त व पिछलेजन्मके वसुदेवता और इसजन्ममें वेदव्यासजीकेभाई व पुत्रपराशरमुनिकेहो तुमको मेरीलीलाप्रकट व गुप्त सबमालूमरहेगी और जो भागवत धर्म्मतुमको वात्स्यायनऋषीश्वरने कहाहै उसीधर्म्मको यादरखना भवसागरपार उतरजावोगे यहबातकेशवमूर्त्तिसे सुनतेहीमैत्रेयजीने बहुतप्रसन्नहोकर कहा हे वैकुण्ठनाथ तुम्हारीलीलायादकरके मुझेबड़ा असम्भवमालूमहोताहै किसवास्ते कि ब्रह्मा वमहादेव वकालकी सामर्थ्यनहीं है कि जो आपकेसन्मुख आंखउठाकरदेखसकैं सो तुमजरासन्ध व कालयवनके सामनेसेपैदलभागेथे तुम्हारेभेदकोकोईजाननहींसक्ता इसीतरहमैत्रेयजीबहुतस्तुति श्रीकृष्णजीकी करकेवहांसे चलेआये वहसबहालजानतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमसेकहेंगे औरमैंमुरलीमनोहरकीआज्ञासे बदरिकाश्रमको जा
ताहूं वहांजाकरअपनातनु त्यागकरूंगा कदाचित् तुमयह कहो
जबज्ञान आयातबआंखोंमें आंशूभरने व शोचकरनेकाक्याकार
णहै सो श्रीकृष्णजीकीदया व प्रीति यादकरनेसे उनकेवियोगका
दुःख मुझेएकक्षण नहींभूलता उसीज्ञानकेप्रतापसे अबतक मैं
जीताहूं नहींतो श्यामसुन्दरसे बिछुड़तेसमय प्राणमेरानिकल
जातासो इतनाहाल तुमसेकहताहूं कि श्यामसुन्दरनेपृथ्वीकाबो
झ उतारनेकेवास्ते अवतारधारण कियाथा सो उन्होंने बड़े २ अ
धर्मीदैत्य व राजाओंको मारकरकौरव व पाण्डवोंसे महाभारत
कराया व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य व कृपाचार्यआदिकबड़े २
योद्धा व बुद्धिमान् व ज्ञानी व हरिभक्तों केरहनेपरभी उससेनामें
ठारह अक्षौहिणीदल नाशकरकेपृथ्वीकाभार उतारासो हे वि
प्रजी परमेश्वरकी इच्छासबपर बलवान्है इतनीकथा सुनाकर
सूतजीबोले हे ऋषीश्वरोजो लोग परमेश्वरकीकथा व कीर्तनमें
करुणाकेस्थानपर रोदेतेहैं उनकेअनेक जन्मकापाप आंखोंकी
राहसेबहकर निकलजाताहै सो मनुष्यकेकल्याण वास्तेसिवाय
सुननेकथा व लीलाअवतार श्यामसुन्दर व करनेस्मरणनाम पर
मेश्वरके दूसरीबातअच्छीनहींहोती व महाभारतहोनेउपरांतश्री
कृष्णजीने पच्चीसवर्षतक संसारमेंरहकर राजायुधिष्ठिरसे दो बार
यज्ञकराकेजगत् में उनको यशादियाथा ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पांचवां अध्याय ॥

उद्धवजीकाविदुरसेबिदाहोनाऔरबदरिकाश्रममेंजाना व अपनातनुयोगाभ्यासकेसाथत्यागकरना ॥

शुकदेवजीबोले हे राजन्उद्धवने विदुरजीसेकहा अबतुमह
को बिदाकरो तो बदरिकाश्रममेंजाऊं विदुरजीने यहसबबात उ
वकी सुनतेही आंखोंमेंआंशूबहाकरकहा देखोश्यामसुन्दरने
द्रमाकेसमान संसारमेंप्रकाश प्रकटकरकेपृथ्वीका बोझउतारा
धर्म्म व गऊ व ब्राह्मणकीरक्षा करकेगोलोकको चलेगये व ह
लोगोंनेअज्ञान व अभा[illegible]ना व हे उ
[illegible]कृपासेरहतेथे सो उनकीमाया ऐसीबलवान
[illegible]नभीउनकोनहींपहिचाना इसलिये यहबातनिश्चय
मझनाचाहिये कि बिनाकृपामुरलीमनोहरकी उनकेभेद व म
माको कोईनहींजानसक्ता कदाचित्हमलोग आपऐसेभक्तों
सेवा व टहलमेंरहें तो जन्महमारासफलहो पर बिनाकृपा व द
श्यामसुन्दरप्यारेके हरिभक्तोंकासत्संगनहींमिलता इसलिये
जानतेहैं कि हमारेपिछलेजन्मके पुण्यसहायहुये जो आपक
र्शनमिला सूतजीशौनकादिक ऋषीश्वर व शुकदेवजीराजा
रीक्षितसे कहतेहैं किउद्धवजीयह सबवार्त्ताकरके विदुरसेबिदा
व बदरिकाश्रममें जाकेबीचध्यानश्यामसुन्दरके लीनहोकर
योगाभ्यासकेतनु अपनात्यागदिया व वैकुण्ठधामको चलेग
विदुरजीतीर्थयात्रा करतेमैत्रेयजीसे मिलनेकीइच्छा रखकर
व शोचकरतेहुये हरद्वारमेंआनकरठहरे इतनीकथासुनाकर
देवजीबोले हेपरीक्षितउद्धवजी सम्पूर्णहाल अन्तर्द्धानहोनेश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

[illegible]रका विदुरजीसेइसवास्ते प्रकटकरके नहींकहाजिसमें यहहा
नसुनकर विदुरजीउनके विरहमेंतनु अपनाछोड़ न देवैं ॥

छठवां अध्याय ॥

विदुरको मैत्रेयऋषीश्वर से यहबात पूंछना कि संसारकी उत्पत्ति किसतरह होतीहै ॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् विदुरनेजबहरद्वारमें मैत्रेय ऋषी
वरसेभेंटकरके उनकोदण्डवत्किया तब मैत्रेयजीने पूछा हे वि
र तुमबहुतउदास दिखलाईदेतेहो इसकाक्याकारणहै विदुरने
लमिलनेउद्धव व खबरपावना अन्तर्द्धानहोने श्रीकृष्णजी व
रेजाने दुर्योधनआदि कौरवानमहाभारतमें व नाशहोना सब
दुवंशियोंकाजिसतरहउद्धवसेसुनाथा मैत्रेयऋषीश्वरसेकहकर
ले कि श्यामसुन्दर विहारीकेवैकुण्ठ जानेकाहाल सुनकर ह
रीयहदशाहुईहै सो मैं यहइच्छाआपसे रखताहूं कि तुम जो
छज्ञान श्रीकृष्णजीके मुखारविन्दसे सुनाहै वहहालवर्णनकी
ये जिसमेंमेरामनोरथपूर्णहो यहबातसुनकर मैत्रेयजीने कहा
कुछतुमकोइच्छाहो वहबातपूंछो विदुरजी बोलेमनुष्य सदा
पनेसुखवास्ते उद्योगकरताहै परसुख न पाकर उसकेविपरीत दुः
उठावताहै सो उसक्लेशकादेनेवालाकौनहै इसकाभेदकहोऔर
हबात बतलाओ कि नारायणजीसगुण अवतारकिसवास्तेलेते
व उनकोसंसाररचने व फिरउसकानाशकरनेसे क्यालाभहोता
और मैं अपनेज्ञानसे यहजानताहूं कि पापछूटनेकेवास्ते व भ
सागरपार उतरनेहमसबजीवोंके इसविचारसेसगुणअवतारलेते
जिसमेंमनुष्यलोग उनअवतारोंकीकथा व लीलाओंसमें क

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हि व सुनकरउनके प्रतापसेभवसागरपार उतरजावैं तिसपरभी
ज्ञानमनुष्य परमेश्वरकीकथा व लीलासुननेमें प्रीति न रक्खै
दिनरातसंसारीमाया मोहमेंलिपटकर नष्टहोवैं तो अभाग्य
काहै इसमेंपरमेश्वरको क्यादोप देनाचाहिये और बतलावो
मेश्वर किसतरहब्रह्मारूप होकरजगत्की उत्पत्तिऔर विष्णु
धरकर सबजीवोंकोपालन व महादेवरूप धारणकरके सबजी
कानाशकरते हैं और यहबातकहिये वहकौनसाउपायहै जिस
करनेमेंनारायणजी मनुष्यसेप्रसन्नहोतेहैं व उनकेखुशहोनेसे
नुष्यसंसारमें अपनामनोरथ पाकरमरनेके उपरांतमुक्तहोताहै
जगत्की रीतिऐसीहै कि जबकोईमनुष्य किसीअपराधके बद
दण्डपाताहै तबफिर वहजल्दीअधर्म नहींकरता और यहजी
कर्म्म व पापकरनेसे चौरासीलाखयोनि व नरकमेंबहुतसादु
भोगकरजब मनुष्यकातनुपाताहै तबपरमेश्वरकी मायामेंलि
करअधर्म्म क्योंनहींछोड़ता व दण्डपानेपरभी ऐसाकर्म क्यो
हींकरता जिसमेंजन्म व मरणसेछूटजावै इसकाक्याकारणहै
आपकृपा व दयाकरकेइनसबबातोंकाहालवर्णन कीजियेजि
मेरेमनका सन्देह मिटजावै ॥

सातवां अध्याय ॥

मैत्रेयजीका श्यामसुन्दरकी स्तुति व बड़ाई वर्णन करना ॥

शुकदेवजीबोले हे राजन्विदुरकी बातसुनकर मैत्रेयजी
हा होविदुरतुम आपज्ञानीहो और तुमकोलड़कपनसे हरिच
में भक्ति उत्पन्नहोकर कोईहालतुमसे छिपानहींपर तुमने ह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूंछनेकी चाहनाकिया इसलिये मैं अपनी बुद्धिके अनुसार तु
से कहताहूं जिसमें संसारीजीवभी यहहालसुनकर भवसागरपा
उतरजावें औरतुम धर्म्मराजका अवतार कौरवोंकेकुलमें होकर
परमेश्वरका सबगुणजानतेहो व मांडव्यऋषीश्वरके शापसेतुम
ने यहतनुपाया श्रीकृष्णजीमहाराज सबबातोंमें तुम्हारी मतिले
कर कामकरतेथे व तुमकोपरमेश्वरकी प्रीति व भक्तिहै इसलिये
हमवह भगवद्धर्म तुमसेकहते हैं जो पराशरमुनि अपनेपितासे ह
मनेपढ़ाथा तुममनलगाकरसुनो जो मनुष्यपरमेश्वरसे विमुखहैं
वहदुःखकेसागरमें पड़ेरहकर जन्म व मरनेसे छुट्टीनहींपाते और
जो काम अपनेसुखकेवास्ते करतेहैं उसमें उनकोसिवाय दुःखके
कुछ सुखनहींमिलता कदाचित् परमेश्वरका भजनथोड़ा २ भी
करैं तो संसारकेदुःखसे इसतरह छूटजावैं जिसतरह औषधखानेसे
दिनपरदिन रोगकमहोताहै औरमनुष्यसंसारमें जैसाकर्म्मभला
या बुराकरैवैसा फलपाताहै और जिसतरह मनुष्यअपने पुत्र व
कन्या व स्त्री व संसारीमोहमें फँसकर उनसे अपनासुख व भला
चाहताहै व सिवायदुःखके सुखनहींपाता उसीतरहकोयेमेंका की
ड़ा अपनेरहने व सुखकेवास्ते जाला इकट्ठाकरके अन्तको वही
जालाबटोरनेसेकोयेमें फँसकर मरजाताहै व निकलनहींसक्ता व
हीहाल मनुष्यकाभी समझनाचाहिये औरबिना ईश्वरकीकृपा
उनकीमायासे मनुष्यका छूटना बहुतकठिनहै उसमायासे छूटने
केवास्ते परमेश्वरकी कथासुनना व उनकेनामका स्मरणाकरना
मनुष्यकोउचितहै और संसारकेझूठे व्यवहारको सच्चाजानना य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(माया ईश्वरकी समझनाचाहिये जबमनुष्य इन्द्रियोंकेसुखको छोड़कर मनअपना विरक्तकरके परमेश्वरका भजनव स्मरणाकरै तब उसमायासे छूटसक्ताहै जिसतरहस्वप्नेकादुःख जागनेसेनहीं रहता उसीतरहलोक व परलोकके दुःख हरिभजन करनेसेछूट जातेहैं और संसारकीउत्पत्ति इसतरहपरहै जबउस आदिनिरंकारज्योतिकोकि वहरूपउनकाकोईनहींदेखसक्ताइसबातकीइच्छा होतीहै कि संसाररचकर हमअपनेरूपको आपदेखैं जिसतरहको ईमनुष्य अपनामुख दर्प्पणमें देखै तबवह आदिनिरंकार पहिले एकज्योति प्रकटकरतेहैं जिसको आदिपुरुष कहाजाताहै फिरए कमहातत्त्वसबकीजड़ उत्पन्नकरके उससेतीनगुण सत्त्वरजतम प्रकटकरतेहैं सतोगुणसे देवतोंकेगुण और रजोगुणसे पांचोंतत्त्व और तमोगुणसे पञ्चभूतात्मा उत्पन्नहोकर उसीपांचों तत्त्वोंसे इन्द्रियआदि व मनुष्यकाशरीरतैयारहोताहै व एक२अंगकेएक २ देवता अधिष्ठाताहोतेहैं आंखकेदेवतासूर्य व नाककेअश्विनी कुमार व जिह्वाके वरुणदेवता इसीतरह सबअंगके देवता उसका हाल दूसरेस्कन्ध दशवें अध्यायमें लिखाहै॥

आठवां अध्याय॥

देवतोंको नारायणजी की स्तुति करना॥

मैत्रेयजीनेकहा हेविदुर जबयह सबबस्तु संसाररचनेकी प्रकटहुई तबसबदेवतोंने संसारके उत्पन्नकरनेकी आज्ञापाकर अपना उद्योगकिया जबवहकाम उन्होंसे पूरानहींहुआ तबसबदेवतोंने हारमानकर नारायणजीकाध्यान व स्तुतिकरके हाथजोड़कर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसतरहपरकहा हेदीनानाथ संसारमें जो मनुष्य आपकेतेजक प्रकाशसबजीवोंमें समझकर तुम्हारेचरणोंकाध्यान व पूजा करै वह जगत्कीमाया व दुःखसेछूटकर सुखपाताहै व तुम्हारीकथा व लीलासुननेसे उसकेमनमें इसबातका विश्वासहोताहै कि सब से श्रेष्ठ व कर्त्ता धर्त्ता नारायणजीहैं सो बिनाकृपातुम्हारी हमलो गोंसेयहकामसंसारकेरचनेका जोबहुतकठिनहै होनहींसक्ता तब उसी आदिनिरंकार उनके स्तुतिकरनेपर प्रसन्नहोकर देवतोंकी तरफ जैसे कृपादृष्टिसेदेखा वैसेयहपांचोंतत्त्व इकट्ठीहोकर मांस का पिण्डहोगया उसीकानाम आदिपुरुषहोकर उसकेरहनेकेवा स्ते पाताललोक व भूर्लोक व वैकुण्ठलोक जिसको तीनोंलोक कहतेहैं निर्माणहुये और वहीपुरुषमालिक आंख व कान व हाथ आदिक इन्द्रियोंकाहुआ व विराट्रूप उसीपुरुषको कहते हैं और सबव्यवहार जगत्का उसीरूपमें है उसपुरुषकी नाभिसेए कफूल कमलकानिकला जिसफूलमेंसे ब्रह्मा उत्पन्नहुये व उसी पुरुषकेदया व कृपासेब्रह्माने अपनेमुखसे ब्राह्मण व भुजासे क्षत्री व जंघासे वैश्य व पैरसे शूद्र चारोंवर्ण को उत्पन्नकिया ॥

नवां अध्याय ॥

मैत्रेयऋषीश्वरका सब सृष्टि की उत्पत्ति कहना ॥

इतनीकथासुन विदुरजीनेमैत्रेय ऋषीश्वरसेपूंछा महाराज वह अवतारआदि पुरुषकाहुआ अबदूसरेअवतारोंका हालभीव र्णन कीजियेयहबात सुनकरमैत्रेय ऋषीश्वरबोले हेविदुरजिसस मयमहाप्रलय होनेसेचारोंतरफ जलमयीहोकर कछ दिखलाई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हींदेताथा उससमयवह आदिपुरुषजिसका वर्णनऊपरकरचुका
हूँ शेषनागकीछातीपर शयनकरतेथेउनकी नाभिसेएकफूल क
मलकाजिसमें बड़ाप्रकाशथानिकला व उसफूलकेनालसे ब्रह्मा
जीप्रकटहोकर उसीफूलपर आनबैठेऔर यहविचाराकि हमको
किसनेउत्पन्नकिया और यहकमलफूल किसकी सामर्थ्यमेंख
ड़ाहै इसीचिन्तामें ब्रह्माउसफूलकी नालपकड़ेहुये हजारवर्षतक
पानीमेंथाहलेनेके वास्ते चलेगयेजब उसफूलकीजड़ उन्होंने न
पायातब हारमानकर फिरउसीफूलपर आबैठ व इसीचिन्तामेंव्या
कुलथेइसलिये तुमजानो कि आदिमेंसबजीव मूर्खरहतेहैं पश्चा
त् नारायणजीकी कृपासेज्ञानप्राप्त होताहै जिससमय ब्रह्माउसी
शोचमेंथे उसीसमययह आकाशवाणीहुई कि परमेश्वरकातप
व ध्यानकरोतब तुमकोज्ञानप्राप्तहोगा यहआकाशवाणीसुनकर
जब ब्रह्मानेपरमेश्वर कास्मरण व ध्यानाकिया तबब्रह्माकेहृदयमें
ज्ञानकाप्रकाश होकरउन्हें यहदिखलाई दिया कि एकपुरुषशेष
नागकीछातीपर श्यामरूपअति सुन्दरचतुर्भुज लक्ष्मीजी समे
तसोयाहै व उसकीनाभिमें यहफूलकमलका निकलकर हमइस
फूलसेउत्पन्नहुयेहैं और उसपुरुषने संसारकेरचनेका अधिकार
हमको दियाहै जबब्रह्माजीको सबसंसारीवस्तु उसीपुरुषकेरूपमें
दिखलाईदीं तबब्रह्मानेहाथ जोड़करयहस्तुति उनकीकिया कि
त्रिलोकीनाथ जो मनुष्यआपसे विमुखहैउसको कभीसुखप्राप्त
नहींहोता वहसदासंसारी मायामोहमें व्याकुलरहताहै और रा
कोसोतीसमय उसेअनेकचिन्तालगीरहतीहैं कि कल्हहमकोया

यहका
होतीहै
वालेल
आनन
किसत
पकरते
है उसी
हैं सो मै
वानहैं
में अज्ञ
रोंकोज
अपना
किया है
ज्ञादीसे
संसारक
करूं पर
कि जीव
कीछाती
तू चाहत
परमेश्व
ना व सब
तुमकोज्ञ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहकामकरनाहोगा एककामसेछुट्टीपाया तो दूसरीबातकीचिंता होतीहै औरतुम्हारेनामकास्मरण व चरणकमलकी भक्तिरखने वालेलोग आपकीकृपा व दयासेअपनेमनोरथका फलपाकरसदा आनन्दसेरहतेहैं कदाचित्कोई कहेकि इच्छासाधु व वैष्णव की किसतरहपूर्ण होसक्तीहै सो जोलोगबनमें जाकरतुम्हारातप व जपकरतेहैं उनमेंजिससमय इच्छास्त्री व धन व संसारीसुखकीहोती है उसीसमयतुम्हारी कृपासेउनको इन्द्रलोककेसुख प्राप्तहोजाते हैं सोमैं चाहताहूं कि तुम्हारेचरणोंके नखजोसूर्यसे अधिकतेजवानहैं सर्वदामेरेहृदयमें बसेरहैं जिनकेप्रकाशसेमेरे अन्तःकरणमें अज्ञानका अँधियारा न होवे व तुम्हारादर्शनयोगी व ऋषीश्वरोंकोजल्दीध्यानमें नहींमिलतासो आपनेबड़ीदया करकेमुझको अपनादर्शनदिया यहसबस्तुतिकरके ब्रह्मानेउसीपुरुषसे विनय किया हेस्वामीआपने मुझकोजीवोंके उत्पन्नकरनेकेवास्ते आज्ञादीसो मुझसेबिनाशक्ति व कृपातुम्हारीकुछहो नहींसक्ता कि संसारको उत्पन्नकरसकूं मेरेहालपर दयाकीजिये तबमैंवह कर्म करूं परन्तुऐसा न हो जो बीचगढ़े अहंकारकेगिरकर ऐसासमझूं कि जीवोंका उत्पन्नकरनेवाला मैंहूं तबउसपुरुषने जो शेषनाग कीछातीपर शयनकरतेथे ब्रह्माकीतरफ़ आंखउठाकर कहा जैसा तू चाहताहै वैसाहीहोगापरतुमअपनामन बीचतप वस्मरणनाम परमेश्वरकेलगायेरहो व कामक्रोध व लोभ व अहंकारसे बचेरहना व सबइन्द्रियोंको अपनेवशमेंरखना जबयह अभ्यासकरनेसे तुमकोज्ञानप्राप्तहोगा तबमुझकोअपनामालिक व उत्पन्नकरने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आलाजानकर सबजीवोंमेंमेरे तेजकाप्रकाशबराबरदेखोगे जिस तरहअग्निकाष्ठमें रहतीहैपर बिनाउपाय कियेप्रकटनहींहोती उ सीतरह तुममेरेचरणोंमें ध्यानलगाकर संसारकीरचनाकरो तुम को अहंकार न होकरध्यानकरतेसमय मेरेसबअंगकादर्शनामिलै गा व बिनापढ़े सबविद्यायाद होजावेगी व तुझेकिसीजीव अपने उत्पन्नकियेहुयेकेमरनेका दुःखनहींहोगा तुम निस्सन्देह जगत् की रचना करो ॥

दशवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीका देवता व पांचोंतत्त्व व वृक्षादिकोंका नारायणजीकी कृपासे उत्पन्नकरना ॥

मैत्रेयऋषीश्वर बोले हे विदुरवहपुरुषब्रह्माजीको ध्यानमेंदर्श न व धैर्य्यदेकर अन्तर्द्धानहोगये व ब्रह्माजीने उसपुरुषकीकृपाद ष्टिदेखनेसे अपनेमेंसंसार रचनेकीसामर्थ्यपाकर उत्पत्तिकरनाज गत्का आरम्भकिया पहिलेउन्होंने देवतोंकोपांचोंतत्त्व समेतजि सकावर्णान ऊपरहोचुकाहै फिर अनेकरंगकेवृक्ष व पशु व पक्षी उ त्पन्नकियेजब ब्रह्मादेवता व वृक्षादिकीरचना करचुकेतबउन्होंने कईमनुष्यजिनको दुःख व सुखदोनोंबराबररहताहै अपनीइच्छा से मानसीसृष्टि उत्पन्नकिया व कमलकेफूलसे चौदहभुवनसात लोकऊपर व सातलोकनीचेकाबनाया उसकेउपरान्त सतयुग त्रेता व द्वापर व कलियुग चारोंयुगबनाकर वर्ष व महीना व पक्ष बार व घड़ी व पलकप्रमाणकिया जिमकेबीतनेसे देवता व मनुष व दैत्य व राक्षसआदि सबजीवोंकीआयुर्द्धा पूर्णहोतीहै व देवता दैत्य व राक्षस व मनुष्यकीयोनिसामने व पशु व पक्षीआदिक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

योनिपीछेहोतीहै औरब्रह्माकी आयुर्द्धाकाएकदिन चौदहमन्व
न्तरनिर्माणहुआ व एकमन्वन्तरमें इकहत्तरचौकड़ीयुगभोग क
रताहै जिसकीसब नवसैचौरानबेचौकड़ीहुई यहबीतजावेंतबएक
दिनब्रह्माकी आयुर्द्धामें समझनाचाहिये व उसीदिनकेप्रमाणती
सदिनकामहीना व बारहमहीनेका वर्षहोकरसौवर्षकी आयुर्द्धाब्र
ह्माकीहै व रातभी उनकीउसीदिनके बराबरहोती है सो ब्रह्माजी
दिनभरजीवोंकी उत्पत्तिकरते हैं जबब्रह्माका एकदिन बीतकर
सन्ध्याहोतीहै तबजगत् प्रलयहोकर सबसंसारीजीवनाशहोजा
तेहैं जबरातबीतकर सबेराहोताहै तबफिरब्रह्माजी सबजीवोंको उ
न्हींकेकर्म्मानुसार वैसी २ योनिमें उत्पन्नकरतेहैं इसीतरह जब
पचासवर्षआयुर्द्धाब्रह्माजीकी बीतजातीहै तोउसकोअर्द्धप्रलयक
हतेहैं औरजब १०० वर्षआयुर्द्धा ब्रह्माजीकी पूरीहोकरतनुउनका
छूटजाताहै तबमहाप्रलयहोकरचारोंतरफपानीके सिवायऔरकु
छनहींरहता एकवहीआदिपुरुष अविनाशीअकेलेरहजातेहैं औ
र यहहालएकब्रह्माण्डका कहागया व ब्रह्माण्डका स्वरूपगूलर
के फलसमानसमझनाचाहिये व इसीतरहपर बहुतब्रह्माण्डहोक
र सबके मालिक व उत्पन्न व पालन व नाशकरनेवाले आदिपु
रुषभगवान्जी हैं वह चाहैंतो कईहज़ार ब्रह्माण्डएकक्षणमें उत्प
न्नकरके फिरनाशउनकाकरदेवें इसकाभेद कोईनहीं जानसक्ता
वहनारायणजी उससमयमेंथे जबकोईनहींथा औरजबकुछ ब्रह्मा
होगा तबभी वहीअविनाशीपुरुष स्थिररहेंगे मृत्युउनको उत्पत्ति
आसक्ती वहसदाएकस्वरूप रहकर घटने व बढ़नेसेकभी आवेगा तब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हींरखते जो कुछ इसब्रह्माण्डमें देखतेहो सब उन्हींकीरचनाहै जोकाम उत्तम व मध्यम किसीमनुष्यसेहोताहै सबकाहाल वह जानतेहैं व इसब्रह्माण्डको गूलरकेफल समान समझनाचाहिये जिसतरह गूलरके फलमें छोटे २ मच्छड़रहकर उसफलके तोड़ते समय उड़जातेहैं उसीतरह ब्रह्माण्डमें सबजीव रहकर परमेश्वर केभेदको नहींजानते जिनकोसत्संग करनेसेज्ञानप्राप्तहोताहै वह लोग संसारीव्यवहार व शरीरको झूंठासमझकर सबजीवोंमें पर मेश्वरकाचमत्कार बराबरजानतेहैं सो वह आदिपुरुषगूलरके वृ क्षसमानहैं जिसतरहउसवृक्षमें हज़ारोंफल गूलरका लगारहताहै उसीतरह नारायणजीके सबरोम २ में हज़ारोंब्रह्माण्ड बँधेरहतेहैं इसकारण सबजीवोंमें उन्हींकाप्रकाश समझनाचाहिये॥

ग्यारहवां अध्याय॥

ब्रह्माजीका सनक सनन्दन सनातन व सनत्कुमार व रुद्रको उत्पन्न करना जो लोग अवतार नारायणजी के हैं॥

मैत्रेय ऋषीश्वरनेकहा हेविदुर जबब्रह्माजीको देवता व मनु ष्यादिक जिसका वर्णनऊपरहोचुकाहै उत्पन्नकरनेपरभी सन्तो षनहींहुआ तबउन्होंने सृष्टिबढ़नेकेवास्ते सनक व सनन्दन व स नातन व सनत्कुमारको जोलोग नारायणजीके अवतारहैं अपने हृदयसेउत्पन्नकिया औरउन्हैंकहातुमलोगभीप्रजाउत्पन्नकरो व वरदानहमसेमांगोसोदेवेंउन्होंनेज्ञानकीराह अपने मनमेंविचा रविचारकि जो माता व पिता व भाई हरिभजन करनेसे मनाक व दैत्य व अपनामित्र समझना न चाहिये ऐसा विचारकर सनत दैत्य व राक्षसोंभाइयोंने ब्रह्माजीसे कहा कि हमलोग यहीवरदा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मांगतेहैं जिसमेंसदा अवस्थाहमारी पांच २ वर्षकी बनीरहै व ह
मारामन कामक्रोधमोहलोभमें न फँसकर पञ्चभूतात्माके वश
नहोवे व अपनेमन व इन्द्रियोंपरहमलोगप्रबलरहें व युवा व वृद्धा
वस्थाहमपरनव्यापै किसवास्ते किपांचवर्षकीअवस्थामेंइन्द्रियां
अपनाबल उसपरकरनहींसकीं हमलोगहरिभजन करैंगे हमैंजी
व उत्पन्नकरनेकी आज्ञामतदीजिये संसारकेरचनेसे भगवद्भज
नमें हमाराविघ्नहोगा यहबातसुनकर ब्रह्माजीने उन्हेंऐसा वरदा
नदिया कि तुमलोग सदापांचवर्षकी अवस्थारहकरसबइन्द्रियां
अपने आधीनरक्खोगे परजो तुमनेमेरेकहनेसे उत्पन्नकरनाजी
वोंका अंगीकार नहींकिया सो बहुत अनुचितहुआ ऐसाकहकर
जबब्रह्माजीने अपनेपुत्रोंपर आज्ञा न माननेसे क्रोधकिया तब
उनकीदोनों भौहोंसेएकपुरुष श्याम व ललितरंगका उत्पन्नहो
कररोनेलगा उसकोदेखतेही ब्रह्माजीनेपूंछा तू किसवास्तेरोताहै
तबउसनेउत्तरदियामैंचाहताहूं किमेरानामधरकरमुझेकोईकाम
बतलाओ ब्रह्माजीनेकहा तूनेउत्पन्नहोतेसमय रुदनकिया इस
वास्ते मैंनेतेरानामरुद्ररक्खा तूजीवोंकीउत्पत्तिकर सबदेवतोंमेंश्रे
ष्ठहोकरबीचसंसारकेशिवशंकर व भोलानाथ व महादेवआदिक
तेरेअनेकनामप्रसिद्धहोंगे जबरुद्रनेब्रह्माजीकीआज्ञापानेसे राक्ष
सभूत व पिशाचआदिकजिनकेस्वभावमेंकाम व क्रोध व लोभ
व अहंकारभराथा अपनीइच्छासे उत्पन्नकिये तबवहलोग ब्रह्मा
जीको अच्छेनहीं मालूमहोकर उन्होंनेकहा हेरुद्र तेरी उत्पत्ति
क्रोधसेहुईहै जबतकतेरे अन्तःकरणमें सतोगुणनहीं आवेगा तब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ाकतुम्हारे उत्पन्नकियेहुये जीवअधर्मीहोवेंगे इसलिये तुमपहि
लेजाकर परमेश्वरका तपकरो जब तुम्हारेस्वभावसे तमोगुण
टकर सतोगुणकाप्रवेश उसमेंहोवे तबसतोगुणसे जीवोंकीउत्पत्ति
करना तपकरनेसे तुम्हैं परमेश्वरका दर्शनमिलेगा यहबात सुन
तेही रुद्रउत्पत्तिकरना जीवोंका बन्दकरके तपकरनेको चलेगये॥

बारहवां अध्याय॥

ब्रह्माजीकानारद व वशिष्ठ व अंगिराआदिऋषीश्वर व राजास्वायम्भूमनु व शतरूपाकोउत्पन्नकरना॥

मैत्रेयऋषीश्वरबोले हेविदुर ब्रह्माजीने उसकेउपरांत नार
व वशिष्ठ व अंगिराआदिक कईऋषीश्वर जिनकेनामका वर्णन
आगेकियाजावेगा उत्पन्नकरके सरस्वतीनामएककन्या अपने
वचनसे उत्पन्नकिया वहलड़कीअतिसुन्दर उत्तमभूषण व वस्
धारणकिये प्रकटहुई जिसकारूप देखतेही ब्रह्माने परमेश्वरकी
मायासेमोहित होकरउसके साथभोगकरना चाहातबनारदजी
अंगिराआदिकने यहअधर्मदेखकर ब्रह्माकोसमझाया हेपिताज
वतुम जगत्गुरूहोकर ऐसापापकरोगे तबसंसारीलोगभी यहह
लसुनकर अधर्मकरेंगे इसलियेतुमको अपनीकन्यासेभोगकरन
न चाहिये जबब्रह्माको अपनेपुत्रोंके समझानेसे ज्ञानहुआ त
उन्होंने उसीसमय लज्जितहोके वहशरीर अपनाछोड़करदूस
तनुधारणकिया व ब्रह्माकीलोथसे एकअँधियारासाउठकर वह
कुहिरा संसारमेंप्रसिद्धहुआ जोप्रातःकाल दिखलाईदेताहै फि
ब्रह्माने चारोंमुखसे चारवेदउत्पन्नकरके बनाना स्थान व वैद्य
व यज्ञ व दान व रागादि चारतरहकी विद्या व चारोंआश्रमप्रक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कियेजब ब्रह्मानेदेखाकि अकेलेमेरेउत्पन्न करनेसेजीवोंकीवृद्धि नहींहोती तबउन्होंनेअपनेदहिनेअंगसे स्वायम्भूमनु नामएकपुरुष व बायेंअंगसेशतरूपानामस्त्रीउत्पन्नकरकेउनदोनोंका बिवाहकरदिया और उनसेकहातुमदोनोंआपसमें भोगविलास करके मनुष्यउत्पन्नकरौ यहवचनसुनकर स्वायम्भूमनुबोले हे विधाताजी मैंतुम्हारीकृपासेबहुतमनुष्य उत्पन्नकरूंगापर उनकेरहनेवास्तेजगहचाहिये चारोंतरफपानी भराहुआहै सो वहलोगजल पर नहींरहसक्के अभीतकआपने जिनकोउत्पन्नकिया वहसबकमलके फूलपरबैठेहैं मेरेउत्पन्नकरनेसे अधिकहोकरकहांरहैंगे यहबात स्वायम्भूमनुसे सुनकरब्रह्माजीने कहापहिलेतुम नारायणजीका तपकरोपीछेसे मनुष्यकीउत्पत्तिकरो मैं उनलोगोंके रहनेवास्तेजगहका उपाय करताहूं॥

तेरहवां अध्याय॥

ब्रह्माजीका नारायणजीसे जीवोंके रहनेकी जगह वास्ते विनय करना व वाराह अवतार धरकर परब्रह्म परमेश्वरका पाताल से पृथ्वी का लाना॥

मैत्रेय ऋषीश्वरबोले हे विदुरजब स्वायम्भूमनुने पृथ्वीप्रकटहोनेवास्तेचाहनाकिया तबब्रह्माने आदिपुरुष परमेश्वरकाध्यान करके उनसेविनयकिया कि हे महाप्रभुविनादया व कृपातुम्हारेइसजीवका कोईकामसिद्ध नहींहोता यहअनेकतरहकी इच्छा व चाहनामनमें करताहै सो जिसपरतुम दयाकरतेहो वह अपनामनोरथपातेहैं और मैं तुम्हारीआज्ञासे जीवोंकीउत्पत्ति करताहूंपर वहलोग बिनाकोई आधारपानीपर किसतरहरहेंगे जितनेजीवअबतक उत्पन्नहुये वहलोग फूलपरबैठेहैं सो आपजैसी आज्ञा दी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जियेवैसाकरूं नारायणजीने यह वचनब्रह्माका सुनतेहीउनको
ध्यानमें दर्शनदेकरकहा कि तुमइसबातका शोचमतकरो मैं अ
भीअवतार लेकरपृथ्वीवास्ते रहनेजीवोंके लादेताहूं ऐसाकहकर
परब्रह्मपरमेश्वर अन्तर्द्धानहोगये व उन्होंनेविचारकियाकि पृथ्वी
को हिरण्याक्षदैत्य उठाकरपातालमें लेगयाहैवहांसे लानाचाहि
ये सो परमेश्वरकी इच्छासेब्रह्माजीको छींकआई तो उनकेदहिने
नाकसेएकशूकर बहुतछोटामच्छड़केसमानजिसकोवाराहकहते
हैं गिरपड़ा जबवहशूकर क्षणभरमेंहाथीके समानबढ़कर अपनी
बोलीमें गर्जनेलगा तब ब्रह्मापहिलेघबड़ाकरकहनेलगे कि यह
कौनजीवहै जो ऐसीजल्दीबढ़गया फिरज्ञानकीराहसे उन्होंनेमा
लूमकिया कि मेरेविनयकरनेसे वैकुण्ठनाथ यहरूपधरकर पृथ्वी
लानेका उपायकरनेआयेहैं नहीं तो दूसरेकोक्या सामर्थ्यथी जो
एकक्षणमें इतनाबढ़जाता यहबातविचारकर ब्रह्मानेवाराहजीसे
विनयकियामहाराजआपनेवाराहरूपीईश्वर होकरअपनावचन
पूराकिया यहबात ब्रह्माकीसुनतेही वाराहजीफूलपरसे पानीमेंकू
दपड़े व पातालमेंजाकर जबहिरण्याक्षदैत्यको वहांनहींदेखात
वाराहजीने पृथ्वीकोजो वहांपरबावन किरोड़योजन लम्बी व चं
ड़ीरक्खीथी अपनेदांतोंपर इसतरहउठालिया जिसतरहहाथी
पनेदांतोंपर कमलकाफूल उठालेवेजब वाराहजीपृथ्वी लियेहु
चलेआतेथे तबराहमेंहिरण्याक्षदैत्यसे जो बड़ाबलवान्होकरक
ईदेवता उससेलड़नेकी सामर्थ्यनहींरखताथा लड़ाईहुई सो वा
हजी हिरण्याक्ष दैत्यकोमारकर पृथ्वीपानीके ऊपरलाये ब्रह्मा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीवाराह जीकरके हिररायाक्षदैत्यकासंग्राममेंवधहोना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चित्रनं० ४ सुखसागर तृतीय स्कन्ध पृष्ठ २२१

कुम्भी पाक नरक जिसमें अधर्मी जीवों का यमराज यथोचित दण्ड देते हैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थ्वीको देखतेहीबहुत प्रसन्नहोकर परब्रह्मपरमेश्वरसेबोले आप
जिसतरह बड़ीकृपाकरके पृथ्वीलाये उसीतरहदयाकरकेधरतीको
पानीपर रखकरस्थिर करदीजिये जिसमेंसबजीव आनन्दसे रह
करपृथ्वीपर यज्ञ व होमकरैं जबवाराहजीने पृथ्वीकोपानीपर र
क्खा और वहमिट्टीहोनेसेगलनेलगी तबपरब्रह्म परमेश्वरने कुछ
अपनीशक्ति पृथ्वीकोदेकर जलपरस्थिरकरदिया सोवशिष्ठादिक
जो लोग ब्रह्माजी व स्वायम्भूमनु व शतरूपासे उत्पन्नहुयेथे ना
रायणजी की स्तुतिकरनेलगे व उसपृथ्वीपर रहकरपरमेश्वर का
स्मरण व यज्ञ व होमकरना आरम्भ किया॥

चौदहवांअध्याय॥

मैत्रेय ऋषीश्वरका विदुरजीसे यहबात कहना कि जय विजय द्वारपालक वैकुंठसे बीचपेट दितिके आनकर गर्भवास कियाथा॥

शुकदेवजीने कहा हेराजन् इतनीकथासुनकर विदुरजीनेमैत्रे
ऋषीश्वरसे पूंछा किनारायणजीने हिरण्याक्ष व हिरण्यकशि
दैत्यकेमारनेवास्ते आप अवतारलिया क्यादेवतालोग उनको
हींमारसक्तेथे मैत्रेयऋषीश्वरबोले हेविदुर हिरण्याक्ष व हिर
ण्यकशिपु अवतार जयविजय वैकुण्ठके द्वारपालकोंकाहै सिवा
नारायणजीकेदूसराकोईउनकोमारनहींसक्ताथा व उनकीकथा
सतरहपरहैसुनो कश्यप ब्रह्माजीकेबेटेदोस्त्रीरखतेथे एकदिति व
सरीस्त्रीकानाम अदितिथा देवताबेटेअदिति व दैत्यलोगबेटे दि
तेकेहैं जिनदिनों देवता इन्द्रासनकाराज्य व सुखभोग करतेथे
न्हींदिनोंमें दैत्योंकीमाताने अपनेबेटोंकी राजगद्दीछूटजानेका
वाकश्यपजीअपनेपतिकी इसइच्छासेकरनाआरम्भकिनहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसमें यहप्रसन्नहोकर ऐसाबलवान्पुत्र मुझेदेवें जोदेवतोंसे इसी
ज्यछीनकर आपइन्द्रासनपरबैठे सोएकदिन दितिने अपनेपति सोई
को प्रसन्नदेखकर विनयकिया किमैंचाहतीहूं किमेरे बेटेऐसा को
वीर उत्पन्नहोवैं जोअदितिकेबेटोंको युद्धमेंजीतकरइन्द्रासनले जिस
नलेवैं देवतालोगधर्मात्माथे इसलियेकश्यपजीको उनकी हा दिति
मनसे नहींभावतीथी परकश्यपजीने दितिअपनीस्त्रीके सेवाक मझ
नेसे लज्जित व प्रसन्नहोकरकहा जोतूचाहतीहै वैसाहोगा यजबक
बातसुनकर दितिबहुतप्रसन्नहुई फिरउन्हींदिनोंमें जबदिति स्नातक
धर्मसेशुद्धहुई तबउसनेसन्ध्यासमय भोगकरनेकी इच्छाकरईससे
कश्यपजी अपनेपतिकेपासजाकरकहा कि इससमय मुझेकामण
देव दुःखदेरहाहै व मेरेसौतकेबेटे राजसिंहासनका सुखभोगते उत्पन्न
यहदुःख मुझसेसहानहींजाता सोमेरीचिन्तादूरकीजिये यहवच नाक
नसुनकर मरीचिकेबेटा कश्यपमुनिबोलेहोदिति इससमय तेरेसा रले
थभोग वविलास जोबहुतबुराकामहै नहींकरसक्ता सन्ध्यासेच अपने
घड़ीरातबीतेतक व चारघड़ीरातरहेसे प्रातःकालतक सिवायले जि
नाम व करनेध्यानपरमेश्वरके दूसराकाम न करनाचाहियेकि खभ
वास्ते किइससमयमें महादेव व पार्वतीजीबैलपरचढ़कर सबज ाह्मण
हजातेहैं उन्हैंजोमनुष्य जागताहुआ परमेश्वरकेध्यान व स्मर यह
मेंदिखलाईदेताहै उसेआशीर्वाददेकर बड़ाईउसकीकरतेहैं व बोले
मनुष्यसोताहुआ याबीचकामकाज संसारीव्यवहारके लगा वयं
उसकोऐसाशापदेतेहैं कितेरामनोरथ कभीपूरा न होय जो
कहै किब्रह्माकेवंशमें तुमऔरवहदोनों उत्पन्नहुये ानी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसलियेमहादेवजी नातेदारीहोनेसे तुम्हाराअपराध क्षमाकरैंगे
सोशिवजीहमारेमालिक व ईश्वरकेतुल्यहैं धर्मकेस्थानपर उन
को किसीकासंकोच नहींरहता इसलियेतूचारघड़ी औरधैर्य्यरख
जिसमेंपरमेश्वरकेभजन व स्मरणकासमय बीतजावे उससमय
दितिकामदेवकेमदमें ऐसीमतवालीहोरहीथी किअपनेपतिके स
मझानेपरभी उसनेसंतोषनहींकरके लाज व शर्म छोड़दिया व
यजबकश्यपजीके शरीरकाकपड़ाधरकर भोगकरनेकेवास्ते हठकि
यातबकश्यपजीनेहारमानकर उसकेसाथभोगकरकेकहा हेदिति
इससमयतैंनेजो यहअधर्मकिया इसपापकरनेसे तुझेदोबेटा ब्रा
ह्मण व ऋषीश्वरआदि सबजीवोंको दुःखदेनेवाले ऐसेबलवान्
उत्पन्नहोंगे किकोईदेवता या दैत्य या मनुष्य उनसेलड़ाईमें सा
नाकरनेसे जीतनसकेगा नारायणजीमहाराज आपसगुणअव
तारलेकर उनकोमारैंगे दितिनेयहबात सुनतेहीबहुत उदासहोके
अपनेपतिसे हाथजोड़कर विनयकिया महाराज मेरीइच्छा यह
जिसमेंमेरेबेटेदेवतोंको जीतकरअमरावतीपुरीका राज्यकरके
खभोगैं मुझकोयह कामनानहींथी जो मेरेबालकअधर्मीहोकर
ब्राह्मणआदिक जीवोंकोदुःखदेवें ऐसेपापीबेटेलेकर मैं क्याकरूं
यहवचन दितिकासुनके व उसेबहुतउदास देखनेसेकश्यपमु
नेबोले हेदितिअब क्या करनाचाहिये इससमयभोगकरनेका प्र
भावयही है इसीवास्ते मैं मनाकरताथा परन्तुकुकर्म्म करनेके पी
छे जो तू शोचकरतीहै इसपछतानेसे एकपौत्रतरा ऐसापरम भक्त
ज्ञानी व तपस्वीउत्पन्नहोगा जिसकानामलेनेसे संसारमें मानहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सागरपार उतरजावैंगे व सबदेवता व दैत्यउसका गुणगाकरेंगे जीउसकी बड़ाईइन्द्रकी सभामेंकहैंगे व परब्रह्मपरमेश्वर अवतार लेकररक्षा उसकीकरैंगे यहवचनअपने पतिका सुननेसे दितिके कुछधैर्य्य हुआ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजीको नारायणजी के जय विजय द्वारपालकों का शापदेना और दिति के गर्भ में उनदोनों का आना ॥

मैत्रेय ऋषीश्वरने विदुरजीसेकहा कि जिससमयकश्यपमुनि का वीर्यदितिके पेटमेंपड़ा उसीसमयजय व विजयकेतेजसे जो भर्भमें आयेथेमन देवतोंकाऐसा घबड़ाया कि उनकेहृदयमें डर उत्पन्नहोकर यहमालूमदेनेलगा कि कोई बलवान्शत्रु हमलोगों को मारनेकेवास्ते चलाआता है जबअधिक विकलतासे मनदेवतोंका कहींनहींलगकर प्रतिदिनबल उनकाघटनेलगा तबइन्द्रादिक देवतोंने ब्रह्माकेपास जाकरकहा कि महाराजआपजगत्कर्ताहोकर सबजीवोंके दुःख व सुखकाहाल जो होनेवालाहै पूर्ण ले से जानतेहैं सो इनदिनोंहमलोगोंका मन बहुतघबड़ाकरडरा भरारहताहै इसकाभेद बतलादीजिये यहवचनदेवतोंका सुनकर ब्रह्माजी बोले हे इन्द्रजय व विजयद्वारपालक नारायणजीके जन्मलेनेकेवास्ते दितिकेपेटमें गर्भवासकियाहै इसलियेउसके तप व तेजसेतुम्हारा बलहीन होकरतुमलोगोंका यहहालहुआ बातसुनकर देवतोंनेकहा कि महाराजअभी उनकेगर्भमेंआने न्युगोंकी यहदशाहुई उनदोनोंके जन्मलेनेसे हमारीक्या केमहाप्रभुवैकुण्ठवासीलोगजन्म व मरणसेरहित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होंने बैकुण्ठका सुखछोड़कर बीचतनुदैत्यके किसवास्ते जन्म
लेना अंगीकारकिया इसकाहाल वर्णनकीजिये जिसमेंहमारासं
देहछूटजावे तबब्रह्मानेकहा उनकाहाल इसतरहपरहै एकदिनल
क्ष्मीजी बड़ेप्रेमसेबहुत दासीरहनेपरभी अपनेहाथचन्दन व अत
र नारायणजीके शरीर व भुजामेंलगाती थीं व परब्रह्मपरमेश्वर
बैकुण्ठमें जहांसबस्थान जड़ाऊसोनेकेबहुत अच्छेबनेहैं रत्नसिं
हासनपर बैठेथेउससमय जगन्माताने यहविचारकिया कि भुजा
श्यामसुंदरके देखनेमेंबहुतसुंदर व कोमलमालूमहोतेहैं पर मैंने
आजतक इनभुजोंकाबल कभीनहींदेखा न मालूमइनमें कुछपु
रुषार्थहै या नहीं नारायणजी अंतर्य्यामीने उनकेमनकाहालजा
नकर अपनापराक्रम लक्ष्मीजीको दिखलानेकेवास्ते यहबात वि
चारा कि सिवायजय व विजयजो मेरेद्वारपालक हैं दूसराकोई ए
कक्षणभी हमारेभुजाका बलसहनहींसक्ता जो मेरेसाथलड़सकै
इसवास्तेइनदोनोंका दैत्य योनिमेंजोहमारे शत्रुहैं जन्मदेवैं व उ
नसेलड़ाईकरके अपनेभुजोंका पराक्रमलक्ष्मीजीको दिखलावें
ऐसाविचारकर वैकुंठनाथनेजय व विजयकाज्ञानबदलदिया कि
उसीकारण तीनबेरउन्होंने बीचतनुदैत्यके जन्मलिया व उनके
जन्मलेनेकायहहेतुहै कि एकदिनसनक व सनन्दन व सनातन व
सनत्कुमारचारोंभाई जिनकोकिसीसमय भीतरजानेकेवास्ते म
नहाई नहींथी नारायणजीका दर्शनकरनेकेवास्ते बैकुण्ठमें गये
उसी दिन परमेश्वरकी इच्छासेजिसकाहाल ऊपरलिखाहै उनका
विजयद्वारपालक चतुर्भुजीस्वरूपने सातवींडेवढ़ीपर [illegible] नहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदि ऋषीश्वरोंको भीतरजानेसे मनाकरकेकहा कि बिनापू
नारायणजीके महलबीचजानाउचितनहींहै यहनईबात सुनतेह
सनत्कुमारजी ने क्रोधकरके कहा हे मूर्खहमको वैकुण्ठनाथ
भीतरजानेकेवास्ते कभीनहींमनाकियाहोगा किसवास्ते कि व
सदा ब्राह्मणोंकाआदर व सन्मानदूसरोंसे अधिककरतेहैं यहस
तुम्हारी दुष्टताहै जो हमैंरोंकतेहौ वैकुण्ठमेंकामक्रोध मोहलो
व्याप नहींसक्तापर तुमनेहमारा अपमानकरके हमैंक्रोधदिलाय
इसलियेहम परमेश्वरसेचाहतेहैं कितुमदोनों मर्त्यलोकके बी
जहांपर जीवकामक्रोध मोहलोभसेभरेरहतेहैं दैत्ययोनिमेंजन
लेव यहशापसुनतेही जय विजयकागर्व जातारहातब दौड़कर
सनत्कुमारजीके चरणपरगिरपड़े व रोतेहुयेहाथ जोड़करविनयक
महाराज हमनेजानाकि अबहमारेबुरेदिनआयेहैं इसलिये हम
ऐसाअधर्महुआ सो अपराधहमारा क्षमाकरके अवधिकाप्रमा
करदीजिये कि दैत्ययोनिसे कबहमाराउद्धारहोगा यहदीनवच
सुनकर सनत्कुमारजीनेकहा मेराशापकिसीतरह फिर नहींसक
और न मालूमक्योंकर मेरेस्वभावमें क्रोधनेप्रवेश किया सो तु
दोनोंभाइयोंको तीनबारमाताके पेटसेजन्मलेकर दैत्यहोना प
गा व तीनोंबेर त्रिलोकीनाथ सगुणअवतारलेकर जब तुम्हें अ
नेहाथसेमारैंगे तबतुमउद्धारहोकरफिर वैकुण्ठमें अपनीजगह
वोगे जिससमय सनत्कुमारजीजय व विजयसे ऐसाकहरहे थे
सुनकरवैकुण्ठनाथ यहहालसुनकर सनत्कुमारजीका सन्मा
[illegible] नंगेपांवलक्ष्मी समेतबाहर निकलआये और स

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्कुमारजीके चरणोंपरगिरकरकहा इनद्वारपालकोंसे बड़ाअपरा
धहुआ जो इन्होंनेआपकोरोंका मेरीलक्ष्मीको तुमसेकुछ पर्दान
हींहै अधर्मकीजगह स्त्रीकोपर्दाकरनाचाहिये यहआधीनता वैकु
ण्ठनाथकीदेखकर सनत्कुमारजीनेमनमेंकहा देखो कैसीबड़ाई
नारायणजीमें है जिसपरब्रह्मपरमेश्वरके चरणोंकाध्यानब्रह्मा व
महादेवआदिदेवता व नारदमुनिआदिक ऋषीश्वर व ज्ञानीलो
ग अपनेहृदयमें रखनेसेभवसागरपार उतरकरकृतार्थहोतेहैं सो व
हीआदिपुरुष भगवान्तीनोंलोकके मालिक व उत्पन्नकरनेवाले
जिनकाभजन व स्मरणकरनेसे हमनेयहबड़ाईपाई हमारेचरणों
परगिरकर इतनीआधीनता करतेहैं क्योंनहोइसीवास्तेयहअपना
नाम ब्रह्मण्यदेवरखकर ब्राह्मणोंकासत्कार बड़ेप्रेमसेकरतेहैं नहीं
तो इनकाक्याप्रयोजनथा जो मुझऐसेग़रीब ब्राह्मणपर इतनीद
याकरतेयह सबकृपा इसवास्तेकरतेहैं जिसमेंसंसारीलोग यहहाल
सुनकरब्राह्मणोंकीसेवा व सम्मानकरैं ऐसाविचारकर सनत्कुमार
जीने त्रिलोकीनाथसे हाथजोड़कर विनयकीकि हे दीनानाथ मैं
नेक्रोधवश तुम्हारेसेवकोंको शापदियासो आपदयाकीराह मेरा
अपराध क्षमाकर अपनेचरणोंका ध्यानमुझे दीजिये जिसमेंतु
म्हारेचरणकमलोंका ध्यानमनमेंरखनेसे फिरक्रोधहमको न आ
वै व कोईजीव मेरेहाथसे दुःख न पावै ॥

सोलहवां अध्याय ॥

नारायणजीको सनत्कुमारका सन्मान करना व वैकुण्ठनाथकी सनत्कुमारको स्तुति[illegible]

मैत्रेयऋषीश्वरने कहा हे विदुर सनकादिकके [illegible] नहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनकर परब्रह्मपरमेश्वर बोले हेमहाराजजय व विजयमेरेद्वारे
लकोंको अपराधकरनेकेबदले जो दण्डआपनेदिया सो बहुत
च्छाकिया और मैं इसशापदेनेसे बहुतप्रसन्नहुआ किसवास्ते
इनकेदण्डपानेसेदूसराकोईब्राह्मणव ऋषीश्वरोंकाअपमाननह
करेगा व तुम्हारेस्वभावमें क्रोधनहींथा यहशापमेरी इच्छासेह
कोहुआहै आपकिसीबात की चिंतामनमें न करैं औरमैंइसवास्
तुम्हारीविनतीकरताहूं कि यह दोनों मेरेद्वारपालकथे इनकेअ
राधकरनेका अपयश मेरेऊपर है इसलिये मेराअपराध क्षमाक
जिये किसवास्ते कि संसारमें किसीकानौकर कोईकाम भलाय
बुराकरै तो उसकेमालिकका नाम उसबातके करनेमें धराजात
है व जोलोग साधु व महात्मा व ब्राह्मणका अपमान करतेहैं उ
कातनु शत्रुहोकर उन्हेंनरकमें रहनापड़ताहै व नरककेलोगोंको
भी ऐसेमनुष्यकी संगति अच्छीनहींलगती सो तुमलोग ब्राह्म
व ऋषीश्वर मेरेइष्टदेवताहो तुम्हारेचरणोंकीधूरका ऐसाप्रताप
कि लक्ष्मीजी चंचलस्वभाव होनेपरभी मेरेपास दिनरात बनी
हतीं व ब्राह्मणको मैं अपनेतनु व लक्ष्मीजी व वैकुंठसे भी प्या
व अच्छाजानताहूं व संसारमेंहम ब्राह्मणमुख व अग्निमुखसेभ
जनकरतेहैं परजैसा ब्राह्मणको अच्छेपदार्थ खिलानेसे प्रसन्नह
ताहूं वैसे अग्निहोम करनेसेप्रसन्न नहीं होता ब्राह्मणोंको इच्छ
भोजन खिलानेसे मेरापेट तीनोंलोकके जीवोंसमेत भरजाता
[illegible]ये गृहस्थको ब्राह्मण खिलाना अवश्यचाहिये और मैं
[illegible]केपैंकीधूर लक्ष्मीजीसमेत अपने शिरपर चढ़ाता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व ब्राह्मणका अपराध क्षमाकरनेवाले लोग मुझेबहुत प्यारेमालू मदेते हैं यहवचन वैकुंठनाथकासुनकर सनकादिकबोले हे महा प्रभु तुम्हारीलीला व इच्छाब्रह्माजी हमारेपिता नहींजानते हम लोगोंकी क्या सामर्थ्य है जो जानसकें आपसबचौदहों भुवनके जीवोंकेमालिक होकर जैसीतुम्हारी इच्छाहोतीहै वैसाब्रह्मादिक देवताकरते हैं व आपसे कोईदूसरा बड़ानहीं है उनको बड़ाभाग्य मानसमझना चाहिये जिनकेहृदयमें तुम्हारीभक्ति व वैकुंठजा नेकी चाहनारहतीहै व जो लोगहरिभक्तोंसे सत्सङ्गरखकरउनकी सेवा करतेहैं उनकोवैकुंठ पहुँचनेमें सन्देहनहीं रहता व आपका वैकुंठकैसाहै जिसमें काम व क्रोध व मोह व लोभका प्रवेश नहीं होता वहां कल्पवृक्षबहुतसे लगेरहकर बारहोंमहीने उनवृक्षों में ऐसे फूल व फल लगेरहतेहैं जिसके देखनेसे चित्तप्रसन्न होकर शोच व दुःखछूटजाताहैवअच्छे२पक्षीहंस व मुरैलाआदिवहांरह करअनेकप्रकारकी मीठीमीठीबोलियां बोलतेहैं व बहुतबड़मका नसोनेके रत्नादिकसे जड़हुयेबने हैं व उसजगह पहुँचनेसे मनुष्य की सबइच्छा पूर्णहोजातीहैं सबतरहकेसुख व पदार्थ उसकोवहां मिलतेहैं ऐसाकहकर सनकादिक नारायणजी व लक्ष्मीजीकेस्व रूपका ध्यानकरके ऐसेप्रेममें डूबगये किआंशू बेप्रमाण उनकी आंखोंसे बहनेलगे व नारायणजीका स्वरूप इसतरहपर है कि श्यामरंग कमलनयन चतुर्भुजमोहनीमूर्ति किरीटमुकुटसाजे अ ङ्ग २ परभूषणाविराजे कौस्तुभमणि व बैजयन्तीमा[illegible]का ताम्बरकी कछनीकाछे उपरनारेशमीओढ़े चारोंकरकमलहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रगदापद्म धारणकियेशंख व चक्रकेदोहाथ ऊपरउठायेपद्म व गं
दाकेदोहाथ नीचेकोलटकाये घूंघरवालेबाल मन्दमन्द हास्यता
पहारिणी चितवनउनके बाईंओरलक्ष्मीजी इसस्वरूपसे किएक
स्त्री बहुतसुन्दर बिजलीऐसी अंगकीचमक पीताम्बरपहिनेकानों
में कर्णफूलहाथोंमें कंगन व कड़ापैरोंमें पायज़ेब व कड़ागलेमें
मोती व रत्नकेहारशिरमें चूड़ामणिनाकमें नत्थपहिनेलक्ष्मी ना
रायणजी जड़ाऊसिंहासनपरबैठेहैं जब ऐसेस्वरूपका ध्यानसन
कादिकनेकिया तब वैकुण्ठनाथने कहा मैं तुमसेबहुतप्रसन्नहूंकु
छ वरदानमांगो यहवचनसुनतेही सनकादिकहाथ जोड़करबोले
कि महाराज हमयहीवरदान मांगतेहैं कि तुम्हारेचरणोंकी भक्ति
मेरेहृदयमें बनीरहकर आपकीकथा व लीलासुननेमेंसर्वदाइच्छा
लगीरहै जब नारायणजीने इच्छापूर्वक वरदानदिया तबसनका
दिक वैकुण्ठनाथको दण्डवत्करने उपरांत बिदाहोकर चलेगये॥

सत्रहवां अध्याय॥

हिरण्याक्षवहिरण्यकशिपुकादितिकेपेटसेजन्मलेना वहिरण्याक्षकावरुणदेवताकेस्थानपरजाना॥

मैत्रेयऋषीश्वरने विदुरसेकहा सनकादिकके जानेउपरांतज
य व विजयद्वारपालक इसइच्छासे वैकुण्ठनाथके सामनेखड़ेरहे
कि जिसमेंनारायणजी आज्ञाकरदेवें तो ऋषीश्वरोंका शापहम
कोभोगना न पड़ेत्रिलोकीनाथ अन्तर्य्यामीउनकी मन्शाजान
करबोले हे जयविजयमैंने अपनीइच्छासे तुम्हाराज्ञानबदलक
[illegible] ब्रह्मणोंसे दिलवादिया है नहीं तो सनत्कुमारजीके स्
[illegible] कें[illegible]था होनेवालीबात बिनाहुयेनहींरहती व सनत्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऋषीश्वरअपना क्रोधक्षमाकरके तुम्हारेउद्धारका उपायती
नजन्म बीतेकहगयेहैं सो तुम्हैंतीनबेर दैत्ययोनिमें जन्मलेकरभू
लोकमें अवश्यरहनाहोगा उसतनुमें मेराध्यानशत्रुभावसे करना
मैं सगुणअवतारलेकर तुमकोमारूंगा व तीनजन्मउपरान्त हम
तुम्हें फिर वैकुण्ठमें बुलालेवेंगे ऐसाकहकर जय व विजयको वै
कुंठसेगिरादिया उन्हींदोनों भाइयोंने वैकुंठसे आनकरदितिकेपे
टमें गर्भबास कियाहै सो तुमलोग चिन्तामतकरो उनकेउत्पन्न
होनेसे थोड़ेदिनतक देवतोंको दुःखपहुँचेगा फिरनारायणजी अ
वतारलेकर उन्हेंमारडालेंगे व तुमलोगोंको ऐसीसामर्थ्य नहींहै
जो उनको मार व जीतसको यहहालब्रह्माजीसे सुनकर देवता अ
पनेस्थानपर चलेगये व जय विजय दितिकेपेटमें पालनहोनेलगे
व दिति सदाइसबातकी चिन्ताकरकेकहतीथी ऐसेअधर्मी व दुःख
दायीबेटे उत्पन्नहोनेसे मुझे सिवायदुःखके कुछसुखनहींहोगा
इससेवह न जन्मैंतोअच्छाहै सोपरमेश्वरकीइच्छासे सौवर्षतक
वह दोनोंदितिकेपेटमेंरहकर उत्पन्नहुये उनदोनोंके जन्मसमय
बहुतअशकुन संसारमेंप्रकटहोकर ब्राह्मण व देवतोंकाकलेजामा
रेडरकेकांपनेलगा व अग्निहोत्रियोंकीअग्नि जोकईपीढ़ीसेकुंड
मेंथी वहबुझगई व पृथ्वीपरभौंचालआकर सबलक्षणाकलियुग
के दिखलाईदेनेलगे सोब्रह्माजीने उनदोनोंकानाम हिरण्याक्ष व
हिरण्यकशिपुरक्खा हिरण्याक्षकाशरीर बहुतलम्बा व चौड़ा क
ईयोजनकाथा जबवहदोनोंभाई सयानेभये तबब्रह्माजीने उनको
कहाकि तुमलोगअपनीमाताकी इच्छासेजाकरकेनिहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वचनसुनतेही हिरण्याक्ष अपने बलकेघमण्डसेउन्मत्तहोकरगदा
हाथमेंलियेहुये अकेलाघरसेनिकला और वहअपने पुरुषार्थ के
सामनेकिसीको कुछमाल नहींसमझताथा इसलियेकुछ सेनासा
थ न लेकरपहिले वरुणालोकमें चलागया व वरुणदेवताके द्वार
पर जो समुद्रादिक और नदियोंके मालिकहैं खड़ाहुआ व समुद्र
कापानी अपनीगदासेपीटनेलगा व वरुणदेवताके द्वारपालकोंसे
कहा कि तुमलोगजाकर वरुणदेवतासे कहदो कदाचित् वहपु
षार्थरखताहो तो आकरहमारे साथयुद्धकरै यहसन्देशाहिरण्याक्ष
कासुनतेही पहिलेवरुणदेवताको क्रोधहुआ फिरब्रह्माजीका वच
नयादकर व अपनीदशामध्यम देखकरहिरण्याक्षको यहबातक
हलाभेजी कि आगेहमने बहुतसेदैत्योंको लड़ाईमेंमारा व जीत
था अबहमबूढ़ेहुयेइसलिये तुझतरुणदैत्यसे नहींलड़सकेतुम्हा
साथयुद्ध करनेवाला सिवायनारायणजीके दूसराकोईनहींहै थो
ड़ेदिनोंमेंतेरे ऐसेअधर्मी व पापीकेमारनेवास्ते वैकुण्ठनाथ अ
तारलेकर तुझेमारेंगे जब हिरण्याक्षनेसुना कि मेरेलड़नेके वास्
परमेश्वरका अवतारहोगा तब बहुतप्रसन्नहोकर वरुणाकोकहल
भेजाजबतुमने हमसेहारमाना तो जो कुछउत्तममणि व रत्नतुम्ह
रेयहांहों सो हमैंभेजदोवरुणने हारमानकरबहुतसेरत्न व मणि
रण्याक्षको भेजदिये व उससेबोलेयह स्थानआपकाहै चाहोतु
रहोया किसीकोदेकर मुझेजहांआज्ञादो वहांजाकररहूं जब हि
[illegible]रुणाको अपनेआधीनदेखातबभेंटलेनेकेउपरांतउन
[illegible]सेबसाकरकुवेर देवताकेस्थानमेंगया कुवेरदेव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्मा अपनेदिन बुरेदेखकर बहुतउत्तमरत्न व मणिउसको भेंटदे
करकहा जो कुछद्रव्यमेरेयहां है उसकोअपनाजानकर जैसीआ
ज्ञासुझेदो वैसाकरूं हिरण्याक्षउसेभी अपनेवशजानकर यमपु
रीमेंपहुंचा धर्म्मराजयमपुरीके स्वामीनेभीब्रह्माजीका कहनाया
दकरके उसकीविनतीकी व बहुतसीभेंटदेकर उसकेहाथसे अपना
प्राणबचाया जब हिरण्याक्षने उसकोभीअपनेआधीनसमझलि
यातब इन्द्रलोकमेंजाकर ललकाराइन्द्रने भी मारेडरकेराजसिं
हासनकाछत्र व चमरउसेभेंटदेकर उसकीआज्ञा अंगीकारकी ज
ब हिरण्याक्षनेदेखा कि तीनोंलोकमें कोईऐसानहींरहा जो मेरा
सामना करसकैऔर मैं उसकेसाथ युद्धकरकेअपनी इच्छापूरीक
रूं तबउसनेमनमें विचारा कि अबउसको ढूंढ़नाचाहिये जो मेरे
साथयुद्धकरे हिरण्याक्ष यहबातविचारकर अपनेलड़नेवालेकोढूं
ढ़ताहुआ आनन्दसे चलाजाताथा राहमेंउसने अचानक नारद
जीकोदेख दण्डवत्करने उपरान्तहँसकरपूछाकहौ मुनिनाथतुम
तीनोंलोकमें घूमतेफिरतेहो सोकोई शूरवीरहमारे साथयुद्धकरने
कोबतलाओ नहीं तो तुम्हें मारडालेंगे यहबात सुनकर नारदजी
बोलेहे कश्यपनन्दन हमसंसारमें किसीकोऐसा नहीं देखते जो
तुम्हारेसाथ लड़सकैपर नारायणजी तेरेसाथलड़सकेहैं तब हिर
ण्याक्षनेकहा तुम परमेश्वरका पताकहीं बतलाओ तो मैं उनसे
जाकरयुद्धकरूं हमनेसुनाथा कि ब्राह्मण व तपस्वियोंके स्थानपर
वहरहतेहैं सो वहांजाकरमैंने बहुतसे ऋषीश्वर व योगीश्व[illegible]का
दुःखदियापर मेरेडरसे वहप्रकट नहींहुये यहवचनसु[illegible]नहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोले हे हिरण्याक्ष इससमय नारायणजी वाराहरूपधरकर पृथ्
लानेकेवास्ते पातालमेंगयेहैं तुम्हैंलड़नाहो तो वहां जावो वहां
म्हारेसाथलड़ैंगे यहबातकहकर नारदजीचलेगये ॥

अठारहवां अध्याय ॥

हिरण्याक्ष को बाराह भगवान् का मारना ॥

मैत्रेय ऋषीश्वरने कहा हे विदुरहिरण्याक्ष यहहालनारदज
से सुनतेहीबहुत प्रसन्नहोकर गदाहाथमें लियेहुयेवाराहजीसे
ड़नेकेवास्ते पातालकीओर चला राहमेंक्या देखा कि वाराहज
अपनेदांतोंपर पृथ्वीफलके समानलियेहुये चलेआतेहैं उनको
खतेही हिरण्याक्षने हँसकर कहा हे वाराह चोर कहांजाताहै खड़
रहहमारे साथलड़ाईकर बनमेंहमनेवाराहकोदेखाथा यहबड़ेआ
श्चर्य्यकी बातहै जो पानीमेंवहरूप दिखलाईदिया औरतुमहम
से नहींडरते कि हमारेपुरुषोंकी थातीपृथ्वी जो पातालमेंरक्खीथी
उसेचुराकर लियेजातेहोसो मेरेहाथसे तुम्हारामरण किसीतरह
हींबचेगा व जिसकारण मैंतुमकोढूंढ़ताथा वहमनोरथ मेरापूर्ण
आ व मैंने पहिंचाना कि तुमनारायणहो इसीतरहकई बेर अवास्ते
तारलेकर तुमनेहमारे भाईबन्द दैत्योंकोमाराहै आजतुम्हैं मारकरके
करसब दिनोंकीकसरलेताहूं तुम्हारेमारनेके उपरान्तयोगी व
षीश्वरोंको मारूंगा जिनकेहोम व यज्ञकरनेसेतुमको सामर्थ्यहो
तीहै यहसबदुर्वचन हिरण्याक्षका सुनकरवाराहजी इसलिये
नहींबोले कि भलेमनुष्यको दुर्वचनकहनेसे अशुद्ध
आयुर्हा व तेजबलकमहोजाताहै जबवाराहजी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नानाकिदुर्वचनकहनेसेतेज व बलहिरण्याक्षकाक्षीणहोगयातब
पृथ्वीको अपनीमायासे पानीपररखकर हिरण्याक्षसे कहा हे क
श्यपनन्दनसत्यहै मैं जलकाशूकर होकरतेरेऐसेगांवके कुत्तेको
जो अपनेकोसिंह समझतेहैं ढूंढ़ताफिरताहूं व जिसकीमृत्यु निक
टपहुंचती है उसकोभली व बुरीबातकहनेका विचारनहींरहता व
यहपृथ्वी तुम्हारेपुरुषोंकी थातीमैं तेरेसामने जो तू अपनेकोबड़ा
शूरवीर जानताहै लाकरसन्मुखखड़ाहूं पहिले तू अपनीगदाजो
हाथमेंलियेहै मेरेऊपरचला और जबतेरीगदाकुछ कामनहीं करै
गीतबमैं अपनीगदा तुझेमारूंगा व यहतैंनेसत्यकहा कि हमनेह
ज़ारोंबार अवतारलेकर दैत्योंकोमारकर पृथ्वीकाभारउतारहै व
हीगति तेरीभीहोगी यहवचनसुनतेही हिरण्याक्षने क्रोधसेवाराह
भगवान्पर अपनीगदाचलाया सो नारायणजीने उसकीगदा रों
ककर अपनीगदा उसकेमारा इसीतरहदोनोंतरफसे गदायुद्धहोने
लगाजबलड़ते २ थोड़ासादिन रहगयातब ब्रह्मानेआनकर वारा
हजीसे विनयकिया हे महाप्रभुआप हिरण्याक्षकेमारनेमें किस
वास्तेविलम्ब करकेउसेखेल खिलातेहैं इसअधर्म्मीको जल्दीमा
रकरदेवतोंकाडर छुड़ाना चाहिये सिवायतुम्हारे दूसराकोई ऐसी
सामर्थ्य नहींरखता जो इसेमारसकै यहवचनब्रह्माका सुनतेहीवा
राहजीने एकगदाहिरण्याक्षकेऐसीमारी कि वहगिरपड़ाजबफिर
उठकरउसने अपनीमायासे अँधियारा उत्पन्नकिया तब वाराह
जीने सुदर्शनचक्रको जिसमेंहजारसूर्यके समानप्रकाशहै उसका
करउसकी मायाहरलिया जबहिरण्याक्षने त्रिशूलकरनिहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुदर्शनचक्रने त्रिशूलउसका काटडाला फिर वाराहजीने एक
माचा हिरण्याक्षके ऐसामारा कि वहमरकर गिरपड़ाउसके म
ही देवतोंने प्रसन्नहोकर वाराहजीपर फूलवर्षाये व अपनामन
थ सिद्धपाकर बाजे बजाये ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी का देवतों समेत वाराह भगवान के पासआना व उनकी स्तुति करना ॥

मैत्रेयजीबोले हेविदुर जबहिरण्याक्ष मारागया तबब्रह्माने
वतोंसमेत वाराहजीकेपासआनकर इसतरहपरस्तुतिकिया हे
ब्रह्मपरमेश्वर आपनेवास्ते रक्षाकरने देवता व ब्राह्मण व यज्ञआने
तारलेकर हिरण्याक्षअधर्मी दुःखदेनेवालेको मारडाला व पृथ्वी
को पातालसेलाकर पानीपरस्थिरकिया सो अब तुम्हारीकृपा
पृथ्वीपर सबजीव आनन्दसेरहकरयज्ञ व पूजा व दानआदिकक
गे हिरण्याक्षके समयमेंदेवता व पित्रोंकाभाग नहीं मिलता
अबवहलोग अपना २ अंशयज्ञ व होममेंपाकर आनन्दसे तु
रा स्मरणकरेंगे जबदेवतालोग स्तुतिकरचुके तबपृथ्वी स्त्रीरू
कर वाराहजीके सामनेआई व उसनेहाथजोड़कर कहा हे ज्यो
स्वरूप आपनेदयाकरके मुझको पातालसेलाकरपानीपर
किया सबछोटेबड़े संसारीजीव अपनेचरण मेरेऊपर रखतेहैं
आपने आदरकरके अपनेदांतोंपरउठाया इसलियेमैंनेअपने
कृतार्थजाना किसवास्तेकि तुम्हारेचरणोंकीछाया सबजगत
ऊंहै सोमेरीछाया तुम्हारेशिरपरपड़ी परमैंएकबातसे बहु
कलियुगबासीमनुष्यबड़ेपापीहोके अपनाकर्म्म व ध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ड़करअशुभकर्मकरैंगे व हरिभक्तोंकेसाथ शत्रुतारखकरतुम्हा
िभक्तिसे विमुखरहेंगे व अपनेमाता व पिता व भाईबन्दसे झग
ड़ाकरकेसाले व श्वशुरसेप्रीतिरक्खेंगे व स्त्री अपनेपतिसेप्रीतिनहीं
खकर दूसरेपुरुषकोचाहेंगी व पुरुषअपनीस्त्रीकापालन नकरके
ेश्यासेप्रीतिकरैंगे व बेटाबापकामरना विचारकरयहइच्छारक्खै
ा किजबयहमरै तबधनहमारेहाथलगकर बेश्यागमनकरने व
ूआखेलनेवास्ते सुबिस्ताहो राजालोगअपनाकर्म्म व धर्म्मछो
करप्रजाकाधनलेके उन्हेंदुःखदेवेंगे व सबमनुष्यकेवल अपने
ाने व पहिरने व इन्द्रियोंकोसुखदेनेकीइच्छारखकर अपनेअर्थ
मित्रतारक्खैंगे इसलिये कलियुगबासियोंको आपसकेविरोध
बड़ादुःखहोगा जबऐसेअधर्मी मेरेऊपरअपनाचरणरक्खैंगे तब
बहुतदुःखीहोऊंगी इसबातसेमेरीरक्षा आपकोकरनाचाहियेय
वचनसुनकर वाराहजीबोले हेपृथ्वीतूइनबातोंसेमतडरजब२अ
र्मियोंके उत्पन्नहोनेसे तुझकोदुःखप्राप्तहोगा तबतबहमसगुण
वतारलेकर अधर्मियोंकोमारके तुझेसुखदेवेंगे ऐसाकहकरवा
हजी वैकुंठकोपधारे व और सबदेवता अपने २ लोककोगये॥

बीसवां अध्याय॥

मैत्रेय ऋषीश्वरका विदुरजीसे जगत्की उत्पत्ति कहना॥

शौनकादिकऋषीश्वरोंने इतनीकथासुनकर सूतजीसेपूछा कि
वाराहजी पृथ्वीकोपानीपर स्थिरकरके वैकुंठकोगये उसकेपी
किसतरहसंसारकीरचनाहुई व मैत्रेयऋषीश्वर व विदुरसेक्याका
वादहुआ सूतजीनेकहा जबविदुरजी वाराहअवतारकीनहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनकरबहुतप्रसन्नहुये तबउन्होंनेमैत्रेयऋषीश्वरसेपूछाकि
राजब्रह्माने संसारीजीवों को किसतरह उत्पन्नकिया मैत्रेय
बोले जबपृथ्वीस्थिरहोचुकी तबआदिनिरंकारकीमाया व इ
से पहिलेचौबीसतत्त्व प्रकटहोकर फिरएकपुरुष यक्षनाम उत्प
हुआ जबउसेभूख व प्यासलगी तबवहकुछपदार्थभोजन न प
रब्रह्माजीकोखानेवास्तेचला जबब्रह्माजीनेक्रोधकरके उसको
पनेखानेसेमनेकिया तबब्रह्माके क्रोधकरनेसे एकपुरुषतमोगु
रक्षनामराक्षसप्रकटहुआ ब्रह्मानेउनदोनों को देखतेही कुछ
मानकर जीवोंकाउत्पन्नकरना बन्दकरादिया व मनमेंऐसाि
राकि हमारेइसतनुसे सृष्टिरचनेमेंअधर्मीलोग उत्पन्नहोवेंगे
मैंदूसरातनुधरकर सतोगुणसे जीवोंकीउत्पत्तिकरूंगा तब
व धर्मात्मालोग उत्पन्नहोंगे ऐसाविचारकर ब्रह्मानेवहतनु
नाछोड़के दूसराशरीरधारणकिया व अपनेपहले शरीरकेद
अंगसे स्वायम्भुवमनु नामएकपुरुष व बायेंआधेतनुसे शत
नामस्त्रीउत्पन्नकरके दोनोंकाविवाहकरादिया जबस्वायम्भु
नुने ब्रह्माजीसेकहाकि महाराजमुझेक्याआज्ञाहोतीहै तबब्र
विचाराकि जिसशरीरसे स्वायम्भुवमनु व शतरूपा उत्पन्न
हैं उसतनुसेपरमेश्वरका तप व स्मरणानहींकिया बिना हरि
नकिये धर्मात्मा व ज्ञानीमनुष्य उनसे उत्पन्ननहींहोवेंगे य
तशोचकर ब्रह्माने स्वायम्भुवमनु व शतरूपासेकहा कितुम
लेपरमेश्वरका तप व स्मरणाकरके पीछेसे संसारी जीव
रो जिसमेंधर्मात्मामनुष्यउत्पन्नहोवें उसीसमय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमनु व शतरूपाब्रह्माकीआज्ञासे बनमेंतपकरने चलेगये उन केजानेउपरांतब्रह्माने भगवान्जीका ध्यानकरके उनसे प्रार्थना किया किहेदीनदयालमेराअपराधक्षमाकरो व मुझसेसंसाररचने में भूलहोकरयह कठिनकामनहींबनपड़ताहोतो उसकेउत्पन्नक रने कोमुझेसामर्थ्यदेव जिसमेंतुम्हारी आज्ञानुसार जीवोंकीउत्प त्तिहोवे यहबात सुनकर ब्रह्माजीको ध्यानमें नारायणजीनेऐसा उपदेशकिया हेब्रह्माअब तुम्हारातनु शुद्धहुआ तुमसंसारकीरच नाकरो धर्म्मात्मा व ज्ञानीमनुष्य उत्पन्नहोवेंगे यहवचनवैकुंठ नाथकासुनतेही ब्रह्मानेप्रसन्नहोकर नारायणजीकीकृपासे मरी चि व कश्यप व अत्रि व अंगिरा व पुलस्त्य व क्रतु व भृगु व बशि ष्ठ व दक्ष व नारद ये दशपुत्र उत्पन्नकिये उनदशोंने ब्रह्माजी से आज्ञाकिहमें जो आज्ञाहोसो पालनकरें ब्रह्माजीनेकहा तुमलोग पहिलेपरमेश्वरका तपकरकेपीछेसे संसारीजीव उत्पन्नकरो इस बातमें नारायणजी व हमारीदोनोंकी प्रसन्नताहै यहवचन ब्रह्मा का सुनकरनारद व अंगिरा व क्रतुतीनमनुष्योंने कुछउत्तर नहीं दियाऔर भृगुआदिसातबेटे प्रसन्नहोकर दशोंमनुष्य परमेश्वर कातप करनेवास्तेबनमेंचलेगये व ब्रह्माकेजिसशरीरसे स्वायम्भु वमनु व शतरूपा उत्पन्नहुयेथे उसतनुकी हड्डी व चमड़ाजोपड़ा था उसमेंसे एक अँधियाराप्रकटहुआ उसअँधियारेको यक्ष व रक्ष ने जो पहिलेब्रह्मासे उत्पन्नहुयेथे स्त्री समझकर लेलिया ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इक्कीसवां अध्याय॥

नारायणजीका स्वायम्भुवमनु व शतरूपा व कर्दमऋषीश्वरको दर्शनदेकर वरदान देना॥

मैत्रेयऋषीश्वर बोले हे विदुरजब स्वायम्भुवमनु व शतरू
ने बनमेंजाकर दशहजारवर्ष परमेश्वरका तप व ध्यानकिया त
वैकुण्ठनाथने दर्शनदेकर उनसेकहा मैं तुमसेबहुत प्रसन्नहूं कु
वरदानमांगो स्वायम्भुवमनु व शतरूपाने परब्रह्मपरमेश्वरका
र्शनपातेही बहुतस्तुति व पूजाकरकेहाथ जोड़करकहा हे दी
नाथ अन्तर्यामीहमने संसारउत्पन्नकरने व राजगद्दीका सुख
गनेकेवास्ते तपकियाहै सोमैं बहुतभूलगया जो राज्यकी इच्
से तपकिया मुक्तिप्राप्त होनेकेवास्तेतप व स्मरणकरना उचित
नारायणजीने यहवचन सुनकरकहा हे स्वायम्भुवमनु जो म
रथ मिलनेवास्ते तुमनेतपकिया है वह वरदानसिवाय उसके औ
जिसवस्तुकी तुम्हें इच्छाहोवह मुझसेमांगलेव तुमकोदूंगा
ऐसीदया व कृपा वैकुण्ठनाथकी स्वायम्भुवमनु व शतरूपानेअयम्भु
नेऊपर देखीतब हाथजोड़कर बोले हम चाहतेहैं कि तुम ऐसा
हमारेघर उत्पन्नहोवे यहबात सुनकर परब्रह्म परमेश्वरने कहींमत
मेरेसमान दूसराकोई नहीं है जो तुम्हारेयहां उत्पन्नहोकर तुम
लोगोंकी इच्छापूर्णकरे इसलिये हम आप अवतारलेकर तुम्हारेनेवा
नातीहोवेंगे ऐसाकहकर नारायणजी अन्तर्द्धानहोगये और
यम्भुवमनु व शतरूपाने ब्रह्माजीकेपास आनकरदण्डवत
स्वायम्भुवमनु अपनेपिताकी आज्ञासेसब पृथ्वीकाराज्यक
स्वायम्भुवमनु व शतरूपासेदोबेटा उत्तानपाद व प्रिय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीनकन्या आकूती व देवहूतीऔर प्रसूतीनामउत्पन्नहुई वउ
त्तानपादके ध्रुवनामपुत्र उत्पन्नहुआ व प्रियव्रत पहिलेनारदजी
के ज्ञान सिखलानेसे विरक्तहोगयेथे फिर उन्होंनेब्रह्माजीके सम
झानेसे सातोंद्वीपका राज्यकिया व स्वायम्भुवमनुने आकूतीका
बिवाहरुचिनाम ऋषीश्वरसे करादिया व ब्रह्माजीकेबेटे कर्दम ऋ
षीश्वरने अपनेपिताकी आज्ञासेदशहजारवर्ष परमेश्वरका तप
किया व जबनारायणजीने प्रसन्नहोकर दर्शनदेने उपरान्त उन
सेकहा कि तुमवरदान मांगोतब कर्दमऋषीश्वर दण्डवत् वपूजा
स्तुतिकरके हाथजोड़कर बोले हे ज्योतिस्स्वरूप अन्तर्यामी मैंने
संसारउत्पन्न करनेवास्ते तपकियाहै यहवचनसुनकर वैकुण्ठना
थने कहा कि मुझेपहिलेसे तुम्हारेमनकाहाल मालूमथा सो मैंने
मुझे इच्छापूर्वक वरदानदिया सिवायइसके और जो २ चाहना
करोगे वहसबवस्तु तुमकोमिलजावेंगी व आजकेतीसरेदिन स्वा
यम्भुवमनु तुम्हारेपास आनकरदेवहूती अपनीकन्या तुझेबिवाह
देगा व हमतेरेयहां अवतार धारणकरेंगे सो तुमबिवाहकरनेसे ना
हीं मतकरना ऐसाकहने उपरान्त वैकुंठनाथकी आंखोंसे यहबात
तमझकर आंशूबहनेलगे देखोकर्दम ऋषीश्वरने केवलबिवाह
होनेवास्ते जो सदास्थिरनहींरहता दशहजारवर्ष तपकिया यही
छतावाकरनेसे जिसजगह परमेश्वरका आंशूगिराथा वहांबिंदु
सरनाम तीर्थप्रकटहुआ और वहतालाब आजतककुरुक्षेत्र के प्र
वर्त्तमानहै आंशूगिरने उपरान्त वैकुंठनाथने कहा कि [illegible]का
सतीर्थमें स्नानकरेगा सबपाप उसकेछूटकर धर्म [illegible]मानहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसकालगेगा यहबातकहकर परब्रह्मपरमेश्वर वैकुण्ठको प
व कर्दमजीउनके आगमनकी आशाकरनेलगे तीसरेदिन राज
स्वायम्भुवमनु व शतरूपाअपनी स्त्री व देवहूतीकन्यासमेत ज
ऊरथपर चढ़करपहिले बिन्दुसरतीर्थ मेंगये वहां स्नानकरनेके
परान्त फिर कर्दम ऋषीश्वरके स्थानपरजाकर उन्हें दण्डवत
या कर्दमजीने बड़ेआदरभावसे उन्हें बैठालबड़ाई उनकीकरने
गेइतनीकथा सुनाकर सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे क
कि स्वायम्भुवमनु व शतरूपा कदाचित् कर्दमजीका रमणी
स्थानदेखनेसे बहुतप्रसन्नहुआ जबस्वायम्भुवमनु व शतरूपा
आपसमें कर्दमजीको देवहूतीअपनी कन्याबिवाहने वास्तवि
स्कियातब स्वायम्भुवमनु कर्दम ऋषीश्वरके सामनेखड़े हो
हाथ जोड़के बोले कि महाराज जबनारदजीके मुखसेआपका
रासुनकरदेवहूतीमेरी कन्याकोतुम्हारेसाथ बिवाहकरनेकीइच्
हुई तबउसने अपनीमातासे यहहालकहा और अपनी स्त्रीसे
का मनोरथसुनकर देवहूतीसमेत तुम्हारेपास आयाहूं सोमेरी
न्याआपकी सेवामेंरहैगी यहबातसुनतेही कर्दमजीमनमें ब
प्रसन्नहोकरबोले कि हेराजन्तुम्हाराकहना मुझेअंगीकारहैक
चितकोईमनुष्यकुछवस्तु अपनीप्रसन्नतासेकिसीकोदेवे तो
श्य उसको लेलेनाचाहिये नहीं तो पीछेदुःख होताहै इसलि
आपकी आज्ञासेबाहर नहींहूंपर इसप्रतिज्ञासे कि जबतुम्हा
चा न्तान उत्पन्नहोलेगी तबगृहस्थी छोड़करहरिभजन
स्वायम्भुवमनुने ऋषीश्वर महाराजका का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नालिया व देवहूती ऐसीसुन्दरीथी कि जिसपर रतिकामदेवकी स्त्रीको निछावर करडालै ॥

बाईसवां अध्याय ॥

स्वायम्भुवमनुको देवहूती अपनी कन्याका कर्दम ऋषीश्वरसे बिवाह करदेना ॥

मैत्रेयजीने विदुरजीसेकहा कि जब कर्दमऋषीश्वरने देवहूती केसाथ बिवाहकरना अंगीकारकिया तब स्वायम्भुवमनुनेदेवहूती काबिवाहकर्दमजीसे विधिपूर्वककरकेकहामहाराजआपकोसेना व द्रव्यादिक जिसवस्तुकी चाहनाहो सो मैं तुम्हारेयहां पहुंचादूं किसवास्ते कि सबराज्य व धनमेरा ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंकाहै य हबातसुनतेहीकर्दमजी हँसकरबोले कि हेराजन् हमकोधन व से ना कुछ न चाहिये जबस्वायम्भुवमनु व शतरूपाअपनीकन्याको कर्दमजीकेपास छोड़कर राजमंदिरपर जानेलगे उससमय देवहू तीने बहुतरुदनकिया तबराजा व रानीउसेधीर्यदेनेउपरान्त कर्दम जीसेबिदाहुये व देवहूती कर्दमजीकी सेवामेंरहकर सबकाम उन का पहिलेबिनाकहे करदेतीथी जिसमें किसीबातकेवास्ते उनको कहना न पड़ै व राजास्वायम्भुवमनुने बर्हिष्मतीपुरीमें जहांपर वाराहजीकेरोमागिरने व कुशाउगने व ऋषीश्वरोंके मंत्र पढ़नेसे दैत्यनहीं रहसक्ते थे अपनी राजगद्दीपरजाकर विचारकिया कि हमारेपासराज्य व द्रव्य बहुतहै व संसारमें मनुष्यलोग धन अ धिक व्यर्थहोनेसेउसको अपने सुखकेवास्ते जो सदास्थिर नहीं र हताखर्च करतेहैं व परलोककाडर नहींरखते इसलिये मनुष्यको उचितहै कि परमेश्वर जिसकोधनदेवे उसेवहधन [illegible] मानहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नामपर शुभकर्ममें खर्चकरनाचाहिये यहबात विचारकर स्वा
म्भुवमनुनेहरसालविधिपूर्वक यज्ञकरना व नित्यप्रातसमयबहुत
सीगऊ व स्वर्णादिक ब्राह्मणोंकोदानदेना आरम्भकिया जब नि
त्यनेमसे छुट्टीपावें तब परमेश्वरकीकथा व लीला महात्मा व ऋ
षीश्वरोंसे सुनाकरें जिससमय कोईब्राह्मण व महापुरुष न हो
उससमय आपकथा व कीर्त्तननारायणजीका कहकरहरिचरण
काध्यान मनमेंरक्खैं इसीतरह इकहत्तर चौकड़ीयुग उन्होंने रा
ज्यकिया सो हरिभजनकेप्रतापसे पराक्रमउनका मरतेसमयतक
ज्योंकात्यों बनारहा कोईक्षणउनका बिनायाद व चर्चा परमेश्व
रके नहींबीतताथा उनकेराज्यमें हरिइच्छासे जब प्रजालोग च
हनाकरतेथे तबपानीवर्षकर बारहोंमहीने सबतरहका फलवफूल
वृक्षोंमें लगारहता था व सबप्रजा आनन्दसे रहकर परमेश्वरका
भजन व स्मरण कियाकरते थे स्वप्नेमें भी किसी को दुःखनह
होताथा ॥

तेईसवां अध्याय ॥

कर्दमजीका अपने योगबलसे एक विमान बहुत उत्तम प्रकट करना
व उसी में रहकर देवहूती के साथ विहार करना ॥

मैत्रेय ऋषीश्वर बोले कि हे विदुरजी देवहूतीनित्य अपने
तिकीसेवा व टहलमेंरहकर एकदिनउनके सामनेहाथ जोड़ेख
थीसो देवहूतीकेमनमें गृहस्थीकासुख व विलासकरनेकेवास्ते
छुचाहनाहुई तबकर्दम ऋषीश्वरनेजो उसकीसेवा व पातिव्रत
[illegible] प्रसन्न रहतेथेअपने तपकेप्रतापसे जानलिया कि मे
[illegible] सुखभोग करनेकी इच्छाहुई है यहहालजानक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनमें विचारकिया देखोइसने राजकन्याहोकर आजतककभ
अपनेवास्ते कुछगहना व कपड़ामुझसेनहींमागा इसलिये अबइ
सकीइच्छापूर्ण करनाचाहिये ऐसाविचारकर कर्दमऋषीश्वर बो
ले हे राजकन्या मैं तुझसेबहुतप्रसन्नहूं तुझे जो इच्छाहो सो वर
दानमांगले व इसबातका संदेहमतकरना कियेकहांसे पाकरहम
को देवेंगे नारायणजीकी कृपासेहम सबपदार्थ तुझेदेसक्ते हैं यह
वचनसुनतेही देवहूतीहँसकरबोली कि हे स्वामीआपलोक व पर
लोकदोनों जगहकासुख देनेवालेहैं जब मैंने आपऐसा महात्मा
पतिपाया तबकौनवस्तुकीमुझेकमीहै मेरेपिताने आपको ऐसाही
महापुरुष व गुणवान्जानकर मुझेतुम्हारेअर्पण कियाथाएकबेर
मुझेतुम्हारेसाथगृहस्थीकासंयोगहोनाबहुतहैसदाभोगवविलास
की चाहनाकरना अच्छानहींहोता यहबातसुनकर कर्दमजीनेक
हा तू संतोषरख मैं तेरीइच्छापूरी करूंगा यहवचन अपनेपति
का सुनतेही देवहूतीनेमनमें इसबातकाशोचकिया देखो मेरेपास
कुछगहना व कपड़ास्थान आदिकसंसारी सुखभोग करनेयोग्य
नहोकरमेराशरीर मट्टी व धूरसेभराहै किसतरहभोग व विलासहो
गा कर्दमऋषीश्वर अन्तर्यामीनेउसकेमनका हालजानकर उसी
समयएकविमानसोनहराजड़ाऊबहुतलम्बाव चौड़ा जिसमेंचारों
तरफ मोतियोंकीझालरबँधीवमखमलीबिछावनबिछे व झाड़ व
फानूशलगेथे अपने योगबलसे प्रकटकिया व उसविमानमें अने
कतरहकेमकान बिलग २ इन्द्रपुरीकेसमानबनेथे व अनेक तरहका
रके फल व फूल वहांवृक्षोंमें लगेरहकर अनेकरंग [illegible]मानहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मानमें सोहावनीबोली बोलतेथे व अच्छी अच्छी बावली व
लाबबनेरहकर सबपदार्थ संसारीसुखका उसमेंरक्खाथा देवहूती
ने उसविमानकी शोभादेखकर मनमें ऐसाविचारकिया कि धू
लगाहुआ मेराशरीर इसविमानपर बैठनेयोग्य नहींहै यह संदे
देवहूतीके मनकाजानकर उसीसमय कर्दमजीनेअपने योगबल
सेएकनारायणकुण्डजिसमें बहुतनिर्मल पानीभराहुआ व क
लकेफूलोंपर भ्रमरगूंजरहेथे प्रकटकरके देवहूतीसेकहा हे राज
न्या तू इसकुण्डमें स्नानकरजब ऋषीश्वरकी आज्ञासे देवहूती
उसकुण्डमें स्नानकिया तबवहदिव्यरूपबहुतसुन्दर देवकन्या
मान बारहवर्षकी अवस्थाहोकर जड़ाऊगहना व उत्तमवस्त्रपहि
उसमेंसेबाहर निकलआई व उसकेसाथ हज़ारदासीभी बहुतसुं
बारहवर्षकी गहना व कपड़ाअच्छा २ पहिनेअपने २ हाथोंमें
मर व पानदान व अतरदान आदिकसब बस्तुलियेहुये उसकु
मेंसे बाहरनिकलकर बोलीं हे राजकन्या जो आज्ञाहोसो पाल
करैं उससमयराजकन्या ऐसीसुन्दर मालूमदेतीथी कि जिस
रतिकामदेवकी स्त्रीको निछावरकरडालैं जबकर्दम ऋषीश्वर
उस चन्द्रमुखीकारूपदेखा तब अपनेतनुको निहारकरमनमें
चारकिया कि मुझकोभी उचितहै कि अपनाशरीर देवहूतीके
संगयोग्यबनाऊं ऐसाविचारकर कर्दमजीने उसकुण्डमेंस्नान
या सो वहभी दिव्यरूप अश्विनीकुमारके समानअतिसुन्दर
वर्षकी अवस्थाहोगये जबनारायणजीकीकृपासेदोनोंमनु
[illegible]कर्दमजी देवहूतीका हाथबड़ेप्रेमसे पकड़कर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विमानपरचढ़गये व सबदासी भी उसीविमानमेंजाकर अपनात्र
पनाकाम करनेलगीं जो पदार्थसुख व विलासके वैकुण्ठ व इन्द्र
लोकमेंरहते हैं व सबवस्तु परमेश्वरकी दयासे उसविमानमेंकर्दम
ऋषीश्वर व देवहूतीके वास्तेवर्तमानथे उसविमानपर बहुतादिनों
तककर्दमजी व देवहूतीने रहकरगृहस्थीका सुखउठाया जिस स
मयचित्त उनकाकहीं जानेकेवास्ते चाहताथा उसीसमय वह वि
मान पवनकेसमान उड़ताहुआ बीचइन्द्रलोक व वरुणलोक व
कुबेरलोक व गन्धर्वलोकआदिक व मन्दराचलपहाड़परएकक्षण
मेंचलाजाताथा और उनदोनोंकेविहारकरतेसमयदेवकन्या व दे
वताआदि उसविमानकी सुन्दरताई व रचनादेखकरबड़ाईभाग्य
कर्दमजी व देवहूतीकीकियाकरतेथे जबइसीतरहकर्दमऋषीश्वर
को दशहज़ारवर्ष देवहूतीसे भोग व विलासकरतेहुये बीतकरनव
कन्या उत्पन्नहुईं तबकर्दमजीनेचाहा मैं संसारीभोग व विलास
छोड़करफिरतप व ध्यान नारायणजीकाकरूं ऐसा विचारकर दे
वहूतीसेकहा किहे राजकन्यातुमकहोतो मैं परमेश्वरका भजन
करनेचलाजाऊंअबमेराचित्तगृहस्थीमें नहींलगतायहवचनसुन
तेहीदेवहूती हाथजोड़कर बोली महाराज हरिभजनकरना बहुत
अच्छीबातहै और मैंभी आजतक बीचसुख व विलाससंसारी झूं
व्यवहारके भूलकर तुम्हारी सेवा व टहलकरने से विमुखरही
मुझे उचितथा कि आपके चरणोंका ध्यानधरकर मुक्तिपाती सो
संसारीसुखभोगनेसे नवकन्या जो उत्पन्नहुईहैं इनके विवाहका
नेकाशोच मुझेलगाहै इन्हेंबिवाहकर मैंभी बन्धन[illegible]नहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हारेसाथ सेवा व टहल करनेवास्तेचलती सो इन सब कन्याओं
काबिवाह करलीजिये तबमुझेभी साथलेकेबनमें चलकर हरिभ
जनकीजिये तुम्हारे चलेजाने उपरान्त इनकेबिवाह करनेवास्ते
कहां वरपाऊंगी अबतक मैंने अपनासुख व विलाससमझकर तु ने ग
म्हारीसेवाकिया जो आपकोपरमेश्वरभाव जानकर तुम्हारी टह श च
लकरती तो परलोकअपना बनाकर आवागमनसेछूटजाती मैंने अवत
अपनेबापके यहां महात्मालोगोंसे यहबातसुनीथी किजिसनेमहमत
नुष्यतनुपाकर हरिभजन व सत्संगनहींकिया व जो कोईमनुष्यही दे
तनुपाके संसारीमायामोहमें फँसकर भ्रष्टहुआ उसकाजन्मलेनसतरह
अकार्थसमझनाचाहिये परमेश्वरकी मायाने मुझेठगलिया जैसेही
तुम्हारेऐसेपति महापुरुष पानेपरभी मैंने हरिभजन नहीं कियाको नि
संसारमें जो मनुष्य बिनाभोगलगाये शालग्राम व ठाकुरजीको धम्म
भोजनकरतेहैं उन्हैं जीतेहुये मृतककेसमान जाननाचाहिये यमुनि
बातसुनकर कर्दमऋषीश्वरने मनमेंविचारकिया कि परमेश्वरने उन
मेरेयहां अवतारलेनेवास्ते वरदानदियाथा सो अभीतक जन्म हारेल
नहींलियागृहस्थीछोड़देनेमें यहबातरहजावेगी कर्दमऋषीश्व नसेव
यहवचन परमेश्वरका यादकरके अपनीस्त्री सेबोले कि हे राज ीको
न्यातू अपनेमनमें किसीबातका संदेहमतकर तेरेगर्भसे नारायण ने हो
जीअवतारलेवैंगे ऐसाकहकर कर्दम ऋषीश्वरने देवहूतीके सा कानाश
भोगकिया सो हरिइच्छासे उसीसमय उसके गर्भरहा ॥ मऋष
तीको
ये जब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौबीसवां अध्याय॥

कपिलदेव मुनिका देवहूतीके गर्भ से अवतार लेना व कर्दमऋषीश्वरका बनमें तप करने वास्ते चले जाना॥

मैत्रेयजीने कहा हेविदुर जब देवहूतीके पेटमेंकपिलदेव मुनि ने गर्भवासकिया तब कर्दमऋषीश्वर उसके मुखारविन्द काप्रका श चमकताहुआ देखकर बोले हे राजकन्या तेरेगर्भमें परमेश्वर अवतारलेनेवास्ते आयेहैं सो तू किसीबातकी चिन्तामतकर अब हमतपकरनेवास्ते जावेंगे तुम मेरीप्रीतिकमकरो यहबचनसुनते ही देवहूती बहुतप्रसन्नहोकर बोली हेप्राणनाथमैं इसबातकाकि सतरह विश्वासजानूं जिससमयदेवहूती अपनेपतिसे यहबचनक रही थी उसीसमय ब्रह्मादिकदेवताओंने वहां आनकर देवहूती को निश्चयकरानेवास्ते कहा हे राजकन्या तेराजप व तप व नेम धर्म्म सबसफलहुआ अबतेरेगर्भसे परब्रह्म परमेश्वर कपिलदे मुनिनाम अवतारलेकर तुम्हारायश व कीर्त्तिसंसारमें बढ़ावेंगे उनकेउत्पन्नहोनेसे तुम्हारानाम सदासंसारमें स्थिररहैगा व तु हारेहृदयमें जो अज्ञानताकी काटिजमीहै उसकोज्ञानरूपी अ नसेवह जलादेवेंगे तुमउनकोअपनाबेटा मतसमझना वे आचा ोंको सांख्ययोगज्ञान पढ़ानेवास्ते अवतारलेतेहैं जबधर्मकी हा न होजातीहै तबवहसंसारमें अवतारलेकर धर्मकीबढ़ती व पाप ानाश करतेहैं यहबचनकहनेउपरान्त देवतालोग देवहूती व क मऋषीश्वरकी परिक्रमालेकर अपने २ लोकमेंचलेगये व देव तीको हरिमन्दिरविचारकर उसकेदर्शनकरनेसे बहुत आनन्दका ये जबदशमहीने बीतनेउपरान्त कपिलदेवमुनि प्रसन्नहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रणाकिया तबकर्दम ऋषीश्वरसबलक्षण परमेश्वरका उनकेअंग
में देखकरबहुतप्रसन्नहुये उससमयदेवताओं ने आनन्दकीदुन्दु
भी बजाकरआकाशसे फूलबर्षाये व गन्धर्वोंने नारायणजीका
शगाया व अप्सरालोग आकाशमेंआकर अपने २ विमानोंपर
चनेलगीं व तीनोंलोकमें मंगलाचारहोकर चारोंदिशामें प्रका
होगया जब कर्दमऋषीश्वरने उन्हेंपूर्णब्रह्मजाना तबउनके सा
ने हाथजोड़कर इसतरहपर स्तुतिकिया हे आदिपुरुष भगवान्
म्हारानामलेने व दर्शनकरनेसे संसारीजीव भवसागरपार उत
जातेहैं व आपकादर्शन बड़े २ योगी व ऋषीश्वरोंको जल्दी
नमें नहींमिलता मेराबड़ाभाग्यथा जो आपनेमेरेयहां बेटाहोक
अवतारलिया कदाचित् अबभी मैं मुक्तिपदवीको न पहुंचूंतो
भेबड़ाअभागी समझनाचाहिये और हमने देवताओंके मुख
सुनाथा कि आपनेज्ञानउपदेश करनेवास्ते अवतारधारण कि
है सोदयाकरके मुझेऐसाज्ञान सिखलाइये कि जिसज्ञानके
पसे यहतनु जो मट्टीकापुतलाहै छोड़करभवसागर पारउतरजा
जिससमयकर्दमजी यहस्तुतिकररहेथे उसीसमयफिर ब्रह्माजी
सनक, सनन्दन,सनातन व सनत्कुमारनेवहांआनकर कपिल
जीसे हाथजोड़करविनतीकीमहाराजजोबातआपने मुखारवि
से कहाथा वैसाकरके अपनादर्शन हमलोगोंकोदिया संसारम
पिलदेवमुनितुम्हारानाम प्रसिद्धहोगा फिरब्रह्माजीने कर्दमजी
र अपनीनवकन्याओं का बिवाहनवऋषीश्वरोंसे कर
व देवहूतीने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार कलान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्याकीशादी मरीचिऋषीश्वरसे व अनसूया काबिवाह अत्रिमु
नि से व श्रद्धाकीशादी अंगिराऋषीश्वरसेव हविकाबिवाहपुलस्त्य
मुनिसे व गतीनामकन्याकीशादी पुलहऋषीश्वरसे व योग्यका
बिवाह क्रतुऋषीश्वरसे व ख्यातिनाम कन्याकीशादी भृगुऋषी
श्वरसे व अरुन्धतीकाबिवाह वशिष्ठऋषीश्वरसे व शान्तिनाम
कन्याकीशादी अथर्वण ऋषीश्वरसे करदिया सोसबयज्ञकीक्रि
या अथर्वणवेदके प्रमाणसे होतीहैं बिवाह करने उपरांतऋषीश्व
रलोगअपनी२ स्त्रीसमेत कर्दमजी व देवहूतीसे विदाहोकर आन
न्दपूर्वक अपने२ स्थान परगये व ब्रह्माजी व सनकादिक ऋषीश्व
र कपिलदेवमुनिको दण्डवत्करके चलेगये व कर्दमजीने अप
नी कन्याओंको विदा करके कपिलदेवमुनिसे बिनयकिया हेम
प्रभु सन्सारमें यहजीवबारम्बार जन्म व मरणमेंफँसारहकर मु
क्तिहोनेकी इच्छानहींरखता व अनेकतरहका दुःखउठाकर इस
अधर्मीदुःख देनेवालेको नहींछोड़ता इसकाक्या भेदहैऔरआप
यहपूछताहूं कि कौनउपाय करनेमेंयहमनजो बीचमायामोह
कुलपरिवार व सन्सारीसुखमें फँसकरनष्टहोरहाहै इसमायारूपी
जालसेछूटसक्ताहै यहवचन कर्दमजीका सुनकरकपिलदेव मुनि
ने कहा हेऋषीश्वरतुम्हारी इच्छापूरीहुई जबमनुष्य संसारमेंज
न्मलेताहै तबतीनक़र्ज़ देवऋणापितृऋण ऋषिऋण उसपररहते
होतुम यज्ञकरकेदेवऋण व वेदपढ़केऋषिऋण व सन्तानउत्प
न्नकरके पितृऋणातीनोंक़र्ज़सेउऋणहुये अबहरिभजन
तुम्हारेवास्ते बहुतअच्छीबातहै और जो तुममनस्
मानहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विरक्त कियाचाहतेहो सोधीरे २ साधनकरनेसे संसारीप्रीत
जातीहै सो तुमइसतनुको झूठाजानो जिसतरहपानीमें बुल्लाउ
ताहै उसमेंमट्टी व पानी व आग व हवा व आकाशकोई वस्तु
होती उसीतरह इसतनुको निषिद्धसमझकर इसका अहंकार
करो किसवास्तेकि प्राणनिकलने उपरांतयह शरीरकिसीका
नहींआताइसलिये शरीरसेप्रीति करना न चाहिये प्रेमउसवस्
करनाहोताहै जो सर्वदास्थिररहे और उसकानाश न होवे और
सके प्रकाशरहनेसे इसतनुमेंचलने व सुनने व बोलने व देखने
खाने व पीनेकीसामर्थ्य है उसकाध्यानकरो औरवहचमत्का
बजीवोंके तनुमेंमेरी शक्तिसमझकर किसीवस्तुसे प्रीतिमतलया
ओ व मेरेप्रकाशको प्रतिदिनअपने शरीरमेंध्यान धरकरदेखो
तुम्हाराचित्त शुद्धहोजावेगा और हे पिता यहसबज्ञानसंसारी
व भूलकर केवलअपनेतनु व धन व परिवारपर अहंकार करते
इसलिये मैंनेधर्म व ज्ञानप्रसिद्ध करनेवास्ते यहअवतारधारण
याहै व हे ऋषीश्वरकाम व क्रोध व लोभ व मोह व मद व म
छःशत्रु मनुष्यकेशरीरमें रहकरयही सबसंसारीजीवको भुल
देकरनष्टकरतेहैं व उन्हींकेमदमें मनुष्यअन्धाहोकरअधर्मक
है और जो उनकेबशमें न होकरउन्हें अपनेअधीनरक्खै वह
ष्यवनमेंबसै चाहैघररहै उसेजीवन्मुक्त समझनाचाहिये व
कमनुष्यअपने शरीर व स्त्री व पुत्र व परिवारको अपनाजान
उसकोमृत्यु व सबकिसीसेडरहै जबउसेमेरी आज्ञा
तबवह कालादिक सबसेबेडररहता है इतनी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनाकर मैत्रेयऋषीश्वरने विदुरजीसे कहा यहज्ञानसुनतेहीकर्द
मजीने मन अपनाविरक्तकरके कपिलदेवजीसे विनयकियामहा
राज अबमुझेकहियेतो वनमेंजाकर तुम्हारेचरणोंका ध्यानकरूं
यहांरहनेसे मेरामन संसारीमायामें फँसारहैगा औरआपयहीज्ञा
नअपनीमाताको भी सुनाकरभवसागरपार उतारदीजियेगा यह
बातसुनकर कपिलदेवजीने कहा हेपिता तुमवनमेंजाकर हमारे
स्वरूपका ध्यानधरना व साधु व महात्माकी संगतिजिनकी म
ण्डलीमें सदामेरीकथा व कीर्तनकास्मरण व चर्चारहताहैकरना
उनकेसत्सङ्ग व मेरेध्यानके प्रतापसे फिरमनतुम्हारा सन्सारीमा
यातलयाकीतरफ नहींदौड़ेगा ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

कर्दमजीका वनमें जाना व बीच ध्यान परमेश्वरके अपना तनु त्याग करना ॥

मैत्रेयजीनेकहा हेविदुर यहवचन कपिलदेवजीका सुनते ही
कर्दमऋषीश्वर उन्हेंदण्डवत् व परिक्रमाकरके वनमेंचलेगयेओ
जातेसमय देवहूतीसेकहा तुझेजिसबातका संदेहहो वहकपिल
मुनिसे पूछलेना यहवचनसुनकर देवहूतीऋषीश्वर महाराज
के चरणोंपरगिरनेउपरांत हाथजोड़करबोली आपनेमुझे कपिल
मुनिको सौंपदियाइसलिये मैं साथचलनेसे लाचारहूं व कर्द
जीवनमेंजाकर बीचतप व ध्याननारायणजीकेलीनहुये व सब
जीव व सन्सारीवस्तुमें प्रकाशपरमेश्वरका ऊखकेरसकेसमानहै
कोईगांठ मिठाई व रससेखालीनहींहोती एकसासम[illegible]का
अपनासाथ योगाभ्यासके त्यागदिया व उनकेजा[illegible]समानहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ाशोक व दुःखहुआ परब्रह्माजीका वचन यादकरकेज्ञानकी
दृष्टिसे चित्तकोधीर्यदिया व कपिलदेवजीके सामने हाथजोड़क
रकहा मैंने देवताओंसे सुनाथाकि आदिपुरुष भगवान्यह संस
रूपीवृक्षजो मायामोहके फल व फूलसेलदाहै इसकेकाटनेवा
हैं सोअबमुझे चाहनाराजसीकी नहींरही इसलियेमुझकोअप
शरणजानिकैदया व कृपासेऐसाज्ञानसिखलाओ जिसमेंअज्ञ
तामेरीछूटजावे संसारमेंअज्ञान अँधेरेकेसमान समझनाचाहि
जिसतरहमनुष्य अंधियारेमें राहभूलकर ठोकरलगनेसे गड़हे
गिरकरचोटखाताहै उसीतरह अज्ञानमनुष्य संसारीमायामोह
लिपटकरनष्टहोतेहैं व ज्ञानकादीपकहाथमें रहनेवाला मनुष्य
च्छीतरह अपनीकामनाके स्थानपर पहुँचकर भवसागरपारउ
जाताहै व बीचगड़हेकाम व क्रोध व लोभ व अहंकारके नहींगि
ता सो मैं चाहतीहूं कि आपइस प्रकृतिकाहाल जिससेसारासंस
उत्पन्नहोकर जिसतरहप्रकाश परमात्मापुरुषका सबजीवोंके
मेंरहताहै कृपाकरके बर्णनकीजिये यहवचन सुनतेही कपिल
जी बोले हे मातामैं इसहालकेपूछनेसे बहुतप्रसन्नहुआऐसी
सुननेकीइच्छा मुझसेयोगी व ऋषीश्वरलोगरखतेहैं व संसारी
याजालसेछूटनेकेवास्ते मनुष्यकोसिवाय ज्ञानप्राप्तहोनेके दू
बातउत्तम नहींहै व माता व पिता व भाई व बेटा व मित्र उसी
कहना व समझनाचाहिये जो ज्ञानकीबातबतलावे और जो
पिताआदिक अपनेपरिवारको ज्ञाननहीं सिखलातेउन्ह
त्रुजाननाउचितहै तुमतोआपज्ञानीहोतुम्हा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सागरपार उतरनेमें सन्देहनहींहै परतुमयहबात निश्चयकरके
जानो किमेरीदया व कृपाहुयेबिना किसीको ज्ञाननहींमिलता
नहींतोजोकोईचाहता ज्ञानीहोजाता और हमज्ञानकाहाल तुम
सेकहैंगे उसेजोमनुष्य साथप्रीतिकेसुनैगा वहकृतार्थहोकर भव
सागरपारउतरजावेगा संसारमेंज्ञानीलोग मुक्तिपावतेहैं व अज्ञा
नीमनुष्य मुक्तिपदवीपरनहींपहुंचता व हेमाताजोलोगकाम व
क्रोध व लोभ व अहंकार व मद व मत्सरकेबशहोकर संसारीमा
यामोहमेंफँसजातेहैं उन्हेंअवश्य नरकभोगनापड़ताहै और यह
मनउनकीसंगतिपाकर अशुभकर्मकरनेसे चौरासीलाखयोनिमें
जन्मलेके अनेकतरहकादुःखभोगताहै औरजोमनुष्यउनको अ
पनेबशमेंरक्खैवहअपनेतनसे उसपुरुषकोपृथक्देखसक्ताहै व ज्ञा
नप्राप्तहुयेबिनाकाम व क्रोधआदिकबशमेंनहींहोसक्ते व जोलोग
विरक्तहोकर वैराग्यधारण करके भक्तियोगका अभ्यासरखते हैं
उनकेवशमेंभीकाम व क्रोधादिकहोजातेहैं व जोलोगमेरेचरणों
मेंभक्ति सच्चेमनसेकरतेहैं उनकी मुक्तिहोनेकेवास्ते वह आनन्द
दायीराहहै सोतुम अपनेपति व लड़कियोंके जानेकी कुछचिन्ताम
त करो गृहस्थीमें मनलगाना यहीसंसारकीफांसीहै मनुष्य जित
नीप्रीति कुलपरिवार व धनादिकझूठे व्यवहारकी करताहै जो उ
तनीप्रीति साधु व महात्मासेकरै तो मुक्तिपदवीपर पहुंचजावे है
जाता मनुष्यकातन कुछ देवतासे कमनहीं होता परज्ञानीहोना
चाहिये ज्ञानवान्मनुष्य देवतोंसे अच्छेहोते हैं उनकी [illegible]का
ज्ञानहींकरसक्ते व भक्तियोगकी पदवीयज्ञ व दान [illegible]मानहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिक सबधर्मोंसे उत्तमसमझनाचाहिये जबतक संसारीतृष्णा
हींछूटती तबतकभक्तियोग मिलनाकठिनहै व ज्ञानप्राप्तहोने
स्ते सत्संगचाहिये सो बिनाकृपामेरी सन्त व महात्माकी संग
नहींमिलती यहबात सुनतेही देवहूती प्रसन्नहोकर इस इच्छाकर
चारोंतरफ देखनेलगी कि वहसाधु व सन्तकैसेहोतेहैं मुझेमिलैं
उनकासत्संगकरके भवसागरपारउतरजाऊं कपिलदेवजीने अधी
कायहहालदेखकरकहा हेमातासाधु व सन्त व ज्ञानीकेलक्षणमें
मतुमसेकहतेहैंसुनो उनकोकिसीकेदुर्वचनकहनेसेक्रोधनहींहोकपि
निन्दा व स्तुतिकरना दोनोंउनकेनिकटबराबरहैं किसवास्ते ज्ञानप्र
वहसबतनमें परमेश्वरकाप्रकाश एकसादेखतेहैं व दुःखीमनुष्यको
कोदेखकर उनकेहृदयमेंदयाआतीहै व सबजीवोंकेसाथ मित्रता
रखकर किसीसेशत्रुतानहींकरते व दिनरात हरिचरणोंमें ध्यान
अपनालगाकरमेरीकथा व कीर्त्तनसुननेकाप्रेम उनकोआठोंपहर
बनारहताहै व खाने व पहिरनेआदिक संसारीकामकोअपना
यानहींसमझते सबबातभली व बुरी ऊपरइच्छापरमेश्वरकेजा
तेहैं व सुख व दुःखकोएकसासमझकर मेरेमिलनेकीइच्छासे
नाघरदुआर कुलपरिवारछोड़कर जिसजगहमेरीकथा व की
कास्मरण व चर्चारहताहै वहांबड़ेआनन्दसेरहतेहैं और कथ
सुननेसे उनकोज्ञानप्राप्तहोकर भक्तिउत्पन्नहोतीहै व भक्ति
सेमैंउनको संसारीमायाजालसे विरक्तकरके उन्हेंमेरास्वरूप
ज्ञानकीआंखसे दिखलाईदेताहै व उनकामनमेरेच
बरसात व धूप व जाड़ाउनकोकुछसतानेनहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सन्तोंकीसङ्गति करनेवास्ते मुझेसदाइच्छाबनीरहतीहै परव
साधु व सन्तऐसेसमदर्शीहोवेंजोसबजीवपशु व पक्षीआदिकमें
परमेश्वरका चमत्कार एकसासमझकर भीतर व बाहरअपना ए
कतरहपररक्खैं ऐसेज्ञानियोंकी मुक्तिहोतीहै व काल व सूर्य्य व
चन्द्रमा व यमराज व अग्नि व पानी व हवा आदिक सब मेरे
अधीनरहकर बिनाआज्ञा कुछकामनहीं करसक्के व जो मेरी शर
णमें आताहै उसकेऊपर कुछवश किसीकानहींचलता यहवचन
कपिलदेवजीका सुनके देवहूतीने कहा महाराजमुझस्त्रीको यह
ज्ञानप्राप्तहोना बहुतकठिनहै अपनीभक्ति व पूजाकी सहजराह
मनुमुझेबतलाकर प्रकृतिकाहाल कहिये यहबात सुनतेहीकपिलदेव
मिमुनिबोले हेमाता पहिलेतुम प्रकृतिकाहाल जोशरीरकहलाताहै
ध्यान्नो यहीसतोगुण व रजोगुण व तमोगुण तीनोंमिलकर जो एक
गहरहतेहैं उसे प्रकृतिकामूल जानकरमायाको उस जड़की डा
लियां समझनाचाहिये व चौबीसतत्त्व उनशाखोंके पत्तेहैं उसीसे
बजीवोंका तन बनकर उत्पत्ति संसारकीहोतीहै व तुम आत्मा
को जिसे बोलतापुरुष कहते हैं इनचौबीसतत्त्वों से पृथक् जानो
केसवास्ते कि वहआत्मा सदा एकरूप रहकर घटने व बढ़ने व
न्मलेने व मरनेसे रहितहै व चौबीसतत्त्व जिनसे शरीरतैयार
ताहै सदाबनते व बिगड़तेरहतेहैं जो मनुष्यअपनेतन व इन्द्रि
यों के सुखको अपना जानकर उससे प्रीतिरखताहै उसको अज्ञा
नी व जो मनुष्य अपनेशरीरमें आत्माको तनसे सदा भिन्न का
नताहै उसे ज्ञानी समझनाचाहिये व इसीचौबीस तत्त्वज्ञानहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ता व मनुष्य व जड़ व चैतन्यादिक सबजीवोंकी उत्पत्तिहा
इसलिये परमेश्वरको सबका मालिक व उत्पन्न करनेवाला
नतेरहना उचितहै सो हेमाता तुम अपनेतनमें आत्माको चौ
सतत्त्वसे पृथक्जानो तबतुम्हैं ज्ञान प्राप्तहोगा ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

कपिलदेवजीको प्रकृतिका हाल कहना जिससे सब जीवोंका तन बनताहै ॥

कपिलदेवमुनि बोले हेमाता मैं चौबीस तत्त्वोंका लक्षण
लगबिलग तुमसे कहताहूं जिनकेजानने से आत्मा व शरीर
भेद पृथक् २ मालूमहोसुनोजोप्रकाश नारायणजीकासबजी
केतनमें रहताहै उसीकोआत्मा बोलतापुरुषकहतेहैं उसकाना
कभीनहींहोता और वहीपुरुष सबजीवोंका पालनकरताहैउस
चमत्कारइसतरह बीचतनजीवोंकेहै जिसतरह कईबर्त्तनपानीसे
भरकर धूपमेंधरदेवतो उनबर्त्तनोंमें सूर्यकीछायापड़नेसे दूस
र्यदिखलाईदेतेहैं जबवहबर्त्तनतोड़डालो तबफिरवहसूर्य उसमें
हींदेखपड़ते व उसबर्त्तनटूटनेसे सूर्यकानाशनहींहोकर वहप्रका
फिर सूर्यमें मिलजाताहै उसीतरह आत्माकाहालभी समझ
चाहिये जिसकोयहज्ञानप्राप्तहुआ वहमनुष्यसंसारीमायामें
हींफँसता सिवायइसके जिसतरहकाठमेंअग्नि व तिलमेंतेल
कर दिखलाईनहींदेता उसीतरहवहआत्माभी बीचतनकेदृष्टि
हींपड़ता परज्ञानकीआंखसे उसकोअलगसमझनाचाहिये कि
लेकि जबतकवहबोलतापुरुष तनमेंरहताहै तबतकउसका
शरीरउसीकीसामर्थ्यसे जितनेकामचलने व बोलने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व पीने व इन्द्रियोंको सुखदेनेकेहैं सबकाम करताहै परउस
खकाभोगउठानेवाला उसीआत्मापुरुषको जो छोटारूप प्रका
शपरमेश्वरका अंगूठेकेसमानसबशरीरमें रहताहै समझनाचाहि
येकिसवास्ते किजबवह आत्मापुरुष शरीरसे बाहर निकलकरबि
नगहोजाताहै तबवहतनमृतकहोकरसिवायगल व सड़जानेकेफि
उसशरीरसे कुछकामनहींहोसक्ता इसीबातकोजोप्रसिद्धहैबिचा
कर चौबीसतत्त्वसे आत्माको पृथक्जाननाचाहिये इसलियेजो
गेगज्ञानीहैं वह आत्मापुरुषको अविनाशी व शरीरकानाशजा
कर इसशरीरसे प्रीतिनहींरखते व प्रकृतिकारूप पहिलेअच्छी
रह मालूमनहींहोता जब सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण उस
मिलजातेहैं तब उसकास्वरूप प्रकटहोताहै व परमेश्वरका छो
रूपशरीरमें रहनेवाला बिनायोगाभ्यासकिये व ज्ञानप्राप्तहुये
किसीको दिखलाई नहींदेता और वहीपुरुष दूसराकालरूप बन
रबाहररहताहै उसीकेजाननेवास्ते यहसब यज्ञ व तप व दान व
र्म्म संसारमेंबने हैं हेमाता जिसनेउसपुरुष को पहिचानकर अ
नामालिक व उत्पन्नकरनेवाला जाना वहसबयज्ञ व तप आ
कशुभकर्म्म करचुका बिनाजानेउसके सबसुकर्म व्यर्थहोते हैं
सकाजानना कुछकठिननहींहै वहसहजमें भक्ति व प्रेमकरनेसे
हिचानेजाते हैं सो तुमभक्ति करके उसपुरुषकोजानो फिरतुम्हें
ईदूसरीबात करनेकेवास्ते प्रयोजननरहकर संसारीशोचतुम्हा
छूटजावेगा सोमैं चारतरहकीभक्ति सात्विकी व राजसी तथा
सी व नवधा तुमसेकहताहूं उसकाहाल मनलगाकरध्यानहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वरके मिलनेवास्ते सात्विकीभक्ति जलकेसमानानिर्मलहै जि
में सिवायप्राप्तहोने मुक्तिके दूसरीकामना नहींरहती व राजसी
क्तिवास्ते मिलने स्त्री व द्रव्य व पुत्रादिक संसारीसुखके सम
व तामसीभक्ति इसवास्तेहै जिसमेंशत्रुमेरा मरजावे व नवधा
क्ति करनेवाले संसारीसुख व मुक्तिआदि किसीवस्तुकी चाह
नहींरखते इसतरहकीभक्ति मुझे बहुतप्यारी मालूमहोतीहै व
क्ति उसकोकहतेहैं कि मेरे चरणकमलकाध्यान जो अतिसु
व कोमलहै बड़ीप्रीति व सच्चेमनसे हृदयमेंरक्खे व आठोंपहर
रेनामकास्मरणकरै व पूजासमय मुझेनहीं भुलाकरहाथोंसे
सेवा व पूजा व पैरोंसे तीर्थयात्राकियाकरै और जोलोगसात्वि
व राजसी व तामसीभक्ति करते हैं मैं उनकीइच्छा व कामना
पूरी करदेताहूं जिसमें परिश्रमउनका व्यर्थनजावे परजो मनु
बिनाइच्छा नवधाभक्ति मेरीकरताहै उससे मैं बहुतलज्जित
सन्नरहताहूं कि कौनवस्तु इसकोदेकर उसकेबदलेसे उऋण
हेमाता तुमनवधाभक्ति मेरीकरो मुक्तिपदवीपर पहुंचोगी पर
तुम अपनेकोयह जानतीहो कि मैं राजास्वायम्भुवमनु व स
पाकीबेटी व कर्दमजीकीस्त्री व राजाप्रियव्रत व उत्तानपादकी
नहूं यहशरीरकानाता सबझूठाजानकरहरिभक्त व साधु व स
सेनातालगावो व सबइन्द्रियोंकाजोस्वाद व सुखहैउसकीचा
परमेश्वरको अर्पणकियेविनामतकरो जबइसतरहतुम साध
तब तुम्हारेहृदयमें उसआदिपुरुषकारूप तुमको आप
हेमाता यहज्ञान उसमनुष्यको प्राप्तहोसक्ताहै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बीसवां अध्याय॥

श्यामसुन्दरका उद्धवजीसे मायाछूटनेका उपाय कहना॥

उद्धवनेविनयकी हेयदुनाथ आपसेसबज्ञानसुनकर उसकारी मैंनेयहसमझा किसंसारीमायामोहमें फँसना बुराहोकरविरक्तरहक उत्तमहै सोकोईउपाय ऐसाबतलाइये जिसमेंमनुष्य बीचसंसा माया के न फँसेयहबातसुनकर श्यामसुन्दरनेकहा हेउद्धवहमनेत नतरह की राहवास्ते भवसागरपारउतरने संसारीजीवोंकेतुमसेकहीं एकज्ञान दूसराकर्मतीसरीभक्ति जिसकोज्ञान प्राप्तहुआवहसंसारी मायामेंनहींलपटता व संसारकीप्रीतिमें जोफँसाहैउसको शुभकर्म करनाचाहिये व जोलोगमनअपना ज्ञानकीओर कुछलगायेरहकर संसारी मायामेंभीलपटेहैं उनकोभक्तिकरनाउचितहै जबतकमेरी कथासुननेमेंप्रीति न होकरमनउसका संसारीमायासेबिरक्त न होय तबतकशास्त्रानुसार कर्मकरतारहै व जोधर्मस्वर्गजानेवास्तेशास्त्रों मेंलिखे हैं वहकर्मकरै व संसारीसुख व स्वर्गजानेकी कुछचाहना आपखाय व पहिननेसेबिनाइच्छाभी वहसुखमिलैगा इसलियेमनु धर्म्मकी राहबनावै सेश्वरकाध्यानरखकर पहिलेशुभकर्म करना अभिमान न रक्खै कि पांव व नाक व कान व आंखआदिक सब नकरउद्धवने पूंछा हेबैकुण्ठबतकसबकर्म अच्छीतरहबनपड़तेहैं व हालवर्णन कीजिये व ज्ञानी किसेघटजानेसे कोईकर्म विधिपूर्वक ताहैशुभ व अशुभकर्म्मकरने व स्वर्गविचार करना न चाहिये कि व कंगाल व दाता व सूमकाहालबतवैं बुढ़ापेकेसमय परलोककी हेउद्धव जीवहिंसा व चोरीआदिक मनुष्यका वृक्षकेसमानहोकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२८ इ गुरू व भगवान्में प्रीतिरखकर वेद व शास्त्रकावचनसच्चजान
मो विनाप्रयोजन अधिक न बोलकर सबजीवोंपरदयारखनायह
मिहै व हाथपाँवमिट्टीसे मलकर धोना व स्नान व संध्या व पूजा
श व तप वं श्राद्ध व तीर्थ व व्रतकरनायहनियम समझनाचाहिये
दानउसकानामहै कि विरक्तमनुष्यको कर्मछोड़करमनसाबाचा
र्मणासे किसीकाबुरा न चाहै व गृहस्थाश्रम भोजन व बस्त्र व
ष्वी व सोनाआदिक बस्तुब्राह्मणोंकोदानकरै व तपयहहै कि स्त्री भो
गकरनेकासुखछोड़देवै व ज्ञानीवहहै जोशास्त्रानुसारराहचलकर
पनीमुक्तिकाशोचरक्खै व जोकोई ईश्वरको भूलकरअपनाशरी
र पालनकरताहै उसेमूर्खसमझनाचाहिये व मेरेवचन प्रमाणस
कामकरना उत्तमराहहोकर उसकेबिपरीतचलनाकुमार्गजानो
जोमनुष्यसंसारमें किसीबस्तुकीचाहनानहींरखते व प्रेमपूर्वकमे
चरणोंका ध्यानकरतेहैंउन्हें स्वर्गपहुंचनेवालासमझो औरसंसा
प्रीतिरखनेवाले व लोभी व झूंठेमनुष्योंको नरकजानेवालाजा
नाचाहिये व जोलोगज्ञानीहोकर मेरीभक्तिसच्चे पर पहुंचोगी पर
कोधनीपात्र व जिसकोसंतोषनहोवै उसेदारि यायम्भुवमनु व स
जोकोईमूर्खमनुष्यको सिखलाकर उसके व्रत व उत्तानपादकी
शोचरक्खै उसेदातासमझो व जोलोग करहरिभक्त व साधु व
हींजीतकर उनकेवशहोरहेहैं उन कोजोस्वाद व सुखहैउसकीचा
२ बाततुमनेपूंछी सबकाउत्तर नामतकरो जबइसतरहतुम साध
सच्चजानकर उसीकाप्रमाणव आदिपुरुषकारूप तुमको आप
दोनोंजगह अच्छाहै ॥ इसमनुष्यको प्राप्तहोसक्ताहै

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तप व दान व धर्म व तीर्थ व व्रत आदिकसबशुभकर्म अच्छेहोते हैं परन्तु भक्ति व ज्ञानकेबराबर जिससेमुझे उत्पन्नकरनेवाला व मालिकजानता है यज्ञादिकनहींहोते सोतुमभी ज्ञानकीराह संसारी चाहनाछोड़कर मेरीभक्तिरखतेहो इसलियेअपनी मुक्तिहोनेमें कुछसंदेहमतसमझो सिवायइसके थोड़ासा मुख्यज्ञानऔरकहतेहैं सुनो मनुष्यको अपनीबड़ाईकरना उचित न होकर अहंकारछोड़ देनाचाहिये देखो नाक व कान व जिह्वा व आंख व त्वचा पांचज्ञान इन्द्रिय व हाथ व पांव व नाक व लिंग व गुदा पांचकर्मइन्द्रिय व ग्यारहवां मनहोकर जोमनुष्य उनकोसंसारीसुखकीओर लगाताहै उसेअज्ञानसमझनाचाहिये व ज्ञानीकोउचितहै कि अपनेमन व इन्द्रियोंको संसारीमायासे बिरक्तरखकर मेरीओर व ठाकुरपूजनेमें लगावै व संसारकेआदि व मध्य व अन्तमें परमेश्वरकाचरित्रजानकर मेरीकथा व लीला प्रेमसेसुने जो वस्तुखाने व पहिरनेवास्ते किसीतरह की मिलै उसको पहिले मेरेनामपर अर्पणकरकेपीछे आपखाय व पहिने व जो तड़ाग व बावली व कुआं व बाग आदि धर्म्मकी राहबनावै सबकाफलमुझे देकर अपनेमनमें इसबातका अभिमान न रक्खै कि यहशुभकर्म्म मैंने किया है इतनीकथासुनकरउद्धवने पूंछा हेबैकुण्ठनाथ तप व दान व नियम व संयमका हालवर्णन कीजिये व ज्ञानी किसकोकहते हैं व मूर्खकौनकहलाताहैशुभ व अशुभकर्म्मकरने व स्वर्गजानेवाले व नरक व धनीपात्र व कंगाल व दाता व सूमकाहालबतलाइये श्यामसुन्दर ने कहा हेउद्धव जीवहिंसा व चोरीआदिक कुकर्म्मोंसे बचेरहकर सच्चबोल

UP State Museum Library, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्तिमिलतीहै अपनाधर्म छोड़देनेवालेको चोर व ठगकीतरहनरक
में दण्डमिलताहै इसलियेमेरीभक्ति चारोंवर्ण व चारोंआश्रमको
करनाचाहिये ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

उद्धवसे श्यामसुन्दरका चारतरहके भक्तोंकीकथा कहना ॥

उद्धवनेइतनाज्ञान सुनकरपूंछा हे दीनानाथ जिसतरहसंसारी
मनुष्यकालरूपीसांपकेमुखमेंपड़ेरहकर प्रतिदिनअपनासुखचाहते
तेहैं उसीतरहमुझेभीसमझकरकोई सहजराहभवसागरपारउतरने
वास्तेवर्णनकीजिये श्यामसुन्दरनेकहा हेउद्धव जो ज्ञानभीष्मी
तामहने राजायुधिष्ठिरसेकहाथा वहीतुमसेकहतेहैं सुनोसंसारीमनु
ष्यको चारतरहपर एककथापुराणसुनने व दूसरेलोगोंका मरना
खकर अपनीमृत्युबिचारने व तीसरे साधु व महात्मा विरक्तपुरुषों
कीसंगतिकरने व चौथे संसारीव्यवहारझूंठासमझनेसे ज्ञानप्राप्तहो
ताहै परन्तुकथाकोप्रेमपूर्वक सुनकर उसमेंबिश्वासरखनाचाहिये
उद्धव मेरेनिर्गुणरूपकाध्यान करनेवालोंको जीवनमुक्तसमझ
औरउनकालक्षण सुनो वहलोगजिसधर्मकरनेसे मुझेपातेहैं उस
र्मकाफल मुझेदेकर कुछचाहनानहींरखते व संसारमें चारतरह
भक्तहोतेहैंएकविपत्तिपड़ने व रोगीहोनेसेमेरीभक्तिकरताहै व दूस
ज्ञानप्राप्तकरने व भवसागरपारउतरनेकीइच्छारखकर व तीसरेद्र
व संतान व संसारीसुखमिलनेवास्तेमेराध्यानकरतेहैं व चौथेज्ञा
जोमुझे परमेश्वरजानकर भक्तिकरतेहैं व उसकेबदले कुछइच्छा
हींरखते उनको मैं उनतीनोंसे अधिकप्याराजानताहूं हेउद्धवयह

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपनेपास न रक्खे व सातघरसे अपनेखानेभरको भोजनमांगले आवै व राहचलतेसमय पृथ्वीकीओर देखतारहैजिसमें चिउँटीआदिककोईछोटाजीव पांवकेनीचेदब न जावे व अपनेमन व इन्द्रियों को बशमेंरखकर चित्तअपनाकिसीस्त्रीकी व अच्छीबस्तुकी ओर न दौड़ावे व स्वादादिक भोजनकीचाहना न रखकर जहांसेअच्छा भोजनमिलै वहांफिर न जावै व कभीझूंठ न बोलै व संसारीसुख को स्वप्नकेसमान झूंठासमझै व आठोंपहरअकेलेमें परमात्माका ध्यान करतारहै व एकजगह अधिक न रहकरतीर्थों में फिराकरे व पाखण्डी मनुष्योंकीसंगति न रखकर किसीकाडरनमानै व सदा प्रसन्नचित्तरहै और अपनेसुखकेवास्ते किसीकेसाथशत्रुता व मित्रता न रक्खे अपनास्वभावकोमलबनायेरहकर ऐसामीठाबचन बोले जिसमेंकोईदूसरा उससेनडरे व हानि व लाभहोनेका कुछहर्ष व विषाद न करै केवलभिक्षालेनेवास्ते नगर व गांवमेंजावै व बस्ती सेबाहररहकर जिसतरह गुरूनेबतलायाहो उसीतरहआठोंपहर परमेश्वरकास्मरण व ध्यानकरतारहै जबतक मेरेनिर्गुणरूपकाध्यान उसकेमनमें न आवै तबतक सगुणरूपकी उपासनाकिया करे जब निर्गुणरूपध्यानमेंआजावे तब सगुणरूपकास्मरणछोड़कर सब जीवोंमें मेराप्रकाश एकसासमझै इसतरहकेकर्म व धर्मरखनेवाले को संन्यासीजाननाचाहिये केवलदण्ड व कमण्डलुधारणाकरने से संन्यासधर्मकाफलनहींमिलता हरिभजनकरनेमें इन्द्रादिकदेवताबिघ्नकरते हैं इसलियेतप व स्मरणकरतेसमय मनकोस्थिररखनाउचितहै जोलोगअपनेधर्म व कर्मसेरहते हैं उन्हैंनिस्संदेहमु

CC-0. UP State Museum, Lucknow. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परांतभवसागरपारउतरजातेहैं जबक्षत्रियकोबिपत्तिपड़ेतबवहव्या पारकरके यावनमें अहेरखेलकर अपनीजीविकारक्खे व लाचारी से भीखमांगकरअपना पेटपालै व वैश्यवर्ण विपत्तिपड़नेसे शूद्रका कामकरै व शूद्रकोबिपत्तिपड़ै तौचटाईआदिक बनाकर अपनेदिन काटै ब्राह्मणको वेदानुसार अपनेधर्मसे रहकर प्रतिदिनसन्ध्या व तर्पण व ठाकुरपूजन व श्राद्धकरना व अतिथि व संन्यासीको भो जन व वस्त्रदेनाउचितहै व स्त्री व पुत्रोंसे अधिकप्रीति न रक्खे व मे रेचरणोंकाध्यानकरतारहै इसतरहकर्म व धर्मरखनेवाले चारोंवर्ण व चारोंआश्रमको मैंउद्धारकरदेताहूं व जोलोग संसारीमायामें ल पटकर धर्म्म व अधर्म्मका बिचारनहींकरते उनको अवश्य नरक भोगना पड़ताहै॥

अठारहवां अध्याय॥

उद्धवसे श्रीकृष्णजीका धर्म्म बानप्रस्थ आदिकका कहना॥

श्यामसुन्दरनेकहा हेउद्धव धर्म्मबानप्रस्थकायहहै जबपचास वर्षसेअधिक अवस्थाहोकर मनउसका बैराग्यकरनेवास्तेचाहै तो अपनीस्त्रीसमेत या अकेलाबनमेंजाकर परमेश्वरकाभजन व स्म रणकरै व शिरपरजटाबढ़ाकर केलेकेपत्तेसे कोपीनबनावे व प्रात व मध्याह्न व सन्ध्या तीनोंकालस्नानकरके पृथ्वीपरसोवे व गर्मी में पंचाग्नितापे व बीचजाड़े के गलेभरपानीमें खड़ारहै व बरसात में बीचमैदानकेबैठकर तपकरै व पृथ्वीकाबोयाहुआ अनाज न खा वै जब इसतरहतपकरनेसे शरीरनिर्ब्बलहोकर बुढ़ाईआजावे तब संन्यासलेकेरहै सिवायदण्ड व कमण्डलु व कोपीनकेऔरकुछभर

CC-0. In Public Domain. HP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आखावे कदाचितगुरूभोजन न देवै तोमांगनाउचितनहीं है काम देवको ऐसाअपनेबशरक्खे जिसमेंवीर्यन गिरे व कभी स्वप्नेमें बीर्य गिरजावे तोस्नानकरके दशहज़ारगायत्री मंत्रजपै व अपना तनुमनधन गुरुपरनेवछावरसमझै औरकोई अशुद्धवस्तु न खावे बिद्यापढ़ने व गुरुदक्षिणा देनेउपरान्तगुरूसे बिदाहोवै व गृहस्थी करनाचाहै तो अच्छेकुलमें अपनेसेछोटीअवस्थाकी कन्याबिवाहै औरजबवह महीनेभरउपरांत स्त्रीधर्मसे होवै तबचौथेदिन एकबेर उससेप्रसंग कियाकरै व गृहस्थधर्मरखकर जो अभ्यागत व संन्यासीद्वारे परआवे उसकोकुछभोजन व बस्त्रदेकरप्रसन्नकरनाचाहिये खालीफेरदेना अच्छानहींहोता गृहस्थाश्रमब्राह्मणका उत्तम धर्मसुनो जो दानाअनाज काटनेउपरांत खेतमेंपड़ारहजाता है उसीकोचुनकर भोजनकरे या दूधभिक्षाजो कोईप्रसन्नतासे देवे उसेमांगले आकर अपना कुटुम्बपालै व मध्यमधर्म यह है कि विद्यापढ़ाने व कथाबांचने व यज्ञकरानेसे अपनीजीविकारक्खे जब ब्राह्मणपर बिपत्तिपड़े तबहारमानकर खेती व व्योपार व चाकरी करके अपनाकुटुम्बपालै व ब्राह्मणको अपनेसे छोटे बर्णकी सेवा करना न चाहिये व ब्रह्मचारीको बिद्यापढ़ने उपरांतगृहस्थीकी चाहना न होवे तौवनमेंजाकर परमेश्वरकातप व भजन करे जो क्षत्रिय व बैश्य गरीबब्राह्मण मेरेप्राणरूपीको भोजन व बस्त्र देकरसचेमनसे उनकीसेवाकरते हैं उनपर मैंबहुतप्रसन्नहोकर मुँहमांगा द्रव्यसंतानदेताहूं व क्षत्रियराजा अपनी प्रजाको पुत्रके समान पालनकरने व उनकादुःखछुड़ानेसे संसारमें यशपाकरमरने उ

...Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेमन व इन्द्रियोंकोवशरखकर आचारसेपवित्ररहै व जोकुछथोड़ा
याबहुतधर्मकी कमाईसेमिलै उसपरसंतोषरखकर मेरातप व ध्या
न कियाकरै व किसीके दुर्बचनकहनेसे खेद न मानकर अधिकतृ
ष्णानरक्खे व हरिभक्तहोकर झूंठनबोले जिसमें इतनेलक्षणाहों
उसब्राह्मणकोअपनेकर्म व धर्मपरस्थिरसमझनाचाहिये व क्षत्रिय
केलक्षणयहहैं मुखारबिन्दउसका तेजमान व शरीरबलवान्होक
रमनमेंधीर्यरक्खे व शूरताईऐसीरखताहो किघावलगनेसे घबड़ान
जावे व चाकरी व ज़मींदारीसेअपनाकुटुम्ब पालकर सामर्थ्यभर
दान व दक्षिणादेवे व साधु व ब्राह्मणकी भक्तिरखकर सच्चेमनसेउ
नकीसेवा व टहलकरै व वैश्यकाधर्मयहहैकिव्यापार व खेती व महा
जनीसे अपनापरिवारपालै व द्रव्यउत्पन्नकरनेकी चाहनाआठों
पहरमनमेंरक्खे व सामर्थ्यभरदान व दक्षिणादेकर साधु व ब्राह्मण
कीसेवाकियाकरे व शूद्रकाधर्मयहहै किब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य
तीनोंवर्णकी सेवाकरनेसे जोकुछमिले उसमेंअपनेदिनकाटकरअ
धिकतृष्णा न बढ़ावेचारोंवर्णोंको उचितहै किजीवहिंसा व चोरी
व कुकर्मआदिकसे रहितरहकरझूंठ न बोलैं व काम व क्रोध व मोह
व लोभकोअपनेवशरखकर ऐसाकामकरें जिसमेंसंसारीजीवउन
सेप्रसन्नरहैं व कोईउनकोबुरानकहै व चारोंआश्रमका धर्मयहहैकि
ब्रह्मचारीकोचाहिये किगुरुकेघररहकर मनसाबाचाकर्मणासे उन
कीसेवा व आज्ञापालनकरैं व गुरूकोमनुष्य न जानकरपरमेश्वर
भावसमझै व स्त्रीकाअंग न छूकरउसकेपास न बैठेक्षौरनबनवावै व
जोकुछभीखमांगलेआवे सबगुरूकेसामने धरकर उनकादियाह

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसेधनवान् समझनाचाहिये व जोलोग अपनीस्त्रीकोओटमेंरखते हैं उनको लज्जामान न जानकर कुकर्मसेरहितरहनेवाले को श्रेष्ठ समझनाउचितहै व जोमनुष्यरणभूमिमें बाण व खड्गादिक घाव उठाकर बहुतयुद्धकरतेहैं उनकोशूरवीरसमझनावृथाहोकररणधीर उसेजाननाचाहिये जो अपनेकाम व क्रोध व मोह व लोभ व इंद्रिय व मनअतिबलवान् शत्रुओंकोजीतकर उनकेबश न होवे हेउद्धव मैंनेतुझे अपनाभक्तजानकर थोड़ासाहालसुनादिया तुम अपनेमन व इन्द्रियोंकोबशमेंरखकर मेराध्यानकरो अठारहोंसिद्धियां तुम्हारेपास बनीरहैंगी ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका उद्धवसे चारोंयुगोंका हालकहना ॥

उद्धवने यहसबमहिमा त्रिभुवनपतिकीसुनकरपूछा हेदीनानाथचारोंयुगोंमें कौनधर्मबड़ाहोकर किसतरहलोगरहतेथे श्यामसुन्दरनेकहा हेउद्धवसत्ययुगमें श्वेतबर्ण व एकवेदहोकर ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य व शूद्रचारोंबर्ण उसीरूपकाध्यान व वेदानुसारसब कामकरतेथे व त्रेतामेंयज्ञावतारका ध्यानलगाकर यज्ञहोताथा व एकवेदसेचारवेदऋग्वेद व यजुर्वेद व सामवेद व अथर्वणवेदतय्यारहोकर ऋग्वेद व यजुर्वेद व सामवेदकीक्रियानुसार यज्ञकरतेथे व अथर्वणवेद केवलमंत्र व शस्त्रविद्याजाननेकेवास्तेहै व ब्रह्मानेअपनेमुखसेब्राह्मण व भुजासेक्षत्रिय व जंघासेवैश्य पांवसेशूद्र चारोंबर्णउत्पन्नकियाथा व संन्यासीमेरेशिर व ब्रह्मचारीहृदय व बानप्रस्थपशुली व गृहस्थजंघासेप्रकटहोकरब्राह्मणकायहधर्महै किअप

CC-0. Panditt Raghunath UP State Museum Collection Gangotri, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में शेषनाग व दैत्योंमें प्रह्लादभक्त व पशुओंमेंसिंह व पक्षियोंमें
गरुड़ व शूरबीरोंमें परशुराम व वेद व शास्त्रमेंगायत्री व बारहों
मासमें अगहन व ऋतुओंमेंबसन्तऋतु व पुष्पोंमें गुलाब व सच
बोलनेवालों में सचाई व गन्धर्वोंमें बिश्वावसु नामगन्धर्ब व अप्स
रोंमें पूर्व्वचित्तीनामअप्सरा व पांचोंभाईपांडवोंमें अर्जुन व विद्या
जाननेवालों में शुक्राचार्य व यदुबंशियोंमें वासुदेव मैंहूं औरवह
काम जिसमेंमनुष्यसन्तानउत्पन्नहोनेवास्ते इच्छारखकर अपनी
स्त्रीसेभोगकरताहै मुझेसमझनाचाहिये व जोलोगअपनीबड़ाईकी
चाहनारखकर ज्ञानसेशुभकर्मकरतेहैं वहइच्छा व ज्ञानमैंहूं व जि
तनीबातैंछलकी हैं उनमेंश्रेष्ठजुआ व मायारूपीलक्ष्मीमैंहूं व ज
सबजीवोंकी मैं होकर बिनाशक्तिमेरेकोईजीवचलने व हिलनेकी
सामर्थ्य नहींरखता कदाचित्कोईचाहेतो रेणुका व तारेवर्षाकीबूंदें
गिनलेवै परमेरीविभूतिकीगिनतीनहींकरसक्ता हेउद्धव संसारकी
त्पत्ति व पालन व नाशमेरीविभूतिसेहोताहै व तुमजितनीबस्तु
सारमें देखतेहो सबमेंमैंहूं इसलिये मेरेभेद व महिमाकोपहुंच
बहुतकठिनहै देखो संसारीमनुष्य बहुतसाअन्न व घृतआदिक
अग्निमें यज्ञ व होमकरतेहैं उसकेकरनेसेयहउत्तमहै कि अपनी
हनाको जो काम व क्रोध व मोह व लोभकेवशहोकर कुकर्म्मों
ओरदौड़तीहै ज्ञानरूपी अग्निमेंजलादेवे व ज्ञानी उसको
चाहिये जो अपनेगुणकोआदरपूर्व्वक एकजगहलिये बैठारहे
द्वारेफिरकर अपनाअपमान न करावे व बहुतद्रव्यरखनेवालों
धनीपात्रजानना उचित न होकर जो मेरीभक्ति व प्रीतिरखता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को लाहकेकोटमेंरख[illegible] ऐसाराज्यकिया जिनकेधर्म व न्याय से
अबतुम [illegible] आनन्द रहकरबाघ व बकरीएकही घाटपानी पीतेथे व
उनकेराज्यमें कोईदुःखी व दरिद्रीनहोकर वक़्तचाहने प्रजाकेपा
नीबरसता था ध्रुवजीने उत्तमअपने भाईको राज्यकाजका अधि
कारदियाथा व उत्तमभीध्रुवजीकी आज्ञानुसार सबकामकरकेब
ड़ेप्रेमसे उनकीसेवा करताथा एकदिन उत्तमध्रुवसे आज्ञालेकर
बनमें शिकारखेलनेगया जबएक मृगकेपीछे घोड़ादौड़ाताहुनव
कुबेरदेवताके विहारकीजगह जापहुँचा और उसकेसा[illegible]नहींरहकसेवि
स्थानमल व मूत्रकरके भ्रष्टकरदिया तबयक्ष[illegible]का सदास्थिरनहीं इस
तुमसंसारी मनु[illegible]कर देवलोकमेंकि[illegible]प्रीति नहींछूटती इसलिं इ
पर उत्तम भी [illegible]ज्यके अभि[illegible]
[illegible]सखलाक[illegible]यासे विरक्तकरदेनाचाहिये की
[illegible]स्तेएकय[illegible]
[illegible]किहो यहबा[illegible]विचारकर विदुरजीने धृतराष्ट्रसेकहा
[illegible]थियोंनेआक[illegible]बातभीमसेनकी सत्यजानकर अबतुमको राजाक
[illegible]नीसेनासमेत[illegible]किसीतरहरहना उचितनहींहै तुमनेअपनेराज्यमें
सुनकररोती व[illegible]प्रधर्मसेकैसाकैसादुःख भीमसेनकोदियाथा व दुयं
आगलगनेसेव[illegible]नेमध्यसभामें द्रौपदीउसकीस्त्रीको चीरखिंचवाव
न तुम्हा[illegible]
नंगीकरनेचाहा व भीमसेन को विषदेकर पांचोभाई पाण्डवों
लाहकेकोटमेंरखिकै आगिलगवादिया व सबराज्य व धनउनक[illegible]
छलसे जुयेंमेंजीतकर तेरहवर्षबनबासदिया यहबाततुमको याद
होगी अबतुमउन्हींकेहाथसे इसशरीरको जो सदास्थिरनहींरहे
पालतेहो व तुम्हाराजन्मभरसंतान व संसारीमायामोहमेंबीत

CC-0. [illegible]. Digitized by eGangotri Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धोया फिरध्रुवनेपहिलेछोटी सनीकेपास मेंसिंह व पक्षियोंमें
राथा जाकरसाष्टांग दण्डवत् करकेकहा हेमातातुम्हारे एरहो
से मैं निकलगयाथा सो नारायणजीके दर्शनमिलनेसे सबम
रथमेरे पूर्णहुये फिरध्रुवने सुनीतिअपनी माताकोदण्डवत् कर
जितनेछोटे बड़ेपुरवासी उनकेदर्शनके वास्तेआयेथे यथायो
सबका शिष्टाचारकिया फिरराजा उत्तानपाद ध्रुवकोअपने सा
कामगीपर बैठालकरब्राह्मण व याचकोंकोदान व दक्षिणादेते व
स्त्रीसेभोगकेराजमन्दिरमें लेआये व हजामतबनवाकर स्नान
चाहनारखकर ज्ञानसेउत्तमभूषण व वस्त्रउन्हैं पहिनाया व नारद
तनीबातैंछलकी हैं उनमैंश्रेष्ठ राजानेलाखों ब्यालधाखिलाकर ब
सबजीवोंकी मैं होकर बिनाशाहे भी अपने अचलनन्द मचाया
सामर्थ्य नहींरखता कदाचित्कोईचान्द प्रमाणुका व तारोंकथा सुना
गिनलेवै परमेरीविभूतिकीगिनतीनहींकरसक्ता हेउद्धव प्रसन्नहो
त्पत्ति व पालन व नाशमेरीविभूतिसेहोताहै व तुमजिरहनेसेपिता
सारमें देखतेहो सबमेंमैंहूं इसलिये मेरेभेद व महिमा रखकर रा
बहुतकठिनहै देखो संसारीमनुष्य बहुतसाअन्न व घृतने हृदयम
अग्निमें यज्ञ व होमकरतेहैं उसकेकरनेसेयहउत्तमहै कि अपनी
हनाको जो काम व क्रोध व मोह व लोभकेवशहोकर कुकर्म्मों
ओरदौड़तीहै ज्ञानरूपी अग्निमेंजलादेवे व ज्ञानी उसकोकह
चाहिये जो अपनेगुणकोआदरपूर्व्वक एकजगहलिये बैठारहै
द्वारेफिरकर अपनाअपमान न करावे व बहुतद्रव्यरखनेवालों
धनीपात्रजानना उचित न होकर जो मेरीभक्ति व प्रीतिरखता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को लाहकेकोटमेंरखकर हमारेजलानेकेवास्ते अग्नि देनोंमें वि
अबतुम अपनापालनहमसे चाहतेहो तुम्हारेबराबरदू रे मैत्रेय
पीऔर अधर्मीजगत्में न होगा यहवचनभीमसेनका सुनेकाहा
नहींजाता औरयहबातैंकहकरफिरमुझेधमकीदेताहै वि सुनक
धिष्ठिरसेमेरीचुगलीखाआगेतोखानेबिनातुमको मारडा आ कि
हालसुनकर विदुरजीने बड़ाखेदकरके मनमेंकहादेखो सन्म
की मायाऐसीप्रबलहै कि इतनी दुर्दशाहोनेपरभी धृतराकेकहा
धारीघरकोनहीं छोड़ते जिसतरहलालचीमनुष्य पुरानेकड़नेव
त्यागनहींकरता और वहचिथड़ाउसकेपास सदानहींरहक सोवि
दिन नष्टहोजाता है उसीतरहयहतनुइनका सदास्थिरनहीं इस
बुढ़ाईहोनेपरभी इनकोअपनेतनुकीप्रीति नहींछूटती इसलि इ
नकोज्ञानसिखलाकरसंसारीमायासे विरक्तकरदेनाचाहिये ही
में इनकीमुक्तिहो यहबातविचारकर विदुरजीने धृतराष्ट्रसेकहा
नोभाई यहबातभीमसेनकी सत्यजानकर अबतुमको राजाक
ष्ठिरकेघरमें किसीतरहरहना उचितनहींहै तुमनेअपनेराज्यभं
नेकेसमय अधर्मसेकैसाकैसादुःख भीमसेनकोदियाथा व दुयं
न तुम्हारेबेटानेमध्यसभामें द्रौपदीउसकीस्त्रीको चीरखिंचवाव
नंगीकरनेचाहा व भीमसेन को विषदेकर पांचोभाई पाण्डवों
लाहकेकोटमेंरखिकै आगिलगवादिया व सबराज्य व धनउनक
छलसे जुयेंमेंजीतकर तेरहवर्षबनबासदिया यहबाततुमको याद
होगी अबतुमउन्हींकेहाथसे इसशरीरको जो सदास्थिरनहींरहे
पालतेहो व तुम्हाराजन्मभरसंतान व संसारीमायामोहमेंबीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परगयेथे प्रभासक्षेत्रमें भीगयेहो तोकुछहालश्यामसुं
ताओ जबसेमुझकोराज्यदेकरगयेहैं तबसेउनकाकुछस
हींपाया विदुरजीने दूसरेतीर्थोंकाहालवर्णनकिया परस
ायोंकामाराजाना व श्रीकृष्णजीके अन्तर्द्धानहोनेकास
सलियेनहींकहा कि अर्जुनआनकरसबहाल कहेगा क
मैं कहताहूं तोराजायुधिष्ठिरको बड़ादुःखहोगा अच्छेलो
हगये हैं कि ऐसीबातकिसीके सामनेनकहनाचाहिये जि
नेसेमनउसकादुःखितहो जबमहलमें स्त्रियोंनेविदुरकेआ
लसुना तबद्रौपदीआदिने विदुरको परमेश्वरकाभक्त जा
दण्डवत् किया व सबहस्तिनापुरबासी उनकेआनेसेप्रसन्न
जबविदुरजीने वहांसेधृतराष्ट्रकेद्वारपरजाकर उन्हेंगांधारी
ण्डवत्किया तबधृतराष्ट्रने विदुरसेगलेमिलनेकेउपरांतरोक
हा हेभाई तुम्हारेजानेकेपीछेमेरेऊपरबड़ादुःखपड़ा व हमारेस
मारेजाकर राजगद्दीनष्टहुई यहबातसुनकर विदुरजीबोले हे
ई मुरलीमनोहरकीइच्छा इसीतरहपरथी उन्होंनेपृथ्वीकाभा
तारनेकेवास्तेअवतारधारणकियाथा अबकहो राजा युधिष्ठिर
म्हारीप्रीति व खानेपहिरनेकासत्कार किसतरहपर करतेहैं धृत
ष्ट्रनेकहा राजायुधिष्ठिर मुझसेबड़ा प्रेमरखकर हमेंअपने बाप
ौर गांधारीको माताकीजगहजानतेहैं व अर्जुनभीहमारा बहुत
ादरकरताहै परभीमसेनराजायुधिष्ठिरकेपीछे मुझेदुर्वचन सुना
करयहकहताहै कि जबदुर्योधनतुम्हाराबेटा राजगद्दीपरवर्त्तमान
तबतुमने विषमिलाकरलड्डू मेरेखाने कोभेजा व पांचोभाई
ध

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्दसेरहकरबाघ वबकरीएकघाटपानीपीतेथे जबउन्हींदिनोंमें वि
दुरजी एकवर्षकेउपरान्ततीर्थयात्राकरतेहुयेयमुनाकिनारेमैत्रेय
ऋषीश्वरकेस्थानपरआये तबउन्होंनेऋषीश्वरसे मारेजानेकाहा
ल दुर्योधनआदि कौरवों व युधिष्ठिरकाराजगद्दीपर बैठना सुनक
रबड़ाशोचकिया और यहभी विदुरजीको वहांमालूमहुआ कि
राजायुधिष्ठिर धृतराष्ट्र व गांधारीकोअपनेस्थानमें सुख व सन्म
नसेरखतेहैं यहसमाचारसुनकरविदुरनेचित्तमेंबड़ाखेदकरकेकहा
देखोबड़ेआश्चर्यकी बात है किधृतराष्ट्रकामनऐसीविपत्तिपड़नेव
राज्यछूटने वसौ बेटोंकेमारेजानेमेंभी अभीतकसंसारीमायासेवि
रक्तनहींहुआ व राजायुधिष्ठिरकेयहां रहनेकेवास्ते चाहता है इस
लियेहमधृतराष्ट्रको संसारीमोह छुड़ानेकीराह दिखलादेवें तो इ
समें उनकाभलाहोगा जबऐसाविचारकरविदुरजीनेपरमेश्वरकी
इच्छाकेऊपरसन्तोषकिया वहस्तिनापुरमेंराजमंदिरपरगयेतबरा
जायुधिष्ठिरने बहुतआदर व सन्मानकरके हाथजोड़कर उनसेक
हा कि तुमनेहमारेकुलमें श्यामसुंदरकेभक्त उत्पन्नहोकरबड़ीकृ
पासे अपनादर्शनहमको दिया व अपनेचरणोंसे कि तुम्हारेहृदय
में आठोंपहर परमेश्वरकाबासरहता है हमाराघरपवित्र किया हे
विदुरजीतुमने हमपांचोंभाइयोंकोलड़कोंकेसमानपालनकरि
बड़ेदुःखमेंहमारीसहायताकियाहै जिससमय दुर्योधनआदि क
रवोंने हमलोगोंको लाहकेकोटमेंरखकरचाहाथा कि जलाव
डालैं उससमयतुमनेदयाकीराह पहिलेसे वहांसुरंगखुदवाई ह
माराप्राणबचाया बहुतअच्छाहुआ जो आपआये कहिं कौन

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रजापालनकानाम अच्छीतरह नीति और धर्मकेसाथकरनेल
परमनमें संसारीमायामोहसे वह विरक्तरहकर दिनरात्रि यही
च्छारखतेथे कि परीक्षितसयानाहोजावै तो उसकोराजगद्दीपर
ठालकर बनमेंचलेजायँ और परमेश्वरकाभजन व स्मरणाकर
अपनापरलोकबनावैं व धृतराष्ट्रअपनेचाचा व गान्धारीचाचीक
जिनकेपुत्र महाभारतमेंमारेगयेथे आदरपूर्वकरखकर उनकी
ज्ञानुसार राजकाजकरतेथे व उन्हैंदिनरात्रिइसबातकाध्यानब
रहताथाकिकिसीतरहदुःखधृतराष्ट्र औरगान्धारीको न होवेदु
पानेसेउनको दुर्योधनआदिअपनेपुत्रोंके मारेजानेकाबड़ा शो
होगा व धृतराष्ट्रनेसेवाकरना व आज्ञामाननाराजायुधिष्ठिरक
खकरकहाहेराजन् मैंमनसेकभीयहबातनहींचाहताथाकितुम्ह
साथशत्रुताकरूंपरनमालूमकौनमेरीबुद्धिफेरदेताथा यहवचन
नकरराजायुधिष्ठिरबोले हेचाचा दिनभरलड़ाईकरकेजबसन्ध्य
कोमैं डेरेपरआताथा उससमययहविचारकरताथा किचारदिन
जीवनकेवास्ते अपनेभाईबंधुकोमारना उचितनहींहै काल्हिसे
हाभारतबंदकरूंगा जबप्रातसमय सोकरउठताथा तबफिरलड़
की तय्यारीकरके युद्धकरताथा इसलियेसमझनाचाहिये कि
ष्ट्रेभाग्यमेंइसीतरह मृत्युलिखीथी हरिइच्छामेंकोईयुक्तिनहीं
ौर गी जो ईश्वरनेचाहा सोकिया ऐसीबातैंकहकरराजायुधिष्ठि
ादरक व गान्धारीकाबोधकरतेथे और राजायुधिष्ठिरके राज्यमें
रयहकथा कि श्यामसुंदरकीदयासे प्रजाकीइच्छानुसार थानि
तबतुम्हाकालफूल व फल वृक्षोंमेंलगेरहतेथे व सबछोटेबड़े आ
ध·

Hazratganj, Lucknow

पुत्रसंसारीव्यवहारस्वप्नकेसमानझूठाहै व राजगद्दीपररह
कामव क्रोधव मोह व लोभसमयपाकरस्वभावमेंप्रवेशकरते
इसलियेइनलोगोंसेविरक्तहोकर हरिभजनकरना उचितहैऐस
विचारकरध्रुवजीनेउत्कलअपनेपुत्रकोजोइलानामस्त्रीसेबहुत
दरउत्पन्नहुआथाराजगद्दीपरबैठालदिया व अपनीस्त्रीसमेतब
रिकाश्रममेंजाकरबीचतप व ध्यानपरमेश्वरकेलीनहुयेइतनीव
थासुनाकरशुकदेवजीबोलेकिहेपरीक्षितराजायुधिष्ठिरतुम्हारेद
दाकेयज्ञमेंकिसीब्राह्मणने सोनेकाथालचुरायाथा सोलोगोंनेव
हाइसब्राह्मणका हाथकाटडालो यहबातसुनकेयुधिष्ठिरने उसब्र
ह्मणकोराजाबलिकेपासन्याय करनेकेवास्तेभेजदिया तबराज
बलिनेकहा किजिस राजाकेदेशमें यहब्राह्मणरहताहै उसराज
कोदण्डदेनाचाहिये राजानेइसब्राह्मणको किसवास्तइतनादान
नहींदियाजिसमें इसकोचोरीकरनेकी इच्छानहोती सोहेपरीक्षि
त राजोंको इसीतरहपर धर्म रखनाचाहिये इस ब्राह्मणका विधि
पूर्वक हाल महाभारतमें लिखाहै॥

बारहवां अध्याय॥

ध्रुवजीका अपनी दोनों माता सहित ध्रुवलोकमें जाना॥

मैत्रेयजीने विदुरसेकहा कि जब ध्रुवकातनुत्यागनेका समय
तपेकटपहुँचा तब श्रीभगवान्जी के गणोंने एक विमानबहुत
जल्दावहांलाकर ध्रुवसेकहा कि नारायणजीने यह विमानतुम्हा
आस्ते भेजादियाहै इसपर बैठकर ध्रुवलोकमेंचलो यहबातसु
कध्रुवजीने विचारा कि सुरुचिमेरी छोटीमाता जिसकेतान

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

ग्यारहवां अध्याय ॥

ध्रुवजी का कुवेरदेवतासे मिलापकरलेना व अपनेपुत्रको राज्यदेकर बनमें तपकरने के वास्तेजाना ॥

मैत्रेयजी ने विदुरसेकहा कि जबध्रुवनेस्वायम्भुवमनुको दंड
वत् किया तबस्वायम्भुवमनुबोले हेध्रुवतुमवैष्णव व परमेश्वरके
भक्तहो सो हरिभक्तोंको क्रोधकरनानचाहिये क्रोधकरनेवाले अ
पनेको वैष्णव व साधुकहैं तो यहकहना उनका झूंठसमझो क्रोध
करने से बहुतपापहोताहै सो हे ध्रुवतुमने वैष्णव व राजाहोनेपर
भी कुछन्यायनहीं किया किसवास्ते कि उत्तम तेरेभाई कोजो
उसकीमृत्युआईथी एकयक्षनेमारा उसकेबदले तुमनेएकलाख
तीसहज़ारयक्षोंको घायलकरकेदुःखदिया उनमेंकितनेलोग म
गये यहबात तुमनेअच्छीनहींकिया राजाको न्यायनकरनेसे अ
धर्म्महोताहै औरसबकोई अपनीमृत्युसेमरतेहैं एकबहाना व अप
यशदूसरेकोहोजाताहै इसका एकइतिहास हमकहतेहैं सुनो कि
सारस्वत आदिकल्पमें संसारीजीवबहुत उत्पन्नहुये व तबतक
मृत्यु उत्पन्ननहींहुई थी इसलिये जबपृथ्वीसंसारीजीवोंके बोझे
पानीमेंडूबनेलगी तबब्रह्माने एककन्या मृत्युनाम उत्पन्नकर
उसेसमझाकरकहा तू संसारमें जाकरबूढ़े व रोगी मनुष्यों को
मारडाल परवहकन्या यहबात न अंगीकारकरके परमेश्वरका
तपकरनेलगी तब नारायणजीने उसकन्यामृत्युरूपीसे कहा तू
जगत्मेंजाकर आयुर्द्दाबीते उपरान्त सबजीवोंकोमार तझे
अपयशनहोकर कोईकहैगा तपादिकरोगसेमरा कोईकहैगा
कांटनेसेमरगया इसीतरहअनेकप्रकारसेदूसरेकोदोषलगा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अबतुमबूढ़ेहुये और सबपुत्रतुम्हारेमारेगये तिसपरतुमराजायुधि
ष्ठिरकेघरमेंरहकर कहतेहो कि राजाहमकोअच्छीतरहरखते हैंव
तनादुःखउठानेपरभी तुम्हारामनविरक्तनहींहोता हेभाईहमने
नाथा कि परमेश्वरकीमायाबड़ीप्रबलहै सोतुमकोअपनीआंख
देखाकिसबबेटे व पोतेतुम्हारेमारेजाकर राजगद्दीजातीरही वतु
भीमरनेकेनिकटपहुंचे औरजिसभीमसेननेतुम्हारेबेटोंकोमारा
सीके हाथसेरोटीलेकरखातेहो तुमकोलज्जानहींआती तुम्हारे
सेखाने और जीनेपर धिक्कारहै जिसतरहकुत्तालाठीमारनेसेभा
कर रोटीकाटुकड़ादेनेसे फिरउसकोखालेताहै उसीतरहतुम्हारी
गतिसमझनाचाहिये हेभाईबुढ़ाईआनेपरभीतुमकोअपनेजी
की आशाबनीरहकर तुम्हारामन संसारसेविरक्तनहींहोता व तु
सदाअमरनरहोगे इसलियेतुमकोयहांसे उत्तराखण्डमेंचलना
चित है वहांहरिचरणोंमेंध्यानलगाकर अपनाशरीरत्यागकरो
जिसमेंतुम्हारीमुक्तिबनै संसारमेंतुम्हारीयहगतिहुई अबअपनेपर
ोकको भी क्योंबिगाड़तेहो यहवचनसुनकर धृतराष्ट्रनेकहाहेभा
तुमसत्यकहतेहो हमारेमनमेंभी इसीबातकीइच्छाहै परहमस्त्री
रुषदोनोंमनुष्यआंखोंसेअन्धेलाचारहैं किसतरहउत्तराखंडको
वैं तबविदुरजीबोले हमदोनों मनुष्योंको अपनाहाथपकड़ा
रअच्छीतरहलेचलैंगे तुमहमारेबड़ेभाईहो तुम्हारीसेवा हमको
रनाउचितहैजबतकतुमजीवोगेतबतकमैंसाथरहकरतुम्हारीटह
अच्छीतरहकरूंगायहवचनविदुरकाधृतराष्ट्रवगांधारीमानकर
नोंमनुष्यआधीरातको विदुरजीके साथराजायुधिष्ठिरसे बिना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहेउत्तराखण्डको हरद्वारकीतरफ़ चलेगये आगेआगेविदुरजी
तराष्ट्रकाहाथपकड़े और गांधारीअपने पतिकाहाथधरेहुये च
गई जबप्रातसमय राजायुधिष्ठिर स्नान और नित्यनियमक
माता व पिताको दण्डवत्करनेकेवास्ते उनकेस्थानपरगये त
कानसूनापाकरबड़ाशोचकरके मनमें विचारकिया कि वहल
अपनेबेटोंकेशोकमें यामुझसेदुःखितहोकर न मालूमकहांच
ये या मेराकुछअपराधसमझकर गंगामेंडूबमरे जबराजायुधि
यहबात कहकर रोनेलगे व संजयसे जोवहांपरथापूंछा कि ह
माता व पिताआंखोंकेअन्धेजिन्होंनेमुझेबड़ेप्रेमसेपालाथा
चलेगये तुमउनकाहालकुछजानतेहो संजयनेकहामैंयहनहं
नता वहकहांकोगये परविदुरजीउनसेकुछबातैंकरतेथे उन्हीं
थवहगयेहैं यहबातसुनकरराजायुधिष्ठिरराजसिंहासनपरआ
ड़ीउदासीमेंबैठेथे कि उसीसमयनारदजीवहांआये राजानेउ
दण्डवत्करके बड़ेआदरसेबैठालकरपूछा महाराजहमारेमा
पिता न जानेंकहांचलेगये कोईबनकापशुउनकोखाजायग
कहींकुयेंमेंगिरकरमरजायँगे उनकाहालआपको कुछमालू
तो बतलादीजिये हमजाकरप्रार्थनाकरके उनकोफेरलावें
नेपीनेबिनादुःखपातेहोंगे आपनेबड़ीकृपाकिया जो इसमह
में हमारेपासआये नारदमुनियहबातसुनकरबोले हेराजन्
यारूपीसंसारभूंठाहोकरजगत्में जो उत्पन्नहुआ वह एक
वश्यमरेगा इसीवास्ते परमेश्वरनेइसकानाममर्त्यलोक र
सो तुमधृतराष्ट्र व गांधारीकेजानेका वृथाशोचकरतेहो दु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खकिसीकेआधीननहींरहता यहदोनोंवस्तु परमेश्वरके हाथकेबी
चहैं जिसतरहखेलतेसमय बहुतसेबालकएकजगहइकट्ठेहोकरस
म्पूर्णखेलहोनेकेउपरांत अलगहोजाते हैं उसीतरह नारायणजी
संसारकोरचिकरफिरगुप्तकरदेतेहैं और जो तुमउनकेखाने और प
हिरनेकाशोचकरतेहो यहभी परमेश्वरकेआधीनसमझो जब बा
लकगर्भमेंरहता है तबउसे कौनखानेकोदेताहै जिसकी जीविका
परमेश्वरनेजहांबनादिया उसीजगहवहउसकोपहुंचता है इसलि
ये उनकीचिन्ताकरना न चाहिये जिसतरहमनुष्यबैलकोनाथक
राजिधरचाहे उधरलेजाताहै उसकाकुछवशनहींचलता उसीतरह
संसारीमनुष्यअपनी स्त्री व बालक व धनकेजालमें मायारूपी र
स्सीसेबँधेहैं जिसकेऊपरपरमेश्वर दयालुहोकर किसीसन्त व म
हात्मासे भेंटकरादेवे तबवहमनुष्यज्ञानसीखकर इस मायारूपी
कैदसेछूटके मुक्तिपदवीपरपहुंचताहै सोहेराजन् तुमधृतराष्ट्रवगां
धारीकेवास्ते कि वहबूढ़ेहोकरथोड़ेदिन उनकेमरनेमेंरहेहैं कुछचिं
तामतकरो व वहदोनोंतुम्हारेमाता व पिताविदुरजीकेज्ञान सिख
लावनेसेविरक्तहोकर उनकेसाथहिमाचलपहाड़केदक्षिण सप्तऋ
षीश्वरोंकेस्थानपर चलेगयेहैं वहांजाकर हरिचरणोंकाध्यान क
रके आजकेसातवेंदिन अपनातनुत्यागकरैंगे अबउन्होंने संसारी
मायातजिकर अपनेशरीरकाभीमोहछोड़दिया इससमयतुमको
उनकाफेरलानाउचितनहींहै शोचउसकेवास्तेकरनाचाहिये जो
हरिभक्तिसे विमुखहो और जो मनुष्यसंसारीजालसेछूटकरपरमे
श्वरकाध्यानकरे उसकाशोचकरनावृथाहै इसलियेतुम कुछ चिं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ता न करकेपरमेश्वरकोसबकामालिकसमझोयहबातकहकरना
दजीवहांसेचलेगये व राजायुधिष्ठिरकोधृतराष्ट्र व गांधारीकेजा
काशो चछूटकर नारदमुनिकेउपदेशसे संसारीव्यवहार झूंठामा
महुआ इतनीकथासुनकर ऋषीश्वरोंने सूतजीसेपूंछा कि विदु
जीको धर्मराजकाअवतारकहतेहैं उनकीकथा किसतरहपर है
हिये सूतजीनेकहाहम विदुरकाथोड़ासाहालकहतेहैं सुनोमाण
व्यऋषीश्वरको झूंठीचोरीलगाकर किसीराजाने फांसी दिल
दिया जबऋषीश्वरको धर्मराजकेपासलेगये तबऋषीश्वरनेध
राजसेकहा हमनेअपनीजानकारीमें आजतककोईकामबुरा च
रीआदिनहींकियाथा कौनपापकरनेकेबदले हमफांसीदियेगये
सकाहालकहो धर्मराजबोले तुमने लड़कपनमें एकटीड़ीको
टेकीनोकपरउठाकर मारडालाथा उसी पापकेबदले तुमनेफांसी
पाई है यहबातसुनकरऋषीश्वरबोले हे धर्मराज लड़कपनमेंपा
व पुण्यकाज्ञान न रहकर अज्ञानतासेबहुतअधर्महोताहै उसपा
कादण्डदेना न चाहिये तुमनेमुझेबिनाअपराध फांसीदिलवा
याइसवास्तेहम परमेश्वरसेचाहतेहैं कितुमदासीपुत्रहोकर सौ
तकमर्त्यलोकमेंरहो उसीशापसे धर्मराज दासीपुत्रहोकर सौ
संसारमेंरहे व जबतकधर्मराज विदुरकाअवतारलेकर जगत
तबतकसूर्य्यदेवताने धर्मराजकाकाम उनकेबदले कियाथा
कारण विदुरको परमेश्वरकीभक्तिबनीथी ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौदहवां अध्याय॥

अर्जुनका द्वारका से पहुँचना और युधिष्ठिर करके श्यामसुन्दरका हाल पूछना॥

सूतजीनेकहा हे ऋषीश्वरो नारदमुनिकेकहिजानेसे सात दि
नबीते धृतराष्ट्र व गांधारीनेअपनातनुत्यागकिया व विदुरजीउन
की क्रिया व कर्मकरके तीर्थयात्राकरनेचलेगये व राजा युधिष्ठिर
नारदजीके ज्ञानसमझानेसे संसारीव्यवहार झूंठासमझकर उदा
सीनचित्तपरमेश्वरके ध्यानबीचरहाकरतेथे जबउन्हींदिनोंमें श्री
कृष्णजीद्वारकापुरीसे गोलोककोपधारे तबउनके वैकुण्ठजाने से
राजाको कलियुगकेलक्षण मालूमहोकरबुरे २ स्वप्नेदिखलाई दे
नेलगे व मनुष्योंकेस्वभावमें अधर्म व क्रोध व लोभ व कपट अ
धिकहोकर स्त्री व पुरुषपिता व पुत्रभाई व बंधुमेंझगड़ाहोनेलगा य
हसबलक्षण कलियुगका देखकरराजायुधिष्ठिरनेभीमसेनसेकहा
अर्जुनहमाराभाई सातमहीनेसे श्यामसुंदरप्राणप्यारेके समाचा
रलानेवास्ते द्वारकापुरीकोगयाहै सो अभीतकनहींआया इसका
कुछकारणमालूमनहींहोता व नारदजीहमसे कहगये हैं कि मुर
लीमनोहरने पृथ्वीकेभारउतारनेवास्ते अवतारलियाथा सोउन्हों
ने महाभारतकराके पृथ्वीकाबोझदूरकिया अबथोड़ासाकाम उ
नकामर्त्यलोकमें और रहगया है उसकोसम्पूर्णकरके परमधाम
कोजावैंगे सो अबमुझेसंसारमें कुलक्षणदेखनेसे जानपड़ताहैकि
वहसमयआनपहुँचा जिसश्यामसुंदरकी दयासेहमनेअपनेशत्रु
ओंकोमारकरयहसबसुख व राजगद्दीपाया उनकेबिनामुझे दिन
रात नयेनयेअशकुन दिखलाईदेकर मेरीबाईभुजा व आंख फर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कतीहै व कभीकभीहमाराशरीरकांपने व कलेजा धड़कने लगत
रमनमेंडरसामालूमहोताहै व प्रातसमयसूर्यकीतरफ सियार खड़
होकरबोलते व दिनकोतारेआकाशसेटूटते हैं व जबमैंअहेरखेल
जाताहूंतबसौजेमेरेबायेंतरफसेहोकरनिकलजातेहैं व मेरेचढ़नेके
घोड़े व हाथी मुझकोरोतेदिखलाईदेकरदिनरातिकुत्तेरुदनकिय
करते हैं व रातकोउल्लूकीबोलीसुननेसे मुझेडरमालूमहोकर च
रोंदिशामें अँधियारासादेखपड़ताहै व इनदिनोंभौंचालआनेसे
थ्वीबारम्बारकांपकरथोड़ासाबादलआकाशपरहोनेसेबिजुली
रतीहै व आंधीचलकरआकाशसेलोहूवर्षताहै व सूर्य्यमेंप्रकाश
महोकर नदी व नालेकापानीसीधानहींबहता व जबअग्निहोत्र
लोगआहुतिआगमेंडालतेहैं तबअग्निदेवताप्रसन्नहोकरआहुति
नहींलेते व बछड़ेगायोंकादूध प्रसन्नहोकरनहींपीते व गऊकीआ
खसेआंशूबहिकरसांड़लोग गायोंसेप्रीतिनहींकरते व देवतोंकी
र्त्तिसेपसीनानिकलकरमेरीसभामें आवश्यकमनुष्यझूंठबोलते
व लोगोंकेस्वभावमेंक्रोध व लोभअधिकहोकरकेतुताराआका
परनिकलताहै व साधुमहात्माकाचित्तहरिभजनमें न लगकर
हरमेंकिसीकेघर मंगलाचारनहींहोता वहस्तिनापुर मुझकोउ
ड़सादिखलाईदेताहै सो हेभीमसेन इनसबलक्षणोंसे मैंजानत
किश्यामसुंदरप्यारे मेरेप्राणकीरक्षाकरनेवालेमृत्युलोकछोड़
वैकुण्ठकोपधारे जिससमयराजायुधिष्ठिरबैठेहुये ऐसाशोचक
हेथे उससमयअर्जुन द्वारकासे आनकरराजाके चरणोंपरगि
उसकेसामने उदासीनचित्तहाथजोड़करखड़ाहुआ व हाल अ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काइसतरहपरहै कि श्रीकृष्णाजीने वैकुण्ठजानेकेसमय दारुकसा
रथीसेअर्जुनको कहलाभेजाथा कितुमद्वारकापुरीसे सब बिधवा
स्त्री व लड़के व बूढ़े व सबबस्तुयादवोंकी हस्तिनापुरलेजाना इस
लिये अर्ज्जुन उनसबोंको असबाबसमेतद्वारकापुरीसे अपनेसाथ
लेकर हस्तिनापुरआवतेथे जबराहमें हस्तिनापुरके निकटभिल्ल
पहुंचकर सबधनलूटनेलगे तबअर्ज्जुनने गांडीवधनुषचढ़ाकर ब
हुतसेबाण उनकोमारेपरउनतीरोंसेकुछकाम न होकरसबबस्तुडा
कूलूटलेगयेउससमयअर्ज्जुननेउदासहोकरकहा देखोयहऐसा स
मयहमाराआनपहुंचा जिसधनुषबाणसे मैंने भीष्मपितामह व
कर्ण व जयद्रथ ऐसेकितनेशूरवीरोंको मारकरजीताथा अबवही
तीरकमानरहनेपर भी मैं डाकूलोगोंसेहारगया इससेमुझेमालूम
हुआ कि वहसबपराक्रममेरा केवलश्यामसुन्दरकीकृपासेथा अ
ब श्रीदुःखभंजन मेरेरक्षाकरनेवालेनहीं हैं इसलियेसबबल व ते
जमेराजातारहा यहीचिन्ताकरने और मुरलीमनोहरके वैकुण्ठ
जानेसेअर्ज्जुनकामुख बहुत मलीनहोगयाथा सो राजायुधिष्ठिर
ने उसेउदासदेखकरपूछा हे अर्ज्जुन सबयदुवंशी व शूरसेन नाना
व वसुदेव मामा व देवकी व राजाउग्रसेन व अक्रूर व बलदेवजी व
प्रद्युम्न और अनिरुद्ध व चारुदेष्ण सबलड़केबाले मुरलीमनोहर
व उद्धवभक्त व सबद्वारकाबासीअच्छीतरह हैं व श्यामसुन्दरमेरे
प्राणप्यारे जिनआदिपुरुषभगवान्ने संसारीजीवोंके मंगलकरने
वास्तेयदुकुलमेंअवतारलियाहै सुधर्मासभामें आनन्दसेहैं हे अ
र्ज्जुनतुमबहुतउदासदिखलाईदेतेहो तुम्हैंकोई रोगतो नहींहुआ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व तुमबहुतदिनतक द्वारकामेंरहेहो तेराअपमान तो किसीने हींकिया या किसीसभामें तेरा अनादर तो नहीं हुआ या तुम किसीको कोईवस्तुदेनेकहाथा सो दे नहींसके या किसी ब्राह्म व महात्माकाअपमान तो नहींकिया या कोईभूखा तुम्हारे आयाथा उसको भोजननहींदिया या कोई ब्राह्मण या बाल या बूढ़ा या रोगी या स्त्री शत्रुकेडरसेतुम्हारेशरणआये और तु नेरक्षाउनकी नहींकिया इसलिये तुम्हारामुखउदास व मली है या तुमनेरजस्वला स्त्री से भोगकरके किसीछोटेमनुष्यसे ल ईमेंहारतोनहींगये जिससेतुम्हारातेजजातारहा या अच्छीची भोजनकरतेसमय तुमनेबूढ़े व बालकदेखनेवालोंको उसमेंसे देकरअकेले तो नहींखालिया या श्यामसुन्दरविहारी मर्त्य क छोड़कर वैकुण्ठधामकोतो नहींपधारेइसलियेतुम्हारीयहगति हुईहै इसकाहाल हमसेबतलाओ॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

अर्जुनकरके श्रीकृष्णचन्द्रजीके अन्तर्द्धानहोनेका हाल राजा युधिष्ठिरसेकहना और परीक्षितको राजगद्दीपर बैठालकर द्रौपदीसमेत पांचोंभाई पाण्डवोंका उत्तराखण्डमें चले जाना और अपना तनुत्यागकरना मुरलीमनोहर के ध्यानमें॥

सूतजीने शौनकादिकऋषीश्वरोंसेकहा अर्ज्जुनयहसबबात जायुधिष्ठिरसेसुनकरकुछनहींबोला परश्यामसुन्दरके चरणों ध्यानधरकर इतनारोया कि उसे हिचकीलगकर बातकहनेकी मर्थ्यनहींरही कुछबेरबीतेअर्ज्जुनने मनको धीर्य्यदेकरराजायु ष्ठिरसेकहा हे पृथ्वीनाथ मैंक्याकहूं श्यामसुन्दरविहारीहमको करअन्तर्द्धानहोगये मैं उनकोअपनाभाई मामूकाबेटाजानत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कदाचित्हमलोग उन्हैंपरब्रह्मपरमेश्वरजानकर उनकीसेवा कर
ते तो भवसागर पारउतरकर आवागमनसेछूटजाते परमेश्वरकी
मायाऐसीप्रबलहैजिसमेंलिपटकरहमलोगोंनेउनकोहीनहींपहि
चाना जिसतरहएकबेरचन्द्रमादक्षप्रजापतिकेशापदेनेसेबहुतदि
नतकसमुद्रमेंजाकररहेथे यहबातसबकोई जानतेहैं कि चन्द्रमाके
पासअमृतरहताहै और मछलियां बड़े २ जीवजलचर व मनुष्यों
केंखाजानेकेडरसे सदाअमृतपीनेकेवास्ते इच्छारखकर चाहतीहैं
कि हमकोअमृतमिलता तो मरनेसेनिर्भयहोकर अमररहतीं सो
चन्द्रमाहज़ारोंबर्षतक मछलियोंकेसाथ समुद्रमेंरहे जिसतरह उ
न्होंनेचन्द्रमाको नहींपहिंचानकर उसेएकजीव समुद्रकासमझा
उसीतरह हमलोगोंने भी श्रीकृष्णजीको पूर्णब्रह्म न जानकर य
वंशीजाना अबवहबातसमझकर हमको बड़ाशोचहोता है दे
खो मैं उन्हींकीसहायतासे बड़े २ राजा व वीरोंको महाभारतमें
मारकर यहसमझताथा कि अपनेपराक्रमसे इनकोमारताहूं अब
मुझेइसबातकाविश्वासहुआ कि श्यामसुंदरकीदयासे मैंनेसबको
जीताथा जबसेवहमुझेयहां छोड़कर आपवैकुण्ठकोचलेगये तब
सेउनकेबिना मेरापराक्रम कुछकामनहींकरता देखोमैंवही अर्ज्जु
न और वहीधनुषबाण और वहीमेरीभुजाहैं जिससेमैंने महादेव
व गन्धर्व वइन्द्र मयनामराक्षसको लड़ाईमेंजीतकर भीष्मपिता
मह व कर्ण व जयद्रथआदि बड़े२शूरवीरोंकोमारा औरकैसे२रा
जोंसेविजयकरके यज्ञकरनेवास्तेद्रव्यलाया और अश्वत्थामाकी
मणिनिकाल लियाथासो अबवहशस्त्रादिक रहनेपरभी एकश्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मसुन्दरबिना राहमेंडाकुओंसे हारगया और वहलोग मुझेजीत
रसबधन व स्त्री आदि जो द्वारकासेअपनेसाथलाताथा लूटलेग
इसलिये मैंउदासहूं जिसस्थानपरहमकोविपत्तिपड़तीथी उसी
गहसुदर्शनचक्रउनका हमारीरक्षाकरताथा अबउनकेबिना कि
तरह मैंप्रसन्नरहूं जबमहाभारतमें कर्णआदिवीरोंनेअनेकप्रक
से मुझेमारनेकेवास्ते चाहा तबमुरलीमनोहर रथहांकतेसमय
मारेआगेखड़ेहोगये व मुझेअपनेपीछेरखकर मेरीरक्षाकियाव
झको धीर्य्यदेकरकहतेथे तू मतडर भीष्म व कर्णआदिकसबयो
मरेहुयेहैं उनकीकृपासे इसतरहमेरेशरीरपरकोई घाव शस्त्रादि
कानहींलगताथा जिसतरहकोई साधु व महात्माकाअशुभच
तो परमेश्वरकीदयासे उनकाकुछनहींबिगड़ता और श्यामसुं
हमारेशत्रुओंकीआयुर्बल अपनीचितवनसे क्षीणकरतेजातेथे
बलड़तेसमयमैं कभी २ उनसेखेदमानकरकहताथा कि जल्दी
रथक्योंनहींहांकते तबवहदीनानाथ मुझेअपनाभक्त व बालक
नकर कुछबुरानहींमानतेथे हेराजन् मैं उन्हींकीदया व कृपासे
ड़े २ प्रतापीराजोंकेसामने मत्स्यबेधकर द्रौपदीको स्वयम्बरम
लाया व तुम्हारेमनाकरनेपरभी उनकामनपाकर कौरवोंके स
खप्रकटहुआथा व जबदुर्वासाऋषीश्वरनेकौरवोंकेभेजनसे आ
रातकोबनमेंजाकरहमसेभोजनमांगकेशापदेनेकीइच्छाकिय
ससमय श्रीकृष्णजी दीनानाथहमलोगोंको अपनाभक्तजान
वहांआये व ऋषीश्वरकेशापसे बचाकरउनका आशीर्व
यायहबातेंयादकरकेमेरीछाती शोच व चिंतासेफटीजाती है

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुर्देकोकपड़ा व गहनापहिनाकरबैठालदेव वहीहालमेराश्यामसुन्दरके चलेजानेसेसमझनाचाहिये हे पृथ्वीनाथ मैं उनकेसाथथा लीमें भोजनकरनेकेउपरांत एकशय्यापरसोताथा और वहपरब्रह्मनारायणहोकर मेराइतनाआदरकरतेथे सोकहो अबइसतरहसे हमारीकौनरक्षावसन्मानकरैगा और किसकेआश्रय व भरोसेपर हमउतनाघमण्डरक्खैंगे जब श्रीकृष्णजीमहाभारतकराकेयहांसे द्वारकापुरीगये तबउन्होंनेमनमेंविचारकिया कि यहसबयदुवंशी हमारेकुलमेंबड़ेबलवान्उत्पन्नहुयेहैं मेरेजानेउपरांत उपद्रवकर केसंसारीजीवोंकोबड़ादुःखदेवेंगे इसलियेअपनेसामने इनलोगों काभीनाश करदेनाउचित है पर अपनेहाथउनकामारना अधर्म समझकर दुर्वासाऋषीश्वरसेशापदिलवादिया तबछप्पनकिरोड़ जदुवंशी इसतरह आपसमेंलड़करमरगये जिसतरहसमुद्रमें बड़े जीवछोटेजीवोंकोखाजाते हैं सोहेधर्मराजयहबातकहतेहुये इसी समयमेराप्राण शरीरसेनिकलजाता परश्यामसुन्दरने दारुकनाम सारथीसेयहबातमुझे कहलाभेजाथा कि स्त्री व बालक आदिको द्वारकासे हस्तिनापुरलेजाकर मेरेवियोगकाशोचमत करना व हमने गीतामें जोकुछज्ञानतुमकोबतलायाहै उसीकेअनुसारशरीरकोझूंठा व चैतन्यआत्मासत्यजानकर संसारीमायामोहमें मतलिपटना वहीज्ञानसमझकरमैंने सन्तोषकियाहै न्हींतो अबतकमेराप्राणनिकलजाता सो हे पृथ्वीनाथअबजीनेका कुछसुखनहकर इसीमेंभला है कि हमलोगभी अपनातनुतपस्यामें गलाडालैं जबइतनीबातकहकर अर्जुनअतिविलापकरके रुदन कर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेलगा तबराजायुधिष्ठिरने भीमसेनआदिअपनेभाइयोंसमेत
शब्दसेरोकरकहा हेअर्ज्जुनहमअबजीकरक्याकरैंगे औरयहरा
पाटहमाराकिसकामआवेगा अबहमैंयहांरहनाउचितनहींहै प
क्षितकोराजगद्दीदेनेउपरांतहमलोगबदरीकेदारमेंचलकरअप
शरीरत्यागकरैं यहकहनायुधिष्ठिरकापांचोभाई पाण्डवोंने मा
लिया औरजबरोनेकाशब्दमहलमें जाकरश्यामसुंदरकेअन्त
नहोनेकाहाल स्त्रियोंकोमालूमहुआ तबकुंती व द्रौपदी आदिने
पीटकरइतनाशोचकिया जिसकाहालवर्णननहींहोसक्ता व कुं
नेउसीखेदमें श्यामसुन्दरकेचरणोंकाध्यानधरकरतनुअपना
गकिया व राजायुधिष्ठिरने उपरोहितबुलाकर हस्तिनापुरकीरा
गद्दीपर परीक्षितकोबैठालदिया व राज्यइन्द्रप्रस्थ व मथुराका
ऋनाभनामबालकको जोश्यामसुन्दरकेकुलमेंबचगयाथा देकर
राजायुधिष्ठिर व अर्ज्जुन व भीमसेन व नकुल व सहदेवपांचोभ
व द्रौपदी उनकीस्त्रीने अपना २ वस्त्र उतारडाला व एकएक ल
टी व चादर पहिनकर राजमन्दिरसे बाहरनिकले उससमयजो
ह्मणवकंगाल वहांपरआये उनकोमुंहमांगाद्रव्यदेकर उत्तरा
कोसिधारे व जो कुछज्ञान श्रीकृष्णजीने अर्ज्जुनको गीतामें
लायाथा उसकाचर्चा आपसमेंरखकरकुछदिनतक श्यामसुंद
ध्यान व तपस्याकिया फिरहिमालयमेंजाकर हरिचरणोंका
नकरतेहुये पहिले नकुलउसके पीछे युधिष्ठिरआदि चारोंभा
द्रौपदी ने अपना २ तनुगलादिया व विदुरजीनेप्रभासक्षेत्रमें
कर अपनाशरीरत्यागकिया व राजापरीक्षित राजगद्दीपरबैठ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ईश्वरकातप व ध्यानकरतेरहना सबसेअधिकबलवान्होना किसी
शूरवीरको तीनोंलोकमें कुछमालनहीं समझना साधु व ब्राह्मण
और महात्माका आदरकरकेपरोपकारकरना सोहे बैलरूपीधर्म्म
श्यामसुन्दरको इनसबगुणहोनेपरभी कुछअहंकारनहींथा और
बत्तीसगुणोंके सिवाय औरबहुतसेशुभकर्म्मउनमेंथे जिससमय
इनको यादकरतीहूं उससमयमेराकलेजा फटिजाताहैदेखोजिस
लक्ष्मीकेमिलनेवास्ते सबदेवता व संसारीमनुष्य इतनातप और
जपकरतेहैं वहीलक्ष्मी कमलबनकोछोड़करदिनरातश्यामसुन्द
रकीसेवामेंरहती हैं ऐसे मुरलीमनोहरकी मैं दासीहूं जबद्वापरके
अन्तमेंतुम्हारे दोपैरटूटगये और मैं कंसादिकराजोंके अधर्म्मकर
नेसेदुःखीहुईथीतब वैकुंठनाथने यदुकुलमेंअवतारलेकर हमारा
और तुम्हारादुःखछुड़ायाऔर अपनीकीर्त्तिसंसारमेंफैलाई ऐसेप
रोपकारीपुरुषके वियोगका दुःखकौनसहसक्ता है यहगायरूपपृ
थ्वीबैलरूपीधर्म्मसे कहतीथी औरराजापरीक्षितखड़ासुनताथा॥

सत्रहवां अध्याय॥

भावना कलियुगका बैलरूपी धर्म्म व गौरूपी पृथ्वी के पास व बातचीतहोना कलियुग व राजा परीक्षितसे व स्थानबतलावना परीक्षितका कलियुगके रहने वास्ते॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसेकहा कि उसीसमयवहशू
रथपरचढ़ाबहुतसीसेनासाथलियेराजोंकावेषबनाये कालेकपड़े
और मुकुटपहिने सोंटाहाथमेंबांधे गाय और बैलकेपासआनकर
रथसेउतरपड़ा व बैल व गायको पैरसेठोकरमारकरधमकानेलगा
उसकारूपदेखकरवहदोनों ऐसाडरगये कि गायआंखोंसेआंशू ब
हनेलगी व बैलनेमल व मूत्रकरदिया जबऐसाअधर्म राजा परी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्षितसेनहींदेखागया तब राजाने बाणनिकालकर धनुषपरच
या व बड़ाक्रोधकरके कलियुगसे कहा सातोंद्वीपकाराजा मैं हू
कौनदेशकाराजाहै जो हमारेराज्यमें राजोंकावेषबनाकर मे
जाको दुःखदेताहै राजाओंकाऐसाधर्मनहींहोता जो किसीको
खदेवैं श्रीकृष्णजीमहाराजत्रिलोकीनाथ मर्त्यलोकसे अन्तर्ध
हुये व अर्ज्जुनहमारेदादागाण्डीवधनुष रखनेवाले वैकुण्ठको
ये इसलिये तूपृथ्वीकोबिनाराजाकेसमझकरगायऔरबैलक
सादुःखदेताहै अधर्मकरनाछोड़देनहींतो अभीतुझको मारेड
ताहूं कलियुगयहबातसुनतेही राजाकेडरसे चुपचापखड़ाहोग
तबराजानेबैलसेपूंछातुमकौनहो वतीनोंपैरतुम्हारेकिसनेतोड़
कोईदेवताहोकरमुझेभ्रमदेनेकेवास्ते तो नहींआये हमनेअप
ज्यमेंतुम्हारेबराबरकिसीको दुःखीनहींदेखा अबतुमकुछशोच
तकरो मेरेमिलनेसे तुम्हारासबडरछूटगया व तुम्हारादुःख मैं
करूंगा राजा यहवचनबैलसेकहकर फिरगायसेबोले तू मतरो
धर्मी व पापियोंका दण्डदेनेवाला मैं तय्यारहूं राजाओंकायह
र्महै कि चोर और कुकर्मीमनुष्योंकोदण्डदेवैं जिसराजाकेदे
प्रजादुःखपावे उसकाचारगुणनाशहोताहै एकउसकीकीर्त्ति
हकरदूसरेआयुर्दायकमहोजातीहै तीसरेज्ञानछूटकर चौथेपर
कबिगड़ताहै राजाओंकोऐसाचाहिये कि जो उनकेराज्यमेंदु
हो उसकादुःख छुड़ादियाकरें इतनाधर्मराजाकोरखनेसे फि
छतप व जपकरनेका प्रयोजननहींरहता इसवास्तेमैं इसशूद्र
मारडालूंगा यहसंसारीजीवोंको बहुतदुःखदेताहै यहबातपृ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहकर राजानेबैलसेफिरपूछा तुम्हारापैरकिसनेतोड़ा जल्दीमुझे
बतलावोउसकेहाथहमकाटडालेंगे मैंश्रीकृष्णचन्द्रकादासहोकर
तुम्हारादुःखनहीं छोड़ाऊं तो मेरेकुलमेंदोषलगेगा कदाचित् को
ईदेवताभी मेरेराज्यमेंआनकर किसीकोदुःखदेवे तो उसेमारडाल
ने सक्ताहूं मनुष्यकी क्यासामर्थ्यहै जोकिसीकोदुःखदेनेसके यह
बातसुनतेही बैलरूपीधर्मअपनाशिरझुकाकर राजासेबोला पांड
वोंके वंशमें सबराजाइसीतरहपरधर्मात्माहोतेआयेहैं उनकेराज्य
में किसीनेदुःखनहींपायाअर्ज्जुनतुम्हारेदादाऐसेधर्मात्मा व हरि
भक्तथे जिनकेश्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ सारथीहुये तुमको इसी
तरहउचितहै किसदाग़रीबवदुःखीलोगोंकाशोचरक्खाकरो और
मैं वेदशास्त्रकेवचनसेलाचारहोकर यहनहींजानसक्ता किमुझको
किसनेदुःखदिया इसलियेमैं किसकानामबतलाऊं जिसकानाम
बतलाऊंगाउसकातुमसंकोचकरोगेअपनेप्रारब्धकाफलभोगताहूं
यहबातजगत्मेंप्रकटहै किसबकोईअपने२अधर्मकेबदले दुःखपा
तेहैं किसीकोअपनेमनकेसंकल्पविकल्पसेदुःखहोताहै कोईलोग
कहतेहैं किमनुष्यसबदुःखवसुखपरमेश्वरकीइच्छासेभोगताहैपर
इसबातका विचारकरनाचाहिये कि परब्रह्मपरमेश्वरकोजिनकीइ
च्छासेसबजीवउत्पन्नहोतेहैं क्याप्रयोजनहै जोकिसीकोदुःखदेवें
नारायणजीकोइसबातका दोषलगानाउचितनहींहै कोईकहते हैं
मनुष्यअधर्म्मकरनेसेदण्डपाताहैसोअधर्म्मकरनेमें भीमनुष्यका
कुछवशनहींरहता किसवास्तेकिमनुष्यकी इच्छापूर्वकसबबातन
हींहोतीकोईकहतेहैंदुःखशत्रुसेपहुंचताहै मित्रकिसीकोकुछदुःख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहींदेता इसलिये उत्पन्नकरनाशत्रुकाभी अपनेआधीनसमझ
नाचाहिये किसवास्ते कि जबतकमनुष्यमाताकेपेटमेंरहताहै तब
तकउसकाशत्रु कोई नहींहोता जबमनुष्यउत्पन्नहोकरस्थाना
होताहै तबलोगोंसेविरोधकरके अपनाशत्रुआपखड़ाकरताहै इस
कारणमैं किसीकानामबतलानेनहींसक्ता कि किसनेहमकोदुःख
दियाहै तुमअपनीबुद्धिसे जानलो जबपरीक्षितने यहसबज्ञान
बैलरूपीधर्म्मसेसुनकर श्रीकृष्णजीके चरणोंकाध्यानकियातब
उनकोअन्तःकरणकी शुद्धताईसे मालूमहुआ कि यह बैलरूपी
धर्म्म व गौरूपीपृथ्वी व शूद्ररूपराजाकलियुगहै व इसीशूद्रने ध
र्म्मकापैरतोड़कर पृथ्वीकोदुःखदियाहै व इसपृथ्वीके मालिकप
मेश्वरथे सोपरमधामकोगयेइसीकारणपृथ्वीचिन्ताकरतीहैपापी
का नामलेनेसेपाप व धर्म्मात्माकानामलेनेसे पुण्यहोताहै इसी
वास्तेबैलरूपीधर्म्मने कलियुगकोपापीसमझकर उसकानाम न
हींबतलाया पहिलेधर्म्मकेचारोंपैरतप व सत्य शौच और दया
स्थिरथे कलियुगमें अधिकपापहोनेसे तीनपैरधर्म्मके टूटगये उ
तीनोंपांवकानाम जिसकारणधर्म्मकेतीनपैर तप व शौच व दय
के टूटगयेहैं अहंकार औरपरस्त्रीगमन और मदिरापान समझन
चाहिये केवलसत्यएकपैरधर्मकारहगया उसकोभीयहकलियु
तोड़ाचाहताहै राजानेयहबात मनमेंविचारकर बैल व गायको
र्य्यदिया व क्रोधवंतहोकर तलवारनिकालके कलियुगको मार
दौड़ा जबकलियुगनेदेखाकियहधर्म्मात्माराजाक्रोधसे भराहु
मुझेमारनेचाहताहै और मैंऐसीसामर्थ्यनहींरखता जोइसके स

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लड़नेसकूं ऐसाविचारकर कलियुगराजाके चरणोंपरागिरपड़ा व अपनाजीवबचानेकेवास्ते विनतीकरनेलगा तबराजानेअपनेधर्म व दयासे तलवार नहींचलाकरकहा हे कलियुगजहांतकराजा युधिष्ठिर व अर्जुनहमारेदादाकाराज्यथावहांतुझेन रहनाचाहियेतू अधर्म्मकरनेवाला पापियोंकासाथीहोकर जिसराजाके देश में रहेगा उसराजाकामनअधर्म्मकरनेकोचाहेगा तेरेमेंलालच व अहंकार व झूंठ व कपट व झगड़ा व काम व मोहभराहुआहैइसलिये भरतखण्डमेंजहांतकनिजहमाराराज्यहै औरवहांसबकोईअपने धर्म्म व कर्म्मसेहैं मतरहो इसभरतखण्डमेंमनुष्यलोग तप व यज्ञ दान व धर्म्म व्रत व परमेश्वरकापूजनकरनेसेराजगद्दी व अनेकत रहकासुखपाकरमुक्तपदवीकोपहुंचतेहैंव उनकोकभीदुःखनहींहोता ऐसीजगहतूरहकरविघ्नकरेगा व तेरेरहनेसे पापअधिकहोगामेराकहनामाननहींतोतेराप्राणबचनादुर्लभहै कलियुगनेहाथजोड़करगिड़गिड़ाकेराजासेविनयकियामहाराजआपधर्म्मात्मावन्यायकरनेवालेहैंमेरीप्रार्थनासुनियेब्रह्माजीनेसतयुगत्रेताद्वापरकलियुगचारयुगोंको बनाकर उनकीअवधिकाप्रमाणकियाहै सो सतयुग त्रेता व द्वापरतीनोंयुग अपना२राज्यभोगचुकेऔर मैंकलियुगहूं अबमेरेभोगकरनेकासमयआया मुझेआपआज्ञादेतेहैं तू हमारेराज्यमेंमतरह सो सातोंद्वीपमेंआपकाराज्यहै मैं कहांजाकर रहूं व जो ब्रह्माजीनेचारोंयुगकाप्रमाण कियाहै वहकिसीतरहमिटनहींसक्ता और हे पृथ्वीनाथ आपमेरेअवगुणोंकीतरफ़ देखते हैं औरगुणोंकीतरफध्याननहींकरतेहैं सोमेरेमेंएकगुणबड़ाहैवहआ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पसेकहताहूं सतयुगकेबीच जिसराज्यमें एकमनुष्यपापकरताथा
उसराज्यभरकेमनुष्य दण्डपातेथे व त्रेतामेंएकमनुष्यकेअपराध
करनेसे गांवभरदण्डपाताथा व द्वापरमें अधर्मकरनेसे परिवारभ
रकोशासनाहोतीथी व कलियुगमें जोमनुष्य जिसअंगसेपाप क
रताहै मैं उसको पकड़कर उसीअंगकोशांसतकरताहूं दूसरेयुगोंमें
मानसीपापकरनेसे मनुष्यको दण्ड मिलताथा और कलियुगमें
मानसीपाप न होकर मानसीपुण्यका फलमिलताहै जबयहबात
सुनकर राजापरीक्षितकोदयानहींआई तबफिरकलियुगबोला हे
पृथ्वीनाथ मेरेमेंएकगुण और बहुतबड़ाहै सतयुगमेंजोकोईपरलो
कबनानेवास्ते दशहजारवर्षतपकरताथा तब उसकीइच्छापूर्णहो
तीथी व त्रेतायुगमेंजबमनुष्यलोग बहुतसीद्रव्यलगाकर हज़ार
वर्षोंतक यज्ञकरतेथे तबउनकाअर्थसिद्धहोताथा द्वापरमेंसौ वर्षत
क पूजनवध्याननारायणजीका करनेसेमनोकामना मिलतीथी
मेरेराज्यमें जो कोई एकक्षणभी श्यामसुंदरकाध्यान अपनेस
मनसेकरे या उनकानामलेकर कानोंसे लीला व कथाउनकीसु
वहअपनेअर्थको पहुंचकर अनेकजन्मकेपापोंसे छूटजाताहै
यहगुणसुनकर राजापरीक्षितउसपरबहुतप्रसन्नहुये तबकलियु
नेकहा हे पृथ्वीनाथ दयाकरकेमुझेजीवदानदीजिये और जहां
हिये वहांजाकररहूं मैं आपसेबहुतडरताहूं तुम्हारीआज्ञामें रहूं
जबकलियुगनेहाथजोड़कर विनयकिया तबराजानेउसे दीन
नकरअपनाधर्मविचारा कि शरणआयेको कोईनहींमारता ऐ
समझकरबोले हेकलियुगजिसजगहमनुष्यजुवाखेलतेहैं व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मदिरापीनेकेवास्तेबिकताहै व जिसस्थानपर बेश्यारहतीहैं व ज
हांपरजीवहिंसाकरते हैं वहांजाकरतुमरहो यहसुनकरकलियुगने
फिरराजासे दीनहोकेकहा इनचारोंजगहोंमें मेराकुल व परिवार
समानेनहींसक्ता तबराजानेदयालुहोकरकहा जिसजगहसूममनु
ष्यकेपासद्रव्य व सोनाहो और वहउसमेंसेदान व धर्म्म न करेवहां
भी तुमजाकरबसो सिवायइनपांचोंजगहके कहींप्रवेशकरेगा तो
हमतुझेमारडालेंगे कलियुगने राजाको धर्म्मात्मा व बलवान् दे
खकर उनकावचनमानके मनमेंकहा जबराजाकाचित्त धर्म्मकी
तरफ़सेफिरेगा तबहमअवसरपाकर अपनाअर्थनिकाललेवेंगे यह
बातविचारकर कलियुगराजासेबिदाहुआ व उसीपांचोंजगह ज
हांराजानेबतलायाथा आनकरडेराकिया इतनीकथासुनाकर सू
तजीने शौनकादिऋषीश्वरोंसे कहा जो कोई अपनाभला चाहे
वहइनपांचोंबातोंसे किनाराकरखे व राजाकोयहबातकभीनहींक
रनाचाहियेकिसवास्ते कि राजाकेआधीनसबप्रजारहतीहै जबक
लियुगके जानेकेउपरान्त राजापरीक्षितने उसबैलकेतीनोंपैर टूटे
हुये अपनेधर्म्मसे अच्छेकरके गायकोधीर्य्यदिया तबवहबैल अ
पनाधर्म्मरूप व गायपृथ्वीरूपहोकरअपने २ स्थानपर चलेगये
व राजानेराजगद्दीपरआनकर यहब्राह्मणों व ऋषीश्वरोंसेकहा व
हलोगसुनकरबोले हे राजन् तुमनेबहुतअच्छीबातकिया अब तु
म्हारेराज्यमें कलियुगअपनाप्रवेशनहींकरनेसक्ता फिरराजापरी
क्षितने अपनेराज्यमेंऐसा ढिंढोरापिटवादिया कि कोईजीवहिंसा
करे व मदिरा न पीवे व जुवा न खेले व द्रव्यपाकर यथाशक्ति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दानदेवेवपरस्त्रीगमन न करे जो कोईदेवता व साधु व सन्त व ब्र
ह्मण व गौ व वेद व शास्त्रको नहींमानकर इनपांचोंबातोंमें को
कामकरेगाउसकाहमअन्न व धनलूटकर दण्डदेवेंगे सोपरीक्षि
केडरसे यहसबअधर्म्मउनकेराज्यमेंलोगोंनेकरनाछोड़दिया व
जापरीक्षितधर्म्मबढ़ातेहुये हस्तिनापुरमेंराजकाजकरनेलगे व
दालीला व कथापरमेश्वरकीसुनकरउनकेचरणोंमें ध्यानलगा
रहतेथे वउनकेराज्यमेंसबप्रजाभीअपनेधर्म्मसेरहकरआनन्द

अठारहवां अध्याय ॥

परीक्षितका शिकार खेलनेकेवास्ते बनमें जाना और राजाके मनमें कलियुगका प्रवेश करना इसलिये राजाका समीकऋषिके गलेमें मराहुआ सांप डालना और समीकऋषिके पुत्रकरके राजापरीक्षितको शाप देना ॥

सूतजी शौनकादिक ऋषीश्वरोंसेकहतेहैं कि जबतक परी
तने राज्यकिया तबतकउनकेनीति व धर्मसेकलियुगनेवहांप्रवेश
नहींपाया व राजापरीक्षित रथपरबैठकर प्रजाकीरक्षाकरनेके
स्ते चारोंदिशाअपनेराज्यमेंघूमते व एकछत्रराज्यकरतेरहे व
लियुगकोकुछमालनसमझकरउसेपड़ारहनेदियाइतनीकथा
कर शौनकादिकऋषीश्वरोंने सूतजीसेकहा आपपरमेश्वरकी
थामेंबड़ेयोग्यहोकर अमृतरूपीरसहमलोगोंकोपिलातेहैं तु
सत्संगसे हमाराजन्मकृतार्थहुआ कदाचित् आपऐसाकहैं कि
मलोग ऋषीश्वरहो तुम्हाराजन्म इसीतरहसुधरजावेगा
श्चयजानो जोसुखतुम्हारेसत्सङ्गसेप्राप्तहोताहै वहसुखस्वर्ग
वैकुण्ठमेंनहींमिलता जिसतरहराजापरीक्षित ने तनुत्यागा
थाअबउसकाहालवर्णनकीजियेसतजीनेकहा जबराजापरी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बृद्धावस्थाको पहुँचे तब राजाने विचार किया कि जीवहिंसाकर
नाघरमेंमनाथा सो हमनेछोड़दिया व राजोंका ऐसाधर्म्महै किब
नमेंशिकारखेलाकरैं इसीवहानेसेउनको अनेकदेशदेखनेमेंआते
हैं व जो हरिन बनमेंबूढ़ाहोजाताहै उसेअहेरमें अवश्यमारनाचा
हिये सदासेराजालोग ऐसाकरतेआयेहैं यहबातविचारतेही एक
दिनराजानेबनमेंजाकर बहुतसेजीवोंको अहेरमेंमारा फिरएकह
रिनकेपीछे जोघायलहोकरभागाथा मध्याह्नसमयघोड़ा अप
नादौड़ाया सो अपनेसाथियोंसेबिलगहोगये जबराजाको गरमह
वाबहनेसेबहुतप्यासमालूमहुई और पानीढूंढ़नेकेवास्ते चारोंतर
फफिरनेलगे तबउसजगह भिरडीऋषीश्वरकी कुटीदिखाईदीऔ
रवहऋषीश्वर बड़ेयोग्यमहात्मा सदाबनमेंरहतेथे व जो दूध बछ
केपीतेसमय गऊकेथनसेटपकताथा उसेपीकरपरमेश्वरकाभज
नकरतेथे सो राजानेकुटीकोदेखतेही वहांजाकर ऋषीश्वरसेकहा
मैं राजापरीक्षितअभिमन्युकाबेटाबहुतप्यासाहूं दयाकरकेथोड़ा
पानीमुझे पिलाओ इसीतरहकईबेर राजाने ऋषीश्वरसेपानीमां
गा व ऋषीश्वरमहाराज उससमयआँखबन्दकिये प्राणअपना ब्र
ह्मरण्डपरचढ़ाये परमेश्वरकेध्यानमें ऐसेलीनबैठेहुयेथे कि उन
को अपने तनुकीभी सुधिनहींथी इसकारणउन्होंने राजाकीबात
नहींसुनीऔर न उनकोकुछउत्तरदिया उससमयकलियुगने जी
वहिंसाकरनेसे राजाकेमनमें अपनाप्रवेशकरके कपटउत्पन्न कि
या जबराजाकोधर्मात्मा व हरिभक्तहोनेपरभी अधिकभूख वग्या
लगनेसे क्रोधउत्पन्नहुआ तबउसनेयहविचारा देखो हमराजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Prayagraj Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सातोंद्वीपकेप्यासेहोकर इसब्राह्मणकेद्वारेपरपानीमांगनेआये
इसऋषीश्वरनेहमकोदेखके झूठीसमाधिलगाकर हमारीबात
उत्तरभीनहींदिया पानीकोकौनपूंछे इसकोकुछदण्डदेनाचाहि
परमैंपाण्डवोंकेकुलमेंहोकर ब्राह्मणोंको किसतरहदण्डदूं जब
सासमझकर राजाघोड़ेसेउतरा तबउसने एकसांप मराहुआउ
जगहपड़ादेखकर मनमेंकहासांपइसके गलेमेंडालदेवें तोसर्प
डरसे ऋषीश्वरआंखअपनीखोलदेगा ऐसाविचारतेहीराजाने
धवशहोकर उससर्पकोअपनेधनुषसे उठाके भिरण्डीऋषिके
मेंडालदिया परवहऋषीश्वर परमेश्वरकेध्यानमें ऐसेलवलीन
मग्नथेजिनकोसांपडालनेसेभी कुछडर न होकर वहज्योंके त
अपनीआंखबन्द कियेहुये परमेश्वरकेध्यानमें बैठेरहे व राजा
अपनेस्थानपरआकर जैसे शिरपरसेमुकुटउतारावैसेही उसको
नहुआ औरबड़ेशोचसेमनमेंकहनेलगा देखोसोनेमेंकलियुग
बासहै सो मेरेशिरपरथा व शिकारखेलनेसे मेरीबुद्धिबदलगई
हमनेमराहुआसांप ऋषीश्वरकेगलेमें डालदिया अबमैंसम
कि कलियुगनेमुझसे अपनाबदलालिया इसपापसेकिसतरह
रीछुट्टीहोगी जबकोईमनुष्य नारायणजीसे विमुखहोकर गर
ब्राह्मणको दुःखदेवेतोसमझनाचाहिये इसकेबुरेदिनआयेहैं
नेआजब्राह्मणको वृथादुःखदिया इससेमुझकोनिश्चयहोत
कि मेरीआयुष् व धनकीहानिहोगी यहांराजाअपनेघरपरबै
आ इसतरहशोचकर रहाथा व जिसस्थानपर भिरण्डीऋषी
ध्यानमेंबैठेथे वहांजबऋषीश्वरोंके लड़कोंने खेलतेहुयेयह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखा तबएकबालकने भिरण्डीऋषीश्वरकेबेटे शृंगीऋषिसे जोकौ
शिकीनदीकेकिनारे लड़कोंमेंखेलताथा जाकरकहा तुम्हारेपिता
के गलेमें राजापरीक्षितसांपडालगयाहै यहबातसुनतेही शृंगीऋ
षि जो ब्रह्मासेवरदानपाकर वचनअपनासिद्धरखताथा क्रोधमें भ
रगया व आंखेंउसकीलालहोकर शरीरकांपनेलगा उसीसमयशृं
गीऋषिने नदीकिनारेजाकर अपनाहाथ व पांवधोया व आचम
नकरके हाथमेंपानीलेकरशापदिया कि आजसेसातवेंदिन तक्षक
सांपकेकाटनेसे राजापरीक्षितमरजावें ऐसाशापदेकरबोला श्रीकृ
ष्णजीवैकुण्ठकोपधारे इसलियेकलियुगवासीराजा धन वराज्य
मदमें अन्धेहोकरब्राह्मणोंकोदुःख देतेहैं जिसतरहकोईमनुष्य
कुत्तेकेअगोरनेकेवास्तेकुत्तापालै और वहकुत्ताउसीकोकाटकरय
कीथालीमें मुंहडालदे उसीतरहराजालोग नौकरसमान ऋषी
वरोंकी रक्षाकरनेकेवास्तेरहतेहैं सो अबकलियुगवासीराजों का
यहहालहै कि ब्राह्मणोंकीकृपा व आशीर्वादसे राजगद्दीपाकर उ
नहींकोदुःखदेतेहैं यहअर्ज्जुन वयुधिष्ठिरकेकुलमें ऐसाअधर्मीरा
जाउत्पन्नहुआ जिसनेमेरेबापकेगलेमेंसांपडालदिया व राजोंने
ब्राह्मणोंकोनिर्बलजाना इसलिये हमअपनीसामर्थ्य उनकोदिख
लातेहैं शृंगीऋषिसबलड़कोंको ऐसावचन व शापदेनेकाहाल सु
नाकर ऋषिकेपासआया व जबअपनेपिताको परमेश्वरके ध्यान
में लीन और माराहुआसांपगलेमेंपड़ादेखा तबसांपगलेसेनिका
लकररोनेलगा व पिताकानामलेकरपुकारा उसकाशब्दसुनतेही
भिरण्डीऋषिने समाधिखोलकरअपनेबेटेसेपूछा तू किसवास्तेरो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताहै शृंगीऋषिनेकहाराजापरीक्षित तुम्हारेगलेमें सांपडालग
इसलिये मैं रोताहूं यहबातसुनकर भिएडीऋषिनेकहा हेबेटा
कुछशापतो राजाकोनहींदिया तबशृंगीऋषिबोला मैंनेइसअ
करनेकेबदलेराजाको यहशापदियाहैकिसातदिनबीतेतक्षकस
केकाटनेसे राजामरजावै यहवचनसुनकर भिएडीऋषिबहुत
सहोगये व क्रोधकरकेअपनेबेटेसेकहा हेमूर्खतैंनेबहुतबुराकार्म
याजोऐसेधर्मात्माराजाको जिसकेराज्यमेंकलियुगने प्रवेश
पायाथा शापदियादेखौवैकुण्ठनाथश्रीकृष्णजीनेउसकी रक्षा
ताकेपेटमेंकी व कौरवोंवपाण्डवोंकेकुलमेंयही एकराजाबचा
जिसकेराज्यमें हमसबब्राह्मणवऋषीश्वर बहुतसुखवआनन्द
हिकरकोईपशुवपक्षीभी दुःखीनहींथाउसकेन्यायसेगायवबाघ
कघाटपानीपीतेथे तैंनेथोड़ेअपराधमेंदण्डउसको बहुतदियाउ
काअवगुणलिया व गुणकोछोड़दिया परीक्षितकेमरनेकेउप
अधर्मीराजाहोंगेवउनकेराज्यमें कलियुगअपनाप्रवेशकरके
ष्योंसेपापकरावेगा देखोराजा मेरेस्थानपरआया तो मुझेउस
भोजनखिलाकर सम्मानकरनाउचितथा यहबड़ीलज्जाकी
हुई जो मैंनेएकलोटापानीभी उसेनहींपिलाया औरतैंनेऐसा
पवैष्णवराजाकोदेकर श्रीकृष्णजीकाअपराधकिया राजाके
केउपरांत संसारमेंसबलोग वर्णसंकरहोजावेंगे इसपापकीज
हुआ साधु व संतकायहधर्म्महै कि गुणकोलेतेहैं औरअवगु
तरफनहींदेखते यहबातभिएडीऋषिने अपनेपुत्रसेकहिकर
श्वरकाध्यानकरके उनसेविनय किया हे वैकुण्ठनाथ मेरे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवतारका शिष्यहुआ सोउनगुरुनारायणने मुंहारहअक्षरका मंत्र उपदेशदिया जबउसमंत्र जपने और गुरुकाशीर्बादसे मे राहृदयशुद्धहुआ और हरिचरणोंमें प्रेमउत्पन्नभा तबमैंनेपो थीश्रीमद्भागवतका जो फ़ैज़ीने फ़ारसीमेंउल्थाकै पढ़ना आर म्भकिया जबउसके पढ़नेसेमेराप्रेमबढ़ा तबमुझेह इच्छाहुई कि इसको उर्दूभाषामें जिसे सबकोई समझसक्लेखूं सो मैंने पोथी श्रीमद्भागवतको महाराजफणीन्द्राचारी नेवाले गोपी गंज और पण्डितगोविन्दराम व मदनमोहनज ओझाकाशी बासीसे जो छः शास्त्र और अठारहपुराणके जनेवाले हैं मि लानकरके उर्दूमें उल्थाकिया सो श्यामसुन्दर विश्वनाथजी और सबदेवता काशीबासीकीकृपा और दयासेल्था सम्पूर्ण हुआ और इसदासको यहग्रंथलिखनेपढ़नेका ध्यास रखनेसे जैसासुखमिला उसकाहाल क्याकहूं इन्द्रलोकभीसुख सत्स ङ्गकेसामने कुछवस्तुनहीं है आदमी इसअमृतरीकथाको नि त्यपढ़ै व सुनाकरैतबउसको मालूमहोगा किइसक्यागुणऔर लाभहै जबतक आदमीइसकथाको नहींपढ़ता वुनता तबतक उसकासुख नहींपाता ॥

दो० एकघड़ी आधीघड़ी आधकी आध। तुलसी संगति साधुसेटि कटैं अपराध॥

और यहदास कुछसंस्कृत व शास्त्र नहींपढ़ाहैदाचित् इस उल्थामें कोईबातभूलगईहो तो आपलोगदया के अपराधमे रा क्षमाकरैं भूल व चूकमें महात्मालोग सदासेटों पर दया करते आये हैं ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मक्खनलालजीने इसपोथीकासबछोटेबड़ोंकेसमझनेकेवास्ते
उर्दूबोलीमें संवत १९०३ काशीपुरीमें लिखकर सुखसागरनाम
रक्खा व कहीं दोहा चौपाई सोरठा व कवित्व ब्रजकीबोली में
जोबहुतप्यारी लूमहोतीहै जहांजैसा उचितदेखावहांवैसाही
खा और कुछवा ब्रजबिलासकी जिसमेंरासक्रीड़ा बहुधाहैसि
वायकथा श्रीमागवतकेइसपोथीमेंलिखीगई अबथोड़ासासम
चार अपनाजिरह मुझे श्रीनारायणजीके चरणकमलमें
मउत्पन्नहुआ र्णनकरताहूं मैंने काशीपुरीमें जन्मलेकर या
मिनीविद्यापढ़ीऔर बीसवर्षकीअवस्थामेंमुन्शीबृन्दाबन सी
श्तैदार अदालतौजदारीमिर्ज़ापुरकेउपकारसे किजोमेरेबापके
मामाथे मैंउसीलेमें बआहदेमुहर्रिरीथानेपरनौकरहुआ और
तेईसबर्षकी अवस्थामें दारोगाहोकर ऊपरथानेगोपीगंज परगने
भदोई ज़मींदारश्रीमहाराजाधिराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसि
हबहादुर काशीरेश जो चौदहगुणनिधानहैं बदलआया औ
बत्तीसवर्षकी अस्थातक काम क्रोध मोह औलोभ संसारीजाल
में ऐसाफँसारहके गुरुमुखभीनहींहुआ सोगोपीगंजकाशीअ
र प्रयागकेमध्यस्तेपरहै इसलिये बहुतसेसाधु और महात्मा
न तीर्थयात्राकाकेवास्ते उसीमार्गसे आयाजायाकरतेहैं सो
झेउनसन्तों औंमहात्माओंके चरणोंकादर्शनपाने व सत्संग
यहअभिलाषाई कि गुरुमुखहूजिये जिससे अन्तकालसुध
तब ऐसा शोचर काशीजीमेंचलाआया और श्रीबाबाजवा
रलालजी सारस्वतब्राह्मण छत्तीसगुणनिधान साक्षात ईश्वर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रमको गये तब उत्कल उनकेपुत्रने बहुतदिनोंतक सातोंद्वीपका राज्यकरके सबप्रजाको प्रसन्नरक्खा फिर उन्होंनेभी ऐसाविचारा कि राज्य व धन व कुल व परिवार आदिकसंसारीसुख स्वप्नेके समानहैं जिसतरह राजाध्रुवमेरापिता विरक्तहोकर नारायणजीकी शरणमेंजाके कृतार्थहुआ उसीतरह मैंभी इसमायाजालसे छूटकर परमेश्वरका भजनकरतातो क्या अच्छीबातथी परघरवाले वैराग्यलेने व घरछोड़देनेकेसमयमनाकरेंगे इसलिये उत्तमबातयहहै कि मैं अपनेको बौरहोंकीतरह बनालूं जबसबलोग जानेंगे कि यहराज्यकरनेकेयोग्य नहींहै तब उनकेहाथसे अपनाप्राणछुटाकर मैं परमेश्वरका स्मरण व तप अच्छीतरहकरूंगा ऐसाविचारकर राजाउत्कल बौरहोंकीतरह बनकर बेप्रमाण बातेंकहनेलगा यहदशा उसकीदेखकर घरवाले व कामदारोंने जाना कियह विक्षिप्तहोगया राज्यकरनेयोग्यनहींहै तब सबकिसीने सम्मतकरके वत्सरनाम उसकेछोटेभाईको जो ध्रुवकीदूसरीस्त्रीसे उत्पन्नहुआथा राजसिंहासनपर बैठाला व उत्कलबौरहों के समान घरमें रहनेलगा कुछदिनइसीतरहबीते जबउत्कलने देखाकिकामकाज राजगद्दीकाचलानिकला तबउसने एकदिन घरसेनिकलकर बनकारास्तालिया व बनमेंजाने उपरान्त बीचतप व ध्यान परमेश्वरके लीन होकर तनु अपनात्यागदिया॥

तेरहवां अध्याय॥

बेनका राजा अंग के यहां ध्रुवजीके कुलमें उत्पन्न होना॥

सूतजीनेशौनकादि ऋषीश्वरोंसेकहा कि अबहमध्रुवकेवंशका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से हम परमेश्वरका तपकरके इसपदवीकोपहुँचे वहगरुके समा
होकर मुझे कठोरवचन कहने से नरकभोगतीहै वहांमेरे अके
जानेसे क्या धर्मरहैगा जो मैं सुखकरूं व मेरीमाता दुःखभोगै
वजी इसीशोचमेंथे कि गणलोग उनके दिलकाहाल जानकर
ले कि तुम किसचिन्तामें हो ध्रुवनेकहा जिसमातापिताके तप
मारनेसे मैंने यह पदवीपाया सो हमचाहते हैं कि नारायणजी
कहकरउसकी मुक्तिकरावैं गणबोलेभगवान्जीने आज्ञादिया
कि ध्रुवको उसकीदोनों मातासमेत विमानपर बैठालकर लेआ
ओ सो वहदोनों पहिलेतुमसे वहां पहुंचैंगी यहबात सुनतेही ध्रु
जीबड़े आनन्दसे अपनीस्त्रीसमेत दिव्यरूपहोकर विमानपर
ढ़के ध्रुवलोकमें चलेगये यहहालदेखकर देवतोंने ध्रुवजीकेऊ
फूलोंकीवर्षाकिया व नारदजी उससमय प्राचीनबर्हिष प्रचेतोंके
बापको यज्ञकरातेथे सो ध्रुवजीका विमानदेखकर मारेआनन्द
नाचनेलगे फिरनारदमुनिने यज्ञकराने उपरान्त ध्रुवलोक
जाकरकहा हेध्रुव तेरासबमनोरथ पूर्णहुआ ध्रुवनेनारदजीके
रणोंपरगिरके हाथजोड़के विनयकिया हेमुनिनाथ यहसबबड़ा
मुझेआपकी दया व कृपासेमिली तब नारदमुनिबोले कि जैसी
पा तुझपर नारायणजीनेकिया ऐसी अटलपदवी दूसरेको मि
नाकठिनहै यहवचनकहकर नारदजी ब्रह्मलोकको चलेगये व
बजीखुशी व आनन्दसेरहकर वहांसुख भोगनेलगे इतनीकथा
नकर राजापरीक्षितनेपूंछा हेमुनिनाथ प्रचेतालोगकौनथे उनका
हाल वर्णनकीजिये शुकदेवजीबोले हेराजा जबध्रुवजी बदरि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क० श्री भागवत कठोर बड़ी कछु बूझि परैनहिं अर्थकीरीती। बूझे बिना नहिं प्रेम जगै बिन प्रेमजगे उपजै नाहिं प्रीती॥ प्रीति बिनानहिंकामसरै बिन कामसरे न सरै जगनीती। याहीसे बूझिबे हेतकहूं उर्दूमें बुलासे से गोविंदगीती॥

दो० व्यासदेव शुकदेवको विनय करौं करजोरि। हठवश उर्दू करतहौं क्षमौ ढिठाई मोरि॥
अपने चितके चैनको उर्दू बैन बनाय। भवसागर उतरन चहौं गोविंदको गुणगाय॥

उल्था भागवत माहात्म्य छः अध्याय जिसको गोकर्णमाहात्म्य कहते हैं॥

पहिला अध्याय॥

भक्ति व ज्ञान व वैराग्यकी कथा॥

शौनकादिक अट्ठासीहजार ऋषीश्वरोंने बीचस्थान नैमिषारण्यतीर्थकेसूत पौराणिकशिष्य वेदव्यासजीसेकहा तुमकोई कथा व लीलापरमेश्वरकी ऐसी वर्णनकरोजिसमें भक्ति व ज्ञानवैराग्यअधिकहो इसघोर कलियुगमेंज्ञानसंसारी आदमियोंका रासकेसमान होगयाहै इसलिये कोईसुखसे न रहकर सबकिसी ऐसाक्रोध व मोह लोभ उत्पन्नहुआहै कि आठोंपहर उसी दुःखमें व्याकुलरहते हैं कोई ऐसाचरित्र भगवान्का वर्णनकीजिये कि कलियुगवासियोंकोहरिचरणोंमेंभक्ति व प्रीतिउत्पन्नहोकर सुखमिलै यहबातसुनकर सूतजीबोले तुमलोगोंने बहुत अच्छीबात कलियुगवासियों के उद्धारकरनेके वास्ते पूछी जो कालरूपीसांपके मुंहमेंपड़ेहैं सो वहकथाश्रीमद्भागवतहै जो शुकदेवजीमहाराजने राजापरीक्षितसे कही थी जिससमय राजा शृङ्गीऋषिके शापदेनेके उपरान्त ऋषीश्वर व मुनीश्वरोंकीसभामें शुकदेवजीने गंगाकेकिनारे आनकर कथाश्रीमद्भागवत सुनानाआरम्भकिया उससमय देवताओंने अमृतकाकलश वहां जाकरशुकदेवजीसेकहा महाराजयहअमृतका घड़ा आपलीजि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ये व हमलोगोंको कथारूपीअमृत पिलाइये यह बातसुनक
कदेवजीबोले तुम्हाराअमृत हमारेकामका नहींहै इसअमृत
से आयुर्दाआदमीकी देवताकेबराबर होतीहै और ब्रह्माकेए
नमेंचौदहइन्द्रबदलजाते हैं तुम्हारेअमृतसे उत्तमयह कथा
अमृतभगवान्काचरित्रहै जिसकेसप्ताहपढ़ने व सुननेसे जी
मरहोकर कभीनहींमरता व मुक्तिपदवीपर पहुंचकरआवागम
से छूटिजाताहै इसलियेराजापरीक्षित तुम्हारेअमृत पीनेकी
च्छा न रखकर भागवतरूपीअमृत पियाचाहताहै इतनीकथ
नाकर सूतजीनेकहा नारदमुनिको सनकादिकनेसप्ताहपारा
श्रीमद्भागवतका सुनाकरउसकथा सुननेकीविधिभी बतलाई
यहबातसुनकर शौनकादिक ऋषीश्वरोंने सूतजीसेपूछा कि
दमुनिदोघड़ीसेअधिक कहींनहींठहरतेथे वहसातदिन किसतरह
एकजगहरहे जो उन्होंनेसप्ताहपारायणसुना व सनकादिकका
र्शनभीजल्दी किसीकोनहींमिलता वहनारदमुनिको कैसेमि
औरयह सप्ताहयज्ञकहांपरहुआथा इसकाहालबतलाइये
चनसुनकर सूतजीबोले एकसमय सनक सनन्दन व सनात
सनत्कुमार चारोंभाईघूमतेहुये बद्रिकाश्रममेंआये सोउन्हों
रदजीको पहिलेसेवहां उदासबैठेदेखकर पूंछा हे नारदमुनि
तुममलीनस्वरूप चिन्तामें किसवास्ते बैठेहो और कौनबा
शोचतुमकोहै नारदजीनेचारों ऋषीश्वरोंको प्रणामकरके
हमैंजिसबातकीचिन्ताहै सो सुनिये हमनेसबतीर्थ काशी व
वरी व गया आदिमेंजाकरदेखा तो उनतीर्थोंपर कलियुगने

जीवों
चार व
की चि
खण्डी
की आ
हैं जहां
ण व क्ष
मपरि
किनारे
एकस्त्री
गैं और
रीसह
खा वैसे
खसुनत
उसस्त्री
लबतल
वैराग्य
गंगा व
हलक
टकदेश
ढ़ीहुई
कलियु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जीवोंको संसारीमायामेंऐसा फँसारक्खाहै कि सत्य व तप व आ
चार व दया दान कलियुगमेंसबजातारहा केवलअपनेपेटपालने
की चिन्तामेंसबमनुष्य विकलरहकर झूठबोलतेहैं व अभागीवपा
खण्डीहोकरमाता व पिताकीसेवानहींकरते स्त्री व साले व श्वशुरे
की आज्ञामेंरहकर द्रव्यकेलालचसेअपनीबेटी नीचकुलमेंबेचते
हैं जहांदेखोवहांपरम्लेच्छ व शूद्रोंकीबढ़ती दिखलाईदेकरब्राह्म
ण व क्षत्रीअपनेकर्म व धर्मसेरहितदेखपड़तेहैं मैंकिसीकोअपनेध
र्मपरस्थिरनदेखकर जबचारोंतरफसे फिरताहुआ मथुरामेंयमुना
किनारेपहुंचा तबवहांपरयह आश्चर्य्यकीबात दिखलाईदी कि
एकस्त्रीयुवतीबैठीरोतीहै और दोमनुष्यबूढ़े उसकेपासअचेतपड़े
हैं और वहस्त्रीचारोंतरफ इसइच्छासे देखरहीथी कि कोईआदमी
हरीसहायताकरनेवाला आनकरप्राप्तहो जैसेउसनेमुझेवहांपरदे
खा वैसेखड़ीहोकरबोली महाराज आपएकक्षणठहरकर मेरादुः
खसुनलीजिये मेरेबड़ेभाग्यथे जोआपनेमुझेदर्शनदिया जबमैंने
उसस्त्रीसेपूछातूकौनहै औरयहदोनोंपुरुषजो अचेतपड़ेहैंइनकाहा
लबतलाओ तोउसनेकहा किमैंभक्तिहूं औरयहदोनोंमेरेबेटेज्ञान
व वैराग्यहैं व इनपांचसातस्त्रियोंकोजोयहां बैठीदेखते हो यहसब
गंगा व यमुना व सरस्वतीआदिनदियां स्त्रियोंकारूपधरकर मेरी
टहलकरनेके वास्तेआईहैं मैंनेद्रविड़देशमेंजन्मलिया व करणा
टकदेशमेंसयानीहोकरथोड़ेदिनदक्षिणमेंरही व गुजरातमेंजाकर
बूढ़ीहुईथी अब वृन्दावनमें आनेसे तरुणाहोगईहूं परमेरेदोनोंबेटे
कलियुगबासियोंके घोरपापकरनेसे ऐसेबूढ़े व अचेतहोकरपड़ेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि सामर्थ्यबोलनेकी नहींरखते इनके दुःखसेमैं बहुतउदास
तीहूं यहबड़ीलज्जाकीबातहै किमेरेपुत्रबूढ़ेहोवैं और मैंतरुण
यहहालदेखकर संसारीलोग मेरीहँसीकरतेहैं इसकाकारण
लाइये जबस्त्रीरूपभक्तिने मुझसेयहहालपूंछा तबमैंनेअपनी
द्विसेविचारकरकहा अबघोरकलियुगके आवनेसेतेरी व ज्ञान
रवैराग्यकीकुछ मर्यादनहींरही केवल वृन्दावन आवनेसे तू
णहोगई है परतेरेबेटोंको कलियुगमेंकोईनहींजानता इसकार
वहज्योंकेत्योंबूढ़े व निर्बलबने हैं यहबातसुनकरउसनेकहा
कलियुगऐसादुष्टहै तोराजापरीक्षितने किसवास्ते दयाकरके
णउसकाछोड़ा जिसपरदयाकरनेसे सबलोगोंकाकर्म व धर्म
तारहा उसेमारक्योंनहींडाला तबमैंनेउसकोउत्तरदिया कि प
क्षितने कलियुगमेंबड़ागुणदेखकर उसेनहींमारा कि दूसरेयुगों
हजारोंवर्षतकयज्ञ व तप व दान व धर्मकरनेसे भी परमेश्वर
दर्शनजल्दीनहींमिलताथा सो कलियुगमेंकेवल भजन व की
न करनेसेनारायणजीतुरन्त प्रसन्नहोकर दर्शनअपना देतेहैं
कलियुगवासियोंसे सहजबातभीनहीं बनपड़ती इसलियेकलि
गने सबआदमियोंका कर्म धर्म खोदियाहै तीर्थमें ब्राह्मणप्रति
ह दानलेकर प्रायश्चित्त उसकानहींकरते व सबकोई कामक्रो
व लोभ व अहंकारमें भरेरहते हैं कलियुगकायहीधर्महै इसल
वल परमेश्वरकाभजन व स्मरण उत्तमसमझनाचाहिये यह
तसुनकर भक्तिनेकहातुमधन्यहो बड़ेभाग्यसेतुम्हारेदर्शन
प्राप्तहुये आपसबकिसीकादुःख छुडानेकेयोग्य हैं सो कोईउप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करकेज्ञान व वैराग्यको तरुणकरदीजिये जिसमेंमेरादुःखछूटजा
वे मैं तुमको बारम्बार दण्डवत् करतीहूं ॥

दूसरा अध्याय ॥

नारदजी को भक्तिका बोधकरना और भक्तिके दुःख छुड़ानेवास्ते किसी साधुको ढूंढना ॥

नारदजीने स्त्रीरूपभक्तिसेकहा अबतू अपनीचिन्ताछोड़कर
श्रीकृष्णजीके चरणोंमेंध्यानलगा उनकास्मरण व ध्यानकरने
सेसबदुःखतेरा छूटजायगा जिससमय राजादुर्योधनकी सभामें
दुःशासनने द्रौपदीकाचीरखींचकरनंगीकरनाचाहाथा उससमय
द्रौपदीके ध्यानकरनेसे नारायणजीने चीरबढ़ाकरउसकीलज्जा
रक्खी और जबगजेन्द्रकापैर ग्राहनेपकड़ा और उसकाप्राणबचा
नेवालाकोईनहींरहा तबहाथीकेस्मरणकरतेही विष्णुभगवान्ने
हुंचकरगजेन्द्रकाप्राण ग्राहसेबचाया हे भक्ति तूवैकुण्ठनाथको
प्राणसेभी अधिकप्यारीहै वहतेरेवास्तेनीचजातिमें भी जहांतेरा
वासरहताहै वहांआनकर उसकाउद्धारकरदेतेहैं सतयुगऔरत्रेता
और द्वापरमें सज्जनलोगबहुतसायज्ञ तपदान व धर्म करनेसे
भक्तिपावतेथे कलियुगमेंकेवल तेरीकृपासे सबजीवोंकाउद्धार हो
जाताहै ज्ञान व वैराग्यको कोईनहींपूंछता इसलियेतेरादुःख छु
टनेवास्ते बहुतअच्छाउपायकरके जगत्मेंतेरीमहिमा प्रकटकरे
ताहूं जिनकेहृदयमेंतेराबास रहेगा वहलोगपापी होनेपरभी य
मराजका कुछडरनरखकर तेरीदयासेवैकुण्ठधामको चलेजावेंगे
परमेश्वरकादर्शन यज्ञ और तप व्रत दान करनेसेजल्दी प्राप्तनहीं
होता वहभक्तिकरनेसे सहजमें मिलताहै जिन्होंनेहजारोंजन्म ना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रायणजीकातपकियाथा उन्होंने भक्तिपाईहै परमेश्वरबहुत न्नहोनेसे अपनीभक्तिदेतेहैं इसलिये वैकुण्ठनाथने सबबातों भक्तिको श्रेष्ठरक्खाहै यहबातसुनकरभक्तिनेकहा हे नारदजी धन्यहो जिसतरहआपनेमुझेधीर्य्यदिया उसीतरहमेरेबेटोंको अचेतपड़ेहैं जगावोजबमेरेउठाने व पुकारनेसे ज्ञान व वैराग्य आंखभीनहींखोली तबमैंनेवेदकावचन व गीतापाठपढ़ना म्भकिया उसकेसुननेसेउन्होंने अपनीआंखखोलकर उठनेकी स्तेचाहापर निर्बलतासे फिरअचेतहोगये जबयहहालदेखकर बहुतचिन्ताकरनेलगा कि ज्ञान व वैराग्य किसकारण नहींउठ्यको तबयहआकाशबाणीहुई कि हे नारद क्योंइतनाशोचकरतेहो नासत्संगनहींजागैंगे इनकीसंगतिकरनेकेवास्ते साधुखोजो वचनसुनतेहीवहांसे साधुढूंढ़ताहुआ यहांतकपहुंचा परकलियुग होनेसेकोईसाधु इच्छापूर्वकनहींमिलाउसीचिन्तामें बैठाथा आपकादर्शनप्राप्तहुआ सोआपलोगब्रह्माकेपुत्रबड़ेयोगीव ज्ञा सदाबालअवस्थारहकर केवलकथारूपीधन अपनेपासरखते और तुम्हारीतपस्याकाफल कोईवर्णननहीं करसक्ता किसवा किआपनेजय और विजयवैकुण्ठकेद्वारपालकोंकोपृथ्वीपर दिया ऐसीसामर्थ्यसिवायतुम्हारे दूसरेमेंनहींहै जिसतरहआ दयाकरके अपनादर्शनमुझेदिया उसीतरहभक्ति व ज्ञान वैरा कादुःखछुड़ाकर उनकोसुखदीजिये जिसमेंचारोंवर्णके आद तुम्हारायशगावैं व कलियुगबासियोंका मनशुद्धवपवित्रहोज यहबातसुनकर सनत्कुमारबोले हे नारदजीतुम उदासीछोड़

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुछचिन्तामतकरो जितने श्यामसुन्दरकेदासहैं उनसबोंमें तुम
श्रेष्ठहोआपकोभक्तिका दुःखछुड़ावनेकेवास्ते उपायकरनाउचित
है पिछलेसमयके महात्मा व ऋषीश्वरोंने ज्ञान व धर्मके अनेक
संसारीमार्ग आदमियोंको वैकुण्ठपहुंचानेकेवास्ते बनायेहैं परउ
नकठिनमार्गोंपर किसीसे चलानहींजाता और वहराहबतावनेवा
लागुरूभी जल्दीनहींमिलता इसलिये जोकोई श्रीमद्भागवतस
च्चे मनसे सुने उसकोवहराह मिलसक्तीहै जो कथा शुकदेवजीने
राजापरीक्षितकोसुनाईथी वहीकथासुननेसेभक्ति व ज्ञान व वैरा
ग्यकोभी सामर्थ्यहोकर दुःखउनका छूटजायगा परमेश्वरकेचर
णोंमेंप्रेमबढ़नेकेवास्ते इससेउत्तमकोई दूसरीराहनहींहै यहबात
सुनकरनारदजीबोले महाराजमैंने वेद व गीताकापाठपढ़करज्ञा
न व वैराग्यको बहुतजगाया परउन्हेंउठनेकीसामर्थ्यनहींहुई श्री
मद्भागवतकहनेसे किसतरहजागेंगे सनत्कुमारजीनेकहा हेनारद
सबवेदोंकासार श्रीमद्भागवतसमझनाचाहिये उसकेएक२ श्लो
क व पदमेंवेदोंकाअर्थ इसतरहभराहै जिसतरहदूधमें घी रहकर
जबतकउसको उपायकेसाथ दूधसे नहींनिकालते तबतक घीका
स्वाददूधमेंनहींमिलता उसीतरहसब वेद व पुराणकोव्यासजीने
मथनकरके उसकातत्त्वश्रीमद्भागवतमेंलिखाहै और नारदजी तु
मजान बूझकर क्योंभूलतेहोचारश्लोकमूल श्रीमद्भागवतके ना
रायणजीने ब्रह्माकोउपदेशकिये और तुमनेउनसेसुनकरवेदव्या
सकेहा वेदव्यासजीनेउसे विस्तारपूर्वकलिखकर भागवतपुराण
बनाया वहीकथासबकिसीकादुःखछुड़ाने व संसाररूपी समुद्रसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पारउतारनेवालीहै यहवचनसुनतेही नारदजीहाथजोड़करबो
आपनेबड़ीदयाकरके यहहालकहा व हमारेभाग्यथे जो आप
दर्शनामिला बिनाभाग्यके सत्संगनहींमिलता अबयहबतलाइ
इसभागवतरूपी ज्ञानयज्ञको किसतरहसेकहांपर करनाचाहि
और कितनेदिनमें यहयज्ञसम्पूर्णहोताहै ॥

तीसरा अध्याय ॥

सनत्कुमारजीको श्रीमद्भागवतकी सप्ताहविधि व उसके सुननेसे जो फलमिलता, वर्णन करना॥

सनत्कुमारजीबोले हे नारदमुनितुमने बहुतअच्छीबात पूं
हरद्वारमें गंगाकिनारेयहयज्ञ करनेकेवास्ते अच्छास्थानहै व
परवृक्षोंकीछाया घनीहोकरबहुतसे ऋषीश्वर व मुनीश्वरज्ञा
ज्ञकेचाहनेवालेरहतेहैं उसजगहतुम्हारेकथारूपी यज्ञकरनेसे
न व वैराग्यभी तरुणहोकर जागउठैंगे व भक्तिकासबदुःखछूट
यगा यहबातसुनकर नारदजीबोले महाराजबिनातुम्हारेचले
यज्ञनहींहोसक्ता इसलियेआपभी हमारेसाथवहांचलिये यह
नसुनतेही सनकादिकचारोंभाई व नारदजी बद्रिकाश्रमसेचल
रहरद्वारमेंगंगाकिनारेआनपहुंचे उन्होंने ऋषीश्वरों व मुनीश्व
सेजोवहांपरथे कहाहमइसस्थानपर भागवतरूपीयज्ञकरतेहैं
सकोकथारूपीअमृतपीनाहो वहआनकरसुने यहसमाचारसु
ही भृगु व वशिष्ठ व च्यवन व मेधातिथि व गौतम व परशुराम
विश्वामित्र व मार्कंडेय व वेदव्यास व पराशर आदि जितने ऋ
श्वर व मुनीश्वरउसतीर्थपररहतेथे वहांसबआये औरसिवायऋ
श्वरोंके वेदजोमूर्तिमानहैं व गंगाजीइत्यादिनदियां व गन्धर्व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किन्नर व यक्ष व नागआदिकचौदहोंभुवनकेलोगकथारूपीअमृ
तपीनेवास्ते उसज्ञानयज्ञमेंआकरइकट्ठेहुये जबनारदजीनेसबकि
सीकोबड़ेआदरभावसे बैठालातबवैष्णव व विरक्तों व महापुरुषों
नेजयशब्द व शंखध्वनिकरनाआरम्भकिया देवतालोगअपने२
विमानोंपरचढ़कर वहांकथासुननेकेवास्ते आपहुंचे व ज्ञानरूपी
यज्ञपरफूलवर्षनेलगे व सबश्रोताइसविचारमें चित्तलगाकर बैठे
कि देखैं सनकादिक व नारदजी कौनलीला व कथा परमेश्वरकी
कहतेहैंउससमयसनत्कुमारनेनारदजीसेकहाहमतुमकोवहकथा
सुनातेहैंजोशुकदेवजीनेराजापरीक्षितसेकहीथी वहपुराणअठार
हहजारश्लोकहोकर उनकेपढ़ने और सुननेसेमुक्तिहाथमेंखड़ीर
हतीहै श्रीमद्भागवतसुननेके बराबरदूसरेपुराणके सुनने व हज़ारों
अश्वमेध व बाजपेययज्ञकरनेसेफलनहींमिलताकाशी व गया व
प्रयाग व कुरुक्षेत्र व पुष्करादिकिसीतीर्थकास्नान कथासुननेके ब
राबरफलनहींरखता जबतकसंसारीलोग यहकथानहींसुनतेतबत
कउनके अनेकजन्मकापापगर्जताहै अमृतरूपीभागवतसुनतेही
उनकेपापइसतरहछूटकरभागजातेहैं जिसतरहसूर्य्य निकलनेसे
किहिरानहींरहता जोमनुष्य प्रतिदिनएकया आधाश्लोकभागव
तकापढ़ाकरेउसकीभीमुक्तिहोजातीहै व जोलोगनित्यभागवतप
ढ़कर औरोंकोसुनातेहैं उनकेकरोड़ोंजन्मकापापजलकर भस्म
होजाताहै जो कोईपोथीश्रीमद्भागवतसोनेके सिंहासनपरधरकर
वैष्णव व साधूकोदानदेताहै उसेपरमेश्वरअपनी ज्योतिमेंमिला
लेतेहैंजिसनेमनुष्यकातनपाकरभागवतकथानहींसुनाउसेधिक्का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहोकर चाण्डालकेबराबर समझनाचाहिये ऐसापूतजननेसे
सकीमाताबांझरहतीतोअच्छाथा कलियुगमेंयज्ञ व तप व दा
धर्म आदमीसेकुछ न होकरउसकामन एकतरफनहींलगता
वास्ते परब्रह्मनारायणने वेदव्यासजीका अवतारलेकर यहक
बनाईहै जो कोईसातदिनतक चित्तलगाकरइसपुराणका सप्ता
सुनै उसकोयज्ञ व तप व व्रत व दान सबकाफलप्राप्तहोकर मुक्ति
दार्थमिलताहै जबउद्धवने एकादशस्कन्धमें सबज्ञान श्रीकृष्ण
जीसेसुनकरकलियुगका लक्षणजाना तब श्यामसुंदरके चरण
काध्यानधरकर मुरलीमनोहरसेपूंछाहेदीनानाथआपतोवैकुण्ठ
धामकोजातेहैं संसारीलोगोंका उद्धारकिसतरहहोगा तब त्रिभु
नपतिबोले हे उद्धवतुमबद्रिकाश्रममेंजाकरतपकरो तुम्हारीमुक्ति
होजावेगीमेरेजानेउपरान्तएकभागवतरूपीमूर्त्तिहमारीजगत
रहैगी जोमनुष्य सप्ताहभागवतसच्चेमनसे सुनेगा उसकोहमार
र्शनहृदयमेंहोजावेगा संसारीलोगोंकादुःख छुड़ानेवाला यह
रायणसमझनाचाहिये सिवाय इसके और कोईदूसरीबस्तुअ
मीको मायारूपीजालसे छूटनेवास्ते उत्तमनहींहै इतनी कथ
नाकरसूतजीने शौनकादिकऋषीश्वरोंसे कहा जबसनत्कुमा
सप्ताहपारायण श्रीमद्भागवतकासुनानाआरम्भकिया व सबक
सुननेलगे तबउसअमृतरूपी कथाकेप्रतापसेवहदोनोंबूढ़े ज्ञान
वैराग्यजो अचेतपड़ेथे तरुणहोकर उठबैठे व भक्तिकादुःख छू
या व उनकादर्शन सबसभावालेपाकरगोविंद व हरे व मुरारे क
नेलगे व भक्ति व ज्ञान व वैराग्यका दर्शन मिलनेसे उनकोभ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्पन्न होकर कलियुगका दुःख जातारहा व सबकिसीकामन
साह कथा सुनकर शुद्ध व एकचित्त होगया ॥

चौथा अध्याय ॥

नारायणजीका सब आदमी सप्ताहसुननेवालोंको दर्शनदेना व आत्मदेवब्राह्मणका इतिहास वर्णन करना कि जिसकी स्त्री बड़ी कर्कशाथी ॥

सूतजीने शौनकादिकसेकहा जबसब वैष्णव व ऋषीश्वरस
ाह सुनकर एकचित्तहोगये तबश्रीवृन्दावनविहारी सांवली सू
तिमोहनीमूरतिने पीताम्बरओढ़े व कर्द्धनी व मुकुट व कुण्डल
ड़ाऊपहिनेकेसर व चन्दनकाखौरमाथेपरलगायेउद्धवआदिक
कुण्ठबासीभक्तोंकोसाथलिये उसज्ञानयज्ञमेंआनकर सबकोद
र्शनदिया अमृतरूपीकथासुनकरपहिलेसेसाधु व वैष्णवकेहृदय
में श्याममूर्त्तिदिखलाईदेनेलगीथीसो प्रकटमें भी सबकिसीनेउ
नकादर्शनकरकेअपना २ जन्मसुफलजाना व वैकुण्ठनाथकोदे
खतेही जितनेवैष्णव व ऋषीश्वरउससभामेंबैठेथेजय २ बोलकर
उठखड़ेहुये व मलयागिरिचन्दन व फूलोंकीवर्षाउनपरकरनेलगे
व धूप दीप नैवेद्यसेपूजाकरनेउपरान्त शंखादिकबजाकर साष्टां
गदण्डवत्किया यह सब आनन्द देखकर नारदमुनिबोले हे सन
त्कुमारजी आपनेजोसप्ताहयज्ञकिया इसमेंजिसने २ यहकथासु
नी वहसबपवित्रहोकर मुक्तिपदवीपरपहुंचे अबऔर कौनकौनलो
गयहअमृतरूपीकथा सुनकरभवसागरपार उतरैंगे उनकाहालव
र्णनकीजिये सनत्कुमारनेकहा जो कलियुगकेमनुष्यबड़ेपापी व
दुष्ट व लालची व झूंठे व चुगुल व कामीउत्पन्नहोकर अपनेको
घसेआपजलेमरतेहैं वे लोगभी इससप्ताहयज्ञ सुननेसे पवित्रहो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करमुक्तिपदवीको पहुंचैंगे और जो कोईकलियुगमेंमाता व
कीसेवा व अपनेकर्म व धर्मसेरहित व लोभमेंडूबारहकर
चोरवठगहोगा वहभीयहकथासुननेसे भवसागरपारउतरजा
अबहमएककथापुरानी तुमसेकहतेहैंसुनो दक्षिणदिशामें
द्रानामएकनदीहै उसकेकिनारेएकनगरमें आत्मदेवनामब्रा
बड़ापण्डित व तेजवान् व धर्मात्मारहताथा उसब्राह्मणकीस्त्री
लीनामबड़ीकर्कशा दिनरातिसंसारीमायामेंफँसीरहकर अप
तिको सब तरहकादुःख देतीथी परवहब्राह्मणज्ञानी परमेश्व
इच्छाइसीतरहसमझकरउसीकेसाथअपनेदिनकाटताथा जब
ब्राह्मणकेपुत्रनहोकरबुढ़ाईआई तबउसनेसन्तानहोनेकेवास्त
औरनेम रखना आरम्भकरके बहुतगाय व सोनाब्राह्मणोंको
दिया तिसपरभीउसकीइच्छानहींपूर्णहुई तबवहब्राह्मणअप
नमें बहुतउदासहोकरघरसेनिकला और अपनाशरीरत्यागक
कीइच्छारखकरबनमेंचलागया जबदोपहरको प्याससेबहुत
कुलहोकर तालाबकेकिनारे स्नानकरकेपानीपिया व उसीज
बैठकरसन्तानहोनेवास्तेचिन्ताकरनेलगा तबपरमेश्वरकीइ
से एकसंन्यासीमहापुरुष उसतालाबपरआनपहुंचा जब ब्रा
ने उसकातेजदेखकर बड़ेआदरभावसे अपनेपासबैठाला त
महापुरुषनेपूंछा कहोब्राह्मणदेवतातुमइसबनमेंकिसवास्तेउ
बैठेहो अपनेशोचकाहाल हमेंबताओ यहवचनसुनतेही ब्रा
आंशूभरनेउपरान्त हाथजोड़करबोला महाराजमैंने पिछले
न्मबड़ेपापकियेथे इसलियेमेरेसन्ताननहींहुई बेटानहोनेसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ांधिमें मुझसेकिसतरह रहाजायगा इनसबदुःखकेउठानेसे बां
बिधवाअच्छीहोतीहैं जिनकोगर्भकादुःख उठावना नहींप
ा ऐसी २ अनेकबातैं उसब्राह्मणीनेअपनीसखीसेकहकर वह
ननहींखायाउठाकररखछोड़ा व अपनेपतिसेझूंठकहदिया कि
फलखालिया थोड़ेदिनउपरान्तउसब्राह्मणीकी बहिननेवहां
करपूंछाहेबहिनतुमइनदिनोंमेंबहुतदुबली व उदासमालूमहो
होइसकाक्याकारणहैतबउसनेअपनीबहिनसेकहा किमेरेस्वा
िनेएकफलपुत्रहोनेकेवास्ते कहींसेलाकरमुझेदियाथा सोमैंनेग
रहनेकेदुःखसेवहफलनहींखाया व अपनेपतिसेफलखानेकाहा
झूंठकहदिया व गर्भमेरेनहींहै इसबातकाउत्तरक्यादेऊंगी इस
ारणमैं उदासरहतीहूं यहबातसुनकरउसकीबहिनबोली तूकुछ
चतामतकर मेरेएकमहीनेकागर्भ है सोतूअपनेपतिसेकहदेकिमे
गर्भरहाजबमेरेलड़काहोगातबमैंवहबालकतुझेदेकर उसकोतेरा
टाप्रकटकरके दूधपिलायाकरूंगी इसबातकीखबरतेरेपतिको न
गी और जो फलतेरास्वामीलायाहै वहतूअपनीगायको खिला
यहबातसुनतेहीउसब्राह्मणीने प्रसन्नहोकरवहफल गायकोखि
ादिया व अपनीबहिनको आत्मदेवसेछिपाकरघरमें रक्खाजब
शवेंमहीनेउसकेबेटाहुआ तबउसब्राह्मणीने अपनेपतिसेकहला
जा कि मेरेलड़काहुआहै यहहालसुनतेहीआत्मदेवने मंगला
ारमनाकर ब्राह्मण व याचकोंको बहुतसादान व दक्षिणादिया
ब्राह्मणीनेअपनेपतिसेकहा कि मेरेदूधनहींउतरता व मेरीबहि
के दूधहोताहै उसकाबालक छः महीनेकाहोके जातारहा तुम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहो तो उसेदूधपिलानेवास्तेबुलाकरयहांरक्खूं ब्राह्मणनेकहा
हुतअच्छा बालकको किसीतरह पालनाचाहिये जबइतनी
ब्राह्मणनेकही तबब्राह्मणीकी बहिनप्रकटहोकर लड़केको दू
लानेलगी व ब्राह्मणनेउसबालककानामधुन्धकारीरक्खा ज
महीनेकाधुन्धकारीहुआ तबगौकेभीउसफलकेप्रतापसे एक
काबहुतसुन्दरमनुष्यरूपीजन्मा परउसबालकके दोनोंकान
केसमानथे उसकोदेखकरब्राह्मणने बड़ीप्रसन्नतासे गोकर्ण
रक्खा व दोनोंलड़कों को अपनासमझ अच्छीतरहपालन
लगा जबवहदोनोंबालकसयानेहुये तबगोकर्ण पढ़लिखकर
पण्डित व बुद्धिमान् व धर्मात्माहुआ व धुन्धकारीमहामूर्ख
र्मी व चोर व जुआरीहोकरकुकर्म करनेलगा जबवेश्यागमन
नेमें सबधनघरकाखर्चकरडाला तबधुन्धकारीअपनेमाता
को मारपीटके सबकपड़ा व बरतनघरसेलेगया व उसकोभी
करसबद्रव्यवेश्याकोदेडाला जबयहदशाअपनेबेटेकी ब्राह्मण
तानेदेखी तबरोकरकहनेलगे कि ऐसेअधर्मीपुत्रहोनेसे जो
दुःखहोताहै मैं बिनासन्तानकेबहुतअच्छाथा इसजीनेसेमेरा
नाअच्छाहै जिसमेंमहाकष्टव दुःखसे छूटजाऊं यहहालआ
वकादेखकर गोकर्णनेकहा हे पिता संसारमें सिवायदुःखके
किसीको नहींहोता तुम किसवास्तेइतनीचिन्ताकरतेहो जग
राजा व प्रजा धनी व कंगालजितनेआदमीहैं सबकोएकदुः
गारहताहै जिसनेसंसारीमायाछोड़कर परमेश्वरमेंध्यानलग
उसकोसुखहोताहै इसलियेतुमअज्ञानतजकर स्त्री व पुत्रका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेतोड़डालो व बनमेंजाकरपरमेश्वरकाभजनकरो तबतुमको
मिलैगा संसारी मायामोहमें फँसेरहनेसेआदमी नरकभोग
ताहै जबयहबातगोकर्णकी सुनकरब्राह्मणदेवताको कुछज्ञान
ा तबउसनेगोकर्णसेकहा तुमनेबहुतअच्छासम्मतहमकोबत
या परबिनाज्ञानसीखेबनमें जाकरक्याकरूं जो मेरेउद्धारका
ायहो सो भी बतलादे यहवचनसुनकर गोकर्णबोला हे पिता
मनतुम्हारा संसारकीमायामोहकेबीचमेंलगाहै इसमनको तु
उनकीतरफ़सेखींचकर हरिचरणोंमेंलगाओ बनमें अकेलेबैठ
परमेश्वरकाध्यानकरो व संसारीमाया व तृष्णाकोछोड़देव य
ातसाधनकरनेसे बहुतसुखपाकरमुक्तपदवीपर पहुंचोगे यहज्ञा
नुनतेहीआत्मदेवने प्रसन्नहोकर संसारीमायाछोड़ दियावबन
नाकर परमेश्वरकास्मरण व ध्यानकरनेलगा कुछदिनबीते त
अपनात्यागकर मुक्तपदवीपरपहुंचा ॥

पांचवां अध्याय ॥

बेश्याके फांसीलगाने से धुन्धकारीका मरना व उसका सप्ताह सुनकर मुक्तहोना ॥

सूतजीने शौनकादिकऋषीश्वरोंसेकहा कि जबवहब्राह्मण ब
चलागयातबधुन्धकारीने अपनीमाताकोमारपीटकरकेकहा
यघरमेंकहांगड़ाहै हमकोबतलादे नहींतोतुझकोमारडालूंगा
नेमारनेकेडरसेकहा कलबतलादूंगी उससमययहबातकहक
ह्मणीनेबेटाकेहाथसे अपनाप्राणबचायापरउसकेघरमें कुछद्र
नहींथा जोबेटेकोबतलाती इसलियेमारपीटकेडरसेवहरातको
में गिरकरमरगईजबगोकर्णनेधुन्धकारीकायहहालदेखातब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपनारहनावहांउचितनजानकर वह तीर्थयात्राकरनेबाहरच
गया व गोकर्णऐसामहात्मा व ज्ञानीहुआकिदुःख व सुखश
मित्रको एकसासमझकर दिनरात्रिसिवायभजन व स्मरणए
श्वरकेकुछदूसराउद्यमनहींरखताथा व गोकर्णके जानेकेउप
धुन्धकारीअकेलाघरमेंरहकरचोरी व ठगीकरकेवेश्याकोधन
लगाएकदिनवहकहींसेबहुतसारुपया व गहनाचुरालायासो
नीबेश्याकोदेकर उसकेसाथसोया जबरातकोधुन्धकारीनींद
चेतहुआतबउसवेश्याके घरवालोंनेआपसमेंसम्मतकियाकि
सदाचोरी व ठगीकरकेदूसरेकाधनलाकरहमकोदेताहैकहींप
जायगातोउसकेसाथ हमलोगभीदण्डपावेंगे औरऐसाउद्य
नेसेयहअवश्यमाराजायगा इसलियेउत्तमहै कि हमलोगइ
मारडालें उन्होंनेआपसमेंयहविचारकरकेधुन्धकारीकोफां
गाकर अपनेघरमेंलटकादिया जबफांसीलगानेसे उसकाप्रा
हींनिकला तबजलती २ लकड़ियोंसेउसकामुँहजलाकरम
ला व घरकेभीतर गड़हाखोदकर उसेगाड़दियाजबउसवेश्या
ड़ोसीपड़ोसियोंनेपूंछाकिधुन्धकारी जोतुम्हारेघरपरआताथा
दिनों दिखलाईनहींदेता क्याहुआ तबउसवेश्याने कहाकहीं
गारकरनेवास्तेगयाहै यहबातसचसमझनाचाहिये कि बेश्य
सीकीमित्रनहींहोती पहिलेद्रव्यलेकरपीछे प्राणमारतीहै
से उनकीजिह्वा अमृतरूपी रहकरपेटमें विषभराहताहै व
लेनेसेकामरखकर किसीकीप्रीतिनहीं करती जबधुन्धकारी
तरहमरकर प्रेतहुआव गरमी बर्सात व भूख प्यास व जाड़ा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुतसतानेलगा व गोकर्णनेकहींतीर्थमें किसीसेसुनाथाकिधुन्ध
ारीभाईतुम्हारामरगया व उसकीक्रियाकुछनहींहुई तबगोकर्ण
गयाजीमेंजाकरश्राद्धउसकाकरदिया वजिस २ तीर्थपरगोकर्ण
ाजानाहोता वहां २ श्राद्धधुन्धकारीकाकरदेतेथेजबतीर्थकरनेउ
रान्त गोकर्णअपनेस्थानपर आनकररात्रिको सोये तबउन्होंने
न्धकारीकोप्रेतयोनिमेंइसतरहदेखाकिकभीवह बैलकभीहाथी
कभीबकराकभीभैंसाकभीमनुष्य कभीबड़ासारूपकभीछोटारू
बनजाताथा जबगोकर्णनेउसको प्रेतजानकर मनमें धैर्य्यधरने
परान्तउससेपूंछा तू भूत याप्रेत याराक्षसकौनहोकर कहांसेआ
ाहैअपनाहालहमसे बतलातबगोकर्णकीबातसुनकरधुन्धकारी
ुतरोया परउसेबोलनेकी सामर्थ्यनहींथी जो अपनाहालकहे
बगोकर्णनेदेखा कि यहसिवायरोनेकेकुछनहींबोलता तबदया
ीराहमन्त्रपढ़कर जलकाछींटाउसपरमारा तबवहबोला मैंतेरा
ाईधुन्धकारीहूं अपनेपापसेब्रह्मतेजखोकर मैंने ऐसेभारी अध
कियेहैं कि जिनपापोंकीगिन्तीनहींहोसक्ती मुझकोबेश्यानेफां
लगाकरमारडालाथा इसलिये मुझेदानापानी कुछनहींमिल
हवाखाकरजीताहूं अबतुमआयेहो जिसतरहबनपड़े मेराउद्धा
करोयहबातसुनकरगोकर्णनेकहा मैंनेतेरेउद्धारकेवास्ते गयाजी
वसबतीर्थोंपरश्राद्धकियातिसपरतूप्रेतयोनिसेनहींछूटातबधुन्ध
ारीबोला हजारोंगयाश्राद्धकरो परमहापापकरनेसे मेरीमुक्तिन
होसक्ती कोईऐसाउपायकरो जिसमें अपनेपापोंसेछूटकर भव
गरपारउतरजाऊं यहवचनसुनकर गोकर्णनेधुन्धकारीसे कहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तू थोड़ेदिनसंतोषकर मैं तेरेउद्धारकाउपायकरूंगागोकर्णयहबा
धुन्धकारीसे कहकरसोरहा जब दूसरेदिन उसनगरके मनुष्य
कर्णसे भेंटकरनेकेवास्तेआये तबउसने यथाउचित सबकास
नकिया फिरकईदिनउपरान्त गोकर्णनेयोगीश्वर व महापुरु
पण्डितोंको अपनेस्थानपरबुलाकर सभाकरके उनलोगोंसे
कि इसतरहमेराभाई मरकरप्रेतयोनिमेंपड़ाहै उसकीमुक्तिहो
वास्तेकोईउपायबतलाइये यहबातसुनकर सबमहापुरुष व
तोंने विचारकर गोकर्णसे कहा कि तुम सूर्य्यभगवान्की पू
ध्यानकरके उनसेइसकाउपायपूंछो जैसीवहआज्ञा देवैं वैसा
यहवचनसुनकर गोकर्णनेसबपण्डित व महात्मोंको बिदा
व सूर्य्यभगवान्कामंत्रपढ़कर व स्तुतिकरके यहवरदानमां
महाराज धुन्धकारीकीजिसमेंमुक्तिहो वहउपायबतलाइये
भगवान्नेउसमंत्रकेप्रतापसे गोकर्णको दर्शनदेकरकहा कि
हपारायण श्रीमद्भागवतका धुन्धकारीकोसुनाओ तबउसक
क्तिहोवेगी यहबातसुनकरगोकर्णबहुतप्रसन्नहुआ व सबप
व योगीश्वर व महापुरुषोंकोबुलाकर गोकर्णने सप्ताहयज्ञ
भागवतका आरम्भकिया सो उसनगरके बहुतसेमनुष्य बूढ़े
के वत रुण स्त्री पुरुष वास्तेसुनने कथाके वहां आये व धुन्ध
भी एकबांसकेऊपर कि वहसातगांठकाथा बैठकरसुननेलगा
कवैष्णव व महापुरुषको श्रोताठहराकर गोकर्णजीअमृतरू
थावांचनेलगे जबपहिले दिन सन्ध्यासमय कथासुननेवाले
तबएकगांठउसबांसकी जिसपरधुन्धकारी बैठाथा फटकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ड़ाशब्दहुआउसेसुनकर सबकिसीने बड़ाआश्चर्यकिया फिर दू
रेदिनकथाहोनेसे दूसरीगांठटूटकर इसीतरहसातदिन में सातों
ांठउसबांसकी फटगई बारहोंस्कन्धकथासुननेके प्रतापसे धुन्ध
कारी प्रेतयोनिछोड़कर दिव्यरूप चतुर्भुजीमूर्त्ति श्यामसुन्दरके
मानहोगया व पीताम्बरपहिनेहुयेगोकर्णकेपासजाकरनमस्का
करकेबोलामहाराजआपनेमुझेबड़ेपापोंसेछुड़ाकरकृतार्थकिया
सेवाय श्रीमद्भागवतके कोई दूसराउपाय इनपापोंसेछुड़ाने व मु
केदेनेवाला नहींहै जो लोगसंसाररूपीकीचड़मेंफँसेहैं वहइसक
ारूपी तीर्थमेंस्नानकरनेसे पवित्रहोकर भवसागरपार उतरजा
हैं जिससमयधुन्धकारी यहगोकर्णसे कहरहाथाउसीसमयएक
मान बहुतअच्छा आकाशसेवहांपरउतरा व धुन्धकारी उसवि
ानपरचढ़कर वैकुण्ठकोचलागया यहहालदेखकर दूसरे ऋषी
वर व परिडतोंने जो उससभामेंबैठेथेगोकर्णसेपूंछामहाराजहमा
मनमेंयहसंदेहहुआहै उसे आपछुड़ादीजिये कि हमलोगबहुत
ादमियोंने यहसप्ताहपारायणसुना इसलियेउचितथा किकथा
ननेकेप्रतापसे सबकेवास्ते विमानआता व हम लोगभी वैकुण्ठ
ो चलेजाते यहक्याकारणहै कि एकमनुष्य विमानपर चढ़कर
कुण्ठमेंचलागया और सबलोगयहां बैठेरहे यहबातसुनकर गो
र्णनेकहा कथासुननेमेंइतनाभेदहै जोमनुष्य मनलगाकरकथा
नतेहैं उनकोसम्पूर्णफलप्राप्तहोताहै जो लोगकथामें बैठकरचि
अपनाबीचमोह स्त्री व पुत्र संसारीकामके लगायेरहतेहैं उनको
साफल कथासुननेकानहींमिलता एकचित्तहोकरसुननेसेमुक्ति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पाताहै यहवचनसुनतेही श्रोतालोगोंने लज्जितहोकर गोकर्ण
कहा महाराजआपदयाकरके एकसप्ताह और सुनाइये जिस
म्हारीकृपासेहमलोगभीभवसागरपारउतरजावैं गोकर्णने उन
गोंके कल्याणवास्तेश्रावणकेमहीनेसेदूसरापारायण आरम्भ
या उसकथाकोबहुतलोगोंने मनलगाकर सुना तबबहुतविमा
आकाशसेआनकरवहांउपस्थित हुये और सबश्रोतालोगगोक
कोधन्य२कहिकरबोले महाराजतुम्हारीकृपासेहमलोगोंकाजानाउ
रहुआ और कथासम्पूर्णहोनेउपरांत श्रीकृष्णजीमहाराजवैकुं
वहांपधारेव गोकर्णकोअपनेपास विमानपर बैठाकरगोलोकमें आ
गयेसबश्रोताभी इसीतरहविमानोंपरचढ़करउसीतनसेवैकुण्ठ
चलेगये जिसतरहसबअयोध्यावासी रामचंद्रजीके साथ सदेह
कुण्ठमेंगये जिसस्थानपर सूर्य वा चंद्रमा पहुँचनहींसके उस
हसंसारीमनुष्य इसभागवतकथाकेप्रतापसे पहुँचजाताहै जि
श्रीमद्भागवतसुनने और पढ़नेकामाहात्म्य व पुण्यहैतितना
यज्ञ व तप व व्रत व तीर्थ व दानादिका नहींहोता सबसे इसका
हात्म्य अधिकसमझनाचाहिये॥

छठवां अध्याय॥

नारदमुनिका सनत्कुमारजीसे श्रीमद्भागवतकी सप्ताह यज्ञविधि पूंछना और सनत्कुमारजीका कह

नारदजीने सनत्कुमारसे पूंछा हेमहाराज इससप्ताहयज्ञ
गवतपुराणसुननेकी विधि बतलाइये कि कौन २ बस्तुइसमें
हिये और किसतरहसे यहकरना होताहै सनत्कुमारजीबोले
बाततुमनेबहुतअच्छीपूंछी सुनो इससप्ताहयज्ञको बीचमहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ओं कार व कार्त्तिक व अगहनके सुननाबड़ापुण्यहै सिवायइसके
नबइच्छाहो और कोईपण्डितव्यासजी अच्छेमिलजावैं तबसुनै
शुभकर्मकरना किसीसमयमनानहीं है परजो कोई सप्ताहसुनने
का इच्छाकरै उसेचाहिये कि अच्छामुहूर्त्त पूंछकर अपनेइष्टमि
त्रोंकोकहलाभेजै कि हमारेयहांसप्ताहयज्ञहोगा आपलोगभीसु
नेवास्तेआना व जो लोग कि विरक्तहोवैं उनकोभी इसयज्ञमेंबु
लानाउचितहै व जो स्थान घरमें या बाग या तीर्थपरअच्छाहोव
कथासुननेवास्ते ठहरावै और वहजगहचांदनी व केला वन्दन
आमकार आदिसे अच्छीतरहअलंकृतकरावे जिसतरह बिवाहादिक व
यज्ञमें तैयारकराते हैं और व्यासजीके बैठनेकोबहुतअच्छा ऊंचा
सिंहासन रखवादे व वैष्णवलोगों को जो कथासुनने आवें उनके
वास्तेपृथक् २ आसनबिछवादे व प्रातसमयसेव्यासजीकथाबांच
ना आरम्भकरें व श्रोतालोगस्नान व सन्ध्या करके कथाहोनेसेप
हलेवहांआवें वचित्तलगाकरकथासुनें व पहिलेदिनमुख्यमालि
कथासुननेवालेको गणेशजीकीपूजाकरनाचाहिये जिसमें बी
चसप्ताहयज्ञके कोईविघ्न न हो व एकब्राह्मणविद्वान्को विष्णु स
हस्रनामकावरण सातदिनवास्तेदेकर बैठालदेनाउचितहै कि वह
ब्राह्मण शालग्रामकीपूजा व विष्णुसहस्रनामकापाठकरकेएक२
तुलसीदलचढ़ावे व मुख्यश्रोतापहिले दि
नपूजाव्यासजी व पोथीश्रीमद्भागवतकी सच्चेमनसेकरके यथाश
क्तिभेंटरखनेउपरांत हाथजोड़करकहै हे व्यासजीआपसाक्षात्श्री
कृष्णजीमहाराज व शुकदेवजीकारूपहैं मुझेअपनादास समझ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर श्रीमद्भागवतयज्ञ आरम्भकरके मेरीइच्छापूर्णकीजिये
व्यासजीकथाकहैं तबमनअपना संसारीकाममेंनलगावे औ
थासुननेउपरान्त परमेश्वरकाभजनभी उससभामें करना च
ये व चारघड़ी दिनरहेतक कथासप्ताहकी सुनाकरे व व्यास
कोभी उचितहै कि जल्दीनकरके अच्छीतरहसमझाकरकहें
समें सबकिसीकोसमझाईदेवे दोपहरको दोघड़ीवास्ते सप्ताह
सुननाबन्दकरके कुछदूध या फल व्यासजी व श्रोतालोगोंको
लेनाचाहिये व सातदिन जबतकसप्ताहयज्ञसम्पूर्ण न होवेतब
श्रोतालोगोंको एकबारसन्ध्यासमय भोजनकरनाचाहिये व
चित् केवलफलया दूध व घी खाकरसातरोजतकरहजावैतो
अधिकपुण्यहै निराहार न रहकरकुछखालेनाचाहिये सिवा
सके सातदिनतक ब्रह्मचर्य्यरहना व स्त्रीसेभोग न करना व
परसोना व पत्तलमेंखाना श्रोतालोगोंकोउचितहै और सात
तकदाल व सहत व बासीअन्न व बैंगन व तरबूज व मसूर व
व उड़द व पिआज व लहसुन व मूली व गाजर व कोहड़ा न
कर अधिकभोजन न करें जिसमें आलस्यआवे व जबतकस
कथासुनैं तबतक क्रोधझगड़ा या किसीकी चुगलीवनिन्दा
रनाचाहिये इससातदिनमें कोई स्त्री रजस्वलाहोजावै तोवह
नसुने व म्लेच्छादिकअशुद्धजात बीचसभाकथाकेआनकर
उनकोसुननेकीइच्छाहोय तो दूर बैठकरसुनैं व श्रोतालोगों
त्यबोलना व दयारखनाउचितहोकर बीचकथाकेशोकर
चाहिये इसतरह सप्ताहकथा सुननेसेबड़ाफलहोताहै कोई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केवलबांझहोकर या ऐसीहोवे कि एक बेरउसकालड़काहोकर
सराबालक नहो या जिसकागर्भपातहोजाताहै वह चित्तलगा
इससप्ताहयज्ञकोसुनै तो उसकेसन्तानहोवे और इसकथासुन
केप्रतापसे सबकामनोरथ पूर्णहोताहै व प्रतिदिनकथासुननेउप
न्त तुलसीदल व प्रसाद सबश्रोताओंको देनाचाहिये जबकथा
म्पूर्णहोजावे तबआठवेंरोज सप्ताहहोनेकाहोम दशमस्कन्धके
नोकयागायत्रीमन्त्रसे आहुतिदेकरकरे व अच्छे२ पदार्थब्राह्म
ोंको भोजनकरावै व अपनेसामर्थ्यभर द्रव्य व वस्त्र व भूषण व
ऊ व पृथ्वी व बर्त्तनआदिकव्यासजीकोदेकरसच्चेमनसे पूजाकर
उनकोबिदाकरनाचाहिये इसकथाके सुननेसे अर्थ धर्म काम
क्ष चारोंपदार्थ मिलतेहैं इतनीबातकहकर सनत्कुमारजीबोले
नारदमुनि तुमकोसुननेकीइच्छाहो तो हमदूसरापारायणकहैं
रदमुनिनेकहा धन्यमेरेभाग्य इससेक्याउत्तमहै जबसनत्कुमा
नेदूसरापारायणआरम्भकिया औरवहांसबऋषीश्वरआनकरबै
तबशुकदेवजीमहाराजभी तीर्थयात्राकरतेहुये वहांपरआयेसो
नत्कुमारआदिकने शुकदेवजीकोदेखकर बड़ेआदरभावसे आ
नपरबैठाला उससमयशुकदेवजी सप्ताहयज्ञकीतैयारी देखकर
बश्रोताओंसेबोले तुमलोगइसकथाको चित्तलगाकरसुनो यह
थावेदरूपीवृक्षकाफलहै संसारमेंदूसरेफल जो होते हैं उनमेंगु
ली व छिलकारहकरइसफलमें अमृतरूपीरसभराहैइसलियेय
अमृत बारम्बारपीनाचाहिये इसकथाको श्रीनारायणजीनेब्रह्मा
कहा और ब्रह्माने नारदमुनिकोबतलाया नारदजीने वेदव्यास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमारेपितासेकहा व व्यासजीने मुझेपढ़ाया और मैंने राजा
क्षितकोसुनाया सो यहश्रीमद्भागवत अठारहों पुराणमें उत्त
कर साधुवैष्णवको परमधनयहीहै स्वर्गलोकमेंतपस्वियों व
लोकमें ब्रह्मा व कैलासमें महादेव व वैकुण्ठमें लक्ष्मीजीइस
को गावतीहैं जिससमयशुकदेवजी श्रोतालोगोंसे यहबातकह
थे उसीसमयवैकुण्ठनाथ ब्रह्मा व वरुण व कुबेरदेवता प्रह्लादा
भक्तोंकोसाथलिये सप्ताहयज्ञमेंआये उनको देखकर जितने
उससभामेंबैठेथे सबोंनेउठकरदण्डवत् वजयजयकारकिया
नारदमुनिमारेहर्षकेनाचनेऔरगानेऔर प्रह्लादजीकरतालव
वभक्तमँजीराऔर राजाइन्द्रमृदंगबजानेलगे उससमयनारा
जी त्रिलोकीनाथने सबकिसीको अपनेप्रेममेंलीनदेखकर उ
कहा जिनकेमनमें जो इच्छाहो सो वरदानमांगो तबनारदा
हाथजोड़करबोले आपकेदर्शन हमकोप्राप्तहुये इससे अधिक
नबस्तुहै जो मांगें अपनेचरणोंकीभक्ति हमलोगोंकोदीजिये
मसुन्दर यहीवरदानसबकोदेकर वहांसेअन्तर्द्धानहोगये औ
साहयज्ञदूसरा सम्पूर्णहुआ इतनी कथासुनकर शौनकादिक
ट्ठासिहज़ारऋषीश्वरोंने सूतजीसेपूंछा कि शुकदेवमहाराज
हकथा राजापरीक्षितकोकबसुनाई व गोकर्ण औरसनत्कुमार
नें कबकहीथी इसकाहालबतलाइये सूतपौराणिकनेकहा जब
कृष्णजीमहाराज द्वारकापुरीसेवैकुण्ठकोपधारेउसके तीनमो
उपरान्तभादोंमहीना नवमीकेदिन शुकदेवमहाराजने यहक
राजापरीक्षितको सुनानाआरम्भकिया और सातदिनमेंवह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

। उसकेदोसौवर्षपीछे गोकर्णने सप्ताहकथाकही
नहींकरनेसकाछःबर्षबीते सनत्कुमारजीने नारदकोसुनायासो
। हमनेतुमसेवर्णनकिया यहअमृतरूपीकथा आदर व प्रेम
रके जोसुनै व पढ़ै उसको सब फल मिलतेहैं ॥

इतिश्रीगोकर्णमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहिला स्कन्ध

श्रीपरब्रह्मपरमेश्वरके अवतारधारणकरनेका व वेदव्यासजी नारदमुनिसे चारश्लोकसुनकर पोथी श्रीमद्भागवत बना और शृंगीऋषिकरके राजापरीक्षितको शापमिलना जि ससे कि इसअमृतरूपी कथाकाजगत्में प्रगटहोना॥

क० काशीको निवासी मक्खनलालहौं गोपालजीको लीलाव्यासबानीको जबानी कहा व विद्याको बिचारनाहिं कथाको शुमारनाहिं उर्दूजबानी कहत हिये लाज लावतहौं। जाकीकृपापाके चढ़ैंपंगुल और गूंगेवेदभाषैं सोईकृपा नित्यध्यावतहौं। कहैं गुणवन्त हरिनाम टेढ़ोसूधोभलो तासों गुणनेकही सराहतहौं॥

दो० गंग यमुन गोदावरी सिन्धु सरस्वति संग। सकल तीर्थ तहँ बसतहैं जहँ हरिकथा प्रसंग॥
नर नारायण गिरा अरु व्यासमुनिहिं परणाम। आशामेरीपूजिहैं सब गुण पूरण धाम॥
गूंग वेदको उच्चरैं पंगुलांघि गिरि जांय। जासुकृपावन्दौं तिन्हैं माधवहोयँ सहाय॥
गुरुपदपंकज हृदयधरि सप्तऋषिन शिरनाय। कहौं कथा श्रीभागवत यदुपतिहोयँ सहाय॥
गुणावाद गोविन्दके काटत सब जञ्जाल। याते भाषा भागवत बिरचत माखनलाल॥

पहिलाअध्याय॥

श्रीनारायणजी महाराजकी स्तुतिवर्णन करना व शौनकादिकों करके श्रीमद्भागवत कथा पूंछना व सूतजी करके इस अमृतरूपी कथाका प्रारम्भ करना॥

सूतपौराणिक शिष्यवेदव्यासने कथाश्रीमद्भागवत व्या केमुखसे जिससमयवहशुकदेव अपनेपुत्रकोपढ़ातेथे और वर्जीने राजापरीक्षितसेकहीथी सुनाथा उसकेथोड़ेदिनउपरा तपौराणिक नैमिषारण्यतीर्थमें जहांशौनकादिक अट्ठासी ऋषीश्वर इकट्ठेहुयेथे गये और कारण इकट्ठेहोने उन रोंका वहांपरयहथा कि उसजगहसुदर्शनचक्र भगवान्का इसलिये वहस्थान बहुतपवित्ररहकर कलियुगअपनाप्रवेश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हींकरनेसकाथा सो उनऋषीश्वरोंने सूतपौराणिकसेकहा आप
वेदव्यासजीकेपासरहकर सबपुराणपढ़े व सुनेहैं सो कृपाकरके
मकोभीसुनावो जिसमेंउसकापुण्यहो तबसूतजीनेउनऋषीश्व
ंसेकहा जो आदि निरंकार चौदहोंभुवनरचकर सबजीवोंकापा
ननकरतेहैं और महाप्रलयकेसमय चैतन्यआत्मा सबजीवों का
कर उन्हीं त्रिभुवनपतिकेज्योतिमें समाजाताहै और वहपरब्रह्म
अपनेतेजसे प्रकाशितरहकर ब्रह्माऔर महादेव आदिकसबदेवता
ओंकोज्ञानदेतेहैं औरजिनकीमायामेंजगत्कासबव्यवहारहोता
उन्हीं आदिज्योतिकाध्यानधरकरव्यासजीकहतेहैं किसंसारी
यवहारसबझूंठाहोकर परमेश्वरकीमाया ऐसीबलवान् है जिस
को कोईभुलावनेनहींसक्ता और श्रीमद्भागवतमें ऐसापरमधर्मव
र्णनकियाहै कि जिसमेंकुछकपट व लोभनरहकर ऐसेनिर्गुणधर्म
लेखेहैं जिसकेकरनेसे तीनोंदुःख और पापसंसारीमनुष्यका जो
वता और नवग्रह और शत्रु और मनकेसंकल्प विकल्पसेहोता
छूटकरनहींरहता दूसरे युगोंमें यज्ञ और तपध्यान और पूजा
हुतदिन करनेमें बड़ेपरिश्रमसे श्यामसुन्दरकीप्रीति उत्पन्न हो
थीकलियुगमें केवलइसअमृतरूपीकथापढ़ने और सुननेसे तु
न्तपरमेश्वरकेचरणोंकाबास हृदयमेंहोताहै इसलियेश्रीमद्भाग
तकोसब वेदोंकासारकल्पवृक्षकेसमान समझकर शुकदेवजीने
हकथा जो राजापरीक्षितकोसुनाईथी वहीअमृतरूपीफल उस
क्षकाशुकदेवजी महाराजकेमुखसे टपककरसंसारमें प्रकटहुआ
सो सूतपौराणिक शौनकादि ऋषीश्वर और व्यासजी अपने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चेलोंसे कहतेहैं कि तुमलोग इसअमृतरूपी फलकोजिसमें
छिलका व गुठलीनहींहै बारम्बारकानोंकेराह पियाकरो जि
रहसंसारमें मीठेफलको सुवाकाटकर खालेताहै उसीतरह शु
वजीनेइसअमृतरूपीकथाको जोवैकुण्ठका सुखदेनेवालीहै
मीठीसमझकरखालिया और अपनेमुखसे निकालकर जग
प्रकटकिया यहबातसुनकर एकदिनशौनकादिक ऋषीश्वरों
बप्रातसमय स्नान व पूजा करचुके तबसूतजीको बड़ेआदर
वसे बीचमें बैठालकरकहा आपसबवेद और पुराणजानतेहैं
लिये हमेंअपनाचेलासमझकर जो पुराण सबवेद और शास्त्र
तत्त्व संसारीजीवोंकेभवसागरपारउतरने वास्तेउत्तमहो उसे
ने मुखारविंदसे वर्णनकीजिये जिसेसुनकरजल्दी हमलोगोंको
क्लिहो व थोड़ा परिश्रम करनेसे फल अधिकप्राप्तहो और यहबत
इये कि जिनपरब्रह्मपरमेश्वरके नामलेनेसे संसारीजीवोंकाउ
होजाताहै उन्होंनेकौनकामकरनेवास्ते मर्त्यलोकमें देवकी
गर्भसे श्रीकृष्ण अवतारलिया और सगुणरूपधरकर बलराम
केसाथ जगत्मेंकौनलीलाकीथी और जबकलियुगके आ
श्यामसुन्दर वैकुण्ठकोपधारे तबधर्म किसकेशरणरहा और
से सौंपगयेथे उसकाहाल वर्णनकीजिये परब्रह्मपरमेश्वरकी
ला और कथासुननेसे आदमीचौरासीलाख योनिमें जन्म
पाता और आवागमनसे छूटकर भवसागर पारउतरजाताहै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरा अध्याय॥

शुकदेवजीकाबनमेंतप करनेकेवास्ते चलेजाना व फिर नारदमुनिकेउपदेशसे अपनेस्थानपरआना॥

सूतजीने जबयहप्रश्न शौनकादिक ऋषीश्वरोंकासुना तबम
में बहुतप्रसन्नहोकर पहिलेशुकदेवजीके चरणोंकाध्यानकिया
जनके सत्संगसेउन्होंने श्रीमद्भागवतसुनाथा फिर वेदव्यासजी
अपनेगुरूके पदकमलकोहृदयमेंरखकर श्यामसुन्दर चतुर्भुजी
र्त्तिको दण्डवत्करके शौनकादिक ऋषीश्वरोंसेकहा तुमनेबहु
अच्छीबातपूंछी हमतुमकोश्रीमद्भागवतकथा जिसमेंसबलीला
ारायणजीकी लिखीहैं सुनातेहैं चित्तलगाकरसुनो जिससमय
शुकदेवजी ने माताकेपेटसेजन्मलिया उसीसमय मुरलीमनोहर
का तपकरनेवास्ते नारिवारसमेत घरसेनिकलकर बनकारास्ता
लिया व उन्होंनेमनमेंविचारा कि यहांरहनेसेहमारा बिवाह सब
लोग करदेंगे इसलियेअभीसे बनमेंजाकर हरिभजनकरनाउचि
हे जिससेसंसारीमाया न लपटै जबव्यासजीने यहहाल पुत्रका
देखा तबप्रेमवशहोकर उसेफेरलानेवास्तेपीछेदौड़े और शुकदेव
जीको बहुतसापुकारकरकहा हेबेटाखड़ेहोकर हमारीबातसुनलो
परशुकदेवजीमहाराज इसतरहसंसारसे विरक्तहोकर हरिचरणों
में प्रीतिरखतेथे कि उन्होंने खड़ेहोकरव्यासजीको उत्तरदेनाउचि
तनजानकर मनमेंकहा देखोहमारेपिताको बुढ़ाईआवनेपर भी
संसारीमायालगीहै ऐसाविचारकर शुकदेवजीने बनान्तरीवृक्षों
में प्रवेशकरकेकहा कोई किसीकापुत्र व पिता न होकरसंसारकी
गतिसदासेइसीतरहपरचलीआतीहै औरयहशरीरबारम्बारआवा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गमनमेंफँसारहकर जीवआत्मा कभीनहींमरता यहबातसु
व्यासजीकोसंतोषहुआ जिससमयशुकदेवजी बनकोचलेज
उसीसमयराहमेंएकतालावपरदेवताओंकीस्त्रियांनंगीहोकर
तीथीं उन्होंने शुकदेवजीकोदेखकर कुछलज्जानहीं किया
तरह नंगीखड़ीरहीं जबपीछेसे व्यासजीवृद्धमनुष्य वहांपर
तबउनस्त्रियों ने लज्जितहोकर अपना २ वस्त्रपहिनलिया य
लदेखकर व्यासजीने मनमेंविचारा देखोशुकदेवहमारेबेटाक
नस्त्रियोंनेदेखकर परदानहींकिया और हमबूढ़ेमनुष्यको कि
खोंसेकमदिखलाईदेताहै देखकरइन्होंने कपड़ापहिनलिया
काक्याभेदहै उनस्त्रियोंनेदिव्यदृष्टिसेवेदव्यासकेमनका हाल
नकरकहा हेव्यासजीआपको स्त्री व पुरुषकाज्ञानहै और शुक
महाराजपरमहंसहोकर कुछस्त्री व पुरुषमेंभेदनहींजानते इ
ये हमलोगोंने उनसेकुछलज्जा न करकेतुम्हेंदेखकरकपड़ेप
लिये यहबातसुनकर व्यासजीकेमनका सन्देहमिटगया शुक
महाराज ऐसेतरण व तारणमहात्माहैं शौनकादिकऋषीश्व
यहस्तुति उनकीसुनकरमनमेंकहा देखोसूतपौराणिकहमस
ढ़े २ ऋषीश्वरों व मुनीश्वरोंकी कुछउपमा न कहकरशुकदे
छोटेबालककी इतनीबड़ाई करते हैं जब यहबातसमझकर
श्वरोंकामुखमलीनहोगया तबसूतपौराणिकउनके मनकाह
अपनेज्ञानसे जानकरबोले कि शुकदेव जीवास्ते भवसागरप
तारने ऋषीश्वरों व मुनीश्वरोंके यहभागवतकथाजगतमेंप्रक
या इसलिये वहयोगी और मुनिकेभीगुरु हैं जबयहवचनसु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबकोबोधहुआतबसूतजीनेऋषीश्वरोंसेकहा कि कदाचित् कोई
इसबातकासन्देहकरैकिजबशुकदेवजीजन्मतेहीपरमेश्वरकातप
करनेवास्ते बनमेंचलेगयेथे तो उन्होंनेभागवतपुराण व्यासजीसे
कैसतरहपढ़ा उसकाउत्तरयहहै कि जबशुकदेवजीने ऋषीश्वर
और मुनीश्वरों से ज्ञानचर्चाकिया तबउनको यहहालमालूमहु
आ कि जिसकेसाधनकरनेसे हरिचरणोंमेंप्रीतिहो वहीपरमधर्महै
इसलियेशुकदेवने नारदमुनिसे मिलकरपूंछा महाराजहमकोको
ई ऐसाज्ञानबतलाइये जिसमेंबीचचरण परमेश्वरके हमारा मन
नगै तबनारदजीबोले इसबातकाहाल तुम्हारेपिताअच्छाजानते
हैं हमनेउनकोबतलादियाहै यहबातसुनकर शुकदेवजीबनसे अ
पनेपिताकेपास चलेआये और उनकेचरणोंपरगिरकरबोलेआप
मुझे कोईऐसीविद्यापढ़ाइये जिसमेंहरिचरणोंकीप्रीतिहो तबव्या
सजीनेकहा सिवायपढ़नेभागवत और कोईदूसराउपायइसकान
हींहैयहबातसुनकरशुकदेवजीने भागवतपुराणपढ़नाआरम्भकि
या इतनीकथासुनाकर सूतजीबोले जबशुकदेवजी भागवतकथा
वेदव्यास हमारेगुरूसेपढ़तेथे तबमैं भी वहांथा जो शुकदेवमहा
विरक्तरहकरएकक्षणकहीं २ ठहरतेथे वहभागवतपढ़नेकेलोभसे
बहुतदिनतकव्यासजीकी सेवामेंरहे व उन्होंनेभागवतकोबड़ेप्रेम
सेपढ़ा औरशुकदेवजीकोसंगपरमहंस व ऋषीश्वरोंकाबहुतप्यारा
होकर उनकेपासकुछद्रव्यनहींथा जो देनेकेलोभसेकिसीकोअप
नेपासबुलातेइसलियेउन्होंने भागवतपढ़ाकिइसअमृतरूपीकथा
सुननेकीइच्छासे योगीश्वर और मुनीश्वर और ऋषीश्वरलोगह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मारेपासरहैंगेऔर इसीकथाकासदावर्त्तमैंदूंगा इतनीकथासु
रसूतजीबोले हे ऋषीश्वरो इसकथाकेसुननेसे निष्कामभक्ति
होती है व निष्कपटभक्तिहोनेसे लोग विरक्तऔर ज्ञानीहोक
क्तपदवीपर पहुंचते हैं इसलियेमनुष्यकोचाहिये जो कामय
तपपूजा और व्रतशुभकर्मकर उसमेंकुछचाहना न रक्खे तो
केवास्ते यहांसुखहोकर मरने उपरान्तपरलोकबनता है व कि
बातकीकामनारखनेसे यहजीव आवागमनमें फँसारहकरभ
गरपारनहींउतरता और भक्तिकीबराबर दूसराधर्मनहींहै यज्ञ
रतप व दान व तीर्थ दूसराधर्म जो मनुष्यलोगकरतेहैं उसधर्म
नेमें बड़ेपरिश्रमसे बीचचरणपरमेश्वरके प्रेमउत्पन्नहोताहै
लिये इतनादुःखउठाना उचितनहोकर मनुष्यकोचाहिये कि
च्चे मनसेयहअमृतरूपीकथासुनै और मनअपनामायामोह
पुत्र झूंठेव्यवहारसे विरक्तरखकर नारायणजीके चरणोंमें ध्य
औरप्रीतिलगावैं जोकोईमनअपना उसज्योतिस्वरूपकेचरण
लगाकरपरमेश्वरकीलीलाऔरकथासुनताहै उसकेहृदयमेंक
और क्रोध मोह व लोभका जो मैल जमा है वहछूटकरमनउस
इसतरहशुद्धहोजाताहै जिसतरहसिकलकरनेसे लोहे में मुर्च
हींरहता तबउसकेहृदयमें हरिचरणोंकाबासहोजाताहै इसलि
मनुष्यको अपनीमुक्तिबनानेवास्ते पहिलेयहकथा सुननेका
भ्यासकरनाचाहिये परमेश्वरकीबड़ीकृपाहोनेसे मनुष्यकाम
नकीकथा व कीर्त्तनमेंलगताहै बिनाभक्तिकियेकीर्त्तन व कथा
मेश्वरकी सुनेमनशुद्धनहींहोता और मनुष्यकास्वभावभी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ी व तामसी व सात्विकीहोताहै देवताकीपूजाभी तीनतरहपरहो
ीहै राजसी व तामसी व सात्विकी व शास्त्रमेंतामसको काठसेऔर
ाजसकोधुवांसे व सात्विकको आगसेदृष्टान्त देतेहैं जोअर्थआगसे
निकलता है वहबातकाठ व धूमसेनहींप्राप्तहोती इसलिये सात्वि
ीभक्ति व पूजा करनेवाले मुक्तिपदवीपरपहुंचतेहैं व संसारमेंजि
ना धर्म यज्ञ व तप व व्रतादिकका है वहसबइसतरह परमेश्वरके
रूपमेंगतहोजातेहैं जिसतरह बरसातमें नदीनालेकापानीबहकर
समुद्रकेबीच मिलजाताहै ॥

तीसरा अध्याय ॥

चहालअवतारोंके जोजोअवतारश्रीपरब्रह्मपरमेश्वरने वास्तेसुखदेने हरिभक्तवमारनेदैत्योंकेधारणकियेहैं॥

सूतजीने शौनकादि ऋषीश्वरोंसेकहा कि आदि निरंकार ज
गत्में अवतारधारणकरनेवाले पुरुषकारूपहै सबकेपहिलेवहीथे
और वहीमध्यमेंरहकर महाप्रलयहोनेउपरान्तभी स्थिररहेंगेवह
अपनेतेजसे आपप्रकाशितहैं और सबतेजको उसीज्योतिकी पर
छाहींसमझनाचाहिये जबमहाप्रलयहोनेउपरान्त उसीआदिनि
रंकारज्योति नारायणजीको संसाररचनेकीइच्छाहोतीहै तबवह
अपनीमायासंयुक्तपुरुषका अवतारलेकर शेषनागकीछातीपरश
यनकरतेहैं उन्हींको विराट्रूपकहाजाताहै जिनकेहज़ाराशिर ह
ज़ारनाक हज़ारकान हज़ारभुजा और हज़ारचरणहोतेहैं उनकी
नाभीसे कमलकाफूलनिकलता है और उसफूलसे ब्रह्माजी उत्प
न्नहोकर चौदहोंलोककी रचनाकरते हैं उन्हींको सबअवतारोंका
मूलसमझनाचाहिये औरउसपरब्रह्मपरमेश्वरके अवतारोंकाहाल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसतरहपरहै पहिलाअवतार सनकसनन्दन सनातनसनत्कु
का धारणकरिकै सदापांचवर्षकीअवस्था ब्रह्मचारीरहे दूसरा
तारबाराहजीकालेकर पातालसेपृथ्वीकोलाये तीसराअवता
ज्ञपुरुषकाचतुर्भुजी धारणकरिकै सबराजोंकोयज्ञकरनेकी
तलाकरकृतार्थकिया चौथाहयग्रीवअवतार शरीरआदमीव
घोड़ेकाधारणकरिकै ब्रह्माकोवेदपढ़ाया पांचवांअवतार नर
यणकालेकर बदरीकेदारमें वास्तेराहदिखलाने तपस्याकेसं
जीवोंको तपकरतेहैं छठवांअवतार कपिलदेवमुनिकाधरक
ख्ययोगज्ञान अपनीमाताको उपदेशकिया सातवांअवतार
त्रेयजीका अत्रिमुनिसेहुआ जिसनेराजाअलर्क और प्रह्ल
ककोवेदान्तपढ़ाया आठवांअवतार ऋषभदेवजीका चित्र
नामइन्द्रकीकन्यासे प्रकटहोकर जड़चर्चादिखलाया और
के बेटेजयनदेवने सरावगियोंकाधर्म संसारमेंफैलाया नवांअ
रराजापृथुकाबेणुकेशरीरमथनेसे उत्पन्नहुआ जिसनेगऊ
थ्वीदुहकर सबऔषधी व अन्नादिक जो उसनेअपनेभीतर
याथा बाहरनिकाला दशवांमत्स्यअवतारलेकर राजासत्यव्र
सप्तऋषियोंसमेत नौकापरबैठालके ज्ञानउपदेशकिया और
अपनीमायाकाकौतुक दिखलाया ग्यारहवांकच्छपअवता
रसमुद्रमथनेकेसमय मन्दराचलपर्वतअपनी पीठपरलिया
वांअवतार धन्वन्तरिकाएककलशाअमृतकाहाथमेंलियेस
बाहरनिकले और तेरहवांअवतार मोहनीमूर्त्तिकाधरकरदैत
अपनीसुन्दरताईपर मोहितकिया और अमृतकाकलशाउ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर वहसबअमृत देवतोंको पिलाया और चौदहवांअवतार नृ
सिंहजीकालेकर हिरण्यकशिपुदैत्य को मारके प्रह्लाद अपने
भक्तकीरक्षाकी पन्द्रहवां बामनअवतारधारणकरके तीनपग पृ
थीराजाबलिसे दानलेकर देवतोंकोदी मांगनेसेमनुष्यछोटा हो
जाताहै इसीवास्तेपरमेश्वरने भी मांगनेकेसमय अपनाछोटारू
बनायाथा सोलहवांअवतारहंसकालेकर सनत्कुमारको ज्ञानउ
देशकरके उनकागर्बतोड़ा सत्रहवांअवतार नारदजीकालेकर पं
चरात्र वेदबनाया जिसमें सबवैष्णवधर्म लिखाहै अठारहवां अ
वतार हरिनामलेकर गजेन्द्रको ग्राहकेमुखसेछुड़ाया उन्नीसवां
अवतारपरशुरामजीका लेकर इक्कीसबार सबक्षत्रीराजाओंकोमा
रा और पृथ्वी उनसेछीनकर ब्राह्मणोंकोदानदी और बीसवां राम
चन्द्रअवतार धारणकरके समुद्रकाअभिमान तोड़कर रावणको
मारा इक्कीसवां वेदव्यासअवतारलेकर सबवेदोंका भागकरके अ
ठारहपुराण और महाभारत बनाया बाईसवां श्रीकृष्णअवतार
धारणकरके कंस और कालयवन और जरासन्धआदिक अधर्मी
राजाओंकोमारा और पृथ्वीकाबोझउतारकर वास्तेभवसागरपार
उतरने कलियुगबासियोंको जगत्में लीलाकी तेईसवां बौद्ध अव
तारलेनेकायहकारणहै कि जबदैत्योंने शुक्रअपनेपुरोहितसेपूंछा
कि देवतासदा इन्द्रासनका राज्यकरतेहैं कोई ऐसाउपायबताओ
जिसमेंहमाराराज्य सर्वदाबनारहै शुक्रजीनेकहा यज्ञकरनेसे देव
तोंकाराज्यरहताहैसोतुमलोगभीयज्ञकरोजबदैत्योंनेशुक्राचार्य्य
के उपदेशसे वास्तेमिलने राज्यदेवलोकके यज्ञकरनाआरम्भकि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

या तबदेवताघबराकर नारायणजीकेपास चलेगये व बहुत
करनेकेउपरान्त हाथजोड़करबोले हे वैकुण्ठनाथदैत्यलोग
तरह हमसेबलवान्हैं जब यज्ञकरनेसेउनको और अधिकबल
गा तबहमलोग उनकोकिसीतरहनहीं जीतसकेंगे जिसमें
वास्तेभलाहो वहउपाय आपकीजिये यहवचन सुनतेही
रुषभगवान्ने बौद्धअवतारधरकर सेवड़ेकारूप बनालिया व
कपड़ा पहिरनेके उपरान्त चौंरीरस्सीको हाथमेंलेकरजहां
लोग यज्ञकरतेथे वहांपरगये दैत्योंनेउनको देखतेही सम्मान
के पूंछा तुम्हारेहाथमें कौनबस्तुहै बौद्धजीनेकहा जिसजगह
ष्यबैठताहै वहांछोटे २ जीव उसकेनीचेदबकरमरजातेहैं सो
चौंरीसे जगहझाड़कर बैठनाचाहिये फिर दैत्योंनेपूंछा तुम्हारे
पड़ाकिसवास्तेमैलाहै बौद्धजीनेकहा कपड़ाधोनेसेभी बहुत
मरते हैं जबइसतरहकी बातैंसुननेसे दैत्योंकोमोहप्राप्तहोकर
उनकायज्ञकरनेसेफिरगया तबउन्होंनेआपसमेंकहाकियज्ञ
से जीवहिंसाहोगी तो यज्ञकरनाहमारानिष्फलहोकर उसमें
अधिकपापहोगा यहबातसमझकर दैत्योंनेपरमेश्वरकी इच्छ
यज्ञकरनाबन्दकिया तबउनकेधर्मकाबल जातारहा और दे
लोग उनसेप्रबलहुये और कलियुगकेअंतमेंचौबीसवां कल्कि
वतारलेकर धर्मकीवृद्धि व म्लेच्छ और अधर्मियोंका नाश
सोइनचौबीसोंअवतारमें रामचन्द्र और श्रीकृष्णजीका अव
पूर्णकलासेहै और संसारीजीवोंको उद्धारकरनेवास्ते यहसब
तारनारायणजीने धारणकिये हैं और जितनेसंसारमें ऋषी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और मुनि और देवता व मनुष्यजीवधारी व जड़ व चैतन्यहैंसबमें
न्हीं परब्रह्मकाप्रकाशसमझनाचाहिये इसलियेकोई उनकेअव
रोंकी गिनतीनहींकरसक्ता और परमेश्वरअपनीमायासेजगत्
उत्पन्नकरतेहैं परन्तु उसकेवशनहींहोते इसलियेसंसारी जी
के दुःखीहोनेसे कुछदुःख उनकोनहीं पहुंचता और नारायण
कीलीला और नाम व चरित्रको कोईनहींजानसक्ता वहीमनु
उनकोकुछ पहिंचानताहै जो परमेश्वरकेभजनमेंलीनरहकर
केसिवाय दूसरेकाभरोसानहींरखता उसीकोपरमेश्वरकेजान
रास्ते इच्छारहकर संसारीमोहछोड़नेसे परमेश्वरका प्रकाशश
में आताहै और बीचश्रीमद्भागवतके सबवेदोंकोसार और पर
श्वरकीलीलाव्यासजीने वास्तेभवसागरपारउतरने संसारी जी
के वर्णनकियाहै और शुकदेवजी अपनेपुत्रको हरद्वारमें गंगा
नारे ब्राह्मण और ऋषीश्वरोंकेबीचमें बैठकरपढ़ायाथा व जब
कृष्णजीमहाराज द्वारकासेवैकुण्ठकोपधारे उससमयधर्मका
डूबकर संसारसेसबशुभकर्म जातारहा तबव्यासजीनेइसभा
तकोबनाकर धर्मरूपीसूर्यजगत्मेंप्रकटकिया और जिससम
व्यासजीनेयह कथा शुकदेवजीकोपढ़ायाथा उससमयवहां
भीथे सोगुरुकीदया व कृपासेहमकोभी यहअमृतरूपीकथा
होगई जो तुम लोगोंकोसुनाते हैं ॥

चौथा अध्याय ॥

व्यासजीका महाभारत और सत्रहपुराण सबवेदोंका तत्त्व बनाना ॥

शौनकादिकऋषीश्वरोंने सूतजीसेकहा आपकीआयुष्परमे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वर बहुतबड़ीकरैं अवतारोंकेहालसुननेसे मनहमलोगों क
तप्रसन्नहुआ अबचाहते हैं कि जो भागवतव्यासजीसे आ
नाथा और उसमेंसबलीला और महिमाश्यामसुन्दरकीलि
वहहमकोसुनाओ और कौनसेयुगमेंकिसस्थानपर शुकदे
वहकथा राजापरीक्षितकोसुनाईथी उसकाहालकहो किस
कि राजापरीक्षितकोसांपकेकाटनेकाडरथा वहमलोगकाल
संसारसेजिसमें मृत्युकीअवधिनहींहोतीडरतेहैं औरएकबा
मकोबड़ासन्देहहै जो शुकदेवजीइतनेविरक्तरहकर एकक्षण
नहींठहरतेथे वहकिसतरहसातदिन राजापरीक्षितकेपासक
नानेकेवास्तेरहे और शुकदेवमहाराज कोपीनपहिने विभू
गाये अवधूतबनेरहतेथे उनकोराजापरीक्षितने किसतरह
नाकियहीशुकदेवहैं यहबातसुनकर सूतपौराणिकनेकहा
परकेअन्तमें वेदव्यासहमारेगुरूनारायणरूपने यहविचा
राशरमुनि और सत्यवतीसेअवतारलिया कि सतयुगमें अ
मनुष्यकी लाखवर्षकी व त्रेतामेंदशहज़ार व द्वापरमेंहजा
करजबतकआयुर्बलपूर्णनहींहोतीथी तबतकवहनहींमरत
कलियुगमें आयुर्बलमनुष्यकी एकसौबीसवर्ष कीहोकर
ग पापकरनेसे उसकेभीतरमरजावेंगे दूसरेयुगोंमें मनुष्यल
युर्बलअपनी बीचवेदपढ़ने और यज्ञ और तपकरनेमेंबित
दीर्घायुहोनेऔरशुभकर्मकरनेसेवहकामअच्छीतरहसम्पू
रउनकोमुक्तिपदार्थमिलताथा और कलियुगबासी थोड़ी
होनेसे तपकरने और वेदपढ़नेनहींसके और इतनाधनभी

ते जो
नयुग
रते व
रिभज
वयोंके
वतार
उपरा
खो क
ते जि
हैं वह
ष्णा
र्वेद
संसा
वेदप
कर शू
वेदका
जिनक
आदि
वाले
और
वाले
मेरेपि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ते जो यज्ञ व दानादिककरके भवसागरपारउतरजावें और क
नयुगबासीजीव संसारीसुखमें डूबेरहकर परलोकका शोचनहीं
रते व स्त्री और द्रव्यकेमोहसे मनुष्यमुक्तिपदवी नपाकरकेवल
रिभजनसे उद्धारहोताहै इसलियेपरब्रह्मपरमेश्वरने कलियुगबा
यींके सुखपाने और भवसागरपारउतरनेकेवास्ते वेदव्यास का
वतारलिया सो एकदिनव्यासजीने सरस्वतीकिनारे स्नानकर
उपरान्तअकेले बीचध्यान परमेश्वरकेबैठकरविचारकिया कि
खो कलियुगबासी प्रारब्धहीन व मूर्खहोकर ऐसीसंगतिनहींक
ते जिसमेंज्ञानीहोकर परमेश्वरकोपहिंचानेंजोबातज्ञानकीसुन
हैं वहभीधारणानहींकरते और सदाआलस्यमेंभरेरहकरसंसारी
ष्णानहींछोड़ते यहबातविचारकरहमारेगुरूने ऋग्वेद और य
जुर्वेद और सामऔर अथर्वणवेद इसइच्छासेबनाया कि कदाचि
संसारीमनुष्य थोड़ीआयुषहोनेसे सबवेद न पढ़सकैंतोकेवलए
कवेदपढ़कर भवसागरपार उतरजावें जबव्यासजीनेचारोंवेदबना
कर शूद्र व स्त्रीकोवेदपढ़ना उचितनहींजाना तबउन्होंनेउनचारों
वेदकासारनिकालकरमहाभारत और सत्रहपुराण निर्माणकिये
जिनकापढ़ना और समझना सहजहोकर सबछोटेबड़ेशूद्र व स्त्री
आदि उसके सुननेसेभवसागरपार उतरजावें सो ऋग्वेदके बांचने
वाले पैलऋषीश्वर और सामवेदके पढ़नेवाले जैमिनि ऋषीश्वर
और यजुर्वेदकेबांचनेवाले वैशम्पायन और अथर्वण वेदके पढ़ने
वाले अंगिराऋषीश्वरहुये और महाभारतपुराणको रोमहर्षण
मेरेपितानेपढाहै और इनऋषीश्वरोंनेअपने२ चेलोंको जो वेदप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ढ़ायाथा वहीवेदकीशाखासमझनाचाहिये महाभारतपुरा
लाखश्लोककापढ़ना और सुननाबड़ापुण्यहै सोमहाभार
सत्रहपुराणबनानेपरभी व्यासजीकेमनकोबोधनहोकर ऐ
चारमेंआताथा कि अभीहमको और बनानाचाहिये पर को
त पक्की नहींठहरतीथी कि अबहमकौनसीकथाबनावें कि जि
हमारेमनको धीर्य्यहो इसीचिन्तामेंव्यासजी सरस्वतीके कि
बैठेहुयेविचाररहेथे कि नारदजी बीनबजाते और हरिगुणग
येवहांआयेसोव्यासजीने नारदमुनिकोबड़ेआदरभावसेबैठा

पांचवां अध्याय॥

नारदमुनिका वेदव्यासको यहबात समझाना कि तुम निष्केवल हरिचरित्र का एक पुराण बनाओ और व्यासजी से अपने पिछले जन्मका हाल कहना॥

नारदमुनिने व्यासजीको चिन्तामेंदेखकरकहा इससमय
बड़े शोचमेंदिखाईदेतेहोजिसतरह किसीमनुष्यको कोई क
कार्य्य आनपड़े और वहबातउससेनहोसके तोहारमानकरउस
चिन्ताकरैसोतुमनेएकवेदकेचारबेदबनाकर महाभारत बसत्र
राणतैयारकिये तिसपरभीतुम्हारा बोधनहींहुआ यहवचनसु
खवेदव्यासबहुतप्रसन्नहुये कि इन्होंनेहमारेमनकीबातको ज
लिया फिरव्यासजी अपनीचिन्ताकाहाल नारदमुनिसे कह
बोले आपदिनरातपरमेश्वरके भजनमेंलीनरहते हैं सोदया
के कोई ऐसाउपायबतलाइये कि जिसमेंहमाराचित्त शुद्धहो
वेयहबातसुनकर नारदमुनिबोले हे व्यासजीजिसतरह तुमने
हाभारतऔर सत्रहपुराणमें परमेश्वरकागुणानुवाद थोड़ासा
खकरयज्ञ और तप व तीर्थ और दान व्रत और नेम व लड़ाई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ता और संसारीमनुष्योंकाहाल वर्णनकियाहै उसतरहकोईपुराण
निर्मललीला और यशआदिपुरुषभगवान्का मनलगाकरनहीं
नाया इसकारणतुम्हारे चित्तकोसन्तोषनहींहुआ परमेश्वरकी
नीलाकेसिवायदूसरे पुराणोंकेपढ़ने और सुननेमेंपरिश्रम बहुत
लाभथोड़ाहोकरउसकाफल सदास्थिरनहींरहता वहसुखथोड़े
दिनभोगकर फिरजन्मलेनापड़ताहै और श्रीपरमेश्वरकीकथामें
चित्तलगजानेसे जितनाफल व सुखप्राप्तहोताहै वहहालवर्णनन
हींहोसक्ता और जिनलोगोंकोसंसारमें अनेकतरहके डर व दुःख
लगेरहतेहैं वहसबवज्ररूपी हरिकथासुनने और पढ़नेसेछूटजाते
हैं इसलियेजिसपुराण और भजनमें परमेश्वरकीलीला औरना
म लिखाहो उसीकोउत्तमसमझनाचाहिये जिसतरहनौकाइच्छा
पूर्वकपवनचलनेसे अपनेस्थानपर जल्दीपहुंचतीहै उसीतरह सं
सारीमनुष्यपरमेश्वरका भजन और स्मरणकरनेसेसंसारमेंबांछि
तफलपाकर मरनेउपरान्तभवसागरपारउतरजातेहैं जैसासुखभग
वद्भजन व हरिचरणोंमें ध्यानलगानेसे प्राप्तहोताहै वैसा आनन्द
इन्द्र और कुबेरआदिकदेवताओंको भी नहींमिलता इसलिये म
नुष्योंको उचितहै कि अपनेमनमेंसन्तोषरखकर किसीप्रयोजन
कबिनाचाहे परमेश्वरकाभजन व स्मरणकियाकरैं संसारमेंसबत
रहकासुख व दुःख पिछलेजन्मकेकर्मोंसेप्राप्तहोकर हरिभजनक
रनेमें शूलीकाकांटाहोजाताहै और हरिचरणोंकाध्यान मनमें र
खनेसे संसारीमायाछूटकर फिरउसमनुष्यको यज्ञ और तप व व्रत
और दानादिककरनेका कुछप्रयोजननहींरहता और जो लोग ह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रिभक्ति न रखकरकेवलयज्ञ और तप और व्रत व तीर्थकरतेहैं
आवागमनसे रहितनहींहोते शुभकर्मकरनेसे थोड़ेदिन उसक
खभोगकर फिरजन्मलेतेहैं और बाजीबातवेद व पुराणोंमेंतु
इसतरहपरलिखीहै जिसकोमूर्ख नहींसमझेंगे जैसेआपनेपि
काश्राद्धकरनामांससेलिखाहै इसलियेमांसखानेवाले तुम्हा
चनकाप्रमाणमानकर मांसभोजनकरके यह न समझेंगे कि व
सजीका अभिप्रायमांससेयज्ञ और श्राद्धकरनेवास्तेहैइसतरह
बात साधु व तपस्वीअच्छी न मानेंगे जोलोग हंसरूपी परम
रकेभक्तहैं वह वैकुण्ठनाथकेभजन व स्मरण और हरिचरणों
ध्यानमेंमग्नरहकर दूसरीबात नहींचाहते जिसतरहहंसमानस
वरकिनारेरहकर दानेकीजगहमोतीचुगतेहैं और कौआ अशुद्ध
गहबैठकर बिष्ठाआदिकअशुद्धवस्तुखाताहै और अपनीबोली
लकरमारेअभिमानके दूसरेपक्षीको अपनेबराबर नहीं समझ
और उसकीबोली हंसप्रियनहींकरते उसीतरहहंसरूपीसाधु
वैष्णवको परमेश्वरकागुण और चरित्रसुननाप्यारालगताहै
जोपुराणश्यामसुन्दरकेनामकी स्तुतिसेरहितहैं वहउनको
नहींलगते और काकरूपीमनुष्य उनबातों कासुनना जिनमें
लि व क्रीड़ा संसारीसुखरहता है अच्छाजानतेहैं इसलियेतुम्ह
मनको सन्तोषनहींहुआ अबतुम्हेंचाहिये कि एकपुराणऐसा
नाओ जिसमेंसबलीला और गुणपरमेश्वरका लिखाहो और
सकेपढ़ने और सुननेसेमनुष्योंको पुण्यप्राप्तहोकर मरनेउपरा
मुक्तिपदवीमिलै व तुम्हारीचिन्तनाछूटकर सन्तोषहो हे व्यास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कदाचित् तुमकोहमारेकहनेका विश्वास न हो तोहमअपनेपिछ
लेजन्मकाहालकहतेहैं सुनोउसजन्ममें हमएकदासीकेपुत्रथेओ
र मेरीमाताएकब्राह्मणकेयहां कामकाजकरतीथी और वहब्राह्म
ण साधु और सन्तकी सेवाकियाकरताथा सो बरसातके दिनों में
उसब्राह्मणकेस्थानपर साधुलोगआनकरटिके और उसब्राह्मणने
साधुओंके चौका और बरतनकरनेवास्ते हमारीमाताको रख दि
या सो मैं भी बालकहोनेसे अपनीमाताकेसाथ उनसाधुओंकेआ
सनपररहकर आठोंपहर उनकादर्शनकियाकरताथा जिससमय
साधुलोग आपसमें बैठकर परमेश्वरकीकथा और वार्त्ताकहतेथे
उससमयमैंभी उनकेपास बैठारहताथा और मुझबालकअज्ञान
को वहबातैंकथाकी बहुतप्यारीलगतीथीं इसलिये मैं बड़ेप्रेमसेउ
नकोसुनताथा औरसाधुलोगभोजनकरकेजोअपना२जूठनमुझ
को अपनेहाथसेदेतेथे उसको मैं बड़ेप्रेमसेखाताथा जबवहसाधुब
रसातबीतेअपने २ स्थानकोजानेलगे तबमैंबहुतसारोया और मु
झकोयहइच्छाहुई कि मैंभीइनकेसाथजाऊं तबउन्होंनेमेरेऊपर
कृपाकरकेकहा हमतुझे मंत्रपढ़ायेदेते हैं उसको तू जपाकरफिरव
हलोग मुझेबारहअक्षरकामंत्र उपदेशकरकेअपनेस्थानको चले
गये व मैं उसमन्त्रकोजपकर उनसाधुओंकी आज्ञाप्रमाण श्रीकृ
ष्ण औरबलराम और प्रद्युम्न और अनिरुद्धके चरणोंकाध्यानक
रनेलगा जबउनसाधुओंकाजूठनखानेऔरमन्त्रजपनेकेप्रतापसे
मुझेज्ञानउत्पन्नहुआ तबमनमेंयहबातविचारकियाकिबनमेंजा
कर परमेश्वरकाभजन करूं यहां किसवास्तेपड़ारहूं परमेरीमाता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुझसे बड़ास्नेहरखकर एकक्षणभरभी मेरासाथनहींछोड़ती
इसलियेमैं उसकोअकेलेछोड़कर कहींजानेनहीं सक्काथा सो
मेश्वरने मेरेचित्तकाहाल जानकर ऐसासंयोगकिया कि हम
माता सांपकाटनेसे जो उसीब्राह्मणकादूध दुहावने जातीथी
में मरगई जबलड़कोंनेआनकर हमसेयहहालकहा तब मैं
प्रसन्नहोकरमनमेंविचारकिया कि देखो परमेश्वरनेसंसारीमन
मोहसे मुझेछुड़ाया यह विचारकर मैं उसीसमय कि पांचवर्ष
था वहांसेउत्तरदिशाको बड़ी २ नदीऔरनाले व पहाड़नांघत
आएकबनमेंचलागया सो बहुतसेसिंह व भालू और हाथीआ
कपशुमुझको बनमें दिखलाईदिये परभगवान्कीकृपासेमैं
नहींडरा और मेराध्यान परमेश्वरकेचरणोंमेंलगाथा इससे
कुछभूख और प्यासभीनहींलगी जबमैंबहुतदूर एकबनमें
पर मनुष्यादिकका आवागमननहींथा पहुंचा तबवहांएकवृक्ष
पलकानदीकिनारेदेखा जबमैंने उसवृक्षकेनीचे जड़परबैठक
रमेश्वरकेस्वरूपकाध्यानकिया तबभगवान्का दिव्यरूपमु
ध्यानमेंऐसादेखपड़ा कि एकमनुष्यसुन्दर जिसके मुखारवि
काप्रकाश सूर्यसेभीअधिकथा चतुर्भुजीमूर्त्ति शंख व चक्र व
और पद्मअपनेहाथोंमेंलिये पीताम्बर और बैजयन्तीमाला
णकिये किरीट और कुण्डल और मुकुटकानोंमेंपहिने श्याम
रूपकमलनयन लम्बीभुजा घूंघरवालेबालतापहारिणीचित
मन्द २ मुसकराते और विजुलीकीतरह चमकतेहुये मुझको
खलाईदिये उसरूपको देखतेहीमैंने बहुतप्रसन्नहोकरचाहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ीरूपको देखतारहूं जबवहस्वरूप मेरेध्यानसेगुप्तहोगया और
बड़ाशोचकरकेरोनेलगा तबयहआकाशवाणीहुई तूचिन्ताछो
कर मेरेभजनमेंलीनरह तेरेमनमेंअधिकप्रीति उत्पन्न होनेवा
हमनेएकबेरअपना दर्शनतुझेदियाहै दूसरेजन्ममेंफिरहमारा
र्शनपावेगा और तू मेरेनिजभक्तोंमेंहोकर मेरीकृपासेतुझको अ
ने पिछलेजन्मोंका याद रहैगा॥

छठवां अध्याय॥

नारदजी का अपने पिछले जन्मका हाल कहना कि हरिभजनके प्रतापसे हमको दर्शन श्यामसुंदरका हुआ और मैंने जिसतरह शूद्रकातनु छोड़कर ब्रह्माके यहां जन्मपाया॥

नारदमुनिने व्यासजीसेकहा कि आकाशवाणी होनेउपरांत
कबाजाबीणाका नारायणजीने मुझकोदिया वहबीणालेकरह
परमेश्वरकाभजनकरनेलगे जबमैंप्रेमसेउस बीणाकोबजाकर
चभजनऔर ध्यानपरमेश्वरके लवलीनहोजाता तबवैकुण्ठ
ाथकेप्रेममेंडूबकर मुझेयहइच्छाहोतीथी कि नारायणजी ने दू
रेजन्ममें दर्शनदेनेकोकहाहै कबयहतनुमेराछूटै और दूसरा ज
मलेकर परमेश्वरकादर्शनपाऊं जबइसीतरहइच्छाकरते२ वहत
अपनाछोड़दिया तबत्रिभुवनपतिकी कृपासे ब्रह्माजीका बेटाहु
ा और उनके अँगूठेसेउत्पन्नहोकर पिछलेजन्मकासबहालमु
कोयादरहा इसलियेमेरेमनमेंयहइच्छाहुई किनारायणजीका
जनकरूं जिसमेंफिरमुझेजल्दी वैकुण्ठनाथकादर्शनहोवे इस
ास्ते संसारीमायामोह औरगृहस्थीकेजालमें नहींफँसा अबउस
जनकेप्रभावसे यहहालमेराहै कि जिससमयपरमेश्वरकाध्यान
करताहूं उसीक्षणबांकेबिहारी मुझकोइसतरहदर्शनदेतेहैं जिसत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहकोईकिसीका नेवताहुआआजावै सो अबजहांइच्छाकर वैकु
वहांदर्शन उससांवलीसूरतकेमुझेहोजातेहैं औरजिसजगह तिना
लोकमें मेरीइच्छाचाहतीहै वहांचलाजाताहूं किसी जगह बिदाहु
कोजानेवास्ते मनहाईनहींरहती सो हे व्यासजी तुमभीपरमे धन्य
की लीला और गुणोंकोवर्णनकरो जिसमेंतुमकोभी परब्रह्म देशादि
वान्के चरणोंकादर्शनहोवै और तुम्हाराचित्त उनकेचरणा नाकर
ध्यान छोड़कर दूसरीतरफ़ न जावै॥ ाकर बं

सातवां अध्याय॥

नारदमुनिका व्यासजीसे चारश्लोककाहाल कहना और वेदव्यासका बदरी केदार में जाकर तप करना और श्रीमद्भागवतपुराणका बनाना॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसेकहा कि नारदमुनि ब्रह्मप
नेपिछलेजन्मकाहाल वेदव्यासजीसेकहकरबोले हे व्यास का उ
मने चारश्लोकब्रह्मासे और ब्रह्मानेनारायणजीसेसुनेहैंसोतु करने
चाहिये कि उन्हींचारश्लोकोंकीकथा विस्तारपूर्वक वर्णन था वि
परमेश्वरकीमहिमा केवलमनुष्यतनुमें मालूमहोकर पशु पनेपुत्र
आदिकोसिवायखाने औरभोगकरनेके दूसराकामनहींरहत क्षित
कोई मनुष्यकातनुपाकर परमेश्वरकाभजन व स्मरणाकरके छेसेउ
यारूपीभवसागरसेपारउतरगया उसीकाजन्मलेनासुफलहै हे राज
रजिसने यहतनुपाकरनारायणजीकास्मरण और ध्याननहीं रवोंक
या वहमनुष्य चौरासीलाखयोनिमें जन्मलेकर बड़ादुःखपा नुष्य श
फिरनारदमुनिने वेदव्यासजीको चारश्लोककाअर्थ अच्छी र भी
समझाकरकहा हे व्यासजी तुमकोचाहिये कि पहिले परब्रह्म राजादु
मेश्वरके चरणोंकाध्यानकरो जबतुम्हारा अन्तःकरण पवित्र भारत
न और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र वैकुण्ठनाथकाचमत्कार तुम्हारेहृदयमेंआवै तबतुम गुण व
तिनारायणजीकी वर्णनकरना यहबातकहकर नारदमुनिवहां
बिदाहुये इतनी कथासुनाकर सूतजीबोले हे ऋषीश्वरो नारद
धन्यहैं जिन्होंनेसंसारीजीवोंके कल्याणवास्ते वेदव्यासको उ
शादिया जबनारदमुनिकी शिक्षासे व्यासजीसरस्वतीनदी में
ानकरनेउपरान्त बदरिकाश्रमको जोश्रीनगरपहाड़की तरफ़है
कर बीचध्यान परमेश्वरकेलीनहुये तबउन्होंने इसबातकीचि
नाकीकिमुझअज्ञानकीक्यासामर्थ्यहै जोथोड़ीसीमहिमाउस
ब्रह्मपरमेश्वरकीवर्णनकरनेसकूं उसीसमयएक तेजआदिज्यो
का उनकेहृदयमेंचमका तबव्यासजीने परमेश्वरकीकृपासेस्तु
करनेकीसामर्थ्यपाकर उनचारश्लोकोंको जो नारदमुनिसे सु
था विस्तारपूर्वकलिखा और उसकानाम श्रीमद्भागवतरखकर
पनेपुत्रशुकदेवजीकोपढ़ाया और शुकदेवजीमहाराजने राजा
रीक्षितसेकहा जिसकेपढ़नेऔरसुननेसे संसारीमायाछूटजातीहै
ऐसेउसकाहाल कहाजायगा इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबो
हे राजन् जबकुरुक्षेत्रमें अठारहअक्षौहिणीदल पाण्डव और
रवोंका इकट्ठाहोकर अठारहदिनतकबड़ायुद्धहुआ और बहुत
नुष्य शूर बीर हाथीघोड़े सन्मुखमारेजाकर बीरलोकमें पहुंचे
र भीमसेनने अपनीगदासे धृतराष्ट्रके सबपुत्रोंकोमारनेउपरां
राजादुर्योधनकी जंघातोड़कर उसकोपृथ्वीपर गिराया और म
भारतहोनेकेपहिले जिससमयदुर्योधनने राजायुधिष्ठिरसे सब
न और द्रौपदीउनकीस्त्रीको छलकरकेजुवेमेंजीतलिया औरउ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सने द्रौपदीके शिरकेबाल खींचतेहुये बड़ीसांसत और अ
से अपनीसभामें बुलाकर उससेकहा कि तू हमारीजंघापर
करबैठ उसीसमय भीमसेनने मनमेंप्रणाकियाथा कि श्याम
कीकृपाहोगीतो मैं तेरीजंघाअपनीगदासेतोड़ूंगासो श्रीकृष्ण
अनुग्रहसे भीमसेनने अपनाप्रणपूराकिया जिससमयदुर्यो
रटूटाहुआघायल और अकेलारणभूमिमेंपड़ाथा उससमय
त्थामा द्रोणाचार्य्यकापुत्र उसकेपासआनकरबोला कि हम
लड़कपनमें एकसाथरहकरखेलतेथे सो तुमकोशत्रुओंने
न दिखलाकर इसदुर्दशाकोपहुंचाया हमकोजो आज्ञादेवो
दुर्योधनयहबातसुनकर अश्वत्थामासेबोला मैं अपनेजंघा
औरसबभाई औरबेटा और सेनापतियोंकेमारेजानेकी कुछ
नहींकरता जितनाखेदमुझे पाण्डवोंकेजीतेरहने और राज्य
काहै सो तुम्हारेरहते हमारेशत्रुराज्यकरें इसबातमेंतुमको
लज्जासमझनाचाहिये यहबातसुनकर अश्वत्थामाबोला
कहैं तो आजरातको मैं जाकेसोतेसमय पांचोंभाईपाण्डवों
रकाटकरतुम्हारेपासलादूं यद्यपिसोयेहुये मनुष्यकोमारना
पापहै परन्तुतुम्हारीप्रसन्नताकेवास्तेहमऐसाकरेंगे दुर्योध
हा जो तुमउनकाशिरकाटलाओ तो तुम्हाराबड़ाउपकार
यहबातसुनकर अश्वत्थामावहांसेचला व उसकेपहुंचनेसे
श्रीकृष्णजी अन्तर्यामीनेजाना कि आजरातको अश्वत्थाम
वोंकेशिरकाटनेवास्तेआवेगा इसवास्ते वैकुण्ठनाथने संध्य
यपाण्डवोंसेकहा कि आजरातको तुमपांचोंभाई अपनेडेरे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रसरस्वतीकिनारे दूसराडेराखड़ाकरकेसोवो और सबलोगोंको
सीडेरेमें रहनेदेव इसीलियेपांचोंभाई उसरातको दूसरेडेरेमें जा
रसोयेथे और अश्वत्थामानेउसीदिन अँधियारीरातमेंपाण्डवों
शिरकाटनेकीइच्छारखकर कृपाचार्य्यसेसम्मतपूंछा उन्होंनेइ
अधर्मकरनेकोबहुतमनाकिया परअश्वत्थामा महादेवजीके व
दानकाघमण्डरखनेसे कृपाचार्य्यकाकहनानमानकरपहररातर
कृत्याको साथलियेहुये पाण्डवोंकीसेनामेंचलागया और उसी
रदानकेप्रतापसे रुद्रस्तोत्रपढ़कर उसनेसेनाके चारोंतरफ़आग
गादिया और पाण्डवोंकेपहिले डेरेमेंजाकर द्रौपदीकेपांचों पु
ोंकाशिरकाटलिया जो उसीडेरेमें युधिष्ठिरआदि पांडवोंकी श
याकेऊपरसोयेथे और प्रातसमयदुर्योधनकेपासलाकर कहा कि
मपांचोंभाई पाण्डवोंका शिरकाटलाये राजादुर्योधन यहबात
नकर बहुतप्रसन्नहुआ और एक २ का शिर अपनेहाथमेंलेक
दबानेलगा जब भीमसेनका शिरबतलाकर अश्वत्थामाने दुर्यो
नकेहाथमेंदिया तबदुर्योधननेउससेकहा कि यहशिर भीमसेन
कानहोगाउसकाशिरऐसानहींहै जोमेरेदबानेसेटूटजावे इसलिये
मुझकोमालूमहुआ कि तू द्रौपदीकेपांचोंपुत्रोंकाशिरकाटलाया
जो पाण्डवोंकेरूपकेसमानथे इनविचारेलड़कोंकोतैंने वृथामा
करहमारेवंशकानाशाकिया जबयहबातसमझकर दुर्योधनकोह
होनेकेउपरान्त विस्मयप्राप्तहुआ तबवहउसीक्षणमरगयाउसके
जन्मपत्रमेंलिखाथा कि उसकामरनाहर्ष व विषादकेमध्यमें हो
गा वहीबातआगेआईसो अश्वत्थामादुर्योधनकामरना देखतेही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अर्जुन और श्रीकृष्णजीकेडरसे इसतरह अपना प्राणलेकर
भागाजिसतरहसूर्यदेवतामहादेवकेडरसेभागेथेउसकाहाल
पुराणमें इसतरह लिखाहै कि शिवजीने सुमालीदैत्यको
बहुतउत्तम और बेगसेचलनेवाला तेजवान्दियाथा. जबसु
दैत्यने सूर्यकेपीछेअपनारथचलाया तबउसरथके प्रकाशसे
सूर्यरातकरतेथे वहांदिनबनारहताथा जबसूर्यनेयहहाल दे
बड़ेक्रोधसे उसेमारगिराया तबसुमालीने महादेवजीकीशर
कारा उससमयभोलानाथने सुमालीकीसहायताकरकेसूर्य
छाकिया जबसूर्यदेवतामहादेवके डरसेभागे तबशिवशंकरने
शूलमारकर सूर्यकारथ काशीजीमेंगिरादिया उसी जगहपर
लार्कतीर्थहुआजबद्रौपदीनेअपनेबेटोंकेशिरकाटनेकाहाल
तबउसनेअतिविलापकरकेयहसौगन्दखाई किंजबतकअश्व
मानहींमाराजावेगा मैंअन्नजलनहींकरूंगी जबराजायुधि
और अर्जुनआदि पांचोंभाईयहहालसुनकर बहुतरोनेलगे
पदीनेअर्जुनसेकहा कि अश्वत्थामाकामारना अपनेआधी
झोमैंने यहसौगन्दकेवलतुम्हारेभरोसेपरखाई है जैसा उचि
नोवैसाकरो यहवचनसुनकर अर्जुननेद्रौपदीसेकहा तू धीर्य
अश्वत्थामाकाशिरकाटकरतुझे लादेताहूं तुमउसीशिरपर
होकरस्नानकरना तबतेरेकलेजेकीदाहमिटैगीइसतरहद्रौप
समझाकरतुरन्तअर्जुननेगाण्डीवधनुषहाथमेंउठालिया और
परचढ़करश्रीकृष्णजीसेकहाजल्दीरथकोचलाइयेश्यामसुन्
ऐसेवेगसेअर्जुनकारथहांका कि अश्वत्थामाकेनिकट जापहु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अश्वत्थामाने रथकोदेखकर ब्रह्मास्त्रजो ब्रह्मानेउसको दियाथा
र्जुनपरछोड़ा और वहब्रह्मास्त्रआगकेसमानजलताहुआ अर्जु
कीतरफ़चला तबअर्जुननेमुरलीमनोहरसेपूंछा यहकैसीअग्नि
मारीतरफ़दौड़ीहुईचलीआतीहै श्यामसुन्दरबोले यहआग ब्र
ास्त्रअश्वत्थामाकीसमझकर तूभीअपनाब्रह्मास्त्र उसपरचलाव
कदोनोंअस्त्र आपसमेंलपटकरवहआगतेरेपासपहुंचने न सकैओ
अश्वत्थामानेजोअपनाअस्त्रचलायाहै उसेबुलानेकीसामर्थ्यन
ंरखता और तूचलाना और फिरबुलालेना दोनोंमंत्रजानता है
सलियेचलाव यहबातसुनकर अर्जुननेभी अपनाब्रह्मास्त्रचला
ातबवहदोनोंब्रह्मास्त्रमिलकरआपसमेंलिपटगयेअर्जुनकाब्रह्मा
त्रअश्वत्थामाकेअस्त्रकोनहींछोड़ताथा किवहअस्त्रअर्जुनकेपास
हुंचनसके जबथोड़ीदेरतकदोनोंअस्त्रआपसमें लिपटेरहेतबश्या
सुन्दरनेअर्जुनसेकहा कितू जल्दीमन्त्रपढ़करदोनोंअस्त्रोंकोअ
नेपासबुलाले नहींतोइसअग्निसे संसारीजीवजलमरेंगे यहवच
सुनतेही अर्जुनने मंत्रकेबलसेदोनोंब्रह्मास्त्र अपनेपासबुलानेके
परान्तरथदौड़ाकर अश्वत्थामाको पकड़लिया परअपनेहृदय
ंदया और धर्मकीराहविचारकियाकि यहब्राह्मण मेरेगुरुकाबेटा
इसकोमारना न चाहिये जबयहसमझकर अर्जुननेउसकाशिर
हींकाटा तबश्यामसुंदर अर्जुनकेधर्म्मकीपरीक्षालेनेवास्तेबोले
अर्जुन अश्वत्थामाने सोयेहुयेलड़कोंकेशिरकाटे हैं इसलियेय
आततायीहुआ और तुमनेइसकेशिरकाटनेकाप्रणकियाथासो
सको मारडालो जिसमें द्रौपदीको सन्तोपहो यहबातसुनकरअ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्जुननेकहा कि महाराजआप सत्यकहतेहैं परब्राह्मणकोमा
ड़ापापसमझकरअभी इसकोवधकरना न चाहिये इसेबांधके
पदीकेपासलेचलोजैसावहकहैवैसाकरनाजबयहबातसुनका
मसुन्दरनेमानलिया तबअर्जुनहाथ व पैर अश्वत्थामाके बां
रउसे द्रौपदीके सामनेलाया जैसेद्रौपदीहरिभक्तानेअश्वत्थ
को बँधेहुयेदेखा वैसेअपनेधर्म और दयाकीराहसे रुदनकर
गी और श्रीकृष्णजीकी बहुतस्तुतिकहकर अर्जुनसे विनय
बोली हेस्वामी तुमने मेरीप्रतिज्ञापूरीकी अबइसब्राह्मणका
मारनेसे मेरेमरेहुयेबालकजीनहींसक्ते इसलिये अश्वत्थामा
छोड़देव यहअपनेकर्मोंकादण्ड परमेश्वरसेपावेगा जिसतरह
अपनेबेटोंके मरनेकाशोचकरतीहूं उसीतरहकृपीनाम अश्व
माकीमाताभी पुत्रमरनेकादुःखपावेगी और इसकेपितासे
धनुषविद्यासीखीहै इसलियेअश्वत्थामाकोपूजनेयोग्यसम
जल्दीछोड़दीजिये इसेबांधकररखना उचितनहींहै यहवच
पदीकासुनतेही राजायुधिष्ठिर और नकुल और सहदेवनेप्र
होकरकहा द्रौपदीसत्यकहती है अश्वत्थामाकोमारनेसे सि
ब्रह्महत्याके क्यामिलेगा जबयहबातद्रौपदी और युधिष्ठिर
की भीमसेनकोअच्छी नहींलगी तबवहअपनीगदा पृथ्वीप
ककरअर्जुनसेबोला तुमनेअश्वत्थामाके शिरकाटनेका प्र
याथा सो अपनीप्रतिज्ञा झूंठीकरना न चाहिये और जो तु
कहतेहो कि इसकेमारनेसे ब्रह्महत्यालगेगी सो इसमेंब्रह्म
ब्राह्मणाकाकर्मनहींरहा धर्मशास्त्रमें ऐसालिखाहै किजोको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आये और सोतेहुयेको या बालक और स्त्रीकावधकरे यामतवा
व बौड़हे को व हरिभक्त औरपरमहंसको मारकरदुःखदेवै ऐसे
नुष्यकोआततायी समझकरमारना औ दण्डदेना राजाओंका
महै उनकेमारनेकापापनहींहोता औरछःतरहकेआततायीहोते
एकजोआगलगावे दूसराजोविषदेवै तीसराजोगुरुकीआज्ञा न
नै चौथाजोब्रह्मअंश अधर्मसेलेवै पांचवांजोब्राह्मण व क्षत्रिय
वैश्यहोकरमदिरापीवै छठवांजोप्राणमारकर अपनाकुटुम्बपा
ले उनलोगोंको अवश्यमारनाचाहिये जबभीमसेनकीबात सुन
करअर्जुनविचारनेलगा कि अबमैंक्याकरूं तबश्रीकृष्णजीने क
हा हे अर्जुनतुमने जो प्रणकियाहै उसकोपूराकरो और भीमसेन
कावचनरखकर द्रौपदीकाकहनामानो और जो राजायुधिष्ठिरक
हते हैं उनकाभीवचनपालो और वेदमेंऐसालिखाहै कि ब्राह्मण
काप्राणनमारै औरजो आततायी हैं उनकोमारडालैइसलियेतुम
ऐसीबातविचारकरकरो जिसमेंवेद औ शास्त्रकावचनझूंठा न हो
करसबकीप्रसन्नतारहै यहबातसुनकरअर्जुनने विचारा किकोई
ऐसाउपायकरनाचाहिये जिसमेंअश्वत्थामाकाप्राणबचकर वह
मरनेकेबराबरहोजावै ऐसाविचारकरअर्जुनने अश्वत्थामाकाशि
र कि बालहत्याकरनेसे उसकाबल व तेजजातारहाथा मुड़वाडा
ला व अपनीतलवारकीनोकसे चीरकरएकमणि बहुतअच्छीजो
उसके शिरमेंथीनिकालालिया और अपनेनगरकीसीमासेउसको
बाहरनिकलवाकर मरणतुल्यकरके छोड़दिया॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आठवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीकरके राजादुर्योधनकीलोथको वीरोंसमेतजलाना जो कि महाभारतमेंगयेथे और राजा युधिष्ठिरको यज्ञकरनेवास्तेसमझाना और युधिष्ठिरको बोध न होना इसलिये भीष्मपितामहकेपास लेजाना जो कि रणभूमिमें पड़ेथे ॥

सूतजीबोले हे ऋषीश्वरो अश्वत्थामाकेछोड़नेउपरान्त युधिष्ठिर व श्रीकृष्णमहाराजकी आज्ञापाकर दुर्योधन कौरवऔर वीरोंकीलोथ जो रणभूमिमेंपड़ी थीं उनकेसम्बन्धि नेउठालिया व दग्धकरविधिपूर्वकक्रियाकर्मउनकाकियाजब मसुन्दर व धृतराष्ट्र और पांचोंभाईपाण्डव और कुन्ती और दी व गान्धारीआदिस्नानकरनेवास्ते गंगाकिनारेगये तबजि स्त्रियांकौरव व पाण्डवोंकेघरानेमें विधवाहोगईथीं वहसबबड़ लापसे अपने २ पतिकागुणकह २ कररोनेलगीं उसीसमयरा युधिष्ठिर जो धर्मकाअवतारथे बड़ेशोचमेंडूबगये और अपने राधिक्कारदेकरकहनेलगे कि हमारेयहपापकभीनहींछूटेंगे व तरहमेराउद्धारहोगा मेरेमहाभारतकरनेसेहज़ारों स्त्री हमारे व परिवारकीविधवाहोकररोती औरकल्पतीहैं इनकेरोने और शूगिरनेसे जितनीरेणुकापृथ्वीकीभीगैंगी उतनेवर्षतकमुझे बासकरनापड़ैगा मेरेलड़ाईकरनेसे द्रोणाचार्यगुरु और भीष्म तामहहमारेदादा व कर्णमेराभाई जिसकेहाथसेहज़ारोंब्राह्मण त्यदान व दक्षिणापातेथे व हज़ारोंमनुष्यमेरेगोत्री व नातेदा रेगये मुझसेबड़ीचूकहुई जो मैंनेमहाभारतकिया ऐसाअधर्म राज्यमुझे न करनाचाहिये इनबातोंकोसुनकर कृष्णमहाराज वेदव्यासजी आदिकऋषीश्वर और ब्राह्मणोंनेकईबाररराजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छुरकोसमझाकरकहा इसीतरहसदासेपिछलेराजा करतेचलेआ
हैं पृथ्वीऔर राजगद्दीलेनेकेवास्तेबेटाबापकोऔर भाईभाईको
ारडालताहै जिसतरहवहलोग राजगद्दीपाकरअश्वमेधयज्ञकर
उनपापोंसेछूटगयेहैं उसीतरहतुम्हारापापभीअश्वमेध और रा
सूययज्ञकरनेसे छूटजायगा यहबातश्यामसुन्दरकीसुनकर रा
युधिष्ठिरबोले हे ज्योतिस्स्वरूपयहकहनाआपकाकेवल मन
मझावनेवास्तेहै नहींतोयज्ञकरनेमेंभी पशुआदिकअनेकजीव
मारेहाथसेमारेजावेंगे जिसतरहकोईमनुष्यकीचड़कोधोयाचा
तोनहींछूटता उसीतरहहमारे यज्ञकरनेसे इनविधवास्त्रियोंकी
ल्पनानहींछूटैगी कदाचित्आपयहकहैं कि पहिलेतुमनेराज्य
नेकेवास्ते इतनायुद्धकिया अबराज्यक्योंनहींकरते सो मुझको
मरकरनेकीइच्छा न थी नजानें उससमयकिसने मेरी मतिको
रकरमहाभारतकराया अबमैं राजसिंहासनपरनहींबैठूंगा यह
तसुनकर मुरलीमनोहरनेजाना कि हमारेसमझानेसे राजायु
धिष्ठिरनहींमानेंगे जिससमयश्यामसुन्दर इसीविचारमेंबैठेथे उ
सीसमय ब्राह्मणऋषीश्वरोंने आनकरश्रीकृष्णजीसेकहा हे त्रि
लोकीनाथ राजायुधिष्ठिरकाचित्तराजकाजमें न लगकर वहअ
भी इसीचिन्तामें रहतेहैं कि हमनेअपनेभाई और नातेदार व ब्रा
ह्मणोंकोमाराहै सोआपउनकाबोधकरदीजिये श्यामसुन्दरबोले
राजामेरेसमझानेसेनहींमानतेहमारीजानमेंयहउचितहै कि उन
कोभीष्मपितामहकेपास जोरणभूमिमें बाणशय्यापरपड़ेहुये ह
मारेदर्शनोंकीइच्छारखतेहैं लेचलैं तबवहराजायुधिष्ठिरकोज्ञान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उपदेशकरके धीर्यदेवेंगे यहबातकहकरश्यामसुन्दरने राजा
लाकेकहा हेधर्म्मराजतुम्हारी अभीतकचिन्तानहींछूटी औ
ह्मणलोगकहतेहैं कि इसपापकेछुड़ानेवास्ते अश्वमेधयज्ञ
चाहिये व हमारेसमझानेसे तुम्हारावोधनहींहोता इसलिये
मारेसाथ भीष्मपितामहकेपास कि वेवड़ेबुद्धिमानूहैंचलो ज
आज्ञादेवैं सो करो राजा युधिष्ठिरने यहबातमानकर अपने
भाई व द्रौपदी व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको रथपरबैठालि
श्यामसुन्दरकेसाथ जिसस्थानपर भीष्मपितामहरणभूमि
थेलेगयेब्राह्मणलोगदाहिने व पाण्डवबायेंवश्रीकृष्णजीभी
तामहकेसम्मुखबैठे और श्यामसुन्दरने इसवास्तेचरणके
बैठनाअंगीकारकिया कि भीष्मपितामह घायलपड़ेहुये मे
नों कीइच्छारखतेहैं मैं दूसरीओर बैठूंगा तो उनकोकरवटल
बहुतकष्टहोगा और यहसमाचारसुनकरनारदजी और भ
व परशुराम आदिकबहुतसेऋषि व मुनि भीष्मपितामहसे
सुननेकेवास्तेवहांपरगये और भीष्मपितामहनेमानसीपूज
मसुन्दरका किया॥

नवां अध्याय॥

भीष्मपितामहका राजायुधिष्ठिरको राजनीतिधर्म समझाना व द्रौपदीका बोधकरना॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसेकहा जबसबलोग
बैठचुके तबश्रीकृष्णजीबोले हे भीष्मपितामह राजा युधि
अपनामन राज्यकाजमें नहींलगाकरकहते हैं कि हमने
भाई व बन्धु व नातेदार और ब्राह्मणोंको महाभारतमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है जबतकइनसबपापोंसे हमाराउद्धारनहोगातबतकराज्यनहींक
रेंगेभीष्मपितामह ने यहवचनसुनतेही राजधर्म और आपद्धर्म
और दानधर्म व मोक्षधर्म जिसकाहालशान्तिपर्व और शल्यपर्व
महाभारतकीपोथीमें विस्तारपूर्वक लिखाहै राजायुधिष्ठिरसे क
हकर संक्षेपमें यहज्ञानबतलाया हे राजन् तुमको बाल्यावस्था
दुःख प्राप्तहोकर लड़कपनमें पिता तुम्हारेमरगये जब तुमको
छज्ञानहुआ तब कौरवोंनेतुम्हारे जलानेका उपायकरके भीम
नतुम्हारेभाईकेखानेके वास्ते विषकालड्डू बनाकरभेजा फिर
म्हारामबराज्य व धनछलसेजुआंमेंजीतकर तेरहवर्षकातुमको
नबासदिया सो बनमेंतुमनेअपने चारोंभाई और द्रौपदीस्त्री स
त बहुतसेदुःखउठाये कदाचित्कहो कि सच्चे व धर्म्मात्मा म
ष्यको दुःखनहींहोता फिरतुमको जो सत्यवादी व नीतिमान्
किसवास्ते यहसबदुःखपहुंचा और कहतेहैं कि बलवान् मनु
यको दुःख व शोकनहींप्राप्तहोतासो तुमपांचोंभाईमें अर्जुन व
ीमसेन बड़ेशूरवीरहैं व द्रौपदीऐसीपतिव्रतास्त्री तुम्हारेसाथथी
फर इन्होंने किसवास्ते इतनादुःखपाया सिवायइसके जहां श्री
ष्णजीकेनामकीचर्चारहतीहै वहांदुःखनहींहोता सो श्रीकृष्ण
ी परब्रह्मकाअवतार आप रातदिनतुम्हारी सहायता करतेथे
फरतुमने किसवास्ते इतनाकष्टसहा सो हेराजन् तुमइसबातको
श्वासकरकेजानो कि परमेश्वरकी इच्छानुसार जिसकोजैसा
नहारहै उससेपृथक्दूसरीबात नहींहो सक्ती दुःख व सुखापिछ
जन्मोंकेसंस्कार से भोगनापड़ताहै और परमेश्वरकीमहिमा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और भेदकोकोईनहींजानता कोईमनुष्य किसीकामकेवास्ते
श्रमकरके अपनेमनोरथको पहुंचजाताहै और बहुतमनुष्य ज
भर उद्योग और परिश्रमकरनेसेभी अपनेअर्थकोनहींपातेइ
ये सबकाउत्तम व मध्यम परमेश्वरकीइच्छापरसमझना चा
जो वहचाहतेहैं सो होताहै इसलियेबुद्धिमान् और ज्ञानी उस
समझनाचाहिये जोहर्ष व शोककोबराबरजानकर परमेश्वर
च्छापरआनन्दरहताहै औ जो कोईनारायणजीकीआज्ञाज
तोषनरखकरथोड़ेसेदुःखपहुंचनेमेंरोदेताहैऔजबउसकोरोने
छनहींहोता तबहारमानकरकहताहै किनारायणजीकी इच्छ
हींथीउसेमहामूर्ख जाननाचाहिये हेराजन् मनुष्यकोचिन्ता
परिश्रमकरनेसे कुछनहींहोकर सबकामहरीच्छासेहोतेहैं जि
होनहारकहतेहैं औरयहश्रीकृष्णजीसाक्षात्त्रिलोकीनाथअ
स्वरूपछिपाकर जगत्मेंलीलाकरतेहैं इनकेभेदकोकोई नह
नता और यहअर्जुन कोअपनाभक्तजानकर उसकेसारथी
इनकी महिमा और बड़ाईकहांतकतुमसे वर्णनकरूं हेराज
लोगपरमेश्वरकीइच्छापरआनन्दसेरहकरअपनाजन्म तप
प व हरिचरणोंके ध्यानमेंकाटते हैं उनकेनामसुनो उनमें
हादेव सदाकैलासपर्वतपर बैठेहुये नारायणजीके तप व ध्य
सिवायसंसारीव्यवहारसे कुछकामनहींरखते दूसरे नारदज
ठोंपहरमग्न व आनन्दमूर्त्तिरहकर जिसजगहउनकामन
हैवीणाबजाकर ज्योतिस्स्वरूपकाभजनव गुणगावतेफिर
सरेकपिलदेवमुनि दिनरात श्रीपरब्रह्मका जप और ध्यान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अकेले गंगासागरपरबैठेरहतेहैं चौथेशुकदेवजीजन्मसेसंसारीमा यामोहमें नहींलिपटकरआठोंपहर वैकुण्ठनाथकीकथा गायाक रतेहैं पांचवेंराजाबलिने जबजाना कि श्यामसुन्दरकी इच्छायों हींहै कि मैं राजसिंहासनपरनरहूं तबसबराज्यअपना वामनभग वान्कोअर्पण करादिया हे युधिष्ठिर तुमजानतेहो कि मैंने अपने भाई और नातेदार और ब्राह्मणोंकोमाराहै सो ऐसासमझना न चाहियेतुमकौनहौ तुम्हाराकियाकुछनहींहोसक्ता जो बातनाराय णजीनेचाहा सो किया और जबजोचाहेंगे सो करेंगे॥

चौ० उमादारुयोषितकी नाईं। सबहिंनचावतराम गोसाईं॥

इसलियेतुम गोत्रहत्याकीचिन्ता अपनेमनसेदूरकरो व भग वान्कीइच्छा इसीतरहसमझो और यज्ञकरकेअपनापापछुड़ाओ और प्रजाकापालनकरना तुम्हाराधर्म है कदाचित्राज्यनहीं क रोगे तो और पापतुमकोहोगा इतनीकथासुनाकर सूतजीने शौन कादिक ऋषीश्वरोंसेकहा जिससमय भीष्मपितामह यहसब ज्ञा न व धर्म राजायुधिष्ठिरकोसमझातेथे उससमयद्रौपदी वहां बैठी हुई भीष्मपितामहकी ओर देखरहीथी जबउन्होंनेसबधर्मकहते समययहबातभीकहा कि जिससभामें धर्मकाजानने वाला मनु ष्यबैठाहो व उसजगह दूसराकोई अधर्मकीराह कुछपापकरनेकी इच्छाकरै तो धर्मात्मामनुष्यकोउचितहै कि दूसरेकोपापकरनेसे गर्जि देवे कदाचित्वहमनाकरनेकी सामर्थ्य न रखताहो तो वहां से उठजावे और परमेश्वरकाध्यानकरै यह भीष्मपितामहका व चनसुनतेही द्रौपदीने राजायुधिष्ठिर व अर्जुनकीओर देखपहिले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुसकरादेया व फिरमनमेंलज्जितहोकरविचारकियादेखो
दुर्योधनकीसभामें भीष्मपितामहके सामने अधर्मकीराह
यहदुर्दशाहुई और दुश्शासननेमुझकोनंगी करनेवास्ते मेरा
खींचा राजादुर्योधनने मुझेअपनीजंघापर बैठनेवास्तेकहा
दुर्दशाहोनेपरभी मेराप्राणनहीं निकला व मैं अपनामुख
कोदिखलातीहूं ऐसेजीनेसेमरजाती तो उत्तमथाजबयहसभ
द्रौपदीबहुतउदासहो मनमेंअपनेको धिक्कारदेनेलगी तबभी
पितामहने द्रौपदीकामुखमलीनदेखतेहीउसके हृदयकीबात
पनेज्ञानसेजानकरकहा हे बेटी तुम अपनेमनमेंकुछशोचमत
यहसबधिकारमेरेऊपरहै किसकारण कि जिससमययहसब
र्मतेरेऊपरहुआथा उससमयमैंभी वहांबैठाथा जो मैं दुर्योधन
इसअनीतिसे मनाकरनाचाहतातो उसकीसामर्थ्यनहींथी जो
साअधर्मतेरेऊपरकरता परउससमयमेरे मनमें यहज्ञाननहीं
या इससेबेटीतुमनिश्चयजानो कि श्यामसुन्दरकीइच्छा इसी
हपरथी जोबातवहचाहतेहैं सो होतीहै उनकी इच्छामें किसी
बुद्धिकामनहींकरती व इसकाएककारणऔरहैसुनोकदाचित
ईमनुष्यकैसाहीज्ञानी व महात्माहो अधर्मीकीसंगतिकरनेसे
काज्ञाननष्टहोकर समयपरकामनहींआता और जो लोग
काअन्ननखातेहैं उसकेसमानउनकीबुद्धिहोजातीहै सो हमउ
नोंराजादुर्योधनअधर्मीकाअन्ननखाकर उसीकेसाथरातदिन
थे इसलियेमुझेउससमयधर्म व अधर्मकाविचारनहींहुआ
मकोछप्पनदिन दानापानीछोड़े व बाणशय्यापरपड़ेहोचुक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लिये मेरेतनुसेराजादुर्योधनकेअन्नकाविकार व उसकेसंगका प्र
भावनिकलगया तबमुझेइसबातकाज्ञानहुआ और हेबेटीइसतर
हपर एकइतिहासमहाभारतका कहतेहैं सुनोपिछलेयुगमें राजा
शिविकेयहां एकपरमहंसमहात्मा बड़ेज्ञानवान्रहतेथे और राजा
उनकीसेवाअच्छीतरह सच्चीप्रीतिसेकरताथा उसराजाके नगरमें
एकब्राह्मणने अपनीबेटीकागहना सोनारकोबनानेकेवास्ते दिया
सोउससोनारने सोनाबदलकर पीतलकागहनाबनाया व उसपर
सोनेका मुलम्माकरके ब्राह्मणकोदिया व ब्राह्मणने बिनाजांचे
वहगहनासोनारसेलेकर अपनीबेटीको पहिनाया जबवहलड़की
उसेपहिनकर अपनीसुसरालमेंगई तबउसकेपतिने पीतलका गह
नादेखकरमनमेंखेदमाना और उसेअपनेघर न रखकरब्राह्मणके
स्थानपरबिदाकरदिया व फिरअपने यहांनहींबुलाया जबउसब्रा
ह्मणनेबहुतउदासहोकर राजाकेपासनालिशकिया तबराजा शि
बिनेसोनारकाअपराधसत्यजानकर सबअन्न व धनउसकालूटके
अपनेस्थानमेंभेजवादियासोएकदिनराजमन्दिरमेंउसीअन्नकी
सोईतैयारहुई और उसमेंपरमहंसनेभीभोजनकिया इसलियेअ
धर्मीसोनारकाअन्नखानेसे परमहंसनेऐसाविचारकिया कि कुछ
अस्तुराजाकीचोरीकरें यहबातविचारकर परमहंसने रानीकाएक
जड़ाऊहारबहुतउत्तम महलकेभीतरसे कि उनकोवहांजानेवास्ते
पनहाईनहींथी चुरालिया और कपड़ेमेंलपेटकर अपनेपास रख
लिया व तीनदिनतकपरमहंस राजमन्दिरपरनहींगया जबउपवा
सकरनेसे सोनारकाअन्नपेटमेंनहींरहा तबपरमहंसको ऐसाज्ञान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उत्पन्नहुआ किहमनेहारचुरायाहै इसपापकेबदले नरकभो
पड़ैगा इसवास्तेअपनेअधर्मकादण्डइसीतनुमेंभोगकरलेना
तहै जिसमेंपरलोककाडर नरहै परमहंसयहबात विचारकर
रराजाकेपासलेगया व अपनीचोरीकरनेकाहाल कहकरबो
पृथ्वीनाथ इसपापकेबदले मेरेदोनोंहाथकटवाडालिये कि ह
पनेअधर्मकादण्ड इसीजन्ममें भोगकरलेवें यहवचनसुनते
जाने उदासहोकरपण्डितोंसेपूंछा इसकाक्याकारणहै जो प
सकाचित्तउसदिनऐसाबदलगया कि इन्होंनेहारचुराया औ
पउसहारको मेरेपासलाकर ऐसीबातकहते ब्राह्मणोंनेअपनी
द्यासेविचारकरकहा किमहाराजजिसरोज परमहंसनेचोरी
उसदिनकिसीअधर्मीकाअन्नखायाहोगासोपूंछनेसेमालूम
कोहुआ किउसीसोनारपापीकाअन्नखानेसे परमहंसकीबुद्धि
लगईथी सोहेद्रौपदीएकदिनअधर्मीकेअन्नखानेसे परमहंस
त्माकाऐसाज्ञानजातारहा किउसनेचोरीकिया और मैंराजा
धनअधर्मीका सदाअन्नखाकर उसकेसाथरहताथा मुझेउस
यइतनाज्ञाननहींआया कि दुर्योधनको तेरेऊपरअधर्मकरने
नाकरता तो कौन बड़ी बातथी ॥

दशवां अध्याय ॥

भीष्मपितामहको श्रीकृष्णमहाराजकी स्तुतिकरना और श्यामसुंदरके ध्यानमें लवलीनहोकर अपनाशरीर त्यागकरना ॥

सूतजीने शौनकादिकऋषीश्वरोंसेकहा कि भीष्मपिता
यहसबज्ञानपाण्डवों और द्रौपदीआदिसेकहकर चतुर्भुज
मेश्वरकाध्यानअपनेहृदयमेंरखलियाऔर श्रीकृष्णजीकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रखकरबहुतस्तुतिकरकेबोले हेज्योतिस्स्वरूपपरब्रह्मआपकेवल
अपनेभक्तोंकी इच्छापूर्णकरनेकेवास्ते अवतारधारणकरतेहैं जि
तरहआप दयाकीराहमेरेसामनेबैठे हैं उसीतरहकृपाकरके बैठेर
ो जिसमेंप्राणछोंड़तेसमय तुम्हारेचरणोंकाध्यान मेरेहृदयमेंब
ारहे आप सबसेपहिलेथे व महाप्रलयमेंभी तुम्हारानाश न हो
र आपकीमायासेउत्पत्ति व पालन व नाशतीनोंलोककाहोता
व आपउत्पन्नहोने व मरनेसेकुछप्रयोजन न रखकर केवल पृ
वीकाभारउतारने व अधर्मी व दुष्टोंको मारनेकेवास्ते अपनी इ
छासे अवतारलेतेहैं व तुम्हारेअवतारलेनेकायहकारणहै किजि
मेंसंसारीलोग आपकीसांवलीसूरति मोहनीमूरतिकाध्यानजो
बगुणोंसेभरीहै अपने हृदयमेंरक्खें व पापोंसेछूटकर भवसागर
रउतरजावैं व तुम्हारीदया व कृपाअपनेभक्तोंपरइतनीहै कि अ
न अपनेभक्तके प्राणकी रक्षाकरनेवास्ते उसकेसारथी होकर
आपआगेबैठे और अर्जुनकोअपनेपीछेबैठाला जिससमयमैंचो
२ बाणअर्जुनपरचलाताथा उससमयकालभी उनबाणोंकेसा
नेहोता तो भागजाता सोआपनेअर्जुनकीरक्षाकरके उनतीरोंसे
चाया और उनबाणोंकाघाव अपनेअंगपरउठाया सो मेरेबाणों
घावसेतुम्हारीसांवलीसूरतिपर रक्तकेछींटेमूंगेकेसमान ऐसेशो
ायमानदिखलाईदेतेथे जिसकीशोभावर्णननहींहोसक्तीव आ
अर्जुनकोइसवास्ते धीर्यदेतेजातेथे जिसमेंउसकापराक्रमकम न
ो और आपके चन्द्रमुखपरटेढ़े २ घूंघरवालेबाल कैसेसुन्दरमा
मदेतेथे जैसेकाले २ भवँरेकमलकेफूलका रसचूसतेहैं व तुम्हा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रेमुखारविंदपर धूरउड़करपड़ने और पसीनाहोनेसे कैसाम
देताथा जैसे फूलपरओसकीबूंदरहतीहै और वहपसीनातुम
पीताम्बरसेपोंछकर दाहिने हाथ कोड़ा व बायेंहाथमेंरास
कीलियेहुये रथकोजल्दीसे मेरीतरफ़ दौड़ातेथे सो मैं चाह
हीस्वरूपआपका मेरीआंखोंमेंबसारहे व तुम्हारेकमलरूपी
ण मेरेहृदयसेबाहर न जावैं आपअपनेभक्तोंकोऐसामान
कि महाभारतहोनेकेपहिले तुमनेप्रणकियाथा कि हमशस्त्र
चलाकर केवलरथवानीकरके शंखबजावेंगे और हमनेप्रति
थीजोमैंभीष्मपितामहकिआपकोलड़ाईमें विकलकरके
प्रणछुड़ाकरतुमसेअस्त्रधराऊं सोआपनेभक्तपक्षकी राहसे
कि मेराप्रणछूटजावेतो सन्देहनहीं परमेरे भक्तकीप्रतिज्ञा
यहसमझकर जबमैंनेअर्जुनकेरथका पहियातोड़कर घोड़ों
रडाला और उसकेरथकीध्वजा व धनुष काटकेगिरादिया
पक्रोधकरके उसीरथकाटूटाहुआपहियाउठाकरमेरेमारनेके
दौड़े उससमयतुमकैसेसुन्दरमालूमदेतेथे जैसेश्यामघटा
केसाथ बड़ेधूमधामसेचढ़े दौड़तेसमयतुम्हारा पीताम्बर जो
थेपृथ्वीपरगिरपड़ा उसके गिरनेकायहकारणहै जबआपने
छोड़करशस्त्रधरातब पृथ्वीयहसमझकर मारेडरकेकांपनेल
श्यामसुन्दरनेमेराभारउतारनेकेवास्ते अवतारलियाहै
भी अपनाप्रण न छोड़देवें पृथ्वीकेहृदयकी बात तुमने
उसको धीर्य्य देनेकेवास्ते अपनापीताम्बरगिरादिया कि
अपनेभक्तोंकाप्रणरखनेकेवास्ते मैंनेअपनी प्रतिज्ञाछोड़ी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भार हम उतारेंगे जिसतरह कोईमनुष्य अपनीबस्तुदूसरेके बोधक
रनेवास्तेगिरोंधरदेताहै उसीतरहतुमनेअपनापीताम्बर,गिराकरपृ
थ्वीकोधीर्यादियाऔरजबमैंचाहताथा कि सबसेनापारडवोंकीमा
रकरहटादूं तबतुममेरेरथके चारों तरफ़आनकर अपनेअनेकरूप
दिखलातेथे जिसमेंमेराचित्तघबड़ाजावै जबमैंअनेकरूप देखने
सेविकलहोकर यहनहींसमझताथा कि इसमेंकौनरूपसत्य और
कौनस्वरूपमायाकाहै तबफिरतुम अपने निजरूपसेरहिकरमेरी
अद्भुतप्रशंसाकरतेथे जबमैंउनबातोंकोसमझताहूं तबमुझेबड़ी ल
ज्जाआतीहै और अपनेकोअपराधीसमझकर आपकेसामने अ
नामुंहनहींदिखलानेसक्ता आपदयालुअपनेभक्तोंको ज्ञानदेक
उनकामनोरथपूर्णकरनेवालेहैं इसलियेतुमने मुझेजोमरनेकेनि
कटपहुंचाया बिनाबुलायेआनकरअपनादर्शनदिया नहींतो मर
णसमयबड़े२ मुनि औरऋषीश्वर औरज्ञानियोंकोध्यानमेंभीतु
म्हारादर्शनजल्दीनहींमिलता किसवास्ते कि अन्तसमय मनुष्य
कोइतनादुःखहोताहै जितनाकष्टसाठहज़ार बिच्छूकेडंकमारने
सेएकबारहोताहै इसलियेउससमय पीड़ासेमनुष्य अचेतहोकर
जिसकाचित्तठिकानेनहींरहता उससमयतुम्हारी कृपाहोनेसे जिस
कोज्ञानबनारहता है वहआदमी तुम्हारेचरणोंकाध्यान हृदयमें
करकर भवसागरपारउतरजाताहै इसलिये मैं तुमसे यहीचाहता
हूं कि यहस्वरूपआपकामेरीआंखोंके भीतरबसकर तुम्हारे चर
णोंमेंमेरामनलगारहै यहस्तुतिकरने उपरान्त भीष्मपितामहने
ज्ञानज्योतिस्स्वरूपकाहृदयमेंरखकर श्यामसुंदरऔरसब रूपी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वर और मुनीश्वरोंकोदण्डवत्करके अपनी आंखबन्दकरली
और योगाभ्यासकेसाथ अपनातनुछोड़कर वैकुण्ठबासपाया
समयदेवतोंने आकाशसे उनपरफूलोंकीवर्षाकिया ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

राजायुधिष्ठिरकाराजगद्दीपरबैठना और भीष्मपितामहकाक्रियाकर्म्मकरना और परीक्षितकेमारनेवाले
त्थामाकाब्रह्मास्त्रचलाना जो उत्तरानामअभिमन्युकीस्त्रीकेपेटमेंथा व श्यामसुंदरकापरीक्षितकीरक्षाक

सूतजीने शौनकादिकऋषीश्वरोंसे कहा कि भीष्मपिता
के मरनेकाशोच श्रीकृष्णजी व पाण्डवोंनेबहुतसाकिया फि
रलीमनोहरने राजायुधिष्ठिरकोसमझाया कि जिसतरहकीम
संसारमेंभीष्मपितामहनेपाई इसतरहकीमृत्यु दूसरेकोपाना
तदुर्लभहै संसारमें जिसनेतनुधारणकिया वहएकदिनअवश्
रेगा इसवास्तेइनकेमरनेका शोकछोड़कर हर्षमाननाचाहिये
कोईमनुष्यका तनुपाकर संसारीमायामोहमेंफँसारहे व परमे
से विमुखरहिकर जन्मअपनावृथागँवावै उसकेवास्तेरोना उ
है सो भीष्मपितामह संसारमेंभक्तिपूर्वक व धर्म्मसंयुक्तरहि
रीरत्यागनेउपरान्त वैकुण्ठकोगये इसलियेइनके मरनेका
करना न चाहिये यहवचनसुनकर राजायुधिष्ठिरने अपनेम
धीर्य दिया व श्यामसुन्दरकी आज्ञासे भीष्मपितामहकी
और कर्म्मकिया जब मुरलीमनोहर व ऋषीश्वर और मुनी
ने राजायुधिष्ठिरको हस्तिनापुरमेंलाकर राजगद्दीपरबैठाल
श्रीकृष्णजी महाभारतहोने व पृथ्वीकाभारउतारनेसेबहुतप्र
होकर बोले हेराजन् तुमप्रजाकापालनकरके कुल परिवार
राज्यकासुखभोगो औरजोकुछतुम्हारेमनमें शोचहै उसको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो यहबातमुरलीमनोहरने राजाकोसमझाकर उनसेअश्वमेधय
ज्ञकराया व कुछदिनवहांरहिकरराजायुधिष्ठिरसेकहा अबहमद्वार
कापुरीकोजावेंगे जिससमयश्यामसुंदरद्वारकाजानेकीइच्छारख
तेथे उसीसमय अश्वत्थामाने शिरमूड़ने और मणिनिकाललेने
की लज्जासेब्रह्मास्त्र राजायुधिष्ठिरआदि पांचोंभाइयोंके जलाने
वास्तेचलाया जबवहअस्त्रअपनापांचमुंहबनाकर पाण्डवोंकीतर
फआया व एकछोटासाअँगारा उसअस्त्रकाउत्तराकेपेटमें जोगर्भ
वतीथी घुसगया व उसकेउदरमें आगजलनेलगी तबवहउसजल
नेसे व्याकुलहोकर नंगेशिर दौड़ीहुई कुन्तीकेपासचलीगई जब
कुन्ती नेउसको अपनेसाथ श्यामसुन्दरकेपास लेजाकर उसके
पेटमें आगजलनेकाहालकहा तबश्री दुःखभंजनने सुदर्शनचक्र
कोआज्ञादी कि तुम उत्तराकेपेटमेंजाकर ब्रह्मास्त्रकी गर्मीसेरक्षा
करो और आपभीश्रीकृष्णजी अंगुष्ठप्रमाण अपनारूपधरकर उ
त्तराकेपेटमें चलेगये और गदाहाथमेंलेकर वहांघुमानेलगे उसस
मय परीक्षितने सांवलीसूरति मोहनीमूरतिकादर्शनपानेसे चैत
न्यहोकर उनकोदूसराबालक अपनीमाताके पेटमेंसमझा जबअ
श्वत्थामाकाब्रह्मास्त्र जो युधिष्ठिरआदिकके जलानेवास्ते पांचमुं
हबनाकरगयाथाश्यामसुन्दरकीभक्तिरखने वसुदर्शनचक्रकेरक्षा
करने से उनपांचोंभाइयोंको जलानेकी सामर्थ्य न रखकर फिर
आया तबअश्वत्थामाने उसअग्निको मंत्रकेबलसे बुझादिया व
उत्तरा राजाविराटकीबेटी अपनीजातिकेअभिमानसे गुरुमुखभी
होकरहरिचरणोंमें अच्छीतरह विश्वास व प्रेमनहींरखतीथीइ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सलिये एकअंगारारूपब्रह्मास्त्रका उसकेपेटमें चलागयाथा सो कु
केकहनेसे श्यामसुन्दरने उसकीभीरक्षाकिया जबवेकुरुठनाथ
रकाजाने लगे तब कुन्ती व द्रौपदी व राजायुधिष्ठिर व अर्जुन
भीमसेन व नकुल व सहदेवने उनकेसामनेहाथजोड़कर कहा
दीनानाथ तुम्हारेजानेसे हमलोगोंको बड़ादुःख मालूमहोता
अबहमारीरक्षायहांकौनकरैगा जितनासुखहमको तुम्हारेचरण
केदर्शनपानेसेमिलताथा उतनाआनंदइसराजगद्दीमिलनेसेन
है तुम्हाराचरणदेखेबिना हमलोगोंको धीर्य्य किसतरहहोगा
कुन्तीहाथजोड़करबोली हे महाप्रभुअबतक मैं तुमको अपने
ईकाबेटासमझकर तुम्हारीमहिमानहींजानतीथी अबमुझे वि
सहुआकिआप परब्रह्मपरमेश्वरकाअवतारहोकर संसारीजीवों
उत्पत्ति व पालन व नाश करतेहैं औरमेरेबेटोंने महाभारतमेंतु
रीकृपासेविजयपायाहै और आपसबऋषीश्वर और मुनि अपने
क्तोंकोदर्शनदेने और भवसागरपारउतारने और धर्मकीरक्षाक
केवास्ते सगुणरूपधरतेहैं नहींतोतुमको क्याप्रयोजनथा जो
जीवोंकेमालिकहोकर मत्स्यऔरशूकरादिकका अवतारलेते
नेवसुदेव व देवकीकेघर जन्मलेकर उनकोएकबेर कैदसे छुड़
मुझे और मेरेबेटोंपर जबजबकष्टपड़ातबतबतुमनेदयाकीराह
नकर हमलोगोंकादुःखदूरकिया अबमैं ऐसाजानतीहूं कि तु
मलोगोंकोराज्यदेकरजातेहो इसलिये हमारीसुधिभूलिजा
सोमुझेराज्यकीइच्छान होकर फिरउसीतरह विपत्ति व बन
चाहिये जिसमेंतुम्हारादर्शनसदाहोताथा यहसुख वा राज्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कामकाहै जहांतुम्हारादर्शन न मिलै धनपानेसेअभिमानअधि
कहोकरतुम्हाराभजननहीं बनिपड़ता इसलिये तुमदीनपरअधि
कदयालुहोतेहो मनुष्यकेवास्तेवहबातअच्छीहोतीहैजिसमेंपरमे
श्वरकाध्यानबनारहैराज्य व द्रव्यपानेसेमनुष्यसंसारीसुखमेंभूल
करपरमेश्वरका प्रेमछोड़देताहै और आपसबके मालिक और ई
श्वरहोकरकिसीकाडर नहींरखते सूर्य्य और चन्द्रमा तुम्हारी आ
ज्ञासेदिनरात्रिफिराकरते हैं और अपनेभक्तोंपरतुमऐसीकृपा औ
दयाकरतेहो कि यशोदापरदयालुहोकर तुमअपनीइच्छासे ऊ
खलमेंबँधिगये नहींतोतीनोंलोकमें कौनऐसाहै जोतुम्हारीतरफ
आंखउठाकर देखसकै जहांकालादिक तुमसेडरकरकांपतेहैं वहां
तुमयशोदाकीछड़ीसेडरतेथे यहसबलीला आपने अपनेभक्तोंके
सुखदेनेवास्तेसंसारमेंकियाहै अबमैंयहचाहतीहूं कि बेटा व भाई
आदि सबपरिवारकीप्रीति मेरेमनसे छूटिकर आठोंपहर तुम्हारेच
रणोंकाध्यान हृदयमेंबनारहै जिसकेप्रभावसे भवसागरपारउतर
जाऊं जबयहबातकहकर कुन्ती श्यामसुंदरके जानेका शोचकर
अतिविलापसेरोनेलगी तबमुरलीमनोहर अपनीमायाफैलाने
उपरान्तमुसकराकरबोले हमतुमको नहींभुलावेंगे तुमहमारी
माताकीजगहहो हमकोद्वारकासेआये बहुतदिनहुये अबवहांजा
कर सबकिसीकोदेखेंगे सात्यकी व ऊधो हमारेसाथी चलनेके वा
ते जल्दीकरतेहैं यहवचनसुनकेराजायुधिष्ठिरने अर्जुनसेकहाहे
भाईतुमअपनीसेना व शूरवीरसाथलेकरश्यामसुन्दरकोबड़ेयत्न
द्वारकामेंपहुंचायदो किसवास्ते किमेरेशत्रुबहुतहैं औरमुरलीम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नोहर महाभारतकीलड़ाईमें हमारेसहायकथे ऐसानहो जो
हमाराशत्रु राहमेंउपाधिकरै जबअर्जुन राजायुधिष्ठिरकी आ
पाकर श्रीकृष्णजीकेसाथ द्वारकाजानेवास्ते तैयारहुये और
मसुन्दर सबकिसीसेबिदाहोके रथपरबैठकरचले तबराजायु
रआदि सबहस्तिनापुरबासी त्रिभुवनपतिकेस्नेहमें विलाप
हुये उनकेपीछेदौड़े व सब स्त्रियांवहांकी रुदनकरके आपसमें
हनेलगीं कि देखोधन्यभाग्य ब्रजकीअहीरिनियोंकेहैं जो श्य
सुन्दरत्रिभुवनपतिकेसाथरासलीलाकरकेअपनाजन्मसुफल
तीथीं औरबड़ेभाग्यरुक्मिणीआदिसोलहहज़ारएकसौआठ
योंके समझनाचाहिये जो ऐसासुन्दर मोहनीमूर्ति स्वामीपा
उसकेसाथ भोग और विलासकरतीहैं ऐसीऐसीबातैं एकदू
कहकर श्यामसुंदरपर फूलवर्षावतीथीं व केशवमूर्ति उनकी
सुनके व सच्चाप्रेमदेखकरअपनी तिरछीचितवनसेउनको दे
सुखदेतेहुयेचलेजातेथे उसदिन श्रीकृष्णजीकेवियोगकादुः
तना हस्तिनापुरबासियोंकोहुआ उसकाहालवर्णन नहींहो
जबश्रीदीनानाथनेदेखा कि यहसब मेरेप्रेममें दूरतकचलेआ
बअपनारथखड़ाकरके सबकिसीको धीर्य्यदेकर बिदाकिया
वहलोग पछितातेहुये हस्तिनापुरफिरगये ॥

बारहवां अध्याय ॥

पहुंचना श्रीकृष्ण महाराजका द्वारकापुरी में व हर्ष मनावना सब द्वारकाबासियों का ॥

सूतजीनेकहा जबसबकोई हस्तिनापुरफिरगये तबश्याम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अर्जुनसेबोले कि रथकोजल्दीचलाओ यहवचनसुनकरअर्जुन
रथहांका जबसेनामोहनीमूर्तिकी विदर्भदेश व कुण्डिनपुर व
न्तीदेश व पंजाब व काश्मीरकी राहसेहोतीहुईचली तबराहमें
बदेशकेराजोंने आनकर अपने अपनेदेशकी सौगातिबृन्दाबन
हारीकोभेंटदिया व उनकादर्शनकरके अपनाजन्मसुफल जा
व राहवाले श्यामसुन्दरका दर्शनपाकर इसतरहउनकी स्तुति
रतेथे कि देखोइन्हीं परब्रह्मपरमेश्वरने पृथ्वीके भारउतारनेवा
संसारमेंजन्मलियाहै जिनकादर्शन ब्रह्मा व महादेवआदि दे
ात्माओंको जल्दीध्यानमें नहींमिलता उनकादर्शनहमलोगोंको
ड़भाग्यसेप्राप्तहुआ और इन्होंने कौरव व पाण्डवोंसे महाभार
कराके पृथ्वीकाभार उतारा व अनेकमनुष्यकहतेथे धन्यभाग्य
डुवंशियोंके हैं जो इनकोअपनानातेदारसमझकर दिनरात्रिइ
की सेवामेंरहतेहैं इसीतरहसबछोटेबड़े उनकी महिमा व लीला
हिकरप्रसन्नहोतेथे जबतीसरेदिन द्वारकापुरीकेनिकटपहुंचकर
चजन्यशंख अपनाबजाया तबसबद्वारकाबासी मुरलीमनोहर
आनेकाहालजानकर बहुतआनन्द होगये श्रीकृष्णजी साम्ब
पनेपुत्र व अनिरुद्धपौत्रको द्वारकापुरीकीरक्षा करनेकेवास्तेछो
यथे यहदोनोंशंखध्वनिसुनतेही अपनीसेना व यदुवंशी व ब्रा
ण व ऋषीश्वरोंको साथलेकर गावते व बजावतेमुरलीमनोहर
आगेसेलेनेकेवास्तेगये व नगरमेंढिंढोरापिटवादियाकिसबको
र्ली व सड़क व अपने २ द्वारेपरमंगलाचारकरैं सो सबद्वारका
सियोंने नगरमेंचन्दनादिक सुगन्धउड़नेकेवास्ते छिड़कवादि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

या व अपने २ द्वारपरसबस्त्रियां अच्छा २ गहना व कपड़ा
करआरतीलेकर बृन्दाबनविहारीके पूजाकरनेवास्ते खड़ी
व अनेकस्त्रियांसोलहो शृंगार करनेउपरान्त अपने २ खिड़
कोठोंपरबैठ व खड़ीहोकर बांकेविहारीकी छबि देखनेकेवा
च्छाकरनेलगीं जिससमय वहसांवलीसूरति मोहनीमूरति
य्यारीसे द्वारकापुरीमेंआये उससमयसबछोटेबड़ोंने उनका
पाकर फूलोंकीवर्षाकिया व जिसतरहमुर्देके तनुमेंप्राण आ
उसीतरह सबोंनेनयाजन्मपाकर हर्षमनाया और मुरलीम
ने मिलतीसमय बड़ोंकोदण्डवत् व बराबरवालोंसेगले मि
छोटोंकोआशिष दिया व प्रजालोगोंकी भेंट हाथसेछूकर
सन्मानकिया और अपनेमन्दिरमेंजाकर माता व पिताके
परशिररक्खा वसुदेव व देवकी व राजाउग्रसेन पाण्डवोंकी
यहोनासुनकरबहुतप्रसन्नहुये और सबद्वारकाबासियोंनेदी
थसेकहा महाराज हमलोगतुम्हारेदेखेबिनाअन्धेहोरहेथे
रहअँधियारीरातिमें बिनाचंद्रमाआंखहोनेसेभी कुछदिख
हींपड़ता औरआंखवालाचंद्रमाकोयादकरताहै वहीहालह
था व द्वारकाबासीस्त्रियांश्यामसुंदरको देखकरइसतरहप्रस
जिसतरहचकोर चंद्रमाकेदेखनेसे आनंदहोजाताहै और
मसुंदर महलोंमेंपहुंचे तबरुक्मिणीआदि सबस्त्रियोंने
हलमें खड़ीहोकरउनकाबड़ासन्मानकिया और उन्होंने
लालजीकेपीछे अच्छागहना और कपड़ानहींपहिनतीथीं
नप्रसन्नहोकरअपना २ शृंगारकिया और एकसाइतमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रअपनाअनेकरूपधारणाकरके सबमहलोंमेंगये और सब छोटे डेद्वारकाबासियोंको सुखदिया॥

तेरहवां अध्याय॥

परीक्षितकाजन्मलेना और राजा युधिष्ठिरकाहर्ष मानना व धृतराष्ट्र और गान्धारीका जंगलमें जाना व कथा माण्डव्य ऋषीश्वरकी॥

सूतजीनेकहा हे ऋषीश्वरो दूसरेशास्त्र व पुराणसुननेसेबहुत दिनमें परमेश्वरकीभक्ति उत्पन्नहोती है और जबभागवत कथा ननेकीकोईइच्छाकरै उसीसमय उसकेपापोंकातीनटुकड़ाहोक एकभागसुननेकी इच्छाकरते व दूसराजातेसमय व तीसराश्रव ाकरनेसे छूटजाताहै व दूसरेधर्म यज्ञ व्रतादिकसम्पूर्णहोनेसे उ के फलमिलतेहैं और भागवतजितनासुनै उतनाफलपावै सोरा ायुधिष्ठिरको हस्तिनापुरकी राजगद्दीहोने परभी श्यामसुन्दर दर्शन पावनेबिना कुछअच्छानहींलगताथा दिनरातउन्हीं के रणोंकाध्यान अपनेहृदयमेंरखकर राजकाजकरतेथे सोतुमलो अबपरीक्षितके जन्मलेनेकाहालसुनो जबपरीक्षितउत्तराकेपेट उत्पन्नहुआ तब आंखखोलकर चारोंतरफ इसइच्छासेताकने गा कि जोस्वरूप मैंनेमाताकेउदरमेंदेखाथा वहकहांहै परन्तुइ भेदको किसीनेनहीं जाना और राजायुधिष्ठिरने बड़ेउत्साह से ान्दीमुखश्राद्धकिया व मंगलाचारमनाकरब्राह्मण व याचकोंको हमांगा दान व दक्षिणादिया जबज्योतिषीपण्डितोंको बुलाक जन्मलग्नकाहालपूछा तबपण्डितोंने विचारकरकहा यहबाल कजन्मलेतेही आंखखोलकर सबकीपरीक्षालेताथा इसलिये प क्षितनामरक्खो यह लड़काबड़ाप्रतापी व बलवान् और नीति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मान् और धर्मात्माराजाहोगा प्रजालोग इससेबड़ासुखपावैं
तुम्हारानाम औ कीर्त्ति व यशइसबालकसे चारोंदिशामेंआ
फैलेगा व बुद्धिमेंबृहस्पति व धीर्यमेंहिमाचल और गम्भीरता
मुद्र शूरतामेंपरशुराम व दातामेंमहादेव व सुखविलासकरने
द्र व सत्यबोलनेवालोंमें तुम्हारेसमानयहलड़काहोकर राज
में इसकीगिनतीहोगी व अधर्मी व पापी व कलियुगकोदरउ
रप्रजाका पुत्रकीतरहपालनकरैगा व अंतसमयजबएकबाल
षीश्वरका इसेशापदेगा तबतक्षकसर्पकेकाटनेसे इसबालक
त्यु गंगाकिनारेहोगी यहबातसुनकरराजाने उदासहोकेज्यो
योंसेपूछा तुमसत्यबतलाओ किसीब्राह्मणकेक्रोधसेतौनहीं
सांपकाटनेसेमरना हमारेकुलमेंअच्छाहोताहै ऐसा न हो जो
सीमहात्मा व ब्राह्मण व साधु व संतकेशाप व क्रोधसेमरज्यो
योंनेकहा हे युधिष्ठिर यहलड़कातुम्हारेकुलमें हरिभक्तहोक
धु व ब्राह्मण व महात्माओंकी सेवामेंरहेगा व मरतीसमय
सुन्दरकेचरणोंकाध्यान हृदयमेंरखकर तनुत्यागकरैगा ऐसा
पी व परमेश्वरकाभक्त आजतकतुम्हारेकुलमेंदूसराकोई न
आहै तुमकोविपत्तिपड़नेसे परमेश्वरकीभक्तिहुईथी और इ
लड़कपनसे हरिचरणोंमें भक्ति व प्रीतिरहैगीयहबातसुनतेही
ष्ठिरआदिक बहुतप्रसन्नहुये व ज्योतिषियोंकोदक्षिणादेकर
किया औरआपसमेंउन्होंनेकहा पांचभाईमें परमेश्वरने यह
काभाग्यमानदियाहै इससेहमारानाम संसारमेंस्थिररहेगा
तसमझकरसबछोटेबड़ेआनन्दहुये व राजायुधिष्ठिरराजगद्दी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तो तेरामनोरथ
नकाम उत्पन्न
ध्यान नारायणजीका किया तब परमेश्वरकी कृपासे
ज्ञानप्राप्तहुआ व ज्ञानकेप्रतापसे ब्रह्माने संसारकी रचनाके
स्वायम्भुवमनु तेरेदादाने परमेश्वरकातपकरके सन्तानधर्मात्मा
पायासो सबमनोरथ मनुष्यका नारायणजीकी कृपासेपूर्णहोता
है परमेश्वरका तपकरनेसे तेरीकामना भी प्राप्तहोगी राजामुझे
अपनीदासी बराबर भी नहींसमझते जोबातमेरी सवति कहतीहै
वहीकरतेहैं मैंजानतीहूं राजाकेनरहनेउपरांत मेरीसवतितुझेदेश
सेनिकालदेवेगीयहबातसुनतेहीध्रुवने अतिलज्जितहोकरनाराय
णजीकेखोजमें घरसेनिकलकर बनकारास्तालिया परवहमनमें
इसबातकाशोच व विचारकरताजाताथा किमैंअज्ञानबालकपर
मेश्वरकापता किसतरहपाऊं जोउनकीशरणमें जाकर अपनी
कामनाकोपहुंचूं उसीसमय राहमेंनारदजीने आगेसे आनकर
मनमेंविचारा कियहबालक थोड़ीबात अपनीमाताके कहनेसे
दुःखितहोकर परमेश्वरकोढूंढ़नेनिकलाहै सोहमइसकीपरीक्षा
लेवें कियहअपनीप्रतिज्ञापरदृढ़है यानहीं ऐसाविचारकर नारद
जीबोले हेराजकुमार अज्ञानतूकिसवास्ते अपनेघरसेनिकलआ
या बाल्यावस्थामें तुझेऐसाक्रोधकरनानचाहिये बालककोकोई
दुर्वचनकहकर फिरप्यारसेबुलावे तोवहउसकेपास चलाजाताहै
सोतैंनेलड़कोंकास्वभावछोड़कर बनकारास्तालिया ऐसीबातक
रना तुझेउचितनहींहै हमतुझको तेरेबापकेपास लेचलतेहैं राज

मारक उनकाप्राणलताथा जबवह एसाअधमकरनलगा तबवहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मान् अैन व स्मरणकर जबतेराभाग्यउदयहो तबतू मेरे पे
तुम्हनलेकर राजाके आसनपरबैठना किसवास्ते किमैं पटरा
हूं सिवायमेरेबेटेके दूसरीरानीकापुत्र राजसिंहासनपर नहीं
सक्ता राजाउत्तानपादनेभी यहबातरानीकीसुनकर जबध्रुवक
छआदरनहींकिया तबध्रुवकोयहबात सौतेलीमाताकी तीख
मानकलेजेमेंलगी इसलियेध्रुववहांसेरोताहुआ अपनीमात
पासआया सुनीतिउसकीमाताने उसेरोतेदेखकर अपनीगोद
ठालियाव कहनेलगी हेबेटातुझकोकिसनेमारा जोतूइतनारु
करताहै ध्रुवकोअधिकरोनेसे ऐसीहिचकीलगगईथी किथोड़ी
तकउससेबोलानहींगया जबरोनाउसकाकमहुआ तबध्रुवअप
मातासेबोला किइससमय हमराजाकेपासगयेतोवहउत्तमहा
भाईकोगोदमें लियेबैठेथे सोहमनेभीचाहाकि पिताकीगोद
जाकरबैठें परराजाने हमकोअपनीगोदमेंनहींबैठाला तबउ
कीमाताने हमसेकहाकि तूपरमेश्वरकाभजन व स्मरणपि
जन्ममेंनहींकरकेप्रारब्धहीनउत्पन्नहुआइसलियेतूराजाकेग
मेंबैठनेयोग्यनहींहै अबभीजाकरपरमेश्वरकातपकरके मेरेपे
जन्मले तबराजाकेआसनपरबैठना सुनीतियहबातसुनकरबो
हेबेटाराजाकीछोटीरानी सचकहतीहै कदाचित् तूपिछलेज
परमेश्वरका तपकियेहोता तोमेरेपेटसेजन्मनलेता इसलि
भीतूबीचशरण नारायणजीके जाकर तप व स्मरण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हालजोउसकेपीछेराजाहुयेथे कहतेहैंसुनो उसकेवंशमेंकईपीढ़ी उपरान्त कि सबकानामसंस्कृत भागवतमेंलिखाहै अंगनामरा जाहुये उसके कोईबेटानहीं था इसलिये उसनेदुःखितहोकर ब्रा ह्मण व ऋषीश्वरों सेकहा कोई ऐसाउपायकरो कि जिसमेंमेरे लड़का उत्पन्नहो ऋषीश्वरों ने राजासेयज्ञकराके प्रसाद उसका राजाको देकरकहा तुमयहप्रसाद अपनी एकस्त्रीकोखिलादो सो राजानेसुनीथा अपनीरानीकोखिलादिया उसप्रसाद के प्रतापसे उसके लड़काहुआ उसकानाम ब्राह्मणोंने वेनरक्खा जबराजाने उसबालकको बहुतकुरूपशूद्र के समानदेखा और ग्रहउसकेबुरे मालूमहुये तबब्राह्मणों से पूछा कि आजतकहमारे कुलमेंकोई लड़का ऐसानहीं उत्पन्नहुआ सबधर्मात्मा व सुन्दरहोतेआयेहैं क्या कारणहै जो यहबालक ऐसाकुरूपहुआ ब्राह्मणबोले कि यज्ञकाप्रसाद भोजनकरतीसमय तुम्हारीस्त्रीने मृत्युनामअपनी माता व अधर्म अपनेपिताको यादकियाथा इसलिये यह बालक अपनेनाना व नानीकेस्वभावपरकुरूप व अभागी उत्पन्नहुआ है यहवचन सुनकरराजाकोचिन्ताहुई परइच्छापरमेश्वरकीइसी तरहपरसमझकर उसबालकका पालनकरनेलगे जबवेनसयाना हुआ तबशिकार खेलनेवास्ते बनमेंजाकर जानवरों को जिनका मारनाअधर्म है राजाके मनाकरनेपरभी मारनेलगा व नगरके ालकों को अपनेसाथ स्नानकरानेवास्ते नदीकिनारे लेजाकर नीमें डुबाकर मारडालता कभी बनमें लेजाकर मुक्का व लात रके उनकाप्राणलेताथा जबवह ऐसाअधर्मकरनेलगा तबवहां

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की प्रजानेजाकर यहहालराजासेकहा कि राजकुमारने हम
लड़कोंकोबिना अपराधमारडाला राजानेकईबेर प्रजाकोसम
बुझाकरबिदाकरदिया औरवेन अपनेबेटेकोसबतरहसे समझा
परवहकहना राजाकानमानकर औरअधिकउपद्रव करनेल
तबएकदिन फिर उसनगरकी प्रजानेजाकर राजासेकहा कि
पृथ्वीनाथहम ऐसीअनीतिहोनेसे आपकेदेशमें नहींरहसक
राजानेप्रजाको अतिदुःखीदेखा तबवेनकोबहुत डाटकेसमझा
कि तू प्रजाकोदुःखमतदे तिसपरवह न मानकर रोता २ अप
माताकेपासजाके कहनेलगा कि राजामुझेवृथा धमकाकर मे
कुछ आदरनहींकरते इसलिये मैं घरसेनिकल जाऊंगा सुनी
उसकीमाताभी अधर्मिणी थी इसकारण वहवेनकी बातसुन
बोली हेबेटातेरेबापकी बुद्धिबूढ़ेहोनेसेमारीगई उसकोबकनेदे
तेरादिलचाहे वैसाकर सुनीथा इसतरह अपनेपुत्रको धैर्य्यदे
जब उसकेबदले अपनेपतिसेझगड़ाकरनेलगी तबराजानेदुःखि
होकर विचाराकि देखोपृथ्वीपतिमैं होकर सबराजामेरेआधीन
तेहैं मैं चाहों तो वेनको उसकी माता समेत अपनेदेशसे निक
दूं पर इसमेंभी मेरी हँसी होगी व मनुष्य इन्हीं स्त्री व पुत्रके
में फँसा रहकर परलोककाशोच नहींकरता सोवही लोग भ
बातसमझावने से बुरा मानते हैं सो मैं किस वास्ते अपना ज
अकार्थखोऊं मेरेपिछलेजन्मका पापउदयहुआ जो ऐसेअध
बेटेनेमेरेयहांजन्मलिया उसकेपापकरनेसे मैं भी नरकभो
जिसकीमाताधर्म व अधर्मकाविचारनहींकरती उसकाबेटा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तरहसेपापीनहोवै अबऐसीअधर्मियोंकी संगतमेंरहनान चाहिये कुसंगमेंरहनेसे कुछसुखनहींमिलता इससेबनमेंजाकर परमेश्वर का स्मरण व तपकरनाउत्तमहै मेरेपीछेजैसाचाहै वैसाहो राजा ने यहविचारकर मनअपनाविरक्तकरालिया व आधीरातकेसमय रानीको सोईहुईछोड़कर बनमेंचलेगये व बीचतप व ध्यानपरमे श्वरकेलीनहुये और उसदिनराजाके निकलजानेकाहाल किसी ने नहींजाना ॥

चौदहवां अध्याय ॥

वेनका राजगद्दीपर बैठना व ऋषीश्वरोंको हरिभजन करनेसे वर्जना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसेकहा कि जबराजाअंग बिनाकहेरातको ब नमेंचलेगये तबप्रातःकालमंत्रियोंको यहसमाचारसुनकर बड़ा खेदहुआ और बहुतढूंढ़नेपरभी उनकाठिकानानहींलगा व बिना राजाके उसदेशमें चोर व ठग उपद्रवकरनेलगे जबब्राह्मण व ऋ षीश्वरोंने बिनाराजाकेप्रजाको दुःखीदेखा और दूसरेकिसी को राजाअंगकेवंशमें न पाया तबलाचारीसे आपसमेंसम्मतकरकेवे नकोराजगद्दीपरबैठाला सो वेनने राजसिंहासनपरबैठतेही डाकू चोरोंकोपकड़कर मारनाआरम्भकिया सोउसकेराज्यमें चोरी डाकूकानामबाक़ी न रहकर वहसबअधर्म करनेवालेउसका राज्यछोड़कर ऐसेभागगये कि जैसेसांपकेडरसे चूहेभागजाते व जो राजाअपने देशकापैसा अंगको नहींदेतेथे वहलोग भी राजावेनकी आज्ञापालन करनेलगे जबवेनसातों द्वीपका सार्वभौमप्रतापी राजाहुआ कि जिसकासामना करनेवाला कोईदू

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सरासंसारमें न रहा तबउसने राज्य व धनकेअभिमानसे अ
होकर यहबातविचारा कि दूसरेदेवताके नामपर यज्ञ व दा
जप व तप आदिक किसीकोकरना न चाहिये सबकोई देव
पितरकी जगहपर हमारीपूजा कियाकरैं किसवास्ते कि स
भोजन व बस्तुदेकर मैंपालन करताहूं ऐसाविचारकर वह
श्वरकोभूलगया व उसनेअपने राज्यभरमें ढिंढोरा पिटवा
किकोईमनुष्ययज्ञ व पूजा व श्राद्ध व होम व दान आदिकपर
र व देवता व पितरोंकेनामपरनकरैं जिसको जोकुछकरनाहो
मेरापूजनपरमेश्वर व देवता व पितरोंकीजगहकियाकरैं जो
ऐसानहींकरैगा उसकोहमदण्डदेवैंगे इसतरहढिंढोरापिटवा
परांतराजावेन अपनीसेनासाथलेकर दूसरेराजाओंके देश
ग्विजयवास्तेचला जहांवहपहुँचता वहांकेराजा अनेकप्रका
बस्तुभेटदेकरउससेमिलतेथे तबराजावेनउनसेकहताथा कि
हमारीआज्ञामानो तो अपनेराज्यभरमें ऐसाउपदेशकरो कि
ईमनुष्य यज्ञ व दान व जप व तप आदिक किसीदेवताके
पर न करैं जिनकोकरनाहो सो हमारीपूजाकरैं वहसबला
सेअपने प्राण व धनजानेकाभयसमझकर उसकीआज्ञा
लेतेथे जबराजावेनके डरसेसातोंद्वीपमें यज्ञ व दानादिकशु
र्मकरनालोगोंनेछोंड़दिया तबअधर्म व पापका अधिकारह
ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंकाकर्म्म व धर्म्मछूटनेलगा जबभृगु व
ष्ठादिक ऋषीश्वरोंने इसतरहपर राजावेनकाअधर्म्मदेखा व
नेजप व पूजामेंविघ्नसमझा तबसरस्वतीकेकिनारेबैठकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में ऐसाविचारकिया कि जिसदेशमेंराजानहींरहता वहांकीप्रजा
अपनेमनमानापापकरतीहै किसीकाडरनहींरखती व चोरआदि
कअधर्मीलोग सबकोदुःखदेतेहैं इसकारण धर्म्मकीहानि व पाप
कीवृद्धिहोतीहै व सबअधर्मी व पापियोंको दण्डदेने व धर्म्मकीर
ाकरनेवालेराजाहोतेहैं सो यहराजावेनऐसाअधर्मीउत्पन्न हु
आ कि जिसनेसंपूर्णधर्म्म संसारसेउठादिया इसकाक्याउपायक
नाचाहिये ऐसाविचारकरऋषीश्वरोंने आपसमेंकहा हमलोगों
नेउसको राजसिंहासनपरबैठालाहै इसवास्ते एकबेरचलकरउसे
मझानाचाहिये कदाचित्हमारेबर्जनेसे उसनेअधर्म्मकरनाछों
ड़दिया तो अच्छी बातहै नहींतो उसकादूसराउपायकरैंगे यह स
मतकरकेभृगु व वशिष्ठादिकबहुतसेऋषीश्वर व ब्राह्मणइकट्ठेहो
करराजमन्दिरपरगये जबराजानेदण्डवत्करकेउनकोबैठाला त
ऋषीश्वरबोले हे राजा हमतुझेएकबातकहने व समझानेआये
उसको अंगीकारकरनेमें तेराकल्याणहै नहींतो नष्टहोजायगा
राजानेपूंछा कि वहकौनसीबातहै कहो तब ऋषीश्वरोंनेकहा कि
हेराजन् हमलोगोंको तुमयज्ञ व तपआदिककरनेसे क्योंमना क
रतेहो व संसारीमनुष्योंका शुभकर्म्म करनेसेमनाकरके कहतेहो
कि देवता व पितरोंकीजगह हमारीपूजाकरो यहबात किसी को
अच्छीनहींलगती हमलोगों का यहीधर्म्महै कि यज्ञ व होम व
ध्यान नारायणजीका कियाकरैं यहवचनसुनकर राजाबोला तु
म्हारे वेद व पुराणमेंलिखाहै कि राजा नारायणजीकास्वरूप है
इसलिये तुम्हैं हमारीआज्ञा माननाचाहिये और मेराकहना न

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मानोगे तो तुमलोगोंकोदण्डदूंगा ऋषीश्वरोंने जबयहबात
तब आपसमें सम्मतकिया कि ऐसेपापी व अधर्मीराजा को
डालनाउचितहै ऐसाविचारकर किसी ऋषीश्वरनेकुश व
ने जलहाथमेंलेकर कुछमंत्रपढ़के ऐसाशापदिया कि राज
उसीसमयमरगया व ऋषीश्वरलोग अपने २ स्थानपर चले
और सुनीथा वेनकीमाताने यहहालसुनकर बहुतविलापकि
व इसविचारसे लोथउसकीनहींजलाई कि ऋषीश्वर व ब्राह्म
को सबसामर्थ्यहै कदाचित् पीछेसेप्रसन्नहोकर इसेफिरजि
वैं इसीआश्रयपर अंतड़ीनिकलवाकर पेटउसकाधुलवाडाल
मसालाभरवाकर लोथउसकी तेलमेंरखछोड़ी जिसमेंगलैस
हीं वेनकेमरनेउपरान्त फिरयज्ञ व होमादिकशुभकर्म्म संस
होनेलगे परराजाके न रहनेसे फिरचोरवठग प्रजाकोदुःखदे
गे व अधार्मियोंने निडरहोकर मनमानापापकरना आरम्भ
यहदशादेखकर फिर ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंनेआपसमेंविचा
बिनारहनेराजाके संसारमें धर्म्मनरहकर सबलोग वर्णसंक
जावैंगे व राजनीतिमेंलिखाहै किजिसदेशमेंराजानहो याज
जाअधर्म्मी और मूर्खहो याजिसदेशमेंस्त्रीराज्यकरै या जि
नपर कईराजाहोवैं वहांबसनेसे धर्म्मनहींरहता ऐसीजगह
उचितनहीं है इसलियेदूसरेराजाका उपायकरनाचाहिये
जाके प्रजासुखनहींपावैंगे व नारायणजीकीकृपासे वेनभी
कहै परवह अपनेअधर्मको न छोड़ैगा इसलियेउसकोजि
कैसाहै जैसेकोईसांपकोदूधपिलावै परयहध्रुवभक्तके कुल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हीथी सो वेनकेलोथमें भी कुछउसके धर्म्मकाअंशहोगा इस
ास्ते इसलोथमेंसे एकबालक उत्पन्नकरके राजसिंहासनपर
ठालनाचाहिये जिसमेंप्रजा सुखपावै व धर्म्मकीरक्षाहो सो च
नकरवेनकी लोथदेखनाउचित है यहबात आपसमें विचारकर
गुआदिक ऋषीश्वरोंने कि उनका परमेश्वरका तप व जपकर
से सबसामर्थ्यथी जाकरसुनीथासेपूंछा वेनकीलोथकहांहै यह
ात सुनतेहीसुनीथाने ऋषीश्वरों से दण्डवत्किया व बहुत प्रस
नतासेलोथ वेनकी उनकेसामने लेआई तब ऋषीश्वरोंने कुछ
त्रपढ़कर राजावेनकीजंघा मथानीसे दहीकेसमानमथी जिस
हदहीमथनेसे मक्खननिकलताहै उसीतरहजंघामथनेसे एक
रुषनाटा व कालारंग अतिकुरूपउत्पन्न होकरबोला हेऋषी
रोमुझे क्याआज्ञादेतेहो जब ऋषीश्वरोंनेदेखा कियहमनुष्य
ज्यकरनेयोग्यनहीं है तबउससेकहा तू बनमेंजाकरभिल्लोंका
जाहो सो वहउनकी आज्ञासे बनमेंजाकर भिल्लोंका राजाहु
उसीकेवंशमेंमल्लाह व मुसहरआदिकउत्पन्नहोकर आज
क संसारमें वर्त्तमानहैं व उसपुरुषके निकलतेही सबपाप सुनी
का वेनकेशरीरसे बाहर निकलगया॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

ऋषीश्वरों का उसकी दाहिनी भुजासे राजाप्टथु व अरुचिनाम स्त्री को उत्पन्न करना॥

मैत्रेयजीबोले हेविदुर फिरऋषीश्वरोंनेवास्ते उत्पन्नहोनेएक
जाबहुतसुंदर व नीतिमान्के दाहिनीभुजावेनकीमथी तोउसमें
कपरुषअतिसुन्दर व तेजवान् व विशालशरीर व लम्बीभुजा व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकस्त्रीरूपवती दोमनुष्यउत्पन्नहुये सो ऋषीश्वरोंनेउसपु
नामपृथु व स्त्रीकानाम अरुचिरखकर उनदोनोंका बिवाह
मेंकरकेपृथुसेकहा तुमसातोंद्वीपकाराज्यकरो व ऋषीश्वरों
पनेज्ञानकीदृष्टिसेजाना कि यहदोनों लक्ष्मीनारायणका
रहैं यहबात समझतेही ऋषीश्वरोंने बड़े आनन्द से पृथुको
सिंहासनपर बैठालने चाहा तब कुवेरदेवताको बुलाकरकह
जिस सिंहासनपरवेन अधर्मी बैठताथा वहराजापृथुके बैठ
ग्यनहींहै इसलियेतुमदूसरासिंहासन बहुतअच्छा पृथुकेबै
वास्तेलावो उसीसमयकुवेरदेवता एकसिंहासनजड़ाऊबहु
मलेआये सोऋषीश्वर व देवतोंनेपृथुकोराजसिंहासनपर
कर दण्डवत्किया व वरुणदेवतानेछत्र व पवनदेवताने च
नागदेवतानेमणि व पृथ्वीनेखड़ाऊं व सरस्वतीने मोतियोंक
व महादेवनेतलवार व विष्णुनेसुदर्शनचक्र व पार्वतीजीने
व त्वष्टादेवतानेरथ व अग्निदेवतानेधनुषबाण व समुद्रनेश
कर राजापृथुकोभेंटदिया इसीतरह और सबदेवताभी उ
वस्तु इन्द्रपुरीकेसमानलाकर राजापृथुको भेंटदेतेगये व इ
से अप्सरालोगोंनेआनकर राजाकोनाच दिखलाया व
नेगानासुनाया व सिद्ध व चारणलोगोंने आकाशसे स्तुति
राजापर फूलवर्षाये व भाटोंनेआनकरराजापृथुकी बड़ाई
त्वपढ़के पिछलेप्रतापी राजाओंकी उपमादी उनकावच
कर राजानेभाटोंसेकहा कि अभीतक मैंनेकोई ऐसाबड़
कामनहीं किया कि तुमलोग इतनी स्तुतिकरतेहो जिसमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुछ गुणानहींहोता भाटलोग अपनेलोभके वास्ते उसमनुष्यकी बड़ाई इन्द्रकेसमान करतेहैं यहबात अनुचितहै और जोमनुष्य इसतरह अपनीबड़ाई सुनके प्रसन्नहोताहै उसेमूर्ख समझना चाहिये और जिसबातकाअपनेमेंगुण न हो व कोईदृष्टांत उसकोदेवै तो निस्संदेह समझनाचाहिये कि यहहमारीहँसी करताहै सो हे भाटो जबहम कुछअच्छाकामकरैं तबहमारी स्तुतिकरना अभी बुपरहो मनुष्यबड़ाईके योग्यनहीं हैनारायणजीकी स्तुतिकरना चाहिये जिन्होंने मनुष्यको उत्पन्नकरके उसेमहत्त्वदिया व उस कहाथसे शुभकर्मकराते हैं तबवहस्तुति योग्यहोता है वहमनुष्य कदाचित् किसीकोएकवर्ष या दशवर्ष भोजनवस्त्रदे तो उसेदुःख सालूमहोताहै व स्तुतियोग्य भगवान्जीहैं जो सबकोपालनकर संसार व वैकुण्ठका सुखदेते हैं यहवचन सबकिसीने सुनकरराजाकी बड़ाईकी ॥

सोलहवां अध्याय ॥

भाटोंका बिदाहोना व राजापृथुकी जन्मकुण्डली का फल पण्डितोंको कहना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसेकहा कि भाटों ने राजाका वचनसुनकर विनयकिया हेपृथ्वीनाथ आपनारायणजीका अवतारहैं तुम्हारी बड़ाईकरना भगवान्जीकी स्तुतितुल्यहै इसलिये अपनी जिह्वा पवित्रकरनेके वास्ते तुम्हारीस्तुति करतेहैं किसवास्ते कि हमलोगोंने अपनापेटपालनेवास्तेझूठ व सच्चबहुतसीबड़ाईऔरलोगोंकीहै औरआपऐसेअच्छे२कामकरैंगे कि आजतककिसीराजा ऐसेकर्म संसारमेंनहींकिये जबभाटलोग ऐसेवचनकहकेराजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेद्रव्यलेकरअपने २ घरचलेगये तबज्योतिषीपण्डितोंने
की जन्मकुण्डलीबनाकर ग्रहोंकाफल इसतरहपर वर्णनि
कियेसातोंद्वीपके राजाहोंगे व अपनीभुजाकीसामर्थ्यसे सबप
के राजाओंकोजीतकरउदयास्ताचलतक राज्यकरैंगे व पृथ्
गौकेसमानदुहकर उसेकन्यातुल्य व प्रजाकोपुत्रकीबराबरस
गे और ब्राह्मण व ऋषीश्वर व साधु व सन्तकोनारायणरूपस
गे व आठमहीनेप्रजासे पृथ्वीकादेनलेकर चारमहीने बरसा
उनकोअपनेपाससे भोजन व वस्त्रदेवैंगे व बिनाअपराध किस
दण्डनहींदेंगे जबइन्द्रडाहसे उनकेराज्यमें पानी न बरसा
तबराजापृथुके प्रतापसे प्रजाके इच्छाकरनेकी समय वर्षाहोग
राजापृथु सौ अश्वमेधयज्ञ वास्तेप्रसन्नहोने भगवान्जीकी
इच्छाकरैंगे जबनिन्नानबे यज्ञउनके अच्छीतरह संपूर्णहोक
वांयज्ञआरम्भहोगा तबराजाइन्द्र अपने इन्द्रासन लेनेके
योगीकारूपबनाकर श्यामकर्णघोड़ा उनकाचुरा लेजावैंगे
बेटा राजापृथुकाघोड़ा इन्द्रसेछीनलेआवैगा तबइन्द्र उससे
मानकर छलकरनेवास्ते अनेकतरहका रूपधारणकरैंगे उ
रूप धारणकरनेका हालसुनकर कलियुगवासी मूर्खलोगभ
सरोंको ठगानेकेवास्ते अनेकप्रकारका रूपधरैंगे व नारायण
यज्ञशालामें प्रकटहोकर राजापृथुको दर्शनदेवैंगे व सनकादि
ऋषीश्वर राजमन्दिरपर आनकर इनकोज्ञानसिखलावैंगे
यहराजा परस्त्रीको माता व दूसरेका धनमट्टीसमान समझ
सदापरमेश्वरके भजन व स्मरणमें लीनरहैंगे ऐसा कहकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिषीलोग राजासे दक्षिणालेकर अपने २ घरचलेगये व भृगु आदिक ऋषीश्वर और देवता राजाको आशीर्वाददेकर अपने २ स्थानकोपधारे॥

सत्रहवां अध्याय॥

राजापृथुका प्रजाके दुःखपाने से धरतीपर क्रोध करना॥

मैत्रेयजीनेकहा हेविदुरजब देवता व ऋषीश्वरबिदाहोगये तब राजापृथु साथधर्म व नीतिके राज्यकाजकरनेलगे सोएकदिन स प्रजाने उनकेपासआनकर विनयकी किमहाराज आपहमारेरा जा व मालिकहैं शास्त्रकेअनुसारआपको हमारापालन जो मारे भूखकेमरतेहैं करनाचाहिये जिसतरहवृक्षभीतरसे खोखलेहोजा हैं उसीतरहहमलोगोंकाकलेजा व पेटमारेभूखकेजलताहै अन्न फलखानेसेसबलोगजीतेहैं सोराजावेनकेपाप व अनीतिकरनेसे थ्वीनेसबअन्न व फलअपनेमेंचुरालिये जोअन्नहमलोग पृथ्वी रबोतेहैं सो नहींउगता व जो वृक्ष पहिलेसेउगेहुये हैं उनमें फल हींलगते इसलियेहमलोग अपनेलड़केबालोंसमेत खानेबिना रतेहैं सो आपकोधर्मात्माराजा समझकरअपनादुःखकहा को ऐसाउपायकीजिये कि जिसमेंपहिलेकीतरह अन्न व फलपृथ्वी उत्पन्नहु आकरैं यहबातसुनतेही राजानेपृथ्वीपरक्रोधकरके ध षबाणअपनाउठालिया व बाणसाधकरकहा कि अभीएकतीर रके पृथ्वीकोटुकड़े २ करडालूं पृथ्वीराजाको ऐसेक्रोधमेंदेखक उसीसमयगोरूप धारणकरकेडरती व कांपतीहुई सामनेआई और राजानेअपनेज्ञानसे पहिंचानलिया कि यहगोरूपीपृथ्वी है

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिसपरभी राजाने क्रोधवशहोकर धर्म्म व अधर्म्मका विचा
करके जबउसेतीरमारनेकीइच्छाकी तबगोरूपीपृथ्वीवहांसे
करसबलोकनमेंदौड़ीगई व राजाभीधनुषबाणलियेहुये रथ
ठकरउसकेपीछे खरेदेजातेथे जबउसेकिसीजगह अपनेप्राण
बचाव न दीखा तबराजाकेसामने खड़ीहोकरबोली कि हे पृ
नाथ आपनहींजानते वेदशास्त्रमें गोकामारनाबड़ापापहै राज
जवाबदिया शास्त्रमेंऐसालिखाहै कि जिसकिसीसे संसारीज
दुःखपावैं उसकामारनापाप न होकरधर्म समझनाचाहिये
जीने जो औषध व अन्न संसारीजीवोंकेपालनहेतु प्रगटकिय
उसको तैंनेछिपालिया राजाओंकायहीधर्महै किजोउनके
कोदुःखदेवै उसेमारडालैं यहबातसुनकर फिरगोरूपीपृथ्वीने
हा हेराजन् जबमुझको हिरण्याक्षदैत्य पातालमेंलेगयाओं
स्तेरहनेजीवोंके जगहनहींथी तबनारायणजी बाराहअवता
रणाकरकेमुझे पातालसेलाये और पानीपरस्थिरकरके सबज
को मेरेऊपरबसाया कदाचित्तुम मुझेमारडालना चाहते हैं
सबप्रजाको कहांरक्खोगे राजानेकहा मुझमेंइतनीसामर्थ्यहै
तेरेमारनेउपरांत अपनेतपोबल व नारायणजीकीकृपासे महा
यकेपानीपर प्रजाकोबसाऊंगा गोनेयहबातसुनकर अपनेज
मालूमकिया किराजाबड़ेप्रतापी व परमेश्वरकाअवतारहैं जो
गे सोकरैंगे अबबिनाइनकेशरणागये मेराप्राणबचनाकठिनहै
विचारकरपृथ्वीनेराजासे विनयपूर्वककहा कि हेपृथ्वीनाथ
सापुरुषपरमेश्वरकाअवतारसबकरसकेहैं जोआज्ञादेव सोमैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अठारहवां अध्याय॥

राजाका सबअन्न व औषध गोरूपी पृथ्वीको दुहिकर निकालना॥

मैत्रेयजीबोले हेविदुर गोरूपीपृथ्वीनेराजासेकहा किमहाराज मैंने वेनके अधर्म करनेसे अन्न व औषधआदिक इसवास्ते अपनेमें छिपालिया कि वेनके राज्यमें संसारी लोग होम व दानकर नाछोंड़कर सबअन्न अपनेखर्चमेंलानेलगे व देवता व अग्निका भागदेना उन्होंनेबन्दकरदिया इसलियेअधर्मी लोगोंका पालन करना मैंने उचितनहींजाना अबतुमधर्मात्माराजा अवतारलेक पहिलेकीतरह अन्न व फल उत्पन्नहोना चाहतेहो तो तुम वेद कामंत्र पढ़कर साथयोगाभ्यासके गोकेसमान मुझेदुहो जो कुछ मैंने गुप्तकरलिया है और जिसचीज़की इच्छा तुमकोहोगी सब रेमें दूधकीतरह निकलैगी व पहाड़ोंका बहुतसाबोझ मेरेऊपर ठिकानेरक्खाहै आपउसेउठाकर एकतरफ़ धरदीजिये तोपृथ्वी हुतसी खालीहोजावै व अनेकजगह ऊंचीनीची धरतीजो गड़हे कसमानहै उसेपाटकर बराबर करदीजिये तबमेरेऊपर सब जीव आरामसेरहकर खेतीआदिकव्यापार करके बड़ासुखपावैंगे व किसीकोदुःख न होगा व बरसातबीतनेउपरांत भी वास्तेपीनेजीव व सींचनेखेतोंके सबजगहपानीरहैगा राजापृथुने यहवचनसुनतेही अपने धनुषकीनोकसे पहाड़ोंकोजो बीचमेंजगह छेंके उठाकर उत्तरदिशामें धरदिया सो तीनतरफ़ पृथ्वीखालीहोगई व जिसजगहगड़हेथे वहांपर छोटेछोटेपहाड़ोंको रखकरअपनेधनुषसे ठोंक दिया तो वहधरतीभी बराबरहोजानेसे राजानेबहुतजगह नगरव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क़िला व गांव जहांजैसा उचितजाना तैयारकराके वहांप्रजा
बसाया और जहांकहीं तालाब व बावली व कुवांआदिकका
जनथा बनवादिया जिसमेंसबजीवोंको सुखमिलै तब गोरू
थ्वीने प्रसन्नहोकर कहा हे पृथ्वीनाथ अबमुझेदुहो परदुहने
बर्त्तन व बछड़ेकी सूरतवास्ते निकालने अनेकबस्तुओंके जुदे
बनाओ जिसमेंसबपदार्थ मेरेमेंसेनिकलैं पहिलेभृगु व दुर्वासा
दिकऋषीश्वरोंने गोरूपी पृथ्वीकोदुहा तो उसमेंसे वेदनिक
ब्राह्मणोंने प्रसन्नहोकरकहा हमलोगोंको यहीचाहियेफिरदे
व गन्धर्व व दैत्य व राजापृथुआदिक ने उसगोकोदुहकर आदे प्रक
प्रकारकाफल व अन्न व औषधआदि सबबस्तुप्रयोजनकी उ नहींथ
से बाहरनिकाली परदुहनेकाबर्त्तन व बछड़ेकास्वरूप पृथक्
नायाथा हेविदुर पृथ्वीकामधेनु गायकेसमानहै इसलिये स
सीने अपनी २ इच्छापूर्वक गोरूपी पृथ्वीसे दुहिकर सबतरह
बस्तुनिकालली व देवता व ऋषीश्वरोंने पृथ्वीकोआशीर्वादि
किपहाड़ व समुद्रादिककाबोझतुझेकुछनहीं मालूमहोगा प
अधर्मी व पापी व साधु व ब्राह्मणकेदुःखदेनेवाले जबतेरेऊपर
नाचरणारक्खैंगे तबतूउनकेभारसे दुःखीहोगी उससमयनारा
जीअवतारलेकर अधर्मियोंकोमारके तेराबोझदूरकरैंगेयहवर
देवता व ऋषीश्वरोंका सुनकर पृथ्वीअपनानिजरूपधरकेरा
थुको आशीर्वाददेकर अपनेस्थानकोचलीगई व संसारीजीव
व फलउत्पन्नहोनेसे प्रसन्नहोकरअपनेकर्म व धर्ममेंलीनहु
रनगर वगांवमेंसुखपूर्वकरहकर राजापृथुको आशीर्वाददेने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उन्नीसवां अध्याय ॥

राजा पृथुका सौ अश्वमेध यज्ञ करना ॥

मैत्रेयजीनेविदुरसेकहा किजबसबप्रजाराजापृथुकीआनन्द हु
शहुई तबराजानेऋषीश्वर व ब्राह्मणोंकोबुलाकर सौअश्वमे
ज्ञकासंकल्पकिया व ब्रह्मावर्त्तमें स्वायम्भुवमनुकेस्थानपर य
ज्ञकरनेलगे सोराजापृथुकीनीति व धर्मकरनेसेघी व दू
दहीकीनदी संसारमें प्रकटहोकरबहनेलगी व रत्न व मोती
ना व चांदी व तांबाआदिककीखानैं समुद्र व पहाड़ोंमें बि
दे प्रकटहोगईं इसलियेउनकेराज्यमें कोईप्रजादुःखी व दरि
नहींथा जबराजानेशास्त्रकेअनुसार श्यामकर्णघोड़ा छोंड़कर
अपनी उसकेसाथकरदी तबवहघोड़ा सातोंद्वीपमें फिरकर
आया किसीदूसरराजाको ऐसीसामर्थ्यनहींहुई जो राजापृ
काघोड़ाबांधिसकै सबराजाउनकेआधीनरहकर अपने २ देश
पैसाउनको देतेथे जबइसीतरहराजाने निन्नानबेयज्ञसम्पूर्ण
नेउपरांत सौवांयज्ञआरम्भकरके श्यामकर्णघोड़ाछोंड़ा तबइ
ने चिन्ताकरकेविचारा कि सौवांयज्ञसम्पूर्णहोनेमें राजापृथु
इन्द्रासनछीनलेवैंगे इसलियेयहघोड़ा लेनाचाहिये जिसमें
यज्ञसम्पूर्ण न होनेपावैं ऐसाविचारकर इन्द्रअपनेबेटेसेबोला
तू जाकरयहघोड़ा किसीतरहपकड़के हमारेपासलेआव जब
इकाबेटा वास्तेपकड़नेघोड़ेकेआया तबउसकेसाथ बड़े २ यो
देखकरडरसे घोड़ाधरनेनहींसका व इन्द्रकेपास जाकर कहा
मेरीसामर्थ्यनहीं जो घोड़ापकड़सकूंतुम्हैंबलहो तो पकड़ला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किं यहवचनसुनकर इन्द्रनेविचारा किराजापृथुबड़ेधर्म्मात्मा
बसा वान्हैं उनसेसन्मुखलड़करहम घोड़ालाननहींसक
जनकरके घोड़ालानाचाहिये ऐसाविचारनेउपरान्त इन्द्रयो
थ्वीने बनकर घोड़केपासगया जबराजाकेनौकरोंने योगीस
बर्त्तसको वहांजानेसेमनानहींकिया तबइन्द्रउसघोड़की
बनाकर आकाशमार्गसे अपनेलोककोलेचला जबराजाके
दिखो उड़नेकीसामर्थ्यनहींरखतेथे यहहालदेखा तबराजा
ब्राह्कहा कि महाराजएकमनुष्य योगीरूपबनकर घोड़ा
व हमें उड़ालेगया यहवचनसुनतेहीराजाने ब्राह्मणोंसे पूछा
प्रमलोग अपनीज्ञानदृष्टिमें विचारकरौ वहयोगीकौनथा
ड़ाहमारालेगया ब्राह्मणोंने देवदृष्टिसेदेखकरकहा हेराजन
तुम्हारा इंद्रइसडरसे अपनेलोकमें लियेजाताहै कि सौय
र्णहोनेसे इन्द्रासन मेराछूटजावेगा यहवचनसुनकर राज
मैं इन्द्रलोकलेनेकी कुछ इच्छानहीं रखता परन्तुइन्द्र
यज्ञबन्दकरनाचाहताहै इसलिये घोड़ाअवश्यमँगवाना
यहबातब्राह्मणोंसे कहकरराजाने बिजिताश्व अपनेपुत्र
ज्ञादी कि तू अभीजाकर घोड़ालेआव व अत्रिमुनिको
थकरदिया जबवहदोनों वहांसेउड़तेहुये इन्द्रलोकके पास
तबऋषीश्वरने घोड़ालिये जातेदेखकर बिजिताश्वको
दिया राजकुमारनेइन्द्रको घोड़ासमेतदेखतेही सरवन्तन
णधनुषपरधरकर जैसेचाहा कि इन्द्रकीछातीमेंमारैं वैसे
पनेप्राणकेडरसे घोड़ावहांछोड़करअन्तर्द्धानहोगया बि

ने घोड़
घोड़ाछ
राउत्प
वपृथु
पर चु
धनुष
षीश्व
धयज्ञ
द्र अमृ
से राज
ज्ञशा
तकरो
छाहो
कीच
हैं उन्ह
ो व तु
व इन्द्र
राडरचै
किया
ा ब्राह्म
यज्ञ
पूर्ण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने घोड़ापृथुकेपासलाकर हालभागनेइन्द्रकाकहदिया जब
घोड़ाछीनजानेसे बहुतलज्जितहुआ तबअपनीमायासे अँ
राउत्पन्नकरके कईबारधोखादेकै घोड़ाचुरालेगया पर बि
वपृथुकाबेटा जाकरछीनलाया जबइन्द्रनेकईबेर घोड़ाछी
पर चुरानाउसका न छोंड़ा तबराजापृथुने क्रोधवन्तहोकर
धनुषबाण इन्द्रकेमारनेवास्तेउठाया उससमययज्ञकरने
ऋषीश्वरने राजाकोसमझाया कि हेपृथ्वीनाथ तुमने सौ अ
धयज्ञका संकल्पकियाहै क्रोधकरनेसे संकल्पमेंविघ्नहोगा
द्रअमृतपीनेसे किसीतरहमरनहींसक्ता जबऋषीश्वरोंकेसम
से राजाकाक्रोधशान्तनहींहुआ तबब्रह्माजीने नारदमुनिसमेत
ज्ञशालामेंआनकर राजासेकहाकि तुमइन्द्रकेमारनेकीइच्छा
तकरो तुम्हारेहाथउसकी मृत्युनहीं है तुम्हैंइन्द्रासनलेनेकी इ
छाहो तो उसकोइन्द्रपुरीसे निकालकर वहांकाराज्यभोगो वमु
ककीचाहनारखतेहो तो सौवांयज्ञमतकरो जितनेयज्ञ तुमनेकि
हैं उन्हींयज्ञोंकरनेमें परमेश्वर तुमकोदर्शनदेकर मुक्तिपदवीदे
गे व तुम्हारेयज्ञकरनेकाहाल संसारीलोगसुनकर शुभकर्मकरैं
व इन्द्रकेभुलावादेनेकासमाचारपाकर कलियुगवासीलोग पा
एडरचैंगे जबब्रह्माजीकेसमझानेसे राजापृथुनेक्रोधअपना क्ष
किया तबब्रह्माजी नारदमुनिसमेत अपने लोककोगये तबरा
ब्राह्मणोंसेबोले मैं इन्द्रलोककीकुछइच्छानहींरखता निन्ना
यज्ञ अच्छीतरहसम्पूर्णहुये एकयज्ञबाकीहै वहमैंनहींकरूंगा
पूर्णाहुति अग्निकुण्डमेंडालदेव जैसेऋषीश्वरोंने मंत्रपढ़क

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किर्णहुतिकिया वैसेब्रह्माने नारायणजीकेपास जाकरकहा
बसा एकइन्द्रकेसामने दूसराकोई सौयज्ञकरनेनहींसक्ता व
जन करमभक्तकासंकल्प झूंठाहोना न चाहिये व आपसबका
थ्वीने कहैं जैसाउचितहोवैसाकीजिये यहवचनसुनतेही पर
बर्त्त लोकीनाथ ब्रह्मा व इन्द्रको अपनेसाथगरुड़परबैठालक
बना तिडालनेकेसमय उसयज्ञशालामेंपधारे उन्हैंदेखतेही
दिक व सबब्राह्मण व ऋषीश्वरखड़ेहोकर वैकुण्ठनाथको दण्ड
ब्राह्म के स्तुतिकरनेलगे ॥

बीसवां अध्याय ॥

राजापृथुका सबराजाओंको अपने मकानपर बुलाना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित नारायणजी राजापृथुके
करनेसे प्रसन्नहोकरबोले हेराजा तुम्हारेसौयज्ञ सम्पूर्णहुये
तुमसेबहुतप्रसन्नहैं कुछवरदानमांगो व तुम इन्द्रकाअपरा
माकरके इससे किसीबातकाविरोध मतरक्खो किसवास्तेवि
त्माकोआत्मासे शत्रुताकरनानचाहिये सबछोटेबड़ेजीवों
त्माएकहोकर शुभ व अशुभकर्मकरनेसे भला व बुराकह
है सोतुम दया व धर्मसेरहकर प्रजाकापालनकरो तुम्हैंसन
कऋषीश्वर आनकर ज्ञानउपदेशकरैंगे यहवचनत्रिलोक
सेसुनकर राजापृथुने विधिपूर्वक उनकीपूजाकरके हाथजो
विनयकिया हेदीनदयालु मैं किसीकेसाथशत्रुता व इन्द्र
यादूसरीवस्तुलेनेकी कुछचाहना न रखकरकेवलयही चा
कितुम्हारेचरणोंकी भक्ति व प्रीतिमेरेहृदयमेंबनीरहै व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यशगुण मुझेदशहज़ारकानोंकेसमानसुनिपड़ै औरआपल
जीसेभी अपनेभक्तोंको अधिकप्याराजानतेहैं जिसनेतुम्ह
क्तिकासुखपाया वहमनुष्य संसारीमायामोहमें नहींफँसत
केतुम्हारेचरणोंकीभक्ति व प्रीतिचाहिये यहवचनसुनतेही
यणजी प्रसन्नहोकरबोले हेराजातुममेरेपरमभक्तहौ तुम्हार
इच्छापूर्णहोंगी जबत्रिलोकीनाथऐसाकहकर वैकुण्ठपधार
ास्थानपरगये और राजाकायज्ञ सम्पूर्णहुआतबब्राह्मण व
षीश्वरोंको बहुतसादान व दक्षिणादेकरबिदाकिया व इन्द्र
तिरखकर साथधर्मकेप्रजापालन व राज्यकरनेलगे उनकेराज
में कभीब्राह्मण व ऋषीश्वरोंनेकिसीपर क्रोधनहींकिया व सब
छोटेबड़ेसुख व आनन्दसेरहतेथे कुछदिनउपरांत राजानेविचारा
कि हमारेराज्यभरमें सबछोटे व बड़े चारोंवर्ण परमेश्वरका भज
न व स्मरणकरके हरिकथासुनते और अशुभकर्मोंसे रहितहोकर
साधु व ब्राह्मणकीभक्तिकरते तो अच्छाहोता ऐसाविचारकर उ
न्होंने सातोंद्वीपकेराजा व ऋषीश्वर व ब्राह्मण व महात्मा व चा
रोंवर्णकेलोगोंको नेवताभेजदिया सो थोड़ेदिनोंमें सबलोग रा
जापृथुकेयहां आनकरइकट्ठेहुये राजाने उनकासन्मानकियाकि
सबप्रसन्नहोगये ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

राजा पृथुका सब राजाओंसे भगवद्भजन अपने २ राज्यमें फैलावने के वास्ते कहना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसेकहा कि जबराजापृथु सबराजोंका शिष्टा
चार खिलाने पिलाने व नाचरंगदिखलानेसे करचुके तब सबरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रजा व ऋषीश्वरोंको सभामेंबैठालकर बोले कि एक
मलोगोंसे मांगतेहैं परदबावकरकेनहींकहते तुमलोग
अपनीप्रसन्नतासे हमकोदेवतो हमतुम्हारा बड़ाउप
ग यहदीनवचनसुनकर सबराजाओंने हाथजोड़कर वि
ा हेपृथ्वीनाथ हमारातनु व धन स्त्री व पुत्र सबतुम्हारे
ावरहैं जोआज्ञादेवसोकरैं तबराजापृथुबोले मैंचाहताहूं
ाँद्वीपमें जितनेमनुष्य छोटे व बड़े स्त्री व पुरुष चारोंवर्ण
क व पूजाजप व स्मरणनाम नारायणजीका कियाकरैं
जाकेदेशमें प्रजालोग जोधर्म या पापकरतेहैं उसकाछठवां
ा राजाकोपहुंचताहै सोपरमेश्वरकाभजन व स्मरणकरना
क्ति व प्रीति उनकेचरणोंमेंरखना व अवतारोंकीकथा व लीला
ननाचारोंवर्णकोअवश्यचाहिये हरिभजन वभक्तिकरना कि
र्णकेवास्तेपृथक्नहींबनाहै चारोंवर्णमेंजोकोई सच्चेमनसेस्म
व भक्तिकरताहै परमेश्वरउसपरदयालुहोकर अर्थधर्मकाम म
चारोंपदार्थ उसेदेतेहैं देखो शवरीभिल्लानिका जूठाबेर दि
आ परमेश्वरने बड़ेप्रेमसेखायाथा इसीतरह बहुतमनुष्य ह
क्बड़ीपदवीको पहुंचेहैं दूसरेराजोंकेवक्तमें और २ धर्मवर्ण
श्रमकेप्रसिद्धथे अबहमारी इच्छायहहै कि मेरेसमयमें परमे
कानामलेना व उनकीभक्तिका प्रचारहोवै सोतुमलोगअपने
प्रजाको इसीतरहकाधर्मउपदेशकरो राजाकोछठवांभाग
जो खेतमेंउपजताहै प्रजासेलेनाचाहिये सो हमनेअपना छ
अंशप्रजाको छोंडदिया उसीमेंसबलोग होम व दानकिया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिवायउसके और जिसकिसीको द्रव्यकीचाहनाहो वहमें
से लेजाकर शुभकर्ममें खर्चकियाकरै हमइसमें बहुतप्रस
जोधनधर्ममेंखर्चहो व दूसरेकेकामआवै उसीको सफल
चाहिये व हरिभक्तिकरनेसे मनुष्यकी सबकामना पूर्णहो
रनेउपरांत वैकुंठकासुखमिलताहै जिसतरह आगिकाठमें
उपायकियेबिना नहींनिकलती उसीतरहपरमेश्वर सबके
मेंरहकर बिनाभक्तिकिये व ज्ञानप्राप्तहुये दिखलाई नहीं
परमेश्वरका जड़मुखअग्नि व चैतन्यमुख ब्राह्मणहोकर ना
णजी जितनाब्राह्मणको भोजनखिलानेसे प्रसन्नहोतेहैं उत
यज्ञ व होमअग्निमेंकरनेसे प्रसन्ननहींहोते सोमैंउन्हींब्राह्मणों
चरणोंकीधूरि अपनेमस्तकपर चढ़ाताहूं जिनकीसेवा करनेसे
मनुष्यतुरन्त अपनामनोरथपाताहै जिसमनुष्यसेब्राह्मणप्रसन्न
हो उसकोसमझनाचाहिये कि परमेश्वरइससेराजीहैं व जिसपर
ब्राह्मणक्रोधकरैं उसेपरमेश्वरकाशत्रु जाननाउचित है यहबात
सुनतेहीसबब्राह्मण व ऋषीश्वरोंनेराजाको आशीर्वाददेकरकहा
जबआप ऐसाधर्मात्माराजा हमलोगोंनेपाया तबदुःख हमारे
छूटगये सोसबराजाओंने अपने २ देशमेंआनकर पृथुकीआज्ञा
नुसार धर्मकाप्रचारकरदिया जबराजापृथु धर्मात्माकेउपदेशसे
सबसंसारीमनुष्य सातोंद्वीपमें हरिचरणोंकीभक्ति व स्मरणनाम
परमेश्वरकाकरनेलगे तबदेवलोकमें यहसमाचारसुनकर एक
दिनसनकादिक ऋषीश्वरोंने ब्रह्माजीकीसभामेंकहा मर्त्यलोक
में राजापृथुऐसाधर्मात्मा उत्पन्नहुआहै कि जिसकेउपदेशसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जन व भागवतधर्म संसारमेंफैलगया उसकेधर्मसेसबलो
होंगे सोहमभीउसराजाको देखनेजातेहैं ऐसाकहकर
ई पृथुसे भेंटकरनेवास्ते राजमन्दिरपरआये राजाउ
शमार्गसे सूर्यकेसमान आतेदेखकर अपनीसभासमेत
हुआ व दण्डवत्करके बड़ेहर्ष व सन्मानसे सिंहासनप
रचरणउनकाधोया और विधिपूर्वकपूजनकरने व चर
नेउपरांत हाथजोड़कर बिनयकिया महाराज मेरेपि
काफुण्यउदयहुआ जोआपने बिनाबुलाये अपनादर्श
मुझेकृतार्थकिया यहदीनवचन सुनकर सनत्कुमारजीबो
राजा परमेश्वरसे तेरीभक्तिसुनकर हमतुझे देखनेवास्ते आ
हैं राजाने उनकीअतिदया अपनेऊपर देखकरपूंछा हेदीनब
संसारीमनुष्य जन्म व मरणसे किसतरहछूटतेहैं सनत्कुमार
हा हेराजातुमने जगत्कामलाकरनेवास्ते यहबातपूंछीहै सो
काउपाय हमबतलाते हैं सुनो जोकोईमनुष्य तनुपाकर अन्त
रणामें श्यामसुन्दरकेचरण व स्वरूपकाध्यान व जिह्वासेस्म
व हरिचर्चारखकर कानोंसेउनकीकथा व लीलासाथ प्रीतिक
नाकरै वहमनुष्यआवागमनसे रहितहोताहै और प्रीतिपरमे
में दृढ़होजानेसे फिरकमनहींहोती व साधु व महात्माकेमिल
दोनोंकोलाभहोताहै संसारीमें अपनेशरीर व घर व स्त्री व पुत्र
अपनासभझकर उनसेप्रीतिरखना यही दुःखकीफांसीजा
परमेश्वरकेचरणोंकाध्यान करनेसेज्ञानप्राप्तहोताहै वकाम
मोह लोभमेंचित्तलगानेसे ज्ञाननहींरहता यहबात विचा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनुष्यकोउचितहै कि कुसङ्गसेअलगरहकर सन्त व महात
सेवाकियाकरै जिसमेंउसकाकल्याणहो सिवायइसके दूस
उपायमुक्तिहोनेवास्तेनहींहै यहज्ञानसुनकर राजानेविनय
हे तरणतारण महाराजआप जिसतरहकृपाकरके यहांआ
तरहदयालुहोकर ऐसाआशीर्वाददीजिये कि जिसमेंसबप्र
री हरिभक्तहोजावै और यहज्ञान जो आपनेमुझेउपदेशकि
सकेबदलेतुम्हें कौनसीबस्तुदेऊं कदाचित्अपनाशिरदेऊं तो
ज्ञानकीबराबरीनहींरखता वजबमैंनेशिरझुकाकर आपको
वतकिया तबशिरदेनेमेंकुछबाकीनहींरहा और सबधन व रा
अपनामैं ब्राह्मण व वैष्णवकासमझकर उनलोगोंसे जो बचता
उसकोअपनेअर्थमेंलाताहूं इसलिये आपको कुछदेनहींसका तु
हाराऋणीहूं सो आपदयाकरके कोईऐसाउपायकरैं जिसमें इस
ऋणसेउऋणहोजाऊं सनत्कुमारजीनेकहा हेराजा जिसतरहको
किसीकाऋणियांहो व पावनेवालाऋणकाकहै कि हमने तुझे
छोड़दिया तो वहउऋणहोजाताहै उसीतरह हमनेभी ऋणछोड़
करतुम्हें उऋणकरदिया सनकादिक ऐसाकहकर ब्रह्मलोक को
चलेगये ॥

बाईसवां अध्याय ॥

राजा पृथुका तप करने वास्ते अत्रि अपनी स्त्री समेत बनमें जाना ॥

मैत्रेयजीनेकहा हे विदुर सनकादिककेजानेउपरांत राजापृथु
उसीतरहसाथधर्म्म व प्रजापालनके बहुतदिनतकराज्यकिया
वहसदासाधु व ब्राह्मणकी सेवा व हरिभजनकरके कथा व की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किनारायणजीकी सुनाकरतेथे व सातोंद्वीपमें भगवद्भजनहो
बसा बराजाके अरुचिनाम स्त्रीसे बिजिताश्वआदिक पांचपु
जन हुये तबराजाने कुछदिनउपरांतविचारकिया कि देखो
थ्वीने व धन सदास्थिर न रहकर मरनेउपरांतसाथनहींजाता
बर्त्त उत्तमहै कि मैं इनसेविरक्तहोकर बनमेंपरमेश्वरकाभज
बना करूं जिसमेंमेरापरलोकबनै पृथुनेयहबात विचारक
दिया बिजिताश्व अपनेबड़ेबेटेको जो छत्तीसगुणोंका नि
ब्राह्मदी व मनअपना संसारीमायासे विरक्तकरके अरुचिअ
व समेतबनमें जाकर बीचतप व ध्यान परमेश्वरके लीन
प्रजापृथुके चलेजानेसे सबप्रजाने बड़ाखेदकिया ॥

तेईसवां अध्याय ॥

राजा पृथुका साथ योगाभ्यासके तनु त्याग करना व अरुचि उनकी स्त्री का सती होना ॥

मैत्रेयजीबोले हे विदुर राजापृथुने बीचबनकेजाकर गर्मी
पंचाग्नितापा व बरसातमें बीचमैदानकेबैठेरहे जाड़ेमेंपानीके
तरखड़ेरहकर परमेश्वरकातप व स्मरणकिया जबइसीतरह
काल स्त्री समेततपकरतेबीतगये तबएकदिन राजानेविचारा
अबयहतनुछोड़कर वैकुण्ठमेंजानाचाहिये यहबातठानके म
हसमय राजापृथुनेबीचध्यान आदिनिरंकारज्यो तिसाथ
भ्यासकेबैठकर ब्रह्माण्डकीराह प्राणअपनानिकालदिया त
रुचि उनकी स्त्रीने यहहालराजाका देखकरपहिले बहुतशो
या फिरमनकोधैर्य्यदेकरउठी और बनमेंसेलकड़ीबटोरकर
बनाई व उसपर लोथ राजाकी धरकर आगि लगादिया व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिकाचरणादेखतीहुई सातपरिक्रमा उसचिताकीकिया औ
जोड़केबोली कि महाराज मैं तुम्हारेबिना दूसरीजगहनहीं
की मुझेअकेलीछोड़कर कहांचले जहांआपजातेहैं वहां
मीअपनेसाथ सेवा व टहलकरनेवास्तेलेचलो जिसमेंतु
वाकरनेसे मेरापरलोकबनै यहबचनकहनेउपरांत रानीभ
तामेंकूदकरराजाकेसाथसतीहोगई उससमयएकबिमान
च्छाजड़ाऊ जिसमेंमखमलीबिछौनाबिछे व मोतियोंकीभ
लगीथी वैकुण्ठसेवहांपरआया सो राजापृथुअपनी स्त्री समेत
परबैठकरवैकुंठकोचलेगये ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

देवतोंका पृथुकी स्तुतिकरना व विजिताश्व का साथ धर्मके राज्य करना ॥

मैत्रेयजीबोले हे विदुर जिससमय राजापृथु अपनी स्त्रीसमेत
मानपरबैठकरवैकुण्ठकोगये उससमयदेवतोंने उनकीस्तुतिक
केआपसमेंकहनेलगे कि देखो आजतकइसतरहकाराज्य व प्र
ापालन व तपस्या किसीराजानेनहींकिया और ऐसीपतिब्रता
ी अरुचिकेसमान दूसरी न होगी व राजाने अपनीराजगद्दीके
मयऐसाधर्मबढ़ाया कि सातोंद्वीपमें संसारीलोगहरिभक्तहोगये
ौर वहइसलियेराज्यकाजकरतेथे कि जिसमेंअधर्मियों व पापि
ोंको दण्डदेनेसेपुण्यप्राप्तहो व राजापृथुजो नारायणजीका अव
रथे संसारीराजाओंको धर्मउपदेशकरने व पृथ्वीपरनगर व गां
आदिकबसाकर जीवोंकोसुखदेनेकेवास्ते शरीरधारणकियाथा
तनीकथासुनाकर मैत्रेयजीबोले कि हे विदुर जबराजापथका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बसाततास्वबड़ाबेटाराजगद्दीपरबैठा तबउसनेअपने चारोंभा
जनकोंदिशाकाराज्य बांटदिया व निजराजगद्दीपर आपबै
ठ्वीनेधर्म व प्रजापालनके राज्यकरनेलगा उसकेराज्यमेंभी
वर्त्त उन्खीरहतीथी इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे प
बनाए बेर बशिष्ठजीने तीनतरहकी अग्निको एकजिसमेंब्राह्म
दिव करते हैं व दूसरीरसोईबनावनेकी व तीसरीजो काष्ठमेंरह
ब्राह्मदियाथा कि तुम मर्त्यलोकमेंजाकर बीचतनुमनुष्यके
व स्व सो उसशापसे उनतीनोंअग्निने संसारमेंआनकर राज
प्रजताश्वकेयहांशिखण्डिनीनाम स्त्रीसेजन्मलिया सोराजा
वक व पुमान व शुचि उनकानामरक्खा वहलोगथोड़ेदिन
मेंरहकर तनुछोड़नेउपरांत फिरअग्निदेवताहोगये व राजाहि
ताश्वके प्रसूतिनामदूसरीस्त्रीसे हविर्द्धाननाम बेटाउत्पन्नहु
बिवाहउसका हविर्द्धानीनाम अग्निकीकन्यासेहुआ सोहा
नके उसीस्त्रीसे प्राचीनबर्हिपआदिछःबेटेउत्पन्नहुये प्राचीन
षकेयहांसत्यवतीनाम स्त्रीसेजो अतिसुन्दरीथी दशबालकए
पकेजिन्हैंप्रचेताकहतेहैं जन्मेशरीरउनकादशलड़कोंकीत
दा२होकररूप व ज्ञानसबकाएकथा इसवास्तेदशोंकानाम
रक्खा एककोबुलाओतो दशोंबोलैंउनमें एकजोकामकरै
शोंकरैं एककेबीमारहोनेसे दशोंमांदेहोजावैं प्रत्यक्षमें वहद
लग२होकरबुद्धिव प्रारब्ध व कर्म व मृत्यु व जीवन सबकाए
थाजबउन्होंनेअपनेपिताकी आज्ञासेवनमेंजाकरदशहज़ा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पच्चीसवां अध्याय॥

महादेव व प्रचेतों का सम्बाद॥

विदुरजीने इतनीकथासुनकर मैत्रेयऋषीश्वरसेपूंछा हे छज्ञानचर्चा महादेवजी व प्रचेतोंसेहुईथी वह वर्णनकीजिये यजीनेकहा कि जबप्रचेतालोग उत्पन्नहुये तबप्राचीनबर्हि उनदशोंपुत्रोंको आज्ञादी किपहिलेतुमलोग बनमेंजाकर श्वरकातपकरो भगवान्कादर्शनहोनेउपरान्त नारायणीसृ सारमेंउत्पन्नकरना प्रचेतालोग यहवचनसुनतेही घरसे नि करपश्चिमदिशामें समुद्रकेनिकटचलेगये उनकोवहांएकस्थ बहुतरमणीक तालाबकेकिनारे दिखलाईदिया सो उन्होंने वह बैठकरआपसमें विचारा कि हमनहींजानते नारायणजी कौनहै और किसतरह उनकातप व स्मरण करनाचाहिये वहलोगइसी चिन्तामें बैठेथे किउसीसमय कुछबोली मनुष्यकी उनकोसुना ई देनेलगी तबउन्होंने आपसमेंकहा यहांकोई दिखलाई नहीं देता यहकौनबोलता है यहीचर्चाकररहेथे कि महादेवजी उसी तालाबमेंसे निकलकर वहांआये उनकेसाथ देवतालोग स्तुति करते व गन्धर्व्वगातेथे जबप्रचेतालोग उनकोनहींपहिचानकरउ सीतरहबैठेरहे तबशिवजीनेकहा हेप्रचेतो हममहादेवहोकर तुम लोगोंकोज्ञान सिखलानेवास्ते यहांआयेहैं किभजन व स्मरण नारायणजीका इसतरहसेकरो जिसमें उनकादर्शन तुमकोप्राप्त हो औरमैंजिसतरह परमेश्वरकोजानताहूं उसीतरह नारायणजी केभक्त मुझेप्यारेहैं सोमैंतुम्हें हरिभक्तसमझकर ज्ञानसिखलाता

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हवचनसुनतेही प्रचेतोंनेबड़ेहर्षसेखड़ेहोकर शिवजीको
जनकिया व बड़ेसन्मानसे बैठालकर विनयपूर्वक उनकीस्तु
थीनेगे तबशिवजीने हंसगुह्यस्तोत्र नारायणस्तुतिका प्रचे
बर्त्तनुलाकरकहा तुमलोगनित्यप्रातःकाल व सन्ध्यासमय
बनाकरनेउपरांत यहस्तोत्रपढ़कर नारायणजीकीस्तुति व
दिव्यस्वरूपका ध्यानकियाकरो परमेश्वर तुम्हैं जल्दीमिलैं
ब्राह्मचेतो मैंदिनरात यहीकामरखकर हरिभक्त व ज्ञानियोंका
वसकेयाकरताहूं व जोलोगअपने अज्ञानसे परमेश्वरकेभज
प्रमरणमें चाहनानहींरखते उनकोज्ञानसिखलाकर सौजन्म
कृतार्थ करदेताहूं बीचधर्म व वर्ण अपनेजैसाब्राह्मण व क्षत्र
वैश्य व शूद्रकेवास्तेवेद व शास्त्रमेंलिखाहै दृढ़रहकर वैसाक
करैं व पाप व अधर्मकेनिकट न जावैं वे मनुष्य सौजन्मतक
देवरहकर फिरचतुर्भुजीरूप परमेश्वरकोपातेहैं इसतरहकाध
व हरिभक्तिकरनेवाले मनुष्य दूसरीबातका कुछप्रयोजननहीं
ते महादेवजीयहज्ञानप्रचेतोंको सिखलाकरकैलासकोचले

छब्बीसवां अध्याय॥

नारदजी का प्राचीन वर्हिष प्रचेतोंके बापसे भेंट करना॥

दोहा॥ साधनयज्ञ अनेकसे सरै न एकौ काम। बिना भक्ति भगवन्तकी जीव न लह विश्राम॥

मैत्रेयजीनेकहा हेविदुर प्रचेतालोगसाधु व वैष्णवकीबड़
परमेश्वरके मिलनेकाउपाय महादेवजीसेसुनकर आनन्द
बीचपढ़नेस्तोत्र व करनेध्याननारायणजीकेलीनहुये जबउ
दशहज़ारवर्ष हरिभजनकरते २ बीतगये तबपरमेश्वरने प्र
होकर दर्शनदेके बड़ेहर्षसे उनहैंवरदानदिया तिसपरभी वे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संसारीव्यवहार झूंठासमझकरउसीतरह परमेश्वरकातप व
नकरतेरहे व प्राचीनवर्हिप उनकेपिताने बहुतदिनोंतक संसा
ख व राज्यभोगकरयह बातविचारकी कि राज्य व द्रव्यभर है
जीकीदयासे पाकरयहधनसंसारी सुखमें खर्चकरना अच्छा
होता उसेयज्ञ व दानादिकमें खर्चकरके अपनापरलोक
नाचाहिये ऐसाविचारकर राजाने इतनायज्ञ व दानकरन
म्भकिया किशास्त्रानुसार मध्यदेश भरतखण्डमें जिस
नपर यज्ञकरनाउचितथा कोईजगह बिनायज्ञकिये बाकी
रही पर राजाकामन विरक्त न होकर वास्तेसुखइन्द्रलोक व स्व
की चाहनारखताथा यहहालउसका देखकर नारदजीनेविचा
देखो राजाकी आयुर्दा यज्ञकरते २ बीतिजायाचाहतीहै केवलय
ज्ञकरनेसे इसकापरलोकनहींबनैगा यहराजापृथु धर्मात्माकेकुल
में उत्पन्नहुआहै इसवास्ते कुछज्ञान सिखलाकर इसेभवसागरपा
रउतारना चाहिये यहबातविचारकर नारदमुनि मर्त्यलोकमेंरा
जाकेपासआये उन्हैंदेखतेहीराजाने बड़ेहर्षसेदंडवत्करने व आ
दरभावसेबैठालनेउपरांत हाथजोड़करविनयकिया महाराजमे
राभाग्यउदयहुआ जोआपऐसेमहात्मापुरुषने कृपाकरकेमुझेद
र्शनदिया नारदजीहँसकरबोले हेराजासच्चबातहै तेराबड़ाभाग्य
थाजोतूमनुष्यतनुपाकर भरतखण्डकेप्रजोंकाराजाहुआ व तुम
ने इसभरतखण्डकर्मभूमिमें यज्ञआदिकबहुतधर्म व कर्मकिया
जहांकीइच्छाकरके रास्ताचलै उसठिकानेपहुंचनाचाहिये व क
दाचितचलते २ रास्तामें आयुर्दा पूरीहोजावे व अपनेस्थानपरन

CC-0. In Public Domain. U.P. State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चै तोउसराहचलनेसे सिवायथकनेके क्यालाभहोगा
नारदमुनिकासुनतेही राजानेबड़ाआश्चर्य्यमानकरकहा
व पुराणमें यज्ञ व दानकरनेकाबड़ापुण्य वर्णनकियाहै
अधिकदूसराधर्मनहींलिखता व नारदजीऐसाकहतेहैं
भेदहै राजायहबातविचारकर चिन्ताकरनेलगे॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

प्राचीन राजावर्हिपका जीवोंको स्वरूपदेखना जिनको मारकर यज्ञमें हवन कियाथा॥

नारदजीने राजाके मनकीबातअपनेज्ञानसे समझकर
किया कि जबतकराजाको कुछडर न दिखलावेंगे तबतक
सकायज्ञकरनेकेतरफसे फिरनहींसक्ता ऐसाविचारकर नारद
ने अपनेयोगबलसे जितनेपशुराजाने यज्ञमेंमारेथे उनसब
आकाशमें राजाकेसामनेलाकर खड़ाकरदिया जबवेसबजी
जाकोघूरनेलगे तबनारदजीबोले हेराजा यहसबजानवरतु
क्यादेखरहेहैं जैसेराजाने आकाशकेतरफ़ आंखउठाकरउ
क्रोधसेअपनीतरफ़घूरते देखा वैसेमारेडरके कांपताहुआ
जीसेबोला हेमुनिनाथ मैंनेइनसबपशुओंको मारकरयज्ञमें
किया सो ये सब किसवास्तेमुझे क्रोधसे देखतेहैं आपकृपा
इसकाकारणवर्णनकीजिये जिसमेंमेराडर व संदेह छूटजावे
वचनसुनकरनारदजीबोले हेराजा जिसतरहतुमने इनजी
मारकरकेयज्ञमें हवनकिया उसीतरहतुमकोभी येसबपशु
जन्ममें मारकरबदलाअपनालेवेंगे यहवचनसुनतेही राज
इसबातकाबड़ाशोचहुआ कि जितनेजीव मैंनेमारेहैं उतने

Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भेलेनेपड़ैंगे तबइनके बदलेसे मैं उऋण होऊंगा मुझसे
कहुई जो इतनेजीवोंको मारकरहवनकिया ऐसाविचारक
ाबोला। महाराज जितनेपण्डित व उपरोहित व मंत्रीलोग
हां हैं सबोंनेमुझकोयहमतादियाथा कि यज्ञकरनेसेउत्तम
र्मनहींहै और आपमुझेइसमें डरादिखलाते हैं इसकाकार
हेये उससमयराजाकेनिकट एकपिंजरामैना व एकपिंजरा
ा रक्खाहुआदेखकर नारदजीबोले हेराजन् यहतोतामैनासे
म्बारकहताहै कितू मुझको इसपिंजरेसे निकालदेतो मैं बन्दी
टकरवनमें पक्षियोंकेसाथ विहारकरूं व मैनाकहतीहै हेतोते मै
ी चाहतीहूं कि कोईमुझे इसपिंजरेसेबाहर निकालदेता तो अ
ने साथियोंमेंजाकर खुशीमनाती सो दोनों आपसमेंएक दूसरे
कहताहै पहिलेतुमउड़ो परउड़नेकी सामर्थ्यनहींरखता जो दू
रेको पिंजरेसेबाहरनिकालै यहबातसुनकर राजाबोला हे मुनि
थ यहदोनों आपपिंजरेमेंबन्दहैं किसतरह एकदूसरेको निका
नेसकै जबउनमें एकपिंजरेकेबाहरहो तबदूसरेके निकालनेका
पायकरै नारदजीबोले हेराजन् इसीतरह तुम्हारेपण्डित व उप
हित व मन्त्रीलोग भी संसाररूपी मायाजालके पिंजरे में पड़े
हकर क्यासामर्थ्यरखतेहैं जो तुम्हैं इससंसाररूपीजालसे बाहर
रसकैंयहबातसुनकर राजासमझाकिआजतक ऐसाज्ञानीमुझ
कोईनहींमिला जिसकावचनसुननेमेंमुझेज्ञानप्राप्तहोता ऐसा
चारकरराजाने विनयकिया महाराजआपकोई ऐसाउपायबत
वें जिससे इनजीवोंके हाथसेबचकर मैंकैदसेपाऊं यहबात

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर नारदजीबोले हेराजन् हमएकइतिहास तुमसेकहते हैं
कपुरञ्जननामराजा अविज्ञातअपनेमित्रसे बड़ीप्रीतिरख
किसीदूसरेको यहबातनहींमालूमथी व अविज्ञात सबत
जाकेखाने व पहिरने व सुख व आरामकीसुधिलेताथा ए
राजापुरंजन अपनीइच्छासे अविज्ञातकासाथ छोड़कर
रेस्थानमें जानेवास्ते इच्छाकरकेचला सो वहपूर्व व पश्
उत्तरतीनोंदिशामें ढूंढ़ता व घूमताहुआ बहुतदिनतक
नरहाइच्छापूर्वक कोईस्थानरहनेयोग्य उसेनहींमिला जबह
क्षिणदिशामेंपहुंचा तबएकमकान क़िलेकेसमानबहुतअच्छे
नवदरवाजेका दिखलाईदिया उसकेचारोंतरफ़ नहर व बाग़ व
ल व फूल व मेवोंकेवृक्ष रहकर अनेकरंगके पक्षीमीठी २ बोल
बोलनेवालेबैठेहुये चहचहामचारहेथे वहां सबतरहका सुखदे
कर राजापुरंजन उसमकानमें रहनेकेवास्ते इच्छाकरके भीतर
ला द्वारपरपहुंचकर क्यादेखा कि एकयुवतीस्त्री महासुन्दरी
कप्रकारकेभूषण व वस्त्रधारणकिये वहांटहलरहीहै औरदश
लियां उसकेसाथसेवा व टहलकरनेवास्तेथीं व उससेथोड़ीदूर
गेएकसांप पांचफणका दरवाजेपर बैठाहुआ दिखलाईदिया
जापुरंजन उसस्त्रीको देखतेही उसकेरूपपर मोहितहोगया ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

राजा पुरंजनका उस स्त्रीसे विवाह करके सुख व विलास करना ॥

नारदजीबोले हेप्राचीनवर्हिप जब राजापुरंजनकाचित्त
स्त्रीपर मोहितहोगया तब उसकेपासजाकर प्रेमसेपूंछा हे सु

CC-0. Digitized by eGangotri. Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमदेवकन्या व लक्ष्मीकेसमान किसकीबेटी व स्त्रीहोकर कि
च्छासेयहां टहलतीहो तुम्हारी आंखोंकेबाणसे मनपुरुषोंक
यलहोजाताहै और यहमकानकिसनेबनाया और इसमेंकौ
ताहै यहमीठावचनसुनतेही वहस्त्रीमुसकराकरबोली हे राज
अपने माता व पिताकानामनहींजानती किकिसकीबेटीहूं
भीतकमेराविवाहनहींहुआ इसलियेमुझेशादीकरनेकीचाह
नहींमालूमयहमकानकिसनेबनाया परमैंयहांरहतीहूं जो
मेरेसाथविवाहकरै वहभीइसक़िलेमेंरहै और यहसांपमेरेदश
पर रक्षाकरनेकेवास्ते रहताहै यहवचनसुनतेही राजापुरंजन
हुतप्रसन्नहोकरकहा अयप्राणप्यारीमुझे अंगीकारकरो तो मै
मसे ब्याहकरनेमेंबहुतप्रसन्नहूं तुम्हारेसाथबिवाहकरकेइसस्था
मेंरहकर भोग व विलासकरूंगा वहसुंदरीहँसकरबोली हे राजन्
तुम्हाराऐसासुंदर रूपदेखकर कौन स्त्री मोहित न होगी जब इस
तरहदोनोंसे बातचीतहुई तबराजापुरंजनउसकेसाथ क़िलेमें जा
कर गन्धर्व्वबिवाहकरके भोगविलासकरनेलगा व राजाऐसाउस
केसाथवश्यहोगया कि दिनरातउसकी आज्ञामेंरहकर बिनापूंछे
कोईकाम नहींकरताथा जबपुरंजनकेउसस्त्रीसे बहुतबेटी व बेटे उ
त्पन्नहुये तबराजाउनकाबिवाहकरनेउपरांत एकदिन बिनापूंछे
उसस्त्रीकेरथपरसवारहुआ व शिकारखेलनेवास्ते बनमेंजाकर ब
हुतसेपशुमारे इसलिये रानीक्रोधमें भरकर मैलीधोतीपहिनके
कोपभवनमेंपड़िरही जबराजाशिकारमें दौड़धूपकरनेसे प्यासा
होकरअपनेमकानपरआया तबउसनेपानीपीनेउपरांतदासियोंसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काहालपूंछा सो उन्होंनेकहा नमालूमआज कौनसादु
कोउत्पन्नहुआ जोगहना वकपड़ाउतारकर पृथ्वीपरपड़
चनसुनतेही राजानेबड़ेडर वशोचमेंदौड़हुये रानीकेपास
सेपुकारा जबवहमारेक्रोधके कुछनहींबोली तबराजाब
सि उसकाचरणदाबकरकहनेलगा हेप्राणप्यारी तू किस
कसेनहींबोलती मैंने कौनबस्तुतुझे न देकर किसबातमेंत
नानहींमाना जो इतनादुःखउठातीहै तेरीयहदशादेखने
कलेजाफटताहै तुझेमेरीसौगन्दहै जल्दीसचबतलादेतुझे
ने दुर्वचनकहाहो तो अभीउसको दण्डदेऊं यहवचनसुनते
रानीक्रोधसे बोली यहसबतुम्हाराकसूरहै जोबिनामेरेपूंछेशिका
खेलनेचलेगयेथे इसीकारणउदासहूं तबराजापुरंजनरानीकेपां
परगिरकर हाथजोड़केबोला मुझसेचूकहुई जो बिनापूंछेचला
या अबतेरीआज्ञाबिनानहींजाऊंगा मुझेअपनादाससमझके
बेरमेराअपराधक्षमाकर तेरेऊपरन्योछावरहोताहूं तुमअपनी
जासेमुझेबांधकर जो चाहो सो दण्डकरो जबऐसीविनती क
सेरानीउठीतबराजानेअपनेहाथसे उसकामुखधोकर शरीरकी
रिझाड़दी व उसकोगहना व कपड़ापहिनाकर बहुतदिनतक
केसाथ भोग व विलासकिया परमनउसका मायारूपी जगत
विरक्तनहींहुआ जिसतरहतुझेसंसारीचाहनाबनीहै उसीतरह
जापुरंजनकोबुढ़ाईआने व इंद्रियां शिथिलहोनेपरभी संसार
मोहलगाथा इतनाहालपुरंजनकासुनाकर नारदमुनिबोले हे
चीनबर्हिष महाराज काल कीदेवी यवनापतिबुद्धनेवास्तेसब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Prayagraj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गहजातीथी परउसेमृत्युजानकर कोईअंगीकार नहींकरता। वहएकदिन मेरेपासआनकरकहनेलगी तुममेरेसाथव्याह बमैंनेनहींमाना तबउसनेक्रोधकरके मुझेशापदिया कि तु मुहूर्त्तसेअधिक किसीजगहनहींरहकर दिनरात फिरतेघूमः अढ़ाईघड़ीसेसिवाय कहींठहरोगे तो तुम्हारासिरदूखेगा उ नेमुझको ऐसाशापदिया तबमैंनेउसे यहउपायबतलाया जाकरप्रज्वारगन्धर्व्वकी बहिनहोजा उसकेबड़ीसेनाहै वहा एकपुरुषपकड़कर तुझसेभोगकरनेकेवास्तेदियाकरैगा यहबो सुनतेही वहकन्या प्रज्वारगन्धर्व्वसेजाकरबोली मैं तुम्हारीबि. होनेवास्तेआईहूं गन्धर्व्वबोला बहुतअच्छा तुमयहांरहो फिर ज्वारने जरानामकुटनीकोबुलाकरकहा तू इसकेवास्तेएकमनुष्य युवा व सुन्दरठहरावतो हमइसकाव्याह उससेकरदेवें इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् कदाचित् कोई किसीको कुछ चीज़ अपनीखुशीसेदे और वहनलेवे या धनपाकर दान व पुण्य न करै वहमनुष्यपीछेसे दुःखपाताहै व परमेश्वरनेमृत्युकीअवधि इसवास्तेनहींरक्खी जो मनुष्यकोअपनीमृत्युकाहाल मालूम हो तातो वहअधर्मकरनाछोड़कर विरक्तहोजाता इसलियेअपनीमा यासेयहबात परमेश्वरनें गुप्तरक्खीहै॥

उन्तीसवां अध्याय॥

प्रज्वारका अपनी सेनालेकर पुरंजनके मारनेके वास्ते जाना॥

नारदजीबोले हेराजन् जबजरानाम कुटनीनेजाकर प्रज्वारगं धर्व्वसेकहा कियाजापुरंजन इसकेविवाहकरनेयोग्यहै तबप्रज्वार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रि नसौसाठ गन्धर्व्व व तीनसौसाठ गन्धर्व्विनी सेनाको
बसा राजापुरंजनसे लड़नेकेवास्तेजाकर उसकाक़िला घेरलि
जनथ हसांप जो द्वारेपरपांचफणका रहताथा गन्धर्व्वोंसे युद्ध
थ्वीने ा व उन्हैंभीतरजाने नहींदिया जबवहसांप अकेला ल
बर्त्त उ थकगया तबउदासहोकर कहनेलगादेखो मैं इतनेदिन
बना ा परमेरास्वामी भोग व विलासमें ऐसाआसक्तहै जिस
दिक ा मेरीसहायता नहींकी जबइसतरह शोचकरने व लड़ने
ब्राह्म ांपथकगया व एकखुखले बृक्षमें जाघुसा तबप्रज्वारगन्ध
व स सक़िले में आगिलगाकर भीतरचलागया जब आगिलग
प्र पुरंजनव्याकुलहोकर अपनाप्राणबचाने न सका तबअपने
कीरक्षा क्याकरैगा उससमयपुरंजनने उदासहोकर विचारा
किसीतरह मेराप्राणबचता तो अच्छाथा पुरंजनीकाबचना
हुतकठिनहै उसीचिंतामें राजापुरंजन जलकरमरगया सोम
देशमें राजाविदर्भकी बेटीहुआ व कारणस्त्रीहोनेका यहहै
रतीसमय पुरंजनीमें उसकाध्यानलगाथा इसलिये स्त्रीकात
या व पांचालदेशमें मलयध्वजराजासे जो बड़ाधर्मात्माथा
हउसकाहुआ सो बहुतदिनतक उसनेगृहस्थीका सुखउठा
सातबेटे व कईपोते उत्पन्नहुये॥

तीसवां अध्याय॥

राजा मलयध्वजका मरना व पुरंजनको अविज्ञात अपने मित्रसे भेंटहोना॥

नारदजीने कहा हेप्राचीनवर्हिष मलयध्वज बहुतदिन
करके अगस्त्यमुनिसे ज्ञानसीखकर संसारीमायासेविरक्तहो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजगद्दी अपनेबेटेकोदेदी व स्त्रीसमेत बनमें जाकर बहुत
हरिभजनकरके जब शरीरअपना त्यागकिया तबरानी वि
नाने व लोथराजाकी उसपररखनेउपरान्त दाहकरनेके वा
यारहुई परमोहवश आगिनहींलगाकर अतिविलापकरने
बअविज्ञात उसकेपुरानेमित्रने वहांआनकर उसेपहिंचा
यहवहीपुरंजनहै जिसनेमेरासाथ छोंड़करपुरुषसेस्त्रीका तनु
यहदशाउसकी देखकर अविज्ञातनेदयाकरके जबस्त्रीरूप
सेपूंछा तू किसवास्ते इतनारोतीहै और यहतेराकौनथा जो
या मुझको तैंने पहिंचानाया नहीं तबरानीबोली मैं तुझेन
हिंचानती व यहमेरापति मरगयाहै जिसकेशोचमें रोतीहूं यह
तसुनकर अविज्ञातनेकहा तू पूर्वजन्म पुरंजननामपुरुषथाऔ
मैं अविज्ञातनाम तेरामित्रहूं सोतू मेरासाथ छोंड़कर घरसेनिक
आया व एकस्त्रीकेसंगभोग व विलाससंसारीसुखमें लिपटकर
झे भूलगया इसलियेतैंने स्त्रीकातनुपाया इसमरनेकाशोचछों
के पुरुषतनु मिलनेकाउपाय करनाचाहिये और हम व तुमदो
मनुष्य हंसरूपीजीवात्मा व परमात्मा मानसरोवरके किनारे
रहनेवाले हैं सो तू संसारीमोहमें फँसकर नष्टहोगया यहजीव
रीमायासे चौरासीलाख योनिमें अनेकप्रकारका तनुपाता है
यहवचन सुनतेहीजब स्त्रीरूप पुरंजनको ज्ञानउत्पन्नहुआ तब
उसने पतिकाशोचछोंड़कर लोथउसकी जलादिया व अविज्ञात
की आज्ञानुसार हरिभजनमेंलीनहोकर वहशरीरछोंड़नेउपरांत
रुपका तनुपाया व अविज्ञातसेजामिला इतनी कथा सुनकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रि[illegible]नवर्हिषने नारदजीसेपूछा किमहाराज मैंसंसारीजीव
बस[illegible]ान नहींरखता जोइसकथाका अर्थसमझसकूं आपदय
जन[illegible] विस्तारपूर्वक इसकाहाल वर्णनकीजिये तबमेरी सा
थ्वीन[illegible]वे यहवचनसुनकर नारदजीबोले हेराजन् वहपुरंजन
वर्त्त[illegible]अविज्ञातनाम मित्रपरमेश्वरको समझनाचाहिये जो
बना[illegible]की रक्षा सबजगहनरक व गर्भादिकमें करतेहैं परकिसी
दिव[illegible]लाई नहींदेते और यहजीव परमेश्वरकास्मरण व ध्य
त्राह[illegible]ड़कर संसारीसुखमेंफँसने व अपनेज्ञानसे जैसाजैसा कर्म्म
व [illegible]है वैसावैसाजन्म चौरासीलाख योनिमेंपाकर इच्छापूर्वक
प्र[illegible]तनुमेंसुखीनहींहोता उसीतरहपुरंजनभी अविज्ञातका साथ
करचौरासीलाखयोनिमें बहुतदिनतकभ्रमतारहाजिसतरह
जीवमनुष्यकातनुपाकरप्रसन्नहोताहै उसीतरहपुरंजनभी
कोदेखकरबहुत खुशहुआथा व जैसेउसक़िलेमेंनवद्वारथे वैसे
ष्यतनुमें कान व नाकादिकनवछिद्र इन्द्रियोंकेहैं और शरीर
ष्यकारथकेसमानहै जिसपरबैठकरपुरंजनशिकारखेलनेगया
उसरथकेघोड़ेइन्द्रियोंको समझनाचाहिये जिसओर मन
कइन्द्रियां दौड़तीहैं वहीमनुष्यकरता और मनुष्यकेअहंका
यहसांप जो पुरंजनने क़िलेकेदरवाजेपरदेखाथा समझना
तहै किसवास्ते कि मनुष्यबुढ़ाईसमयभी अपनाअहंकारनहीं
ड़कर कहताहै कि हममरतेदमतक अपनेलड़केबालोंका पा
करेंगे और यहबातनहींजानता कि सबकेपालनकरनेवाले
श्वरहैं मनुष्यकी बुद्धिकोवह स्त्री जिसपरपुरंजन मोहितहु

CC-0. In Public Domain. U.P. State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समझनाचाहिये जिसतरह मरतेदमतक बुद्धिमनुष्यकेसाथरः
अपनी इच्छापूर्वक उससेकामकराती है उसीतरह पुरंजननेह
सस्त्रीके वशरहकर आयुर्द्धाअपनी बिताई व जैसेअज्ञानम
अपनीबुद्धि व करतबकेसमान परमेश्वर त्रिलोकीनाथ उ
पालनकरनेवालेको भूलकर व पुराणकीबातोंपर विश्व
खनेसे अन्तमेंदुःखपाताहै तैसेपुरंजनभी अविज्ञातअपने
कासाथछोड़ने व बुद्धिरूपीस्त्रीका संगकरनेसे बहुतदुःखी हु
ा व जिसतरह मनुष्यपरिश्रम करनेपरभीअपनामनोरथ न पू
रपछताताहै उसीतरह पुरंजननेभी जलने व मरनेकेसमय चि-
ताकीथी व मनुष्यकेतनु में कामक्रोधलोभ मोहादिकजो भरा
ताहै उसको पुरंजनका परिवारसमझना चाहिये जिसतरहबु
ईमरनेवालेकीखबर कालकेयहांजाकर देतीहै कि उसकोमार
व उसी तरहजरानाम कुटनीने भी पुरंजनकी बुढ़ाईदेखकर म
चारगन्धर्वसे उसकेमारनेकेवास्ते कहाथा और वहकालकन्या
त्युहोकर प्रज्वारगन्धर्वको अन्तसमयका विषमज्वर जानना
ाहिये व उसकेसाथ जो तीनसौसाठ गन्धर्वथे उन्हौंदिन व गन्ध
र्वियोंको रात्रिजानकर वहीकालकी सेनासमझो जिसदिन व रा
त्रिके बीतनेसे आयुर्द्धापूर्णहोने उपरांत कालमारलेताहै व जिस
तरह बुढ़ाईसमय इन्द्रियोंमें सामर्थ्य न रहकरलोहू व मांस श
रीरकासूखजाताहै उसीतरह प्रज्वारगन्धर्वकीसेनाने जाकरपुरंज
नका किलाजलादियाथा व मरतीसमय जिसचीज़में मनुष्यका
मानलगारहता है मरनेउपरांत वहीतनपाताहै सो पुरंजनका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मरतीसमय पुरंजनीमेंलगाथा इसलियेवहस्त्रीहुआसो
होनेसे अपनेपतिकी आज्ञामेंरहकर दिनकाटनेपड़तेहैं व
इसजीवकीमुक्ति नहींहोती तबतकइसीतरह चौरासीला
में जन्मपाकर दुःखसेनहींछूटता जबवहअविज्ञातनाम
ईश्वरहै दयाकरकेमनुष्यतनुमें किसीसाधु व महात्मासे
व उसमहात्माकेज्ञान उपदेशकरनेसे मनुष्य हरिकथा
तनसुनकर अज्ञानछोड़के हरिचरणोंमेंप्रीतिकरै तबईश्वर
जन व स्मरणकरकेजन्म व मरणसेछूटै जिसतरहपुरंजन
ज्ञात मित्रकीकृपासेपहिलातनु अपनापाकरमुक्तहुआथा सो
राजन् बिनाईश्वरकीदयासे साधु व महात्माकादर्शन व सत्
मिलनाकठिनहै व मनुष्यबिना सत्संग व सेवाकरने हरिभक्त
संसाररूपीजालसे निकलनहींसक्ता सोतुमनेबहुतदिनतक
गृहीपरबैठकर संसारीसुखभोगा व बहुतसायज्ञ व दानकरके
पायाअबतुम्हें उचितहै कि मनअपना विरक्तकरके हरिचरण
प्रीतिलगाकर परमेश्वरका भजन व स्मरणकरो जिसमें तुम्ह
परलोकबनै व जबतकसंसारीमोह छोड़कर हरिचरणोंमेंभक्ति
करोगे तबतक आवागमनसेछूटना बहुतदुर्लभहै सो तुमपरम
रकीकथा व लीलासुनकरसाधु व महात्मासे सत्संगकरोगे त
म्हारा अन्तःकरणशुद्धहोगा व इसदान व यज्ञकरनेसे संसारी
ग थोड़ेदिन देवलोकमेंसुखभोगकर फिरजन्मलेनेसे दुःख
और विरक्तहोने व भक्तिकरनेसे वैकुण्ठका सुखमिलताहै सो
को भक्तिकरना चाहिये इतनासुनतेही राजाने हाथजो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Prayagraj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नारदजीसेकहा महाराज यहज्ञानआपने बहुतअच्छाबत
पर अभीतकहमारे बेटे जो तपकरनेवास्तेगयेहैं नहींफिरे व
आवें तबउन्हैं राजगद्दीदेके मैंबनमेंजाकर परमेश्वरका
ध्यानकरूं ॥

यकतीसवां अध्याय ॥

नारदमुनिका एक बाग हरिण समेत अपने योगबलसे प्राचीन बर्हिषको दिखलाना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरनेकहा हे विदुर यहबातसुनतेहीनारदजीने
चर्य्यमानकरविचारा देखो मैंने इतनाज्ञानराजाकोसिखलाय
रयहविरक्तनहोकर अभीतकइसे राजगद्दीकामोहलगाहै ऐसा
विचारकर नारदमुनि अपनेयोगबलसे एकबागआकाशमें तैया
करकेबोले हे राजन् हमको एकबड़ाअचम्भामालूमदेताहै नेक
परतोदेखो जैसेराजानेआंखउठाकरदेखा तो आकाशकीतरफ़
उसेएकबाग़बहुतअच्छा फल व पुष्पलगाहुआ चारद्वारेकादिख
ाईदिया और एकहरिणजंगली वहहरियालीदेखकर कूदता व
ौकड़ीमारता जबउसबाग़में आनकेघास व फलखानेलगातबए
कबहेलिया सबसामग्रीशिकारकीसाथलिये उसहरिणको पकड़
केवास्तेबाग़मेंपहुंचा व उसनेएकद्वारेपर जाललगाकर दूसरेदर
ाजेसेकुत्तेकोललकारा व तीसरेद्वारेपर आगिलगाकर चौथीडेव
ीपरआप धनुषबाणसाधकरखड़ाहुआ और वहहरिण यहदशा
खनेपरभीकुछडर न मानकरखुशीसे ी व फलखाताथा राजा
सबाग़ व बहेलिया व हरिणकोदेखकर ला हे मुनिनाथ एक
ात बड़ेआश्चर्यकीदिखलाईदेतीहै कि ारेंद्वारेपर इसहरिण

CC-0. In Public Domain. U.P. State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रनेकायोग निकटपहुंचा तिसपरभीयहहरिण अपनेमरने
रखकर आनन्दपूर्वकचरताहै इसचरनेसे इसकोक्या
यहवचनसुनतेही नारदजी मुसुकराकरबोले हेराजन्
यहीहालहै बुढ़ाईआनेसे तेरीसबइन्द्रियोंकी सामर्थ्य
व मृत्युकादिननिकटपहुंचा व पहिलेजो तुझेयुवाअव
शाथी सो न रहकर अबबुढ़ापाअधिकहोनेसे दिनरातत
कालोहू व मांस इसतरहसूखाजाताहै जिसतरहपानी आ
गर्मीसेजलकर कुछबाक़ीनहींरहता व मृत्युतुझे पीछेसे
केसमानरपेटेआनकर मरनेकादिन व्याधारूपी धनुषबाणलि
तेरेसामनेखड़ाहै उसकेहाथसेतेराबचावनहींहोसक्ता और तू
रीमायामोहके जालमेंऐसालिप्तहै कि यहसबहाल आंखोंसे
देखकर तुझेअपनेमरनेकाकुछडरनहींहोता व संसारीसुखव
गद्दीकीतृष्णा तुझकोअबतकलगीहै यहज्ञानसुनतेही जबरा
के रोम खड़ेहोगये तबवहभयमानकर ऐसासमझा कि मेराश
जलाजाताहै यहदशा अपनीदेखतेही नारदमुनिकेचरणोंपर
रकरबोला महाराज आपनेबड़ीकृपाकरके संसारीफंदेसे बाह
काला नहींतो मैं इसमाया व मोहकेमहाजालमें फँसरहाथा
वचनकहकर राजानेविधिपूर्वक नारदजीकापूजनकिया व
जगहसे संसारीमोहछोंड़कर बदरीकेदारकी तरफ़चलागया
रिभजनकरके मुक्तिपदवीकोपहुँचा और नारदमुनिवहांसे
गये उसकेबहुतदिनोंउपरांत नारायणजी प्रचेतोंकेतप व स्म
सेप्रसन्नहुये तबअपनेचतुर्भुजीरूपका दर्शनदेकरउनसेकहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करनेमें ऐसे महात्माकी यहगतिहुई दूसराकौनागिन्तीमें
कोई परमेश्वरका ध्यान छोड़कर मायारूपी जालमेंफँसेग
की यहीगतिहोगी सो भरत उसतनुमें दिनरात इसीबातका
करतेथे कि जल्दीयहशरीरमेराछूटै तो मनुष्यतनुपाकर पर
का भजनकरूं इसीतरहकुछदिनबिताकर एकरोजनदीपा
नेलगे सो वहरूखेपत्तेखानेसे निर्बलहोगयेथे इसलिये सो
यतेसमय पुलहाश्रमनदीमें डूबकरएकब्राह्मण अथर्वणवेदप
वालेके पुत्रहुये नामउनका भरतरक्खा जबसयानेहुये तबपूर्व
न्मका वृत्तान्तयादकरके संसारीमोहमें न फँसे औरदिनरातपरम
श्वरमेंध्यानलगायेरहे अपनेपिताके डाटनेपरभीपढ़नेमेंजीनहीं
लगाया तबउसब्राह्मणने अंतसमयदूसरेबेटोंसे जो विद्यावान् थे
कहा हेबेटा मैंनेबहुतचाहा कि भरततुम्हाराभाई कुछपढ़ै परउस
नपढ़नेमें चित्तनहींलगाया इसकारणमूर्खरहा सो तुमलोग मेरे
अन्तसमयकीबातमानकर ऐसाउद्योगकरना कि जिसमेंवह पढ़
कर चतुरहोजावै जबवहब्राह्मण यह कहकरमरगया तबउसके बे
टोंने भरतकेपढ़नेवास्ते बहुतउपायकिया परनहीं पढ़ा जड़भरत
रूपबनकर ऐसाचलनपकड़ा कि कोई खिलादे तो खाना पिला
दे तोपीना नहींतो कुछशोच न रखकर दिनरात्रिपरमेश्वरके ध्या
नमें मग्नरहना इससमयभी ऐसाचलनरखनेसे जड़भरतकहला
हैं भरतकेभाइयोंने यहहालदेखकर उससेअपनामन मोटाकर
लिया परभोजन उसको देदियाकरतेथे जबउन्होंनेदेखा कि यह
कोईकर्म घर व गृहस्थीका न करके वृथाखाताहै तबउसे सौवीरराजगणने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रि[illegible] अगोरनेवास्ते बैठालकरकहा तुम देखाकरो जिसमें इस[illegible]
बस[illegible]नाजकोई न लेजावै व पशुपक्षीभी खाने न पावैं जड़भ[illegible]
जन[illegible]छरखवारी उसकी न की वहां आनन्दपूर्वक बैठकर परमे[illegible]
थ्वीने स्मरण व ध्यान करनेलगे एकराजाभीलोंका जो उसदे[illegible]
बर्त्त[illegible]था उसनेमान्तामानी कि हेभद्रकाली मेरेबेटाहो तो मैं[illegible]
बना[illegible]काबलिदानतुम्हैं चढ़ाऊं जबभद्रकालीकीकृपासे उसके[illegible]
दिक[illegible]पन्नहुआ तबउसनेएकबालक बलिदानदेनेवास्ते मोलले[illegible]
ब्राह्मणनकिया जबवहबालक अपनेबलिदान दियेजानेकाहा[illegible]
व नकरभागगया तबराजा अपनेनौकरोंसेबोला कि कुछरुपय[illegible]
प्र कर एकमनुष्य बलिदानदेनेवास्ते ढूंढ़लेआवो जबवहलोग[illegible]
जतेहुयेरात्रिकेसमय उसखेतपरपहुंचे तबउन्होंने वहां जड़भ[illegible]
को हृष्टपुष्टदेखकर बलिदानदेनेवास्ते पकड़लिया व रस्सीगले[illegible]
बांधकरराजाकेमन्दिरमेंलेगये वहराजाजड़भरतको देखक[illegible]
हर्षसेबोला कि तुम ऐसाअच्छामनुष्य बलिदानदेनेवास्ते [illegible]
हो किजो अपनेमरनेका कुछडर न रखकर आनन्दमूर्त्तिदिख[illegible]
ईदेताहै भद्रकाली इसकाबलिदानलेकर बहुतप्रसन्न होवैगी[illegible]
राजाकेपुत्र पुरोहित व ब्राह्मणमहामूर्ख कुछवेद व शास्त्रका[illegible]
नहींजानतेथे कि ब्राह्मणका बलिदानदेनाहोताहै यानहीं सो[illegible]
बातकाविचार न करके जड़भरतका क्षौरबनवाय व उबटन [illegible]
लेललगाकर स्नानकराया व बलिदान देनेवास्ते उसको न[illegible]
पड़ा व गहना पहिनाया व इत्र व चंदन शरीरमेंमलकर बहु[illegible]
[illegible] भोजन उसे खिलाया उससमय जड़भरतने प्रसन्नह[illegible]
सेप्रसन्नहुए[illegible]

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नमेंकहा कि जबसे मेरेमाता व पितामरेहैं तबसे मुझे कि
सापदार्थनहीं खिलायाथा आज बहुतअच्छाव्यंजन यह
ीतिसे खिलातेहैं जब भोजनकरानेउपरांत जड़भरतकेगल
तमफूलोंकाहार पहिनाकर भद्रकाली के सामनेखड़ाकिय
ाह्मणोंने राजाकेहाथमें नंगीतलवारदेकरकहा मारो जैसे
खड्गमारनेकोहाथउठाया वैसे जड़भरतने यहबातविच
शिरअपना उसकेआगेझुकादिया कि पूरी व मिठाईखातीस
ैंने अपनामुँहफैलाया था अब तलवारखानेकेसमय गर्दनस
से हटाना उचितनहींहै व भद्रकालीने उसकोशिर झुकातेदेख
रविचारा ये सबब्राह्मण ऐसाज्ञाननहींरखते जो राजाको बलि
न देनेसेमनाकरैं व इसब्राह्मणहरिभक्तके दुःखदेनेमें ऐसानहो
कजो नारायणजी मुझेकुछदण्डदेवैं इसकीरक्षानहींकरतीतोमु
कपापहोगा किसवास्तेकि कोईमनुष्य अपनेसामने किसीको बि
ानाअपराधदुःखदेवे तो उसकीरक्षा करनाचाहिये नहींतो देखने
वालेकोपापलगताहै ऐसाविचारकर भद्रकालीनेबड़ाक्रोधकिय
खड्ग व खप्परहाथमें लियेहुये चिल्लाकर ऐसाडपटा कि
ब्दसुनतेही राजाअपनेपुरोहित समेत बहिराहोकर ऐसामू
होगया कितलवारगिरपड़ी तबभद्रकालीने उसीखड्गसे
पुरोहितकाशिर काटलिया व दोनोंकाशिर गेंदकेसमान
कर इसइच्छासे नाचनेलगी कि जिसमें जड़भरत प्रसन्
मुझे कृपा व दयाकीदृष्टिसेदेखैं तो मेराभलाहो व इनके
मसे मेराकल्याण न होगा जब भद्रकाली के नृत्यकर
रहूगणाने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहमाथाझुकाये खड़ेरहे तबभद्रकालीने स्तुतिकरके
हे ब्रह्मदेव आपकृपाकरके मेरा अपराधक्षमाकरैं किसव
बकिसीकाभक्त व सेवक दूसरेकाअपराध करताहै तबउ
नककानाम धराजाताहै सो आप ऐसाविचारकर न करै
राजा भद्रकालीकाभक्तथा यहमेराबड़ाशत्रुहै जिसने आ
त्मा को दुःखदेनेचाहा व राज्य व धनकेमदमें अंधाहो
हैं नहींपहिचाना जड़भरतने यह वचन सुनतेही मुसुकरा
कहा आत्माका कभी नाशनहींहोता इसलिये अपनाशिरक
से मैंनहींडरता परतेराभक्त इसपापकेबदले नरकभोगकरैगा
बातकाशोचमुझे है जड़भरत ऐसा कहकर वहांसेचलाआय
तनी कथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् तुम निश्चयकर
जानो कि जो मनुष्यमन अपना परमेश्वरमें लगायेरहताहै
कोईदुःख देनेनहींसक्ता ॥

दशवां अध्याय ॥

राजा रहूगण करके जड़भरतको अपने सुखपालमें पकड़कर लगाना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन्दूसराहाल जड़भरतका सुनो
न राजारहूगण सिन्धुसौवीरनाम अपनेनगरसे शिविका
र कपिलदेवमुनिकेपास ज्ञानसीखने जाताथा राहमें ए
सकीसवारीका मांदाहोगया उसीओर कहींजड़भरत
रकेध्यानमें आनन्दसेबैठेथे दूसरेकहारोंने जड़भरतको
कर पकड़कर शिविकामें लगादिया जड़भरत आ
जाकीपालकी उठायेचलेजातेथे व इसअपमानका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ोचउनकोनहींथा परधरतीकोदेखते चिउँटीआदिक जीव
नसे बचातेहुयेपांवरखतेथे इसलिये जबकईबेर शिविकाही
बराजाने क्रोधसेकहारोंकीओर देखकर कहाकि तुमलोग
ी क्योंहिलातेहो कहारबोले हमाराकुछअपराध न होकर
याकहारशिविका हिलाताहै यहबातसुनतेहीराजाने जड़
कहा हेकहार तूहृष्टपुष्ट दिखलाईदेताहै अभीइतनारास्ता
ला जोथकगया अपनेप्राणकाडर न रखकर मरनेकीइच्छा
है जोपालकीहमारी अच्छीतरह नहींलेचलता जड़भरत यह
चनसुनकर चुपहोरहा वकुछउत्तरराजाको न देकरमनमेंकहादे
ोइसशरीरको कर्मानुसार दुःख व सुखमिलताहै व परमात्मा इ
दोनोंसेविलगरहकर सदाएकरीतिसेरहतेहैं जबजड़भरतचुपहो
तबफिरराजा क्रोधकरकेबोला किहेकहार तूहमारीबातका उ
रक्योंनहींदेतायहवचनसुनकर जड़भरतनेविचारकिया कियह
पनेकोबड़ाज्ञानी समझताहै इससेअभिमान इसकातोड़नाचा
ियेऐसाविचारके जड़भरतहँसकरबोले हेराजन्तुमनेकहा कित
हुतराहनहींचला व थकगया जोमनुष्य वृथाफिरताहै वहदुःख
नसे अवश्यमांदाहोगा क्योंऐसाकर्म नहींकरता कि जिस
न्म व मरणसेछूटजावे व आपनेकहा दुर्बल न होकर मोट
ाईदेताहै सोहेराजन् परमात्मा जिसकोजीवकहतेहैं वहस
न्यरहकर न मोटाहोताहै न दुर्बल सदाएकसारहताहै कद
सेदुबलाकहो तोवहऐसासूक्ष्मरूपहै किकिसीकोदिखत
तावमोटासमझोतोउसकेविराटरूपमेंसारासंसार वचौ

सब्द
कोई
सवाय
ध्यान
करनेसेह
अन्धकार
ारहगणाने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रि... ...नहैं और यहशरीरनाशहोनेवाला कभीपुष्ट व कभीकृ...
बसा... है जिसनेयहअनित्यशरीरमें प्रीतिलगाया इनबातोंका...
जन... ...रकरनाचाहिये व जोतुमनेकहा तूमरनेकीइच्छारखता...
थ्वीने... ...नेकटजीना व मरना दोनोंबराबरहोकर बिनामृत्युआये...
बर्त्त... ...मरता व हेराजन् प्रकाशपरमेश्वरकाबीचतनुमेरे व तुम्ह...
बना... ...जीवोंकेएकसाहै इसलियेस्वामी व सेवकसमजानताहूं व...
दिक... ...शरीरतकराजाहो मरनेउपरान्तहम व तुमदोनोंबराबरहो...
ब्राह्म... ...गे इसलियेतुमको यहसामर्थ्यनहींहै किजोआत्मा अविना...
व पुरुषकोदुःखदेनेसको इसझूठीकायाको चाहोसो दण्डदेवदु...
व सुख हर्ष व विषाद शरीरको होताहै व परमात्मातनुमें पृ...
रहकर दुःख व सुखसे कुछप्रयोजन नहींरखते यहवचन सुनते...
जबराजाको ज्ञानप्राप्तहुआ तबवहशिविकासे उतरपड़ा व ज...
रतकोदण्डवत् करकेबोला किमहाराज मैंनेसंसारीजालमें...
रहनेसे तुमकोनहींपहिंचाना सत्यबतलावो तुमऋषीश्वर य...
...महापुरुषका अवतारहोकर अवधूतोंकीतरह अपनावेष ब...
...करतेहो आपकृपाकरके अपनाभेद बतलाइये व मुझेज्ञानी...
रा... कर भवसागरपार उतारदीजिये मैंमहादेवकेत्रिशूल व य...
नह... चन्द्रमा व सूर्य व अग्निआदिक किसीदेवताकाभयन...
बात... ...ह्मणकेशापसे बहुतडरताहूं सोअपराध मेराक्षमाकी...
लेल... ...सुनकर जड़भरतनेकहा हेराजन्यहजीव अपनीकर...
पड़ा व... ...ताहोताहै कभीआदमी व मनुष्यतनुमें कभीराजा...
...भे... ...खारी यहगतिइसशरीरकी समझकरपरमात्मा...
सेप्रसन्नहो...

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सजीवकहतेहैं उनसबसे पृथक्जाननाचाहिये इतनाज्ञान
उपरान्त जड़भरतने अपने पूर्वजन्मका सबवृत्तान्तराजा
से वर्णन किया ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

जड़भरत करके राजारहूगणको ज्ञान उपदेश करना ॥

जड़भरतनेकहा ऐराजा अज्ञानतामनुष्यकीदेखो वह
कानोंसे जिनस्त्री व पुत्रादिकका दुर्वचन सुनकर दुःखपाता
सपरभी चित्तउसका उनकीओरसे नहीं फिरता व झूठसत्यब
कर किसीप्रकारसेदशरुपयाकमाके उन्हींलोगोंको पालनकरत
है व छः चोर व ठगआठोंपहर मनुष्यकेसाथरहकर इसतरहउसके
शुभकर्मोंकोचुरालेतेहैं कि जिसतरह राहमेंचोर व ठगधनपात्रके
साथलगकर अवसरपाकेउसे लूटलेतेहैं व चूहाघरमेंरहनेसे खाने
पीनेपरभी वस्त्रादिक काटडालतेहैं जिसकेघरमें चूहानहोउसकी
वस्तु नष्टनहींहोती और उनछवोंमें एकचोरमनको समझोजिस
केचलायमान होनेसेमनुष्यकुकर्मकरके नष्टहोताहैदूसरेपांचचोर
र व ठग कामक्रोध लोभ व मोह व इन्द्रियांहैं जिनके आधीन
करअशुभकर्म करनेसे धर्म्ममनुष्यका क्षीणहोजाताहै इसा
मनुष्यकोचाहिये किइनछवों चोर व ठगको अपनेआधीन
र उनके वश्य न होवै जबजड़भरतने यहबातरहूगणसेकह
जाने फिरउन्हें दण्डवत्किया ॥

बारहवां अध्याय ॥

मनुष्यतनुकी स्तुतिकरना राजारहूगणको ॥

राजा रहूगणने जड़भरतसे इतनाज्ञानसुनकर रहूगणाने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३ ...ाज मनुष्ययोनिसे दूसराचोला उत्तमनहीं होता जिस...
क्रि... ऐसेमहात्मा व ज्ञानीका मुझेदर्शनमिला व जन्म मनु...
बसा... ...तोंसेभी अच्छासमझनाचाहिये कदाचित् देवतापरमे...
जन... ...पकरैं तो सिवायमुक्तिके दूसरामनोरथ उनकोनहींमिल...
थ्वीने... ...खण्डकामनुष्य जिसअर्थकेवास्ते हरिभजनकरै वहीप...
बर्त्त... ...प्राप्त होताहै इसलिये मैंमनुष्यतनुको देवतोंसे उत्तमज...
बना... ...दण्डवत्करताहूं जड़भरतयहवचन सुनकरबोले हेराजन्...
दिक... ...बातैं मैंने तुझसेकहा उसकाअर्थ तैंनेसमझा यानहीं राजा...
त्रा... ...ताकिमहाराज मैं संसारीजीव अतिमूर्खअज्ञानहूं इसलिये...
व... ज्ञान अच्छीतरह नहींसमझा आपदयालुहोकर विस्तारपूर्व...
कहिये तबमैं समझसक्ताहूं यहवचनसुनतेही जड़भरतहँसकर...
ले हे राजन् यहबातकठिन है ऐसाज्ञान यज्ञ व पूजा व तपकरने...
व विरक्तहोने व बनकेरहने व पंचाग्नि तापने व जल में बैठने...
दानदेनेसे नहींप्राप्तहोता यहसबकर्मकरनेसे मनुष्यकोइसबात...
...हंकारहोताहै कि मैंने ऐसे शुभकर्म किये हैं मेरीबराबर दूस...
...न होगा शुभकर्म करनेपरभीअहंकाररखनेसे वहनष्टहोजा...
रा... जबतकअभिमान छोंड़कर सन्त व महात्माकेचरणोंकी...
नह... मस्तकपर नहींलगाता तबतकयहज्ञानउसकोनहींमिल...
बात... कृपा परमेश्वरके सन्त व महात्माका दर्शन दुर्लभहै व...
लेल... ...मसमझतेहौ कि हमराजाहैं सोमैंभी पिछलेजन्ममें...
पड़ा व... ...तोंद्वीपका राजाथा परवहांरहनेसे अपनाभला न...
... भे... ...गद्दीछोंड़दिया व बनमें बीचनारायणजीके शरण...
सेप्रसन्नहै...

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर हरिभजनकरनेलगा सोतुमकोअभीतक अपनीराजग
अभिमानबनाहै इसलियेदूसरे जीवोंपरदयानहींरखते जि
प्रकाश परमेश्वरका तुम्हारेतनुमें है उसीतरह ईश्वरकाचर
इनके कहारोंमेंभी समझनाचाहिये व ज्ञानकीदृष्टिसे यहत
सबजीव परमेश्वरके तुम्हारेसमानहैं सो तुम अपनेशरीरक
वास्ते इन्हेंदुःखदेतेहौ सोबहुतअनुचितहै यहज्ञान सुनतेही
रहूगण मारेडरके कांपनेलगा व जड़भरतसे हाथजोड़कर बो
महाराजमैं ब्राह्मणकेशापसे डरताहूं ऐसानहो किजो आपको
कर मुझे कुछशापदेवैं ॥

तेरहवां अध्याय ॥

जड़भरत करके एकधनी बनिये का इतिहास राजा रहूगणसे कहना ॥

रहूगणाकी बातसुनकर जड़भरतनेकहा हेराजन्मतडर तुझे
शापनहींदूंगा सुनोज्ञानी व महात्मालोग संसारी सुख स्वप्नवत्
झूठासमझकर इसशरीरसे प्रीतिनहींरखते व परमात्माकाया से
इसतरह अलगहै कि जिसतरहवृक्षपर पक्षीबैठाहो व उसपेड़के
काटनेसे पक्षीकोकुछ दुःखनहींहोता कदाचित् पक्षी व्यर्थउसवृ
क्षको अपनाजानकररोवे तो उसकाशोचकरनावृथा है जो कोई
शरीरकोअपनासमझकर संसारीसुखमें मनलगाताहै उसेसिवाय
दुःखके सुखनहींहोता जबउसनेविरक्तहोकर परमेश्वरमें ध्यान
लगाया तबउसकोसुखमिलताहै व परमेश्वरकी भक्तिकरनेसेह
दयमेंज्ञानका दीपकप्रज्वलितहोकर काम व क्रोधकाअन्धकार
उसकेअन्तःकरणसे छटजाताहै यहज्ञानसनतेही राजारहूगणने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रि[illegible]ोड़करकहा महाराजमैंने आपकोपहिंचाना तुमब्राह्मण
बस[illegible]रहरोगीकादुःख अमृतपीनेसे छूटजाताहै उसी तरहअ
जन[illegible]मनुष्योंको जो माया व मोहमेंफँसकर नष्टहोरहेहैं अप
थ्वीन[illegible]देकरकृतार्थकरतेहैं सोमुझेभीअपनादास जानकरदर्शन
बर्त्त[illegible]बातसुनकर जड़भरतबोले हेराजन् मैं एकइतिहासकह
बना[illegible]उसकेसुननेसे भवसागरपारउतरजावेगा सुनो एकबनिया
दिक[illegible]त्र बहुतबस्तुव्यापारकी अपनेसाथलेकर किसीदिशावर
ब्रा[illegible]ला व उसनेकृपणतासे मालकी रक्षाकरनेकेवास्ते कोईचा
व अपनेसाथनहींरक्खा इसलिये छः चोरउसकेसंगहोलिये व
चोरोंके औरभीसहायक उनकेपीछेपीछेचले थोड़ीदूरनगरसे
हरजाकर वहबनियांराहभूलके ऐसेबनमेंपहुंचा जहांकोशोंत
बस्तीनहींथी जब बनमेंबाघ व भालू व कटीलेवृक्ष व नदी व
ले अधिकहोनेसे उसकाराहचलना कठिनहुआ तबवहबनियां
रेडरके उसबनसेपारहोनेवास्ते संध्यातक बराबरचलागया प
स्ती कहीं न मिली और उसीबनमेंरातहोगई जबबनियां रात
एकनालेमें अपनेमालसमेत पहुंचा तबवही छःचोर और उ
सहायक सबमालउसकालूटनेलगे उसीसमयउसबनियेने रो
मनमेंकहा भलाकुछमालभीबचजाता तो उसे बेंचकर फिर
पारकरते वहबनियां ऐसाविचारकर जिसबस्तुकाबचावकरता
उसेसबचोरलूटते थे जबसबमाल उसका चोरलूटलेगये त
बनियांघबड़ाकर उसबनमेंअपने टिकनेकास्थान ढूंढ़नेलग
कोईजगह उसकेरहनेके वास्ते नहींमिली सो वह व्याघ्र व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ादिककी बोलीसुनकर डरसेकांपताहुआ राहचलाजाताथ
कहीं पृथ्वीपर सांप व बीछूदेखता तबठोकरखाकरगिरपड़त
कहींपैरमें कांटेचुभतेथे जहांवृक्षकेनीचेसुस्तानेलगता तो
उल्लूका शब्दसुनकर वहांसेभीभागता कभीवनमें आगत
वकर उसकेडरसे दूसरीओर दौड़ताथा उसीविपत्तिमेंभाग
एकसूखेकुयेंमें गिरपड़ा उसकुयेंपर बरगदकावृक्ष होकर
लीउसकी कुयें में लटकतीथी जबवहबनियां आधेकुयेंमें प
तबवहडालीउसकेहाथलगी उसेपकड़कर लटकगया व उस
यें एकसांप नीचेबैठाथा सो अँधियारीरातमें बिजुलीचमक
से उसनेदेखा कि कुयेंमें एकसांपफणाकाढ़े बैठाहै व जिसडाली
पकड़ेथा उसडालीको ऊपरसे दोचूहे श्याम व श्वेतवर्णके का
हैंतबबनियांनेबिचारा कुयेंमेंकूदपड़ूंतो सांपकेकाटनेसे मरजा
नहींकूदता तो डालीकटजानेसे गिरकर सांपकेमुहँमें पड़ूंगाइ
शोच व विचारमें बनियांपड़ारहा व उसीबरगदके वृक्षमें एक
त्ता शहतकालगाथा डालीहिलनेसे एक२बूंदटपककर जोउस
नियांके मुहँमेंगिरतीथी ऐसीविपत्तिमें वहबनियां शहतचाटक
हुतप्रसन्नहोताथा इसीतरहबनियांकी आयुर्दा उसकुयेंमेंलट
हुयेबीतगई व उसकेनिकालनेवाला कोईवहांनपहुँचा जबए
दिन उनदोनों चूहोंने ऊपरसे डालीकाटदिया तबवहबनियां
यें मेंगिरकर सांपकाटनेसे मरगया इतनी कथासुनकर राजाने
ड़भरतसेकहा महाराजमुझे बड़ाआश्चर्य्य मालूमहोताहै कि
हबनियां एकबंद शहतखाकर प्रसन्नरहा व डालीपकड़कर ऊ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रि[illegible]यों नहींचढ़आया यहवचनसुनकर जड़भरतबोले हेरा[illegible]
बसा[illegible]रहपरतुम्हारी व संसारीमनुष्योंकीदशाहै कि सबमनुष्य
जन[illegible]रहका अपनाउद्यमकरके कुटुम्बपालनकरते हैं पर घर
थ्वीने किसीतरहका सन्तोषनहोकर प्रतिदिन अधिकलोभ
बर्त्त[illegible]ताहै औरअपनेउद्यमसे उनको किसीसाइति छुट्टी नहीं
बना[illegible]जोदोघड़ी परमेश्वर अपनेउत्पन्न व पालनकरनेवाले
दिक[illegible] व ध्यानकरैं जबकोईउनसे हरिभजनकरनेकी चर्चाकर
ब्रा[illegible]तबकहतेहैं हमकोअपनेउद्यम व गृहकार्यसेछुट्टीनहींरहती
व समय परमेश्वरका भजन व ध्यानकरैं सो हेराजन् इसजीव
नियांसमझो व काम व क्रोध व लोभ व मोह व मद व मत्स
यहीछः चोर आठोंपहर मनुष्यकेसाथ रहतेहैं व परिवारवाले
उनछवोंका सहायक समझना उचितहै और जीवकोइसलि
नियांकहाचाहिये किउसने धर्म व ज्ञान बढ़ानेवास्ते भरतख
में मनुष्यकातनुपाया जिसतरह उत्पन्नहोकर साधु व महा
का सत्संग व हरिभजनकरके संसारीमायाजालमें फँसगया
कारण जोकुछ उसकेपूर्व्वजन्मकाधर्मथा वहभीपरिवारवा
चुरालिया उसीतरहबनियांने अपनेमालकी रक्षाकरनेवास्ते
करनहींरक्खा इसलिये चोरोंने उसको लूटलिया कदाचित
भरतखण्डमें जन्मलेकर साधु व महात्माकासत्संगकरके
सीखता तो किसवास्ते बनियेंकेसमान मायाजालमें फँसक
होता जैसे वहबनियां अपने टिकनेकेवास्ते स्थानढूंढ़तेसम
घ्रादिंककेडरसेभागताथा वैसेसंसारीसुखचाहनेवाले दुःख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व मनुष्यअपने कुटुम्बकी बीमारी व मरनादेखने व अप
रकेरोगसे व कभी धनमिलनेवास्ते दुःखपाकर आठोंपहर
ामेंफँसा रहताहै जिसतरह उल्लू व व्याघ्रादिक बनियेंको
तेथे उसीतरह जब परिवारवाले झगड़ाकरके घुड़कतेहैं त
ष्य बड़ादुःखपाताहै व स्त्रीकीसंगति अन्धकार समझनाच
जिसजगहज्ञान व वेदपुराणकावचनसब भूलजाताहै जब
बूढ़ाहोकर कुछकमाई नहींकरसक्ता तब परिवारवाले उसे
चनकहकर भोजन व वस्त्रका दुःखदेते हैं व कुछउसका आद
हींकरते जिसतरहमनुष्य महादुःखमें भी मरनेका कुछडर न
वकरदिनरात कमानेकाशोच कियाकरताहै उसीतरह बनियां
येंमेंसांप व चूहे देखनेपरभी मरनेका भयनहींरखता था सो म
ष्यकेवास्ते संसार व परिवारमें रहना यही अँधियारा कुवांसम
व जैसे कर्मपिछलेजन्मकियेहैं उसे बरगदकी जड़ समझना
ाहिये जिसेपकड़कर जीताहै व दोचूहेकाले व सपेदजोजड़का
तेथे वही दिन व रातहैं जिसके बीतने से आयुर्दाय घटजाती है
ौर बनियेंने जो सांपकुयेंमें देखाथा उसेकालसमझो जिसतरह
कबूंदशहतचाटकर बनियांप्रसन्नहोताथा उसीतरहअज्ञानमनु
यबुढ़ाई व सबतरहकेदुःख होनेपरभी अपनेकुटुम्बमें बैठकर म
हातेहैं वहीशहतकीबूंदसमझना चाहिये सो हेराजन्जगत्को
हीबन दुःख देनेवाला जानो संसारीमायाजालमें फँसनेवाला
सीबनियेंके समान दुःखपाकर नष्टहोगा जिसतरहतू जगत्की
ायामें लपटाहै उसीतरह वहबनियां स्त्री व पुत्रके मोहमेंफँसकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रि[illegible]हुआथा जोकोई वेद व शास्त्रके अनुसारचलै वहअपना
बसा[illegible]सक्ताहै नहींतो सबछोटेबड़े इसी मायारूपीबनमें भूल
जन[illegible]होरहे हैं बिनासत्संगकिये मोहरूपी बनसे बाहर निक
थ्वीने[illegible] कठिनहै ॥

चौदहवां अध्याय ॥

यहज्ञान सुनकर रहूगणकाप्रसन्नहोना व तपकरनेवास्ते बनमें चलेजाना ॥

दिक[illegible] जड़भरतने जबइसतरहका ज्ञानरहूगणको बतलाया त
ब्राह्मणप्रसन्नहोकर जड़भरतके चरणोंपर शिररखकर विनयपू
व बोला कि आपनेअतिदयाकरके मुझेजो मायामेंभूलरहाथा
ज्ञानरूपीरास्ता दिखलाया यहवचनसुनकर जड़भरतबोले
तुम इसज्ञानकेप्रकाशसे संसारीजालमें नहींफँसोगेयहबातसु
हीराजाने विरक्तहोकर उसीजगह पालकीअपनी छोड़दी व
मेंजाकर हरिभजनकरके मुक्तहुआ व जड़भरत अपनाशरी
गाभ्यासकेसाथ त्यागकर परमधामकोचलेगये व जड़भरत
मतनामबेटेने जो राजगद्दीपर बैठाथा जैन धर्म्मकामत संस
फैलाया उनकेवंशमें प्रतिहार आदिकउत्पन्नहोकर शुभक
रके परमपदकोपहुँचे ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका राजापरीक्षितसे पृथ्वीआदिकका विस्तारकहना ॥

राजापरीक्षितने इतनी कथासुनकर पूछा कि हे स्वामी
दयालुहोकर पृथ्वी व सूर्य्यादिक लोकोंकाहाल विस्तारपूर्व
र्णनकीजिये शुकदेवजीबोले हेराजन् पहिलेसातोंद्वीपोंका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संक्षेपसेकहाहै अबफिर विस्तारपूर्वक कहते हैं सुनो पृथ्वीमे
द्वीपहोकर सबद्वीपोंकी धरती पृथक् २ बँटी है व जम्बूद्वीप
योजन भूमिहोकर सबपृथ्वीसातोंद्वीपकी पचासकरोड़योज
उससे चौथाई धरतीलोकालोक पर्वतकेनीचे दबीरहकर ती
गमें सातोंद्वीप वसमुद्रहैं सोराजाप्रियव्रतइनसातोंद्वीपोंके म
कने एकएकद्वीप अपनेसातोंबेटोंको बांटदिया व आपबनमे
कर बीचतप व ध्यानपरमेश्वरके लीनहुये व प्रियव्रतके अग्न
नाम बेटेनेजम्बूद्वीपके नवखण्डकरके एकएकखण्ड अपनेपु
को बांटदिया व जौन २ नामउनके बेटोंकेथे वहीनाम उननवख
ण्डोंके प्रकटहुये पहिला उत्कलखण्ड १ दूसरा हिरण्यखण्ड २
सराभद्राश्वखण्ड३ चौथाकेतुमालखण्ड४पांचवांइलाव्रतख
ण्ड५होकर उसखण्डकेमध्यमें एकपर्वतसुमेरुनाम सोनेकालक्ष
योजनऊंचा व सोलहहजारयोजन लम्बा व आठहजारयोजन
चौड़ा वत्तीसहजारयोजनकेघेरमें है छठवांनाभिखण्ड६सातवां
किम्पुरुषखण्ड ७ आठवांभरतखण्ड ८ नवांनरहरिखण्ड९है व
ब्रह्माण्डकमलफूलकेसमान हहोकर एक २ पर्वतनवोंखण्डों
केसिवानेपर वर्त्तमानहै वसुमेरुपर्वतके चारोंओर चारिपहाड़पर
दूध व शहद व पानी व रसकाकुण्डभराहै व चारबागबहुतअच्छे
फल व पुष्पलगेहुये कुबेर व महादेव व इन्द्र व वरुण देवताओंके
वहांपर ऐसेबनेहैं कि जहांजाने व स्नानकरनेसे देवपत्नी जवान
होजातीहैं व सुमेरुपर्वतकेशिखरपर ब्रह्मपुरीदशहजार योजनल
म्बी व चौड़ी जड़ाऊबनी हैं वहांपरभांतिर केपक्षी रहकरमीठीर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोलते हैं हे राजन् वहांकीशोभा हमतुमसे कहांतकव
खनेसे मालूमहोतीहै ॥

सोलहवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका राजापरीक्षित से लोकालोक पर्वतकी कथा कहना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् इसतरहजम्बूद्वीपमें नवखण
हरएकखण्डके रहनेवाले सबअवतारोंकी पृथक् २ पूजा
व इनसातोंद्वीपोंके बाहर लोकालोकपर्वतहै उसकेउधर
होकर सूर्य व चन्द्रमाकाप्रकाशनहींरहता वहांयोगीलोगज
सकेहैं व संसारीलोग वहांजानेकी सामर्थ्यनहीं रखते औरश
हाथी बड़ेबलवान् जिनको दिग्पालकहतेहैं सबपृथ्वीके आठों
रहकर धरतीको अपनेनीचे ऐसादबायेहैं कि हिलने नहींदेते
सुमेरुपर्वतपर चारपुरी कुबेरपुरी १ वरुणपुरी २ इन्द्रपुरी ३ य
पुरी ४ है और सूर्यकारथ दोपहरपीछे इन चारोंपुरियों में
काल व दोपहर व सन्ध्या व आधीरातकेसमय एकएकजगह
चता है व ब्रह्माकीपुरी से गंगाजी निकलकर सुमेरुपर्वतके
गंगोत्तरीमें आईहैं ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

शुकदेवस्वामी का गंगाजीकी महिमा वर्णन करना ॥

शु वजीने कहा हे परीक्षित गंगाजी की उत्पत्ति विस्त
र्वक कहताहूं सुनो जबनारायणजीने वामनअवतारलेकर
पैगपृथ्वी राजाबलिसे दानलिया सो विराट्रूपधारणकरके
पगसे सातोंलोक नीचेके व दूसरेपगसे सातोंलोक ऊपरके ना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ये तबब्रह्मा दाहिनाचरण परब्रह्मपरमेश्वरका अपनीपुरीमें
नेही त्रिविक्रम अवतारहोनाजानकर उठखड़ेहुये वब्रह्मानें
कमण्डलुमेंसे पानी विरजानदीका जो ब्रह्मरूप परमेश्वरके
गागिरनेसे वैकुंठमेंप्रकटहुईथी लेकर उनचरणोंकोधोयावच
मृतलेकर वहजल अपनेशिर व आंखोंमेंलगाया और वहच
धोतेसमय जोपानी सुमेरुपर्व्वतपर गिराथा वहनीचे आनक
दराचलपहाड़के सिवानेपरथँभरहा फिरवहां से चारधाराहो
वहजलबहातो एकधारासुमेरुके पश्चिम व दूसरीसुमेरुकेदक्षिण
तीसरीसुमेरुकेउत्तरदिशावहकर समुद्रमें मिलगई चौथीधारा
ना पूर्वको बहीथी वहभगीरथके तपोबलसे इलावृतखंडको बाईं
शाछोड़तीहुई नरनारायण पर्वतसेउतरके गङ्गोत्तरीसे होकरभ
खण्डमेंआई उसीधाराकानाम संसारमें गंगाजी प्रकटहुआ व
माहात्म्य गंगाजीका इसतरहपरहै जोकोईगंगास्नान व जलपान
दर्शनकरनेकेवास्ते अपनेघरसे जानेकीइच्छाकरताहैउसकेकरो
जन्मके पापछूटजातेहैं और वहमनुष्य इसइच्छासे जितने पग
वलकरगंगाजीतक पहुँचताहैएक२पगधरनेकेबदले उसकोसौसौ
राजसूययज्ञ व अश्वमेधकेफल मिलतेहैं यहवचनसुनतेहीपरीक्षि
ने सन्देहमानकरशुकदेवजीसेपूछा कि महाराज जबमनुष्यको
गास्नानकरनेजानेसे यज्ञोंकेफल मिलतेहैं तो युधिष्ठिरहमारेदा
नेकिसवास्ते इतनारुपयाखर्चकरके यज्ञकियाथा व दूसरेराजा
लोग क्योंयज्ञकरतेहैं यहवचनसुनकर शुकदेवजीबोले किहेराज
हम एकइतिहास तमसेकहतेहैं सनो एकसमयमहादेवजी पार्व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साथलेकर मकरमहीनेमें गंगास्नान करनेके वास्ते
होजातेथे तबराहमेंपार्वतीजीने बहुतलोगोंको जातेहुये
महादेवजीसे गंगास्नानका माहात्म्यपूछा तबशिवजीने
र्वतीजोकोई गंगानहाने अपनेघरसेचले उसको एक २
अमें सौसौअश्वमेधयज्ञकाफल मिलकर करोड़ोंजन्मको
नसे वहदेवतासमान होजाताहै यहवचनसुनने व यात्रियों
नेसे पार्वतीजीने यहसन्देहकिया देखोलाखोंमनुष्यनीच
तगंगाजीसेनहाकर चलेजाते हैं सो इनलोगोंकी गंगास्नान
नेसे अभीतक कुरूपताभी नहींगई देवताकातन किसतरह पा
व महादेवजी ऐसाकहतेहैं सो इतनेयात्रियोंको ऐसाफल किसप्रकार
रहमिलैगा ऐसीशंकामानकर पार्वतीजी फिर विनयपूर्वक बोलीं
कि महाराज आपनेगंगाजीका माहात्म्य इसतरहपर वर्णन किया
या और इनयात्राकरनेवालोंका रूपदेखनेसे मुझेइसबातकी
तिनहींहोती महादेवजीबोले इसकाभेद हमतुमसेक्याकहैं
आंखसे दिखलादेवें ऐसाकहकर जबशिवजी गंगाके निकट
रास्तेसे यात्रीचलेजातेथेपहुँचे तब वहांकोढ़ीरूप बनकर बैठे
व पार्वतीसेकहा तू दिव्यरूपअतिसुंदरीहोकर मेरेशरीरकीमवारीर
उड़ाव और जोकोई स्नानकरनेवाला तुझसेपूछैतो उससेयह
कहना हमारापतिकोढ़ीहोगया सो एकपण्डितने कर्मविपाक
पोथी देखकरबतलायाहै कि जिसकिसीने सौअश्वमेध यज्ञ
हों वहइनको अपनेहाथसे छूदे तो इनकाकोढ़ छूटजावे सो
लाखोंमनुष्य नहानेआयेहैं इसवास्ते इनको यहांलाकर बैठे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क जिसने सौ यज्ञकियेहों वहइनकोछूदे तो यहतनुइनकाअच्छा
जावे जबपार्वतीजी देवकन्याकेसमान बनकरमक्खीउड़ाने
हीबात कहनेलगीं तबबहुतसेयात्री उनकारूप देखतेही मोह
होकर उनकेचारोंओर खड़ेहोगये उनमें कोईपार्वतीको अ
ाथ चलनेवास्तेकहकर कोईउनसेहँसी व ठट्ठाकरनेलगे व वि
ोंने अनेकतरहकाडर व लोभ उन्हेंदिखलाया व ज्ञानीलोगों
हाइसस्त्रीकोधन्यहै किजोइसदशामेंभी अपनेपतिकीसेवानहीं
ोड़ती जोस्त्री अपनेस्वामीको काना,कुबड़ा, कोढ़ी, लँगड़ा,अ
ा,दरिद्री,कुरूप कैसाहीहो परमेश्वरकेसमानजानकर आनन्द
र्वकउसकीसेवाकरै व परपुरुषको कुभावसेनदेखै उसेपतिव्रताक
ाचाहियेउसीसमय एककङ्गालब्राह्मणदुर्बल उनकोदेखतेही
किटआनकर दण्डवत्करके पार्वतीजीसेबोला किहेमातातुम
सइच्छासे यहांभीरमेंबैठीहो कहींएकान्तमें अपनेपतिकोले
ाकरउसकीसेवाकरो किजिसमेंमक्खीआदिक बैठनेसेयहदुःख
पावे यहवचनसुनकर पार्वतीबोलीं मेरेपतिके कर्म्मविपाकमेंऐ
ानिकलाहै किजिसनेसौअश्वमेधयज्ञ कियेहोंवहइनकोछूदेतो
ारीरइनकाअच्छाहोजाय इसीइच्छासे मैंइन्हैं यहांलाकरबैठी
कि इसपर्वमेंलाखोंमनुष्य आवैंगे किसीनेतो सौअश्वमेधयज्ञ
कियेहोंगे जिसकेछूनेसे हमारेस्वामीकारोगछूटजावे यहबातसुन
करवहब्राह्मणबोला यहकौनबड़ीबातहै तुमतोसौअश्वमेध करने
ोकहतीहौ मैंनेलाखोंअश्वमेधयज्ञकियेहैं जिनकीगिनती तुम
हींकरसक्ती यहवचनसुनतेही पार्वतीजी विनयपूर्वकबोलीं कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रि राज आपदयाकरके इनकोछूदीजिये जैसेउसब्राह्मणने
बस के अङ्गमें अपनाहाथलगाया वैसेहीमहादेवजी दिव्यरू
जन नीकुमारकेसमानहोगये तबयहहालदेखकरपार्वती व स
थ्वीन योंको इसबातकासन्देहमालूमहुआ कि यहब्राह्मण तीस
बर्त्त कंगालहै व सौअश्वमेधकरनेमेंसौवर्ष व बहुतसाद्रव्य व
बना सरेराजोंके जीतनेवास्तेचाहिये इसनेकिसतरह सौ यज्ञकि
दिव शिवजीअन्तर्यामीने उनकासन्देहछुड़ानेवास्ते यात्रियोंके
ब्रा मने उसब्राह्मणसेपूछा किमहाराजतुमनेइतनीअवस्थामें ला
व यज्ञकिसतरहकियेहोंगे तबवहब्राह्मणबोला सुनियेमहाराज
कीविधि व उसकाफल शास्त्रानुसारहोताहै व उसीशास्त्रमें
स्नानकामाहात्म्य ऐसालिखते हैं कि जो कोई गंगास्नानक
को अपनेघरसेचले उसको एक २ पगचलनेमें सौ सौ अश्वमे
काफलमिलताहै सो मैं अपनेघरसे नित्यगंगास्नान करनेको
शभरहजारोंपगचलकरआताहूं उसहिसाबसेलाखों कौनची
कईकरोड़ अश्वमेधयज्ञहमकरचुकेहोंगे इसमेंआश्चर्यकौन
हबातसुनकर महादेवजीने पार्वती व यात्रियोंसेकहा ब्राह्मण
चकहताहै शिवजी ऐसाकहकर अपनेस्थानकोचले व राहमें
र्वतीसे बोले कि देखो तुमको जो सन्देहथा सो हमारेकहेके
ण इसब्राह्मणको गंगास्नानकेफलमिलतेहैं और सबयात्रीके
वचनपर विश्वासनहींरखते इसलियेयहफलउनको नहींप्रा
सक्ता इस वास्ते वेद व शास्त्रसुनकर निश्चयकरनाचाहिये
के सुनने व पढ़नेसेमनुष्यको शुभअशुभकर्मकाज्ञान होताहै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परीक्षित राजायुधिष्ठिर तुम्हारेदादाको वेद व शास्त्रकावि
था परउनको बहुतद्रव्यहोनेसेयहइच्छाहुई कि इसी बहा
यामसुन्दरको अपनेयहांरखकर ऋषीश्वर व मुनीश्वरोंके
सङ्गकरूं व धनमेराशुभकर्ममेंलगकरमुझेयशमिलै इसका
ज्ञ कियेथे ॥

अठारहवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका वर्णनकरना यहबात कि कौन २ खण्डमें किस २ अवतारकीपूजा होती है ॥

शुकदेवजीबोले कि हे परीक्षित हमनेनवोंखण्डकी कथातुम
वर्णनकी अबपरमेश्वरके अवतारोंकाहाल व जिस २ खण्डमें
जो अवतार नारायणजीने लियेथे और वहांके सबलोग अव
रपर अधिकप्रीतिरखकर उनकीपूजाकरतेहैं सुनो भद्राश्वखंड
मेंभद्रश्रवानाम राजाथा वहांहयग्रीवअवतार परमेश्वरनेधारण
किया सोउसखण्डमें राजा व प्रजा उसीरूपकीपूजा व उन्हींका
नपढ़कर स्तुतिकरतेहैं व नरहरिखंडमें नृसिंहअवतार नारायण
ने लियाथा वहांनरहरिवर्ष नामराजा अपनीप्रजासमेत उसी
पकीपूजाकरताहै औरप्रह्लादभक्त उनकेपुजारीने मंत्रसहित
तुतिकरके नृसिंहजीसे यहवरदानमांगा किमहाराजआपअपने
वोंकोजिस२योनिमेंचाहैं जन्मदेकर उनपरऐसीकृपारक्खैंकि
ससेउनकोउसीतनुमें तुम्हारेचरणोंकाध्यानबनारहै यहबात
नकर नृसिंहजीबोले कि हे प्रह्लाद तुमअपनेवास्ते जो चाहो
मांगलो परसंसारीजीवोंकेवास्ते जो माया मोहमें फँसेहैं ऐसा
दानमतमांगो तबप्रह्लाद फिरहाथजोड़करबोले महाराज सं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में जो लोगकुकर्मकरतेहैं अपनीदयासेउनका अधमेकु
नेचरणोंकीभक्ति उन्हेंदेकर वैकुण्ठमेंबुलालो यहवचन
नृसिंहजीनेकहा हे प्रह्लाद सबजीवोंको वैकुण्ठकी चा
होती जिसेसत्संगप्यारा हो उसे ज्ञानमिलताहै व कलियु
योंको सत्संगअच्छानहींलगता वहसंसारीमायामें फँसरह
परमेश्वरकीभक्तिरखताहै उसकेपास सबगुणआपसे इस
दिखातेहैं कि जिसतरह नीचीपृथ्वीपर पानीबहकर बटुरजाताहै
बातसुनकर प्रह्लादनेकहा महाराज संसारमें कोईऐसाभी
होगा जिसेवैकुण्ठजानेकीइच्छा नहोगी आपवैकुण्ठअपन
सीकोदियानहींचाहते लालचकरतेहैं मुझे इसबातमेंलज्जा
लूमहोती है कि संसारीलोग ऐसाकहैंगे कि प्रह्लादकेस्वामी
लचीहैं यहवचनसुनतेही नृसिंहजी हँसकरबोले हे प्रह्लाद
जगत्मेंजाकर जिसे अतिदुःखीपावो उसे वैकुण्ठचलनेके
कहो देखो वहक्याकहता है जबउनकी आज्ञानुसार प्रह्लाद
रमेंआनकर किसीदुःखीजीवको ढूंढ़नेलगा तबउसेएकशूक
तिरोगी चहलेमेंफँसादेखपड़ाउसेमहादुःखी देखकर प्रह्लाद
हा तू यहांरहकर क्यों इतनादुःखउठाताहै वैकुण्ठचल वहां
बड़ासुख मिलैगा नृसिंहजीकीआज्ञासे तुझेबुलानेआयाहूं
बातसुनकर शूकरनेपूछा कि वैकुण्ठमेंक्यासुख है जबप्रह्लाद
वैकुण्ठकासुखवर्णनाकिया तबवहशूकरबोला मैं अकेलाव
हींचलसक्ता कुटुम्बसमेत कहो तो चलूं तुमनृसिंहजीसे
यो यहवचनसुनतेही प्रह्लादनेजाकर नृसिंहजीसेपूछा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुतअच्छा सबकौलेआवो जबफिर प्रह्लादने आनकर उस
से परिवारसमेत चलनेकेवास्तेकहा तबउस शूकरकीस्त्री ने
से पूछा कि बैकुण्ठमें बिष्ठा हमारेखानेवास्ते है या नहीं प्रह्लाद
कहा वहांनरक न होकर औरसब अच्छे २ पदार्थ भोजन
केहैं तब शूकर व शूकरी आपसमें सम्मतकरकेबोले कि हमें
बड़ासुखहै हमलोग बैकुण्ठमें न जावैंगे यहबातसुनकर प्रह्ल
कहा तुमबड़ेमूर्खहो जो बैकुण्ठमें नहींचलते जबयहबातसुन
वहशूकर प्रह्लादकीओर घूरनेलगा तबवह दूसराजीव बैकुण्ठ
लेजानेवास्ते ढूंढ़तेहुये एकबृद्धमनुष्यके पासजाकर कहनेलग
कि अबतुम बूढ़ेहुये बैकुण्ठमेंचलकर वहांकासुखभोगो यहबात
सुनकर वहबोला कि अभीमुझे संसारमेंजीकर अपनेबेटोंका मुंड
व बिवाहकरके नाती पोते देखने हैं तुम्हारे कहनेसे अभीमर
जावें तुमयहांसे चलेजाव हमारेबेटों के सामने ऐसाबचन कहते
तो वहतुम्हैंदण्डदेते जबप्रह्लादने उसबूढ़ेकीबात सुनकरहारमाना
तबनृसिंहजी के पासजाकर विनयकिया महाराज संसारमें सब
छोटे व बड़े अपनेअज्ञानसे मायामोहके जालमेंफँसरहेहैं इसलि
ये कोईमनुष्य वैकुण्ठजानेकी चाहनानहीं करता यहबचन सुन
कर नृसिंहजीबोले हे प्रह्लाद जगत्में जिसजीवने जो तनुपाय
वह उसीयोनिमें मग्नरहताहै व इच्छाउसकी किसीतरहपूर्
होती आंखकानआदिक सबइन्द्रियां शिथिलहोजाती
उसका संसार छोड़नेवास्ते नहींचाहता यहबातसुन
नृसिंहजीकी दण्डवत्करके विनयकिया महाराज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३ क्रि है जिसकोआपदयाकरके ज्ञानदेतेहैं वहमनुष्य वैकुण्ठ
बसा चाहनाकरताहै नहींतो सबकिसी को ज्ञानप्राप्तहोना ब
जन नहै और केतुमालखण्डमें कामदेव भगवान्ने अवतार
थ्वीने वहांपरलक्ष्मीजी प्रजासमेत मंत्रपढ़कर उनकीस्तुति
बर्त्त रतीहैं व रमणकखण्डमें परमेश्वरने मत्स्यअवतार धा
बना था वहां रमणकनामराजा अपनीप्रजासमेत मत्स्यरूप
दिक्षाकरताहै और हिरण्मयखण्डमें कच्छपअवतारनारायण
त्रा लियाथा वहां हिरण्मयनाम राजा अपनी प्रजासमेतउसी
वकी पूजा व स्तुति मन्त्रपढ़कर करताहै और कुरुखंडमें भगव
ने बाराहअवतारधारणकियाथा वहां कुरुनामराजा अपनीप्र
समेत उसीरूपकी पूजा मंत्रपढ़कर करताहै व पृथ्वीवहां पुजा
रहकर कहतीहै कि आपहिरण्याक्षदैत्यको मारकर मुझेरसात
लोकसे लेआये हैं ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका राजापरीक्षित से शेषखण्डोंका हालकहना ॥

शुकदेवजीबोले हेराजा किम्पुरुषखंडमें रामचन्द्रजी
जतेहैं व हनुमान्जी वहांपुजारीहोकर रघुनाथजीकीमन्त्रसेपू
र स्तुतिकरकेकहतेहैं महाराजआपने केवलसंसारीजीवोंको
बातदिखलाने व कृतार्त्थकरनेवास्ते नरतनुधारणकिया कु
वैकुण्ठकेमारनेको अवतारनहींलियाथा आपचाहतेतोअ
हींचलसहसोंकाबधकरदेते व आपनेबनमें जानकीजीके
वो यहवचनयाथा सोसंसारीजीवोंको यहदिखलायाहै ज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कैसेईश्वरपरब्रह्मको गृहस्थीकरनेमें दुःखहुआतो जगत्में
मजीवहैं सबको स्त्री व पुत्रादिकसे दुःखप्राप्तहोगा व आपने
तनुइसवास्ते धारणकिया कि जिसमें तुम्हारीशरण आनेवा
ऐसासुन्दररूप छोड़कर दूसरेको किसवास्तेभजैगा व परमे
न भरतखंडमें यहबात बिचारकर नरनारायणका अवतार
या कि इसखंडके प्रजालोग कलियुगमें तप व जप नहींकरस
इसवास्ते मैं तपस्वीरूपहोकर बदरीकेदारमें बैठारहूं जो क
मेरा दर्शनकरैगा उसको अपने दर्शनसे तपकाफल देकर पवित्र
करके मुक्तिपदवी देऊंगा इसलिये आजतक बदरिकाश्रममें बैठ
कर तपकरतेहैं और वहां नारदजीपुजारी सांख्ययोगसे मंत्र पढ़
र पूजा व स्तुतिकरके कहतेहैं हेदीननाथ सबजगत्की उत्पत्ति
पालन व नाशकरनेवालेआपहैं व सातोंद्वीपमें भरतखंड मध्य
श सबपृथ्वीकी जड़ बहुतपवित्रहोकर इसखंडमें जो जीवजैसा
कर्म्मकरै वैसाफल दूसरेलोकमेंजाकर भोगताहै इसलियेभरतखं
कर्म्मभूमिका पाप व पुण्यकियाहुआ खेतकेसमान बढ़ताहै व
सिवायभरतखंडके दूसरे जो आठखंडहैं वहांसदा त्रेतायुगकेसमा
रहकर कलियुगअपनाप्रवेश नहींकरसक्ता वहांके रहनेवाले दे
तोंकीतरह स्त्रियोंको साथलेकरभोग व विलासकियाकरतेहैं उन
वहां सदाबसन्तऋतु व इन्द्रलोककेसमान सुखबनारहकर दुः
किसीबातका नहींहोता व चारोंवर्णकाविचार केवल भरतखंड
है व दूसरेखंडकेलोग इतनासुखहोनेपरभी भरतखंडके मनुष्यों
अपनेसेअच्छा व भाग्यवान्जानतेहैं व भरतखंडकेजीव थो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किन स्मरण व भजन नारायणजीका करनेसेभवसागरपार उ
बसा हैं व दूसरेखंडों व द्वीपोंमें यहबातनहींप्राप्तहोती सो आप
जन्म पाकरके कलियुगबासियोंको दर्शनदेनेवास्ते इसखंडमें
थ्वीन लियातिसपर भी कलियुगकेमनुष्य ऐसेकपट व आलस्यौंने
बर्त्त मानमेंभरेरहैंगे किउनको संसारीमायामें फँसेरहनेसेतु
बना नकरनेकी छुट्टी नहींमिलैगी जिसपरआप अनुग्रहकरैंग
दिख हारे चरणोंको आकरदेखैगा हेपरीक्षित जब देवतालोग
त्रा स अपने २ विमानों में बैठकर मन्दराचल पर्वतपरविहार
व वास्तेआतेहैं तब भरतखंडके मनुष्योंको देखकर अपनेको
समझके कहतेहैं कि हमलोगोंको यहसामर्थ्यनहींहै कि जो
से उत्तमपदवीको पहुंचसकें व भरतखंडके जीव शुभकर्म्मकर
से जितनीबड़ीपदवीको चाहैं पहुंचजावें सो हेराजा जिसनेभ
खंडमें मनुष्यतनुपाकर जन्मअपना संसारी मायामोहमें
व हरिभजनसे विमुखरहा उसकाजन्मलेना अकार्थहुआ
नुष्यकी वहगतिसमझना चाहिये जैसे कोई द्रव्यप्राप्तहोनेके
बड़े परिश्रमसे ऊंचेपर्व्वतपरचढ़कर धनकेपासपहुंचे फिर
को बिनामिलने द्रव्यके पहाड़परसे नीचेगिरादेवे तो उसका
परिश्रम वृथाहोकर हाथपैरटूटजावैं तब सिवायपछिताने के
उसबूंदसेभेंट नहींहोती इसलियेउचितहै जो जीवभरतखंड
नुष्यकातनुपावै वह हरिभजनकरके भवसागरपारउतरजा
जो अपनेअज्ञानसे ऐसानहींकरतावहपीछे बहुतदुःखपाता
भरतखंडमें चित्रकूट व गोवर्द्धनआदिक बहुतसेपर्वत व कोटि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सरस्वतीआदिकअनेक नदियांभीऐसी हैं किजिनकानाम
दर्शनकरनेवनहानेसे सबपापमनुष्यका छूटकर कायाउ
शुद्धहोजातीहै इसकारणदेवतालोगकहते हैं कि भरतखंडव
ोंने पिछलेजन्मकेपुण्यसे यहांजन्मपाया जिसखंडकेजन
व परमेश्वरका भजनकरनेसे मनुष्यतुरन्तमुक्तहोजाताहै
नावृतखंडकीकथा नवेंस्कन्धमें आवैगी उसखंडमें शिवजीप
कोसाथलिये सोलहहज़ार सहेलियोंसमेत सदा विहारकरक
षभगवान्की पूजा व स्तुति मन्त्रपढ़कर करते हैं व नाभिखंड
रतखंडमें मिला है॥

बीसवां अध्याय॥

शुकदेवजीका विस्तारपूर्वकसातोंद्वीपकीकथा राजापरीक्षित से कहना॥

शुकदेवजीबोले कि हेराजा नवोंखंडोंकीकथा हमने तुमसे व
नकी अबसातोंद्वीपों काहालसुनो जम्बूद्वीपकेबीच नवखंडहो
र इसद्वीपमें एकवृक्ष जामुनका बहुतबड़ालाखयोजन ऊंचाहै
सकारण जम्बूद्वीपनामहुआ व उसवृक्षकीछाया लाखयोजनके
में पड़तीहै व उसकेफल काले २ हाथीकेसमान बड़ेहोतेहैं व उ
फलकारस पृथ्वीपर गिरनेसे सूर्यकातेजपाकर सोनाहोजाताहै
चारोंओरइस द्वीपकेखारेपानीका समुद्रहै व नवखण्डकेज्यो
उन्होंनेएक २ खण्डकेछः छः भाग करके अपने २बेटों
दिया व उननवखण्डोंके सिवानेपर एक २ पहाड़बीच
मेरुपर्वतकेनीचे रस व सहत व घीकी तीननदीबहती
गन्धर्वआदिकों की स्त्रियांउननदियोंमेंजाकर
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३ किन तीहैं तोउनकोअबलता व बुढ़ाईनहींहोती व जम्बूद्वीप
बसा गरके साठिहज़ारबेटों ने श्यामकर्णघोड़ा यज्ञकाढूंढ़नेके
जन ोपृथ्वीखोदाथा उसखोदनेसे सिंहलद्वीपआदिक सात
थ्वीने प्रकटहुयेहैं दूसरेपाकरद्वीपमें एकवृक्षपाकरका दोलाख
बर्त्त ऊंचा व उसकेफलबहुत बड़ेहोकर उसकीछाया दोलाख
बना के घेरेमेंपड़तीहै इसलिये पाकरद्वीपनामहुआ व उसकेच
दिक रसकासमुद्रभराहै जोकोई उसवृक्षकेनीचेजाकर भूषण
वास्त्र व भोजनआदिक जिसबस्तुकी इच्छाकरै उसीसमय व
र्थ उसवृक्षसेमिलताहै व उसीद्वीपमें अमृतनामादिक सात
डहैं तीसराशाल्मलिद्वीप वहांसेमलकावृक्ष चारलाखयोजन
चाहोकर उतनेघेरेमें उसकीछाया पड़तीहै इसकारणउसका
ल्मलिद्वीपनामहुआ उसद्वीपके चौगिर्द किनारे २ आठपर्व्व
होकरउनपहाड़ोंपर यक्ष व गन्धर्व्वादिक जाकरगाते बजाते हैं
वहांपर तालाब व बाग़ व मकानअच्छे २ विहारकरनेवास्ते
हुयेहैं व सूर्य्यनामादि सातखंडउसद्वीपमेंहैं उसकेचारोंदिशा
मदिराकासमुद्रभराहैचौथाकुशद्वीप यहांकुशकावृक्ष आठल
योजनऊंचाहोकर उसकीछाया उतनेघेरेमेंपड़तीहै इसलिये
कानाम कुशद्वीपहुआ उसकेचारों ओर घीकासमुद्र भरा है
उसबूंदीचेकुंड व तालाबऐसेबनेहैं कि जिनमेंस्नानकरने व
नुष्यकाताप व प्यास सबछूटजातीहै व जो बूढ़ा व रोगी मनुष्य
जो अपनेआप तो रोगउसकाछूटकर हृष्टपुष्टहोजावे व सकल
भरतखंडमें चि उसद्वीपमें हैं पांचवांक्रौंचद्वीप जिसमेंक्रौंच

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लह योजनऊंचाहै इसलिये उसकानाम क्रौंचद्वीपहुआ
ड़पर गरुड़जीबैठकर वहांसेसबद्वीपोंको देखकेबहुतमग्न
उसकेचारों ओर दूधकासमुद्रभराहै व व्यासनामादिक
ड उसद्वीपमें हैं छठवांशाकद्वीप वहांशाककावृक्ष बत्तीस
जन ऊंचाहोकर उतनेघेरेमें उसकीछाया पड़तीहै व चौ
द्वीपके मट्ठेकासमुद्रहोकर देवद्विजनामादिक सातखंड
में हैं सिद्ध व तपस्वीलोग उसवृक्षकेनीचे बैठकर हरिभज
व उसवृक्षकागिराहुआ पत्ताखानेसे उनकापेट भरारह
व प्यासनहींलगती सातवांपुष्करद्वीप वहांएकवृक्षकम
सठलाखयोजनऊंचा व उतनेघेरेमें उसकी छायारहकर
रेकीसुगन्धआतीहै व उसकेचारोंदिशामें मीठेपानीका
कर उसवृक्षकेनीचे मानसरोवरतालाबहै वहांपरहंसपक्षी
तीचुगते हैं व कृमरातआदिक सातखण्डउसद्वीपमें हैं
त राजाप्रियव्रतने इनसातोंद्वीपोंकाराज्यझूंठासमझकर
व हरिभजनकरके मुक्तिपाई॥

इक्कीसवां अध्याय॥

शुकदेवजीका राजापरीक्षित से विस्तार आकाश व सूर्यादिकका कहना॥

वजीबोले किहेराजन् जितनाविस्तार सातोंद्वीपोंकाहम
कहा उतनाआकाशभी लम्बा व चौड़ाहै जिसतरह चने
न ऊपर व नीचेहोती हैं उसीतरह आकाश व पृथ्वीको
हिये व सूर्यनिकलनेसे तीनोंलोकमें प्रकाशहो[illegible] २ नाग रहके
उत्तरायण व छः महीनेदक्षिणायन रहते हैं व [illegible] हैं कि जिन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेहोकर तीनमार्गसूर्यके रथजानेवास्ते बनेहैं उत्तरा व
स्तेपरहोकर रथउनकाजानेसे प्रकाशजगत्में अधि ये
क्षिणायनमें नीचेमार्गसे होकरजाने व तारागणोंके न
तेजउनका कमहोजाता है व मकरसेलेकर मिथुनत सू
यण व कर्कसेलेकर धनकीसंक्रांतिपर्यन्त दक्षिणायदिन
रायणसूर्यमें दिनबढ़करराबघटती है व दक्षिणायना उ
होकर रातबढ़तीहै व सूर्यएकराशिपर महीनाभरस्ह हर
दिनरातमें नौकरोड़ लाखयोजन सूर्यकारथ सुमेरो ज
दिशामें फिरता है व सुमेरुके पूर्वइन्द्रपुरी व दक्षिण ह
श्चिमवरुणपुरी व उत्तर कुबेरपुरी है व सूर्य्यअपने गी
स्थानसे उसीके सन्मुखअस्तहोते हैं व एकपहियाका त
चलकर दूसरे पहियाकीधुरी सुमेरुपर्वतपर ध्रुवलोकमें ह
सूर्य्यकारथ छब्बीसलाखयोजनके विस्तारमेंहोकर कि
ओर व एकघोड़ा दूसरीओर जोतारहताहै व यक्षलो
पीछेसेठकेलते हैं व रस्सीकीजगहपर सांपोंसे धुरीओ
कीबांधीरहकर अरुणासारथीहांकताहै व बालखिल्य
हजार ऋषीश्वर जिनकेशरीर अंगूठेके प्रमाण हैं उ
सूर्यकेओरमुँहकिये स्तुतिकरतेहुये पिछलेपांव दौड़

बाईसवां अध्याय ॥

चन्द्रमा व मंगलादिक ग्रहोंकाहाल राजापरीक्षित से शुकदेवजीका क

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर पूछा हेमुनि
भरतखंडमें चि सूर्यकारथ सुमेरुपर्वत व भुवलोकके चारो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व दूसरेग्रहोंकाहाल नहींकहा सो उसकोभी दयाकर
ये शुकदेवजीबोले कि हेराजन् चन्द्रमाकारथ ग्यारह
नलम्बा व चौड़ा सूर्यकेरथसे लाखयोजनऊंचे रहकर
सूर्यका एकमहीनेमें फिरताहै उतनाचंद्रमाअपनेरथ
दिनमें चलते हैं व चन्द्रमाकेरथसे लाखयोजनऊंचेमंग
उससेलाखयोजनऊंचे बुधकारथ औरउनसेलाखयो
हस्पतिकारथ उससेलाखयोजनऊँचे शुक्रकारथ व उ
जनऊपर शनैश्चरकारथ व उससेलाखयोजनऊंचेरा
हलाखयोजनकेविस्तारमें रहकरसबरथोंकीधुरी ध्रु
गीरहती हैं व राहुकारथचन्द्रमा व सूर्यकेबराबरआने
ताहै व सूर्यकारथ सुमेरुपर्वतपर कहीं२रुकजानेसे ती
महीनामलमास अधिकहोकर संक्रांतिबराबररहतीहै
वर्षहोते हैं एकसंक्रांतिकी गिन्तीसे सूर्यकावर्षदूसरा
द्वितीयासे चन्द्रमाकावर्ष तीसराचैत्रशुक्लप्रतिपदासे
चौथा नक्षत्रोंकीगिन्तीसे पांचवांबृहस्पतिकी गतिसे
शिपर बदलजाते हैं समझनाचाहिये व सूर्य क्षत्री व
चन्द्रमा ब्राह्मण व मंगल वैश्य व बुधशूद्रवर्ण व राहु
स्ते शुभकारक व अच्छेहोते हैं व शुक्रजैसेस्थानमें प
फल चारोंवर्णकोदेकर किसीवर्णकेसाथ मित्रता व श
त्रुता व शनैश्चर व राहु केतु चारोंवर्णोंको दुःखदेतेहैं॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेईसवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका ध्रुवलोककी स्तुति परीक्षितसेकहना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् सुमेरुपर्वतसे तेरहल
चाध्रुवलोकहोकर वहांपर सदाध्रुवजी सप्तर्षियोंसं
नन्दसेरहतेहैं वशिष्ठ १ व भृगु २ व कश्यप ३ व अं
स्त्य ५ व अत्रि ६ व पुलह ७ यहसातऋषीश्वर ता
रातध्रुवजीकी परिक्रमालेकर इसतरहनहीं हिलते
तेल निकालतेसमय बैलचारोंओर घूमताहै व कोल
व ध्रुवलोककेनीचे कालचक्र फिरकर अश्विनीआ
नक्षत्रध्रुवलोकके आसपास बिनाआश्रय हवाकेस
चलते हैं कि जिसतरह मेघ व बादल आकाशमें प
चलताहै इसवास्तेध्रुवलोकको सू इसकेसमानहोने
चक्रभीकहतेहैं जिसतरह बैठतेसमय सू इसकुम्हार
होजाताहै वहीरूप ध्रुवलोकका समझनाचाहिये
चौदहनक्षत्र दहिने व चौदहनक्षत्रउसके बायेंओ
कके घूमनेकेवक्त वहसबउसीके आश्रयसेघूमते हैं
जापति व अग्नि व इन्द्र व धर्म्म व पूंछकी जड़में
कमरमेंसप्तऋषीश्वर ऊपरकेओठमें अगस्त्यजी
में यमराज व राहुमंगल व मूत्रस्थानमें शनैश्चर
स्पति व आंखोंमेंसूर्य व हृदयमें परमेश्वर व मन
अपनेअ में शुक्र व दोनोंछातीमें अश्विनीकुमार व श्व
भरतखंडमें चि व केतु व सबतारागण बदनकेरोम २ में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रचक्र नारायणजीका स्वरूपहै इसलिये सबदेवता व ब्रह्माण्ड
उसीरूपमें समझनाचाहिये जो कोईप्रातःव संध्याकालमेंयह
यापढ़करध्यानइसरूपकाकरै उसकेसबपापछूटकरअशुभग्रह
फल न होगा॥

चौबीसवां अध्याय॥

चौदहों लोकका वर्णन करना॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित ऐसाभी किसीपुराणमें लिखा है
सूर्यसेदशहज़ार योजननीचे राहुकारथरहकर जबउसकेसम्मु
सूर्य व चन्द्रमाकारथ आजाता है तबग्रहणलगकर सूर्य व च
माको अतिभयप्राप्तहोताहै जिसकीकथा विस्तारपूर्वक अष्टम
न्धमें आवेगी परसुदर्शनचक्रकीरक्षासे राहुकुछउनका करने
सक्ता उसकेबारहयोजननीचे सिद्ध व चारण व विद्याधर आ
देवतोंके रहनेका स्थानहोकर उसकेबारहलाख योजननीचे
ब राक्षस व पिशाचलोग रहतेहैं उनके सौयोजननीचे पृथ्वी
लोककी है व हंस व बाज व गिद्धआदिक बड़ेउड़नेवालेपक्षी
हयोजनसे अधिकजानेकी सामर्थ्यनहींरखते व सातोंलोकऊ
का सातखण्डके घरसमानहोकर सातलोकनीचे का उसीके
समझनाचाहिये व (नीचेके सातोंलोकोंके नाम) अत
तल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ पाता
र सातोंलोक नीचेके दशदशहज़ार योजन विस्ता
सातोंलोकोंके नाम) भूलोक १ भुवःलोक २
लोक ४ जनलोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक

कर
अपनेप
है उसकेनी
नाग रहक
कि जिन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नासुख भोजनवस्त्र व भोगादिकका वहां रहता है उससे अ
नीचेकेलोकोंमें समझनाचाहिये अतललोकमें मयनाम दै
करमाया व इन्द्रजालकीविद्या बहुतजानताहै दैत्यलोगवहां
उससेपढ़कर किसीकोकुछमालनहीं समझते व उसलोकके
वाले सबदैत्यवदानव अपनी२ स्त्रियोंसमेतअमृतपीकरआनं
कभोग व विलासकरते हैं अमृतपीनेमें उनकोमरने व बूढ़ेहोने
रनहींरहता व अच्छी२ औषधीखानेसे कुछरोग उनकोनहीं
व उनकीआयुर्द्दायकी कुछअवधिनहीं है जबअधिकदैत्यउत
होनेसे वहांजगहनहींरहती तबहरिइच्छासे सुदर्शनचक्रवहां
रकुछदैत्योंको मारडालताहै तबवहसमानेयोग्यबचकर आ
र्वकवहांरहते हैं उसकेनीचे बितललोकमें मयदानवकाबेटा
बलवान् जिसनेछान्नबे मायाइन्द्रजालकी बनाईहैं रहता
भानमतीआदिक उसीमंत्रको सीखनेसे एकसाइतिमें वृक्ष
मेतलगाकर दिखलादेती हैं यहसबइन्द्रजालकी विद्यासम
चाहिये औरवक्तलेने जमुहाई असुरबलवान्के मुखसे पुंश
अतिसुन्दरस्त्रियां निकलकरतीनोंलोकमें फिरती हैं व इच्छा
एकपुरुषको उठालेजाकर उसे औषधीके कुण्डमेंडालदेती
व [illegible]कुंडमें स्नानकरनेसे रूपवान्होकर उसेदशहज़ारहाथी
[illegible]मदेवमें बड़ीसामर्थ्यहोजाती है तबवह पिछलीअ
[illegible]न्त अपनेकोबड़ाबलवान् व भोगी ईश्वरकेसमा
[illegible] अपनेअ[illegible]तीनों पुंश्चलियोंसे भोग व विलासकरताहै व
भरतखंडमें चि[illegible]श्वरमहादेव रहते हैं जिनकावीर्य अग्नि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेखाकर गुदाकेरास्ते बाहरनिकालदियाथा उसीसेबहुतअच्छा
ीनाउत्पन्नहुआ जिससुवर्णकाभूषण देवतोंकीस्त्रियां पहिनती
व मर्त्यलोकका सोनाउसकीबराबरी नहींकरसक्काउसकेनीचेती
रसुतललोकमें राजाबलिदैत्य विरोचनकाबेटा राज्यकरता है
जसबलिको बामनभगवान्ने इन्द्रादिकदेवतोंके कल्याणकेवा
ढ़ेहोनेते वहांभेजदियाथा सोवहअपनेगुरु व कुलपरिवार समेत वहां
ीनहींहकर आठोंपहर परमेश्वरका दर्शनपानेसे अपनाजन्मसुफल
ैत्यउ मानताहै देखोराजाबलिने शुक्राचार्यगुरुके वर्जनेपरभी तीनपग
कवहां थ्वी बामनभगवान्कोदानदिया इसीकारण नारायणजीत्रिलो
कर आ ीनाथ आठोंपहरउसकेद्वारपर गदालियेबनेरहतेहैं व सुतललोक
काबेटा वैकुण्ठकेसमान सुखरहता है व उसीतीनपगपृथ्वी दानकेप्रता
रहता से राजाबलि अगिलेमन्वन्तरमें इन्द्रपुरीकाराज्यपावेगा दान
वृक्षप नाऐसाअच्छाहोताहै उसकेनीचे चौथातलातललोकमें त्रिपुर
प्रासम ीदानव महादेवजीका परमभक्तरहकर वहांराज्यकरता है व
से पुरु वजीकीकृपासे उसकोकुछमरनेकाडर नहींरहता उसके नीचे
इच्छा चवेंमहातललोकमें कद्रू व तक्षक व कालीयआदिक बड़े बड़े
नदेती प अपनेकुटुम्बसमेत जिनकेअनेक शिर व फनहैं रहकरवहांका
रहाथी ज्यकरतेहैं वहलोगमृत्युका भय न रखकर गरुड़जी से डराकर
नीअ हैं उसकेनीचे छठवें रसातललोकमें विराटकुलदानव अपनेप
केसमा ारसमेतरहकर आनन्दपूर्वक वहांका राज्यकरता है उसकेनी
ताहै व सातवेंपातालोकमें वासुकिआदिक बहुत बड़े २ नाग रहक
आगि पजी हज़ारमस्तकवाले प्रसिद्ध नाग रहते हैं कि जिन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकमस्तकपरपृथ्वी सरसोंके समान रक्खी रहकर हज़ार
कन्या महासुन्दरीदिनरात उनकीसेवाकरतीहैं व शेषजीभ
हर परमेश्वरकागुण हज़ारमुख व दोहज़ारजिह्वासे गातेहैं
परभी उनकेभेद व आदि व अन्तकोनहींपहुंचते व शेषजीके
पर एकशय्याअतिसुन्दर सांगोपांग रक्खी है उसपरचतुर्भु
प भगवान् जगत्कोसुखदेनेवाले तीसहज़ारयोजनके शरीर
क्ष्मीसमेत शयनकरतेहैं व नीचेके सातोंलोकमें सूर्य व चन्द्र
का प्रकाश न जाकर वहांपर ऐसेमणि व रत्नादिकहैं कि जि
तेजसे दिनरात उजियालाबनारहताहै औरवहां सुदर्शनचक्र
तड़पसे स्त्रियोंकागर्भपातहोजाताहै इसलियेवहांकेलोग अधि
न होकर देवतोंकेसमान सुखभोगनेसे बूढ़े व दुर्बल नहींहोते॥

पचीसवां अध्याय॥

शेषनागकी महिमा वर्णन करना॥

शुकदेवमुनिनेकहा शेषनागजीभी ग्यारहोंरुद्रोंमें संकर्षण
मएकरुद्रहैं महाप्रलयमें उनकेमुंहसे अग्निनिकलकर तीनों
ककोजलादेती है व चौदहोंभुवन उनकेएकमस्तकपर रक्खे
कर इतनाबोझ उनकोकुछ नहींमालूमदेता व नित्य देवता
गोंकीहज़ारोंकन्या आनकर उनकीपूजामें बनीरहती हैं ति
भी शेषजीको कामदेवकी चेष्टानहींहोती वहकेवलसंसारक
ल्याणकेवास्ते काम क्रोध मोह लोभ मन व इन्द्रिय आदिकको
पने आधीनरखकर उनकेवश नहींहोते व बड़े २ योगी व मु
नकेचरणोंकी [illegible] स्मरणआठोंपहर कियाकरते हैं व शे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिनरात सिवायकहनेकथा व कीर्तन वैकुण्ठनाथके दूसराका
नहींकरते जोकोई मुक्तिकीचाहनारखताहो वह शेषभगवान्की
ध्यान व स्मरणकरके उनकीशरणपकड़े तोसंसारमें वांछितफल
पाकरभवसागर पारउतरजावे शेषजीसेअधिक किसीदूसरेदेवत
की पूजापरमेश्वरके मिलनेकेवास्ते उत्तमनहींहोती और कहांत
कउनकी स्तुतितुमसेकहैं कि जिनकाकुछअन्तनहीं है हेराजन्ज
हांतकइसजीवकेरहनेव जानेकीगतिहै सोवर्णनकिया सिवायइस
के और कहींजीवजाने व जन्मलेनेनहींसक्ता ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका हाल व नरकों का नाम वर्णन करना ॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकर बोले हे शुकदेवस्वामी आ
ने कईजगह कहाहै कि पापकरनेवाले नरकमेंजाकर बड़ादुःख
तेहैं औरशुभकर्मकरनेवाला स्वर्गादिककासुखभोगताहै और
दोहींलोककीकथा कहनेपरभी आपनेकिसीजगह नरककावर्ण
नहींकिया इससेमुझेनरककानाम केवलभयदिखानेवास्ते मा
नूमहोताहै मुझसेइतनीअवस्थामें यहीएकअपराधहुआ किजो
ब्राह्मणकेगलेमें मराहुआसर्पडालदिया इसपापकेबदले मुझेनर
कजानेकाडरलगाहै सो नरककाकोई भिन्नलोकपृथ्वी व पानी
रहोकर उसकेनाममें कुछभेद तो नहींहै उसेवर्णनकीजिये यह
चनसुनतेही शुकदेवजीहँसकरबोले कहेराजन् तूनरकमें जाने
ाग्यनहींहै इसलियेवहांकाहाल तुझसेनहींबतलाया अबकहते
सुनो नरकसुमेरुपर्वतसे निन्नानवेयोजन दक्षिणभूमीसेनीचे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पानीकेऊपरहै सो धृतपृष्ठआदिकचारोंवर्णके दिव्यपितरउस
ककादुःखदेखकर अपनेकुल व परिवारवालोंको मनाकरनेवा
उसकेद्वारेपरबनेरहतेहैं किजिसमें कोईहमारेपरिवारका ऐसा
नकरे किउसेनरकमें आनापड़े व यमराजसूर्यकेपुत्र यमपुरी
जाहैं व तामिश्ररौरवनामादिक अट्ठाईसनरकहोकर उनकेदी
संयमनीनामएकपुरीभी नरककेसमानहै सो धर्मराज जिन्हें
राजभी कहते हैं मरनेउपरांत पापीकोनरक व धर्मात्माको
में भेजदेतेहैं व अपनेकर्मानुसार वहांजीव दुःख व सुख भोग
फिर संसारमें जन्मपाता है व अतिकष्टपानेपर भी नरकमें
नहींनिकलता और जौनपापकरनेसे जिसनरकमें वेलोगजाते
उसकाहाल सुनो जोमनुष्यदूसरेका धन व स्त्रीछलबलसे लेलेते
है उसेयमदूतबांधके मुद्गरोंसे मारतेहुये तामिश्रनाम नरकम
अंधकार में लेजाकर डालदेते हैं वहांउसे कुछभोजन व पान
हींमिलता जो कोईकिसीस्त्रीके पति या रक्षकको किसी बहा
बाहरभेजकर उसकेसाथ भोगकरताहै उसकीआंखैं फूटजाती
व मरनेके उपरांतउसको यमदूतमुद्गरों से मारतेहुये लेजा
उसकाअंगअंग काटिके अंधतामिश्रनरकमें डालदेतेहैं जोमनु
अधर्मकी कमाईसे अपनापरिवारपालनकरके अभिमानसे
ताहै किं इनकोभोजनदेताहूं उसकोयमदूत रौरवनरकमें
करसांपोंसे कटवातेहैं जोकोई किसीमनुष्य व पशु व पक्षीको
नेभोजनकेवास्ते या शत्रुतासेमारता है यमदूतउसको महा
नरकमें डालदेतेहैं तबतक उसे सर्पोंके काटनेसे महादुःख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Prayagraj. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है जोमनुष्यकेवल अपनेतनुसे प्रीति रखके उसकोसुखदेनेवास्ते
अपनाधर्म व कर्मछोड़कर ब्राह्मण व वेद व शास्त्रको नहींमानता
उसे यमदूत कालसूत्रनरकमें जहांसड़ाहुआ मांसभराहै डालक
उसकामांस बड़े २ गिद्धोंको खिलाते हैं जोकोई हरिण व पक्षी
आदिकको बांधकर या पिंजड़ेमें बन्दरखताहै उसेयमदूत कुम्भी
पाकनरक पीबभरेहुयेमें डालकर गरम २ तेल उसकेबदनपर छि
ड़कतेहैं जो मनुष्य अपनेमाता व पिताकोदुर्वचनकहकर भोजन
वस्त्रका दुःखदेताहै उसकोयमदूतलेजाकर एकपटपरजहांदश
जारयोजन लम्बी पृथ्वी तांबेकेसमानपीटीहुई अग्निऐसीजल
ताहै नंगेपैरदौड़ाते हैं जबवहपैर जलने व क्षुधातृषासे वहां अति
दुःखपाकर कुछअन्न व जल नहींपाता तबअचेतहोकर गिरपड़
ताहैजितनेरोमपशुकेअंगपररहतेहैं उतनेहजारवर्ष वहउसजलती
हुईधरतीपर तड़फताहै जो लोग शास्त्रमार्ग छोड़कर अपने मन
वा किसीके देखनेसे कुराहचलते हैं उनकोयमदूत बीचअसिपत्र
तरुकेजहांवृक्षोंमें तलवारऐसेपत्तेहैं लेजाकरजबउनदरख्तोंपर
चढ़ाके गिरादेतेहैं तबशरीर कटजानेसे उन्हेंबड़ादुःखप्राप्त होता
है जो राजा किसीको विनाअपराध दण्डकरके ब्राह्मणको फांसी
देताहै उसेयमदूतशूकरमुख नरकमें लेजाकर तेलकेसमानपेरते
हैं तबवहजीव कोल्हूमेंपेरने व शूकरऐसेजानवरोंके काटनेसेबड़ा
दुःखपाताहै जोकोईअपनीकमाईमें देवता व पितरकाभागनदेक
केवलअपनापेट व परिवारपालताहै उसकोयमदूतअंधकूपनरक
डालदेतेहैंवहांपरवहसांप व बिच्छू व जोंकआदिकके काटनेसेबहु

CC-0.In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तदुःखीहोताहै जो कोईउत्तमपदार्थ अकेलेखाकर अपनेसाथी
देखनेवालोंकोनहींदेता उसेयमदूत कृमिभोजन नरकहजारयो
नकेकुंडमें जोकीड़ोंसेभराहै डालकरवहीकीड़ेखिलाते हैं जो
किसीब्राह्मणकाधन व खेतचुराकरयाबजोरीसेलेलेताहै उस
यमदूत संडसननरकमेंजहांबिच्छूभरेहैं डालकरलोहेकागज
गसेलालकरके उसकाअंगदागदेतेहैं जोकोईपरस्त्रीसेभोगकर
याजोस्त्री अपनापतिछोड़कर दूसरेपुरुषकेपासजातीहै यमदूत
केतनुमें जलतीहुईलोहेकीमूर्त्तिलपटाकर नानाप्रकारकेदुःख
हैं जो कोई नीचऊंचवर्णका विचारनरखकर परस्त्रीगमनकरत
सेयमदूतवज्रकंटकव शाल्मलिनरकमें डालकर बड़ा २ कांटा
हेका उसकेशरीरमेंचुभातेहैं जो मनुष्यराजा या कामदारहोके
किसीकाधर्म जबरदस्ती बिगाड़देताहै उसे यमदूत वैतरणीनद
में जहांलोहू व पीव व मलमूत्रादिक भराहै डालकर भोज
जगहवहीखिलातेहैं तबपापीजीव अपनेकर्मोंको समझकर
बहुतपछिताताहै जो कोईदासीपालकर उससेभोगकरताहै उ
मदूत लालाभक्षनरकमेंडालकर मुंहकीलार व पीबपिलाते
कोई राजा या बड़ाआदमी अहेरादिकखेलकर पक्षीकोमार
उसेयमदूत दशहजारयोजन ऊंचेलेजाकर वहांसेपत्थरकीच
परगिरादेते हैं जो मनुष्य देवीआदिक देवतोंकानामकरके
भोजनवास्ते जीवहिंसाकरते हैं उन्हें यमदूत विश्वासनर
डालकरमुद्गरों से इसतरहकूटते हैं कि जिसतरहउखली मेंध
टेजातेहैं व आगलगानेवालेमनुष्यकोयमदूत सरमेयादन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेंडालकर हजारोंकुत्तोंसे कटातेहैं जो कोईकिसीसे द्रव्यलेकरझू
ठान्यायकरे या मिथ्यासाखीभरताहै उसेयमदूतदशहजारयोज
नऊंचेलेजाकर शिरनीचे व पैरऊपरकरके रक्तभरेहुये वैश्वासन
नरकमें गिरातेहैं व उसकोसूखीपृथ्वी परजल दिखलाईदेकर पा
नीभराहुआ सूखादृष्टिपड़ताहै जो ब्राह्मण व क्षत्री व वैश्यवेदका
अधिकारीहोकर देवतोंकेबहाने या अपनेसुखवास्ते मद्यपीताहै
उसे यमदूत छारकर्दमनरकलोना मिट्टीभरेहुयेमें डालकरगला
ताहुआ शीशापिलातेहैं जो ब्राह्मण व क्षत्री व वैश्य बिनाप्रसाद
यज्ञके पशुकामांसखाताहै वहीजीव गिद्धरूपहोकर उसकामांस
खातेहैं व उन्हेंसिवायरक्तके पानीपीनेवास्ते नहींमिलता जोकोई
साधु व संत या कंगाल या अपनेसेवकको बिनाअपराधदुर्वचन
कहकरसताताहै व अन्धेमनुष्यको पूंछनेसे भी राहनहींबतलाता
उसेयमदूत रक्षोगणभोजननरकमें जहांराक्षसकाटतेहैं डालकर
पांच २ सात २ मुंहकेसांपोंसेकटाते हैं जो मनुष्यमंगन व वैरागी
जो भिक्षामांगतेसमय टेढ़ीआंखदिखलाकर झिड़कदेताहै उसे
यमदूतशूलप्रोतनरकमें डालकरबड़े २ गिद्ध व सांपोंसे कटातेहैं
कुछभोजन व पानीनहींदेते इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीने
कहा हेराजन् जोमनुष्य वेद व शास्त्रसे विमुखहोकरथोड़ा याबहु
कुकर्मकरताहै व परमेश्वरकीकथा व स्मरणमें प्रीतिनहींरखता
है अवश्य नरकमेंजाकर अपनेकर्मानुसार दुःखपाताहै मनुष्य
तनु वेद व शास्त्रसे विपरीतचलनेवास्ते नहींहोता अपनाशरीर
नारीयोनिमेंभी पालसक्ताहै इसलिये मनुष्यको [illegible]

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की सेवा व संगतिकरके ज्ञानसीखनाचाहिये व ज्ञानीहोनेपर
जीवोंमें परमेश्वरका चमत्कार एकसासमझकर दूसरेजीवों
रक्षा व परउपकारकरना उचितहै जिसमें परलोकबनै अज्ञा
नुष्यजबतककथा व पुराणनसुनै व अनजानमेंउससे नरकभो
योग्यकोईपापभी होजावे व ज्ञानप्राप्तहोनेपर फिरवहकुकर्म
नाछोड़कर परमेश्वरकाभजन व स्मरणकरै तो नारायणदे
याल सबअपराधउसका क्षमाकरके उसेदेवलोक व वैकुंठका
देते हैं व पहिलेपापकरनेकेकारण वहनरकमेंनहींजाता व हो
नतुममतडरो इसभागवतकथा सुननेकेप्रतापसे तुम्हाराअप
ब्राह्मणकेगलेमें सांपडालनेकाछूटगया अबतुझेमुक्तिप्राप्तहो
वैकुंठकासुखमिलेगा और जो कोई इसस्कन्धकीकथा सच्चेम
सुनै व पढ़ै वहसबपापोंसे छूटकर भवसागरपारउतरजायगा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुखसागरबारहों स्कन्ध

छठवां स्कन्ध ॥

अजामिल ब्राह्मण अधर्मीका मुक्तहोना व देवतों व दैत्योंकी उत्पत्ति ॥

लिखौं बड़ाईनामकी जाको बारनपार । जेहि सुमिरेसे होतहैं कोटिन जिव निस्तार ॥

पहिला अध्याय ॥

अजामिल ब्राह्मणकी कथा ॥

इतनीकथा सुनकर राजापरीक्षित शुकदेवजी से बोले किम
ाज आपनेदूसरेस्कन्धमें मनुष्यके वैकुंठजानेकेवास्ते प्रवृत्ति
ी व निवृत्तिमार्ग दोराहबतलाकर यहकहाथा कि परमहंस व
ीलोग निवृत्तिमार्गसे सूर्यमण्डलमेंहोकर पहिलेब्रह्मपुरीको
हैं कुछदिनवहां ब्रह्माकेसाथरहकर उनकीमुक्तिहोतीहै और
ीव मायाकेगुणोंसे बारंबार जन्म व मरणको प्राप्तहोतेहैं वह
प्रवृत्तिमार्गसे पहिलेचन्द्रमण्डलमें जाकरअपने कर्मानुसा
र्गादिकका सुखभोगनेउपरान्त फिरसंसारमें जन्मलेताहै व
ने विस्तारपूर्वक कथाचौदहोंलोक व स्वर्ग व नरकधर्म व अ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धर्म करनेवालोंकी गतिजो पापकेबदले नरककादुःख व
के प्रतापसे स्वर्गका सुखभोगते हैं सुनाया व सबवृत्तान्त
स्वायम्भुवमनु व प्रियव्रत व उत्तानपाद व देवहूती व ध्रुवआ
उनकी संतान व सातोंद्वीप व नवोखण्ड व सातोंसमुद्र व वि
पृथ्वी व भूमण्डलआदिकका वर्णनकिया अबमैंऐसाउपाय
चाहताहूं कि जिसधर्म करनेसे पापी व अधर्मीलोग भी पवि
करस्वर्गका सुखपावैं सो आपदयाकरके बतलाइये जिसमें
बीचनरकके न जावै यहवचनसुनकर शुकदेवजी बोले हे
जोलोग मनसावाचा कर्मणासे जानबूझकर पापकरैंगे उन
अधर्मके बदले उननरकोंका दुःख जोमैंनेकहाहै अवश्यभो
पड़ैगा इसवास्तेमनुष्यकोचाहिये कि यह तनुपाकर हरसाइ
पनी मुक्तिहोनेका उपायकरतारहै जो कोई इस तनुमें इसक
चनहींकरता वहजन्मअपनाअकार्थखोकर पीछे बहुतपछ
है मनुष्यसेकोईपापछोटा या बड़ाकिसीप्रकारकाहोजावै त
काप्रायश्चित्त थोड़ा या बहुतशास्त्रानुसार करडालै जिसत
गविना औषधखायेनहींजाता उसीतरह पापभी बिनाप्रा
त्तकियेनहींछूटता यहबातसुनकर परीक्षितनेविनयकिया म
ज जानबूझकर पापकरनेवाला जो एकबेरप्रायश्चित्त कर
देह।करफिरअधर्मकरैगा तो उसकाउद्धार प्रायश्चित्तकरने
सतरहह।सक्ताहै यहवचनसुनकर शुकदेवजीबोले हे राजन
व पुण्य दोनों एकएककर्महोकर शुभकर्मकरनेसे पापछूट
है पर फिर अधर्म न करै जिसतरह रोगछूटनेवास्ते औषध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संयमनहींकरता या थोड़ादिनबराबरकरके फिरखट्टा मीठाखाने लगताहै तो खाना और नहींखानाऔषधका दोनोंबराबरहोकर रोगउसकानहींछूटता और अधिकहोजाताहै जिसतरहहाथीनहा नेउपरांत फिरधूरिउठाकर अपनेमस्तकपरडाललेवै तोउसकेस्ना नकरनेसे क्यागुणहोगा व जैसाउद्धारज्ञानप्राप्तहोनेसेहोताहै वैसा शुभकर्म करनेसे जल्दीपापनहींछूटता परसंयमकरनेवालेका रो गनहींबढ़ता इसलियेशुभकर्मकरना उत्तमहोकर कुछदिनबीते उसकाकल्याणहोजाताहै सिवायइसकेपापोंको नाशकरनेवास्ते ब्रह्मचर्य व व्रतरहिकरसुधर्म व तपकरना व इंद्रियोंकोअपनेवश व मनको संसारीमायामोहसे विरक्त रखकरसच्च बोलना व मन सा बाचाकर्मणासे किसीकाबुरानचहकर वित्तसमान परोपकार करना व किसीजीवकोदुःख नदेनाचाहिये इससबउपायकरनेसे भी पापकटजातेहैं परजैसापरमेश्वरकेचरणोंमेंभक्ति व प्रीतिरख ने वउनकानामजपने व कीर्त्तनसुननेसे अनेकजन्मके पापछूट करमनुष्यतुरंत मुक्तिपाताहै वैसातपआदिककरनेसे शुद्धनहींहो ताजिसतरह प्रातःकालकुहिरेका अँधेरासूर्यदेवताके प्रकाशकरने से नाशहोजाताहै उसीतरहवासुदेव व श्रीकृष्णजीका नामलेनेसे बड़ेबड़ेपाप अनेकजन्मके न मालूमकहांभागजाते हैं जैसे पृथ्वी परवृक्ष व फलआदिकउपजतेहैं वैसेमनुष्यपरमेश्वरकाभजन व भक्तिकरनेसे मनवांछितफलपाताहै इसलिये मनुष्यको संसारमें परमेश्वरकी प्रीति उत्पन्नहोनेवास्ते सिवायसत्संग व सेवाकरने साधु व महात्माके दूसरामार्गअच्छानहींहोता व उनकीसंगत व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

टहलकरनेसे बहुतशीघ्रमनमनुष्यकासंसारसे विरक्तहोकरभ
पाता है व जो लोगपरमेश्वरसे विमुखहैं वहप्रायश्चित्तकरन
भी किसीतरहशुद्ध नहींहोते जिसतरह मदिराकाघड़ा गंगाज
केधोनेसे पवित्रनहीं होसक्ता जिसने एकबेरभी अपनाचित्त
कृष्णजीके चरणोंमेंलगाया वहस्वप्नेमें भी यमराज व यम
कोनहींदेखता जानो वहसब प्रायश्चित्तकरचुका सो हमए
थामाहात्म्य नारायणनामकी जिसमेंविष्णुभगवान् व यम
कासंवादहै कहतेहैंसुनो पिछलेयुगमें अजामिलनामब्राह्मण
नेवाला कन्नौजका एकदासीसेप्रीतिरखकर चोरी व ठगी व
व फांसीकाउद्यम करताथा उसदासी से उसके दशबेटेउत्प
ये सो उसको अपने छोटे पुत्रनारायणनाम से बड़ाप्रेमथा
लिये खातेपीते उठतेबैठते चलतेफिरते उसकीयादमनमें रख
था जबइसीचलन व व्यवहारमें अट्ठासीवर्षकीअवस्थाहुई व
केमरनेकासमयआया तबतीनयमदूत भयानकरूप मुद्गर व
सी लियेहुये उसकाप्राण लेनेवास्ते आये व गलेमेंफांसीडाल
खींचनेलगे तबअजामिलने उनकाभयानकरूप देखतेही
कर जैसेनारायणनाम अपनेपुत्रको चिल्लाकरपुकारा वैसेअ
मय नारायणनामलेनेके प्रतापसे विष्णुभगवान्की आज्ञा
चारदूत श्यामरंग व चतुर्भुज शंख व चक्र व गदा व पद्म
किये बड़ेतेजवान् सुवर्णकीछड़ी लियेहुये उसकेपास पहुँच
मदूतोंसे बोले तुमहमारेसामनेइसको दुःखदेकर धर्मराजको
नहींलेजासक्ते यहबातसुनकर यमदूतोंनेकहा सुनोमित्र इस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ाने बहुतपाप इससंसारमें कियेहैं सो अधर्मी व पापोंका दण्डध
र्मराज सदाकरतेहैं इसलिये हमउनकी आज्ञानुसारइसे नरक में
लेजावेंगे तुम्हैंनारायणजीके दूतहोकर ऐसेअधर्मीकेपासआना
व हमकोलेजाने से मनाकरना उचितनहींहै यहवचनसुनकर वि
ष्णुके दूतबोले तुमलोग धर्मराजकेदूत होनेपरभी यहनहींजान
ते कि किसमनुष्यको सुखदेनाचाहिये व कौनमनुष्य दुःख देने
योग्य है इसलिये धर्म व अधर्मका वृत्तान्त व रूपहमैं बतलाओ
कि किसपाप करनेवालेको दण्डदेनाचाहिये व कौनकर्म करनेसे
मनुष्यसुख देनेयोग्यहोताहै यमदूतबोले जो वचनवेद व शास्त्र
में शुभकर्म लिखाहै उसेधर्मऔर जो अशुभलिखाहै उसको अ
धर्म समझनाचाहिये किसवास्ते कि वेद व शास्त्रका वचननारा
यणजीकी आज्ञानुसारहोकर पाप व पुण्यकरनेके साक्षी सूर्य व
चन्द्रमा व अग्नि व दिनरात्रि व दिशा व वायु आदिक देवताहैं
उन्हीं लोगोंसे धर्मकाहाल बूझकर मनुष्यको दुःख व सुखदिया
जाताहै ऐसाकोईजीव संसारमें नहींहोगा जिसे चलते फिरते उ
ठते बैठते पाप व पुण्य न होवै सो यहअजामिलब्राह्मणके घरज
न्मलेकर विद्यापढ़ने उपरांत शास्त्रानुसार गुरु व माता व पिता
व विष्णुभगवान् व अग्नि व सूर्यदेवताकीभक्तिरखकर अपनेकर्म
धर्मसेरहताथा एकदिन पिताकीआज्ञानुसार जंगलसे लकड़ी
पत्ता व पुष्पादिकतोड़कर लियेचलाआताथा राहमेंक्या देखा
कि एकभिल्ल अपनीस्नेहीबेश्याको साथलिये दोनोंमतवालेहो
करआपसमें हँसते व कलोलकरते हैं इसब्राह्मणको देखतेही वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बेश्यामतवाली कामदेवकेवशहोकर उसकेगलेमेंलपटगई
ब्राह्मणभी कामासक्तहोकर उससेभोगकरनेउपरान्त उसको
नेघरलेआया व अपनीमाता व पिता व बालास्त्री व गुरु व ध
कर्म्मकोछोड़दिया व उसकेसाथरहकर मांस व मदिरा खान
नाआरम्भकिया सो थोड़ेदिनोंमें सबधनअपनेपिताका फूं
फिरचोरी व ठगी व जुवा व फांसीकाउद्यमकरके अपना
पालनेलगा इसवास्ते हमऐसेमहापापीको यमराजकेयहां
आये हैं जिसमें अपनेकुकर्मोंका वहांदण्डपाकर शुद्धहोजा

दूसरा अध्याय॥

विष्णुके दूतोंको परमेश्वरके नामकी महिमा वर्णन करना॥

शुकदेवजीने कहा हेराजन् यमदूतों से अजामिलके अ
करनेका हालसुनकर विष्णुभगवान्के दूतबोले कि धर्मराज
यहां बड़ाअंधेरहै कुछन्यायनहींहोता किसवास्ते कि उनके
बिनाअपराध साधुलोगोंकोभी दुःखदेतेहैं जबधर्मराज स
व पुण्यकाहाल जाननेपरभी ऐसाअन्यायकरैंगे तो संसारी
जिसमें कोई अपनेधर्म व अधर्मका हालनहींजानता किस
चलैगा जिसकेविश्वासपर कोई गोदमेंशिर रखकरसोवै वह
का शिरकाटले या माता व पिता अपने पुत्रको विषदे तोरक्ष
की कौनकरसकाहै तुमलोगोंने नारायणनामकी महिमा
नी जोमनुष्यजानकर या धोखे व भय व हँसीसेभीपरमेश्वर
मलेताहै उसकेसबबड़े२ पापसोना चुराने व गोब्राह्मण व
व मातापिताके मारडालने व गुरुकीस्त्रीसेभोगकरने व मदि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुरुको दुर्वचनकहने के अन्तसमयपरमेश्वरका नामलेनेसेछू
जातेहैं सोइसब्राह्मणने मरतेसमय नामनारायणकाअपनेमुख
निकाला कदाचित् उसकेपुत्रकानामथा तो क्यासंदेह है उसी
ामलेनेके प्रतापसे अनेकजन्मका पापछूटकर यहब्राह्मण वैकुं
जानेयोग्यहुआ उसनामलेने व पापछूटने उपरांत फिर इसने
कोई अपराध नहींकिया जो दण्डदेनेयोग्यहो व नारायणनाम
नेसेअधिककोईप्रायश्चित्त पापोंकाछुड़ानेवाला संसारमेंनहीं
ोता कदाचित् किसीयज्ञ व तप व होमआदिकमें कुछभूलहोजा
तो राम व कृष्णकानाम लेनेसेवहशुद्ध होजाताहै कोईतीर्थ व
त व नियम व तप व जप व यज्ञ व होम व दान व धर्मरामनाम
नेके तुल्यनहींहोसक्ता जोमनुष्यनारायण नामचारअक्षरमुख
निकालताहै उसकोपरमेश्वर अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारोंप
र्थदेते हैं बड़े २ योगी व मुनीश्वरोंने परमेश्वरके नामकामाहा
म्य सबसेश्रेष्ठलिखाहै उनकानामलेने व कथासुनने व भक्तिकर
से अनेकजन्मके पापछूटजाते हैं जिसतरह संसारमेंदशबीसम
ष्य एकजगहबैठेहों व उनमेंसे किसीकानामलेकर कोईपुकारै
वहमनुष्यउसकीओर आंखउठाकर अवश्यदेखताहै उसीतर
परमेश्वर त्रिलोकीनाथने अजामिलके नारायणनामपुकारने
रआंखउठाकर देखाथा जिसतरहमनुष्यका रोगदवाजानकर
अंजानमें दोनोंतरहखानेसे छूटजाताहै व एकचिनगारीआगि
बड़ेढेररुई व लकड़ीको क्षणभरमेंजलादेती है उसीतरहएक
र नारायणनामलेनेसे अनेकपाप रुई व लकड़ीके समानजल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करछूटजाते हैं व परमेश्वरने वेदमेंऐसाकहाहै किजो कोई
नामलेवै उसेमैं कृतार्थकरदेताहूं जिसतरहबनमें व्याघ्रकीबो
सुनकरहरिणभागजाते हैं उसीतरहरामनाम मुखसे निकलते
पापमारेडरके शरीरसेनिकलकर भागजातेहैं जबविष्णुभगव
के दूतोंने ऐसी २ बातैंकहकर यमदूतोंकोवहांसे निकालदिया
चारभुजावाले दूतोंकादर्शनकरनेसे अजामिलको ज्ञान व
ग्यउत्पन्नहुआ तबवहमहिमा नामपरमेश्वरकीसुननेव समझ
उपरान्त बहुतपछताकर कहनेलगा किदेखोमैंने ब्राह्मणके घ
न्मपाकर अपनाकर्म व धर्मछोड़दिया व दासीकेवशरहकर अ
र्दाअपनी कुकर्म्ममेंबिताई इनसाधुओंकेआनेसे मेराप्राणबच
हींतोयमदूतनमालूम मुझकोकैसादुःखदेते जिस नारायणना
लेनेकेप्रतापसेमेराकल्याणहुआ अबआयुर्बलपर्यंत परमेश्वर
नामजपकर अपनाजन्मसुधारूंगा जबअजामिल इसतरह
तानेलगा व पार्षदविष्णुभगवान्के वहांसेअन्तर्द्धानहोगयेत
जामिलने उसीसमयचित्त अपनासंसारीमायामोहसे विरक्त
दिया व पार्षदोंकेदर्शनकरनेकेप्रतापसे एकवर्षकी आयुर्दाउस
और मिलीसोवहहरद्वारमेंजाकर अपनेसच्चेमनसे परमेश्व
ध्यान व स्मरणकरनेलगाजबउसको वहांएकवर्षध्यान व भ
करतेहुयेबीता तबवैकुण्ठसेअति उत्तमविमान उसकेपासआ
रउतरा सो वहउसविमानपर चढ़करगाताबजातावैकुण्ठको
गया व चतुर्भुजी रूपहोकर वहांरहनेलगा यहहाल देवत
ऋषीश्वर देखकर उसकीबड़ाईकरनेलगे इतनीकथासुनाकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वजीबोले हेराजन्देखो ऐसेमहापापीने बेटाकेधोखे नारायण
नीकानामभुखसेलियाथा सो ऐसीपदवीकोपहुंचा जो कोईसंसा
से विरक्तहोकर हरिभजनकरताहै उसकीगतिक्या कहनाचाहि
उनकाभक्त नरकमेंनहींजाता ॥

तीसरा अध्याय ॥

यमदूतों को जाकर अजामिल का वृत्तान्त धर्मराजसे कहना ॥

परीक्षितने इतनीकथासुनकर शुकदेवजीसेपूछा कि महारा
न यमदूतोंने अजामिलकेपाससे जाकर यमराज से क्या कहा
धर्मराजने क्याउत्तरदियासो दयाकरके बतलाइये शुकदेवजी
ोले हेराजन् यमदूतोंनेधर्मराजसेजाकरकहा कि संसारमेंअनेक
नुष्यन्यायकरनेवाले हमेंदिखलाईदेते हैं जबबहुतलोग न्याय
रंगे तबआपसकेझगड़ेसे कोईपापीको वैकुण्ठमें व कोई धर्मा
माको बीचनरककेभेजदेंगे हमलोगआजतककेवल आपको य
न्यायकरनेवालाजानकर तुम्हारीआज्ञासे सबजीवोंकोले आ
थे व कर्मानुसारउनको फलमिलताथा आजहमलोग आपकी
आज्ञासे अजामिलपापीको लेनेगयेथे जैसेउसनेहमेंदेखकरनारा
णनामअपने पुत्रकोपुकारा वैसेचारपार्षद श्यामरंग चतुर्भुजी
रूपनेआनकर उसपापीको हमसेछीनलिया इसलिये कहेदेते हैं
कि इसकायत्नकीजिये जिसमेंहमाराअपमाननहो यह वचनसु
नतेही यमराजने ब्रह्मरूपभगवान्काध्यान करनेकेउपरांत दूतों
कहा तुमलोग नारायणनामकीमहिमानहींजानते उसनामका
माहात्म्य निर्ऋती व इन्द्रादिकअठारहदेवता व भृगुआदिक ऋ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

षीश्वर अच्छीतरहनजानकर हम व ब्रह्मा व राजाजनक व
व भीष्मपितामह व प्रह्लाद व राजाबलि व शुकदेव व नारद
हादेव व कपिलदेवजी व सनकादिक चारोभाई निजभक्त उ
अच्छीतरहजानतेहैं देखोनामकावहमतापहै किजोअजामि
सामहापापी अपनेबेटेकेधोखे नारायणनामलेकर तुम्हारीफ
सेछूटगया सो हम व ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रादिकसबदेवताप
श्वरकी सेवामेंरहकर उनकीआज्ञानुसार सबकामकरतेहैं व
वान्कीइच्छासे उत्पत्ति व पालन व नाश तीनोंलोककाएक
णमेंहोकर उनकीमायामें साराजगत् बँधारहताहै व उनकेदू
बजगहरहकर भक्तोंकीरक्षाकरतेहैं पर किसीदेवता व मनुष्य
दिखलाई नहींदेते जिन्होंने अजामिलको तुमसेछुड़ादिया तु
इसबातमें कुछखेदनमानकर अपनाबड़ाभाग्यसमझो जोउनके
दर्शनतुमनेपाया उनकेदर्शनदेवता व ऋषीश्वरोंको जल्दी न
मिलते यमदूतोंनेयहमाहात्म्य नारायणजीके नामकासुनक
र्मराजसेविनयकिया जबपरमेश्वर नामलेनेसे ऐसाफलहोता
ब वेद व शास्त्रमेंपापछुड़ानेकेवास्ते तपआदिककठिनकठिन
श्चित्त क्योंलिखेहैं धर्मराजबोले जो मनुष्य नामकीमहिमा
जानता उसकेवास्ते सबतप व यज्ञादिकलिखाहै जिसमेंमन
का बीचभक्ति व पूजापरमेश्वरकेलगे नहींतो नारायणनाम
सेउत्तमदूसरा कोईकर्मनहीं है यज्ञ व तपआदिककरनेमें एक
पछूटकर परमेश्वरकानामलेनेसे अनेकप्रकारकेपाप नाशह
भगवान्ने कलियुगवासियोंको केवल भयदिखलानेके वास्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चित्रनं ७ मुखसागर छठा स्कन्ध पृष्ठ ४०२

अजामील ब्राह्मण का मार्गगामी पुरुष को लूटना व अन्त समय में यमदूतों करके पीड़ित होना और नारायण नामोच्चारण से विष्णुपार्षदों करके यमदूतों से छूटना व स्वर्गवास होना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इन्द्रको अपने पुरोहितविश्वरूपकोमारना वृहस्पति कोइन्द्रसे रूठजाना औरयुध्दमेंइन्द्रकेवज्रसे वृ
का वधहोना

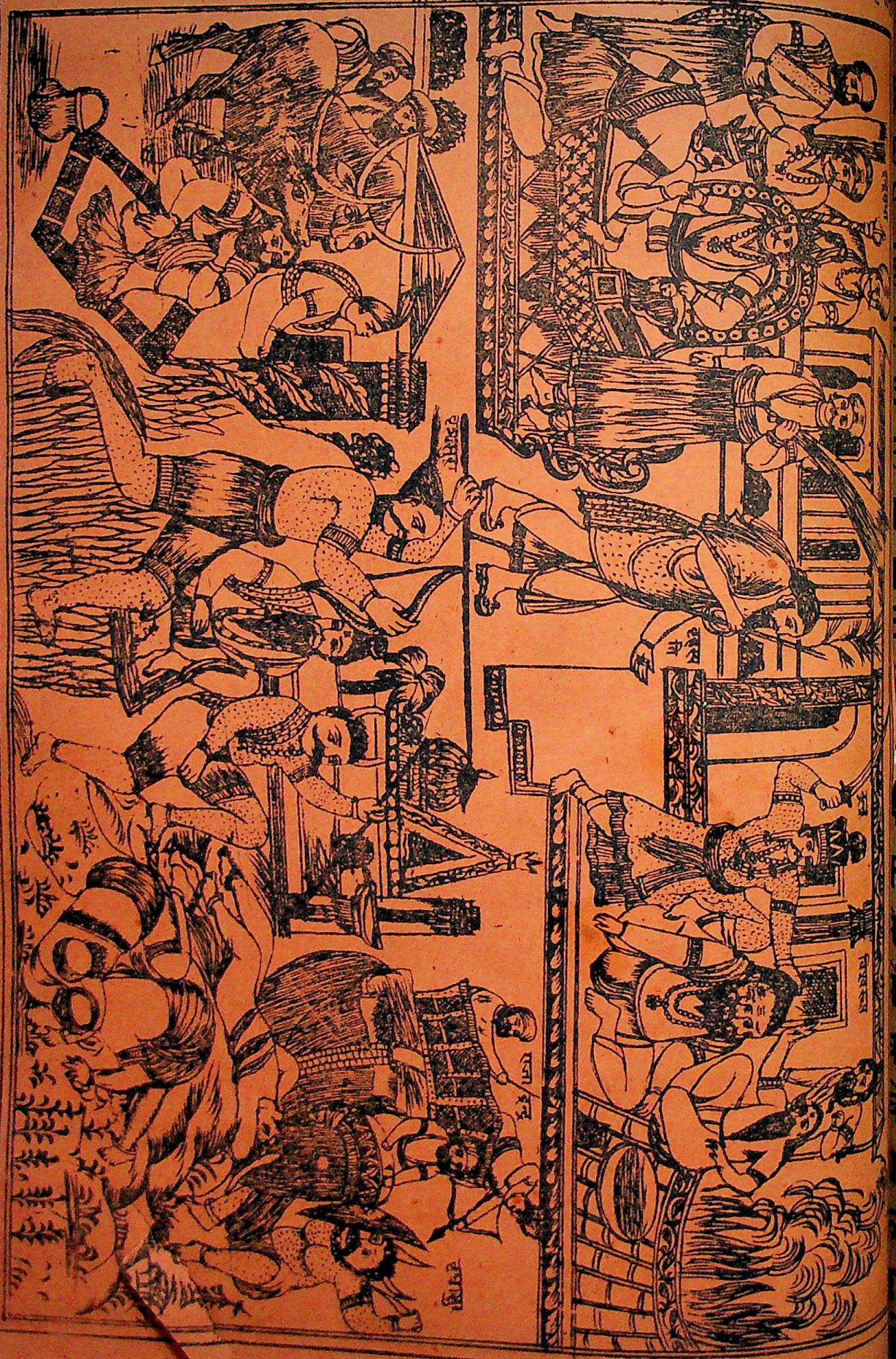

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न व तपआदिक कठिनकठिनप्रायश्चित्त बनादियेहैं जिसमें सं
सारीजीव उसडरसेअधर्म न करैं नहींतोमनुष्य निर्भयहोकरऐसा
विचारता कि पहिलेसंसारीसुख भोगनेकेवास्ते पापकरलेवें पी
छेसे परमेश्वरकानामलेकर शुद्धहोजावेंगे यहवचनसुनकरयमदू
तबोले किमहाराज ऐसाहै तोआपहमको क्योंभेजतेहैं तबधर्मरा
जनेकहा हमउसमनुष्यकोलेनेकेवास्ते तुमकोआज्ञादेतेहैं किजि
नेजन्मभरपरमेश्वरकानाम न लेकर कभीलीला व कथा उन
कीनहींसुनीहो उसेमहापापीसमझनाचाहिये व जो नारायणजी
कीशरणमेंजाताहै उससेपापनहोकर परमेश्वरउसको अशुभ क
र्मोंसेबचाये रखतेहैं सो तुमलोगआजसे ऐसेपापीको विचारकर
लायाकरो जो परमेश्वरसेविमुखहो व जो लोग हरिभजनमें ली
नरहकर शालग्रामकाचरणामृत नित्यलेते हैं उनके पासकभी
नतजाना वेलोगकुन्दनकेसमान शुद्धरहकरमुक्तिपातेहैं ऐसाकह
करधर्मराजनेपरमेश्वरका ध्यानकरके अपनेदूतोंकाअपराध उन
सेक्षमाकराया व यमदूतोंने यहबातसुनतेही भयमानकर आपस
मेंऐसीसम्मतिकिया किआजसेकभी उसमनुष्यकेपासजोहरि च
र्चारखताहै जानानचाहिये इतनीकथासुनकर परीक्षितने विनय
कया हेमुनिनाथ अजामिलमहापापीकेमुखसे मरतीसमय ना
रायणजीकानाम किसतरहनिकला शुकदेवजीबोले हेराजन् ए
कदिनचारसाधुतीर्थयात्राकरतेहुये अजामिलकेगांवमें संध्यास
मयपहुंचे व उन्होंने अपनेटिकनेकेवास्ते किसीहरिभक्तकास्थान
लोगोंसे पूछा तबउसगाववालोंने ठट्ठेसे अजामिलअधर्मीकाघर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बतलादिया जबसाधुलोग वहांगये तबअजामिलकीबेश्याने
साधुओंको अच्छागृह टिकनेकेवास्तेदेकर धुनीपानीसे उनकी
वाकी प्रातःकाल चलतीसमय साधुओंने उसबेश्यासे जो ग
तीथीकहा तेरेपुत्रहो तो नारायणनामरखियो उनकीआज्ञासे
जामिलने उसबेटेकानामनारायणरक्खा सो उनसाधुओंकी
से मरतीबेर अजामिलकेमुखसे नारायणकानाम निकलाथा
न्त व महात्माकीसेवावृथानहींजाती जो लोग साधु व वैष्णव
संगति व टहलकरतेहैं उनकोकोईदुःखनहींदेसक्ता यहसुनकर
रीक्षितअतिप्रसन्नहुये और शुकदेवजीनेकहा कि हेराजन्
ने यहकथा अगस्त्यमुनिसेसुनीथी सो तुम्हैंसुनाई परीक्षितने
जोड़कर विनयकिया आपने बड़ीकृपा व दयाकरके नारायण
मकामाहात्म्य मुझेसुनाया ॥

चौथा अध्याय ॥

प्रचेतों के यहां दक्ष का उत्पन्न होना ॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर विनयकिया महाराज
पनेदेवता व दैत्यादिककी उत्पत्तिसंक्षेपमेंकहीथी अबउसे वि
रपूर्वक सुनाचाहताहूं यहसुनकर शुकदेवजीबोले हेराजन् प्रा
नबर्हिषकेदशपुत्रप्रचेतानाम समुद्रके किनारेजाकर महादे
केज्ञानोपदेशसे परमेश्वरकातप व ध्यान करनेलगे व उनके
केउपरांत नारदमुनिकीआज्ञानुसार प्राचीनबर्हिषराजगद्दी
छोड़करबनमें हरिभजनकरनेचलागया तबउसकाबहुतसा
दूसरेराजोंने दबालिया व अनेकनगर व गांवउजड़करजङ्ग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गये जबप्रचेतोंको हरिभजनकेप्रतापसे परमेश्वरकादर्शन मिल
चुका तबएकदिन नारदजीरमतेहुये जाकरवृत्तान्तउजड़ने नगर
व उपजने जंगल व दबालेने दूसरेराजोंका उनसेकहदिया वहबा
तसुनतेही क्रोधसेऐसीअग्नि समानश्वासा उनकेनाकसे निकली
कि जिसकी ज्वाला से बनजलने लगा यहदशा देखतेही चन्द्र
माने निम्लोचानामकन्याको जोविश्वामित्र औरमेनका अप्स
राकेसंयोगसे हुईथी लाकरप्रचेतोंसे उसका बिवाहकरदिया जैसे
प्रचेतोंने आंखउठाकर उसकन्याकोदेखा वैसेहरिइच्छा से उसके
गर्भ रहकर दशवेंमहीने दक्षनामपुत्र उत्पन्नहुआ तबप्रचेतों ने
अपनेपिता का नगर व देशबसाने और सृष्टिबढ़ानेकी उसे आज्ञा
सो दक्षने मानसीसृष्टि बहुतसे मनुष्य उत्पन्न किये वहलोग
व पुरुषके भोगन करनेसे अधिकनहीं होतेथे इसलिये दक्षने
सृष्टिबढ़ानेकेवास्ते मन्दराचलपर्वतपरजाकर कुछकालपरमेश्वर
कातप व ध्यानकरके इसतरह हंसगुह्यस्तोत्रसे स्तुतिउनकी की
कि मैंउसपुरुषको नमस्कारकरताहूं जिसकावीर्यकभी नहींघटता
मायाके गुणोंमें वहवीर्यपड़कर जड़कोचैतन्यकरताहैव इसजी
वात्मासे जोस्नेहरखकर सबइंद्रियोंकाहालजानताहै व इन्द्रियां
उसकाभेद नहींजानसक्तीं उस परब्रह्मपरमेश्वरको दण्डवत्करं
ताहूं कि जिसकीकृपासे शरीर व प्राण व मन व बुद्धि यहसबअप
ना २ कर्मकरके ज्ञानीलोग जिनके चरणोंकाध्यान आठों प्रहर
हृदयमेंरखकर उन्हैंप्रणामकरते हैं उसअविनाशीपुरुषकाचरण
रताहूं व यहजगतजिससेउत्पन्नहुआ व उसी काहूपहोकर जि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सकेआश्रमपर रहताहै औरजो इससंसारसे पृथक्रहकर अ
मायाका उसमें प्रवेशरखता है उसईश्वरको दण्डवत्करताहू
वदक्षने ऐसीस्तुतिकरके नारायणजी को प्रसन्न किया त
सांवलीसूरत गरुड़परबैठ अष्टभुजीमूर्त्ति शंख व चक्र व गदा
ध्न लिये तापहारिणी चितवनितेजवान् पीताम्बर धारणकिये
रीटकुण्डल मुकुटसाजे वैजयन्तीमाला व वनमाला विराजे
स्तुभमणिपहने नारदजी आदिकभक्त व सोलहपार्षद सङ्गि
मन्द २ मुसुकराते दक्षकेसन्मुख प्रकटहुये ऐसासुन्दररूप
तेही जबदक्षने अतिहुलाससे उनको साष्टाङ्गदण्डवत्किया
भगवान्जीउसे अपनाभक्तजानकरबोले हेप्रचेताकेपुत्रतूअप
तपस्यासे सिद्धहुआ और हमतेरी स्तुतिकरनेसे बहुतप्रसन्नहु
व ब्रह्मा व महादेव आदिक जो मेरेभक्त हैं उनको मैंअपनामि
जानताहूं औरतपमेराहृदय व यज्ञमेराशरीर व धर्ममेराआ
व देवतामेरेप्राणहोकर इसजगत्का उत्पन्नकरनेवालामैं ह
ब्रह्मानेभी तपकेप्रतापसे सृष्टिकीरचनाकियाहै सोतुमभी
कीनामकन्या पंचजन्यप्रजापतिसे विवाह करने केउपरांत
नकरके संसारउत्पन्नकरो मानसीसृष्टिविरक्तहोकर तप कर
वास्ते चलेजातेहैं उनको किसीसेप्रीतिनहींरहती स्त्रीपुरुष
ग करनेसे मोहनीसृष्टि बहुतउत्पन्नहोकर संसारीमायामें
रहलपटेरहैंगे कि जिसतरह गुड़में चिउँटालपटारहताहै व
सेसबजीव मैथुनकरनेसेजगतमें उत्पन्नहोकरअपने २ कर्म
फलभोगकरैंगे ऐसाकहकरनारायणजी वहांसेअन्तर्द्धान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब दक्षउसकन्यासेविवाहकरकेघर आनकरराज्यकार्यकरनेलगे॥

पांचवां अध्याय॥

दश हज़ार पुत्रोंका उसीस्त्रीसे उत्पन्नहोना॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् दक्षको उसीस्त्रीसेमैथुनकरके जब
दशहजारपुत्रहुये तबदक्षनेसबकानाम हर्यश्वरखकर उनसेकहा
किपहलेतुमलोग परमेश्वरकातपकरके पीछेसेसंतान उत्पन्न
करो यह वचनसुनतेही वह दशोहज़ारबालक पश्चिमदिशा
नारायणनाम तीर्थपरजाकर जबपरमेश्वरकातप व ध्यानकरने
लगे तबनारदमुनिने दयाकीराहउनलोगोंको भवसागरपार उ
तारनाविचारकरउनसेकहा कितुमलोगजानतेहो उत्पन्नकरने
वाला सबजगत्काएकपुरुषहै उसकेसमानदूसरा नहींहोसक्ता व
सबजीवोंमें उसीकेतेजकाप्रकाशरहताहै जिसकीशक्तिसे सबजी
वोंको चलने व फिरनेकीसामर्थ्यहोतीहै व महाप्रलयहोनेपरभी
केवलवही अविनाशीपुरुषस्थिररहताहै सोतुमलोगसंसारकिसत
रहउत्पन्नकरोगे अभीतुमबालकहोपृथ्वीकाअंत व एकपुरुषउस
स्थानकोजहांकागयाहुआ कोईनहींफिरता तुमनेनहींदेखा व भू
तवन्तीस्त्रीको जोनित्यनयेपुरुषकी इच्छाकरतीहै तुमनजानकर
व्यभिचारिणीस्त्रीके पतिको भी नहींपहिंचानते व एकनदी में
तीनोंतरफ धाराचलतीहै उसेभी तुमनहींजानते पच्चीसमंत्रकागृ
हबनाहुआ व एकहंसीजोहै उसेभीतुमनेनहींदेखा व चोखीधार
का चक्रकोभी तुमनहींजानतेहो इसलिये इनसब बातोंको वि
चारकर संसारको उत्पन्नकरना व अपनेपिताकी आज्ञाभीरख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ना जबनारदजी यहज्ञान पहेलीकेसमान बतलाकरचलेगये
बालकोंने आपसमेंबैठकर अपनेज्ञानसे उनसबबातोंका यहां
विचारा किपृथ्वीजीवहोकर उसकाअन्तमोक्षहै जबतक उस
हम न जानलेवैं तबतक सृष्टिकीवृद्धि क्याकरैंगे और वहपुरुष
रायणजीको समझनाचाहिये उनकीकृपा व दर्शनहुये बिना
क्याकरसक्तेहैं और वहस्थान वैकुण्ठहै जहांका गयाहुआ
संसारमेंजन्मनहींलेता बिनाउसकेदेखे हमसेक्याहोसकेगा
भूरवंतीस्त्रीकोबुद्धिसमझो उसकोबिनाएकचित्तकिये हमसंस
जीवकैसेउत्पन्नकरैंगे और व्यभिचारिणीस्त्रीकापुरुषजीवहै
हसंसारीमायामें फँसगयाहै उसकोअलगकियेबिना संसारह
नहींउत्पन्नहोगा व दोनोंतरफबहनेवाली नदीमायाको समझ
चाहिये देखोजगत्में एकमरकर दूसराजन्मलेताहै व एकघ
ढोलकोबजाकर हर्षसेलोगगातेहैं व दूसरेकेयहां शोक व वि
होताहै जबतक उसमायाकाभेद हमें न मालूमहो तबतक
हमसे नहींउत्पन्नहोसक्ता व पच्चीसतत्त्वोंका बनाहुआ यहश
होकर इसमेंपरमेश्वरकाप्रकाशहै बिनादेखे व जाने उसईश्व
हमाराकियाकुछनहोगा व हंसवेदशास्त्रकोसमझो जिसकाव
बंध व मोक्षकाबनानेवालाहै बिनाउसकेजाने हमजगत्की
त्तिनहींकरसक्तेव चोखीधारकाचक्रमृत्युको जाननाचाहिये
जोसबजगत्का नाशकरताहै बिनाउसकेजानेहमें सृष्टिबढ़ा
सामर्थ्य न होगी इनसबबातोंको विचारकरउन्होंने संसारक
न्नकरना उचित्तनहीं जाना जबज्ञानप्राप्तहोनेसे अन्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नका शुद्धहोगया तबवहलोगफिरकर अपनेघरनहींआये परम
हंसहोकर जीवन्मुक्तहोगये तबबहुतदिनबीतने परभीवे फिरकर
नहींआये तबदक्षनेजाना कि नारदमुनिनेज्ञानसिखलाकरउन्हैं
विरक्तकरदिया ऐसाविचारकर दक्षनेहज़ारबेटा औरउसीस्त्रीसे उ
त्पन्नकरके सबलनामरखकरउनसेकहा कि पहिले परमेश्वरका
तपकरकेपीछेसेसंतानउत्पन्नकरो जबवेलोगभी उसीजगहजहां
उनकेभाईगयेथे जाकरपहुंचे तबनारदमुनिनेवहां आकरउनको
ऐसाज्ञानबतलायाकिवेभी संसारीमायाछोड़कर परमहंसहोगये
यहहालसुनतेहीदक्षने क्रोधवान्होकरकहा कि देखो नारदमुनि
ने हमारेग्यारहहज़ारबेटोंको ज्ञानसिखलाकर विरक्तकरदियासं
सारमें मनुष्य किसतरहअधिकहोवैंगे दक्षइसीक्रोधमें बैठेथे कि
नारदजी उसीसमयबीणाबजातेहुये वहांआये उनकोदेखतेहीद
क्षने बिनादण्डवत्कियेकहा हेनारदमुनि तुमनेहमारेअज्ञानल
ड़कोंकोबहकाकर विरक्तकरदिया मुझेबहकाओ तो मैंजानों कि
तुम बड़ेज्ञानीहो परमेश्वरके पार्षदोंमेंहोकर तुमको हमारेसाथ
छुताकरनाउचितनहींहै तुमकेवलयती व सत्यवादीहोकरधर्म
वेद व शास्त्रको नहींजानते मनुष्यको देवऋण पितृऋणऋषि
ऋण तीनोंऋणसेअवश्य उऋणहोनाचाहिये सो मेरेबालकअ
भीतक इनतीनोंऋणोंसेनहींछूटे तुमनेकिसवास्ते उनकोज्ञानसि
खलाकर विरक्तकरदिया क्यातुम स्त्री व पुत्रादिका गृहस्थाश्रम
चहनाअच्छानहींजानते जो गृहस्थ शास्त्रानुसार अपना कर्म
धारकरराक्खै वहनिस्संदेह योगी व परमहंसोंकीगतिको पहुंचताहै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमने वेद व शास्त्रकाधर्म निषिद्धजाना इसलियेमैं परमेश्वर
चाहताहूं कि तुमदोघड़ीसेअधिक एकजगह न रहो कदाचित्
हरोतोतुम्हाराशिरदूखै ऐसाशापदक्षनेनारदकोदिया व नारद
कोभी शापदेनेकीसामर्थ्यथी परउन्होंने दक्षको हरिभक्तजान
रउन्हें कुछशापनहींदिया व आनंदपूर्वक वहांसेचलेगये तबद
नेब्रह्मासेजाकरकहा किनारदमुनितुम्हारापुत्र हमारेबेटोंकोज्ञा
सिखलाकर विरक्तकरदेताहै संसारीसृष्टिकिसतरहबढ़ैगी यहसु
करब्रह्माजीबोले कि तुमकन्याउत्पन्नकरो उन्हेंघरमेंरहनेसे
रदज्ञानउपदेश नहींकरसकैंगे व स्त्रीकोजल्दीज्ञान नहींप्राप्तहो
वेअपनेअर्थको अच्छाजानतीहैं उनसेसंसारीजीवअधिक होंगे

छठवां अध्याय ॥

दक्षका साठि कन्या उसी स्त्रीसे उत्पन्न करना ॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् फिरदक्षनेब्रह्माजीकीआज्ञानुसा
सीअसिकीनामस्त्रीसेसाठिकन्याउत्पन्नकिया उनमें दशक
धर्म व सत्ताईसचंद्रमा व सत्रहकश्यप वदोभूत वदोअंगिरा
श्वर व दोकृशाश्वप्रजापतिको बिवाहदिया उन्हींसबकन्या
बहुतजीवदेवता व मनुष्यव दैत्यवदानव व पशुवपक्षीउत्पन्न
सोहमउनसबकन्याव उनकीसन्तानकानाम संक्षेपसेकहतेहैं
धर्म्मकीदशोंस्त्रीकानाम भानु १ व लम्बा २ व कक्कव ३ व
४ व विश्वा ५ व साध्या ६ व मृत्युवती ७ व बसू ८ व मुहू
वसंकल्पा १० था भानुकाबेटा ऋषभउनसेइंद्रसेन लम्बाक
[illegible] का बेटासंकट उनसेविकटहोकर की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लेकेदेवता उत्पन्नहुये जामीकापुत्रस्वर्गउनसे नन्दपजन्मा
श्वाकाबेटा विश्वदेवा साध्याका पुत्रसाध्यगण उनसेअर्थसिद्ध
आ मृत्युवती का बेटा इन्द्र व उपेंद्रहोकर वसूके अष्टवसु देवता
न्मे मुहूर्त्तासेमुहूर्त्ताके देवतासंकल्पाकापुत्र संकल्पउनसे काम
म बेटाहुआ स्वरूपानाम भूतकी एकस्त्रीसे गरुड़ व रुद्रउत्पन्न
ये उसमें ग्यारहरुद्र मुख्यहैं रैवत १ अज २ भव ३ भीम४ वाम
उग्र ६ वृषाकपि ७ अजैपाद ८ अहिर्बुध्न्य ९ बहुरूप १० महा
११ अंगिराकीसुधानाम स्त्रीसे पितरलोग उत्पन्नहुये कृशाश्व
जापतिकी अरुचिनाम स्त्रीसे धूमकेशपुत्रहुआ और चंद्रमाकी
यांकानाम अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा,
र्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी,
त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़
त्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद,
वती, सत्ताईसोंनक्षत्र होकर दक्षकेशापदेनेसे चन्द्रमाकेक्षयीका
गहोगयाथा इसलिये उनसेसन्ताननहींहुई इतनीकथासुनकर
रीक्षितने पूछा कि दक्षनेचन्द्रमा अपने दामादको किसवास्ते
ापदेकर अपनीबेटियोंके वंशकी हानि की सो कहिये शुकदेव
बोले एकसमय कृत्तिकाने अपनेपितासे जाकरकहा कि चन्द्र
हमें नहींचाहकर रोहिणीमेरीबहिनसे बहुतप्रीतिरखते हैं यह
तसुनतेही दक्षनेचंद्रमाको शापदिया तुझेक्षयीकारोगहोजावे
उसीकारण चंद्रमा हजारवर्षतक समुद्रमेंपड़ेरहे जबचंद्रमा
दक्षकी बहुतस्तुतिकी तबदक्षने प्रसन्नहोकर आशीर्वाद दिया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि यहरोग तेराछूटकर पन्द्रहरोज कलातुम्हारी घटै व पन्द्र
जबढ़ै इसीकारण चन्द्रमाकीकला घटती बढ़ती है व कश्य
विनतास्त्रीसे गरुड़ व अरुणा व कद्रूसेसर्पादिक व पतगीसे पक्षी
दि व यामिनी से टिड्डी आदिक व नेमीसे जलचर व सरमासे
आदि पांचनखकेजीव व ताम्रसेगृद्ध व बाजआदिक व क्रोध
से बिच्छूआदि व मनीसे अप्सरा व इला से वृक्षादिक व सुर
राक्षसआदि अरिष्टासे गन्धर्वआदिक व काष्टासे घोड़ेआदि
खुरवाले पशु व दनुसे दानवआदि व दितिसे हिरण्यकशिपु
रण्याक्ष दैत्य व अदितिसे सूर्य व त्वष्टादिक देवता उत्पन्न
व सिवाय इन सत्रहस्त्रियोंके दोस्त्री उनकी पुलोमा व कालि
नामथीं सो पुलोमा से पुलोमादि व राक्षस व कालिकासे
ले २ दैत्योंने जन्मपाया व बिप्रचित्तीदानव को सिंहिका
से राहुनाम दैत्यउत्पन्नहुआ जिसराहुका शिर नारायण
सुदर्शनचक्रसे काटडालाथा व सूर्यके श्राद्धदेव व धर्मराज
व यमुनानामकन्या सवर्णास्त्रीसे जो विश्वकर्माकीबेटी थी
न्नहुये जब वहीसवर्णा अपनीछाया मायारूपी छोड़कर
गई व उसनेजाकर घोड़ीकास्वरूपधारणकिया तबसूर्यकी
याके गर्भसे शनैश्चर व सावर्णिमनु दोपुत्रऔर उत्पन्नहुये
बसूर्यने सवर्णा अपनीस्त्री घोड़ीरूपसेजाकर भोगकिया तब
अश्विनीकुमार हुये व त्वष्टादेवता का बिवाहजयानामक
त्यकी बेटीसे हुआथा सो उससे एककन्या व विश्वरूपना
हुआ सोविश्वरूपको इन्द्रादिकदेवतान बृहस्पतिजी के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानेसे अपनापुरोहित बनायाथा इतनीकथासुनकर परीक्षित ने
छा कि महाराज सवर्णाअपनी छायाछोड़कर किसतरह चली
ईथी इसकावृत्तांतकहिये शुकदेवजीबोले हेराजन् सवर्णा सूर्य
वताअपनेपतिकातेज नहींसहसकीथी इसलियेउसनेएकस्त्रीअ
नेसमान मंत्रकेप्रतापसे बनाकरउससेकहा मैं अपनेपिताके घर
जातीहूं तू मेरेबदलेयहांरहाकर परयहभेद मेरेपतिसे मतकहना
उसने उत्तरदिया कि जबतकमेरेशिरकाबाल पकड़करसूर्यदेवता
मुझे न मारेंगे तबतक मैं नहींकहूंगी जबसवर्णा वहबात मायारू
स्त्रीको समझाकर अपनेपिताकेयहांगई तबविश्वकर्माने क्रोध
करके कहातू बिनाआज्ञा अपनेस्वामीके चलीआई है इसलिये
मैं न रक्खूंगा जबसवर्णाने यहवचन अपनेपिताकासुना तबनि
राशहोकर कुरुक्षेत्रमेंचलीगई और घोड़ीरूपबनकर वहांरहनेल
गी व मायारूपी सवर्णाकेशनैश्चर वसावर्णिनाम दोपुत्रउत्पन्न
हुये सो वह अपने बेटोंसे अधिक प्रेमरखकर धर्मराज व श्राद्धदेव
सवर्णाके बेटोंकोकम चाहतीथी सो छायाने धर्मराजकोएकदिन
लातसेमारा यहबातसुनकर जबसूर्यदेवताने छायाकेशिरकाबाल
पकड़के उसेमारा तबउसने सबवृत्तान्त सवर्णा के चलेजाने का
कहदिया यह समाचारसुनकर जबसूर्यदेव विश्वकर्मा सवर्णा को ढूंढ़ते
हुये कुरुक्षेत्रमें पहुँचे और घोड़ाबनकर उससे भोगकरना चाहा
तबसवर्णा घोड़ीरूपने मुखअपनाफेर लिया इसअपराधतहोक
घोड़ी के गर्दन व नाकपर गिरा सो गर्दनकेबार वाला भँवरा
नाकसे कुमार उत्पन्नहुये हेराजन् इसतरहला शिरतीतरना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छाया छोड़गई थी यहकथासुनकर परीक्षित बहुतप्रसन्नहु

सातवां अध्याय॥

बृहस्पति पुरोहित का इन्द्रादि देवतोंसे रूठना॥

परीक्षितने इतनीकथासुनकर विनयकिया हे मुनिनाथ
ने बृहस्पतिजी पुरोहितको किसवास्ते उदासकरके विश्वरू
अपनापुरोहित बनायाथा उसेविस्तारपूर्वक कहिये शुकदे
बोले हेराजन् एकदिनइन्द्र बड़े अहंकारसे राजगद्दीपर बैठाथ
बहुतसे देवता व ऋषीश्वर व गन्धर्व व किन्नरआदिक उससम
वर्त्तमानथे उसीसमय बृहस्पतिजीवहांआये सो राजासदास
न करके अपनीगद्दीपर बैठालताथा उसदिन अभिमानसे इ
उनका आदर नहीं किया इसलियेबृहस्पति रूठकरअपनेघरच
गये तबइन्द्रने बड़ाशोचकरके कहा कि देखो मुझसे बड़ीचूक
जो मैंने राज्य व धनकेमदसे उनकानिरादरकिया जिनकेआ
र्वाद व कृपासे मुझेयहसबसुख प्राप्तहुआ उनके क्रोधकरने से
सबनष्टहोजायगा इसलिये उनकेपास चलकर विनतीकरके
ना अपराध क्षमाकरानाचाहिये जिसमें मेराकल्याणहो ऐसा
चारकर इंद्रउसीसमय उनकेघरगया जबबृहस्पतिजीने अप
गबुलसेजाना कि इंद्रयहांआते हैं तबक्रोधवशभेंटकरना उ
न जानकर अन्तर्द्धान होगये जबइन्द्रने बृहस्पतिको घरपर
बसूयबसवण उदासहोकर फिरआये जब यहसमाचार दैत्य
अश्विनीकुमा दैत्योंकेराजाने शुक्रजीकीआज्ञासे अपनी
त्यकी बेटीसे हुज्झेरलिया जबलड़तेसमय देवतोंकोबृहस्पति
इआ जिसविश्वरू

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के रूठजाने के कारण दैत्यों से हारमालूमहुई तबउन्होंने ब्रह्मा
जीके पासजाकर सबवृत्तांतकहा ब्रह्माबोले कि तुमसे यहबड़ाअ
पराधहुआ जो बृहस्पति अपनेपुरोहितका अपमान किया तुम्हा
राकल्याणइसीमेंहै कि त्वष्टाब्राह्मणका विश्वरूपनामबेटा बड़ा
तपस्वी व ज्ञानीहै उसेअपना पुरोहितबनाओ तो तुम्हारेवास्ते अ
च्छाहोगा यहवचनसुनतेही इन्द्रनेत्वष्टाकेपास जाकर हाथजोड़
के विनयपूर्वककहा मैं तुम्हारेपास भीखमांगने आयाहूं सो आप
दयालुहोकर मेरेपुरोहितहूजिये व ऐसाउपायकीजिये जिसमें ह
मारा राज्य बनारहै त्वष्टानेउत्तरदिया कि पुरोहितहोनेसे तपोबल
घटजाताहै परतुम बहुत विनतीकरतेहो इसलिये विश्वरूप मेरा
बेटापुरोहितहोकर तुम्हारीसहायताकरेगा सोविश्वरूपने अपने
पिताकीआज्ञानुसारपुरोहितबनकर ऐसायत्नकियाकिहरिइच्छा
से इंद्र वृषपर्वा को युद्धमेंजीतकरअपने इंद्रासन परस्थिरहुआ॥

आठवां अध्याय॥

जिस कवचके प्रतापसे इन्द्रने दैत्योंको जीताथा उसका माहात्म्य शुकदेवजीका वर्णन करना॥

परीक्षितने इतनी कथासुनकर पूछा हे शुकदेवस्वामी विश्व
रूपकी थोड़ीकृपा करनेसे इन्द्रनेकिसतरह दैत्यों को जीतकररा
ज्यअपना स्थिररक्खा शुकदेवजीबोले हेराजन् विश्वरूपनेऐस
नारायणकवच इन्द्रको सिखलादिया कि जिसकवचका मंत्रज
कर अंगपरफूंकदेने और वहकवच लिखकर भुजापरांधतहोक
किसीशस्त्रकाघाव नहींलगता जिसतरहशूरवीर नवाला भँवरा
रक्षाके वास्ते जिरह व बख्तर पहिनलेते हैं उसीला शिरतीतरना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाचाहिये सो राजाइन्द्रवहीमंत्र अपनेशरीरपरफूंककर लड़
वास्ते चढ़ाथा उसीकेप्रतापसे दैत्योंकोजीता यहसुनकर परी
ने विनयकिया कि महाराज जिसकवचमें ऐसा गुण व प्रत
उसे विस्तारपूर्वक वर्णनकीजिये शुकदेवजी बोले हेराजन्
समय किसीमनुष्यपर कुछभय आनकरप्राप्तहो उससमय
पांवधोकर आचमनकरके उत्तरमुंहबैठे व आठअक्षरके मन्
अंगन्यास व करन्यास करके बारहअक्षरका मंत्रपढ़कर यों
जलमें मत्स्यावतारसेरक्षाकरकेपातालमें बामनअवतारसेर
हो औरजहांपरकिला व जंगलहै वहांनृसिंहावतारसेरक्षाकरें
मेंयज्ञभगवान् रक्षाकरैं विदेश व पर्वतमें रामचन्द्रजीरक्षकहो
योगमार्गसे दत्तात्रेयजी रक्षाकरैं देवताकेअपराधसे सनत्कुम
क्षकहोकर पूजाकेविघ्नमेंनारदजीसहायकहोवें कुपथ्यसेधन्व
रिवैद्य रक्षाकरके अज्ञानसेवेदव्यासजी व अधर्मसेकलंकीभ
न्सहायताकरैं व गोविंद व नारायण व बलभद्र व मधुसूदन व
केश व पद्मनाभ व गोपीनाथ व दामोदर व ईश्वर व परमेश्व
भगवान्केनामहैं वहआठोंपहर सबअंग व इन्द्रियोंकीरक्षा
वैकुण्ठनाथका शंख व चक्र व गदा व पद्म व गरुड़जी अने
पे रक्षकहोवैं सो यहीकवच विश्वरूपनेइन्द्रकोबतलाकर
न जेद इसनारायणकवच धारणकरनेवालेमनुष्यका सब
बसूथ है यहीकवच गरुड़जीपढ़कर वैकुण्ठनाथको अपने
अश्विनीकु जिसकेप्रतापसे कोईउनको जीतनेनहींसक
त्यकी बेटीसे हु पत्राह्मण इसकवचकाअभ्यासरखनेवाला
इआ जिसविश्वरू

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शमेंमरगया सो हड्डीउसकी वहांपड़ीथीं एकदिन चित्ररथगन्धर्व का विमानउड़ताहुआ चलाजाताथा जैसे विमानकीछाया उस हड्डीपरपड़ी वैसेविमानउलटगया जबबालखिल्या ऋषीश्वरकेउ पदेशसे उसगन्धर्वने उनहड्डियोंको सरस्वतीनदीमेंप्रवाहकिया त उसका विमान फिरउड़नेलगा सो हेराजन् ऐसानारायणकवच मनेतुम्हेंसुनाया कि जो इसकवचको पढ़ाकरै उसकेसामनेयुद्ध में कोईनहींठहरसक्ता ॥

नवां अध्याय ॥

इन्द्रका विश्वरूप अपने पुरोहितको मारना ॥

शुकदेवजीबोले हे राजन् विश्वरूपके तीनमस्तकथे एक मुं से वहसोमबल्लीलताका रसयज्ञमें निकालकर पीताथा व दूस मुखसेमदिरापीकर तीसरेमुखसे अन्नादिकभोजनकरताथा सो न्द्रने राज्यपरबैठकर कुछदिनउपरांतविश्वरूपसेकहा मैंतुम्हा दयासे यज्ञकरनाचाहताहूं जबविश्वरूपकी आज्ञानुसार यज्ञ ारंभहुआ तबएकदिन किसीदैत्यने विश्वरूपके पासजाकरक कि तुम्हारीमाताभीदैत्यकीकन्याहै इसकारणहमारेकल्याण स्ते एकआहुति दैत्योंकेनामपरभी यज्ञमेंदियाकरते तो उत्त होता जबविश्वरूपकहना उसदैत्यकामानकर आहुतिदेते स यदैत्योंकानामभी धीरेसेलेनेलगा व इसीकारण देवतोंकातेज ाकरनेसेनहींबढ़ा तबइन्द्रने यहवृत्तांतजानतेही क्रोधितहोक तीनोंशिर विश्वरूपकेकाटडाले सो मद्यपानकरनेवाला भँवरा सोमबल्ली पीनेवालाकबूतर व अन्नखानेवाला शिरतीतरना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मपक्षी संसारमेंउत्पन्नहुये व विश्वरूपकेमरतेही इंद्रकास्व
ब्रह्महत्याकेघेरलेनेसे बदलगया जबदेवतोंके वर्षदिनपुरश्च
करनेपरभी वहमहापाप ब्रह्महत्याका नहींछूटा तबइन्द्रादि
वतों के विनती करनेसे ब्रह्माजीने उसहत्याकेचारटूककरके
भाग पृथ्वीको दिया इसीकारण कहीं २ धरतीऊसरहोती है
पूजा व पाठन करनाचाहिये व यहवरदानपृथ्वीकोदिया जह
गड़हाहो कुछदिनमें वहआपसे भरजावै दूसराभाग वृक्षोंको
से कोई २ वृक्षगोंद व लाहीलगकर सूखजातेहैं सिवाय गुग्गु
और सबगोंद अशुद्ध समझनाचाहिये और यहआशीर्वादि
कि वृक्षकाटडालनेपरभी जड़बनीरहने से फिरतय्यारहोजा
तीसराभाग स्त्रियोंको दिया उसीकारण स्त्री महीने २ रजस्व
होकर पहिलेदिनचाण्डालिनी दूसरेदिनब्रह्मघातिनी तीसरे
रजकीकेसमानरहकर चौथेदिनपवित्रहोती हैं व यहवरदान
दिया कि जिसमेंसदाउनकाकामदेवबनारहै इसलियेगर्भवती
काभी मनभोगकरनेवास्ते चाहताहै व चौथाभाग जलकोदे
पानीपरकाई व फेन व बुल्लेआदिकहोतेहैं व यहवरदानजल
दिया कि जिसबस्तुमेंपानीडालदेव वहअधिकहोजावे सो
चारोंजगहहत्या बटजानेसे शुद्धहोकरअपनाराज्य करनेचले
बत्वष्टाको विश्वरूपके मारेजानेकाहालपहुंचा तबउसनेबड़
धकरके ऐसामंत्रपढ़करहवनकिया जिसमेंएकपुरुष इंद्रका
नेवालाउत्पन्नहो सो परमेश्वरकीइच्छानुसार सरस्वतीने
धकाअर्थ इसतरहपरउलटदिया कि इन्द्रकेहाथसे वहमारा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बनसम्पूर्णहोनेकेसमय अग्निकुंडमेंसे एकदैत्य अतिबलवान्
र्बतकेसमान कालावर्ण गदा व खड्गहाथमें लियेहुये निकला
जितनीदूर एकतीरजाता है इतनाशरीरउसदैत्यका नित्य बढ़ता
ा इसीवास्तेत्वष्टाने उसकानाम वृत्रासुररक्खा व उसे आज्ञादी
के इन्द्रनेतेरेभाईको माराहै सोतूजाकर अपने भाईकाबदलाले
सियहबात त्वष्टाकेमुखसेनिकली वैसेवृत्रासुरनेएकक्षणमेंइन्द्र
पासपहुँचकरललकारा उसकाभयानकरूप देखने व ललकार
ननेसे सबदेवताघबड़ागये जबवृत्रासुरनेचाहा किइन्द्रकोमुंहमें
ालकरनिगलजाऊं तबइन्द्रादिक सबदेवतों ने उसकेसामनेआ
रअपने२ शस्त्रउसपरचलाये जबवृत्रासुर उनकेसबहथियारनि
लगया तबइन्द्रदेवतोंसमेत वहांसेभागा व बीचशरणनारायण
कीजाकर विनयकिया कि हे दीनानाथ मैं तुम्हारीशरण आ
हूं मेराप्राणइसदैत्यकेहाथसे बचाइये हमलोगोंकाकिया कुछ
हींहोसक्ता जिसतरह श्रावणभादोंमें कुत्तेकी पूंछपकड़कर मनु
यगंगापार नहींजासक्ता उसीतरहहमाराभजन व स्मरणकरनेसे
कोईभवसागरपार नहींउतरता यहस्तुतिसुनतेही परमेश्वर दीनद
यालुने इन्द्रादिकदेवतोंको अपनाभक्तजानकर चतुर्भुजी मूर्त्ति
सोलहपार्षदसाथलिये हुये उनकोदर्शनदिया इन्द्रादिकदेवतों
वैकुण्ठनाथको देखतेहीदण्डवत्करके विनयकी कि महाराज
ोयज्ञरूपआपकाहै उसकोहम नमस्कारकरतेहैं व वेद व शास्त्र
म्हारी श्वासासे उत्पन्नहोनेपरभी आपका आदि व अन्त नहीं
ानसक्के सो हमलोग नारायण वासुदेवरूपको दण्डवत्करतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व जो चरणकमल आपके बड़ेबड़े योगी व परमहंसों के हृ
आठोंपहर रहतेहैं उनचरणों को हमारीदण्डवत् अंगीकार
भगवन् दीनानाथ सबदेवता व मनुष्य तुम्हारेबनाये हैं वृत्रा
मारनेवास्ते कोईउपायकीजिये नहींतोवहदेवता व मनुष्या
सबजीवोंकोमारडालेगा हमलोगतुम्हारेदासहोकर ऐसेदुःख
वृत्रासुरकेभयसे आनन्दपूर्वक निद्रानहींआती व अपनेसम
तुम्हारीकृपासे सबबढ़तेहैं इससमय देवतोंको बढ़ानाचाहिये
विपरीतउसके वृत्रासुरबढ़ाहै इसलियेहमैं दीन व दुःखीजान
दयालुहूजिये यहवचनसुनकर नारायणजीबोले हे इन्द्र तैंने
ज्ञानतासे ब्राह्मणकोजोमाराथा उसीका यहसबभोगहै वृत्रासु
त्यके शरीरपरकोईशस्त्र नहींलगसक्ता तुमलोगदधीचि ऋषीश्व
कीहड्डी जिसनेबहुततप कियाहै मांगकरउसहड्डीका वज्रबन
ओ तोउसतपकेप्रतापसे वहवज्र वृत्रासुरके अंगकोकाटेगा ऐसा
हकर बैकुंठनाथअन्तर्द्धानहोगये॥

दशवां अध्याय॥

इन्द्रादिक देवतोंका दधीचि ऋषीश्वरकेपास हड्डीमांगनेके वास्तेजाना॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित इन्द्रनारायणजीका वचन
तेही सबदेवतोंसमेत दधीचिऋषीश्वरकेयहां गया व दण्डवत
रके विनयकिया हमलोगआपकेपास भिक्षामांगनेआकर अ
कल्याणकेवास्ते तुम्हारेशरीरकाहाड़ चाहतेहैं यहबातसुनकर
पिबोले हे इन्द्र तुमअपनेमनमें विचारकरो थोड़ासादुःख तनु
पहुँचनेसे कैसाक्लेश होताहै इसलियेतुमको अपनाअंग ऐसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काभी समझनाचाहिये जिसतरहसबकोईअपनातनुप्याराजान
र उसकोसुखदेने व मोटाकरनेकेवास्ते अनेकयत्न करतेहैं उसी
रह मुझेभी अपनाशरीर प्याराहै इसलियेक्यों ऐसादुःख मुझे
नेआयेहो इन्द्रनेउत्तरदिया कि आपयहवचन सत्यकहतेहैं पर
नारायणजीकी आज्ञानुसार हड्डीमांगने आयाहूं जिसतरह
रावृक्ष अपनीछाया व फल व पुष्पसे सबजीव व पशु व पक्षीआ
दकको सुखदेता है और किसीके डालीकाटने परभी दुःखनहीं
मानता उसीतरह वैष्णव व ऋषीश्वरभी शरीरअपनाकेवल परो
कारवास्तेसमझतेहैं उनकातनुदूसरेके कामआवे तो देनेसेनहीं
करते जबइन्द्रने ऐसाज्ञानकहकर बहुतविनतीकी तबऋषिबो
हे इन्द्रयहशरीरनारायणजीने दिया है कदाचित्वहआपआ
वज्रकर ऐसाकहते तौभीमैं अपनीप्रसन्नतासे न मानता परऐसास
झकर तुम्हाराकहनामाना कि यहतनु सदास्थिर न रहकर एक
दिनअवश्य इसकानाशहोगा इससेक्याउत्तमहै जोतुम्हारे काम
आवै सोमैंयोगाभ्याससाधकर परमेश्वरके ध्यानमें बैठता हूं तुम
एकगाय बुलाकरशरीरमेरा चटाओ जबसबमांस शरीरकाचाटने
उपरान्त केवलहड्डीरहजावै तबउसहाड़कोलेकरअपनामनोरथ
सिद्धकरना परमुझेतीर्थस्नानकरने की अभिलाषा है तुमआज्ञा
दो तो तीर्थस्नानकरआऊंतबहड्डीमेरेशरीरकीलेना देवतोंनेक
हा हमइसीजगह सबतीर्थोंकाजल लादेतेहैं आपस्नानकरलीजि
ये ऋषीश्वरनेकहा बहुतअच्छा सो देवतोंने क्षणभरमें सबतीर्थों
काजल वहांलादिया जबवह ऋषीश्वरस्नानकरने उपरांत योगा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भ्याससे प्राणअपना ब्रह्मारंध्रमेंचढ़ाकर परमेश्वरकेध्यानमें
नहुये तबइन्द्रनेएकगाय मंगाकर नोनलगाके उनका शरीर
वाया जबउसगायने सबमांस चाटलिया व केवलहड्डीरहगई
इन्द्रने वहहड्डीलेकर विश्वकर्माको शस्त्रबनानेवास्ते दिया
नीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले हेराजन् देखोदधीचिऋषि
रको दातासमझकर राजाइन्द्र भिखारी होगया इसलिये द
कानाम सबलोगलेकर सूम व लालचीकानाम कोईनहींलेता
देना बहुतअच्छा होताहै जबविश्वकर्माने उसहड्डीकावज्र
शस्त्र अतितेजवान्बनादिया तबइन्द्रवहवज्रलेकर वृत्रासुरसे
नेवास्ते आया वहदैत्य इन्द्रकोदेखकर बोला यहमेरेसामनेसे
गगयाथा आज न मालूम किसकारण फिरलड़नेआयाहै ऐ
विचारकर वृत्रासुरने नमुचि व द्विमूर्द्धा व विप्रचित्ती आदिक
त्योंको अपनेसाथलेकर देवतोंसेबड़ाभारीयुद्धकिया जबगदा
तीर व तलवार व त्रिशूल व भुशुण्डीआदिक नवशस्त्र दैत्यों
टगये तबवहलोग पर्वत व वृक्षउखाड़कर मारनेलगे परईश्वर
दयासे देवतोंने दैत्योंको मारकरहटादिया जबवृत्रासुरकेसाथी
रमानकरभागे व देवतोंनेउसको पीछेसेखरेदा तबवृत्रासुरने दे
को भागतेदेखकरकहा कि तुमलोगयुद्धसेमतभागो एकदिन
वश्य मरनाहै मृत्युकेहाथसे कोईनहींबचैगा सोघरमेंमरनाउ
न होकरदोतरहकीमृत्यु मंगलसमझनाचाहिये एकयोगाभ्या
करकेतनुछोड़ना व दूसरेयुद्धमें सन्मुखमाराजाना इसलियेतु
लोगफिरकरलड़ाईकरो भागनाउचितनहीं है ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ग्यारहवां अध्याय॥

इन्द्र व वृत्रासुरका युद्धहोना॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् जबवृत्रासुरके समझानेपरभी कोई कोई दैत्यकहीं फिरकर भागगये तबवृत्रासुरने बड़ेक्रोधसेललका रकरकहा हेइन्द्र भागेहुयेको मारनाकुछशूरतानहींहोती पहिले मैंने सबदेवतोंको जीतकर भगादियाथा अबक्याहुआ जो मेरेसा थीभागेजातेहैं तुमखड़ेरहो मैं अकेलासबकोमारूंगा जबसबदेव ता उसकी ललकारसुनकर भयसेपृथ्वीपर गिरपड़े तबवृत्रासुरने लातोंसे सबकोइसीतरहरौंदडाला कि जिसतरहकमलबनको हा थीरौंदडालताहै इन्द्रनेयहदशा देवतोंकीदेखकरजैसेअपनीगदा सपरचलाई वैसे वृत्रासुरनेवहगदा छीनकर ऐरावतहाथीके म कुपरऐसामारी कि हाथीसाठिपगपीछेको हटगया तबइन्द्रने मूतलगाकर घावउसकाअच्छाकर दिया जबफिरइन्द्र अपने को सम्हालकर वृत्रासुरकेसन्मुख आया तबवृत्रासुरनेकहाआज ड़ाउत्तमदिनहै जोतू अपनेभाई व गुरुव ब्राह्मणकामारनेवाला त्याराभेरेसन्मुखहुआ सबकेबदले आजतुझेदेवतोंसमेत अपने त्रशूलसेमारकर भूतनाथकेनामका यज्ञकरूंगा अबतू मेरेसाम से जीताफिरनहींजासक्ता कदाचित्तुझको अपनीरानीवराज्य ाराहो तो मेरेसामनेसेभागजा मैं अपनेभाईका बदलालेनेआ हूं तेरेमारनेसेमुझेसंसारमें क्यायशमिलैगा व कदाचित् तू ने झकोमारलिया तोमैंतुरन्त परमेश्वरकेचरणोंके पासपहुँचकर हांराज्यकरनेसे वहांअतिसखपाऊंगा जिसतरह पक्षीकाबच्चा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिनापंखउड़नेनहींसक्ता अपनेमाता व पिताके आश्रमपर दा
पानीपाताहै व दूधपीनेवालाबालक व बछवा अपनीमाताके
रोसे रहकरपतिव्रता स्त्री अपनेस्वामीकी चाहनारखतीहै उसी
हश्यामसुन्दरके चरणोंका ध्यानमैंरखताहूं इसलिये मुझेइन्
सनकी गद्दीलेने व राज्यकरनेसे मारेजाने में अतिआनन्दहै
लोग अपनेको बलवान् व ज्ञानीजानते हैं उनको मूर्खसमझ
चाहिये परमेश्वर सबबातोंके मालिकहैं यहबातकहकर वृत्रा
ईश्वर के चरणोंका ध्यानकरनेलगा व गदाछीनजाने से इन्
लज्जित होगया ॥

बारहवां अध्याय ॥

वृत्रासुरका बज्रसे माराजाना जो दधीचि ऋषीश्वरकी हड्डीका बनाथा ॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् यहसबज्ञानकहकर वृत्रासुरनेब
क्रोधसे अपनात्रिशूल इन्द्रपरचलाया सो इन्द्रने उसका श
चाकर वहीवज्रजो हड्डीसेबनाथा ऐसामाराकि वृत्रासुरकी द
नी भुजा कटकरगिरपड़ी तबउसने बायेंहाथसे परिघनाम
मारकर वहवज्र इन्द्रकेहाथसे गिरादिया जबइन्द्र मारेडरके
वहवज्र पृथ्वीपरसे उठाने न सका और खड़ारहगया तब वृत्र
बोला हे इन्द्र तूमतडरमुझसे शूरवीरोंकी तरह युद्धकर कर
त् मैंने तुझको मारलिया तो इन्द्रपुरी का राज्यकरूंगा व
हाथसेमारागया तो वैकुंठमेंजाकर सुखभोगूंगा इसलियेमैं
से नहींडरकर दोनोंबातमें प्रसन्नहूं व मारना व मरना कु
व तेरेवश न होकर हानि व लाभ संसारीजीवों का परमे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आज्ञानुसार नटकेखेलसमानहोताहै जिसतरहनटचाहै उसीतर
हकलाबाजी लेवे सो तू हर्षसे वज्रउठाकर मुझेमार कि जिसमेंतु
रन्तईश्वरके चरणोंकेपासपहुँचजाऊं इन्द्रनेयहवचनसुनकर अ
तिप्रसन्नतासेकहा हेवृत्रासुरतेरीबुद्धिधन्यहै जबइन्द्रनेऐसाकह
कर उसीवज्रसे उसकीबाईंभुजाकोभी काटडाला तबवृत्रासुरदौड़
कर इन्द्रको हाथीसमेत निगलगया परनारायणकवचके प्रताप
सेइन्द्रनहींमरा व वज्रसेकोखाउसकाचीरकर बाहरनिकलआया
व परमेश्वरकीकृपासे कुछदुःखइन्द्र या हाथीको नहींपहुँचा जब
फिर इंद्रनेउसीवज्रसे सौवर्षमेंगलाकाटकरवृत्रासुरकोमारडाला
बउसकेतनुसे एकतेजसानिकलकरवैकुंठमें चलागया सो सबदे
खाउसकेमारेजानेसे हर्षितहुये परइन्द्रप्रसन्ननहींहुआ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्महत्या के डरसे इन्द्रका भागना ॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकर बोले हे मुनिनाथ इन्द्रऐसे
लीशत्रुकोमारकर क्योंनहींप्रसन्नहुआ शुकदेवजी बोले हे रा
न् वृत्रासुरदैत्यको त्वष्टाब्राह्मणने उत्पन्नकियाथा इसलियेवृ
त्रासुरकेमरतेही वृद्धारूपब्रह्महत्याने जिसकीयोनिसे रक्तबहकर
गमें सड़ीमछलीकी दुर्गंधआती थी लोहेकागहनापहिने हुये
न्द्रकेपास आनकर उसेनिगलनेचाहा तबइंद्र उसकेडरसे भागा
वृद्धारूपहत्याने उसकापीछाकिया जबइंद्रने अपनाबचावउस
हाथसेकहीं न देखा तबवह पूर्व व उत्तरके कोनेपर मानसरोवर
लावमें जाकर कमलनालमेंछिपरहा औरब्रह्महत्या भ्रमररूप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Prayagraj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होकर उसफूलके चारोंओर गूंजनेलगी इसकारणइंद्र उसके
से बाहरनहीं निकलसकाथा जबवहक्षुधा व तृषासे अतिदुःख
नेलगा तब लक्ष्मीजीने उसकापालनकिया जबइंद्रके छिपने
सेइन्द्रासनसूनाहोगया तबऋषीश्वरोंनेवहांकाराज्य राजान
को जो बड़ाधर्मात्मा व प्रतापीथा देनाविचारकर उससेकहा
लोगतुझे इंद्रासनपर बैठालाचाहतेहैं राजानेउत्तरदिया कि
देवलोकमें राज्यकरनेकी सामर्थ्यनहीं है यहवचनसुनकर ऋ
श्वरबोले कि हमलोगअपने तप व जपकाबल तुझेदेवेंगे तब
के राज्यकरनेयोग्य होजायगा जबऋषीश्वरोंने थोड़ार पुण
पने तपकानहुषको देकरउसे इंद्रासनपर बैठालदिया तब उस
इंद्राणीपर मोहित होकर उससे कहलाभेजा कि अबमैं इंद्र
जगहपरराजाहूं तू मेरेपास क्योंनहींआती यहबातसुनतेही
णीपतिव्रताने जो सिवायअपने स्वामीकेदूसरेकोनहीं चाहत
नहुषकेभयसे बृहस्पतिगुरूकेपासजाकरविनयकिया महारा
जानहुषमनुष्यहोकर मुझेभोगकरनेवास्ते बुलाताहै जिसमें
व्रताधर्मबचे वह यत्नकीजिये बृहस्पतिजी बोले तू राजान
कुछदिनकी अवधिकरमैं इंद्रकोफिरगद्दीपर बैठालनेकाउप
रताहूं सोउनकीआज्ञानुसार इंद्राणीने कुछदिनोंकी अवधि
उसेप्रसन्नकिया व बृहस्पतिने अग्निको इंद्रकापतालगाने
भेजा सो अग्निदेवताने बृहस्पतिसे आनकरकहा इंद्रब्रह्म
के भयसे मानसरोवरतालाबमेंछिपाहै जबइंद्रकासमाचार
तक अवधिकेदिनबीतगये व फिर नहुषकामनुष्य इंद्राणी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नानेगया तबउसने बृहस्पतिजीकी आज्ञानुसार राजाको कहला
जा कि मनुष्य सौयज्ञराजसूय व अश्वमेधकरनेसे इन्द्रहोताहै
सो तुम विनायज्ञकिये राज्यदेवलोककाकरतेहो इसलियेतुम सु
खपालमेंबैठकर ब्राह्मणोंके कंधेपर मेरेयहांआवो तबमैंतुम्हारेपा
सरहूं राजानेकामवशहोकर कुछपाप व पुण्यका विचारनहीं कि
या बहुतसेऋषीश्वर व ब्राह्मणोंको अपनेसुखपालमें बरजोरी ल
ाकर इन्द्राणीकेस्थानपरचला ब्राह्मणोंनेकभी बोझानहीं उठा
याथा इसकारणजल्दीनहींचलसक्तेथे जबराजाने कामकेमदमें
अंधाहोकर ऋषीश्वरोंको चरणसेठोकरमारकेकहा कि जल्दी २
चलो तबऋषीश्वरोंने उसकाअधर्म देखकर राजाकोशापदिया
कि तू सर्पहोजा यहवचनउनकेमुखसेनिकलतेही वहसर्पहोकरपृ
थीपरगिरपड़ा व इन्द्राणीका पातिव्रतधर्म परमेश्वरनेबचायात
बृहस्पतिजीने मानसरोवरतालाबपरजाकरकहा हे इन्द्र तुमक
मलनालसेबाहरआवोइन्द्रनेदण्डवत्करके विनयकियाकिमहा
राज मैं ब्रह्महत्याकेभयसे बाहरनहींआसक्ता यहबातसुनकर बृह
स्पतिजी बोले कि तू मतडर अश्वमेधकरनेसे यज्ञपुरुषअनेक प्र
कारकापापछुड़ादेतेहैं सो मैं भी यज्ञकराकेतेराअपराध छुड़ादूंगा
इन्द्रने बृहस्पतिजीकीआज्ञानुसार तालाबसेनिकलकर अश्वमे
धयज्ञकिया तबवहब्रह्महत्याछूटनेसे फिरदिव्यरूपहोकर देवलो
कका राज्यकरनेलगा ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौदहवां अध्याय॥

शुकदेवजी करके वृत्रासुरके पूर्वजन्मकी कथा वर्णन करना॥

परीक्षितने इतनीकथासुनकरपूछा हे शुकदेवस्वामी साधु वैष्णव परमेश्वरकेभक्तहोतेहैं वृत्रासुरदैत्यको जिसेत्वष्टाने क सेउत्पन्नकियाथा युद्धमेंमरतेसमय किसतरहउसेऐसाज्ञानहु था कि सबहर्ष व विषाद नारायणजीकी इच्छासेहोताहै शुक जी बोले हे राजन् जिसकारण वृत्रासुरको अन्तसमयज्ञान उ न्नहुआ उसकीकथासुनो पूर्वजन्ममें वृत्रासुर चित्रकेतुनाम तों द्वीपकाराजाहोकर साथधर्म व प्रजापालनके राज्यकरता व सबछोटेबड़े उसराज्यमें अपनेकर्म व धर्मसेरहकरमग्नथे प जाचित्रकेतुके करोड़ स्त्री होनेपरभी पुत्रनहींहुआ इसलिये आठोंपहर शोचमेंरहताथा सो एकदिन अंगिराऋषीश्वर अप इच्छासे राजमन्दिरपरआये सो राजाने बड़ेआदर व सन्मान ठाकर उनकापूजनकिया जबऋषीश्वरने उसकोउदासदेखक छा कि तुम इतनेबड़ेधर्मात्मा व प्रतापी राजाहोकर मलीनम क्यों दिखलाईदेतेहो तबराजानेहाथजोड़कर विनयकिया कि हाराज तुम्हारेआशीर्वादसे सबसुखमुझेहैं परसन्तान न उत्प होनेसे दुःखीरहताहूं जिसतरहकोई भूखेप्यासेमनुष्यके शरी चन्दन आदिकलगावे तो सुगंध सूंघनेसे भूखप्यासउसकीनहीं ती उसीतरह विनापुत्र यहसातोंद्वीपकाराज्य व सुखमुझे अच्छ नहींलगता जैसे आपदयालुहोकर यहांआयेहो वैसे यह चि मेरीदूरकीजिये यहबातसुनकर ऋषीश्वरबोले हे राजन तुम्ह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाग्यमेंसन्तान नहींलेखीहै तुमकिसवास्ते इतनाशोचकरतेहो हमतेरे भवसागरपार उतरनेका उपाय बतलादेते हैं तू परमेश्वर काभजनकर जिसमें तेरीमुक्तिहो राजाबोला महाराजविनापुत्र मुझे ज्ञान व ध्यान अच्छानहींलगता अंगिराऋषीश्वरनेउसे अ ति अभिलाषा पुत्रकीदेखकरकहा हेराजन् जोतुम ऐसाहठकरते हो तो तुम्हारे एकपुत्रहोगा परउसके होने में पहलेतुझे बड़ाहर्ष होकरपीछेसे तू महादुःखपावैगा राजाबोलेमहाराज एकबेरमुझे बेटेकासुख दिखलादीजिये फिरजोचाहै सोहो यहबातसुनकर अं गिरा ऋषीश्वरनेपुत्र होनेकेवास्ते राजासेयज्ञकराया व पूर्णाहुति अग्निकुण्डमें डालकर जोकुछ शाकल्यबचा वहप्रसादराजाको देकरकहा इसे तू अपनीएकरानीको खिलादे जैसे राजानेवहशा कल्य अपनीबड़ीस्त्री कृतद्युतीनामको खिलादिया वैसेहरिइच्छा से रानीकेगर्भरहकर दशवेंमहीनेपुत्र उत्पन्नहुआ सो राजानेबड़े हर्ष से छःअरब गो विधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दानदिया और सबमं गलामुखी छोटेबड़ेको मुहँमांगा द्रव्यादिकदेकर इसतरहप्रसन्न किया कि जिसतरहश्रावणभादों में पानीबरसकर प्रजाकोसुखदे ताहै व चित्रकेतुको उसबालकसे इतनीप्रीतिहुई कि जिसकेप्रेम में दिनरातराजा बड़ीरानीकेमन्दिरमें पुत्रकेपास रहनेलगे जब दूसरीरानियोंनेदेखा कि राजाबालकके मोहसे आठोंपहरहमारी सवतिकेपासरहतेहैं वे हमलोगोंको आंखउठाकरभीनहीं देखते व उसके वशहोकरहमें अपनीलौंड़ीबराबरभी नहींसमझतेफिरसव तियाडाहसे सबरानियोंने आपसमें यहसम्मतकिया कि जिसमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहबालकमरजावै तो राजाहमलोगोंसेभीप्रीतिकरैंगे ऐसाकि
रतेही एकदिनअकेलापाकर राजाकीकिसीरानीनेउसबालक
ज़हरखिलादिया सो वहलड़कामरगया पहलेकृतद्युतीरानी उ
सोयाहुआजानकर जबजगानेकेवास्तेगई तबउसकोमराहुआ
खकर अतिविलापकरनेलगी जबराजानेवहसमाचारसुना तब
तापीटतावहांजाकर पृथ्वीपरगिरपड़ा व बारहपहरतक ऐसाअ
तरहा कि उसेअपनेतनकीसुधिनहींरही जबराजकुमारकामर
व राजाकेअचेतहोनेका समाचारसुनकर नगरमेंहाहाकारमच
या तबसबछोटेबड़ेरुदनकरते राजमन्दिरपरआये उसबालकके
रनेका जितनाशोचराजा व बड़ीरानी व दास व दासी व नगर
सियोंकोहुआ वहवर्णननहींहोसक्ता इतनीकथासुनाकर शुकदे
जीबोले हे राजन् स्त्रियांअपनेपति व कुलकाभलानहीं चाहक
केवलअपनेहीतनका सुखचाहतीहैं इसलियेज्ञानीमनुष्यको
कीबातपर विश्वासकरना व उसके वशहोना उचितनहींहै॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

नारदजी व अंगिरादि ऋषीश्वरों का राजमन्दिर पर आना॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् जब समाचार चित्रकेतुके अचे
होनेका चारोंतरफ़फैला तबनारदमुनि व अंगिराऋषीश्वर आदि
क यहसुनकरराजाको बोधकरनेआये व उन्होंने चित्रकेतुको
ठाकरकहा हेराजन् तू किसवास्ते इतनाविलापकरता है वहबा
कतुझसे क्याप्रयोजन रखताथा यहसब संसारीजीव अपनेपूर्व
न्मोंकाबदला लेनेकेवास्ते जगतमेंआकर इकट्ठेहोतेहैं जबउस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लकाबदलामिलकरअन्तसमय आनपहुँचताहै तवफिरवहलोग
बिलगहोजातेहैं इसलियेमरनेकाकुछशोच न रखकरसबबातोंको
पिछलेजन्मके संस्कारसे जाननाचाहिये और संसारस्वप्नवत् है
जिसतरहमनुष्यको स्वप्नमेंअनेकवस्तु दिखलाईदेकर जागनेके
उपरांतकुछनहींमिलता तबवहजानताहै कि यहसबस्वप्नकीबात
झूठीथी उसीतरह संसारमेंजबतकमनुष्यको ज्ञाननहींप्राप्तहोता
तबतकवहअज्ञानरूपीनिद्रामें अचेतरहताहै सोतुमइसबातकोस
मझकरशोचअपनाछोड़देव उससमयराजानेपुत्रकेशोकमें डूबेर
हनेसे किसीऋषीश्वरको नहींपहिंचानकर उनसेपूछाकि तुमलो
गकौनहोतब अंगिराऋषीश्वरनेनारदमुनि आदिकऋषीश्वरोंका
नामबतलाकरराजासेकहा मैं वहीअंगिराऋषीश्वरहूं जिसनेतेरे
हांपुत्रहोनेकाउपायकरके प्रथमतुमसेकहदियाथा कि बेटाउत्प
न्नहोनेमेंतुझेहर्ष व विषाददोनोंहोंगे सो अबतूअपनेमनको धैर्य
देकरमेरेवचनकाविश्वासमान कि सबहानि व लाभपरमेश्वरकी
इच्छानुसारहोकर उसमेंकोई तिलभरघटानेबढ़ानेनहींसक्ता इस
लिये तुमहरिचरणोंमेंध्यानलगाकर अपनीमुक्तिकायत्नकरो व
इसझूठेसंसारकीमायाछोड़दो जिसमेंतुम्हाराकल्याणहो व नार
दजीनेभी इसीतरहपर बहुतज्ञानसमझाकरकहा कि हे राजन् ह
मतुझको एकमन्त्रबतलायेदेतेहैं उसेतुम सातदिनतकजपोतुम्हें
ऋषभभगवान्का दर्शनमिलेगा॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोलहवां अध्याय ॥

नारदमुनि के उपदेश से राजा चित्रकेतुको ज्ञानप्राप्त होना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित राजाचित्रकेतु बड़ीरानी स
उसबालककेशोकमें ऐसाव्याकुलथा कि ऋषीश्वरोंकेसमझ
परभीशोचउसकानहींछूटा परउसने आंखखोलकर जबअंगि
व नारदमुनिको पहिंचाना तब उनकाचरण अपनेआंशुओं
धोकर विनयपूर्वककहा कि महाराजएकबेर किसीतरहइस
लकको जिलादेव तो मुझे धैर्यहो यहवचनसुनतेही नारदमु
ने अपनेयोगबलसे उसबालकके जीवात्माकोबुलाकर आक
में खड़ाकरदिया व राजा व रानीकेसन्मुख उससेकहा कितुम
पनेशरीरमें आनकरमाता व पिताकाशोचदूरकरके इन्हैं सुखदे
और सातोंद्वीपका राज्यकरो तबवहजीवात्मा चित्रकेतुकोगाल
देकरबोला यहमेरे किसजन्मके मातापिताहोकर मैं कौनज
काबेटाहूं संसारीव्यवहार सदासेयोंहीं चलाआताहै जिसतरह
नष्यरुपया व मोहरहाथमें रहनेसेउनको अपनाजानते हैं पर
किसीका नहीं होजाता उसीतरह जीवात्माभी चौरासीलाख
निमेंभ्रमताहै परवह किसीकेआधीन नहींहोता इसलिये मेरा
इनका कुछनाता समझना न चाहिये पूर्वजन्ममेंहम व चित्र
दोनोंमनुष्य राजाहोकर आपसमेंलड़तेथे जबमैं अपनीसेना
जाने से भरभण्डके वनमें जाकरछिपा तबउसने वहांआन
मेराशरीर काटलिया था उसीकारण इसजन्ममें हमनेपुत्रहो
इसे दुःखदिया और यहसबरानियां चित्रकेतुकी पिछलेजन्म

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रोड़ चिउँटिनियांहोकर एकमांदमें रहतीथीं सो हमनेदतवानि क
रतीसमय पानीउनकेबिलमेंगिरादिया सो वहसबमरगईं इसीका
रणइन्होंने इसजन्ममें मुझे विषदेकर अपनाबदलालिया इसी
तरह सबजीव संसारमेंजन्मलेकर एकदूसरेसे अपनापलटा लेते
हैं ऐसाकहकर वहजीवात्मा चलागया औरयहबातउससे सुनते
ही जबराजा व रानीका सबशोचछूटगया तबउन्होंने कहा किम
नुष्यतनुमें जन्मपाकर सुकर्मकरना चाहिये यहपुत्रमेराशत्रु था
इसके मरनेका अबकुछशोक नहींहै व राजाकी दूसरीस्त्री जिसने
उसबालकको विषदियाथा यहहालदेखकर बहुतपछताई व नार
दजी अंगिराऋषीश्वरसे पूछकरशास्त्रानुसार प्रायश्चित्त उसका
कैया व राजाचित्रकेतु उसीसमयघर व राज्यछोड़कर बनमें इस
रहचलागया कि जिसतरहहाथी चहलेमेंका फँसाहुआ निकल
जाताहै जबराजायमुनाकिनारेजाकर नारदजीकाबतलायाहुआ
मन्त्रजपनेलगा व उसमन्त्रकेप्रतापसे सातवेंदिन शेषजीने उस
को दर्शन दिया व राजाने शेषजीको दण्डवत्करके विधिपूर्वक
जा व स्तुति उनकीकी तबशेषभगवान्ने प्रसन्नहोकर चित्रके
को उसीतनुसे विद्याधरोंकाराजा बनाकर ऐसावरदानदिया कि
दातुझे हरिचरणोंमें भक्तिबनीरहै व एकदिव्य विमान क्षणभर
सबजगहपहुँचनेवाला उसेदेकेशेषजीअन्तर्द्धानहोगये व चित्र
केतुविद्याधरोंका राजाहोकर अपनीस्त्रियोंसमेत विमानपर बैठके
सैर कियाकरताथा॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत्रहवां अध्याय ॥

पार्वतीजी का चित्रकेतुको शापदेना ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित एकदिनाचित्रकेतु अपनी स्त्री
समेत विमानपरबैठकरसैरकरनेनिकला सो कैलासपर्वतपरज
महादेवजी पार्वतीको अपनीजंघापर बैठालेहुयेभृगुआदिक
षीश्वरोंसे ज्ञानउपदेशकररहेथेजापहुंचा व उनदोनोंको नमस्
रकरके हँसकरकहनेलगा कि देखो उन्होंने तपस्वी व ब्रह्मज्ञा
व जगद्गुरुहोनेपरभी ऐसीलज्जाछोड़दी कि विषयीमनुष्यके
मानस्त्रीको सभामें जंघापरबैठालेहैं संसारीजीवभी अपनी
को अकेलेमेंलेकरबैठताहै ऐसावचनसुननेपरभी हँसकरमहादे
जीचुपहोरहे परन्तुपार्वतीजीने जबउसेहँसतेदेखकर यहबातसुन
तबक्रोधकरकेबोलीं कि हमऐसेनिर्लज्जोंका समझानेवाला य
विद्याधरउत्पन्नहुआहैजिनकोब्रह्मा व सनत्कुमार व शुकदेव
नहींउपदेश करसक्के उन्हैंयह नारदका मंत्रसुनकर अभिमा
ज्ञानबतलाताहैइसमूर्खको नारायणजीकी सेवामें रहनान च
येयहकहकर पार्वतीजी चित्रकेतुसेबोलीं हेबेटाअबतुमदैत्यय
में जन्मलेकर कुछदिन इसहँसनेका दंडभोगो यहवचनसुन
चित्रकेतुने उसशापको अपनेमस्तकपर चढ़ालिया व विमान
सेउतरकर पार्वतीजीको दण्डवत्करकेबोला कि हेमातातुम्ह
शाप मैंनेहर्षसेअंगीकारकिया परमेश्वरकीइच्छा इसीतरहप
संसारमें मनुष्यदुःख व सुखदोनोंभोगताहै इसलिये मैं शाप
रदान व नरक व स्वर्गदोनोंको समानजानताहूं मुझेऐसीसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहीं है किजो महादेवजीकोज्ञानसिखलाऊं मैंनेइसवास्तेइतना
कहा कि जिसमेंसंसारीलोग यहहालसुनकरऐसे निर्लज्ज न हों
चित्रकेतु ऐसाकहके होना इसशापका हरिइच्छासे जानकर आ
नन्दपूर्वकचलागया तबशिवजीबोले हेपार्वती तैंनेपरमेश्वरके भ
क्तोंका माहात्म्य व स्वभावदेखा इतनाबड़ाशापसुनकर दुःखी न
हुआसोमुझे हरिभक्तोंके समानदूसराकोई प्यारानहींलगता इत
नीकथासुनाकरशुकदेवजी बोले हेराजन्वहीचित्रकेतु पार्वतीजी
के शापसे वृत्रासुरदैत्यहुआ इसवास्तेपरमेश्वरने उसेअपनाभक्त
जानकरअन्तसमय ज्ञानदियाथा सोवहअसुर तनुछोड़ने के उप
रान्तवैकुंठमेंजाकर परमेश्वरकीसेवाकरनेलगा हेराजन्यहकथा
चित्रकेतुकीकहने व सुननेवालाभवसागरपार उतरजाताहै ॥

अठारहवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका सविता देवता आदिककी कथा कहना ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित अबमैं सवितादेवताआदिककी सं
तानकीकथाकहताहूं सुनो सवितादेवतापृष्णीनाम स्त्रीसेअग्निहो
त्रआदिक तीनबेटे व सावित्रीआदिकतीनकन्या व भगदेवताके
सिद्धिनामस्त्रीसे दोपुत्र व एककन्या व धातादेवतोंकेयहां उरगा
दिकचारबेटी व पूर्णमासआदिक चारबालक अग्नि देवताके कृ
तिकानाम स्त्री से पुरीषआदिकबेटे व वरुण देवताकी चर्षणी
नाम स्त्रीसे वाल्मीकिआदिक ऋषीश्वर दोपुत्रउत्पन्नहुये व मि
त्रावरुणादेवताकावीर्य्य उर्वशीअप्सराको देखकरगिरपड़ाथा सो
इवीर्य्यघड़ेमेंरखनेसे अगस्त्य व वशिष्ठजीने जन्मपाया व इन्द्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की पुलोमास्त्रीसे जयन्तआदिकतीनपुत्र व बामनभगवान्केकी
र्त्तिनामस्त्रीसे सुभगनामबालक व कश्यपके दितिनामस्त्रीसे हिर
ण्यकशिपु व हिरण्याक्ष दोपुत्र व हिरण्यकशिपुके कायाधूनाम
स्त्रीसे सिंहिकानामकन्या व सिंह्लाद व प्रह्लाद व अह्लाद चारसंता
नउत्पन्नहुये वहकन्या विप्रचित्तीदैत्यकोव्याहीगईजिससेराहुउ
त्पन्नहुआ सिंह्लादकाबेटापंचजनहोकर प्रह्लादकापुत्र बातापीद
नवहुआजिसकोअगस्त्यजीनेमारा व अह्लादके महिषासुर व ब
ष्कल दोबेटेहोकर प्रह्लादसेविरोचनउत्पन्नहुआ व बिरोचनके
वीनामस्त्रीसेराजाबलिहोकर उससेबाणासुरआदिक सौपुत्रहुये
कश्यपकेदितिस्त्रीसे मरुद्गणनाम उंचासबालकउत्पन्नहोकरइं
केसमानदेवताहोगये इतनीकथासुनकर परीक्षितनेपूछा किमह
राज दितिकेपुत्रदैत्यादिक किसतरहदेवताहुये वहवर्णनकीजिये
शुकदेवजीबोले हेराजन् जबपरमेश्वरने वाराह व नृसिंहअव
रलेकर हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष दितिकेदोनोंपुत्रोंको मार
लातबदितिने बहुतउदासहोकरकहादेखो मेरेदोनोंबालक इ
नेमरवाडाले अबमैंऐसाउपायकरूं कि जिसमेंइन्द्रकामारने
लापुत्रमेरेहो इसीइच्छापरदितिअपने स्वामीकीसेवाप्रेमसेक
लगी सो एकदिनकश्यपजीने प्रसन्नहोकर उससेपूछा कि हे
तिमैं तेरेऊपरबहुतहर्षितहूं तुझे जो इच्छाहो सो वरदानमां
तबदितिहाथजोड़करबोली कि महाराज तुमप्रसन्नहोकरव
नदेनेकेवास्तेकहतेहो तो एकपुत्रमुझे ऐसादीजिये कि जो
कोमारकर अमरहै यहबातसुनतेही कश्यपजीने उदासहो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनमें विचारा किदेखो मैं वरदानदेचुका अबक्याकरूं इन्द्रपरमे
श्वरकाभक्तहै उसकाप्राणलेना न चाहिये व मेरावचनभी झूठा
नहींहोसक्ता इसीतरहअतिशोचकरके कश्यपजीनेकहा हेदितितू
अगहनमासका व्रतरक्खेतो तेरेऐसापुत्र उत्पन्नहो यहसुनकरदि
तिबोली कि महाराजमुझेउसकी विधिबतलादीजिये मैंयहव्रतक
रूंगीतबकश्यपजीनेकहा हेदितिअगहनमहीना शुक्लपक्षसेउसव्र
तको आरंभकरके प्रतिदिनब्रह्मचर्यरहनाचाहिये व इसव्रतमेंदिन
को सोना व नंगीहोकरस्नानकरना वनीचजातिसेबोलना वशिर
काबालखुलारखना व झूठबोलना मनाहोकर आठोंप्रहरशुद्धरह
नाचाहिये व लक्ष्मीनारायण व सावित्रीस्त्रियोंकी पूजानित्यविधि
पूर्वक वर्षादिनतककरना व व्रतरखनाउचितहै तूभीयहव्रतरक्खेतो
तेरेऐसापुत्र उत्पन्नहोकर इन्द्रकोमारके अमररहैपरनारायणजी
ऐसानचाहैंगे तोतेरेव्रतमें विघ्नहोजावेगा यहवचनसुनतेही दिति
अतिप्रसन्नहोकर उसीतरहव्रत रखनेलगी इन्द्रनेयहवृत्तांतसुनते
ही अतिभयमानकर मनमेंकहा कि अबमेरे मरनेकासंयोगहुआ
किसीतरहबचनहीं सक्ता ऐसा विचारके इन्द्र ब्राह्मणरूपबनकर
जिसजगहदितियहव्रतकरतीथी वहांपरचलागया व दिनरातउस
कीसेवा वटहलकरनेलगा तबदितिउसकीसेवासे अतिप्रसन्नरहने
लगी पर ज्यों २ व्रतसम्पूर्णहोनेके दिननिकटपहुंचतेजातेथे त्यों
२ इन्द्र अधिकशोचकरताथा जबउसव्रतके सम्पूर्णहोनेमें पांच
चारदिन रहगये तबपरमेश्वरकी इच्छासे एकदिन दितिशिरका
बालखुला छोड़करजूठेमुंह सोगई यहदोनोंबातैंव्रतमें अशुद्धवि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चारकर इन्द्रअपना छोटारूपबनाकर वज्रलियेहुये दितिके
में घुसगया व वहांजाकर गर्भमेंजोबालकथा उसकोसातभाग
रडाला तबवहसातों रोनेलगे फिरइन्द्रने एकएकके सात २
ड़ेकिये परनारायणजीकी इच्छासे कोईनहींमरा व उनसातों
उंचासबालकहोकर रुदनकरकेबोले हेइन्द्रतुमहमें मतमारो ह
लोग तुम्हारीसहायताकरेंगे यहदशादेखकर इन्द्रउनलड़कों
बोले हेभाईअबतुम मतिरोवो मरुतनामहोकर मेरेसाथरहोगे
रइन्द्र उंचासौंबालकोंसमेत गर्भकीराह बाहरनिकलकर इंद्र
होगया जबदितिनेजाकर इन्द्रको उंचासबालकोंसमेत खड़ेहु
देखा तबउससेपूछा कि हेइन्द्र मैंने एकपुत्रहोनेके वास्ते संक
कियाथा उंचासबालक किसतरहउत्पन्नहुये यहवचनसुनकर
न्द्रडरता व कांपताहुआबोला हेमाता जबमैंनेतुमको जूठेमुंह
खुलेबाल होजानेसे व्रतमें अशुद्धदेखा तबअपनाप्राण बचा
वास्ते तुम्हारेबालकको मारनाविचारकर पेटमेंघुसगया व मैं
पनेवज्रसे उसबालकके उंचासभागकिये परतुम्हारेव्रत व पूज
प्रतापसे वहउंचासों अमरहोकर जीतेरहे सो अबमैं इनबालक
साथ तुम्हारेगर्भसे निकला इसकारण वहसबहमारेहोकर इ
रीमेंमेरेसाथ रहेंगे यहबातसुनतेही दितिअतिप्रसन्नहोकर बो
हे इन्द्र तूनेब्राह्मणरूपधरके मेरीबड़ीसेवाकी इसलिये अबमु
रेमरनेकी कुछइच्छानहीं है और यहलोग भाईकेसमान तेरे
नदेनेके समयपरकाम आवेंगे जबयहवचनसुनकर इन्द्रको
कोमारकर छटगया तबवहबड़ेहर्षसे दितिकोसाष्टांग दण्ड

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करके उंचासोंबालक समेत इन्द्रलोकमेंजाकर राज्यकरनेलगा हेराजन् इसतरह दितिकेपुत्र देवताहोगयेथे यहकथासुनकरराजा परीक्षित अतिप्रसन्नहुये ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

उस व्रतकी विधि शुकदेवजीका कहना ॥

परीक्षितने इतनीकथा सुनकरपूछा कि महाराजइसव्रतमें ऐ साप्रतापहै उसकीविधिबतलाइये शुकदेवजीबोले हेराजन् जो स्त्री इसव्रतकोरक्खाचाहै वहअपनेस्वामीसे आज्ञालेकरअगहन दीअमावसको नहाकर पहिलेमरुतदेवताकी कथासुनै फिर शू कीखोदीहुईमिट्टी शरीरमेंमलकर स्नानकरै व अगहनसुदी तपदासे व्रतरखनाआरम्भकरके ब्रह्मचर्यरहै व शास्त्रानुसार त्य लक्ष्मीनारायणकी पूजाकरनेकेउपरान्त हाथजोड़कर उ कैमन्त्रसे स्तुतिकरै फिरसावित्री स्त्रीकोपूजकर खीरकीआहुति ग्निमेंदेवै व प्रथमब्राह्मणको खीरखिलाकर पीछेआपवहीखी जो आहुतिदेनेसे बचजावे सोखावे इसीतरह नित्यवर्षदिनतक ाबरव्रत व पूजनकरके कार्त्तिकशुक्लपूर्णमासीको विधिपूर्वक यापन उसकाकरै और ब्राह्मण व कंगालोंको ऐसाभोजन खि वै किजिसमें कोईविमुख न जावै व उद्यापनकरानेवाले आ र्यको शय्यादान व गो व द्रव्यादिक देकरप्रसन्नकरे इसतरह तरखनेवाली स्त्री देवताकेसमानपुत्रपाकर सदासावित्री रह ई व संसारमें अपनामनोरथपाकर मरनेकेउपरान्त मुक्ति

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीहै इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् हमनेपुंस
नामव्रत व मरुतोंकेजन्मकी कथा तुमकोसुनाई यह माहा
व्रतका परीक्षित सुनकरअति प्रसन्नहुये ॥

CC-0. Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीमद्भागवतमहापुराण

सातवां स्कन्ध ॥

हिरण्यकशिपु को नृसिंहभगवान्का मारना ॥

दो० लिखोंकथाप्रह्लादकी जाकीभक्ति अपार । वाकीरक्षाके लिये भे नरहरिअवतार ॥

पहिला अध्याय ॥

जयविजय की कथा शुकदेवजीका वर्णन करना ॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकरबोले हे शुकदेवस्वामी पर
श्वरकेनिकट दैत्य व देवता बराबरहोकर फिरकिसवास्ते नारा
णजी देवतोंकीसहायताकरके दैत्योंकोमारतेहैं इसबातकामुझे
र्गुणकेगुणोंमें संदेहहै सो छुड़ादीजिये जिसतरह किसीके दो
नहोवें वह दोनोंपरसमानप्रीतिरखताहै उसीतरह देवता व दैत्य
मेश्वरकीइच्छासे उत्पन्नहोकर दोनों एकसमानहैं किसकार
नारायणजीदेवतोंपरदयारखकर दैत्योंकाआदरनहींकरते यह
नसुनकर शुकदेवजीबोले कि हेराजन् तुमनेयह बहुतअच्छी
तभगवान्कीभक्ति बढ़ानेवाली पूछीहै जो कथा मैंने नारदम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निआदिक ऋषीश्वरोंसेसुनीथी वहतुमसे कहताहूंसुनो परमे
निर्गुणरूपको सबसेन्यारे समझनाचाहिये परउनकीमायासे
नगुणसतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, प्रकटहुयेइसलिये सतोगु
पारीमें देवतोंकोबढ़ाकर रजोगुणकेसमयदैत्योंका प्रताप
करतेहैं व तमोगुणकीपारीमें मनुष्यकाभाग्यउदयहोताहै
समयराजायुधिष्ठिरने शिशुपालकी मुक्तिराजसूययज्ञमें
नारदजीसेपूंछा किमहाराज जिसशिशुपालने श्रीकृष्णजी
कीनाथकोदुर्वचनकहा उसकीजिह्वाके सौटुकड़ाहोजाना
था सो उसनेमुक्तिपाई यहबड़ेआश्चर्यकीबातहै तबनारदमु
लेकि हेराजन् परमेश्वरसबको एकसाजानतेहैं जोमनुष्य
मन कामक्रोधलोभमोह किसीप्रकारसेउनमेंलगावे वहउन्हीं
रूप इसतरहहोजाताहै कि जिसतरह भृंगी कीड़ेकोदेखनेसे
कीड़ेउसीकारूपहोजातेहैं देखोगोपियोंने नारायणजीको
पतिजानकरप्रीतिकी व शिशुपाल व रावणआदिकनेशत्रु
व यदुवंशियोंने भाई बन्धु व युधिष्ठिरआदिक पाण्डवोंने
जानकरउनमें चित्तलगाया सोउनकीकृपासे सबकृतार्थहो
कशिशुपालकीमुक्तिहोनेमेंक्यासंदेहहै और ये दोनों शि
व दन्तवक्र तुम्हारे मौसीकेबेटे जयविजयनामद्वारपालकहे
णकेशापसे उन्होंनेवैकुंठसे गिरकर दैत्ययोनिमें जन्मपाय
नोंजन्मपरमेश्वरसे शत्रुभावरखनेमें नारायणजीके हाथ
जाकर अबतीसरेजन्ममुक्तहुये यहसुनकरयुधिष्ठिरबोले
नाथवैकुंठमें रहनेवालोंका शरीर व मनासंसारीमनुष्य

CC-0. In Public Domain. Uttar Pradesh State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खकरउनका चैतन्यरूपहोता है वैकुंठवासी पापनहींकरते सो
न्होंने विनाअपराधकिये किसवास्तेदैत्यकातनुपाया और हिर
यकशिपु दैत्यकेयहांप्रह्लाद ऐसापरमभक्त किसतरह उत्पन्न
आ उसकावर्णनकीजिये नारदमुनिबोले हे राजन् एकदिनस
कादिक परमेश्वरकेदर्शनकेवास्ते वैकुण्ठमेंगये सो जयविजय
ईश्वरकीआज्ञानुसार उन्हेंभीतरनहीं जानेदिया व पांचपांच
र्षकेबालक जानकर अपमानकिया तबउन्होंने क्रोधवश जय
विजयको शापदेकरकहा कि हमलोगनारायणजीका दर्शनकर
आयेथे सो तुम्हारेरोंकदेनेसे तीनक्षणदर्शन मिलने में विघ्नहु
ा इसलियेतुमदोनों यहांरहनेयोग्यनहींहो वैकुंठसे गिरकर दै
योनिमें जन्मलेव तीसरेजन्मउद्धारहोकर फिरवैकुंठमें आवो
सो हेयुधिष्ठिर वहीदोनोंभाईशापकेमारे हिरण्याक्ष व हिरण्य
शिपुनामदैत्य दितिसे उत्पन्नहुये सो हिरण्याक्षने युवाहोकर
सावचारा कि देवतालोग पृथ्वीपरयज्ञ व होमहोने से अपना
भागपाकर बलवान्होतेहैं सो मैंपृथ्वीउठाकर पातालमें लेजाऊं
बकिसतरहकोई यज्ञहवनकरैगा यज्ञकाभाग न पाने से सबदेव
भोजन बिनादुर्बलहोकर मरजावैंगे जबहिरण्याक्षऐसा विचा
करपृथ्वीको पातालमेंलेगया तबनारायणजी ब्रह्माकेविनयकर
से बाराहअवतारलेकर पातालमेंचलेगये व हिरण्याक्षको मार
पृथ्वीकोलाकर फिरज्योंकात्योंस्थिरकरदिया व नृसिंहअवता
लेकर प्रह्लादभक्तका प्राणबचानेवास्ते हिरण्यकशिपुको मारा
वहतनुछोड़कर उनदोनोंने विश्रवामुनिकेयहां केशीनामस्त्री

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से जन्मपाया व रावण व कुम्भकर्ण कहलाये तबनारायणजी
रामचन्द्र व लक्ष्मणअवतार लेकर उनकाबधकिया अबउन्हों
क्षत्रियवर्णहोकर तीसराजन्मतुम्हारीमौसीकेघरलिया सो उ
विरोधसे शिशुपालक्रोधरूपहोकर परमेश्वरका भजनकरता
अबश्रीकृष्णजीने सुदर्शनचक्रसे मारकरउसे मुक्तकिया सो
दोनोंभाई शिशुपाल व दन्तवक्र श्यामसुंदरकेहाथसेमारेजा
फिरवैकुण्ठमें अपनेस्थानपरपहुंचे इतनीकथासुनकर युधि
ने नारदमुनिसेपूछा कि महाराज प्रह्लादऐसा परमभक्त व
वान्से हिरण्यकशिपुने किसवास्तेशत्रुतारखकर उसकोदुःख
या कि उसीकारण हिरण्यकशिपुमारागया व प्रह्लादऐसापर
क्तदैत्यकुलमें किसतरहउत्पन्नहुआ इसकोबतलाइये ॥

दूसरा अध्याय ॥

नारदजीको हिरण्यकशिपु की कथाकहना ॥

नारदजी युधिष्ठिरकी बातसुनकरबोले कि हेराजन् जब
ण्याक्षदैत्य बाराहजीके हाथसेमारागया तब हिरण्यकशिपु
धितहोकरअपनेसाथीदैत्योंसेबोलाकिहेविप्रचित्ती व शतबाहु
दिकमेरावचनसुनो देवतोंनेजोहमसेलघुहैं विष्णुभगवान्को
लाकर मेरेभाईकोमरवाडाला नारायणजी बालकोंकेसमान
अज्ञानीहैं जो कोई उनकीविनतीकरताहै उसीकीसहायता
हैं इसलिये मैंअभीहिरण्याक्षके नामपरपानी न देकरविष्णु
वान्को त्रिशूलसेमारूंगा और उन्हींकेरक्तसे अपनेभाईको
लांजलिदूंगा दुर्बलदेवतोंको क्यामारूं जबमैंनारायणजी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ेशत्रुको जो सब देवतोंकीजड़हैं मारलूंगा तब सबदेवताबिना मारे आपसेमरजावैंगे इसकारण तुमलोग उसमूल उखाड़नेका यह उपायकरो कि जिसजगहब्राह्मण या ऋषीश्वरोंको यज्ञ व हवन करतेदेखो तो यज्ञउनका विध्वंसकरडालो और जहां गो व ब्राह्मणको पावोमारडालो व संसारमें किसीको तप व जप व हरिभजनकरने मतदेव यहवचनसुनतेही दैत्य लोग सबजगह ढूंढ़ २ कर गो व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको मारनेलगे जबहिरण्या क्ष की माता व स्त्री व बेटोंने उसकेमरनेका अतिशोचकिया तब हिरण्यकशिपुने इसतरह उनकोसमझाया कि मेराभाईशत्रुके सम्मुख युद्धमेंमारागया इसलियेतुम्हैंउसकाशोचकरना न चाहि जीवकभी नहींमरता और शरीरकिसीका सदा स्थिरनहींरह इसलियेमरनेका शोचअज्ञानीमनुष्यकरतेहैं इसकाएक इति सकहताहूं सुनो उत्तरदेशमें सुयज्ञनाम एकराजारहताथा जब हभी इसीतरहयुद्धमें मारागया तब उसकीरानियों ने मोहवश थकेपास बैठकर ऐसा विलापकिया कि सूर्य्य अस्तहोनेपरभी थउसकी नहीं जलाई तब यमराजपांचवर्ष के बालकबनकर हांआये व राजाकेजातभाई व रानियोंको समझाकरकहा बड़ा आश्चर्यहै कितुमलोगज्ञानीहोकर इतनाबड़ाखेदकरतेहो संसार की गतिदेखो जहांसेजीवआयाथा वहांचलागया व तुमलोगभी सीजगह अवश्यजावोगे फिर रोना तुम्हारावृथाहै जिसकेवास्ते मरोतेहो वहशरीर ज्योंकात्यों यहांपरपड़ाहै व जो इसकायामें लने व खानेपीनेवाला सामर्थीपुरुषथा उसको तुमनेकभी आँ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खसेनहींदेखा फिर किसकारण शोचकरतेहो सबजीवों की
प्रारब्धआधीन समझनाचाहिये देखो मैं पांचवर्षकाबालक
लाबनमें फिरताहूं बिनामृत्युआयेनहींमरता व मेरेमाता व
ने मुझकोछोड़दियाहै इसलियेमुझको किसीकीप्रीतिनहींहै
सनेगर्भमें मेरापालनकियाथा वही अबभीरक्षाकरैगा जिस
वृक्षलगानेवाला अपनेपेड़कोसींचकर उसकीरक्षाकरताहै
अपनीरक्षा आपनहीं करसक्ता उसीतरह नारायणजी सबजी
कापालन व रक्षाकरतेहैं कदाचित् तुमलोग ऐसाकहो कि
युद्धमें न जाता तो क्योंमरता सोयहबात निश्चयकरकेजानो
जबमृत्युआतीहै तब मनुष्यलोहेकेकोटमें भी बन्दरखनेसे
बचता जिसतरहघरबनकर कुछदिनउपरान्त फिर गिरपड़ताहै
सीतरहशरीरका धर्म्मबनना व बिगड़नाहोकर यहसदास्थिरन
रहता व जीवसदाअमरहोकर आकाशकेसमानरहताहै जिस
दशवर्त्तन पानीसेभरकर धूपमेंरखदेव तबसूर्य्यकीछाया पड़
दूसरेसूर्यदिखलाईदेतेहैं जबवहबर्तन तोड़डालो तबफिरवह
शसूर्यमें मिलजानेसे उनबर्त्तनोंमें देखनहीं पड़ता जिसतरह
बर्त्तनोंकेटूटनेसे सूर्य्यकानाशनहींहोता उसीतरहइसजीवको
समझो जैसे आगिलकड़ीमें नहींदिखलाईदेती उसीतरहय
वबोलतापुरुषशरीरमेंरहकर दृष्टिमें नहींआता जबतकवह
त्माशरीरमेंथा तबतकराजाजीतारहा अबतुमजितनाचाहो
नारुदनकरके अपनाप्राणभीदेडालो परउससेभेंट नहींहोसक
नोंकेफलसे न मालूमवहजीव कहांचलागया कदाचित् तु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रोतेरोतेमरजावोगे तो अकालमृत्युहोकर नरकमेंदुःखभोगना
पड़ैगा जैसेकुरंगपक्षी बच्चोंकेमोहसे जालमेंफँसकर नष्टहुआथा व
हीगति तुम्हारी भीहोगी जबऐसाज्ञानसुनकर रानियोंका शोच
मिटा तबउन्होंने राजाकोदग्धकिया व यमराजबालकरूप वहां
सेअन्तर्द्धानहोगये सो तुमलोगभी यहीज्ञानसमझकर हिरण्या
क्षके मरनेकाशोचमतकरो यहबातहिरण्यकशिपुसे सुनकर दि
ति हिरण्याक्षकीमाता व रुधाभानु स्त्री व शकुनआदिक उसकेबे
टोंने धैर्यधरा ॥

तीसरा अध्याय ॥

मन्दराचल पर्वत पर जाकर हिरण्यकशिपु का तप करना ॥

नारदजीबोले हे युधिष्ठिर जबहिरण्यकशिपुके समझानेसे उ
काशोककमहुआ तबदितिनेकहा कि हे बेटा नारायणजीनेदेव
ोंकीसहायताकरके तेरेभाईकोमाराहै सो तूभी देवतोंको मारक
अपनेभाईकाबदलालेहिरण्यकशिपुबोला हेमाता हिरण्याक्ष
कोपरमेश्वरनेमाराथा इसलिये मैं उनकोमारकर अपनेभाईका
बदलालेऊंगा परमैंने यहउपायविचाराहै कि पहिलेब्रह्माका तप
करकेउनसे ऐसावरदानलेऊं कि जिसमें मैंकभी न मरूं तबनारा
यणजीका सामनाकरके उन्हेंमारूंगा यहकहकर हिरण्यकशिपु
अपनीमातासेबिदाहुआ व मन्दराचलपहाड़परजाकर तपकरने
लगा जबउसने सौ वर्षतकऊर्ध्वबाहुएकपैरके अंगूठेसेखड़ेरहकर
ब्रह्माजीकातपकिया और तपकरतीसमयअपनाअंग नहींहिला
कर सूर्यभगवानको देखतारहा तबउसकेचारोंओर मट्टीजमाहो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने व घासउगनेसे सर्प व बिच्छूने अपनाबिलबनालिया औ
केप्रतापसे उसकाऐसातेजबढ़ा कि नदी व पर्वत व समुद्र ज
लगे जबदेवतोंको उसकीज्वालापहुँची तबउन्होंनेब्रह्माजी
सजाकरकहा कि महाराज हिरण्यकशिपुके तपोबलसे हमें
कष्टहोताहै सो आपजाकर उसेवरदानदेके तपकरनाछुड़ाइये
तो हिरण्यकशिपु तुम्हारेउत्पन्न कियेहुयेजीवोंको अपनेत
भस्मकरके दूसरीसृष्टिबनायाचाहताहै यहवचन देवतोंका
ही ब्रह्माजी भृगुआदिक ऋषीश्वरोंको अपनेसाथलेकर हि
कशिपुकेपासगये व उसकातेज देखकरब्रह्माजीनेकहा हे क
नन्दन तैंनेबड़ाभारीतपकरके मुझेअतिप्रसन्नकिया ऐसादू
नहींहोसक्ता जोसौवर्षतक बिनाअन्नजलकियेजीतारहै अबत
जिसवरदानकीइच्छाहो सो मांग यहकहकर जैसेब्रह्माजीने
नेकमण्डलुकाजल उसपरछिड़कदिया वैसेउसकेशरीरका
जो दीमकलगनेसे केवलहड्डीरहगईथी ज्योंकात्यों बलवान्
ष्टहोगया व सुवर्णकेसमान चमकनेलगा तबहिरण्यकशिपु
ण्डवत् व स्तुतिकरके ब्रह्माजीसे हाथजोड़करविनयकिया
राज तुमजगद्गुरुहोकर सबजड़ व चैतन्यकीउत्पत्तिकरतेहो
पयज्ञोंकाविधान व धर्मोंकीरक्षाकरनेवाले निर्गुणरूपहैं यह
रूपअपना केवलसंसारकी रचनाकरनेवास्ते धारणकरतेहो
आपदयालुहोकर मुझेवरदानदेनेवास्ते कहते हैं तो मुझको
वरदानदीजिये कि जिसमें तुम्हाराउत्पन्नकियाहुआ कोई
ज इव चैतन्य देवता व दैत्य व मनुष्यादिक मुझेमारने न

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दीया जिसवस्तुको तुझेइच्छाहो हम दिलवादेवेंगे और जो तू
ारायणजीको ढूंढ़ताहै सो उनकामिलना सहजमतसमझना ब
तसे योगीश्वर व तपस्वीलोगोंने बीचखोज नारायणजीके तप
जपकरके शरीरअपना जलादिया तिसपरभी उनकोनहींपाया
वृथाउनकोढूंढ़ने क्योंजाताहै और हम नारदमुनि परमेश्वरके
क्त व सेवकहैं तुझको तेरेपिताकेपास लेजाकर जो कुछहम क
गे सबबातहमारी तेराबापमानैगा ध्रुवनेयहवचन नारदजीकासु
कर विचारकिया मैंनेसुनाथा कि नारदमुनि परमभक्तनारायण
ीकेहैं देखोहम अभी नारायणजीके खोजमें घरसेनिकले सो
समहात्मा व हरिभक्तका दर्शनपाया जबमैं बीचतप व स्मरण
मेश्वरके लीनहोऊँगा तब न मालूम और कैसे २ अच्छेपदार्थ
मिलेंगे यहबात विचारकर ध्रुवने नारदजीको दण्डवत्करके
नयाकिया महाराज आपपरमभक्त नारायणजीकेहैं इसलिये
रीसहायताकीजिये जिसमें परमेश्वरके चरणोंतक जल्दीपहुँच
ाऊँ आपको परमेश्वरकीराहपर जानेसे मुझे फेरनाउचितनहीं
जो रास्ता नारायणजीके मिलनेका सहजहो वह मुझेदिखला
व औ मैंक्षत्री काबेटाहूं अबबिनादर्शनकिये नारायणजीके फिर
र अपनघर नहींजाऊँगा जब नारदजीनेदेखाकि यहलड़का बी
भक्तिपरमेश्वरकेसच्चा व ज्ञानसिखलावनेयोग्यहैतबनारदमुनि
वसेकहा हेबेटातुझेव तेरेज्ञानकोधन्यहै हमतेरीपरीक्षालेतेथे अ
तुझको नारायणजीके मिलनेकीराह दिखलावतेहैं सुन तूयहांसे
थुरापुरीमें जाकर यमुनाकिनारेजहां श्रीकृष्णजीत्रिलोकीनाथ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आठोंपहररहतेहैं कुशकाआसनबिछाकर उत्तरमुंहबैठमहि
बड़ाई यमुनाजीकी बैकुंठसेआधिकहै और तुमनित्ययमुना
त्रिकालस्नानकरना वहांनहानेसे तेरेसबपापजन्मजन्मान्
छूटजावेंगे और हरसायतबीचध्याननारायणजीके लवली
ना व स्वरूपउनकाइसतरहपरहै श्यामरंगकमलनयन चतुर्भु
कुटजड़ाऊपहिने मकराकृतकुण्डलधारणाकिये चन्द्रमाकी
शोभायमान बैजयन्तीमाला व कौस्तुभमणि गलेमेंडाले
मन्दमुसकरातेहैं सो तुमनित्यस्नानकरनेउपरांत आसनप
करऐसेरूपकाध्यान मनलगाकेकरना और फल या दूबया
जोकुछमिले उसीसे धूपदीपआदिक परमेश्वरकोकरदेना व
हअक्षरकामंत्र नारदमुनिनेध्रुवकोउपदेशकरकेकहा इसीमंत्र
जपना व भोजनकमकरके पानीथोड़ापीना श्रीनारायणजीदर्
लुहोकर तुझेदर्शनदेवेंगे व कामनातेरीपूरीहोकर तू बड़ीपद
पहुँचेगा हरिभजनकरनेसे संसार व परलोक दोनोंजगहका
मिलताहै ध्रुवनेस्वरूप व ध्याननारायणजी व मंत्रजपनेका
नारदमुनिसेसुनकर बहुतप्रसन्नहोकेकहा आपनेबड़ीदयासे
श्वरकोमिलनेका सहजमार्गमुझे दिखलादिया मैं तो जानत
कि नारायणजीकाघर किसीनगर या गांवमें न मालूमकितन
होगावहांजाकरउनकोढूंढ़ता सोआपनेस्मरण व ध्यानकरन
कामेरेहृदयमेंबतलादिया अबमैं तुम्हारीआज्ञानुसार जप व
नकरकेपरमेश्वरको मिलूंगा यहबातकहकर ध्रुव नारदमुनि
ण्डवत्करनेउपरांतमथुराकोचलागया व नारदजी ने वहांसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्तानपादके पास आनकरक्यादेखा कि राजा व ध्रुवकीमाता
ोनोंरोते व चिन्ताकरते आपसमें कहतेहैं कि हमलोगोंनेअपने
ांचबर्षकेबालकको जो कुछज्ञाननहींरखता तपकरनेका उपदे
ादेकर बनमेंभेजदिया न मालूमवहबेचाराकहांगया व उसकी
्यागतिहुईहोगी बड़े २ योगीश्वर व ज्ञानियोंको परमेश्वरका
मिलना कठिनहै उसबालकअज्ञानको भगवान् किसतरह मि
लेंगे व राजा अपनीछोटीरानीपर क्रोधकरकेकहतेथे कि तैंने क
ठोरवचनकहकर मेरेबेटेकोबनबासदिया जैसेनारदजीवहांपहुँचे
वैसे राजानेदण्डवत्करके बड़ेसम्मानसे उनको बैठालकरपूछा
कि महाराजआप कहांसेआतेहैं नारदमुनिनेकहा हमअपनाहा
पीछेसेकहेंगे परइससमयतुमको बहुतउदासीन व चिन्तामें दे
खतेहैं इसकाकारणकहो राजाबोले हे मुनिनाथ मेरीछोटीरानी
ध्रुव मेरेबेटेको जो अज्ञानबालकथा ऐसीलगनी बातकही कि
वह दुःखितहोकर न जानें कहांनिकलगया सो हम उसीकेशोक
में व्याकुल हैं न मालूम उसबालककी क्या दशाहुईहोगी कोई
शेर वाभालू आदिक उसेखालेगा मुझसेबड़ीभूलहुई जो स्त्रीके
वशहोकर उसकानिरादरकिया यहबातसुनकर नारदजी बोले हे
राजा तुमचित्तअपना उदासमतकरो तुम्हाराबेटा मुझेराहमें मि
लाथा सोमैंने बहुतउसकोकहा व समझाया कि तू अपने घरमेरे
साथफिरचल परन्तुउसनेनहींमाना जबमैंनेदेखाकि परमेश्वरके
जप व स्मरणमें इसकासच्चाप्रेमहै तबहमनेउसको नारायणजीके
मिलनेकाउपाय बतलाकर मथुराकीतरफ़भेजदिया उसकीअब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम कुछचिन्तामतकरो वहऐसीपदवीको पहुँचेगा कि आज
तुम्हारे पुरुषोंकोभी नहींप्राप्तहुईहै और ध्रुवनेनारायणजीकी
रणपकड़ी अबउसको कोईनहींदुःखदेसक्ता और तुमनेअपनी
ज्ञानतासे स्त्रीकेवशहोकर पुत्रकानिरादरकिया नारदजीयह
कहकर ब्रह्मलोककोगये व राजाकोनारदमुनिके कहनेसे धीर
आ परमनइसका ध्रुवकीतरफ़ लगारहकर राज्यकाजमेंनहीं
ताथा और ध्रुवमथुरामेंजाकर यमुनाकिनारे कुशकेआसनप
ठा व नारदजीकी आज्ञानुसार परमेश्वरका तप व ध्यानकरने
गा आदिमें ध्रुवतीसरेदिन एकसमयभोजनकरताथा एकमहि
इसतरह नियमरखकर उसकेउपरांत सातवेंदिन थोड़ासाखाने
गाफिर तीनमहीनेतक वृक्षकीपत्तीखाकररहा चौथेमहीनेमेंपत्ते
खानाभी त्यागकरके पानीपीकरबिताथा पांचवेंमहीनेमें पानी
पीनाभी छोड़कर जितनीहवा मुंहमेंजातीथी उसीकेआहार
रहा व पांचमहीनेतक एकपैरसेखड़ेहुयेउसी मंत्रकोजपकरध्य
नारायणजीके स्वरूपकाकिया सोशरीर ध्रुवकालकड़ीकेसम
सूखगया परन्तुमुखारविंद उसका सूर्यकीतरह चमकनेलगा
महीने ध्रुवबीचध्यानपरमेश्वरके मुंहबन्दकरके ऐसालवली
आ कि अन्तःकरणउसकाश्यामसुन्दरके स्वरूपसेभरकरश्व
लेनेकी जगहभी नहींरही जबध्रुवनइसतरहतपकरके अपनी
सको रोकलिया तबतीनोंलोकमें चलनाहवाकाबन्दहोगया
पवननचलनेसेसबजीव दुःखीहुये तबब्रह्मानेसबदेवतोंसमेत
रायणजीके पासजाकर विनयकिया हे त्रिलोकीनाथ हवा

होनेका
नामत्थ
हमजा
मैत्रेय
उपरान
सवारह
अपनी
यणजी
बश्य
हरर
देख
मूर्त्तिक
ति मेरे
करदर
तिनाज
ब्रह्मा
क कि
ड़े पर
नेलग
है जा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होनेकाक्या कारणहै श्यामसुन्दरबोले कि ध्रुवनेअपनेतपकी सामर्थ्यसे पवनको बांध लिया इसलियेयहदशाहुईहै सो अब हमजाक ध्रुवकाअपना दर्शनदेकर हवाकोछाड़देतेहैं ॥

दशवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरका ध्रुवको नारायणरूप धारणकरके दर्शन देना ॥

मैत्रेयजीने कहा हे विदुर भगवान्जी यहबातदेवतोंकेकहने उपरान्त जिसस्वरूपकाध्यान ध्रुवकरताथा उसीरूपसे गरुड़पर सवारहोकर ध्रुवकेसम्मुखजाके क्षणभरखड़ेरहे परउससमय ध्रुव अपनाआंखबन्दकिये परमेश्वरकेध्यानमेंऐसालीनथा कि नारायणजीके आनेकाहाल न जानकरउसनेआंखअपनीनहींखोली तबश्यामसुन्दरने स्वरूपअपना ध्रुवकेअन्तःकरण व ध्यानमेंसे हरखींचलिया तो जबध्रुवनेपरमेश्वरकास्वरूप अपनेहृदयमें न देखा तबघबराकर आखखोलदिया तो क्यादेखपड़ा कि जिस मूर्त्तिकाध्यान मैं करताथा वहीस्वरूप सांवलीसूरति मोहनीमूरति मेरेसामनेखड़ीहै तबध्रुवने उसपरब्रह्मपरमेश्वरकीपरिक्रमाले करदण्डवत्किया व उनकेचरणोंपरशिररखकरचाहताथा किस्तु तिनारायणजीकीकरै फिरउसनेऐसाविचारा कि जिनकीमहिमा ब्रह्मा व शेषनाग व गणेशजी वर्णननहींकरसके मैं अज्ञानबाल क किसतरहउनकीस्तुतिकरूं इसीविचारमेंध्रुव चुपचापहाथजो ड़े परमेश्वरकेसामनेखड़ारहा व मुखारविन्दउनकाबड़ेप्रेमसेदेख नेलगा तबनारायणजीनेजाना अभीतकध्रुवको इतनाज्ञाननहीं है जो मेरीस्तुतिकरसकै यहविचारकर त्रिलोकीनाथने कृपा व द

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याकीराहसे जबशंखअपना ध्रुवकेमुख व कपोलोंमें छुआ दि
उसकेछुआतेही ध्रुवकेहृदयमें ज्ञान व बुद्धिकाप्रकाशहोकर
को सबविद्यायादहोगई तबध्रुवनेहाथजोड़करविनयकिया हे
नानाथ जबतकतुम्हारीकृपा व दया न हो तबतककोई आपके
रणोंकादर्शननहींपानेसक्ता ब्रह्मादिकदेवतोंकोभी ऐसीसामर्थ
नहींहै जो आपकागुणवर्णनकरसकैं और आपस्तुतिकरनेकी
छइच्छानरखकर अपनीमायासे उत्पत्ति व पालन व नाश ती
लोककाकरतेहैं और सबजीवब्रह्मासेलेकर चिउँटीतक तीनों
कमेंतुम्हारीमायासेउत्पन्नहुये परसबकेमालिक परब्रह्मपरमे
रत्रिलोकीनाथआपहैं ब्रह्माभीतुम्हारेभेदको नहींपहुंचसके
कुछस्तुतिआपकी वर्णनकरसकैं और संसारमें स्त्री व पुत्रकामोह
बबूररूपीवृक्ष व तुम्हारेचरणोंकीभक्ति कल्पतरुकेसमान समझ
नीचाहिये जिससेमनुष्यकीकामनासबपूर्णहोतीहैं और मैं मा
वपितासेदुःखितहोकरअपनेअर्थकेवास्ते तुम्हारीशरणआया
सोआपनेदयालुहोकर अपनेदर्शनसे मुझेकृतार्थकिया बड़ा
ग्यउनलोगोंकाहै जो निष्कामआपकातप व जपकरतेहैं व वि
दयाआपके किसीकोज्ञाननहींप्राप्तहोता जबइसप्रकारसे ध्रुवने
हुतस्तुतिनारायणजीकीकरी तबश्यामसुन्दर बोले हे ध्रुवहम
झसेबहुतप्रसन्नहुये कुछवरदानमांग यहबातसुनकर ध्रुव बोले
हे दीनदयाल जबतुम्हारेचरणोंकादर्शन मैंनेकिया तबदूसरी
नइच्छामुझेमांगनेकी बाक़ीरही केवलआपकेचरणोंमेंभक्ति
प्रेमचाहताहूं यहबचनसुनकर नारायणजीअन्तर्य्यामीनेकहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ध्रुव तैंनेराजगद्दीमिलनेवास्ते मेरातपकिया सो हमनेतुझको रा
जासिंहासनादिया अबतूमेरीआज्ञासे अपनेनगरमेंजा व जिसनेतु
झकोतानामाराथा उसकेसामने छत्तीसहज़ारवर्ष राज्यकर जो
तुझेअभागीकहतीथीवह और उत्तमबेटा जिसकेपासतुझे राजा
ने गोदमेंनहींबैठालाथा तेरीसेवाकरेगा व तेराबापतुझेराजगद्दीप
बैठालकरतपकरनेकेवास्ते बनमेंचलाजावैगा व उत्तम तेरेभाई
कोशिकारखेलनेकेसमय बनमेंएकयक्षकुवेरदेवताकानौकर मा
रडालैगा उसीचिन्तामें उत्तमकीमाताभी बनमेंजलकरमरजावै
रमेगी व जबतू शरीरत्यागकरेगा तबहमब्रह्मलोकसे भी ऊँचेध्रुवलो
कमेंतुझेरहनेकेवास्तेस्थानदेवेंगे वहांतूमहाप्रलयतक स्थिररहैगा
चन्द्रमा व सूर्य्य व सबतारागण तेरीपरिक्रमाकियाकरैंगे व म
प्रलयकेअन्तमेंतेरीमुक्तिहोगी व मेरेभक्तोंकी कोईबराबरीनहीं
करसक्ता व उनकीकोईइच्छाबाक़ीनहींरहती औरतुमसदाहमारी
कथासुनकर पिछलेधर्मात्माराजाओंकाहालजानना जिससमय
भगवान्जीने यहवरदानध्रुवकोदिया उससमयदेवतालोगोंनेप्रस
न्नहोकरनारायणजी व ध्रुवकेऊपरफूलबरसाये व बड़ाईभाग्यध्रुव
कीकिया जबनारायणजी यहवरदानदेकर ब्रह्मलोककोसिधारे
तबफिर हवाचलनेलगी व तीनोंलोकके जीवोंनेपवनबहनेसेसुख
पाया व ध्रुववहांसे घरकोचलापर राहमेंयहचिन्ता व विचारकर
ताजाता था कि देखोमुझसे बड़ीभूलहुई जो नारायणजीका द
र्शनपाकर फिर मैंने राजगद्दीअङ्गीकार किया मुझेऐसा मालूम
होताहै कि देवतोंनेभुलावादेकर मेराज्ञान हरलिया जिसमें यह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिरक्तहोकर नारायणजीकेशरणमेंनरहै यापितरोंनेयहीबात
झाहो किसवास्ते कि यहवचन संसारमेंप्रसिद्धहै कि जबकोई
ष्यबीचध्यान परमेश्वरकेलीनहोताहै तबइन्द्रादिकदेवताउ
भजन व स्मरणमेंविघ्नडालतेहैं इसीतरहचिन्ताकरता हुआ
अपनेनगरके निकटपहुँचकर एकबाग़मेंठहरासो वहांकेमाल
जाकरराजासेकहा राजाउसकेकहनेकाविश्वास न करकेबोले
ध्रुवघरसेबहुतउदासहोकर परमेश्वरकातपकरनेकेवास्ते निक
था किसतरहआयाहोगा उसीसमयनारदजीने वहांआकरक
राजन् ध्रुवतुम्हाराबेटा नारायणजीकादर्शनपाकर अपनेमनो
कोपहुँचआया सोतुम्हैंयहां बैठेरहनाउचितनहींहै चलोउस
आदरभावसेलेआवैं नारदमुनिकेकहनेसे राजाकोविश्वासहोके
बड़ाआनन्द प्राप्तहुआसोराजाने एकहाररत्नकामालीको देकभी
सीसमय उत्तमअपनेबेटा व दोनोंरानी व नारदजीसमेत बाग़में
नेकीतय्यारीकी व बाजनखुशीकेबजातेहुये बड़ेधूमधामसे ध्रु
पासचलेजब नगरकेलोगोंनेसुना किध्रुव परमेश्वरसे मिलआ
उसकादर्शन करनाबड़ा पुण्यहै तबउसनगरके स्त्री व पुरुषछो
बड़ेअपनी २ तय्यारीकरकेगाते व बजातेवास्ते करनेदर्शन ध्रुव
केगये जबसबकोई वहांपहुंचे तबउन्होंने सवारीपरसे उतरकर
जीका दर्शनजो अपनेशरीर व शिरकेबालोंमेंराख व धूरलगा
व जटाबढ़ाये बैठेथेकिया जबध्रुवने उनलोगोंको देखातब ना
जी व राजाकेचरणोंपर गिरकेदण्डवत् किया व राजानेबड़ेप्रे
ध्रुवकोगोदमेंउठाकरछातीसेलगाया व अपनेआंसूसेउसकेमुंह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ओंकाहाल मैंनेतुमसे वर्णनकिया अब उनकेबेटोंका समाचारक
हताहूं सुनो स्वायम्भुवमनुके दोबेटे उत्तानपाद व प्रियव्रत उत्प
न्नहुये सो प्रियव्रतकी सन्तानकीकथा पांचवें स्कन्धमें आवेगी
व उत्तानपादके पुत्रोंकाहाल इसतरहपरहै कि स्वायम्भुवमनुके
तनुत्यागकरनेउपरांत उत्तानपाद उनकाबेटा राजाहुआ कदाचि
त् कोईइसबातका सन्देहकरै कि स्वायम्भुवमनुके राजगद्दीपर
प्रियव्रतने राज्यकिया उत्तानपाद किसतरह राजाहुआ सोहाल
उसका इसतरहपरहै कि प्रियव्रतराजा स्वायम्भुवमनुकी निजरा
जगद्दीपरबैठ उत्तानपाद उन्हींकेदेशमें दूसरेनगरका राजाहुआ
था और उसके दोस्त्री सुनीति व सुरुचिनामथीं सो राजाकोदोनों
स्त्रीसे सन्तान उत्पन्नहोकर बड़ीरानीके बेटेकानाम ध्रुव व छोटी
रानीके पुत्रकानाम उत्तमथा सो राजा छोटीरानी व उसकेबेटेसे
बहुतप्रीति व बड़ीरानी व उसकेपुत्रसे कमप्रेमरखतेथे एकदिन
राजा अपनी छोटीरानीसमेत राजसिंहासनपर बैठेहुये उत्तम उ
सके बेटेको गोदमें लिये प्यारकरतेथे उसीसमयध्रुव बेटा बड़ीरा
नीका जो पांचवर्षका खेलताहुआ वहांपरपहुंचा व उसने चा
हा कि हमभीराजाकी गोदमें जाके उत्तम अपने भाईके बरा
बरबैठें सोराजानेध्रुवकी मातापर कमप्रीतिरखने व छोटीरानी
केडरसे किवह उससमय वहांबैठीथी ध्रुवको अपने पासनहीं बै
ठाला यहदेखकर छोटीरानीनेध्रुवसेकहा कितैंने पिछले जन्म
तप व स्मरणानारायणजीका नहींकिया इसलिये तूअभागी उ
त्पन्नहुआ कदाचित् तूपहिले जन्ममें तपकरता तो मेरेपेटसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहींचाहतीहौं यहवचन सुनतेहीपार्वतीने हँसकरकहा हे मुनि
थमनएकहै दोचारनहींहोते सो एकचित्तमेरा शिवजीकेचर
मेंजालगा वहांसेवह निकलनहींसक्ता जो दूसरेकीतरफ़ लग
मेरीइच्छा शिवजीपूर्णकरैंगे दूसरेकी चाहनामुझको नहींहै
बातसुनकर नारदजीबहुत प्रसन्नहुये व पार्वतीको आशीर्वा
कर बोलेतुम्हैं महादेवजीअवश्य मिलैंगे तुमकिसीकेकहने
लावादेनेमें मतआना जबनारदजीने सच्चीप्रीति पार्वतीकी
तबउसीसमय शिवजीकेपास जाकरपार्वतीका मनोरथ व
र्णनकिया जबमहादेवजीने सुना कि सती हिमाचलपर्वतके
जन्मलेकर मेरेसाथ बिवाहहोनेवास्ते तपकरतीहैं तबउन्हैं भी
ति उसकीदशगुणी अधिकहुई इसलिये महादेवने हिमाचल
जाकरकहा तू अपनीकन्याका बिवाहहमारेसाथकरदे हिमाच
नेयहबात सुनतेहीबड़ी प्रसन्नतासेमानलिया व यहसंदेशा
तीको जहांपर बैठीतपकरतीथीं जाकरकहा यहबात सुनतेही
र्वतीजी बहुतप्रसन्नहुईं उसीसमय हिमाचलने पार्वतीको
लाकरविधिपूर्वक शिवजीकेसाथ बिवाहकरदिया व बहुतसे
दिक व वस्तुदहेज़में देकरवर व कन्याको बिदाकिया तबसे
तीजी एकक्षण महादेवजी से अलग न होकर उनकी अर्द्धा
बनी रहती हैं ॥

नवांअध्याय ॥

उत्तानपादके बेटे ध्रुवजीका तपकरने वास्ते बनमें निकल जाना ॥

मैत्रेयजी बोले हे विदुर राजास्वायम्भुवमनुकी तीनों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लियाजबवह सयानीहुई तब हिमाचलने अपनी कन्यासे पूछा
कि तेराबिवाह किसकेसाथकरूं पार्वतीको अपनेपिछले जन्म
का हालयादथा इसलिये पार्व्वती हिमाचल से बोली कि मेरा
बिवाह महादेवजीके साथ करदेव उसनेकहा शिवजी सबदेवतों
के मालिकहोकर मेरीकन्या किसतरह अङ्गीकार करेंगे तब पा
र्वतीनेउत्तरदिया किसिवायमहादेवजीके दूसरेसे मैं बिवाहनहीं
करूंगी वहमुझे अङ्गीकारकरैं तो मेरेपतिहोवैं नहींतो बनमेंजा
कर तपकरके यहतनु अपना फिरछोड़दूंगी ऐसाकहके पार्वतीने
इसइच्छासे कि महादेवजीकेसाथ मेराबिवाहहो बनमेंजाकरतप
करना आरम्भकिया सो एकदिन नारदजीने पार्वतीके प्रीतिकी
रीक्षा लेनेवास्ते वहांजाकरपूछा हे पर्वतराजकीकन्या तुमइस
में किसइच्छासे तपकरकेइतना दुःखउठातीहो पार्वतीने ना
दजीको परमेश्वरका परमभक्तजानकर दण्डवत्करके विनय
किया हे मुनिनाथ मैं महादेवजीसे बिवाहहोनेवास्ते इच्छारख
कर तपकरतीहूं यहवचनसुनकर नारदजीबोले हे पार्वती तुमब
ड़ीबौरही व मूर्खहो शिवजीअपनेशरीरमें राख व धूरलगाये साँ
प व बिच्छू लपेटेमुण्डोंकीमालागलेमेंडालेहुये भूत व पिशाच
अपनेसाथमें रखतेहैं व उनकोदेखकर मनुष्यमारेडरके भागजा
तेहैं तुमउनसे बिवाहकरनेकीचाहना क्योंकरतीहो यहबातसुन
कर पार्वतीनेकहा वह कैसेही अवगुणोंमें भरेहों परमेराचित्त उ
न्हींसे प्रसन्नहै ऐसासुनकर फिर नारदजीबोले कि हेपार्वतीइन्द्र
व गन्धर्व व कुवेर व वरुणआदिकअच्छे२ देवतोंकोतुमाकिसवास्ते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की तबयज्ञपुरुषने दक्षसेकहा तुझसेबहुत अनुचित हुआजो
देवजीकाअपमानकिया सुनोब्रह्मा व विष्णुव महादेवतीनोंदे
को तुमएकसा जानोनाम जिसपुरुष निरंकारज्योतिका लोग
करअपनामालिक व उत्पन्नकरनेवाला जानतेहैं उसीकेध्या
तुमभीलीनरहो तबतुमकोज्ञानप्राप्तहोगा जिससमययहबात
पुरुषनेकहा उससमय आकाशसे उनपरफूलोंकी वर्षाहुई व
लोगोंने जयजयकारकिया तब यज्ञपुरुष सबकिसीको इच्छ
र्वकवरदान देकरवैकुण्ठको पधारे व ब्रह्मादिकदेवता व ऋषि
रभीअपने २ स्थानकोगये व प्रजापति उसदिनसे शिवजीको
पनाईश्वर जानकर उनकीसेवा करनेलगे इतनीकथा सुनाकर
त्रेयजीबोले कि हेविदुरधर्मकी मरिष्यानाम स्त्रीसेक्रोध व लो
व मृत्युआदिक बहुतसेलोग उत्पन्नहुये थे उनकानाम संस
भागवतमें लिखाहै कि जो कोईइस अध्यायको चित्तलगा
कहै व सुनैवह सबपापोंसे छूटकर परमपदको पावेगा॥

आठवां अध्याय॥

सतीका हिमाचल के यहां पार्वती नामसे जन्म लेना व उनका महादेवजी के साथ विवाह होना।

मैत्रेय ऋषीश्वरने कहाहेविदुर अबहम सतीजीकी कथा
सतरहदूसरा जन्मपार्वतीका लेकरमहादेवजीको मिलीथींवह
करतेहैं सुनोसतीने तनुछोड़ती समयमहादेवजीके चरणोंका
न हृदयमेंरखकर ऐसाप्रण कियाथा कि अबफिर मेराजन्महो
शिवजीकी सेवामेंरहकर एकक्षण उनकासाथ न छोडूंगीसो
तनुछोड़ने उपरान्त हिमाचलपर्वतके यहांपार्वतीनामसे ज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वर व गन्धर्व्व व किन्नरादिक स्त्री व पुरुषदक्षकेयहां नेवताकरने
आयेथे वहलोगभी यहमहिमा शिवजीकीदेखकर इसीतरह स्तु
तिकरनेलगे जब महादेवजीकी आज्ञासे दक्षप्रजापति फिरयज्ञ
करनेबैठे तबब्रह्मा व महादेव व विष्णुभगवान्ने सबदेवता व ऋ
षीश्वरसमेत उससभामें बैठकर शास्त्रकेअनुसार दक्षसे उसयज्ञ
को फिर आरम्भकराया यज्ञसम्पूर्णहोतेही अग्निकुण्डसे यज्ञ
पुरुषभगवान् चतुर्भुजी मूर्त्तिने बैजयन्तीमाला व कौस्तुभमणि
व फूलोंकेहार गलेमंडाले गरुड़परचढ़े प्रकटहोकर दर्शनदिया
उनकोदेखतेही जितनेछोटेबड़े वहांबैठेथे उठखड़ेहोगये व सबों
ने उसपुरुषको साष्टांगदण्डवत्किया व दक्षप्रजापतिहाथजोड़क
यज्ञभगवान्से बोले कि हे वैकुण्ठनाथ इसयज्ञके आरम्भमें
मुझसे महादेवका अपमानहुआ इसलिये यज्ञमेरा विध्वंसहोग
या अबमेराभाग्य उदयहुआ जो आपनेदर्शनदेकर मुझे कृता
र्थकिया व यज्ञमेरा तुम्हारीकृपासे उसीतरह सम्पूर्णहुआ अब द
याकरके ऐसा वरदानदीजिये कि जिसमेंमुझको फिर दुर्बुद्धि न
व्यापै फिर भृगुऋषीश्वर बोले कि हेदीनानाथ मैंने ब्राह्मण व तप
स्वीहोनेपर भी अपनेक्रोधकोवश्य नहींकिया इसकारण मेरायह
दण्डहुआ दयालुहोकर ऐसाआशीर्वाद दीजियेकि जिसमेंक्रोध
मेराछूटजावे किसवास्ते कि जबतककाम व क्रोध व मोह व लोभ
अपनेआधीन नहींहोते तबतक तुम्हारीभक्ति नहींप्राप्त होतीजब
इसीतरहब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व गन्धर्व्व व लोकपाल व कि
न्नरआदिक सबदेवता व ऋषीश्वरोंने भी बहुतसीस्तुति उनकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सातवां अध्याय ॥

महादेवजी व ब्रह्मादिक देवतों का बीच यज्ञशाला दक्ष प्रजापति के जाना ॥

मैत्रेयजीबोले कि हेविदुर जबकैलासपर्वतसे शिवशंकर ब्रह्माजीं सबदेवता व ऋषीश्वरों को साथलेकर दक्षप्रजापतिकी यज्ञशालामें गये और जो देवताआदिक वीरभद्रके डरसे भाग थे वहभी वहांपरआये तब शिवजीने जिनदेवता व ऋषीश्वर शरीर वीरभद्रके मारपीटकरनेसे घायलहोगयाथा उनकातन पनीकृपादृष्टिसे अच्छाकरदिया व भृगुऋषीश्वरके बालडाढ़ करेकी डाढ़ी लगावनेसे फिरउसीतरह जमगये उससमय ब्रह्म शिवजीसेकहा लोथ दक्षप्रजापतिकी जो पड़ीहै इसकोभी जि नाचाहिये तब महादेवजीबोले शिरदक्षका जो अग्निकुण्डमें लगयावहनहीं तैयारहोसक्ता कहोतो यज्ञकेबकराकाशिर दक्ष धड़से लगाकर उसे जिलादेऊं जबब्रह्माने इसबातको माना शिवजीने बकरेकाशिर दक्षप्रजापतिके धड़सेलगाकरउसे जि दिया व शिवकीकृपासेस्थान यज्ञशालाका फिरज्योंकात्यों हो या व दक्षप्रजापतिने महादेवजीको देखतेही उन्हें दण्डवत्क हाथजोड़कर आधीनताईसे विनयकिया हेमहाप्रभु मैंने आप बड़ाई व महत्त्व न जानकरजैसीकरणी तुम्हारेसाथकी वैसाप पाया व आपअपनीबड़ाई समझकर कृपाकरके यहांआये व मु अपनीप्रभुताईसे फिर जिलाया व मुझअज्ञानका अपराध क्षम कियासचहै कि जिनकोपरमेश्वरनेमहत्त्वदियाहै वहलोगछो मूर्ख मनुष्यकीबातपर ध्याननहींकरते औरजितनेदेवता व ऋ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोईमनुष्य चन्द्रमापरथूके तो वहथूक चन्द्रमापर नहीं पड़ता
उसीथूकनेवालेके मुँहपरागिरताहै वहीहालदक्षका हुआ अबमेरे
विनयकरनेसे दयालुहोकर अपराधदक्षका क्षमा कीजिये व देव
ता व ऋषीश्वर आदिक जो उससभामें थे वीरभद्र तुम्हारेबेटाने
उनकोभी बहुतसा दुःखदिया कितनोंकेपैर तोड़डाले कितनोंकी
आंख फोड़डालीहै सो वहलोगभी आपकेभयसे घबड़ारहेहैंइस
लिये उनको धैर्य्यदेकर ऐसा आशीर्व्वाददीजिये कि जिसमेंघा
यलशरीर उनकाअच्छाहोकर वहलोगज्योंके त्यों होजावें और
दक्षप्रजापति फिर तुम्हारी कृपासेजीकर यज्ञअपना विधिपूर्वक
सम्पूर्णकरै व सबदेवता व ऋषीश्वरलोगभी वहांआनकर अप
ाअपनाभाग यज्ञमेंपावैं व आपभीमेरेसाथ वहांचलिये मैं ना
ायणजीको भी विनयकरके वहांलेआऊंगा और यज्ञकरनेमें
जो साकल्यबचजातीहै वहीसाकल्य आपकाभागहोगा सो आप
अपनापावेंगे यह सबबात ब्रह्माजीकीसुनकर शिवजीनेकहा मैं
किसीसेशत्रुता न रखकर अज्ञानकेकहनेका कुछबुरा नहींमानता
सतीकेप्राणदेनेकाहाल सुनकरमुझे क्रोधआगयाथा सोदक्षप्रजा
पति अपनीकरणीको पहुँचा व सतीकेप्रारब्धमें इसीतरह तनुत्या
गकरना लिखाहोकर जो कुछ परमेश्वरकीइच्छाथी वहबातहुई
अबजो आज्ञादेव सो करूं जो कोई बड़ोंकाकहना नहींमानताव
हपीछेसेदुःख पावता है ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करवहां आईहै स्नानकरके आनन्दहोजाते हैं सो उसीपहाड़
एकवृक्ष बरगदका जो चारसौकोसऊंचा व तीनसौकोस चौड़ा
उसकेनीचे महादेवजी मृगछालापरबैठेहुये जिससमय नारद
नि व सनकादिक अपनेचेलोंसेपरमेश्वरकागुणानुवादकहिरहे
और योग व तप व वेदआदिक अपनाअपना रूपधारणकियेउ
केसामने रहकर कोईऐसीसामर्थ्य नहींरखताथा जो दमभारने
के उसीसमय ब्रह्माजी सबऋषीश्वर व देवताओंसमेत वहांपर
पहुँचे शिवजीने ब्रह्माकोदेखतेहीदण्डवत्करके बड़ेआदरभाव
जबउन्हैं अपनेपासबैठाला तबब्रह्माजी शिवशंकरको नमस्का
करनेउपरान्त उनकेसामने बैठे और देवतादिकजो ब्रह्माकेसा
गयेथे शिवजीकोदण्डवत् करनेउपरान्त यथायोग्यस्थानपर चा
रोंतरफ़ बैठगये महादेवजीमहात्माकेमनमें कुछशोच व दुःखश
नुता दक्षप्रजापति व तनुत्यागकरने सतीकानहींरहाथा इसलिये
वहसबबातको ऊपरइच्छापरमेश्वरके समझकर उससमयहरि
र्चामेंऐसेमग्नथे कि उन्हैं इसबातका कुछध्याननहींहुआ किब्रह्म
जीवास्तेक्षमाकराने अपराधदेवतादिकके आये हैं व वीरभद्रने
षीश्वर व देवतोंकोभी मारपीटकिया है इसवास्ते वहब्रह्माकेआ
नेपरभी सबकिसीसे हरिचरित्रकहतेरहे तबब्रह्माने बहुतसी स्तुति
शिवजीकीकहकरउनसेविनयकिया कि आपसबदेवतोंके मालि
कहैं इसलियेतुम्हारानाम महादेवहुआ सोदक्षने आपकी प्रभुत
ईनहींजानकर जैसातुम्हाराअपमानकिया वैसाफलपायासोउ
के निरादर करनेसे कुछतुम्हारी बड़ाई कमनहींहोगई जिसतर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुत बुराकामकिया जो यज्ञमें बैठकर शिवजीकीनिन्दा अ
पनेकानों से सुनतेरहे व महादेवजी का भागयज्ञमेंसे बन्दकरके
अपना २ अंश तुमलोगोंनेलिया ऐसा अधर्म्मकरना तुम्हें उचि
तनहींथा जैसाअपराध शिवजीकाकिया वैसाफलपाया सुनो म
हादेवजी सबदेवता व तीनोंलोककेजीवोंमेंश्रेष्ठ व परमेश्वरतुल्य
हैं मैंउनका कुछनहींकरसक्ता तुमसबकोई मेरेसाथ उन्हींके शर
णमेंचलोविनती व स्तुतिकरके तुम्हाराअपराध उनसे क्षमाकरा
ऊं यहवचनकहने उपरांतब्रह्माजी सबदेवता व ऋषीश्वरोंको
साथलेकर कैलासपर्व्वतपरगये उसपहाड़पर पत्थरकी जगहला
ल व पन्ना व हीराआदिक अनेकतरहकेमणि व रत्नरहकर वह
पहाड़सोरहसौकोसऊँचा व बारहसौकोसकेघेरमेंहै और वहांबर
द आदिकके बहुतवृक्षलगे रहनेसेधूपकाप्रकाश नहींहोता व
दाठंढीछाया नहींरहतीहै व अनेकरंगके फूलऐसेलगेहैं किजि
सकी सुगन्धकोसोंतक उड़तीहै व अनेकप्रकारके फलबारहों म
हीनेवृक्षोंमें लगेरहकर अमृतसमानस्वाददेतेहैं व वहांपरतालाब
व बावली व नहर व झरनापानीके ऐसेनिर्मलभरेहैं किजिसके
देखनेसे आँखोंमेंतरावटआजावे व तालाब व बावलीकेकिनारे
अच्छे २ पक्षी महासुंदरमीठीबोली बोलनेवाले सारस व तूती व
कोकिला व मोर आदिकबैठेहुये चहचहमचाते हैं वह उसजगह
देवकन्या व गन्धर्वआदिआनकर जिसबस्तुकीइच्छाकरतेहैंसब
मनोरथउनकासिद्धहोकरवहशोभादेखनेसे मनउनकामोहितहो
जाताहै और वहलोगसेतुगंगामें जोधाराहिमाचलपहाड़से उतर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अग्निकुण्डमें डालदिया व भृगुऋषीश्वरकी डाढ़ीनोचडाली
दूसरेदेवता व ऋषीश्वर व गन्धर्व्व व ब्राह्मण व किन्नरआदि
उससभामें थे उन्हैंमारपीट करकेसबका अङ्गभङ्गकरडाला
हांसेलोगोंको बाहरनिकालने उपरान्तस्थान यज्ञशालाका
करसबसाकल्यआदिक सामग्रीयज्ञकीफेंकदीजब शिरकाटने
भी प्राणदक्षप्रजापतिका नहीं निकला तबमारेमूकोंके उसे
डाला उससमयजितने स्त्री व पुरुषदक्षके यहांन्योताकरने
थे सबदुःखित होकरभागे व आपसमेंकहनेलगे देखो दक्षमह
र्खने महादेवजी महात्मापुरुषका जो सबदेवतोंमें श्रेष्ठहैं जैसा
पमानकिया वैसाफलपाया इसीतरह सबछोटेबड़े दुःखपाकर
कोगालियांदेनेलगे व जबवीरभद्रने यज्ञविध्वंसकरने उपरा
शिवजीकेपास आनकरसब हालकहातब भोलानाथने मरना
तीका ऊपरइच्छा परमेश्वरके समझकरक्रोध अपनाक्षमा कि
और वह आनन्दमूर्त्ति फिर प्रसन्नचित्त बैठकरअपने चेलों
ज्ञान सिखलानेलगे विष्णुभगवान् व ब्रह्माजी अन्तर्य्यामी
लेसे यज्ञविध्वंस होनेकाहाल जानकरवहां नहींगये थे॥

छठवां अध्याय॥

भृगु आदि ऋषीश्वर व देवतोंका ब्रह्माजीके पासजाना व वीरभद्रका हाल कहना॥

मैत्रेय ऋषीश्वरनेकहा हे विदुर जबवीरभद्रने भृगु व देव
आदिकको मारपीटकरके यज्ञशाला से बाहरनिकालदिया
सब किसीने रोतेहुये ब्रह्माजीके पासजाकर अपनाअपनाह
उनसेकहा ब्रह्माजी उनकावृत्तान्त सुनकरबोले कि तुमलोग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हादेवजीकेगणोंकोधक्कादेकरयज्ञशालासेबाहरनिकालदिया॥

पांचवां अध्याय॥

नारदमुनिका महादेवजीके पासआना व सतीजीके तनुत्याग करने व गणोंके निकाले जानेका हाल कहना॥

मैत्रेयजीनेविदुरसेकहा कि जिससमयसतीजीने अपनातनु यागकिया व महादेवजीकेगण उससभासे निकालेगये उसीसम नारदमुनि यहसबहाल देखतेहुये शिवजीके पासकैलासपर्व्वत रपहुँचे शिवशंकरने नारदमुनिको देखतेहीदण्डवत् करने उप न्तबड़ेआदरसे बैठालकर पूंछाकहो मुनिनाथ कहांसे आतेहो ारदजी बोले कि महाराजआपको यहबातमालूमहै या नहींआ सतीने बीचयज्ञ दक्षप्रजापतिके तुम्हारीनिन्दा सुननेसेतनु अ नाछोड़दिया व भृगुऋषीश्वरके मन्त्रपढ़नेसे आपकेगणलोग निरादरहोकर उससभासे निकालेगये इसकाकुछउपाय कर चाहिये ऐसाकहकर नारदमुनि चलेगये व शिवजीनेसती का रनासुनतेही क्रोधवन्तहोकर अपनीजटाके बालनोचने उपरा तजैसे पृथ्वीपर पटकावैसे एकमनुष्यवीरभद्रनाम महाबलीउस नटासेउत्पन्न होकरहाथ जोड़केबोला मुझेजो आज्ञाहोसोकरूं शिवजीने उसेदेखतेही कहा तू अभीबहुतजल्द बीचयज्ञ दक्षप्र जापति के चलाजा व शिर उसकाकाटने उपरान्तअग्निकुण्डमें डालकर जो लोग उससभामें बैठेहोंउन्हैं वहांसेबाहर निकालदे यहवचन सुनतेहीवीरभद्र जिसकाशरीर पहाड़केसमान बड़ाथा त्रिशूलबाँधेहुये सेनाभूत व प्रेतकीसाथ लेकरवहांसेचला वक्षण रमें बीचयज्ञशालाके पहुँचा व शिरदक्षप्रजापतिका काटकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मझेउनके साथबैररखतेहो महात्मालोग गुणकोलेतेहैं अव
कीतरफ नहींदेखते व शिवजीसबगुणोंसे भरेहुये केवलजग
लोगोंको दिखलानेवास्ते अपनारूप भयानकबनाये रहतेहैं
कोतुमनेदेखा वउनकेगुणोंको नहींजानासनकादिकव नार
उनकेचरणोंका ध्यानअपनेहृदयमेंरखतेहैं तुम्हारीपदवीए
हींहै जोउनसेबराबरीकरनेसको तुमउन्हैंजोतीनोंलोककेजी
श्रेष्ठहैं बीचसभाके बैठेहुये दुर्व्वचनकहकर उनकाअनादर
हो ऐसानचाहिये और तुम्हैंक्याकहूं तुममेरेपिताहो परमैंतु
आगेइसीक्रोधमें यहतनुअपना जोतुमसे उत्पन्नहुआथा त
देतीहूं जिसमें तुम्हारेऐसे अधर्मी व अज्ञानकेसाथ शिवजीक
तानरहै तुम्हैंपीछेसे उनकेसाथ व्यर्थशत्रुताई करनेकाहालम
महोगाऐसावचनकहनेउपरान्त सतीनेउसीजगह उत्तरमुँह बै
र तनुअपना योगाभ्यासके अग्निसे जलादिया जबशिवजी
णोंने जो साथमेंआयेथे यहहाल सतीकादेखा तब क्रोधकर
पने २शस्त्रलेकरचाहा कि जो लोगयहांहैं उन्हैं मारपीटकर
ज्ञ दक्षप्रजापतिका विध्वंसकरडालें उससमय भृगुऋषीश्
जो उससभामें बैठेथे उनगणोंकी इच्छा जानकर यज्ञकीरक्ष
रनेवास्ते जैसे कुछमन्त्रपढ़के अग्निकुण्डमें आहुतिडाल
अग्निपुरुष व बैताल व वीरभद्रतीनजने उसकुण्डसे निकल
बोले कि हे ऋषीश्वर महाराज जो आज्ञाहो सो पालनक
भृगुऋषीश्वरनेकहा कि महादेवकेगण यहयज्ञ भ्रष्टकरने
हैं सोतुमलोग उन्हैं बाहरनिकालदो यहबातसुनतेही उनत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजाउत्तानपाद का अपनी बड़ीरानी के पुत्र ध्रुवजी को गोद में न बैठा लेना व ध्रुवजी का उदासीन होतपकरने के लिये वन-जाना और श्रीभगवान का संतुष्टहो वरदेना व ध्रुवजी को राज तिलक होना ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

चित्रन-५ सुखसागर चतुर्थ स्कन्ध पृष्ठ २५८

दक्षयज्ञ में सतीजी का कोप करके भस्म होना और श्रीमहादेव जी के गणों को यज्ञविध्वंस करना

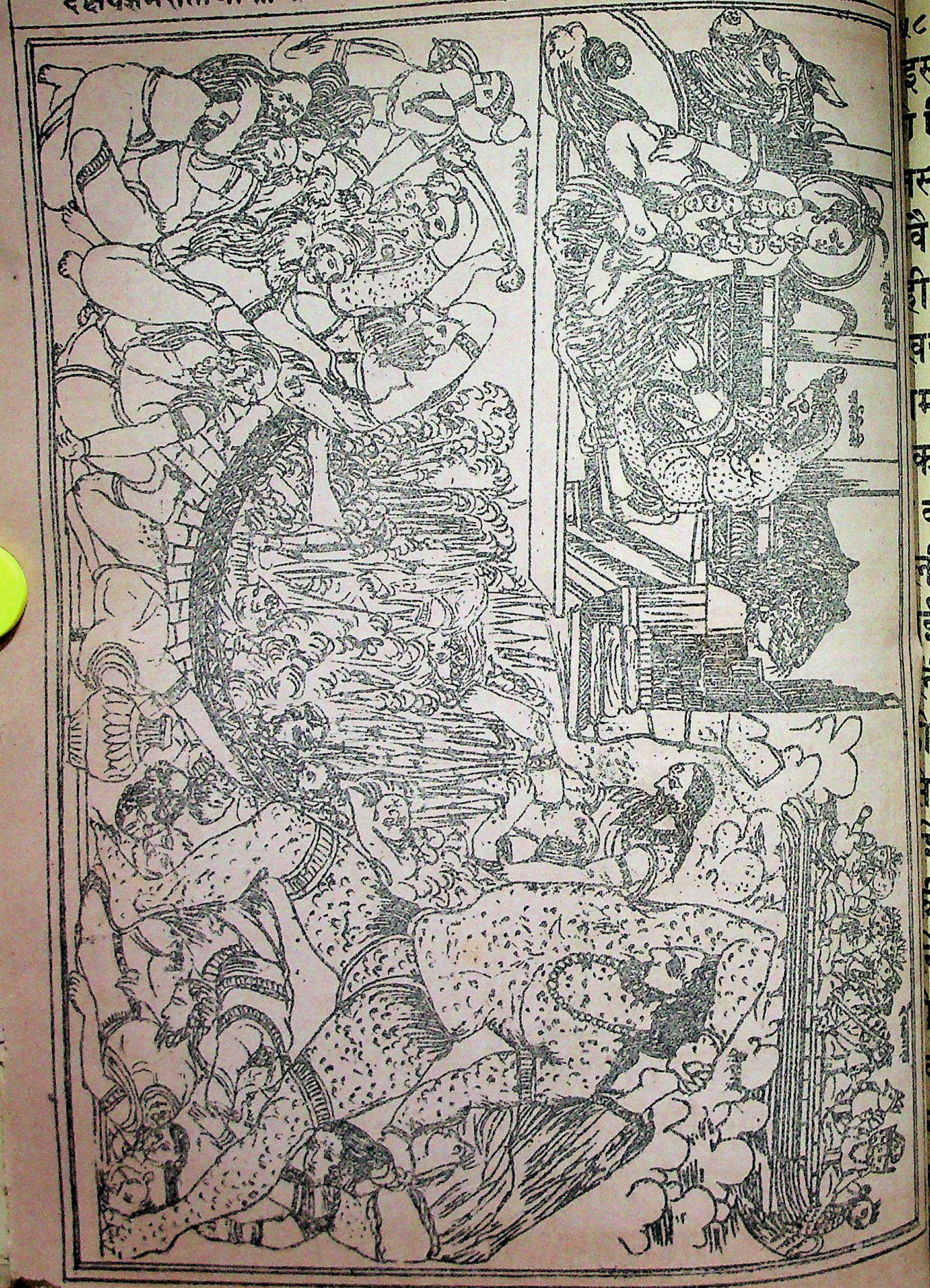

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसविचारसेकरादिये किदेखैं वहांक्यादशाहोतीहै व सतीजीका
खिलौना व पिटारीआदिकथा उसेभी गणोंके साथभेजदिया
समेंसतीकेतनु छोड़नेउपरान्तवहसबवस्तुदेखकरमुझे दुःख न
वै जब सतीबीचयज्ञ दक्षप्रजापतिकेपहुँचीं तबवहसतीको देख
हीमुँहअपना फेरकरकुछउससेनहींबोला यहदशाअपनेबापकी
वकर सती बड़ेशोचसेमनमें कहनेलगी कि देखोमैंने बहुतबुरा
मकिया जो बिनाआज्ञा महादेवजीकेयहांआई जैसाअपनेप
काकहनानहींमाना वैसाफलआंखोंसेदेखा अबकोईऐसाबहा
व कारणहोजावै किजिसमें जल्दीयहांसे फिर शिवजीकेपास
तीजाऊंसिवायमातासतीजीके और सबस्त्रियां जो वहांयज्ञमें
ईथींदक्षप्रजापतिके बुरामाननेसे सतीकेसाथ प्रीतिपूर्वकनहीं
तींसतीयह हालदेख दुःखसागरमें डूबीहुई बीचयज्ञशालाके
थीजब आहुतिदेनेका समयआया और यज्ञकरानेवालोंने द
वास्ते आहुतिदेने महादेवजीके नामपरपूंछातब दक्षप्रजापति
शिवजीको दुर्व्वचनकहकर उसनेकहा हमनेदेवता व ऋषीश्व
की सभामेंमहादेवको शापदियाहै कि कोईयज्ञमें उनकाभाग
नेकालैइसवास्ते तुमलोगमहादेवके नामपर आहुतिमतदेव
जीयहकठोरवचनसुनने व नहींदेखनेभागशिवजीकायज्ञशा
की दक्षिणादिशामें बीचक्रोधके मरगईंजब उनसेवहक्रोध रों
नहींगया तबउन्होंने दक्षसेकहा हे पिता अज्ञान तुमशिवजी
ड़ाई व महिमाको नहींजानते वहसबदेवतोंमें श्रेष्ठहोकर कि
किसाथ शत्रुतानहींरखते तुमव्यर्थ अपनीअज्ञानतासे बिनास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है इसलिये मैंतेरेपिताकेयज्ञमें नहींजाऊंगा जबशिवजीने द देख
नाअंगीकार नहींकिया तबसतीजी विनयपूर्वक फिरबोलीं हीहोक
आपनहींजाते तोमुझकोआज्ञादीजिये मेरेवास्ते अपनेमाता नहींबुल
ताकेघर बिनाबुलायेजानेमें कुछलज्जानहींहै यहवचनसुनमान ह
महादेवजीनेकहा हे सती दक्षप्रजापति अपनेराज्य व धनका ऐस
में गर्वितहोकर मेरीशत्रुतासे तेराभीअपमानकरैगा तबतुमभु मेरे
सादुःख उठावोगी व तेरानिरादर होनेसे मुझेभीक्रोध उत्पन्करनेव
गामेरेजानमें तेराजानाभी किसीतरह उचितनहींहै नारायण भीड़
की इच्छासे सतीने उनकेसमझानेपरभी न मानकरफिरशिवजी कवा
सेकहा मेरेयहां न जानेमें अपनीसाठि बहिनोंके निकटमेराको पित
दरहोकर वहलोग मुझकोताना मारैंगी इसलिये मेरेबिनागये उचि
हींबनपड़ती मुझेआज्ञादेव तौजल्दीजाऊं शिवजीने ऐसावचन बहु
सुनतेही मनमें विचारकिया देखोसतीने आजतककोईकाम हां हो
नाआज्ञामेरी नहींकियाथा आजयहजानेवास्ते ऐसाहठ कपनेस
मेराकहना नहींमानती इससेमुझे मालूमहोताहै इसकेवास लाई
हांजानेमेंअच्छानहोगा होनहारप्रबल होकरपरमेश्वरकीइ दक्ष
में किसीकावश कुछनहींचलता ऐसा विचारकर महादेव बताहै
सतीसेकहा कि तूजान चलीजा तेरीखुशीइसका फल देखै ते ज
करे
हीं वि
जि
है व

चौथा अध्याय॥

सतीका अपने पिताके घरजाना व तनु अपना उसी यज्ञमें त्याग करना॥

मैत्रेयजीबोले हे विदुर जब शिवजीके मनाकरने परभी
ने पिताकेस्थानपरचली तबमहादेवजीने कईगणअपनेउस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द देखनाउचितहै व मेरेनजानेसे देवतादिक की स्त्रियांवहां इक
ट्ठीहोकर आपसमेंकहैंगी क्या भेदहै जो दक्षप्रजापति ने सतीको
नहींबुलाया इसमेंहमारेमाता व पिता की नामधराई व मेराअप
मान होकर मरतीसमयतक इसबातकापछतावा मनमें रहजावे
ऐसाविचारकर सतीने महादेवजीसे विनय किया कि हे महा
भु मेरेपिताके यज्ञमें सबदेवताआदिक अपनी २ स्त्रियांसाथले
रनेवता करनेजाते हैं कदाचित् मेरेमाता व पिताने कामकाज
भीड़में भूलकर आपको व मुझे नहींबुलाया सो मेरावउनका
कबास्ता होकर बिनाबुलाये जानेमें कुछलज्जानहीं है श्वशुर
पिता व गुरुकेसमान जानकर बिनाबुलाये भी उसयज्ञमें जा
उचितहै वहांपर मेरीसब बहिनें अपने २ पतिकेसाथ आवेंगी
के बहुतादिनसे यहइच्छाथी कि कोई कामउत्सवका मेरेबापके
हां होवेतो मैंभी तुम्हारेसाथ वहांजाऊं सो आपदयाकरके मुझे
पनेसाथलियेहुये वहांचलिये सबसेभेंटहोकर परमआनन्दादि
लाईदेगा यहवचनसतीका सुनतेही महादेवजीने सबहालशत्रु
दक्षप्रजापतिका सुनाकरकहा हेसती तेरापिता मुझसे शत्रुता
ताहै कदाचित् वहमुझसे बुरानमानता तोबिनाबुलायेभीहम
ते जोबिनाबुलाये उसकेयहांजाऊं और वहमुझेदेखकर नआ
करे व अपनामुंहफेरलेवे या कोई दुर्वचनकहै तो इसमेंअच्छा
हीं किसवास्ते कि तीर व तलवारके घावमलहमसे भरजाते हैं
जिह्वाका घाव जो किसीके दुर्वचन कहनेसे कलेजेमें पड़जा
है वहकिसीतरह अच्छानहींहोता उसकी औषधमिलनादुर्घट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोई मनुष्यभी उनकाभागयज्ञमें नहीं निकालेगा ऐसाविचार
कर दक्षप्रजापतिने वास्तेबढ़नेतेज व प्रकाश अपने यज्ञकी तै
यारीकरके सबदेवता व दैत्य व ऋषीश्वर व तपस्वी व गन्धर्व व
किन्नरादिक को नेवताभेजदिया॥

तीसराअध्याय॥

सबदेवता व ऋषीश्वर व गन्धर्वादिकका अपने अपने विमानोंपरचढ़कर दक्षप्रजापतिके यज्ञमें
जाना व सतीजीका कैलासपर्वतपरसे देखना॥

मैत्रेयजीबोले हेविदुर जब दक्षप्रजापतिके नेवताभेजने
बदेवता व दैत्य व ऋषीश्वर व मुनि व ब्राह्मण व गन्धर्व वि
रआदि अपनी २ स्त्रियोंसमेत अच्छा २ गहना व कपड़ा पहि
व तैयारी करनेउपरान्त उत्तम२ विमानोंपर सवारहोकर हँस
खेलते व गाते व बजाते उनकेयज्ञमें नेवताकरनेचले तबसती
ने कैलास पर्वतपर महादेवजीके पास बैठीहुई उनकेजानेका
ब्द सुनकर लोगोंसे पूछा कि आजआकाश मार्गमेंभीड़ दिख
ईदेनेका क्याकारणहै यहबात सुनकर महादेवजीके गणबोले
क्षप्रजापति तुम्हारेपिताके यहांयज्ञहै इसलियेसबदेवता व ऋ
श्वरादिक अपनी २ स्त्रियोंसमेत वहांनेवता करनेजातेहैं ऐस
नतेहीसतीजीने मनमेंउदास होकरकहा कि देखोमेरेबापने
नेयज्ञमें और २ लोगोंको नेवताभेजा व मुझे व महादेवजीको
हीं बुलाकर मेराअपमान किया कदाचित् कामकाजके भी
भूलगयेहोंगे सो माता व पिता व गुरु व मित्रकेघर उत्सवहो
बिनाबुलायेभी वहांजाकरकाम व टहलकरनाचाहिये इसमें
अपमान नहींहोता इसलिये वहांजाकर सबसेभेंटकरके वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सावालोंको सुनाकर कहा कि हे दक्षमैं तुझे व सबब्राह्मणोंको शा
देताहूं कि ब्राह्मणलोगवेद व पुराणपढ़नेपरभी अन्त अवस्था
काशोच न रक्खें व अपनीपूजा व पाठ व तप व जपकाफल मनु
योंकेहाथ पैसा व रुपयालेकरबेंचें व बिनाप्रणाम कियेसबको आ
शषदेवें व सबजगह भोजनकरकेधर्म्म व अधर्म्मका विचार न
रैं यहशाप नन्दीगणका सुनकरभृगुऋषीश्वरने जो उससभामें
ठेथे कहा कि हे नन्दीगणतुमने बीचबदले अपराधकरने दक्ष
जापति एक ब्राह्मणकेसब ब्राह्मणों को व्यर्थशाप दिया इस
लिये मैंभी महादेवके भक्त व सेवकोंकोशापदेताहूं कि वहलोग
व्यपीकर परलोकका डरनरक्खें व अपनेशरीरपर राखमलकर
नोंमें बड़ाबड़ाछेद करावें व महादेवजीके समान योगियों का
सबनावें व पूजा व पाठकरनेकाफल उन्हें प्राप्तन होवै जब यह
शापहोचुका तबदक्षप्रजापति अपनेस्थानपरआये व महादेवजी
यहझगड़ा नन्दीगण व भृगुऋषीश्वर का देखतेही नन्दीबैल
रचढ़कर कैलासको चलेगये व समाधिलगाकर परमेश्वरका
ानकरनेलगे व सबदेवता व ऋषीश्वरादिकभी उससभामेंयह
ल देखनेसे उदास व दुःखितहोकर अपने २ घरचलेगये वदक्ष
जापतिने अपनेघर पहुँचकर यहविचारकिया किमैंने देवता व
ह्मणों की सभामें ऐसाशापदिया कि कोईमहादेवका भागयज्ञ
न निकालै परइसबातको पहिलेमुझे आरम्भकरनाचाहिये ज
म अपनेघर यज्ञकरके सबदेवता व ऋषीश्वर व ब्राह्मणों को
ाकरमहादेवकाभागयज्ञमें न देवैंगे तबअधिकअपमानहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उपरांत एकदिन महादेव बहुतसे देवता व ऋषीश्वरोंसमेत
सभायज्ञकरने ब्रह्माजीके बैठेथे उससमय दक्षप्रजापति वहा
आयेसो सबकिसीने उठकरउन्हैं बड़ेआदर से बैठालापरउस
यशिवजीजो अपनीआंख बन्दकियेहुये बीचध्यानपरमेश्व
मग्नथेनहींउठे व उन्होंने दक्षप्रजापतिको दण्डवत्भीनहींकि
इसकारण दक्षनेक्रोधकरकेकहा इनको लोग ज्ञानी व तपस्
सत्यवादीजो कहतेहैं यहबातझूठहोकर इनकानामवृथा देव
महादेवरक्खाहै हमनेभूलकर ब्रह्माजीके कहनेसे अपनीबेटी
बिवाह महादेवसे जो एकलोकपालके तुल्यहैं किया ये इसके
हयोग्य नहींथे मेरीकन्या बिवाहने से देवतोंमें इनकीप्रतिष्ठा
धिकहोकर इन्हें ऐसाअभिमान उत्पन्नहुआ कि मेरे दामाद
करमुझे दण्डवत्भी नहींकरते मैंनेसती कन्या महासुन्दरी
मृगलोचनी इसतरहपर महादेवभूतोंके राजाकोजो दिनरात
शानपर बैठेरहतेहैं बिवाहदिया जिसतरहकोई मनुष्यशूद्रको
पढ़ावैयह दुर्वचनकहने उपरान्तदक्षप्रजापतिने उसीसभामें
होकरब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वरोंके सामने शिवजीको
शापदिया कि आजसेकोईयज्ञमें महादेवकाभाग न निकाले
वजी ऐसाशाप सुननेपरभी कुछउत्तर न देकरउसीतरह चुप
बीचध्यान परमेश्वरके बैठेरहे जबदक्ष ऐसाशाप देकर अप
कोचले तबनन्दीगणने विचाराकि देखोशिवशंकर भोला
हमारेस्वामीको बिनाअपराध इसब्राह्मणने शापदियाहै इस
मैंभी ब्राह्मणको शापदूंगा यहबात विचारके नन्दीगणने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहींदेते व उन्हैंकोई आंखसेदेखने नहींसक्ता परसबकाम जगत् का उनकी आज्ञानुसार होकर हमलोग अपने २ कामपर जि सकावर्णन ऊपर होचुकाहै उनकीओरसे वर्त्तमानहैं जो तुझे इच्छाहो सोहमलोगों से वरदानमांग तुझकोदेवेंगे यहवचन सु नतेही अत्रिमुनिने दण्डवत् करकेउनसे कहा महाराज मैं पुत्र भाग्यवान् व धर्म्मात्मा चाहताहूं तबब्रह्मा व विष्णु व महादेवजी अत्रिमुनिको उनकी इच्छापूर्वकवरदानदेकर अपने २ लोकमेंच लेगये व अत्रिमुनिके यहांदत्तात्रेय विष्णु भगवान्की कृपा व दु र्वासा महादेवके आशीर्वाद व चन्द्रमाब्रह्माकी दयासेतीनों पुत्रों ने जन्मलिया उसमेंदुर्वासा बड़ेक्रोधी आंखखोले उत्पन्नहुयेसो दुर्वासा व चन्द्रमावदत्तात्रेयसे बहुतसन्तानहुई कि उनका नाम संस्कृतभागवतमें लिखाहै इतनीकथा सुनाकर मैत्रेय ऋषीश्वर नेकहा हेविदुर हालसन्तानदूसरी कन्या स्वायम्भुवमनुकी भी जो रुचिप्रजापतिसे बिवाहीगईथी तुमकोसुनाया अबतीसरीबेटी जो दक्षप्रजापतिसे बिवाहीथी उसके सन्तानका हालसुनो दक्षप्र जापतिके उस स्त्रीसे साठलड़की उत्पन्नहोकर उनमेंसतीनामक न्याका बिवाहमहादेवजीसे हुआ था॥

दूसरा अध्याय॥

दक्षप्रजापतिका महादेवजीसे बुरा मानना व महादेवजीको शापदेना॥

विदुरने इतनीकथासुनकर मैत्रेयऋषीश्वरसे पूछा कि महा राज सतीजीने अपनातनु किसतरह त्यागकियाथा उसकाहाल र्णनकीजिये मैत्रेयऋषीश्वरने कहा कि सतीजीका बिवाहहोने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पितदेव भगवान्ने अवतारलिया उसकाहाल मैं वर्णनकरचु
अबदोनों बेटियोंकाहाल सुनो एककन्याका बिवाह दक्षप्रजा
तिसे व दूसरीबेटीका बिवाह रुचिप्रजापतिसे जब स्वायम्भुवम
ने करदिया तब रुचिप्रजापतिके उसकन्यासे आत्रिनामबेटा उ
न्नहुआ व अत्रिसे तीनबेटेहुये इतनीकथा सुनकर विदुरजीने
त्रेय ऋषीश्वरसे कहा महाराज तीनोंबेटा उत्पन्नहोनेका हा
वर्णनकीजिये तब मैत्रेयजीबोले हे विदुर अत्रिने भी ब्रह्मा
की आज्ञासेसंसार उत्पन्नकरने की इच्छारखकर मनमेंऐसा
चार किया कि मेरेपुत्रको भी संसारीजीव उत्पन्न करनाहो
इसवास्तेपहिले परमेश्वरका तपकरकेपीछेसे सन्तानउत्पन्न
जिसमें वह धर्मात्माहोवें ऐसाविचारकर अत्रिमुनिने अनसूय
अपनीस्त्री समेततपकरना आरम्भकिया परनाम किसीदेवता
न लेकरकर्त्ता कहकेतप करतेथेजब सौवर्ष तपकरतेबीतगये त
ब्रह्मा व विष्णु व महादेवजी तीनोंदेवतोंने जायकरअत्रिमुनि
दर्शनदिया सो मुनीश्वरने तीनोंदेवताकी पूजा व स्तुतिकरके
हामहाराज मैंने एकदेवताका तपकिया था आपतीन देवत
किसवास्ते मुझेदर्शनदिया अबमैं अपनीकामना किससे म
यहवचनसुनकर विष्णुने अत्रिमुनिको उत्तरदिया कि तूतपक
समय नामकर्त्ताका लेताथासो हमतीनों मनुष्यकर्त्ताहोकर
एक कामउत्पत्ति व पालन व नाशजगत्का करतेहैं व हमलो
ने आदिज्योति निरंकारकी महिमासे जन्म पायाहै और यह
र्गुण निरंकारकुछरूप व रेखानरखकर किसीको अपना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीमद्भागवतभाषा

चौथा स्कन्ध ॥

सती का बीचयज्ञ दक्षप्रजापतिके तनुत्यागकरना व पार्वती नामसे हिमाचल पर्व्वतके यहां जन्मलेना व ध्रुवभक्त व राजापृथुकी कथा ॥

पहिला अध्याय ॥

अत्रिमुनिका उत्पन्नहोना व तप करना व अत्रिमुनिके यहां चन्द्रमा व दत्तात्रेय व दुर्वासाका जन्मलेना ॥

दो० नरनारायण गिरापति व्यासदेव शुकदेव । बारबार बिनवों तुम्हैं हरो विघ्न बुधि देव ॥

मैत्रेय ऋषीश्वरनेकहा हेविदुर अबहम संसारउत्पन्नहोने का हालकहते हैं सुनो ब्रह्माजीसे मरीचिनामबेटा उत्पन्नहुआ उसकेकश्यप व कलानामदोपुत्र उत्पन्नहोकर उसकेआगे बहुत सन्तानहुई जिनकाहाल छठेस्कन्धमें आवेगा अबमैं स्वायम्भु मनुके सन्तानकाहाल कहताहूं सुनो राजा स्वायम्भुवमनुके दे हूतीआदि तीनकन्या व उत्तानपाद व प्रियव्रतनामदो बेटेहुये ो देवहूतीका बिवाह कर्दमऋषीश्वरसे हुआथा जिनकेयहां क

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूर्वकउनकोपूजा व परिक्रमा व स्तुतिकरनेउपरांत उन्हें बैठने
स्ते आसनदिया सोवहइसवास्ते वहांबैठकरयोगाभ्यासकरने
जिसमें कलियुगवासीलोगों को जो योग व तपकरने नहींस
मेरेदर्शनकरनेसे योगाभ्यासकरनेका फलप्राप्तहोसो वहस्थान
ठने कपिलदेवमुनिका गंगासागरमें कलकत्ते नगरकेपास अ
कवर्त्तमानहै बहुतलोगउनका दर्शनकरनेवास्ते कलकत्तेकी
से वहांजातेहैं व कपिलदेवजीने वहां बैठकर जो शुकनामादि
ऋषीश्वरोंको सांख्ययोगपढ़ाया इतनीकथा सुनाकर शुकदेव
नेकहा हेराजन् जो सांख्ययोगज्ञान कपिलदेवमुनिने देवहूती
वर्णनकियाथा वहीज्ञान मैंनेतुमको सुनाया व तत्त्वसांख्यय
का यहीहै कि आत्माको अविनाशी व अपनेशरीरका नाशस
झकर मनअपना संसारीमायामें न लगावै व मैत्रेयजीने विदुर
कहा मैंने कपिलदेव अवतारकीकथा तुमकोसुनाई जो कोई
को सच्चेमनसे कहै व सुनै वहमनुष्य संसारमें बांछितफलपा
अन्तसमय मुक्तपदवी पावैगा ॥

दो० कर्दमहूते अतिसरस करत जीव अभिमान। तजत न टूटी झोपड़ी कर्दम तज्यो विमान।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नानेउपरान्त मैत्रेय ऋषीश्वरनेकहा हेविदुर यहसबस्तुति देव
हूतीसे सुनकर कपिलदेवजीबोले हेमाता तुमइस सूर्य्यरूपीज्ञा
नको बहुतउत्तमजानकर सदायादरखना व सबकिसीसे मतक
हना जिसतरह सूर्य्यकेप्रकाशसे अन्धकारछूटजाताहै उसीतरह
यहज्ञान यादरखनेसे मनुष्यकी अज्ञानता छूटजावेगी व गुरु व
ब्राह्मण व साधु व वैष्णव व हरिभक्तोंको यहज्ञानसुनाकर अध
र्मी वमूर्ख व चोर व लोभी व मिथ्यावादी व चुगुलसे मतकहना
व जो मनुष्यगुरु औरपरमेश्वरसे विमुखरहकर दूसरेकाउपकार
न माने व गुरुकीबातपर विश्वासनरक्खै उसकोभी यहज्ञानसुना
नानचाहिये अधर्म्मी व मूर्खमनुष्योंको ज्ञान सिखलाना कैसा
होताहै जैसे कोईरसायन सोनाबनानेकी राखपानीमें डालदेवै
यहबात कहकर कपिलदेवजी बोले कि हेमाताअबमैंगङ्गासागर
को जाताहूं तुझेजिसबस्तुकी चाहनाहो सो मांगले यहवचनसुन
कर देवहूतीने विनयकिया कि महाराज जिसके तुम्हारेसदृश त्रि
लोकीनाथ पुत्रउत्पन्नहो उसको फिर किसबस्तुकी इच्छारहेगी
यहवचन अपनीमाताका सुनकर कपिलदेवमुनि पूर्वदिशामें च
लेगये व देवहूतीने मनअपना संसारीमायासे विरक्तकरके विमा
नादिकको उसीजगहछोड़दिया व सरस्वती किनारेबैठकरध्यान
धरणा व स्मरणानाम नारायणजीका अपनेसच्चेमनसे करनेलगी
सो ध्यानकरतेकरते शरीरउसका जलकेसमान बहकर सरस्वती
नदीमें मिलगया व चैतन्यआत्मा मुक्तपदवीपरपहुंचा व जबक
कपिलदेवजी समुद्रकिनारे गंगासागरमें पहुंचे तबसमुद्रने वि

CC-0.In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

युगवासी लोगयहज्ञानसुनकर उसीकेअनुसार करनेसे भवसा
र पार उतरजावैंगे व इसज्ञानके प्रतापसे तुमभी मुक्तपदवी
पहुंचोगी ॥

दो० इसी ज्ञान उपदेशको कहै सुनै चितलाय। भवसागरसे पार ह्वै अन्त मिलैं यदुराय॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

कपिलदेवजीका पूर्व्व दिशा में जाना व देवहूतीका सरस्वती किनारे बैठकर मुक्त होना॥

मैत्रेय ऋषीश्वरनेकहा हेविदुरयह सबज्ञानदेवहूतीनेसुनक
कपिलदेवजीको दण्डवत् करकेबिनतीकी हेदीनानाथतुम्हारे
नउपदेशके प्रतापसेमुझको संसारीमाया व मोहकर्दमजीके
योगका दुःखसब छूटगया व आपऐसे जगत्उत्पन्न करनेवा
त्रिलोकीनाथ नारायणने मेरेगर्भमें बासकिया इसलियेमेरा
ज्ञानछूटकर अबमुझेगृहस्थीकी इच्छानहींरही महाप्रलयहो
केसमयब्रह्मादिक देवतातुम्हारी मायामेंसमाकर नाशहोजातें
औ वहमायातुम्हारेरूपमें मिलकररहतीहै व आपअविनाशी
रुषबालकरूप अंगूठेप्रमाण होकरअकेले बरगदके पत्तेपर
समुद्रमें शयनकरतेहौ व अवतार धारणकरना तुम्हारा के
अपनीइच्छासे है आप जिससमय जैसारूपचाहैं वैसा स्वरू
रण करलेनेसक्तेहैं जिसतरह पहिले आपनेवाराह व मत्स्य व
च्छप व नृसिंह व बामनादिक अवतार अपनीइच्छासे धारण
ये व अपनास्वरूप व लीला हरिभक्तोंको दिखलाने व सुख
उपरांतवैकुण्ठको चलेगयेथे उसीतरह अबभी तुमनेकृपा व
करकेमेरे गर्भसेउत्पन्न होकर मुझेज्ञान सिखलाया व ज्ञा
पी औषधदेकर संसाररूपी भारीरोगमेरा छुडाया इतनीक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैकर्मकरकेबुरेकामोंसे न्यारारहैदूसरेजोकोईपरमेश्वरकीपूजा व स्मरणासाथप्रेमकेकरै तीसरेजो मनुष्यपरमेश्वरकाचमत्कार सब जीवोंमें एकसादेखकर किसीके साथशत्रुता न रक्खैतोवह लोग भी मुक्तपदवीको पहुँचतेहैं जिसतरह ऊखकेरससे मिश्री व शक्कर व गुड़बनकर जड़तीनोंकीऊखहै उसीतरहभक्ति व पूजा व योगा दिकके पृथक्पृथक् राहहोकरठिकानापहुँचनेसब राहोंकानाराय णजीकेचरणहैं सोहेमाता गृहस्थ या ब्रह्मचारी या बानप्रस्थया संन्यासी या योगी या यतीकोईहो जिन्हेंपरमेश्वरकेचरणोंमेंप्री तिहै वहमुक्तिकोपहुँचतेहैं व जोमनुष्यपरमेश्वरसेप्रेमनहींरखता इसको पिछलेजन्मोंकापाप उदयजाननाचाहिये कि अमृतछो कर खारापानी समुद्रकापीके उसमेंमीठास्वाद ढूंढ़ताहै जिसत शूकरको घी व चीनी खिलाओ तो उसेअच्छानहीं मालूमहो र बिष्ठाप्यारालगताहै उसीतरहजिसजगह परमेश्वरकीकथा व र्त्तन हरिभक्तलोगकहतेहैं उसजगहसे वह अधर्मीउठकरजहां ग व रङ्ग व चुगुली व कुकर्मकरनेवालोंकी संगतिरहती है वहां ानन्दसे मनलगाकर बैठताहै ॥

दो० तुलसी पिछले पापसे हरिचर्चा न स्वहाय। जैसे ज्वरके जोरमें भोजनकी रुचिजाय ॥

सो हेमाता मेरेचरणोंमें प्रीतिकरनेवालेका चित्त संसारकेबुरे मोंसे जल्दी विरक्तहोकर उसेअपनाभला व बुरा दिखलाई दे है और मैंने यहसबज्ञान जो तुमसेकहा इसकोअच्छीतरहयाद करकर कभी मतभूलना इसज्ञानको स्मरणरखनेसे तुम्हैंयह वि नछोड़ने व कर्दमजी व मेरेवियोगका दुःखनहींरहेगा व कलि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तृ व पूजा व सेवा व दान व पुण्य कुछ न जानकर परमेश्वरके
जन व स्मरण व कथा व कीर्त्तनमें प्रीतिनहींरखते केवल अप
परिवारपालने व इन्द्रियोंको सुखदेनेमेंजन्मअपना बिताते
विनाज्ञान व भजन व भक्ति परमेश्वरके उनकोकुछसुख व आ
न्द प्राप्तनहींहोता वहलोग मरनेकेउपरांत चन्द्रमण्डलमेंहो
पितृलोककोजातेहैं कुछदिन वहांरहकेफिर संसारमेंजन्मले
अपनेकर्मोंका फलभोगतेहैं व उत्तरायणसूर्य्य शुक्लपक्षमेंदि
समयमरनेवालामनुष्य सूर्य्यमण्डलमेंहोकर वैकुंठकोजाता
दक्षिणायनसूर्य्यकृष्णपक्षमेंरात्रिकेसमयमरनेवालेमनुष्य च
मण्डलकी राहसेदेवलोकमेंजातेहैं व वहांकासुख अपनेकर्म
सारभोगकरउनकोफिरसंसारमेंजन्मलेनापड़ताहै व पापीमनु
नरकमेंरहने उपरान्तचौरासीलाखयोनिमें जन्मपाकर दुःख
गकरतेहैं जबतकमनुष्यचाहना व इन्द्रियोंका सुखनहींछो
तबतकउसका शरीरअँगूठेके प्रमाणबनारहकर आवागमनम
सारहताहै व मुक्त होजानेसेवहशरीरउसका छूटकरफिर संसा
जन्मनहींलेता वहेमातासिवायइसकेऔर एकहालमुक्तहो
कहताहूंसुनोमेरीराजसीभक्ति करनेवालेमनुष्यकईजन्ममें
होते हैं व सात्विकीभक्तिकरनेवालामरनेउपरांतपहिलेब्रह्म
मेंजाताहैअवधिबीतेवहांसे गिरकेदूसरे जन्ममेंमुक्ति पावत
निर्गुणभक्तिकरनेवाले मनुष्यतनुछोड़नेउपरान्तसीधेवैकुंठ
कोचलेजातेहैं सिवायइसके औरतीनराह मुक्तहोनेकीहैं सु
मनुष्यअपनेवर्णानुसारजैसावेदव शास्त्रमेंसबवर्णोंकाधर्म

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के भवसागरपार उतराचाहै वहअपनी बिवाहितास्त्रीसे रूपवती
या कुरूपा जैसीमिलै प्रीति रखकरदूसरी नारीकाप्रसंग न करे व
दूसरीस्त्री मिलनेवास्ते चाहना न रखकरजितना धनथोड़ा या ब
हुत परमेश्वरउसको देवैं उतनेमें अपनापरिवार पालन करके अ
धर्म व पापकी कौड़ीपर इच्छा न रक्खै व गृहस्थको उचितहै कि
नित्य देवकर्म्म व पितृकर्म व ठाकुरकी पूजा व सेवाकरने के उप
रांत उनकोभोग लगाकर भोजन कियाकरै व कथा व कीर्त्तन व
लीला अवतार धारणकरने परमेश्वरकी सुनकर उसमेंध्यान अ
चनालगाये रहै व यथाशक्तिसाधु व सन्त व वैरागी व ब्राह्मण की
धिभोजन व वस्त्रसे लियाकरै व जोकाम उत्तमयज्ञ व तप व दान
व्रतआदिककरै उसकाफल परमेश्वरकेनामपरअर्पणकरदेवै व
पनेकुलपरिवारके लोगोंको ऐसाजानतारहै कि संसारमें यहस
मेरेवास्ते पैरकीबेड़ीसमानहैं मुझेऐसीसामर्थ्यनहींहै जोइनके
न्देसेछूटसकूं इसजालसे छुड़ानेवाले नारायणजीहैं इसतरहका
चार हृदयमेंरखकर ऊपरसेउनकीपालना कियाकरै गृहस्थको
नविरक्तरखनाचाहिये व वैरागी व संन्यासीकेवास्ते संसारीसुख
त्यागकरनाउचितहै व हरिभक्त गृहस्थकेलक्षण हमतुमसेक
हैं सुनो जिसतरहपानीमें कमलकाफूल जलसेपृथक् रहताहै
तीतरहहरिभक्त गृहस्थभीप्रत्यक्षमें गृहस्थीकेबीचरहकर अप
मन संसारीमायासे विरक्तरक्खें व मनकोबीचध्यान परमेश्वर
लगायेरहैं तो गृहस्थभीमरनेउपरांत सूर्यमण्डलमेंहोकरवैकुंठ
जातेहैं व अज्ञानगृहस्थोंका लक्षणसुनो वहलोग देवता वपि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोहमें सबमनुष्य फँसेरहते हैं कदाचित् कोईपूछै कि मनुष्य
न्यचोलाहोकर जड़रूपमायामें क्योंफँसताहै उसकाउत्तर
ना चाहिये जिसतरह अच्छागानेवाला ताल व स्वरसे प्रवी
बबनमें अलगोजाबजाकर गावताहै तबहरिणआदिक बनच
व उसशब्दपर मोहितहोकर उसगानेवालेके पास आनकेखड़
जातेहैं और वहउन्हैं पकड़कर बहुतसा दुःखदेताहै उसीतर
सारीमनुष्य परमेश्वरकाभजन व स्मरण जो सदैवकेवास्ते
कीखानिहै छोड़कर जड़रूपीमायासे अपनासुख चारदिनके
युर्दायका उत्तमजानते हैं व मायारूपीजालमें लपटनेसे बहु
दुःखपाकर पीछे पछताते हैं॥

बत्तीसवां अध्याय॥

कपिलदेवजीका देवहूतीको तीनतरहपर ज्ञानसमझावना॥

कपिलदेवजी बोले हेमाता हमनेतुमसे स्त्री व द्रव्यदोनों
बुराकहा सो तुम्हारेमनमें इसबातका संदेहहुआहोगा कि
में स्त्रीसेसबजीवों की उत्पत्तिहोकर द्रव्यसे अनेकतरहका सु
महोताहै कदाचित् इनदोनोंको छोड़देंतो संसारीकाम किस
चलैइसकाहाल मैं तुमसेकहताहूं सुनो हमनेद्रव्य व स्त्रीको
देना गृहस्थाश्रमके वास्ते नहींकहाहै जो लोग गृहस्थीछोड़
परमेश्वरके नामपर साधु व वैरागी व संन्यासीहोनेके उपरां
या तीर्थोंमें रहकर जन्मअपना बीचस्मरण व ध्यान परमे
बितातेहैं उनलोगोंको द्रव्यवस्त्रीकी संगतिकरना न चाहिये
मनुष्य गृहस्थाश्रम व अपनेवर्णमें रहकर परमेश्वरका भ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रउससे बहुतपापकराताहै एकसमय ब्रह्माजीसबसंसार व चारों
दकेउत्पन्न करनेवाले जोसदाज्ञानी रहकरवेदके अनुसारधर्म्म
अधर्म्मका विचाररखतेहैं सरस्वतीनाम अपनीकन्याकेपासअ
लेमें बैठेथे सो परमेश्वरकी मायासेउस कन्याकी सुन्दरताई दे
करब्रह्माके मनमेंपाप समायाजब ब्रह्माजीकामदेवके नशेमेंम
वालेहोकर अपनीबेटीसे भोगकरनेकेवास्तेचले तब वहकन्या
र्म्मरूपी उनकायहहाल देखतेहीबहुत लज्जितहोकर हरिणी
पधारणकरके वहांसेभागी व ब्रह्माभीहरिणका रूपधरकर उस
पीछे दौड़ेउससमय सनकादिक उनकेबेटोंने जो परमेश्वर का
वतारहैं वहांपरआनकर ब्रह्माकोबहुत समझायातब ब्रह्मानेज्ञा
ाप्तहोनेसे अतिलज्जित होकरवहतनु अपनाछोड़के दूसराश
धारणकिया सो हे मातादेखो ब्रह्माजीकी जिनके बनायेहुये
षीश्वर व मुनि व प्रजापति आदिकसब संसारीजीवहैं कामदेव
वशहोकर यहदशाहुईथी तो संसारीजीव जोसदा अज्ञानसेभ
हतेहैं उनकीक्या सामर्थ्यहै जो कामदेवकेवेगको रोकसकैं जि
तरह आंधीचलनेसे वृक्षकेपत्ते व घास व तिनकेउड़ने व हिलने
तेहैं उसीतरह जब कामदेव परमेश्वरकी मायासे अपनाबल
ताहै तबयोगी व ऋषीश्वरआदि सबकिसीकामन चलायमा
ये बिना स्थिरनहीं रहनेसक्ता व मेरीमायादोरूप अपनाएक
रूपद्रव्य व दूसराचैतन्यरूप स्त्रीको बनाकर बीचसंसारकेफै
है सो इसीदोनोंरूपमें संसारीलोग लपटकरनष्टहोतेहैं चैतन्य
मायातो छोड़भीसक्तीहै परजड़रूपमायानहीं छोड़तीउसके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रना व परमेश्वरके चरणोंमेंप्रीतिरखना नारायणजीको अ
मालिक उत्पन्नकरने व जीविका देनेवाला जानतेरहना कि
जीवको हिंसाकरके दुःख न देनापरनारीसे प्रसंगनहींकरना
व सन्त व ब्राह्मणोंकी सेवाकरतेरहना परमेश्वरकीकथा वकी
सुनना परमेश्वरके नामकाभजन करनाबड़ोंकी सेवामेंरहक
भीउनका अनादर न करनासब बातभली व बुरीको ऊपर इ
परमेश्वरके समझना अपनेकर्म व धर्मपर वर्त्तमानरहनाहे
जोजीवमनुष्यतनु पाकरइसतरहके कर्मकरैं वहजीव आवाग
सेछूटकर भवसागरपारउतरजावेंगे पर यहसबगुण बिनास
किये व कथापुराण सुनेप्राप्त नहींहोते इसवास्ते मनुष्यको
त्मा व ज्ञानीलोगोंसे प्रेमरखना बहुतउचितहै जितनासत्सङ्ग
काकरै उतनाअधिकगुण उसकोहोगा अधर्मीलोगोंकी सङ्गति
रनेमें कदाचित् पहिलेसेभी कोईगुण उसमेंहोगा तो वहजा
हैगा व संसारमें परस्त्रीगामी व जुवारी व लोभी व चोर व म
चुगुल व झूंठबोलने व अपनाशरीर पालनकरनेवालेहोक
सुखकेवास्ते अपनाधर्म छोड़देतेहैं उनलोगोंकी संगतिकभी
रनाचाहिये उनमनुष्योंसे एकक्षणसंगति करनेमेंबुद्धिभ्रष्ट
तीहै बननाचित्तका बहुतकठिनहोकर भ्रष्टहोते उसकोविल
हींलगता व जो लोगपरस्त्रीसे प्रसंगकरतेहैं उनकेज्ञान व ध
नोंनष्ट होजातेहैं इसलियेअपनीबेटी व बहिनकेपासभी अ
बैठना न चाहिये किसवास्ते कि मनुष्यकाचित्त सबक्षणए
कानहींरहता व कामदेवकामद ऐसाबराहै जो मनुष्यका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करनेवाले मनुष्यदेवलोकमेंपहुंचते हैं वहेमातासबजीवोंकीगति तीनतरहपर जानकर जप व तप व दानादिक शुभकर्म्मजोहैं उनकोभी राजसी व तामसी व सात्विकीसमझो जिसकाजैसा स्वभावहोताहै उसीबातमें मनउसकालगकर वैसाकर्म्म वहलोगकरतेहैं और यहजीव अपनेस्वभावानुसार कर्म्मकरके बारम्बार संसारमें जन्मलेकर दुःख व सुखभोगताहै व आवागमनसे रहित नहींहोता जिसतरह कुयेंसेपानी भरनेवास्ते एकरहट चरखी का बनाकर उसमेंमेटियोंकाहार ऊपरसेपानीतक पहिनाके उसरहट को घुमावतेहैं तो एकमेटीऊपरकी पानीगिरजानेसे खालीहोकर दूसरीमेटियोंमें नीचेपानी भरजाताहै उसीतरह इसजीवकी गति समझनाचाहिये किएकतनुसे निकलकर अपनेकर्मोंकाफल शुभ या अशुभ जैसाकियाहो भोगनेउपरांत दूसरेशरीरमें जाताहै व जिसतनुमें जैसाकर्मकरै उसीकेअनुसार दूसराचोलापाता यह बातसुनकर देवहूतीने कहा महाराज जबयहीहाल है तो जीव काछुटकारा इससंसारसे किसीतरह नहींहोसक्ता तब कपिलदेव जी बोले हे माताजन्म व मरणसेछूटनेका उपायहम तुमसेकहते हैं सुनोसत्य बोलनाआचारसे रहनासबजीवों कीरक्षाकरनाबिना प्रयोजनअधिक न बकनाबुद्धिको नष्ट न करनाकुसङ्गति व बुरेकामोंसे अलगरहना सदाचित्त प्रसन्नरखना जितनापरमेश्वर देवें उसपरसन्तोष करनाकिसीके पासद्रव्य देखकरडाह नहीं करना शुभकर्म करकेसंसारमें यशउठाना अयशकिसी बातकानहीं लेनाकिसीपर क्रोध न करनाधर्मसे कमाईकरके अपनाकालक्षेप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न लेकरकुकर्म केसिवाय अच्छाकाम कुछनहींकरते उन्हीं
ष्योंकी वहगतिहोकर फिरवह पशुपक्षीआदिकका तनुपातेहैं
तरहचौरासीलाख योनिमेंजन्मपाकर फिरउनको मनुष्यका
मिलताहैपर वहलोगकाने व कुबड़े व अंधे व रोगी व कुरूप व
रिद्रीहोकर संसारमेंसब तरहकादुःख उठावते हैं व जोमनुष्यज
तमेंसुन्दर व धर्मात्मा व हरिभक्त व नीतिमान् व धनीपात्र दि
लाईदेउसे समझनाचाहिये कि इसनेस्वर्गसे आनकरमृत्युलो
मेंजन्मलियाहै हे मातायहदोनों बातेंप्रत्यक्ष देखकरस्वर्ग व न
कसेआनेवालों काहाल अच्छीतरह संसारमेंज्ञानी मनुष्यको
लूमहोसक्ताहै व जिसमनुष्यकापाप व पुण्यदोनोंरहतेहैं वहजी
अपनेकर्मका दण्डभोगकर फिरमनुष्यका तनुपाताहै व जिसक
केवलपुण्यहोकर पापनहीं रहता वहजीव मरनेउपरांत देवता
गन्धर्व का तनुपाकर देवलोक व स्वर्गमेंसुख भोगकरता है व
माता यह जीवदेवता या मनुष्य या कुत्ता व बिल्ली व शूकर
दिक जिसतनुमें जन्मपाताहै परमेश्वरकी मायासे उसीयोनि
सदारहनेवास्ते इच्छारखकर प्रसन्नरहताहै व मनउसका बि
कृपा व दया परमेश्वरकी संसारसेविरक्त नहींहोता व जिसशरी
को अपनाजानकर पालनकरताहै वहतनुउसका स्थिरनहींरह
सतोगुण व रजोगुणवतमोगुणका तीनतरहपर स्वभावहोकर
सेरजोगुण अधिकरहता है वहलोग राजसीकर्म्मकरके सत्यल
कर्म जातेहैं औरतमोगुणके अधिकरहने से पापकरनेवाला म
पातालमें नरककेबीच पड़ताहै व सतोगुणकी राह शुभक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्माको दुर्वचनकहकर उन्हेंटेढ़ी आँखसे देखताहै उसकी आँखें गिद्ध अपनी चोंचसेफोड़नेउपरांत उसकामांस व शिरकीगूदी ठो करोंसे निकाललेतेहैं व जो मनुष्य या हाकिम किसीकोबिना अ पराधदण्डदेताहै उसे दोपत्थरकी चट्टानमेंरखकर कोल्हूके समा नपेरतेहैं व जो कोईभोजनमें किसीकोबिषदेता या आग लगाव ताहै उनकोबहुतऊँचे वृक्षपरजिसमें तलवारकेसमानपत्तेहैं चढ़ा करऊपरसे छोड़देतेहैं तब शरीरउनका कटकर टुकड़ेटुकड़े होजा ताहै व जोमनुष्य परस्त्री गमनकरताहै उसकेबदनसे लोहेकी स्त्री बनवाकरआगमें लालकरने उपरान्त लपटादेतेहैं व जो कोई दू सरेकीथाती बेईमानीसे पचालेताहै उसको आगकेसमान जल हुईपृथ्वीपर लोटाने व गर्म २ तेल शरीरपरछिड़काने उपरांत लतेहुयेतेलके कड़ाहेमें डालदेतेहैं तिसपरभीप्राण उसकानहीं निकलता व जो मनुष्यमच्छड़ आदिकको मारकर जीवहिंसा करताहै उसको लालाभक्षनरकमें जो पीब व मुंहकेलारसेभराहै डालकर पानीकीजगह वहीपिलावतेहैं व जो कोईन्याय व पंचा यत व गवाहीमें पक्षकरके झूठबोलताहै उसकोबहुत गहिरे अँधि यारेकुयेंमेंजोसांप व बिच्छूसे भरारहताहै बारम्बारडालते व नि कालतेहैं सो सांपवबिच्छूके काटनेसे वहबहुत दुःखपाताहै हेमा इसीतरहजोजैसा पापकरतेहैं वैसादण्डउनकोवहांमिलताहै॥

इकतीसवां अध्याय॥

कपिलदेवजी का देवहूती से यह बात कहना कि नरक भोगनेके उपरान्तजीवका क्या हाल होताहै॥

कपिलदेवजीने कहा हे माताजोलोगकभी परमेश्वरकानाम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवधिपूर्णहोने उपरांत फिर वहजीव नरकसे निकलकर अ
व कुरूपजीवकी योनिमें जन्मपाताहै व सदारोगी रहकर क
सुखनहींपाता इसीतरह चौरासीलाख योनिमेंभ्रमकर फिर
मनुष्यका तनुमिलताहै सो हेमाता यह चैतन्यचोला मनुष्य
मिलना सहजनहीं होता व रौरवआदि अट्ठाईसनरक हैं उस
हाल पांचवेंस्कन्धमें आवेगा॥

तीसवां अध्याय॥

कपिलदेवजीका देवहूतीसे वर्णनकरना कि यह पाप करनेसे मरनेउपरान्त ऐसा दण्डपाताहै।

कपिलदेवजीबोले हेमाता जो पापकरनेसे मनुष्ययमपुरी
जाकर नरकभोगतेहैं उनपापोंके दण्डपावनेका हाल तुमसे
ग २ कहताहूं सुनो जो कोईकिसीका धन बरजोरी लेलेताहै
यमदूतबहुतऊँचे पहाड़परचढ़ाकर नीचेपत्थरकी चट्टानपर गि
देतेहैं सो उसकाअंग २ भंगहोजाताहै व बड़े २ गिद्धउसकामां
खाते व रौरवनाम जीव जोंककेसमान लोहूपीने उपरांतउस
हतेहैं कि जितनाधन तुमनेदूसरेकालियाहै उतनेकल्पभर तु
रीयही दशाहोगी यहबातसुनकर वहजीवदुःखपाने से बहु
पछताके शोचकरताहै पर प्राणउसका नहींनिकलता व जो
ष्य अच्छेभोजन व कपड़ाबनाकर केवलआपखाता व पहि
है व अपने परिवार व साथवालोंको न देकर साधु व सन्तकी
नहींकरता उसकोवहांबड़ीभूख मालूमहोतीहै तबयमदूतउ
तनुकामांस नोचनेउपरान्त उसेखानेवास्ते देकरकहतेहैं
नकातुमने पालनकियाथा उसीकोखाव व जो कोईसन्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ांभी पाप करनेवाला मनुष्यराहमें शासनापाकर परमेश्वरकी
ायासे उसअंगूठेभर शरीरकोअपना पहिलातनु समझता है व
ससमयबहुत दुःखीहोकर अपनेकुलपरिवारवाले व नौकरोंको
ादकरके पीछेफिरकर देखताहै कि इसमहादुःखमें कोईमेरी स
ायता करनेवास्ते आताहै या नहीं जबउसेवहांपर कुलपरिवार
ाला कोईनहीं दिखलाईदेता तबवहबहुतसा पछताने व रोनेउ
रान्तकहताहै देखो जिनकेपालनवास्ते यहसबपाप बटोराथा उ
नमेंसे कोईमनुष्य इससमयमेरी सहायतानहींकरता यहबातस्म
णाकरके उसजीवको बड़ाखेदहोताहै पर उससमय सिवायपछ
ानेके कुछकाम नहींकरता व राहमेंसांप व बिच्छूआदिक अने
तरहकेजीव रहकरउसेकाटतेहैं जबइसीतरह बहुतसादुःख देते
य यमदूतलोग उसमनुष्यको बैतरणीनदीमें जहांमल व मूत्र
रक्त व पीब व कीड़े व बाल व नख व हड्डी व सड़ामांसभराहुआ
वारकोशका फांटबहताहै चारघड़ीमें लेजाकरडालदेतेहैं तबवह
ीव उसनदीमें कीड़ोंकेकाटने व ठोकड़मारने व मांसनोचने गि
ोंसेबहुत दुःखपाकर अतिविलापकरके कहताहै जो कोई मुझे
सनदीसे पारकरताउसका मैं बड़ायशमानता यहबातसुनकरय
दूतलोग अपनीगदा उसेमारतेहैं यहसबदुःख उठानेउपरान्त
हजीव बैतरणीपार उतरकरजब चारघड़ीमें यमराजकेपासपहुं
ताहै तबधर्मराजकी आज्ञासे चित्रगुप्तउसके कर्मोंकाकाग़ज़दे
कर जितनेदिन जिसनरकभोगनेका दण्डदेना उचितहोताहै
हांउसे भेजदेतेहैं उसनरकमें जाकरवहबहुत दुःखउठाताहै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है व उसरोने व पीटनेके शब्दमें यमदूतउसे और बहुतदुःख
उससमय परमेश्वरकानाम व कथा व कीर्त्तनउसको सुनाना
गंगाजल व तुलसी व शालग्रामजीकाचरणामृतउसके मुखमें
लना व धूरचरणसाधु व वैष्णवकी उसकेशरीरपरलगानाउ
हैसोकिसीसेनहींबनपड़ताकेवलजाल व मक्करकारोनाजानते

उन्तीसवां अध्याय ॥

यमदूतों का अधर्मी जीवोंको यमराज के पास लेजाना ॥

मैत्रेयजीनेकहा हेविदुर इतनीकथासुनकर देवहूतीनेपूछ
महाप्रभो उसमनुष्यके मरनेउपरान्त क्याहालहोताहै सो क
कीजिये कपिलदेवमुनिबोले हेमाता यहसबदुःख उठानेउपर
यमदूतलोग उसजीवको कि मरनेपीछे अंगूठेप्रमाण शरीरउ
का बनारहकर सबइन्द्रियोंकी शक्ति उसमेंहोतीहै अपनीफां
सेबांधकर लोहेकेमुद्गरोंसे मारतेहुये यमपुरीमें जो मृत्युल
से निन्नानबेहजार योजनपरहै यमराजकेपास लेजातेहैं उ
मयराहमें वहजीवभूख व प्यासलगने वन मिलनेदाना व प
अपनेकियेहुये पापोंको स्मरणकरके बहुतपछताताहै और
स्तेमेंपृथ्वीआगके समानजलतीहुई मिलतीहै जबवह उसप
पर नंगेपैर व नंगेशिर व नंगेशरीर चलनेसेथककर कहींसुस्
कोचाहताहै या राहमें अन्धकाररहनेसे चल नहींसका तब
दूत उसकोमुद्गरों से मारकर दमनहीं लेनेदेते उससमयवह
मृतककेसमान अचेतहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ताहै जिसतरह
संसारमें राजालोगकुकर्म करनेवालोंको दण्डदेते हैं उसीत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तरह बैलजबबूढ़ाहोकर बोझउठानेकी सामर्थ्यनहींरखता तब
नियेलोग नाथउसकीकाटकर बनमेंछोड़आतेहैं ॥

दो० सींग झड़े अरु खुर घिसे पीठ न बोझा लेय। ऐसे बूढ़े बैलको कौनबांधि भुस देय ॥

हे माता उससमय वहबूढ़ा यहसब दुःखदेखकर परमेश्वरसेअ
नीमृत्युमांगताहै पर आयुर्दा सम्पूर्णहोनेबिना मृत्युनहींआती
उसकेबेटा व पतोहपहिले आपभोजनकरकेपीछेसे भिक्षुकोंकी
रह कुछउसकोभी खानेवास्तेदेदेते हैं जबबुढ़ाईसमय कुछरोगा
क उसेहोताहै तब कोईमनुष्य घरवाला उसकीसेवा नकरके दो
ड़ी उसकेपास बैठनेकाभी साथीनहींहोता वह बिचाराअकेला
ड़ारहकर जब किसीको भोजन व पानी मांगनेवास्ते बुलाताहै
जानबूझकरचुपहोजातेहैं व उसकीबातकाउत्तर न देकरदुर्बच
सेकहतेहैं यहसब कष्ट व दुःखउठाकर जबउसके मरनेकाकाल
कटपहुंचताहै तबकफ व पित्त व बातसे गलाउसका बन्दहोकर
इश्वासभी नहींनिकलती उससमय अधर्म व पापकरनेवालों
यमदूतकहतेहैं कि जिनकोलिये तैंने यह सबपापबटोराथा उ
को अब अपनीरक्षाकरनेवास्ते बुलावो जबवह बोलबन्दहोजा
उसकाउत्तरदेने व किसीको बुलानहींसक्ता तबअपनीकरणी
दकरके आंखोंसे सबकोदेखकर रोदेताहै जब यमदूत अपना
यानकरूप दिखाकर धमकाते हैं तब उसकेडरसेउसकामल व
निकलजाताहै व सिवायउसके दूसरेको वहदूत दिखलाई न
देते उससमय कुल परिवारवाले अपनी झूठीप्रीतिजग दिखला
स्ते प्रकटकरकेरोतेहैं इसलियेमनउसका औरअधिकघबराता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपना समझकर उनको पालनकरनेवास्ते अपने प्राणपर सं
रहका दुःखउठाताहै और अपने कुल व परिवारमें किसीमन
केमरनेसे इतनारोताहै जिसकावर्णान नहींहोसक्ता व अपनी
केवशमें रहकर माता व पिताको कठोरवचनकहनेसे दुःखदे
व परलोकका डरनहींरखता व जैसामनुष्य स्त्रीकेमोहमें फँस
नष्टहोताहै वैसादूसरीराह उसकेपरलोक बिगाड़नेवास्ते नहीं

दो० अहिविष तो काटेचढ़ै यहचितवत चढ़िजाय। ज्ञान ध्यान अरुधर्मको जरामूलसे खाय।
नारि पराई स्वप्नमें भोगत अति सुख पाय। धर्मओ काम गवाँइकै आपरहै खिसिआय।

इसलिये जो मनुष्य अपनाभलाचाहैतो स्त्रीकेस्नेहमें न
सो हेमाता तुमभी स्त्रीहो मेरेकहेसे बुरामतमानना धर्मशास्त्र
नुसार यहज्ञान तुमसेकहताहूं और जब तरुणाईबीतकर बुढ़
आतीहै तब आंखोंसे कमदेखकर कानोंसे सुनाईनहींदेता व सा
र्थ्य कमाईकरनेकी नहींरहती तब घरमेंपड़ाहुआ लम्बी २ सां
लेकर पछताता व कहताहै अबमैं अपनेलड़कोंको किसतरह
लनकरूंगा और जो कङ्गाल या दरिद्रीहुआतोवह उससम
ने व पहिरनेबिना बहुतदुःखपाताहै व जिसकेबेटे तरुणाकम
रनेवालेहुये वहलोग अपनीस्त्री समेत उसबूढ़ेको शत्रुके स
समझते हैं उसअवस्थामें जबवहबूढ़ा अपनेटहल व कामम
सीसे कुछकहताहै तबउसेघुड़कके दुर्वचनकहते हैं उसस
मनमें बड़ाखेदकरकेकहताहै देखोअबमैं बूढ़ाहोकर कमाने
नहींरहा इसीवास्ते यहलोग जिनको जन्मभरमैंने पालन
मुझे बेआदरजानकर खानेपीनेकीसाधिभी समयपरनहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीहै व बीचगर्भकेकन्या बायेंतरफ़ व पुत्र दाहिनेकोखमेंरहकर
ब पृथ्वीपर बाहरागिरके रोताहै तब परमेश्वरकीमायासे पहिले
न्मोंकाज्ञान उसेभूलकर यादनहींरहता सोवहबालक छोटीअ
स्थामें भूख व प्यासलगनेसे दुःखपाकर सिवायरोनेके बोलनहीं
का व बिछौनेपर मल व मूत्रकरनेसे जबतक कोई उसको नहीं
ठाता तबतक उसीमें पड़ारहकर कष्टपाताहै व माता व पिता उ
के मल व मूत्रको लत्ता या पानीसे पोंछने व धोनेउपरान्त उसे
दमेंलेकर प्रसन्नहोतेहैं जब उसअवस्थासे सयानाहोकर पांच
र्षकाहोताहै तब उसके माता व पिता बिद्यासीखनेवास्ते गुरुको
ौंपदेतेहैं वहांभी बिद्यासीखनेमें मारपीटखानेसे दुःखपाकर अ
नी इच्छापूर्वक खेलनेनहींपाता जब सोलहबर्षकी अवस्थामें
णहोकर अच्छा२ गहना व कपड़ा पहिनताहै तब अभिमान
काम व क्रोध व मोहमेंफँसकर अपनीबराबर दूसरेकिसीकोनहीं
मझता कदाचित् दरिद्री व कङ्गाल हुआतो दूसरेको अच्छाग
ना व कपड़ा पहिने व उत्तमपदार्थ खातेदेखकर डाहकीराहसे
ीचकरताहै व बिवाहहोने उपरान्त स्त्रीघरमेंआनेसे बीचचिन्ता
माने व खानेके दिनरात बिकलरहकर जन्मअपना व्यर्थगवां
है व जो मनुष्य पहिलेजन्ममें कुछदान व धर्मनहींकियेरहता
समनुष्य अधिककङ्गालहोकर आठोंपहर पेटभरनेवास्ते चिंता
दुःखउठाताहै जब लड़केबाले उत्पन्नहोतेहैं तब उनकी प्रीति
फँसकर अनेकतरह झूठसत्यबोलनेसे कमाईकरके उनकोपा
लकरताहै व जबतक सामर्थ्यरहतीहै तबतक स्त्री व लड़कोंको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रनेकीसमय स्त्री व पुरुषदोनोंकाबीर्य मिलकरखौलताहै पां
दिनउसमें से बुल्लेकेसमान उठकरदशवेंदिन बैरकेसमान गो
बँधजातीहै पन्द्रहवेंदिन वहगांठि मांसकापिंडहोकर कुछ गो
सा लम्बाहोजाताहै एकमहीनेमें हाथ व पैर व शिरकाचिह्न
ताहै व दूसरेमहीनेमें अंगुलियां व तीसरेमहीनेमें चमड़ा व
व चौथेमहीनेमें शरीररोयें व आंखकानआदि सब इन्द्रि
आकारबनजातेहैं व पांचवेंमहीने नारायणजीकी कृपासे जी
त्माकाप्रकाश उसमेंहोकर उसकोभूख व प्यासलगतीहै व छ
महीनेमें शिरनीचे व पैरऊपररहनेके कारणसे मनउसका घ
ताहै व सातवेंमहीनेमें उसकोअपने कईजन्म व आठवेंमही
सौजन्मपीछेका हाल यादहोकर ज्ञानप्राप्तहोनेसे वह मालू
रताहै कि पिछले जन्मोंमें हमनेऐसाकर्म्म करनेसे वैसादुःख
सुखपाया था यहबातसमझकर वह परमेश्वरका ध्यानकरके
से बिनतीकरताहै महाराजमैंने पिछलेजन्म संसारीसुख व
लास व स्त्री व पुत्रकेमोहमेंफँसेरहनेसेनष्टहोकर जन्म व मर
छुट्टीनहींपाया व सन्त व महात्मासे सत्संग नहींकिया इ
ये उलटालटककर दुःखपाताहूं इससमय मेरेऊपर सहायत
कृपाकरके इसनरककुण्डसे मुझेबाहर निकालिये तो अबमैं
व मनसे बीच तप व सेवा तुम्हारीमें तत्पररहूंगा पर ऐसी
कीजिये कि जिसमें यहज्ञानमुझे नभूलै व बीचसंसारके ऐ
मकरूं जिसमें जन्म व मरणासेछूटजाऊं जब नवां या दशवां
नाहुआ तबवायु जिसे प्रसूतकहतेहैं जोरकरके उसको बाहर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होजाऊं इसतरहकेभक्त मेरेजीवन्मुक्तहैं व चारोंवर्णमें ब्राह्मण
दपढ़ाहुआ मुझेबहुतप्यारामालूमहोताहै परजो ब्राह्मण परमे
वरमें प्रीतिनहींरखता उस ब्राह्मणसे मैंशूद्रहरिभक्त वसाधुलक्ष
णकोअधिक प्यारकरताहूं सो हेमाता तुममेरे चरणोंमें ध्यानल
गाकर नारायणनाम का स्मरणकरो भवसागरपार उतरकर आ
वागमनसे छूटजावोगी औरजोकोई परमेश्वरकीभक्ति व पूजासे
विमुखरहकर उनकानाम कभीनहींलेता वहमरनेउपरान्तबहुत
दिनोंतक नरकमेंदुःखपाकर बीचयोनि पशुआदिकके जन्मपा
ताहै व बहुतदिनउसयोनिमें रहकरफिर मनुष्यकातनु उसे मिल
ताहै हे माता परमेश्वरकीभक्ति व ज्ञानप्राप्तहोने व भवसागरपार
उतरनेवास्ते केवलमनुष्यका चोलाहै जिसनेइसतनुमें परमेश्वर
कोनहींजाना वहपीछे बहुत पछतावेगा ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

कपिलदेवजी का देवहूतीसे मनुष्यकी उत्पत्तिकहना जिसदिनसेगर्भ में आनकर फिरमरता है ॥

मैत्रेयजीबोले हेविदुर इतनीकथा सुनकर देवहूतीनेकहा म
हाराज जो मनुष्य परमेश्वरसे बिमुखहैं उनकामरनेउपरांत क्या
हालहोगा कपिलदेवजी बोले हेमाता संसारीलोग कुलपरिवार
व घरद्रव्यके जालमें फँसकर आयुर्दा अपनीव्यर्थ नष्टकरते हैं व
मनुष्य तरुणाईमें कमाईकरके जिनलोगोंको खिलाताहै बुढ़ाई
समय वहीलोगशत्रुहोकर उसे दुःखदेते हैं सो मैं हाल उत्पत्ति
होने मनुष्यका जन्मसे मरणतक तुमसे कहताहूं सुनो जिसरो
जस्त्रीको परमेश्वरकी कृपासे गर्भरहना होताहै उसदिन भोगक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बटोहीथककर किसीसेपूछे कि ठिकाना टिकनेका कितनीदू
जोस्थानटिकनेका निकटबतला देवै तो थकनेपरभी उसेसाम
चलनेकीहोकर ठिकानेपर पहुंचजाताहै व जगहटिकनेकी
तलावनेसेआगे न जाकरउसीजगह टिकरहताहै उसीतरह
मसेकहतेहैं कि भक्तियोगपूजा व पाठ व व्रत व नेम व परमे
कीकथा व कीर्त्तनसुनना सहजराहहै जो लोगचित्तलगाकर
सबकर्म्मकरैं वहभीमुक्ति पासकेहैं परपूजा कईप्रकारकीहोक
कतामसीपूजाहै जिससे यहप्रयोजनरखतेहैं कि शत्रुमेरामरज
व अनेकमनुष्य वास्तेदिखलावने लोगोंकेदेरतक मालाफेर
पूजाकरतेहैं जिसकेदेखनेसे संसारीलोग हमाराविश्वासकरें
रीराजसीपूजाहै जिसमेंनारायणजीकेनाम परमनुष्योंसे कप
व रुपया व मिठाई व सुगन्धादिकलेकर उसकोअपने खर्चमेंल
तेहैं व मूर्त्तिशालग्राम वलक्ष्मीनारायणजी वास्तेप्राप्तहोने
रीसुखकेपुजातेहैं व दूसरेकेघर जो ठाकुरवोशालग्रामहोते हैं
सेभक्ति व प्रीतिनहींरखते व तीसरीसात्विकी भक्ति व पूजामु
चाहनेवास्ते करतेहैं चौथीनिर्गुण पूजावहहै कि जिसमेंमुक्ति
भीइच्छा न रक्खै व जोयज्ञ व पूजा व दान व व्रतआदिकशु
र्म्मकरै सबपरमेश्वरकेनामपर अर्पणकरदे व उसकेबदलेमें
कामनानचाहै औरमेरीकथा व कीर्त्तनसुनतेसमयकरुणाकेस्थ
पररोदेवे व हर्षकीजगह प्रसन्नहोकर मेरेध्यानमें मग्नरहै
क्रोंसे मैं बहुतलज्जितरहकर यहविचारकरताहूं कि कौनसी
उन्हैंदूं जिसमें वहमुझसेप्रसन्नहोवैं औरमैं उससेवाकेवदले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काधोवन हैं उनमेंस्नानकरनेसे सबपापमनुष्योंके छूटकरमनउ
का शुद्धहोजाताहै व जो लोग साक्षात्मेरे चरणोंकाध्यानअंत
करणमेंरखतेहैं वहलोगफिरसंसारीमायामोहमेंनहींफँसते जिस
पारसपत्थरपाया वहकांचके झूठेनगपरचाहनानहींरखता व सं
सारमें सबइच्छा व कामनाउसकी पूरीहोकर मरनेउपरांत परलो
कासुख मिलताहै जिसतरह बेटाके भोजनकरनेसे बापका पेट
नहींभरता व द्रव्यदूसरेके पास रक्खाहुआ समयपर कामनहीं
आता उसीतरह शरीरको आत्मासे अलगजानेबिना ज्ञाननहीं
प्राप्तहोता व ऐसाज्ञानजाननेवाले जीवन्मुक्तहोतेहैं यहसबज्ञान
सुनकर देवहूतीबोली हेमहाप्रभो मैंने आपकेज्ञान सिखलानेके
अनुसारआत्माकोप्रकृतिसे बिलगसमझा परतत्काल इसमनका
नारीजालसे विरक्तहोना व नारायणजीके चरणोंमें ध्यानलग
ना बहुतकठिनहै जिसदिनसे तुम्हारेपिता तपकरनेवास्तेगयेहैं उ
सदिनसे एकक्षणमुझेनहीं भूलकरमनमेरा उनकेयाद व ध्यान
लगारहताहै कोईऐसाउपाय बतलाइये जिससेसहजमें ज्ञान
मुक्ति प्राप्तहोवै यहबातसुनकर कपिलदेवजीबोले हेमाताहम
हजराह भक्तियोगकी तुमसेकहतेहैं सुनो कदाचित् कोई परमे
श्वरकोमिलनेवास्ते मनअपना धीरेधीरेलगावे तो उसकी भी मु
क्तिहोतीहै जिसतरह कोईमनुष्य इच्छाजाने जगन्नाथजी या
पुरा या किसीदूसरेतीर्थकीकरके घरकेबाहर निकलकर एक २
नित्यरास्ताचलैतोवहएकदिनठिकानेपरपहुंचजाताहै व जो
रस्ता न चले तो किसतरह पहुंचेगा व जबराहमें चलतेसमय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करताहूं व परमेश्वरकीदया व कृपासेवहसुख मिलनानहीं सा
ताउसे अवश्यदुःख भोगनापड़ेगा व जोमनुष्य उससुखको
श्वरकीइच्छा व दयासेप्राप्तहोना जानकरउसमें अधिकस्नेह
रखता व अपनेवर्ण व शरीरकाधर्म्म समझकर उसद्रव्यके
कारमें किसीजीवको दुःखनहींदेता उसेदण्डनहींमिलता यह
नसुनकर देवहूतीबोली महाराज आपकहगये हैं कि इसशरी
उसआदिपुरुषको पृथक्समझो सो यहबड़ीकठिनबातहै आं
देखेबिनाउस पुरुषको प्रकृतिसे किसतरहबिलगजानूंवह पुरु
रीरसे इसतरहमिला है जिसतरहदूधमें घी व अग्निमें प्रकाश
ताहै इसकाहाल पृथक्करके वर्णनकीजिये यहवचन सुनक
पिलदेवमुनिबोले हेमातायहबात ज्ञानकीराह व आंखोंसे
खकरविचारकरना चाहिये किसवास्ते कि जबमनुष्य मरजात
तबहाथ व पांवआदिक सबइन्द्रियां उसकीबनीरहती हैं पर
बवह आत्मापुरुष परमेश्वरका चमत्कारशरीरसे निकलजा
तबउसतनसे कुछकाम नहींहोसक्ता यहबात प्रत्यक्षमें आंख
खकर जाननाचाहिये कि उस आत्मापुरुषके न रहनेसे यह
शरीरकाहोजाताहै सो तुमयह गति मनुष्यकी देखकर आ
रुषको शरीरसे पृथक्समझो व जिसतरह वेश्याविषयी म
केपास द्रव्यदेखकर अनेकरंगसे उसकाधन व धर्म्मदोनों ले
है उसीतरहसे मेरीमाया धर्मात्मापुरुषके पासजाकर अनेक
उसकोछल देतीहै पर जोलोगमेरेचरणोंकी शरणमें रहते
पर उसमायाका कुछबशनहींचलता किसवास्ते कि गंगाजी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सकाझूठा व वीर्यकागिरना सच्चाहोताहै उसीतरह यहसंसारझू
ाहोकरजोपाप व पुण्यमनुष्यलोगकरतेहैं उसकेबदलेसुख व दुः
अवश्यभोगनापड़ताहै इसबातका एकइतिहास मैं कहताहूंसु
ी एकमनुष्य लकड़ीकाबोझा बनसेकाटकर अपनेशिरपरलिये
येबेचनेकेवास्ते जाताथा जबवहधूपकी गर्मीसेराहमें थकगया
बवृक्षकीछायामें बोझा अपनाशिरसे उतारिकै एककुआंपरपा
ीपीनेउपरान्त बैठकरसुस्तानेलगा उससमयउसनेक्यादेखाकि
कसवार घोड़ादौड़ाये उसकुआंपर पानीपीनेवास्ते चलाआता
उसेदेखकर लकड़ीबेचनेवालेने मनमेंकहा हमकोभीघोड़ामि
लतातो सवारहोकरचलते बोझाउठाने व पैदलचलनेसे पैरजल
ाहै इसीविचारमें वहकुयेंकीजगतपरसोगया स्वप्नमें उसकोघो
ामिलाजब वहउसपर सवारहोकर कुदानेलगा तबघोड़ेपरसेगि
पड़ा उसीस्वप्नावस्थामें सोताहुआ वहउछलातो बीचकुयेंकेगि
पड़ा व कुयेंमेंगिरनेसेहाथ व पैरउसकाटूटगया सो हे माता उस
कोघोड़ा मिलनाझूठा व कुयेंमेंगिरनेमें चोटलगनी सत्यहुई इ
सीतरह संसारीसुखझूठा समझोपर मनुष्यको पापकरनेसे दण्ड
अवश्यमिलताहै जबउस लकड़िहारेको निकालनेवास्ते लोगोंने
उपायकिया तबउसनेकुयेंमेंसेकहा मैं बीचस्वप्नके घोड़ेपरचढ़ाथा
इसकायह फलपाया जो लोगनित्यघोड़ेपर चढ़तेहैं वहलोग न
मालूमकैसे गहिरेकुयेंमें गिरकरदण्डपावैंगे हे देवहूतीजोमनुष्य
संसारमें सवारीगहना व कपड़ा व स्त्री व मकानादिका सुखपाकर
यहसमझताहै कि यहसबसुख मैं अपनेपराक्रम व कमाईसेभोग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पने धर्म्मपर स्थिररहकर ज्ञानियों का सत्संगरक्खे व जिस
का फलबुराहै वहकर्मनकरै व जो कुछप्रारब्धानुसार रसेमि
सपरसन्तोषरखकर अधिकलोभ न बढ़ावै व पेटभरनखायजि
परमेश्वरकाभजन व स्मरणकरतेसमय आलस्य न आवै व
जगहतीर्थस्थान व ज्ञानियोंकासत्संग अच्छाहो वहांपररहै
हांसंगति अच्छीनहो वहांनरहै व परमात्माको अपनेशरीर
जीवोंमें एकसादेखकरभूख व प्यास व दुःख व सुखकोबराबर
औरऐसेमनुष्यको जीवन्मुक्तकहतेहैं व जबतकऐसा ज्ञाननप्रा
तबतकअपनेवर्ण व आश्रमकेअनुसारधर्म व कर्मकरतारहै
करनेसे धीरे २ ज्ञानप्राप्त होजाताहै ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

कपिलदेवजी का सांख्ययोग ज्ञान देवहूतीसे कहना ॥

कपिलदेवजी बोले हे देवहूतीअब मैं सांख्ययोगज्ञान तु
कहताहूं चित्तलगाकरसुनो परतुम इसज्ञानको बहुतअच्छा
नकरदूसरेकिसीसे मतकहना यहज्ञानजल्दी सबमनुष्योंको
मिलताऔर संसारीव्यवहार तुमझूठाजानकर कभीसत्यम
मझनाकदाचित् तुमकोयहसन्देहहो कि जबसंसारीव्यवहा
झूठाहै तो संसारमेंजोयज्ञ व तपआदिकधर्म व पापकीबात
ष्यलोगकरतेहैं यहभीझूठीहोंगी सोपाप व पुण्यकीबात सत्य
नकरउसे झूठाकभीमतसमझो जिसतरहकोई मनुष्यकिसी
जागतेसमय मिलनेकी चाहनारखकर उसीध्यानमें सोजा
स्वप्नेमें उसीस्त्रीसे भोगकरकेवीर्य उसकागिरपड़ै तो भोग क

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नरकमेंजातेहैं यहीदुःखसमझकर अपनाप्राणदेनेयहां आ
जगत्में जिसकेपुत्रनहो उसकाजन्मलेना व जीनाअकार्थ
उसकेधन व कुलपरधिक्कारसमझनाचाहिये व मैं ऐसाअभा
कि मेरीपालीहुई गौभी बांझहै व मेरालगायाहुआ वृक्षभी
फलता जोफलबाज़ारसेमोललाताहूं वहभीसूखजाताहैजब
ब्राह्मणयहसबबात उसमहापुरुषसे कहकर बड़ाविलापकरने
तबवहसंन्यासी ब्राह्मणको बहुतधीर्य देकरबोला मैं तेरेपुत्र
केवास्तेविचारकरताहूं तू उदासमतहो फिरउसमहापुरुषनेब्रा
की कर्मरेखा देखकरकहा हे ब्राह्मणतेरेभाग्यमें सन्ताननहीं
हीहै इसलियेसातजन्मतक तेरेपुत्रउत्पन्ननहोगा किसवास्ते
रोकरअपना प्राणदेताहै संसारीमायासब झूंठीहोकरजगत्
यदुःखकेसुखनहींमिलता व कलियुगमेंपुत्रसेसबकोसुख
होकर बेटामातापिताकी सेवानहींकरताअपनीस्त्री व सा
श्वशुरकीआज्ञामें रहकर माता पिताकोदुःखदेताहै स्त्री व
व भाईआदि सबअपने मतलबकेसाथी होतेहैं तिसपरभी
का ऐसाजालहै कि अन्तसमय संसारीलोगअपनामन स्त्री
तोंमें लगायेरहकर परमेश्वरकास्मरण नहींकरते इसलिये
ो नरकमें जाकरदुःखभोगनापड़ता है हेब्राह्मण तूपुत्रकी
छोड़कर हरिचरणोंका ध्यानकर इसमेंतुझे बड़ासुख मि
यहबात सुनकर वहब्राह्मणबोला महाराजमुझे पुत्र उत्प
नेके सिवाय कुछध्यान व ज्ञान नहींसूझता आपकृपाकर
केबेटामझको दीजिये नहींतो तुम्हारेऊपर प्राणदेताहूं जब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संन्यासीने ब्राह्मणकीयहदशादेखी तबफिरउसे समझाक
हे ब्राह्मणसन्तानवास्तेराजाचित्रकेतुने दशहज़ाररानीसे
किया तिसपरभीबेटेकासुख नहींपाया इसीतरहपर बहुतसे
पुत्रकीचाहनामें मरगये व मनोरथउनका सिद्धनहींहुआ
ग भाग्यहीनहैं उनकाउद्यमभीनिष्फलहोताहै इसलिये
कीचिन्ताछोड़दे यहबातसुनकर ब्राह्मणनेकहा आपजित
ज्ञानकीकहतेहैं मेरेचित्तमेंएकनहींधसती दयाकरकेकोई
पायकीजियेजिसमेंमेरेपुत्रहो इसतरहकाहठदेखके संन्या
कफलउसब्राह्मणकोदेकरकहा तू यहफललेजाकर अपनी
खिलादे परमेश्वरकीकृपासे तेरेपुत्रहोगा जबवहमहापुरुष
करकिसीतरफ़चलागया तबआत्मदेव घरपहुंचनेउपरान्त
लअपनीस्त्रीको देकरबोला इसकेखानेसेतेरेलड़काहोगा य
कहकर ब्राह्मणदेवताकहीं बाहरचलेगये इतनेमें एकसा
केपासआनपहुंची तबब्राह्मणीने उससेकहा यहफलमेरेस
पुत्रहोनेके वास्ते कहींसेलाकरमुझेदियाहै परमैंगर्भरहने
न खाऊंगी गर्भवती स्त्रीका जी मचलाकरउससे भोजनन
याजाता गर्भरहनेसेमुझे चलने फिरनेमेंदुःख होकर घर
बैठनापड़ैगा व सखीसहेलियोंकीभेंट छूटकरगानेबजानेम
होगा व जनतेसमयबहुतदुःखहोकर कदाचितलड़कापेट
होजावे तो मेराप्राणजातारहेगा व मेराशरीरकोमलहै दु
सहूंगी यद्यपिकुशलसेलड़काभीहुआ तो उसकेपालनेमें
ष्टहोगाबालककपड़े व बिछौनेको मल व मूत्रसेभ्रष्टकरदे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुआ और ज्ञानप्राप्तहोनेसेसंसारीमाया जिसकीछूटजाती है
फिर किसवास्तेजानबूझकर मायाजालमेंफँसैगा यहसंदेहमे
छुड़ादीजियेशुकदेवजी हरिचरणोंकाध्यानकरकेबोले हेराजन्
ने बहुतअच्छी बातपूंछी हालउसका इसतरहपरहै कि राजा
प्रव्रत ज्ञानीहोनेपरभी पिछलेजन्मके संस्कारसेप्रत्यक्षमें राज
जकरतारहा परवहगृहस्थाश्रमसे भी विरक्तरहकर बीचमोह
य व धन व पुत्रादिकके नहींफँसा कुछदिनोंउपरांत राजगद्दी
ड़कर बीच तप व ध्यान परमेश्वरकेलीनहुआ व जबपहिलेना
मुनिके उपदेशसे प्रियव्रतज्ञानी होकर मन्दराचलपहाड़पर
करने चलागयाथा तबराजास्वायम्भुवमनुने वहांजाकर प्रि
तसेकहा हे बेटा तू राज्य व बिवाहकरके सन्तानउत्पन्नकर
ने उत्तरदिया हे पिता ब्याहकरने व सन्तान उत्पन्नहोने से
ष्यबीचमोह व धन व परिवारके फँसकर नरकमेंपड़ताहै इ
सयेमैं राजगद्दी व संसारीसुख नहींचाहता मुझे परमेश्वरका
रण व ध्यानअच्छा मालूमहोताहै जबप्रियव्रतने स्वायम्भुव
काकहना नहींमाना तबवहउदासहोकरबैठेथे कि उसीसमय
राजी सनकादिकऋषीश्वर व देवतोंको साथलिये हंसपरचढ़
वहांआये जबस्वायम्भुवमनु व प्रियव्रतनेउन्हैंदण्डवत्करके
दरपूर्वकबैठाला तबब्रह्माजीनेकहा हे प्रियव्रत तू ब्याहकरना
राजगद्दीपरबैठना क्योंनहीं अंगीकार करता नारायणजीकी
ज्ञा इसतरहपरहै किक्षत्रियलोग राज्यकरैं सोतुझेउनकीआ
मानकर संसारीजीवोंको बढ़ानाचाहिये जिसतरहहम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीमद्भागवतमहापुराण

पांचवां स्कन्ध ॥

राजाप्रियव्रत व जड़भरत व सातोंद्वीप व नवखण्ड व चौदहों भुवनव सबनरकोंका

दो० शेषशारदा विनयकरि गोविंदपद शिरधार । यहपंचम अस्कन्धकी कथाकहौं विस्तार ॥
क० चढ़े गजराजचतुरंगिनी समाजसंग जीति क्षितिपाल सुरपालसों सजतहैं । विद्याअपार
अनेककरि यज्ञ और दान बहुभांति सों करतहैं । तीनिकालमें नहाय इन्द्रियोंको वशलाय करि
ध्य वासनातजतहैं । योग और यज्ञ जप तपको अनेक करैं विना भगवन्त भक्ति भवना तरत हैं ।

पहिला अध्याय ॥

परीक्षितका शुकदेवजी से राजा प्रियव्रत का हाल पूंछना ॥

राजापरीक्षितने इतनीकथा सुनकर शुकदेवजीसे विनयी
महाराज आपनेतीसरेस्कन्धमें कहाहै कि स्वायम्भुवमनुके
प्रियव्रतनेनारदजीके उपदेशसेबालापनमेंविरक्तहोके बनमें
परमेश्वरका तपकियाथा फिर गृहस्थहोकर राज्यभोगोपरा
तपकरके मुक्तपदवीपाया हे ब्रह्ममूर्त्ति ज्ञानप्राप्तहोनेपर
किसवास्ते गृहस्थीमें फँसा जबतक मनुष्य संसारीमोहमें
ष्टहै स्त्री व पुत्र व धनको अपनाजानताहै तबतक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिष्मती अपनेबापकीनगरीमें पहुंचे व राज्यकाजकरनेलगे व
द्रमाप्रसन्नहोकर अपनेलोकमेंगये सोउसीकन्यासे प्रचेतोंके
नाम बेटाउत्पन्नहुआ जिसनेपरमेश्वरका तपकरके मैथुनध
करनेसे बहुतजीव उत्पन्नकियेजब कुछदिनोंके उपरांतप्रचेता
ग अपनेबेटेकोराज्यदेकर परमेश्वरकातपकरनेवास्ते पश्चिम
णाको चलेगये तबराहमें उनको नारदजीमिले सो उनकेउप
से प्रचेतालोग परमेश्वरकाभजन व स्मरणकरके साथयोगा
सके तनु अपनाछोड़कर गोलोकमेंपहुंचे इतनीकथा विदुर
मैत्रेयऋषीश्वरसे सुनकरहस्तिनापुरको चलेगये॥

दो० पतिकीनिन्दा सुनतही तजी सती निजदेह। लाखनगारी देत अब पतिको त्यागसनेह।
जो चौथेस्कन्धको कहै सुनै चितलाय। लहै ज्ञान सुख सम्पदा पाप पहाड़ बिलाय॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोग वरदानमांगो तबप्रचेतोंनेदण्डवत् व स्तुतिकरकेकि
यामहाराजहम यहवरदानमांगतेहैं जिसमेंबीचमाया संस
फँसैंसाधु व महात्माकासत्संगहोकर तुम्हारेचरणोंमेंहमारी
बनीरहै श्यामसुन्दरत्रिलोकीनाथने इच्छापूर्वकउन्हैंवरदा
रकहा तुमलोगगृहस्थहोकर अन्तसमयमुक्तिपदवीपावोगे
सावरदानपाकरअपनेघरकोचले तबरास्तेमेंक्यादेखाकि न
गांवजोबसाथावह सबउजड़कर बनहोगया यहदशादेखक
तोंनेकहाकि बनकेदेवतोंने हमाराराज्य व देशाउजाड़दिया
गकीअग्निसेउन्हैं जलायाचाहिये जिसमेंअपनेकियेकाफल
ऐसाविचारकरजब प्रचेतोंनेबनकीतरफ़क्रोधसेदेखा तबवहम
लनेलगाऔर वहांकेदेवता अपना २ प्राणलेकरभागे व ब्रह्म
पासजाकरयहहालकहा तबचन्द्रमा ब्रह्माकीआज्ञानुसारप्र
केपासआकरबोले तुमलोगोंने हरिभक्तहोकरदशहज़ारवर्ष
श्वरकातपकियाहै तुम्हैंबिनाअपराध ऐसाक्रोधकरना न चा
इसबनसे सबऋषीश्वर व मुनीश्वर व पशु व पक्षियोंको भी
मिलकर अनेकजीवोंकीरक्षाहोतीथी इसकेजलानेसेतुम्हैंब
पहोगा व तुमनेसंसारउत्पन्न करनेकीइच्छासे परमेश्वरका
कियाहै सो तुमलोग निम्लोचानामकन्यासे जो वृक्षोंकीबे
व्याहकरो उससे तुम्हारे बहुतसन्तानहोंगी यहवचनचन्द्रम
सुनतेहीबनके देवतेवहकन्या प्रचेतोंकेपासलेआये व चन्द्र
समझानेसे प्रचेतोंने अपनाक्रोध क्षमाकिया और अग्नि
[illegible] विवाहकरकेली

CC-0 In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसबच्चेको अवश्यदेखतेहांगे जहांमेराबच्चाहो तुमकृपाकरके
लादेव जिसमेंवहमिलजावे नहींतो मेराप्राण निकलनेचाह
है जैसाशोच अपनेपुत्र मरनेकाभी कोईनहींकरता वैसीचिंता
तजीने बच्चेकेवास्तेकरके उसदिनस्नान व पूजा और भोजन
छनहीं किया व उसीशोचमें मरगये सो मरतीसमय ध्यान व
ण उनका उसबच्चेमेंलगाथा इसलिये वहतनु छोड़कर हरिण
जन्मपाया॥

नवां अध्याय॥

भरतजी को हरिणका तनु त्याग करना व एक ब्राह्मण के यहां जन्मलेना॥

ाकदेवजीनेकहा हेराजन्भरतजी हरिणका जन्मपाकर बन
नेलगे परन्तु हरिभजनके प्रतापसे वहअपने पूर्वजन्मकावृ
जानतेथे इसलिये अपनीअज्ञानता समझकर मनमेंकहा
मैंनेहरिचरणोंका ध्यानछोंड़कर जैसीप्रीति उसबच्चेसेकी
अपनीस्त्री व पुत्रकी कभीनहींकीथी व उसकेमोहमेंफँसकर
नष्टहुआ कि मनुष्यसे हरिणकातनुपाया भरतजी पिछली
शोचकर किसीहरिणीआदिकसे कुछप्रीति न करकेकहतेकि
लूमइनकी संगतकरनेसेफिरमेरी क्यागतिहोगी यहबातसम
भरतजीने किसीजीवकोदुःखदेना व हरीघासखाना छोंड़
जोफल व पत्ता सूखकर गिरपड़ताथा उसेखाकर हरिणके
भी परमेश्वरकाध्यान व स्मरणकरतेथे इतनीकथासुनाकर
वजीबोले किहेराजन् मृत्युसेमनुष्यको प्रतिक्षणडरनाचा
न जानैकिससमय मृत्युआजावै व एकहरिणकेबच्चेसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गा परमेश्वरने इसकाबोझ मेरेऊपरडालदिया इसलिये
नीचाहिये ऐसाविचारकर राजाने धर्म व दयाकीराह उस
को उठालिया व पानीसेधोकर अपनीकुटीमें लेआये व गो
धपिलाकर उसे पालनेलगे॥

आठवां अध्याय॥

खोजाना उत बच्चे का व तनुत्यागकरना राजा भरतजीको उसी शोचमें॥

शुकदेवजीने कहा हेराजन् जबउसबच्चेके पालनेसे
मोहहुआ तबभरतजी अपनेहाथसे हरीघासछीलकर उस
लाने व अपनेपास सुलानेलगे जब दिशाफिरने व स्नानक
स्तेकहींवाहरजाते तबउसेअपनेसाथ रखते व पूजा व तपक
मय उसको अपनेपास बैठालेरहतेथे प्रतिदिनभरतजीनेइत
तिउसबच्चेसे बढ़ाईकिउनकेजप व ध्यानमेंबाधाहोनेलगी
हबच्चाकहीं चलाजाता तबउसकेवास्ते बहुतउदासहोतेथे
यास एकदिनवहबच्चाछूटकर बनमेंचलागया व अपनेगो
लजानेसेफिरकरकुटीपरनहींआया जबराजाभरतनेबहुत
रभी उसे न पाया तबबड़ाशोचकरके कहनेलगे देखोमुझ
चूकहुईजो अकेलाछोंड़देनेसे वहभागगया मैंऐसाजानता
चलाजायगा तोकिसवास्तेउसे अकेलाछोंड़ता परमेश्वर
दयालुहोकर मेराभाग्य उदयकरै जिसमेंफिरवहबच्चा मे
लाआवै वहबच्चाडाटनेसे मुनीश्वरोंके बालकसमान डर
पृथ्वी तू उसे अकेलादेखकर उठालेगई है सो मेरेबच्चेको
इसीतरहशोच व विलापकरते रात्रिहोगई तबकहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सातवां अध्याय ॥

भरतनाम बेटा ऋषभदेवजी का राज्य करना व बनमें तप करने वास्ते फिर जाना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित भरतनाम बड़ा बेटा ऋषभदेव
का जो उनकीजगहराजाहुआ उसनेधर्मपूर्वक राज्यकरके प्र
को पुत्रसमानजाना व बिवाहअपना पञ्चजनीनामविश्वरूप
कन्यासे किया व राजाभरतके उसीस्त्रीसे धूम्रकेतुआदिक पां
पुत्रबहुतसुन्दर व प्रतापीहुये जबराजानेबहुतसेयज्ञकरकेफल
नका परमेश्वरको अर्पणकरदिया तबउन्हैं ईश्वरकी चतुर्भुजी
र्त्तिका दर्शनध्यानमें होनेलगा इसीतरह दशहज़ारवर्ष राज्य
सुखभोगकर संसारीव्यवहार झूंठासमझा व विरक्तहोकर राज
बेटोंकोसौंपदी व आपबनमें पुलहाश्रमनदीकिनारे जहांपर
रायणजी शालग्रामरूपसे रहतेहैं बैठकरभगवत्भजन करने
ग वहपत्तोंकी कुटीमेंकन्दमूल खाकर जैसे आनन्दकरते थे वै
सुख उन्हें राजगद्दीपरनहीं मिलताथा वेदकीआज्ञानुसार ब्रा
ण व क्षत्रियकोनित्यपूजा शालग्रामकी करनीउचित है एक
नराजाभरत मध्याह्नसमय नदीकिनारेबैठेहुये सूर्य्यदेवताका
ानकररहेथे सो एकहरिणी गर्भवती अपनेगोलसे फूटकरजैसे
ांपानीपीनेलगी तैसेहीएकबाघबोला उसकीबोली सुनतेहीह
णीभागी तो नदीकासोता नांघतेसमय बच्चाउसकेपेटसेगिरपड़ा
वह बच्चाअपना जीताछोड़कर उसीजगहमरगई राजाभरतने
ह दशादेखकर विचारकिया कि यहबच्चायहां पड़ारहनेसे कोई
नवरइसे खालेया मारेभूख व प्याससे मरजावे तो मुझेपा[illegible]हैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो नारायणजीकाअवतारथे मनआठोंसिद्धिका अपनीओ
चकरउन्हें विरक्तक्योंनहींकरदिया जोमनुष्यकामक्रोधमो
भमन व इन्द्रियोंकोअपनेवश्य न रखताहो उसेअष्टसिद्धिकी
रदेखनेसे डर व खटकाहै सोऋषभदेवजी उनसबकोअपने
न कियेथे उन्होंने किसवास्ते अष्टसिद्धिकीओर नहीं देखा
चनसुनकर शुकदेवजीबोले हेराजन् यहमनचंचल काम
धादिकबड़े २ बलवानोंकी कुसंगतपावनेसे वश्यमेंनहींरहता
में एककामदेव ऐसाबलीहै जिसकेमदमें मनुष्यअन्धाहोक
पनाभला व बुरानहींसमझता और यहीकामदेव बीचतप व
नबड़ेबड़ेयोगी व ऋषीश्वरोंकेविघ्नडालकर हज़ारोंवर्षकातप
क्षणमेंनष्टकरदेताहै मनचंचलविजुली व पारेकेसमानकभी
ठिकानेनहींरहता इसलियेमनकाविश्वास न रखनाचाहिये
तरहपुंश्चलीस्त्री अपनेपतिकोभुलावादेकर दूसरेपुरुषकेपा
तीहै उसीतरह यहमन व इंद्रियांअष्टसिद्धिकाकुसंगपानेसे चं
होकरकुकर्मकी इच्छाकरती हैं यहविचारकर ऋषभदेवजीने
कीओरनहींदेखाथाजिसमेंकामदेवकोरोकनानपड़ै जड़भर
रहनेमें शास्त्रकेअनुसारधर्मरखने व षट्कर्मकरनेकाप्रयोजन
रहताइसलियेबहुतमनुष्योंने चलनऋषभदेवजीकादेखकर
नकरना व वेदपढ़नाछोड़दिया तभीसेओसवालव सरावगीक
जोलोग वेदवशास्त्रकोनहींमानते संसारमेंप्रचारहुआवहलि
चधर्मीकहलाकर मरनेउपरांतअवश्यनरकभोगतेहैं वसोऋ
इसीअवस्थामेंअग्निलगनेसेजलकरपरमधामकोचल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रणासेउनकोअपनाशत्रुजानताहै ऐसेविरक्तगृहस्थको भी जोकि
सीजीवको दुःखनहींदेता साधु व महात्मासमझनाचाहिये सोतु
म ब्राह्मणको बहुतबड़ा व उत्तमजानकर दयापूर्वकप्रजाकी पाल
नाकरो इसतरहकाज्ञान रखनेवाला यमदूतोंकीफांसीमें नहींबां
धाजाता ऋषभदेवजीने यहज्ञान अपनेबेटोंको समझाकर कुछ
दिनउपरांत विचारा कि अन्तसमय यहराज्य व परिवारमेरेसाथ
न जाकर सबमेरासंग छोड़देवैंगे इसलियेपहिलेसे इनकासाथछो
ड़देनाउत्तमहै ऐसा विचारकर भरतनाम अपनेबड़ेबेटेको राजग
द्दीपरबैठालदिया व आपविरक्तहोकर जड़भरतकारूप बना लि
या व पहाड़परजाकर परमेश्वरकातप व भजनकरनेलगे लक्षण
जड़भरतकायहहै कि मल व मूत्रकरनेपरभी नियम व आचार
स्नानादिककाकुछ न रक्खै व भोजन व वस्त्रकाउद्योगछोड़देवै क
दाचित् कोईभोजनखिलादे तो खालेवै नहींतोनिश्चिन्तबैठेरह
करअपनेकपड़े तककीसुधि न रक्खै सोऋषभदेवजीने यहीलक्ष
णधरकर स्नानकरना व पूजाआदिकसबछोड़दिया तिसपरभीउ
नकारूपदेखकर देवकन्या मोहितहोजातीथीं व चालीसक्रोशत
कउनके मल व मूत्रकीसुगन्ध पहुँचतीथी उसीसमयअष्टसिद्धे
उनकेपासआकर अपनेअपनेगुणोंको वर्णनकिया परऋषभदेव
जीने उनकीओर आंखउठाकरभी नहींदेखा ॥

छठवां अध्याय ॥

आदमियों को ऋषभदेवजीका चलन देखकर सरावगीधर्म का प्रकट करना ॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकरबोले हेमुनिनाथ ऋष[illegible]हैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानो संसारमें नरक व मोक्षके दो दरवाज़ेहैं सन्त व महात्मा
सङ्गति व सेवाकरना मोक्षकाद्वारहै परस्त्रीप्रसङ्ग व चोर व जुआ
वविषयीवमद्यपकासंगकरनानरककादरवाज़ा समझनाचाहि

पांचवां अध्याय ॥

ऋषभदेवजीका अपनेबेटोंको ज्ञान सिखलाना व सन्त व महात्मोंके लक्षण कहना ॥

ऋषभदेवजीनेकहा हेबेटोजिनसन्तों व महात्मोंकीसंगति
सेवाकरनेसे मोक्षकाद्वारखुलजाताहै उनकेलक्षणासुनो मन
कासदाएकसारहकर किसीकेदुर्वचनकहनेसे उनको क्रोधनहीं
ता व भीतर व बाहरउनकासमानरहकर हृदयमेंकपटनहींहोता
हरिभक्तोंसे अधिकप्रीतिरखतेहैं रात्रि दिन हरिकथा व वार्त्ता
ने व सुननेमेंउनकोसन्तोष न होकरआलस्यनहींआता अपनेघ
वपरिवारमें अतिथिकेसमानरहकर केवलअपनापेटभरने व अर्थ
निकालनेसे प्रयोजनरखतेहैं लोभ व हानिहोनेसे कुछ हर्ष वि
न्तानहींकरते अतिथिकाएकलक्षणयहहै जिसतरहकोईपरदे
कङ्गाल दूसरेग्राम यानगरमेंपहुँचे व एकदिनकिसीकेघर भोज
करके दूसरेरोज़वहांसेचलाजाय तोभोजनदेनेवालेसे उसेकुछ
हर्ष उत्पन्ननहींहोता दूसरालक्षण अतिथिकासुनो जैसेपक्षी कि
मकानमें खोताबनाके दानापानी खाकरवहांरहतेहैं परउसघर
गिरने व बनाने व जलजानेकाकुछ शोचउन्हेंनहींहोता तीसरा
क्षणअतिथिकायहहै किजिसतरह खीरेकाफल ऊपरसेएकहो
रसकेभीतरतीनचारफांक अलगअलगरहतीहैं उसीतरह अति
थलागृहस्थभी प्रकटमें स्त्री व पुत्रकामोहरखकर अन्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजाजनकको ज्ञानउपदेशकियाथा उसकीकथा ग्यारहवेंस्कन्ध
में आवैगी व नवबालक नवखण्डके राजाहोकर भरतनाम बड़ा
बेटाउनका अपने पिताकी निजराजगद्दीपरबैठा व इक्यासी बेटे
ब्राह्मणोंकेसमान वेदपढ़ने व तप करनेलगे एकसमय ऋषभदेव
जीने सबप्रजाको यज्ञमें बैठालकर अपनेपुत्रोंको यहज्ञान उपदे
शकिया हेबेटोसंसारमें जितनेजीव जड़ व चैतन्य देखतेहौ एक
दिन सबकानाशहोकर केवल नारायणजी अविनाशी पुरुषास्थि
रहैंगे व उन्हींकीशक्ति शरीरमेंरहने से सबजीव चलतेफिरते हैं
सो तुमलोग उसीपरमेश्वरकाध्यान हृदयमेंरखकरसंसारी जीवों
से मोहतोड़के ज्ञानी व महात्मालोगोंका सत्सङ्गरक्खो कि जिस
से तुम्हारीमुक्तिहो कुसङ्गकरनेसे मनुष्य तुरन्तनष्टहोजाताहै उन
सो सत्सङ्गमतकरो जबतकसंसारीसुख स्वप्नकेसमान झूंठानहीं स
मझता तबतकउसे सुखमिलना कठिनहै जगत्में द्रव्य व स्त्रीदो
इसीमायारूपी ऐसीफैलीहैं जिसमें साराजगत् बँधकरनष्टहोता
है जो मनुष्य इनदोनोंसे अलगरहै वह इसमायाजाल से छूटस
कताहै पर इनदोनों से बचना व संसारीमोह छोड़कर परमेश्वरमें
चित्तलगाना सहजनहींहोता परइसका एकउपाय हमतुमसे क
हतेहैं सुनो सन्त व महात्माकी सङ्गतकरना यहीजड़उसकीहै बि
नासत्सङ्ग ज्ञानमिलना संसारको झूंठाजानना व परमेश्वर के
चरणोंमें प्रीतिहोनाकठिनहैसाधु व महात्माओंकीसंगतकरनेसे
धीरे२मनुष्यकामन विरक्तहोकर परमेश्वरकी तरफ़लगजाताहै
सिवायइसके एकबात मुख्यकहताहूं उसको तम विश्वास करतेहैं

CC-0. Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की बाललीलाकासुख देखनेसेअपनाजन्म सफलजानकर
प्रसन्नताके कपड़ोंमेंनहींसमातेथे जबऋषभदेवजी सयानेहो
राजगद्दीपरबैठनेयोग्यहुये तबराजानेअपने मंत्री व प्रजाको
से प्रसन्नदेखकरविचारा अबइनकोराजगद्दीपर बैठालकर
परमेश्वरकाभजन करनाचाहिये ऐसाविचारतेही राजाने ज्य
षियोंसे शुभमुहूर्त्तपूंछकर ऋषभदेवजीको राजसिंहासनपर
लदिया व आपस्त्रीसमेत बदरीकेदारमेंजाकरतप व ध्यानपरम
रकाकरनेलगे कुछदिनउपरान्त योगाभ्यासकेस्वथ अपनातन
ड़कर भवसागरपारउतरगये व ऋषभदेवजीने साथधर्म व प्रज
लनके ऐसाराज्यकिया जिसकेराज्यमें बाघ व बकरी एकघाट
नीपीतेथे और कोईप्रजा दुःखी व कंगाल न थी देवताउनकी
ति देवलोकमें कियाकरतेथे जबराजाइन्द्रने सबछोटे व बड़ोंके
हसे उनकायश व प्रतापसुना तबडाहसे भरतखण्डउनकेराज
पानीनहींबरसाया जबऋषभदेवजीको हालमालूमहुआ त
न्होंने इन्द्रके अज्ञानपरहँसकर अपनेयोगबलसे ऐसाकरदि
किउनकेराज्यमें जिससमय प्रजालोगपानी चाहतेथे उसीस
नारायणजीकीकृपासे जलबरसताथा जबइन्द्रनेयहमहिमा
ताप ऋषभदेवजीकादेखा तबउन्हैंपरमेश्वरकाअवतार जान
अपनाअपराध क्षमाकरनेके वास्ते जयन्तीनाम अपनी क
उनको बिवाहदी सोऋषभदेवजीके उसी स्त्रीसे सौपुत्र उत्पन्न
उनमें नवबालक विरक्तहोगये व बनमेंजाकर परमेश्व
ध्यानकरनेलगे उन्हींको नवयोगीश्वरकहते हैं जिन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ी दक्षिणादेकरबिदाकिया व जैसे चरुप्रसादयज्ञका मेरुदेवी अ
नीरानीको खिलाया वैसेउसकेगर्भरहा तबब्रह्माजीने देवतोंसमे
गर्भस्तुतिकरनेकेवास्ते राजमंदिरपरआनकरकहा हेराजन्तेरा
ाग्यउदयहुआ जोआदिपुरुषभगवान् तेरेयहांपुत्रहोकरअवता
नंगे जबब्रह्मादिक सबदेवतागर्भस्तुतिकरके अपने २लोककोच
गये तबदशवेंमहीने परब्रह्मपरमेश्वरनेरानीके गर्भसेअवतार ले
रअपनीसांवलीसूरत चतुर्भुजीमूरत किरीटकुण्डल मुकुटसाजे
वरत्नभुजबन्द बनमालाविराजे कौस्तुभमणि बैजयन्तीमाला
लेमंडाले राजानाभि व मेरुदेवीकोदर्शनदिया वैसेवहदोनोंआ
न्द व प्रसन्नहोकर दण्डवत्करनेउपरान्त स्तुतिउनकीकरनेल
ा देवतोंनेअपने २ विमानपरबैठकर आकाशसे उनपरपुष्पबर
व अप्सरोंने नाचदिखलाकर गन्धर्वोंनेगानासुनाया व ब्रह्मा
आनकर ऋषभदेवजीउनकानामरक्खा जबब्रह्मादिक देवताद
वत् व स्तुतिकरकेवहांसे अन्तर्द्धानहोगये तबपरब्रह्मपरमेश्वर
लकरूप होकररोनेलगे॥

चौथा अध्याय॥

राजानाभिका सहित स्त्रीके बनमेंजाकर तपकरना व ऋषभदेवजीका गद्दीपरबैठना॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् जबऋषभदेवजी छत्तीसगुणनिधा
आदिपुरुष भगवान्ने राजानाभिकेयहांजन्मलिया तबराजा
उन्हैंपरमेश्वरकाअवतारसमझकर बड़ेहर्षसेइतनादान व दक्षि
ब्राह्मण व याचकोंकोदिया कि उसकेराज्यमें कोई [illegible]
न रहकर सबधनवान्होगये व राजा व रानीभलात[illegible]हैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीसरा अध्याय ॥

राजा नाभिके यहां ऋषभदेवजी का अवतार लेना ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जबराजा अग्नीध्र तपकरनेव
चलागया तबनाभिआदिक उसकेनवबेटेअपने २ खण्डमेंसा
र्म व प्रजापालनके राज्यकरनेलगे कुछदिनउपरांत राजान
बड़ेबेटेनेमेरुदेवीअपनी स्त्री समेतसन्तानकीइच्छासे बनमें
रबहुतदिनपरमेश्वर का तपकिया फिर रानीसमेत अपनेघर
करब्राह्मण व ऋषीश्वरोंकोबुलाकेयज्ञकरनेलगा जबयज्ञअ
तरहसंपूर्णहुआ तबनारायणजीसांवलीसूरत मोहनीमूरतने
चक्र गदा पद्मधारणकिये किरीटमुकुटकुण्डल बैजयन्तीमा
हिनेतापहारिणी चितवनमंद २ मुसुकरातेहुये अग्निकुंडसे
लकरअपनादर्शनदिया उन्हेंदेखतेहीराजानाभि व ऋषीश्वर
दिकजितनेमनुष्य यज्ञशालामेंबैठेथे दण्डवत्करके खड़े
उनकीस्तुतिकरनेलगे व देवतोंनेआकाशसे उनपरपुष्पबरस
राजाने हाथजोड़करविनयकिया हेत्रिलोकीनाथ आपनेमु
रीबकीइच्छापूर्णकरनेकेवास्ते दयालुहोकरदर्शनदिया कि
ऐसीसामर्थ्यहै किजो तुम्हारीमहिमावर्णनकरसकै हरिच
भक्तिकरनेवालेको चारोंपदार्थमिलतेहैं सो मुझे ऐसावर
जिये जिसमेंतुम्हाराऐसाबेटा मेरेउत्पन्नहो यहवचनसुनते
ज्ञभगवान्प्रसन्नहोकर बोले हेराजन् तुमनेमेरा ऐसापुत्र
र उनमें नवरखकर तप व यज्ञकियाहै सो हमआयतेरेघर
ध्यानकरनेलगे वैकुण्ठकोपधारे व राजाने ब्राह्मण व ऋ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिखलायदेव व मेरेजानकारीमें तुमलक्ष्मी या नारायणजी की
मायाहो जो यहांआकर अपनेनयनोंकाबाणचलाके मुझऐसे ह
रिणको माराचाहतीहो परमेश्वरने बड़ीकृपाकरके तुम्हारादर्शन
दिया सोतेरामोहनीरूपमुझको बहुतप्यारामालूमदेताहै इसलि
येअबमैं तुम्हारापीछानहींछोड़ूंगा जब यहबातराजाकी सुनकर
पूर्वचित्तीनेजानाकिमेरे ऊपरअतिमोहितहुआहै तबवहमुसुकरा
करबोली हेराजन् हमारेतपोबनमें इसीरूपकेसबऋषि व मुनिरह
कर वहांऐसे कन्दमूलहोते हैं जिनकेखानेसे मनुष्यसदातरुण व
रूपवान् व कोमलबनारहताहै जबतुमअपनीराजगद्दीपर चलक
रकुछदिन मेरेसाथरहो तब अपनास्थानतुम्हें दिखावें यहांपहाड़
र मैं तुम्हारेसाथ नहींरहसक्ती यहवचनसुनतेहीराजा तप व ध्या
परमेश्वरकाछोड़कर अप्सरासमेत राजमन्दिरपर चलेआये व
उसकेसंगाबिवाहकरके दशहज़ारवर्षतकभोग व विलास व राज्य
काज धर्म्मपूर्वककिया जबराजाके नाभि व इलावृत्तादिक नव
बेटे पूर्वचित्ती अप्सरासे उत्पन्नहोकर जन्मतेही अपनीमाताके
आशीर्वादसे तरुण व तेजवान् व बलवान्होगये तबपूर्वचित्ती उ
नकाबिवाहकरके इन्द्रलोकको चलीगई व राजानेजम्बूद्वीपमेंन
बभागकरके एक२ हिस्सह जिसेनवखंडकहतेहैं अपनेनवबेटोंको
बांटदिया व आपबनमें जाकरतप व ध्यानपरमेश्वरका करनेलगे
सो भरतखण्ड जिसमें बहुतसेनगर व देशहैं नाभि बड़े
न राजाको पूर्वचित्तीके वियोगका ऐसा शोकहुआ
ण शरीर अपनात्यागदिया व गन्धर्वतनुपावेहामलात

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विचारा कि पहले परमेश्वरका तप व स्मरणकरके पीछेसे ब्य
करैं जिसमेंसन्तान धर्म्मात्माउत्पन्नहों व वेद व शास्त्रमेंभी ऐ
लिखाहै कि चौबीसवर्षकी अवस्थातक स्त्रीकाप्रसङ्ग न करना
हिये ऐसा विचारकर वहघरसे निकलखड़ाहुआ व मन्दराच
पहाड़परजाकर एकरमणीकस्थानमें बैठके परमेश्वरकातप
नेलगा जब बहुतदिन उसको तपकरतेबीते तब राजाइन्द्रने
नाइन्द्रासन छीनलेनेके डरसे पूर्वचित्तीनामअप्सरा महासुन्द
को उनकातपभङ्गकरनेवास्ते भेजा जबवहअप्सरा अपनासा
व समाजलियेहुये जिसजगहपरअग्नीध्र बैठाहुआ तपकरता
वहांजाकर नृत्यकरनेलगी और उसकेगानेवनाचने व बाजेका
ब्द सुनतेही अग्नीध्रकाध्यानछूटकर आंखखुलगई तबवहउस
रूपपर मोहितहोकर बौड़हेकेसमान उससेपूंछनेलगा हेमुनितु
किसबनमें तपकरतेहो वहांपरकैसे फल व पुष्पहोतेहैं तुम्हारे
रकेबाल बहुतसुन्दरहोकर छातियोंमें दो अनारऐसे ऊंचे २क
दिखलाईदेतेहैं व पूर्वचित्ती अपनेबालोंमें पुष्पजोगुहेथी उस
धपर भँवरेगूंजतेहुये देखकर राजाबोले यहसबतुम्हारे चेले वे
ढ़नेवास्तेआयेहैं व नाचतीसमय घुंघुरूकी झनकारसुनकर
नेलगे तुमवेदोंकास्वर बहुतअच्छा उच्चारणकरतेहो व शरीरमें
गर व चन्दनादिकसुगन्धलगे देखकरबोलेतुम्हारे तपोबनमें
कीमही इसीतरहपरहोतीहै जो तुम अंगमेंलगाये हो जिसके
उसमें नक्
गया उसबनमें इसीरूपके सबऋषि व मुनि
ध्यानकरनेलग देखनेकीअभिलाषहै सो कृपाकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्हिष्मती नामअपनी स्त्री को रथपरबैठालके कहा एकइतिहास हमतुमसेकहतेहैं सुनो एकबालक अज्ञानदरिद्री अपनेघरसे निकलकर किसी ऋषीश्वरकेस्थानपरगया सो उसऋषीश्वरनेदया कीराह उसबालकको ऐसीविद्यापढ़ाई कि उसे देवदृष्टिहोकर पृथ्वीकागड़ाहुआधन व सौकोसकीचीज़ दिखलाईदेनेलगी सोकुछदिनउपरांत उसबालकके माता व पिता ढूंढ़तेहुये वहांपहुंचक जबउसेपकड़केघरलेजानेलगे तबवहसमझा कि घरजानेसे यह गुणमेराभूलजायगा ऐसाविचारकर वहअपनेघरनहींजाताथाप माता व पिताने हठसेघरपरलाकर बिवाहउसकाकरदिया तबव लड़कासबगुणअपनाभूलकर संसारीजालमें फँसनेसे ऐसानष्ट आ कि बोझाढोकरअपनापेट पालनेलगा इतनी कथासुनकर र्हिष्मतीबोली वहऐसागुणअपनाछोंड़कर गृहस्थीके जालमें योंफँसा तबप्रियव्रतनेकहा वहीहालतो हमाराभीहै कि नारदमुनिकाज्ञानछोंड़कर संसारीजालमें फँसेहैं यहवचनसुनतेही बर्हिष्मतीबोली कि महाराजअब विरक्तहोनाचाहिये प्रियव्रतने जैसे यहबात स्त्री की सुनी वैसेराज्यबेटोंकोदेकर संसारीमाया छोंड़दी स्त्री समेतबनमेंजाकर हरिभजनकरकेमुक्तहुआ जो लोग अपको परमेश्वरकेशरणमें लेजातेहैं उनकोसुखहोता है॥

दूसरा अध्याय॥

प्रियव्रतके बेटे अग्नीन्ध्रका राजा होना व पूर्वचित्ती अप्सरासे बिवाह करना।

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जबराजाप्रियव्रत [illegible] उनस्त्रि वास्तेचलेगये तब अग्नींध्रउनकेबडेबेटेने [illegible]हीभलात[illegible]तेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थकेघूमनेसेजो एकपहियेकाथा पृथ्वीपरसातोंसमुद्र व सातों
प्रकटहोगये पहिलेजम्बूद्वीप लाखयोजनके घेरेमेंहोकर एक
जनचारकोसकासमझनाचाहिये और भरतखण्डादिक इसी
पमेंरहकर चारोंओरइसद्वीपका समुद्रखारेपानीकाहै दूसराप
रद्वीप दोलाख योजनकेघेरेमेंहोकर उसकेचारोंदिशामें ऊख
सकासमुद्र है तीसरा शाल्मलिद्वीप चारलाखयोजनके घेरे
करउसके चारोंओर मदिराकासमुद्रभरा है चौथाकुशद्वीप
ठलाख योजनकेघेरेमेंहोकर उसकेचौगिर्दघीकासमुद्रभराहै
चवां क्रौंचद्वीप सोरहलाखयोजनकेघेरेमेंहोकर उसकेचारों
दूधकासमुद्रहै छठवां शाकद्वीपबत्तीसलाखयोजन केघेरेमें
रउसकेचारोंदिशामें मट्ठेकासमुद्रभराहै सातवांपुष्करद्वीपचौं
लाखयोजनकेघेरेमेंहोकर उसकेचौगिर्द मीठेपानीकासमुद्र
हुआहै देखोपरमेश्वरकीमहिमासे इतनीबड़ी लम्बाई व चौ
भूगोलकीहै सो अज्ञानमनुष्यक्यासामर्थ्यरखताहै जो स्तुति
कीकरसकै सो राजाप्रियव्रतने एक २ द्वीपकाराज्यअपनेबट
बांटकर यशवतीनामअपनीकन्याकाव्याह शुक्राचार्य्यसे
या जिसकेपेटसे देवयानीकन्याउत्पन्नहुई जबरात्रिहोना
राज्यमेंबन्दहोगया तबस्वायम्भुवमनु व ब्रह्माने प्रियव्रतको
झाया कि जो बात परमेश्वरके मर्य्यादसेहोतीहै उसकोमेट
चाहिये तबउन्होंनेफिरावनारथकाबन्दकिया इतनीकथा
बोले हेपरीक्षित इनसातोंद्वीपकाराजा व मा
यानकरनेइतनेबड़ेराज्यको झंठासमझकर एक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जी व स्वायम्भुवमनुने बड़ेहर्षसे प्रियव्रतको माहिष्मतीपुरीमेंला
करराजगद्दीदी शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षितइसतरहसे राजाप्रिय
व्रतराजसिंहासनपरबैठकर हरिचरणोंमें ध्यानलगाके राज्यकर
नेलगा जबउसनेबिवाहअपना बर्हिष्मतीनाम विश्वकर्माकीबेटी
सेकियातबउसस्त्रीसे अग्नींध्रआदिदशबेटे व यशवतीनामकन्या
उत्पन्नहोकर उनमेंतीनपुत्रबालयतीहोगये वेदपढ़कर परमहंसों
कासत्सङ्गरक्खा व दूसरीस्त्रीसान्तनीनामसे जो देवतोंनेलाकररा
जाप्रियव्रतकोदियाथाउत्तम व तामस व रैवतनामतीनबेटेउत्पन्न
होकर चौदहों मन्वन्तरमें उनकीगिन्तीहुई सो प्रियव्रतनेहजारों
वर्षतक साथधर्म व प्रजापालनके राज्यभोगकर प्रजाकोपुत्रकेस
मानसुखदिया व हरिइच्छासे उनकीइन्द्रियोंकापराक्रम कम न
हींहुआ कुछदिनउपरांतराजानेविचारकिया यहसूर्यकारथआठों
पहर फिरनेमें दिन व रात्रिहोकर सुमेरुपर्वतकेओटमें जानेसेरात्रि
होजातीहै सोरात्रिको संध्या व पूजा व तर्पण वतप वदानादिकशु
भकर्म्ममें विघ्नहोकरअँधियारेमेंकुकर्म करनेसेअधर्महोताहैइस
लिये हमारेराज्यमें आठोंपहर दिनकेसमान प्रकाशबनारहकर
रात्रिनहोती तोअच्छाथा यहबातविचारकर राजाप्रियव्रतनेऐसा
रथएकपहियेका सूर्यकेसमानतैयारकराया जिसरथके प्रकाशसे
आठोंपहरउनकेराज्यमें उजियालारहकर रात्रिहोनाबन्दहोगया
और प्रियव्रतऐसेप्रतापी होनेपरभी आठपहर नारायणजीके
णोंमें चित्तलगायेरहताथा जबराजाने उसरथ[illegible]सा उनस्त्रि
चारोंतरफपृथ्वीकीपरिक्रमाकरके एकछ[illegible]हाभलात[illegible]तहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यणजीकीआज्ञानुसार संसारकीरचनाकरतेहैं उसीतरह तू भ
नकीआज्ञामानकर राजगद्दीपरबैठ व व्याहकरकेक्षत्रियोंको
त्पन्नकर जिसेहमदेखतेहैं कोईजीव उनकीआज्ञासे बाहरन
हता जो कुछ जिसकेभाग्यमें लिखाहै वैसाहोगा श्यामसुन्द
जिसे जो कामसौंपाहै उसकेसिवायवहदूसराकामनहीं करस
जिसतरह बैलकेनाकमें रस्सीनाथकर जिधरचाहै उधरलेज
उसकाकुछबश्य नहींचलता उसीतरहसबजीव जड़ व चैतन्य
गतिसमझनाचाहिये किसीकोऐसीसामर्थ्यनहीं है जो परमे
कीआज्ञामें तिलभरघटानेबढ़ानेसकै इसलियेवेदकीआज्ञानु
रसबकामकरनाउचितहै व होप्रियव्रत गृहस्थाश्रम कुछबुरानह
होता जो मनुष्य काम व क्रोध व अहंकार व लालच व मन व
न्द्रियोंको अपनेआधीनरखकर उनकेवश न होवे उसको बन
गृहस्थी दोनोंजगहकारहना बराबरहै व जिसनेउनको अपने
नहींकिया उसकोगृहस्थीछोड़कर वनमेंजाबैठनेसे क्यालाभ
गा कि शत्रुबलवान् अपनेसाथरखताहै जबतकमनुष्य काम
क्रोधादिकको अपनेवश्यनहींकरता तबतकपरमेश्वरउसको
मिलते व मनुष्यपरतीनऋण देवऋण व पितृऋण व ऋषिऋ
रहतेहैं जबतकइनतीनोंसे उऋणनहींहोता तबतकउसे विरक्त
ना न चाहिये व जबमनुष्य संसारीसुखभोगकर उसकास्वाद
फिर उससुखकीवहचाहनानहींरखता सो तुम
वैराग्यधारणकरना जबइसतरहसमझ
ध्यानकरन
जगद्दीपरबैठनाअंगीकारकिया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Lucknow. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वासमानो कि मनुष्यसंसारीतृष्णा रखने व स्त्री व पु
मोह करनेसे सदादुःखीरहकर जन्म व मरणसे नहीं
ीकारण हरिचरणोंमेंप्रेमनहींहोता व परमेश्वरसे विमुन उनका
जन्मअपनावृथा खोनेवालामनुष्य अवश्यनरकभोग राभाईब
ये तुम्हैं हरिभजन व स्मरणकरना उचितहोकर संसारतीं दूस
फँसनानचाहिये परमेश्वरको पहिंचानने व हरिभजन रानेवम
रायणनामलेने व भवसागरपार उतरनेवास्ते यहीं ताथा अब
ासमझो व कुत्ते व बिल्लीआदिक पशुयोनियोंकी यादक्योंकरेगा
वल पेटभरने व भोगकरनेका ज्ञानरहेगी दूसरीसखी जोबिरहमें
कर एकक्षणभी परमेश्वरको भूलनामनअपना श्रीकृष्णजीके
अच्छीतरह जानतेरहो कि जप व पूजेदिनअधिकमिलैमैंइसी
रकेतप व स्मरण समाननहींहोता देवा मैं सुनतीहूं कि प्रद्युम्न
में प्रसन्नहोकर छोड़देतेहैं व नारायणजान्दर व भक्तोंन हुआ
ोनेसेभी क्रोधनहींकरते उन्हैंसबजगहबर्त्तमानजानकर चिरं
नेकेवास्ते जाना न चाहिये जिससमय प्रेमपूर्वक उनकारप्राण
करो उसीसमय वे प्रकटहोकर रक्षाकरते हैं सो तुमलोग था वह
न्द्रिय व मनकेवश न हो और क्रोध व तृष्णा छोड़कर सारी
से सबजीवोंपरदयारक्खो व मनसा वाचा कर्मणासेहरि स्त्रि
आ यानलगाकर परमेश्वरका नाम स्मरणकरो तबतुमकने क
और मिलैगा कदाचित् तुमलोग मेरेकहनेकाविश्वास न स न क
णोंमें कहो कि हमारेसाथकाबालकहोकरहमैं ज्ञानसि उनस्त्रि
चारोंतर हांसेपाया सो मैं अपनेमनसे यहज्ञानहीभलातहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ा महिमाभूलगयेथे मायापरमेश्वरकी ऐसीबलवा
यराजीके कि गुरुपाठशालामें बैठेथे तबतकप्रह्लादमनमें यह
नकीआज्ञा कि जबगुरुयहांसेउठकर कहींबाहर जावें तबमैंप
त्पन्नकर बबालकोंका ज्ञान सिखलाऊं जबगुरुवहांसेउठका
हता जो ये तबप्रह्लादने लड़कोंकीओर देखकर यहविचारकि
जिसे जो क बाल्यावस्था होनेसे इनबालकोंको कामक्रोध मो
जिसतरह पाहै इससमयइनको समझाना ज्ञानकातुरंतप्रवे
उसकाकुछ नारदमुनिने युधिष्ठिरसेकहा कदाचि
गतिसमझनाचाहिये कि ज्ञानसिखलानेसे क्याप्रयोजनथा
कीआज्ञामें तिलभरघटाने दनेअपनेहृदयमें दया व धर्मरख
रसबकामकरनाउचितहै था कि जिसमें येलोगभी
होता जो मनुष्य काम व ावैंगे यहविचारकर जबप्रह्ला
न्द्रियोंको अपने आधीन तबसबबालक उसेराजकुमार
गृहस्थी चलेआये॥

छठवां अध्याय॥

पाठशालाके बालकों को प्रह्लादका ज्ञान सिखलाना॥

ादनेसबबालकोंको अपनेनिकट बैठाकरकहा कि
भीतकबालपन होनेसे तुमको कामक्रोध मोहलोभ
औरमनतुम्हारा संसारीमायाजालमें नहींफँसा इसी
सबातपर चित्तअपनालगावो वहकामनातुम्हें तुरन्त
सोमैं तुम्हारेकल्याणकेवास्ते एकउपाय बतलाता
परमेश्वरकेध्यानमेंलगाओ व इसबा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि संकर्षण उत्तर दियो । तुम्हरे हेतु गमन हमकियो ॥
आवनहम तुमसे कहिगये । ता कारण हम आवतभये ॥
रहिदो मास करैंगे रासा । पुरवैंगे सब तुम्हरी आसा ॥

जब बलरामजी गोपियोंसे प्रेमपूर्बक बातैं कहकर मन उनका
हलानेलगे तबएकब्रजबालाने कहा हेबलभद्रजी तुम्हाराभाईब
ड़ा कठोरहै हमलोग ऐसाजानतींतोकभी उससेप्रीति न करतीं दूस
रीबोली अयबलदाऊजी वहचित्तचोर यहांसिवाय गायचरानेवम
क्खन व दहीचुराकर खानेके दूसराप्रयोजन नहीं रखताथा अब
हां द्वारकापुरीका राजाहुआ हमगरीबिनियोंकी यादक्योंकरेगा
हमारानाम लेनेसे उसेलज्जा आतीहोगी दूसरीसखी जोबिरहमें
कलथी झुंझलाकरबोली अबमैंने मनअपना श्रीकृष्णजीके
कठोरकरलियाउन्हैंधन व स्त्रीप्रतिदिनअधिकमिलैमैंइसी
रमें प्रसन्नहूं दूसरीगोपीने कहा मैं सुनतीहूं कि प्रद्युम्न
सुन्दरका अपने पिताके समानसुन्दर व बलवान् हुआ
हज़ार एकसौ आठ उनकी स्त्रियां व सबसन्तान चिरं
दूसरीनेकहा अक्रूरनिर्दयी जो यहांआनकर हमारेप्राण
लेगया व उद्धवजी हमलोगोंसे योगसधवाने आयाथा वह
अच्छीतरहहैं दूसरीगोपीबोली अयबलराम जोतुमहमारी
ताको हँसीनमानकर सचसचबतलाओ कि श्यामसुन्दरकीस्त्रि
यां उनकीबातका विश्वासकरतीहैं या नहीं दूसरीब्रजबालाने क
हा उनमेंजो बुद्धिमान्होंगी वहकभी उनकीबातका विश्वास न क
रेंगी दूसरीसखीनेकहा हे बलदाऊजी कभीनन्दलालजी उनस्त्रि
योंकेसन्मुखहमारीभीचर्चा व यादकरतेहैं या नहींभलातुम्हींतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यकरो जिसकेवास्ते हमलोग लाजछोड़कर इतनादुःखपातीं स्नेहमैं इसतरहछोड़दियाहै जिसतरहसर्प केचुल तजकर फि सेकुछवास्ता नहींरखता उसनिर्दयीकी बातकहतेहुये मेरी फटजातीहै जबइसीतरह सबब्रजबाला अनेकबातकहिकरठं श्वासलेनेलगीं तब बलदाऊजीने उन्हेंधीर्यदेकरकहा आज मासीकी चांदनीरातमें तुमलोग अपना२ शृंगारकरआवो तो तुम्हारेसाथ रासलीलाकरैं यह बातसुनतेही सबब्रजबालोंने २ घरजाकरशृंगारकिया जब संध्यासमय बलभद्रजी भूषणा व बस्त्रपहिनकर वृन्दावनकी कुंजोंमेंगये तबराधा क गोपियांभी पहुंचीं॥

चौ० ठाढ़ीभईं सबै शिरनाय। हलधर छबि बरणी नहिंजाय॥
कनकबरणनीलाम्बरधरे। शशिमुख कमल नयनमनहरे॥
अंगअंग सब भूषणसाजै। देखत कामदेव अति लाजै॥

रेवतीरमणा की छबिदेखतेही सबब्रजबालोंने उनकेचरणों गिरकर बिनयकिया हेदीनानाथ अपने बचन प्रमाण रासलं कीजिये यहसुनतेहीजैसे बलरामजीने हूंकियावैसे स्थानरा लाका यमुनाकिनारे तैयारहोकर शीतल मन्द सुगंध हवा लगी व अनेकरंगकेबाजे व भूषणा व बस्त्रादिक वहां प्रकट तब सबब्रजबालोंने लाजछोंड़कर मृदंग व करताल आदिक उठालिया व गतिनाचकर अपनेगाने व बजाने व भावबतल बलदाऊजी को रिझानेलगीं जबरेवतीरमणाभी उनकासच्चा करउनकेसाथ गाने व नाचनेलगे तबबरुणादेवताने उत्त केपीनेवास्ते भेजदी सो बलदाऊजी गोपियोंसमेत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आनन्दमचानेलगे उससमय देवतोंनेअपने२ बिमानोंपरसे बल
ाऊजीपरफूल बरसाये व चन्द्रमाने तारागण समेतरासमण्डल
का सुखदेखकर उनपरअमृतकी बर्षाकी व जितनेजीव जड़ व चैत
य वहांपरथे वहपरमानन्द देखकर अतिप्रसन्नहुये व रासलीला
खनेवास्तेयमुनाजलबहनेसेथम्हिकरचलनाहवाकाबंदहोगया
सीआनन्दमें रेवतीरमणने जलबिहारकरना बिचारकर यमुना
नीकोपुकारके कहातुमहमारे निकटआनकरहमैं स्नानकराओ व
नब यमुनाजीने उनकीआज्ञा नहींमानी तब बलरामजीने क्रोध
हलअपना यमुनाजीमें डालकरपानी उसकाअपनेपास खींच
या व उसमेंजलबिहारकरके मांदगी जागनेकी मिटाई उसस
यमुनाजी ने स्त्रीरूप डरती व कांपतीहुई हलधरजीके पास
नकर विनयकिया हे महाप्रभु मैंने तुमको नहींपहिंचाना कि
प शेषजीका अवतारहैं मेराअपराध आपक्षमाकरके अभय
दीजिये जब इसीतरह यमुनाजीने बहुतस्तुति बलदाऊजी
की तबवह अपराध उसकाक्षमाकरके गोपियोंसमेत इसतरह
मुना जलमें बिहारकरतेरहे जिसतरह हाथी पानीमेंहथिनियों
साथनहाकर प्रसन्नहोताहै ॥

दो० कबहूं निर्मल जल बिषे कबहूं यमुनातीर। गोपिन सँग क्रीड़ाकरैं श्रीबलराम सुधीर ॥

जबरेवतीरमण जलविहारकरके गोपियोंसमेत बाहरआयेतब
रुणादिक देवतोंने उत्तम२भूषण व बस्त्र व मोतियोंकी मालाका
हांढरलगादियासो बलरामजी व गोपियोंने मनमाना भूषण व
स्त्रपहिनलिया व गलेमें फूलोंकेगजरे डालकर बनविहरतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यकरो जि... स वहांपर यमुनाजल टेढ़ाबहताहै जबइसीतरह ब...
... दोमहीने चैत्रवैशाख वृन्दाबनमें रहकर नित्यब्रज...
केसाथ रासविलास व जलबिहारकरके उन्हैंसुखदिया व दि...
नन्द व यशोदा आदिकको श्यामसुन्दरकी चर्चासे सुखदे...
रकाजानेकी इच्छाकी तबनन्दादिकने अनेकतरहकी बस्तु...
सुंदरके वास्तेदेकर रेवतीरमणको बिदाकिया उससमय गो...
रोकरकहनेलगीं हेबलदाऊजीहमैंभी अपनेसाथलेचलो...
मणउनलोगोंको धीर्यदेकर द्वारकाकोचले व थोड़ेदिनों...
न्दपूर्वकद्वारका पहुँचकर सबहालवहांकाकेशवमूर्तिसेकह...

छासठवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका राजा पुण्डरीक मिथ्या वासुदेवको मारना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित उन्हींदिनों पुण्डरीकनाम...
तदेशका राजाबड़ाप्रतापीहोकर काशीपुरीमेंरहताथाजबउ...
इच्छाहुई कि मैंअपनेकोबासुदेवनाम चतुर्भुजीरूपबनाकर...
रीजीवोंसे अपनीपूजाकराऊं तबउसने दोभुजाकाठकी अपने...
मेंलगालिया और पीताम्बर व वैजयन्तीमाला व कुण्डल...
माला श्यामसुन्दरकेसमान पहिरनेलगा व शंख व चक्र व...
पद्मउनके शस्त्रबाँधकर काठकागरुड़ चढ़नेवास्तेबनवाया व...
जा व प्रजा पुण्डरीकका डरमानकर उसे वासुदेवकेसमान पू...
उनपर वहप्रसन्नहोताथा व जोलोगअपना धर्मबिचारकर...
पूजानहींकरतेथेउनकोदुःख देताथा यहदशाउसकीदेखक...
...ेग आपसमें यहचर्चा करतेथे देखो एकबासुदेवतो श्री...

...0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शकरालिया कि उसनेकभी अपनादर्शननहींदिया जबयशोद
ीतरह अनेकबातें कहिकररोनेलगी तबबलदाऊजीने उसको
मझाकर धीर्यदिया जबबलभद्रजी संध्यासमय वृन्दाबनगांव
निकले तोक्यादेखा कि राधाआदिक सबब्रजबाला तनुक्षीणम
मलीन श्यामसुन्दरकेध्यानमें जिधरातिधरफिरतीहैं व सिवाय
नकर वचर्चाबालचरित्रमोहनप्यारेके दूसराकुछप्रयोजनउनको
हींहै जैसेराधाआदिक गोपियोंने बलदाऊजीको अकेलेमें देखा
सिझुण्डका झुण्ड उनकेपासआनकर दण्डवत्करके पूंछनेलगीं
हेबलरामजी तुमकबआयेहमारेप्राणनाथ कभीहमलोगोंको
करतेहैं या नहीं जबसेहमैं वृन्दाबनछोड़कर आपमथुरागये
एकबेर उद्धवकेहाथ योगसाधनेका संदेशाहमकोभेजा था
कुछसुधिनहींलिया अबसुनाहै कि समुद्रकेटापूमें द्वारका
साकरवहांरहतेहैं अबहमगरीबिनियोंको क्योंयादकरेंगे यह
कर दूसरी सखीबोली अयप्यारी अबउन्हैं क्याप्रयोजनहै जो
गदीछोड़कर यहांआवैं ॥

चौ० वह काहूके नाहीं मीत। मात पिता की छोड़ी प्रति ॥
राधा बिन नाहिं रहतेघड़ी। सो वह है बरसाने पड़ी ॥
दो० सखी एक या बिधिकहै सुनो कृष्णके भाय। जबलौं तुम ब्रजमेंहतेरहे चरावतगाय ॥

दूसरी ब्रजबालानेकहाअयप्यारियो हमलोगोंने लोकलाज
कुलपरिवारछोड़कर उससे प्रीतिलगाकर क्यासुखपाया उससे
इ अपनीभलाईकीआशा मतरक्खो व दूसरीगोपी बोली द्वा
काकीस्त्रियांउनका बिश्वास किसतरह करतीहोंगी दूसरीनेकहा
ऐसासुनतीहूं कि उन्होंने द्वारकापुरीमें जाकरसोलहहजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौआठ महासुन्दरी राजकन्यों से बिवाह अपनाकियाहै व
नकेसाथ आठोंपहर प्रीतिकरतेहैं अबउन्हैं छोड़कर हमगँवारि
पासक्योंआवेंगे ॥

दो० सोरहसहसकुमारिका सुन्दरि रूपनिधान। दशदशसुत जिनके भये श्रीयदुनाथ समा

दूसरी गोपीबोली अयसखी अबश्यामसुन्दरका पछि
करना उचितनहींहै और जो उद्धवजी कि निर्गुणरूपका ध
बतलागयेहैं उसीपर बिश्वासरखकर धीर्यधरो दूसरीसखी
श्वासलेकर बोली अयप्यारी मुझेवह सांवलीसूरति व मुरली
धुनिनहींभूलती किसतरह धीर्यधरूं ॥

दो० नहिंजानों सखिज्ञानको कौनदेशकी रीति। मानहुँ कबहूं नहिंहती ब्रजबासिनसों प्रीति ॥

दूसरीसखी बिरहकीमातीहुई बोली अयबलदाऊजी देख
हनप्यारेने इतनेदिनबीतनेपरभी यहनहींबिचारा कि हमारेबि
में गोपियोंकी क्यादशाहोतीहोगी संसारमें जोकोई पशुपक्षी
लताहै उसकोभी इसतरह नहींभूलता यह कठोरताई उनकी
कर मैंनेजाना कि उनकाअन्तःकरणभी उन्हींके समानका
नहींतो वह दीनदयालु व गोपीनाथ कहलाकर ऐसाकठोर
करतेजबगोपियां इसीतरहपरअनेक बातकहकर रोतेरोतेअचे
गईं तबरेवतीरमणने उन्हेंबहुतसा धीर्यदेकरकहा क्यों इतन
नकरतीहो श्यामसुन्दर तुम्हारीअतिप्रीति रखकर तुमकोआ
हरयादकियाकरतेहैं यहबचनसुनतेही सबब्रजबाला चैतन्यह
उनमेंसेएकसखीबोलीअयप्यारियोरोनाछोड़करजोकहूसो

दो० हलधरजू के परसो पांव। सदारहो इनहींकीछांव ॥
[illegible] ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

म यदुकुलमें अवतारलेकर बीचद्वारकापुरीके बिराजके भग
राजाअपनेको बासुदेवरूपबनाकर पुजवानेचाहताहो ंसा
में हमलोगकिसेसचासमझैं किसेझूंठा जबराजापुण्डरी का
नी पूजाकरानेसे अभिमानउत्पन्नहुआ तबएकदिन अप न
ामें बैठकरबोला श्रीकृष्णनाम कौनद्वारकामेंरहताहै जिसेला
सुदेवकहतेहैं देखोमैंपृथ्वीकाभारउतारनेवास्ते अवतारलेकर
लाकरताहूं और बासुदेवयादवकाबेटा मेरावेषबनाकर संसारी
ोंसे अपनीपूजाकराताहै इसलिये उसकेसाथ लड़नाचाहिये
कहकरराजापुण्डरीकने एकब्राह्मणकोबुलाकेकहा तुमद्वार
ेंजाकर श्रीकृष्णजीसेकहदो कि मेरावेषछोड़कर हमारीआ
ालनकरैं नहींतोहमारेसाथ आनकरलड़ैं जबयहचितनहीं है
ब्राह्मण द्वारकामेंपहुंचा व राजाउग्रसेनकेसामेंनलायाहै वह
द्वारकानाथने उसब्राह्मणको दण्डवत्करके पूंछा कहा द्विजवर
कहांसेआये अपनेसमाचार बतलाओ यहवचनसुनतेही उसने
णने हाथजोड़करकहा हे महाप्रभु मैंराजापुण्डरीकका कुछ
ाकहनेवास्ते काशीसेआयाहूं परवहकहतेहुये लज्जामालू
तीहै व दूतकोसंदेशाछिपाना न चाहिये इसलिये अपनेप्रा
रक्षापाऊंतोकहूं श्यामसुन्दर बोले तुम निस्संदेहकहो इस
म्हारा कुछ अपराधनहींहै यहवचनसुनकर ब्राह्मणदेवतानेक
दीनानाथ राजापुण्डरीकने आपकोयहसंदेशाकहलाभेजा
कि त्रिभुवनपति जगत्का उत्पत्तिकरनेवाला मैंहोकर आ
नीसे भोग व बिलासकरताहूं औरपृथ्वीकाभारउता हतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौआठ रलियाहै शंख व चक्र व गदा व पद्म मेरेपासरहकर
कसाथ चढ़ताहूं तुममेरावेषबनायेरहकर अपनेको बासुदेव
पासकटकरतेहौ और तुमत्रिभुवनपतिहोते तोराजाजरास
भागकर द्वारकामें क्योंरहते अबतुमको उचितहै कि
चक्र व गदा व पद्मादिकशस्त्रबांधना व बासुदेवनाम अपना
करना छोड़कर मेरीआज्ञामेंरहो नहीं तो यदुबंशियोंसमेत
मारकर पृथ्वीकाभारउतारूंगा तबतुम जानोगे कि सच्चाबा
कौनहोकर झूठावेषकिसनेबनायाहै तुमआजतकनहींजान
अलखअगोचर निरंजनकारूप त्रिलोकीनाथमैंहूं सबऋषि
निमेरेनामपरयज्ञ व दान जप व तपकरकेबड़ाईपातेहैं व मैंब्र
त्ति व बिष्णुरूपसेपालन व महादेवरूपहोकर ज
हनप्यारेने इत
व हमनेमच्छरूपहोकर वेदको समुद्रसेबाह
में गोपियोंक
च्छपरूपसे मन्दराचलपर्ब्बत अपनीपीठपर उठाय
ल
ाराहरूपधरकर पृथ्वीकोपातालसे निकाललाये व नरसिंह
तारलेकर हिरण्यकशिपुदैत्यकोमारा व बामनरूपधरकर
बलिसे पृथ्वीदानलिया व रामअवतारलेकर रावणकाबध
मेरा यहीकामहै जब २ दैत्य व अधर्मीराजा हरिभक्तों को
देतेहैं तबतब मैं अवतारलेकर पृथ्वीकाभार उतारताहूं इसी
अबभी अवतारलियाहै कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द बड़ेहर्षसे
संदेशासुनतेथे परदूसरेयादवबंशी यहमिथ्यावचनसुनकर
णको हँसनेलगे व एक यादवबंशी क्रोधितहोकरबोला
तम क्या मिथ्याकहतेहो कोईदूसरा यह झूंठीबा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पोतीकाबिवाह तुम्हारेपौत्रसेकरूंगा जबरुक्मने यब
र थोड़ेदिनउपरान्त एकब्राह्मणकेहाथ सामग्रीतिलकके
मेंभेजदी तबश्यामसुन्दरने बड़ेहर्षसे वहतिलक अनिरे
ढ़ाया व उसब्राह्मणको द्रव्यादिकदेकरबिदाकिया व राजा
नसेआज्ञालेकर श्याम व बलराम बड़ेधूमधामसे अनिरुद्ध
ाहनेगये जबबरात भोजकटनगरके निकटपहुँची तब रु
जने नेवतहारी राजोंसमेत आगेसेलेनेगये व सबबरातियों
ड़आदरभावसे नगरमेंलेजाकरजनवासादिया व यथायोग्य
कोसन्मानकरके दुल्लहको मड़येमेंलेगया जबविधिपूर्वक पोती
ाकन्यादानदेकर रुक्मनेबहुतसाद्रव्यादिक दहेजमेंश्यामसु
ोदिया तबराजाभीष्मकने जनवासेमेंजाकर श्रीकृष्णजीसे
महाराजबिवाहहोचुका अबयहांअधिकरहना उचितनहीं है
सवास्ते रुक्मनेजिनराजोंको अपनेयहांनेवतेमें बुलायाहै वह
ापसेशत्रुतारखतेहैं ऐसा न हो जोकोईउत्पातकरैं यहकहकर
जाभीष्मक अपनेघरचलेगये व केशवमूर्त्तिने रुक्मिणीकोसबये
त्तांतसुनाकरचलनेवास्तेकहा तबवहरुक्मसेबोलीहेभाईतुम्हारे
वतेवालेराजा मेरेप्राणनाथसे शत्रुतारखते हैं इसलिये हमको
दाकरदेव नहींतो शुभकार्य्यमें बिघ्नहुआचाहताहै यहसुनकर
क्मबोला हेबहिन तुमकिसीबातकीचिन्तामतकरो मैंपहिलेनेव
वाले राजोंकोबिदाकरआऊँ पीछेजोतुमकहोगी सोकरूंगा जब
साकहकर रुक्मसबराजोंको बिदाकरनेवास्ते उनकेडेरोंपरगया
बकलिंगदेशकेनृपति और कईराजोंने रुक्मसेकहा देखेगए
न्धर्व बिवा हतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लरामको इतनाद्रव्यदहेजमेंदिया परउन्होंने
औआठ राह कुछनहींसमझा एकतो इसबातका भाखहम
केसाथ दूसरेउसदिनकीकसक हमारेमनसेनहींभूलती जोबल
पासन रुक्मिणीहरणमें तुम्हारीगतिकीथी सो हमलोग या
यों को युद्धमेंजीतनेनहींसक्ते तुमबलदाऊजीको हमारे
चलादेव तो चौपड़मेंसबधनउनकाजीतलेवें व श्यामसु
करनाड़ना कुछप्रयोजननहींहै जबयहवचनसुनकर रुक्मको
मारबातयादकरके क्रोधउत्पन्नहुआ तबवहांसेउठकर कुछ
कौचारकरताहुआ बलभद्रजीकेपासजाकरबोला महाराज
अ सबराजोंनेदण्डवत्करके चौपड़खेलनेवास्तेबुलायाहै
निसुनकर जबबलदाऊजी रुक्मकेसाथ राजोंकीसभामेंआये
उन्होंने सन्मानपूर्वकबैठाकर उनसेकहा हमलोगआपसे चौ
खेलनाचाहतेहैं इतनाकहकर उन्होंनेचौपड़बिछादिया व रु
बलरामखेलनेलगे जबपहिलेरुक्मने दशबाजीबलभद्रसे
लिया और वहबहुतद्रव्यहारगये तबरुक्मनेअभिमानपूर्वक
रामसेकहा सबधनहारगये अबकाहेसेखेलोगे औरकलिंगदे
राजाभीयहबातकहकरहँसनेलगा तबबलरामजी लज्जितहो
दशकरोड़रुपयेकी बाजीलगाकरबोले ॥

दो० कहेउहमारे मनबिषे जोनहिं कपटकुभाव। तौ अबकी हमजीतिहैं निश्चयकरि यहदाव

जबवहबाजी रेवतीरमणजीतकर रुपयाउठानेलगे तब
जाअधर्मसेबोले रुक्मनेबाजीजीती यहबातसुनकरबलराम
रुक्मकोदेडाला दूसरीबाजी अर्बरुपयेकीलगाकर
तुम क्या।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ाऊजीनेपांसाफेंका जबवहबाजीभीसंकर्षणजीते तब
ाझूंठबोलकर कहनेलगे रुक्मनेजीताहै व कलिंगदेशके
सनेलगा जबयह अधर्म्मसबका देखकर बलरामजीको
आ तबरुक्मअभिमानसे चिल्लाकरबोला सुनोबलभद्रजी
चकहनेसे क्यों क्रोधकरतेहो तुमनेजन्म अपना ग्वालोंके
नमेंरहकरबिताया राजसीखेलचौपड़ खेलनेका तुमक्याज
ुआंखेलना व शत्रुओंसेलड़ना राजाओंका धर्महै॥

दो० बसे नन्दघर जायकै रहे चरावतगाय। हम राजन की सभाको जानतनहीं स्वभाय॥

यहवचनसुनकर रेवतीरमणको ऐसाक्रोधहुआ जैसेपूर्णि
ो समुद्रकीलहरबढ़तीहै परउन्होंनें रुक्मिणीकेसंकोचसे क्र
पनाक्षमाकिया व सातअर्बरुपयेकी फिरबाजीलगाकर खे
वहबाजीभी बलदाऊजीनेजीती व सबराजाझूंठबोलकर रु
काजीतनाबतलानेलगे तबयहआकाशबाणीहुई कि बाजीसं
र्षणनेजीतीहै तुमसबक्योंझूंठबोलतेहो जबआकाशबाणी हुई
परभी सबलोगअधर्मसे बलभद्रजीकोझूंठाबनानेलगे तबबल
ाऊजी महाक्रोधितहोकर रुक्मसेबोले तैंनेनातेदारीकरनेपर
ी हमसेशत्रुताईनहींछोड़ी अबचाहेभौजाईबुरामानैं या भला
मकोबिनामारे नहींछोड़ूंगा यहबातकहकर रेवतीरमणने सब
जोंकेसामने अपनेहल व मूसलसे रुक्मकोमारडाला जबक
लिंगदेशकाराजा यहहालदेखकर वहांसेभागचलातबउसकोभी
छाड़कर घुस्सोंसेदांत तोड़डाले व दूसरेराजा जो उससभामेंझूंठ
लकरबलरामजीको हँसतेथे उनमेंकिसीकाहाथ [illegible]
न्धर्व बिवा[illegible]तहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...नाक मारेघुस्सोंकेतोड़दिया यहदशादेखतेही औ
यौआठअपनेप्राणकेडरसे भागगये व जबबलदाऊजीने श्या
नकेसाथपासजाकर सबवृत्तान्तवहांकासुनाया तबकेशवमूर्त्ति
पासकर्मीने रुक्मकाअधर्म्मसमझकर अपनेभाईको कुछ
...और वहांसेदुल्लह व दुलहिन व रुक्मिणी व बरातियों
चक्र...नेसाथलेकर द्वारकाकोचले ॥

करन...याबिधि पौत्रबिवाहिकै माखन प्रभु यदुनाथ । आनँदसों पहुँचे सदन सकलसेनलै साथ ॥

मार...जबउनके आनेकासमाचार द्वारकाबासियोंनेसुना तबस
कै...डेगातेबजाते आगेसेआनकर दुल्लह व दुलहिनको राजम
अल...लेगये व घरघरमंगलाचारहोनेलगा व श्याम व बलराम
नि...उग्रसेनसेहाथजोड़करकहा महाराज तुम्हारेपुण्यप्रतापसे
...निरुद्धको ब्याहकरलेआये व रुक्माग्रजको जोबड़ाअधर्मीथा
...रडाला यहबातसुनकर राजाउग्रसेनअतिप्रसन्नहुये ॥

बासठवां अध्याय ॥

अनिरुद्ध व ऊषाकी कथा ॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर शुकदेवजीसेविनयकि
...हे महाराजदयालुहोकर अब अनिरुद्धहरणकीकथा सुनाइये

दो० कहौप्रकट समझायकै सकल ऋषिनकेराय । श्री माखनप्रभुकी कथा श्रवणन सदासोहाय

यहसुनकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित द्वारकानाथकीद
ऊषा व अनिरुद्धकीकथाकहताहूं सुनो ब्रह्माजीकेबंशमें क
जीहोकर उनकापुत्रहिरण्यकशिपु बड़ाबलवान्हुआ जिस
...मलिया व प्रह्लादकाबेटा वैरोचनहोकर उ
...तुम क्यों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हांराजाबलि ऐसाधर्मात्माहुआ जिसकायशआजतक
छायरहाहै व राजाबलिकेयहां सौपुत्रहोकर बाणासुरबड़ भग
सकामहाबली व सत्यबादी व धर्मात्माथा सोवहशोणित ंसा
श्चर्यसेराज्यकरके नित्यकैलासपर्वतपरजाकर पूजा व त ा
देवजीकाप्रेमपूर्बककरताथा एकदिन बाणासुर मृदंगलेक न
मसे महादेवजीके सामनेनाचने व गानेलगा तब भोलानाथ दा
सन्नहोकर पार्बतीसमेत उसेदर्शनदेकर कहाहेबेटातेराप्रेम
रमैंअतिप्रसन्नहुआ जोइच्छाहो सोबरदानमांग बाणासुर
कोसाष्टांग दंडवत्करके विनयकिया हे महाप्रभु आपनेदया
कर दर्शनदिया तो मुझे पहिले अमरकरदीजिये फिर चौद
ककाराज्यदेकर ऐसापराक्रमदीजिये जिसमें कोईदेवता अ
कभीमुझेजीतने न सकैं॥

॰ बहुतभांति विनतीकरूं हौंदासनकोदास। तुम ठाकुर तिहुँलोकके पुरवतसबकी आस॥

यहवचनसुनतेही शिवजीनेहज़ारभुजा बाणासुरकोदेकरकह
मने तुझेइच्छा पूर्बकबरदानदिया अब तू अचल राज्यकरतुझे
ईनहींजीतसकैगा जबमहादेवका बरपानेसे बाणासुरकेहजार
जाहोगईं तबवहउनसे बिदाहोकर हँसताहुआ राजमन्दिरपर
आया व अपनीभुजाके बलसेसंसारीराजों व सबदेवतोंकोजीतक
तीनोंलोकका राज्यकरनेलगा व नित्यकैलासपर्बतपर जाकर
विधिपूर्बकपूजन महादेवजीका करताथा व सबदेवते उसकेआधी
रहतेथे व शिवजीने बाणासुरसे यहकहाथा कि हम तेरेनगरकी
राकरैंगे इसलिये महादेवकेगण शोणितपुरमें गन्धर्ब विवाह करतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौआये जबबाणासुरसे कोईशत्रुलड़नेवालानहींठहरा व
कसाथ उसकी बिनालड़ेखुजलानेलगीं तबवहबड़े २ पर्वतउ
पासक पहाड़ोंपरपटकके चूरकरनेलगा तिसपरभी उसकाबोध
ा तबउसनेबिचारा कि बिनायुद्धकिये सबभुजामुझको
चक्रूमदेतीहैं इसलिये महादेवजीकेपासचलकर किसीश
करनपूंछूं ऐसाबिचारकर कैलासपर्वतपरचलागया व शिव
मारनयकिया हेमहाप्रभुतीनोंलोकमें कोईऐसाबलवान् दिख
कैहींदेता जोमेरेसाथलड़नेसकै जबमैंदिक्पाल हाथियोंसे
अत्या औरवहभी हमसेहारमानगये तबमैंनेबड़े २ पहाड़ोंको
निरकरचूरकरडाला सोबिनायुद्धकिये सबभुजामुझे बोझ
महोतीहैं कोईलड़नेवालाबतलाइये जिससेयुद्धकरूं॥

चौ० यद्यपि यह जानों मनमाहीं। तुमसों और बली कोउनाहीं॥
तेहिकारण त्रिभुवन के नाथा। तुमहीं युद्धकरौ ममसाथा॥

यहअहंकारसुनकर महादेवजीनेबिचारा कि मैंनेतोइस
कजानकर ऐसाबरदानदियाथा सोयहअज्ञान मुझीसेलड़
या इसलिये इसकाअभिमानतोड़नाउचितहै ऐसाबिचारक
वजीबोले हेमूर्खअभिमानी तूमतघबरा अभीतकतोतीनोंलो
ऐसाकोईबलवान्नहींहै जोतेरेसाथ लड़नेसकै परथोड़ेदिनों
कृष्णजीअवतारलेकर तुझसेलड़ैंगे यहबचनसुनतेही बाणा
प्रसन्नहोकर महादेवजीसेपूछा महाराजमुझे उनकेअवता
हाल किसतरहमालूमहोगा तबभोलानाथने एकध्वजा
ष्ट तुम क्या इसध्वजाको लेजाकर अपनेराजमन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वड़ीकरदे जिसदिनयहध्वजा आपसेटूटकरगिरपड़े उसदि
नियो कि मेराशत्रुउत्पन्नहुआ बाणासुरवहध्वजालेकर ब
अपनेमकानपरचलाआया व उसेराजमन्दिरपरखड़ाकरा
दाउसेदेखकर अपनेशत्रुउत्पन्नहोनेकी इच्छारखताथा
बर्षबीतेबाणासुरके बाणावतीबड़ीस्त्रीसे एककन्याऊषान
तसुन्दरीउत्पन्नहुई तबउसनेप्रसन्नहोकर ब्राह्मण व याचक
हुतसादान व दक्षिणादिया जबऊषासातबर्षकीहुई तबबार
ने उसकोसहेलियोंसमेत कैलासपर्वतपर महादेव व पार्वतीवे
विद्यापढ़नेवास्तेभेजदिया सोऊषानेवहांपहुँचकर भोलान
पार्वतीकोदण्डवत्करके विनयकिया हे त्रिलोकीनाथइसदा
विद्यादानदेकर संसारमेंयशलीजिये तबमहादेव उसेविद्य
लगे कुछदिनोंमेंऊषा उनकीकृपासेसबशास्त्र व गाने व बजा
मेंऐसीनिपुणहोगई कि अनेकतरहकाबाजाबजाकर छःराग व
त्तीसरागिनीगानेलगी एकदिनऊषाबीणाबजाकर पार्वतीजी
साथसांगीतरागगातीथी उससमयशिवजीने पार्वतीसेकहा हे
णप्यारी जिसकामदेवकोमैंनेजलादियाथा उसनेश्रीकृष्णजी
यहांप्रद्युम्ननामसेजन्मलियाहै ऐसाकहकरशिवजीपार्वतीको
थलिये गङ्गाकिनारेचलेगये व बड़ेप्रेमसेउनकेसाथस्नान व ज
विहारकिया व पार्वतीजीको अपनेहाथसेउत्तम २भूषण व बस्त्र
हिनाये जबजगन्माताबीणाबजाकर सांगीतराग उनकोसुनाने
गीं उससमयमहादेवजीनेप्रसन्नहोकरबड़ेप्रेमसेपार्वतीजीकोग
लगालिया यहहालदेखकर ऊषाकोभीइस[illegible]न्धर्वविवा[illegible]तहै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व्याहभीहुआहोता तो इसीतरहअपनेपतिसे विहारक
बिनाचन्द्रमाके शोभानहींदेती वैसेस्त्रीबिनापुरुषके
हींमालूमहोती उसकेमनकाहाल पार्वतीअन्तर्यामीने
उसेअपनेपासबुलाया व ऊषाकोधैर्य्यदेकरकहा अयबे
चक्रमी तुझेस्वप्नेमेंआनकरमिलेगा तू उसेढुंढ़वाकरभोग
करनकीजियो जबऐसाकहकर पार्वतीजीनेउसकोबिदाकिय
मारउन्हैंदण्डवत्करके राजमन्दिरपरआई तबबाणासुरने
केरत्नजटितमें उसकोसहेलियोंसमेतरक्खा जिसतरह
अकाप्रकाश द्वितीयासेपूर्णमासीतकबढ़ताहै उसीतरहऊषा
निर्षतकबढ़करऐसीसुन्दरी व तरुणीहुई जिसकेसामनेपूर्णम
चन्द्रमा धूमिल दिखलाईदेनेलगा एकदिनऊषाने सोरह
ङ्गारकिये सहेलियोंकोसाथलिये अपनेमाता व पिताकेपासज
दण्डवत्किया तबबाणासुरनेउसेबिवाहनेयोग्यदेखकरबि
अबयहब्याहनेयोग्यहुई यहसमझकर उसनेबहुतदैत्य व रा
को उसकेमहलकी रक्षाकरनेवास्तेबैठादिया जिसमेंकोईपु
हांजाने न पावै व ऊषाअपनेस्वामीकेमिलनेवास्ते आठोंप
जा व ध्यानपार्वतीजीकाकरनेलगी सोएकदिनऊषाने रा
शय्यापरअकेलीबैठीहुई यहबिचारादेखैं राजामेराबिवाह
रतेहैं जबवहइसीतरहबिचारतीहुई सोगई तोस्वप्नमेंक्यादेख
एकपुरुषकिशोरअवस्था श्यामरंगचन्द्रमुख कमलनयन
रजड़ाऊमुकुटशिरपरधरे किरीटकुण्डल व पीताम्बरपहि
तुम क्या ऊसाजे मोतियोंकीमाला गलेमेंडाल

Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उपरनारेशमीओढ़े सामनेआनकरखड़ाहुआ ऊषावहमू
तेहीलज्जितहोगई उसउसपुरुषने प्रेमपूर्वक बातोंसे
कीछुड़ाकर अपनेगलेसेगालिया तबवहसुन्दरी उसम
र्त्तिकोअपनीशय्यापरबैठाकर प्रेमकीवार्त्ताकरनेलगीजैसे
हाथफैलाकर कमलनयनसेमिलनेचाहा वैसेआंखउसकी
गई व मनकीइच्छामनहींमेंरही॥

दो० जागपड़ी शोचतखड़ी भयोपरमदुख ताहि। कहांगयो वह प्राणपति देखतचहुंदिशिजा

जबऊषाने जागनेउपरान्त उसपुरुषकोनहींदेखा तब ब्या
होकरकहनेलगी अबमैं अपनेप्राणप्यारेको किसतरहदेखूं
चित् न जागती तो किसतरहवहमेरामन चुराकरभागजाता
जोरातबाक़ीहै वहकैसेकटैगी॥

चौ० बिन पीतम जिय निपटअचैन। देखे बिन तरसत हैं नैन॥
कान सुनों चाहत हैं बैन। कहांगये पीतम सुखदैन॥
जो स्वप्ने में फिरि लखिलेऊं। प्राण साथ उनके करिदेऊं॥

जबऊषा इसतरहअनिरुद्धको स्वप्नेमेंदेखकर उसपरमोहि
होगई तब उसरूपकाध्यान हृदयमेंरखकर शय्यापरपड़रही व
सीशोचमेंनिद्राउसे न आई जबपहरदिनचढ़ेतकनहींउठी तब
सकीसहेलियां आपसमेंकहनेलगीं आज क्या कारणहै जोरा
कन्यासोकर नहींउठी जबवहसबघबराकर ऊषाकासमाचारलेने
वास्ते शीशमहलमें गईं तबउसेरोतीहुई ब्याकुलदेखकर बहुत
समझाया परविरहकीमारीहुई नहींउठी सबसहेलियोंसे चित्ररे
खा कुम्भाण्डकीबेटीने ऊषाकाहालसुना तबउसने राजकन्याके
महांजाकर क्यादेखा कि ऊषाछपरखटमें ले
न्धर्व बिवा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सकीदेखतेही चित्ररेखाने घबराकरपूछा अयप्यारी
तुमकोहुआ जोइतनारोतीहो अपनाभेद मुझे
उसकाउपायकरूं मुझेतुम्हारीदयासे यहसामर्थ्यहै
लोकमेंजाकर जोकामकिसीसे न हो वहकरलाऊं
नदेनेसे शारदादेवी आठोंपहर मेरेसाथरहती हैं उनकी
ह्मादिकदेवतोंको बशकरलेनेसक्तीहूं मेरागुणअबतक
हींमालूमथा आजतुम्हारी यहदशादेखकर अपनाह
कहा ॥

अब तू कह सब अपनी बात । कैसी कटी आजकी रात ॥
मुझसे कपटकरो मतप्यारी । पूरणकरिहौं आश तुम्हारी ॥
अंग अंग व्याकुल महा मानों लगोहै प्रेत । कहौ कपट समझायकै कासों बाढ़्यो हेत ॥

ऊषायह प्रेमपूर्वकबातसुनकर छपरखटसे उतरपड़ी व लज्जा
संयुक्तउसकेनिकटआनकर धीरेसेबोली अयसखीमैं तुझेपरमा
जानकर रातकाहालकहतीहूं तू यहबातअपनेमनमेंरखकर
लाय तुझसेबनपड़े सो कीजियो आजरातको एकपुरुष श्या
कमलनयन अतिसुन्दर मेरीशय्यापर आनबैठा जबउ
पूर्वकबातैंकहकर मेरामनहरलिया तबमैंनेभी लज्जा
र उसकोगलेलगानेवास्ते हाथपसारा तो जागउठनेसे फिर
नहींदेखा परवहमोहिनीरूप आंखोंमेंबसरहाहै उसकाना
रमैं कुछभीनहींजानती ॥

चौ० वाकी छवि बरणी नहिंजाय । मेरो चित लैगयो चुराय ॥
मनलाग्यो त्यहि सूरतमाहीं । इकक्षण कबहूं भूलतनाहीं ॥

जबमैंकैलासपर्वतपर विद्यापढ़तीथी तबमुझेपार्वतीजीने
तुम क्या मुझकोस्वप्नेमेंआनकरमिलेगा तू उसको

In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लीजियो वहीपतिआजरात मुझेस्वप्नेमें मिलाथा पर
हांढुंढ़वाकरपाऊं व अपनादुःखकिससेसुनाऊं॥

दो० पड़ै नींद नयनन नहीं धरैनहीं चितचैन। वह मूरति सुखधामकी ढूंढ़तिहौं दिनरैन॥

जबऊषायहहालअपना कहकर ठएढीश्वासलेनेलगी त
रेखानेकहा हेप्यारी अबतुमकिसीबातकी चिन्तामतकरो
ारेचित्तचोरकोजहांहोगा वहांसेलेआकर मिलादूंगी तुममु
ज्ञादेव तो मैंतीनोंलोकमें जितनेसुन्दरपुरुषहैं सबकीतसवं
ींचकर तुम्हैंदिखलादूं तुमउनमेंसे अपनेचित्तचोरको पहिच
कर मुझेबतलादेव फिरउसकाले आना मेराकामहै यहबातसु
ही ऊषाप्रसन्नहोकरबोली बहुतअच्छा मैं अपनेचित्तचोर
ाहिचानलूंगी यहबातसुनतेही चित्ररेखानेगणेशजी व शा
वीकोमनाकर तसवीर खींचनाआरम्भकिया व देवता व कि
आदिक के करोड़ोंचित्रखींचकर उसेदिखलाया जबऊषाने
में अपनेचित्तचोरको नहींपहिचाना तबउसनेतसवीर श्रीकृ
जी व प्रद्युम्नकीलिखकर ऊषाको दिखलाया जबवहदोनों
नदेखतेही ऊषा इसतरह लज्जितहोगई जिसतरह स्त्री अपने
ुरआदिककोदेखकर लज्जितहोजातीहै तबवहचित्ररेखासे
ी मेराचित्तचोर इन्हींके बंशमेंहोगा यहवचनसुनतेहीचित्र
ने जैसे तसवीर अनिरुद्धकी खींचकर राजदुलारीको दिख
वैसे ऊषाअचेतहोगई जबचित्त उसकाठिकानेहुआ तब
रेखासेबोली स्वप्नेमें यहीपुरुष मेरामनच[illegible]ा है [illegible]
उपायकरनाचाहिये जिसमेंयहमुझेमि[illegible]गन्धर्वविवा[illegible]तहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौआ बिरहमें निकलनेचाहताहै यहबातसुनकर चित्ररेखा
कसाथ णप्यारी अबयहपुरुषमेरेहाथसेबचकर नहींजासक्ता
पासकी शीकुलमें श्रीकृष्णजीकापोता व प्रद्युम्नकाबेटा अ
द्वारकापुरीमेंरहताहै व सुदर्शनचक्रकीरक्षाकरनेसे को
चक्र दैत्यवराक्षसबिनाआज्ञाश्रीकृष्णजीके वहांजानेनहींस
करन तसुनतेही ऊषाउदासहोकरबोलीवहाँकापहुंचनाऐसा
मार ो मेरेप्राणनाथको किसतरहलेआवोगी चित्ररेखानेकहा
कै नकर मैं तेरेवास्ते एकबेरउपायकरतीहूं जबऐसाकहनेउ
अ चित्ररेखा चील्हरूपबनकरवहांसेउड़तीहुई द्वारकापुरीकेनि
हुंची तबउसनेक्यादेखा किसुदर्शनचक्रचारोंओरघूमकरउ
कीरक्षाकरताहै व बिनाआज्ञाउसकेद्वारकापुरीमें कोईजानेन
क्ता जबयहदशादेखकर वहखड़ीहोरही तबपरमेश्वरकी इच
सारनारदमुनिने वहांआनकर चित्ररेखासेपूछा तूयहांकिस
आईहैजबचित्ररेखानेनारदमुनिकोदण्डवत्करकेसबकार
नेआनेकाउनसेवर्णनकिया तबनारदमुनिने उसेएकमंत्रब
रकहा तूसाधुकाभेषबनाकरद्वारकामेंजातो सुदर्शनचक्रतु
रोकैगा व अनिरुद्धकोबाणासुरसे लड़तीसमय मेरास्मरण
चाहिये जबऐसाकहकर नारदमुनिचलेगये तबचित्ररेखाने
मयवैष्णवकारूप सांगोपांगबनालिया व अंधियारीरातमें
घटाकेसाथ बिजुलीसीचमकतीहुई द्वारकापुरीमेंचलीग
सुदर्शनचक्रने वैष्णवसमझकर नहींरोका तबढूंढ़तीहुई
तुम क्या शय्यापर अकेलासोयाहुआ स्वप्नमें

Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थ बिहारकररहाथा जापहुंची व उनकोवहांसे शय्यासमे
रलेउड़ी व एकक्षणमें पलँगउसकाबीचमहल ऊषाकेले
वदिया व ऊषासेबोली मैंनेतुम्हारेचित्तचोरको यहांले
हुंचादिया अबतुमइसकेसाथबिहारकरो ऊषायहहाल देख
चित्ररेखाकेपांवपरगिरपड़ी वहाथजोड़कर कहनेलगी तूध
तैंने मेरेचित्तचोरको क्षणभरमेंयहांलाकर अपनाप्रणपूरा
अबजन्मभरतेरागुण न भूलूंगी यहसुनकर चित्ररेखाबोल
हनेमें परोपकारसेउत्तम दूसरीबातनहींहोती अबतुमअपनेप्र
तिकोजगाकर इच्छापूरीकरो ऐसाकहकर चित्ररेखा अपनेघ
करचलीगई व ऊषाडर व लज्जासे मनमेंकहनेलगीकिसतरह इसको
जानेजगाकर अपनामनोरथपूर्णकरूं फिरकुछशोचबिचारकर जबरा
की इच्छा मारीमीठेस्वरोंसे बीनबजानेलगी तब अनिरुद्धनेजागकर
ओंओरदेखातो अपनेको दूसरेस्थानमेंपाकर मनमेंकहा मुझे
यहांकौनपलँगसमेत लेआया ॥

पहिले श्रीप्रद्युम्नकी सुनीहती हमबात। ताहीबिधि मोकोभयो जानोकछु उत्पात ॥

अनिरुद्धतोयहीशोच व बिचारकररहाथा ऊषाअपने प्राणना
कोजागतेदेखकर रूपरसउनकाआंखोंकीराह पीनेलगीतब अ
रुद्धने उससुन्दरीको देखकरकहा हे प्राणप्यारी तुमकौनहोकर
किसवास्ते यहांउठालेआईहौ जब ऊषाइसबातका कुछउत्त
देकर लज्जासेकोनेमें सिमिटगई तब अनिरुद्धने हाथउस
पकड़कर अपनीशय्यापरबैठालिया व प्रेमभरीबातें कहकर
कीलज्जाछुड़ादिया जबदोनोंने आपसमेंगन्धर्वबिवाह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनकी इच्छापूरीकी तबअनिरुद्धने ऊषासेहँसकरपू
यारी तैंने मुझेकैसतरह देखकर यहांमँगवाया यहसु
लीमैंतुम्हैंस्वप्नेमेंदेखकर अतिमोहितहोगईसोचित्र
रबिरहमें मुझेव्याकुल देखकर न मालूम तुमकोयहां
नेआई यहबातसुनकर अनिरुद्धबोले हेप्राणप्यारी आ
तुझेस्वप्नेमेंदेखकर तेरेसाथविहाररकररहाथा सो न मा
मुझेयहांउठालाया जब मैंबीणाकाशब्दसुनकरजाग
देखा जबइसीतरहसुख व बिलासकरतेहुये सबेराहोगय
षानेअनिरुद्धको अपनीसखी व सहेलियोंसेछिपाकर क
लिगरक्खा व उसकीसेवा आपकरनेलगी जबकईदिन बीत
अनिरुद्धकाहालसबसखी व सहेलियोंकोप्रकटहोगया तबऊ
न्हैंछत्तीसव्यञ्जनखिलाकर उत्तम२भूषण व बस्त्रपहिनानेल

दो० मैन पुत्र सुख दैनको प्रेमलगे दिनरैन। काम कलोल करैं सदा बोलत अमृतबैन॥

एकदिनऊषा व अनिरुद्ध आपसमें चौपड़खेलरहेथे उ
मयऊषाकीमाता अपनीकन्याकोदेखनेआई तो अनिरुद्ध
न्दरताईदेखतेही अतिप्रसन्नहोकर दबेपांवफिरगई व उ
अनिरुद्धयहभेद न जानकर ज्योंके त्यों खेलतेरहे चारमह
निरुद्धकेरहनेका हालछिपारहकर फिरइसतरहप्रकटहोगय
एकदिनऊषाने अनिरुद्धको सोयाहुआदेखकर यहबिचारा
बाहर न जानेसेसबलोगसन्देहकरैंगे ऐसाबिचारतेही ऊषा
रंगमहलकाद्वारखोलकर बाहरनिकली व क्षणभरमें फिर
भीतरचलीगई व अनिरुद्धकसाथ विहारकरनेलगी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसमहलकेचौकीदारोंने आपसमेंकहा देखोभाई आज
रणहै जोराजकन्या इतनेदिनोंपर बाहरनिकलकर फिर भग
महलमेंचलीगई यहबातसुनकर दूसराद्वारपालकबोला हंसा
नसे ऊषाकारङ्गमहल आठोंपहरबन्ददेखकर वहांकिसीका
बोलने व चौपड़खेलनेकाशब्दसुनताहूं यहसुनकरदूसरेने पैन
हबातसचहै तो चलोबाणासुरसेकहिदें दूसराबोला राजकन्या
चुगलीखाना न चाहियेचुपचापबैठेरहो होनेवालीबातआ
टहोजायगी जिससमयद्वारपालक आपसमेंयहचर्चाकररहे
सीसमय राजाबाणासुर अनेकशूरवीरोंसमेत टहलताहुआवह
निकला व ध्वजामहादेवजीकीदीहुई महलपर न देखकर चौ
द्वारोंसे उसकाहालपूंछा तो द्वारपालकोंनेकहा महाराजबहुत
हुये कि वहध्वजा आपसेटूटकर गिरपड़ी यहबातसुनतेही
णासुरप्रसन्नहोकर व शिवजीकावचनयादकरके बोला कि व
वजागिरनेसे मालूमहोताहै कि मेराशत्रुलड़नेवाला उत्पन्न
ा यहवचनबाणासुरके मुखसेनिकलतेही एकचौकीदारने हाथ
ोड़करविनयकिया हे पृथ्वीनाथ राजकन्याकेमहलमें कईएक
इनसे एकपुरुषकेहँसने व बोलनेकाशब्दसुनताहूँ परयहनहींजा
ता कि वहकौनहै और किसराहसेआया यहसुनतेही बाणासुर
ोधितहोकर शस्त्रलियेहुये दबेपांव ऊषाकेमहलमेंचलागया तो
यादेखा कि एकपुरुषश्यामरंग अतिसुन्दर ऊषाकेपासपलँगपर
ायाहै उसकारूपदेखतेही बाणासुरनेप्रसन्नहोकरकहा कि यह
षाके ब्याहकरनेयोग्यहै पर इसबातकीलज्जासमझ[illegible]तहै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनकी इच्छापूरीकी तबअनिरुद्धने ऊषासेहँसकरपू
यौआर यारी तैंने मुझेकिसतरह देखकर यहांमँगवाया यहसु
नकसाथ लीमैंतुम्हैंस्वप्नेमेंदेखकर अतिमोहितहोगईसोचि
पासक रबिरहमें मुझेव्याकुल देखकर न मालूम तुमकोयहां
चक्र नेआई यहबातसुनकर अनिरुद्धबोले हेप्राणप्यारी आ
करन तुझेस्वप्नेमेंदेखकर तेरेसाथविहाररकरहाथा सो न मा
मार नमुझेयहांउठालाया जब मैंबीणाकाशब्दसुनकरजागा
कैं देखा जबइसीतरहसुख व बिलासकरतेहुये सबेराहोगया
ऊषानेअनिरुद्धको अपनीसखी व सहेलियोंसेछिपाकर क
लिगरक्खा व उसकीसेवा आपकरनेलगी जबकईदिन बीत
अनिरुद्धकाहालसबसखी व सहेलियोंकोप्रकटहोगया तबऊ
न्हैंछत्तीसव्यञ्जनखिलाकर उत्तम २भूषण व बस्त्रपहिनानेल

दो० मैन पुत्र सुख दैनको प्रेमलगे दिनरैन। काम कलोल करैं सदा बोलत अमृतबैन॥

एकदिनऊषा व अनिरुद्ध आपसमें चौपड़खेलरहेथे उ
मयऊषाकीमाता अपनीकन्याकोदेखनेआई तो अनिरुद्ध
न्दरताईदेखतेही अतिप्रसन्नहोकर दबेपांवफिरगई व ऊ
अनिरुद्धयहभेद न जानकर ज्योंके त्यों खेलतेरहे चारमही
निरुद्धकेरहनेका हालछिपारहकर फिरइसतरहप्रकटहोगया
एकदिनऊषाने अनिरुद्धको सोयाहुआदेखकर यहबिचारी
बाहर न जानेसेसबलोगसन्देहकरैंगे ऐसाबिचारतेही ऊषा
रंगमहलकाद्वारखोलकर बाहरनिकली व क्षणभरमें फिरव
ष्टल भीतरचलीगई व अनिरुद्धकसाथ विहारकरनेलगी यह

CC-0. Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसमहलकेचौकीदारोंने आपसमेंकहा देखोभाई आज
रणहै जोराजकन्या इतनेदिनोंपर बाहरनिकलकर फिर भग
महलमेंचलीगई यहबातसुनकर दूसराद्वारपालकबोला हंसा
नसे ऊषाकारङ्गमहल आठोंपहरबन्ददेखकर वहांकिसीका
बोलनेव चौपड़खेलनेकाशब्दसुनताहूं यहसुनकरदूसरेने कहा
हबातसच्चहै तो चलोबाणासुरसेकहिदें दूसराबोला राजकन्या
चुगलीखाना न चाहियेचुपचापबैठेरहो होनेवालीबातअ
टहोजायगी जिससमयद्वारपालक आपसमेंयहचर्चाकररहे
सीसमय राजाबाणासुर अनेकशूरवीरोंसमेत टहलताहुआवह
निकला व ध्वजामहादेवजीकीदीहुई महलपर न देखकर चौ
ारोंसे उसकाहालपूंछा तो द्वारपालकोंनेकहा महाराजबहुत
हुये कि वहध्वजा आपसेटूटकर गिरपड़ी यहबातसुनतेही
णासुरप्रसन्नहोकर व शिवजीकावचनयादकरके बोला कि व
जागिरनेसे मालूमहोताहै कि मेराशत्रुलड़नेवाला उत्पन्न
ा यहवचनबाणासुरके मुखसेनिकलतेही एकचौकीदारने हाथ
ड़करविनयकिया हे पृथ्वीनाथ राजकन्याकेमहलमें कईएक
नसे एकपुरुषकेहँसने व बोलनेकाशब्दसुनताहूँ परयहनहींजा
ता कि वहकौनहै और किसराहसेआया यहसुनतेही बाणासुर
धितहोकर शस्त्रलियेहुये दबेपांव ऊषाकेमहलमेंचलागया तो
यादेखा कि एकपुरुषश्यामरंग अतिसुन्दर ऊषाकेपासपलँगपर
याहै उसकारूपदेखतेही बाणासुरनेप्रसन्नहोकरकहा कि यह
षाके व्याहकरनेयोग्यहै पर इसबातकीलज्जासमझकरतहँ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरचलाआया व अपनेसाथियोंसेबोला मेराशत्रुअभी
तहुयेकोमारना न चाहिये इसलिये तुमलोग यहमहल
हो जिसमेंवहभागने न पावै जबसोकरउठै तबमुझसे
कहना यहआज्ञादेकर बाणासुर अपनीसभामेंचलाआ
सी सेना ऊषाकामकान घेरनेवास्तेभेजकर उनसेकहा
चलो मैं भी वहांपहुँचताहूं उसकीआज्ञापातेही जबह
द्धाओंनेजाकर ऊषाकारंगमहलघेरलिया व अनिरुद्ध व
गकर आपसमें चौपड़खेलनेलगे तब एकचौकीदारनेजा
राणासुरसेकहा कि तुम्हाराशत्रुनींदसेजागाहै यहसमाचार
ही उसनेतलवार व त्रिशूलालियेहुये ऊषाकेद्वारेपरआनकर
कारा तू कौनचोर राजमन्दिरमेंघुसाहै जल्दीनिकलकर मेरे
ने आव तो तुझेदण्डूं अब तू यहांसेजीताबचकर अपनेघर
नहींसक्ता जबऊषाने बाणासुरकाशब्दसुना तबडरती व क
ई अनिरुद्धसेबोली हे प्राणनाथ मेरापिता बहुतदैत्यसाथ
तुम्हारेपकड़नेवास्ते चढ़िआयाहै अबतुमउसकेहाथसे किस
बचोगे यहबातसुनतेही अनिरुद्ध ऊषाकोधैर्य्यदेकरबोले हे
प्यारी तुमदेखतीरहो एकक्षणमें सबदैत्योंकोमारडालूंगा
कहकर जैसेअनिरुद्धने कुछमंत्रपढ़ा वैसे एकसौआठ हाथ
त्थरजिमेंशिलाकहतेहैं उनकेपासआनपहुँचा जबअनिरुद्ध
वहशिलाहाथमेंलिये बाहरनिकलकरबाणासुरकोललकारा
ह अपनेशूरवीरोंसमेत इसतरह अनिरुद्धपरझपटा जिसतर
ष्ट्रोंवाले
खियां
चाउजाड़नेवालेपरझुण्डका झुण्डझपटता

UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिन्हैंदेखिकापेतभी महाबली अनिरुद्ध। उनसों औ योधानसों भयोपरस्पर युद्ध॥

जबबाणासुरकीआज्ञापाकर सबदैत्य अपना अपनाश भग
निरुद्धपरचलानेलगे तबउन्होंने क्रोधितहोकर उसीशिल ंसा
योंको मारनाआरंभकिया जिसकेचोटसे बहुतदैत्यमरगये का
घायलहोकर गिरपड़े व बाक़ी अपनाप्राणलेकर भागगये न
णासुरनेदेखा कि यहपुरुषमहाबलीहै जिसनेसबसेनामेरी दा
र हटादी तबउसनेनागफांस जोमहादेवजीनेउसेदीथी फेंक
निरुद्धको उसमेंफँसालिया व उसीतरहबांधेहुये अनिरुद्ध
पनीसभामें लेजाकरकहा हे बालक अबमैंतेराप्राणलूंगा ज
सहायकहो उसकोअपनीरक्षावास्तेबुलाव अनिरुद्धनेयहसुन
बिचारा कि मैं अपनेबलसे नागफांसतोड़कर बाहरनिकलजा
शिवजीकाअपमानहोगा इसलिये मुझेदुःखहो तो कुछ
तानहीं पर महादेवजीका बचनझूठाकरना न चाहिये जोपर व
वरकीइच्छाहोगी सोहोगा यहांअनिरुद्धपड़ाहुआ अनेकतरह ये
शोच व बिचारकररहाथा व ऊषाउसकासमाचारपातेही व्याकु
होकर चित्ररेखासेबोली हे सखी ऐसेजीनेपरधिक्कारहै जोमेरा
प्यारादुःखउठावे औरमैंसुखसेरहूं ऐसेजीनेसे मेराप्राणनिक
लावै तोअच्छाहै जबऐसाकहकर ऊषाअतिबिलापकरनेलगी
चित्ररेखा उसेधीर्यदेकर बोली तू कुछचिन्तामतकर तेरेपति
कोई कुछकरनेनहींसक्ता अभीश्याम व बलरामजी यदुबंशि
योंसाथलेकर शोणितपुरमेंपहुँचतेहैं व सबदैत्योंकोमारकर व
निरुद्धसमेत द्वारकापुरीलेजावैंगे वह जिसराजकन्य तेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lu w

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनतेहैं उसेबिनालेगये नहींरहते अनिरुद्ध उन्हींश्रीकृ
ताहै जो कुण्डिनपुरसेशिशुपाल व जरासंधआदिक
साथ राजोंकोजीतकर रुक्मिणी राजाभीष्मककीबेटी
पासकी पंथे यहबात चित्ररेखाकीसुनकर ऊषाबोली हे सखीअ
चित्रलेखको नागफांसमें बँधेसुनकर मेराकलेजाजलाजाताहै
करनेखाना व पीना सोना व बैठना कुछअच्छानहींलगता बाकी
मारहै मुझकोभी अनिरुद्धकेसाथमारडाले तोअच्छाहै पर
कैसेदुःखमें मुझसे उनकासाथछोड़ानहींजाता ऐसाकहकर
महलसेबाहरचलीगई व लज्जाछोड़कर राजसभामें
केपासजाबैठी यहहालसुनतेही बाणासुरनेस्कन्द अपनेबेटे
लाकरकहातुमअपनीबहिनकोयहांसेघरमेंलेजाकरबैठारक
फिर उसकोबाहर निकलनेमंतदेव यहवचनसुनतेही स्कन्दने
केपासजाकर क्रोधसेकहा तैंने लोकलाजछोड़कर अपनेम
पिताकानामडुबाया मैं तुझेअभीमारडालता पर क्याकरूं
होनेसेडरताहूँ ऊषानेउत्तरदिया हे भाई जोचाहोसोकहो
रो मैंनेतो पार्वतीजीकेबरदानसे यहपतिपाया अबइनकोछो
दूसरेसेंबिवाहकरूँ तो संसारमें अपनेकोकलंकलगाऊँ विधा
जोबरमेरेभाग्यमें लिखदियाथा वहमुझेमिला इनकेसाथ
मेराभलाहो याबुरा इनकेसिवाय मैं दूसरेकोनहींचाहती
न्दने यहबातऊषाकीसुनी तबबरजोरी उसकाहाथपकड़क
मेंलेगया व उसपरचौकी व पहरारखकर फिरउसे अनि
टने नहींदिया व अनिरुद्धको वहांसे दूसरेमकानमेंले

Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थकड़ी व बेड़ीडालकरकैदरक्खा इधरतो अनिरुद्धजी
रहमेंव्याकुलरहनेलगे व उधर ऊषानेभी बीचविरहसे भग
डूबकर खानापीनाछोड़दिया जबकईदिनउपरांत अदृ संसा
चित्ररेखाकाकहनायादकरके नारदमुनिकाध्यानकिया र का
दजीने उसीसमयपहुँचकर अनिरुद्धसेकहा हेबेटा तुमकिर्स न
चिन्तामतकरो श्रीकृष्णजी आनन्दकन्द बलरामजी व दा
शियोंसमेत यहांआनकर तुझेछुड़ालेजावेंगे अनिरुद्धको
र्यदेनेउपरांत नारदमुनिनेबाणासुरसेजाकरकहा हेराजन्
तुमबांधकर अपनेयहांकैदरक्खेहो वहअनिरुद्धनाम प्रद्यु
बेटा व श्रीकृष्णजीकापोताहै तुम यदुवंशियोंकाप्रताप अच्छ
रहजानतेहो जैसाउचितहो वैसाकरो मैं तुम्हारेकल्याणवास्ते
हकहनेआयाहूं बाणासुरयहवचनसुनकर अभिमानसेबोला हे
मुनिनाथ मैं सबकोजानताहूं तुम्हारेआशीर्वादसे उन्हैं देखलूं
नारदमुनि उसकाकुछउत्तर न देकरवहांसे चलेगये॥

तिरसठवां अध्याय॥

श्यामसुन्दर व बाणासुर से युद्धहोना॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जब अनिरुद्धकोचारमहीनेसे अ
धिकहोगये व उसकापतानहींमिला तबएकदिन प्रद्युम्नआदिक
यदुवंशी श्याम व बलरामकेपास बैठकर बड़ीउदासीसे अनिरुद्ध
कीचर्चाकरनेलगे पर मुरलीमनोहरने सबवृत्तांतजानने परभी
कुछहालउसका अपनेबेटा व पतोहूसेनहींबतलाया परन्तुउनकी
इच्छासे उसीसमय नारदमुनिवहांआनपहुँचे उनकोदेखके सबहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lu w

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ोंनेदण्डवत्करके सन्मानपूर्वकबैठाला तबनारद
आदिकको उदासदेखकरपूंछा आज तुमलोगमली
देतेहौ यहबातसुनतेही श्रीकृष्णजीने हाथजोड़करी
हमुनिनाथ आपचारोंओर घूमतेहैं कुछहाल अनिरु
महो तो बतलाइये जिसमें हमलोगोंकाशोचछूटिजाय
उसकोपलँगसमेत उठालेगया तबसेकुछपता उसका
यहवचनसुनकर नारदमुनिबोले तुमलोग चिन्तामत
रुद्धजी शोणितपुरमेंजीतेहैं उन्होंनेवहांजाकर बाणासु
सेभोगकियाथा इसीवास्ते राजानेनागफांससे उनकोबांध
पनेयहां क़ैदरक्खाहै बिनायुद्धकिये अनिरुद्धको नहींछोड़
उसकाठिकानाहमने तुमसेबतलादिया आगे जैसाउचितजा
वैसाकरो जब नारदमुनियहकहकर ब्रह्मलोकको चलेगये
राम व बलरामने राजाउग्रसेनकेपासजाकर जो हाल ना
नेसेसुनाथा वहबर्णनकिया राजाबोले तुमहमारीसबसेना
साथलेकर अभी शोणितपुरमेंचलेजाव व जिसतरहबनपड़ै
रह अनिरुद्धकोमेरेपास अभीलेआवो यहआज्ञापातेही
सुन्दर प्रद्युम्नसमेत गरुड़परबैठकर शोणितपुरकोचले व
रामजीने बारहअक्षौहिणी सेनासाथलेकर शोणितपुरपर
की उससमय ऐसीशोभा उनकीमालूमदेतीथी जिसकाहाल
से कहांतकवर्णनकरूं व बलदाऊजी राहमेंसबक़िला व नगर
णासुरकातोड़ते व लूटतेहुये शोणितपुरमेंपहुंचे व श्यामसुन्द
उनसेआनमिले तबबाणासुरकेसेवकने दैत्यसेना

UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेनादेखतेही अपनेस्वामीकेपासजाकर विनयकिया म
कृयाम व बलराम तुम्हारानगर लूटते व उजाड़तेहुयेबड़ी भग
सासाथलेकर चढ़आयेहैं औरशोणितपुरको उन्होंने चारों ओंसा
रलिया अबतुम्हारी क्याआज्ञाहोतीहै यहबचनसुनतेही का
सुरने अपनेसेनापतियोंको आज्ञादी कि तुमलोग अपने सैन
योंकोसाथलेकर श्रीकृष्णजीके सन्मुखजाकर खड़ेहो मैंभी दा
आताहूं यहबचनसुनतेही बाणासुरकामन्त्री बारहअक्षौ
सेना दैत्य व राक्षसोंकी साथलेकर नगरसेबाहरनिकला व
शस्त्रसमेत यदुबंशियोंके सन्मुखआया व बाणासुरभीपूज
यान शिवजीकाकरके अपनीसेनामें आनमिला बाणासुरके
नकरतेही महादेवजीको मालूमहुआ कि इससमयमेरेभक्त
कुछदुःखपड़ाहै इसलियेवहांचलकर उसकीसहायता करनी
हिये ऐसाबिचारकर भोलानाथने पार्वतीको कैलासपर्वतप व
केलीछोड़दी और आपजटाबांधने व बिभूतिलगाने उपरांत
ग व धतूराखाकर श्वेतनागोंकाजनेऊ व मुण्डमाला पहिन
या व बाघम्बरओढ़कर त्रिशूल व धनुषबाण व खप्परहाथमें
लिया और नन्दीबैलपरबैठकर भूत प्रेत व पिशाचादिककोसा
लियेहुये शोणितपुरकोचले जबभोलानाथ कानोंमें गजमुक्ता
डाडाले व मस्तकपर चन्द्रमा व शिरपरगंगाजी धारणकिये
ाल २ नेत्रनिकाले गातेबजाते अपनीसेनाको नचातेहुये बा
सुरकेनिकट क्षणभरमें आनपहुँचे तबउनकोदेखतेही बाणा
चरणोंपर गिरपड़ा व हाथजोड़करबोला हे कृपानिधि तुम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हकष्टमें आपबिना कौनमेरीसुधिले तुम्हारेप्रतापकेसाम
ग अबमेरा क्याकरसक्ते हैं यहबातशिवजीसेकहकर
याम व बलरामकी सेनामेंकहलाभेजा कि हमारातु
ला धर्मयुद्धहो यहबात बैकुंठनाथने मानकर इसतरह
कमनुष्यकायुद्ध दोनोंओरसेठहराया श्यामसुन्दर व
व बाणासुर व सात्यकीमें युद्धहोनेलगा ॥

स्वामिकार्त्तिक अतिबली जिनको जगमेंनाम । तिनसों औ प्रद्युम्नसों होनलग्यो संग्राम

र व बलरामजी व कुम्भांडमंत्री व स्कन्दबेटा बाणासुर व
ष्णपुत्र मुरलीमनोहर व कुंभकर्ण दूसरेमन्त्री बाणासुर व
सेयुद्धहुआ जबइसीतरह सबशूरबीर अपनी २ जोड़ीसे अ
स्त्रलेकर लड़नेलगे व दोनोंसेनामें मारूबाजाबजनेलगा व
दिकदेवता अपने २ बिमानोंपरबैठकर युद्धदेखनेवास्तेआ
शिवजीने जैसेपिनाकधनुषपर ब्रह्मबाणरखकर चलाया वै
कानाथने शार्ङ्गधर कमानसे तीरमारकर उनकाबाण काट
जबशिवजीने बाणचलाकर बड़ीआंधीप्रकटकी तबवृन्दा
हारीने अपनीमहिमासे उसआंधीकोमिटादिया फिरकैला
ने यादवबंशियोंकीसेनामें अग्निबाणचलाया तो श्यामसु
जलबर्षाकर उसबाणकी अग्निबुझादी व एकबाण अग्नि
न ऐसाछोड़ा कि महादेवकीसेनामें सबकाशरीर मूंछ डाढ़ी
जलनेलगा तबभोलानाथने अपनी महिमासे पानीबर्षा
ले व अधजले भूत व प्रेतोंको ठण्ढाकिया व क्रोधितहोकर
बाण चलानेवास्ते तरकससे बाहर फिरकुछ

State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चारकरके रखदिया उससमयदैत्यसंहारण आलस्यबा
कर शत्रुकीसेना इसतरहकाटनेलगे जिसतरह किसानल
रकाखेत काटडालतेहैं यहदशादेखकर जबमहादेवजीने
ण श्यामसुन्दरपर चलाये तबलक्ष्मीपतिने उनतीरोंक
टकर एकतीर ऐसामारा जिसकेलगनेसे शिवजीगिरपड़े
हाई लेनेलगे ॥

भग
ंसा
का
न
दा

दो० बाणासुरके काजशिव कीन्हीं बहुतउपाय। माखनप्रभु भगवानसे कोहिबिधि जीतोजाय ॥

जबस्वामिकार्तिकने बड़ा
तीनबाणउसमुरैलेको जिसपरस्वामिकार्तिकचढ़थेऐसेमारे
मुरैला रणभूमिछोड़कर आकाशमेंउड़गया जबस्वामिकार्ति
आकाशसे यदुबंशियोंको तीरमारनेलगे तबप्रद्युम्नजीने मुर
मनोहरसे आज्ञालेकर मारेतीरोंके उसमुरैलेकोस्वामिकार्त्ति
समेत पृथ्वीपरगिराकर अचेतकरदिया व बलरामजी व साम्ब
दोनोंमंत्री बाणासुरकेमारडाले यहदशादेखतेही बाणासुरसे
कीसे लड़नाछोड़कर केशवमूर्त्तिकेसामनेआया व पांचसौक
न जोअपनेहाथमेंलियेथा दोदोबाण एकएकधनुषपररखकर
वनभादोंकीबूंदसमान श्यामसुन्दरपरबरसानेलगा उससमय
कुराठनाथने अपनेतीरसेसबबाण उसकेकाटकर एकतीर ऐसा
रा कि पांचसौकमान बाणासुरकेकटकर पृथ्वीपरगिरपड़े व उस
सारथी घोड़ोंसमेतमरगया यहदशादेखतेही जबबाणासुररण
मिछोड़कर पैदलभागचला व दैत्यसंहारणने रथअपनाउसके
दौड़ाकर पांचजन्यशंख बिजयकाबजाया तबको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाणासुरकी हालभागनेबेटेकासुनकर अपनेपुत्रको
राजमन्दिरसे नंगेपैर दौड़तीहुई रणभूमिमेंआई॥

तुरतआय ठाढ़ीभई माखनप्रभुकेतीर । पुत्रहेतु व्याकुलमहा कीन्हें नग्नशरीर ॥

बिना नंगीस्त्रीका मनाहोकर धर्मशास्त्रमें ऐसालिखाहै
चक्र परस्त्रीकोनंगीदेखकर जबतकतीनबेर कड़ुवेतेलसेआं
करन तबतकदोषउसकानहींछुटता इसलिये श्रीकृष्णजीने
मार नंगीदेखना उचित न जानकर शिरअपनानीचेकरके
कें करलिया तबबाणासुरभागकर नगरमेंचलाआया व फि
अक्षौहिणीसेनालेकर बसुदेवनन्दनके सामनेलड़नेगया ज
स्त्रिरा अपनेबेटेकोसेनासमेतदेखकर राजमन्दिरपर चलीगई
संहारणनेएकक्षणमें वहसेनाभीबाणासुरकीमारडाली तब
परभागकर शिवजीकीशरणमेंगया व भोलानाथने अपने
को अतिव्याकुल व आरतदेखा व क्रोधितहोकर बिषमज्वरक
जिसकेतीनशिर व तीनपैर व तीनआंखैं छःहाथथे श्या
सुदरकी सेनामेंछोड़ा जबवहतप बड़ेतेजसेद्वारकानाथ की से
आनकर सबको जलानेलगा तब प्रद्युम्न व सात्यकीआदि
वंशीलोग उसकेभयसे थरथरकांपते व जलतेहुये सांवलीसू
के पासजाकरबोले महाराज शिवजीकेतपने हमलोगोंको
कर मरणतुल्यकरदिया इसकेहाथसे प्राणबचाइये नहींतो
भरमेंसबलोगमरनेचाहतेहैं यहदशादेखकर श्यामसुन्दरने
ज्वरकोअग्नितपके सामने जैसेछोड़दिया वैसेदोनोंतप आप
ये जबशीतज्वरको अग्नितपउठाने नहींसका तब

UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

णाकेभयसे भागाहुआ महादेवकेपासजाकरबोलाहे दे
मुझे अपनीशरणमेंराखिये नहींतो शीतज्वर मेराप्राण
ाहताहै यहसुनकर भोलानाथनेकहा सिवाय श्यामसु
सराकोई ऐसात्रिभुवनमेंनहींहै जो इसतपसे तेराप्राणब
इसलिये उन्हींकेशरणमेंजा वहीभक्तहितकारी दयालु
झेबचावैंगे यहवचनसुनतेही अग्नितपजाकर ऊपरचर
ष्णाजीकेगिरपड़ा व आधीनताईसे विनयकिया हे कृपा
तितपावन मेराअपराधक्षमाकरके अपनेतपकेहाथसेप्रा
ये आपकाआदि व अन्तकोईनहींजानता व तुम्हारानाशक
हींहोता व तुमनेब्रह्मा व महादेवआदिक सबदेवतोंकेईश्वर
कर अपनीइच्छासे वास्तेसुखदेने हरिभक्त व मारनेअधर्मी व
काउतारने पृथ्वीकेअवतारलियाहै व बिनाचर्चा व स्मरणतुम्हारे
ाम व लीलाके जोअक्षर मनुष्यअपनेमुखसे निकालते हैं
कोवृथासमझनाचाहिये ऋषीश्वर व योगीलोग तुम्हारेस्म
ध्यानकेप्रतापसे जोकुछशुभ व अशुभकिसीकोकहतेहैं वहब
उसीसमयहोजातीहै परवहलोगभीतुम्हाराभेदनहींजानते व
सबलीलासंसारीजीवोंको भवसागरपारउतारनेवास्ते करते
आपलक्ष्मीपति व सबसेउत्तमहोकर तीनोंलोकके उत्पत्ति
ालन व नाशकरनेवालेहैं॥

दो० माखनप्रभु भगवानकी स्तुतिकही न जाय। सर्बरूपसर्वातमा सबघटरहेउ समाय॥

हे दीनानाथआपजिसतरह शरणआयेपर दयालुहोकर अप
ाध उसकाक्षमाकरतेहैं उसीतरहमुझेबड़ादुःखी व दीनज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वरकेहाथसे मेराप्राणबचाइये तीनोंलोकमें तुम्हारेसि
औआरसरामुझे अपनीरक्षा करनेवाला दिखलाई नहींदेता
साथ राखनप्रभु करतारकी महिमा अमित अपार। तप्त शीत व्यापैतहां जहां न नाम तुम्हा
पासकेदीनबचन सुनकर बसुदेवनन्दननेकहा अबमेरेशरण
प्राणबचा व तेराअपराध मैंनेक्षमाकिया परआजसेह
चक्र व हरिभक्तोंको कभीदुःख न दीजियो व जोकोईयहक
करन तेरी अपनेसच्चेमनसेकहै व सुनैगा उसकोकिसीतरहक
मार छूटजायगा अबमहादेवजीके पासचलाजा यहबात
के अग्निज्वर श्यामसुन्दरसे बिदाहोकर भोलानाथकेयहां
आ आया तबयदुबंशीलोग अच्छेहोगये और बाणासुर जोभ
या फिरअनेकशस्त्र अपनेहजारहाथमेंलेकर श्यामसुन्द
सन्मुखआया व ललकारकर कहनेलगा अभीतकयुद्धकरने
मननहींभरा तुमसावधानहोकर मेरेसाथलड़ो जबवहअ
नी ऐसाकहकर मुरलीमनोहरपर शस्त्रचलाने लगा तब दे
रणने क्रोधितहोकर सुदर्शनचक्रसेकहा कि चारहाथबा
केछोड़कर और सबभुजा काटडालो यहआज्ञापातेही सु
चक्र इसतरहभुजा बाणासुरकीकाटकर गिरानेलगा जिसत
कोईमनुष्य क्षणभरमें पतलीपतलीडाली वृक्षकी काटडाल
जबबाणासुरकी यहदशाहोकर लोहूउसके अंगसे नदीरूपी
हनेलगी तब उसनेलज्जितहोकर शिवजीसे विनयकिया हे
लानाथ मैंने अपनेअभिमानका दण्डपाया अब सिवायतुम्हा
दूसरा मेराप्राणबचानेनहींसक्ता यहदीनबचनसुनकर म

Public Dom Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जीने बिचारा अब गर्व इसकाटूटगया इसलियेअपने भ
गवचानाचाहिये ऐसाबिचारतेही कैलासपति बाणासुरव
नेकर वेदस्तुतिकरतेहुये द्वारकानाथकेपास चलेगये व बा
उनकेचरणोंपर गिरादिया ॥

॰ हाथ जोड़ ठाढ़े भये हरिके सन्मुखजाय। बाणासुरके काज शिव स्तुति करें सुनाय ॥

हे दीनदयालु त्रिलोकीनाथ तुम जड़ व चैतन्यकेमालि
सबजीवोंकी उत्पत्ति व पालन व नाशकरतेहौ व तुम्हार
व कामोंकी कोईगिनती नहींकरनेसक्ता आप केवल पृथ्वी
रउतारने व हरिभक्तोंकोसुखदेने व अधर्मियोंको मारनेवा
नीइच्छासे सगुणअवतारलेतेहौ और नहींतो तुम्हारे बिरा
में चौदहोंलोकका व्यवहाररहता है सो मैं उसरूपको दण्ड
करताहूं ॥

॰ तुम्हरी शक्ति अनन्त है अन्त न पायाजाय। प्रकट गुप्त देखतसदा रह्यो विश्वभरिछाय ॥

जिसने संसारमें मनुष्यतनपाकर तुम्हारास्मरणनहीं किय
ने अमृतछोड़कर बिषपिया जिसतरहसूर्यबदलीमें छिपेरहत
उसीतरहतुम अपनेकोसंसारमें छिपाकर मनुष्यकेसमान ली
करतेहो जो मनुष्य तुम्हाराध्यानछोड़कर संसारीजालमें फँ
हैं उसे बड़ामूर्ख समझनाचाहिये हम व ब्रह्मा व इन्द्रादिकदे
तुम्हारेदासहोकर आपकाभेद नहींजानसक्ते संसारीमनुष्य
क्या सामर्थ्यहै जो तुम्हैं पहिंचाननेसकै जिसपर तुमदयालु
कर अपनेध्यान व पूजाकीराह दिखलातेहो वहतुम्हारीमहिमा
जानकर सत्संगकरनेसे भवसागरपार उतरनेसक्ताहै ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जैसे बूड़त जलविषे शीश निकालै कोय। श्वासलेतही एकक्षण महाचैन सुखहोय॥

महाप्रभु जिसतरहडूबताहुआ मनुष्यश्वासलेनेसे सुख
ससेअधिकआनन्द हरिभजनमेंसमझनाचाहिये परन्तु
नमेंचित्तलगाना बहुतकठिनहै संसारीजीव झूंठीमाय
ऐसेफंसरहेहैं कि उनका मन तुम्हारीओर एकक्षणनहीं
हनमेंजोकोई संसारीसुखचाहनेवास्ते तुम्हाराभजन व
ताहै उसेहम व ब्रह्माबरदानदेतेहैं पर उसकामनोरथपूर्णह
मारावचनसच्चकरना तुम्हारेआधीनरहताहै हेकृपासिन्धु
को ऐसीसामर्थ्यनहीं है जोतुम्हारीमहिमा अपरम्पारका
र्णनकरनेसकै बाणासुरअज्ञानकीराह मुझेपरमेश्वर जान
मेरापूजनकरताथा अबयहतुम्हारा द्रोहीहोकर मुझेआपके
सिफारिशकरनेवास्ते लेआयाहै मुझपरदयालुहोकर इसका
राधक्षमा कीजिये व इसको प्रह्लाद अपनेभक्तके कुलमेंजान
अभयदानदीजिये॥

दो॰ आज्ञाकीजै चक्रको माखनप्रभु ब्रजनाथ। औरभुजा सबकाटिकै राखेचारोंहाथ॥

जबमहादेवजीने इसतरहविनयपूर्वकस्तुति श्यामसुन्दर
की तबवसुदेवनन्दन हँसकरबोले हे भोलानाथ मेरेतुम्हारेमें
समझनेवाला मनुष्यअवश्यनरकभोगेगा व तुम्हारेध्यानक
वाला अंतसमयमुझेपावेगा व तुम्हारेकहनेसे हमनेबाणासु
चतुर्भुजीरूपबनाया जिसकोतुमनेबरदानदिया उसको नि
मैंनेकिया व सदाकरूंगा॥

दो॰ भायसुदीन्ही चक्रको ऐसीबिधि हरिनाथ। बाणासुर भुजकाटिकै राखो चारोंहाथ॥

कैलासपति मैंनेप्रह्लादभक्त बाणासुरकेपरदादासे यहप्रति

Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थी कि तेरेबंशकोअभयदानकिया इसलिये तुम न कहते
इसकाप्राण न लेता परबाणासुरअतिअभिमानकरके वि भग
अपनेतुल्यनहींसमझताथा इसवास्ते मैंने सबभुजा उ सा
टकर उसेचतुर्भुजीबनादिया व सबअपराध उसकाक्षमाक का
हारापार्षद उसे किया यहवचनसुनतेही शिवजीप्रसन्न न
कैलासपर्वतपरचलेगये तबबाणासुरने हाथजोड़कर दा
किया हे बैकुंठनाथ जिसतरहआपने कृपाकरके दर्शनअ
या उसीतरह अपनेचरणोंसे मेराघरपवित्रकीजिये व अनिर
ऊषासे बिवाहकर अपनेसाथलेजाइये यहबातसुनकर जब
बनबिहारी भक्तहितकारी प्रद्युम्नसमेत बाणासुरके घरचले
वह बड़ेहर्षसे पीताम्बरराहमें बिछवाताहुआ द्वारकानाथको
मन्दिरपर लेजाकर जड़ाऊसिंहासनपरबैठाला व चरण उन
धोकर चरणामृतलिया व हाथजोड़करविनयकिया हे दीन व
थ जिनचरणोंकादर्शनब्रह्मा व महादेवआदिकदेवता व सनक
कऋषीश्वरोंको जल्दीध्यानमेंनहींमिलता उनचरणोंके धोने
आजमैं अपनेकुलपरिवारसमेत कृतार्थहुआ हे महाप्रभु इन्हीं
णोंकोधोकर ब्रह्मानेवहजल अपनेकमंडलुमेंरक्खा व महा
जीनेवहीजल अपनेशिरपरचढ़ाया व भगीरथनेबड़ीतपस्या
अपनेपुरुषोंकोतारनेवास्ते मर्त्यलोकमेंलेजाकर संसारीजीवों
उद्धारकिया व संसारमेंवहीजल गंगाजीप्रकटहुआ जिनकाद
न व स्नान व जलपानकरनेसे अनेकजन्मकेपापछूटकर संसा
मनुष्यमुक्तिपातेहैं यहस्तुतिकहकर बाणासुरने ऊषाको [illegible]तेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेबुलाभेजा व अनिरुद्धकीबेड़ी व हथकड़ीकाटकरउसे
या व अच्छा२भूषण व वस्त्रपहिनाकर विधिपूर्वकअनि
हादिया व बहुतसाजवाहिर व सोना व चांदी व कपड़ा व
हना व गौ व रथ व हाथी व घोड़ाजिसकीकुछगिनती नहीं
दहेजमेंदेकरद्वारकानाथको ऊषा व अनिरुद्धसमेतबिदा
यामसुन्दरने बाणासुरको धैर्यदेकर अपनीओरसे राजा
ठादिया व दुल्लह व दुलहिनको साथलिये आनन्दम
द्वारकाकोचले उनकासमाचारपातेही यदुबंशीलोग अ
आकर मंगलाचारमनातेहुये राजमन्दिरपर लिवालाये व
णीजीने अपनेकुलानुसार रीति व रस्मकरके अनिरुद्धको दु
नसमेत महलमेंलेगईं व सबद्वारकाबासियोंने घरघरमंगल
सनाया इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् जोकोई
यप्रातसमय इसअध्यायकाध्यान व स्मरणकियाकरै वहु
प्रपनेशत्रुसे कभीनहींहारैगा ॥

दो० यह लीला अद्भुत महा कहै सुनै जो कोय। लहै सदा सुखसम्पदा ज्वरकी व्यथा न होय

चौंसठवां अध्याय ॥

नृगराजाकी कथा ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित नागकुलमें नृगनामराजा व
तापी व धर्मात्माहोकर असंख्यगौ विधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दा
ताथा कदाचित्कोईचाहै तो गंगाकीरेणुका व बर्षाकीबूंदैं व
शकेतारे गिनलेवे परउसकेगोदान कियेहुयेको गिनती
ठल कठिनहै सो ऐसाधर्मात्माराजा थोड़ापाप अनजा

CC-0. In Public Domain. NP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेसे गिरगिटानहोगयाथा उसकोश्यामसुन्दरने अपना
कर कृतार्थकिया इतनीकथासुनकर परीक्षितने बिनयकि भग
नाथ ऐसाधर्मात्माराजाकौनअपराधकरनेसे इसदशा सा
वा उसकीकथाकहिये शुकदेवजीबोलेहे राजन् राजानृगने का
यमकरके प्रतिदिनहज़ारों गौ विधिपूर्वकब्राह्मणोंको दानदे न
जनकरताथा सो एकदिनकोई गौ उसकीदानदीहुई भा दा
नादानकीहुई गौवोंमेंमिलगई सो राजानेअनजानमें व
सरेब्राह्मणकोदानकरदिया और वहब्राह्मण गौ लेकर अपने
ला व प्रथमदानलेनेवाले ब्राह्मणने अपनी गौ पहिंचान
राहमें रोंका तबदोनों आपसमें झगड़ाकरतेहुये गौ समेत
जाकेपासआये राजानृगनेदोनोंब्राह्मणोंसे हाथजोड़करबिनय
क कहा ॥

चौ० कोऊ लाख रुपैया लेव। गैया इक काहूको देव ॥

यहवचनसुनतेही वहब्राह्मणक्रोधितहोकर राजासेबोला जो
स्वस्तिबोलकर हमनेदानलिया उसको करोड़रुपयापानेपर
न देवैंगे यहगौहमारेप्राणकेसाथहै यहसुनकर राजानेविनय
क उनसेकहामहाराज यहअपराधमुझसे अनजानमें हुआहै
कगौकेबदले लाखगौलेकर क्रोधअपना क्षमाकरो जबलाख
व लाखरुपये देनेपरभी दोनोंब्राह्मणोंनेनहींमाना और वहगौ
ड़कर अपनेघरचलेगये तबराजाने बहुतउदासहोकर कहा दे
अनजानमें मुझसेयहपापहोगया सो कैसेछूटैगा ऐसाबिच
राजाने उसअधर्मके छुड़ानेवास्ते और बहुतसादान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दया परउसकासंदेह न छूटकर कुछदिनबीते जबराजा
यमदूतउसे धर्मराजकेपास लेगये तबधर्मराजने उसक
क अपनेपास सिंहासनपर बैठाकरकहा हे राजन्तुम्ह
हुतहोकर थोड़ासापापभीहै सो तुमप्रथमअपनेपुण्यका
ाग या पापकादुःख यहसुनकर राजाबोला महाराज प
अपराधका दण्डभोगकर पीछेसे पुण्यकाफलभोगूंगा
रधर्मराजनेकहा तुमनेअनजानमें जो दानकीहुई गौ
ाह्मणको सङ्कल्पदियाथा उसीपापसेतुमकोगिरगिटानह
छदिन अँधियारेकुयेंमें रहनापड़ैगा जब द्वापरकेअन्तमें
णजीअवतारलेकर तुमकोअपनादर्शनदेंगे तबतुम्हारी मुक्ति
गी यहबचनधर्मराजकेमुखसे निकलतेही राजा गिरगिटहोक
रपड़ा व समुद्रकेनिकट अँधियारेकुयेंमेंरहनेलगा जिनदिनों
णजीबाणासुरकोजीतकर द्वारकामें पहुंचे उन्हींदिनों प्रद्यु
म्बआदिकयदुवंशी उसीकुयेंकी ओर अहेरखेलनेगये सो
लक प्यासाहोकर उसीकुयेंपर पानीभरनेगया तो क्यादेखा
एकगिरगिटानसे कुआंभराहै यहआश्चर्य्य देखकर उसबाल
अपनेसाथीलड़कोंको बुलाकर वहगिरगिट दिखलाया ॥

दो० दयावान सबपुत्र हरि कीन्ही यहीविचार। या गिरगिटको कूपते हमकाढ़ैं इकबार॥

जबलड़कोंके अनेकउपायकरनेपरभी वहगिरगिट कूपसे
निकला तबउन्होंनेआनकर श्रीकृष्णजीसे यहहालकहकेवि
किया महाराजआपदयाकी राहचलकर उसेनिकालिये श्याम
टल अन्तर्यामीने यहवचनसुनतेही उसकुयेंपरजाकर जैसेअप

CC-0. State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रण गिरगिटको छुआदिया वैसेवहगिरगिटभूषण व वस्त्र प भग
ये दिव्यरूप राजाकेसमानहोगया॥ ांसा

॰ ताके माथे मुकुटकी शोभाकही न जाय। मानो आभा सूर्यकी रहीचहूंदिशि छाय॥ का

और वहकुयेंसेनिकलकर हरिचरणोंपर गिरपड़ा व हाथ जोन
र बोला हे बैकुंठनाथ आपनेमुझे महाबिपत्तिमें दर्शनदेक दा
र्थकिया सिवायतुम्हारे मुझऐसेअधर्मीको सुखदेनेवाला त
कर्मकोईनहींहै जबइसीतरह राजानृग श्यामसुन्दरकी ब
तिकरनेलगा तबप्रद्युम्नआदिक लड़कोंने यहअचम्भा देर
मुरलीमनोहरसेपूछा हे महाप्रभु यहकौनहै व किसअपराध
गिरगिटहुआथा इसकाभेदकहिये जिसमेंहमारासंदेह छूटजा
हबचनवृन्दाबनबिहारीनेसुना तबआप उसकीकथाकहना न
नकर राजानृगसेपूछा तुमकोईदेवता व किसीदेशकेराजाहोक
गिरगिटतनुमें क्योंपड़ेथे नृगनेहाथजोड़कर बिनयकिया हे अ
र्यामी तुमसेकुछछिपानहीं है पर तुम्हारीआज्ञासे अपनावृत्ता
कहताहूं सुनिये मैं पूर्वजन्ममें राजाइक्ष्वाकुकाबेटा नृगनाम
प्रतापीहोकर नित्यदशहजार गौ बिधिपूर्वकगृहस्थ व वेदपा
ब्राह्मणोंकोदानदेताथा सिवाय गौके औरबहुतसे मकानबन
कर सबबस्तुसंयुक्तसंकल्पदेके ब्राह्मणोंकी कन्याओंका बिवाह
दिया करताथा व बड़े २ ढेरअन्न व मिठाईके ब्राह्मणोंको
देकर बहुतसेदेवस्थान व जलाशय संसारीजीवोंको पानीपीने
बनवादियेथे जगत्मेंमेरेदान व शुभकर्मकरनेकी ऐसी
ली जिसकाबर्णनमहींकरसक एकदिनऐसासंयो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौआगौ मेरीदानदीहुई ब्राह्मणके यहांसेभागआई व जोगौ
कसाथ दिनदानदेनेको मँगवाईथीं उनमेंमिलगई जबप्रातसम
पासक नसे वहगौ मैंने दूसरेब्राह्मणको संकल्पकरादिया व प्रथम
वाले ब्राह्मणनेराहमें उसगौकोपहिंचाना, तबदोनोंब्राह्म
चक्र हुये गौसमेत मेरेपासआये मैंने उनसेहाथजोड़करकहा
करन लाखरुपैया या लाखगौ उसकेबदलेलेकर अपनाझगड़ा
मार परदोनोंने नहींमाना और गौछोड़कर अपनेघरचले
के तीसमय मुझेशापदिया कि तू गिरगिटकेसमानमूड़ीहि
अ है इसलिये गिरगिटानहोजा जबकुछदिनबीतेमैंमरगया त
शापसेधर्मराजने मुझेगिरगिटतनुदेकर इसकुयेंमेंडालदिया
नयकरनेपरयहकहाकि श्रीकृष्णजीकेदर्शनपानेसे तेरीमुक्ति
उसीदिनसे तुम्हारेदर्शनोंकी अभिलाषा रखताथासोआज
कमलरूपीचरणोंका दर्शनदेकर मेराउद्धारकिया जिसतर
पने मुझऐसेअधर्मीको अपनादर्शनदेकर कृतार्थकिया उसी
दयालुहोकर ऐसाबरदानदीजिये जिसमेंतुम्हारेचरणोंकी
मुझेबनीरहै जबद्वारकानाथने राजानृगको इच्छापूर्वक बर
करविदाकिया और वहउत्तमविमानपरबैठकर देवलोकको
गयातबश्यामसुन्दरनेअपनेसन्तान व यदुबंशियोंसे जोवहां
ड़ेथेकहा देखो ब्राह्मणोंकीमहिमा इतनीबड़ीहै कि बिनाअप
भी ब्राह्मणकिसीपरक्रोधकरैं तो उसकेवास्ते अच्छानहींहोत
ष्टको चाहिये कि किसीब्राह्मणकाधन न लेवे जिसतरहअग्नि
जलताहै उसीतरह ब्रह्मअंशलेनेवालेकीगति सम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हियेबिषखानेसे एकमनुष्यमरता व ब्रह्मअंशलेनेवालेक
रिवारका पतानहींलगता बिषखानेवाला औषधकरनेसे अ भग
ी होजाता है पर ब्रह्मअंशलेनेवाले का दुःखछूटनेवास्ते ंसा
ौषधकामनहींकरती जो मनुष्य अनजानमें भी ब्राह्मण का
न या पृथ्वीलेताहै उसकेतीनपुरुषा नरकमेंपड़तेहैं औरजो न
ाह्मणकीबस्तुबरजोरीछीनलेताहै उसकेदशपुरुषामाता व दा
ोनरकभोगनापड़ताहै व जोलोगदानदियाहुआअपना ब्र
फेरलेतेहैं उसकोसाठहजारबर्ष नरककाकीड़ाहोकर फि
ातिमेंजन्ममिलताहै पर गर्भउनकाकईबारपातहोकर जब
नहोतेहैं तबकंगाल व रोगीरहकर जन्मउनकाबीतताहै राजा
ीदशा जिसमेंअजानसे अधर्महुआथा देखकर यहबातसत्य
झनाचाहिये ॥

दो० दानदेत द्विजराजको विघ्नकरै जो कोय । सो होवै अतिपातकी नरकबासतेहिहोय ॥

कदाचित्ब्राह्मण तलवारखींचकरमारनेआवे तो शिरअप
उसकेचरणोंपर रखदेनाउचितहै व सिवायअधीनताईके उन्हैं
ठोरबचनकहना न चाहिये मेरेऊपरक्रोधकरै या दुर्बचनकहै त
मैं कुछबुरा न मानकर और उसकीसेवाकरताहूं तुमलोगोंनेसुन
होगा कि भृगुऋषीश्वरने बिनाअपराधसोतीसमय मेरीछातीमे
लातमारीथी तबमैं पैरउनका यहसमझकरदाबनेलगा कि मेरी
छातीकीचोट उनके न लगीहो यहसमझकर ब्राह्मणकासन्मान
करनाउचितहै व ब्राह्मणकेप्रसन्नहोनेसे लोक व परलोकदोनों
बनताहै और ब्राह्मणसेझूठबोलना व ब्याजलेना न चाहिये तहै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्राह्मणको मेरेसमान न जानकर उसमेंकुछभेदसमझ अवश्यनरकभोगनापड़ताहै व ब्राह्मणकोमाननेवाले कीभक्तिपाकर परमपदकोपहुंचतेहैं इसलिये तुमलो परप्रमाण कियाकरो ॥

सीबिधि समझायके माखनप्रभु यदुराय । यदुवंशिन को साथले मन्दिर पहुँचे आय ॥

श्यामसुन्दरने राजाउग्रसेनसे यहसबहालकहा तबउन्हें कोबहुत उत्तमजानकर दण्डवत्किया इतनीकथा सुन तनेपूछा हे मुनिनाथ राजानृग ऐसेधर्मात्माने अनजा पापकरनेसे क्योंइतनादण्डपाया शुकदेवजीबोले राजा अपने दानधर्मकरनेका अभिमान रहताथा इसलियेउसकी गतिहुईथी दान व धर्म्ममेंगर्ब्बकरना न चाहिये ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

बलरामजीका वृन्दावनमें जाना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित एकदिनश्याम व बलराम नोंभाई राजमन्दिरमें बैठेथे उससमय बलभद्रजीने वृन्दा गोकुलकासुख व आनन्द व यशोदाकाप्रेम बर्णनकरके श्री णजीसेकहा कि बृन्दाबनसे आतीसमय हमदोनोंभाइयोंने शोदा व गोपियोंसे करारकियाथा कि फिरआनकर तुमसेमिलें तो वहांजानेकासंयोग नहींहुआ और हमलोगद्वारकामें आन सबब्रजबासी हमारेविरहमें चिन्ता करतेहोंगे आपआज्ञादी ये तो हमवहांजाकर सबकोधीर्यदेआवैं केशवमूर्त्तिबोले बहुत छा यहबचनसुनतेही बलरामजीने मुरलीमनोहर व अपने सेबिदाहोकरहल व मूशलअपनाशस्त्र उठालिया

...in: UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परबैठकर वृन्दावनकोचले जिस २ देश व नगरमें बलदा
चतेथे वहांकेराजाआगेसेआनकर सन्मानपूर्वक उन्हें भग
लेजातेथे व छत्तीसव्यंजनाखिलाकर अनेकतरहकीबस्तु सा
देतेथे इसीतरहरेवतीरमण सबराजोंसेभेंटकरते व उनको का
हुये उज्जैनमेंसांदीपन अपनेगुरूकेस्थानपरपहुंचे तबगु न
रण व उनकीस्त्रीको साष्टांगदण्डवत्करके उनकाआशी दा
या जबदशदिनवहांरहकर फिरवृन्दावनमेंआये तोक्या
जिनगायोंको श्यामसुन्दर आपचरायाकरतेथे वहसबगौ
श्यामसुन्दरकाकरिके बनमेंचारोंओर बिड़रीफिरतीहैं व मुंह
ायकर सिवायचिल्लानेके घासचरनेपर कुछचाहनानहीं रख
व उनकेपीछे २ ग्वालबाल श्यामसुन्दरका यशगाते व प्रेमरँग
चलेजातेहैं व ठौर २ ब्रजवासीलोग बालचरित्र मोहनप्यारेका
पसमेंकहि व सुनकर उसीचर्चामें जन्मअपना काटतेहैं जब व
रामजीने यहदशादेखतेही आंखोंमेंआंशू भरके रथअपनारो
किया तबनन्द व यशोदाआदिक सबगोपियां व ग्वालउनको
नेका समाचारसुनकर बड़ेप्रेमसे मिलनेवास्तेदौड़े व बलराम
कोदेखकर अतिप्रसन्नहुये ॥

दो० नन्द तात देखे तभी और यशोदामाय। बलदाऊ अतिप्रेमसों गिरे चरणपर धाय ॥

न्द व यशोदाने बलरामजीको अपनेचरणपरसेउठाकरछाती
गालिया व मुखचूमकरप्यारकिया जब बलरामजीने ग्वाल
ोंसे गलेमिलकर उनकीकुशलपूंछी तब ब्रजवासीलोगोंने
ाम व बलरामका बालचरित्रयादकरके आंखोंमेंप्रेमके हते हैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुये फिरनन्द व यशोदाने बलदाऊजीको बड़ेप्रेमसे
रकहा अयबेटा हमलोगोंको तुम्हारेबिरहमें क्षणभ
नबीतताहै तुम अपनाहालबतलाओ हमारेबिना इत
क्योंकररहे तुमधन्यहो जोइतनेदिनपरआनकर हमा
अपनाचन्द्रमुखदिखलाकर हमारीआत्माठंढीकी क
ारे व राजाउग्रसेन व बसुदेवआदिक यदुबंशी कभी
करतेहैं या नहीं बलरामजीबोले हे नन्दबाबा तुम्हारी
रलीमनोहर सबयदुबंशियोंसमेत प्रसन्नहोकर दिनरा
यशगातेहैं यहसुनकर यशोदाबोली हे बलरामजी जब
नप्यारे हमलोगोंकी प्रीतिछोड़कर मथुरामेंचलेगये तबसे
रीआंखोंकेसामने अँधेराछायारहिकर आठोंपहर उन्हींकी
चचर्चामें दिनबीतताहै कदाचित् मथुरारहते तोकभीकभीउ
वआती इतनीदूरद्वारकाजानेनहींसक्ती ॥

चौ० कहिये कहा कृष्ण की बाता । जिनको हम चाहैं दिनराता ॥
वै हमको चाहत कछु नाहीं । ऐसे निठुर भये मन माहीं ॥

हे बलदाऊजी वहऐसानिर्मोहीहै कि कभीअपनासंदेश
नहींभेजता सचपूंछोतो अबवह द्वारकापुरीके राजाहोकर
रीबोंको क्यों यादकरैंगे ॥

दो० अबतो महाधनीभये सबराजनके राज । ग्वालनकी सुधि करतही उनको आवतलाज ॥

हे बलरामजी भलायहबतलाओ कन्हैयाकभीमेरी व राध
दिक गोपियोंकी सुधिकरताहै या नहीं मेरेनिकट वहयहांसे
धिक सुखपाताहै परहमलोगोंको उसकेदेखेबिना चैननह
ष्ट्र हिणीनेभी हमारीप्रीति छोड़कर श्यामसुन्दरको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहता तोबिनामारे न छोड़ते यहसुनकर श्रीकृष्णजीने
शियोंसेकहा सुनोभाई दूतपर क्रोधकरना न चाहिये॥
दो० राजसभा में बैठकर कबहूं हँसिये नाहिं। या समान अवगुणनहीं लिख्यो पुराणन माहिं
यदुबंशियोंसे ऐसाकहकर श्यामसुन्दर उसब्राह्मणसेबो
जराज तुमअपनेराजासेजाकरकहदेव कि हम तुम्हारासं
नकरअतिप्रसन्नहुये वहअपनेयहां युद्धकी तैयारीकरैंमैं
अपनावेषछोड़दूंगा या उससेबासुदेववेषछुड़ाकर उसकाम
व कुत्तोंकोखिलाऊंगा यहवचनसुनतेही ब्राह्मणने काशी
कर सबहालराजापुण्डरीकसे कहा जबकुछ दिनबीते श्या
रने यदुबंशियोंसमेत काशीपुरीकेनिकट पहुंचकर पांचज
खअपनाबजाया तबराजापुण्डरीक वहशब्दसुनतेही दोअक्ष
णीदलसंगलेकर दैत्यसंहारणकेसामनेआया जबपारसंग्रह भौ
सुरकेभाई व मित्रकाशीनरेशने जोप्रयागमें राजाथा यहहा
ना तबवहभी तीनअक्षौहिणीसेना साथलेकर उसकीसहाय
रनेवास्ते काशीजीमें आनपहुँचा जिससमय दोनोंदलमें मार
जाबजकर तीर व तलवारआदिक अनेकतरहका शस्त्रचलनेल
उससमयशूरबीर मारमारकहकरअपनाप्राणदेते व कायरलोग
छेकोभागकर गिरपड़तेथे जबरणभूमिमें राजापुण्डरीकने चतु
जीरूपबनायेहुये श्यामसुन्दरके सामनेआनकर उन्हैंललका
तबबैकुण्ठनाथने हँसतेहुये उसका मुकुटउतारकरकहा अबसच्च
लाओ किसका पाखण्डीरूपहै हेराजन् जोसंदेशाहमको तुम
कहलाभेजाथा वह यादहोगा उसीप्रमाणहम तुम्हारेपास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भी मेरावेष अपनेअंगसेउतारकर तुमयहबातकहो कि
राधहुआ जो ऐसा संदेशाभेजा तोप्राणतुम्हारा छुड़ा
ो तुम्हारा शिरकाटलूंगा जबउसअज्ञानराजाने श्याम
कहनानहींमाना तबदैत्यसंहारणाने सुदर्शनचक्रसेकहा
जाकर अपनीज्वालासे सबहाथी व घोड़े व रथ व सवार
ादिक जोदोनोंराजोंकी सेनामेंहैं जलादेव यहआज्ञापा
नचक्रने दोनोंराजोंकी सेनामें जाकर इसतरह अपनी अ
मनुष्य व हाथीआदिकको जलादिया जिसतरह प्रलयक
अग्नि सबजगहको भस्मकरडालतीहै जब केवल पुण्ड
मौमासुरकाभाई दोनों राजारहिगये तब यदुबंशियोंने कह
द्वारकानाथ पुण्डरीकको इसरूपसे हमलोग नहीं मारसक
वचन सुनकर मुरलीमनोहर बोले तुमलोग धीर्यरक्खो यह अ
पने दण्डको पहुँचताहै जब ऐसाकहकर दैत्यसंहारणाने
नचक्रको उनदोनों राजोंके शिरकाटनेवास्ते आज्ञादी तब
नचक्रने जाकर पहिले दोनोंभुजा काठकी जोपुंडरीक ल
उखाड़डालीं यह दशादेखतेही जैसे पुण्डरीक अपना
कर भागा वैसे सुदर्शनचक्रने दोनों राजोंका शिर काट लि
ो मुरलीमनोहरकी इच्छानुसार शिरकाशीनरेशका नगरक
रपर आनगिरा व चैतन्यआत्माने मुक्ति पदवी पाई ॥

दो० बैरकियो हरिनाथसों रहौ सदाचितलाय। दीनीतेहि सायुज्यगति दयासिंधु यदुराय॥

जबनगरवासियोंनेशिरराजापुण्डरीकका पहिंचानकरा
यहहालकहा तबरानियां अतिबिलापसे रोकरकहने

CC-0. Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोअपनेको अजरअमर कहतेथे सोक्षणभरमें किसतरह भग
प्राणनिकलगया जबसबरानियांउसीशिरकेसाथसतीहो सा
दक्षिणबेटा पुण्डरीकका क्रोधितहोकर बोला जिसने मेरे का
बधकियाहै उसेबिनामारे नहीं छोडूंगा इसी इच्छासे न
र महादेवजीका तपकरनेलगा और श्यामसुन्दर विज दा
दुवंशियोंसमेत आनन्दपूर्वक द्वारकाचलेआये इतनीक
रशुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जबकुछदिनोंतकसुदक्षिण
र्वक तप व ध्यान शिवशंकरका किया तबभोलानाथ उसेद
रबोले तूक्याचाहताहै राजकुमारने शिवजीको दण्डवत्क
नयकिया हे दीनानाथमैं अपनेपिताकेमारनेवालेसे बदला
चाहताहूं यहसुनकरमहादेवजी बोले पुण्डरीकका पलटालि
चाहताहै तोबेदके मंत्रउलटेपढ़कर दक्षिणाग्निमें होमकर
ग्निकुण्डसे एकराक्षसीनिकलकर तेरीआज्ञापालनकरेगी व
लोग परमेश्वर व ब्राह्मणकी भक्तिनहींरखते उनपरतेराबल
गा व हरिभक्त व महात्मासे बिरोधकरनेमें तेराप्राणजातारहै
बऐसाकहकरशिवजीअन्तर्द्धानहोगये तबसुदक्षिण यज्ञकरा
गा जबयज्ञउसका उनकीआज्ञानुसारपूर्णहुआ तबकृत्याना
क्षसी काले२ व बड़े२दांतवाली त्रिशूलहाथमेंलिये डरावनीसू
बनाये ओठचाटतीहुई अग्निकुण्डसेनिकलकरबोली हे सुदक्षि
तेराशत्रुकहांहै बताव यहसुनकरराजकुमारनेकहा मेराबैरीब
देवनाम द्वारकापुरीमेंहै तू अभीजाकर उसेमारडाल यहव
तेहीकृत्या उसीसमयचलकर राहमें नगर व बन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...भी मेर... वह अपनेतेजसे द्वारकापुरीको जलानेलगी त...
...ने घबड़ाकर बसुदेवनन्दनकेपास जोचौपड़खेल...
...बनयकिया हे दैत्यसंहारण एकराक्षसी न मालूम क...
...कर नगरको जलातीहै इसकेहाथसे हमाराप्राण बचाइये...
...द्वारकानाथ बोले तुमलोग मतघबड़ाव अभी इसरा...
...काशीसे आईहैनिकालेदेताहूं इसतरहउन्हैं धीर्यदेकर...
...रने सुदर्शनचक्रसे कहा तुमकृत्याको मारकर यहांसे भ...
...र काशीपुरीको जलाकरचलेआवो यहबचन सुनतेही...
...र्शनने कोटिसूर्यके समानतेज बढ़ाकर उसराक्षसीको ...
...कृत्या वहांसेभागी व उसने काशीमें आनकर सुदक्षिण व...
...ह्मणोंसमेत जो यज्ञकरातेथे मारडाला व सुदर्शनचक्रनेभी...
...र अपने तेजसे काशीपुरीको जलादिया जब उससमय...
...ा दुःखीहोकर सुदक्षिणको गालियांदेनेलगीं व सुदर्शन...
...नी ज्वाला मणिकर्णिकाकुण्डमें ठण्ढीकरके द्वारकापुरी...
...लेआये व सबहालवहांका बैकुण्ठनाथसेकहदिया ॥

दो० यहप्रसंग चितलायकै कहै सुनै जो कोय। रहै सदासुखचैनसों लहैनहीं दुखसोय ॥

सरसठवां अध्याय ॥

बलरामजी का द्विबिद बांदरको मारना ॥

परीक्षितने इतनी कथा सुनकर बिनयकिया हे मुनिनाथ...
...नीला बलरामजीकी औरबर्णनकीजिये शुकदेवजीबोले हे...
...जिसतरह बलदाऊजीने द्विबिदबांदरको माराथा वह कथा...
...सुनो द्विबि... बांदर सुग्रीवका मित्रकिष्किन्धापुरीमें...
...लकहा... ...उसने भौमासुरअपने...

Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रेजानेका समाचारपाया तबवहउसका बदलाले सतरह भग
से द्वारकापुरीकोचला जो नगर व गांव राहमेंउसे मिलाहो सा
जाड़ता व स्त्रियोंसे बरजोरी भोगकरता व पहाड़ व वृक्षोंपर का
कर बस्तीआदिकपर फेंकताहुआचलाजाताथा कभीअ न
मायासे आग व पानी व पत्थरबरसाकर अनेकतरहका दा
व कभीछोटे२ लड़कोंकोकन्दरामें छिपाकर भारीपत्थरा
खपररखआता व कभीवृक्षोंको उखाड़करउससे संसारी
बधकरता कभीलोगोंको उठालेजाकर समुद्रमेंडालदेता
ऋषि व हरिभक्तोंको बैठादेखता वहां मल व मूत्र व लोहू
बरसाकर उन्हैं सताताथा॥

चौ० कबहूं नारिन को लै आवै। आन पुरुषके संग सुलावै॥
कबहूं लै पत्थर अतिभारी। धरे ल्याय कर द्वारमँझारी॥
कबहूं पैठि समुद्रमें जलडारै झकझोर। बूड़िजात तेहि नीरसों बहुत लोग चहुंओर॥

जबवह इसीतरह लोगोंकोदुःखदेताहुआ द्वारकामेंपहुँचा व
रूप बनाकर श्यामसुन्दरके महलपरजाबैठा तबउसकेडरसे
रानियां मुरलीमनोहरकी अपना २ द्वारबन्दकरके भीतरछि
ई उनदिनोंबलरामजी रैवतपर्वतपर गन्धर्व व गन्धर्विनियोंके
क्रीड़ा व बिहारकरनेगयेथे द्विबिदबांदरने यहहालसुनकरवि
किया किपहिलेहलधरकोमारकर पीछेसेश्रीकृष्णकाप्राणलूं
ऐसाविचारतेही उसने रैवत पहाड़परजाकर क्यादेखा कि बल
जी गन्धर्विनियोंकेसाथ मदिरापीकर एकतालाबमें जलबि
व गानविद्याकररहेहैं सो द्विबिदबांदर छोटारूपबनाकर एक
पर जो तालाबकेकिनारेथा चढ़गया व किलकारियां मारतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौआठडालीसे दूसरीडालीपर कूदनेलगा व मल व मूत्रसेगन्ध
नकेसाथ बस्त्र जो तालाब किनारेरक्खेथे नष्टकरदिये॥

पासभी० कबहूं शाखा तोड़के डारत चारों ओर। कबहुं भूमिपर उतरके करै शब्द अतिघोर॥

जबउसबांदरने पत्थरमारकर मदिराकाघड़ा जोरकेसाथ
चक्र तबस्त्रियोंने पुकारकर बलरामजीसे सबहालउसका
करन नसुनतेहीरेवतीरमणने तालाबमेंसे निकलकर एकढेल
मार रपर चलाया तब उसने वृक्षकेनीचे आनकर सबचीरस्त्रि
कें रडाले व जिधर तिधर फेंकदिये यहहालदेखतेही बलदा
अ दौड़कर उसबांदरको हाथसे पकड़लिया तबवह अपनाछोट
बनाकरहाथसे बाहरनिकलगया व फिरपहाड़के समानरूप
बलदाऊजीसे लड़नेवास्ते सन्मुखआया व बड़े२वृक्ष व पर्वत
उखाड़कर उनको मारनेलगा जबरेवतीरमण बड़ेक्रोधसेह
लअपना उठाकरमारनेदौड़े तबद्विविदने एकवृक्षबहुतबड़
सउखाड़कर संकर्षणपरचलाया सोबलदाऊजीने बचाकरए
सलबांदरके शिरपरमारा उसकाशिरफटकर इसतरहलोहूबह
गा जिसतरह बरसातमें गेरूकेपहाड़से लालपानीबहताहै प
बांदरने शिरफटनेपरभी दूसराबृक्षउखाड़कर बलदाऊजीको
तोरेवतीरमणने अपना मुसलमारकर वहवृक्षतोड़डाला जब
तरह लड़ते२कोईवृक्ष या पत्थर वहांनहींरहा तबदोनोंआद
सतरहबधड़कहोकर आपसमेंकुश्ती व मुक्कासेलड़नेलगे कि
देवाले डरगये जबबहुत देरतक द्विविदबांदरने बलराम जीसे
ट चारमुक्काउन्हैंमारा तबबलरामजीने सबस्त्रियोंको उ

Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ाईहुई देखकरके द्विविदके गलेकाहँसुआ ऐसा दबा
उसकेनाक व आंख व कानसे लोहूबहकर वह मरगया
की लोथगिरनेसे पृथ्वीकाँपनेलगी तबदेवतोंने बलरामज
र पुष्पवर्षाये व उनकी स्तुति व बड़ाई करतेहुये अपने २
को चलेगये ॥

॥ आनँदसों श्रीद्वारका हलधर पहुंचे आय । पुरवासी प्रफुलितभये ज्यों निर्धन धनपाय ॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित द्विविद
युगसे किष्किन्धामें रहताथा सो रेवतीरमणने मारकरउ
डारकिया ॥

अरसठवां अध्याय ॥

साम्बका लक्ष्मणासे विवाह होना ॥

देवजीनेकहा हेपरीक्षित जिसतरहबेटा साम्ब श्रीकृष्णजीका
मणानाम कन्या राजा दुर्योधनकी हस्तिनापुरसेविवाह ला
यावहकथाकहतेहैं सुनो लक्ष्मणानामकन्या राजादुर्योधनकी
ाहनेयोग्यहुई तबदुर्योधनने स्वयम्बरउसका रचकरअनेकर
को अपनेयहांइकट्ठाकिया जबसाम्बबेटामुरलीमनोहरकाभी
हालसुनकर हस्तिनापुरमेंगया तोवहांक्या देखाकिअनेक रा
उत्तम २भूषण व बस्त्रपहिने व शस्त्रलिये राजादुर्योधनकी सभा
ठेहैं व अनेकप्रकारका मंगलाचारवहां होरहाहै उसीसमय रा
कन्या अतिसुन्दरी व चन्द्रमुखी रत्नजटितभूषण व बस्त्रपहिने
माल हाथमेंलिये सबराजोंको देखतीहुई हंसरूपी चाल से
सके निकटपहुँची तबउसका रूप देखतेही साम्बने मोहितहो
विचारकिया कि ईश्वरजाने यहकन्या किसके गलेमें जय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चालदेतोफिर इसकाहाथआना कठिनहोगा इसलियेवा
कोरथपर बैठाकरद्वारका लेचलनाचाहिये ऐसाविचारते
न लज्जा व भयछोड़कर लक्ष्मणाका हाथ पकड़लिया
रथपर बैठाकरद्वारकाको चले यहहालदेखकर सबराजा
बरमेंआयेथे लज्जितहोगये व दुर्योधन धृतराष्ट्र आदिक
लज्जितहोकर बड़ेक्रोधसे आपसमेंकहनेलगे देखो साम्ब
गोंकाकुछभयनमानकर ऐसाअंधेरकिया किराजकन्या
रमेंसे बरजोरीलेगया कदाचित् इन तिलकधारीराजोंमें
ऐसाकरतातोकुछसंदेह नहींथा यादव लोगसदासे अपनी
हमारेघरानेमें देतेआयेहैं यहबड़ी लज्जाकीबातहै कि उनका
जोभालूकानातीहै हमलोगोंके सामनेसे राजदुलारीको
जावे यहअपयश हमाराकभी न छूटेगा और हमारी जानमें
णाजी अपनेपुत्रका अपराधसमझकर उसकी सहायतानहीं
कदाचित् अधर्मकीराहलड़नेभीआवैं तोइसतरह हारजावेंगे
तरहकामी पुरुष रोग उत्पन्नहोनेसे तुरन्तमरजातेहैं जबहम
श्यामसुन्दरको लड़तेसमय पकड़लेवेंगे तबदूसरे यादववंशी
राक्या करसकेहैं यहबात सुनकरकर्णबोला यदुवंशियोंका
यहचलनहै कि दूसरीजगह शुभकार्य्यमें जाकर बिघ्नकर

चौ० जाति हीन अबहीं यह बढ़े। राजपाय माथे पर चढ़े॥

जबधृतराष्ट्रने यहबातसुनकर बड़ेक्रोधसे दुर्योधनको सा
पकड़लाने वास्तेकहा तब वह कर्ण व विकर्ण व शल्य व भूरि
केतु महाशूरवीर व सेनाको साथलेकर चढ़दौड़ा व

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा देखोवह कैसा बलीहै जो हमेंजीतकर राजकन्याको
गा जबदुर्योधन आदिकने अपना२रथदौड़ाकर साम्बको भग
ोरसे घेरलिया तबसाम्ब अपना रथखड़ाकरके धनुषबाण ंसा
र्योधन व कर्णसे बोला तुमलोग मेरेमाताके कुलपरमुझे का
न मतसमझो मैं श्रीकृष्णजी बैकुण्ठनाथके वीर्यसे उत्प न
ाहूं इसलिये युद्धमें तुमसे नहीं हारूंगा चाहोतुमलोग अ दा
केला मुझसे लड़ाई करलेव चाहोसबकोई मिलकरलड़ो

दो० यद्यपितुम्हरो तेजबल प्रकटभयो जगमाहिं। तद्यपि हमको या समय पकड़सकोगे नाहि

यहबचनसुनतेही कर्णने साम्बकेसन्मुख जाकरकहामैंज
हूं कि तू जल्दीहम से नहीं हारेगा परहमलोगोंसे जीतकरतु
रकाजानाकठिनहै चैतन्यरह हमतुझे बाणमारतेहैं जबऐसाक
कर कर्ण साम्बपर बाणचलानेलगा तबसाम्बने उसका वारब्य
रअपनेबाणोंसे चारोंघोड़ा व सारथीकर्णके रथके मारडाले व
२बाणदुर्योधनादिक सेनापतियोंकोमारे सोवहलोगअपनी
सेउसकेबाण बचाकर साम्बकीबड़ाई करनेलगे जबदुर्योधन
कनेदेखा कि साम्बअकेली अकेलाहमलोगोंसे नहीं माराजा
तबछओंशूरबीर एकसाथसाम्बपर अपनेअपने शस्त्रचलानेल
उससमय साम्बनेमुरलीमनोहरके चरणोंकाध्यान धरकरऐसे
णचलाये कि छओंमहारथियोंको घबरादिया व उनकेरथका
ड़ासारथीसमेत मारडालाजब दुर्योधन आदिकनेयहदशाअप
दिखी तबछओंमहारथियोंने एकीबेरअधर्मके राहतीरमारकर
कनेचारोंघोड़ा व दूसरेने सारथी साम्बकोमारडाला व तीन हतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...कर चौथेनेध्वजा रथपरसेगिरादी जबसारथी व घोड़ों
...नसेसाम्बरथपरसे कूदकर पैदललड़नेलगातबकर्णनेपहुं
...म्बको पकड़लिया व अपनेरथपर बैठाकर हस्तिनापुर
...या व दुर्योधनने साम्बको अपनी सभामेंखड़ाकरके कहा
...रा वहपराक्रम क्याहुआ जिसघमण्डसे तू राजकन्याको
...ी उठालेगयाथा जबयहसुनकर साम्बलज्जासे चुपहोरह
...पितामहने दुर्योधनसे कहाइसका ब्याहलक्ष्मणासे
...करदेना चाहिये जबदुर्योधनने भीष्मपितामहका कहन
...नकरसाम्बको कैदकिया तबनारदजीने हस्तिनापुरमेंआन
...दुर्योधन व कर्णआदिकसेकहा साम्बद्वारका नाथकेपुत्रसेतो
हुईथी परतुमलोगोंको उसेकैदकरना उचितनहींथा इसका
चार सुनकरबलरामजी यहांआवैंगे तबतुमलोग अपनाअप
... उनके सामने प्रकटकरना जोकुछहोनाथासोहुआ परसाम्ब
...सी बातका दुःख मतदेना जबनारदमुनिके कहनेपरभी
...नने साम्बको नहींछोड़ा तबनारदजी द्वारकामेंगये और स
...की दशाकहकर राजाउग्रसेनसेबोले दुर्योधनादिक कौरव सा
...को अपनेयहांकैदरखकर बड़ादुःखदेतेहैं जल्दीजाकर उनकी
...धिलेव नहीं तो साम्बका प्राणबचनाकठिनहै ॥

चौ० । गर्ब भयो कौरवकों भारी । लाजसकोच न करी तुम्हारी ॥
बालकको उन बांध्यो ऐसे । शत्रुनको बांधै कोउ जैसे ॥

यहबातसुनतेही राजाउग्रसेनने श्यामसुन्दर व यदुवंशियों
...कर कहा तुमलोगअभी मेरी सेनासाथलेकर हस्तिनापु

Haratgani, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ढ़जाव व कौरवोंको मारकर साम्बकोछुड़ालाओं जबउग्रसे
आज्ञानुसार दैत्यसंहारण सेनासमेत हस्तिनापुरजानेको तैय
तबबलरामजीने जोदुर्योधनकेसाथ मित्रतारखतेथे मुर
हिरसेबिनयकी हेमहाप्रभु कौरवहमारेपुरानेसम्बन्धीहैं थो
केवास्ते सेनालेजाकर उनसेबिरोधकरना न चाहिये मुझेक
जिये तोवहांजाकरसहजमें साम्बकोछुड़ालाऊं कदाचि
ाग मेरेसमझानेसे न मानैंगेतो मैंअकेलाउनको दण्डदेने
हुतहूं जब श्रीकृष्णजीने यहबातमानकर उन्हैंजानेकी आइ
बबलभद्रजी उद्धव व अक्रूरादिककई यदुवंशी व ब्राह्मण व
र्योंको अपनेसाथलेकर द्वारकासेचले व कुछदिनबीते हस्तिन
रके निकटपहुंचकर एकबागमेंडेराकिया व अपने आनेकासमा
ार अक्रूरसे दुर्योधनादिकको कहलाभेजा जब अक्रूरनेराजाध
ष्टूकी सभामें जाकर बलभद्रजीके आनेकाहालकहा तबदुर्यो व
जो बलरामजीकाचेलाथा बड़ेहर्षसे भीष्मपितामह व द्रोणाचे
व धृतराष्ट्र व युधिष्ठिर आदिकको साथ लेकर उन्हैंअपनेमन्दि
पर लानेवास्ते बागमें गया व रेवतीरमणके चरणोंपरगिरकर बि
यकी हे महाप्रभु जिसतरह आपनेदयालु होकरदर्शनदिया उ
तीतरह आनेकाकारण कहिकरअपने चरणोंसेमेराघर पवित्रकी
जिये यहसुनकर बलदाऊजीबोले मैं राजाउग्रसेनका संदेशाकह
वास्ते यहांआयाहूं सुनो जबसमाचार कैदकरनेसाम्बका द्वारका
रीमेंपहुंचा तब महाराज उग्रसेनकी आज्ञासे कृष्णचन्द्र आदं
कन्दनसेनासमेत तुम्हारेऊपरचढ़ाईकीतैयारीकीतबमैंने कहे तहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौआ नकर मुरलीमनोहरसेकहा महाराजकौरवलोग हमारे
कसाथ हैं इसलियेउनसेअभी लड़नेवास्ते जानाउचितनहीं है
पासका जाकर साम्बकोछुड़ालाताहूं सो हे दुर्योधन व धृतराष्ट्र
पितामह राजाउग्रसेनने तुमलोगोंको यह संदेशा भेजाहै
चक्र बालकको छः महारथियोंने मिलकर अधर्मकीराहपकड़
करन बउसअकेलेकुंवरने छओंआदमियोंको युद्धमेंघबड़ादि
मार ने यह नहींसमझा कि उसके सबघरवाले पहुंचकर ह
कै गतिकरैंगे हे धृतराष्ट्र यद्यपिउसबालक अज्ञानसे अपरा
अ किराजकन्याको स्वयम्बरमेंसे उठालेगया परतुमलोगों
बन्धीहोकर उसेकैदकरना उचितनहींथा लड़कियोंकोअपनी
तेदारीमें देनाचाहिये इससेक्याउत्तमहै जोपुरानेसम्बन्धियों
जावैं अबभी उचितहै किसाम्बको कैदसे छोड़करलक्ष्मण
वाहउसके साथ करदेव ॥

दो० यद्यपि उसअज्ञानने कीन्हों काज असाधि । तद्यपि तुम पुरुषाहते करते नहीं उपाधि

यहबचनबलरामजीका सुनतेहीदुर्योधन सबकौरवोंकेस
से क्रोधितहोकरबोला हे बलरामजीआप चुपरहियेअबअधि
ड़ाई उग्रसेनकी न कीजिये हमलोगोंसे यहनहींसुनाजाता
चारदिनकीबातहैकिउग्रसेनको संसारमेंकोई नहीं जानताथा
से उसनेहमारेसाथनातेदारीकी तबसेउसकीपदवीबढ़ी देखो
ननेहमारेआधीनहोनेपरभीअभिमानसेइसतरहहमकोसंदेश
लाभेजाहै जिसतरहकोईराजा अपनेप्रजापरआज्ञाकरै बड़ा
जोपांवकीजूती शिरपरचढ़नेलगीं यादवबंशियोंको

Domain: UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वर धछत्रदेकर राजाबनायाथा सोउनकोऐसीबात कहै
जानहींआती द्वारकापुरीका राज्यपाकरपिछलीबात अप भग
गये जो मथुरामेंग्वाल व अहीरोंकेसाथरहतेथे जबहमनेउन्हें सा
पनेसाथ खिलाकरराजगद्दी दिलवाई तबउनकीगिनती र का
हुई जैसीभलाई हमनेउनसेकी वैसाफलपाया किसीदूसरेने न
ऐसाकरते तो जन्मभर हमारायशमानता बड़ेलाजकीबात दा
दवलोग सदासे हमारे आधीनरहकर अबहमारी बेटी ब्य
हते हैं ॥

दो० तिनको यह पदवीभई हमसों करत बिवाह । काल्हि परों मांगतहते आजभये हैं साह ॥

आकाशसेपानीकीजगह पत्थरबरसने नहींसका यहसबहम
नातेदारीकरनेका कारणहै जोदूसरेराजालोग हमारेनामपरउ
का आदरकरतेहैं नहींतोउन्हैंकौनपूंछताथा निर्लज्जता व ढिठा
साम्बकीदेखो जिसनेस्वयम्बरमेंसे मेरीकन्या लेजानेकी इच्छ व
ी हमैंउचितथा किसाम्बकोमारडालते जिसमें फिर कोई ऐसा
करता नातेदारीहोनेसे ऐसानहींकिया इसीवास्ते बलदाऊर्ज प
सकीसिफ़ारिशलेकर हमारेयहांआयेहैं आजराजाइन्द्रभी ऐ
सामर्थ्य नहींरखता जो मेरे व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्यके
सुखआनकर लड़नेसकै जबकालयमन व जरासन्धके घेरले
मथुराछोड़कर भागगयेथे तबयहसबघमंड व बलउनका क
गयाथा जो आजहमारेऊपरआज्ञाचलातेहैं यहसबदोष भीष्म
तामह व धृतराष्ट्रहमारेपुरुषों काहै जिन्होंने यादवबंशियोंका
मानकरके उन्हैं इतनाढीठ किया नहीं तो ऐसा क्यों कहतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...नकुर्योधन यहकठोरबचन उग्रसेनआदिकको कहकर
...उठगया ॥

... तबजान्यों बलरामजी निश्चयकरिमनमाहिं । सूधीबातनकुटिलजन कबहूंसमझतनाहिं

...ऐसा विचारतेही बलदाऊजी हँसकर उद्धवआदिक अप...
...मेंसेबोलेदेखो कौरवोंको अपनेराज्यकाइतनाअभिमान...
...मलोगोंको चरणकी जूतीजानकर अपनेको शिरसम...
...श्यामसुन्दर बैकुण्ठनाथ ब्रह्मा व महादेव आदिक देव...
...लकहोकर राजाउग्रसेनको दण्डवत् करतेहैं तबउनको...
...जहोनेमें क्यासन्देहहैआज मुरलीमनोहरकीदयासे इन्द्रा...
...देवतोंकी यह सामर्थ्यनहींहै जो राजाउग्रसेनको दुर्वचन कह...
...कें सो उन्हींको दुर्योधनने हमारेसामने ऐसीबातकही तोमे...
...म बलदाऊजी कि अभीनगरसमेत इनलोगोंको यमुनाज...
...बाकरनाशकरडालूं नहींतो आजसे अपनानाम बलरामन...
...हबात अपने साथियोंसे कहकररेवतीरमणने क्रोधमें भरेहु...
...मपितामह व धृतराष्ट्रसे कहा दुर्योधन अज्ञानको यहांबुला...
...तोअपनीबातोंका उत्तरहमसेसुनै मैंनेजानाकि अबप्रीतिना...
...रीकी छूटकर युद्धकरनापड़ैगा जबभीष्मपितामहके बुलाभे...
...से दुर्योधन फिर सभामें आनकरबैठा तबरेवतीरमणनेकहा हे...
...धनज्ञानी व अज्ञानीमनुष्य इसतरह पहिंचानाजाताहै कि...
...लोग सबबातका आगम बिचारकर वहकाम करतेहैं जिसमें...
...जितहोनानपड़ै व मूर्खमनुष्य बिनसमझे काम करनेसे...
...दंडको पहुँचते हैं ॥

In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० ज्ञानीजो कारजकरै समझलेत मनमाहिं। कारज बिनसमझेकरैताहि ज्ञानकछुन

जिसतरहनया घोड़ा जबतकसवारके हाथकाकोड़ा न भग
तबतकसीधानहींचलता सोतुमने अभिमानभरीबातैं कहांसा
हबिचारनहींकिया किकैसाबचनकहताहूं यहसबबाततुमकका
साउचितनहींथा किसवास्ते कि मैंनेप्रेम व प्रीतिभरीहुईबातैंतुन
कहीथीं उसकाउत्तर तुमनेऐसादिया जैसा कोई सेवककोदा
कहता मैं चाहताथा किहमारे तुम्हारेमेंयुद्धनहो सोतुमने
कहकर हमकोक्रोधादिलाया व भलमन्सीकाकहनामेरातुम
च्छा नहींमालूमहुआ इसलिये तुमअपने कर्त्तवका दण्डप
लज्जितहोगे तुमनेनहींसमझा किअपनीस्तुति व दूसरेकी
ाकरना अच्छानहींहोता तुझे अपनीकन्या श्रीकृष्णजीके
देनेसे लज्जामालूमहोतीहै तू उनबैकुण्ठनाथकी पद
नता जिनकेचरणोंकीधूरि इन्द्रादिकदेवता शिरचढ़ा
बड़ाई समझते हैं॥

दो० जिनका ध्यान धरैंसदा शिव बिरञ्चि चितलाय। चरणकमलसेवतरहैं श्रीकमलासुखपाय

हे दुर्योधन भला तू बतला यहपदवीतेरेकुलमें किसको
जोतैंने अभिमानभरीबातैंकही ऐसाकहकर बलदाऊजी
से अपनाहल पृथ्वीमेंगाड़दिया व हस्तिनापुरको पृथ्वीसहित घर २ कथा
से उठाकर जैसे यमुनाजलमें डुबानेचाहा वैसेएकबाइन्द्रकेस
उठाहुआ देखकरभीष्मपितामह व धृतराष्ट्र ब्राह्मण व बड़ोंके
रादिक जोउससभामेंबैठेथे उठखड़ेहुये व हाथजोड़करविनयसी
रेवतीरमणसेकहा हे दीनानाथ आपईश्वररूप व धर्म्मकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वालेहोकर अपनाक्रोधक्षमाकीजिये व दुर्योधनअ
मनुष्यकेदुर्वचन कहनेपर हस्तिनापुरकोडुबाकर बिना
करोड़ोंका प्राण न लीजिये आजसेहमलोग सदाराजा
आज्ञापालन करैंगे ॥

दो० सबहममिलिबहु भांतिसों बिनती करी सुनाय। दयावन्तबलरामजी दीन्ही रिस बिसरा

तबबलदाऊजीने भीष्मपितामहआदिकके विनयकरने
आकरके हलअपना जो हस्तिनापुर उलटने वास्ते पृथ्वी
थानिकाललिया तबदुर्योधन साम्बकोबहुत अच्छा गह
पड़ापहिनाकर लक्ष्मणा अपनीकन्यासमेत बलरामजी
लेआया व हाथजोड़कर बोला ॥

चौ० तुमहौ अलख शेष अवतारा। धरत शीश धरणीका भारा ॥
हमअसाधुअति हैं अज्ञानी। तुम्हरीगति अगाधनाहिंजानी ॥
इतनोदण्ड जो हमकोदीन्हों। सोतुम बहुत अनुग्रहकीन्हों ॥
दानीशक्ति जनायके कीन्हों हमैं सनाथ। हमदासनके दासहैं तुम नाथनके नाथ ॥

बाकरन रह दुर्योधनने बहुतस्तुतिकरके मंगलाचारमना
हबापूर्वक लक्ष्मणाका बिवाह साम्बसे करदिया व बारहह
मदि व दशहज़ारघोड़े व छः हज़ार जड़ाऊरथ व हज़ारदास
तोअपहरी भूषण व वस्त्रसंयुक्त व अनेकवस्तु दहेजमें देकर ज
रीकी छूटलहिनिको बिदाकिया तबबलरामजी साम्बकोलक्ष्म
सेदुर्योधन साथलेकर हर्षपूर्वकद्वारकामेंपहुंचे व सबहालवहां
धनज्ञानी न व श्यामसुन्दरसे कहदिया कौरवोंका गर्वटूटने
लोग कर सबकोई आनन्दहुये इतनीकथासुनाकर शुकदेवज
हेपरीक्षित तुमदेखो अभीतक हस्तिनापुर दक्षिण ऊंचाह
टल नीचा दिखलाई देताहै ॥

Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनहत्तरवां अध्याय ॥

नारदमुनिको श्रीकृष्णजीके सबमहलोंमें रहनेका संदेहकरना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित एकदिन नारदजीने अमरा
भग
सा
का
न
दा
रीमें क्यादेखा कि राजाइन्द्रकी दोनोंस्त्रियां आपसमें झग
हीहैं तबउन्होंने विचारकिया कि दो सवति होनेसे यहदश
ीकृष्णजीके सोलहहज़ार एकसौ आठस्त्रीहैं उनमें किसद
तीहोगी न मालूम गोपीनाथ उनको इकट्ठे बुलातेहैं या
बांधकर उनकेपासजातेहैं यहहालदेखना चाहिये ऐसा
र नारदजी द्वारकामेंआये तोक्यादेखा कि वहांअच्छे २ बा
मउत्तम पुष्प व फललगेहोकर उनमेंअनेकपक्षीबोलतेहैं व
गिनती तड़ाग व बावलीमेंकमल फूलेहोकर उनपरभौंरोंका
ना बहुतशोभादेताहै व सुनहुलोक़िलेके चारोंओर समुद्रलहर
रकर मालीलोग मीठे २ स्वरोंसेगातेहुये क्यारिया सींचरहेहैं व
निघटपर झुण्डका झुण्ड महासुन्दरी स्त्रियांअच्छा २ गहना व
पड़ापहिने दिखलाईदीं जबनारदमुनियहसब शोभादेखतेहुये
गरमेंगये तोक्यादेखा किमहल व मकान रत्नजटितहोकर उनप
अनेकरंगकी कलशियांलगी हैं ॥

दो० तिनमें मन्दिर मध्यकी महिमा कही न जाय । मानोंरत्नजड़ावमें माणिकधरो बनाय ॥

और सबदुकान व सड़क उसनगरकी उत्तमहोकरघर २ कथा
रचर्चाहोरहीहै व यदुबंशीलोग अनेकजगह राजाइन्द्रके स
आपसमें बैठेहुयेश्यामसुन्दरका यशगातेहैं व सबछोटेबड़ोंके
रपर अम्बर व अरगजे जलनेकी सुगन्धउड़रहीहै व द्वारकाबासी
अपने २ घरहोम व यज्ञादिकशुभकर्म्म करकेअच्छा २ पहनतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मसे ब्राह्मणोंको खिलातेहैं जब नारदमुनियहआनन्द
रुक्मिणीजीकेमहलमेंगये तोवहांऐसारत्नजटित स्थान
सकेसामने आंखनहींठहरसकीथीं व उसमहलमें तास
लगीहोकर छज्जोंपरकबूतर आदिकपक्षियोंकारूप ऐसा
प्राथा जिनकेपास जंगलीपक्षीआनबैठतेथे व अरगजे व
घुयेंको मोरलोगबादल समझकरबड़ेहर्षसेनाचतेथे मोति
र द्वारपरलटकाईहोकर पारिजातक फूलकी सुगन्ध
उड़तीथी ॥

चौ० सुन्दरबालक खेलत डोलैं । मधुर मनोहर बाणी बोलैं ॥
रूपवन्ति दासी मन हरैं । निजस्वामी की सेवाकरैं ॥

दो० यहशोभा ऋषि देखिकै भूलिगये सबज्ञान । दासी औ ठकुरानियन नहींसके पहिचान ॥

सो नारदमुनिने वहांक्यादेखा कि श्यामसुन्दर उत्तमश
मुकुट जड़ाऊपहिने ज़र्द पीताम्बरबांधे व उपरनारेशमी ओढ़
रवालीजुलफैं छोड़े माथेपरकेशरका तिलक लगाये कुण्ड
ड़ाऊकानोंमें डाले व बनमाला व बैजयन्तीमाला व मोति
हारपहिने नटवररूप बनायेहुये बैठेहँसतेहैं व हज़ारों दासी
परभी रुक्मिणीजी आपखड़ीहुई पंखाहांकतीहैं जैसेद्वारका
नेनारदमुनिको आतेहुयेदेखा वैसेउठकरउन्हैंदण्डवत्करके
ऊसिंहासनपर बैठाला व अपनेहाथ उनकाचरणधोया व च
दक लेकर बिधिपूर्वक उनकापूजनकिया व हाथजोड़करबो
मुनिनाथ आपने दयालुहोकर मुझे दर्शनदिया नहींतो संसा
नुष्योंको तुम्हारादर्शन मिलनादुर्लभहै हमक्या सेवातुम्हा
ट
संहमारा कल्याणहो ॥

Domain, UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बो० जाघर चरण साधुके जावैं। वे नर सुख सम्पति सबपावैं॥

यह वचनसुनकर नारदमुनिने विनयकिया हे आदिपुरुष भग
नूमैं तुम्हारा दर्शनकरने आयाहूं बिनादया व कृपातुम्हारीसंसा
मनुष्यभवसागर पारनहीं उतरनेसक्ता गंगाजीतुम्हारे चरणका
वन होकर सबजीवोंको सुखदेतीहैं मैंकंगालब्राह्मण कौनगिन
मेंहूं जोतुम्हारीस्तुति करनेसकूं मुझपरदयालुहोकरऐसाबरदा
दीजिये जिसमेंतुम्हारास्मरण व ज्ञानमुझसे न छूटै॥

चौ० मैं सेवक तुम सबकेराजा। मोहिं प्रणाम कियो केहि काजा॥
जगमें लियो मनुज अवतारा। यातें करत जगत व्यवहारा॥
नातो तुम चरणन की रेना। शिव बिरञ्चि चाहैं दिनरैना॥
मैं उनकी पदवी कहँ पावौं। दासन में यक दास कहावों॥
तुम्हरो नाम जपै जन कोई। तापर कृपा तुम्हारी होई॥
यह तुम्हरे मनमें जिन आवै। नारद हमसे पांव धोआवै॥
याहीबिधि हम पुत्र तुम्हारे। कृपावन्त तुम तात हमारे॥
जापर कृपा तुम्हारी होई। अन्धकूप सों निकसै सोई॥

बो० भक्तनके दुखहरणको धरणि उतारनभार। लीनो तुम अवतारहै माखनप्रभु करतार॥

जब इसतरह स्तुतिकरके नारदमुनिवहांसे बिदाहोकर सत्य
भामाकेघरगये तोक्यादेखा कि उद्धवजी वहांपर मुरलीमनोहर
चौपड़ खेलतेहैं॥

चौ० ऋषिको देखि उठे घनश्याम। वाही भांति करो परणाम॥
कह्यो धन्य हैं भाग्य हमारे। जोतुमसे ऋषिराज पधारे॥
कृपा करो द्विजराज गुसाईं। केतिक दिवस रहे यहिठाईं॥

यहबचन सुनतेही नारदमुनिवहांसेभी श्यामसुन्दरको आशी
र्वादेकर जाम्बवतीके यहांगये तब बैकुण्ठनाथको अंगमेंउबटन
कुलेल मलवाते देखकर बिनाभेंटकिये फिरआये किसवास्तेकि
वाह्यमें तेललगावतीसमय दण्डवत्करना व आशीर्बाददेना ब
तहै फिरनारदजीने कालिन्दीके महलमें जाकरदेखा कि तहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मसुन्दरको पलँगपरसोयेहुये पाया जब कालिन्दीने नारद
कोदेखतेही मुरलीमनोहरका चरणदबाकर जगादिया तब
वनपति दण्डवत्करके बोले हेमुनिनाथतीर्थरूपी साधुओंके
ण आनेसे संसारीजीवोंकाघर पवित्रहोजाताहै सोआपनेदर्श
के अपनेदर्शनसेमुझे कृतार्थकिया जबनारदमुनिवहांसे आप
ददेकर मित्रबिन्दाके महलमेंगयेतोक्यादेखा किश्यामसुन्द
ह्मणोंको जिँवातेहैं नारदमुनिकोदेखतेही हाथजोड़करबोले
जराज आपनेबड़ीदयाकी जोइस समयआये आपभी भोज
रके अपना जूठनमुझेदीजियेतो उसे खाकर पवित्रहोजाऊं
मुनिने कहा हे महाप्रभु आपब्राह्मणोंको भोजनकराइयेमैं
आनकर प्रसादपाऊंगा यहवचन कहकर नारदमुनि सत्याके
लमें गये तोक्यादेखा कि बृन्दाबनबिहारी भक्तहितकारी
न्दपूर्वक बिहारकररहेहैं यहकौतुक देखतेही वहांसे उलटेपां
रकर भद्राके मन्दिरमेंआये तोद्वारकानाथको भोजनकरते
वहांसे लक्ष्मणाके घरजाकर बैकुण्ठनाथको स्नानकरतेदेखा
तरह नारदमुनि अनेकमहलोंमें बैकुण्ठनाथकीपरीक्षालेनेक
गये तो उनकोकहींपूजा व ध्यानकरते व किसीजगह होमपरबै
कहीं स्त्रियोंकेसाथफूलबरसाकरखेलते व किसीजगह तड़ागा
में स्त्रियोंकेसाथनहाते व कहींघोड़ेरथोंपरबैठे वाकिसीमहलमें
व पुराणसुनते व कहींगौब्राह्मणको दानदेते व किसीजगह
योंका युद्धदेखते व कहीं द्रव्यादिक गिनवाते व किसीमहल
के विवाहका चर्चाकरते व कहीं लड़काखिलाते व कहीं

Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मजीके पासबैठेहुये अधर्मियोंके मारनेका सम्मतकरते व किसी गह बावली व तड़ागादिकखोदनेवास्ते रुपयादेते व किसी जगह सुदेव व देवकीकेपास बैठेहुये भोजनकरानेवास्ते आज्ञापूछते व हींलड़कियोंको ससुरारसे बिदाकरते व किसीमहलमें भाटोंसे बित्तसुनते व कहींअहेर खेलनेवास्तेबैठेदेखा ॥

चौ० कहुँनारिनको कौतुकदेखैं। कहुं नारिनसों खेलत पेखैं ॥
कहुंनारिनसोंकरतठिठोली। बोलतविविधभांतिकीबोली ॥
कहुंनारिनमें कलह करावैं। कहूंअनमनी नारिमनावैं ॥

दो० कहूं पुत्रको व्याहके लाये बहूसमेत। तहांकरत उत्सव बहुत लोगनको धनदेत ॥
याविधिजिसजिसमहलमें नारदपहुंचे जाय। प्रियासहितदेखेतहां माखनप्रभुयदुराय ॥

चौ० नारदके संशय मनमाहीं। श्याम विना कोऊ गृह नाहीं ॥
जिस घर जाऊं तहां बिहारी। ऐसी प्रभु लीला बिस्तारी ॥

नारदजीने यहमहिमा श्यामसुन्दरकी देखतेही लज्जितहो रकहा देखो त्रिभुवनपतिने मेराचरणधोकरचरणामृतलिया व ने अपने अज्ञानसे उनकी परीक्षालेने की इच्छाकी सोमुझसे ड़ाअपराधहुआ जबऐसा बिचारकर नारदमुनिभयसेकांपनेल तबमुरलीमनोहर हँसकरबोले हेमुनिनाथ आजतुम्हारी क्याद ाहै जैसे यह वचननारदजीनेसुना वैसे हरिचरणोंपर गिरपड़े व ाथजोड़कर बिनयकिया हे दीनानाथमैंअज्ञानतासे तुम्हारीपरी ालेने चाहताथा सोलज्जितहोकर उसकाफलपाया अबमुझ ीनपर दयालुहोकर मेराअपराध क्षमाकीजिये ॥

चौ० मैं तुम्हरो भिक्षुक यदुनाथा। गावों सदा नाम गुणगाथा ॥
तुम्हरी माया सबजगजानी। तेहिसों मेरीमति भरमानी ॥
तुम्हरो नाम जपै जो कोई। परम धाम पावत है सोई ॥
कृपा करो मेरो भ्रम टारो। भवसागर से पार उतारो ॥

यहस्तुति सुनकर बैकुंठनाथ बोले हेमुनिनाथ तुमकुछ[illegible]तेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपने मनमें नलाकर मेरीमायाको अतिबलवान् समझो जो
हमायासब जगत्को मोहकरमुझेभी नहींछोड़तीतोदूसरेको
सामर्थ्यहै जोसंसारमें उत्पन्नहोकर उसकेबश्यनहोवे हेनार
निमेरेभेद व कामोंको पहुँचना बहुतकठिनहोकर व कोईस्
मुझसेखाली नहींरहता सबजीवोंका उत्पन्न व रक्षाकरनेधर्म
रोंवर्ण व चारों आश्रमका रखनेवालामैंहूं व सगुणअवतारलेन
राकेवल इसवास्तेहै जिसमें संसारीजीव मुझे शुभकर्मकरतेह
कर उसीतरह अच्छाकाम कियाकरैं व तुममेरेभेद व कामोंकी
क्षालेनेमें न रहकर हरिभजनाकियाकरो॥

दो० केहिकारण भ्रममें परे करो आपनोकाज। लोगनके पातकहरो दर्शनते ऋषिराज॥

यह सुनतेही नारदमुनि बसुदेवनन्दनसे अपना अपराधक्ष
कराकेबोले हेमहाप्रभु आपदयालुहोकरऐसाबरदानमुझेदीजि
जिसमें तुम्हारे चरणोंकी भक्तिसदाबनी रहकर संसारीमाया
ऊपरनव्यापै जबकेशवमूर्त्तिने नारदमुनिको इच्छापूर्व्वक वा
नदेकरबिदाकिया तब वे दंडवत्करके वीणाबजाते व हरिगुण
तेहुये सत्यभामाके पासजाकरबोले सत्यभामा तूपृथ्वीका अव
रहैतुमसे मुरलीमनोहर रुक्मिणीको अधिकप्यारकरतेहैं इस
ये तुमश्यामसुन्दरको मुझेदानदेकर मोललेलो तोवहतेरे आ
नरहैंगे यहबचन सुनतेही सत्यभामाने प्राणनाथसे आज्ञालेक
उन्हैं पारिजातकसमेत नारदजीको संकल्पादिया जब नारदमु
मुरलीमनोहरको अपनेसाथलेचले तब सत्यभामाउनके वरा
देनेलगी सो नारदजीने सोनेकेबदले तुलसीदललेकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनोहरको फेरादिया व आप आनंदपूर्व्वक ब्रह्मलोकको चले
व कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द उसीदिनसे सत्यभामापर अधि
प्रीतिकरनेलगे ॥

चौ० श्री भगवान महा सुखकारी। रहैं सदा जैसे गृहचारी ॥
सकल पुत्रदारा सब रहईं। और कुटुम्ब कहांलों कहईं ॥
रक्षा करि सबकोदुख हरें। इच्छा उनकी पूरण करें ॥
कृष्णनारियों मनमें जानैं। मोसों बहुतप्रीति हरिमानैं ॥
यह लीला अद्भुत सुखदाई। जोजन कहै सुनैंचितलाई ॥
सो० लहैं महा सुखसंपदा दुखपावै कछुनाहिं। निर्मल यशप्रकटै सदा रहै बंश जगमाहिं ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

कथा मुरलीमनोहरकी कि किससमय कौन कर्म करतेथे ॥

शुकदेवजी बोले हेपरीक्षित श्यामसुन्दर संसारीजीवोंकोराह
दिखलानेवास्ते जिससमय जोकामकरतेथे उसकाहालकहताहूं
नो जब दोघरीरातरहेपक्षीबोलनेलगतेथे उसीसमयबसुदेवनन्द
सबमहलोंमेंसे उठकरदिशाफिरने व दातूनकरने उपरांत स्नान
करके संसारी मनुष्योंकीतरह अपनीआत्माका ध्यानकरतेथे ॥

सो० जबै उठें हरि सेजते होहिंबिकल सबनारि। पक्षिन दोषबिचारके दोहिंसबनमिलिगारि ॥

जबसूर्य निकलनेउपरांत बसुदेवनन्दन सबमहलोंमें जाकर
ड़ाऊचौकीपरबैठतेथे व उनकेअंगपर स्त्रियां फुलेल व उपटन म
कर गरमपानीसे स्नानकरातीथीं तब वहतुलसीचौरेके पासबैठ
र संध्या व तर्पणकरके गायत्रीजपतेथे जब चारघरीदिनचढ़ता
तबनित्यएक २ महलमें चौदह २ हज़ार गौ दूध देनेवाली
धिपूर्वक ब्राह्मणोंको दानदेकर उनकाआशीर्बादलेके भोजन
रतेथे ॥

सो० खानपान भूषण बसन बिबिध सुगन्धलगाय। पाहिले बिप्रन अर्प्पिके आपलेत यदुराय ॥
यद्यपि श्रीभगवानको कर्मलगे कछु नाहिं। तद्यपि कर्मकियोचहैं लियोजन्म जगमाहिं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जब मुरलीमनोहर अनेकरूपोंसे एकरूपहोकर उत्तम
षण व बस्त्रपहिनकर द्वारेपरआते और बन्दीगणोंसे स्तुतिसु
र सन्मानपूर्बक उन्हैंबिदाकरतेथे तब दारुकरथवान् द्वारेपर
ऊरथलेजाकर खड़ाकरताथा ॥

दो॰ दर्श पाय हर्षे सबै तभी झुकावैं माथ। कृपादृष्टि तिनपर करैं माखनप्रभु यदुनाथ

जबद्वारकानाथ उसरथपर उद्धवसमेत बैठकर फिरने घूमने
तेथे तब सात्यकी यादवपीछे बैठकर पंखा व चँवर मोहनीमू
हिलाताथा जब श्यामसुन्दरका रथ धीरे २ राजसीविभवसे
ताथा तब उनकीस्त्रियांअपने २ महलकी खिड़कियोंमेंसे उन
छबि देखकर अपने २ भाग्यकीबड़ाई करतीथीं जबथोड़ीदे
रांत कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द सुधर्मासभामेंआतेथे उससमय
यादववंशी खड़ेहोकर सन्मानपूर्बक रत्नसिंहासनपर उनको
तेथे कुछबेर केशवमूर्ति राजाउग्रसेनके पासबैठकर कथा व पु
सुनतेथे व कभी २ नट व भानमती आदिकको कौतुक देख
सन्नहोतेथे व बैकुण्ठनाथकीदयासे द्वारकापुरीमें कुछरोग व
किसी को नहीं व्यापताथा इसलिये सबछोटेबड़े परमानन्द
थे जब बसुदेवनन्दन सुधर्मासभासे उठकर अनेकरूप धारण
के सबमहलोंमें जातेथे तब छत्तीस प्रकारके व्यञ्जन भोज
नतेथे और उसमें अच्छा २ पदार्थउद्धव व अक्रूर आदिक ही
लोंकोभी मिलताथा इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे
क्षित देखो श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति गृहस्थाश्रम होनेपर भी
टल होकर संसारी जीवोंको राहदिखलानेवास्ते यह सबकु

Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थे एकादिन बैकुंठनाथ सुधर्मासभामें रत्नसिंहासनपर बैठेहुये
द्धवंशियोंके साथबातैंकरतेथे उसीसमय एकब्राह्मण द्वारकापुरी
आया व द्वारपालकोंसे कहा तुम श्रीकृष्णसे जाकरकहिदेवकि
कब्राह्मण तुम्हारेदर्शनकी इच्छासे द्वारेपरखड़ाहै आज्ञाहो तो
तरआनकर अपनामनोरथपूर्णकरै जैसे द्वारकानाथने यहसंदे
द्वारपालकसे सुनकरउसब्राह्मणको बुलाभेजा और वहब्राह्म
उनकेसामने भीतरगयावैसेत्रिभुवनपतिने नीचेउतरकरउसब्रा
णको दण्डवत्किया व अपनेपास सिंहासनपरबैठाकर कोमल
वनसेपूछा महाराजआपकहांसे किसकारण यहांआयेयहमधुर
वन सुनतेही वहब्राह्मण हाथजोड़कर बोला हेमहाप्रभू राजा ज
रासन्ध जो अपने बल व प्रतापका घमण्डरखताहै दिग्बिजय वा
निकलाथा सोजिनराजोंने उसकीआज्ञापालनकी उनकादेश
सनेछोड़दिया और जोराजा अपनेअभिमानसे उसकेपासनहीं
ाये उनकोयुद्धमें जीतकरअपनेयहां कैदकिया सो बीसहज़ार
ाठसौराजाजोउसकेयहांकैदहैं उनकासंदेशालेकरआयाहूंश्या
सुन्दरबोले कहो तबउसब्राह्मणने कहा महाराज उनसबराजों
दण्डवत्करके यह बिनयकियाहै हे बैकुंठनाथआपका सदासे
हभणहै जब २ दैत्य व अधर्मीराजा हरिभक्तोंको दुःखदेतेहैं तब
आपसगुण अवतारसे अधर्मियोंको मारकर अपनेभक्तोंकी र
ाकरतेहैं जिसतरह आपने हिरण्यकशिपुको मारकर प्रह्लादका
राणबचाया औरग्राहसेगजेन्द्रकोछुड़ाया उसीतरहहमलोगोंको
ी महादुःखी व दीनजानकर हमारा कष्ट छुड़ाइये जैसे कर्म
हतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फांसीमें साराजगत् बँधाराहिकर नष्टहोताहै वैसे जरासन्धकी में हमलोगफंसकर बड़ादुःखपातेहैं इसलियेदिनरात तुम्हारे नोंकीइच्छा बनीरहतीहै ॥

चौ० दुष्टदलनहै नाम तुम्हारो। तुमहीं सबको कष्ट निवारो॥
हमको परो दुःख अतिभारी। वेगआय सुधिलेव हमारी॥
जैसे कृपा जननपर करो। तैसे कष्ट हमारो हरो॥

दो० रैन दिवसहैं बन्दिमें परै नहीं क्षण चैन। हमको आय छुड़ाइये माखनप्रभु सुखदैन॥

हे महाप्रभु राजाजरासन्ध अज्ञान अपनेराज्यके घमण्ड ऐसा मतवाला व अन्धाहोरहाहै किसत्रहबेर तुम्हारेसामनेसे गनेपरभी लज्जितनहोकर एकबेरतुमसबकामनोरथ पूर्णकरते जोभागेथे बड़ाअहंकारकरके अपनीबराबर किसीकोनहीं गिनता सोआपनेपृथ्वीका बोझउतारनेवास्ते अवतारलियाहै इसलिये उसकाघमण्ड तोड़करहमारा दुःखछुड़ानाचाहिये किसवास्ते कि हमलोग किसीदूसरेकाभरोसा नहींरखते ॥

दो० तेहिकारण हमसबनकी है तुमहींको लाज। तुमबिनको रक्षाकरै माखनप्रभु यदुराज॥

चौ० हमजो महा अधम अज्ञानी। धर्म कर्मकी बात न जानी॥
दयासिन्धु है नाम तुम्हारो। हम दीननकीओर निहारो॥
जबलों तुम्हरी कृपा न होई। तबलोंज्ञान न पावत कोई॥
बिषय भोग लोगन अतिभावै। तुम्हैंछोड़ उनसोंमनलावै॥
संकट आनपरै जेहि काला। तुम्हरो नाम जपै नँदलाला॥
जब तनमें कछुव्यथा जनावै। तात मातकी सुधितबआवै॥
ताही बिधि तुमको हमजानै। सबके तातमात पहिंचानै॥
दीनबन्धु बिनती सुनिलीजै। जीव दान दीननको दीजै॥

दो० यद्यपि सुन्दर बदनको दर्शन पायो नाहिं। तद्यपि चरण सरोजको ध्यानधरत मनमाहिं॥

यह दीन बचन सुनतेही दुःखभञ्जनने दयापूर्वक उसब्राह्मणसे कहा तुमधीर्यरक्खो मैं सबराजोंका दुःखछुड़ादूंगा॥

चौ० धीरज बिनु कारज नहिं होई। यह निश्चय जानो सबकोई॥

इसप्रकारवचन सुनतेही वहब्राह्मण प्रसन्नहोकर बसुदेवनन्दन

Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आशीर्वाददेनेलगा उसीसमय नारदमुनि बीनबजाते व हरिगुण
गातेहुये द्वारकापुरीमें पहुँचे तब श्यामसुन्दरने दण्डवत्करके उन
कोबड़ेसन्मानसे अपनेपासासिंहासनपरबैठालकरपूछा हेमुनिना
थ कुछनईबातहो तो सुनावो औरराजायुधिष्ठिर आदिक पाण्डव
हमारे भाइयोंका कुछहाल तुम्हैंमालूमहो तोबतलावो इनदिनों
हलोग क्याकरतेहैं बहुतदिनोंसे हमनेउनका समाचारनहींपा
या यहबातसुनकर नारदजीबोले हे महाप्रभु अन्तर्यामी आपस
जगत्का हालजानकर दयाकीराह मुझसेपूछतेहैं तोसुनिये मैं
अभीपांडवोंके पासहोकर चलाआताहूं राजा युधिष्ठिर आदिक
चोभाईरातदिन तुम्हारे याद व ध्यानमेंरहिकर इनदिनों राज
य यज्ञकरनेकी इच्छारखतेहैं परसम्पूर्णहोना उसका तुम्हारेआ
धीनसमझकर आठोंपहर उनको यह अभिलाषाबनीरहतीहै कि
द्वारकानाथ दयालुहोकरआवैं तोहमारामनोरथपूर्णहो ॥

दो० याते बिलम न कीजिये अबहीं पहुँचो जाय। भक्तनको कारज करो माखनप्रभु यदुराय ॥

उसीसमय राजा युधिष्ठिरके नेवताकी चिट्ठी इससमाचारसे
भरीलीमनोहरकेपासपहुँची कि हे महाप्रभु ब्राह्मणोंने मुझसे रा
जसूय यज्ञका संकल्प तोकरादिया पर बिनाआने आपके मेराम
नोरथ पूर्णनहींहोनेसक्ता सो मेरीलज्जा तुम्हारेहाथहै जब श्याम
सुन्दरने पांडवोंका संदेशा नारदमुनिसे सुनकर उनकीचिट्ठीपढ़ी
तब यदुवंशियोंसे जोवहांबैठेथे पूछा सुनोभाई जरासंधके कैदीरा
जाने अपनेछुड़ानेका संदेशा मुझेकहलाभेजाहै और नारदजी
पांडवोंके यहांजानेवास्तेकहतेहैं इनदोनोंबातमें पहिले कहतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ना चाहिये उनमेंकोई यदुबंशीबोला महाराज पहिले राजों दोछुड़ाना उचित है दूसरेने कहा प्रथम पांडवोंके मकानपर करउनकायहयज्ञ संपूर्णकिया चाहिये यहसुनतेही बसुदेवन नेउद्धवसेकहा ॥

चौ० उद्धव तुमहौ सखा हमारे । मन आंखिन से नहीं नियारे ॥
दोउ ओरकी भारी भीर । पहिले कहां चलैं कहु बीर ॥
उत राजा संकट में भारी । दुख पावत हैं आश हमारी ॥
इत पांडव मिलि यज्ञरचायो । ऐसेही प्रभु वचन सुनायो ॥

यहबातसुनतेही उद्धवने श्यामसुन्दरसे हाथजोड़कर बि किया हेमहाप्रभु मेरा बड़ाभाग्यहै जो आप अन्तर्यामीहोक याकी राहमुझसे पूछतेहैं ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी का पांडवोंके स्थानपर जाना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित उद्धवभक्ततीनोंकालके जा वाले बोले हेदीनानाथ मेरेनिकट पहिले पांडवोंके पासचल उन्हैंधीर्यदेना उचितहै फिर वहांसे भीमसेन व अर्जुनको सा करजरासन्धकेमारनेवास्तेजानाचाहिये किसवास्ते कि जरास दशहजार हाथीका बलरखताहै इसलिये अपने बराबर किसी नहींसमझता सोभीमसेन जरासन्धके साथकुश्ती लड़करतुम्ह कृपासे उसे मारडालेगा मेरीसमझमें जरासन्धकी मृत्युभीम के हाथहै ॥

दो० जरासंधको मारके राजन लेहुछुड़ाय । पांडुसुतनके यज्ञको दूजो नहीं उपाय ॥

हे वैकुंठनाथ जब कैदी राजोंकेबालक रोकर अपनेबापक हैं तब उनकीमाता धीर्यदेकर उनसेकहतीहैं ऐ बेटा तु

Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रुदनकरो श्रीकृष्णजी आदिपुरुष भगवान्ने पृथ्वीका भारउ
ारनेवास्ते अवतारलियाहै जिसतरह उन्होंने रामावतारमें जा
कीमाताको रावण अधर्मीकेयहांसे छुड़ालियाथा उसीतरह ज
रासन्धपापीको मारकर तुम्हारेपिताको छुड़ावैंगे यह वही बैकुंठ
नाथहैं जोगजेन्द्रहाथीको ग्राहसेबचाकर शंखचूड़से गोपियोंको
छुड़ालायेथे ॥

चौ० कंसभूप उनहीं पुनि मारेव। तातमातको कष्ट नेवारेव ॥
वै प्रभु हैं सबके सुखकारी। उनहीं को है लाज हमारी ॥
दो० कष्ट सकल संसारको दूरकरत क्षणमाहिं। तिन्हें तुम्हारो दुखहरत बारलागिहै नाहिं ॥
चौ० जोतुमको ऐसी बिधि ध्यावैं। रैन दिवस तुम्हरो गुणगावैं ॥
तिन्हपरकृपा वेगि प्रभुकीजै। तहांजाय उनकी सुधिलीजै ॥
दो० रक्षपाल सबजगतके तुमहींहौ गोपाल। मैंहूं तुम्हरे शरणहूं माखनप्रभु नँदलाल ॥

हे दीनदयालु उनसबराजोंको जरासन्धकी बंदीसे छुड़ानाचा
हिये पर राजा युधिष्ठिरने केवल तुम्हारेभरोसेपर राजसूययज्ञक
रनेकी इच्छाकीहै नहींतोपहिले वह अपनेपराक्रमसे सबराजोंको
आधीनकरलेते तबऐसे कठिनयज्ञका संकल्प करते ॥

चौ० तद्यपि उनपर कृपा तुम्हारी। वह हैं परमभक्त हितकारी ॥
त्यहिकारणनिश्चयमनआनैं। कारजकठिनसहजकरजानैं ॥
दो० यातेवेगि सिधारिकै कीजै उनको काज। तुमहींको सबलाजहै माखनप्रभु ब्रजराज ॥

जबतक जरासन्ध मारा न जावे या हार न माने तबतक राज
सूययज्ञ नहींहोसक्ता उसकेमारेजानेमें दोअर्थसमझिये एकतो रा
जायुधिष्ठिरका यज्ञअच्छीतरह सम्पूर्णहोगा दूसरेबीसहजार आ
ठसौराजा बन्दीसेछूटकरतुम्हारीकृपासे सुखपावैंगे यहदोनोंकाम
होनेसे तुम्हारायश संसारमें स्थिररहेगा और राजसूययज्ञमें सब
कामसिवायराजोंके दूसराकोईनहीं करनेसक्ता सोवहीराज [illegible]नहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छूटकर बड़ेप्रेमसे यज्ञकाकामकरैंगे इतने राजाइकट्ठे दूसरीज मिलना बहुतकठिनहै व कोई मनुष्य लड़कर दशोंदिशा जी आवै तौभी इतने राजा इकट्ठे नहीं होसकै इसलिये पहिले प्रस्थमें चलिये व पाण्डवों से भेंटकरके जैसा जानिये वैसा जिये व राजा जरासन्ध ऐसा गौ व ब्राह्मणकाभक्त व दाताहै उसके द्वारेपरसे कोई बिमुख नहींफिरता व जोबात कहताहै नहीं छोड़ता ॥

चौ० याकारण तुम बेगि सिधारो। शुभकारज में बिलम न डारो॥
दो० जरासन्ध यह जानिहै अपने मनमें भाय। पांडवसुतके काजको आये श्री यदुराय॥

जब यह सम्मत उद्धवका सुनिकर श्यामसुन्दर व नारदजी यदुवंशियोंने पसंदकिया तब मुरलीमनोहरने नारदमुनिसे कहा महाराज तुमहमारी तरफसे जाकर पांडवोंको कहदेना कि हम तुम्हारे यहांआतेहैं व उसब्राह्मणको बिदाकरती समयकहा तुम सबराजोंसे कहिदेव वहलोग धीर्यरक्खैं हमजल्दी वहांपहुँचकर उन्हैं बंदीसेछुड़ादेवेंगे ॥

दो० ऐसे अमृत बैन सुनि मनमें भये हुलास। आयसुले तबहीं चल्यो निजराजनके पास॥

जब उसब्राह्मणने सबराजोंके पास पहुँचकर मुरलीमनोहर का संदेशा कहादिया तब वह सब प्रसन्नहोकर चरणोंका ध्यान करनेलगे व नारदजीने इन्द्रप्रस्थमें जाकर संदेशा मुरलीमनोहरका युधिष्ठिरसे कहा व केशवमूर्तिने राजा उग्रसेनके पासजाकर पाण्डवोंके यहांजानेकी उनसे आज्ञालीं व द्वारकाकी रक्षा वास्ते बलरामजीको वहांछोड़दिया और आप बहुतसेयदुवंशी टोलीसे व सेनासाथलेकर इन्द्रप्रस्थकोकूचकिया पहिले आप

Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

टरानियोंको उत्तमउत्तम नालकी व झप्पानपर बैठाकर व कई
ज़ारहाथी जड़ाऊहौदा व अम्बारीकसेहुये साथमें लेलिये और
आपद्वारकानाथ जड़ाऊरथपर जिसमेंअतिउत्तम घोड़े जुतेहुये
बैठकरचले हे परीक्षितउससमय कईहज़ारघोड़े जड़ाऊसाज
हिनेव अनेकसिंहासन व जड़ाऊरथकोतल उनकेसाथ चलेजा
थे उनकीशोभा कहांतकवर्णनकरूं राहमेंजहांवहटिकतेथे वहां
हुतअच्छाबाज़ार उनकेसाथका लगिजाताथा व उसदेशकेरा
ा व प्रजामोहनीमूर्त्तिका दर्शनमिलनेसे अपनेअपने लोचनों
का फलपातेथे जबवहलोगअनेकतरहकीबस्तु मुरलीमनोहरको
भेंटदेते तबकेशवमूर्त्ति उनलोगोंको सन्मानपूर्वक बिदाकरतेथे
जबइसीतरहश्यामसुन्दर सबछोटेबड़ोंको सुखदेतेहुयेबन्दर व सू
तकेराहसे तीसरेदिन राजायुधिष्ठिरके सिवानेमेंपहुँचे तबकिसी
ने राजायुधिष्ठिरसेआनकरकहा महाराजकोई राजा सेनालेकर
तुम्हारेऊपरचढ़ाआताहै यहबातसुनतेही राजायुधिष्ठिरने नकुल
सहदेव अपने भाइयोंको समाचारलानेवास्तेभेजा जबनकुल
सहदेवको श्यामसुन्दरकेआनेकाहाल मालूमहुआ व उन्होंने
बड़ेहर्षसे फिरकर यहसमाचार राजायुधिष्ठिरकोदिया तबवहबड़े
आनन्दसे अर्जुन व भीमसेनआदिक अपनेचारोंभाई व ब्राह्मण
ऋषीश्वर वेदपढ़नेवाले व अनेकबस्तु भेंटदेनेवास्ते साथलेकर
आगेसे गये ॥

चौ० श्रीमुख देखि महासुख पायो। तेहि सुखसे सब दुख बिसरायो ॥
हरि दर्शन की शीतलताई। तासों मनकी तपन बुझाई ॥
दो० रोमरोम हर्षितभये कहत युधिष्ठिर राज। सुफलभयो संसार में जन्म हमारे आज ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जैसेराजायुधिष्ठिरने निकटपहुँचकर मुरलीमनोहरकेच
पर गिरनेचाहा वैसेद्वारकानाथने उनको अपनेगले लगालिय
श्यामसुन्दर राजायुधिष्ठिरको अपनाबड़ाजानकर उनकेच
पर गिरपड़े ऐसीकृपा त्रिभुवनपतिकीदेखतेही राजायुधिष्ठि
प्रेमसे मोहनप्यारेको गोदमेंउठाकर प्यारकरनेलगे व बड़ेहर्षसे
धिपूर्वक पूजाउनकीकी ॥

दो० रूप अनूपम देखिकै मुदितभये मनमाहिं। नयननिमिष लागेनहीं तनकी सुधि कछुनाहिं।

बसुदेवनन्दनने भीमसेन व अर्जुनसे गलेमिलकर उन्हैं सु
दिया व नकुल व सहदेवजी मुरलीमनोहरकेचरणोंपरगिरे उ
उठाकर छातीसे लगालिया ॥

चौ० पुनि विप्रनको माथ नवायो। कुशल पूछिके हर्ष बढ़ायो ॥

व दूसरेक्षत्रीआदिक व राजायुधिष्ठिरकेसाथ हस्तिनापुरसे
स्तेदेखने बैकुंठनाथकेआये सबकीसीकासन्मान यथायोग्य
या जबराजायुधिष्ठिर पीताम्बरबिछवाते चन्दन व गुलाब
ड़कवाते व सोने व चांदीकेफूललुटाते व अनेकतरहके बाजनव
तेहुयेबड़ेहर्षसे श्यामसुन्दरकोनगरमें लिवालेगये तबस्त्री व पु
वहांके रहनेवाले अपने २ द्वारे व खिड़की व कोठोंपरबैठेहुये
मसुन्दरके दर्शनवास्ते अभिलाषारखतेथे उन्होंने मोहनीमू
कीछबिदेखकर अपनेलोचनोंकाफलपाया व सुगन्धितपुष्प व
त्नादिक द्वारकानाथपर नेवछावरकरके एकस्त्री दूसरीसेकहने
री देखोबड़ाभाग्य श्यामसुन्दरकीस्त्रियोंकाहै जो रातदिन इन
ट व बिलासकरके अपनाजन्मस्वार्थकरतीहैं व ब्राह्म

Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यज्ञोपवीत बैकुण्ठनाथको आशीर्बादके साथदेकर दूसरेनगर
सियोंने अपने २ बित्तानुसार रत्नादिक उनकोभेंटदिया व वसु
वनन्दननेयथायोग्य सबकासन्मानकिया जबत्रिभुवनपतिसब
टे व बड़ोंके आनन्ददेतेहुये राजायुधिष्ठिरके रत्नजटितमहल
गये तबकुन्तीप्रेमसे उनकोदेखनेवास्ते दौड़ी व मोहनीमूर्त्तिका
न्दमुखदेखतेही आनन्दहोगई जबश्यामसुन्दरने शिरअपना
न्तीकेचरणोंपररखकर दण्डवत्की तबउसने शिरउनका उठा
र छातीसेलगालिया व उन्हें गोदमेंबैठाकर प्रेमकाआंशू बहा
लगी जबद्रौपदीने आनकरद्वारकानाथके चरणोंपर शिररक्खा
व मुरलीमनोहरने अपना हाथ उसकेशिरपररखकर उसे व सुभ
अपनीबहिनको अशीषदिया जबरुक्मिणीआदिकको आठों
रानियोंने कुन्तीकेचरणोंपर शिरअपनारक्खा तबकुन्ती मा
ने उनकोबड़ीप्रीतिसेछातीमें लगाकर अपनेपासबैठाला॥

चौ० बड़ी देरलौं भेंटतरहे। बहुत नीर नयनन ते बहे॥
बारम्बार धरैं जगदीशा। कुन्ती के चरणनपर शीशा॥
वह उठायके कंठ लगावैं। रोमरोम बहु आनँद पावैं॥
द्रोणा कृपाचार्यकीनारी। परम पुनीत महाशुभकारी॥
हरिजू तिन्हैं नवायोशीशा। ह्वैप्रसन्न उनदई अशीशा॥

जबसबकोई श्यामसुन्दर व रुक्मिणी आदिकसे भेंटकरचुके
कुन्तीने द्रौपदी व सुभद्रासेकहा तुमलोग आदरपूर्वक नित्य
ठोंपटरानियोंका शिष्टाचारकियाकरो व राजायुधिष्ठिर आदि
पांचोंभाई अन्तःकरणमें बसुदेवनन्दनकीभक्तिरखतेथे प्रेमसे
कासन्मानकरनेलगे व उनपांचोंमें अर्जुनबड़ीमित्रता व प्रीति
णचन्द्रसेरखकर सदाउनकेसाथ एकरथपर अहेरखेलने जाकहतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करताथा हेपरीक्षित इन्द्रप्रस्थमें बसुदेवनन्दनकेआनेसे ऐसा
व आनन्द वहांकेलोगोंकोप्राप्तहुआ जिसकाहाल मुझसेब
हींहोसक्ता जिसतरह चन्द्रमाकाप्रकाश राजा व कंगाल दो
घरमें एकसारहताहै उसीतरह इन्द्रप्रस्थमें श्यामसुन्दरकीद
छोटेबड़ोंकेघरमें प्रतिदिन नये २ सुख व आनन्दहोनेलगे ॥

दो० याविधि परमहुलाससों कीन्हों तहां निवास । पांडुसुतनके काजको माखन प्रभुसुखरास

बहत्तरवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका जरासन्धके मारनेवास्ते जाना ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जबइसीतरह कईमहीने श्या
न्दरको आनन्दपूर्वक वहांबीतगये व कुछचर्चा यज्ञकीनहीं
तबएकदिन राजायुधिष्ठिर अपनीसभामें जहांपरबहुतसे क्ष
ऋषीश्वर व ब्राह्मणबैठेथे उठकरश्यामसुन्दरकेसन्मुख खड़े
ये व विनयपूर्बक हाथजोड़कर उनसेकहा हे त्रिभुवनपति ब्रह्मा
महादेव आदिक सबदेवतोंकेमालिक तुम्हारेचरणोंका दर्श
ड़े २ योगी व ऋषीश्वरोंको जल्दीध्यानमें नहींमिलता सो
ने मुझे अपनादासजानकर घरबैठे दर्शनदिया ॥

चौ० तुम ऐसी प्रभु लीलाकरो । काहू से नहिं जाने परो ॥
माया में भूला संसार । तुम से करत लोक व्यवहार ॥
जो तुमको सुमिरत जगदीश । उसको जानो अपना ईश ॥

हे दीनानाथ तुम्हारी दयासे जगत्में सबइच्छामेरी पूर्णहु
एक अभिलाषाऔर रखताहूं आज्ञाहोतोबिनयकरूं श्यामसु
बोले हेराजन् जोइच्छा तुमकोहोसोबतलाओ वहभी पूरीहो
गी यह बचनसुनतेही राजायुधिष्ठिर प्रसन्नहोकर बोले हेद्वा
[illegible] व समययज्ञकरनेकी इच्छारखताहूं व सबमुनि व ऋषी

Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मी इसमेंप्रसन्नताहै परबिनाकृपातुम्हारी यहकठिनयज्ञ स
ोनहींहोसक्ता जिसतरह आपनेकईबेरमहाबिपत्तिमेंहमारी
लेकरमेरामनोरथपूर्णकिया उसीतरहअबभी अपनीदयासे
अच्छीतरहसम्पूर्ण करादीजिये तो उसकाफलतुम्हारेअर्पण
के भवसागरपारउतरजाऊं किसवास्ते कि संसारमें हमपांचो
इ तुम्हारेदासकहलाते हैं इसलियेसंसारीलोग ऐसाकहैंगे कि
ामसुन्दरकीदयासे पाण्डवोंनेराजसूय यज्ञकियाथा और यह
तुम्हारेचरणोंकाप्रतापहै जो ऐसीइच्छामुझेहुई मैं इसबात
बिश्वासरखताहूं कि जो तुम्हारेशरणमेंआया उसकाकोई म
रथबाकी नहीं रहता॥

चौ० जाविधि मन्त्रदेहु यदुराजा। आयसुमानि करौं स्वइकाजा॥
तुमहीं सब काजन बिषे हमको होत सहाय। और हमारे कौनहै माखनप्रभु यदुराय॥

यहआधीनबचनसुनतेही लक्ष्मीपतिने हँसकरकहा हेराजन्
हाराकहना मैंनेमानलिया यहबातउत्तमहोकर सबदेवता व
तर व ऋषीश्वर व मुनितुमसेइसयज्ञकराने कीचाहनारखतेहैं
समें अपना अपनाभागपावें जबतुमनेअपनेप्रेमसे मुझेवश्यक
लिया तबतुमकोराजसूययज्ञ या कोईइससेभी बड़ाकामकरना
नकठिनहै जिसकेआधीनमैंहुआ उसकीकुछइच्छाबाकीनहीं
ती अर्जुनादिक तुम्हारेचारोंभाई ऐसेबलवान्हैं जिनसेकोईदू
राजा युद्धनहींकरनेसक्ता व लोकपालोंकोभी ऐसीसामर्थ्यन
है जो मेरेसामनेउनसेलड़नेसकैं इसलियेतुम अपनेभाइयोंको
ाजादेा कि चारोंदिशामेंजाकर सबराजोंको जीतनेउपरांत कहतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तसाद्रव्यलेआवें तबतुमआनन्दसेयज्ञकरो यहबचनसुनते जायुधिष्ठिरने बहुतसीसेनासाथलेकर अर्जुनकोउत्तर व भी को पूर्व व सहदेवकोदक्षिण व नकुलको पश्चिम दिशाजाने आज्ञादी सो वहलोग उनकी आज्ञानुसार चारोंदिशामेंगये चारोंभाईकुछदिनमें बैकुण्ठनाथकेप्रतापसे सातोंद्वीप व न एड व दशोंदिशाकेराजोंको जीतकर बहुतसाद्रव्यलेआये जायुधिष्ठिरनेहाथजोड़कर बसुदेवनंदनसेबिनयकिया हेमह यहकार्य्य तो तुम्हारीकृपासेपूर्णहुआ अबक्याआज्ञाहोतीह बचनसुनकर उद्धवभक्तने राजायुधिष्ठिरसेकहा महाराजस केराजोंको तुम्हारेभाईजीतआये परजबतक राजाजरासंधम पति आपकेआधीननहींहोगा तबतकतुम्हारायज्ञ सम्पूर्णनह सक्ता औरवहऐसाबलवान् व धर्मात्माहै जिसेकोईसंसारमें नहींसक्ता॥

चौ० जो तुम युद्ध करो रणमाहीं। वासों जीतिसकोगे नाहीं॥
एकबात अपनेमन ल्याऊं। सोअब तुमसे कहिसमझाऊं॥
विप्रवेष धरिकै हरि जाहीं। अर्जुन भीमसंग तेहिपाहीं॥
जरासन्ध दाता अतिभारी। जाकोयश तिहुंलोकमझारी॥
वासे जो मांगे कछु भिक्षा। देत वही जो मनकी इच्छा॥
यद्यपि शीशहु मांगे कोई। देत वार लाइहि नहिं सोई॥
विप्र रूप जब वापै जैहैं। युद्ध दान ताही क्षण पैहैं॥

दो० राजन इस संसारमें अस्थिरहै कछु नाहिं। तद्यपि दाता पुरुषको नामरहै जगमाहिं।

जबयहवचनसुनकर राजायुधिष्ठिर उदासहोगये तबत्रि पति उन्हैंधीर्यदेकर बोले हेराजन् तुमकिसीबातकी चिन्ता करो उद्धवकेकहनेप्रमाण भीमसेन व अर्जुनअपनेदोनोंभा साथ करदेव किसीतरहसे व छलसेहमलोग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Lucknow. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रासन्धकोमारआवैंगे जब यहबातसुनकर युधिष्ठिरने भीमसेन
अर्जुनको मुरलीमनोहरकेसाथ जानेवास्तेआज्ञादी तबलक्ष्मी
ति उनदोनोंकोसाथले कर ब्राह्मणवेषमें मगधदेशकोगयेवह तीं
ोंब्राह्मणरूपअतिसुन्दर ऐसेतेजवान्मालूमदेतेथे जैसेसतोगुण
रजोगुणवतमोगुणअपनातनधारणकियेहों जबकईदिनमें वह
ोगमध्याह्नसमयब्राह्मणरूपसे जोअतिथिको भोजनकरानेकी
समयहै राजाजरासन्धके द्वारेपरजाकरखड़ेहुये तबएकद्वारपाल
नेउनकोदेखतेही राजाकेपासजाकरकहा महाराजतीनब्राह्मण
अतितेजवान्आपसेभेंटकरनेवास्तेआनकर द्वारेपरखड़ेहैं आज्ञा
ये तोभीतरआवैं यहबचनसुनतेही जरासन्धजो उससमयरसोई
ानेजायाचाहताथा बहुतप्रसन्नहोकर आपद्वारेपरचलाआया
श्यामसुन्दरआदिक ब्राह्मणरूपकोदण्डवत्करकेभीतरलेगया
सन्मानपूर्वक अपनेसिंहासनपर बैठाकरउसनेकहा महाराज
जिसतरह आपलोगोंनेदयाकीराह यहांआकर मुझेकृतार्थकिया
उसीतरह चलकरभोजनकीजिये तो तुम्हाराचरणधोकर अपना
परलोकबनाऊं ॥

चौ० विप्रनकी सेवा जो करै। भवसागर से जल्दी तरै ॥

यहबात जरासन्धकी सुनकर श्यामसुन्दरबोले हेराजन् हम
लोग बहुतदूरसेतुम्हारा यशसुनकर यहांआयेहैं जो हमकोइच्छा
है सोदेवकिसवास्ते कि शूरबीरोंकोशिर व दानियोंको अपनाप्राण
तकदेडालनेमें कुछलोभनहीं रहता देखो एककबूतर ब्याधाके
वास्ते इसतरहअपना प्राणदेकर तरगयाथा कि एकव्याकहतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महीनेमेंपक्षीबझाने बनमेंगयासोपानीबर्षने व आंधीचलनेसे
ईपक्षीउसको नहींमिला जबसरदी व भूखसे अतिब्याकुलहो
अपनेघरआनेलगा तबउसनेएककबूतरीको जोसरदीसेअचेत
कर पृथ्वीपरपड़ीथी उठालिया व रातहोजानेसे अपनेघरनहीं
हुंचकर एकवरगदकेनीचेबैठरहा जब आधीरातको उसकबूत
कापति जो उसीवृक्षपररहताथा अपनीस्त्रीकोयादकरकेपुका
लगा तब उसकबूतरीनेचैतन्यहोकरकहा हेस्वामी अबतुमको
वास्तेशोचकरनाउचितनहोकर अतिथिकादुख जोसरदीव भू
से ब्याकुलहै धर्मकीराहछुड़ानाचाहिये जबयहसुनकर कबू
को ज्ञानउत्पन्नहुआ तबवहकहींते अग्निअपनीचोंचमेंलेआ
व लकड़ीअपनेखोतेसे गिराकरवहांआगलगादी तो उसब्या
कीसरदीछूटगई फिरवहकबूतर अपनीइच्छासेआगमेंगिरपड़
बहेलियेने उसकोखालिया तबवहकबूतरी बहेलियेसेबोली
मुझेभीभूजकरखालेव बिनापुरुषकीस्त्रीकाजीनाअच्छानहीं
ता जब बहेलियेनेकबूतरीकोभीखाकरअपनीभूखमिटाई तब
मेश्वरने उनदोनोंपक्षियोंका ऐसाधर्मदेखकर उनकोबैकुण्ठ
बुलानेवास्ते बिमानभेजदिया सो वहदोनोंपक्षी पार्षदोंसे वि
यकरके उसबहेलियेको भी अपनेबिमानपर बैठाकर परमपद
लेगये सिवायइसकेतुमनेसुनाहोगा किराजाहरिश्चन्द्रऐसाधर्म
त्माहुआ जिसनेसबराज्य व धनअपनानारायणजीके नाम
ब्राह्मणोंको देडालाथा सोआजतक कीर्त्तिउसकीसंसारमें छाय
विस्तारपूर्व्वक उसकीकथाकहते हैं सुनोएक समय राजाहरि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चन्द्रके नगरमेंकालपड़नेसे प्रजालोग भूखेमरनेलगे तब उसने
षण व बस्त्रादिकबस्तुअपनीबेचकर प्रजाकापालनकिया उन्हीं
दिनों राजाहरिश्चन्द्रसंध्यासमय अपनीस्त्रीसमेतभूखेबैठेथे उसी
समय बिश्वामित्रऋषीश्वरने राजाकेधर्मकी परीक्षालेनेवास्ते व
ांआनकरकहा हेराजन् मुझेइच्छापूर्व्वकद्रव्यदेकर कन्यादान
काफललेव यहबातसुनतेही हरिश्चन्द्रनेघरमेंढूंढ़ा सो जो कुछ
षणबस्त्रादिक उनकेस्त्री व पुत्रकाबचाथा वहलाकर ऋषीश्वर
ोदेदिया उसेदेखकर बिश्वामित्रबोले महाराज इतनेमें मेराका
नहींहोगा यहसुनतेही राजानेअपनेदासी व दास जो कुछबचे
उन्हैंभीबेचकर जबरुपयाउसका ऋषीश्वरकेपासलेआये व के
लएक २ धोती अपनेस्त्री व पुत्रकेपासरखलिया तबफिरविश्वा
त्रबोले इतनेद्रव्यसे मेराअर्थनहींहोगा व मुझेकोईदूसरा तेरेस
ानधर्मात्मासंसारमें दिखलाईनहींदेता जिसकेपासजाकरमांगूं
एकडोमधर्मपात्रहै आज्ञादेवतौ उससेजाकरमांगूं परवहांजाते
मैं लज्जामालूमहोतीहै कितुमसमानऐसेदानी राजाकोछोड़
रउससेक्यामांगूं यहबातसुनकरहरिश्चन्द्रनेऋषीश्वरको अपने
थ लिवालिया व उसडोमचाण्डालकेघर जाकरकहा हेभाईतु
हमकोअपनेयहां गिरोंरक्खो व इनऋषीश्वरको इच्छापूर्व्वक
व्यदेव यहबातसुनकर वहडोम बोला॥

चौ०

कैसे टहल हमारी करिहौ। राजसतामस मनते हरिहौ॥
तुमहो नृपति तेजबल धारी। महानीचहै टहलहमारी॥

हेराजन् तुमकोश्मशानपररहकर मुरदाजलानेवालोंसे कहतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कै हमारेघरपहुंचानाहोगा व हमारेमकानकी चौकीदारीकरे
डेगी तुमसेयहदोनोंकामहोनेसकैंतो हमइसब्राह्मणको मुंहमां
द्रव्यदेकर तुम्हैंगिरोंरक्खैं यहवचनसुनकरराजाहरिश्चन्द्रने
बहुतअच्छा हमबर्षदिनतक यहदोनोंकामतुम्हाराकरदेवैंगे
बचनसुनतेही उसडोमनेइच्छापूर्वकबिश्वामित्रको द्रव्यदेक
दाकिया तबराजाहरिश्चन्द्रवहांरहकर दोनोंकामउसकेकरने
गे व उनकीरानीपुत्रसमेत उसीनगरमें किसीगृहस्थकेयहांरह
सेवकाईसे अपनादिनबितानेलगी परमेश्वरकीइच्छासे कुछ
बीते राजाहरिश्चन्द्रकाबेटामरगया व रानीनेउसकीलोथ गंग
नारेलेजाकर जलानेकीइच्छाकी तबहरिश्चन्द्रनेआनकरअप
स्त्रीसेकहा तुमइसमुर्देकापैसादेदेव तोलोथजलाओ यहबच
नतेहीरानीरोकरबोली महाराजयहतुम्हारेपुत्रकीलोथ जलाक
लाईहूँ व मेरेपाससिवायएकधोतीकेऔरकुछनहींहैयहबातसु
राजाहरिश्चन्द्रबोले हेप्रियामैं पैसानलूंतोमेराधर्मजातारहै
लियेअपनेपुत्रकोभीबिनापैसालियेनहींजलानेदूंगा यहधर्म
बातसुनतेही जैसेरानीने अपनाअञ्चलफाड़कर पैसाकेबदले
चाहा वैसेनारायणजी करुणानिधानने ऐसाधर्म व सत्यरा
श्चन्द्रका देखकर एकबिमानजड़ाऊउसकेवास्ते श्मशानपर
दिया व पीछेसेआपभीवहांगये व राजाकोदर्शनदेकर रोहित
सकेबेटेकोअपनीमहिमासेजिलादिया व राजाहरिश्चन्द्रको
कीरानीसमेतबिमानपर बैठाकरकहा बैकुंठमेंचलो तबहरिश्च
भक्तनपतिसे हाथजोड़करबिनयकिया हेमहाप्रभुपतितपा

lic Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सतरह आपने मुंभे अपना दास जानकर दर्शन दिया उसीतरह मे
वामी डोमको भी वैकुण्ठमें ले चलिये तो मेरा मनोरथ पूर्ण होय ह
नन अपने भक्त का सुनतेही लक्ष्मीपति उस चांडाल डोमको भी
वार समेत उसी बिमान पर बैठाकर निस्संदेह वैकुण्ठमें ले गये व
ा हरिश्चन्द्र को अमर पदवी व राजा रन्तिदेव ऐसा धर्मात्मा हु
जिसने अड़तालीस वें दिन कुछ अनाज भोजन करने वास्ते पाया
वह भी ब्राह्मण को खिलाकर आप भूखा रह गया उसी धर्म से मु
दवी पर पहुँचा व राजा बलि जब वामन महाराज को सब राज्य
नन अपना देकर शरीर देने वास्ते तय्यार हुआ तब उसने राज्य
ल लोक का पाया जिसका यश आजतक संसार में छा रहा है व रा
शिवि ने कबूतर के बदले अपने शरीर का मांस काट कर देडाला व
तक ऋषीश्वर ने जो छठवें महीने भोजन करते थे आपन खाक
ह भोजन अतिथि को खिला दिया व आप भूखे रह गये उस अन्न
के प तापसे बिमान पर बैठकर बैकुण्ठधाम को पहुँचे व दधीचि
ीश्वर ने अपना हाड़ इंद्रादिक देवतों को देडाला था॥

चौ॰ ऐसे दाता भये अपार। जिनका यश गावत संसार॥

राजन् सिवाय इन लोगों के और बहुत ऐसे दानी हुये जिन्हों ने
धन व प्राण देने में कुछ लोभ नहीं किया उनका हाल कहां त
सब वर्णन करूं जिसतरह पिछले युगों में वह लोग धर्मात्मा हो
यहैं उसीतरह तुम भी इस युग में दानी उत्पन्न हुये व हमारी इ
पूर्ण करोगे तो तुम्हारा यश भी संसार में स्थिर रहेगा यह वचन सु
चन्द्रमुख उनका देखने से जरासन्ध ने समझा कि यह लो कहते हैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ह्मण न होकर राजकुंवरादिखलाईदेतेहैं इसलिये प्राणभीम
देनाचाहिये जिसमेंमेराधर्मबनारहे देखोराजाबलिने शुक्र
तकेबर्जनेपरभी बामनजीको तीनोंलोकोंकाराज्यदेडाला
आजतकउसकायशछारहाहै अपनाशरीर पालनकरनेमें
न मिलकर परोपकारकरनेसे यशप्राप्तहोताहै ऐसाबिचारक
रासन्धश्यामसुंदरसेबोला ऐद्विजराजपहिले तुमलोगअपन
मनिष्कपटबतलाकर जिसबस्तुकी इच्छारखतेहो सोमांगो
नाप्राणतकदेनेमेंभी लोभनहींकरूंगा यहबचनसुनकर श्रीकृष्ण
जीबोले हेराजन् तुमसच्चपूछतेहो तोमैं श्रीकृष्णयदुवंशीहूं
यहदोनोंभीमसेन व अर्जुनहमारेफूफाकेबेटे हैं व मेरी व तुम्हारी
पहिले भी मथुरामेंभेंटहुईथी तुममुझको पहिंचानतेहोगे
म्हारे यहांभिक्षालेने नहींआया अकेलीअकेला युद्धदानमांगने
आयाहूं सिवायइसके और कुछनहींचाहता यहसुनतेही
सन्धप्रसन्नहोकर बोला बहुतअच्छा मैंनेतुम्हारा कहना
परतुममेरे सामनेसेभागकर द्वारकाजाबसेहो इसलियेतुम
तेहुयेमुझे लज्जाआतीहै व अर्जुनकीअवस्था छोटीहै और
बर्षदिनतक हिजड़ाबनकर राजाबिराटके यहांरहाथा उस
लड़ूं परभीमसेनकेसाथ जोमेरे बराबरकाहै लड़ूंगा पहिले
लोगमेरेयहां भोजनकरकेपीछेसे धर्मयुद्धकीजिये जबतक
दरनेभीमसेन व अर्जुनसमेतराजाजरासंधकेयहां छत्तीस
भोजनकिया तब जरासंधने दोगदालोहेकी मँगवाई और
ब्राह्मणकाभेष छुडाकरएकगदा उसकोदी और

Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जबदोनोंशूरबीर जोदश २हजारहाथीका बलरखतेथे नगरके
हरजाकर अखाड़ेमेंखड़ेहुये तबजरासंधनेकहा हेभीमसेनतुम
रेमकानपर ब्राह्मणरूपसेआयेथे इसलिये पहिलेअपनीगदाच
ओ यहसुनकर भीमसेनबोला हेराजन् अबधर्मयुद्धमें ज्ञानच
उचित न होकरजोचाहैसोगदाचलावै जबऐसाकहकरदोनोंबी
आपसमेंगदायुद्धकरनेलगे तब एकदूसरेकावार गदापररोंककर
अपनाअंगबचालेताथा व लड़तेसमय भीमसेनकाश्वास पवनके
वहोनेसेनहींफूलताथा परजरासन्ध उससेगदायुद्ध अच्छाजान
कर फुरतीरखताथा जबइसीतरहयुद्धकरतेहुये संध्याहोगई और
कोईनहींहारा तबदोनोंबीर राजमन्दिरपरचलेआये व एकसाथ
भोजनकरकेसोरहे और प्रातसमयफिरउठकर उसीतरहगदायुद्ध
किया जबलड़ते २ दोनोंगदाटूटकर चूरहोजातीथीं तबवहदूसरी
गदामँगाकर आपसमेंलड़तेथे॥

दो० दिनमें काजकरैं नहीं बिनायुद्ध कछुऔर। रैनिसमय मिल बैठिकर खानपान यकठौर॥

जबइसीतरहलड़ते २ सबगदाटूटगईं तबआपसमें मल्लयुद्ध
करनेलगे छब्बीसवेंदिन जरासन्धने एकमुक्का भीमसेनकीछाती
में ऐसामारा कि वहव्याकुलहोगया तब उसनेरातको कृष्णचन्द्र
से बिनयकिया महाराजजरासन्ध बड़ाबलवान्है इसलियेअबमैं
उससेलड़नेकी सामर्थ्यनहींरखता कल्हभागजाऊंगा नहींतोमे
रीलज्जा तुम्हारेहाथहै यहबचनसुनतेही जैसेद्वारकानाथने अप
नाहाथ भीमसेनकीछातीपरफेरदिया वैसेसबपीड़ा उसकीछूटगई
व पवनसुतको छातीमेंलगालिया और कुछबलअपना उसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहालड़तेसमय तुममेरीसैनसमझकर जरासन्धकोमारडाल
जब सत्ताईसवेंदिन फिरदोनोंशूरबीर लड़नेलगे उससमयदेव
हारणनेभीमसेनको एकतिनकादिखलाकर बीचमेंसे चीरडा
तबपवनसुतने उसकाभेदसमझतेही श्यामसुन्दरके बलदेनेस
रासन्धकोउठाकर पटकदिया व एकजंघाउसकीपैरसेदबाकर
रीजंघापकड़के चीरडाला सो शरीरमगधपतिका जोबीचमेंजो
हुआथा आधोआधहोकर वहमरगया जरासन्धकेमरतेही देव
नेप्रसन्नहोकर भीमसेनआदिकपर फूलबर्षाये व अनेकबाज
बजाकर जयजयकारकरनेलगे व श्यामसुन्दर व अर्जुननेभी
सेनकीभुजापूजकर उसकीबड़ाईकी॥

दो० जरासंध याबिधि हत्यो भीमसेनके हाथ। सबलोगनको सुखदियो माखनप्रभुयदुनाथ॥

जबजरासन्धके मरनेकासमाचार नगरमेंपहुँचा तबउसकी
नीरोती व पीटतीहुईआनकर श्यामसुन्दरसेबोली महाराज तु
धन्यहो जोऐसाकर्मआपनेकिया जिसनेतुमकोसर्वस्वदिया
काप्राणतुमनेलिया जोकोईअपनातनु व धनतुम्हारेभेंटकरत
उसकेसाथ तुमऐसीभलाईकरतेहो जैसेराजाबलिसेकियाथा
रानीनेअपनेपतिवास्ते अतिबिलापकिया तबश्यामसुन्दरने
धैर्यदेकर बिदाकरदिया जबसहदेवबेटामगधपतिका बसुदेवनंद
को परमेश्वरजानकर उनकीशरणमेंआया तबद्वारकानाथने
रासन्धकी क्रियाकर्महोनेउपरांत सहदेवको राज्यगद्दीपरबै
कर अपनेहाथसे तिलकलगाया व धैर्यदेकरबोले हे बेटा तुम
राज्यकरके गऊ ब्राह्मण व प्रजाकापालनकरो॥

Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० जो नरेश हैं बन्दिमें ते सबदेव छुड़ाय। आनँदसों निज देशमें राज्य करो चितलाय॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

श्रीकृष्णजीका बीसहजार आठसौ राजाओंका छुड़ाना॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जबश्यामसुन्दर सहदेवकोराज्य गद्दीदेकर उसेअपनेसाथलियेहुये जहांपरसबराजाकैदथे आयेतो क्यादेखा कि एकगड़हापहाड़कीखोहसमानखोदकर उसीमेंसब राजाबंदहैं व एकभारीपत्थर उसकेद्वारपररक्खाहै जबसहदेवने मुरलीमनोहरकी आज्ञानुसारसबराजाओंको खोहसेबाहरनिकलवाकर उनकेसामनेखड़ाकिया तबवहलोगपहिरनेबेड़ी व हथकड़ी व बढ़नेनख व बालसेबहुतदुःखीथे नयाजन्मपाकर हरिचरणोंपरगिरपड़े व मोहनीमूर्त्तिकादर्शनपातेहीसबदुःखअपनाभूलगये व आनन्दहोगये व बड़ेप्रेमसेहाथजोड़कर बिनयकिया हे दीनानाथ आपनेदयालुहोकर बड़ीकृपाकी जोयहांआनकर हमारी सुधिली नहींतोइसकैदसेछूटना बहुतकठिनथा अबतुम्हारेदर्शनहोनेसे हमलोगोंका पिछलादुःखसबभूलगया॥

दो० ऐसी बिधि राजासबै बारबार बलिजाहिं। माखनप्रभुकी लाजसे शीशउठावैं नाहिं॥

वृन्दाबनबिहारी यहदशा उनराजाओंकीदेखतेही दयालुहोकर जैसेसैनमें बतलाया वैसेसहदेवने उनलोगोंकी हथकड़ी बेड़ी कटवाकर क्षौरकर्मकराके स्नानकराया व छत्तीसव्यंजनखिलाकरउत्तम २ भूषण व बस्त्रपहिनाये अनेकतरहके हथियार बँधवाकर श्यामसुन्दरकेपासलेआया उससमयद्वारकानाथने अपना चतुर्भुजीरूपसे शंख व चक्र गदा पद्म लियेहुये जैसे उनको देखतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को दर्शनदिया वैसेउनलोगोंकेहृदयमें ज्ञानका प्रकाशहोग
तब उनराजाओंने बैकुण्ठनाथकेसामने हाथजोड़कर बड़ेप्रेम
आंशूबहातेहुये बिनयाकिया हे दीनानाथत्रिभुवनपति सबजी
केउत्पत्ति व पालनकरनेवाले तुम्हारेआदि व अन्तकोईन
जानताहमलोगसंसारीजीवोंका जोभवजालमेंफँसरहेहैं सिवा
तुम्हारेकोई दूसराइसफन्देसे बाहरनिकालनेवालानहींहै आ
चाहते तोद्वारकामेंबैठेहुये अपनीइच्छासे राजाजरासंधकोम
करहमैंछुड़ादेते केवल तुमनेअपनीकृपासेयहांआनकर हमैंकृ
र्थकिया नहींतोतुम्हारेचरणोंका दर्शनबड़े २ देवता व ऋषीश्व
को तप व जपकरनेपरभी जल्दीध्यानमेंनहींमिलता हे महाप्र
आपको हमारीदण्डवत्पहुंचे अबहमलोगोंकामन राज्यकर
वास्ते न चाहकर यहइच्छारखतेहैं कि आठोंपहरआपकेनामक
स्मरण व चरणोंकाध्यानकरके तुम्हारीलीला व कथासुनाक
जिसमें इसअँधियारेकुयें माया व मोह स्त्री व पुत्रसेबाहरनिक
कर भवसागरपारउतरजावें जरासन्धने हमारेसाथबड़ासलूक
रके अपनेयहांक़ैदकियाथा जिसकारणहमलोगोंको तप व यो
काफलमिलकर तुम्हारेचरणोंकादर्शनप्राप्तहुआ॥

दो० परब्रह्म तुम ब्रह्महौ बासुदेव घनश्याम। साखनप्रभु गोबिन्दको हितसोंकरौं प्रणाम॥

यहज्ञानभराहुआ बचनसुनकर लक्ष्मीपतिबोले अभिमानी
जाओंकोइसीतरहदुःखमिलताहै जिसतरहतुमनेपायासुनोजि
केमनमेंदया व धर्म व मेरेचरणोंकीभक्तिरहतीहै वहलोगसंसार
[illegible]करअन्तसमयमुक्तहोतेहैं बन्ध व मोक्ष अपनेकर्मानु

Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मलताहै जोकोई क्रोध लोभ मोहको अपनेबशरखकर कुकर्म्मन
रेउसेघर व बनदोनोंजगहका रहनाबराबरहै देखोपिछलेयुगोंमें
भिमानने राजानहुष व बेणु व रावणआदिकको राजगद्दीसेखो
या वजिन्होंनेअहंकारछोड़करमेरीशरणापकड़ी वहलोगबिभी
ण व हनुमान् व अम्बरीष व प्रह्लादकेसमान अपनीमनोकामना
पहुंचकरमेरेपास बनेरहतेहैं अभिमानीमनुष्य बहुतनहींजीता
जासहस्राबाहुको अपनेबल व हजारभुजाका अभिमानहुआ
सोपरशुरामजीने उसकीभुजाफरसेसेकाटकर मारडाला व भौ
सुर व बाणासुर व कंसादिकअनेकराजाअभिमानीनष्टहुयेहैं॥

चौ॰ सो मति गर्ब करो जनि कोई। छूटै गर्ब तो निर्भय होई॥

इसलियेतुमलोग दुःख व सुखको समानसमझकर सदामेरे
रण व ध्यानमेंमग्नरहो तो तुम्हैंदुःखनहींहोगा॥

चौ॰ जो जन चितलावै मनमाहीं। हमहूं सदा रहैं त्यहि पाहीं॥
जो सब जन्म पाप में रहै। फिर वह शरण हमारी गहै॥
ताको मैं अति प्रीति करि देत आपनो धाम। यामें दुखव्यापै नहीं रहै सदा बिश्राम॥

यहसुनकर सबराजाओंने बिनयकिया कि आपदयालुहोकर
अपनेजप व पूजाकीबिधि बतलादीजिये तोउसीतरहतुम्हारे
रण व ध्यानमेंलीनरहकर भवसागरपारउतरजावें यहसुनकर
देवनन्दननेकहा सबवेद व शास्त्रकामुख्यज्ञानयहहै कि किसी
मुझे न भूलकर मेरीकथा व लीलासुनाकरो व संसारव्यव
स्वप्नवत् समझकरमेरेनामपर यज्ञ व होमकियाकरो व प्रजा
न व ब्राह्मण व साधु व महात्मोंकीसेवाकरके झूठमतबोलो
काम क्रोध मोहलोभको अपनेवशरखकर कुकर्मसेरहितरहतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तो तुमलोगोंको राज्यभोगनेपरभी किसीतरहका दुःख नहो
अंतसमय बैकुण्ठधाममिलैगा॥

चौ० जगमें बुद्धिमान है सोई। जाको मोह लोभ नाहिं होई॥
दो० ज्ञानीजन न्यारोरहै ऐसीविधि जगमाहिं। ज्योंअम्बुज जलमेंवसै जलको परशतनाहिं॥

सोअबतुमलोग अपने २ घरजाकरबालबच्चोंकासुखदेखो
जायुधिष्ठिरनेराजसूययज्ञका आरम्भकरकेतुमलोगोंको न्यो
दियाहैसो हमारेपहुँचनेसे पहिले हस्तिनापुरमेंजाव जबउ
आज्ञानुसारसबराजालोग अपने २ घरजानेवास्ते तैयारहुये
सहदेवनेरथ व घोड़ेडेरे व सेवकादिकअपनेयहांसे उनकेसंगक
ये वबैकुण्ठनाथने सबकेगलेमें एकएकमालामोतियोंकी
हाथसे पहिनाई जबवह सबराजाबड़ेहर्षसे श्यामसुन्दरकाय
तेहुये अपनेदेशकोगये व सहदेवनेत्रिभुवनपति व भीमसेन
र्जुनकापूजन बिधिपूर्वककिया तबश्रीकृष्णजी सहदेवको
करमगधदेशसे इन्द्रप्रस्थकोचले जबहस्तिनापुरके निकट
कर बसुदेवनन्दनने पाञ्चजन्य व भीमसेननेपुण्डरीक व
नेदेवदत्तशंख अपना २ बजाया तबउसशंखकाशब्दसुनते
जायुधिष्ठिरबड़ेहर्षसे नकुल व सहदेवअपनेभाई व सेनापति
मेत आगेसेआनकर लक्ष्मीपतिको सन्मानपूर्वकअपनेघर
लेगये पर राजादुर्योधन शंखकाशब्दसुनकर बहुतउदासहो
जबबसुदेवनन्दन व अर्जुन व भीमसेनराजायुधिष्ठिरकेचर
गिरे तबउन्होंने उनकोअपनीछातीसे लगाकर प्रेमकाआं
जरासन्धके मारेजानेकासमाचारसुनकरअतिप्रसन्न

CC-0. Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौहत्तरवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिरके यज्ञमें सब राजाओंका आना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित राजायुधिष्ठिरनेज्ञानकीराहश्याम
न्दरकेसामने हाथजोड़करबिनयकिया हे त्रिभुवनपति आपने
ह्मा व महादेवआदि सबदेवतोंकेमालिकहोकर मेरेवास्तेब्राह्मण
पधरके भीखमांगना अंगीकारकिया इसलिये मैंअपनेबराबर
कसीदूसरेकी भाग्यनहींसमझता देखो जिनचरणोंकादर्शन ब
२ योगी व ऋषीश्वर व देवतोंकोजपव तपकरनेसेभी जल्दीध्या
मेंनहींमिलता उन्हींचरणोंसे तुमनेमुझेअपनाभक्तजानकर मे
घरपवित्रकिया जिनकेचरणोंका धोवनगंगाजीहोकर तीनोंलो
कोतारती हैं वहीपरब्रह्मपरमेश्वर तुमहोकर मेरीआज्ञापालन
करतेहो यहसबतुम्हारीदया भक्तबत्सलताकीराहसेहै नहीं तौ ब्र
ह्मा व महादेवआदिक ऐसीसामर्थ्यनहींरखते जोतुम्हारेऊपरआ
ज्ञाकरैं देखोसंसारीमनुष्यराज्य व धनकेपानेसे किसीकोअपने
बराबरनहींसमझता सोआपत्रिभुवनपतिहोकर मेरेयहांकोईका
छोटा या बड़ाकरनेमें कुछअभिमाननहींरखते॥

दो॰ तुम्हरे सुमिरण ध्यानमें पावन होतशरीर। याते सुमिरतहौं सदा माखनप्रभु बलबीर॥

और कुन्तीने जरासंधकामारना सुनकर श्यामसुन्दरसेबिनय
किया हेमहाप्रभु अबतुम्हारीकृपासे राजसूययज्ञ अच्छीतरहस
म्पूर्णहोगा यहबचनसुनतेही भीमसेनहँसकर बोला हेमातातुम
काहेकोस्तुतिमुरलीमनोहरकीक्याकरतीहोजरासंधको मैंनेमाराहै

दो॰ एकओर बैठेरहे आनँदसों घनश्याम। जरासन्ध बलवान सों मैं कीन्हों संग्राम॥

यहबातसुनकर केशवमूर्त्ति बोले हेमाताभीमसेनसच कहतेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परमैंनेइनकोसैनसे बतलादियाथा किजरासंधकीदोनोंटांगें
करमारडालो उसीउपायसेवहमारागया यहसुनकरयुधिष्ठि
दिकसबकोईहँसनेलगे सबसातोंद्वीपनवोंखंडके चंद्रबंशी व
बंशीराजाअपनी२स्त्रियोंसमेतद्रव्य व रत्नादिकभेंटदेनेवास्ते
लेकरहस्तिनापुरमेंआये तब राजायुधिष्ठिरने भेंटउनकीलेक
गरकेचारोंतरफ़उनलोगोंकोडेरादिया व यथायोग्यसबकास
नकिया व उनमें जोराजा जरासन्धकीकैदसे छूटकरआयेथे
लोगबड़ेहर्षसेयज्ञका सबकामकरनेलगे व सबनेवतहारीराजा
नेश्यामसुन्दर व रुक्मिणीआदिक आठोंपटरानियोंका दर्शन
सेकरके लोचनोंकाफलपाया व नकुलजाकर भीष्मपिता
व दुर्योधनआदिककौरवोंको अपनेयहांलिवालाया व शुकदे
वेदव्यास व नारदमुनि व कश्यप व वशिष्ठ व वामदेव व अ
परशुराम व धूम्र व भरद्वाज व च्यवन व कण्व व मैत्रेयआ
बहुतसेऋषीश्वर व ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व गन्धर्व व किन्न
यक्ष व लोकपालादिक सबदेवता व महात्मालोग अपनी२स्त्रि
समेत राजायुधिष्ठिरकानेवता व बैकुण्ठनाथकेदर्शनकरनेव
उसयज्ञमेंआये व उन्होंने त्रिभुवनपतिका दर्शनकरके अपन
जन्मस्वार्थकिया तबराजायुधिष्ठिरने देवता व ऋषीश्वरोंक
जनविधिपूर्वककरके उन्हैंजड़ाऊसिंहासनपर बैठाला व सि
उनके और बहुतसेअनगिनत चारोंवर्णजोअनेकदेशसे वहां
उनलोगोंकासन्मान यथायोग्यकिया व श्यामसुन्दरकी आ
नुसारएक२ कामयज्ञकासबराजोंको बांटदिया जबयज्ञकर

Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुहूर्त्तआया तबद्वारकानाथनेहँसकर राजायुधिष्ठिरसेकहा अबतु
यज्ञकरनेवास्तेबैठो हम व अर्जुनआदिक सबलोगोंकासन्मान
करैंगे यहसुनतेही राजायुधिष्ठिरने सबकपड़ेउतारकर नईधोतीपहि
ली वशुभलग्नमें सुवर्णकेहलसे अपनेहाथयज्ञकरनेवास्ते पृथ्वी
तोतकरतैयारकी व शाकल्यआदिक सबवस्तुयज्ञकी सुवर्णकेबर्त्त
नोंमेंमँगाकर ऋषीश्वरोंकेपासरखवादी जबब्राह्मण व ऋषीश्वरोंने
दी व अग्निकुण्डबनाकर वेदमंत्रपढ़ना आरम्भकिया तबराजा
युधिष्ठिर द्रौपदीसेगांठजोरकर यज्ञशालामेंआये व आसनपर बैठ
कर अग्निकुण्डमेंआहुतिदेनेलगे उससमयदेवतोंने बैकुण्ठनाथकी
आज्ञानुसार प्रत्यक्षअपना २ हाथफैलाकर यज्ञकाभागलिया व
राजायुधिष्ठिरने सबब्राह्मणोंकेहाथमें सोनेकाश्रुवा होमकरनेवास्ते
दियाथा औरसबसुनहलेबर्त्तनयज्ञकेदेखकरनेवतेवाले आश्चर्यमा
नकेकहतेथे देखो इतनाद्रव्यराजानेकहांसेपाया जोऐसीतैयारीकी
उनमेंज्ञानीलोगउत्तरदेतेथे जिसपरलक्ष्मीपतिआपसहायकहैं उन
कीक्याकमीहै यहवचन उनलोगोंकासुनतेही राजायुधिष्ठिरहँसक
श्यामसुन्दरसेबोले॥

दो० कहत तुम्हारे नामते सिद्धिहोत सब काज। नमस्कार तुमको करौं यज्ञपुरुष यदुराज॥

जबराजसूययज्ञ राजायुधिष्ठिरका अच्छीतरहसम्पूर्णहुआ तब
सबदेवता व गन्धर्वादिकबड़ाई राजायुधिष्ठिरके भाग्यकीकरने लगे
दुन्दुभीबजाकर उनपरपुष्पोंकीवर्षाकी उससमयराजायुधिष्ठिर
ने भीष्मपितामह व दूसरेछत्रधारीराजाओंसे जोवहांबैठेथे पूंछा॥

चौ०

जगमें जो कुछ कारज कीजै। निज पुरुषनसे आज्ञा लीजै॥
तो वह काज सदाशुभ होय। यह निश्चय जानो सबकोय॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाते हमें मंत्र यक दीजे। पूजा प्रथम कौनकी कीजे॥
कौन बड़े देवनके ईश। ताही पूजि नवावें शीश॥

यहबातसुनकर अभीतककिसीने उत्तरनहींदियाथा कि सह
जरासन्धकेपुत्रनेउठकर राजायुधिष्ठिरसे बिनयकिया महाराज
पजानबूझकर क्यापूंछतेहैं सिवायद्वारकानाथ त्रिभुवनपतिके
राकौनपूजनयोग्यहै जिसकापूजनकरोगे श्यामसुन्दरने सबजा
कीउत्पत्ति व पालन व नाशकरनेवालेहोकर पृथ्वीकाभारउता
व अधर्मियोंकोमारनेवास्ते अपनीइच्छासे अवतारलियाहै इसी
ये उन्हींकोअग्निरूप व यज्ञपुरुषजाननाचाहिये जिसतरहवृक्ष
जड़मेंपानीदेनेसे सबडाली वपत्तोंको वहजलगुणकरताहै उसी
हकृष्णचन्द्रकी पूजाकरनेसे सबदेवतातृप्तहोंगे बसुदेवनन्दनका
दकोईनहींजानता जितनीवस्तुसंसारमें देखतेहौ सबउन्हींकीउ
त्तिकीहुईहैं व गंगाजी इनकेचरणोंकाधोवनहोकर तीनोंलोक
तारतीहैं इनकास्मरण व ध्यानकरने व कथासुननेसे सबपापछूट
मुक्तिमिलतीहै जिसजगहआपसाक्षात् परब्रह्मपरमेश्वरविराज
वहांदूसरेकीपूजानहींहोसक्ती और वहसबपरमेश्वरकीमायाहै
हमलोगअपनाभाईबंधु व यदुवंशीइनको समझतेहैं॥

चौ० सबसंसार शरीर समाना। प्राणरूपहैं यह भगवाना॥
गर्व आतमा इनको जानो। पूरण शांतरूप पहिचानो॥
दो० हरिजूकी पूजाकरे मन चितदै जो कोय। मानो पूजे देव सब सुफल कामना होय॥

यहवचनसहदेवकासुनकर श्यामसुन्दरउसेसैनसेबर्जनेलगे
मतकुछकहो परजितनेदेवता व ऋषीश्वर व ज्ञानीराजा जोउस
में बैठेथे यहबातसुनतेहीबोलउठे हेसहदेव तेरीबुद्धि व तेरीमा

In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पिता व गुरूकोधन्यहै जिन्होंनेतुझकोऐसाज्ञान सिखाया तुम्हारे पुरुषाइसीतरहकेधर्मात्मा व ज्ञानीहोतेआयेहैं जबराजायुधिष्ठिरने यहबातसहदेव व ज्ञानीराजाओंकी अपनीइच्छानुसारसुनी तबव हर्षसे जड़ाऊसिंहासनमँगवाकर द्वारकानाथको रुक्मिणीआदि क आठोंपटरानीसमेत उसपरबैठाला व चरणउनकाधोकर चरणा मृतलिया और वहजल अपनेपरिवारसमेत शिर व आंखोंमेंलगा या वसबदेवता व राजाओंने वहचरणामृतपीकर अपना २ जन्म सुफलकिया व राजायुधिष्ठिरने बैकुण्ठनाथको पीताम्बरपहिनाया व केसरि व रक्तचन्दनकातिलकलगाकर रेशमीउपर्नाओढ़ाया व रत्नजटित उत्तम २ भूषणअंग २ में पहिनाकर जड़ाऊकिरीट व मु कुटशिरपरबांधा व रत्न व मोतियोंकाहार व सुगंधितपुष्पोंकीमाला गलेमेंपहिनादी व विधिपूर्वक पूजाकरके बहुतसारत्न व द्रव्यादिक उनके आगेभेंटरखकर बिनयकिया हेलक्ष्मीपतिआपतीनोंलोक व सबवस्तुकेमालिकहैं इसलियेमुझेतुमकोभेंटदेतेहुये लज्जाआतीहै यहआनन्ददेखतेही देवतोंनेश्यामसुन्दरको दण्डवत्करके उनपर फूलबरसाये व बसुदेवनन्दनकीबड़ाईकरनेलगे ॥

दो० ऐसीबिधि पूजेजभी माखन प्रभु जगदीश। भयेलोग आनन्द सब राजहि देत अशीश ॥

उससमय द्वारकानाथ ऐसेसुन्दरमालूमदेतेथे जिनकीउपमाक हीनहींजाती व कोईराजा अच्छीतरह आंखउठाकरइसकारणाउन की ओर देखनहींसक्काथा जिसमेंउन्हेंदृष्टि न लगे इतनीकथासुना कर शुकदेवजीबोले हेपरीक्षितश्यामसुन्दर की पूजाकरनेसे जित नेछोटे व बड़ेवहांपरथे सबप्रसन्नहुये परशिशुपाल चन्देलीकेरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाको यहबातअच्छीनहीं मालूमहुई इसलियेवहथोड़ीदेरनहीं
ला फिरकुछशोचबिचारकरके अपनीमृत्यु निकटपहुंचनेसे उ
ड़ाहुआ व क्रोधसेसभामें हाथउठाकरबोला हेराजायुधिष्ठिर व
राष्ट्र व भीष्मपितामह व दुर्योधनआदिकतुमलोग बड़े २ ज्ञानी
धर्म्मात्माहोकर ऐसेमूर्खहोगये कि एकबालककेकहनेसे पूजाश्री
ष्णजीकी इसतरहपरकी जिसतरहकोईमनुष्य यज्ञ व होमका
कीखीर काककोखिलादेवै तुमलोगनहींजानते कि वसुदेवनन्द
ने वहुतदिनतकवनमें गोचराकर अहीरोंकेसंगरोटीखाई व परस्त्रि
केसाथरासलीलाकरकेभोग व बिलासकियाजबसेआजतकयह
त अच्छीतरहनहींमालूमहुई कि यहबसुदेव यादवकेबेटेहैं यान
केतबइनकाकौनवर्ण व किसकाबालककहाजावेयहबड़ाआश्चर्य
है जो तुमलोगऐसेआदमीको जिसकेमाता पिताकाठिकानानहीं
लगता अलखअगोचरसमझतेहो इन्हींश्रीकृष्णने राजाइन्द्र
पूजाछुड़ाकर गोवर्द्धनपहाड़को पुजवायाथा यहशास्त्रकेअनुस
न चलकरजो कुछइनकेमनमेंआताहै सोकरतेहैं सिवायदूध व
ही आदिक चुराने व अधर्मकरनेके कोईशुभकामइन्होंनेनहींकि
या देखोयहशत्रुकेभयसे जन्मभूमिअपनीछोड़कर समुद्रकिन
रेजावसेहैं इसलिये ब्रजबासियोंको इनकेबिरहमें अतिदुःखहोताहै
जिसपरभी यहकुछध्याननहींकरते व वृन्दावनमेंरहकर इन्होंने
पियोंका चीरचुरायाथा और यदुबंशीलोग राजायथातिकेशाप
तिलकधारीराजा न होकर थोड़ेदिनोंसेबढ़गयेहैं फिरतुमलोगों
क्यासमझकर इनकीपूजाकी मैं परमेश्वरकी सौगन्दखाकरकहत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हूं यहसबबातकहनेसे मुझेकुछअपनीपूजाकरानेकी इच्छानहीं है जोसचथा सोकहदिया देखोजहांपर वेदव्यास व नारदमुनिपराशर आदिकबड़ेबड़ेऋषीश्वर व ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रआदिकसबदेवता बैठेहैं वहांपरश्रीकृष्णकीपूजाकरना इसतरहसमझनाचाहिये जिस तरह होमकीसामग्री कोईकुत्तेकोखिलादेवै व राजायुधिष्ठिर श्या मसुन्दरकीवड़ाई जोकरतेहैं तोइसकायहकारणहै जिसतरहकुन्ती ने अपनेपतिकोछोड़के दूसरोंकेवीर्यसे युधिष्ठिरआदिकको उत्पन्न किया उसीतरह श्रीकृष्णजीके वापकाठिकानानहींलगता अपने बरावरवालोंकी सबचाहनाकरतेहैं केशवमूर्त्ति शिशुपालकीबात काकुछउत्तर न देकर एक २ दुर्वचनकहनेपर रेखाखींचतेजातेथे॥

दो० मथुरा गया प्रयागतजिगयो औरही देश। खारीजल ऊपर बस्यो किये ठगनको भेश॥

जबइसीतरह अनेकदुर्वचनशिशुपाल द्वारकानाथको कहनेल गा तबज्ञानीलोग परमेश्वरकीनिन्दासुननेमें अधर्मसमझकर वहां सेउठगये व भीमसेन व द्रोणाचार्य व अर्जुननेक्रोधितहोकर शिशु पालसेकहा हे मूर्खअभिमानी तूहमारेसन्मुख त्रिभुवनपतिकी नि न्दाकरताहैचुपरह नहींतो अभीतुझेमारडालते हैं जबऐसाकहकर भीमसेनशिशुपालके मारनेवास्तेदौड़ा तबशिशुपालभी उसकेस न्मुखजाकर ऐसाललकारा कि सभावालेडरगये उससमयश्याम सुन्दरने सिंहासनसेउतरकर भीमसेनआदिककोसमझाया कितुम लोग शिशुपालपर शस्त्रमतचलाओ व दुर्वचनकहनेसे मतवर्जो जोयहचाहै सोकहै देखोक्षणभरमें यहआपमाराजायगा॥

दो० भीमादिक सबसेकहेउ क्रोध न कीजे आज। निजभ्राताके यज्ञमें विघ्नकरो क्याहिकाज॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जबबैकुण्ठनाथके वर्जनेसेभीमसेनने शिशुपालको नहीं
तबराजायुधिष्ठिर शोचितहोकर बोले देखोशिशुपालमेरीसभ
बैकुण्ठनाथको ऐसादुर्वचनकहताहै क्याकरूं बिनाआज्ञात्रिभु
पतिके कुछकहनेनहींसक्ता जबइसीतरह शिशुपालने एकसौ
कठोरबचन श्यामसुन्दरकोकहे व युधिष्ठिरउनकेभक्तकोभी दु
नसुनाया तबवसुदेवनन्दनने क्रोधवशहोकर पूजाकीथालीको
पनेमंत्रसे सुदर्शनचक्रबनाकर शिशुपालका शिरकाटडाला तो
केधड़से एकज्योतिनिकलके पहलेआकाशमेंजाकर फिरश्रीकृ
जीके मुखमेंसमागई यहचरित्रदेखकर देवतोंने श्यामसुन्दरपर
लवरसाये व ऋषीश्वरलोग उनकीस्तुतिकरनेलगे व दूसरेराजो
शिशुपालऐसेअधर्मीकी मुक्तिदेखकर बहुतआश्चर्यमाना इत
कथासुनकर परीक्षितनेपूंछा हे मुनिनाथ श्रीकृष्णजीने शिशुपा
को ऐसेकठोरबचनकहनेपर किसतरहमुक्तिदी व एकसौएक
खींचकर उसेमारनेकाक्याकारणथा शुकदेवजीबोले हे राजा
हालइसतरहपरहै कि जयबिजयने सनकादिककेशापदेनेसे तीन
रसंसारमेंजन्मलिया और तीनबेर परमेश्वरसे शत्रुताईकरकेमु
पाई जबपहिले उनदोनोंने हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपुहोकरदेव
कोदुःखदिया तबनारायणजीने बाराह व नृसिंहअवतारलेकर उ
कावधकिया दूसरीबेर जबवहरावण व कुम्भकर्णकाजन्मपाकर
व ब्राह्मणकोदुःखदेनेलगा तबबैकुण्ठनाथने श्रीरामचन्द्रका अ
तारलेकर उनकोमारडाला॥

दो॰ अब यह तीजे जन्ममें भयो एक शिशुपाल। दन्तवक्रहै दूसरो असुरनको भूपाल॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हेराजन्शिशुपाल व दन्तवक्रमुरलीमनोहरको अपनाशत्रुजा
कर दिनरातध्यानउनकाकरतेथे इसीवास्ते श्रीकृष्णजीपरब्रह्मअ
ारने शापकीअवधिबीतनेपर शिशुपाल व दन्तवक्रकाशिर सुद
नचक्रसेकाटकर उनकोबैकुण्ठमेंभेजदिया व सौरेखारवींचनेका
ारणयहहै कि महादेवीनामबहिन बसुदेवजीकी दमघोषराजाच
लीकोब्याहीगईथी जबउसकेपेटसेशिशुपाल जिसकेतीनआंख
चारभुजाथीं उत्पन्नहुआ वराजाने ज्योतिषियोंकोबुलाकर उस
जन्मकुण्डलीका फलपूंछा तबब्राह्मणोंने बिचारकरकहा महा
जयहबालकअतिबलवान् व प्रतापीहोकर उसमनुष्यके हाथसे
राजायगा जिसकेगलेमिलनेसे एकआंख व दोभुजा इसकीगुप्त
जावेंगी दूसराकोईसंसारमें इसकोमारनेनहींसक्ता जबयहवचन
ोतिषियोंका महादेवीनेसुना तबवहइसबातकी परीक्षालेनेवास्ते
शुपालअपनेबेटेको सबकीगोदमेंदेकर गलेलगानेलगी एकबेर
हादेवीशिशुपालसमेत द्वारकामें शूरसेनअपनेबापके यहांजाकर
ड़ेदिनरही जबउसने ज्योतिषियोंका बचनयादकरके अपनेबेटे
यदुबंशियोंकेसाथगले मिलवाया सो श्यामसुन्दरसे गले मि
तेहीदोभुजा व एकआंखशिशुपालकी लोपहोगई यहदशादेख
ीमहादेवीने विनयपूर्बककहा हेद्वारकानाथमैंतुमसे यहभीखमां
ीहूं कि शिशुपालकोअपने फुआकाबेटाभाईसमझकर कभीम
ारना यहबचनसुनकर त्रिभुवनपतिबोले हेफुआमैंतेरेबेटेके सौ
पराधक्षमाकरूंगा अधिकअपराधकरेगा तोबिनामारे न छोड़ूंगा
सबातकाबचन महादेवीलक्ष्मीपतिसेलेकर अपनेघरचलीगई व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसनेयहविचारकर अपनेमनको धैर्यदिया कि मेराबालकहि
स्तेसौअपराध बसुदेवनन्दनकेकरैगा इसीवास्तेश्यामसुन्दरने
ठोरवचनशिशुपालके सहकरउसेमारा और वहीगुप्तबातद्वारक
थनेराजसूययज्ञमें कहकरसबराजाओंका संदेहछुड़ायाथा यह
करपरीक्षितनेकहा हेमुनिनाथ अबआगेकथासुनाइये शुकदे
बोले हेपरीक्षितजबराजा युधिष्ठिरका यज्ञअच्छीतरह सम्पूर्ण
तबउन्होंनेन्यवतहारी राजाओंका उनकीस्त्रियोंसमेत यथाय
उत्तम २ भूषण व बस्त्रदेकरबिदाकिया और वहलोगआनन्द
कअपने २ घरकोगये व जितनेछोटेबड़े उसयज्ञमेंआयेथे वहल
राजायुधिष्ठिरसे ऐसेप्रसन्नहुये कि किसीकामन घरजानेवा
हींचाहताथा पर राजा दुर्योधनको धर्मपुत्रकीबड़ाई सुनने व
देखनेसे ऐसीडाहहुई कि क्रोधितहोकर अपनेघरचलागया॥

पचहत्तरवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर का शोभास्थान वर्णन करना॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकर बोले हे मुनिनाथ जहांप
जा उसयज्ञकरनेसे प्रसन्नहुयेथे वहांदुर्योधनने क्योंखेदकिय
कामयज्ञका किसतरहसबको बांटागयाथा यहकथाकहिये शुक
जीबोले हे परीक्षिततुमधन्यहो जोहरिकथासुननेसे तृप्तनहीं
सुनोअर्जुनआदिकचारोंभाई राजायुधिष्ठिरकी आज्ञा आनन्द
कमानकर किसीछोटेबड़ेकामकरनेमें लज्जानहींरखतेथे परस
तोंकेमालिक श्यामसुन्दरथे इसलिये उन्होंनेयथायोग्य सबको
राजाओंको सौंपदिया भीमसेनको भोजनकरानेका कामसौं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

टदेना उसकाधृष्टद्युम्नकेअधीनकिया कोषद्रव्यादिकका राजादु
र्योधनकोसौंपकर खर्चकरना उसकाकर्णके ज़िम्मेकियाथा जिस
कादानआजतक संसारमेंप्रकटहै व सन्मानकरना व सुधिलेना ने
तेवालेराजाओंका अर्जुनकोसौंपकर अलंकृतकरना स्थानसभा
काविदुरकेअधीनहुआथा व देवता व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंकीपूजा
सेवाकरना सहदेवकोसौंपकर औरइकट्ठेकरलानाद्रव्यादिकसब
रतुका नकुलकेज़िम्मेकिया व श्रीकृष्णजीनेब्राह्मणोंकापैरधोना
और जूंठीपत्तल उनकीउठावना अपनेज़िम्मेरक्खाथा व द्रौपदी
रुक्मिणीआदिककाशिष्टाचार अन्तःकरणसेकरतीथी इसीतरह
पर राजायुधिष्ठिरने मुरलीमनोहरकीआज्ञानुसार जोकामयज्ञका
जिसराजाकोसौंपदियाथा वहलोग उसकामको बड़ेप्रेमसे करतेथे
औरराजादुर्योधन कपटकीराह एकरुपयेकीजगह दशरुपया राजा
युधिष्ठिरका इसकारणलोगोंकोदेडालताथा जिसमेंद्रव्यबँटिजावै
औराजायुधिष्ठिरकी हँसीहो सोबैकुंठनाथकीदयासे इसतरहबहुतदे
नमें अधिकयश व धर्मराजाकाहोताथा व दुर्योधनकेहाथमेंचक्करह
गसे ऐसाप्रभावथा कि जिसभंडारेसेवहएकरुपयाखर्चकरै उसमेंद
सगुणावढ़जावे इसकारणद्वारकानाथअन्तर्यामीने उसेकोषद्रव्या
दिककासौंपाथा पर दुर्योधनको यहमहिमानहींमालूमथी हे परी
क्षित जबअच्छीतरहयशपूर्वकयज्ञ राजायुधिष्ठिरका संपूर्णहुआ
सबधर्मराजने असंख्यद्रव्य व रत्न व भूषणवस्त्रादिक ब्राह्मण व ऋ
षीश्वरयज्ञकरनेवाले व उनकीस्त्रियोंको इच्छापूर्वकदेकर प्रसन्न
किया व सबछोटेबड़ोंको साथलियेहुये गंगाकिनारेजाकर वहांद्रौप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दीसमेत विधिपूर्वकस्नानकिया उससमयब्राह्मण व ऋषीश्व
वेदपढ़ा व देवतोंनेराजायुधिष्ठिर परफूलबर्षाये और कहाधन्य
ग्यधर्मराजकाहै जिसनेऐसाकठिन यज्ञसंपूर्णकिया व अप्सरों
पने २ बिमानोंपरनाचकर गन्धर्वोंनेगानासुनाया ॥

चौ॰ या विधिसकल स्वर्गके बासी। देखियज्ञ विधिभये हुलासी॥
दो॰ नरनारीछोटेबड़े कहतधन्य यदुराज। जिनकी कृपासुदृष्टि स भयो यज्ञकोकाज॥

उससमय सबहस्तिनापुरबासी उत्तम २ भूषण व बस्त्रपहिने
शोभादेखनेवास्ते अपने २ कोठे व खिड़कियोंपरबैठकर बड़ाई
ग्यराजायुधिष्ठिरकी करतेथे उनकारूप व नगरकीशोभादेखक
बयदुबंशी आपसमेंकहनेलगे हमलोगजानतेथे कि द्वारकापुरी
बराबर दूसरानगरसंसारमें न होगा सोहस्तिनापुर उससेभीउत्त
दिखलाईदिया जबराजायुधिष्ठिर स्नानकरके अपनेस्थानपरआ
तबजितनेब्राह्मण व याचक व भिखारीवहांइकट्ठेहुयेथे उनको
मांगा दान व दक्षिणादेकर आनन्दपूर्वकबिदाकिया जबऐसी
ब्ययुधिष्ठिरकीदेखकर सबछोटेबड़े उनकायशगानेलगे तबदु
नकोयुधिष्ठिरकीबड़ाईसुनने व सबराजोंको उनकेसामने दण्ड
करते देखनेसेबहुतडाहउत्पन्नहुई॥

दो॰ यज्ञकथा शिशुपालबध कहैसुनै जो कोय। पावत फलवह यज्ञको लहै मुक्तिफलसोय॥

श्यामसुन्दर अपनीपटरानियोंको नित्यसमझायाकरतेथे
तुमलोगसेवाकुन्ती व द्रौपदीकीअच्छीतरहकरना जिसमे
सीबातकाखेद न पावैं व पटरानियोंकीसुन्दरताई व भूषण व
तय्यारीदेखने व घुंघुरूकाशब्दसुननेसे देवतोंकाचित्तठिकाने
रहताथा मनुष्यकौनगिनतीमेंहै जबराजायुधिष्ठिरअपनेउत्तम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में जोमयनामदानवने बनादिया जड़ाऊसिंहासनपर द्रौपदीसमे
बैठे तबद्वारकानाथकी इच्छानुसारअप्सरा व गन्धर्वोंनेदेवलोक
आनकर वहांनाचना व गानाआरम्भकियाथा उससमयकैसीशो
भाधर्मराजकी मालूमदेतीथी जैसेइन्द्रअमरावतीपुरीमें अपनीस्त्री
कोसाथलेकर इन्द्रासनपरबैठें पर राजायुधिष्ठिरऐसेसुख व यशमि
लनेपरभीकुछअभिमान न लाकर यहसमझतेथे कि श्यामसुन्दर
केप्रतापसे मेरायज्ञसम्पूर्णहोकर यहयशमिलताहै जिससमयरा
जायुधिष्ठिर इन्द्रकेसमान राजसभामें बैठेहुये अप्सरोंकानाचदेख
रहेथे उसीसमय राजादुर्योधनबहुतसेनासाथलिये अभिमानपूर्वक
वहांआनकर स्थानदेखनेचला उसमेंबिल्लौर व रत्नादिकजड़ेहोक
कईजगहकुण्डबिल्लौरके ऐसेबनेथे जिसमेंपानीभराहुआ मालू
महोकर कईजगहजलभरेहुये कुण्डसूखेदिखलाईदेतेथे जबदुर्यो
धननेधोखेसे सूखेआंगनमें पानीसमझकर अपनाजामाउठाया व
दूसरीजगह सूखास्थानजानकर पानीमें कपड़ों समेतचलागया
तब रुक्मिणी व द्रौपदीआदिक स्त्रियां खिड़कियोंमेंसे यह दशा
देखकर हँसनेलगीं व भीमसेन खिलखिलाकर बोला हे धृतराष्ट्र
के बेटा आगेचलो यहदशादुर्योधनकी देखकर राजायुधिष्ठिर ने
भीमसेनको हँसनेसेबहुतबर्जापरवह उनकेबर्जनेपरभी खिलखि
लाकरहँसतारहा तबदुर्योधन अतिलज्जितहोकर मनमेंकहनेल
गादेखोयहलोग मुझेअन्धाबनाकरमेरीहँसीकरतेहैं जबऐसाविचा
रकर दुर्योधनक्रोधबश बिनास्थानदेखे उसीजगहसेअपनेघर फिर
गया तब राजायुधिष्ठिर बहुतशोचकरनेलगे परभीमसेन व श्याम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुन्दरप्रसन्नहुये व दुर्योधनअपनीसभामेंबैठकर मंत्रियोंसे बो
देखोश्रीकृष्णकाबलपाकर युधिष्ठिरको ऐसा अभिमानहोगया
आजसभामें भीमसेननेमेरीहँसीकी इसबातकाबदला उनसे
तोआजसे अपनानाम दुर्योधन न रक्खूं इतनीकथासुनाकर
देवजीबोले हेपरीक्षित दुर्योधनके अधिकशत्रुताईहोनेका यही
रणाथा उसीदिनसे दुर्योधननेयुधिष्ठिर आदिकके पीछेपड़करउ
बनबासदिया विस्तारपूर्वकहाल उसकामहाभारतमें लिखाहै
कृष्णजी परब्रह्मपरमेश्वर महाभारतकराकेबड़े २ शूरबीरोंकान
कराना चाहतेथे इसलियेउनकी इच्छानुसारकौरव पांडवोंमें
ताईहुईथी॥

दो० जो प्रकटे संसारमें भारउतारन काज। भारत चाहतहैं करन माखनप्रभु यदुराज॥

छिहत्तरवां अध्याय॥

राजा शाल्वका द्वारकामें युद्धकरना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षितजिसदिन राजाशाल्व जो शिशु
नकीबरातमें कुंडिनपुरजाकर श्याम व बलरामसेहारमानके
आयाथा उसीदिन उसनेयहप्रतिज्ञाकीथी कि मैंयदुबंशियोंका
संसारमें जीताछोड़ूंतोआजसे क्षत्रिय न कहलाऊं॥

दो० मारेउ जबशिशुपालको माखनप्रभुगोपाल। शाल्वनृपतिअतिदुखितभो सुनतमित्रकोकाल॥

शिशुपालकामारनासुनतेही राजाशाल्वनेबिचारकिया कि
बंशियोंको जोबड़ेबलिष्ठहैं बिनावरदानपाये किसीदेवताकोजीत
कठिनहै जबऐसाबिचारकर राजाशाल्व शिशुपालकाबदला
वास्तेतपव ध्यानमहादेवजीका सच्चेमनसेकरनेलगा व बर्षदिन
बरावर केवलमट्टीभररखसन्ध्यासमयखाकर रहा तब शिव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रसन्नहोकर अपनादर्शनउसेदिया औरकहा तुझे जोइच्छाहो सो
रदानमांग॥

दो॰ महामुदित करजोरिके बोल्यो शाल्वनरेश। शत्रुबैर म्वहिंदीजिये भोलानाथ महेश॥

हे महाप्रभुमुझे ऐसाबिमान आकाशमें उड़नेवालादेव जिसे
खकर यदुबंशीलोगडरजावें व कोई शस्त्रदेवता व दैत्यका भी
स बिमानपर न लगै यहबचनसुनतेही शिवजी ने मयनामदा
वकोबुलाकर कहा तू एकविमानबहुतबड़ा व चौड़ा राजा शाल्व
वास्ते ऐसाबनादेजिसमेंकोईशस्त्रनलगै व जहांचाहैवहांउड़ाता
आ क्षणभरमेंलेजावै जबमयदानवने महादेवजीकी आज्ञानुसा
एकबिमानअष्टधाती बहुतलम्बा व चौड़ा अपनीमायासेतय्यार
रदिया तबराजाशाल्व अपनेशूरबीर व सेनाकोशस्त्रसमेत उसबि
मानमेंबैठाकर द्वारकाकीओरगया उनदिनोंश्यामसुन्दर प्रद्युम्न
आदिककोयज्ञहोने उपरांतद्वारकामें भेजकर आपराजायुधिष्ठिर
प्रमसेबलरामसमेत इन्द्रप्रस्थमेंरहगयेथे जबउनकेपीछे राजाशा
वनेपहुंचकर द्वारकापुरीको चारोंओरसेघेरलिया व वहांकेवृक्ष व
स्थानोंको जड़सेउखाड़कर गिरानेलगा व उसकीमायासे द्वारकापु
रीमें प्रलयकालकीआंधीचलकर आगि व पत्थरवरसनेलगे तबद्वा
रकाबासियोंने घबराकर राजाउग्रसेनसे यहहालकहा राजानेप्रद्यु
म्न व शाम्बकोबुलाकर आज्ञादी श्याम व बलरामका न रहना सु
नकर राजाशाल्वहमलोगोंको दुःखदेनेआयाहै इसलिये तुमदोनों
जाइं हमारीसबसेनासाथलेकर उससेयुद्धकरो यहबचनसुनतेही ज
प्रद्युम्नजीने द्वारकाबासियोंकोधैर्यदिया और शाम्ब व सात्यकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व कृतबर्मादिकशूरबीर व बहुतसेना अपनेसाथलेकर नगरके
र लड़नेआये तबराजाशाल्वने प्रद्युम्नको देखकर ऐसेबाण
ये कि चारोंतरफ़घटारूपी अँधियारा छागया उससमय प्रद्यु
जैसे द्युतिवन्तशस्त्र अपनाछोड़ा वैसे अँधियारा छूटकर इसतर
जियाला होगया जिसतरहसूर्य निकलनेसे कुहिरानहीं रहजा
जबशाल्वकारथ सन्मुखआया तबप्रद्युम्नने एकतीरसे रथकी
जाकाटकर दूसरेबाणसे सारथीको मारडाला व तीसरेतीरसे
केघोड़ोंको मारकरपृथ्वीपर गिरादिया व बहुतशूरबीरउसके सा
योंको अपनेबाणसे घायलकरडाला जबराजाशाल्व ऐसीशूरत
प्रद्युम्नकी देखकरघबरागया तबसन्मुखलड़नेकी सामर्थ्य न
करमायायुद्ध करनेलगा कभीबड़ास्वरूप बनाकरसामने आता
कभीछोटा रूपबनकर आकाशसेआगि व पत्थरबरसाताथा ॥

दो० ऐसीविधि माया बहुत करी मूढ़ रणमाहिं । श्रीप्रद्युम्न प्रताप से दूरहोत क्षणमाहिं ॥

इधरतोशाल्वअपनेमायायुद्धसे यदुबंशियोंको दुःखदेरहाथा
रदेवमानउसके मंत्रीनेप्रद्युम्नपर बाणचलानाआरम्भकिया उ
मयकामरूपने अपनेतीरोंसेउसका बाणकाटकर एकतीरऐसा
केमारा कि देवमानअचेतहोगया जबथोड़ीदेरमें देवमानकाचि
ठिकानेहुआ तबउसनेक्रोधितहोकर एकगदाऐसेजोरसे प्रद्युम्न
शिरपरमारी किवहमूर्च्छाखाकर रथमेंगिरपड़े तबदेवमानचिल्ला
रबोला कि मैंनेकामरूपकोमारडाला जबयहबचनसुनकरसब
बंशीघबरागये तो धर्मपति रथवान्पुत्रदारुक सारथीनेकृष्णकु
को बहुतअचेतदेखा तबवहरथउनकारणभूमिसे अलगलेगया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थोड़ीदेरबीते प्रद्युम्न चैतन्यहुये तबउन्होंनेरथ अपनारणभूमिमें देखकर बड़ेक्रोधसे सारथीसेकहा तैंनेबहुतबुराकिया जो मुझेरण भूमिसे अलगलेआया ॥

चौ० ऐसो नहीं उचित है तोहिं। जानि अचेत भगायो मोहिं ॥
यदुकुलमें ऐसो नहिं कोई। खेत छोड़ि जो भागाहोई ॥

हेधर्मपति तैंनेमुझेकभीयुद्धसे भागतेदेखाथाजोआजरणभूमि भगाकर मेरेमाथपर कलंककातिलकलगाया अबमैंश्याम व ब रामको अपनामुँहक्या दिखलाऊँगा संसारीलोग मेरीहँसीकरके गाईलोगमुझेनपुंसककहैंगे व रुक्मिणीमाता मेरेउत्पन्नहोने का दुःखमानकर भौजाइयांमुझेलज्जितकरैंगी तैंनेयहकामकरके अ नेबापकानामधराया व जगतमेंमेरीहँसीकराई ॥

चौ० रणमें मरे परमपद पावै। जीत होय तौ शूर कहावै ॥
दो० रामकृष्ण सुनिहैं जबै पछितैहै मनमाहँ। कहिहैं प्रकट्यो प्रद्युमन महाकुपूतनमाहँ ॥

जबधर्मपतिने यहसबबातप्रद्युम्नकी सुनी तबरथसेउतर हाथजो ड़कर बिनयकी हे दीनदयालु आपसे कुछहालराजनीतिकाछिपा न होकर मेरेगुरुनेऐसाबतलायाहै कि जबमहारथी लड़तीसमयअ चेतहोजावे तबउसकेसारथीकोचाहिये कि रथउसकारणभूमिसेअ लगलेकरखड़ारक्खै व सारथीघायलहोजावै तोमहारथीको उसकी क्षाकरनाउचितहै इसलिये जबतुमगदालगनेसे अचेतहोगये तब मैंनेरथतुम्हारारणभूमिसे बिलगलाकर खड़ाकरदिया ॥

दो० गुरुकी आज्ञाजानकर मैं कीन्हों यहकाज। मोहिंदोषलागै नहीं यदुकुलके शिरताज ॥

हेमहाप्रभुदौड़ातीसमय रथमेरापीछेरहकर रस्सी या पहियाउस काटूटजाता तो मैंदोषीहोता बिनाअपराधसेवकपर क्रोधकरना न चाहिये थोड़ीदेरआरामकरचुके अबचलकर संग्रामकीजिये यहब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चनसुनकर प्रद्युम्नबोलेहेधर्मपतितुमनेतो अपनेगुरुकीआज्ञानु
यहकामकिया पर इसमेंमेरीनामधराईहुई इसलिये तुमसौंगंद
वकियहहालकिसीसे हमनहींकहैंगे जबधर्मपतिने सौगन्दखा
प्रद्युम्नकाशोचछुड़ाया तबउन्होंने हाथमुंहधोकर धनुर्बाणअप
उठालिया व रथअपनारणभूमिमें लिवालेगये ॥

सतत्तरवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी का द्वारकामें आना व राजा शाल्वको मारना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षितजोयदुबंशीप्रद्युम्नको अचेतदेख
उदासहोगयेथे वहलोगकामरूपका रथदेखतेही ऐसेआनन्दहो
जैसेमुर्देकेतनुमें प्राणआजावे उससमयकृष्णकुमारने अपनेसा
योंकोधैर्यदेकरधर्मपतिसेकहा तुमजल्दीरथ मेरादेवमानकेपास
हांवह यदुबंशियोंकोमाररहाहै लेचलो जबयहबातसुनकर सार
नेरथप्रद्युम्नका देवमानमंत्रीकेसन्मुख पहुंचादिया तबकृष्णकुम
ने उसेललकारकरकहा तू इधरउधरगरीबोंको क्यामारताहै हम
आनकरयुद्धकर यहबचनसुनतेही देवमानयदुबंशियोंसे लड़ना
ड़कर प्रद्युम्नपर बाणचलानेलगा तबकामरूपने चारतीरसे चा
घोड़े उसकेरथके मारकर एकबाणसे सारथीकोमारडाला व दो
रसेध्वजा व छत्र व एकबाणसे धनुषकाटकर तीनतीरसे देवमान
मारगिराया उससमयशाम्बभी इसतरहशाल्वकी सेनामारकर
रानेलगा जिसतरहकिसानलोगजुआरका खेतकाटडालते हैं
ऐसायुद्धप्रद्युम्न व शाम्बकादेखकर बहुतसाथी राजाशाल्वके
गचले तबअनेकमनुष्य भागतीसमय समुद्रमें डूबकरमरगये

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सीतरहसत्ताईसदिनबराबर राजाशाल्व प्रद्युम्नआदिकसेलड़तार
तबयदुबंशियोंने ऐसीसामर्थ्य व बीरताउसकीदेखकर आपसमें
हा यहकोईबड़ा शूरबीरहै जोइतनेदिनहमारेसामने युद्धमेंठहरा
हीं तो श्यामसुन्दरकीदयासे आजतककोई शूरबीरपांचदिन से
धिक हमारेसन्मुखनहींलड़ा हे परीक्षित जबइसीतरह राजाशा
वमायायुद्धकरके यदुबंशियोंको दुःखदेनेलगा तबइन्द्रप्रस्थमें
सुदेवनेक्यास्वप्नादेखा कि द्वारकापुरीको किसीनेजलाकर समुद्र
डुबादिया व यदुवंशीलोग रणभूमिमेंमरेपड़े हैं तबउन्होंने युधि
ष्ठिरसेकहा महाराजअशुभस्वप्ना देखनेसेमुझे ऐसामालूमहोताहै
किशिशुपालकेसाथी दैत्यद्वारकामेंयदुबंशियोंको मारकरनाशकि
याचाहतेहैं आज्ञादेव तोवहांजाकर उनकीरक्षाकरैंराजायुधिष्ठिरने
हाथजोड़कर बिनयकिया हे महाप्रभुमुझे आपका कहनाटालना
नहींहै यहबचनसुनतेही जबश्याम व बलरामरथपरबैठकर द्वारका
को चले तबनगरके बाहरआनकर क्यादेखा कि एकहरिणीबाईंओ
सेनिकलगई और कुत्तासन्मुखखड़ाहुआ शिरअपनाझाड़ता है
हदोनोंअशकुन देखतेही मुरलीमनोहर अन्तर्यामी सबदशाद्वा
काकीजानकर सारथीसेबोले रथजल्दीलेचलो॥

दो॰ दारुक रथहांक्यो तभी हरिकी आज्ञापाय। बाणरूप दूजेदिवसरणमें पहुंचे जाय॥

केशवमूर्त्तिनेयुद्ध राजाशाल्वकादेखकर बलदाऊजीसेकहा हे
भाईतुमद्वारकामेंजाकर राजाउग्रसेन व प्रजाकीरक्षाकरो मैंशाल्व
कोमारकर वहांआऊंगा जबरेवतीरमण यहआज्ञापाकर द्वारकाको
गये तबदैत्यसंहारणने दारुकसेकहा जल्दीमेरारथशाल्वकेसन्मुख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लेचल जैसेवहरथ मुरलीमनोहरकादौड़ाकर उसकेसामनेपहुं
वैसेराजाशाल्वने ध्वजारथबैकुण्ठनाथकी पहिंचानकर एक
दारुकरथवानपरचलाई तवलक्ष्मीपतिने तीरसेसांग उसकीका
र सोलहबाणऐसेमारे कि बिमानराजाशाल्वका कुम्हारकेचा
समानघूमनेलगा उससमयशाल्वने एकभालाबड़ेबेगसे श्या
न्दरपरचलाया तबद्वारकानाथ उसकोभी अपनेतीरसेकाटकर
तरहबाणमारनेलगे कि राजाशाल्वघबड़ागया पर उसनेफुरती
के ऐसाबाणश्यामसुन्दरकी बाईंभुजामेंमारा कि शार्ङ्गधनुपज
हाथसेगिरपड़ा जबउसकेगिरनेकाशब्द तीनोंलोकमेंपहुंचा त
वता व यदुबंशीलोगडरकर उदासहोगये व राजाशाल्वअज्ञा
अपनीजीतसमझकर चिल्लाकेकहा हे कृष्णचन्द्र तुमरुक्मिणी
जिसकीमँगनी शिशुपालमेरेमित्रसे हुईथी बरजोरीउठालेगये
राजायुधिष्ठिरकेयज्ञमें तुमनेशिशुपालको मारडाला दोघड़ीमें
न्मुखखड़ेरहकर भाग न जावोगे तोआज अपनेमित्रकाबदला
सेलूंगा मुझेभौमासुर व शकटासुरआदिकदैत्य जिनकोबल व
सेतुमनेमारडालाथा मतसमझना यहवचनसुनकर दैत्यसंहा
बोले हे शाल्वशूरबीर लोगअपनीबड़ाई आपनहींकरते संसार
पनायशगावनेवालेको कोईअच्छानहींकहता इसलिये जो
बलरखताहो सोदिखलाव जिसकीमृत्यु निकटपहुंचती है
भलीबुरीबातकहनेका कुछ बिचारनहींरहता जिसतरहशिशु
मारागया उसीतरहएकक्षणमें तेरीभी वहीदशाहोगी ऐसाकह
मुरलीमनोहरने एकगदाशाल्वकेशिरपरइसवेगसेमारीकिलोह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गिरकर अंगउसका कांपउठापस्वह अंतर्द्धानहोकर मायायुद्धकर
अग्निबर्षानेलगातबवसुदेवनन्दनने ऐसेबाणमारे किसबमायाछु
कर राजाशाल्वबिमानसमेत पृथ्वीपरगिरपड़ा जबफिरउठकर उस
एकगदा श्यामसुन्दरपरचलाई तबलक्ष्मीपतिने वहगदाकाटकर
कगदाउसको ऐसीमारी किवहअचेतहोगया जबथोड़ीदेरमें वहचै
न्यहुआ तबमन्त्रकेबलसे अपनेकोदूतबनाकर शिर व मुंहमेंधूरल
टपसीनाबहाताहुआ श्यामसुन्दरके सन्मुखआया व रुदनकरके
ला अयत्रिभुवनपति मुझेदेवकी तुम्हारीमातानेभेजकर कहाहै
राजाशाल्व बसुदेवतुम्हारेपिताको मारनेवास्तेपकड़लेगया तुम
नकीसुधि क्योंनहींलेते यहबचनदूतकासुनतेही एकक्षणमुरली
नोहरने शोचितहोकर फिरबिचारकिया कि बलरामजीकेसामने
जिनकोकोई देवताभी जीतनेनहींसक्ता राजाशाल्वबसुदेवकोकि
तरहपकड़लेगयाहोगा जिससमयकेशवमूर्त्ति इसीतरहकाशोच
विचाररहेथे उसीसमय राजाशाल्वमायारूपी बसुदेवबनाकर
नकेबालपकड़हुये श्रीकृष्णजीकेसन्मुखलेआयातबमायारूपीब
देवतड़फताहुआ श्यामसुन्दरसेबोला हेबेटाहमतुमकोउत्पन्न व
लन व रक्षाकरनेवालासंसारकाजानते हैं सोराजाशाल्व मुझे तु
हारेसामनेलाकर प्राणलेनाचाहताहै इसकेहाथसे जल्दीछुटाओ
हबड़ेलज्जाकीबातसमझनाचाहिये जो मैंतुम्हारेऐसाबेटा त्रिभु
नपतिरखकर इतनादुःखपाऊं जिससमयमायारूपी बसुदेवइसत
ह विलापकररहाथा उसीसमयशाल्वने ललकारकर फिरश्यामसु
रसेकहा देखोहमबसुदेवकोपकड़कर तुम्हारेसामनेमारते हैं तुम्हें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बलहो तोछुड़ालेव ऐसाकहनेउपरांत राजाशाल्वनेमायारूपी देवका शिरतलवारसेकाटकर बरछीकीनोकपरउठालिया व स गोंकोदिखलाकरबोला हेश्रीकृष्णातुमनेदेखा जिसतरह तुम्हार को मैंनेमारडाला उसीतरहयदुबंशियोंको मारकर समुद्रमेंडा गा यहहालदेखकर एकक्षणमुरलीमनोहरको मूर्च्छाआगईफि न्होंने ध्यानधरकरदेखा तोमालूमहुआ कि यहमायारूपी बसु बनाहै इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् जिससमय यारूपीदूतने आनकर देवकीकासंदेशाकहा व शाल्वनेमायारू बसुदेवका शिरकाटलिया उससमयलक्ष्मीपतिको कुछसंदेहहु था यहहालसुनकर ऋषीश्वर व ज्ञानीलोग ऐसाकहते हैं कि जि परमेश्वरका नामलेनेसे संदेहछूटकर मनशुद्धहोजाताहै उनके मोंमें संदेहकरना न चाहिये॥

चौ० जो प्रभुकेवल ब्रह्म कहावें। केहि कारण इतनो भ्रम पावें॥
जगमें मनुष देह धरि आये। तेहि कारण इतनो भ्रम पाये॥
दो० माखनप्रभु भगवानको कबहूं भ्रमकछुनाहिं। तद्यपियह लीलाकरी जानिलेहुमनमाहिं॥

जबकेशवमूर्त्तिनेसमझा कि शाल्वनेमायारूपी बसुदेवबना शिरकाटाहै तबपांचजन्यशंख बजाकर बड़ेक्रोधसेरथ अपनाउस पीछेदौड़ाया व एकगदाऐसीमारी कि बिमानराजाशाल्वका सौ कड़होकर समुद्रमेंगिरपड़ा उससमयशाल्वने बिमानपरसेकूदक एकगदा बसुदेवनन्दनपरचलाई सो दैत्यसंहारणने अपनीगदा उसकी गदातोड़डाली॥

चौ० सोई गदा बज्रसमभारी। केतिकबार शाल्वपरमारी॥
दो० वाको बलकहिये कहा युद्ध करे अतिघोर। श्रीमाखन प्रभुकीगदाक्षणमेंडारे तोर॥

जबडसीतरहदेरतकराजाशाल्व द्वारकानाथसे गदायुद्धकरता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बवृन्दाबनबिहारीने बाणसे भुजाउसकी काटकर गदासमेतगिरा
दिया व सुदर्शनचक्रमारकर इसतरह शिरउसकाकाटलिया जिस
रहइन्द्रने बृत्रासुरदैत्यकोमाराथा जबशाल्वकेधड़से एकज्योति
निकलकर वसुदेवनन्दनके मुखमेंसमागई तबदेवतोंनेमरनाराजा
शाल्वकादेखकर दुन्दुभीबजाई व दैत्यसंहारणपर फूलबर्षाकर
उनकीस्तुति करनेलगे॥

अठहत्तरवां अध्याय॥

राजादन्तवक्र व बिदूरथ दोनों भाइयोंका श्यामसुन्दरसे लड़नेवास्ते आवना॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जिसतरह दन्तबक्र व बिदूरथदो
नोंभाईशिशुपालके मारेगयेथे उनकाहालकहतेहैं सुनो जिसदिन
राजाशिशुपाल युधिष्ठिरके यज्ञमेंमारागया उसीदिनसे वहदोनों
कृष्णजीसे शिशुपाल अपनेभाईकाबदलालेनेवास्ते बिचारकिया
करतेथे जबउन्होंनेसुना कि राजाशाल्वहमारेभाईकामित्र द्वारका
मेंजाकरलड़रहाहै तबउनदोनोंनेभी बहुतसेना साथलेकर द्वारका
पुरीपर लड़नेवास्तेचढ़ाईकी॥

दो॰ गजरथ पैदल तुरँगकी सेनलिये निजसाथ। चलेद्वारकाओरको सबअसुरनके नाथ॥

श्यामसुन्दर राजाशिशुपालको मारकर अभीतकद्वारकापुरी
नहींपहुँचेथे कि उसीसमय दन्तबक्र व बिदूरथ दोनोंभाइयोंनेअ
पनीसेनासमेत वहांपहुंचकर मुरलीमनोहरको घेरलिया जबउन्हें
देखकर सबयदुबंशीघबड़ागये तबदन्तबक्र बासुदेवके सन्मुखजा
करअभिमानसेबोला तुमनेमेरेभाई व मित्रकोमारा इसलियेआज
तुमको यदुबंशियोंसमेत यमपुरीभेजकर उनकाबदलालूंगा पहि
ले तुम अपनाशस्त्र मेरेऊपरचलालेव पीछेहमतमकोमारैंगे जिसमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमको यहअभिलाषानरहजावे कि हमने दन्तवक्रपर शस्त्रनहीं लाया तुमनेबड़े २ शूरबीरयुद्धमेंमारेहैं परआजमेरेहाथसे जीते करतुमकोअपनेघरजाना बहुतकठिनहै॥

चौ० कहत सुनो मोहन गोपाला। धनि भ्रातामेरो शिशुपाला॥
जेहिके बैर काज ह्यां आयों। दर्शन महाराजको पायों॥
जाको दरश तुम्हारो होई। भवसागर से उतरत सोई॥
अबमोको चिन्ता कछुनाहीं। दुहूं भांति निर्भयमनमाहीं॥
जो मैं मरों तुम्हारे हाथा। होइहौं स्वर्ग लोकको नाथा॥

दो० और जो तुमको मारकर जियतरहौं जगमाहिं। तौराजनको राजहौं यामें संशय नाहिं॥

जबइसीतरह अनेकबातेंकहकर दन्तवक्रने एकगदाश्रीकृष्ण चलाई तबदैत्यसंहारण अपनीगदासे उनकीगदागिराकरबोलेहे न्तवक्र जितनाबलतेरेअङ्गमेंथा वहसबतैंनेगदाचलाकर पूराकि अबचैतन्यहो हमारीपारीहै यहकहकर द्वारकानाथनेकौमोदकी मगदा अपनीइसवेगसे दन्तवक्रकी छातीपरमारी कि वहरक्तवम करके उसीक्षणमरगया॥

दो० प्राणज्योति वाकीनिकस चढ़ीस्वर्गकीछाहँ। फेरसमानी आनकर माखनप्रभु मुखमाहँ॥

यहदशादेखकर बिदूरथभाई दन्तवक्रकाढाल तलवारलिये मुरलीमनोहरके सन्मुखआया तबलक्ष्मीपतिने उसकाशिर सु नचक्रसेकाटकर मुकुट व कुण्डलसमेत पृथ्वीपरगिरादिया जब दोनोंकेमरतेही सबसेनाउनकी भागगई तबतीनोंलोकमें हर्षहो देवतोंने श्यामसुन्दरपरफूलबर्षाये व दुन्दुभीबजाकरसबदेवता ऋषीश्वर स्तुतिकरकेबोले हे दीनानाथ तुम्हारीलील। अपर होकर कोईउसकाभेद जाननेनहींसक्ता जयविजय आपकेढा लक सनकादिकके शापदेनेसे प्रथमहिरण्याक्ष हिरण्यकशि दूसरीबेर रावण व कुम्भकर्ण व तीसरेजन्म शिशुपाल व दन्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ये वे शत्रुतावश तुम्हाराभजन व स्मरणाकरतेथे आपनेउनकाउ
ारकरनेवास्ते तीनबेर सगुणअवतारधारणकिया व अपनेहाथसे
नकोमारकर फिरबैकुण्ठमेंभेजदिया ऐसादीनदयालु व अपनेभ
कीरक्षाकरनेवाला दूसराकौनहोगा जबसबदेवता यहस्तुतिकह
र श्यामसुन्दरकीदण्डवत्करके अपने २ लोकमेंचलेगये तबवृ
दावनबिहारी भक्तहितकारीने जैसेघायल व मरेहुये यदुबंशियों
ो अमृतरूपीदृष्टिसेदेखा वैसेमरेहुयेजीकर घायललोग अच्छे
गये जबयहमहिमा बैकुण्ठनाथकीदेखकर सबछोटेबड़े उनकाय
गानेलगे तबलक्ष्मीपतिसबयदुबंशियोंकोसाथलेकर आनन्दपूर्व
दुन्दुभीबजातेहुये द्वारकाआये व राजाशाल्वआदिककी जोबस्तु
टलायेथे वहसबउग्रसेनकोदी उनकोदेखतेही सबछोटेबड़ोंने प्रस
होकर अपने २घरमंगलाचारमनाया वबैकुण्ठनाथकीआज्ञासे
श्वकर्मानेजोस्थानदैत्योंने तोड़डालेथे क्षणभरमेंज्योंकेत्योंबना
ये व श्रीकृष्णजीने उसीदिनयुद्धकरनाछोड़कर यहप्रतिज्ञाकी कि
बशस्त्रधारणनकरूंगा इतनीकथासुनाकरशुकदेवजीबोले हेपरी
त जबकुछदिनबीते राजायुधिष्ठिर आदिकपाण्डवों व दुर्योधन
ादिक कौरवोंसेमहाभारतकी तैयारीहुई तबश्यामसुन्दर राजाउ
सनसे यहसमाचार कहकरबलरामजीसेबोले हेभाईइसमहाभार
में मुझेक्याकरनाचाहिये यहबातसुनकर बलदाऊजीने मनमेंबि
रा कि मुरलीमनोहर पाण्डवोंकीइच्छा पूर्णकरनेवास्ते महाभा
करायाचाहतेहैं मैंवहांरहकर दुर्योधनअपनेचेलेकी सहायताक
रूंगा तोकेशवमूर्त्ति खेदमानेंगे व श्यामसुन्दरकी आज्ञापालनकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने में दुर्योधन बुरामानैगा इसलियेहस्तिनापुर न जाकर तीर्थय
करनेचलाजाताहूं आगेजोइच्छा बैकुण्ठनाथकीहोगी वैसाक
यहबात बिचारकर रेवतीरमणने श्रीकृष्णजीसेविनयकिया हे
प्रभु आपहस्तिनापुरमेंजाकर जैसाउचितहो वैसाकीजिये मैंभी
र्थयात्राकरताहुआ वहांआनकरपहुंचूंगा यहबचनसुनकर केश
र्त्तिने महाभारतकरानेकी इच्छासे बलदाऊजीको बर्जनाउचित
हींजाना जबबसुदेवनन्दनकुरुक्षेत्रमें जहांअठारहअक्षौहिणी
महाभारतकरनेवास्ते इकट्ठाहुआथागये तबबलदाऊजीभी प्रभ
क्षेत्र व सरस्वती व गंगा व यमुनाआदिक बहुततीर्थोंपर स्नान व
न व यात्राकरतेहुये नीमषारमिश्रिखमें पहुंचे वहांपर उन्होंने
देखा कि एकस्थानपर बहुतसेऋषीश्वर व मुनिइकट्ठेहोकरयज्ञ
तेहैं व दूसरीजगह रोमहर्षण सूतपौराणिक चेलावेदव्यासजी
सिंहासनपरबैठाहुआ शौनकादिक ऋषीश्वरोंकोकथासुनाता
लदाऊजीकोदेखतेही शौनकादिक सबऋषीश्वर सन्मानकर
स्तेउठखड़ेहुये पररोमहर्षण विद्याकेअभिमानसे नहींउठा तब
तीरमणक्रोधितहोकर बोले इसमूर्खको किसनेव्यासगद्दीदीहै
कथावांचनेवास्ते ऐसाज्ञानी व हरिभक्तचाहिये जिसकोलोभ
हंकारनहो आपऋषीश्वरलोग देखतेहैं यहपौराणिक विद्यापढ़
रभी शास्त्रानुसार नचलकर अभिमानकेमदमें अन्धाहोरहाहै
सतरह कलियुगकेब्राह्मण दूसरोंकोउपदेशदेकर आपमर्यादपू
नहींचलते उसीतरहयहकाम क्रोध मोहलोभकेबशहोकर छोटे
कोनहीं पहिंचानता व हमाराअवतार केवलअधर्मी व कुचालि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुमारनेवास्तेहुआहै इसलिये जोकोईहमारेसामने कुमार्गचलैउस
काअपराधहमक्षमा नहींकरसक्के ऐसाकहनेउपरांत शेषावतारने ए
कुशामंत्रपढ़करक्रोधसेसूतकी तरफफेंकातोवहकुशालगतेही शि
रोमहर्षणाका कटकरगिरपड़ा यहहालदेखतेही शौनकादिकऋषी
श्वरोंनेचिल्लाकर बलभद्रजीसेकहा महाराजयहसूत हरिचरित्रसु
नाकर अपने व सुननेवालोंको कृतार्थकरताथा उसेव्यासगद्दीपरबैठे
हुये तुमनेमारडाला सोअच्छानहींकिया हमलोगजानतेहैं कि आ
पने अपनीइच्छासे अवतारलियाहै परइसकोजोवैश्य व ब्राह्मणसे
उत्पन्नहोकर हमारीआज्ञानुसार व्यासगद्दीपरबैठाथा तुमनेजोमा
राइसलिये तुमकोब्रह्महत्यालगी अबतुमको प्रायश्चित्तकरनाचा
हिये कदाचित् तुम ऐसानहींकरोगे तो दूसराकोईब्रह्महत्यासे किस
वास्तेडरेगा वेद व शास्त्रमेंजोआदिपुरुषकाश्वासाहै ब्राह्मणोंकोअ
तिउत्तमलिखतेहैं देखोजबश्यामसुन्दर तुम्हारेछोटेभाई परब्रह्मपर
मेश्वरको भृगुऋषीश्वरने बिनाअपराधलातमारीथी तबउन्होंनेपां
व ऋषीश्वरकाहाथसे दबाकरकहाथा कि मेरेकठोरहृदयसे आपके
कोमलचरणोंपर चोटनलगीहो इससेब्राह्मणोंकी पदवीसमझना
चाहिये यहज्ञानरूपीबचनसुनकर क्रोधबलरामजी का शांतहुआ
तबउन्होंनेऋषीश्वरोंसेकहा महाराजआंपलोग सच्चकहतेहैं मुझसे
अपराधहुआ जोमैंनेक्रोधबश ब्राह्मणकोमारडाला आपकोई प्राय
श्चित्तइसकाबतलाइये जिसमें हमारा शरीरशुद्धहोजावै व कोईपु
त्रइससूतकाहो तो बुलावो उसेहमव्यासगद्दीपर बैठालदेवें॥

दो॰ हमहं को दूषण लगे जो कछु करैं अनीति। औरनकी कहियेकहा कठिन कर्मकीरीति॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहसुनकर ऋषीश्वरबोले तीर्थोंकेस्नानकरनेसे तुम्हारापाप जावेगा जबशौनकादिकने उग्रशर्माबेटा रोमहर्षणका वहांबुला जा तबशेषावतारनेउग्रशर्माको उसकेबापकीजगह व्यासगद्दीप ठाकर ऐसावरदानदिया कि तुझेबिनापढ़े सबविद्यायादहोजावें सेयहबचन रेवतीरमणकेमुखसेनिकला वैसेसूतपुत्रकोछहोंशास्त्र अठारहोंपुराण बिनापढ़कंठहोगये तबवहव्यासगद्दीपरबैठकरक बांचनेलगा यहमहिमाबलरामजीकीदेखतेही सबऋषीश्वरप्रस होकरबोले महाराजतुम्हारीदयासे सूतके मरनेकाशोचतोछूटा बिल्वलदैत्यबांदररूपसे पूर्णमासी व अमावास्या व द्वादशीको नकरहमारेयज्ञ व होममेंपीब व रक्त व हड्डीफेंकदेताहैइसलिये लोगबड़ादुःखपातेहैं आपतीर्थबासियों परदयालुहोकर उसबां को मारडालियेतो हमलोगनिर्भयहोकरयज्ञ व होमकियाकरें वचनसुनकर बलरामजीबोले बहुतअच्छाहमउसबांदरको मार तुम्हारादुःख छुड़ावेंगे॥

उन्नासीवां अध्याय॥

बलरामजीका बांदररूप बिल्वल दैत्यको मारना॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षितरेवतीरमण ऋषीश्वरोंकेकहनेसे ल्वलदैत्यको मारनेवास्तें कईदिनतक नीमषार मिश्रिखमेंटिके तबपूर्णमासीकेदिन बड़ीआंधीचलकर पानी व रक्त व पीबबरसा लगा उससमयऋषीश्वरोंने बलरामजीसेकहामहाराजयहसबल णाउसबांदरकेआवनेकेहैं यहबचनसुनकर बलदाऊजीने हलबस ल अपनेशस्त्रकोयादकिया वैसेवहदोनों उनकेपासआनपहुँचे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहबांदररूपीदैत्य श्यामरंगपहाड़ऐसालम्बा व चौड़ा बड़े २ दांत व लाल २ आंखैं निकाले डरावनीसूरतबनाये त्रिशूललिये बादल कसमान गर्जताहुआ वहांआया तबबलदाऊजी अपनाहल व मूस नउठाकर उसकीतरफचले ॥

दो० उनहूं रामहिंदेखिकै जानिलियोमनमाहिं। इनसमानयोधाबली तिहूंलोक में नाहिं ॥

जबउसबांदरने बलरामजीको अपनेसेबलवान्देखा तबवहमंत्र कबलसे अंतर्द्धानहोकर मल व मूत्रबरसानेलगा यहदशादेखतेही रेवतीरमणने उसबांदरको हलकीनोकसेउठाकर पृथ्वीपरपटकदि या व एकमूसलऐसा उसकेशिरपरमारा कि प्राणउसकानिकलग या उसदैत्यकामरना देखकर सबऋषीश्वर इसतरहप्रसन्नहोगये जिसतरह बृत्रासुरदैत्यकेमरनेसे देवताआनंदितहुयेथे व उसीसम य ऋषीश्वरोंने रेवतीरमणको आशीर्वाददेकर ऐसीसुगन्धित पुष्पों कीमालागलेमेंपहिनादी जिसकाफूलकभी न कुम्हिलावे व देवतों नेबलदाऊजीपर फूलबर्षाकर दुन्दुभीबजाई ॥

दो० तहँलाये सबदेवता भूषण बसन बनाय। पहिराये बलरामको शोभाकही न जाय ॥

जबऋषीश्वरोंने दैत्यके मारेजानेसे निर्भय होकर बलदाऊजी को बिदाकिया तबरेवतीरमण गढ़मुक्तेश्वर व गोमतीगण्डक व गं गा व व्यासा व कौशिकी व सरयू व पुलहाश्रम व शोणभद्र व प्रया ग व काशी आदिकतीर्थोंमेंगये औरवहांपरस्नान व दानकिया फि रवहांसेगयाजी व गंगासागर व गोदावरी व भागीरथी व सिंहलद्वी प व भीमरथी व सेतुबन्धरामेश्वर व बिंध्यक्षेत्र व श्रीशैलआदिक तीर्थोंमेंजाकर स्नानकरके दश २ हजारगौ बिधिपूर्वक ब्राह्मणोंको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दानदिया फिरवहांसे स्वामिकार्तिक व अगस्त्यमुनि व परशुरा
जी व अर्जुनबालाका दर्शनकरते व राहमेंसबलोगोंको सुखदेतहु
बर्षवेंदिन पृथ्वीकी परिक्रमाकरके हरद्वारमें आये॥

दो० तहांसुनी बलरामजूलोगनसे यहबात। पाण्डुसुतन अरु कौरवन युद्धहोत दिनरात॥

यहहालसुनतेही रेवतीरमण कुरुक्षेत्रकोचले और जिससम
राजादुर्योधन व भीमसेन महाभारतके अठारहवेंदिन आपसमें
दायुद्ध कररहेथे उसीसमय वहांपहुँचे जबउनकोदेखकर युधिष्ठि
आदिपांचोंभाई व दुर्योधनने दण्डवत्किया तबबलदाऊजी उ
लोगोंको आशीर्बाददेकरबोले बड़ेशोचकीबातहै कि श्यामसुन्द
त्रिभुवनपतिके रहनेपरभी कौरवों व पाण्डवोंने रजोगुण व तम
गुणकेबशहोकर अपनेभाईबन्धुआदिक लाखोंमनुष्योंका नाश
किया व भीमसेन व दुर्योधन दोनोंमनुष्यबलमें बराबरहैं परभी
सेनकाश्वासा लड़तीसमय नहींफूलता व दुर्योधनउससे गदायु
अच्छाजानताहै यहदशा उनकीदेखकर बलदाऊजीने भीमसेन
दुर्योधनसे कहा तुमलोग लड़नाछोड़देव जिसमें तुम्हारा बंश
देखोमहाभारतकरनेमें इतनाकुलपरिवार तुम्हारामारागया
परभीतुमकोअपनाभला व बुरानहींसूझपड़तायहवचनसुनतेही
मेश्वरकीइच्छानुसार दोनोंवीरोंने बलदाऊजीसे हाथजोड़करवि
यकिया महाराजअबरणपर चढ़कर हमलोगोंसेउतरानहींजाता

दो० यद्यपि बरजैं रामजू युद्धकरो मतिकोय। तद्यपि उनमान्यो नहीं भावी परबलहोय॥

जबरेवतीरमणके समझानेपरभी उनदोनोंनेलड़नानहींछो
तबबलदाऊजी इच्छाबैकुण्ठनाथकी इसीतरहसमझकर चुपहो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसीसमयभीमसेनने एकगदा दुर्योधनकीजंघामेंऐसीमारी कि
जंघा उसकीटूटगई और वहपृथ्वीपरगिरपड़ा तबदुर्योधननेबलराम
जीसेरोकरकहा हेमहाप्रभुआपमेरेगुरूहैं मैंतुमसेझूंठनहींकहता इ
समहाभारतमें सबमनुष्य श्रीकृष्णातुम्हारेभाईकेसम्मतसे मारेगये
पाण्डवलोग उन्हींकेबलसेलड़तेहैं नहींतो उनकोक्यासामर्थ्यथी
जोकौरवोंसेलड़ते युधिष्ठिरआदिक पांचोभाई इसतरहश्यामसुंदर
केवशहोरहेहैं जिसतरह काठकीपुतलीको नटअपनेआधीनरखकर
जिधरचाहै उधरनचावै द्वारकानाथको ऐसाउचितनहींथा जोपांड
वोंकीसहायताकरकेहमारेसाथशत्रुताईकरैं देखो भीमसेननेदुश्शा
सनकी भुजाउखाड़कर उसेमारडाला व हमलोगोंकेसन्मुखउसका
रुधिरपिया व अधर्मकीराह मेरीजंघामेंगदामारकर मुझेपृथ्वीपरगिरा
दिया और मैं इससेअधिक पाण्डवोंकेअधर्मकाहाल आपसेकहांत
कवर्णनकरूं जोकुछमेरेभाग्यमेंलिखाथा सोहुआ जिसतरहइसम
हादुःखमें आपनेदयालुहोकर दर्शनदिया उसीतरहमेरेवास्ते जो
उचितहो सोकीजिये जबयहआधीन बचनदुर्योधनसे बलदाऊजी
नसुना तबश्रीकृष्णजीकेपासजाकर बोले हे भाईतुमने यहकैसीअ
नीमायाफैलाई जोइतनेमनुष्य महाभारतमें तुम्हारेसामनेमारे
गये व दुश्शासनकी भुजाउखड़वाकरदुर्योधनकीजंघातोड़वाई यह
धर्मयुद्धकीबातनहींहै कि कोईबलवान् मनुष्यकिसीकीभुजा उखा
ड़कर कमरकेनीचेगदाचलावे धर्मयुद्धमें एक २ मनुष्यअपनेबराब
रवालेको ललकारकरलड़तेहैंयहसुनकर वसुदेवनन्दनबोले हेभाई
तुमनहींजानते कौरवलोग बड़ेअधर्मी व पापी हैं उनकाहालकुछ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहानहींजातादेखोपहिलेदुर्योधननेदुश्शासन व शकुनीकेकह
कपटजुआखेलकरसबदेश व धनयुधिष्ठिर आदिककाजीतालिय
उनकोतेरहवर्षबनबासदिया फिरदुश्शासनने शिरकेबालपकड़
द्रौपदीको राजसभामेंलाकर नंगीकरनेचाहा जिससमयदुर्योध
द्रौपदी ऐसीपतिव्रताको अपनीजंघापर बैठानेवास्तेकहा उसी
य भीमसेनने सौगन्दखाकर यहप्रतिज्ञाकीथी कि दुश्शासनकी
जाउखाड़कर दुर्योधनकीजंघा अपनेगदासेतोड़ूंगा वहीप्रण भी
सेनने अपनापूराकिया सिवायइसके और जो २ अधर्म व पापक
वोंने युधिष्ठिरआदिकसे किये हैं उसकाहालकहांतक तुमसे कहूं
हमहाभारतकी आगजो प्रज्वलित होरही है किसीतरह बुझनेन
सक्ती तुमइसबातका कुछशोचमतकरो जबबलदाऊजीने यह
न मुरलीमनोहरके मुखसेसुना तब इच्छाउनकी इसीतरहपर
नकरकुरुक्षेत्रसे द्वारकापुरीमेंचलेआये और वहांसेरेवतीअपनी
व कईयदुवंशियोंको साथलेकर फिरनीमषारमिश्रिखमें इसइच्
सेगये जिसमेंब्रह्महत्याकापापजोतीर्थस्नानकरनेसे छूटगयाथा
ऋषीश्वरोंको दिखलाआवें जैसेशौनकादिक ऋषीश्वरोंने बल
ऊजीकोदेखा वैसेअतिप्रसन्नतासे आशिषदेकरकहा अबतुम्ह
ब्रह्महत्याछूटगई जबयहवचन बलदाऊजीनेसुना तबबड़ेहर्षसंय
स्नान व दानवयज्ञादिक शुभकर्मकिया व ऋषीश्वरोंको ज्ञान
देशदेकर यदुवंशियोंसमेत द्वारकापुरीमेंचलेआये व अपने जा
भाइयोंका सन्मानकिया॥

दो॰ रामकथा पावनसदा कहै सुनै जो कोय। ताको श्रीभगवान सों प्रेमप्रीति अतिहोय॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अस्सीवां अध्याय॥

सुदामा ब्राह्मणकी कथा॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर शुकदेवजीसेविनयकीमहा
राजआपसमझतेहोंगे कि परमेश्वरकीकथा व लीलासुनकर इसेस
तोषहुआहोगा सो मेरामन अभीतक हरिकथासुननेसे नहींभरा
सत्संगविनाभाग्यके नहींमिलता इससेमैंजानताहूं कि मेरेपिछले
जन्मका पुण्यसहायहुआ जो मैंनेअन्तसमय गंगाकिनारे आन
कर तुम्हारादर्शनपाया जिसजगहपरमेश्वरकी कथाहोकरसत्संग
होताहै वहांपरदेवता स्वर्गसेआतेहैं देखो जो नारदमुनि दिनरात
फिरतेरहकर कहींनहींठहरते वहभीसत्संगमें आनकरबैठतेहैं हमा
रेपितरोंने अपनेकर्मानुसार बैकुण्ठसेभी उत्तमस्थानपायाहोगा प
रन्तुम्हारेमुखारबिंदसे जोमैंने श्रीमद्भागवतसुनाहै इसलियेहमारेपि
तरलोग उत्तमसेभी उत्तमस्थान रहनेवास्तेपावेंगे जिसमनुष्यकेमु
खसे परमेश्वरकानाम नहींनिकलता उसकोपशुसेभी निषिद्धसम
झनाचाहिये जोकानसेस्तुति व कथाभगवान्कीनहींसुनता वहका
नसर्प व बिच्छूकेबिलसमानहै जोशिरहरिमन्दिर व देवस्थानपर
झुकाता व ब्राह्मणकेसन्मुखदण्डवत् नहींकरता वहमस्तकअंगपर बो
झकेसमान समझनाउचितहै जोआंखदर्शन श्यामसुन्दरकाप्रकट
ध्यानमेंनहींकरती वहआंख मोरपंखकेसमान समझनाचाहिये
गृहस्थ प्रेमबैकुण्ठनाथकारखकर अपनेवर्णकाधर्मकरते हैं उन
योगी व संन्यासी व परमहंसोंसे उत्तमजाननाचाहिये इसलिये
मनुष्यको उचितहै कि मनुष्यतनुपाकर हरिभजन व सत्संगमें ज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्मअपनाबितावै हे शुकदेवस्वामी तुम्हारेऊपर भगवान्कीबड़ी
पाहै इसलियेचाहताहूं कि मुझेकुछ और हरिचरित्रसुनाइये शुक
वजीबोले हे राजन्तेरीबुद्धिधन्यहै जोतुमहरिकथासुननेसे ऐसी
तिरखतेहो॥

दो० जो याविधि चितदेसुनै हरिकीकथा पुरान। कृपाकरतहैं ताहिपर माखनप्रभु भगवान॥

हेपरीक्षित अबहमकथा सुदामाब्राह्मण जिसकादरिद्रश्याम
न्दरनेछुड़ाया व उसेकुबेरदेवताकेसमान द्रव्य व इन्द्रकाऐसा सु
दियाथा कहतेहैंसुनोदक्षिणादिशाद्राविड़देशमें विदर्भनाम एक
रथावहांकेराजा व प्रजाअपनेकर्म व धर्म्मसेरहकरसाधु व ब्राह्मण
सेवाकियाकरतेथे उसीनगरमें सुदामाब्राह्मणवेद व शास्त्रकापढ़
आगुरुभाई श्रीकृष्णजीकारहकर इसगरीवीसे अपनाजन्मकाट
था कि उसेतनुभरकपड़ा व पेटभरभोजन नहींमिलकर कभीउ
सहोजातेथे तिसपरभी वहमनअपनाबिरक्तरखकर आठोंपहरम
रहताथा व सुशीलाउसकीस्त्रीभोजन व वस्त्रकादुःखपानेपरभी
पूर्वक अपनेपतिकीसेवाकरतीथी और वहदोनोंस्त्रीपुरुषसंसारी
स्वप्नवत् समझकरदिनरात स्मरण व ध्यानपरमेश्वरकाकिया
तेथे व बिनामांगे जो कुछ मिलताथा उसेखाकरप्रसन्नरहतेथे
बेरऐसासंयोगहुआ कि सुदामाब्राह्मणको स्त्री व चारोंबेटोंसमेत
उपासबीतगये जबतीसरेदिन दोबालकभूखसे अतिव्याकुलहो
रोनेलगे व सुशीलासे बेटोंकाकल्पनादेखानहींगया तबउसनेउ
व कांपतीहुई अपनेस्वामीसे हाथजोड़कर विनयकी महाराज
सुनाहै कि श्रीकृष्णजी लक्ष्मीपतितम्हारेमित्र व गुरुभाईहैं व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने केवल ब्राह्मणोंकीरक्षाकरने व हरिभक्तोंका दुःखछुड़ानेवास्ते अवतारलियाहै आपउनकेपास क्योंनहींजाते जिसमेंतुम्हारादुःख वदरिद्रछूटजावै तुमकोगृहस्थब्राह्मणसमझकर वहइतनाद्रव्यदेवैंगे कि फिरतुम्हैंकुछसंसारीइच्छा न रहैगी यहसुनकर सुदामानेकहा अयप्रिया तेराज्ञानकहांजातारहा जो तुझेइतनीतृष्णाउत्पन्नहुई ब्राह्मणोंको लालचकरनाअच्छा न होकर तृष्णारखनेमें ब्रह्मतेज नहींरहता जिसतरह तीनपनहमारेबीतगये उसीतरहचौथापनभी परमेश्वरकीदयासे बीतजायगा इससमयलालचरखकर वहांजाऊं कहींरास्तेमें बुढ़ाईसेगिरपरूं तो संसारीलोगकहैंगे कि सुदामानेबुढ़वतीसमय लालचबशहोकर अपनाहाथपैरतोड़ा यहबातसुनकर सुशीलाबोली हे महाप्रभु मैं आपकोलालचकीराह वहांजानेवास्ते सम्मत न देकर इसलियेकहतीहूं कि महात्मा व बड़ेलोगोंकादर्शन करनेसे सबदुःखछूटकर सुखप्राप्तहोताहै श्यामसुन्दरत्रिभुवनपति ब्राह्मणोंपर बड़ीदयारखते हैं वहांजानेसे तुमकोसिवायसुखके कुछ दुःखप्राप्त न होगा॥

दो॰ तेहिकारण बिनतीकरत चितदे सुनियेकन्त। उनपैक्योंनहिंजातहो जिनकी कृपाअनन्त॥

यहसुनकर सुदामानेकहा हे प्राणप्यारीसच्चहै मैं श्रीकृष्णजीसे मित्रता व जानपहिंचानरखकर अपनेको उनकासेवकसमझताहूं जब मैं उनकेपासभेंटकरने जाऊंगा तबवहमुझेकंगालजानकर द्र व्यादिक संसारीसुखभोगने वास्तेदेवैंगे इसलिये मेरेनिकट उनत्रि भुवनपतिसे जोअर्थ धर्मकाममोक्ष चारोंपदार्थोंकेदेनेवालेहैं द्रव्या दिक जोसदास्थिरनहींरहता लेनाउचितनहींहै किसवास्ते कि जब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनकीदयासे मुझेधनमिलैगा तबहमसेध्यान व स्मरण उनका
सा गरीबीमें बनपड़ताहै वैसाद्रव्यपाने से नहींहोसकेगा व संसा
सुखमेंलपटजानेसे परलोककाशोच भूलजायगा मैंनेपूर्वजन्मी
सीको कुछदानदियाहोतातो इसजन्ममें मुझेमिलताबिनादियेके
ईनहींपाता इसबातमेंतुममुझे कुछदुःखमतदेव हमारे दिनबहुत
च्छेबीततेहैं यहसुनकर जबसुशीलाने जाना कि मेरेस्वामीसंसा
सुखस्वप्नवत् समझकर कुछइच्छा नहींरखते तबफिर हाथजोड़क
बोली हेमहाप्रभु मैंकुछधनकीइच्छा न रखकरइसकारण कहती
कि उनपरब्रह्म परमेश्वरका दर्शनकरनेसे तुम्हारीमुक्तिहोगी यह
नकर सुदामाबोले अयप्राणप्यारी गुरू व महात्माकेयहां बिनाकु
भेंटलियेजाना उचितनहींहै और मैंऐसीसामर्थ्य नहींरखता जो
छवस्तुउनकेवास्ते लेजाऊं यहबातसुनतेही सुशीलाप्रसन्नहोक
चारमूठीचावल अपनेचार परोसियोंसे मांगलेआई व पुरानीधोत
केलत्तेमेंबांधकर अपनेस्वामीको देकेकहामहाराज हमकंगालोंके
थोड़ीसीभेंट त्रिभुवनपति बड़ीप्रसन्नतासेलेवैंगे जबसुदामाने चा
लभेंटदेनेवास्ते पाया तबवहपोटली कांखमेंदबाकर लोटाडोरीक
धेपरधरली व गणेशजीको मनाकरलाठीलियेराहमें यहबिचार
रताद्वारकाकोचला देखो मेरेभाग्यमें द्रव्यमिलना तो नहींलिख
है परकृष्णचंद्र आनन्दकन्दका दर्शनपाकर अपनाजन्म स्वा
करूंगा परंतु एकबातकी चिन्तामुझे है कि श्यामसुन्दरत्रिभुव
पति सोलहहजार एकसौआठ महल में रानियों के पासरहत
जहांपर बड़े २ राजों का पहुंचनाकठिन है वहांमुझकंगाल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यको कौनजानेदेगा व मेरीखबरउनको किसतरह पहुंचैगी ॥

दो॰ यहमनमें शोचतचल्यो मैंतो दीन अनाथ। कैसेम्वहिं पहिंचानिहैं वह त्रिभुवनके नाथ॥

अबमैंलज्जाबश अपनेघरभी फिरजानेनहींसक्ता देखोवड़ेशो कीबातहै जोअपनीझोपड़ीको जिसमेंभीखमांगकर आनन्दपूर्व दिनकाटताथा हाथसेखोई व श्यामसुन्दरकेपासपहुंचनाभीकठि दिखलाई देताहै जबसुदामाब्राह्मण इसीतरह शोचबिचारकरता आ तीनपहरमें द्वारकापुरीकेनिकटपहुंचा तबउसनेक्यादेखा कि ारोंओर उसपुरीके समुद्रलहरमारकर उत्तम २ रत्नजटित स्थानब हैं वसबछोटेबड़ोंकेघरमंगलाचार व हरिचर्चाहोरहीहै जबसुदामा ाह्मणयहसबआनन्द देखताहुआ श्यामसुन्दरकीडेवढ़ीपरपहुंचा इसभयसे कि मुझको कोईभीतरजानेसेरोक न देवेबारम्बारपीछे खताहुआ आगेकोचला वृन्दाबनबिहारीकी आज्ञानुसार ब्राह्म ोंको किसीसमयमहलमेंजानेवास्तेमनहाईनहींथी इसलिये कि द्वारपालकने उसकोभीतरजानेसे नहींबर्जा जबसुदामाब्राह्मण नडेवढ़ीनांघकर चौथेद्वारेपर जहांद्वारकानाथ जड़ाऊसिंहासन बैठेहुये रुक्मिणीकेसाथ चौपड़खेलतेथेपहुंचा तबद्वारपालकने सकाहालपूंछनेउपरांत मुरलीमनोहरकेपासजाकर विनयकी॥

॰ शीश पगा न झँगा तनुमें नहिं जानिको आहि बसै केहिग्रामा। धोती फटीसी लटीदुपटी अरु उपानह और न सामा। द्वारखड़ो द्विज दुर्बलदेखि रह्यो चकिसो बसुधा अभिरामा। पूंछत दीनदयालु धाम बतावत आपनो नाम सुदामा॥

यहवचनसुनतेही केशवमूर्त्ति चौपड़खेलनाछोड़कर सिंहासनसे तरपड़े व आंखोंमेंआंशूभरकर मिलनेवास्तेदौड़े जबसुदामाने ीहरिचन्द्रको आतेदेखा तो दौड़कर उनकेचरणोंपरगिरपड़ा त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बश्यामसुन्दरने सुदामाको बड़ेप्रेमसेउठाकर अपनीछातीमें ल
लिया इतनीकृपाद्वारकानाथकी अपनेऊपरदेखकर सुदामाम
कहनेलगा हे परमेश्वरमैं यहहालप्रकटदेखताहूं या स्वप्नमें द्वा
नाथने सुदामाकाहाथपकड़ेहुये उसेसिंहासनपरलेजाकर बैठा
व अपनेहाथउसकी धूरिझाड़कर पैरकेकांटेनिकाले व उसकाच
धोनेवास्ते रुक्मिणीसे जलमांगा व सुदामासेकहा ॥

स० काहेविहाल बिवाइनते पगकण्टक जाल गड़ेपुनि जोये । हायमहादुख पायो सखातुमआये ह
कितैदिन खोये । देखि सुदामा कि दीनदशा करुणाकरिकै करुणामयरोये । पानी परातको हाथछुयो
यननके जलसे पगधोये ॥

जबचरणधोतीसमय सुदामाअतिलज्जासे ज्यों २ पैरअप
सिकोरेलेताथा त्यों २ बैकुण्ठनाथउसपर अधिकदयालुहोकर अ
नेहाथ उसकाचरणधोतेथे यहबातदेखकर रुक्मिणीआदिकआ
पटरानीचाहतीथीं कि सुदामाकीसेवाहमलोग अपनेहाथसेकरें
समेंहमारेप्राणपतिको श्रम न हो परत्रिभुवनपतिने यहबात न
नकर अपनेहाथसुदामाके अंगपरचन्दनलगाया व देवतासमान
धिपूर्वक उसकापूजनकिया व छत्तीसव्यंजनखिलाकर पान व इ
यर्चादेने व अतरलगानेउपरांत फूलोंकागजरा उसेपहिनाया व
क्मिणीआदिक आठोंपटरानियोंसेकहा तुमलोगजितनीसेवा सु
माहमारे मित्रकीप्रेमपूर्वककरोगी उतनाहमतुमलोगोंसेप्रसन्नह
जिससमय रुक्मिणीजी सुदामाकेचवँरहिलानेलगीं उससमय
तालोग अपने २ बिमानोंपरसे यहहालदेखकर बड़ाईभाग्य सु
माकी करनेलगे ॥

दो० याविधि विप्रहि पूजिकै माखनप्रभु यदुराय । कुशलक्षेम पूछनलगे अमृतबैन सुनाय ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित यहचरित्रदेखते रुक्मिणी व सत्यभामा आदिकसबस्त्रियां द्वारकानाथकी व जो दुर्बशीवहांपरथे अचम्भामानकरआपसमेंकहनेलगे देखोरूपवा व धनपात्रकासबकोई आदरकरतेहैं इसदरिद्री बूढ़ेब्राह्मणने नं मालूमपिछलेजन्म कौनऐसाभारी तपकियाथा व क्यागुण इसमें मराहैजिसकारण त्रिभुवनपतिअपनेहाथइतनीसेवाइसकीकरतेहैं

चौ० याहि कृष्ण पूजतहैं जैसे। निज पूरुष मानतहैं तैसे॥
दो० याबिरंचिसनकादिहैं या नारदऋषि आहि। या शिवगौरीनाथहैं हरिपूजतहैं ताहि॥

उससमय सत्यभामाने जोबड़ीबोलनेवालीथी दूसरीस्त्रियोंसे कहाश्रीकृष्णजी सदाहमलोगोंकेसाथ अभिमानभरीहुई बातैं कि आकरतेहैं अबउनकेमित्रको देखो जिसनेजन्मभरनयाकपड़ाकभी स्वप्नेमेंभीनहींदेखा पहिरनेवास्ते कौनकहै नमालूम यहब्राह्मण स्वताकिसनगरमेंरहतेहैं जिनपरऐसादरिद्रछारहाहै परइसकाबड़ा भाग्य समझनाचाहिये जिसनेबैकुण्ठनाथको ऐसाबशकरलिया पहिलेमैंने नंद व यशोदाइनकेमाता व पिताकेगौचरानेकाहालसु नाथा आपदहीमक्खन चुराकरखायाकरतेथे अबइनकेमित्रको दे खकरमुझेबहुत विश्वासहुआ कि वहसबबातसच्चहैजबसुदामाने ऐ सीकृपाश्यामसुंदरकी अपनेऊपरदेखी तबउसने मनमेंसमझा कि केशवमूर्तिने मुझेनहींपहिंचाना किसीदूसरेके धोखेसेमेरीटहलकर तहै मैं इसयोग्यनहींहूं बैकुंठनाथ अन्तर्यामीनेयहहाल जानकर उसकासंदेह छुड़ानेवास्तेकहा हे मित्रतुमकोयादहोगा जबहम व तुम दोनोंमनुष्य एकसाथसांदीपन गुरूकेयहां विद्यापढ़तेथे और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उन्हीं दिनों तुम्हारा बिवाहहुआथा सो बतलाओ हमारी भौ
अच्छीतरहहैं व तुमराहमें क्षेमकुशलसे यहांतकआये मु
म्हारेदेखनेकी बहुतचाहनालगीथी तुमनेबड़ी दयाकी जो
चरणोंसे मेरास्थानपवित्रकरके मुझेदर्शनदिया मैंअच्छी तर
नताहूं कितुमउनादिनोंमें भी मनअपना बिरक्तरखतेथे अबत
ओ किसतरह बीतती है देखोजिसतरह सोलहहजार एकसौ
स्त्री रहनेपरभी मैंकिसीके आधीननहींरहता उसीतरहज्ञानी
संसारमेंरहकर मनअपना विरक्तरखतेहैं ॥

दो० सकलबस्तुसंसारकी कबहूंसुस्थिरनाहिं । तेहिकारणज्ञानीपुरुष चितनधरत धनमाहिं ॥

हेसुदामा जैसीप्रीति व दयासेसांदीपनगुरू महात्मापुरुष
बविद्या हमकोपढ़ाईथी उसमेंसे एकअक्षरपढ़नेकेबदले हम
भर उऋणानहींहोसक्ते जोकोईगुरूको परमेश्वरसमान जानक
बताहै जितना हमउससे प्रसन्नहोतेहैं उतनायज्ञ व तप व दान
नेवालोंसे खुशनहींहोते ॥

दो० गुरुसेवा दुर्लभ महा चितदे करै जोकोय । जोमनमें इच्छाकरै सो सबपूरणहोय ॥

हेसुदामा तुमनेभीपढ़नेलिखनेमें हमारीबड़ीसहायताकीथी
मेरेबदलेगुरूकी सेवाकरतेथे औरयहबात तुमकोयादहोगी कि
एकदिन गुरूकीस्त्रीनेहमैं व तुम्हैंवनमें लकड़ीलेआनेवास्ते भे
तबतुमने हमारेबदलेभी लकड़ीतोड़करकहाथा कितुम्हाराहाथ
मलहै लकड़ीतोड़नेमें दुःखहोगा जबलकड़ीकाबोझा शिरप
करदोनोंआदमी घरकोचले तबऐसी आंधीचलकर पानीवर्ष
गा किदशापगरस्ता चलनाकठिनहुआ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो॰ पवनझकोरै तेजसों शीतभयो दुखदाय। काठभार मस्तकधरे हमको लियो छिपाय॥
बहुतभांति रक्षाकरी आपरहे दुखमाहिं। तुम्हरीप्रीति अनन्तहै उऋण होतमैं नाहिं॥

जबउसदिनहम व तुमआंधीचलने व पानीबर्षनेसे घरतकनहीं हुंचकर रातकोवनमें रहगयेतबगुरूजी अपनीस्त्रीपर बहुतक्रोधि होकर प्रातसमय हमदोनोंको वनमेंढूंढ़नेआये व व्याकुलतासे ह रातुम्हारा नामपुकारकर कहनेलगे तुमलोगजहांपरहो वहांसे लो जिसमेंमुझेधैर्य्यहो नहींतोतुम्हारेशोचमें मेराप्राणनिकलने हताहै जबगुरूजीने रोते व चिल्लातेहमारेपास पहुंचकरहमको दीसेकांपतेहुयेदेखा तब दौड़करप्रेमसे उठालिया व शिर व मुंहह राचूमकरबोले तुमलोगोंने अपनीसेवासे मुझेबहुतप्रसन्नकिया लियेतुमको आशीर्व्वाददेताहूं कि सबविद्या तुमकोयादहोकर भीनभूलै व गुरूकेचरणोंमेंतुमको निष्कपटप्रीतिबनीरहै हेसुदा जबसेविद्यापढ़कर हमतुम बिलगहुये तबसेआजतुमकोदेखकर झेऐसाआनंन्द प्राप्तहुआ मानोसांदीपन गुरूकादर्शनपायाजब हसुनकर सुदामाकासन्देहछूटगया तबउसने नम्रतासेहाथजोड़ रविनयकिया हेस्वामी तुमत्रिभुवनपतिहोकर मुझेक्यों इतनाल जतकरतेहो जहांचारोंवेद आपकीश्वासाहोकर तीनोंलोककेजी तुम्हारापूजनकरतेहैं वहांआपनेकेवल संसारीजीवों के राहदिख नेवास्ते गुरूसेविद्यापढ़ीहै व आपकेआदि व अन्त व भेदकोको हुंचनेनहींसक्ता तुमसबजगत्केमाता व पिता अविनाशीपुरुषहो संसारीव्यवहार अपनीइच्छासे करतेहो औतुम्हारानाश कभी हींहोता जोलोग प्रेमपूर्व्वक आपकानामजपकर तुम्हारीकथा व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीर्त्तनसुनतेहैं उनकोसंसारमें यशप्राप्तहोकर अन्तसमयमुक्ति
लतीहैजवशेषनाग हजारमुखसे दिनरातआपकी चर्चारखनेपर
तुम्हारेभेदको नहींपहुँचनेसक्के तबदेवता व संसारीजीवोंकी क्या
मर्थ्यहै जोतुम्हाराआदि व अन्त जाननेसकें आपपलकभांजते
मेंचौदहोंभुवन उत्पन्न व नाशकरनेकी सामर्थ्यरखकर सबजी
कापालन करतेहैं व आपसदाएकरसरहकर घटनेबढ़नेसे कुछ
जननहींरखते व तुम्हाराचमत्कार सबजीवोंमेंहोकर आपअप
जसेप्रकाशितरहतेहैं तुमअपनीइच्छासे मनुष्यतनुधरकर जो
मनुष्योंकोकरनाचाहिये वहबातसंसारी जीवोंको राहदिखलाने
स्तेकरतेहो नहींतोआपजन्ममरणसेरहितहैं तुम्हारेकाम व अव
कीगिन्ती कोईकरनेनहींसक्ता हेदीनानाथ जिसचतुर्भुजीमूर्
आपजर्द पीताम्बर व वैजयन्तीमाला पहिनेशंखचक्रगदापद्म
णकिये गरुड़परबैठतेहैं उसरूपको मैंहजारोंदण्डवत् करताहूं
बछोटेबड़ोंको अपनाबालकसमझकर आपगरीबोंपर अधिक
करतेहैं व तीनोंलोकमें किसीकाडरनरखकर अभिमानियोंका
कारतोड़देतेहैं श्यामवर्णअंग तुम्हाराऐसासुन्दर व कोमलहो
मलरूपीआंखें हँसतेहुये मुखारबिन्दपर ऐसीशोभादेतीहैंजि
बर्णन मुझसेनहींहोसक्ता मेरापूर्वजन्मका पुण्यसहायहुआ
म्हारेचरणोंका दर्शनपाया अबमैंकुछइच्छा न रखकरयही चा
हूंकि आठोंपहर तुम्हारेस्मरण व ध्यानमेंलीनरहकर संसारि
हारस्वप्नके समानसमझूं ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इक्यासीवां अध्याय॥

सुदामा ब्राह्मणका श्रीकृष्णजी से बिदाहोना॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जबसुदामाने इसीतरह बहुतस्तुति यामसुन्दरकी प्रेमपूर्वककी तबद्वारकानाथ अन्तर्यामीने हँसकरक हेमित्र हमतुम्हारीअमृतरूपीबातोंसे बहुतप्रसन्नहुये अबजोसौ तहमारीभौजाईनेभेजीहै सोदेव यहवचनसुनतेही सुदामानेपछि करमनमेंकहा देखो बड़ेशोचकीबातहै जोमूठीभरतण्डुल त्रिभु नपतिकोभेंटदेऊं जबऐसाबिचारकर सुदामालज्जासे चांवलकी ोटली कांखमेंछिपानेलगा औरमुखउसका मलीनहोगया तबवसु वनन्दननेमनमेंकहा देखोएकबेर हमाराकलेवाछिपाकर सुदामा सरङ्कताकोपहुँचा तिसपरभी वहीबातकरताहै फिरकेशवमूर्त्तिने हपोटरी उसकीबगलमेंसेखींचकरखोलडाली व बड़ेप्रेमसेभूसीमि ाहुआ दोमूठीचांवलखाकरबोले हेसुदामा जितनीप्रीतिसेएकफू न व तुलसीदलचढ़ानेसे मैंप्रसन्नहोताहूं उतनाबिनाभक्ति लाखों नमिठाई व जड़ाऊभूषणसे खुशीनहींहोता॥

चौ॰ दुर्योधन बहुपाक बनाये। प्रीतिबिना मोकोनहिं भाये॥
बिदुरभक्तकी प्रीतिजो जानी। बासीसाग बहुत रुचिमानी॥
विविधभांति मिष्टान्नजो लावै। बिनाप्रीति कछु काजनआवै॥
जो कुछ तुमलाये हम पाहीं। थोड़ो मति जानो मनमाहीं॥
दो॰ सागपातभी प्रीतिसों हमकोदेयजो कोय। तेहिसमानसबसृष्टिमें कछुकस्वाद नहिंहोय॥
तंडुलकी महिमा कहत माखनप्रभु यदुराज। सुरनरमुनि तिहुँलोकके तृप्तभयेहैं आज॥

पोटलीखोलतीसमय थोड़ेसेचांवल पृथ्वीपरगिरपड़े सो उसेमु लीमनोहर अपनेहाथउठानेलगे व रुक्मिणीआदिक आठोंपटरा नियोंसेकहा एकएकदाना चांवलकाचुनकर मुझेउठा देव जिसमें कोईदाना पैरकेनीचे न आवै व चांवलखातीसमय द्वारकानाथबो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ले जैसास्वाद इसतंडुलमेंमिलताहै वैसाभोजनआजतक यशो व देवकीनेमुझेनहीं खिलायाथा ऐसाकहकर जैसेश्यामसुन्दरने सरीमुट्ठीचांवलउठाके खानेचाहा वैसेरुक्मिणीजी उनकाहाथ ड़करबोली बसकीजिये हमलोगभीतुम्हारेचरणोंके आधीनहैं हमारेखानेवास्तेभी रक्खोगे या नहीं॥

क० हाथगहे प्रभुको कमला कहै नाथकहा तुमने चितधारी। तण्डुलखाय मुठी दुइदीन कियो तुम लोक विहारी। खायमुठी तिसरी अवनाथ कहां निजबास कि आश बिचारी। रंकहि आप समानकियो चाहत आपहिहोनभिखारी॥

यहसुनकर श्रीकृष्णजीनेकहा॥

क० क्योंरसमें विषधामकियो अबऔर न खानदियो यकफंका। बिप्रहि लोक तृतीयकदेत करी तुम अपने मनशंका। भामिनि मोहिं जिवाँइ भलीविधि कौनरहेउ जगमें नररंका। लोक कहैं हरिमित्रदुखी हरि न सहेउयहजातकलंका॥

यहसुनकर रुक्मिणीबोलीं॥

क० भार्गव ह्वै तुमजीति धरा दैविप्रनको अतिही सुखमानो। विप्रन काढ़िदियो तुमको निशितातहिं बिसरो खिसियानो। सिंधुहट्टाय करीतुमठौर द्विजन्म सुभाव भलीविधि जानो। सोतुमदेत द्विजैसबलोक योतुमने अबकौन ठिकानो॥

यहसुनकर श्रीकृष्णजीने उत्तरदिया॥

क० भामिनि देव द्विजैसबलोक तजोहठ मोरे यही मनभाई। लोक चतुर्दशकी सुखसम्पति लागत बिनादुखदाई। जाय बसो उनके गृहमें करिहौं द्विज दम्पतिकी सेवकाई। तोमनमाहँ रुचै न रुचै सो रुचै को यहि ठौरसुहाई॥

यहबचन सुनकर रुक्मिणीजीबोलीं॥

क० नेक न कानकरैं द्विजये नृगसे नृपको निरयी करिडारयो। शापदियो पुनिशंकरको अबलौं शिवभाग बिसारयो। बिप्रन फेरि विजयजंयको तुमदेखतघोरकुयोनिमें डारयो। सो तुमजानि सबैगुणको करोफिरहूं द्विजको पतियारयो॥

यहसुनकर श्यामसुन्दरनेकहा॥

क० विप्रनके मुखते सुर जेंवत विप्रस्वो श्रुतिरीति सुहाई। विप्र बिनाजग अन्धपशू बिन विप्रनहीं दोष लखाई। विप्रहि मोहिं रुचै निशिवासर विप्रनही ममशाक चलाई। विप्रनतेनहिं उऋणकभूं हरि प्रियाकरु विप्रभलाई॥

यहसुनकर रुक्मिणीजीबोलीं॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क० तातेछारकलंक भरातैं नाथ हत्योउर लातप्रहारी। शालतसो अजहूं उरमें हमसंग करोति सदा द्विज रि। ब्राह्मणहै तुमहूं बलिपै पिय जातिसुभाव दया परिहारी। सो तुम जानि सबै गुणदोष पड़ो द्विज हाथ श्याममुरारी॥

यहसुनकर मुरलीमनोहरने उत्तरदिया॥

क० भामिनिक्यों बिसरीअबहीं निज व्याहसमय द्विजकी हितुआई। शोचलिजो द्विजकी करनी जिस करसों पतिया पठवाई। विप्र सहायभयो तेहिऔसर कोद्विजकेसमहै सुखदाई। योग्य नहीं अर्द्धंगिनि है मको द्विजहेत इती निठुराई॥

जबत्रिभुवनपतिनेदेखा कि तीसरीमुट्ठीखानेसे रुक्मिणीउदास होजायगी तबवह न खाकर रुक्मिणीसेकहा हे प्राणप्यारी यहब्राह्मणमेराबड़ामित्रहोकर संसारमेंसुख व दुखकोबराबरजानताहै व आठोंपहरमेरेस्मरण व ध्यानमेंरहिकर संसारीसुखकी कुछचाहना नहींरखता जबमुरलीमनोहरने इसीतरह अनेकबातैंसमझाकर रुक्मिणीकाबोधकिया तबबसुदेव व देवकी व उद्धवआदिकयदुबंशी जो वहांबैठेथे यहहालदेखकर आपसमेंहँसीसेकहनेलगे देखोइस ब्राह्मणकेसमान कोईदूसरागरीबसंसारमें न होगा जोइतनीदूरसे मुट्ठीभरतण्डुल सौगातलायाहै व कृष्णचन्द्रकोब्राह्मणसेभीअधिकंगालसमझनाचाहिये जोअकेले उसचावलकोखाकर उसकी बड़ाईकरतेहैं व दूसरेकोनहींदेते उनकीबातसुनकर बसुदेवनंदनने उत्तरदिया तुमलोग इसतंडुलकास्वाद क्याजानो तुम्हाराभाग्यउदयहुआ जोइसब्राह्मणके चरणोंकादर्शनपाया॥

दो० इनतंडुलके स्वादको जानतहै नहिं कोय। हमबिनु ऐसो कौनहै जाको आपतहोय॥

जबपहररातबीते द्वारकानाथने सुदामाको महलमेंलेजाकर अपनेपलँगकेपास दूसरेछपरखटपरसुलाया तबमुरलीमनोहरकी आज्ञानुसार रुक्मिणीजीने सुदामाकापैरदाबा व श्यामसुन्दरआधीराततक अपनेमित्रसे लड़कपनकी बातैंकरतेरहे जबसुदामाजी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोगये तबकेशवमूर्त्ति अन्तर्यामीनेबिचारा कि यहब्राह्मणद्रव्य
चाहनानहींरखता परइसकीस्त्रीनेसंसारीसुख व लक्ष्मीमिलने
स्तेइच्छारखकर इसेबर्जोरीमेरेपासभेजाहै इसलियेसुदामाको
नाधनदेनाचाहिये जोदेवताओंकोभीप्राप्तनहोऐसाबिचारतेहीं
एठनाथने उसीसमय बिश्वकर्माकोबुलाकर आज्ञादी तुमअभी
दामापुरीमेंजाकर उसकेरहनेवास्ते ऐसारत्नजटित स्थानबना
जिसकेबराबर चौदहोंभुवनमें दिखलाई न देवै आठोंसिद्धि व न
निधिवहांवनीरहैं जिसमेंकोईकामना सुदामाकीबाकी न रहै॥

दो० बिश्वकर्मातबहींचल्यो प्रभुकीआज्ञापाय। मन्दिररत्नजड़ायकै क्षणमेंदियेबनाय॥

जबसुदामानिद्रामें एककरवँटसे दूसरीकरवँटलेताथा तबवसु
वनन्दनप्रेमसे उसकेअंगपरहाथफेरकर बड़ाईकरतेथे जबतीसरेदि
सुदामाप्रातसमय नित्यनेमकरके श्यामसुन्दरसे बिदाहोनेगया
देवकीनन्दनने डेवढ़ीतकसुदामाके साथजाकर आंशूभरकेकहा
भाईतुमनेबड़ीदयाकी जोअपनादर्शनमुझेदिया मैंतुमसेयहीमां
ताहूं किहमकोभूलमतजाना जबसुदामामोहनीमूर्त्तिको दण्ड
करके अपनेघरचला तबवहआंखोंकीराह स्वरूपवृन्दाबनबिहा
काहृदयमेंरखकरकहनेलगा देखोश्रीकृष्णजीनेमेरेऊपरइतनीद
की जिसकापलटा मैं कईजन्मतकनहीं देसक्ता पर कुछद्रव्यमु
नहींदिया जिससेदरिद्रमेराछूटजाता जिसतरहकंगालरूप अ
घरसेआयाथा उसीतरहखालीहाथ फिरचला॥

चौ० फिर वह द्विजसमझे मनमाहीं। विघ्नअनेकहोत धनमाहीं॥
दो० याहीकारण कृपाकरि मित्र आपनो जान। मोहिंद्रव्यदीन्हीं नहीं माखनप्रभु भगवान॥
मेरेवास्ते यहगरीबी बहुतअच्छीसमझनाचाहिये जिसमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वरकाभजन आनन्दसेबनपड़ताहै धनरखनेवाले सदाखटकेमेंरह
तेहैं इससेअधिककयाधनहोगा जोत्रिभुवनपतिकेचरणोंका दर्शन
मुझेप्राप्तहुआ बहुतअच्छीबातमैंनेकी जो द्वारकानाथसे कुछनहीं
मांगामांगनेसे धनतोमिलतापरमुझेलोभीसमझते अबमैंअपनेघ
जाकर ब्राह्मणीकोसमझालूंगा जबसुदामाइसीतरह शोचबिचार
करताहुआ अपनेगांवकेनिकटपहुंचा तबउसनेवहां अपनीझोपड़ी
कापता न पाकर क्यादेखा कि उसजगह एकस्थानरत्नजटितबनाहै
औरउसकेचारोंओरअनेकतरहकेफलवफूलबागोंमेंलगेहोकरवृक्षों
परतूतीकोकिला व मोरआदिक सुन्दरपक्षीबैठेहुयेमीठी२बोलीबो
लरहेहैं व पुष्पोंपर भवँरेरसचूसनेवास्ते गूंजते व महलकेद्वारेपरचो
बदार व सिपाहीलोग बैठेहोकर अनेकदासी व दासअपना२काम
करतेहैं सुदामा यहआश्चर्यदेखतेही शोचितहोकर कहनेलगाहेपर
मेश्वरथोड़ेदिनमें ऐसासुन्दरस्थान यहांकिसनेबनाया या मैंराहभू
लकरकहीं दूसरीजगह चलाआया व मुझेयहहाल प्रकटदिखला
देताहै यास्वप्नेमें न मालूम पुरानीझोपड़ीमेरीक्याहोकर वहपति
ब्रतास्त्रीकहांचलीगई बड़ेशोचकीबातहै जोमैंनेलोभवश बाहरनि
कलकर अपनेघर व स्त्रीकोभीहाथसेखोया हे नारायण अबमैंक्या
करूं व कहांजावँ एकतोगरीबीके दुखमेंपड़ाथा दूसरेस्त्रीखोजनेका
शोचऔर अधिकहुआ अबमैं उसेकहांजाकरढूंढूं जिससमय सुदा
माइसीशोच व बिचारमें वहांखड़ाथा उसीसमयसुशीलाअपनेस्वा
मीकोदेखनेवास्ते कोठेपरचढ़ी जैसेउसनेसुदामाको द्वारेपरखड़ादे
खाऔरसदासियोंकोआज्ञादीहमारेपतिजोद्वारेपरखड़ेहैं उनकोसन्मा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नपूर्वकभीतरलिवालाओ तबद्वारपालकव दासियोंनेयहआ
तेही सुदामाकेपासजाकर दण्डवत्करके उनकोभीतरचलनेव
कहा व कोईशरीरकी धूरिझाड़कर पंखाहिलानेलगा तबसुदा
नकेआदरभावकरनेसे घबराकरबोला मुझगरीबब्राह्मणको
केघरमेंक्योंलेजातेहो यहसुनकर द्वारपालकोंनेबिनयकिया
राजयहस्थानआपकाहै निस्सन्देहभीतरचलियेजबसुदामाउ
वातका विश्वास न मानकर डरसेकांपनेलगा तबसुशीलासो
शृंगारकिये सखियोंकोसाथलिये आरतीकरनेवास्ते द्वारेपरआ
सुदामाके चरणोंपरगिरकरपरिक्रमालिया व आरतीकरके हाथ
ड़कर बिनयकिया ॥

चौ० ठाढ़े क्यों मन्दिरपगधारो। मनते शोचकरो तुमन्यारो॥
तुमपाछे विश्वकर्माआये। तिनमन्दिरपलमाहिंबनाये॥

भूषण व वस्त्रपहिरनेसे सुशीलाकारूपबदलगयाथा इसलि
छक्षणवीते उसेपहिचानकर ध्यानमेंश्रीकृष्णजीको दण्डवत्कि
व उसकेसाथभीतरजाकर क्यादेखा कि मखमलीपरदे मोतियों
झालरलगाकर सबद्वारोंमेंलटकायेहैं व रत्नजड़ितचौकी व श
बिछीहोकर सबस्थानोंमें अगर व चन्दनआदिक जलनेसेसुगन्ध
रहीहै व ऐसीमणि व रत्नादिकवहांरक्खेथे जिनकेप्रकाशसे रात
उजियालारहकर दीपकजलानेका प्रयोजननहींपड़ताथा॥

दो० रत्नजटितघर देखिकैचकितभयोमनमाहिं। जेहिसमान तिहुंलोकमें औरठौरकहुंनाहिं॥

यहसब राजसीविभवदेखकर जबसुदामाका मुखमलीनहो
तबसुशीलाने आश्चर्यमानकरपूछा हे स्वामीधनमिलनेसे
लोगप्रसन्नहोतेहैं आपयहसबइन्द्रपुरीकासुख व इतनाधन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

योंउदासहोगये इसकाभेदबतलाइये यहसुनकर सुदामाबोले हे
णप्यारी यहधनजड़रूपीमाया परमेश्वरकी बहुतबलवान्होकर
बजगत्को मोहलेतीहै इसलिये जैसागरीबीमें मुझसेहरिभजन
नपड़ताथा वैसाधनसुखपानेसे नहींहोसकेगा यहीसमझकर मेरा
खमलीनहोगया देखो श्यामसुन्दरने बिनामांगे इतनाधनमुझ
दिया परथोड़ासमझकर मुखसेकुछनहींकहा इसलिये मैंयहसब
भवमिलनेकाहालकुछ न जानकर अपनीटूटीझोपड़ीवास्ते पछि
ताथा सच्चहै बड़ेलोगकिसीको कोईबस्तुदेतेहैं तोमुखसेनहींकहते
झेइसबातका बड़ाशोचहै जोइतनेदिनतक दर्शनत्रिभुवनपतिका
करके अवस्थाअपनीवृथाखोई है प्रियातुमइसधनकोअपना न
ानकर आठोंपहर यहसमझतीरहना कि सबसुख व धनमुझेद्वार
ीनाथकी कृपासेमिलाहै जिसमेंतुझेअभिमान न होवै और मैंत्रि
वनपतिसे दिनरातयहीमांगताहूं कि जन्मजन्मांतर परमेश्वरका
स व सेवकहोकर उनकीसेवा व टहलमेंबनारहूं ॥

दो० जबलों सुमिरे नाहरी जा सन्तनके मीत। वहदिन गिनतीमें नहीं गयेवृथा सबबीत ॥

यहबातसुनकर सुशीलानेमनमेंकहा देखो श्यामसुन्दरअन्तर्या
ने बिनामांगे इच्छामेरीपूर्णकी फिरवहबोली हे स्वामीअबतुम
श्चिन्तहोकर हरिभजनकियाकरो ऐसासमझकर सुशीलाने सु
माकोउत्तम२भूषण व वस्त्रपहिनाये व सुगन्धादिक उनकेअंगमें
गाकर हरिभजनसंयुक्त उनकेसाथ संसारीसुखभोगनेलगी और
छोड़नेउपरांत वैकुण्ठमेंजाकर लक्ष्मीनारायणके दासी व दास
इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित देखोचारमु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ष्टीचावल परमेश्वरकोदेनेसे सुदामाऐसीसुन्दरगतिकोपहुंचा
लोग सदाप्रेमपूर्वक छत्तीसव्यंजन नारायणजीको भोगलगा
उनकोनमालूम कैसासुखमिलैगा व सुदामाकास्थान ऐसाउ
बिश्वकर्मानेबनायाथा जिसेदेखकर इन्द्रादिकदेवतेमोहिजाते

दो० यहचरित्र अद्भुतमहा चितदे सुनै जोकोय । रहैसदा सुखचैनसों अन्तमुक्ति फलहोय ॥

बयासीवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरका सूर्य्यग्रहण स्नानकरनेवास्ते कुरुक्षेत्रमें जाना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षितअबहमश्रीकृष्णजीके कुरुक्षेत्र
कीकथाकहतेहैं सुनोएकबेर सूर्यग्रहणलगनेमें श्यामसुन्दरबल
मजीने राजाउग्रसनसेकहा महाराज कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहणस्नान
बड़ामाहात्म्यहोकरजोबस्तुवहांदानकरै उसकाहजार गुणाफल
लताहै यहसुनकर यदुबंशियोंनेपूछा हेमहाप्रभूऐसामाहात्म्य
का किसतरहहुआ केशवमूर्त्तिनेकहा वहस्थानबहुतपुराना व
त्रहोकर पहिलेउसकानाम स्यमन्तकक्षेत्रथा जबसेपरशुराम
क्षत्रियोंकोमारकर वहांरक्तकीनदीबहाई व उसीरुधिरसे पितरों
तर्पणकिया व ऋषीश्वरोंने उसस्थानपर तप व ध्यानपरमेश्वर
किया तबसेवहांकानाम कुरुक्षेत्रप्रकटहोकर सूर्यग्रहणनहानेक
ड़ामाहात्म्यहुआ यहवचनसुनतेही जबराजाउग्रसेन व यदुबं
लोगप्रसन्नहोकर वहांचलनेवास्ते तैयारहुये तबमुरलीमनोहर
अपनेमाता व पिता व रुक्मिणीआदिक सबस्त्रियोंकोसाथलेलि
बड़ेविभवसे राजाउग्रसेन व यदुबंशियोंसमेत कुरुक्षेत्रकोकूचकि
व अनिरुद्धअपनेपोता व कृतवर्मायादवको द्वारकापुरीमेंछोड़कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वयदुवंशीलोग अनगिन्तीहाथी व घोड़े व रथोंपरबैठकरचले व
नियोंकेचंडोल व नालकीआदिक नगरसेबाहरनिकले उससमय
ी शोभामनहरणप्यारेकी मालूमहोतीथी जैसे तारोंमें चंद्रमा
ादेतेहैं॥

दो॰ चलेकटक सबसाजके माखनप्रभु यदुराज। विविधभांति बाजेबजे सुखको भयोसमाज॥

जबश्यामसुन्दर यदुवंशियोंसमेत कुरुक्षेत्रकेनिकटपहुंचे व ती
वहांसे दिखलाईदेनेलगा तबसबछोटेबड़े सवारियोंपरसे उतरकर
दलचले किसवास्ते कि वेद व शास्त्रमेंऐसालिखाहै कि तीर्थजाती
समय संपूर्णारास्तापैदल न चलनेसकै तोजहांसे तीर्थकास्थानदिख
लाईदे वहांसे अवश्यपैदल चलनाचाहिये इसलिये द्वारकानाथने
सबकोसाथलियेहुये पहिलेब्रह्मकुण्डपर जिसमेंसे वेदनिकलाथा
आकर स्नानकिया फिरबहुतसी गौ बिधिपूर्वक व सुवर्णद्रव्य व हा
थी व घोड़ेआदिक अनेकतरहकीबस्तु तीर्थबासीब्राह्मणोंको दान
या व उत्तम २ डेरोंमेंटिककर अपनेसाथियोंसेकहा तुमलोगयहां
रमें ब्राह्मणोंकासन्मानकरके किसीकोदुर्बचन मतकहना वश्या
सुन्दरने जिसजगहऋषीश्वर व महापुरुषोंकेआने व रहनेकास
विचारपाया वहांआपजाकर उनकादर्शनकिया व अपनेसेवकोंको
आज्ञादी॥

दो॰ तातहमारे नन्दजू और यशोदा माय। उनकीसुधि जो कुछमिले हमसों कहियो आय॥

जबदुर्योधनआदिकअनेकदेशकेराजोंनेजोग्रहणास्नानकरने वहां
आयेथे मुरलीमनोहरके यहांआनकर उनकादर्शनकरके अपनाज
मसुफलजाना तबधृतराष्ट्रआदिकबड़े २ नृपति व भीष्मपितामहने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजाउग्रसेनकी वहुतस्तुतिकरके उनसेविनयकिया महाराजतुम
रावड़ाभाग्यहै देखो जिसपरब्रह्मपरमेश्वरकादर्शन ब्रह्मा व महा
आदिकदेवतोंको जल्दीध्यानमेंनहींमिलता वहीत्रिभुवनपतिवि
रततुम्हारीआज्ञामेंरहकरबिनापूंछेकोईकामनहींकरत व सबजग
के ईश्वरहोकर तुम्हैंदण्डवत्करतेहैं ऐसीपदवी किसीदेवताकोनहं
मिलसक्तीयहवचनसुनकर जबराजाउग्रसेनने सन्मानपूर्वक उनक
बिदाकिया तबराजाभीष्मक व नग्नजितआदिक वसुदेवनन्दन
श्वशुर व सालाकाहाल जोवहांग्रहणस्नान करनेआयेथे सुनिकम
रलीमनोहरकीस्त्रियां उनसेभेंटकरनेवास्तेगईं तबवहलोग उन्हैंद
करअतिप्रसन्नहुये व उन्होंनेबहुतसीसौगात अपने२देशकी मुर
मनोहरकोभेंटदेकरउनकादर्शन प्रेमपूर्वककिया व कुन्तीनेश्रीकृष्ण
जीसेकहा मैंजानतीथी किमेरेबेटोंपर तुमदयारखतेहो सोतुम्हारेस
इयोंने दुर्योधनकेहाथसे इतनादुःखउठाया परतुमने कुछसुधिनहीं
ली इसबातका मुझेबड़ा पछतावाहै यहबचनसुनकर लक्ष्मीपति
नेकहा हेफुआ इसमेंकुछमेरादोष न होकर सबदुःख सुख अपनेप
रब्धसेमिलताहै जिसतरह आंधीचलनेसे कोईतिनुकाबिनाउड़े
हींरहसक्ता उसीतरहसबजीव परमेश्वरकेआधीन रहिकर अपने२क
मौंकाफलभोगतेहैं उसमेंतिलभर घटनेबढ़नेनहींसक्ता यहसुनक
कुन्तीने वसुदेवजीसेकहा हे भाई जबसेतुमने मेराबिवाहकरदिया
तबसेकुछसुधिनहींली व मैंनेजैसादुःख दुर्योधनकेहाथसेपाया उस
काहालपरमेश्वर जानताहै देखोश्याम व बलरामनेभी हरिभक्त
कादुःखछुड़ानेवास्ते संसारमें अवतारलेकर मेरेऊपरकुछदयानहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की इसमें कुछतुम्हाराभी दोषनहोकर यहबातसच्चहै किजबखोंटेदि
नआनेसे परमेश्वर बिमुखहोतेहैं तबबाप व भाईआदिक किसीकी
सहायताकुछकामनहींकरती यहसुनतेही वसुदेवजीनेरोकरकहा हे
बहिन हरिइच्छाबलवान्होकर कर्मकीगति जानी नहींजाती जिस
समयदुर्योधनने तुमकोदुःखदिया उनहींदिनों कंसने मुझेकैदरख
कर मेरे बेटोंकेमारनेवास्ते जो २ उपायकियेथे वहतुमनेसुनाहोगा
जबपरमेश्वरकीदयासे दोनोंबालक किसीतरहबचे तबराजाजरास
न्धआनकर ऐसालड़ा जिसकेडरसे अपनादेशछोड़कर टापूमेंजाब
से इसीकारण तुम्हारीकुछसुधिनहींलेसके इसीतरह अनेकबातैंक
हकर वसुदेवजीने कुन्तीकाबोधकिया जबनन्द व यशोदाआदिक
नेकि वहभीग्रहणास्नानकरने वहांजाकर श्यामसुन्दरकेडेरेसेतीनि
कोशपरटिकेथे यहहालसुना किमोहनप्यारे अपनेकुटुम्बसमेतयहां
आयेहैं तबवहलोग उनसेभेंटकरनेवास्ते व्याकुलहोकर आपसमें
कहनेलगे अबबृन्दावनबिहारी सबराजोंकेशिरताजहुयेहैं इसलिये
उनकोहमारीतरफ देखतेलज्जामालूमहोगी जहांअनेकडेवढ़ीदार
रहनेसे राजोंकापहुंचनाकठिनहै वहांहमगँवारको कौनजानेदेगा॥

दो॰ जिस जागह नरपतिधनी बैठनपावतनाहिं। हमसबग्वालगँवारजन कैसेअब तहँजाहिं॥

जबनन्द व यशोदाआदिक ब्रजबासियोंसे बिनादेखे मुरलीम
नोहरकेनहींरहागया तबवहलोग घबराकर श्यामसुन्दरकाडेरापूछ
तेहुये वहांसेदौड़े व उसीसमय किसीनेआनकर श्रीकृष्णजीसेकहा
कि नन्द यशोदाआदिकभी ग्रहणनहानेवास्ते यहांआनकरटिकेहैं
यहबचनसुनतेही मोहनप्यारे उनकेप्रेमसेरोनेलगे यहदशाउनकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखकर देवकीमाता घबरागई व अपनेअंचलसे उनकाआंशूपोंछ
करबोली हे लालन जहांतुम्हारानामलेनेसे जगत्कादुःखछूटजा
ताहै वहांतुम्हैं कौनऐसादुःखप्राप्तहुआ जोइतनारोतेहो यहसुनकर
त्रिभुवनपतिनेकहा हे माता जबसेमैंनेनन्द व यशोदाके आनेका स
माचारसुनाहै तबसेमेरामन उनकाचरण देखनेवास्ते व्याकुलहो
कर मुझेकुछअच्छानहींलगता सोतुमजल्दी रथआदिक भेजकर
उनकोयहांबुलवावो तोमुझेउनकेदर्शनमिलनेसे धीर्यहो हमबहुत
अच्छीशुभसायतमें द्वारकासेचलेथे जोतीर्थस्नानकरनेका फलपा
कर ब्रजबासियोंसेभेंटहुई यहबचनसुनतेही बसुदेवजीने रथ व पाल
की व हाथी व घोड़ेआदिकबाहन ब्रजबासियोंके लानेवास्ते भेजक
रकहा हे बेटाआजबड़ीखुशीकादिनहै इसलियेतुमसेकुछलेकर तब
नन्द व यशोदाको तुम्हारेपास आनेदेंगे यहसुनकर वृन्दाबनबिहा
रीनेकहा हे पिता संसारमें कोईबस्तुऐसीनहींहै जोमैंतुम्हारेभेंटकरूं
मेराशरीर तुम्हारेऊपरनेवछावरहै

दो॰ यहसुनकर बसुदेवजी मुदितकहत सुखपाय। तुमसे पूतसपूतकी महिमाकही न जाय॥

जबएकसखीने श्रीकृष्णचन्द्रकोरोतेहुयेदेखकर रुक्मिणीआदि
क पटरानियोंसे यहहालकहा तबवहसबघबराकर बैकुण्ठनाथकेपा
सचलीआईं व मुंहढांपकरदेवकीसेउनकेरोनेकाकारणपूछनेलगीं॥

चौ॰ यह सुनि कहत देवकीमाता। श्रीयदुनाथ प्रेमकी बाता॥
नन्द यशोदा ब्रजते आये। जिन याकोहै लाड़ लड़ाये॥
याते इनकी यह गतिभई। सुधिबुधि सकल भूलितनगई॥

दो॰ कंसकुटिलके त्रासते बासकियो जिनपास। उनकेगुणनहिं कहिसकै जो सुखहोयँ पचास॥

यहवचनसुनतेही रुक्मिणीआदिक पटरानियांहँसकर आपस
में कहनेलगीं देखोआज हमारेप्राणनाथ राधाआदिक गोपियों से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भेंटकरकेअपना कलेजा ठंढाकरैंगे व बालापनकी प्रीतिसमझकर ब्रजबालोंकोभी बहुतसुख मिलेगा व हमलोग राधाप्यारीकीसुन्दरताईजोसुनाकरतीथीं अबउसेदेखकर मालूमहोगा किवह कैसीसुन्दरीहै जबग्वालबालोंकी संगतिमें नन्दलालजी मोरपंखशिरपर रखकरनाचैं व गावैंगे तबवहआनन्ददेखकर हमलोगोंकोभी बड़ा सुखप्राप्तहोगा॥

दो॰ धन्ययशोदा नन्दधनि धन्यनन्दके नन्द। धनिहम अब जो देखिहैं ब्रजजन आनँदकन्द॥

यहबचन रुक्मिणीआदिकका सुनकर श्यामसुन्दरनेरोते२मुस्कादिया व घबराकरनन्द व यशोदाआदिकोआगेसेलेनेवास्ते चले जबयशोदाने वृन्दाबनबिहारीको आतेहुयेदेखा व अपनाजन्मसुफलजानकर उनको उठानेवास्तेदौड़ी तबमोहनप्यारे गोपियोंकेगोलमेंघुसकर जैसेयशोदामाताके चरणोंपरगिरपड़ेवैसेनन्दरानीनेउनको उठाकर छातीसेलगालिया व बारम्बार उनकामुंहचूमकरबलायें लेनेलगी॥

दो॰ माखनप्रभुहिं निहारिकै मुदितयशोमतिमाय। राजचिह्न सबदेखिकै फूली अँगनसमाय॥

जबकेशवमूर्त्ति नन्दबाबाकोदेखकर बड़ेप्रेमसे रोतेहुये उनकेचरणोंपरगिरपड़े तबनन्दरायने आंशूभरके उन्हैंगोदमेंउठालिया व अपनेलालकाआंशूपोंछकर बहुतसाप्यारकिया फिर श्यामसुन्दरने श्रीदामा ग्वालबालोंसे गलेमिलकर उत्तम २ भूषण व वस्त्रउनकोदिया व सौगात वहलोगजोइनकेवास्ते लेआयेथे उसकोबड़ेप्रेमसे लिया॥

दो॰ हेमबर्ण पीताम्बर ग्वाल बाल सबलेहिं। ताकेपलटे कान्हको कारी कामरि देहिं॥

जबललिताआदिकसखियां व वृषभानुदुलारीको देखतेही जै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से आंखोंमेंआंशूभरकर उनकेनिकटपहुँचे वैसेश्यामा उनकोदेख तेही प्रेमवश रोते २ व्याकुलहोगई॥

दो० अंगअंग व्याकुलमहा परीधराणि मुरझाय। यहगति देखत कुवँरिकी लीन्ही धायउठाय॥

जबयहदशा लाड़कीदेखकर ललिताआदिकने उनकोबहुत समझाया तबराधाप्यारीने सचेतहोकर घूंघुटनिकाललिया उससम यश्यामसुन्दरका मुखारबिन्ददेखनेसे ब्रजवासियोंको जैसाआनंद हुआ वहमुझसे वर्णननहींहोसक्ता फिरवसुदेवजीने नन्दरायसेगले मिलकर कुशलपूंछनेउपरांतकहा तुम्हारीदयासे यहसबसुखमुझे मिलाहै जैसेब्रजकीगौवोंने जोनन्दरायकेसाथआईथीं श्यामसुन्दर कोदेखा वैसेआंखोंमें आंशूभरकर पूंछउठायेहुये मुरलीमनोहरके पास दौड़ीचलीआईं तबकेशवमूर्त्तिने बड़ेप्रेमसे उनकीपीठपरहाथ फेरकरप्यार किया व ग्वालबालों से सबगायोंकाहाल नामलेलेकर पूंछनेलगे॥

दो० गायनकी बातें कहत माखनप्रभुयदुराय। त्यों त्यों हर्षितलोगसब आनँदउर न समाय॥

जबश्याम व बलराम बड़ेप्रेमसेनन्द व यशोदाआदिक ब्रजवासियोंको साथलेकर अपनेडेरेमेंआये तबदेवकी व रोहिणीनेयशोदाकेगलेमिलकर कुशलपूंछनेउपरांत कहाहेनन्दरानीजी हमलोग जन्मभर तुम्हारीसेवाकरें तोभीतुमसे उऋणनहींहोसक्तींकिसने स्ते किहमारेलड़कोंकाप्राण तुम्हारीकृपासेबचाहै नहींतोकंसपापी केहाथसे इनकावचनाकठिनथा यहसुनकर यशोदाबोली मैंतोअपने कोमोहनप्यारेकी धायसमझतीहूं कन्हैयानेअपना बालचरित्र दिखलाकर जैसासुखमुझेदियाहै वहआनन्ददूसरेको स्वप्नेमेंभी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हींमिलनेसक्ता व उसकेबियोगमें जितनादुःखमैंनेउठाया उसका
हालपरमेश्वरजानताहै आज तुम्हारीकृपासे कान्हरकोदेखकरसब
शोचमेराछूटगया जबराधाआदिकगोपियोंनेदेवकीमाताकेचरणों
परशिररखकर दण्डवत्किया तबदेवकीने उन्हेंआशीषदेकरश्या
माकोगलेमें लगालिया व उसकारूपजो पटरानियोंसेभी अधिक
सुन्दरीथी देखकरमनमेंकहा ऐसीमहासुन्दरीस्त्री मेरेप्राणप्यारेसे
किसतरह छोड़ीगई तबरुक्मिणी आदिकस्त्रियोंने यशोदासेमिलने
वास्तेआनकर श्यामाकारूपदेखा तबअपनी२ सुन्दरताईकाअभि
मानभूलगई उससमय रुक्मिणीने बसुदेवनन्दनसे हाथजोड़केबि
नयकिया हेब्रजनाथ तुम्हारी आज्ञापाऊंतो आजराधाप्यारीकोअ
पनेयहांलेजाकर शिष्टाचारकरूं॥

दो॰ माखनप्रभु आज्ञादई लेजइये निज धाम। राधा कुँवरि जेंवाइकै पूरणकीजे काम॥

यहवचनसुनतेही रुक्मिणीने श्यामाकेपासआनकर उसकाहा
थपकड़लिया व बड़ेप्रेमसे अपनेयहांलेजाकर छत्तीसव्यंजन खि
लाया व अपनेयहांसे उत्तम २ भूषण व वस्त्रादिक उसेपहिनाकर
सोरहोंशृंगारकरके बैठादिया तबसत्यभामाआदिकस्त्रियां श्यामा
कारूप जोचंद्रमासे भी अधिक सुन्दरीथी देखकरमोहितहोगई व
सभोंने लज्जासे आंखेंअपनीनीचेकरलिया उससमयबृन्दाबनबि
हारीनेजाकर बृषभानुदुलारीकी शोभादेखी तो रुक्मिणीआदि
कसे कहा॥

दो॰ जोचाहै म्वहिं बशकरन तिहूंलोक में कोय। श्रीवृषभानुकुमारिको हितसोंसेवैसोय॥

यहबात मुरलीमनोहरकी सुनतेही राधाप्रसन्नहोकर मुसुकराने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगी व रुक्मिणीआदिकनेसमझा कि बैकुण्ठनाथ बृषभानदु
रीकोहमसबसेअधिकप्यारकरतेहैं जिससमयद्वारकानाथने नन्द
यशोदाआदिक ब्रजबासियोंको एकओरबैठाकर बड़ेप्रेमसे सुनहु
थालियों मेंछत्तीसव्यंजन उनकेसामने परोसदिये व दूसरीओरश्र
पयदुबंशियोंसमेत बैठकरभोजनकरनेलगे उससमयसबछोटेबड़े
हआनन्ददेखकरप्रसन्नहोगये इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले
हेपरीक्षित श्यामसुन्दर जितनाप्रेम ब्रजबासियोंकेसाथ रखतेथे उ
काहालमुझसे कहानहींजाता जबसबकोईभोजनकरके सुचित्तहु
तबवसुदेवनन्दनने ब्रजबासियोंको पानइलायची व इत्रदेकर नन्द
जीसेविनयकिया हेबाबामेरी भक्तिकरनेवाले भवसागरपार उतरि
जातेहैं सोतुमलोगोंने अपनातनमनधन मेरेऊपर न्यवछावरकर
के मुझसेप्रीतिलगाई इसलिये तुम्हारेबराबर कोईदूसराभाग्यवान
नहींहै देखोजहां ब्रह्मादिकदेवता व बड़े २ ऋषीश्वर जल्दीमेरा
दर्शन ध्यानमेंनहींपाते वहांमैं तुमलोगोंकी भक्ति व प्रीतिदेखकर
दिनरातुम्हारेपास बनारहताहूं इसलिये मेराप्रकाशघट २ व्याप
कसमझकर तुम्हेंमेरेवियोगका शोच नकरनाचाहिये जबकृष्णच
न्द्रआनन्दकन्दने इसीतरहनन्द व यशोदाआदिकको बहुत समझ
झाकर धैर्यदिया तबवहलोग आपसमेंबैठकर बालचरित्र व यशम
हनप्यारेकाकहनेलगे फिरकेशवमूर्त्ति सबगोपियोंको जोउनसेबहु
तप्रीतिरखतीथीं एकान्तमेंबैठाकर जबप्रेमकीबातेंउनसे करनेलगते
बब्रजवासियोंने छविमोहनीमूर्त्तिकीदेखकर अपनी २ आंखेंठंढीकी
उससमय एकगोपी बालापनकी प्रीतिसमझकर निर्भयहोकेबोली

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हेनन्दलाल तुमनेइतनाधन व बिभवकहांसेपाया और सबहाथीघो
ड़ेकिसीके मंगनीलेआयेहौ कि तुम्हारेहैं तुमको वहबातयादहोगी
किहमसबब्रजबाला तुम्हारेएक बिवाहहोनेवास्ते हँसाकरतीथीं सो
अबतुम सोलहहजार एकसौआठस्त्रीसे बिवाहकरके उनकेसाथभो
ग व बिलासकरतेहो भलायहतो बतलाओ तुमकोहमारा दूधदही
चुराकरखाना व ऊखलसे अपनाबांधेजाना व बनमेंगोपियोंको रों
ककर दधिदानलेना सुधिहैयानहीं हमलोगोंको तुम्हारेबियोगमें
एकदिनबर्षसमान बीतताथा तुमनेइतनेदिन हमारेबिना किसतरह
काटा जैसीकठोरता तुमनेहमारेसाथकी ऐसानिर्मोही संसारमेंकोई
नहोगा जबवृन्दाबनबिहारीने ऐसी २ अनेकबातें गोपियोंकीसुनी
तबबिनयपूर्वक उनसेबोले हेप्राणप्यारियो जोसुख व बिलासमैंने
तुम्हारेसाथकियाहै वहआनन्द यहसबबिभवरहनेपरभी नहींमिल
ता जोकोईप्रेमपूर्वक मेराध्यान व स्मरण कियाकरताहै उससेमैंक्ष
णभरभी बिलगनहींरहता मैंग्रहणस्नान करनेकेबहाने केवलतुम
लोगोंकी भेंटकरनेवास्ते यहांआयाहूं॥

चौ॰ हमको तुम सुमिरौ मनमाहीं। हमहूं सदारहैं तुमपाहीं॥
सर्व आतमा हमको जानो। सब जीवनके जीवबखानो॥
आतमही सो आतम देखो। यह अध्यातम ज्ञान विशेखो॥
राजन ऐसी बिधि वहि ठाई। हरिजू सबगोपिन समुझाई॥
सफल जन्म ताको जगमाहीं। जाकोमन हरिचरणन पाहीं॥

यहसुनकर गोपियोंनेकहा प्रभुज्ञानउपदेश करतीसमयहम लो
गोंको उद्धवकाकहना अच्छानहीं मालूमहुआथा परअबउसज्ञान
कागुणाजानकर हमलोगअपनेको तुमसेबिलगनहीं समझतींतुम्हा
राध्यानरखनेसे अर्थधर्म काममोक्ष चारोंपदार्थमिलकर जोसुखह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मैं प्राप्तहोताहै वहआनन्द बड़े २ योगीश्वरोंको भी जल्दीमिलो नहींसक्ता व हमलोगोंका आवनातुम्हारे दर्शनोंकी इच्छासेयहां आहै सोदयालुहोकरऐसावरदानदेव जिसमेंदिनरात तुम्हारेकमल रूपीचरणोंकाध्यानहमारे हृदयमेंबनारहकर प्रतिदिनतुमसेअधि क प्रीतिहो श्यामसुन्दर उन्हैंइच्छापूर्वक बरदानदेकर बहुतदेरतक उनसे लड़कपनकी बातैंकरतेरहे फिरवहांसे उठकर राधाप्यारीके पासचलेगये॥

दो॰ श्रीवृषभानु कुमारिसँग लागेकरन हुलास। भूलिगये रनिवाससब माखनप्रभुसुखरास॥

एकदिन रुक्मिणीआदिक पटरानियां आपसमेंबैठकर अभि मानसेकहनेलगीं जितनीप्रीति श्यामसुन्दरकी हमलोगकरतीहैं उतनाप्रेमगोपियोंकोहोना कठिनहै मुरलीमनोहर अन्तर्यामीनेय हहालजानकर उनकागर्व तोड़नेवास्ते अपनीस्त्रियों व ब्रजबालों कोएकजगह बैठाकरकहा तुमलोगोंमें जिनकोमेरी अधिकप्रीति होगी उनकेहृदयमें मेरावासरहताहोगा यहबचनसुनतेही सबब्रज बाला व स्त्रियोंने अपना २ अंचलउठाकरदेखा तोरुक्मिणीआदि ककोअपनेतनुमें कुछचिह्नहींदिखलाईदिया व गोपियोंकेहृदयमें श्यामरंग छोटासानटवरभेष त्रिभुवनपतिकादेखपड़ा यहमहिमा ब्रजबालोंकी देखतेही वहलोगअपनेप्रेमका घमण्डभूलकर मनमें कहनेलगीं जितनीप्रीतिगोपियां श्यामसुन्दरकी रखतीहैं उतनाप्रे महमैंहोनाबड़ादुर्लभहै॥

दो॰ गोपरूप भगवानको देखत अति सुखपाय। हरिचरणनपरगिरपड़ीं मनमें बहुतलजाय॥

जबकेशवमूर्त्तिलोकाचार करनेवास्ते दूसरेराजोंकेडेरेपर जो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहांटिकेथेगये तबउन्होंने आगेसेआनकर साष्टांग दण्डवत्किया
व सन्मानपूर्वकलेजाकर जड़ाऊसिंहासन परबैठाला व अनेकतरह
की बस्तुभेंटदेकर विनयकिया हेमहाप्रभु हमलोगसदातुम्हारीस्तु
तिसुनकर दर्शनोंकी इच्छारखतेथे सोअबआपका चरणदेखनेसे
अपनेसमान किसीकाभाग्यनहीं समझते जिसतरह आपनेदयालु
होकर हमैंकृतार्थकिया उसीतरह कृपाकरके ऐसाबरदानदीजियेजि
समेंतुम्हारे चरणोंकी भक्ति व प्रीतिसदाहमारे हृदयमें बनीरहै बैकु
ण्ठनाथ उन्हैं बरदान व धैर्यदेकर अपनेस्थानपरचलेआये ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

द्रौपदी व रुक्मिणी आदिको आपसमें बात चीतकरना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जिसतरह द्रौपदी व रुक्मिणीआ
दिकने आपसमें अपने २ बिवाहकीबातचीतकीथी वहकथाकहते हैं
सुनो एकदिन युधिष्ठिर आदिकपांचोंभाई व कौरवबहुत राजोंसमे
त त्रिभुवनपतिकी सभामेंबैठेहुये इसतरह उनकीस्तुतिकरनेलगे ॥

चौ० परमहंस है नाम तुम्हारो । तुमसे प्रकटवेदहैं चारो ॥
बिप्र धेनु रक्षा के काजा । तुमअवतारलियोयदुराजा ॥
आदिअन्त तुम पूरणकामा । तुमको हितसेकरूं प्रणामा ॥

दो० ऐसीबिधि स्तुतिकरी सबराजन सुखपाय । पातक तजि पावनभये परसत प्रभुकेपाय ॥

उसीदिन कुन्ती व द्रौपदी जिनकीमाहिमा सबजगत्जानताहै
रुक्मिणी आदिकपटरानियोंकेपास बैठकर इधरउधरकीबातैं करने
लगींतबकुन्तीने रुक्मिणीसे हँसकरकहा तुमनेअभीतक अपनेबि
वाहका नेगमुझेनहींदिया सोदेनाचाहिये रुक्मिणी हाथजोड़कर
बोली हेमाता मेरातनु व धनसब तुम्हारीभेंटहै फिरद्रौपदी बोलीहे
रुक्मिणी बहिनजिसतरह श्यामसुन्दर तुमलोगोंको बिवाहलायेथे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहहालसुननेकी मैंबहुतइच्छारखतीहूं सोदयाकरके अपने२ बिवाहहोनेकी कथासुनावो यहबातसुनकर रुक्मिणीजी बोलीं ॥

चौ० जो तुमहँसौ नहीं गुणज्ञाता । तौहमकहैं ब्याहकी बाता ॥
देश चँदेली सब जगजानो । तहँ शिशुपाल नरेशबखानो ॥
पहिले तेहिसों भई सगाई । सकलबिवाहकि सोजमँगाई ॥

दो० सो नरेश आयो तभी बहुराजा लैसाथ । रीति भांति कुलकी करी कंकनबाँध्यो हाथ ॥

मुझे मनसाबाचा कर्मणासे यहचाहनाथी कि द्वारकानाथकीदासीहोकररहूं इसलिये त्रिभुवनपति अन्तर्यामी कुण्डिनपुरमेंआये और सबराजाओंको जीतकर मुझेहरलेगये सोउनकीसेवामें रहकर अपनाजन्मस्वार्थकरतीहूं फिरसत्यभामानेअपनेबिवाहहोनेकाहालबर्णनकिया व जाम्बवतीनेअपनेबिवाहका वृत्तान्तकहसुनाया ॥

चौ० फिर बोली कालिन्दी रानी । चितदे सुनु द्रौपदी सयानी ॥
मैं धरिहरिचरणनकी आसा । बहुदिनजलमें कियो निवासा ॥

दो० एकदिवस अर्जुन सहित आये श्रीभगवान । हाथपकड़ म्वहिंलायके दीन्हों पदनिर्वान ॥

मित्रबिन्दानेकहा हेद्रौपदीरानी श्यामसुन्दरकी स्तुतिसुनकर मुझेयह अभिलाषा हुई कि सिवायमोहनप्यारेके दूसरेसेअपनाबिवाह न करूंगी सोमेरेभाइयोंने यहहालजानकर मेराबिवाह त्रिभुवनपतिके साथकरदिया अबमुझेदिनरात यहीइच्छारहतीहै किजन्मजन्मांतर बैकुण्ठनाथकी दासीहोकररहूं फिरसत्याने अपनाहाल जिसतरहद्वारकानाथ उसेब्याहलायेथे कहदिया ॥

चौ० भद्रा कहत सुनो तुम बानी । लोगन स्तुति श्याम बखानी ॥
तबते नेम कियो मनमाहीं । उन बिन और भजौं मैंनाहीं ॥
याते पिता कृष्ण को दीन्हीं । मम इच्छा सब पूरणकीन्हीं ॥

दो० चरणकमल श्रीकृष्णके जो सेवै चितलाय । सुभगभाग्य तेहिनारिकी कासों बरणीजाय ॥

चौ० बोली बहुरि लक्ष्मणा रानी । निज बिवाहकी कथा बखानी ॥
मेरो पिता स्वयम्बर कीनो । मेरो मन हरिके रस भीनो ॥
तहां आय मोहन सुखदाई । पाणिग्रहण करि दया जनाई ॥
[illegible] दासी । रैनिदिवस नित रहत हुलासी ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अब तुम मोकोंदेउ अशीशा। जन्म जन्म सेऊँ जगदीशा॥

जबआठोंपटरानी अपनेअपने बिवाहकाहालकहचुकीं तबसो लहहजारएकसौ राजकन्याबोलीं हे द्रौपदी हमलोगोंकोभौमासुर दैत्यने बरजोरी उठालाकर अपनाबिवाहकरनेवास्ते एकस्थान में रक्खाथा॥

चौ० जब हम शरण कृष्णके आईं। बिनती बहुत करी उन पाईं॥
हरि अन्तर्यामी सुखदानी। अपनीसमझ दयामन आनी॥
दो० तुरत आय पहुंचे तहां माखनप्रभु यदुराय। भौमासुर को मारकर लीन्हों हमें छुड़ाय॥

उसीदिनसे हमलोग मुरलीमनोहरकीसेवामें रहकर अपनेको पटरानियोंकी दासीसमझतीहैं सो हे द्रौपदीतुमहमेंऐसाआशीर्वाद देव जिसमेंसदा श्यामसुन्दरकी सेवामेंबनीरहैं जबद्रौपदी व गांधारी व कुन्ती व यशोदाआदिकने श्यामसुन्दरके सबबिवाहोंकाहाल सुना तबप्रसन्नतासे उन्हेंआशीर्वाद देकर बड़ाईभाग्य रुक्मिणी आदिककी करनेलगीं॥

चौ० फिर सत्यभामा पूंछन लागी। सुनौ द्रौपदी परमसुभागी॥
हम अपनी सब कथा सुनाई। अबतुम हमसों कहौजनाई॥
दो० पांच जननसे कौनबिधि तुम्हरो भयो बिवाह। अद्भुतलीला सुननको मनमें बहुतउछाह॥

यहबातसुनकर द्रौपदीबोली हे प्यारियो हमारेपिताने मेरास्वयम्बररचकर यहप्रणकियाथा जो कोईतेलके कराहमें परछाहींदेखकर अपनेबाणसेमत्स्यबेधे उसीको अपनीकन्या बिवाहदूंगा जब दुर्योधन व जरासन्धआदिक बहुतराजोंने आनकर मत्स्यबेधनेमें लज्जाउठाई व अर्जुनने वहमत्स्यबेधकर मेरेपिताका पणपूराकिया तबमैंने उनकेगलेमें जयमालडालदी यहहालदेखकर सबछोटे व बड़ेप्रसन्नहुये परदुर्योधनआदिक अधर्मीराजोंने लज्जितहोकर पांचोंभाइयोंसे युद्धकिया सोहारमानकर भागगये जबअर्जुनने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुझेघरलेजाकर अपनीमातासेकहा हमएकसौगातलेआयेहैं कुन्तीजी खानेकी बस्तु समझकर बोली कि पांचोंभाई आपस बांटलेव ॥

दो० याते पांचो पाण्डवन लीन्हों मोहिं बिवाहि । प्रकट देहसे पांचहैं जीव एकही आहि ॥

यहबातसुनकर रुक्मिणीआदिक द्रौपदीकीबड़ाईकरनेलगीं इ नीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित एकदिनश्यामसुन्द कीसभामें युधिष्ठिरआदिकपाण्डव व सबयदुबंशी व बहुतसेराजा ठेहुयेथे उसीसमयनारदमुनि व वेदव्यास व बिश्वामित्र व देवल च्यवन व सतानन्द व भरद्वाज व गोतम व बशिष्ठ व भृगु व अत्रि मार्कण्डेय व अगस्त्य व बामदेव व पराशर व परशुरामआदिक ब तसेऋषीश्वर बैकुण्ठनाथके दर्शनवास्ते वहांआये उनकोदेखतेही श्यामसुन्दरने सबराजोंसमेत खड़ेहोकरसन्मानपूर्बक सबऋषीश्व रोंको आसनपरबैठाला व चरणउनकाधोकर चरणामृतलिया बिधिपूर्व्वक पूजनउनकाकरके हाथजोड़कर यहस्तुतिकी ॥

चौ० ऋषि दर्शन दुर्लभ जगमाहीं । देवनहूंको प्रापतनाहीं ॥
आज सुफलहै जन्म हमारो । जोहमपायो दरशतुम्हारो ॥

दो० हरिभक्तनके दर्शकी महिमाकही न जाय । जन्मजन्म केपापसब क्षणमें जात नशाय ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

वसुदेवजी को यज्ञ करना ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जबश्यामसुन्दर ऋषीश्वरोंकी पूज व स्तुतिकरचुके तबउन्होंनेकौरव व पाण्डवआदिकराजोंसे जोवह परथेकहा हमलोगोंका बड़ाभाग्य समझनाचाहिये जोइन ऋषीश्व रोंने दयालुहोकरघरबैठे अपनादर्शनदिया बिरक्तसाधुओंके चरण देखनेसे गंगास्नानकाफल प्राप्तहोकर मरनेउपरांत ऐसाउत्तमस्थ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहनेवास्तेमिलताहै जहांपरबड़ेयोगी व ज्ञानीनहींपहुंचसक्के इस लिये ऋषीश्वरोंका सत्संगमिलना सबतीर्थनहाने व देवस्थानदर्श नसे उत्तमहोकर इनकीपूजा परमेश्वरसमान जाननाचाहिये जो लोग ऋषीश्वर व मुनिनहींमानते उन्हैंगदहे व बैलोंकेसमान सम झना उचितहै॥

दो० चरणसाधुके प्रीतिकरि पूजतहै जो कोय। संसारी सुखभोगकरि अन्त मुक्तपद होय॥

जबऋषीश्वरलोग यहवचन त्रिभुवनपतिकासुनकर लज्जित होगये तबनारदमुनि द्वारकानाथसे हाथजोड़करबोले हे महाप्रभुह मलोग इसयोग्यनहीं हैं जैसाआपने अपनेमुखारबिन्दसेकहा आप केवल संसारीजीवोंको उपदेशकरनेवास्ते इतनीबड़ाई हमारीकी जिसमेंवहलोग ब्राह्मणोंको बड़ाजानकर उनकासन्मानकरैं नहीं हमलोग कौनगिनतीमें हैं हमाराकल्याण इसीमें है जोतुम्हारेच णोंकाध्यान किसीसमय हमैं न भूले देखिये यदुबंशीलोग जिसकु लमें आपने अवतारलियाहै वहांआपको न पहिचानकर अपना ातेदार समझतेहैं तबदूसरेको क्यासामर्थ्यहै जोतुम्हारेभेदकोपहुं नेसकै केवलआप हरिभक्तोंको सुखदेने व दुष्टोंको मारनेवास्ते रम्बार अवतारलेतेहैं नहींतो जन्ममरणसे तुमरहितहौ॥

चौ०

तुमजगजीवन जगत निवासा। हम तुम्हरे दासनके दासा॥
तुमजो स्तुति करत हमारी। हमको भरम होतहै भारी॥
जगतगुरू जगदीश गुसाईं। तुमसे सृष्टि होत सबठाईं॥
तुमहीं सबदेवन के देवा। तुम्हरो हम नहिं जानैंभेवा॥
तुम्हरी माया सबजगछाई। लोगनकी सुधिबुधिबिसराई॥
ताते विविध भांति भ्रममानैं। तुम्हरोभेद कौन विधि जानैं॥

दो० तुम्हरी अद्भुतशक्तिहै घटघट रहीसमाय। फिर सबते न्यारेरहौ माखनप्रभु यदुराय॥

चौ०

कोऊ तुम्हैं पिताकर जानै। कोऊ पुत्रभावमन आनै॥
तुमहीं सबके पालनहारे। कोकहिसकै चरित्र तुम्हारे॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हरोदर्शन बहुसुखदाता । तेहिश्रताप जानेयहबाता ॥
धरती भार उतारनकाजा । भक्तनहित प्रकटे यदुराजा ॥
वेदकहतहैं तुम्हरी बानी । तुम्हरीगति उनहूंनहिंजानी ॥
तुम्हरीभक्तिसकलसुखराशा । कोऊजननहिंहोतनिराशा ॥
तुमदयालुप्रभुपूरणकामा । तुमको हमसबकरतप्रणामा ॥
दो० तुमतो पूरणब्रह्महो सकलधर्मके धाम । विप्रनकी स्तुतिकरत तेहिकारण घनश्याम ॥

हे बैकुण्ठनाथ हमलोग तुम्हारीकृपासे यहचाहनारखते हैं कि आठोंपहर आपकेचरणोंकाध्यान हमारेहृदयमेंबनारहकर हरिक थासुननेसे कभीप्रीति न घटै जबऋषीश्वरलोग यहस्तुतिकरके अ नी २ कुटीपरजानेलगे तबबसुदेवजीने उनकेसामने हाथजोड़क बिनयकिया महाराज कोईऐसा उपायबतलाइये जिसमेंआवा मनसेछूटकर भवसागरपारउतरजाऊँ यहबचन सुनकर जैसेसबऋ षीश्वरोंने नारदजीकीओरदेखा वैसे नारदमुनिहँसकरबोले हे ऋषी श्वरो बैकुण्ठनाथकीमाया ऐसीप्रबल है जिसनेसबसंसारको मोह कर अपनेवशकरलिया जिसतरह गंगाकिनारेके रहनेवाले उनक माहात्म्य न जानकर कूपजलसे स्नानकरतेहैं उसीतरह बसुदेवज संसारीमायामें लपटनेसे श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति जगत्कर्त्ता अपनापुत्रजानकर मुक्तहोनेकी राह हमलोगोंसे पूछतेहैं वहीग सबयदुबंशियोंकीहोकर अपनेअज्ञानसे कोईउनको नहींपहिच ता यहबातऋषीश्वरोंसेकहकर नारदमुनिबोले ॥

चौ० कहत सुनो बसुदेव सुजाना । तुम्हरे घरमें श्रीभगवाना ॥
तिन्हैंछांड़ि तुमंसेगुणज्ञाता । हमसे कहपूछतहौ बाता ॥

हे बसुदेवजी अभीतुम्हारे सामने सबऋषीश्वरोंने श्याम रकी स्तुतिकी तिसपरभी तुमनेउनको नहींपहिचाना इसबा हमैंबड़ाआश्चर्य मालूमहोताहै जोतुम्हारेऐसा ज्ञानीहोकर ई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को न पहिचानै परइसमेंतुम्हारा कुछ दोष न होकर यहबात सच्चसम झनाचाहिये कि बिनाकृपा त्रिभुवनपतिके देवता आदिकभी उन को नहींपहिचानसक्के संसारीमनुष्य कौनगिनतीमेंहैं जोउनकेभेद को पहिचानसकैं ॥

दो० कोऊजन जानैनहीं माखनप्रभुके भेव। इनगति अगम अपारहै सबदेवनके देव ॥

इसलिये वेदानुसार एकबातकहताहूं कि तुमकुरुक्षेत्रमें बिधिपू र्वकयज्ञकरके उसकाफल श्रीकृष्णजीको अर्पणकरदेव तोतुम्हारे हृदयसे अज्ञानताकी काटिछूटकर मुक्तिमिलैगी ॥

चौ० पाप नाश बिन धर्म न होई। यहजानै निश्चय सब कोई ॥
जो हरि सेवामें चित धरै। मनमें कछु इच्छा नहिं करै ॥
तिहिको पाप कटै क्षणमाहीं। मुक्त होय कछु संशय नाहीं ॥

दो० श्रीमाखनप्रभु पूजिकै फलचाहै जो कोय। तिनको कर्म कटैनहीं मुक्ति कौनबिधिहोय ॥

चौ० हरिके काम कर्म शुभकीजै। ताको फल उनहीं को दीजै ॥
या बिधि कर्म करै जो कोई। भवसागर से उतरै सोई ॥
जोतुमकहौ कि हमगृहचारी। योगरीतिके नहिंअधिकारी ॥
तो तुमको यकबात जनाऊं। कर्म योग की राह बताऊं ॥
जो कछु पुण्यदान तुमकरो। नेम धर्म व्रतमनमें धरो ॥
उसकाफल हरिजूको दीजै। मनमें कछुइच्छानहिं कीजै ॥
वहहरि तुमसे न्यारो नाहीं। सदाबसै तुम्हरे घरमाहीं ॥

दो० याबिधि नारदको बचन सुनकर श्रीबसुदेव। महासुदित मनमें भये जबजान्यो यहभेव ॥

यहबचन सुनतेही बसुदेवजीने नारदमुनिआदिक ऋषीश्वरोंसे हाथजोड़कर बिनयकी महाराजआपलोग दयालुहोकर ऐसायज्ञ करादीजिये जिसमेंमेरामनोरथ पूर्णहो यहसुनकर नारदजीबोले बहुतअच्छा तुमतैयारीकरो हमलोग तुमको सोमयज्ञकरादेवैंगे य सुनतेही बसुदेवजीने सबसामग्री मँगाकर जोस्थानकुरुक्षेत्रमें ब हुतपवित्रथा वहांयज्ञकी तैयारीकी जबयज्ञशालामें सबऋषीश्वर यदुवंशी व राजालोगआनकर इकट्ठेहुये तबबसुदेवजी शुभसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यत में ब्रह्मचर्य से मृगछाला पहिनकर देवकीआदिक अठारहों रा
नियोंसमेत यज्ञकरनेवास्ते जाबैठे उससमय अनेकराजा व यदु
शीलोग अपनी २ स्त्रियोंसमेत बड़ेप्रेमसे यज्ञकी टहल करनेलगे
तबवसुदेवजी ने नारदमुनिआदिक ऋषीश्वरों को बरणदेकर कु
एडमें आहुतिडालना आरम्भकिया तबश्यामसुन्दरकी इच्छानु
सार देवतालोग अग्निकुण्डसे प्रत्यक्षनिकलकर अपना २ भागले
नेलगे उससमय उर्वशीआदिक अप्सरोंने आनकर अपना २ नाच
दिखलाया व गन्धर्वोंने गानासुनाया व देवतोंने दुन्दुभी बजाका
आकाशसे फूलबरसाये व सबछोटेबड़े जोवहांपरथे उन्होंनेगायव
जायकर मंगलाचार मनाया व ब्राह्मणोंने वेदउच्चारणकिया व भा
टोंने कवित्तसुनाये इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षि
त उससमय जैसाआनन्द वहांपरहुआथा वहमुझसे बर्णाननहींहो
सक्ता जबबैकुण्ठनाथकी दयासे यज्ञअच्छीतरहसंपूर्णहुआ तब
सुदेवजीने फलउसका मुरलीमनोहरकोसंकल्पदेकर बिधिपूर्वक
नकापूजनकिया व यज्ञकरानेवाले ऋषीश्वरोंको पीताम्बर व सोना
व गौ व रत्नादिक दान व दक्षिणादी सिवायऋषीश्वरोंके औरजि
तनेब्राह्मण व याचक व मंगनवहांपरथे उनको इतनामुंहमांगा
व्यादिकदिया किफिरउनको कुछइच्छा न रही जबऋषीश्वर व ब्रा
ह्मणलोग वसुदेवजीआदिकको आशीर्व्वाददेकर अपने २ स्थान
रचलेगये तबश्यामसुन्दरने कौरव व पाण्डव व दूसरेराजोंकोयथ
योग्यभूषण व वस्त्रदेकर सन्मानपूर्वक विदाकिया उससमय वसु
वजीनेरोकर नन्दरायसे कहा हे भाई तुमनेश्याम व बलरामको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लकर उनकीरक्षाकी है इसलिये मैंजन्मभर तुमसेउऋणानहींहोस
का व मुझसेआजतककोईटहल तुम्हारी नहींबनपड़ी जो उससे उ
ऋणाहोता इसलियेचाहताहूं कि थोड़ेदिन आपयहां ब्रजबासियों
समेतरहते तो मैं भी तुम्हारीसेवा व टहलकरके उऋणाहोता जबन
न्दराय यहसुनकर बड़ेहर्षसेचारमहीने ब्रजबासियोंसमेत कुरुक्षेत्र
मेंटिकेरहे तबवसुदेवजीने प्रतिदिनउनकानयाशिष्टाचार व श्याम
व बलरामने सेवाउनकीप्रेमपूर्वककी॥

दो॰ महिमात्रिभुवननाथकी कासोंबरणीजाय। ब्रजबासिन अतिसुखदियो आनँदउर न समाय॥

जबचार महीनेकुरुक्षेत्रमेंरहकर राजाउग्रसेनने द्वारकापुरीचलने
कीतैयारीकी तबश्यामसुन्दरने नन्द व यशोदासेरोकरकहा मुझसे
तुम्हाराचरण छोड़ानहींजाता परलाचारीसे बिनयकरताहूं कि आ
भी वृन्दाबनजाकर गायोंकीसुधिलीजिये यहबचनसुनतेहीनन्द
व यशोदाव्याकुलहोकर पृथ्वीपरगिरपड़े व ग्वालबाल व गोपियों
ने रुदन करकेकहा हे नन्दकिशोर हमलोग तुम्हाराचरणछोंड़कर
वृन्दावन न जावैंगी हमकोभी अपनेसाथद्वारकापुरीलेचलो जैसी
कठोरताई तुमनेपहिले मथुरामें रहकरकीथी वहीबात अबभी कर
नेचाहतेहो यशोदाअतिबिलापकरके बोली हे देवकीबहिन तुममु
श्यामसुन्दरकी दूधपिलानेवालीसमझकर अपनेसाथलेचलो
सिवायदर्शनकरने मोहनमूर्त्तिके तुमसेभोजन व वस्त्रनलेऊंगी॥

दो॰ मेरेघर गोधनसबै जो चाहौ सो लेव। मनमोहनको नयनभरि प्रतिदिन देखन देव॥

जबराधाप्यारीनेसुना कि श्यामसुन्दर हमलोगोंको बिदाकरके
आपद्वारका जायाचाहतेहैं तबवहअतिबिलाप करके मुरलीमनो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरसेबोली एकबेर तुममुझे बृन्दावन छोड़कर मथुरा चलेगयेथे मेरी यहदशाहुई अबफिर उसीतरह मेराप्राणलिया चाहतेहो लिये अबमैंतुम्हाराचरण नहींछोड़ूंगी दूधकाजलाहुआ छांछ करपीताहै जिसतरह सोलहहजारएकसौआठस्त्रियां तुम्हारीसे करतीहैं उसीतरह मुझकोभी दासीसमझकर अपनीटहलमें रख जबत्रिभुवनपतिने यहदशाब्रजबासियोंकी देखकरसमझा कि य लोग मेरापीछानहींछोड़कर द्वारकाचलाचाहतेहैं तबअपनीमाय फैलाकर उनलोगोंकामन इसतरह फेरदिया कि समझानेबुझाने बृन्दाबन जानेवास्तेमाना उससमय श्यामसुन्दर नन्द व यश दाआदिक सबछोटे बड़ोंको अनेकतरहका भूषण व बस्त्र व रत्नादि कदेकर विदाकिया॥

चौ० श्रीवसुदेव महासुरज्ञानी। ब्रजबासिनसे बोलत बानी॥
तुमतो प्राणसमान हमारे। तुमसे कैसे होहुंनियारे॥
याविधिकहत प्रेमकीबाता। नयननीरभीजे सबगाता॥
दो० ब्रजबासी ब्रजकोचले सबगोधनले साथ। गृहआये आनन्दसों माखनप्रभु यदुनाथ॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित बिदाहोतीसम जैसाबिलाप नन्द व यशोदा व राधाआदिकने कियाथा वह मुझ कहानहींजाता जबकेशवमूर्त्ति द्वारकापुरीमेंपहुंचे तबसबछोटेबड़ ने प्रसन्नहोकर मंगलाचार मनाया व देवतोंने आकाशसे द्वारक पुरीपर फूलबरसाये॥

पंचासीवां अध्याय॥

वसुदेवजीको श्यामसुन्दरकी स्तुतिकरना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षितजिसतरह श्याम व बलराम अप मरेहुयेभाइयोंको लिवालायेथे वहकथाकहतेहैं सुनो एकदिनरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व कृष्णदोनोंभाईप्रातःकालउठकर जैसेमाता व पिताकेचरणोंको
डवत्करनेगये वैसेहीबसुदेवजीने अपनाशिर श्यामसुन्दरकेच
णोंपर धरदिया यहहालदेखकर मुरलीमनोहरबोले हेपिता आप
मेरेचरणोंपरगिरके मुझेक्योंदोषलगातेहौ तबबसुदेवजीने हाथजो
ड़करविनयकी किहेकृष्ण तुमपरब्रह्म परमेश्वरका अवतारहोकर
जन्म व मरणसे कुछप्रयोजन नहींरखते व तुम्हारेआदिअन्तको
कोईपहुँचने नहींसक्ता आजतकमैं तुम्हारीमहिमानहींजानताथा
अवऋषीश्वरोंके कहनेसे मुझेबिश्वासहुआ किआपत्रिलोकीनाथ
हैं व सबजीवोंमें तुम्हारा प्रकाशरहताहै देखोसूर्यदेवता तुम्हारेतेज
से प्रकाशितरहकर सबजगहमें उजियाला करतेहैं जिसजलसे सब
जड़ व चैतन्य जीवोंकापालनहोताहै उसेतुम्हारा रूपसमझनाचा
हिये व चन्द्रमाजो अपनीकिरणसे अमृतबरसाकर संसारीजीव व
वृक्षोंको सुखदेते हैं व बायुचलनेसे जीवोंको आरामामिलताहै व प
र्वतअपनेबोझसे पृथ्वीको दबायेरहकर हिलनेनहीं देते व गंगा वस
मुद्रादिक सदाबहकर कभीनहींसूखते सोउनकोभी केवलतुम्हारी
कृपासे यहसामर्थ्यहुईहै व जितनेजीव जड़ व चैतन्यसंसारमेंदिख
लाईदेतेहैं उनसबको तुम्हारीआज्ञा व इच्छासे ब्रह्मानेउत्पन्नकि
याहै व विष्णुभगवान् पालनकरके महादेवजी उनकानाशकरतेहैं
व आपआदिपुरुष भगवान्का अवतार ब्रह्मा व बिष्णु व महेशसे
भीश्रेष्ठहैं व आपकीमाया ऐसीबलवान्है जिसनेसबजगत्कोमोहि
लियाइसलिये तुमकोकोईपहिचाननेनहींसक्ता बिनातुम्हारेशरण
आये मनुष्यको संसारीमायाजालसे छूटनाकठिनहै जिसतरह वा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जावजानेवाला अपनेमनमाना उसमेंसेराग व रागिनी निकाल
है उसीतरहआप संसारीजीवोंकी बुद्धि अपनेअधीनरखकर जैसे
चाहतेहौ वैसाकर्मउनसे करातेहौ व तुम्हारेएक २ रोममें हजारों
ह्मारेड बँधेहोकर तुम्हारेभेदको कोईजाननेनहींसक्ता आजतक
अपनेअज्ञानसे तुमकोपुत्र समझताथा अबनारदमुनिके कहनेसे
झेबिश्वासहुआ किआपकिसीकेपुत्र व पिता व भाई व मित्रनहीं
केवल पृथ्वीकाबोझाउतारने व दैत्य व अधर्मीराजोंको मारने व
रिभक्तोंको सुखदेनेवास्ते यदुकुलमें अवतारलियाहै सोमुझेऐस
ज्ञानदेव जिसमेंतुमको अपनापुत्रनजानकर आदिपुरुषसमझूं
जिसतरह आपनेअजामिल ऐसे बहुतपापियोंकोतारकर मुक्तिदी
है उसीतरहमुझपरभी दयालुहोकर भवसागरपार उतारदीजिये
जबतक संसारमेंजीतारहूं तबतक सिवायध्यान व स्मरणतुम्हारे
मायाजालमें नफँसूं॥

चौ॰ तुमहीं सबके सिरजनहारे। पांचतत्त्वहैं अंश तुम्हारे॥

दो॰ जन्मादिक जान्योंहत्यों ब्रह्मरूपमनमाहिं। सो मायाके मोहमें ज्ञानरह्यो कछुनाहिं॥

जबश्यामसुन्दरने यहस्तुति अपनीसुनी तबहंसकरबोले
पितातुमको जोबातजानना उचितथा वहतुमनेसमझकरकहा
अपने कहनेपर स्थिररहकर मेराप्रकाश सबजीवोंमें एकसासमझ
करो तोमेरीमाया तुमपर नहींव्यापैगी यहबातसुनकर बसुदेवजी
को ऐसाज्ञानहुआ कि उसीदिनसे श्याम व बलरामको पुत्रभावसे
ड़करईश्वररूप समझनेलगे व हरिचरणोंमें लीनहोकरजीवन्मु
क्तहोगये फिरएकदिन मुरलीमनोहरने देवकीसेकहा हेमातातुम्ह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राक्षण मेरेऊपरबड़ाहै इसलिये जोकुछमांगो सोदेवैं यहबचनसुन तेहीदेवकीनेरोकरकहा हेबेटातुमपरब्रह्म परमेश्वरका अवतारहौजि सतरहतुमनेअपने गुरूकामराहुआबेटा लादियाथा उसीतरहमेरेछ ओंबालकजोकंसअधर्मीनेमारडालेहैंलादेवतोमेराशोचछूटजावै॥

दो० तेहिकारण जान्यों तुम्हैं अपनेमन विश्वास। कर्त्ताहौ सबसृष्टिके माखनप्रभु सुखरास॥
चौ० यहसुनिबोले कृष्णमुरारी। सुनो मातु तुम बातहमारी॥
जो इच्छा तुम्हरे मनमाहीं। प्रभुपूरणकरिहैं क्षणमाहीं॥

ऐसाकहकर श्याम व बलरामसुतललोकमेंगये उनकोदेखतेही राजाबलि आगेसेजाकर दोनोंभाइयोंकेचरणोंपरगिरपड़ा व पीता म्बरहमें बिछवाताहुआ बड़ेआदरभावसे अपनेघरलेजाकर जड़ा ऊसिंहासनपर बैठाला व दोनोंभाइयोंके चरणधोकर चरणामृत लिया और जलअपनेशिर व आंखोंमेंलगाकर सबघरवालोंपरछि ड़कदिया॥

दो० बलिराजा चाहतहतो हरिचरणनकी रैन। श्रीमाखन प्रभु दर्शते तनमनपायोचैन॥

राजाबलिने बिधिपूर्बक पूजाश्याम व बलरामकीकरके सुगन्धा दिकउनकेअंगपरलगाया व पुष्पकागजरा व मोतियोंकीमालागले में पहिनाकर छत्तीसप्रकारकेव्यंजन भोजनकराया व बड़ेहर्षसेराम व कृष्णकेचँवर हिलानेलगा व हाथजोड़कर इसतरहपरस्तुतिकी हे दीनानाथ जिनचरणोंका दर्शनब्रह्मादिक देवता व बड़े २ योगी व मुनीश्वरोंको जल्दीध्यानमें नहींमिलता सोआपनेदयालुहोकर उ नहींचरणोंसे मुझगरीबकी झोंपड़ीपबित्रकी इसलियेअपने बराबर दूसरेकाभाग्यनहींसमझताजबप्रह्लादमेरादादाव शेषनागजी तुम्हा रेभेदको नहींपहुंचसके तबमुझअज्ञानको क्यासामर्थ्यहै जोतुम्हा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रीमहिमा व स्तुतिवर्णनकरनेसकूं जिसतरह आपनेदयालुहोकर घरबैठे अपनेचरणोंका दर्शनदिया उसीतरहमेरीस्त्री व लड़केबालों कोघर व धनसमेत जोमैंभेंटकरताहूंलीजिये व मुझेअपनादास समझकर अपनेआनेकाकारण वर्णनकीजिये यहअधीनवचन सुनकर केशवमूर्त्तिनेकहा हे राजाबलि एकदिनछओंपुत्र मरीचिऋषीश्वरके तरुणाईकेगर्वसे ब्रह्माजीकी हँसीकीथी इसलियेब्रह्माने क्रोधितहोकर उनकोऐसाशापदिया कि तुमलोग दैत्ययोनिमें जन्मलेव उसीकारण उनछओंबालकोंने पहिलेहिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपुके यहांउत्पन्नहोकर फिरमेरेमाताके पेटसेजन्मपाया जबराजाकंसने उनछओंबालकोंको मारडाला तबवहतुम्हारेघरआनकर उत्पन्नहुये अबदेवकीमाता हमारेभाइयोंकेवास्ते बहुतशोचकरती है इसलियेमैं उनकोलेनेआयाहूं यहबचनसुनतेही राजाबलिनेबड़े हर्षसे जैसे उनछओं बालकोंकोलादिया वैसेत्रिभुवनपति उन्हेंअपनेसाथलेकर द्वारकामेंचलेआये जबदेवकीनेछओंबेटोंकोदेखा तबबड़ेप्रेमसेउठाकर दूधपिलानेलगी॥

चौ॰ बार बार निज कंठ लगावे। राम कृष्ण को हांसीआवे॥

उससमयवसुदेवजी व देवकीकोविश्वासहुआ कि श्याम व बलराम परब्रह्मपरमेश्वरकाअवतारहैं यहसमझकर उन्हेंबड़ाहर्षहुआ व श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार उनछओंबालकोंको ज्ञानउत्पन्नहोकर अपनेपूर्वजन्मकीसुधिआई तबवह अपनीमाता व श्याम बलरामको दण्डवत्करके उसीसमय देवलोकमेंचलेगये यहदशा देखकर देवकीकोबहुत हर्ष हुआ परश्याम व बलरामके समझा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से संसारीव्यवहार झूंठासमझकर मनकोधीर्यदिया व हरिचरणों में ध्यानलगाकर मनअपनासंसारीमायासे बिरक्तकरलिया॥

दो॰ यहचरित्र चितलायके कहै सुनै जोकोय। श्रीमाखन प्रभु चरणसे कभूं बिलगनहिंहोय॥

त्रियासीवां अध्याय॥

अर्जुनका सुभद्राको बरजोरीसे उठालेजाना॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जिसतरह अर्जुनका बिवाह सुभद्रा श्यामसुन्दरकी बहिनसेहुआथा वहहालकहतेहैंसुनो जबद्रौपदीकुंतीमाताकीआज्ञासेंयुधिष्ठिरआदिकपांचोंभाईकीस्त्रीहोकररहनेलगी तबनारदमुनिने आनकर युधिष्ठिरआदिकसेकहा कि स्त्री व धनकेवास्ते बापबेटा व भाई२में सदासेझगड़ाहोताआयाहै इसलियेएकउपाय बतलायेदताहूं उसकेकरनेसे तुमपांचोंभाइयोंमें द्रौपदीके वास्ते बिरोधनहोगा यहसुनकरयुधिष्ठिरआदिकनेकहा हे मुनिनाथ जोआपकहैं सोकरैं यहसुनकर नारदमुनिबोले एकबर्षमें तीनसौ साठदिनहोतेहैं सोतुमपांचोंभाई बहत्तर २ दिनकीपारीबांधकर इसप्रणसे द्रौपदीको अपनेपासरक्खाकरो कि जबएकभाईकी पारीमें दूसराभाई बीचमहल द्रौपदीकेजावे तो बारहबर्षतकबनबासकरै यहबचननारदमुनिका पांचोंभाईमानकर उसीतरह द्रौपदीकोअपनेपासरखतेथे सोएकदिन ऐसासंयोगहुआ कि द्रौपदी आधीरातको राजायुधिष्ठिरके मन्दिरमेंथी व उसदिनधनुषबाण अर्जुनका राजा युधिष्ठिरके स्थानमेंरक्खाथा उसीसमय एकब्राह्मणने आनकरअर्जुनसेकहा किमेरीगौ चोरचुराकरलियेजाताहै सोदिलादीजिये यहसुनकर अर्जुननेबिचारकिया कि इससमयराजायुधिष्ठिरके महलमें अपनाधनुषबाणलेनेंजाताहूं तोबारहबर्षतक बनमेंरहनापड़ेगा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व चोरकोमारकर ब्राह्मणकीगौ नहींलादेता तो क्षत्रीकाधर्म नहीं रहता इसलिये धर्मछोड़नेसे बनमेंरहना उत्तमहै ऐसाविचारतेही अर्जुनउसीसमय राजायुधिष्ठिरके महलमेंजाकर अपनाधनुषबाण लेआया व चोरकोमारकर ब्राह्मणकी गौदिलवादी व प्रातसमयअपनेवचनप्रमाण संन्यासीरूपधरकर बनमेंचलागया व उसनेतीर्थयात्राकरतेहुये द्वारकापहुंचकर क्यासुना कि सुभद्रा बसुदेवजीकी कन्यामहासुन्दरी जोबिवाहनेयोग्यहुईहै उसकाबिवाहरेवतीरमण दुर्योधनसे करनाचाहतेहैं व श्यामसुन्दरकीइच्छा मुझेदेनेवास्ते है यहसुनकर अर्जुननेचाहा कि मेराबिवाह उसकेसाथहोता तो बहुत अच्छीबातथी जबअर्जुन इसीइच्छासे चारमहीनाबर्षाऋतुमें अपनेकोसंन्यासीभेषमेंछिपाकर राजमन्दिरकेनिकट मृगछाला बिछाकर बैठा तबद्वारकाबासी उसेमहापुरुषजानकर अपनेघररसोईलिलानेवास्ते लेजानेलगे यहसुनकर एकदिनबलरामजीने उसकोराजमन्दिरमें बुलाभेजा व चरणधोकर बड़ेप्रेमसे छत्तीसव्यंजन खिलाये जैसेअर्जुनने सुभद्रामृगनयनीको देखा वैसेचन्द्रमुखीपरमोहितहोकर उसकेमिलनेवास्ते देवता व पितरमनानेलगा व सुभद्राभी उसकेरूपपरमोहितहोकर मनमेंकहनेलगी यहसंन्यासी न होकर कोईराजकुमार मालूमहोताहै परमेश्वर इसको मेरापतिबनाते तोअच्छाहोता॥

दो॰ अर्जुन भोजनकरिचल्यो मनतोरह्योलुभाय। कुंवरिसुभद्रा मिलनको लाग्यो करनउपाय॥

श्यामसुन्दर अन्तर्यामीको अर्जुनअपनेभक्त व सुभद्राकेमनका हालजानकर यहइच्छाथी जिसमेंहमारीबहिन अर्जुनसे बिवाही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वेपरउन्होंने रेवतीरमणकेडरसे यहबात प्रकटकरनाउचितनहीं
ाना जबएकदिन कथासुननेकेबहानेसे अर्जुनकेपासगये तबउस
त्रिभुवनपतिको बड़ेआदरभावसे बैठाकरबिनयकी हेदीनानाथमु
सुभद्रासे बिवाहकरनेकीबड़ी इच्छाहै जिसतरह आपसबमनोरथ
रपूर्णकरतेआयेहैं उसीतरहदयालुहोकर यहकामनाभी पूरीकी
जिये यहसुनकर द्वारकानाथनेकहा हे अर्जुन तुमथोड़ेदिन यहांटि
को शिवरात्रिको सबछोटेबड़े द्वारकाबासी सुभद्रासमेत रेवतपहाड़
रमहादेवजीकी पूजाकरनेजावैंगे उसदिनतुमभी मेरेरथपरबैठकर
हांजाना जबअवसरमिलै तबसुभद्राकोउठाकर अपनेरथपर बैठा
लेना व रथदौड़ाकर हस्तिनापुरकोचलेजाना कदाचित्कोईसामना
करै तो तुमभी उसकेसाथलड़ना इसमेंकुछमेरेखेदका भय न करना
हसुनतेही अर्जुनप्रसन्नहोकर वहांटिकारहा जबशिवरात्रिकोसब
स्त्री व पुरुषद्वारकावासी सुभद्रासमेतरेवतपहाड़पर पूजाकरनेगयेतब
संन्यासीरूप अर्जुनभी मुरलीमनोहरकेरथपरबैठकरवहांचलागया
व धनुषबाणलेकर रास्तेमेंखड़ाहुआ जैसेसुभद्रा पूजाकरके अपनी
सहेलियोंकोसाथलियेहुईफिरी वैसेअर्जुननेलाज व संकोचछोड़कर
सुभद्राकाहाथ पकड़लिया व रथपरबैठाकर हस्तिनापुरकोचला ज
ब यहबात यदुबंशियों ने सुनकर रेवतीरमणसे कहा तबबलरामजी
क्रोधितहोकरबोले ॥

चौ॰ अभीजाय परलय में करिहौं। भूमिउठाय माथपर धरिहौं॥
मेरी बहिन सुभद्रा प्यारी। ताको कैसे हरै भिखारी॥
महादण्ड अर्जुन को दैहौं। कुँवरि सुभद्राको लै ऐहौं॥

बलरामजी बड़ेक्रोधसे बहुतयदुबंशियोंको साथलेकर अर्जुनके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीछेजानेवास्ते तैयारहुये तबश्यामसुन्दरने रेवतीरमणके पास
करसमझाया कि सुनोभाई अर्जुन हमारीफुआकाबेटा परमसि
जातिव कुलमेंउत्तमहोकर बाणविद्याअच्छीजानताहै यदुबंशि
में मुझेकोईऐसानहीं दिखलाईदेता जोउसकासामनाकरसकै स
है अर्जुनने अनुचितकिया परहमको उसकेसाथलड़ना उचितनह
है क़िसवास्ते कि बेटी अपनीजातिको देनाचाहिये इससेक्याउत्त
है जोअर्जुन पुरानेनातेदारकोदीजावे इसलिये आपदयालुहोक
क्रोधअपनाक्षमाकीजिये व अबइसबातकी चर्चाकरनी उचितनह
कर सामग्रीदहेजकी हस्तिनापुरमें भेजदेनाचाहिये यहसुनतेही
लदाऊजीने झुंझुलाकरहल व मूसलअपनापटकदिया व यदुबंशि
योंसेकहा यहसबकाम मुरलीमनोहरकाहै जो आगलगाकर पानी
कोदौड़तेहैं इनको अपनेभक्तोंकीप्रसन्नताकेसामने लाजकाविच
रनहींरहता इन्होंनेसिखलादियाहोगा तबअर्जुन सुभद्राको उठाल
गया नहींतोउसकोक्यासामर्थ्यथी जोऐसाअनुचितकरता मैंअपन
भाईकी आज्ञाटालनेनहींसक्ता इसलिये जैसायहकहतेहैं वैसाकर
यहकहकर बलरामजीने बहुतसाद्रव्य व भूषण व वस्त्र व हाथी
घोड़ा व रथ व दासी व दासादिककोसंकल्पकरके दहेजहस्तिनापु
में भेजदिया व अर्जुन अपनेघरपहुँचकर वेदानुसार सुभद्रासे विवा
हकरके संसारीसुखउठानेलगा इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेक
हा हे परीक्षित देखोनारायणजी अपनेभक्तोंकाऐसामानरखतेहैं इ
नीक्षमासंसारीमनुष्यभीनहींकरसक्ताअबमैंदूसराहालउनकीमहि
माकाकहताहूंसुनो मिथिलानगरीमेंबहुलाश्वनामराजा परमभक्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हकरमनसा बाचा कर्मणासे अपनेकोदास लक्ष्मीपतिकासमझता
ा व उसीनगरमें श्रुतदेवनाम ब्राह्मण हरिभक्तरहकर आठोंपहरउ
केस्मरण व ध्यानमेंमग्नरहताथा बिनामांगेजोकुछमिलता उसी
में संतोषरखकर किसीसेकुछनहींमांगताथा सो नित्यरातकोदोनों
परमभक्त आपसमेंबैठकरयहबिचारकियाकरतेथे कि कल्हबैकुण्ठ
नाथकेदर्शनवास्ते द्वारकाचलकर अपनाजन्म स्वार्थकरैंगे प्रातस
मयवहां न जाकरकहतेथे कि श्यामसुन्दर अन्तर्यामीदीनदयालु
आपयहांआनकर दर्शनदेतेतोबहुतअच्छाहोता जबउनदोनोंकीस
र्वाभक्ति त्रिभुवनपतिनेदेखा तबवहमुझे व नारदमुनि व वेदव्यास
व वशिष्ठ व अगस्त्य व देवल व बामदेव व अत्रि व परशुरामजीआ
दिक ऋषीश्वरोंको अपनेसाथरथपर बैठाकरमिथिलानगरीकोचले
रास्तेमेंजोदेश व नगरमिलताथा वहांकेराजा आगेसेआनकर अने
कतरहकी सौगातदेते व उनकेदर्शनसे अपना२जन्मस्वार्थकरतेथे॥

दो० माड़वार पंचालह्वै माखनप्रभु यदुराय। पहुंचे अति आनन्दसों मिथिलानगरी जाय॥

जबश्यामसुन्दरकेआनेकासमाचारराजाबहुलाश्व व श्रुतदेव ब्रा
ह्मणनेसुना तबआगेजाकरउन्हेंदण्डवत्किया जिसस्थानपरचरण
कमलवमूर्त्तिकापड़ताथा वहांकी धूरउठाकर वहदोनोंपरमभक्त अप
नेशिर व आंखोंमेंलगातेथे हेपरीक्षित उसदिनकृष्णचन्द्र आनन्द
कन्दका दर्शनपाकर सबछोटेबड़े मिथिलापुरबासियोंको ऐसासुख
मिला जिसकाहाल मुझसेकहानहींजाता फिरराजा व ब्राह्मणनेल
क्ष्मीपतिकेसामने हाथजोड़कर बिनयकिया हे महाप्रभु जिसतरह
आपनेदयालुहोकर अपनादर्शनदिया उसीतरह अपनेचरणों से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमाराघर पवित्रकीजिये यहसुनकर मुरलीमनोहरनेबिचारा
राजा व ब्राह्मण दोनोंमेरेभक्तहैं व इन्हींकीप्रसन्नतावास्ते यहां
याहूं इसलियेदोनोंके घरजाकर इनकामानरखनाचाहियें पहि
राजाकेघरजानेसे ब्राह्मणकहैगा मुझेकंगालजानकर मेरेघरन
आये राजाधनपात्रको मुझसेअच्छाजाना व ब्राह्मणकेघर प्र
जाताहूं तोराजाखेदमानकर कहैंगे श्यामसुन्दर मेराअपमान
के प्रथमब्राह्मणकेघरचलेगये इसलिये वहबातकरनाचाहियेजि
मेंदोनोंप्रसन्नरहैं ऐसाबिचारतेही त्रिभुवनपति दोस्वरूप अप
रथ व ऋषीश्वरोंसमेतबनाकर राजा व ब्राह्मणदोनोंकेस्थानपर
लेगये व श्यामसुन्दरकी मायासे बहुलाश्वराजानेसमझा कि के
ल मेरेघरद्वारकानाथआयेहैं व ब्राह्मणनेजाना कि मुरलीमनोहर
राजमन्दिरपर न जाकर हमारेयहांकृपाकीहै जबकेशवमूर्त्तिराजम
न्दिरपर पहुँचे तबउसनेद्वारकानाथको जड़ाऊसिंहासनपरबैठाक
चरणउनका अपनेहाथसेधोया व चरणामृतलेकर वहजल शिर
आंखोंमेंलगाया और अपनेघरवालोंपर छिड़कदिया व सब ऋषीश्व
रोंको बिलग २सिंहासनपरबैठाकर बिधिपूर्वकपूजा श्यामसुन्दर
ऋषीश्वरोंकीकी व बहुतसेरत्नादिक लक्ष्मीपतिको भेंटदेकर चर
उनका प्रेमपूर्वकदाबनेलगा व बड़ेहर्षसेबोला आजमैंअपनेबरा
किसीदूसरेका भाग्यनहींसमझता देखोजिनचरणोंकादर्शनमहा
वज्रादिकदेवतों व बड़े२ योगीश्वरोंको जल्दी ध्यानमेंनहींमिलता
हीचरणआजमेरेगोदमेंबिराजतेहैं व बैकुण्ठनाथनेमुझेअपनादा
समझकर अपनेचरणोंसे मेराघरपवित्रकिया इसीतरह बहुतस्तु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करके राजाबहुलाश्वने श्यामसुन्दर व ऋषीश्वरोंको छत्तीसव्यंजन खिलाया व बसुदेवनन्दनकोउत्तम २ भूषण व वस्त्रपहिनाकर चँवर हिलातेसमय उनसेबिनयकी॥

चौ० मोहिं सनाथकियो यदुनाथा। दर्शनदियो ऋषिनके साथा॥
दो० तुमतो जगतनिवासहौ माखनप्रभुसुखरास। निजदासनके घरविषे कलुदिनकरोनिवास॥

यहदीनबचनसुनकर त्रिभुवनपति अपनेभक्तका मनोरथपूर्ण करनेकेवास्ते इक्कीसदिन वहांरहे उसेब्रह्मज्ञान उपदेशकिया जब श्यामसुन्दर उसकंगालब्राह्मणकेघरगये तबश्रुतदेवने कुशाकेआसनपर अँगवछा बिछाकर मुरलीमनोहरको बैठादिया व अपनीस्त्री समेत उनकेप्रेममेंडूबकर बड़ेहर्षसेनाचनेलगा व चरणमुरलीमनोहरकाधोकर चरणामृतलिया व गंगाजीकी मिट्टीकातिलक बसुदेवनंदनकेलगाकर तुलसीदल उनपरचढ़ाया व इमिली व बड़हर व आंवलाआदिकफल जोखट्टेमीठेहैं व मोटाचावल खेतमेंकाबिनाहुआ व सागपातलेआकर बड़ेप्रेमसे त्रिभुवनपति व ऋषीश्वरोंकेसामने रखदिया व खसकीमिट्टीसेगंगाजल सुगंधितबनाकर पीनेकोलेआया तबबैकुंठनाथने ऋषीश्वरोंसमेत आनन्दपूर्वक भोजनकिया जबश्रुतदेवहाथ व मुँहवृन्दाबनबिहारी व ऋषीश्वरोंका धुलाकर सुचित्तहुआ तबमुरलीमनोहरके सामने हाथजोड़करबिनयकिया हे महाप्रभू जबसेबालअवस्थाभागकर सयानाहुआ तबसेसिवाय स्मरण व ध्यानतुम्हारेचरणोंके दूसराउद्यमनहींरखता आजआपनेकमलरूपी चरणोंका दर्शनदेकर मुझकंगालकी इच्छापूर्णकी जो लोगसंसारीजालमें फँसेरहकरधन व परिवारका अभिमानरखते हैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनकोतुम्हारेचरणोंकादर्शन स्वप्नेमेंभी नहींमिलता व तुम्हारेस्म
रण व ध्यान व पूजा व हरिचर्चा व कथासुननेमें प्रीतिरखतेहैं वहस
सारमेंअपनीकामनापाकर अन्तसमय मुक्तहोतेहैं इसलियेआपको
हजारोंदण्डवत्करताहूं जोआज्ञादेव सोकरूं॥

दो० हाथजोड़ विनतीकरों धरोंचरणपर माथ। म्यहिं अनाथको दरशदे कीन्हों नाथसनाथ॥

ऐसीप्रीति व भक्तिउसब्राह्मणकीदेखकर श्यामसुन्दरनेकहा
द्विजराज हमतुमको अपनानिजभक्त व मित्रजानकर बहुतप्यार
समझतेहैं व जोमनुष्यवेद व शास्त्रपढ़ेहुये ब्राह्मणोंकी पूजाकरताहै
उसकामनोरथ हमतुरंतपूर्णकरदेते हैं सबऋषीश्वर तुमपरदयालु
होकर अपनादर्शनदेनेयहांआयेहैं जिसतरह तीर्थनहाने वदेवस्था
नकादर्शनकरनेसे मनुष्यपवित्र होजाताहै उसीतरह इनऋषीश्व
रोंकाचरणदेखनेसे शरीरमेंपापनहींरहता सो तुमइनकीसेवाअच्छी
तरहकरो मैंअपनेतनुसे भी ब्राह्मणको अधिकप्याराजानताहूं जो
मनुष्य ब्राह्मणकी सेवानहींकरता उसे मूर्खसमझनाचाहिये ज्ञानी
लोगब्राह्मणको परमेश्वरतुल्यजानतेहैं व मनुष्यतनुमें जोशुभक
मबनपड़े उसीकोउत्तमसमझनाचाहिये नहींतो यहशरीरएकदिन
नाशहोकर कुछकामनहींआता इसलिये तुमकोवेदानुसार हमारे
स्मरण व पूजनमें रहनाचाहिये त्रिभुवनपति इक्कीसदिनश्रुतदेवब्रा
ह्मणकेघरमें ऋषीश्वरोंसमेतरहकर ज्ञान समझानेउपरान्त द्वारका
पुरीकोचले व राहमेंसे सबऋषीश्वरोंको बिदाकरदिया॥

दो० निजगृह पहुंचे आनकर माखनप्रभु यदुराय। पुरवासी प्रफुलितभये दरशपरस सुखपाय॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत्तासीवां अध्याय॥

त्रिभुवनपतिकी स्तुति॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकरपूछा हे शुकदेवस्वामी द्वार कानाथने श्रुतदेवब्राह्मणसेकहा कि तुमशास्त्रानुसार मेराध्यान व पू जनकियाकरो सोमुझेयहबड़ासन्देहहै कि परब्रह्मनिराकार रूपकी स्तुतिजोकुछरूप व रेखनरहकर देखनेमेंनहींआते वेदनेकिसतरह कीहोगी बिस्तारपूर्वककहकर मेरासन्देहछुड़ादीजियेयहबातसुनक शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित वेदमेंस्तुति बैकुण्ठनाथकीबहुतलिखी है मैंइतनीसामर्थ्यनहींरखता जोसबगुण उनकाबर्णनकरसकूं पर थोड़ासाहाल जोमुझेमालूमहै सोकहताहूंसुनो जिसआदि निराका रज्योतिने बुद्धि व इन्द्री व प्राण व धर्म व अर्थ व काम व मोक्षकोब नायाहै वहमहाप्रभु सदानिर्गुणरूपरहकर ब्रह्माण्डरचतीसमय बि राट्रूपधारणकरके शेषनागपर शयनकरतेहैं उनकीकथाइसतरह परहै किसनक व सनन्दन व सनातन व सनत्कुमार चारोभाई पर मेश्वरका अवतार सृष्टिहोनेसे पहिले ब्रह्माकीइच्छानुसार उत्पन्न हुयेहैं सोउनकेस्वभावमें राजस व तामसका प्रवेश न होकर सदावह सतोगुणरूपरहतेहैं व उनमेंसदा एकलीला व कथापरमेश्वरकीकह ताहै व तीनभाई सुनतेहैं जोकुछस्तुति आदिज्योतिभगवान्की उ न्होंनेकीहै वहीबात नरनारायणने नारदमुनिसे सतयुगमेंकीथीवही कथाहम तुमसेकहतेहैं सुनो जिसतरहमकड़ीअपनेमुखसे जालानि कालकरफिरउसे खाजातीहै उसीतरह सबजीवजड़ व चैतन्यतीनों लोकके परमेश्वरकीइच्छासे पलकभांजनेभरमें उत्पन्नहोकरफिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उन्हींकेरूपमेंसमाजातेहैं उससमय महाप्रलयहोनेसे चारोंओरप
नीदिखलाईदेकर केवल आदिज्योतिभगवान् रहिजाते हैं जबउ
कोसंसाररचनेकी फिरइच्छाहोतीहै तबउनकी श्वासासे चारोंवेद
त्पन्नहोकर जिसतरहप्रातसमय बन्दीगण राजोंकी स्तुतिकरके
गातेहैं उसीतरहवहवेद दिव्यरूपसे चतुर्भुजीस्वरूपके सामने हाथ
जोड़कर जगानेवास्ते बिनयकरते हैं ॥

दो० त्यागो निद्रा योगकी जागौ हरी मुरार । निजमाया बिस्तारिकै सिरजो पुनिसंसार ॥

हेपरब्रह्म अविनाशीपुरुष तुमजन्मलेने व मरने व जागने व सोनेसे
रहित व निर्दोषरहकरआठोंपहरचैतन्यरहतेहो व चौदहोंभुवन तुम्हा
रीमायासे उत्पन्नहोकर वहमाया आपकोनहींव्यापती तुम्हाराआ
दि व अन्त व मध्यनरहकर आपकीमहिमाकोकोईपहुँचनहींसक्ता
व तीनोंलोकमें तुम्हारेसमान कोईसुन्दरनहोकर आपसदाप्रसन्न
हतेहैं व सबजीवोंकाउत्पत्ति व पालन व नाशतुम्हारीइच्छासेहोता
है और जितनीदया तुमअपनेभक्तोंपररखतेहो उतनीप्रीति व रक्षा
कोईदेवताअपनेभक्तकी नहींकरनेसक्ता व तुमसबमेंसंयुक्त व सब
स्तुसेअलगरहकर रजोगुण व तमोगुण व सतोगुणसे कुछप्रयोजन
नहींरखके केवलतुम्हारेस्मरण व ध्यानकरनेसे संसारीजीव मुक्त
दवीपरपहुँचतेहैं व तुम्हारानाम जपनेकेतुल्ययज्ञ व तीर्थ व दान
जप व तप व आचार कोईधर्म्मनहींहोता व ब्रह्मा व महादेवआदि
सबदेवता तुम्हारेकमलरूपीचरणकेध्यानमें आठोंपहरलीनरहतेहैं
इसीकारण उन्होंनेऐसीपदवीपाई चौदहोंलोकमें तुम्हारेसमान
ईनहींहै व आपकी बिनाकृपा संसारी मायाजालसे कोईछूटनहीं

CC-0. In Public Domain. U.P. State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का जबबड़े २ योगी व ऋषीश्वर सबइन्द्रियोंको अपनेवशारखकर तुम्हारास्मरण व ध्यान सच्चेमनसेकरतेहैं तबआपकीदयासे उनकी मुक्ति होतीहै॥

दो० आदि अन्त सबजगतके तुमहीं पुरुष अनन्त। सदाएकरस रहतहौ माखनप्रभु भगवन्त॥

हेदीनानाथ अनेकजीव शिशुपाल व कंस व रावण व हिरण्य कशिपुआदिकने तुम्हारेसाथशत्रुताकीथी सोवहलोग अपनेप्राण कैडरसे तुम्हाराध्यानकरनेमें भवसागर पारउतरगये व बहुतजीव तुम्हारीकथा व कीर्त्तनकीचर्चा आपसमेंरखकर अपनाजन्मस्वार्थ करतेहैं उनमेंउत्तम उसीकोसमझनाचाहिये जोआठोंपहर तुम्हारे चरणकमलका ध्यानरखकर संसारीमायासे बिरक्तरहताहै व सिवा भक्तिके मुक्तिकीभी चाहनानहींरखता व सत्सङ्गकेबराबर दूसरी वस्तु अच्छीनहींसमझता व साधुवैष्णवकीसेवा व सत्सङ्गप्रेमपूर्वक करताहै वहमनुष्य तुम्हारीमायाका कुछडर न रखकर सीधा बैकुण्ठमें जहांसूर्य व चन्द्रमाका प्रवेशनहींरहता बिमानपर बैठकर चलाजाताहै॥

दो० वहजन परमपुनीतहै पावतपद निर्बान। अंतकालतुमको मिलत माखनप्रभु भगवान॥

हे बैकुण्ठनाथजोमनुष्य अपनेअज्ञानसे तुम्हारास्मरण व ध्यान छोड़कर दूसरेदेवताकोपूजताहै वहआवागमनमें फँसारहकर मुक्ति पदवीनहींपाता व आपकेरोम २ में हज़ारोंब्रह्माण्ड बँधेरहकर कि सीजीवकाहाल तुमसेछिपानहींरहता जिसतरहसोनेका अनेकगह नाबनानेसे बिलग २ नामहोकर सबगहनागलानेपर केवलसोना रहजाताहै उसीतरहतुम्हाराप्रकाश सबकेतनुमेंरहकर देवतादिक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जोपूजतेहैं वहपूजाभी आपकोपहुँचतीहै इसलिये जोलोगज्ञा
कीदृष्टिसेजड़ व चैतन्यमें तुम्हारारूप एकसादेखकर संसारीतृष्ण
छोड़देतेहैं उन्हींका कल्याणहोताहै॥

दो० यद्यपि ज्ञान प्रकाशते बहुविधिकरै बखान। भक्तिबिना पावैनहीं कबहूं पदनिर्वान॥

हे दीनानाथ ब्रह्माभीविनाशक्ति व आज्ञातुम्हारी संसाररचनेकी
सामर्थ्यनहींरखते जगत्मेंसबव्यवहारझूठाहोकर केवलतुम्हारा
मसच्चाहै जिसतरहअग्निकाढेर एकजगहरहकर उसमेंसेचिनगारी
यांउड़तीहैं उसीतरहअग्निरूपीढेर आपहोकर सबजीवोंको चिन
गारीकेसमान समझनाचाहिये जैसेएकचिनगारी आगसुलगानेसे
बहुतहोजातीहै वैसेचिनगारीरूपजीव आपकीभक्तिकरनेसे तुम्हा
रेतुल्यहोजाताहै॥

चौ० योगेश्वर जो तुमको ध्यावैं। श्वास रोंकि ब्रह्मांड चढ़ावैं॥
हृदय कमल में तुमको देखैं। अद्भुत रूप अनूपम पेखैं॥
भक्त तुम्हारे पढ़त पुराना। वहतुमको पावत भगवाना॥
तुम्हरी भक्ति धरै मनमाहीं। चार पदारथ चाहत नाहीं॥
दो० हँसत तुम्हारे ध्यान में रोम रोम हर्षाय। देखिदशा संसारकी रुदन करत पछिताय॥
चौ० जो तुमकहो सन्त हितकारी। हमसे उत्पति भई तुम्हारी॥
तुमहमको कैसी विधि जानो। जो अस्तुति यहिभांति बखानो॥
अहोनाथ यह कृपा तुम्हारी। नातो केतिक बुद्धि हमारी॥
हमहूं यद्यपि वेद कहावैं। तद्यपि तुम्हरो भेद न पावैं॥
तुम्हरो रूप न देखो जाई। पन्थ तुम्हारो देत बताई॥
ज्ञान भक्ति वैरागजो होय। तव तुमको पहिंचानत कोय॥
जोजन विषय भोग परिहरै। भक्तियोग निज मनमें धरै॥
दो० तुम चरणनके ध्यानमें मगनरहैं दिनरैन। तुम्हरी अमृत कथासुनि लहैं सदा सुख चैन॥

हे बैकुण्ठनाथ जोमनुष्यसंसारमेंमनुष्यतनुपाकर इंद्रियोंकेवश
रहताहै व स्त्री व पुत्रकेप्रेममेंलपटकर तुम्हारीभक्तिनहींकरता उ
अभागी व मूर्खकेसमान समझनाचाहिये वह मनुष्य चौरासीलाख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

योनिमेंजन्मपाकर बड़ादुःखपाताहै व सबजीवपुरानेहोकर अपने कर्मानुसार अनेकतनुमें दुःख व सुखभोगतेहैं जिसतरहतालाबका पानी प्रतिदिन कमहोताजाताहै उसीतरह गृहस्थीकरनेवालेकी बुद्धि व सामर्थ्यघटतीजातीहै ॥

दो० याहीविधि प्राणीसबै बूड़त मायामाहिं। नाहीं तोवह आपसे काहू व्यापत नाहिं ॥
चौ० मनुष जन्मदुर्लभ जगमाहीं। देवनहूं को प्रापत नाहीं ॥
सकल देव यह मनसाकरैं। मानुष ह्वै भवसागर तरैं ॥
नरशरीर नौकासम जानो। वेद पुराण डांडही मानो ॥
केवट रूप गुरू है सोई। नौकापार लगावत जोई ॥
याबिधिसों जो पारन होई। आतमघाती समझोसोई ॥
जबतकभक्तिकरै नहिंकोई। भवसागरसे पार न होई ॥
दो० याते कीजै शुभकरम यही धर्मकी रीति। माखनप्रभु करतारसों जबलौं उपजैप्रीति ॥
अष्टसिद्धिको देखिकै लोभकरै जो कोय। ताहि पदारथ भक्तिको कैसे प्रापतहोय ॥
यहअस्तुति वेदनकही अपनीबुद्धि प्रमान। निर्गुणरूप अनूपको कैसे करै बखान ॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित यहीस्तुतिकर चारोंवेद चतुर्भुजीभगवान्को सृष्टिरचनेवास्तेजगातेहैं व सनकादिकआठोंपहर यहचरचाआपसमेंरखतेहैं व यहीबातनरनारायणनेनारदजीसेकहीथी व नारदमुनिने वेदव्यासहमारे पितासेकही व उन्होंनेविस्तारपूर्वक मुझेपढ़ाई व मैंनेवहीहाल जोसबवेद वशास्त्रकासारहै तुमकोसुनाया औरयहीज्ञानश्यामसुन्दरने राजाबहुलाश्व व श्रुतदेवब्राह्मणको बतलायाथा ॥

दो० यहअस्तुति जो नैनदिन कहै सुनै चितलाय। ताको पापरहैनहीं विष्णुलोक वहजाय ॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥
भस्मासुर दैत्यकी कथा ॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर शुकदेवजीसे विनयकी हे मुनिनाथ मुझेसंसारमेंयहबात उलटीदिखलाईदेतीहै कि नारायण कुंठनाथ लक्ष्मीपतिहोकर अपनेभक्तोंको ऐसाकंगालरखतेहैं कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनकोअच्छीतरहभोजन व वस्त्रभीनहींमिलता व महादेवजी अ
घड़ोंकीतरह अपनावेषरखकर सर्पोंकीसेल्ही व मुण्डमालागले
पहिनेरहतेहैं और उनकेभक्त व सेवक धनपात्रहोकर बड़ेआनन
से अपनाजन्मबिताते हैं इसकाक्याकारणहै यहसंदेहमेराछुड़ा
जिये यहबातसुनकर शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित यहतुमनेबहु
अच्छीबातपूछी इसकाहालसुनो ॥

दो० सदातीनपन बसतहैं शिवकी मूरतिमाहिं । सकलकामनादेतहैं एकमुक्तिको नाहिं ॥

हे राजन् त्रिभुवनपतिभगवान् संसारीबिरक्तरहकर किसीवस्तु
की चाहनानहींरखते इसलिये उनकेभक्तलोगभी नाशहोनेवाल
संसारीवस्तुको चाहते व लक्ष्मीपति ऐसीइच्छानहींकरते कि हमा
भक्तसंसारीमायामेंलपटकरनष्टहोवैं तुमनेसुनाहोगा कि कईमनुष्य
महादेवकेभक्तोंने उनसेबरदानपाकर उन्हींकेसाथ शत्रुताकी थी
इसीकारण परब्रह्म परमेश्वर मायारूपीधन जिसकेमदमें मनुष्य
अन्धाहोकर अनेककुकर्म्मकरताहै अपनेभक्तोंकोनहींदेते हेराजा
जोप्रश्न तुमनेहमसेकियाहै यहीबात एकबेरराजायुधिष्ठिर तुम्हा
दादाने श्रीकृष्णजीसेपूंछीथी तबश्यामसुन्दरनेकहा हेराजनूमा
रूपी लक्ष्मीमिलनेसे जिसमेंबहुतबिकारभराहै मनुष्यसंसारी सु
मेंलिपटजातेहैं व जबतक मुझेयादनहींकरते तबतकआवागमन
नहींछूटते इसलिये अपनेभक्तोंकोनहींदेता जिसमेंवहलोगसंसा
सुखमेंलपटकर परलोककाशोच भूल न जावें इसवास्ते जोमनु
मेरीशरणपकड़ताहै उसकाधन व अभिमानकृपाकीराहहरलेत
जबनिर्द्धनहोनेसे स्त्री व पुत्र व भाईआदिक सबपरिवारवाले उस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निरादरकरतेहैं तबवह उनकाप्रेमछोड़करआनन्दसे साधु व वैष्णव का सत्संगकरताहै जब महापुरुषोंकी संगतिसेज्ञानपाकर मेरेभजन वस्मरणमेंध्यानलगाताहै तबहमउसको मुक्तिपदवीदेते हैं व ब्रह्मा आदिक दूसरेदेवतोंकीपूजाकरनेसे जोलोग स्वर्गादिकमेंजातेहैं वह सुखसदास्थिरनहींरहता व मेरीभक्ति व पूजाकरनेवाले विभीषण व अर्जुन व सुग्रीव व प्रह्लाद व अम्बरीषआदिक संसारीसुखभोग कर अटलपदवीपातेहैं इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित महादेवआदिक दूसरे देवते अपनीपूजाकरनेसे प्रसन्नहोकर छोड़देनेमेंखेदमानतेहैं व बैकुण्ठनाथसदासे सात्विकीस्वभावरहकर किसीको शापनहींदेते॥

दो॰ बहु असुरनको रुद्रजू दियेतुरत बरदान। तिन सन्तनसों आपही पायो कष्टनिदान॥

हे परीक्षित बाणासुरकीकथा तुमसुनचुकेहौ और शिवशंकरसे बरदानपाकर उन्हींके साथलड़नेआयाथा अबहम दूसरे दैत्यका हालकहतेहैं सुनो एकदिनवृकासुरदैत्य महामूर्खशकुनीकाबेटा तप करनेकी इच्छारखकर घरसेबाहरनिकला जब उसनेराहमें नारद मुनिकोआतेदेखा तबदण्डवत्करकेपूछा हे मुनिनाथ मुझे तपकरनेकीइच्छाहै सो तुमदयालुहोकर बतलाओ कि ब्रह्मा व विष्णु व महेश तीनोंदेवतोंमें जो तुरन्तप्रसन्नहोकर बरदानदेतेहों उनका तपकरूं यहबातसुनकर नारदजीबोले हे वृकासुर इनतीनोंदेवतोंमें महादेवजी तुरन्तबरदानदेतेहैं व थोड़ासाअपराधकरनेमें अपना क्रोधक्षमानहींकरते देखो उन्होंनेसहस्रार्जुनके तपकरनेसेप्रसन्नहोकर उनकोहज़ारभुजादीथीं इसलिये तुम शिवजीकातपकरो तो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जल्दी फलमिलेगा जब नारदमुनि यहबातकहकर चलेगये तबवृ
कासुर उसीसमयकेदारेश्वरकी ओरगया ॥

दो० शिवकी मूरति थापिकरि अग्निकुण्डकेतीर। बैठेउ आसनमारके होमन लग्यो शरीर॥

जब सातदिन व रातमें उसने अपनेअंगकासबमांसछुरीसे काट
करहवनकरदिया व आठवेंदिनस्नानकरके अपनाशिरकाटनेचाहा
तबभोलानाथने अग्निकुण्डसेनिकलकर उसकाहाथपकड़लिया
व अपनेकमण्डलुकाजल उसपरछिड़कदिया जबउसकेप्रतापसेवृ
कासुरका अंगदिव्यरूपहोकर कुन्दनकेसमान चमकनेलगा तब
शिवजीने कहा ऐवृकासुर हमतेरीपूजासे प्रसन्नहुये अबतुझे जो
इच्छाहो बरदानमांग वचनसुनतेही वृकासुरनेहाथजोड़करविनय
किया हे महाप्रभु मुझे ऐसाबरदानदीजिये कि जिसकेशिरपर अप
नाहाथरखदूं वह उसीसमयजलकर राखहोजावै यहबात सुनकर
शिवजीने बिचारा कि यहअधर्मी दैत्य ऐसाबरदानमांगकर संसा
रीजीवोंको दुःखदेनेचाहताहै परक्याकरूं वचनदेचुका यहसमझ
कर महादेवजीबोले बहुतअच्छा हमनेमुंहमांगा बरदानतुमकोदि
या जबवहदैत्य यहबरदानपाकर प्रसन्नहुआ तबउसअधर्मीने पा
र्वतीजी का रूपदेखकर बिचारकिया इससे दूसरीबात उत्तमनहीं
जो मैं अपनाहाथ भोलानाथके शिरपर धरकर उन्हैंजलादूं व पा
र्वती को अपनेघरलेजाऊं जबवहपापी ऐसाबिचारकर शिवजीके
मस्तकपर हाथरखनेवास्तेचला तबमहादेवअन्तर्यामी वहांसेभा
गकर सबलोक व दशोंदिशामेंगये परउसदैत्यने उनकापीछानहीं
छोड़ा जबब्रह्मादिक कोईदेवता शिवजीकीरक्षानहींकरसके तबवह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व्याकुलहोकर वैकुण्ठनाथकेसामने दौड़चलेगये व दण्डवत्करके हाथजोड़करविनयकिया हे त्रिभुवनपति मैंनेयहदुःखअपनेऊपर आपउठायाहै जिसमेंइसदैत्य पापीकेहाथसे मेराप्राणबचै वहउपा यकीजिये यहदीनवचनसुनतेही नारायणजीभक्तहितकारीने महा देवसेकहा तुमधीर्यरक्खो मैं इसकायत्नकरताहूँ ऐसाकहकर वैकुंठ नाथने उसीसमय अपनेको ब्राह्मणरूपबनालिया व ऋषीश्वरोंकी तरह कमण्डलु व मृगछालालियेहुये जहांवृकासुर दौड़ाचलाआ ताथा वहांजाकरउससेकहा हेवृकासुर तू इतनाघबराकरकहांभागा जाताहै अपनासमाचारहमसेतोबतलाव जबउसदैत्यनेबरदानपाने व अपनीइच्छाकाहाल त्रिभुवनपतिसेकहा तबवैकुण्ठनाथऋषी श्वररूपबोले तूबड़ाअज्ञानहै कि महादेवजीकीबात जोविष व धतू रखाये व भूतोंकोसाथलिये नंगेफिराकरतेहैं मुण्डमाल व सर्पोंका हारपहिनकर शास्त्रानुसारनहींचलते व श्मशानपरबैठेहुये बौड़हों कीतरहहँसते व नाचतेहैं सच्चामानकर इतनादुःखउठाताहै जबसे दक्षप्रजापतिने महादेवको शापदिया तबसेसबबात उनकी सच्चीन हींहोती इसलिये तुमअपनेशिरपर हाथरखकर पहिले उसबरदान कीपरीक्षाकरलेव जबतुम्हारेनिकट उनकावचन सचठहरजावै तब जोचाहनाहो सोउनकेसाथकरना यहसुनतेही वृकासुरने परमेश्वर कीमायासे वहवचनसच्चामानकर जैसेअपनेशिरपरहाथरक्खा वैसे जलकर राखकीढेरीहोगया यहचरित्रदेखतेही भोलानाथप्रसन्न होकरनाचनेलगे व देवतोंने आकाशसे त्रिभुवनपतिपर फूलबर्षाये व अप्सरोंनेनाचकरगन्धर्वोंनेगानासुनाया तबउससमयआदिपुरुष

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भगवान्ने महादेवजीसेकहा ऐसेअधर्मी दैत्यको इसतरहका व
दानदेन उचितनहींहै जगद्गुरुका अपराधकरनेसे वहअपनेदराड
कोपहुँचा यहबातसुनकर शिवजीने बिनयकी हेमहाप्रभु तुमहमा
रीरक्षा करनेवाले बनेहौ इसलिये हमसेअपराधभी होजाताहै जब
भोलानाथ इसीतरह बहुतस्तुति वैकुण्ठनाथकीकरचुके तबत्रिभुव
नपतिने उनको धैर्यदेकर बिदाकिया इतनीकथासुनाकर शुकदेव
जी बोले॥

चौ० रुद्र मोक्ष लीला सुखदाई। जो जन कहै सुनै चितलाई॥
दो० रहै सदा सुखचैनसे दुखपावै वहनाहिं। सबपापनसे छूटकर मुक्तहोत क्षणमाहिं॥

नवासीवां अध्याय॥

भृगुऋषीश्वरको लक्ष्मी पतिकी छातीपर लातमारना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित एकसमय भृगुआदिक सातोंऋषी
श्वर सरस्वतीकिनारे बैठेहुये आपसमें ज्ञानचर्चा कररहेथे उससम
य कईऋषीश्वरोंने भृगुजीसेपूछा ब्रह्मा व विष्णु व महेश तीनोंदेव
तोंमेंकौनबड़ाहै जबयहबातसुनकर किसीने महादेव किसीने विष्णु
किसीनेब्रह्माको बतलाया तबभृगुऋषीश्वरनेकहा इनतीनों देवतों
में जोक्रोधअपना क्षमाकरके बुराईके बदले भलाईकरै उसीको उ
त्तमसमझनाचाहिये सोमैंजाकर उनकी परीक्षालेआताहूं ऐसाक
हकर भृगुऋषीश्वरब्रह्माजीकी सभामेंचलेगये व बिनादण्डवत्कि
ये उनके सामनेजाबैठे यहदेखकर सबऋषीश्वर व ब्राह्मणोंने जो
वहांबैठेथे अचम्भामाना व ब्रह्माने क्रोधसे भृगुकीओरदेखकर शा
पदेनेचाहा परबेटाजानकर कुछनहींबोले॥

दो० पुत्रआपनोजानिकै भयेकोपते शांति। प्रथमपरीक्षा पिताकी सुतलीन्हीं यहिभांति॥

जबभृगुऋषीश्वरने रजोगुणसे भरा ब्रह्माको अपने ऊपरक्रोधित

CC-0. In Public Domain. U.P. State Museum, Lucknow. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खा तबवहांसेउठकर कैलाशपर्वतपर जहांगौरीशंकर बिराजतेथे
ये जैसेभोलानाथने भृगुऋषीश्वर अपनेभाईकोआतेदेखा वैसेख
होगये व हाथपसारकर गलेमिलनेचाहा तबऋषीश्वरने महादेव
सेकहा तुमअपनाकर्म व धर्मछोड़कर मसानपरबैठेरहतेहो इस
लिये मुझेमतछुओ यहअभिमानपूर्वक वचनसुनतेही जबगौरीप
तिने क्रोधसेत्रिशूलउठाकर भृगुऋषीश्वरको मारनेचाहा तबपार्व
तीने शिवजीसेहाथजोड़कर बिनयकी महाराजयहऋषीश्वर तुम्हा
रेछोटाभाईहै इसकाअपराधक्षमाकीजिये जबपार्वतीकेकहनेसे भृ
गुऋषीश्वरकाप्राणबचातबभोलानाथको तमोगुणबशदेखकरवहां
सेविष्णुभगवान्की परीक्षालेनेवास्ते बैकुंठकोगये वहबैकुंठकैसाहै
जहांसूर्य व चन्द्रमाकाप्रकाश होनेपरभी दिनरात बराबरउजिया
रा बनारहताहै औरवहांसबपृथ्वी सोनहुली व रत्नजटितहोकरबा
रहोंमहीने तुलसीकेबृक्ष व सुगन्धितफूल व उत्तम २ फललगेरहते
हैं व अच्छे २ तड़ाग व बावलीआदिक बनेहोकर उसकेकिनारेअने
करंगकेपक्षीबोलतेहैं जबभृगुऋषीश्वरने बेधड़कबीचमहलके जहां
महजड़ाऊ पलँगपरसोयेथे व लक्ष्मीजी उनकापैरदाबतीथीं घुसकर
एकलातबाईंओर छातीमेंमारी तबबैकुंठनाथनींदसेचौंककर ऋषी
श्वरकोदेखतेही उनकापैरदाबनेलगे व चरणोंपरगिरकर बिनयपूर्व
कबोले हे द्विजराज मेराअपराधक्षमाकीजिये मेरीछातीबड़ीकड़ीहै
इसलिये आपकेकोमलचरणपर अवश्यदुःखपहुँचाहोगा मुझेतु
म्हारेआनेकासमाचार मालूमहोता तो आगेसेपहुँचता औरआपने
कृपाकीराह मेरालोकपवित्रकरके यहजोलातमारीहै इसलिये सदा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसचरणकाचिह्न अपनीछातीपर बनारहनेदूंगा इसमेंमुझेकुछ
ज्जानहींहै जबभृगुऋषीश्वरने ऐसीक्षमा त्रिभुवनपतिमेंदेख
मीठावचनसुना तबलज्जितहोकर उनकीस्तुतिकरनेलगे व लक्ष
जीनेलातमारतीसमय मनमेंक्रोधकियाथा परवैकुंठनाथकेडरसे
षीश्वरको कुछशापनहींदिया जबत्रिभुवनपतिने भृगुऋषीश्वर
पूजनकरके उन्हेंविदाकियातबउन्होंने सरस्वतीकिनारेजाकरती
देवतोंकाहाल अपनेसाथियोंसेकहदिया यहसमाचारपातेही सब
षीश्वर दूसरेदेवतोंकापूजनछोड़कर स्मरण व ध्यानविष्णुभगवा
कासच्चेमनसे करनेलगे इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हे प
क्षित एकदूसरीमहिमा श्यामसुन्दरकीकहतेहैं सुनो द्वारकापुरीमें
कब्राह्मणबहुतशीलवानअपनेकर्म व धर्मसेरहताथा जबउसब्राह्मण
केयहांएकउत्पन्नहोकरमरगया तबवहलोथ अपनेबालककीराजा
उग्रसेनकेपासलेजाकर कहनेलगा तुम्हारेअधर्मकरनेसेमेरापुत्र
ताकेसामनेमरगया व प्रजालोगदुःखपातेहैं द्वापरमेंकलियुगका
क्षणराजाकेपापसेहोताहै वहब्राह्मण अनेकदुर्बचन कहनेउपरा
मराहुआवेटाउग्रसेनकेद्वारेपररखकर अपनेघरचलाआयाइसीतर
सातबालक औरउसब्राह्मणकेघर उत्पन्नहोकर मरगयेसो वहब्रा
णउनकीलोथउसीतरह राजाकेयहांरखआया जबनवईबेर उसक
स्त्रीकेगर्भरहातब उसब्राह्मणने राजसभामेंजाकर श्याम व बलरा
केसामनेअतिविलापकरकेकहा हेदीनानाथपहिलेराजाउग्रसेन
पीकोधिक्कारहैजिसकेराज्यमेंप्रजादुःखपातेहैं दूसरेउनलोगोंको
क्कारहैजोइसअधर्मीकीसेवामें रहतेहैं तीसरेमुझेधिक्कारहै जोऐसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौंके देशमेंरहताहूं जिनकेअधर्मसे मेरेपुत्रनहींजीते और तुमक्ष
यहोकरब्राह्मणकादुःख नहींछुड़ातेजबउसब्राह्मणनेराजसभामें
ड़होकरअनेक बातैंइसीतरह परकहीं व श्याम व बलराम व प्रद्युम्न
दिक किसीयदुवंशीने उसकोउत्तरनहींदिया तबअर्जुनजोउससे
य वहांबैठाथाबाणबिद्याका घमण्डरखकरअभिमानपूर्वक बोला
ड़लज्जाकीबातहै जो उग्रसेनमहाराज कहलाकर ब्राह्मणका
खनिवारणनहींकरते जिसराजाकेदेशमें गो व ब्राह्मणकष्टपाते हैं
सकायश व धर्मनहींरहता ऐसाकहकर अर्जुनउसब्राह्मणसेबोला
द्विजराज तुम किसवास्ते इतनारोकर दुःखउठातेहौ इनदिनों रा
आप स्वार्थीहोकर गो व ब्राह्मणकीरक्षा नहींकरते ॥

चौ॰ तुम्हरे पुत्रजन्म ते मरैं। पुरके लोग यत्नहिं करैं ॥
दो॰ यद्यपि बहुयोधा बसैं नगर द्वारका माहिं। तद्यपि बिद्या धनुषकी जानतकोऊ नाहिं ॥

ब्राह्मणदेवता अबतुमधैर्यधरकरअपनेघरबैठो जबतुम्हारीस्त्रीके
लकउत्पन्नहोनेकासमयआवेतबतुममुझसेआनकरकहिदेनामैं
सबालककी रक्षाकरूंगा यहसुनकर उसब्राह्मणने अर्जुनसे कहा
हांश्याम व बलराम व प्रद्युम्नऐसेशूरवीरबैठेहोकर कुछनहींबोल
वहांऐसे अभिमानपूर्वक बचनकहतेहौ तुम्हारीक्यासामर्थ्यहैजो
रेबालककोमरनेसेबचाओगे यहबचनसुनकरअर्जुनबोलेमुझेश्री
ष्ण व बलभद्र व प्रद्युम्नमतसमझो मैंअर्जुनगाण्डीवधनुषकाबां
नेवालाहूंमेरेसामनेमृत्युकीसामर्थ्यनहींहैजोतेरापुत्रमारनेसकै

चौ॰ शिवसे युद्ध कियो यक बारी। महा प्रसन्न भये त्रिपुरारी ॥
मेरो बचन सांच तुम जानो। कछुसंदेहन मनमें आनो ॥
तुम्हरे सुतकी रक्षा करिहौं। नातो अग्निमाहँ मैंजरिहौं ॥

यहबातसुनकर ब्राह्मणअपनेघर चलागया जबउसब्राह्मणकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्त्रीकेबालक उत्पन्नहोनेका समयपहुंचा व उसनेअर्जुनकेपा
करयहहालकहदिया तबअर्जुनमहादेवको नमस्कारकरके ध
णलियेहुये ब्राह्मणकेघरचलागया व बाणोंकाऐसाकोट चारों ठाकर
रवनादिया कि जिसमेंहवाभी ब्राह्मणकेघरमें जानेनसकै व आ अर्जुनने
नुबाणलेकर उसबालकका प्राणबचानेवास्ते चारोंओरफिरनेल में खो
जब उस ब्राह्मणका बालकउत्पन्नहोकर बिनारोये न मालूमक पुरीमे
अन्तर्द्धानहोगया तबउसकीस्त्री अपनेस्वामीसे बोली महारा चौ०
मनेअर्जुनकी बहुतबड़ाईकीथी किवहमेरेबालककीरक्षाकरैगा प दो० कि
लेपुत्रको तोक्षण दोक्षणरोतेहुयेभी देखतीथी इसबेरतोमैंनेउस जबअ
अच्छीतरह आंखोंसेभीनहींदेखा न मालूमकहांलोथ उसकी र्ब्बप्रहा
होगई यहवचन अपनीस्त्रीकासुनतेही उसब्राह्मणने अर्जुनकेपा शूरताई
जाकर ऐसादुर्वचन उसेसुनाया कि वहअतिलज्जितहोकर राज चलो
उग्रसेनकीसभामें चलागया व उसकेपीछेब्राह्मणनेभीवहांपहुँच रूंगा
र सभावालोंकेसामनेकहा हे अर्जुनतैंनेमेरापुत्र बचानेवास्ते पूर्व्वओ
कियाथासोतेराअभिमानक्याहुआजोतूमेरेपुत्रकाप्राणबचानेन सीजग
सका इसलियेतुझेधिक्कारहै कुछलज्जारखताहो तोचुल्लूभरपा श्रीकृष्ण
मेंडूबमर व किसीकोअपनामुख मतदिखला और आजसेधनुर्व तादिख
रखना व झूठबोलनाछोड़करवनमेंचलाजा तैंनेराजाबिराट्कर धिकअप
हिजराबनकर बर्षरोजअपनादिनकाटाहैतुझसेक्याशूरताईहोगी दो० तेज
बइसीतरह उसब्राह्मणने अनेकदुर्वचन राजसभामें अर्जुनको जबइ
तबवहबहुतलज्जितहोकरबोलाहेद्विजराजतुमयहसबबातसच्च नीलह
तेहौ अबतमसे यहप्रतिज्ञाकरताहूं कि तीनोंलोकमेंसे तुम्हारेमी ड़तेहों
आंख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वालकढूंढ़करलादूंगा नहींतोधनुर्बाणसमेत अग्निमेंजलकर म
जाऊंगा यहबातब्राह्मणसेकहकर अर्जुननेस्नानकिया व धनुर्बाण
ठाकर उनलड़कोंको ढूंढ़नेवास्ते स्वर्ग व पातालमेंचलागया जब
र्जुनने चौदहौंलोक व यमपुरी व स्थानधर्मराज व आठौंलोकपा
में खोजनेपरभी उनकापतानहींपाया तबशोचकरताहुआ द्वार
कापुरीमें आनकर अपनेसेवकोंसेबोला॥

चौ० बहुत काठ लाओ यहिठाईं। अग्नि लगाय देवचौठाईं॥
दो० करिहौं अग्नि प्रवेशमैं जरिहौं धनुषसमेत। वचनहारि संसारमें पतिधरिहौं केहिहेत॥

जबअर्जुनचितातैयारकरके अग्निमेंकूदनेलगा तबश्यामसुन्दर
र्व्वप्रहारी भक्तहितकारीने अर्जुनकेपासजाकरकहा हेभाईतुम्हारी
ूरताईमें कुछसन्देहनहींहै अभीतुमकिसवास्ते जलतेहो हमारेसा
चलो जहांब्राह्मणकेपुत्रहोंगे वहांसेढूंढ़लाकर तुम्हारीप्रतिज्ञापूरी
रूंगा ऐसाकहकर त्रिभुवनपतिअर्जुनसमेत अपनेरथपरचढ़े व
र्व्वओर सातोंद्वीप व सातोंसमुद्र व लोकालोक पर्वतकेपारजाकर
सीजगहपहुंचे जहांसिवाय अँधेरेकेकुछदिखलाई नहींदेताथा त
श्रीकृष्णजीने सुदर्शनचक्रकोआज्ञादी कि तुमअपनेप्रकाशसेरा
तादिखलातेचलो यहवचनसुनतेही सुदर्शनचक्रहजारसूर्यसे अ
धिकअपनातेजबढ़ाकर आगे २ चला॥

दो० तेज सुदर्शनचक्रको रहेउ चहूंदिशि छाय। अर्जुन देखसकै नहीं राख्यो नयन छिपाय॥

जबइसीतरह बहुतदूरतक वहरथचलागया तबवहांपर इसवेगसे
नीलहर मारताहुआ दिखलाईदिया जिसतरहदोपर्वतआपसमें
ड़तेहों जबश्यामसुन्दरने अपनारथपानीमेंडालदिया तबअर्जुन
ने आंखखोली तोउसेवहांपर एकमहल रत्नजड़ितबहुतलम्बा व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौड़ा चमकताहुआ दिखलाईदिया जबरथसेउतरकर दोनोंभी
गये तबउसमकानमें क्यादेखा कि शेषनागजी अपनेकोमल
परनीलाम्बर पहिने व हजारमुकुट व दोहजार कुण्डलजड़ाऊ
णकियेलेटेहैं सिवायलेननये २नामपरमेश्वरके दोनोंहजार जि
सेदूसराकुछप्रयोजननहींरखते व शेषनागकीछातीपरविष्णुभग
नमोहनीमूर्त्तिकमलनयन अष्टभुजीस्वरूपसे मुकुट व जड़ाऊ
ना अंग २ परसाजेजनेऊकाजोड़ा व बैजयन्तीमाला व कौस्तुभ
णिगलेमेंडाले पीताम्बरपहने व ऊपरनारेशमीओढ़े इससुन्दरता
से विराजतेहैं जिनकारूप देखकरएक २ अंगमहासुन्दरपर तीन
लोककेजीवमोहित होजावैं व शंख व चक्र व गदा व पद्म चारोंशस्त्र
अपना २ रूपधारणकिये नन्द व सुनन्द व पुण्य व शील व सुशी
ल व गरुड़ व विशुक व सेन व सनाभनवोमंत्री उनकेचारोंओरबैठे
हैं व ब्रह्मा व महादेवआदिक देवतासामनेखड़ेहुये स्तुतिकरतेहैं ज
अर्जुनयहचरित्रदेखकर सबअभिमान अपनाभूलगया तबश्याम
सुन्दरने अर्जुनसमेत अष्टभुजीस्वरूपके सामनेजाकर इसतरह
न्हैंनमस्कारकिया जिसतरह कोईअपनीपरछाहींको दण्डवत
उसस्वरूपने श्यामसुन्दरकोदेखतेही हँसकरकहातुमनेएकसौपच
सवर्षमर्त्यलोकमेंरहकर पृथ्वीकाबोझाउतारा व मेरीशक्तिसेअवत
रलेकर बहुतदैत्य व अधर्मियोंकोमारा व देवता व ब्राह्मण व हरि
क्तोंको सुखदेकर मुझे प्रसन्नकिया इनदिनोंमेरामन तुम्हैं देख
वास्ते बहुतचाहताथा इसलिये मैंनेब्राह्मणके बालक यहांमँगाक
अर्जुनसेअभिमानपूर्वक वचनकहलादिया कि उसकीप्रतिज्ञारक्ष

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्ते तुमअवश्य यहांआवोगे वेसववालकयहांपरहैं उनकोलेजाव
साकहकरजबअष्टभुजीस्वरूपभगवान्ने श्यामसुन्दरकोविदाकि
ा तबवहआपसमें नमस्कारकरके ब्राह्मणकेलड़कोंकोलेकर अर्जु
समेत द्वारकापुरीमें आये व अर्जुनने वे सववालक उसब्राह्मणको
दकर अपनीलज्जाछुड़ाई व शिरअपना मुरलीमनोहरकेचरणोंपर
खकरसमझा कि वसुदेवनन्दनकीदयासे मैंनेमहाभारतकियाथा
नहींतोमुझेक्यासामर्थ्यहै जोकर्ण व भीष्मपितामहआदिक बीरों
कोजीतनेसक्ता इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा॥

चौ० जो यह कथा सुनै धरिध्यान। उसके पुत्र रहैं कल्यान॥

नब्बेवां अध्याय॥

त्रिभुवनपतिके सन्तानोंकी कथा॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित कोईऐसीसामर्थ्यनहींरखता जोश्या
सुन्दरका सबगुणावर्णनकरनेसकै परमैं उनज्योतिस्स्वरूपको ह
जारोंदण्डवत् करताहूं जिनकीदयासेहम व तुमइसअमृतरूप कह
नेव सुननेसे मुक्तिपदवीपावैंगे इसलिये थोड़ीसीमहिमाउनकी और
कहतेहैं सुनोबैकुण्ठनाथने केवलपृथ्वीका बोझाउतारनेवास्ते यदु
कुलमें सगुणअवतारलेकर यहसबलीलाकीथी व उनकीइच्छासे
द्वारकाकंचनपुरीमें सबस्थान व बागजड़ाऊतैयारहोकर अनेकरंग
के सुगन्धितपुष्प व फलबारहोंमहीने लगेरहतेथे व तालाब कबाव
लीककिनारे अनेकभांतिकेपक्षीमीठी२बोलियोंमें स्तुति द्वारकाना
थकी करतेथे व कईहज़ारहाथी द्वारेपरबांधेहोकर अनेकपहलवान
चाणूर व मुष्टिकऐसेमल्लयुद्ध करनेवास्ते सदावहांबनेरहतेथे व सब
सड़क व गली व चौरहोंपरचन्दन व गुलाबजलसे छिड़कावहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अनेकदेशकेव्यापारीसबतरहकीवस्तु वहांबेंचनेवास्तेले आतेथे व
दुबंशियोंकेघरऋद्धि व सिद्धिबनीरहकर उनकीस्त्रियां जड़ाऊगहे
व कपड़ापहिने इत्र व फुलेललगायेहुये नित्यमंगलाचार मनाय
करतीथीं व सबछोटेबड़े द्वारकाबासी हरिकथासुनने व साधु व ब्रा
णकी सेवामेंप्रीतिरखकर अपनेकर्म व धर्मसेरहतेथे ॥

दो० तहां नारिसब यादवन अतिसुन्दर सुकुमारि । जिनको रूपनिहारिके सकुचावें सुरनारि ॥

औरसोलहहज़ारएकसौ आठस्त्रियां श्यामसुन्दरकी अपने२जड़
ऊमहल व बागोंमेंअलग२त्रिभुवनपतिकेसाथभोग वबिलासकरके
अपनाअपनाजन्मस्वार्थकरतीथीं व इन्द्रपुरीसेअप्सरालोगअपना
नाचदिखलानेवास्ते द्वारकामेंआनकर गन्धर्व्वलोग गानासुनातेथे
व श्यामसुन्दर अपनेसोलहहज़ार एकसौआठस्वरूपसे सबस्त्रियों
केपासरहकर उनकीइच्छांपूर्णकरतेथे और वे स्त्रियांआठोंपहरद्वार
कानाथकीसेवामेंरहकर ऐसाउनपर मोहितथीं कि एकक्षणउनको
बिनादेखे श्यामसुन्दरके चैननहींपड़ताथा किसीसमयमोहनप्यारे
केरहनेपरभी व्याकुलहोकर पक्षियोंसेपूंछतीथीं किहमारेप्राणनाथ
कहांचलेगये फिरचैतन्यहोकर उनकोदेखनेसे अपनेबराबर किसी
दूसरेका भाग्यनहींसमझतीथीं एकदिनमुरलीमनोहरने सबस्त्रियों
केसाथजलक्रीड़ाकरनाविचारकर जैसेसमुद्रकोआज्ञादी वैसे पुर
नेभरपानी वहांहोगया ॥

दो० पूरणमासी रातको सबनारिनके साथ । जलविहारलागेकरन माखनप्रभु यदुनाथ ॥

जिससमय श्यामसुन्दरने चांदनीरातमें सोलहहज़ारएकसौ आ
ठस्त्रियोंके साथ बिलगबिलगरूपधरकर बिहारकिया उससमय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

युद्धमेंऐसीशोभामालूमहोतीथी जिसकाहालवर्णननहींहोसक्ता॥

चौ॰ तबै टिटिहिरी बोली बानी। तासों कहनलगी यकरानी॥
कारण कौन शब्दतू करै। हरि संयोग बियोग मनधरै॥
चकई बोलिउठी तेहिकाला। ऐसीविधि बोली यकबाला॥
तेरो भेव जानि हम लीन्हों। पतिबियोगते अतिदुखकीन्हों॥
क्यों हरिकाज शब्द तू करै। सगरी रैन चैन नहिं परै॥
फिर उनसुनी सिंधुकी बानी। तेहि अवसर बोली यकरानी॥
कहै एक श्रीकृष्ण मुरारी। शयन करतहैं सिंधु मझारी॥
तेही काज शब्दअति करै। श्रीब्रजराज प्रीति उर धरै॥
फिर उनदेखि चन्द्रकी कांति। सखी एक बोली यहि भांति॥
तोहिं कृष्णको दरशन भयो। तेरो क्षयी रोग सब गयो॥
रेवतगिरि देखा तेहिकाला। याविधि बोलिउठी यकबाला॥
तू दिन रैन तपस्या करै। मनमें ध्यान कृष्ण को धरै॥
राजन ऐसी विधि सबबाला। कहैं मनोहर बचनरसाला॥

दो॰ अष्टनायका आदिदै सब नारिनके साथ। ऐसीविधि क्रीड़ाकरैं माखनप्रभु यदुनाथ॥

श्यामसुन्दरकीसन्तान इतनीबढ़ीथी कि तीनकरोड़ अड़तालीसहज़ार तीनसौब्राह्मण उनलड़कोंको विद्यापढ़ानेकेवास्ते रहतेथे इसलिये यदुवंशियोंकी गिन्तीनहींहोसक्ती देखो जोश्यामसुन्दर अपनेवंशकीरक्षावास्ते नित्यअसंख्यद्रव्य व गौब्राह्मणोंको दानादि याकरतेथे बहीत्रिभुवनपति इतनाप्रेमरखनेपरभी दुर्वासोऋषीश्वर केशापसे सबयदुवंशियोंको नाशकराकेबैकुण्ठमेंचलेगये श्रीकृष्ण जीकेवंशमें केवलबज्रनाभ अनिरुद्धकाबेटा जीतावचाथा सोमथुरा इन्द्रप्रस्थकाराजाहुआ उसकेकुलमें व्रतबाहु व सत्यसेनआदिक सबराजावड़ेप्रतापी व हरिभक्त व धर्मात्माहुयेथे इतनीकथासुनाक शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षितजोमनुष्य दशमस्कन्धकीकथासच्चे मन व प्रीतिसेकहता व सुनताहै उनकोबड़ाभाग्यमानसमझनाचाहिये वहमनुष्यसंसारमें मनोकामनापाकरअन्तसमयमुक्तहोताहै॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भवसागरबारौंस्कन्ध

ग्यारहवां स्कन्ध

नारद मुनिका बसुदेवजीको ज्ञान समझाना ॥

पहिला अध्याय ॥

आवना दुर्वासा आदिक ऋषीश्वरों का द्वारकामें ॥

राजा परीक्षितने दशमस्कन्धकी कथासुनकर शुकदेवजीसे
नयकी हेमुनिनाथ यादवलोग धर्मात्मा व हरिभक्तथे उनकोदु
सात्रृषीश्वरने किसवास्तेशापदिया यहसुनकर शुकदेवजीबोले
राजन् इसकाहाल इसतरहपरहै किएकदिन श्यामसुन्दरने मन
बिचारा किहमने पृथ्वीकाभारउतारने व हरिभक्तोंकी रक्षाकरनेके
स्ते अवतारलियाथा जिसमेंसंसारीजीव मेरीकथा व लीलाकहि
सुनकर भवसागरपार उतरजावैं सोबड़ेबड़ेदैत्य व कंसजरासन्धा
दिकअधर्मी राजोंको मारा और कौरव व पाण्डवों से महाभार
कराके पृथ्वीका भारउतारा परछप्पनकरोड़ यदुवंशी जो बड़े बलि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ष्ठ व धनपात्र हैं उनकाभार अभी बनाहै और सब मेरीसन्तान व भाईबन्धुहोकर मुझसेपालनहुयेहैं इसवास्ते इनकोअपनेहाथसेमारनेमें पापहोगा किसीब्राह्मण से शापदिलवाकर मरवाडालनाचाहिये ऐसाबिचारतेही उनकीइच्छानुसार दुर्वासा व वशिष्ठआदिक बहुतसेऋषीश्वर तीर्थयात्राकरतेहुये द्वारकापुरीमेंआये तबजगत्पतिने उनकापूजन व आदरभावकरके हाथजोड़कर विनयकी जिसतरहआपलोगोंने दयालुहोकर अपनादर्शनदिया उसीतरहथोड़े दिन यहांरहकर हमारीइच्छापूर्णकीजिये यहवचनसुनकर ऋषीश्वरोंनेकहा महाराज यहांबिधिपूर्वक हमारातप व जपनहींबनपड़ता केशवमूर्त्ति बोलेतुमलोग पिण्डारकक्षेत्रमें जो यहांसेनिकटहै रहकर स्मरण व ध्यानकरो यहबातमानकर सबऋषीश्वर पिण्डारकक्षेत्रमेंचलेगये व वहांपरमेश्वरकातपबिधिपूर्वककरनेलगेसोएक दिन श्यामसुन्दरकीमायासे प्रद्युम्न व शाम्बआदिक उसीओरअहेरखेलनेवास्तेगये तबउन्होंने ऋषीश्वरोंकोतप व स्मरणकरतेहुये देखकर आपसमेंकहा यहसबब्राह्मण संसारीलोगोंको ठगनेवास्ते झूठीसमाधिलगायेबैठेहैं यहलोगसच्चेमहापुरुषहोंगे तोइनकोभूत व भविष्य व वर्तमानतीनोंकालकी बातमालूमहोगी यहवचनसुनकर शाम्बनेप्रद्युम्नआदिक अपनेसाथियोंसेकहा तुमलोगमुझेजोमूछ व दाढ़ीनहींरखता स्त्रियोंकावस्त्रपहिनाकर कुछवस्तुमेरेपेटमेंबांधदेव व मुझेइनऋषीश्वरोंकेपासलेजाकर पूछो इसगर्भवतीस्त्रीके पुत्रहोगा या कन्या देखो वहलोगक्याकहतेहैं जबहोनहारकीवश्य होकर प्रद्युम्नआदिकने उसीतरह ऋषीश्वरोंसे पूछा तबउन्होंनेकहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमलोगोंका श्यामसुन्दरकेपुत्र व पोताहोकर ब्राह्मणोंसेठट्ठाकर
उचितनहींहै जबउनलड़कोंने ऋषीश्वरोंकेबर्जनेपरभी उसबात
उत्तरदेनेवास्ते बहुतहठकिया तबदुर्वासाऋषीश्वरने हरिइच्छा
क्रोधितहोकर ऐसाशापदिया कि इसकेपेटसे एकमूशलउत्पन्न
कर सिवायश्याम व बलरामतुम्हारेसबकुलका नाशकरेगा यह
नसुनतेही प्रद्युम्न आदिक उदासहोकर आपसमेंकहनेलगे देखो
लोगोंने बहुतबुराकामकिया जोब्राह्मणोंको दुःखदेकर उनका
पअपनेऊपरलिया जबयहबातकहकर प्रद्युम्नने शाम्बकेपेटमें
ड़ाजोबांधाथा खोला तोउसकपड़ेकेभीतरसे एकमूशललोहेका
टासानिकला यहअचम्भा देखतेही वहसबघबराकर चलेआये
राजाउग्रसेनकी सभामें जहांश्याम व बलराम यदुबंशियोंसमे
बैठेथे चलेगये वहमूशल दिखलाकर शापहोनेका समाचारक
दिया यहबातसुनतेही राजाउग्रसेन व यदुबंशियोंने शोचितहोक
आपसमें सम्मताकिया कि मूशलको लुहारोंसे सोहनकराके इसक
चूरसमुद्रमें डालदेनाचाहिये जिसमें इसशापकी जड़नरहै यह
तठहराकरराजाउग्रसेननेश्यामसुन्दरसेपूछा इसमेंतुमक्याकहते
जगत्पति आगमजानीने शापकाहाल सुनतेही मनमें प्रसन्न
करकहा बहुतअच्छा जैसायदुबंशीलोग कहतेहैं वैसाकरो इतनी
थासुनाकर शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित बैकुण्ठनाथको वहशाप
ड़ादेना कुछकठिननहींथा परउनकीइच्छासे यहबातहुईथी इसलि
ये उन्होंने कुछउपायउसका नहींकिया व यदुबंशियोंने उसमूशल
कोसमुद्रकिनारेलेजाकरसोहनकराके उसकाचूरसमुद्रमेंडालदिय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकटुकड़ाछोटासा सोहनकरतीसमय जोबचगयाथा उसकोसमु
मेंफेंककर अपनेघरचलेआये व श्यामसुन्दरकी इच्छासे वहटुक
एकमछली निगलगई व उसमछलीको एककेवटनेजालमें फँ
ाकर जबउसकापेटचीरतेसमय वहटुकड़ापाया तबउसेतीरकीगां
बनाकरअपने पासरक्खा व जिसजगहलुहारोंने उसमूशलका
हनकियाथा वहांपरसमुद्रकिनारे एकघाससरपत जिसकीचटाई
नातेहैं उत्पन्नहुई ॥

दूसरा अध्याय ॥

वसुदेवजीको नारदमुनिका ज्ञानसिखलाना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जबदुर्बासा ऋषीश्वरके शापदेने
द्वारकापुरीमें अनेकअशकुनहोनेलगे तबश्रीकृष्णजीनेविचारा
कियहसबयादव दुर्बासाऋषीश्वरके शापसे थोड़ेदिनोंमें मारेजावें
इसलियेचाहिये किबसुदेव व देवकीअपनेमाता व पिताकोज्ञान
समझाकरमुक्तकरूं परवहलोग मुझेअपनाबेटाजानकर मेरेकहने
विश्वासनहींकरैंगे नारदजीआनकर उपदेशकरते तोउनकेवास्ते
उत्तमहोता जबऐसाबिचारकर त्रिभुवनपति नारदमुनिकोयादकि
या और वे उसीसमयउनकेपासआये तबद्वारकानाथने दण्डवत्क
रकेकहा हेमुनिनाथ तुमथोड़ेदिनयहांरहतेतोबहुतअच्छाथा नारद
मुनिनेविनयकी किहेदीनानाथ आपकोमालूमहै किदक्षप्रजापति
केशापदेनेसे मैंसिवाय दोघड़ीकेअधिक एकजगह ठहरनहींसक्ता
श्रीकृष्णजीनेकहा तुमद्वारकामें निस्संदेहरहो यहांशापनहीं व्यापै
गा यहवरदान पाकर नारदजीबड़ीप्रसन्नतासे वहांरहे जबएकदिन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नारदमुनिबीनबजाते व हरिगुणागातेहुये वसुदेवको देखनेवा
गये तववसुदेवजीने आदरपूर्वक उन्हैं बैठाया व वेदानुसारपूज
रकेहाथजोड़कर विनयकी हेमुनिनाथ मेराबड़ाभाग्यहै जोआप
चरणायहांआये व हमलोग संसारीमनुष्य मायारूपी आँधियां
यें स्त्रीलड़कोंमें पड़ेरहतेहैं सिवायमिलने ज्ञानरूपी रस्सीके उस
येंसेबाहर निकलनाकठिनहै कदाचित्आपऐसाकहैं कितुमबड़े
ग्यवान्हो जोपरब्रह्मपरमेश्वरने तुम्हारेघरअवतारलिया सोहेन
दमुनि मुझसेबड़ीभूलहुई जोपूर्वजन्म मैंनेतपकरतीसमय प
श्वरकादर्शनपाकर उनसे यहवरदानमांगा कितुममेरेपुत्रहो मु
अपनीमुक्तिमांगना उचितथा इसलिये अबचाहताहूँ कितुम्हार
खारविन्दसे भागवतधर्मसुनकर भवसागरपार उतरजाऊँ यहसुनक
रनारदमुनिनेकहा हेवसुदेवजी भागवतधर्म नवोयोगीश्वरोंने
जाजनककोसुनायाथा वहीपुराना इतिहास कहतेहैं सुनो ऋषभ
वजीकेसौपुत्र जयतीनामस्त्रीसे उत्पन्नहोकर उनमेंनववालकन
खण्डकेराजाहुये व इक्यासीबेटोंने वेद व शास्त्रपढ़ा व भरतना
बड़ापुत्रउनका अपनेबापकीजगहसिंहासनपरबैठा व नवोबेटेउन
जोनवयोगीश्वर कहलातेहैं परमज्ञानी व बालयती व महात्माहो
र जहांमनउनकाचाहताथा वहांफिराकरतेथे व हरिभजनकेप्रता
से उनकोऐसीसामर्थ्यथी जहांचाहैं वहांक्षणभरमेंचलेजावैं सोए
दिनयहनवोयोगीश्वरघूमतेहुये राजाजनककीसभामें जहांपर
हुतसेपण्डित व ज्ञानीलोगबैठेथेचलेगये उनकेमुखारविन्दकाप्रका
शजो सूर्यसेअधिकचमकताथा देखतेहीराजाजनकने सभावाल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेत उठकर एकसाथनवोयोगीश्वरोंको दण्डवत्किया व परि
मालेकर हाथजोड़कर बोले आपलोग वैकुण्ठसेआते हैं इस
लिये मैंतुमको विष्णुभगवान्का पार्षदसमझताहूँ मेरेपूर्वजन्मके
यसहायहुये जो तुम्हारा दर्शनपाया व संसारीमनुष्यकी मृत्यु
ठिकानानहींरहता यहीसमझकर मैंनेआपको एकसाथदण्डव
किया जिसतरह आपनेदयालुहोकर अपनेचरणोंसे मेराघरपावि
किया उसीतरह जोबातमैंपूछूं उसकासन्देहछुड़ादीजिये यहसुन
कर वहयोगीश्वरबोले हेराजन् जोकुछतुम्हैंइच्छाहोसोपूछो राजा
जनकनेकहा महाराजसंसारमें कौनऐसीवस्तुहै जोसदास्थिररहक
उसकाबियोगनहींहोता कदाचित् यहकहाजावे कि जोकोई अ
नेघरमें बहुतधन व स्त्री व पुत्रआज्ञाकारी रखताहै उसेकुछशोच
नहींहोता सोमेरेजानमें उसे सदासुखनहींरहता किसवास्ते कि ज
बउसघरमें कुछहानिहोकर स्त्री व लड़केमरजातेहैं तबवहबहुतशो
करताहै सुखउसेकहनाचाहिये जोसदास्थिररहे व प्रतिदिनअधि
कहोकरउसमेंकभी न घटे सोआपलोगबतलाइये किवहकौनवस्तु
जिसकानाशनहींहोता यहसुनकर योगीश्वरोंमेंसेकश्यपनामबड़े
भाईनेकहा हेराजन्सुखउन्हींकोप्राप्तहै जोआठोंपहरमनअपनाबी
स्मरण व ध्यानआदिपुरुष भगवान्केलगायेरहतेहैं व धन स्त्री व
त्रादिकनाशहोनेवाली वस्तुसे कुछप्रीतिनहींरखते पर संसारीजी
वोंकी यहप्रकृतिहै कि धनमिलने व स्त्री व पुत्रआज्ञाकारीहोनेसे स
मझतेहैं कि हमारेबराबर दूसराकोईसुखी न होगा जबउनकाधनकु
हानिहोकरकोईमनुष्य घरवालामरजाताहै तबउसकेशोचमेंऐसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व्याकुलहोजातेहैं कि उनकाचित्त ठिकानेनहींरहता इसलिये
रीमनुष्यसे जोकोईपूछै तुम्हैंधीर्यहै व नहीं तोउनदोनोंको मूर्ख
झनाचाहिये किसवास्ते कि जोसुखसदास्थिरनहींरहता उसक
ना व न होना दोनोंबराबरहैं हेराजन् तुमइसबातका बिश्वासम
कि जोमनुष्यपरमेश्वरसे बिमुखरहकर अपनेपरलोकका शोच
करता उसेकभीसुखनहींमिलता व धर्मवहीसमझनाचाहिये जो
कृष्णजीनेअपनेमुखारबिन्दसे गीतामेंअर्जुनसेकहाथा सारांश
ज्ञानकायहहै कि मनुष्यआठोंपहर अपनामनबीचयाद व स्म
नारायणजीकेलगायेरखकरकिसीकामकोऐसानसमझैकियहम
किया व दिनरातयहजानतारहै किसबकामपरमेश्वरकी इच्छासे
ताहै व नारायणजीतप व स्मरण व ध्यान व भजनकियेबिनाजि
कोभक्तिकहतेहैं मिलनेनहींसक्ते इसलियेउनकाप्रेम उत्पन्नहोने
स्तेपहिलीराह जोसहजहैबतलातेहैं सुनोजिसमेंसंसारीजीव वह
स्ताचलिकर अपनेसुखस्थानपर पहुँचजावें जिसतरह परब्रह्मप
श्वरनें कृष्णावतारलेकर गोवर्द्धनपहाड़ अपनीअंगुलीपरउठाया
कंसजरासन्धआदिक अधर्मीराजाओंकोमारकर गोपियोंकेसा
रासमंडलकिया व रामचन्द्र व बामनआदिक अनेकअवतारधर
र जोलीलासंसारमेंकीहैं वहकथासच्चेमनसेकह व सुनकर इसब
काअभिमान न रक्खे कि एकबेरयहकथासुनचुकेहैं फिरसुनकर
क्याकरेंगेवहमनुष्यहरिचरित्रकहने व सुननेकेप्रतापसे बिरक्तहोक
अन्तसमयपरमेश्वरके चरणोंमेंपहुँचताहै व ज्ञानीकोचाहिये कि
बस्थानपरनारायणजीको एकसादेखकरयहसमझतारहै कि आ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रूपभगवान् केवलइसीवास्ते सगुणअवतार धारणकरतेहैं जिससे
संसारीमनुष्य उनकीलीला व कथासुनकर भवसागरपारउतरजावें
इसलिये मनुष्यतनुपाकर उनकेध्यान व स्मरणसेक्षणभरभीविमु
खरहना न चाहिये कदाचित् मनचंचलमनुष्यका एकबेरपरमेश्व
रकेचरणोंमें न लगे तो थोड़ा २ प्रेम उनसेनित्यबढ़ावै जिसतरह सं
सारीमनुष्य इच्छाजाने किसीनगर व देशकीरखकर नित्यएक २
पगभी उसराहपरचलै तो कुछदिनोंमें उसस्थानपरपहुँचसक्ताहै उ
सीतरहसूर्यरूपी हरिचरणोंकाध्यान व प्रेम धीरे २ बढ़ानेसे उसके
हृदयमेंज्ञानकादीपक प्रज्वलितहोकर अज्ञानकाअँधियाराछूटजा
ताहै व जो कोईअपनेघरसे नहींचलता उसकोदूसरेस्थानपर पहुँच
ना बहुतकठिनहै जिसतरह तीनदिनकेभूखेमनुष्यको भोजनदेख
नसे धैर्य्यहोकर ज्यों ज्यों वहग्रासउठाकरखाताहै त्यों त्यों उसेसा
मर्थ्य होतीजातीहै उसीतरह परमेश्वरकास्मरण व ध्यानकरते २
मनुष्यकेमनसे प्रतिदिन संसारीमायाछूटकर हरिचरणोंमें अधिक
प्रेमबढ़ताजाताहै जबवहयोगीश्वर यहसबज्ञानकहिचुके तबराजा
जनकउठखड़ेहुये व फिरदण्डवत्करकेउनसेपूंछा महाराजजोमनु
ष्य भागवतधर्मसेरहकर उसीतरह सबकामकरतेहैं उनकारूपकिस
तरहकाहोताहै व कौनलक्षणसे उनकोपहिचाननाचाहिये यहसुन
कर हरिनामदूसरेभाईनेकहा हेराजन् परमधर्म रखनेवालेमनुष्य
कभीहँसते कभीरोदेते हैं उनकेहँसनेका यहकारणहै कि किसीसम
यप्रसन्नहोकर कहतेहैं हे परमेश्वर तुम्हारानिराकाररूप किसीको
दिखलाईनहींदेता इसलियेआप हरिभक्तोंपर दयालुहोकर सगुण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवतारधारणकरतेहैं जिसमेंसंसारीजीव तुम्हारास्मरण व ध्या
करके मुक्तपदवीपावैं और यहबातसमझकर वहलोगरोदेतेहैं कि
तनीअवस्था हमारीविनायाद व चर्चा परमेश्वरके वृथा व्यतीतहु
व भक्तिनारायणजीकी तीनतरहपर उत्तम मध्यम निकृष्टहोकर
त्तमभक्तिका यहलक्षणहै कि वहसबजीव जड़ व चैतन्यमेंपरमेश्व
रकीशक्ति बराबरसमझकर किसीसेमित्रता व शत्रुतानहींरखता
आठोंपहर हरिचरणोंकेध्यान व स्मरणमेंलीन व मग्नरहताहै
जिसतरह मदपियेहुआमनुष्य अचेतहोकर अपनेतन व बस्त्रकीसु
धिनहींरखता उसीतरहउत्तमभक्त अपनेशरीरकीसुधि न रखकर ई
श्वरकेध्यानमें मग्नरहताहै व परमेश्वरकेविराट्रूपमें सबसंसारी
जीवोंको एकसादेखकर हरिभक्त व महात्मालोगोंसे प्रीतिरखताहै
व अपने व दूसरेमें कुछभेद न जानकर स्त्री व पुत्र व धनआदिकसं
सारीसुखसे कुछप्रीतिनहींरखता व तीनोंलोककाराज्यसत्संग व भ
क्तिकेसमाननहींसमझता व लक्षण मध्यमभक्तकेयहहैं कि वहलो
ग साधु व महात्मोंसे प्रीतिरखकर कुसंगतिमें नहींबैठते व किसीका
बुरा न चाहकर संसारीजीवोंपर दयारखते हैं परज्ञानीहोनेसे परमे
श्वरकीशक्ति सबजीवोंमें बराबरनहींसमझते व लक्षण निकृष्टभक्त
केसुनो कि वहलोग संसारीमायामोहमेंफँसेरहकर किसीसमयपूजा
व स्मरण परमेश्वरकाभी करलेते हैं जबतकमनुष्य तृष्णानहींछो
ड़ता तबतक मनउसका संसारीमायासे विरक्तनहींहोता॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीसरा अध्याय ॥

तीन योगीश्वरोंका राजा जनकको ज्ञानउपदेशकरना ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षितराजाजनकने तीनोंतरहके भक्तोंका हालसुनकर उनयोगीश्वरोंसेपूछा महाराजमाया परमेश्वरसेअल है या नारायणजीमेंमिलीहै सोबर्णनकीजिये यहसुनकर अन्त रिक्षनाम तीसरेभाईनेकहा हेराजन् उत्पन्नहोना व मरना सबजी वोंका परमेश्वरकीमायासेहोताहै व उसमायाको हरिइच्छासमझ नाचाहिये व मायाकेतीनगुण सात्विक व राजस व तामससेउत्पत्ति व पालन व नाशसंसारीजीवोंकाहोकर अपनेकर्मानुसार सबजीव फलपातेहैं व संसारीमनुष्य मायावशहोकर सदाकामक्रोध लोभ मोहमेंफँसारहताहै व परमेश्वरकास्मरण व ध्याननहींकरता जिस से आवागमनसेछूटकर भवसागरपारउतरजावे बिनादया व कृपा नारायणजीकी कोईमनुष्यमायारूपी जालसेछूटनहींसक्ता जब आदिपुरुष भगवान्कोमहाप्रलयहोने उपरान्त फिरसंसाररचनेकी इच्छाहोतीहै तबवहमायाकीओर आंखउठाकर देखतेहैं उसीसम यमायासे महत्तत्त्वप्रकटहोकर वहीसबजगत्को उत्पन्नकरताहै व जबत्रिभुवनपति संसारकानाश करनाचाहतेहैं तबउनकीइच्छानु सार उसीमायासे महाप्रलयहोकर ऐसामूशलधार पानीवर्षताहै कि सिवायजलके पृथ्वीपरकुछनहींरहता इसलिये ज्ञानीमनुष्यको उ त्पन्न व नाशहोना जगत्कामायारूपी खिलौनासमझकर आठों पहरअपने भवसागरपारउतरनेका उपायकरनाचाहिये यहसुनकर राजाजनकनेपूछा जबआपलोगमायाको परमेश्वरकी इच्छावत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाते हैं तबसंसारीमनुष्य उसमायाजालसे किसतरहछूटनेसक्ता
कोईउपायइसका बतलाइये यहवचनसुनकर प्रबुद्धनाम चौथे
गीश्वरनेकहा हेराजन् जबइसबातका बिश्वासहुआ किमायान
यणजीकी इच्छाहै व बिनाआज्ञा परमेश्वरकी कोईकामपूरान
होता तबमनुष्यको उचितहै कि सबकाममें त्रिभुवनपतिको क
व धर्त्ता जानकर अपने को उसमायाका खिलौना समझे व
कर्मआरम्भकरै उसेऊपरइच्छापरमेश्वरके छोड़कर मनमें यह
श्वासरक्खै कि वैकुण्ठनाथचाहैंगे तोयहकामपूराहोगा अपने
वहकामकरनेवाला न जानै व किसीकेगालीदेनेसे खेद न मानक
बिनाप्रयोजनअधिक न बोले व सबजीवजड़ व चैतन्यमें परमेश्व
का चमत्कारबराबरसमझकर उनपरदयारक्खै व किसीजीवको
ख न देवे व दूसरेकीस्त्री मातासमानजानकर थोड़ा या बहुतजोकु
अपनेभाग्यसेमिलै उसपरसन्तोषरखकर अधिकमिलनेकीचाह
न करै व अकेलेमें बैठकर हरिचरणोंका स्मरण व ध्यानकरता
व जबदूसरोंकेपासबैठे तबसिवायचर्चा व कथापरमेश्वरकेवृथावा
न करै इसतरहअभ्यासरखनेसे संसारीमायाछूटकर मनउसकाही
चरणोंमेंलगजाताहै कदाचित् कोईऐसाकहै कि बहुतमनुष्यउ
य व उद्यमकरनेवाले अपनीकामनाको पहुँचकर सदाप्रसन्नरह
हैं सो हेराजन् तुमइस बातकाविश्वासमानो कि विनाइच्छापर
श्वरकी किसीकामनोरथनहींमिलता व सबतरहकीहानि व ला
त्रिभुवनपतिकी इच्छानुसारहोताहै देखो जोसंसारमेंउत्पन्नहु
वहएकदिनअवश्यमरैंगे सोमरतीसमयकोईउनसे यहबातनहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ा कि तुम स्त्री व पुत्र व हाथी व घोड़ा आदिककानामलेव सबइष्ट व
मित्र यहीकहैंगे कि इससमय परमेश्वरकानामलेकर उन्हेंयादकरो
जिसमेंतुम्हारापरलोकबने फिर किसवास्ते पहिलेसे उसपरमेश्वर
कोयादनहींकरता कि अन्तसमय उसीकेसाथ कामरहताहै दूसरा
कोईसहायता करनेनहींसक्ता कदाचित् तुमऐसाकहो कि अबसंसा
रीसुखउठाकर मरतीसमय परमेश्वरकोयादकरलेवैंगे सोतुमविश्वा
सकरकेजानो कि जबमनतुम्हारा पहिलेसे बीचप्रेम स्त्री व पुत्र व
द्रव्यादिकमें लगारहैगा तबमरतीसमय परमेश्वरमेंमनलगना बहु
तकठिनहै इसलिये मनुष्यकातनुपाकर पहिलेसे उनकेस्मरण व
ध्यानमें चित्तलगानाचाहिये जोअन्तसमयकामआवै जिसतरह
द्रव्यगाड़कररखनेसे आठोंपहर उसजगहकाध्यान मनमेंबनारहता
है व चोरआदिककेडरसे कभी २जाकर उसस्थानकोदेखआताहै व
किसीदूसरेसे द्रव्यगाड़नेकाहालनहींकहता उसीतरह उसेदिनरात
बैकुण्ठनाथकोयादरखकर प्रेमरखनेकाहाल किसीसेकहना न चा
हिये यहज्ञानसुनकर राजाजनकनेविनयकी आपनेकहा कि परमे
श्वरकीलीला व कथासुनने व ध्यानकरनेसे संसारीमायाछूटजातीहै
इसलियेथोड़ीस्तुतिनारायणजीकी सुनाचाहताहूं सोदयालुहोकर
कहिये यहसुनकर पिप्पलायन पांचवेंभाईनेकहा हेराजन् उत्पन्न
व पालन व नाशकरनेवालेतीनोंलोकके वहीबैकुंठनाथहैंउन्हींकाप्र
काश चौरासीलाखयोनिमेंरहताहै पर किसीजीवकेमरनेसे उनका
नाशनहींहोता व किसीजीवकेउत्पन्नहोनेसेवहजन्मभीनहींलेते व
वे अविनाशीपुरुष अपनेतेजसेप्रकाशितरहकर सदाएकतरहपरमब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बस्तुमेंमिले व सबसेबिलगरहतेहैं व सबजीवोंमें चलनेवफिरनेकी
मर्थ्य व मनुष्यकोभली व बुरी बातकाज्ञान उन्हींकीशक्तिसेहोत
और उनकाप्रकाश किसीकोदिखलाईनहींदेता व हाथसेपकड़ा
देकर इसतरहबीचहृदयके छिपेरहतेहैं जिसतरहपत्थर व लकड़ी
अग्निदिखलाईनहींदेती जैसेउपायकरके पत्थर व लकड़ीमेंसे
ग्निनिकलतीहै वैसेज्ञानकीराह उनकीशक्तिकोभी शरीरमेंदेख
चाहिये जिसतरह गूलरकेबृक्षमें हज़ारोंफललगेहोकर उनकेभी
रमच्छड़भरेरहतेहैं उसीतरह करोड़ोंब्रह्मांड परमेश्वरकेरोम २
बँधेरहकर सबजीवोंको वहपालनकरतेहैं ऐसेत्रिभुवनपतिका पा
चाननाबहुतकठिनहै व उनकीभक्ति व प्रीतिसच्चेमनसेकरैतबउन
महिमाजाननेसक्ताहै व मनुष्यकीदशा चारतरहपरजाग्रत् व स्व
व सुषुप्ति व तुरीयहोतीहैं जाग्रत्जागने व स्वप्न नींदकोकहतेहैं सु
प्ति उसेसमझनाचाहिये जिसतरहकिसीसमय मनुष्यनींदसेउठक
कहताहै हमऐसासोये कि न जागतेथे न नींदमेंअचेतहोकर सो
रहे व तुरीयउसकोकहतेहैं जैसेकोई परमेश्वरकेध्यानमें लीनहोक
बैठारहै व अपनेतनु व वस्त्रकीकुछसुधि न रक्खे व चारोंअवस्था
परमेश्वरकाप्रकाश बीचशरीरकेरहताहै व उन्हींकीशक्तिसे मनु
सबकर्मशुभ व अशुभकरते हैं औरयहबातइसतरहसमझनाचाहि
कि जबपरमेश्वरअपनाचमत्कार अंगमेंसेखींचलेतेहैं तबवहमरज
ताहै व उससेकोईकामनहींहोसक्ता कदाचित्कोईऐसाकहै कि पर
श्वरसबजगहवर्त्तमानहैं तोदिखलाईक्योंनहींदेते उसेयहउत्तरदेन
चाहिये कि मूर्खकोदिखलाईनहींदेते व ज्ञानीसेवहछिपेनहींरहते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौथा अध्याय ॥

अवतारोंकी कथा ॥

नारदमुनिनेकहा हे बसुदेव इतनीकथासुनकर राजाजनकजी बोले हे ऋषिराज जिनदिनों मैं बालकथा उनदिनोंएकबेर सनकादिक मेरेपिताकेपासआयेथे जबमैंनेहाथजोड़कर उनसेपूछा महाराज परमेश्वरकीभक्ति व तपस्या किसतरहकरनीचाहियेतबउन्हों ने कुछउत्तर न देकरहँसदिया और मुझेवहज्ञान सुननेयोग्यनहींसमझा यहबचन राजाजनककासुनकर उपबिरहोत्रनामछठवें योगीश्वरनेकहा हे राजन् तुमज्ञानसुननेयोग्यहो परउनदिनों अज्ञानबालकथे इसलिये सनत्कुमारआदिकने तुमसेकुछज्ञाननहींबतलाया अबहमकहतेहैं सुनोकर्मतीनतरहपर कर्मबिकर्म अकर्महोताहै व कर्मउसेकहनाचाहिये कि ब्राह्मण व क्षत्रिय व बैश्य व शूद्र चारोंबर्णआश्रमनेरेधर्मपर जैसाउनकेवास्तेवेद व शास्त्रमेंलिखाहैस्थिररहैं व बिकर्मवहहै कि एकबर्णकाधर्म दूसराबर्णकरै व अकर्मउसेसमझनाचाहिये कि जानबूझकर चोरी व कुकर्मआदिककरके संसारीजीवोंको दुःखदेवै इसलिये मनुष्यकोउचितहै कि नित्यपूजा व ध्यानरामचन्द्र व श्रीकृष्ण व नृसिंहजीआदिक किसीअवतारका अपनेगुरूकी आज्ञानुसारकियाकरै व स्मरण व ध्यानकरनापरमेश्वरकाकेवलएकअवतारपरहोकर चौबीसोंअवतारोंमेंजिसपरमनउसकाचाहैउसीतरहस्वरूपकीपूजा व भक्तिसाधनकरै यहसुनकर राजाजनकबोले महाराज जिसतरह आपनेपूजाकरनेवास्ते कहा उसीतरहदयालु होकर अवतारोंकीकथा वर्णनकीजिये दुर्मिलनामसातवें योगीश्व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रनेकहा हेराजन् कोईऐसीसामर्थ्य नहींरखता जोपरमेश्वरके
अवतारवर्णनकरनेसकै जो ऐसाविचारकरै उसेमूर्खसममझनाचा
ये कदाचित्कोईचाहेतोआकाशकेतारे व बालूकीरेणुका व बर्षत
नीकीबूंदें गिनलेवे परबैकुण्ठनाथकेअवतार नहींगिननेसक्ता पृथ्
व आकाश सूर्य व चंद्रमा व दशोंदिशा व चौदहोंभुवन व चौरा
लाखयोनिआदिक बीचविराट्रूप परमेश्वरकेहोकर सबसंसारी
स्तुकेमालिक व उत्पन्नकरनेवाले वहीहैं जबविराट्रूपकी नाभि
कमलकाफूलनिकलता है तबउसफूलसे ब्रह्मा उत्पन्नहोकर तीन
लोककीरचनाकरते हैं व नरनारायणकाअवतारलेकर बदरीकेदा
मेंबैठेहुये केवल इसवास्तेतपस्याकरतेहैं जिसमेंसंसारीलोगउनको
तपकरते देखकर परमेश्वरकास्मरण व ध्यानकरके भवसागरपा
उतरजावैं जबइन्द्रको त्रिभुवनपतिकीमहिमा न जाननेसे यहभय
हुआ किमेराइन्द्रासनलेनेवास्तेयहतपस्याकरते हैं तबउसनेउनका
तपभंगकरनेकीइच्छासेकामदेव व बसंतऋतु व दशअप्सरा व मंदसु
गंध शीतलहवाकोवहांभेजा जैसेवहसबबीचस्थानतपस्याकरनेन
नारायणकेपहुंचेवैसेबसंतऋतुने एकबगीचाउत्तमउत्तमफूलवफल
लगाहुआसबसामग्रीवभोगविलाससमेतवहांप्रकटकरदियाव मंदसु
गंधशीतलहवाचलकरउसबागमेंअप्सरानाचनेलगीं व कामदेवको
किलारूपसे बृक्षपरबैठकर जबकामबढ़ानेवाली बोलीबोलनेलगा
तबनरनारायणने जिनकामुखारबिंदसूर्यसेअधिकचमकताथा जैसे
आंख उठाकर उनलोगोंकीतरफ़देखा वैसेकामदेव आदिकमारेडरके
सूखगये व मनमेंकहनेलगेऐसा न होजोयहमहापुरुषशापदेकरहमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्मकरदेवै यहदशाउनकीदेखतेही त्रिभुवनपति अंतर्यामीनेहँस
कर कामदेवादिसेकहा तुमलोगमतडरो इसमेंतुम्हाराकुछअपराध
न होकर इन्द्रने तुमको अपनाराज्य छूटनेकेडरसे यहांभेजाहै सो
मैं इन्द्रलोककी कुछचाहना नहींरखता यहबचनसुनतेही कामदे
व वसंतऋतुआदिकने नरनारायणकेसामने हाथजोड़कर बिनय
किया हेवैकुण्ठनाथ संसारीजीव कोईऐसानहीं है जोहमारेफन्देमें
न आवै परहमलोगआपको जोआदिपुरुषका अवतारहैं कुछधोखा
नहींदेसके जबतुम्हाराभजन व स्मरणकरनेवाले अपनेबलसेहमारे
शिरपर लातधरकर सीधेबैकुंठको चलेजातेहैं तबआपपर किसका
वशचलनेसक्ताहै संसारमेंबहुतमनुष्य भूख व प्यास व कामदेवको
अपनेवशरखकर संसारीसुखकीचाहनानहींकरते परक्रोधऐसाबल
वानहै कि उसकेअधीनहोकर वहलोगभी अपनेशुभकर्म व तपस्या
काफल क्षणभरमेंखोदेतेहैं सोआपमेंक्रोधकाप्रवेश न होकरतुम्हा
रीभक्ति व प्रीतिकरनेवालेभी काम व क्रोधकेवशनहींहोते इसलिये
हज़ारोंदंडवत हमारीआपकोपहुँचें यहबचनसुनतेही नरनारायण
नेउसीसमयअपनीमायासेहज़ारसुंदरीजिनकेसामनेरम्भाआदिअ
प्सराकुछबस्तुनहीं हैं व कोशोंतकउनकेअंगकीसुगंधउड़तीथी वहां
प्रकटकरदिया और वहसबलक्ष्मीपतिकी सेवाकरनेवास्तेहाथजोड़
करचारोंतरफखड़ीहोगईं उनकारूपदेखतेही कामदेवादिकलज्जि
तहोकरअपना २अभिमानभूलगये उनस्त्रियोंपरमोहितहोकर आ
पसमेंकहनेलगे हमलोगोंने ऐसीरूपवतीस्त्रियां कभीइन्द्रलोकमें
भी नहींदेखीथीं यहसुनकर त्रिभुवनपतिने कामदेवादिकसेकहातु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मलोग इनसबस्त्रियोंको इन्द्रपुरीमेंलेजावो कामदेवनेविनयकी
हाराज इनकोइसीजगहरहनेदीजियेनहींतोवहांलेजानेमें सबदे
आपसमेंलड़करमरजावैंगे यहबातसुनकर नरनारायणानेकहा इ
सबमेंतुम्हारेनिकट जोकुरूपहो उसेलेजाव जबकामदेवादिकउ
शीनामको नरनारायणकी आज्ञानुसारअपनेसाथलेकर वहांसे
दाहुये व उन्होंने इन्द्रलोकमें पहुंचकरसबमाहिमा नरनारायणक
कही तबइन्द्रउन्हेंपूर्णब्रह्म जानकरउनकीस्तुति करनेलगे व उ
शीकारंग व रूपदेखतेही अतिप्रसन्नहोकर उसेसब अप्सरोंकाम
लिकबनाया फिर हंसरूपी पक्षीकाअवतारलेकर सनत्कुमारको
त्तरदिया व हयग्रीवअवतारधरकर मधुकैटभ दैत्यका वधकिया व
पातालसे वेदलाकर ब्रह्माकोदिया व मत्स्यअवतारलेकर राजा
त्यव्रतको ज्ञानसिखलाया व कच्छपअवतारधरकर मन्दराचल
हाड़ अपनीपीठपरउठाया व मोहनीअवतार लेकर देवतोंकोअ
तपिलाया व वाराहअवतारधरकर पृथ्वीकोपातालसे निकाललाये
व वामनअवतारहोकर राजावलिसे पृथ्वीदानली व कपिलदेवअव
तार धरकर देवहूतीअपनीमाताको सांख्ययोगज्ञान उपदेशकिया
व परशुराम अवतारहोकर सहस्त्रबाहुआदिक अनेकक्षत्रियोंको व
किया व रामचन्द्रअवतारधरकर लंकापति रावणकोमारा व नृ
हअवतारहोकर प्रह्लादभक्तकी रक्षाकी व श्रीकृष्णअवतार धरक
कंसादिकराजा व अनेकदैत्योंको मारडाला व कौरवों व पांडवों
महाभारतकराके पृथ्वीकाभारउतारा व बौद्धअवतारधरकर दैत्यो
कोयज्ञकरनेसे बरजा व जब कलियुगकेअन्तमें कुछधर्म नहींरहे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वकलंकी अवतारलेकर सत्ययुगकाधर्म व कर्मचलावैंगे इनअव
तारोंमें जिसपरमनचाहे उसीस्वरूपकापूजन व ध्यानकरनेसे मनो
कामना मिलकर अन्तसमय मुक्तिहोती है॥

पांचवां अध्याय॥

आठवें व नवें योगीश्वरोंका ज्ञान कहना॥

राजाजनकने इतनीकथासुनकर पूछा महाराज जोलोग परमे
श्वरकेस्मरण व ध्यानसेविमुखरहतेहैं उनकीमरनेउपरान्त क्याद
शाहोतीहै च्यमसनाम आठवेंयोगीश्वरनेकहा हेराजन् चौरासीला
खजीवजड़ व चैतन्य नारायणजीकीइच्छासे उत्पन्नहोकर मरनेउ
परान्त जीवात्मा सबकिसीका फिर परमेश्वरकेरूपमें मिलजाताहै
सबजीवोंकापालनकरने व सुखदेनेवाले वहीआदिपुरुष भगवा
हैं जोकोई उनकोउत्पन्न व पालन व नाशकरनेवाला तीनोंलो
ककाजानकर दिनरात उनकेस्मरण व ध्यानमेंलीनरहकर कहता
है हे बैकुण्ठनाथमहादेव व ब्रह्मादिकदेवता तुम्हारेभजन व स्मरण
केप्रतापसे जोकुछआशीर्वाद व शाप किसीकोदेतेहैं वहबातसच्चहो
कर हरिभक्तोंकासबदुःख आपकीदयासेछूटजाताहै इसलिये संसार
रूपीसमुद्रपारउतरनेवास्ते तुम्हारेचरणोंकाध्यान जहाजकेसमान
समझनाचाहिये हे राजन् इसतरहकाज्ञान व ध्यानरखनेवालेमनु
ष्य मुक्तिपदवीपर पहुँचतेहैं व जोलोगमनुष्यतनुपाकर चारोंवर्ण
व चारोंआश्रममेंपरमेश्वरकाभजन व स्मरणनहींकरते व हरिकथा
सुननेमे प्रीति न रखकर संसारीमायामें फँसेरहतेहैं व अधर्मकी क
माईसे अपनाकुटुम्ब व शरीरपालनकरके परमेश्वरका चमत्कार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबजीवोंमें बराबरनहींसमझते व बिनाप्रयोजन दूसरोंकेसाथ श
ता व परस्त्री व धनलेनेवास्तेइच्छारखकर जीवहिंसाकरतेहैं उन
कभीकल्याणनहींहोता वहमनुष्य बहुतदिनतक नरकभोगने
रान्त चौरासीलाखयोनिमें जन्मपाकर अनेकतरहका दुःखपा
व जोमनुष्य अपनेउत्पन्न व पालन व नाशकरनेवालेको नहीं
नता उसेअधर्मीसमझनाचाहिये जिसतरह मल व मूत्रपेटसेवि
होकर अशुद्धहोजाताहै उसीतरह परमेश्वरसेबिमुख रहनेवालेम
ष्यस्थानभ्रष्टहोकर नरकमेंजातेहैं व जोब्राह्मण अपनेलाभवास्ते
सरोंकोवशीकरण व मारण व उच्चाटनबतलाकर मुक्तहोनेकीराह
हींसिखलाते उनकोपाखण्डी व अधर्मीसमझनाउचितहै व जो
गसन्त व महात्मा व हरिभक्तोंको तुच्छजानकर सबजीवोंमेंपर
श्वरका रूपबराबरनहींदेखते व वेदानुसारराह न चलकर केवल
पना स्वार्थसमझतेहैं व धनपाकर धर्मनहींकरते उन्हेंअभागी व
पीजाननाचाहियेकिसवास्ते धर्मकरनेसे ज्ञानप्राप्तहोकर तृष्णा
टजातीहै व विरक्तहोनेसे मुक्तिपदवी पातेहैं देखोजबमरतीसमय
पनाशरीर व स्त्री व पुत्र व सेवकआदिक कोईरक्षानहीं करनेस
तबउनकेप्रेममेंफँसकर नष्टहोनावृथाहै जिसतरह मनुष्यअपना
रीरपुष्टकरनेवास्तेपशु व पक्षी आदिकमारकर खाताहै उसीतरह
सरेजन्ममें वहपशु व पक्षी उसेमारकर अपनाबदलालेतेहैं व म
रापीने व साधु व ब्राह्मण व परमेश्वरसे बिमुखरहनेवालोंको यम
तबजोरी नरकमेंडालकर बड़ादुःखदेतेहैं इतनीकथासुनकर राजा
जनकनेपूंछा महाराज सबयुगोंमें अवतारआदिपुरुष भगवान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किसतरहपरथा करभाजननाम नवेंयोगीश्वरनेकहा सतयुगमें अ
वतारपरमेश्वरका चतुर्भुजी चन्द्रमाकेसमान श्वेतहोकर उसयुग
में सबमनुष्यधर्मात्मा व सच्चे व हरिभक्तथे व धर्मकेचारों पैरबनेर
हकर अन्तसमय सबकोबैकुण्ठधाम मिलताथा व त्रेतायुगमें अव
तारपरमेश्वरका अग्निरूपी लालहोकर तौरअपना ब्रह्मचारीकेस
मानरखतेथे व धर्मकेतीनपावँ रहकर बासुदेवनामका चर्चारहताथा
व द्वापरयुगमेंअवतार नारायणजीका श्यामरंग नीलमणिकेसमा
नचमकताहोकर धर्मकेदोपावँथे व मुकुटजड़ाऊ शिरपररखकर पू
जापरमेश्वरकी होतीथी व कलियुगमें अवतार लक्ष्मीपतिकाश्या
मरंग सूर्यकेसमान चमकताहोकर धर्मकाएकचरण रहजाता है
व कलियुगके मनुष्य निर्द्धनरहतेहैं व धनपात्रभी सूमहोकर जैसा
चाहिये वैसादान व धर्मनहींकरते इसवास्ते कलियुगबासी मनुष्य
केवलपरमेश्वरका नामजपने व हरिचरणोंमें ध्यानलगाने व उ
नकीकथा व लीला सुननेसे भवसागरपार उतरजातेहैं परमेश्वरके
शरणाजानेवाले किसीदेवताका डरनरखकर देवऋण पितृऋण
ऋषिऋणासे उऋणहोजातेहैं व हरिभक्तोंपर परमेश्वरकी छायार
हनेमें कोईउनको कुछदुःख देनेनहींसक्ता व नारायणजी अपनेभ
क्तोंपर दयालुहोकर उनकोकुकर्मकरनेसे बचायेरहतेहैं व हेराजन्
कलियुगमें जोकोई नित्ययहश्लोकपढ़कर परमेश्वरको दण्डवत्
करैगा उसेनारायणजी बांछितफलदेकर अन्तसमय उसकाउद्धार
करेंगे व अर्थउसश्लोककायहहै हेश्रीनारायणजी महाराजमैंतुम्हा
रेकमलरूपी चरणोंकाध्यान जोफूलसेभी अधिककोमलहैं हृदय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मैंरखताहूँ तुम्हाराचरण छोड़कर दूसराकोई ध्यानकरनेयोग्यन
है जोकोई उनचरणोंका स्मरणकरताहै वहभाग्यवान्होकर उस
किसीदेवता व दैत्य व मनुष्य व पशुआदिकका कुछभयनहींरहता
तुम्हारेचरणोंकाध्यानकरनेकेप्रतापसेमनमेराकामक्रोधलोभमो
में कि वहअधर्मकीजड़है नहींफँसता जिससमयतुम्हारेकमलरूप
चरणोंकोयाद व ध्यानकरताहूं उससमय मेरासबमनोरथपूर्णहोक
कोईइच्छानहींरहती व गंगायमुना व नर्मदा व सरस्वतीआदिक
बतीर्थ आपकेचरणोंमेंरहकर चरणतुम्हारा सबदुःख अपनेभक्त
का दूरकरदेताहै मैंआपकोउत्पन्न व पालन व नाशकरनेवालाती
नोंलोककाजानकर दण्डवत्करताहूं यहसुनाकर नवेंयोगीश्वरने
कहा हे राजन् सतयुगमें दशहज़ारवर्ष तपकरनेसे परमेश्वरप्रसन्न
होतेथे व बीचत्रेताके हज़ारवर्षतपकरनेसे मनुष्यफलपाताथा वद्व
परमें सौवर्षपूजाध्यानकरनेसे मनुष्यकामनोरथ पूर्णहोताथा व क
लियुगमें एकदिनरात मनुष्यपरमेश्वरको सच्चेमनसे एकचित्तहो
कर याद व ध्यानकरै तोनारायणजी प्रसन्नहोकर उसकीइच्छापूर्ण
करदेतेहैं इसलिये सबयोगी व मुनि तप व जपकरनेवालोंको यहइ
च्छारहतीहै किएकबेरहमाराजन्मभी बीचकलियुगकेभरतखण्ड
में होता तो थोड़ापरिश्रम करनेमें परमेश्वरकादर्शनपाते सो हे रा
जन्हमकोइसबातकाबड़ापछितावाहै किकलियुगवासी ऐसेसहज
में मिलनेवाले परमेश्वरको नहींयादकरते व बैकुण्ठनाथनेगीतामें
अपनेमुखारबिन्दसे कहाहै किजोकोई अपनेको मनसावाचा कर्म
णासे मुझेसौंपिदेवै उसकोसंसारमें किसीतरहका दुःख व भयनहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होता इतनीकथासुनाकर नारदमुनिनेकहा हे वसुदेव जबयोगीश्व
रोंने यहसबज्ञानराजाजनकसेकहा तबराजानेविधिपूर्वक उनयो
गीश्वरोंकीपूजा व परिक्रमाकरके बिदाकिया व अपनेमनसे रा
ज्य व परिवार व धनकीप्रीतिछोड़कर उसीज्ञानके प्रतापसे सदे
ह बैकुण्ठमेंगया सो तुमभी इसीज्ञानपर बिश्वासरखकर हरिचर
णोंकाध्यानकरो तुम्हारीमुक्तिहोजावेगी हेवसुदेव जबबैकुण्ठनाथ
ने तुम्हारेघर पुत्रहोकरअवतारलिया व तुमअपनेप्राणसे अधिक
उनकोचाहतेहौ तबतुम्हारेभवसागरपार उतरनेमेंक्यासंदेहहै परउ
नकोअपनाबेटा जाननाछोड़कर आदिपुरुषभगवान्समझो उन्हों
ने केवलपृथ्वीकाभार उतारने व हरिभक्तोंको सुखदेनेवास्ते संसार
मेंअवतारलियाहै व मैं उन्हींकादर्शनकरनेवास्ते सदायहांआताहूं
जबयहज्ञान नारदमुनिसेसुनकर बसुदेव व देवकीकोबिश्वासहुआ
कि श्रीकृष्णजीपरब्रह्मपरमेश्वरकाअवतारहैंतबदोनोंमनुष्यउनके
चरणोंपरगिरपड़े व पुत्रभावछोड़कर परमेश्वरसमान उनकोसम
झने लगे व नारदमुनिबैकुण्ठनाथसेबिदाहोकरब्रह्मलोककोचले
गये शुकदेवजीबोले हे परीक्षितजोकोई इसअध्यायको विधिपूर्वक
कहै व सुनैगा वहसबपापोंसेछूटकर मुक्तिपदवीपरपहुंचैगा॥

छठवां अध्याय॥

ब्रह्मादिक देवतों का श्रीकृष्णजीके पासआना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित नारदमुनिके जानेउपरान्त एक
दिन श्रीकृष्णजी सुधर्मासभामेंबैठेथे उससमय ब्रह्मा व महादेव व
इन्द्र व कुबेर व बरुण व दक्षप्रजापतिआदिक देवताऋषीश्वरश्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मसुन्दर सगुणरूपका दर्शनकरनेवास्ते आकाशमार्गसे द्वारका
आये व नन्दनबागकेफूलउनपरबरषाये व दण्डवत्करकेहाथजो
कर श्रीकृष्णजीसेबिनयकी हेमहाप्रभु जिनचरणोंका ध्यानबड़े
योगी व ऋषीश्वरआठोंप्रहर अपनेहृदयमेंरखकर मुक्तिपदवीपा
हैं उन्हींतीर्थरूपी चरणोंकादर्शनकरनेवास्ते हमलोगआनकर
वसागरपारउतरनाचाहतेहैं हेनिर्गुणनिरंकारआपसब जगत्केउ
न्न व पालन व नाशकरनेवालेहैं व संसारीलोगयज्ञ व तप व ध्यान
व तीर्थकरनेपरभी हरिचरणोंकी भक्तिकियेबिना संसार व परलो
ककासुखनहींपाते व जबतकतुम्हारी दयासेपूर्वजन्मका पुण्यसहा
यनहींहोतातबतक तुम्हारेचरणोंमेंप्रीति न होकरहरिकथामें चित्त
नहींलगता वहमलोगोंके विनयकरनेसेआपनेमर्त्यलोकमें सगुण
अवतारलेकर पृथ्वीकाभार उतारा व एकसौपच्चीसबर्ष संसारमेंर
कर साध व वैष्णवोंको सुखदिया व अधर्मी व दुःखदायी राजोंको
मारकर धर्मकीरक्षाकी हे त्रिभुवनपति अबदुर्वासाऋषीश्वरकेशा
पसे छप्पनकरोड़ यदुबंशी इसतरहजलरहे हैं जिसतरहवृक्ष सूख
कर भीतरसेखुखलाहोजाताहै आपसबजीवोंकेमालिक हैं जैसाउ
चितहोवै वैसाकीजिये यहसुनकर श्यामसुन्दरबोले हे ब्रह्मामैंने तु
म्हारीइच्छाजानलिया कंस व जरासन्ध व कालयमनआदिक अ
धर्मीराजा व दैत्योंकोमारकर कौरवों व पाण्डवोंसे महाभारतकरा
के पृथ्वीकाभारउतारचुकाहूं केवलयदुबंशियोंका नाशकरना औ
र रहगयाहै सोथोड़ेदिनमें उनकाभीनाशकरके बैकुण्ठमेंआनपहुं
चताहूं तुमलोगअपने २ स्थानपरचलो यहसुनकर ब्रह्मादिकदेव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ता उनसेबिदाहोकर अपने २ लोककोचलेगये व त्रिभुवनपतिने गोलोकको जानाबिचारकर एकदिनराजाउग्रसेनकी सभामेंयदुबंशियोंसेकहा इनदिनोंब्राह्मणकेशापदेनेसे द्वारकापुरीमें नित्यन ये २ अशकुनहोतेहैं इसलिये सबकिसीको प्रभासक्षेत्रमेंचलकर स्नान व दान व यज्ञ व होमवहांपरकरके यहदोषछुड़ानाचाहिये जिसतरहसमुद्रमेंरहनेसे चन्द्रमाकाक्षयीरोग छूटगयाथा उसीतर हप्रभासक्षेत्रमेंनहाने व दानकरनेसे तुम्हारादोषभी छूटजायगा ज बराजाउग्रसेनआदिक सबयदुबंशी श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार प्रभासक्षेत्रमेंजानेवास्ते तैयारीकरनेलगे तबउद्धवभक्तने जोलड़क पनसे उनकामित्र व सेवकथादण्डवत्करने व परिक्रमालेने उपरा नआंखोंमें आंशूभरकर त्रिभुवनपतिसे विनयकीकि हेमहाप्रभुय बंशियोंको प्रभासक्षेत्रमें जानेसेमैंजानताहूं कि आपउनकावहां नाशकरके बैकुंठकोपधारैंगेनहींतोतुम्हारे तीर्थरूपीचरणोंकाध्या नकरनेसे हज़ारोंशापछूटजातेहैं उनकोवहांभेजनेकाक्याप्रयोजन है जिसतरह बालापनसे मैंआजतक तुम्हारीसेवामेंरहा उसीतरह मुझेअपने चरणोंसेबिलग न करकेसाथलेचलो व ऐसावरदानदेव कि किसीयोनिमें मेराजन्महो परतुम्हारे कमलरूपीचरणोंकी भ क्ति व प्रीतिमेरेहृदयमेंबनीरहै॥

सांतवां अध्याय॥

श्यामसुन्दरका उद्धवसे ज्ञानकहना॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् जबउद्धवनेश्यामसुन्दरके साथचल नेवास्तेबहुतबिनतीकी तबजगत्पालनेउसेअपनाभक्त व मित्रजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नकरकहाहेउद्धव सच्चहैयदुबंशीलोग दुर्वाशाऋषीश्वरके शाप
जलरहेहैं आजकेसातवेंदिन सबयदुबंशियोंका नाशहोकरद्वारक
समुद्रमें डूबजावैगी व ब्रह्मादिकदेवता मुझेबुलानेआयेथे इसलि
ये मैं भी साथयोगाभ्यासके तनुअपनात्यागकर वैकुण्ठको चल
जाऊंगा सो तुझकोभी उचितहै कि पहिले से विरक्तहोकरमेरेच
णोंमें ध्यानलगावो मैंने ब्राह्मणके शापसे तुझेछुड़ादिया व हे उ
द्धव मेरेजानेउपरांत धर्मसंसारसे उठजायगा यहबचनसुनतेही उ
द्धव रोकरबोला हे त्रिभुवनपति मैंने बिनाज्ञानपाये संसारीमोह
छोड़दिया तो विरक्तहोनेसे क्यालाभहोगा इसलिये दयालुहोकर
ऐसाज्ञानउपदेशकीजिये जोमरतेसमयतक न भूलै यहसुनकरद्व
रकानाथनेकहा हे उद्धवसंसारमें जोतुमदेखते व सुनतेहो सबको
झूठाव्यवहारसमझकर मनअपनाहमारेचरणोंमें लगावो जबतुम
संसारीवस्तुनाशहोनेवालीसे प्रेमतोड़कर मेरेअविनाशी रूपका
ध्यानसच्चेमनसेकरोगे तबतुम्हें मेरीमायानहींव्यापैगी औरतुमभु
झेआठोंप्रहर अपनेपास देखोगे जिसतरहपौशालेपर अनेकमनु
ष्यइकट्ठेहोकर पानीपीनेउपरान्त विलग २ होजातेहैं उसीतरह
माता व पिता व स्त्री व पुत्रथोड़ेदिनसाथरहकर अन्तसमय चार
पगभी मरनेवालेकेसाथनहींजाते अपनेस्वार्थ व जगत्कोदिख
लानेवास्ते चारदिनरोलेतेहैं इसलिये उनकाप्रेमस्वप्नकेसमान झू
ठा समझनाचाहिये केवलज्ञान व वैराग्य व पाप व पुण्यअपनेसा
थजाकर उसीसेदुःख व सुखप्राप्तहोताहै इसलिये मनुष्यकोचाहि
ये कि अपनामरनाआठोंप्रहरयादरखकर कुकर्मोंसेडरतारहे व सब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जड़ व चैतन्यमें मेराप्रकाश बराबरसमझकर किसीजीवकोदुःख न देवेजिसतरहदिनरातबदलाकरतेहैं उसीतरहसंसारमेंउत्पन्नहोने व मरनेकीगतिहोकर यहबातकोईनहींजानता कि मरनेउपरांत कौन योनिमें हमाराजन्महोगा यहज्ञानसुनकर उद्धवनेविनयकी कि हे वैकुण्ठनाथअन्तर्यामी स्त्री व पुत्रकामोहछोड़कर विरक्तहोना बहु तकठिनहै मुझअज्ञानपरदयालुहोकर कोईऐसासहजउपाय बत लाइये जिसमेंसंसारीमायाछूटकर तुम्हारेचरणोंमें भक्तिउत्पन्नहो वे मुझेज्ञानरूपी नौकापरबैठाकर भवसागरपारउतारदीजिये यह सुनकर श्यामसुन्दरबोले हे उद्धव जिसतरह हवा किसीबस्तुसेमि लावट न रखकर बिलगरहतीहै उसीतरह तुमभीसबबस्तुभली व बु रिको इसशरीरसे अलगसमझकर संसारीमायाछोड़देव देखो जैसे चन्द्रमाकीकला नित्यघटती बढ़तीहै वैसेयहशरीरबालापन व तरु णाई व बुढ़ापाभोगकर सदाएकतरहपरनहींरहता जिसतरह सूर्यदे वता अपनाप्रकाश पृथ्वी व पहाड़ व पानीपरबराबररखकर किसी के साथ कुछप्रेमनहींरखते उसीतरह तुमभी सबकी प्रीतिछोड़कर मनअपना विरक्तकरलेव जैसेकबूतर व कबूतरी अपनेबच्चोंकी प्री तिमेंफँसकर नष्टहुयेथे वैसेसंसारीलोगभी स्त्री व पुत्रकाप्रेमरखनेसे दुःखउठातेहैं यहसुनकर उद्धवनेविनयकी महाराज उनदोनोंपक्षि योंकीकथा विस्तारपूर्वककहिये केशवमूर्त्तिनेकहा हे उद्धव एकक बूतर अपनीमादी व बच्चोंसमेत बृक्षपररहकर जिसतरह राजाइन्द्र इन्द्राणी से विलासकरता है उसीतरहवह भी अपनीमादीसे खोते में भोगकरके सुखउठाताथा जबएकदिन वहकबूतर अपनेबच्चे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अकेलेछोड़कर मादीसमेत चारालेनेवास्ते चलागया तबबहेलि
येने वहांआयकर उनबच्चोंको जालमेंफँसालिया जबवहकबूतर
कबूतरी यहहालबच्चोंकादेखकर प्रेमबश आपउसजालमें कूदप
तबवहबहेलिया सबकोफँसाकर अपनेघरलेगया देखोजिसतरह
नदोनोंने बच्चोंकी प्रीतिजालमेंकूदकर अपनाप्राणदिया व बच्चों
कुछसहायता उनकीनहींकी उसीतरहसंसारीलोग स्त्री व पुत्रकेमो
हमेंफँसकर नरकभोगतेहैं तबवहांपर कोईउनकीसहायतानहींकर
ता इसलिये उनलोगोंकेवास्ते जोदुःखमेंकुछकामनहींआते दुःख
उठाना व अपनापरलोकबिगाड़ना उचितनहींहै हेउद्धव पिछले
युगमें यदुनामराजा ज्ञानसीखनेकी अभिलाषारखकर अनेकयो
गी व ऋषीश्वरोंकेपास जायाकरताथा एकदिन उसीचाहनामें गो
दावरीकेकिनारेचलागया सोवहांपर दत्तात्रेयनामब्राह्मण अतित
जवानरूपको बैठेदेखकर सुखपालसेउतरपड़ा व दण्डवत्करने व
परिक्रमालेनेउपरांत हाथजोड़करबिनयकी हेईश्वरकोपहुँचेहुयेम
हात्मापुरुष इसतरुणाईमें इतनीपदवी तुमनेकहांसेपाई तुम्हारा
तेज देखनेसे मालूमहोताहै कि आपबड़ेज्ञानीहोकर अपनेगुणको
छिपायेहैं व संसारमें रहनेपरभीकुछवस्तु अपनेपास न रखकर इस
तरह संसारसेविरक्त दिखलाईदेतेहो जिसतरह कमलकाफूलपानी
में उत्पन्नहोकर जलसे क्लिगरहताहै व संसारीमनुष्योंको देख
ताहूं कि कामक्रोध मोह लोभकी अग्निमेंजलकर एकक्षणासुख
सेनहींरहते व आपइसतरह आनन्दमूर्त्ति दिखलाईदेते हैं जिसत
रह हाथी ज्येष्ठमहीने की धूपकामाराहुआ जलमें जाकरठंढा व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मग्नहोजाताहै इसलिये तुमसेबिनयकरताहूं कि जो कुछज्ञान
व परमेश्वरकी महिमा आपको मालूमहो सो दयालुहोकर मुझे
बतलाइये यहवचन सुनतेही दत्तात्रेयने उसकीओर देखा व हँस
कर कहा हे राजन् मैंने चौबीसगुरु अपनेसमझकर जोकुछ ज्ञा
न उनसेसीखाहै वहकहताहूं सुनो व पच्चीसवांगुरु मेरायहशरीरहै
जबमैंनेअपनेशरीरको बिचारकरदेखा तबमालूमहुआ कि इसतनु
में मल व मूत्र व रक्त व मांसअशुद्धवस्तु भरीहोकर सिवायलेनेना
मपरमेश्वर व करने शुभकर्म दूसरीवस्तुउत्तमनहींहै किसवास्ते सं
सारीमायामेंफँसकर जन्मअपनावृथाविताऊं जबयहसमझकर प
रमेश्वरकाभजन व स्मरणकरनेवास्ते अकेलाअपने घरसेबाहरनि
कला व बौड़होंकेसमान चारोंओरफिरनेलगा तबलड़कोंने मुझे
बौड़हासमझकर पीछे २ फिरना व पत्थरमारना व गालीदेनाआर
म्भकिया व सिवायचौबीसगुरुके जिसनेमुझे गायत्रीमंत्रउपदेशकि
याथा उसेबिलगसमझनाचाहिये सोपहिलागुरुमेरापृथ्वीहोकरउस
सेतीनबातैं मैंनेसीखीहैं मैंनेएकपहाड़कोदेखा कि धरतीसेऊंचारह
कर अनगिनत मनुष्य व पशुपक्षी आदिकजीवोंको अपनेऊपर रह
ने व चलनेआंधी व वर्षनेपानीके वहअपनेस्थानसे नहींहिलता तब
मैंनेबिचारा कि ज्ञानीकोभीसंसारीमाया व चाहनामें जोहवापानी
केसमानहै लपटकर अपनीजगहसेहिलना न चाहिये किसवास्ते
कि तनुमनुष्यका मूठीभरमिट्टीकावनकर आयुर्द्दाहवाकेसमानबी
तीजातीहै दूसरेवृक्षोंकोदेखा तोपृथ्वीमेंउत्पन्नहोकर अपनीछाया
व फल व फूलसे सबजीवोंको सुखदेतेहैं व एकपैरसेखड़ेरहकर वर्षा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऋतु व गर्मी व सर्दीकादुःखउठानेपरभी अपनेस्थानसेनहींहिलै एकदिन मैंनेघरसेनिकलकर क्यादेखा कि बहुतमनुष्यबृक्षकीछा यामेंबैठेथे जबवहांसेठंढेहोकर जानेलगे तबकिसीनेउसकीडाली व किसीनेपत्ता व फलतोड़लिया परवहबृक्षकुछनहींबोला यहल लउसकादेखकर मैंनेअपनेमनमेंकहा कि ज्ञानीमनुष्योंकोअपना तनु व धन परोपकारकेवास्ते समझकर अपनाप्राणतकदेनेमें मुक रना न चाहिये किसवास्ते कि यहशरीरमिट्टीकापुतला सदाबनता व बिगड़तारहताहै इससेक्याउत्तम जोदूसरेकेकामआवै तीसरेदि नेपृथ्वीकोदेखा कि संसारीलोग उसकीछातीपरलातरखतेहैं परवह किसीकोभला व बुरानहींकहती सोहमनेबिचारा कि ज्ञानीमनुष्य कोभी किसीकीस्तुतिकरनेसे प्रसन्नहोना व दुर्बचनकहनेमें खेद मानना न चाहिये दूसरागुरुमेराहवाहै मैंनेहवाकोसुगन्धित फूल व लहसुनआदिक दुर्गन्धदोनोंमेंबहतेहुये देखकर अपनेमनमेंक हा ज्ञानीमनुष्यकोभी जोकुछमीठा व कडुवाकर्मानुसारमिलेवह खाकर आनंदपूर्वकस्मरण व ध्यानपरमेश्वरकाकरै व कुछस्तुति व निन्दाउसकी न करै तीसरागुरु मेराआकाशहै जिसतरहगूलर काफल भीतरसेखुखलाहोकर उसमें छोटे २ मच्छड़भरेरहतेहैं उसीतरहपृथ्वी व आकाशगोलहोकर उसकेभीतर सबजीवजड़ व चैतन्यबासकरतेहैं सोहमने इसब्रह्माण्डमेंक्यादेखा कि प्रकाशसूर्य काबीचबर्त्तनचांदी व सोना व मिट्टीपानीभरेहुयेमें बराबरपड़कर उसकोकिसीसेमिलावट व आश्रयनहींरहता व बर्त्तनतोड़नेवपानी गिरानेसे वहप्रकाशफिरसूर्यमें मिलजाताहै व बर्तनोंमेंछायापड़ने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से कुछतेज उनकाघटनहींजाता यहहालदेखकर हमनेजाना कि परमात्मापुरुषको जिनकीशक्ति चौरासीलाखयोनिमें रहतीहै आकाशकेप्रमाण समझनाचाहिये इसलिये जीवोंके मरनेमें उनकी कुछहानि न होकर वह अपनेतेजसे एकजगह प्रकाशितरहतेहैं व उनकीशक्ति सबजीवोंमें रहनेसे कुछ उनकातेज कमनहींहोजाता चौथागुरु मेरा पानीमोतीकेसमान उज्ज्वलहोकर किसीजगह मैला जो दिखाईदेताहै वहकारणमिट्टी व राखादिक मिलनेका समझनाचाहिये नहींतो वहउज्ज्वल व पवित्रहोकर सबजगत्को शुद्ध करदेताहै उसेहमने देखकरसमझा कि ज्ञानीकोभीपानीकेसमान शुद्धरहकर अपनेपास बैठनेवालोंको ज्ञान उपदेशकरके पवित्रकरदेनाचाहिये जिसमें सबछोटे बड़े उसकोअच्छाकहैं पांचवांगुरु मेरा अग्निहै जिसमेंसबबस्तु डालनेसे जलजातीहै व दूसरेदिनके वास्ते कुछनहींरहती व जोलोगअग्निमेंयज्ञ वहोमकरतेहैं उनका पापजलकरछूटजाताहै उसीतरह ज्ञानीकोभीचाहिये कि जोकुछ उसकोमिले उसीदिन सबखर्चकरडाले दूसरेदिनकेवास्ते कुछ न रक्खै व जोकोई उसेखिलादे वहखाकर अपनेआशीर्वादसे खिलानेवालेकापापछुड़ादेवे छठवांगुरुमेराचन्द्रमाहै जिसतरहचन्द्रमा सदा एकरूपरहकर सूर्यकेसमीप व दूरहोनेसे उसकातेज घटता व बढ़ताहै उसीतरहजन्मलेना व मरना संसारमेंहोकर वहपरमात्मा पुरुष जिसकाप्रकाश चौरासीलाख योनिमेंरहताहै सबसेबिलग व सदा एकरसरहताहै इसलिये हमने अपनागुरु परमात्माकोभी समझा व सातवांगुरु अपनासूर्यको मानकर उनसे दोवस्तु मैंनेपाई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकतो जिसतरह आठमहीनेतक सूर्य्यदेवता समुद्र व नदी आदि
कका पानीसुखाकर चारमहीने वर्षाऋतु में वहपानी वर्षादेते हैं
उसीतरह ज्ञानीकोचाहिये कि जोकुछमिले उसवस्तुपर तृष्णा न
रखकर किसीकोदेडालै दूसरेयह कि बहुतसेबर्त्तनपानीभरकर धूप
मेंधरदे तो सूर्यरूपीपरछाहीं बीचउनबर्त्तनोंके दिखलाईदेतीहैं पर
अनेकसूर्यदिखलाई देनेसे सूर्यदेवता बहुतनहींहोजाते इसलिये मैं
ने जाना कि परमात्मापुरुषएकहोकर केवल उनकी छाया सब
जीवोंमेंरहतीहै आठवांगुरुमेराकपोतनामपक्षीहैजबवहअपनेबच्चों
केपालनेवास्ते जालमेंदानाचुगनेगया व बहेलिया वहजालउठा
कर अपनेघरचलाआया तबहमनेमनमेंकहा देखो जिसतरह यह
पक्षी अपनेबच्चोंकेवास्ते जालमेंफँसकरनष्टहुआ उसीतरह ज्ञानी
मनुष्य संसारीप्रीतिरखनेसेदुःखपावेगा जितनाकष्टउसपक्षीनेएक
दिनमेंउठाया उतनासुखहजारवर्षमें भी उसकोप्राप्तनहींहोता इस
लिये मैं स्त्री व पुत्रकाप्रेमछोड़कर अकेलाबहुतप्रसन्नरहताहूं॥

आठवां अध्याय॥

दत्तात्रेय का राजा यदुसे ज्ञानकहना॥

दत्तात्रेयनेकहा हे राजन् नवांगुरुमेराअजदहासर्पहै कि जबसे
उसनेजन्मपाया तबसेउसीजगहरहकर कहींभोजनढूंढ़नेनहींगया
जब हरिणादिक पशुआनकर अपनासींग उसकेअंगमें चुभावतेथे
तबवह एकदोकोउठाकर निंगलजाताथा इसीतरह नित्य विष्णु
भगवान् उसकापालन करतेथे और वहसांपकिसीदिन भूखेरहजा
नेपरभी सन्तोषरखताथा उसेदेखकर मैंनेसमझा कि ज्ञानीकोभी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गृहस्थोंकेद्वारेमांगनेवास्ते जाना अपनीपतिखोनाहै उसीदिनसे मैं किसीकेघरपर भोजनमांगनेवास्ते नहींजाता जो कुछ परमेश्वर विनामांगेभेजदेतेहैं उसेखाकरप्रसन्नरहताहूं व उत्तममध्यम भोजनकास्वाद जिह्वातकरहकर पेटमेंजानेसेमलहोजाताहै दशवांगुरु मेरासमुद्रहै जोवर्षाऋतुमें अनेकनदियोंके मिलनेसेकुछनबढ़कर गर्मी व जाड़ेमेंभीनहींसूखता सदाएकरूपरहकर उसकेआदि व अन्तकोकोईनहींदेखता उसेदेखकर मैंनेबिचारा कि ज्ञानीकोभीसमुद्रकीतरह निश्चिन्तरहनाउचितहै लाभ व हानिहोनेमेंकुछहर्ष व खेदकरना न चाहिये ग्यारहवांगुरुमेरापतंगहै जिसतरह वहदीपक परमोहितहोकर उससेमिलनेवास्ते बेधड़कजलमरताहै उसीतरह संसारीजीव अपनीस्त्री व पुत्र व धनकेमोहमेंफँसकर अन्तसमयनरकभोगतेहैं इसलिये ज्ञानीकोस्त्रीसेप्रीति न रखकर पतंगकेसमान परमेश्वरसे प्रेमकरके अपनाप्राणदेना चाहिये जिसमेंमुक्तिपदार्थ मिले जबस्त्रीसे प्रीतिकरनेमें दोनोंपंखज्ञान व वैराग्यके जलजाते हैं तबवह पंगुलहोजानेसे वैकुण्ठमेंनहींपहुँचसका नरकमेंपड़कर अनेकतरहकादुःखभोगताहै इसवास्ते मायारूपीस्त्रीसे अलगरहकर कभीउसकेपास अकेलेमें बैठना न चाहिये स्त्री व धनसे सुख चाहनेवालेलोग पतंगकेसमान जलकरनष्टहोजातेहैं व स्त्रीकेपास बैठनेमें ज्ञानीमनुष्य ऐसेअन्धे व बहरेहोजातेहैं कि उनको अपना भला व बुरा न सूझकर किसीकीलज्जानहींरहती यहीबातसमझकर मैंनेस्त्रीकीसंगतिछोड़दी बारहवांगुरुमेरा शहदकीमक्खी है एकबेरमैंने क्यादेखा कि उसनेबड़ेपरिश्रमसे जो शहदछत्तेमें इकट्ठा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया व कृपणतासे आपउसे न खाकर किसीदूसरेकोभी नहीं
याथा वहशहद एकमुसहर सबमक्खियोंको जलाकर छत्तेसे
कालकरलेगया यहहालदेखकर मैंनेविचारकिया कि द्रव्यवटो
वालोंकी यहीदशाहोतीहै उसदिनसे दूसरेरोज़ वास्ते कुछ न र
कर सबखर्चकरडालताहूं सो ज्ञानीमनुष्यको अपनेभोजनप्रमा
मांगकर अधिकलेना न चाहिये धनबटोरनेसे मक्खियोंकी त
दुःखप्राप्तहोताहै तेरहवांगुरु मेराहाथीहै मैंनेदेखा कि हाथीफां
नेवालोंने बनमेंगड़हाखोदकर उसकोसरहरीसेपाटा व काले का
ज़काहाथी व हथिनीबनाकर उसपरखड़ाकरदिया जबएकजंगल
हाथी उसेसच्चीहथिनीसमझकर कामबश वहींदौड़ताहुआ जाक
गड़हेमेंगिरपड़ा तबहाथीफांसनेवालोंने रस्सासेबांधकर उसको
कड़लिया यहदशाहाथीकीदेखकर मैंनेविचारकिया कि ज्ञानीको
स्त्रीकीचाहनाकरना उचित न होकर कठपुतलीसेभी प्रीतिरखना न
चाहिये जिसतरहहाथीनेहथिनीवास्ते गड़हेमेंगिरकरदुःखउठाय
था उसीतरहपर परस्त्रीगमनकरनेवाले नरकमेंपड़करबहुतकष्ट पा
हैं चौदहवां गुरुमेरामधुहामक्खीकेछत्तेसे शहदनिकालनेवाला
जोशहदभँवरे बहुतदिनोंमें इकट्ठाकरतेहैं उसकोवह एकबेर निक
लकरलेजाताहै उसेदेखकर मैंनेविचारा कि भँवरे उसशहदको
जातेतोवहकिसतरहलेनेपाता इकट्ठाकरनेवालोंको सिवायदुःख
कुछसुखनहींहोता इसलियेज्ञानीकोचाहिये कि जोगृहस्थबहुत
ड़केबालेरखकर अपनेयहां द्रव्यबटोरेहो उसकेयहांसे अपनाप्रप
जनभर मांगलाकर भोजनकरलेवे झोलीबांधकरलेचलनेसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मैंकोईछीनलेगा पन्द्रहवां गुरूमेरा हरिणहै जिसतरहवह रागसुन
नेवास्तेजाकर वाणलगनेसे घायलहोताहै उसीतरहसंसारीमनुष्य
मायारूपीस्त्रीकागाना व बचनसुनकर उसकेवशहोजातेहैं इसलि
येज्ञानीको अपनेस्थानसेउठकर दूसरीजगहजाना व स्त्रीकागाना
सुननाउचितनहींहै सोलहवांगुरूमेरा मछलीहै कि वास्तेलालच
थोड़ेसेमांसादिक जोकटियामें लगाकर अहेरखेलतेहैं अपनाप्रा
णदेतीहै सोएकमछलीको कटियामें फँसेहुयेदेखकर मैंनेसमझा
किज्ञानीमनुष्यकोभी उत्तमभोजनढूंढ़ना उचित न होकर जोकुछ
भलाबुरा परमेश्वरकीइच्छासेमिलजावे उसेखाकर पंचभूतात्मा
व अपनीजिह्वाको वश्यमेंरक्खे जिसमें उसकोबड़ाईमिलै सत्रहवां
गुरूमेरापिंगलानामवेश्याहै एकदिनहमने राजाजनककेनगरमें
जाकरक्यादेखा कि पिंगलावेश्या सोलहोंशृंगारकरके सन्ध्यासम
यमें बीचइच्छाआवने किसीव्यसनीकेआधीरातक अपनेद्वारेपर
बैठीरही परकोईचाहनेवालाउसकानहींआया तबवह बहुतउदासी
सेअपनेभीतरजाकर शय्यापरलेटरही परकामरूपीमदमें उसको
नींद न आनकर ऐसाज्ञानउत्पन्नहुआ जैसाकिसीको दशहज़ार
वर्षतक ध्यानकरनेसेभी नहींमिलता उसवेश्यानेमनमेंबिचारा दे
खोबड़ेशोचकीबातहै कि मैंने जन्मअपनाबृथाखोकर स्मरण व
ध्यान त्रिभुवनपतिजगत्पालककानहींकिया व परमात्मापुरुष स
बमित्रकाप्रेमछोड़कर संसारीमनुष्यझूठेचाहनेवालोंसेप्रीतिलगा
ईमेरेबराबरकोईदूसरामूर्ख नहोगा जैसामैंनेअपनेसाथकिया वैसा
कोई अन्धाभीनहींकरता कि अपनेमालिकको जो शरीरमेंवर्त्तम।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहै भूलकर नहींदेखा जिसतरहयहशरीर हवा व पानी व म
व हड्डी व मांससे वनकर नाशरूपी रस्सियोंसे बँधाहै उसीतरह
खा काठका डोरासेबँधारहकर घूमताहै जैसे मकानमें अनेकद्वा
रहतेहैं वैसेशरीरमेंभी नवद्वारेनाक व कानादिकरहकर हरएकद्व
रेसे अशुद्धवस्तुनिकलतीहै सो मैंनेचाहा कि इसघरमेंप्रसन्नर
अबमैंनेजाना कि इसझूठेसंसारमेंसिवायदुःखके कुछसुखप्राप्तनहीं
होता और केवलपरमेश्वरकास्मरण व ध्यानकरने व कथासुनने
से लोक व परलोकवनताहै जितनामैं रुपयालेनेवास्ते जो मरने
परान्त कामनहींआता अपनेव्यसनीको रिझातीथी उतनाशृङ्गार
करकेत्रिभुवनपतिकोलोभाती तो मेरापरलोकवनजाता देखो जो
लोग मायारूपीरस्सीसेबँधेहोकर अपनेदुःखमेंआपव्याकुलहैं उन
सेमूर्खताईकेराह अपनासुखचाहकर ज्ञान व वैराग्यसंसारीबन्धन
काटनेवालोंसे प्रीतिनहींलगाई इसलिये आजमैंनेसंसारीमायाको
ड़कर यहप्रणकिया कि आदिपुरुषभगवान्से जो बैकुण्ठकासुख
देनेवालेहैं प्रीतिलगाकर उनकेसाथविहारकरूं व संसारीमनुष्यकी
ओर जो विपत्तिमेंकामनहींआते आंखउठाकर न देखूं व सिवाय
परमेश्वरके और किसीसे कुछवस्तुनमांगूं किसवास्ते कि महात्मा
लोगोंनेऐसाकहाहै कि मनुष्यजिसवस्तुकी इच्छारखताहो नारायण
णजीसेमांगे औरदूसरेकिसीसे कुछइच्छा नकरै परमेश्वरसववस्तु
अपनेयहां रखकर यहचाहतेहैं किकोईहमसे कुछमांगे व संसारीम
नुष्य ऐसीसामर्थ्यनहींरखता जोसबकीइच्छापूर्णकरसकेकदाचित
ऐसाकहूं कि कोईव्यसनी न आने व द्रव्यनमिलनेसे यहज्ञानमुझे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्राप्तहुआ सोइसतरह कईबेरमेरेस्थानपरव्यसनी न आनकरमुझेउ
पासहोगयाथा न मालूमकौनजन्मका पुण्यसहायहोनेसे आजय
हज्ञान मेरेमनमेंआया हेराजन्वहवेश्या तीनपहररात बीतेतकज्ञा
नभरीबात बिचारकरतीहुई शय्यापरसोरही व उसीदिनसे अपना
उद्यम छोड़करहरिचरणोंका स्मरण व ध्यानकरनेलगी इतनीक
थासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षितयहसबज्ञान उसवेश्याको
दत्तात्रेयके दर्शनमिलने से प्राप्तहुआथा परवह यहबातनहींजान
तीथी दत्तात्रेयनेकहा हेराजन्यहहाल पिङ्गलाका देखतेही मैंभी
उसीदिनसे संसारीमायाछोड़कर बीचस्मरण व ध्यानपरमेश्वरके
मग्नरहताहूँ संसारीवस्तुकी चाहनारखनेमें बड़ादुःख होकरतृष्णा
छोड़देने व हरिभजनकरनेसे इसतरहसुख व मुक्तिपदार्थमिलताहै
जिसतरह वहवेश्याअपने व्यसनीकी प्रीतिछोड़कर भवसागरपार
उतरगई॥

नवां अध्याय॥

राजायदु से दत्तात्रेयका ज्ञान कहना॥

दत्तात्रेयनेकहाअठारहवांगुरूमेराचील्हहैएकदिनहमनेदेखाकि
एकचील्हमांसकाटुकड़ा अपनेचंगुलमेंलियेहुये उड़ीजातीथी जब
दूसरीकईचील्हेंवास्ते छीननेटुकड़ामांसके उसकोचोंच व चंगुलसे
मारनेलगीं तबउसचील्हनेमनमेंकहादेखोमुझेइनचील्होंसेकुछश
नुतानहींहै केवलमांसके टुकड़ेकेवास्ते यहसबमुझेमारतीहैं जबऐ
सासमझकरउसनेवहटुकड़ागिरादियातबदूसरीचील्हेंजोमारतीथीं
चलीगईं औरवहचील्हआनंदसेएकवृक्षपरबैठरहीउसेदेखहमनेवि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चारकिया कि धनादिकरखनेसे परिवारवाले व चोर व ठगमेरेसाथ
शत्रुताकरेंगे इसलियेकोईवस्तुअपनेपास न रखकरआनंदपूर्वकपर
मेश्वरकाभजनकरताहूँ व उन्नीसवांगुरू मेराअज्ञानबालकहै जो
काम व क्रोध व मोह व लोभकेबश न होकरइतनाविरक्तरहताहै कि
मणिहाथमेंरखताहो औरकोईमनुष्यमेवा व मिठाईकेबदले उससे
वहरत्नमांगैतोदेडाले व सिवायखेलनेकेदूसराउद्यमनहींरखताव अ
पनेघरद्वारसेकुछप्रीति न रखकर ज्ञानियोंकीतरह बिरक्तरहताहै उस
कोदेखकर मैंनेसमझा कि ज्ञानीकोभी निर्लोभरहकर कुछतृष्णा
रखना न चाहिये संसारमेंदोमनुष्य एकबालकअज्ञान व दूसराब्र
ह्मज्ञानीप्रसन्नहोकर और सबकोईदुःख व सुखमेंफँसेरहतेहैं बीस
वांगुरू मेराकुमारीकन्याहै एकदिन मैंनेगृहस्थब्राह्मणके घरभीख
मांगनेवास्तेजाकर क्यादेखा कि अकेलीकुमारीकन्या वहांहोकर
और सबघरवाले कहींबाहरगयेथे उसीसमयतीनमनुष्य दूसरेनगर
से उसकेबिवाहका संदेशालेकर वहांपरआये सोउसछोकरीने सब
कोबड़ेसन्मानसे बैठाला व चावल न तैयाररहनेसे आपकोठरीमें
जाकरमेहमानोंके वास्तेधानकूटनेलगी जबउससमय चूड़ियांउस
कीबोलीं तबउसनेबिचारा कि यहलोगचूड़ियोंका बोलनासुनकर
कहैंगे कि इनकेघरएकदिनके खानेवास्तेभी चावलनहींहैंइसबात
मेंलज्जासमझकर उसनेदो २ चूड़ीहाथमेंरखलीं और सबचूड़ीए
कएक करकेतोड़डालीं तिसपरभी बोलनाउनका बन्दनहींहुआ
जबउसने एकएक और तोड़करअकेलीचूड़ी रहनेदी तबबोलना
चूड़ीकाबन्दहोनेसे धानकूटकर मेहमानोंको भोजनखिलायायह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हालदेखकरमैंनेसमझा कि बहुतलोगोंकी संगतिकरनेसे आपसमें झगड़ा होताहै दोमनुष्यसाथ रहनेसे भी अनेकबार्त्ता होकरहरिभजननहींबनपड़ता इसलिये ज्ञानीको किसीसेसंगति व प्रीतिकरना उचित न होकरअकेले हरिभजनकरनाचाहिये इक्कीसवांगुरूमेरा तीरबनानेवालाहै एकदिनहमनेबाज़ारमेंतीरबनानेवालेकीदूकान पर खड़ेहोकरक्यादेखा किवहतीरबनारहाथा उसीसमयराजाकीसवारीबड़ीधूमधामसे उसदूकानकेसामनेहोकर दूसरीओर चलीगई थोड़ीदेरउपरांतराजाके एकनौकरने जोपीछेरहगयाथाआनकरती खनानेवालेसेपूछा कि राजाकीसवारीकिधरगईहै उसनेउत्तरदिया किमैंनेराजाकी सवारीनहींदेखीयहबातसुनकर हमनेतीरबनानेवालेसेकहा अभीसवारीराजाकीधूमधामसे तुम्हारेसामनेहोकरचली गई है किसवास्ते झूठबोलतेहो तबवहबोला हमतीरबनानेमें लगे थे इसलिये कुछध्यानसवारीका नहींकिया उससमय हमनेअपने मनमेंकहा कि तुझेभीसबइन्द्रियोंको बशमेंरखकर इसीतरह नारायणजीका ध्यानकरनाचाहिये बाईसवांगुरू मेरासांपहै जोअपने रहनेवास्ते घरनहींबनाकर चूहोंकेबिलमेंरहजाताहै उसेदेखकर मैंनेविचारकिया कि ज्ञानीसाधुकोभी घरबनानाउचित न होकर जहांरातहोजावै वहांस्थानअपना समझनाचाहिये तेईसवांगुरू मेरा मकड़ीहै जोसूतकेसमानतार अपनेमुखसेनिकालकर फिरउसेखा जातीहै उसकोदेखकर मैंनेविचारकिया कि परमेश्वरकोभी इसी तरहजाननाचाहिये किचौरासीलाखयोनि उनसेउत्पन्न व पालन होकर अन्तसमय जीवात्मासबका उनकेरूपमेंसमाजाताहै इसलि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ये ज्ञानीकोमनसावाचाकर्मणासे बीचस्मरण व ध्यानघटघट्या
क भगवान्केलीनरहनाउचितहै व चौबीसवांगुरू मेराभृङ्गीकीड़ाहि
जिसकेडरसेदूसरेकीड़ेउसीकारूपहोजातेहैं उसकोदेखकरमैंनेकह
कि ज्ञानीकोभीचाहिये कि परमेश्वरमें इसतरहमनलगावै जिसमें
उन्हींकास्वरूपहोजावै यहसबज्ञानकहकर दत्तात्रेयबोले जोकु
ज्ञानइनचौबीसोंगुरूसेहमनेसीखाथा वहतुमकोसुनादियाइसज्ञान
को तुमसमझकर नारायणजीका स्मरण व ध्यानकरो तुम्हारीमुक्ति
होजावेगी हे राजन् चौरासीलाखयोनिमें बहुतसाशोच व दुःखउ
ठाकर बड़ेकठिनसे मनुष्यकातनुमिलताहै इसलिये यहतनुपाकर
संसारीमायामोहमें फँसनाउचितनहींहै केवलपरमेश्वरका तपव
ध्यानकरनेवास्ते मनुष्यकातनुमिलताहै सिवायइसचोलेके दूसरी
योनिमें परमेश्वरनहींमिलसक्ते जोकोईमनुष्यतनुपाकर हरिभज
ननहींकरता वहफिर चौरासीलाखयोनिमें जन्मलेकर बड़ादुःख
पाताहै जबइसजीवने मनुष्यकातनुपाया तोऐसासमझनाचाहिये
कि वहएकपैर अपनाभवसागरपारउतरनेकी नौकापररखचुकाजि
सनेइसशरीरमें शुभकर्मकिया वहदूसरापांवभी उसनौकापररखक
र भवसागरपारउतरजाताहै नहीं तोउसनावसे फिर चौरासीलाख
योनिमेंगिरकर बहुतदुःखपावेगा यहशरीरकभी दुबलारहकर क
भीमोटाहोजाताहै इसलिये नाशहोनेवाले तनुकाकुछमोह करना
न चाहिये जोलोग स्त्री व पुत्र व द्रव्य व हाथी व घोड़ाआदिकको अ
पनाजानकर यहसमझते हैं कि अन्तसमय यहसबमेरीसहायता
करेंगे उनको अवश्यनरकभोगनापड़ताहै यहमनचंचल जोअपने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बशनहींरहताइसे अवश्य अपनेअधीनरखनाचाहिये नहींतोजिस तरहछःचोरोंने एकरलचुराकर भाग न लगनेसे आपसमेंझगड़ाक रके फांसीपाई उसीतरह सबइन्द्रियां अपना २ सुखभोगनेवास्तेम नको अपनीओरखींचकर उसेनरकमें डालदेतीहैं व अज्ञानमनुष्य उनकेबशहोकर बहुतदुःखपाताहै जिसतरह संसारमें कोई स्त्री रख नेवाले नष्टहोते हैं उसीतरह मनचंचल व नाक व जिह्वा व लिंगा दिक इन्द्रियोंकेबशहोकर दुःखपाताहै पहिलेपरमेश्वरने पशु व प क्षी व वृक्षादिक उत्पन्नकरनेसे होकर जबमनुष्यकातनुबनाया तब आनन्दहोकरकहा कि इसशरीरमें ज्ञानप्राप्तहोनेसे जीवन्मुक्तपद वीपरपहुँचैगा इसलिये मनुष्यतनु केवल भगवद्भजनकरने वास्ते होकर मनुष्यको संसारीमायामेंलपटना न चाहिये पेटभरना व भो गकरना दूसरीयोनिमेंभी प्राप्तहोसक्ताहै पहिलेसे पानीभराहुआ आगबुझावनेकेकामआनकर आगलगनेकेसमय कुआंखोदने व पानीभरनेमें वहबुझनेनहींसक्ती हेराजन् मैं परमेश्वरकाचमत्कार सबजीवोंमें बराबरसमझकर प्रसन्नरहताहूंसोतुम्हैं व सबसंसारीजी वोंकोभी इसतनुमें मुक्तिमिलनेवास्ते उपायकरनाउचितहै नहींतो पीछे सिवाय पछितानेके कुछहाथ नहींलगेगा हेउद्धव दत्तात्रेय य हसबज्ञानराजासे कहकर तीर्थयात्राकरनेचलेगये व राजायदु उसी ज्ञानकेप्रतापसे मुक्तिपदवीपरपहुँचा सोतुमभी वहीज्ञान मनमें दृढ़ रखकर संसारीप्रीति छोंड़देव॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दशवां अध्याय॥

श्यामसुन्दरका उद्धवको ज्ञानसिखलाना॥

श्रीकृष्णजीनेकहा हेउद्धव संसारीमनुष्यको चाहिये किअपने
वर्ण व आश्रमकाधर्मशास्त्रानुसार रखकरकिसीबातकीचाहनाने
रे यज्ञ व श्राद्धादिकदेवकर्म व पितृकर्मकरके गुरुकीसेवामें प्रीति
खकर गुरुकाबचन सच्चामाने जबतुम मनअपना संसारीमायासे
टोरकरएकचित्तकरोगे तबगुरुकाउपदेश तुम्हारेहृदयमेंप्रबेशकरेगा
देखोयहशरीरशुभ व अशुभकर्मकरके अनेकजन्म पाताहैइसलि
ये मनुष्यतनुमें आत्माको शरीरसेअलग समझकर संसारीसुख
व्यवहारको झूंठासमझनाचाहिये बिनाहरिभक्तिकियेवआत्माको
अंगसेविलगजाने मुक्तिनहींहोनेसक्ती बालापन व तरुणाई व बुढ़ा
पातीनोंअवस्था शरीरमेंहोकर आत्मासदाएक रूपरहताहै व मनु
ष्य अपनेअज्ञानसे दुःखमानकर सुखप्राप्तहोनेकाउपाय नहींकरता
यज्ञ व तीर्थआदिक शुभकर्मके करनेकेफलसे संसारीजीव देवलोक
मेंजाकर सुखभोगतेहैं अवधिबीतनेउपरांत फिरमृत्युलोकमें जन्म
पाकर अधर्मकरनेकेबदले नरकभोगनापड़ताहै जबतक मुक्तिप्राप्त
नहींहोती तबतक यहजीवआवागमनमें फँसारहनेसे अनेकतरहका
दुःखपावताहै इसलियेभवसागरपारउतरनेवास्ते सिवायहरिभजन
व सत्संगके दूसराउपाय उत्तमनहींहोता औरजोतुमकहतेहौ कि ह
मको अपनेसाथलेचलौ जिसमेंतुमसेविलग नहों हेउद्धव ज्ञानप्राप्त
होनेसे बियोगकादुःखनहींहोता व तुमसंसारमें इनजीवों को जो
देखतेहौ ब्रह्मासेलेकर चींटीतक यहसबमृत्युकेग्रासहैं व मैं जन्म व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मरणसेरहितहोकर जबपृथ्वीकाभार उतारनेवास्ते अवतारलेताहूं तबमुझेभी निर्गुणरूपत्यागकरनापड़ताहै इसलियेतुम्हैंचाहियेकि सदामनअपना मेरेभजन व स्मरणमेंलगायेरहकर बीचध्यानहरि चरणोंके लीनरहो तोबियोगकादुःख तुम्हारेहृदयमें नहींरहैगा हे उद्धव जगतमेंज्ञान व अज्ञानदो बातप्रकटहोकर जो लोगज्ञानीहैं वहइसशरीरको वृक्षकेसमानजानकर उसपरदोपक्षीबैठेहुये समझ तेहैं उनमेंएकपक्षी थोड़ाभोजनकरके सामर्थ्यअधिकरखताहै उसे परमात्मासमझनाचाहिये जो काम व क्रोध व मोह व इन्द्रियोंके सुखसे कुछप्रयोजननहींरखता व दूसरापक्षी बहुतखानेपरभी निर्व लरहकर संसारीसुखमें प्रसन्नरहताहै उसेजीवात्मा समझनाचाहि येवस्त्री व द्रव्य व सुखमिलनेसे प्रसन्नहोकर उसकेबियोगमें दुःख ताहै और यहनहींसमझता कि हानि व लाभ व दुःख व सुख परमे श्वरकीइच्छानुसारहोकरउसमेंदूसरेकाकुछबशनहींचलताहेउद्धव संसारीमनुष्यके भवसागरपारउतरनेवास्ते जोउपायकरनाचाहिये सोकहतेहैं सुनोमनमें किसीबातका अभिमानरखना व दुर्वचनकह ना व दूसरेकोधनपात्रदेखकर डाहकरना व बिनाप्रयोजन अधिक बोलना व स्त्री व पुत्रोंसे बहुतप्रीतिकरना उचितनहोकर परमात्मा को शरीरसेअलगसमझना न चाहिये जिसतरहकाठमें आगछिपी रहकर उपायकरनेसे प्रकटहोतीहै और काठजलादेनेसे वहअग्नि उससेविलगहोकर फिरउसकेसाथनहींरहती उसीतरह प्रकाशपरमे श्वरका सबजीवोंमेंरहकर जबवहअपनीशक्ति शरीरसेखींचलेते हैं तबमरजाताहै वहलोथजलादेनेसे आत्माको कुछदुःखनहींपहुँच

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ता त्र परमात्माकाप्रकाश सबजीवोंकेतनुमें एकसादेखनेसे कुछ
र न होकर भेदसमझनेमें अनेकतरहकाभयलगारहताहै इसलि
आत्माकोसबजगह बराबरजानकर संसारीमायासे छूटनेवास्तेत्र
ठोंपहर उपायकरनाचाहिये हे उद्धव इसतरहका ज्ञानरखने वाल
मनुष्यअवश्य मुक्तहोताहै ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरका उद्धवको ज्ञानसिखलाना ॥

केशवमूर्त्तिनेकहा हे उद्धव संसारमेंदुःख व सुख मायाकेगुणों
सेहोकर मुझेवहमाया नहींव्यापनेसक्ती जिसतरह स्वप्नमेंकोईमनु
ष्य अनेकतरहकाहर्ष व विषाददेखकर जागनेउपरांत सबझूठासम
झताहै उसीतरहसंसारी व्यवहारझूठाहोकर परमेश्वरकीमायासेस
चमालूमहोताहै व जीवात्मा सबकेतनुमें मेरीशक्तिहोकर जबतक
वहजीवमुझेनहींपहिंचानता तबतकमुझसेबिलगरहता है व मेरामें
दजाननेवाले इसतरह मेरेस्वरूपमेंलीनहोजातेहैं जिसतरहशीशेमें
अपनीपरछाहींदिखलाईदेकरउसकोउलटनेसेफिरवहरूपनहींदेख
पड़ता व मूर्खमनुष्य शीशाअज्ञानकेहाथमेंरखकर अपनेकोमुझसे
बिलगसमझतेहैं ज्ञानीलोगगृहस्थाश्रम रहने व सबजगत्काकाम
करनेपरभी मनअपना विरक्तरखकरसंसारीजालमेंनहींफँसते ज्ञान
व वैराग्यदोनों मुक्तिदेनेवालेहोकर अज्ञानीमनुष्यको सिवायदुःख
केकुछसुखनहींमिलता परमेश्वरके शरणजानेमें ज्ञानप्राप्तहोकर
उनसे विमुखरहनेवाले ज्ञाननहींपातेजिसतरह हवासुगन्ध व दुर्गंध
दोनोंतरहकी वस्तुमेंहोकर बहतीहै परदोनोंसे बिलगरहकर कुछ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुगन्ध व दुर्गन्धकाप्रवेश उसमेंनहींहोता उसीतरहज्ञानीको भी किसीकी बड़ाईकरनेमें प्रसन्नहोना व दुर्बचनकहनेसे खेदमानना न चाहिये जोलोगअपनीस्त्री व पुत्रहाथी व घोड़ाआदिकका रोग देखकर मेरीमायालपटनेसे शोचकरतेहैं उनकोमूर्ख समझनाउचितहै किसवास्ते किउनके शोचकरनेसे कुछगुणनहींनिकलता सबको अपनेकर्मानुसार दुःख व सुखमिलताहै इसलिये ज्ञानीकोचाहिये कि हानि व लाभ व दुःख व सुखपरमेश्वरकी इच्छापरजानकर अपनेकोकिसीबातमें अगुआ न समझै जोकोईवेद व शास्त्रपढ़कर नारायणजीकी भक्तिनहींरखता उसकापढ़नाव्यर्थहै बूढ़ी व बांझगायकारखना व कर्कशास्त्री व अधर्मीसन्तानको पालनकरना धर्मकीराहहै किसवास्ते कि उनसेकुछप्राप्तनहींहोता व जोलोग धनपाकरदान व धर्मआदिक शुभकर्ममें खर्चनहींकरते व उसकोअपनासमझकर रखछोड़तेहैं उसद्रव्यकाहोना व न होना दोनोंबराबर होकर उन्हेंकुछसुखनहींमिलता इसलियेज्ञानीकोधनपाकरयज्ञ व तीर्थ व दानव धर्ममेंखर्चकरके उसकाफलपरमेश्वरको अर्पणाकरदेनाचाहिये जिसमेंलोकपरलोकदोनोंबनपड़ें इतनाज्ञानसुनकर उद्धवनेविनयकी महाराजआपनेत्रिभुवनपतिहोकर केवलहरिभक्तोंको भवसागरपार उतारनेवास्ते नरतनुधारणकियाहै सोदयालुहोकरमुक्तिहोनेकाउपायबतलाइयेयहवचनसुनकरवैकुंठनाथनेकहाहे उद्धव जोगृहस्थ संसारीकामकरनेपरभी मनअपना मेरीतरफ़लगायेरहकर मुझेअपनामालिक व उत्पन्नकरने वालासमझै व किसीकावुरा न चाहकर अधिकतृष्णा नरक्खै व अपनेशरीरकेसमान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुझेप्याराजानकरगुरुकाबतायाहुआ मंत्रजपे व हर्ष व शोचकोबरा
बरसमझकरकाम व क्रोध व मोह व लोभ व भूख व प्यासकेबश न हो
वे व सिवायहरिभक्तिकेदूसरीचाहना न रखकरठाकुरपूजावभजनमें
प्रीतिकरै व किसीकेगालीदेनेसेखेद न मानकरमेरीशक्तिसबजीवोंमें
बराबरसमझै व अपनीसामर्थ्यभर परोपकारकरके परमेश्वरकीली
ला व कथासुननेमें मग्नरहै व सिवाय स्मरण व ध्यानसगुणरूपमेरे
केदूसराकुछउद्यम नरक्खेदेवस्थानउत्तमबनवाकर ठाकुरकेपुष्पवा
ढ़ानेवास्ते वाटिकालगवादेवे व जोकुछधनघरमेंहो उसेपरमेश्वरका
जानकर अपना न कहे व जोकुछअच्छीवस्तु भोजनवास्तेमिलेवह
पहिलेठाकुरको भोगलगावे फिरउसमें ब्राह्मणआदिक चारोंवर्ण व
अपनेकुल परिवारवालोंको थोड़ा२देनेउपरान्त आपखावे व प्रति
दिनसूर्यको दण्डवत् औरअग्निमें होमकरके ब्राह्मणको इच्छाभोज
नखिलावे व अपनेसामर्थ्यभर दान व दक्षिणादियाकरै व गौकीसेवा
आपकरके सबजगहबीचजल व पृथ्वी व आकाश आदिककेहमा
राचतुर्भुजीस्वरूप ध्यानमेंदेखै व प्रतिदिन देवतोंकेनामहोम व पि
तरोंकेनाम तर्पणकरके तालाब व बावली व कुयें व धर्मशालाआ
दिकजीवोंके सुखपावनेवास्ते बनवादेवे व गरीबमनुष्य व ब्राह्मणों
कास्थानबनवाकर उनकीकन्या बिवाहनेवास्ते आपद्रव्यदेवै और
साधु व महात्माओंकीसुधिखाने व पहिरनेसेलेकर इसबातकाअभि
मानमनमें न लेआवै कि यहशुभकर्म हमनेकिया व दूसरेकेसामने
भी इसकीचर्चा व अपनीबड़ाईनकरे जो लोगशुभकर्मकरके अपने
मुखसेकहते हैं जिहामें अग्निदेवताका बासरहनेसे उनकापुण्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जलजाताहै हेउद्धव इसतरहकाधर्म व कर्मरखनेवाले मनुष्यसे मैंबहुतप्रसन्नरहताहूं पर बिनासत्सङ्ग किये यहसबज्ञानप्राप्तनहीं होतासाधु व महात्माकी संगतिकरने व मेरेध्यानधरनेसे मनुष्य ज्ञानपाकरभवसागर पारउतरजाता है ॥

बारहवां अध्याय ॥

वैकुण्ठनाथका उद्धवसे सत्संगका माहात्म्य कहना ॥

श्रीकृष्णजीनेकहा हे उद्धवमैंनेयज्ञ व तप व दान व धर्म व वैराग्यआदिक का हालतुमको सुनाया अबसत्संगकी महिमा जिससेभक्ति उत्पन्नहोतीहै कहताहूंसुनो जैसाहमैं सत्संगप्यारा होकरभक्तिकरने में जल्दी प्रसन्नहोताहूं वैसा वेदपढ़ने व योगाभ्याससाधने व व्रतआदिकरखनेवालों से सुखनहीं पाता केवल सत्संगकरनेसे मेरेचरणोंमें भक्ति उत्पन्नहोकर संसारीजीवमुझे पहिचानते हैं और वहलोगजगत्में अपनी मनोकामनापाकर अन्तसमय आवागमनसे छूटजाते हैं देखोराजाबलि व बाणासुर व सुग्रीव व हनुमान् व जाम्बवन्त व जटायु व कुब्जा व ब्रजवासी आदिक अनेकजीवमेरीभक्ति व दर्शनकरनेसे भवसागरपार उतर गये व शवरी व निषादआदिक अनेकजीवनीचऊंचजाति भक्ति करनेसे मुक्तिपदवीपरपहुंचे व गोपियोंने कुछवेद व शास्त्र नपढ़ने व तीर्थव्रतकरने व मेरीमहिमा नजाननेपरभी मुझेपतिभावसमझ करऐसीप्रीति मेरेसाथकी कि हमारेवियोगमें उनकोक्षणभर एक कल्पकेसमान मालूमहोकर मेरेसंगरासकरतीसमय छःमहीनेकी रात एकपलभरजानपड़ीथी सो उन्होंने उसीप्रीति व भक्ति के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रतापसेलक्ष्मीरूपहोकर बैकुण्ठबासपाया जिसतरहकोईजान व अनजानमें अमृतपीनेसे अमरहोकर उत्तम औषधिखानेसे सदा तरुण बनारहताहै उसीतरहजाने व बिनाजानेमेरीभक्ति व प्रीति करनेवालेमनुष्य संसारमेंसुखपाकर जन्म व मरणसेछूटजाते हैं जैसे तागेमेंदानेकाठ व रुद्राक्ष व सोनेआदिकके पिरोकरमाला बनती है उसीतरह संसारीजीव मेरेस्वरूपमें रहते हैं परयहबात बिनाबतलानेगुरु व सुननेकथा व करनेसत्संगके मालूमनहींहोती इसलिये संसारीमनुष्यको गुरुकीसेवा व भक्तिकरना व ज्ञानरूपी तलवारसे मायारूपी सन्देहकाटकर सबजीवोंमें परमेश्वरकीश क्तिबराबर समझनाचाहिये यहसबज्ञानसुनकरउद्धवने बिनयकि याहेदीनानाथ जबभक्तिकी इतनीबड़ीपदवीहै तबआपने यज्ञ व त पआदिक अनेकतरहके धर्मक्योंबनायेहैं श्यामसुन्दरनेकहाहेउ द्धवयज्ञ व तपआदिक कर्मकरनेसेभीगुणनिकलताहै जिसमेंहरि चरणोंकीभक्तिउत्पन्नहो जिसनेभक्तिपदार्थपाया उसेदूसराधर्म व कर्मकरना न चाहिये॥

तेरहवां अध्याय॥

श्यामसुन्दरका उद्धवको ज्ञान बतलाना॥

श्यामसुन्दरनेकहा हेउद्धव सात्विक व राजस व तामस तीनगु णमायाकेहोकर परमात्माइनतीनोंसे विलगरहताहै जिससमयसा त्विक शरीरमेंअधिकहोताहै उससमयधर्म व शुभकर्मकीओर मनु ष्यकामनलगताहै व सात्विकीस्वभाववालेको संसारमेंसबलोगअ च्छाकहतेहैं जोमनुष्यक्रोध अधिकरखकर कुछकर्मकियाकरै उसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तामसी समझनाचाहिये व जिनकेशरीरमें राजस अधिकहोताहै वहलोगसुखकी चाहना बहुतरखतेहैं इसलियेज्ञानीमनुष्यको उचितहै किआठोंपहर मनअपना सात्विककी ओरलगायेरखकरऐसाकर्म व धर्मकरतारहै जिसमेंमेरीयाद उसकोनभूले यहसुनकर उद्धवनेबिनयकिया हे महाप्रभूजबमनुष्यने जाना कियहकर्मबुरा है व इसकेकरनेसे मुझेदुःखहोगा तबवहजानबूझकर कष्टदेनेवाला कामकरकेगर्भ व नरकमें सदाक्योंदुःख उठाताहै वैसाकर्मकिसवास्तेनहींकरता जिसमेंजन्म व मरणसेछूटजावे कौनमनुष्यज्ञानउसकाफेरकर कुकर्मकीओर लगादेताहै यहसुनकरत्रिभुवनपतिने कहा हेउद्धव उसकीबुद्धिनष्टकरनेवाली दोबस्तुहोकर उनमेंएक तृष्णाहै जबमनुष्यको किसीवस्तुलेनेवास्ते चाहनाहुई व दूसराको देउसमेंबाधकहुआ तबक्रोधउत्पन्नहोताहै औरयहीदोनोंतृष्णा व क्रोधसबजीवोंसे अशुभकर्मकरातेहैं व मुझसेबिमुखरखकरउनका परलोक बननेनहींदेते जिसतरहचोर व लम्पटद्रव्यलेने व परस्त्रीगमनकरनेवास्ते दूसरेकेघरजाकर पकड़ेजातेहैं उसीतरहजबतकमनुष्यमुक्तिपदवीपर नहींपहुँचतातबतकचाहना व क्रोधकेबशमेंरहकरजन्म व मरणकादुःखउठावताहै जिसनेकाम व क्रोधकोजीतकर मुझेअपनामालिक व उत्पन्नकरनेवालाजाना उसकोज्ञानी व मेराभक्तसमझनाचाहिये यहसुनकर उद्धवनेबिनयकिया महाराज आपनेसबयदुबंशियोंको किसवास्तेमुक्तिनहींदीएकपरदयाकरना व दूसरेको अभागीछोड़ना क्याकारणहै श्यामसुन्दरनेकहा हेउद्धव हमपहिलेतुझसेकहचुकेहैं किज्ञान व अज्ञानकेदोमार्गहैंकदाचित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकहोतातो किसीमनुष्यकोशोच व डरपूजा व भजनशुभ व अशुभ
नरक व स्वर्गकानरहता हेउद्धवसंसारमें दोतरहके मनुष्यएकआ
त्माराम व दूसरे दयारामहोकर आत्माराम उसको कहनाचाहिये
जोआठोंपहर परमेश्वरकेस्मरण व ध्यानमें लीनरहकर धन व
सारीसुखमिलनेमें हर्ष व उसकीहानिहोनेसे कुछबिषादनहींकरता
व दयाराम उसकोसमझनाउचितहै जोसंसारमेंद्रव्य व सुन्दरस्त्री व
पुत्रआज्ञाकारीमिलनेसेप्रसन्नरहकर उनसबकेवियोगहोनेमें शोच
उठातेहैं इसलिये ज्ञानीमनुष्यकोचाहिये कि अपनेवर्ण व आश्रम
केधर्मानुसार चलनरखकर अपनीक्रिया कभी न छोड़ै अपनेधर्मसे
फिरनेमेंब्रह्महत्याकेसमानपापहोताहैहे उद्धवएकबेरसनत्कुमारआ
दिकने ज्ञानकाअभिमान अपनेमनमेंउत्पन्नकरके ब्रह्मासेयहबात
पूछीथीकिसंसारीमनुष्यकामन पंचभूतआत्मासेक्योंकर बिलगहो
ताहैहमने सबतीर्थोंकास्नानकिया व आठोंपहरकथा व लीलापरमे
श्वरकी आपसमेंकहते व सुनतेरहतेहैं तिसपरभी मनहमारा आज
तक संसारीचाहनासे विरक्तनहींहुआ इसकाक्याकारणहै जबब्रह्मा
उसकाउत्तरनहींदेसके व दूसरेदेवताजोवहांबैठेथे ब्रह्माकोहँसनेलगे
तबब्रह्मानेबहुतलज्जितहोकर मुझेयादकिया उससमयमैंउनकीवा
तरखनेवास्तेवहांचलागया व बीचतनुहंसपक्षी श्वेतवर्णवाहन ब्रह्मा
जोसभासेबाहरबैठाथा प्रवेशकरके सनकादिकके निकटचलागया
व उनलोगोंकाअभिमान तोड़नेवास्ते बोला तुमक्यापूछतेहो यह
बातसुनकर सनत्कुमारनेकहा तुमकौनहो तबमैंनेउत्तरदिया हम व
तुम बिलग न होकर शरीरकेअलग रहनेपरभी पंचभूतआत्मा जि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सकोप्राणकहतेहैं हमारेतुम्हारेअंगमेंएकहै इसलिये पूछनातुम्हारा
वृथाहै जबतुमअज्ञानबालककीतरह प्रश्नकरतेहौ तबब्रह्माजी ती
नोंलोककीरचना करनेवाले तुमकोक्याउत्तरदेवैं हेसनत्कुमार जि
सतरह अज्ञानीमनुष्य मनमेंमनसूबाविचारकर संसारकेसबसुखभो
गलेतेहैं परवहसुख उनकोप्राप्तनहींहोता उसीतरह संसारीव्यवहार
व यहशरीरझूठहोकर परमेश्वरकीमायासे चारदिनवास्ते सच्चमा
लूमहोताहै जैसेअँधेरेमें रस्सीपड़ीहुईदेखकर सांपकासन्देहहोजा
ताहै वैसेअनेकशरीर नाशहोनेवाले बिलग बिलग दिखलाईदेकर
जीवात्मा चौरासीलाखयोनिमें मेराप्रकाशरहताहै इसलियेशरीर
को रस्सीरूपी झूठासांपसमझकर इसअंगनाशहोनेवाली बस्तुसे
प्रीतिरखना न चाहिये मेरीशक्तिनिकलजानेसेयहशरीर कुछकाम
नहींआवता जिसतरहबादल समुद्रकाजल सोखकर बरसातेहैं तो
फिर वहपानी नदी व नालेकीराहबहकर समुद्रमेंमिलजाताहै उसी
तरह जितनेजीवजड़ व चैतन्य संसारमें दिखलाईदेतेहैं वहसबमेरी
इच्छासे उत्पन्नहोकर मरनेउपरान्त जीवात्मा सबकाफिरमेरेरूप
में समाजाताहै जोलोगसंसारीव्यवहार झूठासमझकर मायारूपी
जालमें नहींफँसते व विरक्तहोकर हरिचरणोंमेंसच्चीप्रीतिकरतेहैं उ
नैंतुरन्त मेरादर्शनहोकर बैकुण्ठकासुख मिलताहै जिसतरहमदि
राकेनशेमें मनुष्यमतवालाहोकर अपनेतनु व वस्त्रकीसुधि नहींले
ता उसीतरह हरिभक्तलोगभी मेरेध्यानमेंलीनरहकर अपनेशरीर
की सुधिनहींरखते व मैं यज्ञ व तपआदिक शुभकर्मोंकाफलदेनेवा
लाहोकर सबकिसीको उसकेकर्मानुसार जन्मभरभोजन व वस्त्र दे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताहूं हेसनत्कुमार मनचाहनासे कभीनहींबिलगहोता इसवास्ते ह
मनेमत्स्यावतारधारणकरके राजासत्यव्रतको ज्ञानउपदेशकिया
जिसमें संसारीमनुष्य हमारीकथा व लीलासुनकर उसीज्ञानके प
माणमेरास्मरण व ध्यानकरैं व संसारीतृष्णाछोड़कर हरिचरणों
में प्रीतिलगावैं व जिसतरहसंसारमें पूर्व्व व पश्चिम आदिकचारों
ओर जानेकीराह बनीहो उसीतरह यज्ञ व तपदान व धर्म तीर्थ व
व्रतसत्संग व भक्तिआदिकमेरेपास पहुँचनेवास्ते रास्तेबने हैं जो
मनुष्यजिसमार्गपरचाहै उसपरसच्चेमनसेचलै मेरेनिकटपहुँचजा
यगा सनत्कुमारआदिक यहज्ञानसुनतेही बहुतलज्जितहोकरअ
भिमान अपनाभूलगये व अपनेमनका सन्देहछोड़कर हंसरूपी
भगवान्को दण्डवत्की व बहुतसीस्तुतिकरनेउपरान्त उनसेविदा
होकरअपनेस्थानपर चलेगये औरहमअभिमान उनकातोड़कर वै
कुण्ठमें चलेआये ॥

चौदहवां अध्याय ॥

उद्धवको वेद व शास्त्रका हाल श्रीकृष्णजीसे पूछना ॥

उद्धवनेइतनीकथासुनकर श्यामसुन्दरसेविनयकी हेदीनानाथ
अनेकमुनि व योगीश्वरोंने वेद व शास्त्रमेंआपके मिलनेवास्तेयज्ञ
व तपआदिक अनेकराहलिखीहैं सोतुम्हारेनिकट पहुंचनेकाजोरा
स्तासहजहो वहबतलाइये श्रीकृष्णजीने कहाहेउद्धव जबब्रह्माकम
लकेफूलसेउत्पन्नहुये तबउन्होंने वेदजोमेरेश्वासाहैं हमारीइच्छा
से पाकर भृगुऋषीश्वरआदिक अपनेपुत्रोंकोपढ़ाया व ऋषीश्वरों
ने अर्थउसका देवता व दैत्य व गन्धर्व व विद्याधर व यक्ष व किन्नर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदिकोंको सिखलाया उनमेंजिनको जितनाज्ञानथा उसनेवहस
भ्रमकर संसारमेंफैलाया परउसवेदके निजअर्थको कोईनहींपहुं
चा व बाजेमनुष्य काम व क्रोध व स्त्री व पुत्र व कोई यज्ञ व तप व
बाजेतीर्थ व व्रत व कोईदान व धर्म्मकोउत्तममानतेहैं पर इनसब
कर्मोंमेंमनुष्य भवसागरपार उतरनेनहींसक्ता व जितनीवस्तुसंसा
रमें दिखलाईदेतीहैं एकादिन इनसबकानाशअवश्यहोगा जोलोग
परमेश्वरकास्मरण व ध्यानउत्तमसमझकर उसमेंअपनामनलगा
येरहतेहैं वहसंसारीवस्तुकी कुछचाहना न रखकर इन्द्रलोकआदि
ककासुखभी कुछमालनहींसमझतेव सिवाय भक्तिहरिचरणोंकेमु
क्तिपदार्थभी नहींचाहते जोमनुष्यबिना इच्छामेरीभक्ति व सेवाक
रताहै वसबकोअपना मित्रजानकर किसीकेसाथ शत्रुतानहींरखता
उनभक्तोंकालक्षण कहतेहैंसुनोवहलोगआठोंसिद्धियांप्राप्तरहनेपर
भी उनकीओर न देखकर आठोंपहरमनअपना मेरीओरलगायेर
हतेहैं व मैं उनकोसातोंद्वीप व तीनोंलोककाराज्यव मुक्तिपदार्थदेता
हूं सोभीनहींलेते इसलिये उनसेलज्जितरहकर उनकेपीछे २फिर
नेउपरांतदिनरात यहीविचारकरताहूं कि कौनवस्तुइन्हैंदेकर इन
कीसेवासे उऋणहोजाऊं जिसजगह वहभक्तचरण अपनारखते हैं
वहांकीधूरिउठाकर इसकारण अपनेअंगपरमललेताहूं जिसमेंक
रोड़ोंब्रह्मांडके जीवजोमेरेशरीरमेंरहतेहैं उसकेलगनेसे पवित्रहोजा
वें हे उद्धव उनभक्तोंकेबराबरमैं अपनेशरीर व लक्ष्मी व महादेवजी
कोप्यारा न जानकर सबसेउनको उत्तमसमझताहूं जबमेराकोईभ
क्तसंसारीमायामें लपटकरनष्टहोनेचाहताहै तबमैं उसकेहृदयमें ज्ञा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नम्रकाशकरके कुकर्मकरनेसे बचालेताहूं व जोहरिकथाबार्त्ताहु
तेसमय मेरेप्रेममेंडूबकर रोदेतेहैं उनकापाप आंशूकीराहबहकर
न्तःकरण शुद्धहोजाताहै व मच्छड़आदिक अनजानमेंमरजानेव
दोष उनकोनहींलगता जैसाभक्तिकरनेसे मैं तुरन्तमिलताहूं वैसे
दूसरीराहसहज मेरेनिकटपहुंचनेवास्तेनहींहै जिसतरह आगमेंड
लदेनेसे सोनेकासबमैलछूटजाताहै उसीतरह भक्तिकरनेसे शरीरम
पापनहींरहता परयहसबबात चित्तकेअधीनहोकर यहीमनसंसार
मायामें लपटनेसेनष्टहोताहै व मेरीओरध्यान लगानेवाले मनुष्य
संसारमें अपनीमनोकामनापाकर अन्तसमय बैकुंठबासपातेहैं इस
लिये मनुष्यकोस्त्री व लम्पटपुरुषकी संगतिसेअलगरहिकर मेरी
ओरमनलगानाचाहिये जैसाउनकी संगतिकरनेसे तुरन्तमनुष्य
काज्ञानछूटजाताहै वैसादूसरीतरह नहींबिगड़ता अबहमतुमकोपर
मेश्वरकीओर मनलगानेका रास्तावतलातेहैं सुनो अकेलेबैठकर
पहिलेमनअपना एकाग्रकरै फिरअपने कमलरूपीहृदयमें मेरेच
तुर्भुजीस्वरूपका ध्यानलगावे जिसतरह आमकीगुठलीबोतेहैं तो
उसकेफनिगाको बकरीआदिकके खानेकाभय लगारहताहै जबत
क्षाकरनेसे वहबृक्षतय्यारहोजाताहै तबहाथीभी उसकोउखाड़नेम
हींसक्ता उसीतरह जबप्रतिदिन मेराध्यान व स्मरणाकरनेसे संसारी
मायाछूटकर जबबृक्षरूपीभक्ति हृदयमें जड़पकड़लेतीहै तबफिर
कमनहींहोती व योगाभ्याससाधने व इन्द्रियोंकोबशकरनेसे अष्ट
सिद्धिबनीरहतीहैं सो हे उद्धव तुमहरिभक्तोंका बड़ीपदवीसमझकर
मेरीभक्तिसच्चेमनसे कियाकरो तुम्हारामनोरथ पूर्णहोजायगा ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वतू रानीहोगी मैंनेअपनी माताके गर्भमें यह ज्ञानसुनकर याद
रक्खाथा जोतुम्हेंसुनाया तुमलोगमेरावचन सत्यमानकर उसी
केअनुसारकरो व नारदजीने ज्ञानसमझातेसमय यहभी कहाथा
किइसस्त्रीको यहज्ञानप्राप्त न होकर जोबालक गर्भमें है वहयाद
रक्खैगा सो मैं वही ज्ञानकहताहूं सुनो मनुष्यपर बाल युवा वृद्धा
तीनअवस्थाबीततीहैं व परमेश्वरपरमात्मापुरुष जिनकातेजसब
केशरीरमेंरहकर जीवात्माकहलाता है वहसदाएकरूपरहकर घ
टने व बढ़नेसेरहितहै व हर्ष व विषाद उनकेनहींहोता जो कोई पर
मेश्वरको इसतरहजाने वहमनुष्यसदासुखीरहता है कि जिसतर
हन्यारिया मिट्टीछानकरसोनेकाचूर निकाललेताहै व मिट्टीसे कु
छप्रयोजननहींरखता उसीतरह मनुष्यतनमें परमेश्वरकाभजन
व स्मरणकरके मुक्तिपदार्थजोसोनेकेसमानहै प्राप्तकरले व शरीर
कोमिट्टीसमझकरछोड़दे जोलोग धन व कुटुंबादिकसेसुखचाहते
हैंवहआनन्दसदा स्थिरनहींरहता वहरिभजनकरनेकासुख प्रति
दिनबढ़कर कभीनहींघटता महाप्रलयतकबना रहताहै इसलिये
तुमलोग काम क्रोध मोह लोभको जीतकर भगवान्‌कीभक्तिकरो
उसीमें तुम्हारावेड़ापारलगेगा व स्त्री पुत्र राज्य व सेना व कोट व
राज तुरंगादिककुछकाम न आनकर मरतीसमयकोई बचाने न
हींसक्त कि एकक्षणाभीरोकरक्खै और वहसबमाया मोहछोड़क
संसारमेंरहजातेहैं कोईउसकासंग नहींदेता व कोटआदिकगिरा
नेसेभी जल्दीनहींगिरते और यह शरीरएकक्षणमें नाशहोकरम
नेउपरांत किसीकामनहींआता व मनुष्यआठोंपहर अपनेसुख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीबस्तुचाहताहै पराबिनादया व कृपा ईश्वरकी वहसुखउसे नहीं
मिलता जबअपनाशरीरसंगनहींजाता तब धन व कुटुम्बादिक
सकासाथ क्योंकरसक्तेहैं व परमेश्वर जैसेभक्ति व स्मरणासेप्रसन्न
होतेहैं वैसायज्ञ व तप व दान व ब्रतादिककरनेसेसुखीनहींहोते
मैंने जो नारदमुनिसेसुनाथा उसपर विश्वासकिया सोतुमलोगों
खो उसीज्ञानकेप्रतापसे कुछबलहिरण्यकशिपुतीनोंलोकके रा
जाका जोउसने मेराप्राणलेनेवास्तेअनेकउपायकियाथा नहींल
गा कदाचित्यहकहो कि हमलोग दैत्यबालक मांसाहारी वमद्य
पानकरनेवालेहैं हमारातप व भजननारायणजी किसतरहअंगी
कारकरैंगे सो ऐसाविचार न करकेमेरीबातकाविश्वासमानो देखो
ता व दैत्य व मनुष्य जो परमेश्वरकातप व स्मरणाकरै वही उन
को प्याराहै देखो मैंभी दैत्यकापुत्रहोकर नारायणजीके शरण
गया तो मेराप्राणबचा नहींतोमेरेपिताने प्राणलेनेमें कुछधोखा
नहींलगायाथा कदाचित् तुम्हारे माता व पिताभीहरिभजन कर
नेसेबरजकर तुम्हेंदुःखदेवेंगे तोपरमेश्वरकी सहायतासे उसीतरह
उनकाबलभी तुम्हारेऊपरकुछनहींचलैगा यहज्ञानसुनकरसबल
ड़केबोले किहेप्रह्लाद हमलोगोंने तुम्हाराउपदेशमाना आजसे
गुरुकीझूठीबात न मानकर तुम्हारीआज्ञानुसार सबकामकरैंगे॥

आठवां अध्याय॥

नारायणजीका नृसिंहअवतारलेना व हिरण्यकशिपुको मारना॥

नारदजीनेकहा हे युधिष्ठिर जबप्रह्लादके ज्ञानउपदेशसंसब
लड़केभी गुरुकापढ़ानाछोड़कर नामनारायण व विष्णु व राम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रह्लादजी को गुरुजी के पास पढ़ना और होलि का दाह व श्री नृसिंह भगवान करके हिरण्यकशिपु दैत्य का वध होना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीनृसिंहभगवान्काप्रह्लादकोराजातिलककरनाऔरदेवताओंकोस्तुतिकरना

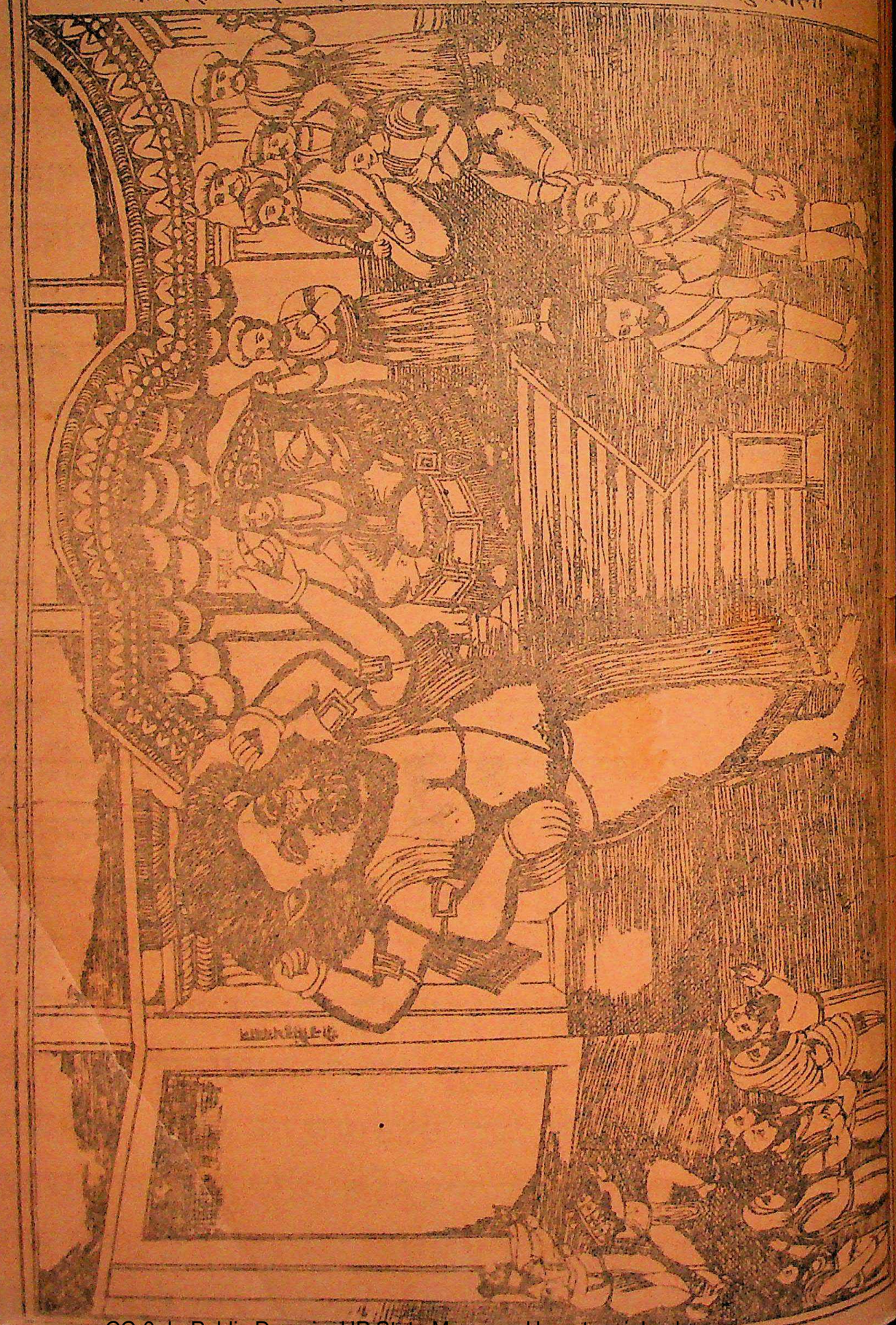

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का लेनेलगे और सण्डा व मर्कने घरसेआनकर यहदशा उनकी देखीतबगुरुने हिरण्यकशिपुका भयमानकर लड़कोंसेकहा तुम लोग क्याकहतेहो उन्होंने उत्तरदिया कि इसतनुमें जो बातहम को करनाचाहिये सो करतेहैं तुम्हारीझूठी २ बातैं पढ़करकिसवा स्ते अपनाजन्म अकार्थखोवैं जब गुरुकेधमकाने वहिरण्यकशि पुके भयसुनानेपरभी लड़कोंने रामनामलेना नहींछोड़ा तबगुरु नेजाना कि इनसब बालकों को प्रह्लादनेज्ञान सिखलाकर अप नाऐसा बनालिया यहबात विचारकर जबगुरुने प्रह्लादपर अति क्रोधकरकेधमकाया व प्रह्लादहँसकर चुपहोरहातबसण्डा व मर्क प्रह्लादआदिक बालकोंको हिरण्यकशिपुके पासलेजाकर बोले महाराजतुम्हारेपुत्रने सबबालकोंको ऐसाबहकादिया किवेलोग सिवायनारायणनाम लेनेके दूसरीबातमुखसे नहींकहते यहब चनसुनतेही हिरण्यकशिपु क्रोधितहोकरबोला हेप्रह्लादमैंनेतुझे बहुत दण्डदेकरसमझाया कि नारायणकानाममतले परतूमेरा कहना नहीं मानता इससे मैंनेजाना कि तेरीमृत्यु निकटपहुंची है जिसतरह ऋषीश्वर व योगियोंकी इन्द्रियांदुःखदेती हैं उसीत रह तू मेरा शत्रु उत्पन्नहुआ इसलिये तेराबध अपने हाथसे क रूंगा देखूं कौनराम व नारायण तेरा प्राणबचाताहै यहसुनकर प्रह्लाद भक्तबोला हेपिता तुम विश्वासकरके मानो जिसकीश क्तिसे सबजीव तीनोंलोकमें वर्त्तमान हैं और तुमराज्य करतेहो व वहीअविनाशी पुरुषसबसे बलवान् सर्वत्ररहते हैं उनसे अधि क संसारमें कोईउत्तम व पवित्र व मालिक न होकरउन्हींको सब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जीवोंकी उत्पत्ति व पालन व नाशकरनेवाला समझनाचाहिये
जोकुछवेचाहतेहैं सोहोताहै उनकीइच्छामें किसीको श्वासलेने
कीसामर्थ्यनहींरहती वहीआदिनिरङ्कार मेरीरक्षाभीकरैंगे वहेपि
ताअपनेको तीनोंलोककाराजासमझकर सबजीवोंको अपनेआ
धीनजानतेहो जबतुमनेअभीतकमन व इन्द्री व काम व क्रोधआ
दिकको अपनेवश्यनहींकिया व उनकेआधीनरहकर नष्टहोरहेहो
तबदूसरेको क्याअपनेबश्यकरोगेतुम्हैंउचितहै किराजसीस्वभाव
व अधर्मकरनाछोड़कर मन व इन्द्रियोंको अपने आधीनरक्खो
और हरिचरणोंकाध्यान व स्मरणकियाकरो तबसंसाररूपीमहा
जालसेछूटकर भवसागरपारउतरजाओगे सुनो जिसकीमृत्यु नि
कटपहुंचतीहै उसकीबुद्धिठिकानेनहींरहती सो मैंजानताहूं तुम्हा
रीमृत्युआनपहुंची इसीकारणतुम परब्रह्मअपने उत्पन्नकरनेवा
लेकोभूलगयेहो यहज्ञानसुनतेही हिरण्यकशिपु बड़ाक्रोधकरके
बोला कि हे प्रह्लाद मुझसेबलिष्ठ तेरानारायणकहां है उसेतुरंत
बोलाओ जो आनकरतेरीरक्षाकरै प्रह्लाद नेकहा वहईश्वर सर्व
त्रअपनेभक्तोंकीरक्षाकरनेवास्ते रहतेहैं तब हिरण्यकशिपु उनके
मारनेवास्ते खड्ग निकालकर और खंभेकीओरआंखदिखलाके
प्रह्लाद सेबोला इसमेंभीतेरा नारायणहै प्रह्लादनेकहा परमेश्वर
खंभेमेंभीमुझे दिखलाईदेतेहैं हिरण्यकशिपुभी ईश्वरकाभयम
नमेंरखताथा इसलिये डरताहुआ खम्भेकीओर देखकरबोला
कि हे प्रह्लाद मुझे नारायणजी इसमेंनहींदिखलाईदेते तूनेझूंठ
किसवास्तेकहा प्रह्लादने कहा [illegible] खंभेमें याजहां

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हो उसेतुरन्तबुला किवहआनकरतुझेमेरेहाथसे छुड़ावै यहवचन सुनतेही जैसेप्रह्लादने परमेश्वरकास्मरण व ध्यानकरके खंभेकी ओरदेखा वैसेहीनारायणजी नृसिंहअवतार शरीरमनुष्य व मस्तकसिंहऐसा धरकर उसखंभेमें दिखलाईदिये सोहिरण्यकशिपुने वहस्वरूपदेखतेही एकमुक्काबायेंहाथसे ऐसामारा किखम्भा फटगया और उसकेभीतरसे नृसिंहभगवान् दशयोजनका शरीरधारणकिये अपनेभक्तकीबात सच्चकरनेवास्ते प्रकटहुये और बड़ेक्रोधसे ऐसाललकारा कि तीनोंलोकमें वहशब्दसुनतेही ब्रह्मा व इन्द्र व देवता व दैत्य व मनुष्यादिक जीवमारेडरके कांपनेलगे हिरण्यकशिपुने उनकातेज देखतेहीघबड़ाकरमनमेंकहा यहआश्चर्यवतरूप मैंनेआजतक कभीनहींदेखाथा व ब्रह्माने मुझेऐसावरदानदिया है कि तू मनुष्य व देवता व दैत्य व पशु व पक्षीआदिक किसीकेहाथसे नहींमरैगा सोयहरूपऐसा प्रकटहुआ जिसे न मनुष्यकहनाचाहिये न पशु व ब्रह्मानेकहाथा कि तू न दिनकोमरैगा न रातको सोयह सन्ध्यासमयहै इसे न दिनकहना चाहिये न रात और मैंनेब्रह्मासे यहवरदानमांगाथा कि कोईजीवतुम्हारा उत्पन्नकियाहुआ मुझेमार नसकै सो वहस्वरूपब्रह्माने नहींबनायाहै इसलियेमैंजानताहूं कि ब्रह्माकावरदान झूठा न होकर यह मुझेअवश्यमारैगा हिरण्यकशिपु इसी शोच व विचारमेंखड़ाथा कि उसकेसाथी दैत्य नृसिंहजीके डरसेभागगये जब हिरण्यकशिपु उनकेसम्मुखआनकर अपनीगदाउनपरचलानेलगा तबनृसिंहजी उसकीगदापकड़कर इसतरह उससेलड़नेलगे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि जिसतरहपहलवानलोग अपने चेलोंको कुश्तीलड़ाते हैं व बिल्लीचूहेकोपकड़कर खेलखिलातीहै जबइन्द्रादिकदेवतोंने जो नृसिंहभगवान्का दर्शनकरनेवहांआयेथे यहदशादेखनेसे संदेह मानकरमनमेंकहा कदाचित्हिरण्यकशिपु इनसेनहींमारागया तो हमलोगोंका दुःखकिसतरहछूटैगा तबनृसिंहजीअन्तर्यामीने देवतोंकेमनकी बातजानकर हिरण्यकशिपुकोपकड़लिया व उस कीसभाकाजोस्थानथा वहांडेवढ़ीमेंलेआये व लड़कोंके समान अपने जंघेपरलेटाके पेटउसकानखोंसे फारडाला उससमयहिर ण्यकशिपुहँसनेलगा तबनृसिंहजीनेपूछाकितूक्याहँसताहै तबहि रण्यकशिपुबोला किलड़तीसमयजबइंद्रनेअपनी गदामुझेमारी थी तबवहगदा मेरेअंगसे चोटखाकरटूटगई व मुझकोकुछदुःख न हींपहुंचासोअबनखोंसे मेरापेट फाड़ाजाताहै यहीबातसमझकर मुझेहँसीआई अब मैंनेजानाकि यहसब मेरेदिनोंकाफेरहै जोइस तरहमरताहूं ऐसाकहकरजबहिरण्यकशिपुमरगया तबनृसिंहजी उसकीआंतड़ी मालासमान अपनेगलेमें पहिनकर राजसिंहास नपरबैठे उससमय उन्हैंमहाक्रोध उत्पन्नहुआ जबनृसिंहजीका क्रोधदेखकर तीनोंलोकके सबजीवकांपनेलगे तबदेवतोंने ब्रह्मासे कहा तुमजाकरस्तुतिकरो किजिसमेंक्रोधउनकाशांतहो सोब्रह्मा ने नृसिंहजीकेपासजाकर दण्डवत् व परिक्रमाकरकेविनयाकिया हेत्रिलोकीनाथ आपआदिपुरुष सबजीवोंकोउत्पन्न व पालनव नाशकरनेवालेहैं कोईऐसीसामर्थ्य नहींरखता जोतुम्हारीस्तुति जिसका आदि व अन्तनहीं है वर्णनकरसकै अबहिरण्यकशिपु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मारागया क्रोधअपना क्षमाकीजिये जबस्तुतिकरनेपरभी नृसिं
हजीने क्रोधदृष्टिसेब्रह्माकोदेखा और वहमारेडरकेफिरआये तब
महादेवने देवतोंकेकहनेसे नृसिंहजीकेपासजाकर इसतरहपरस्तु
तिकी हेदीनानाथ आपने अपनेभक्तकीरक्षावास्ते अवतारलिया
है सोहिरण्यकशिपुमारागया अबक्रोधअपनाशांतकीजिये एक
छोटेदैत्यको मारकर इतनाक्रोध न करनाचाहिये महाप्रलयमें
तुम्हारेक्रोधसे तीनोंलोकका नाशहोजाताहै अभीवहसमयनहीं
आया इसलिये क्षमाकरनाउचितहै नहींतोइसक्रोधकी अग्निसे
सबजीवभस्महुआ चाहतेहैं जबशिवजीके स्तुतिकरनेपरभी क्रो
धउनका नहींशांतहुआ तबइन्द्रने हाथजोड़कर विनयकिया हे
दीनदयालु हिरण्यकशिपुके मारेजानेसे सबदेवतासुखीहुये व
होममें देवतोंकाभाग वहआपलेताथा अबतुम्हारीदयासे हमलो
ग अपनाअपनाअंशपावैंगे सोक्षमाकीजिये जबइन्द्रकेस्तुतिकर
नेसेभी क्रोधउनकानहींगया तबलक्ष्मीजीने शृङ्गारकिये कमल
कापुष्पलिये वहांजाकरहाथजोड़केकहा महाराजमैंनेआजतक
ऐसातेजवान्स्वरूप तुम्हाराकभीनहींदेखाथा इसलिये यहरूप
देखकर मुझेभयप्राप्तहोताहै सोयहस्वरूप अपनाअन्तर्द्धान की
जिये जबलक्ष्मीजीके स्तुतिकरनेपरभी नृसिंहजीने क्रोधअपना
क्षमानहींकिया तबवरुण व कुवेर व गन्धर्व व विद्याधर आदिक
देवतोंने आपसमें विचारकरकहा यहअवतार नारायणजीने केव
लप्रह्लादभक्तका प्राणबचानेवास्तेलियाहै उसीकेविनती करनेसे
क्रोधउनका क्षमाहोगा ऐसाविचारकर ब्रह्मादिक देवतोंने प्रह्लाद

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेकहा कि तुमजाकर नृसिंहजीका क्रोध क्षमाकराओ नहीं तो तीनोंलोक नाशहुआचाहतेहैं यहवचनसुनकर प्रह्लादबोले बहुत अच्छा योगीकाबेटा योगीसेनहीं डरता सोउनकी आज्ञानुसार प्रह्लादसाष्टांगदण्डवत् करताहुआ नृसिंहजीके पासगया और परिक्रमालेकर उनकेचरणोंपर अपना शिरधरदिया उससमय प्रह्लादकाहृदय मारेहर्षसे ऐसागद्गदहोगया कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता व प्रह्लाद उसस्वरूपकाकुछडर न मानकर बड़ेप्रेम से हाथजोड़कर स्तुतिकरनेलगा॥

नवां अध्याय॥

नृसिंहजीकाक्रोध शान्त होना॥

नारदजीबोले हेयुधिष्ठिर जैसेप्रह्लादने नृसिंहजीके चरणोंपर शिररखकर स्तुतिकी वैसेउन्होंने क्रोधक्षमाकरके प्रह्लादकाशिर प्रेमसेउठाकर उसको अपनीगोदमें बैठालिया व उसकेमस्तकप रहाथफेरकर बोले हे बेटा तू मतडर क्या चाहता है जबयहवचन कहतेहुये नृसिंहजीकेनेत्रोंमें आंशूभरआये तबप्रह्लादभक्तउन के प्रेमसे रुदनकरताहुआ हाथजोड़करबोला हेदीनानाथ मेरा जन्म दैत्यकुलमें जोमांसाहारी व मद्यपहैं हुआसो मैं बालकअ ज्ञान तुम्हारीस्तुति जिनकाआदि व अन्त कोईनहीं जानता वि नाआज्ञा आपकीनहीं करनेसक्ता और हेदीनदयालु मुझअध मीकुलके बालकपर दयालुहोकर आपनेरक्षाकी इसलियेअपने बराबरदूसरेकाभाग्य नहींसमझता व आपउत्पत्ति व पालन व नाशकरनेवाले तीनोंलोकके हैं व ब्राह्मणचारोंवर्ण में उत्तमहो

CC-0. In Rublic Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर शूद्रको सबसेछोटाजानते हैं परमेरीसमझ से ब्राह्मणउसीको जाननाचाहिये किजो आपकातप व स्मरणकरै और जोब्राह्मण तुमसे बिमुखरहकर तुम्हारेचरणोंकी भक्तिनहींरखता वहनामके वास्ते ब्राह्मणहै व जो शूद्रहरिचरणोंमेंभक्ति वप्रीतिरखकरतुम्हारेनामका स्मरण व भजनकरते हैं मैं उनशूद्रों को ब्राह्मणसे श्रेष्ठ जानताहूं व आपसंसारमें केवलहरिभक्तोंके सुख देने व अधर्मियोंको भवसागरपार उतारनेवास्ते सगुणरूपधरते हैं जिससेसंसारीलोग तुम्हारेसगुणरूपका ध्यानकरके औरउनअवतारों की लीलाआपसमेंकह व सुनकर उसकेप्रतापसे मुक्तिपावैं व मनुष्य लोगअपनेसुख व कल्याणकेवास्ते तुम्हारातप व भजनकरते हैं नहींतो आपको किसीसे अपनीस्तुति व तप करानेका क्या प्रयोजनहै किसवास्ते कि आप सर्वगुण निधानहोकर किसीबातका अवगुण नहीं रखते व संसारी बस्तुकी आपको कुछइच्छानहीं है तुम्हारेभक्त ऐसीसामर्थ्यरखते हैं कि जोबात शुभ या अशुभ किसीकोकहैं उसीसमय वैसाहोजाताहै आपकीमहिमा कौनवर्णन करसक्ताहै आपचाहतेतो हिरण्यकशिपुका नाश अपनीइच्छा से करदेते सो हेदीनानाथ आप जितनाभक्तिकरने से पसन्नहोते हैं उतनातप व यज्ञ व दानादिकसे प्रसन्ननहींहोतेजो ब्राह्मणसब वेद व पुराणजाननेवाला तुम्हारीभक्ति न रखताहो उसब्राह्मणसे शोमहरिभक्तको उत्तमसमझनाचाहियेयज्ञ व तपादिककरनेसेके बलअपनाभलाहोताहै व भक्तिकरनेवालेकेसातपुरुषा वैकुण्ठमें जातेहैं आप ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व लक्ष्मीजीके स्तुति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करनेसे नहींप्रसन्नहोकर मुझअज्ञानबालकके विनयकरनेसेआ
पनेक्रोधक्षमाकिया इसलिये मैं अपनेकोबड़ाभाग्यमानजाना व
हेत्रिलोकीनाथ जिसतरहसांपके मारनेसे मनुष्यप्रसन्नहोतेहैं उ
सीतरहसन्त व महात्मालोग हिरण्यकशिपुके मारेजानेसे आनंद
हुये और मैं तुम्हारेइसतेजवान्रूप व दांत व नखसेकुछ भयनमा
नकर संसाररूपीमायासे अतिडरताहूं सो दयाकरके मुझेइसमा
यारूपी अन्धेकुयेंसेबाहर निकालकर अपनीशरणमेंरक्खो व हे
त्रिलोकीनाथ आपनेमेरेशिरपर हाथरखकर मुझेकृतार्थकिया ऐ
सा दीनदयालु संसारमेंकोईदूसरानहींहै सो आपकायहस्वरूपदे
खकर सबदेवताडरतेहैं व मैं इसरूपकाभय न मानकर बहुतप्रस
न्नहूं किसवास्ते कि आपनेयहअवतारधरकर मेराप्राण बचाया
है फिरमैं क्योंडरूं जिसतरहवनमें सबजीव बाघसेडरतेहैं व बच्चा
उसका कुछभयनमानकर उसेअपनापिता व रक्षाकरनेवाला जा
नताहै उसीतरह मैंभीतुमको अपनापितासमझकर इसभयानक
रूपसे कुछनहींडरता परदेवतोंकाडर छुड़ानेवास्ते दयाकरके अब
इसस्वरूपको अन्तर्द्धान कीजिये ॥

दशवां अध्याय ॥

प्रह्लादपर नृसिंहजीका दयाकरना ॥

नारदजीनेकहा हे युधिष्ठिर प्रह्लादकी स्तुतिसुनकर नृसिंह
जीबोले हेप्रह्लादमैं तुमसे अतिप्रसन्नहूं कुछवरदानमांग प्रह्लाद
नेहाथजोड़कर विनयकिया हेत्रिलोकीनाथ मैंनेसंसारीसुख भु
लोक व देवलोक दोनोंजगहकादेखा परवहसुखसदास्थिर नहं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहता एकदिनउसका नाशहोजाताहै कदाचित्आपयह कहैं कि तू बालकअज्ञान क्या जानताहै तैंनेकहांदेखाथा सो हे महाप्रभु हिरण्यकशिपु मेरापिता तीनोंलोककाराजा ऐसाप्रतापीथा जो इन्द्र व वरुण व कुबेरादिक देवतोंसेहँसकर यहबातकहताथा कि ऐसाकाम तुमनेक्यों किया तो वहलोग डरकरभागजाते थे अब उसी हिरण्यकशिपुको देखताहूं कि मरापड़ाहै जानोंकभी नहीं था जबअपनाशरीर स्थिरनहींरहता तो संसारीबस्तुका क्या विश्वासहै कि उसेमांगूं जिसतरहअज्ञानबालकको दीपकदिखला करउसकेमाता पिता फुसलातेहैं उसीतरहवरदानदेनेवास्ते कहक रआपभी मुझेललचाते हैं संसारमेंतीनोंलोक के राज्यसे उत्तम कोईवस्तु नहीं होती सो मैं उसकीभी चाहनानहीं रखता किस वास्ते कि यहतनुमेरा सदास्थिर नहींरहेगा फिर किस आश्रयपर आपसे कोई बस्तुलूं मुझेयही एकइच्छा है कि जन्मजन्मान्तर दिनरात सन्त व महात्मोंकी संगतमेंरहकर तुम्हारेनामका स्मरण व चरणोंकीभक्ति करतारहूं व एकक्षणभी तुम्हारी यादमुझे न भूले सिवाय इसके अपनेवास्ते और कुछचाहनानहीं रखता दूसरीइच्छायहहै कि जो लोगअपने अज्ञानसे बीचअँधेरेकुयेंमें मायामोह स्त्री व पुत्र व धन व संसारीसुखके लटके हैं उनको ज्ञानरूपीरस्सीपकड़ाकर इसकुयेंसे बाहर निकालके भवसागरपार उतारदीजिये जिसमेंउनकाकल्याणहो कदाचित्आप यह कहैं कि जिन्होंने जैसा २ कर्मशुभ या अशुभकियाहै वैसा वैसाफल भोगकरैंगे सबकीमुक्तिनहींहोसक्ती सो मेरेतप व भजनशुभकर्मों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का जो फलहो वहउन्हैंदेकरकृतार्थकीजिये व उनकेअधर्म व पा
पकरनेकेबदले जो उचितहो सो दण्डदीजिये मैं उसेभोग करूंगा
परवहलोग वैकुण्ठकासुखपावें व हेमहाप्रभु मनुष्यअपनेअभा
ग्य व अज्ञानतासेतुम्हारीकृपा व दया व पालनकरनेपर विश्वास
न करके किसीउत्तमपदार्थ मिलनेसेजानताहै कि यहबस्तुमैंनेअ
पनेपराक्रमसेपाई और यहनहींजानता कि सबपदार्थ नारायण
जीदेकर मेरापालन व रक्षाकरतेहैं कदाचित् मनुष्यके परिश्रमसे
कोईबस्तुमिलती तो संसारकाद्रव्य व सुन्दर स्त्री व सबपदार्थसुख
के अपनेघरलेआता हेदीनदयालु संसारीमनुष्यदिनरात दुःखसा
गरमेंपड़ारहकर पहिलेअपने पेटभरनेकीचिन्तामें कि बिना भो
जनकियेरहानहींजाता व्याकुलरहताहै दूसरेसैकड़ोंस्त्रीसे भोगक
रनेपर भी मनउसका न तृप्तहोकर सदानवीन स्त्री की चाहनारख
ताहै ऐसेमूर्खमनुष्यको ज्ञानदेकर भवसागरपारउतारदीजिये ज
बतकतुम्हारीदया व कृपानहींतबतकछूटनाउसका मायारूपीजा
लसेकठिनहै कदाचित्आपयहकहैं कि तुझेइनलोगोंकी मुक्तिहो
नेसेक्यालाभहोगा सोमेरेविनयकरनेका यहकारणहै कि तुम्हारी
एकबेरकी कृपादृष्टिसे उनविचारोंका जो दुःखसागरमें पड़े हैं भ
लाहोजायगा यहबातआपकीप्रभुताईसे कुछदुर्लभनहींबड़ेलोग
छोटोंपर सदासेकृपाकरतेआयेहैं जिसतरहसमुद्रमेंसे कोईमनुष्य
एककटोरापानीलेकर अपनीप्यासमिटाले तोसमुद्रसूखनहींजा
ताउसीतरह तुम्हारीथोड़ीकृपाकरनेमें उनकाकल्याणहोकर आ
पका कुछनहीं घटजावेगा ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुलसी पक्षिनके पिये सरितावटै न नीर। धर्मकिये धन ना घटै जो सहाय रघुवीर ॥

ह्लादयहवचनसुनकर नृसिंहजीबोले हेबेटा मैंनेक्रोधअपना क्षमा
तोंया तुझेअपनेवास्ते जोइच्छाहोमांगले परदूसरोंकीमुक्ति जो
धान श्र है सोसबजीवोंको वैकुंठजानेकी इच्छानहींहोती ॥

मायारूपी जालमें सबकी है यहचाल। अपने अपने खालमें सबीजीव खुशहाल ॥

नृसिंहजीबातसुनकर प्रह्लादबोला हेजगत्पालक मैंनिष्कामभ
तदेनार किसीबस्तुकी चाहनानहींरखता संसारमेंजबकोईमनु
वहांसे किपासजाकर कुछमांगताहै तबउसकेमुखकातेज क्षीण
र्य पुरोहित है व बिनाइच्छा किसीकेपास न जाने व भेंटकरनेमें उस
आप आनारहताहै कदाचित् तुम्हारीइच्छा निजकरकेदेनेवास्ते
लनके सा बरदानदीजिये जिसमेंमुझेकिसीबस्तुकी चाहनानरहै
ब्राह्मण वनेसे धर्मनहींरहता व लज्जाछूटजाती है व जिनकोला
जन व चाहनानहींरहती वहराजाइंद्र व मंगनदोनोंकोसमानजा
कर नारदजीकोईपरमेश्वरकातप व भजनकरके उससेकुछमांगता
रोधहोनेजदूरकेतुल्य समझनाचाहिये इसलिये मैंकुछनहींमांग
हिरायुम्हारीइच्छापरप्रसन्नहूं यहवचनसुनतेहीनृसिंहजीबोले हे
ब बेटातूमेराबड़ामित्र व भक्तहै इसलिये मैं चाहताहूं कितूअपनेपि
ताके सिंहासनपर बैठकर इकहत्तर चौकड़ी राज्यकर कदाचित्
तेरादूसराभाई राज्यकरैगा तो संसारीजीव कहैंगे कि प्रह्लादने हरि
भक्त होनेपरभी राज्यनहींपाया व तुझे मेरीआज्ञा पालनाचाहि
ये व तू धीर्यरख हमारीकृपासे तुझे काम क्रोध लोभ मोह यहसब
विकार राजगद्दीके नहीं व्यापेंगे व मेरे चरणोंमें प्रीति बनीरहैगी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसतरह मेरेपरमभक्त लोक व परलोक किसी सुखकीचाह
नहीं रखते उसीतरहतुझको भी कुछतृष्णा न रहकर महाप्र
तक संसारमें तेरायशास्थिररहैगा ऐसाकहकर जबनृसिंहजी म
केसमान प्रह्लादका अंगचाटनेलगे तब प्रह्लादने उनकीअ
नकर विनयकिया हे महाप्रभु मेरापिता अपनेअज्ञान से
साथ शत्रुतारखकर भक्तिहीनथा इसलियेतुम्हैं अपनेभा
रनेवाला समझकर उसनेदुर्बचनकहाहै सो आप उसका
झकर मुझसे कुछबुरा न मानियेगा जो कोई परमेश्वर
शास्त्र सन्त व महात्माकी निन्दाकरताहै वह इसमहापा
से अतिदुःखपाकर जल्दीकृतार्थ नहींहोता इसवास्तेमेरे
रकभोग करैगा सो आप मेरेऊपर दयालुहोकर उसकासे
जिये यहबातसुनकर नृसिंहजीनेकहा हे प्रह्लाद तूअपने
कुछशोचमतकर वहअधर्म करनेकेबदले नरकको न
सकुलमें तेराऐसाहरिभक्त उत्पन्नहुआ उसकुलवाले
यमदूतोंको नहींदेखसके हमनेतेरे इक्कीसपुरुषा नरकसे
कर स्वर्गमें भेजदिये तेरापिताकिसतरहसे नरकभोगेगा
के सातपुरुषानरकसे निकलकर स्वर्गबासकरतेहैं वेद व
मगहदेशकोमरनेवास्ते अशुद्धलिखाहै परवहांभीमेरेभक्तोंकेजा
नेवरहनेसे वहधरती पवित्रहोकरउसकादोषमिटजाताहै
व पापीहोनेपरभीतुझेअपनेपिताकादाहकर्म व श्राद्धकरनाचाहि
ये जबप्रह्लाद नृसिंहभगवान्की आज्ञानुसारदग्ध व श्राद्धहिरण्य
कशिपुका करचुका तबनृसिंहजीने प्रह्लादको राजसिंहासनपर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ठाकर तिलकलगाया उससमयसबदैत्य व देवतों ने वहांजाकर
ह्लादकोयथायोग्य दंडवतकिया व आशीर्वाददिया व ब्रह्मादिक
तोंने नृसिंहजीको दण्डवत् व स्तुतिकरके विनयकिया हेकृपा
धान आपने बहुतअच्छाकिया व हिरण्यकशिपु अधर्मी को
रा जोदयाकीराहबरदान मुझब्रह्माकास्थिररक्खा यहबातसुन
र नृसिंहभगवान्बोले हेब्रह्मा फिरतुमाकिसीदैत्यको ऐसाबरदा
मतदेना सर्पको अमृतपिलाना न चाहिये ऐसाकहकर नृसिंह
वहांसे अंतर्द्धानहोगये व प्रह्लादने ब्रह्माआदिकदेवता व शुक्रा
र्य पुरोहितका विधिपूर्वकपूजनकरके सबदेवतोंको बिदाकिया
आप आठोंपहर हरिचरणोंका ध्यान रखकरसाथधर्म व प्रजा
लनके राज्यकरनेलगा उसकेराज्यमें देवता व ऋषीश्वर व गौ
ब्राह्मण व सन्त व महात्मा आनन्दपूर्वक रहकर परमेश्वरका
जन व स्मरणकरतेथे कोईजीव दुःखीनहींथा इतनीकथा सुना
र नारदजीबोले हे युधिष्ठिर तुमने हिरण्यकशिपु व प्रह्लादके
धहोनेकाहाल जो मुझसेपूछाथा सो मैंने वर्णनकिया वही
हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष दूसरेजन्ममें रावण व कुम्भकर्णहुये
व तीसरेजन्म शिशुपाल व दन्तवक्र होकर जब श्रीकृष्णजी के
हाथसेमारेगये तब वैकुण्ठमेंजाकर जयविजयद्वारपाल परमेश्व
रकेहुये जोकोई परमेश्वरकीकथा व लीलाकहता व सुनताहै वह
कर्मोंकी फाँसीसेछूटकर स्वप्नमेंभी यमदूतोंको नहींदेखता हेयुधि
ष्ठिरतुमबड़े भाग्यवान् व पूर्वजन्मकेतपस्वी व धर्म्मात्माहो देखो
जिसपरब्रह्म परमेश्वरके चरणोंकाध्यान ब्रह्मा व महादेवआदिक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवता आठोंपहर अपनेहृदयमें रखकर उनकीआज्ञा पालनकर
ते व बड़े २ योगी व ऋषीश्वर जिनकादर्शन ध्यानमें भी जल्दी
नहींपाते वही श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ तुम्हें अपनाभक्तजान
कर तुम्हारीआज्ञामें बनेरहतेहैं इसीवास्ते भक्तवत्सल इनकाना
मसंसारमें प्रकटहुआहै एकबेरमहादेवजीनेभी इन्हींश्यामसुंदर
की सहायतासे पुरनामदैत्यको माराथा उसीदिनसे शिवजी त्रि
पुरारिकहलातेहैं इतनीकथासुनकर युधिष्ठिरनेपूछा हेमुनिनाथ
इसकीकथा वर्णनकीजिये नारदजीबोले एकसमय देवतोंने दै
त्योंको युद्धमें जीतलिया तबसबदैत्य ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार
कि उनकातपदैत्योंनेकियाथा मयनामदानवके शरणमेंगयेसो
उसने दैत्योंको अपनीमाया व इन्द्रजालकेमन्त्रसे तीनकिला
चांदी व सोने व लोहेकेविमानके समानबनादिये कि वहतीनों
क़िले आकाशमार्गमें कभी दिखलाईदेकर कभी अन्तर्द्धानहो
जातेथे जबपुरनाम दैत्योंकाराजा बहुतदैत्य उसीविमानमेंसाथ
लेकर देवतोंसे लड़नेवास्तेचढ़ा तब इन्द्रादिकदेवतोंने उसकेस
न्मुखजाकर अपने २ शस्त्र उसपरचलाये जब देवतोंकेहथियार
उसकोटकी दीवालमेंलगकरटूटगये तब दैत्योंने अपनेशस्त्रमार
कर उनकोहटादिया जब दैत्यलोगतीनोंलोक जीतनेपरभी उस
क़िलेमें दिनरातरहकर मनुष्य व देवतोंकोढूंढ़ २ के मारने व दुःख
देनेलगे तबसबदेवतोंने शिवजीकी शरणमेंजाकर उनसेसहाय
ता अपनीचाही जबमहादेवजी उनकेसहायक होकर दैत्यों को
युद्धमें मारनेलगे तब मयदानवने अपनीमायासे उसकोटमें एक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुण्ड अमृतका बनादिया सो जितनेदैत्यों को महादेव मारकर
गिरातेथे उन्हेंवहदानव उठाकर उसअमृतकुण्डमें डालदेताथा
तबफिर वहलोगजीकर शिवजीसे लड़नेलगतेथे जबइसीतरह
कई दिनतक महादेवजीने दैत्योंसेलड़कर उनकोमारा और वह
लोग अमृतकुण्डके प्रतापसेकमनहींहुये तब शिवजीनेदैत्योंकी
यहदशादेखकर अपनाधनुषबाण पृथ्वीपर पटकदिया व नाराय
णजीकाध्यान करनेलगे तब श्यामसुन्दर दीनदयालुने महादेव
जीको उदासदेखा तबब्रह्माको बछड़ाबनाया व आपगायरूप धर
के उसकुण्डपरजाकर अमृतपीनेवास्ते मुँहलँबाया वैसे किसी दै
त्यरखवारी करनेवालेनेकहा यहगौ अमृतपीतीहै इसको मारना
चाहिये दूसरेनेउत्तरदिया कि यह गायबछड़ा अतिसुन्दरहै पीने
दो कितनापीवैगे जब नारायणजीने अपनेगायरूपकी सुन्दरता
ई दिखलाकर सबदैत्यरखवारी करनेवालों को मोहलिया व क्ष
णभरमें सबअमृत उसकुण्डका पीकर वहांसे अन्तर्द्धान होगये
तब दैत्यलोग अमृतकुण्ड सूखादेखतेही मयनामदानवके पास
जाकररोनेलगे जब कुण्डकेसूखनेका समाचार मयदानवनेसुना
तब उसनेदैत्योंसेकहा हेभाई कोईजीव आप परमेश्वरनहींहोस
का जो हरिइच्छा टालनेसकै यहवचन कहनेउपरान्त मयनाम
दानव नारायणजीको दैत्योंसे विमुखदेखकर उसविमानसेबाहर
चलागया व श्यामसुन्दरने महादेवकेपासजाकर उन्हैंधीर्यादिया
व एकरथ व धनुपबाणदेकर उनसेकहा अबअमृतकुण्ड दैत्योंका
सूखगयाहै तुमइस रथपरबैठकर इसीधनुपबाणसे युद्धकरो तुम्हा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

री विजयहोगी यहवचन सुनतेही महादेवने बड़े हर्षसे नारायण जीको दण्डवत्करके विनयकिया हेदीनदयालु बिनाकृपा तुम्हा री मुझसेक्याहोसक्ताहै जिसतरह आप देवतोंकी रक्षा सदाकरते आयेहैं उसीतरह आजभी कृपालुहोकर मेरी सहायताको जब धनुषबाणदेकर वैकुंठनाथचलेगये तबशिवजीने उसीधन्वापरएक बाणरखकरचलाया तोउसबाणकेलगतेही मायारूपीतीनोंकोट पुरनाम आदिक दैत्योंसमेत जलकरभस्महोगये व श्यामसुन्दर कीदयासेमहादेवने विजयकिया व इंद्रादिकदेवता अपनाराज्य पाकर प्रसन्नहुये हेयुधिष्ठिर देखो ऐसाप्रताप श्रीकृष्णजीका है यह महिमा श्यामसुन्दरकीसुनकर युधिष्ठिरने अपनेको धन्यक रकेजाना व इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हेपरीक्षितना रायणजी अपनेभक्तोंकी अवश्य रक्षाकरते हैं॥

ग्यारहवां अध्याय॥

नारदजीका राजायुधिष्ठिर से चारोंवर्ण व चारोंआश्रमका धर्म कहना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित इतनीकथासुनकर राजायुधिष्ठि रनारदमुनिकी बहुतस्तुतिकरके बोले हेमुनिनाथ आपदयालुहो कर वहधर्म चारोंवर्ण व चारोंआश्रमका वर्णनकीजिये जिसधर्म करनेमें नारायणजी प्रसन्नहोतेहैं तबनारदमुनिनेकहा हेराजन् जिस किसीमेंयहसबगुणहों उसकोतुमजानना कि इसधर्मात्मासे परमेश्वरप्रसन्नहैं उसमनुष्यको पहिंचाननेवास्ते यहसबलक्षण उसमेंदेखनाचाहिये पहिलेवहसत्यवादीहोकर झूठ न बोलै दूसरे वहअन्तःकरणमें दयारखकर जिसेदुःखीदेखै अपनेसामर्थ्यभर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसकादुःखछुड़ानेवास्ते उपाय करै तीसरेअपनेबित्तानुसार दान देकरअकेलेभोजन न करै जो पदार्थउत्तममिलै उसमेंसेपहिले ब्राह्मणआदिक चारोंवर्णको देकर पीछेसेआपखावै चौथेअपना चित्तपरमेश्वरके भजन व स्मरणमेंलगायेरखकर नवधाभक्ति उ नकीकरतारहै पांचवें अतिलालचछोड़कर सन्तोषरक्खै व संसा रीमायासेबिरक्तरहकर साधु वमहात्माकीभक्ति व सेवाकरै छठवें परमेश्वरअवतारकीलीला व कथा प्रेमपूर्वक कह वसुनकर जीव हिंसाछोड़दे सातवेंइनसबबातोंमें जितना बनपड़े उतनाध्यान र क्खै जो मनुष्य इनशुभकर्मोंमेंसे कोईबातनहींकरता वहपशुकेस मानहै हेयुधिष्ठिर परमेश्वरकीभक्ति चारोंवर्ण व चारोंआश्रमको करनाचाहिये जो ब्राह्मणअपनेकर्म व धर्म वेदपढ़ने व संध्याकर नेमेंसावधानरहकर परमेश्वरकीभक्ति न रखताहो तो उसकावेद पढ़ना व सन्ध्याकरना सबवृथासमझो इसीतरहसे क्षत्री व वैश्य व शूद्रतीनोंवर्णगृहस्थ व ब्रह्मचारी व वानप्रस्थ व संन्यासी चारों आश्रमको ध्यान व स्मरण व भक्तिनारायणजीकी सच्चेमनसेक रनाचाहिये जिसमेंबेड़ाउनकापारलगै व धर्मचारोंवर्णकाबिलग बिलगहै उसकी कथासुनो ब्राह्मणउसेकहनाचाहिये जिसकासब संस्कार विधिपूर्वक जन्मलेने व मुण्डन व जनेऊ व बिवाहकरने के समयहुआ हो और वहपालनअपना खेतमेंकागिराहुआ अ न्नचुनने व भिक्षामांगनेसेकियाकरै व चलनभीखमांगनेकाऐ साहै जो भिक्षाबिनामांगेमिलै वहभीख अमृततुल्यहोकर जो मांगनेसेपावै उसको भिक्षासमानकहते हैं यहदोनोंतरहकी भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ख उत्तमहोकर किसीका दुःखीकरके जोलेतेहैं वहभिक्षामांसके
तुल्यहोतीहै सोब्राह्मणकोनित्य वेद व शास्त्रपढ़ना व चर्चाउनकी
आपसमेंरखकर दूसरोंकोविद्यापढ़ानाचाहिये व आपयज्ञ व होम
करना व दूसरोंसेयज्ञ व होमकराना व दानलेना व दूसरेकोदानदे
नाब्राह्मणकाधर्महै व क्षत्रीवर्णकाधर्मऐसालिखतेहैं कियज्ञ व हो
मआपकरै व ब्राह्मणकेहाथसेभीकरावै व वेद व शास्त्रआपपढ़कर
दूसरोंकोभीपढ़ावै आपदानदेकर दूसरेसेदाननलेवै व नौकरीका
उद्यमरखकरसाधु व ब्राह्मणकाभक्तहोवै व शूरबीर व धर्मात्माहो
कर अपनेमन व इन्द्रियोंकोबशमेंरक्खै व वैश्यवर्ण व्यापारकरै
व बणिजविद्यामेंनिपुणरहै व देवता व ब्राह्मणमेंआधीनताईसेभ
क्तिरखकर क्षत्री व ब्राह्मणकीबराबरी न करे व शूद्रसेवा व टहल
ब्राह्मणआदिक तीनोंवर्णकी जो उससेउत्तमहै करके अपनाकुटुंब
पालै व शूद्रको वेदकेमंत्रसे यज्ञ व होमकरना न चाहिये व ब्राह्म
ण देवतातुल्यहोतेहैं इसलिये उनकोनौकरी व सेवा मनुष्यकी क
रना अत्यन्तवर्जित है कदाचित् कोई कहै कि द्रोणाचार्य्य ऐसे
महात्माने किसवास्ते दुर्योधनकीनौकरीकीथी सोउनका यहवृ
त्तांतहै किएकदिन अश्वत्थामाबेटा द्रोणाचार्य्यकोलड़कपनमें
किसीबालकको दूधपीतेदेखकर अपनेपितासेकहा मैंभी दूधलूं
गा द्रोणाचार्य्यको दरिद्रतासे इतनीसामर्थ्य नहींथी जोदूधमोल
लेकर उसेदेते इसलिये उन्होंनेसफेदमट्टी जिससेलड़के लिखते
हैं पानीमें पीसकर दूधकीजगह अपने बेटाको दिया जब अश्व
त्थामाने उसेदूधसमझकरपीलिया तबद्रोणाचार्यने मनमें कहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखो मेरेऐसेजीनेपर धिक्कारहै किपावभरदूध पुत्रकेपीनेवास्ते मे राकियानहींहोसक्ता इसीदुःखसे द्रोणाचार्य राजादुर्योधनकेपा सजाकर रहनेलगे परउन्होंने महीनाबांधकर उससेनहींलिया हे युधिष्ठिर चारोंवर्ण का धर्महमने तुमसेकहा अबस्त्रियोंका धर्म सुनो वे अपनेस्वामीको देवता व परमेश्वर तुल्यजानकर उनकी आज्ञामेंरहैं व मीठेवचनबोलकर किसीको कठोरबात न कहैं व अधिकलोभ न रखकर अपनेस्वामी व बड़ोंकीटहल शुद्धमनसे करैं व अपनेरहनेकास्थान पवित्ररक्खैं थोड़ा या बहुत जोकुछभू षण व वस्त्रपरमेश्वरदे उसकोपहिनकर मगनरहैं व सिवायसचके मिथ्यावचन अपनेस्वामीसे न कहकर सन्तोषरक्खें और जो स्त्री अपनेकर्मोंकेफलसे बिधवाहोजावे उसकोकिसीबस्तुसे पेटभरले ना और वस्त्रसेतनुढांपकर परमेश्वरकाभजन व ध्यानकरनाउचि तहै बिधवास्त्रीको भोजनआदिकमें स्वादकीइच्छारखना व उत्त मभूषण व वस्त्रपहिनकर शृङ्गारकरना न चाहिये जो स्त्री अपने धर्म व कर्मसेरहिकरऐसाकरती हैं वे स्त्रियांभीमरनेउपरांत वैकुंठ मेंजाकर लक्ष्मीसमान अपनेस्वामीकेसाथ सुख व बिलासभोग तीहैं व चारोंबर्णकी स्त्री पुरुषको चोरीआदिक कुकर्मोंसेरहितरह नाचाहिये व नित्य स्त्री व पुरुषके भोगकरनेमें जल्दीसन्ताननहीं होती इसलिये ज्ञानीमनुष्यको उचितहै कि जबस्त्रीरजस्वलाहो कर चौथेदिनस्नानकरै उसदिनस्त्रीप्रसंगकरनेसे सन्तानधर्मात्मा उत्पन्नहोतीहै दिनकेमैथुनकरनेसे तेज व बल व धर्म नाशहोकर आयुर्दा क्षीणहोजातीहै व जोकोईरजस्वला होनेपर चौथेदिन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपनीस्त्रीकेपास न जाकर परस्त्रीगमनकरता है उसेमहापापी व अधर्मी समझनाचाहिये सिवाय इनचारोंवर्णके और जो वर्णसंकरआदिकहैं उनको ऐसाउचित है किउनकेकुलमें जिसतरहसे धर्म व कर्मचलाआताहै उसीतरह वेलोग अपनाधर्मरक्खें॥

बारहवां अध्याय॥

नारदजीका चारोंआश्रमका धर्मवर्णनकरना॥

नारदजीबोले हेयुधिष्ठिर चारोंवर्णकाधर्म हमने तुमसे वर्णन किया अबचारोंआश्रमकाधर्म जोउन्हेंकरनाचाहिये सुनो ब्रह्मचारीका धर्मयहहै किजबकिसीको इच्छाब्रह्मचर्यलेनेकेवास्तेहो और उसकेमाता व पिताआज्ञादेवैं तबवह बीसवर्षकीअवस्थामें उसीइच्छासे गुरूकेघरजाकररहै व एकाग्रमनसे उनकीसेवाकरै और गुरूकीआज्ञानुसार पढ़कर उनकीटहल व सेवाकरना पढ़ने सेउत्तमसमझै व प्रातःकाल व संध्यासमय गुरूनारायण व सूर्य व अग्निआदिक देवतोंकापूजन विधिपूर्वकक्रियाकरै व जटाशिर परररखकर शिर व दाढ़ीआदिक किसीअंगकाबाल कभीनमुड़ावै और जोभिक्षामांगकरलावे सबगुरूकेआगेरक्खै जबगुरू आज्ञादे तबभोजनकरै व क्रोधकरना व दुर्वचनकहना छोड़कर गुरूकीनिन्दानकरै व अतर व फुलेल व चंदनआदिकसुगंध व दूसरमा व मिस्सीलगाना व मांसखाना व मदपीना त्यागकर पांचवर्ष ब्रह्मचर्यसेगुरूकेघररहै परउनकीस्त्रीसे हँसकर न बोलै दूसरेदण्डवत्करलेवै व कभीस्त्रीकाप्रसंग न करै व उसकेसाथ बातकरना व स्त्रीकागानासुनना छोड़कर उनकेपास अकेलेमें न बैठे जिसमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इंद्रिया व मनउसकाचलायमान न होवेस्त्रीको अग्नि व पुरुषको घृतसमानसमझनाचाहिये सो घी अग्निकासाथपाकर बिनापिघलनहींरहता कदाचित् बीसवर्षकीअवस्थामें चित्तउसकागृहस्थी करनेवास्तेचाहै तो उत्तमकुलमें बिवाहकरके गृहस्थधर्मसे रहै व बिवाहकरनेकी इच्छा न हो तो जन्मभरगुरूकेघर रहकरकिसी स्त्रीको कुदृष्टिसे न देखै व धर्म बानप्रस्थकायहहै कि जबगृहस्थी में पचासवर्षकी अवस्था हो तब अपनी स्त्री समेत बनमेंजाकर परमेश्वरकातप व स्मरणकरै व सिवायकन्दमूल व फलादिककेखे तकाबोयाहुआअन्न न खावे व कंदमूलआदिक न मिलै तो वृक्षकापत्ताखाकर रहै पर फल व पत्ता वृक्षमेंसे न तोड़कर पृथ्वीका गिराहुआखावै व बनमेंस्त्रीसमेतअकेली जगहरहकरछालका व स्वपहिने व जो अतिथि व मंगनआजावै उसकोभी वहीफल व कंदमूल खिलाकर उसीफलादिकसेहोमकियाकरै व क्षौरादिक छोड़कर वर्षामेंवीचमैदानकेबैठे व जाड़ेमें जलवासकरके गर्मीमें पंचाग्नि तापै इसतरहकातप एकवर्ष या दोवर्ष या चारवर्ष या आठवर्ष या बारहवर्ष जहांतकबनपड़े वहांतककरके ब्रह्मकाविचार करतारहै तो वह ब्रह्मरूपहोजाताहै॥

तेरहवां अध्याय॥

नारदजी को राजा युधिष्ठिरसे संन्यास धर्मकी कथा कहना॥

नारदजीबोले हेयुधिष्ठिर बानप्रस्थ पचहत्तरवर्षकी अवस्थामें संन्यासलेकर दण्डकमण्डलुधारणकरै व धर्मसंन्यासीका यहहै कि पहिलेजिसतरहब्राह्मणोंनेवेदमंत्रसे उसकेगलेमेंजनेऊप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिनायाथा उसीतरहमंत्रपढ़करजनेऊ गलेसेउतारडालै व पूर्व
श्रमकाधर्मछोंड़दे व किसीनगर व गांवमेंएकरात्रिसेअधिक न
पर भिक्षामांगनेको बस्तीमेंजाकर जोकुछसाधारणसे दूधभिक्ष
मिलै उसेलेकर शास्त्रानुसारकर्मअपनाकरतारहै व कुछबस्तु अ
दिकअपनेपास न बटोरे अकेलारहकर दण्ड व कमण्डलु एक
ण न छोड़े व सबजीवोंपरदयारखकर हरिचरणोंकाध्यान करत
रहै व परब्रह्मकाप्रकाश जड़ व चैतन्यसबतनुमें एकसासमझै
किसीको चेला न मूड़े व मठादिक अपनेरहनेकेवास्ते न बनव
करबस्तीकेबाहररहै व भोजन व वस्त्रकाशोच न रखकरवेद वशा
स्त्रपढ़ने व सुननेका अधिकअभ्यासरक्खै व संसारकोस्वप्नवत् स
मझकर मरनेकीचिन्ता व जीनेकाहर्षनकरै इतनीकथासुनाकर
नारदजीबोले कि हेराजन् हमनेब्रह्मचर्य व बानप्रस्थ व संन्यास
काधर्म्मतुमसेकहा अबएकसंन्यासीकाइतिहासकहतेहैं सुनो प्र
ह्लादजीराज्यपरबैठकर एकसमयअपनेदेशमें सैरकरनेवास्ते नि
कले जिसस्थानपर किसीज्ञानीकासमाचार मिलताथा वहां जा
करउसकेसाथ हरिचर्चाबड़ेप्रेमसेकरतेथे सो एकदिन रेवानदीके
किनारेपहुंचकर क्यादेखा कि एकअवधूत दत्तात्रेयनाम अतिपु
ष्ट व तेजवान्नंगेशिर नदीकेतटपरपड़ाहुआ परमेश्वरके ध्यान
में लीनहै प्रह्लादउसअजगरमुनिकोदेखतेही शिविकापरसे उतर
पड़ा व उसकेनिकटजाकरबोला हेपरमहंसमूर्ति तुमहमको बड़े
गुणवान् व महात्मा दिखलाईदेकर कुछभोजन व वस्त्रादिक अ
पनेपासनहींरखते व संसारीव्यवहारसेरहकर कुछउद्यमनहींकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ते और न कुछ किसीसे मांगते तिसपरभी बहुतमोटे दिखलाईदेते
हो व जगत्मेंहम देखतेहैं कि बिनाउद्यमकिये किसीको द्रव्य न
मिलकर बिनाधनसंसारीसुखनहींमिलता व संसारीजीव अनेक
उद्यम करनेपरभीदुर्बलरहतेहैं इसका क्याकारणहै सिवायइसके
और जो कुछ ज्ञानपरमेश्वरने आपकोदियाहो वहभी थोड़ाकहो
यहबातसुनतेही अजगरमुनिउठबैठे व प्रह्लादकोहरिभक्तजानकर
बोले कि हेप्रह्लादतुमने जो पूछा कि तू कुछउद्यमनहींकरता व
मोटादिखलाईदेताहै इसकाहालसुनो मैंने जगत्में उद्यमकरके
बहुतद्रव्यकमाया परमेरीतृष्णानहींछूटी जबमैंनेदेखा कि लोभ
रूपी कमण्डलु मेराकिसीतरहनहींभरता व जितनाद्रव्यअधिक
बटोरताहूं उतनाहीलोभप्रतिदिनबढ़ताहै तबमैंनेविचारा किमनु
ष्यतनुपाकर किसवास्तेजन्मअपनाअकार्थखोऊं कदाचित्इसी
तरह संसारीमायामें फँसारहकर एकदिनमरगया तो नरकमेंजाक
रअवश्यदुःख भोगूंगा इसलियेसंसारीतृष्णाछोड़कर आठोंपहर
परमेश्वरकेध्यानमें मगनरहताहूं जिनकेहृदयमें हरिचरणोंका
वासरहताहै वहलोगअशोचरहकर पुष्टहोतेहैं व संसारीचिंतारख
नेसे मनुष्यदुर्बलहोताहै व बाहरकाअन्धकार सूर्यकेप्रकाशसेमि
टकर भीतरअन्तःकरणका अँधियारा परमेश्वरकी भक्तिकरनेसे
छूटजाताहै व जोतुमनेयहकहा कि तू कोईवस्तुअपनेपास न रख
कर किसीसे कुछनहींमांगता सो मैंने बहुतधनपात्रों को देखाहै
कि वहलोग द्रव्यबटोरनेसे सदाचिन्तामें रहकर प्रथम भयराजा
कारखतेहैं ऐसा न हो कि जोकोई कलंकलगाकर हमाराधनछीन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लेवे दूसरेचोर व डाकूकेडर व खटकेमें रातको अच्छीतरह निद्रा नहींआती तीसराभय अपनेनातेदारोंका लगारहताहै और वह लोग इसीविचारमें दिनरातरहतेहैं कि किसतरह इनकाद्रव्यहम को मिलै इसीकारण धनबटोरनेवालोंको सुखनहींमिलता जिस तरह मक्खियां अतिपरिश्रमसे छत्तेमें शहदबटोरकर कृपणतासे उसको नहींखातीं जबबहुतसा मधुउसमें इकट्ठाहोताहै तबकोल व मुसहर आदिक उसछत्तेमें अग्निलगाकर शहद अपनेघरले जातेहैं उन मक्खियों को शहदबटोरनेमें सिवायदुःखकेकुछसु खनहींमिलता उसीतरहद्रव्यबटोरने वालोंको भी अतिदुःखहो कर वहधनउनकेकामनहीं आता इसीवास्ते मैं संसारी मोहछो ड़कर विरक्तहोगया जिसतरहअजगरसर्प चलनेकीसामर्थ्य नर खकर एकस्थानपरपड़ारहताहै व परमेश्वर उसीजगहउसकोआ हारपहुंचातेहैं उसीतरहमैंभीपड़ारहकर दिनरातपरमेश्वरकेध्या नमें मग्नरहताहूं जो कुछप्रारब्धानुसार कोई देजाताहै उसेखाकर सन्तोषरखताहूं॥

दो० अजगर करै न चाकरी पक्षी करै न काम। दास मलूका यों कहै सबके दाता राम॥

हे प्रह्लाद कदाचित्कोई दयासेखीरपूरीमुझेदेगयातोउसेखा करकुछबखानउसकानहींकरता व जोकोईदुर्वचनकहकर सागरा टीअलोनी खिलाजाताहै उससेभीकुछखेदनहींमानकर यहसम झताहूं कि यहसबमेरेकर्मानुसारहोताहै व किसीदिन भोजन न मिलने व उपासकरनेपरभी प्रसन्नरहकर यहजानताहूं कि आ ज़मेरेभाग्यमें भोजननहींलिखाथा न कभीकोईमेरे अंगमें चन्द

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नादिकसुगन्धलगाके उत्तमभूषण व वस्त्रपहिनाकर हाथी व घो
ड़ा व सुखपालपर बैठादेताहै व कभी पृथ्वीपर धूरिमें पड़ारहता
हूं सो मुझे उसके मिलनेका हर्ष व न छूटनेका विषाद कुछ नहीं
होता इसीतरह हमआनन्दपूर्वक जन्मअपना काटते हैं सो हे प्र
ह्लाद यहजीवचौरासीलाख यौनिमेंभ्रमकर मनुष्यतनुपाताहै जो
कोई भरतखण्डमें चैतन्यचोला मनुष्यका पाकर हरिभजन व
स्मरण में बिमुखरहा उसे बड़ाअभागी व मूर्खसमझना चाहिये
प्रह्लाद यहज्ञानसुनकर अतिप्रसन्नहुआ व अजगर मुनिसे बिदा
होकर अपनेघरआया ॥

चौदहवां अध्याय ॥

नारदजी का राजायुधिष्ठिर से गृहस्थाश्रम का धर्म कहना ॥

नारदजीने कहा हे युधिष्ठिर अबहम गृहस्थाश्रम धर्म कहते
हैं सुनो जबब्रह्मचारी वेदआदिक पढ़कर गृहस्थीकरना चाहै तो
वहअपनेदेशके राजासेजाकरकहै हमविद्यापढ़चुके अबतुम्हारे
नगरमें गृहस्थाश्रमहोकर रहैंगे तबराजाको उचितहै उसकेविद्या
की परीक्षालेवै व अपनेकोशसे द्रव्यादिकदेकर उसकाविवाह उ
त्तमकुलमें करादेवै व गृहस्थहोनेउपरांत वहब्राह्मण अपनेधर्मा
नुसार उद्यम करके अपनाकुटुंबपालै व चारोंवर्णके गृहस्थकोचा
हिये कि प्रतिदिन यथाशक्ति दान व पुण्यकरै जिसकेघर कोईब
स्तु दानदेनेकी न हो उसको जिस समय कुछभोजन करनेवास्ते
मिले उसमेंसे कुछदेदे व गृहस्थ व ब्रह्मचारी व बानप्रस्थ व सं
न्यासीके भोजन व वस्त्रकी सधिअवश्यलेनाचाहिये किसवास्ते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि इनतीनोंआश्रमको धनादिकबटोरनाबर्जित है व गृहस्थाश्रम को नित्य पितरोंकाश्राद्ध व तर्पणकरकेअमावस व पूर्णमासी व संक्रांति व द्वादशी व व्यतीपात व वर्षगांठिकेदिन अवश्यकुछदानदे नाचाहिये व ब्राह्मणकुरुक्षेत्र व गया व काशी व प्रयागवमथुरावन्न योध्या व हरद्वार व बैजनाथ व जगन्नाथजीआदिक तीर्थोंपररह ते हैं उनकेद्रव्यादिक दानदेनेसेसौगुना मिलता है परब्राह्मणको नारायणरूपसमझकरदानदेवै व गृहस्थप्रतिदिनकथा व लीला परमेश्वरकीसुनकर हरिचरणोंकाध्यान व स्मरणरक्खे ऐसाजा नतारहै कि आत्मासबजीवोंमेंएकसाहै जिसतरहसोने व मट्टीका बर्तनपानीभरकररखदेव तो चन्द्रमा व सूर्यकीछाया दोनोंबर्तन में बराबरपड़ती है उसीतरहजीवात्मा परमेश्वरके प्रकाशकीब्रा ह्मण व क्षत्री व चाण्डाल व पशु व पक्षी आदिकसबकेतनुमें स मानसमझकरकिसीजीवको दुःखदेनानचाहिये आत्मामें कुछ ब्राह्मण व क्षत्री व शूद्रवर्णका भेदनहींहोता व गृहस्थकोधर्मकी कमाईसे देवतोंकेनामपरयज्ञ व होमकरना व मंगन व कंगालों कोभोजन व वस्त्रदेना और अपनेकुटुम्ब व परिवारवालोंकोपाल ना उचितहै परमनसेघरवालोंको ऐसासमझे कि जिसतरहरात को चारों दिशाके पथिक एकजगहबासकरके प्रातःकाल बिल गहोजातेहैं फिरउनकासाथनहींरहता उसीतरहसंसारीजीव अप ने२ कर्मोंकेफलसेउत्तम व नीचकुलमें जन्मलेकर इकट्ठेहोते हैं व पूर्वजन्मोंके संस्कारसेअपना २ बदलालेकर मरनेउपरान्त न मालूम किसयोनिमें चलेजातेहैं इसलिये उनसेअधिकप्रीति न

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रक्खै व काम क्रोधमोहलोभ अपनेशत्रुओंको जीतकरपतिव्रता स्त्री के समानहरिचरणोंमें ध्यानलगाकरमुक्तहोवै नहींतोफिरय हतनमिलनाबहुतकठिनहै व अधर्म व पापकरनेसेनरकोंकादुःख अवश्यभोगकर सदाआवागमनमें फँसारहैगा व मरतीसमय हाथी व घोड़ा व द्रव्यादिककुछसंगनहींजाता इसलियेधनपाकरदान व धर्मकरनाचाहिये जो सूमलोगधनजोड़कर मरजातेहैं उनकोयमपुरीमें चोरोंकेसमान दण्डमिलताहै व जिनपरिवारवालोंको झूंठसच्चबोलकरजन्मभरपालताहै उसदुःखमेंवहलोग कुछ सहायतानहींकरते व अपनाशरीरभी गलसड़कर कुछकामनहीं आता इसलियेमनुष्यको अपनापरलोकबनानेवास्ते ब्राह्मणको देवतातुल्यसमझकर अच्छाभोजनखिलाना व उसकीसेवाकरना उचितहै इसमेंपरमेश्वर अतिप्रसन्नरहते हैं व गृहस्थको अपने परिवारवालोंका जोकोई मरजावै क्रिया व कर्म अवश्यकरनाचाहिये व तीर्थपर रहने से मनमनुष्यका अधर्मकीतरफ नहींजाता और किसीजगहरहनेमें चित्तपापकी तरफ़दौड़ताहै व कलियुगवासीजीव परमेश्वरका भजन व स्मरण करने व कथा व लीला सुननेसे कृतार्थ होते हैं॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

गृहस्थाश्रम की कथा॥

नारदजीबोले हे युधिष्ठिर गृहस्थाश्रम को देवता व पितरोंके नामपर यज्ञ व श्राद्धादिकमें अच्छेकुलीन क्रियावान् वेद व शास्त्र जाननेवाले ब्राह्मणको भोजनकरानाचाहिये ऐसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्राह्मण खिलानेसे अतिपुण्यहोताहै जिसतरह अच्छीधरती प
थोड़ाअन्न बोनेसे बहुतउत्पन्नहोकर ऊसरपृथ्वीपरकुछनहींउप
जता सोदेवकर्म व पितरकर्ममें तीनब्राह्मणसेकम कभीनाखिलावे
व यज्ञश्राद्धमें जीवहिंसानकरै देवता व पितरलोग जीवहिंसा क
नेसे प्रसन्ननहींहोते औरसबयज्ञोंसे ज्ञानयज्ञकथा व कीर्त्तन प
मेश्वरकीकहना व सुनना अतिउत्तम व पवित्रहै और सबकर्मोंमें
बड़ाधर्म यहजानो कि मनसाबाचाकर्मणासे किसीका अनभल
नचाहै और सन्तोषकरवै जिनकोसन्तोषनहींहोता वह बड़े २ प
ण्डित व ज्ञानीभी नरकबासकरतेहैं व गृहस्थकोप्रतिज्ञा किसीबा
तकी न करनाचाहिये जो गृहस्थअपनेधर्मसे बिपरीतचलकरऔ
रब्रह्मचारी अपनेव्रत व धर्मको छोड़देता है व जो बानप्रस्थ अप
नेतपसेधर्मको न मानकर जो संन्यासी लालचरखकर अपनी इ
न्द्रियोंकासुखचाहताहै वहलोगनामकेवास्ते आश्रमकारूपबना
येहैं परउसधर्मकाफलउनकोनहींमिलता व हेराजन् चारोंबर्णव
चारोंआश्रमको ऐसाउचितहै कि चैतन्यचोलापाकर दोतरहका
कर्मकरैं एकप्रवृत्त व दूसरानिवृत्त सो शास्त्रकीआज्ञानुसार प्रवृत्त
कर्मकरनेवालाजीव चन्द्रमण्डलकेराहसे देवलोकादिकमें जा
करअपनेकर्मोंकासुखभोगताहै और अवधिबीतनेपर फिर संसार
में जन्मलेकर आवागमनसे छुट्टीनहींपाता व निवृत्तकर्मकरनेवा
ले सूर्य्यमण्डलकेमार्ग्गसे वैकुण्ठमेंपहुंचकर जन्म व मरणसे छू
टजातेहैं सोहमने दोनोंराहतुझको बतलादिया जो गृहस्थहमारे
कहने व शास्त्रानुसार अपनेकर्म व धर्मसरहे वहपरमहंस पदवी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को गृहस्थाश्रममें भी पानेसक्ताहै व जो कोईसंन्यास व वैराग्य लेकर फिरगृहस्थीकीचाहनाकरै उसकोकुत्तेकेसमान जो उबांत करके खालेताहै समझनाचाहिये परमेश्वर की मायामें संसारी मनुष्यलपटकर नष्टहोरहे हैं जिसतरह रथकाघोड़ा जोताहुआ जिधरचाहै उधर खींचकरलेजावै रथका कुछवशनहींचलता उ सीतरह रथरूपी शरीरकामन चंचलघोड़ा अपने कर्मोंसे जिस लोकमें चाहै वहांलेजानेसक्ता है इसलिये मनुष्यतनमें शुभक र्मकरके बैकुण्ठ व स्वर्गकासुख भोगनाचाहिये व ज्ञानसे अधि कपदवीहै जिसभक्ति व भजनकेप्रतापसे मैं ब्रह्माकापुत्रहुआ वह कथासुनो पिछले महाकल्पमें हमउपवर्हणानाम गन्धर्व्व महासु न्दर उत्पन्नहोकर गानाअच्छाजानतेथे व अतिसुन्दर होनेसे अ नेकस्त्रियां मुझेचाहतीथीं सो मैंभी उनपरमोहितरहकर उनकेसा थभोग व विलासकरताथा सो एकदिन मैं बीचसभा विश्वसर्ज्ज देवताकेजाकरगानेलगा परचित्तमेरा एकस्त्रीसे उनदिनोंमें बहुत फँसाथा इसलिये उससमयगानामेरा नहीं बनपड़ा व अंगिराऋ षीश्वरका कुरूपदेखकर मैंनेहँसदिया इसीअपराधसे उसदेवताने मुझे शापदेकरकहा तू शूद्रहोजा उसीशापसे मैं दूसरेजन्म एक ब्राह्मणकी दासीकापुत्रहुआ वहापरसत्संग व हरिभजन करनेके प्रतापसे फिरमुझेनारदपदवीमिली सो हेयुधिष्ठिरतुमबड़ेभाग्यमा नहो जिनकानाम लेने व भजनकरनेसे मनुष्यकृतार्थहोकर ऐसी पदवीको पहुँचता है वहीश्रीकृष्णजी परब्रह्मपरमेश्वर दिनरातु म्हारेसम्मुखरहकर तुम्हेंअपना बड़ाजानतेहैं ऐसाभाग्यदूसरेका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होना अतिदुर्लभहै व हमलोग ऋषीश्वर देवतादिक भी उन्हें
कादर्शनकरनेवास्ते तुम्हारेपासआयाकरते हैं सो श्यामसुन्दरके
दर्शन व पूजाकरनेसे तुम्हारीमुक्तिहोनेमेंकुछसंदेहनहींहै यहवच
नसुनतेहीराजायुधिष्ठिर व अर्जुनने श्रीकृष्णजीकेप्रेममेंडूबकर
ड़ाशोचकरकेमनमें कहा देखो परमेश्वरत्रिलोकीनाथकोहमने
अपनाभाई जानकरउनसे नातेदारोंके समान कामलिया जबपै
साबिचारकर दोनोंभाईश्यामसुन्दरके चरणोंपर शिररखकरने
नेलगे तबश्यामसुन्दरने सैनमें नारदमुनिसे कहा कि तुमनेकिस
वास्ते मेराभेदखोलदिया अबयहलोग नातेदारीकी प्रीतिछोड़
कर मुझेईश्वरभावसमझेंगे नारदजीबोले हेदीनानाथ आजतक
यहलोग तुम्हारीमायामें लपटेथे अबइनका मोहछुड़ाकर इन्हें
कृतार्थकीजिये इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले हेपरीक्षित
यहसब महिमा व बड़ाई श्यामसुन्दरकी सुनतेही राजायुधिष्ठिर
ने अतिप्रसन्नहोकरबड़ेप्रेमसे श्रीकृष्णजी व नारदमुनिकी विधि
पूर्वकपूजाकी व उसीदिन से युधिष्ठिर श्यामसुन्दरको पूर्णब्रह्म
जानकर उनकाध्यान व स्मरण करनेलगे व नारदमुनि वहां से
ब्रह्मलोकको चलेगये ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीमद्भागवत महापुराण

आठवां स्कन्ध ॥

परमेश्वरको हरिअवतार लेकर हाथीका प्राण बचाना व बामन अवतार धरकर राजाबलिसे तीनपग पृथ्वी दानलेना ॥

पहिला अध्याय ॥

शुकदेवजी का मन्वन्तरों की कथा कहना ॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकरबोले हे शुकदेवस्वामी राजा स्वायम्भुवमनुके बंशकाहाल मैंनेसुना अब मन्वन्तरोंकानाम व जिस २ मन्वन्तरमें परमेश्वरने जो २ अवतारलियेथे उनकीकथा सुना चाहताहूं सो कहिये शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित स्वायम्भुव मनुसेलेकर आजतक छः मन्वन्तरबीतेहैं सो पहिले मन्वन्तरकी कथा जिसमें वहीस्वायम्भुवमनु राजाहोकरदोपुत्र व तीनकन्या उत्पन्नाकियेथे तीसरे व चौथे व पांचवेंस्कन्धमें तुमसे वर्णान कर चुकेहैं उन्होंनेतीसरीकन्या आकूतीनामजोरुचिप्रजापतिकोव्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हीगईथीउसीमन्वंतरसे यज्ञभगवान्ने अवतारलिया सोएकसम
य राजास्वायम्भुवमनु सुभद्रानदीकेतटपर एकपगसे खड़ेहोक
तपकरतेथे उससमयराक्षसोंने आनकर उनकेतपमें विघ्नकरना
चाहा तबउन्हींयज्ञभगवान्ने राक्षसोंकेहाथसे स्वायम्भुवमनुको
बचाकर तीनोंलोककी लक्ष्मीसमेतराज्यभोगा यहसबकथापहि
लेमन्वन्तरकीहै दूसरा स्वारोचिषनाममनु अग्निकापुत्रहुआ उ
समेंदेवताआदिक मनुकेबेटे व रोचननामइन्द्र व तुषिताआदिक
देवता व उरजस्तम्भआदिक सप्तऋषिहुये व सिरसऋषीश्वरके
हां विभवनाम परमेश्वरने अवतारलेकर अट्ठासीहज़ार ऋषीश्व
रोंको ज्ञानउपदेशकिया तीसराउत्तमनाममनुराजा प्रियव्रतका
पुत्रहुआ उसमेंपवनआदिक मनुकेबेटे व सत्यजितनामइन्द्र व
सत्यआदिकदेवता व परमेश्वरआदिकसप्तऋषिहुये व धर्मकी सु
नीथा स्त्री सत्यसेननामपरमेश्वरनेअवतारलेकरपापी व दुष्टोंका
नाशकरके सत्यकोस्थिरकिया चौथातामसनाममनुउत्तमकाभा
ईहुआ उसमें पृथुआदि मनुकेबेटे व विसखनामइन्द्र व सत्यक
आदिदेवता व ज्योतिधर्मआदिक सप्तऋषिभये व हरिमेधाऋषी
श्वरके यहां हरिनामपरमेश्वरने अवतारलेकर ग्राहसे गजेंद्रको
छुड़ाया इतनीकथा सुनकर परीक्षित ने विनय किया महाराज
जिसतरहपरमेश्वरने गजकोग्राहसे छुड़यायाथा उसकी कथावर्ण
न कीजिये ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरा अध्याय॥

शुकदेवजी का गजेंद्र व ग्राहकी कथा कहना॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित परमेश्वर अविनाशीपुरुष जन्म लेने व मरनेसेरहितहैं ब्रह्माआदिक देवताभी उनकेआदि व अंत को न जानकरनिरङ्काररूप उनकाप्रकटनहीं देखनेसक्तेजबकभी हरिभक्तोंपर दुःखपड़ताहै तबवहअपने भक्तकी रक्षाकरनेवास्ते सगुणअवतारलेकर संसारमें एकनामअपना प्रकटकरदेतेहैं उसी तरह हाथीका प्राणबचनेवास्तेभी हरिने अवतारधारणकियाथा व कथा उसकी इसतरहपर है एकपर्व्वत त्रिकूटनाम दशहजार योजनलम्बा व चौंड़ा व ऊंचा क्षीरसमुद्रके मध्यमें होकर तीन शिखर सोने व चांदी व लोहेके रखताथा व उसशिखरमें अनेक रंगके उत्तमरत्न ऐसे जड़ेथे कि जिसकाप्रकाश सूर्यसे अधिकथा व उसपहाड़परदेवता व गन्धर्व्वादिक अपनी२स्त्रियोंसमेतरहकर विहारकरतेथे और वहां संगमरमरके कुण्डबनेरहकर अनेकरंग केपक्षीमीठे २ शब्दबोलतेथे व ऐसेउत्तमबगीचे अनेकरंगकेपुष्प व फललगेहुये वहांबनेथे जिसकेदेखनेसे मनसबका मोहिजाता था व योजनपर्य्यन्त उनपुष्पोंकीसुगन्ध उड़तीथी वहांपर एकता लाब बहुतबड़ा कमलफूलाहुआ होकर उसमें कच्छ मच्छ व ग्राहादिकरहतेथे सो एकदिनगजेन्द्र सबहाथियोंकाराजा जोउस पर्वतपररहताथा जेठमहीनेमें दोपहरकेसमयप्यासाहोकर हजार हथिनी व कईहजारबच्चोंको साथलिये उसतालाबपर जलपीने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वास्तेचला सो मदबहनेसे चारोंओरउसके भँवरेगूंजतेथे जबकह
अपने उमंगसे कि दशहजारहाथीका बलरखताथा रास्तेमेंझूम
ता व वृक्षोंकोगिराता व पत्तोंकोखाताहुआ तपनकामारा ताला
बमेंजाकरघुसा व जलपीके अपनीहथिनी व बच्चोंको शूंड़सेपानी
पिलाकर उनकेसाथकलोल करनेलगा तबउसकेउद्धारकासमय
निकटपहुंचनेसे एकग्राहने जो उससेभीबलवान् था आनकरहा
थीकापिछलापैर जलकेभीतरपकड़लिया सो हाथी व ग्राहसे यु
द्धहोनेलगा कभीगजेंद्रअपनेबलसे ग्राहको खींचकरसूखे में ले
आता व कभीग्राहउसकोखींचकर पानीमेंलेजाताथाजबइसीतर
हउनदोनोंकोलड़ते २ हजारबर्षबीतगये व कोई हथिनी व बच्चा
अपने २ परिश्रमकरनेपरभी गजेंद्रको ग्राहसेछुड़ानेनहींसका त
बअधीर्यहोकरउन्होंनेसमझा कि अबहाथीजीतानहींबचेगा इस
केसाथहमलोग अपनाप्राणक्योंदेवें जबऐसाविचारकरहाथीको
वहांअकेलाछोड़कर बनमेंचलेगये तबगजेंद्रने जिसकाप्राणकंठ
मेंआलगाथा उन्हींकेचलेजानेसे घबराकरविचारकियादेखोइस
महादुःखमें कोईमेरासाथी न होकरहथिनी व बच्चोंनेभी मुझेअ
केलाछोड़दिया व उनकीसहायतासे भी कुछगुणनहुआ इससे
मैंनेजाना कि मेरेपूर्वजन्मकेपापोंने ग्राहरूपहोकरमेरापैरपकड़ा
है जैसाकर्म मैंने कियाथा वैसाफल भोगताहूं और यहसबदेवता
व गन्धर्व्वादिक अपने २ विमानपर बैठेहुयेमेरेयुद्धका कौतुक दे
खतेहैं इनमेंसेभीकोई मेराप्राणनहींबचाता इसलिये मैं बीचशर
ण उसपरब्रह्मके जो कालकोआदिले सबकेमालिकहैं जाऊं तो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेराप्राणबचे ऐसाविचारकरहाथी नारायणजीके चरणोंकाध्यानसच्चे मन से करने लगा॥

तीसरा अध्याय॥

गजेंद्र का परब्रह्म की स्तुति करना॥

शुकदेवजीबोले कि हेपरीक्षित उससमयगजेंद्रने पूर्वजन्मके पुण्यसे परमेश्वरकोध्यानमें नमस्कारकरके कहा मैं उन भगवान्‌कीशरणहूं कि जिनकीकृपासे संसारीजीव चैतन्य होतेहैं और जीवोंकीजड़वही हैं व साराजगत्‌उन्हींसे उत्पन्नहोकर उनकेआश्रयपररहताहै और वहपरमेश्वर महाप्रलयमेंभी नाश न होकर सदास्थिररहते हैं जिसतरहबालक नट व भानमतीकेखेलवाड़को नहींपहिंचानते उसीतरहब्रह्मादिक देवताभी उनके आदि व अंत को नहींजानते जैसे अग्निकीचिनगारीउड़ती हैं औरसूर्यकाप्रकाश छिद्रमेंसे रजकेसमानदिखलाईदेताहै वैसेजिनपरब्रह्मके सामने देवतालोगचिनगारी व रजतुल्यहैं मैंउन्हींपरमेश्वरको दण्डवत्‌करताहूं व जिनकेबहुतसेनाम व स्वरूपहोकर प्रकटमेंकोईरूपउनका दिखलाईनहींदेता और वहआपमुक्तरूप होकर सबकार्यकरते हैं उनको मैंनमस्कारकरताहूं जिसपरमेश्वरके शरणागत मेरेऐसापशुगया व जोअविनाशीपुरुष मुझेइसफंदेसे छुड़ानेव अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारोंपदार्थ देनेवाले हैं उन्हें स्त्री व पुरुष व नपुंसक न कहनाचाहिये व सबजीवोंमेंउन्हींका तेजरहताहै ऐसे सबजगत् व्यापकरामके मैंशरणहूं जो परमेश्वरसबगुणोंसे भरे रहकरयोगीश्वरोंकोयोग व तपकरनेकाफलदेते हैं वहीदीनानाथ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इससमयमेरीरक्षाकरैं सिवायउनके अबमैं किसीकाभरोसा नहीं
रखता हेदीनदयालुमहाप्रभू मैंइसग्राहके मुंहसेछूटनेको यह स्तु
ति नहींकरता मायारूपी संसारीजालसे निकलनेवास्ते यह कह
ताहूं इसलियेमुझदीनपर दयालुहोकर मेरादुःख दूरकीजिये व
हेपरब्रह्मपरमेश्वर तीनोंलोककेउत्पन्न व पालन व नाशकरनेवा
ले सिवायतुम्हारे दूसराकोई ऐसीसामर्थ्य नहींरखता जो दीनों
कादुःखछुड़ानेसकै व हेजगद्गुरु जबतकमनुष्यअपनी सामर्थ्य व
परिवारवालोंकाबल आपरखताहै तबतकउसकीकुछइच्छापूर्ण न
हींहोती सो मैंभी तुम्हारीमायामें लपटकरअपनीहाथिनी वबच्चों
का भरोसारखनेसे इसदुर्दशाको पहुंचा अबउनकाआसराछोड़
कर तुम्हारीशरणआया सोहेदीनदयालु मुझेअपनेमरनेका कुछ
भय न होकर केवलइसबातका अतिशोचहै कि संसारीलोगऐसा
कहैंगे किगजेंद्रकादुःख नारायणजीके शरणजानेसेभी नहींछूटा
इसबातकी लज्जारखकर मेराकष्टदूरकीजिये नहींतोतुम्हारी श
रणमें कोई न जावेगा आपअन्तर्यामीसे अधिककयाविनतीकरूं
हेपरीक्षित यहस्तुतिसुनतेही परमेश्वरअन्तर्यामी हरिअवतारमें
गजेंद्रको महादुःखीजानकर उसीसमयसुदर्शनचक्रअपना उठा
लिया व गरुड़परबैठकर वैकुंठसेचले जबगजेंद्रने जिसकेकण्ठमें
प्राणआगयाथा देखा कि वैकुण्ठनाथ सुदर्शनचक्रहाथमें लिये
गरुड़परचढ़े आकाशमार्गसे मेरीरक्षाकरनेको चलेआते हैं तब उ
सने एकपुष्पकमलका शूंड़सेतोड़लिया और ऊंचेउठाकरपुकारा
हे नारायण हे जगद्गुरु हे दीनानाथ हे भगवन्त हे दुःखभंजन हे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करनारदमुनिके वचनअनुसारकहताहूं यहबातसुनकर लड़कोंने कहा हेप्रह्लाद अभीहमलोग बालकहैं वृद्धापनमें परमेश्वरका भजन व स्मरणकरलेवैंगे तबप्रह्लादबोले सुनोइन्द्रियों को सब योनिमें सुखमिलताहै और परमेश्वरका भजन दूसरेतन में नहीं होसक्ता जो तुमयहसमझतेहो कि इसजन्ममें संसारीसुख भोग करलेवैं फिरमनुष्यतनपाकर हरिभजनकरैंगे सो मनुष्यचोलाबा रम्बार मिलनादुर्लभहोकर दुःख व सुखपूर्वजन्मोंके संस्कार से मिलताहै व संसारीसुख थोड़ेदिनरहकर हरिभजनकरनेसे महाप्र लयतक अ[illegible]कारकेआनन्द प्राप्तहोते हैं जिसतरहआंधीवृक्ष व पत्तोंक[illegible]नेजातीहै उसीतरहतुम्हारेदादा व परदादाआदिक [illegible]रूपीआंधी मारकरउड़ालेगई व एकदिनतुम्हारी [illegible]ी जबमायारूपीजालमें फँसगयातब उससे निक[illegible] [illegible]ा तुमलोगभी जबस्त्री व पुत्रकेमोहमें फँसजावोगे [illegible]काभजनतुमसेनहींहोगा जिसतरहगायभैंसआदिक [illegible]रनेकेलालचसे कुयें व मड़ारमें गिरकरचोटखाती हैं [illegible]नुष्यमायारूपी अन्धकूपमेंगिरनेसे दुःखपाताहै जो [illegible]मोह छोड़कर हरिचरणोंमेंप्रेमलगावै वहमायारूपी [illegible]यसे बाहरनिकलसक्ताहै संसारीसुख कांचकेसमानजानकर ह [illegible]रिभजन व भक्तिकरनेसे पारसपत्थर ऐसाआनन्दसमझनाचाहि [illegible] वहबातसुनकरलड़कोंने प्रह्लादसेपूंछा कि तुम्हैंनारदजीकहां [illegible]मलेथे सो बतलाओ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सातवां अध्याय ॥

प्रह्लादका उपदेश लड़कों को मानना ॥

नारदजीबोले कि हेयुधिष्ठिर उनबालकोंकीबातसुनकर प्र
लादनेकहा कि जबहिरण्याक्ष हमारेचाचाको वाराहजीनेमार
ला व हिरण्यकशिपु मेरापिता तपकरनेवास्ते मन्दराचल पर
परचलागया तबइन्द्रनेअवसरपाकर नमुचिआदिक दैत्योंको
द्धमें अपनेबलसेमारकेभगादिया व दैत्योंकी स्त्रियोंकोपकड़क
देवलोकमेंलेचला जबरास्तेमें नारदजीसेभेंटहुई तबउन्होंनेइन्
सेकहा कि तुम इनसबस्त्रियोंको क्यों लियेजातहो इनने बोले ह
निनाथ दैत्योंनेभी हमाराराज्यछीनकर हमें अ आस दिया
इसीवास्ते हमभी अपनाबदला उनसेलेतेहैं अ नेमरनेको कर
रदमुनिबोले हेइन्द्र इनस्त्रियोंमें हिरण्यकशिपु संसारीलोग जिस
गर्भमेंप्रह्लादहैं तू छोड़दे प्रह्लादहरिभक्तहोकर देभी नहींछूटा
ताकरैगा तबइन्द्रनेउसे नारदमुनिको सौंपदिया व मुभुम्हारी श
भक्तसुनकरउसकीपरिक्रमाकरके न्द्रलोकको चला नतीकरू
जीनेमेरीमाताकोब्राह्मण व ऋषीश्वरोंकेस्थानपरजहअ
प व स्मरणकरतेथे लाकररक्खा सोवही ऋषीश्वर
कर उसकीरक्षाकरतेथे जबकभीमेरीमाता अपनेस्वामी व परि
रको यादकरके रोतीथी तबनारदमुनिआदिक ऋषीश्वरउसेअ
कज्ञानसमझाकर कहतेथे कि हे कायाधू तू चिन्तामतकर संसा
मेंकभीदुःखहोताहै कभीसुखसोतू संतोषरख कुछदिनोंमेंहिरण
कशिपु तेरापतिमन्दराचलसे आनकरतीनोंलोकका राज्यकरैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर अपनीस्त्रीसेकहा रुक्मवतीन... गजमतंग आगेकरे। कृतबम... दन्त ॥ तुरंग ॥
गीगईहै ...यहां न बिवाहकर स्वयंबरउसकारचूंगा त्रिशूल वभु
कर रुक्मिणी मेरीबहिनको उसकेबेटोंसमेतबुलाभे... दैत्यसंहार
नतेहीउसनेपत्रीलिखकर ब्राह्मणकेहाथ रुक्मिणी... खझलाकर
सो रुक्मिणीजी यहसमाचारपातेही बसुदेवनन्दनसे... कारकरबो
प्रद्युम्नसमेतभोजकटनगरमेंगई सोरुक्म अपनीबहि... कीतलवा
अतिप्रसन्नहुआ पर उसनेपिछलीबात यादकरके ल... न व गरुड़
अपनानीचाकरलिया व उसकीस्त्रीनेपैरोंपरशिररख... देखा तब
सेकहा जबसेमेराननदोई तुम्हैं हरलेगया तबसे आ... बनबिहारी
नपायासोतुम हमारेऊपर कृपाकरके प्रद्युम्नकाबिवाह... पुकारकर
करोयहसुनकर रुक्मिणीबोली भैयाकाहालतुमको... नकलतेही
र क्याझगड़ाकराओगी ऐसीबातकहते व सुनतेमुझे... रादिया ॥
ताहै जबरुक्मने यहवृत्तान्तअपनीस्त्रीसे सुना त... ॥
बोला हेबहिनअबतुमकुछमतडरो वेदकीआज्ञा... ॥
कन्यादानदेतेहैं इसलिये रुक्मवतीकाबिवाह ... ॥
कृष्णजीकेसाथ नईनातेदारीकरूंगा जिसमें पि... महादेवआदिक
जबयहबातकहकर रुक्म्यग्रज अपनीसभामें ज... पृथ्वीकाअवता
उत्तम २ भूषण व बस्त्रपहिनेस्वयंबरकरनेआयेथे... श्यामसुन्दरने
म्नभी अपनीमातासेआज्ञालेकर वहांजाकेखड़... सुरमरगया तब
... साथलेके द्वा
...कानाथकेपासआई व छत्र व कुण्डल जोभौमासुर इन्द्रलोकसे
...नलेआयाथा व बहुतसेरत्नादिक उन्हेंभेंटदेकर शिरअपना ह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्युम्नरा ... कर यहांसेचले तबराहमेंछी
छासे सबराजाद्वारकाके रास्तेपरजाख ... ये व रुक्म
रुक्मवतीको प्रद्युम्नसेब्याहकर बहुतसाद्रव्य व रत्न
देया जबरुक्मिणीजी अपनेभाई व भौजाइयोंसे
व पतोहूसमेत द्वारकाकोचलीं व राहमेंउनसबराज
रलिया तबप्रद्युम्ननेबाणमारकर क्षणभरमेंसबराज
ा जबरुक्मिणीजीदुल्लह व दुलहिनकोसाथलियेहु
क द्वारकामेंपहुँचीं तबबसुदेव व देवकीआदिकरीति
दुल्लह व दुलहिनको राजमन्दिरमेंलिवालेगये व
ाचारहोनेलगा जबकईबर्षउपरांत प्रद्युम्नके रुक्मव
कलड़कामहासुन्दर व तेजस्वीउत्पन्नहुआ तबश्या
गलाचारमनाकर मुखमांगादान व दक्षिणाब्राह्मण
ा व ज्योतिषियोंकोबुलाकर जन्मलग्नउसका पू
उसबालककानाम अनिरुद्धरखकरकहा महा
सुन्दर व बलवान् व चौदहोंविद्यानिधानहोगा
सुदेवनन्दनने ज्योतिषियों को सन्मानपूर्व्वक
हबालकप्रतिदिन चन्द्रकलासाबढ़नेलगा जब
ुना कि मेरेनातीउत्पन्नहुआ तबउसनेबड़ेहर्ष
जकर ऐसीचिट्ठीश्रीकृष्णजीकोलिखी कि मैंअ

नारदजी
लादनेकहा
ला व हिरण्य
परचलागय
द्धमें अपने
देवलोकमेंल
सेकहा कि तु
निनाथ दैत्य
इसीवास्ते ह
रदमुनिबोले
गर्भमेंप्रह्लादहै
ताकरैगा तबइन्द्र
भक्तसुनकरउसक
जीनेमेरीमाताक
प व स्मरणकरते
कर उसकीरक्षा
रको यादकरके
कज्ञानसमझाव
मेंकभीदुःखहोताहै कभीसुखसोतू संतोषरख कुछदिनोंमेंहिरण्य
कशिपु तेरापतिमन्दराचलसे आनकरतीनोंलोककाराज्यकरै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ० तबीचल्यो अतिकोपके असुरमहाबलवन्त। गजमतंग आगेकरे जिनके लम्बे दन्त॥
योधनेबहुत हते तहां भौमासुरके संग। कोउहस्ती कोउ रथन में कोऊचढ़े तुरंग॥

जबनरकासुरत्रिभुवनपतिकेसामनेआनकरगदा व त्रिशूल व भुशुंडीआदिक अनेकतरहके शस्त्रउनपरचलानेलगा व दैत्यसंहार सुदर्शनचक्रसे उसकेशस्त्रकाटनेलगेतबभौमासुरनेखिझलाकर एकतलवार मुरलीमनोहरपरबड़ेवेगसेचलाई व ललकारकरबोला आजतुममेरेहाथसेजीतेबचकरनहींजासकेजबउसकीतलवा सेभी कुछकामनहींकिया व सबसेनाउसकीदैत्यसंहारन व गरुड़ जीने क्षणभरमेंमारडाली और उसनेअपनेकोअकेलादेखा तब वह अपनेघरसेएकबड़ाभारी त्रिशूललेकर फिरवृन्दाबनबिहारी परमारनेझपटा उससमयसत्यभामाने श्यामसुन्दरसेपुकारकर कहा इसपापीकोमारडालो इतनीबात उसकेमुखसे निकलतेही मुदेवनन्दनने शिरउसका सुदर्शनचक्रसे काटकरगिरादिया॥

चौ० कुंडल मुकुट सहित शिरपर्‌यो। धड़के गिरत शेष थरथर्‌यो॥
तिहूं लोकमें आनँद भये। दुख चिन्ता सबही के गये॥
ताहिज्योतिहरिमुखहिसमानी। जयजय शब्दकरैं सुरज्ञानी॥
चढ़े बिमान पुष्प बरसावैं। वेद बखान देव यश गावैं॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन्महादेवआदिक का वरदान सत्यकरनेवास्ते जबसत्यभामाने जो पृथ्वीकाअवता थी अपनेमुखसे भौमासुरकेमारनेवास्तेकहा तबश्यामसुन्दरने सुदर्शनचक्रसे उसकाशिरकाटलिया जबभौमासुरमरगया तब पृथ्वी उसकीमाता अपनीपतोहू व भगदत्तपोतेको साथलेके द्वा कानाथकेपासआई व छत्र व कुण्डल जोभौमासुर इन्द्रलोकसे छीनलेआयाथा व बहुतसेरत्नादिक उन्हेंभेंटदेकर शिरअपना ह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रिचरणोंपररखदिया व हाथजोड़करविनयकिया हेज्योतिस्व
प भक्तहितकारी तुम्हारीमहिमा व लीलाअपरम्पारहै व आपके
भेद व आदि व अन्तकोईनहींजानसक्ता व तुम अविनाशीपुरु
तीनोंकालके जाननेवाले किसीसे कुछभयनहींरखते व आपके
ता व मनुष्यआदिक तीनोंलोकके उत्पन्नकरनेवालेहैं व आदि
अन्त व मध्यमें केवलतुम्हारा प्रकाशरहताहै व आपअन्तर्या
सबमेंव्यापक व सबसेविलगरहिकर संसारीवस्तुकी कुछचाह
नहींरखते व लक्ष्मीजीतुम्हारीदासीहोकर चरणकमल आपके
आठोंपहर अपनेहृदयमें लगायेरहतीहैं व ब्रह्मादिकदेवता व
बड़ेऋषीश्वर व मुनितुम्हारेचरणोंकाध्यान दिनरात अपनेहृद
मेंरखकरतुम्हैं अपनाउत्पन्न व पालनकरनेवालाजानतेहैं सोमेरी
दण्डवत्उन्हींचरणोंकोपहुँचे जबमहाप्रलयमेंशेषनागकीछाती
परशयनकरतेथे तबआपकीनाभिसे कमलकाफूलनिकला उस
पुष्पसे ब्रह्मानेउत्पन्नहोकर तीनोंलोककीरचनाकीइसलिये
हींभुवनकीजड़आपहोकर सबकामनोरथपूर्णकरते व मट्टी व
व पानी व अग्नि व आकाश पांचोतत्त्व व दशोंइन्द्रियकोप्रक
रकेरजोगुणसेसंसारकीउत्पत्ति व सतागुणसेपालन व तमोगुण
नाशउसकाकरतेहो व गरुड़जीतुम्हारेवाहनहैं व सबकिसीकोबल
व यश आपकीदयासे प्राप्तहोताहै व तुमहरिभक्तोंकी रक्षाकरने
वास्ते संसारमेंमनुष्यरूप अवतारलेकरसबकोसुखदेतेहो जिसमें
संसारीलोग उसरूपकाध्यान व पूजा व नामकास्मरणकरैं व
म्हारेलीलाकीचर्चा आपसमेंरखकर भवसागरपार उतरजावें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

म्हारानिर्गुणरूप किसीकोदिखलाईनहींदेता इसलियेउसरूपसे जोकुछचिह्न व रेखानहींरखता प्रीतिउत्पन्नहोनाकठिनहै संसारीलोग अपनेवर्ण व धर्मकेअनुसार तुम्हारीपूजा कईतरहपरकर के अपनामनोरथपातेहैं जहांतुम्हारीस्तुति शारदादेवी व शेष व महेश व गणेश से नहींहोसकी वहांमुझअज्ञान मट्टीकीपुतली को क्यासामर्थ्यहै जो तुम्हारागुणवर्णनकरनेसकूं परतुम जिस परकृपाकरो वहअवश्य तुम्हैं पहिचानसकाहै सो मेरीदण्डवत् आपको अङ्गीकारहो॥

चौ० जय जय कमल नाथ जलशायी। कमल नयन कमला सुखदायी॥
नाम स्वरूप अनन्त तुम्हारे। गावैं निशिदिन सन्त सुरारे॥
दो० सब देवन के देव तुम कोऊलहै न भेव। तुमहीं जगकरतारहौ माखन प्रभुहरिदेव॥

पृथ्वीने इसीतरहसेबहुतस्तुतिकरके भगदत्तअपनेपोतेकोहरि चरणोंपरगिराकरविनयकियाहेदीनानाथकृपासिन्धुआपनेमुझे यहवरदानदियाथा कि बिनातेरेकहे भौमासुरकोनमारूंगा फिर किसवास्ते आज उसकावधकिया यहबचनसुनतेही केशवमूर्त्ति ने सत्यभामाकीओर सैनबतलाकरकहा यहपृथ्वीकाअवतारहै इसकेकहनेसे मैंनेनरकासुरकोमाराथा जबपृथ्वीनेसत्यभामाको देखा तबलज्जितहोकरबोली हेनाथनिरंजनमेरापुत्र आपको न पहिचानकर अधर्म करनेलगा सोवहअपनेदण्डकोपहुंचा अब उसकेबालकको जोतुम्हारेशरणमेंहै अभयकीजिये जबयहदीन बचनसुनतेही श्यामसुन्दरनेअपनाहाथ भगदत्तकेशिर व पीठ परफेरकर उसेबहुतधैर्यदिया तबभौमासुरकी स्त्री हाथजोड़कर बोली हे जगत्पालक जिसतरहआपनेकृपाकरके अपनादर्शन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमौंदिया उसीतरह अपनचरणोंसे मेराघरपवित्रकीजिये जबवसु
देवनन्दनसच्चीप्रीति उनलोगोंकीदेखकर राजमन्दिरपरगये तब
भगदत्त व उसकीमातानेबड़ेहर्षसे पीतांबरराहमेंबिछावतेहुये वृ
न्दाबनबिहारी व सत्यभामाको अपनेघरलेजाकर जड़ाऊसिंहा
सनपरबैठाला व चरणधोनेउपरांत चरणामृतलेकर विधिपूर्वक
पूजा उनकीकी व सुगन्धादिक उनकेअङ्गमेंलगाकर छत्तीसव्य
जनखिलाये व सुनहलीझारीसेहाथधुलाकरपान व इलायचीदी
व उत्तम२ भूषण व वस्त्रपहिनाकर चमरहिलानेलगी व बड़ेप्रेम
से भगदत्तकीमाताने हाथजोड़करविनयकिया हे बैकुण्ठनाथ
हुत अच्छाहुआ जो आपनेभौमासुरदेवता व हरिभक्तोंकेदुःख
देनेवालेकोमारडाला देखोरावण व कंसादिक जिसकिसीनेपर
मेश्वरसे विरोधकिया उसकाजगत्मेंनाशहुआ अबभगदत्तमेरे
बेटाको अपनासेवकजानिये व सोलहहज़ार एकसौराजकन्या
जो इसकेबापनेबिनाबिवाही इकट्ठीकीहैं उनकोदयाकीराहअंगी
कारकीजिये यहवचनसुनतेही वृन्दाबनबिहारीउसस्थानमेंजहां
पर वहसब श्यामसुन्दरको अपनापतिबनानेवास्ते हरिचरणोंका
ध्यानकरतीथीं चलेगयेतोक्यादेखा कि सबराजकन्यामैलेवस्त्र प
हिनेहुये शोचमेंबैठीहैं जैसे सांवलीसूरतमोहनीमूर्त्तिपर उनकीदृ
ष्टिपड़ीवैसेप्रसन्नहोकर प्राणनाथकेसामने खड़ीहोगईं व हाथजो
ड़करविनयकिया हेद्वारकानाथ हमलोगोंकी छुट्टीयहांसेबिनाआ
पातुम्हारे होना बहुतकठिनहै हेमहाप्रभु जिसतरह आपअन्तर्या
मीपरब्रह्मपरमेश्वरने हमलोग अबला अनाथको दुःखीजानकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपनादर्शनदिया उसीतरहहमदुःखियारियोंको साथलेचलकर
अपनीदासीबनाइये जिसमेंतुम्हारी सेवाकरनेसेहमाराजन्मस्वा
र्थहो यहदीनबचन सुनतेही श्रीकृष्णजीने उनको बहुतधैर्यदेकर
कहा तुमलोगअपने २घरजाओतो वहांतुमकोपहुँचादेवैं उन्होंने
बिनयाकिया कि महाराजअबहमलोगोंको तुम्हाराकमलरूपीच
रणछोड़कर घरजानानहीं अंगीकारहै हमैं अपनीसेवामें रखिये
जबकेशवमूर्त्तिने उनकीसच्चीप्रीतिदेखकर सबराजकन्याओंको
अपनेसाथद्वारकामें लेचलनेकेवास्ते उसमकानसेबाहरनिकाला
व भगदत्तको भौमासुरके सिंहासनपर बैठाकरअपनेहाथ राजति
लकउसेलगाया तबभगदत्तने अनेकरत्न व रथ व घोड़े व साठि
हाथीश्वेतवर्ण चारदांतवाले जो ऐरावतकेवंशमेंथे श्यामसुन्दर
कोभेंटदिये व उनसबराजकन्याओंको उबटनमलवाने व स्नान
कराने उपरांतउत्तम २ भूषण व वस्त्रपहिनाये व पालकी व सुख
पाल आदिकपर चढ़ाकर मुरलीमनोहरकेसाथ अपनी सेनास
मेतबिदाकिया जिससमय वृन्दाबनबिहारी सोलहहज़ार एकसौ
राजकन्याओंको जड़ाऊपालकी व सुखपाल व रथआदिक पर
साथ लेकर द्वारकाकोचले उससमय ऐसीशोभा मोहनप्यारे
की मालूमहोतीथी जैसे तारोंमें चन्द्रमासुन्दर दिखलाईदेताहै
श्यामसुन्दरने सबराजकन्याओं को सेनासमेत द्वारकापुरी में
भेजदिया व आपसत्यभामाको गरुड़पर बैठाले और वहीछत्र
व कुण्डललियेहुये इन्द्रपुरीको चलेगये जबइन्द्रने जो भौमासु
रके मारेजानेकासमाचारसुनकर आनन्दमचारहाथा हालआव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने मुरलीमनोहरकासुना तबउसनेदेवतोंसमेत आगेसेजाकरशि
अपनाहरिचरणोंपर रखदिया व वसुदेवनन्दनको बड़ेआदरमा
से अपनेघरलेजाकर इन्द्रासनपर बैठाला व चरणाउनकाधोक
चरणामृतलिया व विधिपूर्वक पूजाउनकीकी ॥

दो० हाथजोड़ विनती करै धरैचरण परमाथ। हरिदासनकेदासहौ तुमनाथनके नाथ॥

इन्द्रकेस्तुतिकरनेसे बैकुण्ठनाथनेप्रसन्नहोकर छत्र व कुण्ड
लइन्द्र व अदितिकादेदियाजबयहहालसुनकर नारदजीइन्द्रपुरी
मेंश्यामसुन्दरकेपासआये तबमुरलीमनोहरने नारदमुनिकोदंड
वत्करकेकहा महाराजतुमजाकर इन्द्रसेकहो किसत्यभामातुम
से कल्पवृक्षमांगतीहैं जैसावहकहैं वैसाहमकोआनकर उत्तरदे
यहवचनसुनतेही नारदमुनिने इन्द्रकेपासजाकर कहासत्यभा
मातुम्हारी भौजाईने कल्पवृक्षमांगाहै यहवचनसुनकर इन्द्रचुप
होरहा व उसनेजाकर अपनीस्त्रीसे यहहालकहा तबइन्द्राणीक्रो
धितहोकर अपनेपतिसेबोली तुम्हैंयहबातयादहै यानहीं किइसी
कृष्णने ब्रजमेंतुम्हारीपूजाछुड़ाकर ब्रजवासियोंसे गोवर्द्धनपहाड़
पुजवाया व छलकरकेसबपकवानव मिठाईआपखायावसातादिन
वसातरात्रिगोवर्द्धनपर्वत उठाकरतुम्हाराअभिमानतोड़ाथा तुम्हें
उसबातकीलज्जाहै यानहींदेखोवहअपनी स्त्रीकीआज्ञामानकर
यहां कल्पवृक्षलेनेआयाहै. और तुममेराकहना कुछनहींमानत
यहवचनअपनी स्त्रीकासुनतेही इन्द्रअज्ञान नारदजीकेपासआन
करबोला महाराज तुमश्यामसुन्दरसे मेरीओरसेजाकरकहिदो
किकल्पवृक्षनन्दन बागछोडकर दसरीजगहजानेनहींसक्ता कदा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चित् लेजावेंगे तो किसीतरह न रहैगा औरयहभी उनसेकहदेना कि ब्रजकासाविरोधमुझसे न करैं बरजोरी कल्पवृक्ष लेजावेंगे तो मेराउनका बड़ायुद्धहोगा जबनारदमुनिनेआनकर यहसंदेशा के शवमूर्त्तिसेकहा तबगर्ब्बप्रहारी भगवान्ने उसीसमय नन्दनबाग मेंजाकर रखवारोंकोमारकर भगादिया व कल्पवृक्षजिसे पारिजा तकभीकहतेहैं नन्दनबागसे उखाड़लिया व गरुड़कीपीठपर रख कर द्वारकाको चलेआये जबइन्द्र कल्पवृक्षलेजानेका हालसुन कर बड़े क्रो[illegible]ो ऐरावतहाथीपरचढ़ा व वज्रहाथमेंलेकर देवतों समेत दैत्यसं[illegible]रनसे लड़नेचला तबनारदमुनिने उसकेपास जा करकहा हेइन्द्र तू बड़ामूर्खहै जो अपनीस्त्रीकेकहनेपर वैकुंठनाथ से लड़नेको तैयार[illegible]रहुआ तुझे कुछलज्जानहींआवती जो ऐसीसा मर्थ्यथी तो भौमासुरसे छत्र व कुण्डल क्योंनहीं फेरलाया जब वृन्दाबनबिहारी परब्रह्मपरमेश्वरने तेरेविनयकरने से नरकासुर को मारकर छत्र व कुण्डलतेरा लेआदिया तब तू उन्हींको अप नाबलदिखलानेचला वहादिनतुम्हैं भूलगया जो वृन्दाबनमें श्री कृष्णजीके पावँपर गिरकर अपनाअपराध उनसे क्षमाकराया था यहवचनसुनतेही इन्द्रलज्जितहोकरहाथीपरसे उतरपड़ा व युद्धकरने नहींगया श्यामसुन्दरने आनन्दपूर्वक द्वारकापुरीमें पहुँचकर कल्पवृक्ष सत्यभामाके आँगनमें लगादिया व राजा उग्रसेन से आज्ञालेकर सोलहहज़ार एकसौ राजकन्याओं से विधिपूर्वक अपना बिवाह किया व उनसबको पृथक् २ म हलजो बागमें विश्वकर्माने तैयारकिये थे रक्खा और आप उ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तने रूपधरकर उनके साथ मिलग २ संसारीसुख उठाने लगे॥

दो० तिनसोंहरिजू प्रीतिकर अमृतबैनसुनाय। प्रेमरीतिसमुझायके दीन्हींलाजछुड़ाय॥

वहलोगआठोंपहर प्राणनाथको अपनेपासदेखकर एकदूसरीसे डाहनहींकरतीथीं व सबस्त्रियोंकेघरमें सैकड़ोंदासीथीं तिसपरभी उनलोगोंकायहप्रणथा कि प्रातसमय श्यामसुन्दरकाचरणोदकलेकर अपनेहाथसबसेवा व टहलउनकी करतीथीं जिसमयमोहनप्यारे फुलेललगाने व स्नानवपूजाकरनेउपरांतछत्तीसव्यंजनसोनहलीथालियोंमें भोजनकरतेथे उससमय सबरानियांपंखाहिलातीथीं व जड़ाऊगडुयेसे हाथधुलाकर फूल व इलायची देतीथीं औरजब शय्यापरशयनकरतेथे तब उनकेपावँ दाबतीथीं पर बैकुण्ठनाथ जोकुछ इच्छा न रखकर सबजगत्को अपने अधीनरखतेहैं किसीस्त्रीके बशनहींहोतेथे व उनस्त्रियोंकीसुन्दरताईकाहाल कोईवर्णन नहींकरसक्ता वहऐसीसुन्दरीथीं जिनकेसामनेसूर्य्य व चन्द्रमाकातेज धूमिलहोजाताथा एकदिनमहादेवजीने द्वारकापुरीमेंजाकर उनस्त्रियोंकोदेखा तो कामदेवकेजलादेनेपरभी उनकारूप देखकर मोहितहोगये॥

दो० ऐसी सुन्दरिनारिसों माखनप्रभु यदुनाथ। कामकलोल करैंसदा खानपान यकसाथ॥

साठवां अध्याय॥

श्यामसुन्दर को रुक्मिणीजीसे ठट्ठाकरना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित एकदिन श्रीकृष्णजी रुक्मिणीके मन्दिरमेंथे व स्थानसोनहुला जड़ाऊ बहुतउत्तम बनाहोकर उसमें मखमलीबिछावनबिछेथे व सबजगह चँदवेबँधेहोकर मो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तियोंकीझालरैं द्वारोंपर लटकाईथीं व पारिजातक फूलके गजरे अनेकजगहलटकाये होकर धूप व चन्दनादिक जलनेसे सुगन्ध उड़तीथी॥

दो० कल्पवृक्षके फूलकी कहिये कहा सुवास। जासों बनउपबन सभी भये सुवास निवास॥

मन्दसुगन्ध शीतलहवाबहनेसे सबकोसुखमिलताथा व नह र व झरनेबहकर मोरनाचतेथे व ऐसे लाल व रत्न वहांजड़े थे जिसके चमकसे आठोंपहर उजियालारहकर दीपकजलानेका प्रयोजननहीं पड़ताथा व उसस्थानमें एकशय्या रत्नजटित सब सामग्रीसमेत बिछीथी व उसके चारोंओर मेवा मिठाई व चौघ ड़ाआदिक रक्खाहोकर उसशय्यापर श्यामसुन्दर लेटेथे उनके भूषण व वस्त्र व रूपकीछबिदेखकर चित्तसबका मोहिजाताथा॥

दो० शोभात्रिभुवननाथकी कासोंबरणीजाय। कामरूपकी छबिमहा वहभी रहै लुभाय॥
चौ० तहां रुक्मिणी सुन्दरि बाला। सभी शृँगार सजे त्यहिकाला॥
अंग अंग भूषण छबि छाजै। महा मधुर स्वर नूपुर बाजै॥
सो ध्वनि सुनि मोहित पुरबासी। मानों लगी काम की फांसी॥
दो० याबिधि सों श्री रुक्मिणी माखनप्रभु के पास। पवनडुलावैप्रेमसों मनमें बहुत हुलास॥

उससमयपरमेश्वरकीमायासे रुक्मिणीको अभिमानहुआ कि बसुदेवनन्दनकी सबस्त्रियोंसे मैं अतिसुन्दरीहूं इसलियेमोह नप्यारे मुझेबहुतचाहतेहैं व बैकुण्ठनाथअन्तर्य्यामीने यहहाल जानकरबिचारा कि रुक्मिणीको क्रोधदिलाकर प्रेमकी परीक्षा लूं किउसको अपनेरूपकाअभिमानहै या मेरीप्रीति अधिक है ऐसाबिचारकरबोले हे रुक्मिणी तुझऐसीसुन्दरी औरराजाभी ष्मककीकन्याहोकर मेरेसाथबिवाहकरना उचितनहींथा बैर व बिवाह व प्रीति बराबरवालेसे करनाचाहिये मैं किसीदेशका तिल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कधारी राजा न होकर जरासन्धकेभयसे भागाहुआ यहांटापू
बसाहूं व जबसे मैंनेजन्मलिया तबसेकोई शुभकर्म नहींकिया
जोकोई मेराभजन व स्मरणकरताहै उसे विरक्त व निर्द्धनकरदे
ताहूं इसलिये मेरेभक्तको संसारीसुखनहींमिलता व मैं किसी के
साथप्रीति न रखकर सबसे अपनामन मोटारखताहूं बालापनमें
याचकोंको कुछद्रव्यादिक दियाकरताथा वही यशसुनकर तैंने
मेरेसाथबिवाहकरके धोखाउठाया व शिशुपाल चंदेलीकेराजा
कोजो तिलकधारी व बलवान्होकर जरासन्धादिकबड़े २राजा
को अपनेसाथ बरातमेंलायाथा अंगीकार नहींकिया॥

दो० रुक्मदई शिशुपालको बांध्यो कंकन हाथ। आयो साजिबरात वह सबराजनले साथ॥

अयरुक्मिणी तुझसेबड़ीचूकहुई जोतैंने राजाशिशुपालको
जिसकेसाथ तेरीमँगनी रुक्म्यग्रजने कीथी छोड़कर मुझगोचरा
नेवालेसे बिवाह अपनाकिया और उत्तम मध्यमका बिचार न
करके अपनेकुलमें कलंकलगाया॥

चौ० कहिये कहा कुबुद्धि तुम्हारी। भलीभांति मनमें न बिचारी॥
रुक्म भ्रात की लाज गँवाई। तात मातको लीक लगाई॥
छांड़ि नृपति मोसों हितकीनो। निर्गुण महाजातिको हीनो॥
याते सच्च बात हम मानी। उलटीबुद्धि त्रियनकी जानी॥
जोतुमकहो लिखो विधि जोई। कर्म प्रमाण होतहै सोई॥

दो० ऐसी झूठी बातको मानै मूरख होय। अपने यश अरु चैनके यत्न करत सब कोय॥

सिवायइसके जिसबातमें लड़कियोंकोलज्जाहै वहतैंनेकिया
कि ब्राह्मणकोपत्रीदेकर अपनेबिवाहका संदेशामेरेपासभेजासच
है स्त्री निर्बुद्धिहोती हैं॥

चौ० जो तुम कहौ हमें क्यों लाये। कौनकाज कुण्डिनपुर आये॥
सांचबात समझो मनमाहीं। तुमसों मोह हमें कछुनाहीं॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धोखाखाया सोतुम्हारीस्तुतिवेद व शास्त्रमेंलिखीहै और ब्रह्मादि कदेवता व नारदमुनिआठोंपहर तुम्हारागुणगायाकरतेहैं वहबड़ा ईसुनकर मैंनेब्राह्मणको तुम्हारेपासभेजाथा सोआपदयालुहोक रइसदासीकोलेआये अबमैंयहीचाहतीहूं कि जन्मजन्मान्तरतु म्हारीदासीहोकर मेराप्रेम व अनुराग आपकेचरणोंमेंबनारहै ॥

दो० पूरणपुरुषपुराणहौ अलख निरंजन नाम। तुम्हरे चरणनको सदा हितसों करौं प्रणाम ॥
तुमतो जानतहौ पिया प्रेमप्रीति की रीति। अन्तर्य्यामी होयके क्यों ठानत अनरीति ॥
दीनदयालु कृपालुहौ बढे तुम्हारो लाल। निठुरवचन कैसेकहेउ माखनप्रभु गोपाल ॥
चाहीबिधि हांसीकरौ निजनारिनके साथ। जैसीतुम हमसेकरी माखनप्रभु ब्रजनाथ ॥

यहसुनकर श्रीकृष्णजीबोले हे प्राणप्यारी तेराप्रेम व बिश्वा सबड़ाहै मैंनेऐसाकठोरवचनकहकर केवल तेरीप्रीतिकीपरीक्षा लीथी सो तेराप्रेमसच्चापाया जिसतरह मेरेनिष्कामभक्तहोते हैं उसीतरह तुझेभीदेखा मेराकठोरवचनसुननेसे रंगतेरापीलाहोग या परअन्तःकरणसेप्रेमनहींघटा सो हे प्राणप्यारी तू अपनीबड़ा ईइसतरहसमझ कि मनुष्यमेरीस्तुतिकरके अपनाजन्मस्वार्थ करते हैं औरमैंतेरागुण इसतरहवर्णनकरताहूं जिससमयमैंनेतेरे भाईकाशिरमुड़वाकर उसकेहाथबँधवायेथे उससमयभी तैंनेसि वायअधीनताईके मुझसेकुछनहींकहा पतिव्रतास्त्रियोंकायहीध र्महै कि अपनेपतिकीआज्ञानुसारचलैं औरमैं तेरीसुन्दरताईसुन कर कुण्डिनपुरनहींगयाथा केवलतेरासच्चाप्रेमदेखकर तुझेले आया अबतूकुछचिन्ता न करके सदाप्रसन्नरहाकर जोकोईयह अध्यायसच्चेमनसेकहै व सुनैगा इसीतरहउसकोभीस्त्री व पुरुषमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रीतिहोगी हे परीक्षित यहवचन श्यामसुन्दरकासुनकर रुक्मिण
हर्षसे उनकीसेवाकरनेलगी ॥

दो० जैसी यहलीलाकरी लाखन प्रभु यदुनाथ । याहीविधि क्रीड़ाकरैं सबनारिनके साथ ॥

इकसठवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी के वंशकी कथा ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित इसीतरहश्रीकृष्णजी द्वारका
पुरीमें सोलहहजार एकसौआठस्त्रीसेभोग व विलासकरके
र्म्म गृहस्थाश्रमका शास्त्रानुसार रखतेथे व सबस्त्रियां पतिव्रत
धर्म्मसे आठोंपहर सेवाउनकी करतीथीं व हरिइच्छासे सबस्त्रियों
के दशदशपुत्र श्यामरङ्ग कमलनयन अतिबलवान् व एकएक
कन्यामहासुन्दरी उत्पन्नहोकरवहसब अपने बालचरित्रकासुख
माता व पिताको दिखलातेथे व उनके माता व पिताउत्तमोत्तम
भूषण व बस्त्रपहिनाकर प्रसन्नहोतेथे सब एकलाख इक्कीसहजार
अस्सीपुत्र व सोलहहजारएकसौ आठकन्या बसुदेवनन्दनके
उत्पन्नहोकर उनकेआगेइतनी सन्तानबढ़ी कि उनकीगिन्ती
नहींहोसक्ती ॥

दो० शोभाआठोंरानियन कासों बरणीजाय । शिवबिरञ्चिसनकादिमुनि देखतरहैं लोभाय ॥

हे परीक्षित सबस्त्रियांआठोंपहर केशवमूर्त्तिको अपनेपास
खकर अतिप्रसन्नहोतीथीं औरउनकी जोसन्तानहुईथीं उनके
नामकहतेहैं सुनो प्रद्युम्नआदिक रुक्मि व भानआदि सत्यभामा
व साम्बआदिक जाम्बवती व सूरतिआदि कालिन्दी व श्रीमा
आदिकसत्या व वरघोषआदिक लक्ष्मणा व बरकआदिक मि
बिन्दा व संग्रामजित्आदिक भद्राकेबेटोंकानामथा व ताम्रके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और मैं न दिनकोमरूं न रातको और न पृथ्वीपरमरूं न आकाशमें व कोईशस्त्रमुझे न लगै और युद्धमेंकोईमेरासामना न करसकै और योग व तपकरनेसे जोसिद्धहोते हैं वहसिद्धाई मुझको होजावै और मैं देवता व दैत्य व मनुष्यादिक सबजीवोंकाराजा होकर मेरे योग व तपकीसामर्थ्य कभी न घटै ॥

चौथा अध्याय ॥

हिरण्यकशिपु को ब्रह्माजी का वरदान देना ॥

नारदजीबोले हे युधिष्ठिर ब्रह्माजीने हिरण्यकशिपुकीबातसुनकरविचारा कि इसदैत्यअधर्मीको ऐसावरदानदेना न चाहिये परमैंनहींदेता तोयहतप करनानहींछोड़ेगा इसवास्तेवरदान दिदेतेहैं फिरनारायणजीकी दयासे यहमाराजावेगा ऐसाविचार कर ब्रह्माजीनेकहा हेहिरण्यकशिपु तैंनेअतिकठिन वरमांगाहै परंतुतेरेतपकेप्रतापसे यहवरदानमैंने तुझकोदिया अबतूसातोंद्वीपका राजाहोगा ऐसाकहकरब्रह्माजी अपनेलोकको चलेगये व हिरण्यकशिपु अतिप्रसन्नहोकर अपनीमाताकेपास आया व वरदानपानेकासमाचार उससेकहकरबोला कि अबमैं सबदेवतोंको मारकरतीनोंलोकका राज्यकरूंगा दितिऐसेवरदानपानेकी वार्ता सुनकर बहुतप्रसन्नहुई व हिरण्यकशिपु अपनेभुजाके बल सबदेवतादैत्य व गन्धर्व व सिद्ध व चारण व किन्नर व ऋषीश्वर व तपस्वी व भूत व प्रेत व पिशाच व प्रजापति व मनु व सातद्वीपकेराजाओंको जीतकर तीनोंलोकका राज्यकरनेलगा जबउसकोयहइच्छाहुई किकोई शूरवीरमिलै तोउससे युद्धकरूं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तबसबदेवते उसकेभयसे भागे और ब्रह्माजीके पासजाकरकहा
महाराज हिरण्यकशिपुने सबराज्यदेवलोककाछीनलिया तिस
परभी दिन रात हमाराप्राणलेनेका गाहकरहता है अबहमलोग
क्याकरैं ब्रह्माजीने उत्तरदिया किइनदैत्योंकीदशा अच्छीहोकर
तुम्हारेदिनखोटे आये हैं इसलियेतुमलोग कहींपर्वतकी कन्दरा
में छिपकर हरिचरणोंकाध्यानस्मरणाकरो जबतुम्हारी सायतअ
च्छीआवैगी तबवहअपनीकरणीको पहुंचकर फिरतुम्हाराराज्य
होगा यहवचनसुनतेही देवतालोग कहींपर्वतकीकन्दरामें छिप
रहे व अपनेदिनकाटकर परमेश्वरकाध्यान करनेलगे जबवहां
हनेसे देवतालोग अतिदुःखीहुये तबक्षीरसमुद्रकेकिनारे जाका
बहुतदीनतासे नारायणजीकीस्तुतिकी उससमयआकाशवाणी
हुई कि हिरण्यकशिपुधर्म व वेद व तुम्हाराविरोधकरचुका जबभ
ह्लादभक्तको वहदुःखदेगा तबमैं उसेमारूंगा यहवचनसुनतेही दे
वते फिरकन्दरामेंआनकर हरिभजनकरनेलगे व हिरण्यकशिपु
आपइन्द्रासनपर बैठकरइन्द्रपुरी व स्वर्गादिककासुख भोगता
था व इन्द्रकीअप्सरा अपना २ नाच उसकोदिखलाकर गन्धर्व
लोग गानासुनातेथे व ऋषीश्वर व तपस्वीआदि उसकेआधीन
रहकरपृथ्वी व समुद्र व पर्वत व वृक्षादिक अनेकतरहकेरत्न व फ
ल व पुष्प हिरण्यकशिपुको भेंटदेतेथे उसकेप्रताप व भयसे व
होंमहीने वृक्षादिकोंमेंफल व पुष्प लगेरहकर घी व दूधकी न
बहनेलगी व हिरण्यकशिपु अपनीमायासे वरुण व कुबेरा
क दशोंदिग्पालका रूपधरकर मद्यपानकिये अप्सरोंसे भोग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भरमें हवाने उनसबलोथोंको बटोरकर एकजगहढेरलगा दिया व अग्निने सबकोजलाकर भस्मकरडाला व मेघनेपानीबरसाक रसबराख व हड्डीआदिक को बहादिया जिनपांचोंतत्त्वोंसे पुतला तैयारहोताहै वहपांचों अपने २ रूपमेंमिलगये उस सेनाकोआते सबनेदेखा फिरकिसीने न जाना कि क्याहोगई जबरणभूमिमें अकेलाजरासन्ध खड़ारहकर बलरामजीसे गदायुद्ध करनेलगा तबबलभद्रने उसकेगलेमें हलडालकर पकड़लिया व उसकाबध करना बिचारकर श्यामसुन्दरसे पूछा आज्ञादीजिये तो इसअ धर्मीको मारडालूं श्रीकृष्णजीनेकहा अभीइसके मारनेकासमय नहींहै भाईमैंने पृथ्वीकाभार उतारने व दैत्य व अधर्मीराजों को मारनेवास्ते अवतार लियाहै सो तुमजरासन्धको जीताछोड़देव यहकईबेर दैत्य व अधर्मीराजोंको बटोरकर मुझसेलड़नेआवैगा तबहम उनसबको मारकर पृथ्वीका भारउतारैंगे जबयहबात सुन कर बलरामजीने जरासन्धकोजीता छोड़दिया तबवह अतिशो चित व लज्जितहोकर अपनेदेशमें पहुँचा उसनेचाहा कि राज गद्दीछोड़कर बनमेंचलाजाऊं इतनेइष्ट व मित्रके मारेजानेका शोच कैसे छूटैगा तबदूसरेराजालोग जो उसके मित्रथे जरासन्ध का हालसुनकर वहांआये व उसे धीर्यदेकर समझाया लड़ाई में जीत व हार सदासे होतीहै इसवास्ते शूर बीरवज्ञानियोंका दोनों बातमें हर्ष व बिषादकरना उचित न होकर धीर्यरखना चाहिये किसवास्ते कि फिरसेना बटोरकर शत्रुसेयुद्धकरना कुछमनानहीं है परमेश्वरकीदयासे कृष्ण व बलरामको यदुबंशियोंसमेत मार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर कंसकेपास भेजदेवंगे यहवचनसुनतेही जरासन्धधीर्यधरका
सेना बटोरनेलगा व श्याम व बलराम अपनीसेनासमेत कि उस
में किसीके घावभी नहींलगाथा आनन्दपूर्वक राजमन्दिरपरआ
ये उससमय देवतोंने दोनोंभाइयोंपर फूलबरसाये ॥

दो० माखन प्रभु या भांतिसों जरासन्धको जीत। आये मथुरानगरमें सबसन्तनके मीत॥

जिससमय श्रीदुःखभंजन भक्तहितकारी नगरमेंपहुँचे उससम
मय सबमथुरावासियोंने बड़ेहर्षसे अपने अपनेघर मंगलाचारम
नाया व ब्राह्मणोंने वेदपढ़ना आरम्भकिया व स्त्रियां कोरेबर्त्तन
में दही सगुनवास्तेलेकर अपनेअपने द्वारेपर खड़ीहोगईं व अने
कस्त्रियां अपनी २ अटारियोंपरसे उनपरफूल बरसानेलगीं इसत
रह श्याम व बलराम सबको आनन्ददेतेहुये राजाउग्रसेनकेपास
जाकर उनकेचरणोंपर गिरपड़े व सबधन लूटका उन्हैंदेकर विन
यकिया हे पृथ्वीनाथ हमने तुम्हारे पुण्य व प्रतापसे शत्रुओं को
मारकर भगादिया अबआनन्दपूर्वक राज्यकरकेप्रजाको सुखदी
जिये यहवचनसुनकर उग्रसेनने सबधन लूटका अपने कोशमें
भेजवादिया व बड़ेहर्षसे राज्यकरनेलगे हे राजन् जबइसीतरह
सत्रहबेर जरासन्धतेईस २ अक्षौहिणीदल साथलेकर मथुरामें
लड़नेवास्ते आया व श्याम व बलरामने वहीगतिउसकीकी तब
जरासन्धने अतिलज्जित व शोचितहोकर मनमेंकहा अबअपने
देशमें जाकर क्या मुखदिखलाऊं उत्तम है कि बनमें तपकरके
किसीदेवताका बरदानलेकर राम व कृष्णसे फिरलड़ूं परमेश्व
की दयासेएकबेरमें कृष्णचन्द्रमेरेसामनेसे युद्धकरतीसमय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गजावें तो मैं उसको बड़ीविजयजानूं जबऐसाविचारकर जरास
न्ध बनकी ओरचला तबपरमेश्वरकी इच्छानुसार नारदमुनिने
राहमें उसे मिलकरपूंछा हेराजन् तुमकिसवास्ते उदासहो जरा
सन्धने दण्डवत्करके विनयकिया महाराज मैं सत्रहवेर श्याम
व बलरामसे युद्धकरतीसमय हारगया इसलिये मारेलज्जाके मु
झसे किसीको अपनामुख नहींदिखलायाजाता जिसमें एकबेर
वहभी मेरेसामनेसे भागजावें तो मेरीइच्छापूर्णहो यहबचनसुन
करनारदजीबोले हे जरासन्ध काबुलमें कालयवन नाम म्लेच्छ
राजा बड़ाबलवान्रहकर अकेलीअकेला युद्धकरनेकीइच्छारख
ताहै सोतुम लड़नेकाउद्यम न छोड़कर उसे अपनीसहायतावास्ते
बुलावो व उसकोसाथलेकर तुमदोनों मनुष्य श्याम व बलराम
से लड़ो तो तुम्हारा मनोरथ मिलैगा यहबचनसुनकर जरासन्ध
ने विनयकिया महाराज काबुलयहांसे बड़ीदूरहै इसलिये दूतसँ
देशालेकर बहुत दिनोंमें पहुँचैगा व आप एकक्षणभरमें पहुँचस
कहैं सो दयालुहोकर मेरीसहायतावास्ते उसेबुलालेआइये तोब
ड़ाउपकारमानूंगा यहदीनबचनसुनकर नारदजी कालयवनके
यहां गये व जरासन्ध अपनी राजगद्दीपरआनकर सेनाबटोरने
लगा जबनारदमुनि क्षणभरमें बीचसभा कालयवनके पहुँचे
तबउसने दण्डवत्करके सन्मानपूर्वक नारदमुनिको अपनेपास
सिंहासनपर बैठाला व हाथजोड़कर विनयकिया हे मुनिनाथजि
सतरह आपनेदयालुहोकर दर्शनादिया उसीतरह कृपाकरके अप
नेआवनेका कारणकहिये नारदमुनिबोले हमकोराजाजरासन्ध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने तुम्हारेपास भेजकर यहसँदेशाकहा है कि मथुरामें श्रीकृष्णाव
बलराम दोनोंभाई बड़ेबलवान् व प्रतापीउत्पन्नहुयेहैं सो सत्रह
बेर मैं उनसेयुद्धकरतीसमय हारगया अबअठारहवींबेर उनकेसा
थयुद्धकरनेवास्ते तुम्हारीसहायता चाहताहूं इसबातका जैसाउ
त्तरदेव वैसाउससे जाकरकहदेउँ व कृष्ण जिनकानामहै वे मेघव
र्ण चन्द्रमुख कमलनयन अतिसुन्दर पीताम्बरपहिने व उपरना
ओढ़रहतेहैंतुमबिनामारेउनकापीछामतछोड़नायहबातसुनतेही
कालयवन जोनाम व प्रतापजरासन्धकापहिलेसेजानताथा बहु
तप्रसन्नहोकर मनमेंकहनेलगा देखो इतनेबड़ेप्रतापी राजानेहम
सेसहायतामांगीहै इसलिये उसकासंगदेनाचाहिये ऐसाविचार
कर कालयवन बोला हेनारदजी आपमेरीओरसेजाकर जरासंध
सेकहदेव कि मैं तुरन्त अपनीसेनासमेत इधरसेमथुराकोपहुँचता
हूं वहजल्दी अपनीसेनालेकर उधरसेमथुरामेंआवैं ऐसाकहकर
कालयवन अपनीसेनासाजनेलगा व नारदजीवहांसे जरासन्ध
केपासआये और यहहाल उससेकहकर ब्रह्मलोकको चलेगये व
कालयवन तीनकरोड़सेनाम्लेच्छोंकी जोबहुतमोटे बड़े२ दांत व
लालआंखवालेभयानकरूपमैले२ कपड़ेपहिनेहुयेथे अपनेसाथ
लेकर मथुराकोचला व थोड़ेदिनोंमेंवहांपहुँचकर अपनीसेनासे
मथुरापुरीकोघेरलिया व राजा जरासन्धभी तेईसअक्षौहिणी स
मेत मथुराकोचला जबमथुरावासी कालयवनकीसेनादेखकर
मारेडरकेकांपनेलगे तबश्यामसुन्दरने द्वारकापुरीबसानाविचार
कर बलरामजीसेकहा अब क्याउपायकरनाचाहिये कालयवन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने अपनीसेनासेनगरकोघेरलिया व जरासन्धभी अपनीसेनास मेत आजकल्हमेंआयाचाहताहै एकसेयुद्धकरताहूं दूसराराजा मथुरापुरीलूटकर प्रजाकोबहुतदुःखदेगा॥

दो० याते एकउपाय यह आयोहै मनमाहिं। इन्हें अवरकहिं राखिकै युद्धकरन हम जाहिं॥

बलरामजीनेकहा जैसाउचितहो वैसाकीजिये यहबचनसुन कर जैसे वृन्दाबनविहारीने समुद्रकोयादकिया वैसेवह उनकेनि कटचलाआया तबमुरलीमनोहरनेसमुद्रसेकहा तुमबारहयोजन पृथ्वी अभीपानीसेखालीकरदेव वहांहम एकपुरीबसावैंगे समुद्र नेउनकीआज्ञानुसार उसीसमयबारहयोजनपृथ्वीपानीसेखाली करदिया तबश्यामसुन्दरने उसीक्षणविश्वकर्माको बुलाकरकहा तुमसमुद्रकेटापूपरइसीसमयएकनगरइसतरहकारचोजिसमेंसब यदुवंशीआदिक मथुराबासीसुखसेरहैं यहआज्ञापावतेही विश्व कर्माने उसीसमयसमुद्रकेटापूमें जाकरएककोटसुनहला बारह योजनकेघेरेमेंबनाया व उसकेभीतर अनेकमंदिरसुनहले बहुत उत्तमबनाकर उनमेंरत्नादिकजड़दिये व जड़ाऊकिवांड़ेलगा कर सबद्वारोंपरमोतियोंकी झालरलटकादिया व कोटकेकंगूरे जड़ाऊबनाकर अतिउत्तमबाज़ाररचदिया व सोलहहज़ार एक सौ आठमहलबहुतउत्तम श्यामसुन्दरके रहनेवास्ते बनाकरउन मेंऐसाबढ़िया रत्नादिकजड़दिया जिसकीचमकहज़ार सूर्यसेअ धिकदिखलाईपड़तीथी व सबस्थानोंमेंबाग़ अनेकरंगकेफूल व फलसगेहुये बनाकरकुण्ड व बावलीकोगुलाबजलसेभरदिया व सबमहलोंमें बड़े २ आंगनतैयारकरकेहाथी व घोड़े व गौ व बैल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बांधने व रथ व गाड़ीआदिक रखनेकेस्थान बिलग २ बनादिये व
सबमंदिरोंकेद्वारपरनौबतझरने व द्वारपालकोंकेरहनेवास्ते बिल
ग २ स्थानबनाकर कोटकेचारोंओर उत्तम २ वाटिकातलगादीं व
जितनीवस्तुगृहस्थीकीहोतीहैं वहसबस्थानोंमेंरखकर चारोंवर्णों
केरहनेकेवास्ते अलग २ महल्लेबनादिये हेपरीक्षित जब विश्व
कर्माने वैकुण्ठनाथकीदयासे यहसबमुहूर्तभरमेंतैयारकरके द्वार
कापुरी उसकानामरक्खा तबवरुणदेवताने श्यामकर्णघोड़े व कु
बेरदेवताने उत्तम २ रथ व रत्नादिक व इन्द्रनेसुधर्म्मासभा द्वार
कामेंपहुँचादी इसीतरह अनेकदेवताबहुतउत्तम २ वस्तुजिनका
नामकहांतक वर्णनकियाजावे वहांलेआकररखगये जब विश्व
कर्मानेद्वारकापुरी जहांजानेसे काम क्रोध मोह व लोभनहींव्या
पतेथे रचिकरश्यामसुन्दरसेखबरकी तबकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द
ने उसीक्षणयोगमायाको बुलाकरकहा तुम अभीमथुरावासियों
को गौ व घोड़े व हाथीआदिक सबवस्तुसमेतरातोंरात मथुरासेले
जाकर द्वारकामेंपहुँचादे परकोई मनुष्यवहांसे यहां पहुंचनेतक
यहभेदनजानेयोगमायाने उनकीआज्ञानुसारउसीक्षणराजाउग्र
सेनव वसुदेवआदिक सबमथुरावासियोंको जो नींदमेंसोयेथे वहां
सेउठालेजाकर द्वारकापुरीमें पहुँचादिया जब मथुरावासी समुद्र
का शब्दसुनकर नींदसे चौंकउठे तब आपसमें अचम्भामानकर
कहनेलगे देखो यहांसमुद्र कहांसेआया जबउन्होंने अच्छीतरह
विचारकिया तो मालूमहुआकियहदूसरानगरवासुदेवकीइच्छासे
समुद्रमेंबसाहै जबउन्होंने मथुरासेउत्तमस्थानमें अपनेको देखा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

औरसबबस्तुगृहस्थीकी वहांपाई तबस्त्रीवपुरुष प्रसन्नहोकरबड़ा
ई मोहनप्यारेकी करनेलगे ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

कालयवन व राजामुचकुन्दकी कथा ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जब श्यामसुन्दर मथुरावासियों को द्वारकाभेजचुकेतब बलभद्रजीको मथुरामें छोड़कर आपमा तसमय अकेले चतुर्भुजी रूपधारणकिये मुकुट जड़ाऊ सूर्यसे अधिक चमकताहुआ शिरपर बांधे कुण्डल व पीताम्बर पहिने कौस्तुभमणि व मोतियोंकाहार बैजयन्तीमाला गलेमेंडाले व उपरना रेशमीओढ़े अंग २ में रत्नजटित भूषणसाजे व शंख व चक्र व गदा व पद्म चारोंहाथमें लिये केसरकातिलकलगाये तापर चौरे णी चितवनमन्दमन्द मुसकरातेहुये कालयवनकेसन्मुखगए।

दो० जाय कृष्ण दर्शनदियो धरेचतुर्भुजरूप। अंगअंग बहुरंगछबि शोभित परमअनूप ॥

जब कालयवनने नारदमुनिके कहनेप्रमाण सबलक्षण उनमें देखे तब श्यामसुन्दरको अतिबलवान् समझकर मनमेंकहा राजाकंस व जरासन्धकी सेनाको इसीपुरुषनेमाराथा परइससमय यहकुछ शस्त्र न लेकर पैदलमेरेसन्मुख लड़नेआया सो इसके साथ शस्त्रलिये रथपरचढ़हुये युद्धकरना धर्मनहींहै ऐसाविचार कर कालयवन रथसे कूदपड़ा व उसने पुकारकर अपनी सेनावा लोंसेकहा कि कोई मनुष्य इसमोहनीमूर्त्तिपर शस्त्रमतिचलाओ तब ऐसाकहकर कालयवन आपअकेला श्यामसुन्दरके निकट आया जब मोहनप्यारेने एकतो म्लेच्छका अंगछूना उचितनहीं जाना दूसरे उन्हें देवतोंका बरदान सत्यकरनेवास्ते राजा मुचकु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्दको अपना दर्शनदेकर भवसागरपार उतारनाथा इसलिये वै
कुण्ठनाथ उसके सामनेसे भागे व कालयवन उन्हैं पकड़नेवास्ते
पीछे दौड़कर अभिमानकी राहबोला॥

चौ० कालयवन यों कहै पुकारि। काहे भागेजात मुरारि॥
आयपर्‌यो अब मोसोंकाम। ठाढ़े रहो करो संग्राम॥

मुझको राजाकंस व जरासन्ध मतिसमझना मैं यदुवंशियों
का वीर्य संसारमें नहींरक्खूंगा क्षत्री व शूरबीरोंको युद्धमेंसे भाग
ना मरण तुल्यहोता है॥

दो० रिपुसन्मुख ते भाजिबो क्षत्रियको है लाज। प्रकटपिता बसुदेवको दोषलगायो आज॥

हेश्याममूर्त्ति मैं तुमको बड़ा शूरबीर सुनकर तुम्हारेसाथ ल
ड़नेआयाहूं सो एकक्षण ठहरकर मेरेसाथ युद्धकरो तुम्हाराप्राण
न हारूंगा श्यामसुन्दर उसकीबातका कुछउत्तर न देकर एक
तेथकाअन्तर देतेहुये इसतरह भागेजाते थे जिसमें वहानिराश
न होवै व पकड़नेभी न पावै जब कालयवन बहुतदूरतक पीछे
दौड़ा चलागया तब केशवमूर्त्ति बीचकन्दरा गन्धमादन पहाड़
के जहां राजामुचकुन्द सोयाहुआथा घुसगये और वहांजाकर
पीताम्बर अपना राजामुचकुन्दको उढ़ादिया व आपअन्तर्द्धान
होकर उसीजगह एककोनेमें खड़ेहोगये जब पीछेसेकालयवन
दौड़ता व हांफताहुआ उसीकन्दरामें पहुँचा तब उसने मुचकुन्द
कोपीताम्बर ओढ़देखकरक्याजाना कियहवहीपुरुषहै जाभागा
आवताथा मेरेडरसे पीताम्बरओढ़कर सोरहा है ऐसा विचारतेही
कालयवनबड़े क्रोधसे एकलात राजामुचकुन्दको मारकरबोला
यहकौनशूरताहै जो रणभूमिमेंसे भागकर यहांसोरहा उठअभी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुझे मारडालूं जब ऐसा कहकर कालयमनने वह पीताम्बर मुच कुन्दके शरीरपरसे खींचलिया तब वहलात लगने व पीताम्बर झटकनेसे जागउठा॥

दो० ताकी दृष्टिप्रभावते अग्निउठी तनवाहि। देखतही जरकेभयो यमनभस्म क्षणमाहि॥

हेराजन् कालयमनने मरतीसमय बैकुण्ठनाथका दर्शनपा याथा इसलिये वहसब पापोंसे छूटकर मुक्तिपदवीपर पहुँचा इत नीकथा सुनकर परीक्षितने पूछा हेमुनिनाथ मुचकुन्द कौन महा तेजवान्होकर किसकारण कन्दरामें सोयाथा जिसकीदृष्टिपड़ने से कालयमन ऐसाप्रतापीराजा जलगया शुकदेव जीबोले हेपरी क्षित मुचकुन्द राजाइक्ष्वाकु क्षत्रीकेकुलमें युवन्नेश्वका पौत्र व मान्धाताका पुत्र बड़ाप्रतापी व चक्रवर्त्ती राजाहो मर अपने धर्म व तपकेबलसे सबराजोंको अधीनकियेथा उन्हींदिनों दैत्योंने दे वतोंको लड़ाईमें जीतकर राजसिंहासन उनका छीनलिया तब इन्द्र वरुणआदिकदेवते शूरताई व बड़ाई राजामुचकुन्दकी सुन कर मर्त्यलोकमेंआये व बहुतदिनहोकर राजामुचकुन्दसे विनय किया हमलोगदैत्योंके हाथसे बहुतदुःखपाकर तुम्हारेशरण आ ये सो सहायता करके दैत्योंसे हमाराराज्य दिलवादीजिये यह बात सदासे होतीआईहै कि जबदेवता व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको दुःखपड़ताहै तब क्षत्रीलोग उनकीरक्षा करतेहैं यहदीनबचन सु नतेही राजामुचकुन्दने देवतोंका सहायकहोकर दैत्योंसे युद्धकि या व दैत्योंको जीतकर देवतोंकाराज्य देदिया सोजबजब देवतों को दैत्यलोग दुःखदेतेथे तबतब राजामुचकुन्द देवतोंकी सहाय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताकरके दैत्योंकोभगादेताथा एकबार मुचकुन्दको दैत्योंसे लड़
तेहुये कईयुगबीतगये तब स्वामिकार्त्तिकजी देवतोंकी सहायता
करनेआये उससमय देवतोंने राजामुचकुन्दसेकहा अबहम लो
गोंकी सहायता स्वामिकार्त्तिकजी करेंगे तुमनेहमारेवास्ते बड़ा
परिश्रमकियाहै इसलिये सिवायमुक्तिके जो बरदान मांगो सो
तुमकोदेवैं ॥

दो० अर्थ धर्म अरु कामना यहसबहै ममहाथ । एकपदारथ मुक्तिको देहैं श्रीब्रजनाथ ॥

यह सुनकर मुचकुन्दनेकहा बहुतदिनहुये मैं अपनेघरद्वार व
बालबच्चोंसे बिलगपड़ाहूं आज्ञादेवतो जाकर उन्हें देखूं देवतोंने
उत्तरदिया तुम्हारेबंशमें अबकोई नहींरहा सबमरगये यहबचन
सुनकर मुचकुन्दबोले यहीहालहै तो बहुतदिनसे नींदभर सोया
नहीं तुमलोग कोईऐसीएकांत जगहमुझे बतलादेव जहांजाकर
सोऊं व कोईमुझे न जगावै देवतोंने प्रसन्नहोकर कहातुम गन्ध
मादन पहाड़की कन्दरामें जाकरशयनकरो हमलोग ऐसाबरदा
नदेतेहैं जोकोई वहांजाकर तुमकोजगावै उसीसमयतुम्हारीदृष्टि
पड़नेसेजलकर भस्महोजावै व हमारे आशीर्वादसे तुम्हें परब्रह्म
परमेश्वरका दर्शन प्राप्तहोगा सो राजामुचकुन्द त्रेतायुगसे यह
बरदानपाकर उसकन्दरामें सोयाथा श्यामसुन्दर अन्तर्यामीयह
सबभेद जानतेथे इसलिये उन्होंने देवतोंकाबरदान सच्चकरने वा
स्ते कालयमनको वहांलेजाकर मुचकुन्दकीदृष्टिसे मरवाडाला
उसकेजलने उपरान्त वृन्दावनबिहारी भक्तहितकारीने चतुर्भु
जीरूपसे मेघवर्ण चन्द्रमुखकमलनयन शंख चक्र गदा पद्मलिये

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किरीटमुकुटसाजे बनमालाबिराजे पीताम्बर पहिने तीनोंलोक की सुन्दरताई धारणाकियेहुये राजामुचकुन्दकोदर्शनादिया जब उनके चन्द्रमुखके प्रकाशसे उसअँधियारी कन्दरामें उजियाला होगया तबराजामुचकुन्दने उनकोदेखकर साष्टांगदंडवतकिया॥

दो० माखनप्रभुके दर्शते भयो सरसआनन्द। जोरि हाथ ब्रजनाथसे पूछतहै मुचकुन्द॥

हेदीनानाथ तुम्हारेबराबर तीनोंलोकमें कोईसुन्दर न होगा जैसे आपनेदयालुहोकर दर्शनादिया वैसे कृपाकरके अपनाहालबर्णन कीजिये मेरीसमझमें आपसूर्यया चन्द्रमाया कोईलोकपालया ब्रह्मा व बिष्णु व महेश तीनोंबड़ेदेवतोंमेंमालूमहोतेहैं जो तुम्हारे आवनेसे यहकन्दराप्रकाशितहोगई और यहकोमलचरण आप केफूलोंसेभी अधिकनरमहैं इसपहाड़ वकांटोंमेंकिसतरहबिराजे सो अपनानाम व गोत्रबतलाइयेकदाचित् आपमुझसेपूछैं कि तू कौनहै सो मैं मुचकुन्दनाम राजामान्धाताकाबेटाहूं व दैत्योंसे लड़तीसमयपरिश्रमकरनेमें देवतोंनेमुझेऐसाबरदानदियाथाकि तुमनिश्चिन्तहोकर सोवो तुम्हैंजगानेवाला तुम्हारीदृष्टिपड़नेसे जलकरमरजावैगा इसीवास्ते यहमनुष्य जिसनेमुझेजगायाथा देखोजलकरभस्महोगया यहसुनकरवृन्दाबनबिहारीनेकहा हे मुचकुन्दमैंकौनसानाम अपनातुझेबतलाऊं मेरेनामोंकीकुछगि नतीनहींहै मैंनेलाखोंबेरसंसारमें अवतारलेकरबहुतसेकामकिये हैं कदाचित् कोईचाहै तो बालूकीरेणुका व पानीबरसनेकेबूंदगि नलेवे परमेरेअवतार और कामोंकीगिनतीकरना बहुतकठिनहै इसलिये अपनेपिछलेअवतारोंकाहाल तुझसेनहीं कहसक्ता पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसबेरपृथ्वीका भारउतारनेवास्ते बसुदेव व देवकीकेघर यदुकुल
में अवतारलिया है इसलिये मेरानामबासुदेवभीकहते हैं व हम
नेमथुरामें राजाकंसकोदैत्योंसमेतमारकर पृथ्वीकाबोझउतारा
व सत्रहबेरतेईस २ अक्षौहिणीदलसाथलेकर राजाजरासन्ध म
थुरापरचढ़आया सो वहभीमुझसेहारगया अठारहवींबेर उसकी
सहायता करनेवास्ते यहकालयमन तीनकरोड़सेनाम्लेच्छोंकी
साथलेकर मुझसेलड़नेआयाथा सो तुम्हारी दृष्टिसेजलकरभ
गया कदाचित्तुमकहो कि कालयमनकोअपनेहाथसेतुमनेक्यों
नहींमारा सो इसकायहकारणहै कि देवतोंकाबरदान सचकरने
वास्तेमुझेतुमकोअपनादर्शनदेकर भवसागरपारउतारनाथा इस
लिये मैंने कालयमनको तेरीदृष्टिसेजलाकर अपनादर्शनतुझे
दिया पिछलेजन्मतैंने मेराबहुतभारीतपकियाथा उसकाफलअ
जपाकर तू जन्म व मरणसेछूटगया अबतुझेजोइच्छाहो सोवर
दानमांगहमदेवैंगे बैकुण्ठनाथकादर्शनामिलनेसे मुचकुन्दकेमन
में ज्ञान उत्पन्नहोकर उसकोयादआई कि गर्गमुनिनेमेरीजन्म
पत्रीदेखकरकहाथा तुझेपरमेश्वरकादर्शनामिलैगा वहबात आ
खोंसेदिखलाई दी ॥

दो॰ सोई द्विजके बचन हरि सत्यभयोहै आज । प्रकटभाय दर्शनदियो माखनप्रभु ब्रजराज ॥

जबमुचकुन्दकोविश्वासहुआ कि यहचतुर्भुजीरूपभगवा
हैं तब उसनेश्यामसुन्दरके सन्मुखहाथजोड़कर विनयकिया
महाप्रभु आपनिर्गुण व निराकारअविनाशीपुरुषहोकर केवल
हरिभक्तोंको सुखदेनेवास्ते सगुणअवतारधरतेहो तुम्हारेआदि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंतकोकोईनहींजानता सारासंसारआपकीमायामें लपटरहा है इसलिये किसीकाज्ञानठिकानेनरहकर सबमनुष्यबीचजाल का मक्रोध मोहलोभकेऐसाफँसरहेहैं कि किसीतरहमायारूपीजाल से छूटनेनहींसक्के ॥

चौ० करत कर्म सब सुख के हेत। याते भारी दुख सहिलेत ॥

जिसतरह कुत्ता सूखीहड्डीचबातीसमय अपनेमुखके लोहूका सलोनास्वादपाकर अज्ञानतासे वहस्वाद हाड़में निकलतासम झताहै उसीतरह मनुष्यस्त्रीप्रसंगकरतीसमय अपनेवीर्यगिरनेका क्षणभरसुखपाकर अज्ञानतासेजानतेहैं कि स्त्रीसेयहआनन्दहमें मिलताहै जे अज्ञानीमनुष्य इसझूठेसुखकोअच्छाजानकरकाम देवके मदमेंपरस्त्रीगमनकरके अपनापरलोकबिगाड़देतेहैं व ऐसा काम नहींकरते जिसमें आवागमनसे छूटजावें उन्हैं कुत्तेसे भी निकृष्ट समझनाचाहिये हे दीनानाथ संसारीजीवोंको बिनाकृपा व दयातुम्हारी इसमायारूपी अँधियारेकूपसे बाहरनिकलना ब हुत कठिनहै जो मनुष्यतुम्हारे शरणहोकर आपकाध्यान व स्म रण करै वहमायाजालसे छूटकर परमगतिको पहुँचनेसक्काहै सो मैं आजतक राज्य व धनके मदमें तुम्हारे भजन व स्मरणसे बि मुखरहा व जिनस्त्री व पुत्रोंकीप्रीतिमें फँसकर हाथी व घोड़े आ दिक संसारीसुखको अपनाजानताथा वहसब नाशहोकर केवल यहतनु मेराजिसे राजाकहतेहैं रहिगया सो यहभी किसीकामका नहींहै किसवास्ते कि यहतनु मरनेउपरांत सियारआदिकके खा जानेसे विष्ठाहोजाताहै व पड़ेरहने व सड़िजानेसे कीड़े पड़िजाते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैं व जलादेनेसे राखहोजाताहै इसलिये जो लोग अपनेतनु व
बलका अभिमान करतेहैं उन्हैं मूर्ख समझनाचाहिये मनुष्यतनु
पाकर सिवाय भजन व स्मरणपरमेश्वरके संसारी व्यवहारमें म
नलगाना अच्छानहींहोता परअज्ञानीमनुष्य शुभकर्ममें एकक्ष
ण मननहींलगाते व आठोंपहर स्त्री व पुत्रकीमायामें फँसेरहिकर
संसारी झूठेव्यवहारको सच्चा जानतेहैं जो कोईबिना इच्छाकेवल
तुम्हारे प्रसन्नहोनेवास्ते आपकाध्यान व स्मरण करताहै उसे ब
ड़ा भाग्यवान् समझनाचाहिये पर वैसे मनुष्यसंसारमें कमहैं मु
झअज्ञानी व अभिमानीको अपने भवसागरपार उतरनेका बड़ा
शोच लगाथा सो मेरेपिछलेजन्मके पुण्यसहायहुये जो कमल
रूपी तुम्हारेचरणोंमें जिनकाध्यान ब्रह्मादिकदेवता व बड़े २ यो
गी व ऋषीश्वर दिनरात अपनेहृदयमें रखतेहैं अपना दर्शनदेकर
मुझे कृतार्थकिया इसलिये सिवायभक्ति व ध्यानइनचरणोंके जो
मुक्तिदेनेवाले हैं दूसरीकोई संसारीबस्तु मायामोहमें फँसावनेवा
ली नहीं चाहता॥

दो० मैं जपतप नहिं कुछकियो नहिंचीन्हें महराज। एकतुम्हारीकृपाते दर्शनपायों आज॥

हे महाप्रभू तुमअपनेभक्तों को अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों
पदार्थदेनेवाले हो इसलिये यहइच्छारखताहूं कि तुम्हारीकृपासे
भवसागरपारउतरजाऊं मैं आपकेशरणागतहूं जबराजा मुच
कुन्दने यहसबस्तुतिकी तब श्यामसुन्दरनेहँसकरकहा हे मुचकु
न्दतेराज्ञानधन्यहै तैंनेसच्चीबातकही तू सदासेमेरापरमभक्तहै पि
छलेजन्म तुमनेबहुतसातपकरके हमारादर्शनचाहाथा उसका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फलअ।जमिलकर तेरीकामनापूर्णहुई व हमकोतैंनेपहिंचाना व हमने तुमकोबरदानदेनेवास्ते ललचायाथा सोतैंने किसीबस्तुलेनेकी इच्छानरखकर केवलमेरेचरणोंकीभक्तिमांगी इसतरहका ज्ञानसबकिसीको प्राप्तनहींहोता अब तेरेभवसागरपारउतरनेका उपायबतलादेताहूं सोतूकरकिसवास्ते कि तैंने पृथ्वीलेने व परस्त्री गमनकरनेमें बहुतपापकिया है वहबिनातपकिये नहींछूटैगा इस लिये तूउत्तरदिशामेंजाकर मेरेस्मरण व ध्यानमेंलीनहो यहतनु छोड़नेउपरान्त ब्राह्मणके घरजन्मलेकर मेरीभक्तिकरैगा तबय हतनुछोड़नेउपरान्त मेरीज्योतिमेंसमाजायगा॥

दो० यदपिपदारथमुक्तिको राजनदीजतनाहिं। तद्यपिहमतुमकोदियो जानिप्रीतिमनमाहिं॥

यहबातसुनतेही मुचकुन्द बैकुण्ठनाथकेचरणोंपर गिरपड़ा व जबउन्हैं साष्टांगदण्डवत्करके कन्दरासेबाहरनिकला तबउसने मनुष्य व वृक्षोंकाछोटारूपदेखकरजाना कि कलियुगकालक्षण निकटपहुँचा ऐसाविचारकर उसीसमय राजामुचकुन्द बदरिकाश्रममें तप व जप करनेवास्तेचलागया व सच्चेमनसेपरमेश्वरका तपकरनेलगा व गरमी व शरदी व वर्षाऋतुकोबराबरजानकर हर्ष व शोचकोएकसासमझाजबवहतनुछोड़कर ब्राह्मणकेयहांजन्म पाया तबहरिभक्तिकेप्रतापसे मरनेउपरांतपरब्रह्मपरमेश्वरके रूपमेंलीनहोगया कालयमन ब्राह्मणकेवीर्यसेउत्पन्नहुआथा इस लिये मुरलीमनोहरने उसको अपनेहाथसेनहींमारा इतनीकथा सुनकरपरीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथकालयमनम्लेच्छने ब्राह्मण केवीर्यसेकिसतरहजन्मपाया शुकदेवजीबोले हेराजन् एकदिन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गौड़ब्राह्मण गर्गमुनिकेसालेनेठट्टेसेउन्हेंकहा तुमनपुंसकहा जब यहबातसुनकर यदुबंशीलोगहँसीकीराह गर्गऋषीश्वरको हिज ड़ाकहनेलगे तबउन्होंने यदुबंशियोंको नीचादिखलानेवास्तेम हादेवका तपकरनाआरम्भकिया जबशिवजीनेप्रसन्नहोकर उन सेबरदानमांगनेकोकहा तब गर्गमुनिनेहाथजोड़करविनयकिया मुझे ऐसापुत्रदीजिये जिसमें सबयदुबंशीडरकरभागजावैं महा देवनेएकफल उन्हैंदेकरकहा यहफलस्त्रीकोखिलादेनेसे वैसापुत्र उत्पन्नहोगा सो गर्ग ब्राह्मणनेवहफललेकर अपनेपासरखछोड़ा जब तालजंघनामक्षत्रियने जो काबुलमेंबड़ाप्रतापी राजाहोकर सन्ताननहींरखताथापुत्रउत्पन्नहोनेवास्तेगर्गऋषीश्वरकी बहुत सेवाकी तबऋषीश्वरमहाराजने उसकीस्त्रीकोवीर्य्यदानदेकरवह फल खानेवास्ते दिया सो उसने परमेश्वरकीइच्छानुसार अपनी सौतोंके डरसे जल्दीमेंवहफल बिनास्नानकिये खालिया तबगर्ग मुनिनेकहा तेरापुत्रबड़ाप्रतापी व बलवान्उत्पन्नहोकर म्लेच्छों काकर्मकरैगा इसीकारणकालयमनबेटातालजंघ क्षत्रियकाम्ले च्छहोगयाथा यहहालसुनकर परीक्षितकासन्देह मिटगया॥

बावनवां अध्याय॥

श्याम व बलरामका जरासन्धके सामनेसे उसका मनोरथ पूर्णकरनेवास्ते भागना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित श्यामसुन्दर मुचकुन्दकोबिदा करकेमथुरामेंचलेआये व बलरामजीसेकहा हमनेराजामुचकुंद कीदृष्टिसे कालयमनकानाशकराके मुचकुन्दकोबदरीकेदारम तपकरनेवास्ते भेजदिया अबचलो कालयमनकी सेनामारक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पृथ्वीका भारउतारैं ऐसाकहकर दैत्यसंहारण बलरामसमेत मथुरासे बाहर निकले व कालयवनकी सेनामें चलेगये॥

दो० संकर्षणको साथ ले माखन प्रभुकरतार। कालयवनकी सेनसब हती एकहीवार॥

जबक्षणभरमें श्याम व बलराम हल व मूशल व बाणोंसेम्लेच्छोंको मारकर सबबस्तुलूटकी अपनेसाथलेचले तबराजाजरासन्धने अपनीसेनासमेत पहुँचकरउन्हैं घेरलिया उससमय बैकुंठनाथ भक्तवत्सलने जरासन्धकामनोरथ पूर्ण करनेवास्ते सबबस्तुलूटकी वहां छोड़दी व बलराममसमेत उसकेसामनेसे पैदल भागे तबजरासन्धके मंत्रीनेकहा महाराज तुम्हारेप्रतापके सामने कौनऐसाशूरवीरहै जो ठहरनेसकै देखो राम व कृष्ण दोनों भाई घरदुवार व सबबस्तु अपनी छोड़कर आपकेडरसे नंगेपांव भागेजातेहैं जबजरासन्धनेभी दोनोंभाइयोंको अपनीआंखों से भागतेहुये देखा तबअपनी सेनासमेत उनकेपीछेदौड़ा व पुकार कर यों कहा॥

चौ० काहे डरके भागे जात। ठाढ़े रहौ करौ कुछबात॥
गिरत उठत कम्पत क्योंभारी। आई है ढिग मृत्यु तुम्हारी॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जबश्याम व बलराम नारदजीका बचन सत्यकरनेवास्ते लोक व्यवहार दिखलाकर जरासन्धके सन्मुखसे भागे तबवह बड़ेहर्षसे उनकेपीछे दौड़ा व दोनोंभाई भागेहुये प्रवर्षण पहाड़पर जो ग्यारहयोजन ऊंचाथा व उसमें सिवायएकरास्तेके दूसरीराह नहींथी चढ़गये पहाड़केऊपर जाकर खड़ेहुये॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ० देखि जरासँध कहै पुकारी। शिखरचढ़े बलभद्र मुरारी॥
अब यह कैसे जायँ पराय। यह पर्वतको देव जलाय॥

ऐसीआज्ञापातेही उसकेसेवकोंने उसपहाड़को जहांसदाप
नी बरसताथा लकड़ियोंकाढेर चारोंओर इकट्ठाकरके उसमें आ
गिलगादी व जोराहपहाड़पर चढ़नेकीथी वहांजरासन्ध आपस
ड़ाहोगया जबथोड़ीदेरमें वहअग्नि पर्वतके शिखरतक लहाकि
रबुझगई तबवह उसअग्निमें जबमरना दोनोंभाइयोंका समझ
र मथुरापुरीकोचलाआया और वहांअपनाढिंढोरा पिटवादिया
जितनेस्थान राजाउग्रसेन व बसुदेवजीके उसनगरमेंथे वहसबको
दाकर उसजगह नयेस्थान बनवादिये व अपना कारोबार वहां
छोड़कर सेनासमेत हर्षपूर्वक मगधदेशमें आया व श्यामसुन्द
ने बलरामजीसेकहा बड़ेशोचकीबातहै जो हमाराचरण आदि
से भी यहपहाड़जलजावै ऐसाकहकर बैकुण्ठनाथने उस पहाड़
को अपनेचरणोंसे ऐसादबादिया कि पातालमेंचलागया आदि
बुझनेउपरांत फिरउसीतरह उठादिया॥

दो० तागिरिवरते कूदके माखनप्रभु यदुराय। राम सहित श्री द्वारका पलमें पहुँचे जाय॥

उन्हेंदेखतेही सबद्वारकावासी प्रसन्नहोगये व मुरलीमनोहर
की दयासे आनन्दपूर्वक वहांरहनेलगे कुछदिनबीते राजारेवतके
ब्रह्माजीकीआज्ञानुसार रेवतीनाम अपनीकन्याचन्द्रमुखी व मृग
लोचनीको द्वारकापुरीमेंलाकर बलरामजीसेबिवाहदिया व श्याम
सुन्दर बलरामजीसमेत कुण्डिनपुरमेंजाकर रुक्मिणीनाम
जाभीष्मककीकन्या जो शिशुपालकोमांगीगईथी अनेकराजा
मेंसे बरजोरी हरिलेआये व अपनेघरलाकर उसकेसाथ बिवा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया यहसुनकरपरीक्षितनेबिनयकिया कि कृष्णचन्द्ररुक्मिणी को बहुतराजोंमेंसे किसतरहजीतकरलेआयेथे॥

दो० मालनप्रभुके कर्म गुण सुने महासुखहोय। जोकोइ ऋषिमुनिसे सुने बडीभाग्यहै सोय॥

यहबचनसुनकर शुकदेवजीबोले हेराजन् भीष्मकनामबड़ा प्रतापी राजाविदर्भदेशकाकुण्डिनपुरमेंरहकर धर्म्मपूर्व्वकराज्य करताथा व रुक्माग्रजआदिक पांचपुत्रउसकेहुये जबरुक्मिणी नाम कन्यामहासुन्दरी राजाभीष्मककेयहांउत्पन्नहुई तब उस नेमंगलाचारमनाकर ज्योतिषियोंसे उसकेजन्मलग्नकाफल पूंछा तबपण्डितोंनेकहा कि हमारेबिचारमेंयहगुण व रूप व शील कीसागरहोकर आदिपुरुषभगवान्से बिवाहीजावैगी यहसुनकर भी जानेबड़ेहर्षसे पण्डितोंकोसन्मानपूर्वकबिदाकिया जबराजकुमारीप्रतिदिनचन्द्रकलासी बढ़करकुछसयानीहुई तब एकदिन नारदमुनिकुण्डिनपुरमेंगये व उसकाहाथदेखकर रुक्मिणी से कहा तेराबिवाहकृष्णचन्द्रआनन्दकन्दबैकुण्ठनाथकेसाथहोगा यहबातसुनकर रुक्मिणीबहुतप्रसन्नहुई व नारदमुनिने द्वारका पुरीमेंजाकरकहा हे बैकुण्ठनाथ राजाभीष्मकके एककन्या रुक्मिणीनाम लक्ष्मीकेसमानअतिसुन्दरी उत्पन्नहोकर तुम्हारे बिवाहनेयोग्यहै यहबातसुनतेही केशवमूर्त्ति अन्तर्यामीकोभी उसकीचाहनाहुई उन्हींदिनोंमें याचकोंनेकुण्डिनपुरमें जाकर यश व गुणमुरलीमनोहरका जोजोकाभउन्होंनेगोकुल व वृन्दावन व मथुरामेंकियेथे गायातबवहांकेलोगोंको श्यामसुन्दरकेदर्शन कीइच्छाहुई जब इसबातकीचर्चाहोते २ राजाभीष्मकको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खबरपहुँची व उसनेभी उनयाचकोंको राजमन्दिरपरबुलवाकर श्यामसुन्दरका यशगवाया तब राजा व रानीआदिक उनकी लीलासुनकर अतिप्रसन्नहुये॥

चौ० चढ़ी अटा रुक्मिणि सुन्दरी। हरिचरित्र ध्वनि श्रवणनपरी॥
अचरज करै भूलि मन रहै। फेरि उचकिकर देखन चहै॥
सुनिकर कुँवरि रही मनलाय। प्रेमलता उर उपजी आय॥
अति आनँदमय भई सुन्दरी। उसकी सुधिबुधि हरिगुणहरी॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षितपहिले रुक्मिणी नारदमुनिसे मुरलीमनोहरका गुणसुनचुकीथी जब उसनेयाचकोंसेभी उनकीबड़ाई सुनी तब उसेउनकेसाथ बिवाहकरनेकी अधिकइच्छाहुई उसीदिनसेरुक्मिणी आठोंपहरखातेपीते सोते जागते उठतेबैठतेध्यानसाँवलीसूरत मोहनप्यारेका प्रेमपूर्व्वक करनेलगी और उनकेमिलनेवास्ते प्रतिदिनपार्बतीजीको पूजन कर यहबरदानमाँगतीथी॥

चौ० मुझपर गौरि कृपा तुम करो। यदुपति पति दे ममदुख हरो॥
दो० कमलनयन के ध्यानमें मग्नरहै दिनरैन। खानपानकी कोकहै लहै नहीं क्षणचैन॥

जब रुक्मिणीनेदिनरात मोहनीमूर्त्तिकाध्यानरखकर अपने मनमें यहप्रणकिया कि सिवायश्यामसुन्दरकेदूसरेसे बिवाहनहीं करूंगी तब उसकेमातापिताभी यहहालजानकर इसीबातमेंप्रसन्नथे जबकभीरुक्मिणी बीचबिरहमनहरणप्यारेके उदासहोकर रोनेलगतीथी तब उसकीसहेलियां चर्चाबालचरित्र नन्दलालजीकासुनाकर उसेप्रसन्नकरदेतीथीं॥

दो० याविधि लीला कृष्णकी गावैं सब दिनरैन। सो सुनिके श्रीरुक्मिणी लहैसदासुखचैन॥

एकदिनरुक्मिणी सहेलियोंकेसाथखेलतीहुई राजाकेपा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आईतबभीष्मक ने उसेविवाहने योग्यदेखकर मनमेंकहा अबइ सका बिवाहजल्दी नहींकरतातो संसारीलोग मेरीनिन्दा करेंगे जिसकेघर कुमारीकन्या तरुणहोजातीहै उसेदान व पुण्यजपआ दिकशुभकर्म करनेका फलनहींमिलता ऐसाबिचारतेही राजाने अपनेपांचोबेटे व मंत्री व इष्टमित्रोंकोसभामें बैठाकरकहा अबरु क्मिणीसयानीहुई इसलिये कोईराजकुमारजो कुलीन व सबगु णोंसेभराहो ठहरानाचाहिये यहबातसुनकर सभावालोंनेअनेक राजकुमारोंकानाम बतलाकर उनकेरूप व गुणकाबर्णन किया परराजाके मनमें कोईनहीं भाया तबरुक्माग्रजउसके बड़ेबेटेने कहा हेपृथ्वीनाथ नगरचँदेलीमें राजाशिशुपाल कुलीन वबलवा नहै रुक्मिणीउसे बिवाहकरसंसारमें यशलीजिये जबराजाउस कीबातपरभी नहींबोले तबरुक्मकेशराजाकेछोटेपुत्रनेकहा॥

चौ० रुक्मिणि पिता कृष्णको दीजै। बासुदेवसे नाता कीजै॥
यहसुनि भीष्मक हर्षे गात। कह्यो पूत तुम अच्छीबात॥
तू बालक सबसे बड़ज्ञानी। तेरी बात भलीहम मानी॥
दो० तरुणछोटसों पूछके कीजै मनपरतीति। सारबचनगहिलीजिये यही जगतकीरीति॥

यदुबंशियोंमें राजासूरसेन बड़ेप्रतापीहोकर वसुदेवजीउनके पुत्रऐसे धर्मात्माहैं जिनकेघरआदिपुरुष भगवान्ने श्रीकृष्णाना मसे अवतारलिया व राजाकंसआदिक अधर्मियोंकोमारकरसब यदुबंशी व प्रजाको बड़ासुखदेतेहैं ऐसेद्वारकानाथको रुक्मिणी देकरसंसारमें यश व बड़ाईलेना उचितहैयहबचन सुनतेहीतीनों छोटेपुत्र राजाकेऔर मंत्रीआदिक सभावालोंने प्रसन्नहोकरक हामहाराज आपनेबहुतअच्छा बिचाराहैऐसाबर वघरदूसरानहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिलैगा यहबातसुनतेही रुक्माग्रजबड़ा पुत्रराजाका जिसकेस
म्मतसेराजकाजहोताथा सबसभावालोंपर झुझलाकरबोला॥

चौ० समुझ न बोलत महागँवार। जानत नहीं कृष्णव्यवहार॥
बारह बर्षनन्द के रह्यो। तब अहीर सब काहू कह्यो॥
दो० जन्मभयो यदुवंशमें बस्यो नन्दघर आय। कांध कमरिया कर लकुट फिरे चरावतगाय॥

हे पिता वहग्वालगँवारहोकर उसकीजातिपांतिका क्या ठि
कानाहै उसेकोई नंदजीका बेटाजानकर कोई बसुदेवका बालक
कहतेहैं आजतक यहभेद अच्छीतरह नहींखुला कि किसकाबेटा
है व यदुबंशी कुछप्राचीनराजा नहींहैं क्याहुआ जो थोड़े दिनों
से बढ़गये इससे उनकीगिनती तिलकधारी राजोंमें नहींहोसक्ती
कदाचित् श्रीकृष्ण बसुदेवयादवकापुत्र समझाजावै तौभी या
दवलोग हमारेबराबर कुलीन न होकर वह अपनीकन्याहमकोदेंगे
तो उचितहै सिवायइसके श्रीकृष्णराजा उग्रसेनका सेवककहला
ताहै उसे रुक्मिणी बिवाहकर संसारमें क्या यशपावैंगे बैर व बि
वाह बराबरवालेसे करनाचाहिये जबरुक्मिणीकाबिवाह कृष्ण
केसाथकरनेमें सबकोई मुझे ग्वालकासालाकहैंगे तबमैं अपना
मुँह लोगोंको क्या दिखलाऊंगा॥

चौ० या बिधि अवगुण भरे कन्हाई। तासों हम नाहिं करत सगाई॥

इसलिये शिशुपाल तिलकधारीराजाको जिसकेप्रताप बड
रसे दूसरे राजा थर २ कांपतेहैं रुक्मिणी बिवाहदीजिये व फेरक
ष्णकानाम मेरेसामने मतलीजिये जबयहबचनसुनकर सबसभा
वाले अपने २ मनमेंपछताकर चुपहोरहे व राजाभीष्मक बड़ापु
वसम झकर कुछनहींबोले तबराजकुमारने उसीसमय ज्योतिषि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौंसेशुभलग्नपूछकर एकब्राह्मणकेहाथतिलकबिवाह रुक्मिणी
काराजाशिशुपालके पासभेजदिया जबवहब्राह्मणतिलकलेकर
नगरचँदेलीमें राजमंदिरपरपहुँचा व शिशुपालनेबड़ेहर्षसेतिलक
लेकरउसब्राह्मणको सन्मानपूर्बक बिदाकरदिया तबवहब्राह्मणकुं
डिनपुरमेंचलाआया व राजाभीष्मक व रुक्माग्रजसे तिलकलेने
काहाल कहकरबोला राजाशिशुपाल बड़ेधूमधामसे बरातसाज
करबिवाहनेआतेहैं आपअपनेयहांतैयारीकीजिये यहबातसुनक
रपहिलेराजाभीष्मक बहुत उदासहोगये फिरअपने मनकोधैर्य्य
देकररानीसे यहसबहालकहा तबवह अपनीनातेदारस्त्रियोंकोबु
लाकररुक्मिणीके विवाहका मङ्गलाचारमनानेलगी व राजाने
अपनेमंत्रियोंको बिवाहकी तैयारीकरनेवास्ते आज्ञादी व कुण्डि
नपुरमें यहचर्चाघर २ होनेलगीकि राजारुक्मिणीका विवाहश्री
कृष्णजीसेकरतेथे पररुक्माग्रज दुष्टनेनहींहोने दिया अबशिशु
पालसेबिवाह उसकाहोगा इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले
हेराजन् जबराजमंदिरमें केलेकेखम्भे गाड़कर सोनेकाकलश्ध
रनेउपरांत मँडवातैयारहुआ व स्त्रियांमङ्गलाचारगीतगाकर अप
नेकुलकीरीति करनेलगीं व राजाने न्योताभेजकर अपनेइष्ट व
मित्रोंकोबुलाया व नाच व रंगआदिक अनेकतरहका मंगलाचा
र वहांहोनेलगा तबदोचारसखियोंने आनकररुक्मिणीसेकहाते
राविवाह रुक्माग्रजने राजाशिशुपालकेसाथठहरायाहै सोअबतू
रानीहोगी यहबातसुनतेही रुक्मिणी अपनेमनमेंबहुतउदासहो
करबोली हेप्यारीमेरेस्वामी मनसाबाचाकर्मणासे श्यामसुन्दर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वैकुण्ठनाथहैं उनके सिवाय मैं दूसरेको अपनापति बनानानहीं चाहती ऐसाकहकर रुक्मिणी शोच व बिचारकरनेलगी॥

चौ० शोचत महा करे दुख भारी। मिलैं कौन बिधि कृष्ण मुरारी॥
दो० माखनप्रभुके दर्शको केहि बिधि करों उपाय। पुरी द्वारकादूर अति कछुनहिं बनैबनाय॥

रुक्मिणीने बहुतशोच व बिचारकरके यहबातमनमें ठहराई कि किसीको मुरलीमनोहरके पासभेजकर अपनी इच्छा उनसे प्रकट कियाचाहिये आगे वहमालिकहैं जब रुक्मिणीने इसके सिवाय दूसराकुछ उपाय उत्तमनहींदेखा तबएकब्राह्मण बुद्धिमानको अपनेमाता व पिता व भाईसेछिपाकर बुलाया व अपना मनोरथ कहने व चिट्ठीदेनेउपरांत हाथजोड़कर उससेबिनय किया महाराज आपकृपाकरके तुरन्त यह चिट्ठीद्वारकामें लेजाइये व श्रीकृष्णजीके हाथदेकर मेरासन्देशा कहनेउपरान्त उन्हें अपने साथ यहांलेआइये तो जन्मभर आपकागुण मानकर यहसमझूंगी कि तुम्हारीदयासे मैंनेद्वारकानाथको स्वामीपाया यहबचन सुनतेही वहब्राह्मण रुक्मिणीसे बिदाहोकर मुरलीमनोहरका ध्यान करताहुआ द्वारकाकोचला व बैकुण्ठनाथकी कृपासेतुरन्त वहांपहुँचकर द्वारकापुरी की शोभा इसतरहपरदेखी कि रत्नजड़ित स्थानबनेहोकर घर २ मंगलाचार व कथापुराण होरहा है जबवह ब्राह्मण यहसबशोभा व आनन्द देखताहुआ श्यामसुन्दर की डेवढ़ीपर जहां हजारोंद्वारपालक खड़ेथे जा पहुँचा व भीतर डरके भीतरजानेनहींसका तबद्वारपालकोंने उसब्राह्मणसेपूछा॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ० को हौ आप कहांसे आये। कौन देशकी पाती लाये॥
दो० सकल व्यवस्था आपनी तिनसों कही जनाय। कुण्डिनपुरको विप्रहों अवहीं पहुँचोआय॥

उसब्राह्मणका हालसुनकर एकद्वारपालकबोला महाराज तुम किसवास्ते यहांखड़ेहो हमारेस्वामीके स्थानमें किसीब्राह्मण कोजानेवास्तेमनानहींहै आपबेधड़क भीतरचलेजाइये श्यामसुन्दर सामने सिंहासनपर बैठेहैं वहतुम्हारा बड़ाआदर करैंगे यहवचनसुनतेही जबवहब्राह्मण कृष्णचन्द्रकेसामने जहांवहजड़ाऊ सिंहासनपर पीताम्बरपहिने बैठेथे चलागया तबत्रिलोकीनाथने ब्राह्मणको देखतेही सिंहासनसे उतरकर दण्डवत्किया व सन्मानपूर्वक अपनेपास बैठाला व चरणधोकर चरणामृतलिया व उसके शरीरपर उपटन व फुलेलमलवाकर स्नानकराया व छत्तीस व्यंजन खिलाकर पान व इलायचीदिया व सुगन्धित फूलोंकागजरा पहिनाया व बड़ेप्रेमसेपूछा महाराज आपकहांसे आवते हैं व जिसदेशमें तुमरहतेहो वहांकाराजा अपने कर्म धर्मसे रहकरप्रजापालन व ब्राह्मणोंकी सेवा अच्छीतरह करताहै या नहीं॥

चौ० कौनकाज यहँ आवन भयो। दर्श देखाय हमें सुखदयो॥
दो० कहतवचन द्विजराजसों माखनप्रभु याभाँत। देखत हरिकी दीनता यादवसब मुसुकात॥

यहवचन सुनतेही वहब्राह्मण रुक्मिणीकी चिट्ठी उनकेआगे रखकरबोला हेकृपानिधान मेरे आवनेका यहकारणहै कि कुंडिनपुरमें रुक्मिणी राजाभीष्मककी कन्या आपकानाम व गुणसुनकर दिनरात यहइच्छा रखतीहै जिसमेंतुम्हारे चरणोंकी दासी होवै सो उसकापिता उसे तुम्हारेसाथ विवाहने चाहता है परन्तु रुक्माग्रज बड़े राजकुमारने यहबात न मानकर सगाई उसकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिशुपालसे कियाहै इसलिये वह बहुतराजोंको साथलेकर बड़े धूमधामसे कुण्डिनपुरमें बिवाहकरने आवेगा व रुक्मिणी मन सावाचाकर्मणासे तुम्हारेचरणोंमें प्रीतिरखकर उसकेसाथ बिवा हकरनानहींचाहती इसीवास्ते राजकुमारीने व्याकुलतासेचिट्ठी भेजकर तुम्हें बुलायाहै यहवचन सुनतेही केशवमूर्त्ति भक्तहित कारीने बड़ेहर्षसे वहचिट्ठी उसीब्राह्मणको देकरकहा तुमइसको पढ़ो ब्राह्मण वह चिट्ठीपढ़कर सुनानेलगा उसमें रुक्मिणीने लि खाथा हे त्रिलोकीनाथ अविनाशीपुरुष तुम्हारेबराबर कोईदूसरा सुन्दरनहींहै सो मेरीविनय सुनिये हेपरब्रह्मपरमेश्वर मैं आपकी स्तुतिसुनिकर मनसा वाचा कर्मणासे अपनेको तुम्हारीदासी स मझतीहूं व सिवाय तुम्हारे दूसरेकोनहींचाहती सो आपभी दया लुहोकर मुझे अपने चरणों के पासरखिये यद्यपि मैं आपके योग्यनहींहूं परतुम्हारीदासियोंमें रहूंगी मेराबड़ाभाई बरजोरीमु झे शिशुपालसे बिवाहनेचाहताहै परमैं यहबात न चाहकर प्रेम पूर्वक यहइच्छा रखतीहूं कि तुम्हारी सेवाकरके अपनाजन्मस्वा र्थकरूं कदाचित् आप ऐसाकहैं कि कुलवन्तीकन्या ऐसाकर्मन हींकरती जो अपने बिवाहकासन्देशा आपभेजैं सो हे दीनानाथ इसका यहकारणसमझिये तुम्हारीस्तुतिजो संसारमें प्रकटहै सुन कर मेरीलज्जा छूटगई तुम्हारेचरणोंकीरज मिलनेवास्ते ब्रह्मा व महादेव आदिकदेवते व बड़े २ योगी व मुनिइच्छारखतेहैं परवह धूरउनको जल्दी नहींमिलती सो मैं अपने मनसावाचा कर्मणा से यहइच्छा रखतीहूं जिसमें उनचरणोंकी सेवाकरके वहरज अ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पने मस्तकपरलगाऊं कदाचित् वहधूर मुझेनहीं मिलैगी तो उन चरणोंमें ध्यानलगाकर यहतन छोड़देऊंगी ॥

चौ० जाको शिव सनकादिक ध्यावें। वेद पुराण भेद नहिं पावें ॥
ताही चरण कमल की आस। मनमधुकर ह्वै कीन्होंवास ॥
दो० तुमचाहो या मति चहो माखनप्रभु यदुराय। मैं चाहतहूं आपको प्रेमप्रीतिके भाय ॥

हे महाप्रभु अबशिशुपाल बरातसाजिकर कुण्डिनपुरमेंमुझे ब्याहने आवैगा सो तुम बेगआनकर शत्रुओंको जीतनेउपरान्त मुझे यहांसे लेजाव कदाचित् आपनहीं आवैंगे तो मैं अपनाप्रा ण तुम्हारेचरणोंपर न्यवछावर करके जहां दूसराजन्म पाऊँगी उसीतनमें तुम्हारा भजन करिकै हरिचरणोंपास पहुँचोंगी॥

चौ० हौं तुम्हरी चेरीकी चेरी। तुमको सकल लाजहै मेरी ॥
कृपाकरो मोहनयदुनाथा। रथचढ़िचलो विप्रके साथा ॥

हेदीनदयालु ऐसामतकरना कि सिंहकाआहारगीदड़लेजावे कदाचित् आपऐसाकहैं कि हमराजमन्दिरमेंसे तुझे किसतरह हरलेजावेंगे सोमैं अपनेबिवाहसे एकदिनपहिले देवीजीकीपूजा करनेवास्ते नगरकेबाहर जाऊंगी जब वहांसे फिरकर घरआनेल गूं तब आपराहमें से मुझे अपनेसाथ लेजाना संसारमें तुम्हारा नाम दीनदयालु प्रकटहै इसलिये मुझे महादीन जानकर दया लुहोना ॥

चौ० जो तुम बेगि न पहुँचोआय। तो मोहिं असुर ब्याहलैजाय ॥
दो० याबिधिपाती श्रवणकरि माखनप्रभुकर्त्तार। कुण्डिनपुरकेचलनको मनमें कियोबिचार ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिरपनवां अध्याय॥

रुक्मिणी को श्यामसुन्दर का हरिलेआवना॥

शुकदेवजीनेकहा अयपरीक्षित श्यामसुन्दरने वहाचिट्ठी सुन
तेही बड़ीप्रसन्नतासे उसब्राह्मणका हाथपकड़लिया व उसको अ
केलेमें लेजाकर कहा अयब्रह्ममूर्त्ति जिसदिनसे मैंने रुक्मिणी
के रूप व गुणकाहाल नारदजीके मुखसे सुनाहै उसीदिनसेमैंभी
उसके मिलनेवास्ते चाहनारखताहूं और यहभीमुझको मालूम
है कि रुक्माग्रज मेरेसाथ शत्रुतारखकर उसका बिवाह मुझसे
होनेनहींदेता सोतुम आज रात्रिकोयहांरहो कल्ह प्रातसमय तु
म्हारेसाथचलकर रुक्मिणीकी इच्छा पूर्णकरूंगा जिसतरह का
ठमें काठरगड़नेसे आगिउत्पन्नहोकर साराबनजलजाताहै उसी
तरह शत्रुओंको सेनासमेत जीतकर रुक्मिणीको लेआऊंगा ज
ब यहबातसुनकर ब्राह्मणदेवताको धैर्यहुआ तबमुरलीमनोहरने
दारुकसारथीको बुलाकरकहा कल्हप्रातसमय रथतैयार करकेले
आवना जबप्रातःकालदारुकसारथी रथउनकासाजकर लेआया
तबश्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द उसब्राह्मणसमेतरथपरचढ़कर कु
ण्डिनपुरको चले जबवहसारथीरथदौड़ाकर नगरसेबाहरलेगया
तब प्राणनाथनेक्यादेखा कि दाहिनीओर हरिणोंका झुण्ड चला
जाताहै यहशकुनदेखकर उसब्राह्मणने केशवमूर्त्तिसे कहा महारा
ज अच्छेशकुन मिलनेसे मेरेबिचारमें ऐसाआवताहै कि जिस
कामकेवास्ते आपचलते हैं वहअर्थतुरन्त सिद्धहोगा श्यामसुन्द
रबोले आपकी कृपासे मेरामनोरथ मिलैगा यहबात कहकररथ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आगेकोबढ़ाया जबबलभद्रनेसुना कि मुरलीमनोहर अकेलेकु
ण्डिनपुरकोगये तबउन्होंनेजाकर राजाउग्रसेनसेकहा महाराज
हमनेसुनाहै कि राजाशिशुपाल जरासन्धआदिक बहुतसेराजों
को अपनेसाथ बरातमेंलेकर रुक्मिणी से बिवाहकरने वास्ते कु
ण्डिनपुर आवताहै व मोहनप्यारे यहांसे अकेलेबिना कहे वहांच
लेगये हैं इसलिये हमकोमालूमहोताहै कि वहां श्यामसुन्दर व
उनलोगोंसे बड़ायुद्धहोगा आपआज्ञादीजिये तो हमलोगभी जा
वें यहबातसुनतेही उग्रसेनने बलरामसेकहा तुमसबसेनामेरी सा
थलेकर ऐसीजल्दी कुण्डिनपुरमेंजाव कि बासुदेव वहां पहुँचने
न पावैं राहमें उनसेमिलकर उन्हें अपनेसाथ यहांलेआवो यहब
चनसुनतेही बलरामजीने उसीसमय दो अक्षौहिणीदल व बहुत
सूरबीरोंको अपनेसाथलेकर कुण्डिनपुरको कूचकिया व राहमें
श्रीकृष्णजीसे मिलकरबोले हे भाईमुझेभी साथ न लेकर अकेले
चलेआये मेराप्राण तुम्हारेऊपर न्यवछावरहै श्यामसुन्दर भाई
कोदेखनेसे बहुतप्रसन्नहुये व रुक्मिणीजीकीव्याकुलताका हाल
जानकर महीनेकारास्ता एकदिन व एकरातिमें चले और जिस
दिन शिशुपालकीबरात कुण्डिनपुरमें आवनेवालीथी उसीदिन
वहांजापहुँचे तबक्या देखा कि उसनगरमें घरघरमंगलाचार हो
कर गली व चौराहोंमें गुलाबजल व चंदनका छिड़कावहोरहाहै
व सबछोटे बड़े कुण्डिनपुरबासी अच्छा २ गहना व कपड़ापहि
नेहुये अपने २ द्वारे व चौराहोंपर बरात देखनेवास्ते हर्षपूर्वक
बैठे हैं ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० कुण्डिनपुरकी छबिमहा बर्णिसकै कबिकौन। जाकी शोभा देखिकै सुखपावत ऋषिमौन॥

यहसबशोभा यहांकी देखतेहुये श्यामसुन्दरने अपनारथ
जाभीष्मकके बागमेंलेजाकर खड़ाकिया व उसब्राह्मण से बोले
महाराज हमअपनाडेरा यहांकरतेहैं तुमजाकर हमारे आवनेका
हाल रुक्मिणीसे कहिदेव जिसमें उसको धैर्यहो और वहांका स
माचार फिरआनकर हमसेकहो कि उसकाउपाय कियाजावै यह
बचनसुनकर वहब्राह्मण राजमन्दिरकोचला औरउसीदिनराजा
भीष्मक बरातनिकटआवनेका हालसुनकर अपनीसेना वन्योत
हारी राजोंको साथलियेहुआ बरातियोंको आगेसे लेनेगया व स
न्मानपूर्वक उन्हें अपनेसाथ लेआकर यथायोग्य स्थानमें जनव
सदिया और अनेकपदार्थ भोजनके सबबस्तुसमेत जो जिसे च
हियेथा उनकेस्थानपर भेजदिया व बरात पहुँचनेकी खबरसुनकर
राजमन्दिरमें स्त्रियां मंगलाचार मनानेलगीं और पुरोहितने रु
क्मिणीसे सोना व गोदानदिलवाकर मोतियोंका कँगना उसके
हाथमें बँधवादिया इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षि
त कृष्णचन्द्र आनंदकन्द कुण्डिनपुरमें पहुँचचुके थे पररुक्मि
णीको उनकेआवनेकाहाल नहींमालूमथा इसलिये वह यहसब
चरित्र देखतेही अपनेमनमें शोचितहोकर कहनेलगी देखो श्या
मसुन्दर चिट्ठीभेजनेसे मुझेनिर्लज्जसमझकरअभीतक नहींआ
ये और उसब्राह्मणनेभी अबतक फिरकर कुछसन्देशा नहींदिया
कि प्राणनाथ आवते हैं या नहीं इससे मालूमहोता है कि बैकुं
नाथ अन्तर्यामीने मुझेकरम समझकर कृपानहींकिया या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्राह्मण रास्ताभूलकर द्वारकाको नहींगया या बरातकेसाथ जरा सन्धका आवनासुनकर नहींआये ॥

चौ० मेरी कछुक चूक मनआनी। याते नहिं आये सुखदानी ॥
अजहूं नहिंआये नँदलाला। आयमोहिं बरिहै शिशुपाला ॥

हे महाप्रभु जबशिशुपाल कल्हमुझे बिवाहने उपरांत हाथप कड़कर लेजावेगा तबमैं अबलाअनाथ क्याकरूंगी इससमयमेरे तपव जपव देवीजीकी पूजानेभी कुछसहायतानहींकी हे परमेश्व रमैंक्याकरूं किघरभागजाऊं या अपनाप्राणदेडालूं अबतुम्हारे बिना किसीकाभरोसा नहीं रखती रुक्मिणी अनेकबातें मनमें बिचारकर किसीके पांवकाखटका सुनती तो आना उस ब्राह्मण का जानकर चारोंओर देखने लगतीथी जैसे चन्द्रमाकाप्रकाश प्रातसमय मलीनहोजाताहै वैसे रुक्मिणीकाचन्द्रमुख उसीशो कमें उदासहोगयाथा जिसतरह पाराएकजगह नहींठहरताउसी तरह घबड़ाहटसे कभी कोठेपर व कभीद्वारेपर कभी खिड़कियों में जाकर उसब्राह्मणके आनेकाराह निहाराकरती थी व लज्जा वश अपनेमनकाभेद किसीसे नहीं कहतीथी ॥

दो० माखनप्रभुके ध्यानमें प्राणनकी सुधिनांहिं। तबहींफड़के नयनभुज मुदितभई मनमाहिं ॥

यहदशा रुक्मिणीकी देखकर एकसखी जो सबभेद जानती थी बोली हेप्यारी तुम इतना घबड़ाकर क्यों अपनाप्राण देतीहो हैं बिनापूछे अपनेपिता व भाईके किसतरह आवैंगे तबदूसरी स खीनेकहा वे दीनदयालु अन्तर्य्यामी तुम्हारेमनकाहाल जानक बिनाआये न रहैंगे तुम अपनेमनको धैर्यदेकर व्याकुलमतिहो रीसमझमें वह कुण्डिनपुरमें पहुँचचुके हैं उसकाबचन सुनकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रुक्मिणीनेकहा इससमय मेरीबाईंआँख व भुजा फड़कतीहै त
वह सखीबोली इसे बहुतअच्छा शकुनसमझो अभीकोई आन
कर ऐसीखबरदेगा कि श्यामसुन्दरआयेहैं जिससमय रुक्मिणी
यहचर्चा अपनीसखियोंसे कररहीथी उसीसमय उसब्राह्मणने
हुँचकर रुक्मिणीको अशीषदेने उपरान्त कहा केशवमूर्त्तिने
लरामजी व सेनासमेतयहांआनकर राजाकेबागमें डेराकियाहै

दो० रुक्मिणि विप्रहिदेखिकै कीन्होंबहुतहुलास। कहततुम्हारे धर्मसे अबपूजी ममआस॥

उससमय रुक्मिणीको ऐसी प्रसन्नताहुई कि जैसे मृतक
तनमें प्राणआजावें व तपकरनेवाला अपनामनोरथ पाकर प्र
न्नहोवै तबउसने हाथजोड़कर ब्राह्मणसेविनयकिया हेद्विजरा
तुमने बैकुण्ठनाथके आवनेकाहाल सुनाकर मुझे जीवदान
या मैं इसकेबदले तुमकोतीनोंलोककी सम्पदादूं तोभी तुमसे
ऋणनहींहोसक्ती यहबातकहिकर जैसेरुक्मिणीने कृपादृष्टि
उसब्राह्मणकी ओरदेखा वैसे उसकेघरलक्ष्मीजीका बासहोगय
फिर वहब्राह्मण आशीर्वाददेकर राजाभीष्मककेपास चलागय
औरश्यामसुन्दरके आनेकासमाचार ज्योंकात्यों राजासे कहि
याजबराजानेसुना किश्रीकृष्णचन्दआनन्दकन्द मेरेयहाँबिवा
करनेवास्ते आनकरबागमेंटिकेहैं तबवह उसीक्षणबड़ेहर्षसे बहु
रत्नादिकसाथलेकर अपनेचारोंछोटेबेटोंसमेत वाटिकामें चल
गया जब उसनेदूरसे राम व कृष्णदोनों भाइयोंको बैठेहुये देख
तबसवारीपरसेउतरकर पैदलउनकेनिकटचलागया व रत्नादि
उन्हैंभेंटदेकर विनयपूर्वकबोला॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ० मेरे मनबच तुमहो हरी। कहाकहों जो दुष्टन करी॥

हे महाप्रभु जबआपनेदयालुहोकर अपनादर्शनमुझेदिया तबमैं कृतार्थहोकर अपनेमनोरथकोपहुँचा फिर राजाभीष्मक बहुतअच्छेस्थानमें श्याम व बलरामको टिकाकर राजमन्दिरपर चलाआया व सबपदार्थ भोजनादिकका उनकेयहांभेजकर यों कहनेलगा कि रुक्मिणी श्रीकृष्णजीकेसाथ बिवाहनेयोग्यहैं पर क्या करूं मेराकुछ बशनहींचलता॥

चौ० हरि चरित्र जानै नहिं कोय। क्या जानै अब कैसी होय॥

जबकुण्डिनपुर बासियोंने दोनोंभाइयोंके आनेकाहालसुना तबसब छोटेबड़ोंने उत्तम २ भूषण व बस्त्रपहिनकर झुंडकेझुंड उनके दर्शनवास्ते वहांपहुँचे व उन्हें दण्डवत्करके अपने अपने लोचनोंकाफल प्राप्तकिया व बड़ेहर्षसे आपसमें कहनेलगे॥

दो० हैं अति सुन्दर श्यामबर कहैं परस्परलोग। यह शिशुपाल महाअधम नहीं रुक्मिणीयोग॥

परमेश्वरकीदयासे हमारीइच्छापूर्ण होकर रुक्मिणीका बिवाह मुरलीमनोहरकेसाथ होवे और श्याम व बलराम दोनोंभाइयोंकी जोड़ी चिरंजीविरहै हे राजन् जब चारघड़ी दिनरहा तबराम व कृष्णरथपर बैठकर कुण्डिनपुरकी शोभादेखनेवास्ते निकले जिसगली व बाज़ार व चौराहेपर उनकीसवारी पहुँचतीथी वहांके सबस्त्री व पुरुष अपनी२ खिड़की व चौबारे व द्वारोंपरसे दोनों भाइयों पर पुष्पआदिक बरसाकर आपसमें यों कहतेथे॥

चौ० नीलाम्बर ओढ़े बलराम। पीताम्बर पहिने घनश्याम॥
कुण्डल चपल मुकुटशिरधरे। कमल नयन माधव मनहरे॥

जब श्याम व बलराम नगरकीशोभा व राजाशिशुपाला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिककी सेना देखतेहुये अपनेडेरेपर पहुँचे तबरुक्म्यग्रज उसके आनेका हालसुनतेही बड़ेक्रोधसे अपनेबापकेपासजाकर बोला तुम सच्चबतलाओ श्रीकृष्णहमारेयहां बिवाहमें बिघ्नकरनेवास्ते किसकेबुलानेसे आये हैं राजाभीष्मकने कहा मैंने उनकोनहींबुलाया तब वहजनवासेमें जाकर शिशुपाल व जरासन्धसेबोला कुण्डिनपुरमें श्याम व बलरामभीआयेहैं सोतुम अपनेसेनापतियों से कहदेव कि चैतन्यरहैं उनदोनोंभाइयोंकानाम सुनतेही राजाशिशुपाल मारेडरके चित्रकारीसा चुपचाप रहकर कुछ नहींबोला परजरासन्धनेरुक्मसेकहा सुनोमित्र इन्हीं दोनोंभाइयोंने राजाकंसादिक बड़े२शूरबीरोंको सहजमेंमारलियाथा यहां जो आयेहैं तो अवश्य कुछउपाधिकरैंगे इन्हें तुमबालक मतसमझो यह बड़ेप्रतापीहोकर आजतक किसीसे नहींहारे सत्रहबेरतेईस २ अक्षौहिणीदल मेरा इनदोनोंभाइयोंने लड़करमारडाला जब अठारहवींबेर मैं सेनालेकर इनपरचढ़ा तब यहदोनोंभाईबिनालड़े मेरेसामनेसेभागकर पर्वतपरचढ़गये जब मैंने उसपहाड़केचारोंओर आगिलगवादीतबयहांसेकूदकरद्वारकामेंजाबसे

दो० इनको काहू भेद न पायो। करन उपद्रव यहँभी आयो॥
यह हैं छली महाछलकरैं। काहूको नहिं जानो परैं॥

इसवास्ते अबकोई ऐसाउपायकरना चाहिये जिसमें हमलोगोंकी लाजरहै यहबात सुनकर रुक्म्यग्रज अभिमानसे बोला श्याम व बलराम क्या बस्तुहैं जिनसेतुम इतनाडरतेहो मैं उनकोअच्छीतरह जानताहूं वृन्दाबनमें नाचगायकर गौवैं चरायाक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रतेथे वेबालक गवांरयुद्धकाहाल क्याजानतेहैं तुमकिसीबातकी
चिंतामतकरो कृष्णबलरामकोयदुबंशियोंसमेत हमअकेलेहटा
देवैंगे हेराजन् उसदिनरुक्मइसतरह उन्हैंबोधदेकर अपनेघरच
लाआया व शिशुपाल व जरासन्धनेआपसमें अनेकउपायबिचा
रकर बड़ीचिन्तासे वहरातकाटी प्रातसमय वहदोनोंइधरबरातनि
कालनेकीतैयारीकरनेलगेवउधरराजाभीष्मककेयहांमंगलाचा
रवबिवाहकाउद्योगहोनेलगा व जातिभाइयोंकी स्त्रियोंनेरुक्मि
णीकोउत्तम २भूषण व बस्त्रपहिनाकर दुलहिनोंकेसमानबनाया
जबचारघड़ीदिनरहे बहुतसीब्राह्मणी जो उसरोजमौनब्रतरक्खे
थीं रुक्मिणीकोहज़ार सहेलियोंसमेतसाथलेकर गावतीबजाव
ती देवीपूजाकरनेवास्तेचलीं तबराजाशिशुपालने यहसमाचार
सुनकर इसडरसे कि कदाचित्मोहनष्यारे रुक्मिणीकोबरजोरी
उठानलेजावें पचासहज़ारशूरबीर उसकीरक्षाकरनेवास्ते संगकर
दियेसो वहलोग अनेकतरहकेशस्त्रलेकर राजकुमारीकेसाथचले
उससमय रुक्मिणीसहेलियोंके झुण्डमेंधीरे २ हंसरूपीचाल
चलतीहुई कैसीसुन्दरमालूमहोतीथी जैसेचन्द्रमातारोंमेंशोभा
देतेहैं व शिशुपाल व जरासन्धकेशूरबीर कालेकालेकपड़ेपहिने
उसकोचारोंओरघेरेहुये श्यामघटासेमालूमहोकर बीचमेंजड़ाऊ
मालापहिननेसे कान रुक्मिणीजीका बिजुलीकीतरहचमकता
थासोरुक्मिणीजीनेमन्दिरमेंपहुँचकर देवीजीकाचरणधोया व
विधिपूर्वक पूजनकरकेहाथजोड़कर विनयकिया ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो॰ बालापनते करतिहौं बहुबिधान ते सेव। जो तुम सांची गौरिहो मनमानतफलदेव॥

यहबचनसुनतेही दूसरीस्त्रियोंनेभी जो उसकेसाथमेंथीं हाथ जोड़करकहा हेअम्बिकामाता ऐसीकृपाकरो जिसमेंराजदुलारी का मनोरथमिलै जबपूजाकरने व परिक्रमालेने व ब्राह्मणखिला वनेउपरांत वहचंद्रमुखी जिसकेप्रकाशसे अँधेराछूटजाताथा रो लीकीबेंदीलगाकर मंदिरसेबाहरनिकली उससमयवहमृगलोच नी ऐसीसुन्दर मालूमदेतीथी जिसपरहजारोंरति कामदेवकीस्त्री न्यवछावर होजावें॥

दो॰ वादिन रुक्मिणि प्रातते धरेहती ब्रतमौन। पूजाकरि छबिसों चली बरणिसकै कबिकौन॥

हे राजन् जिससमयवहमहासुन्दरी श्यामामिलनकी आशा लगाये गजरूपीचालसे धीरेधीरेसहेलियोंसमेत राजमन्दिरपर आवनेलगी उसीसमयश्रीकृष्णचन्द्रआनन्दकन्दभी तीनोंलोक की सुन्दरताईधारणकिये अकेलेरथपरबैठेहुये वहांआनपहुँचे॥

दो॰ पूजिगौरि छबिसोंचली एककहत अकुलाय। सुनप्यारी आयेहरी देखध्वजा फहराय॥

यहबचनसुनतेही जैसेराजकुमारीनेघूंघटउठाकर मुसुकराती हुई रथकीओरदेखा वैसेसबशूरबीररखवारीकरनेवाले वहांतिरछी चितवन व मन्दमुसुकानदेखतेही ऐसेअचेतहोगये कि शस्त्रउन केहाथसे गिरपड़े॥

सो॰ भृकुटी धनुष चढ़ाय चिल्ला अञ्जन बांधके। लोचन बाण चलाय मारे वै जीवतरहे॥

उसीसमय वृन्दाबनबिहारीने अपनारथसखियोंके झुण्डमें लेजाकर रुक्मिणीकेपासखड़ाकरदिया जैसेराजकुमारीनेलज्जा तीहुई हाथबढ़ाकर मोहनप्यारेकोमिलनेचाहा वैसेश्यामसुन्द

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने बायेंहाथसे रुक्मिणीकाहाथपकड़के अपनेरथपरबैठालिया व शंखबजाकर वहांसेरथअपनाहांका॥

चौ० कांपतगात सकुच मन भारी। छांड़ि सबै हरिसंग सिधारी॥
ज्यों बैरागी छांड़ै गेह। कृष्णचरण से करै सनेह॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित रुक्मिणीअप नेव्रत व पूजाकाफलपाकर पिछलासबशोचभूलगई व राजाजरा सन्ध व शिशुपालकेशूरबीरोंसे कुछनहींबनपड़ा श्रीकृष्णजी इस तरह उनलोगोंकेबीचमेंसे रुक्मिणीकोलेकरचलेगये जिसतरह सिंह सियारोंकेगोलमेंसे अपनाआहारलेकर निर्भयचलाजाता है जबवहांसेबाहरकोशपर रथमुरलीमनोहरकाजापहुँचा तबवह शूरबीर सचेतहोकर उनकेपीछेदौड़े॥

दो० ऐसीबिधि कन्याहरी भई प्रकट यहबात। सबराजा सुनकर कुढ़े मनहींमन पछितात॥

जब बलरामजीनेदेखा कि श्यामसुन्दररुक्मिणीको रथपर बैठाकर द्वारकाकीओरचलेजातेहैं तबवहभीअपनीसेनासाजकर शत्रुओंकेलड़नेवास्ते श्रीकृष्णजीकेपासचलेआये और मुरली मनोहरने रुक्मिणीकोडरसेघबड़ाईहुईदेखकरकहा हेप्राणप्यारी अब तू किसीबातकाशोचमतकर द्वारकामेंपहुंचतेही शास्त्रानु सार तुझसेबिवाहकरके तेरामनोरथपूर्णकरूंगा जबश्यामसुन्दर इसतरहधैर्यदेकर अपनेगलेकीमाला रुक्मिणीकोपहिनादी तब उसकाभयछूटगया॥

चौवनवां अध्याय॥

जरासन्ध व रुक्म्यग्रज आदिक को श्याम व बलरामसे युद्धकरना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षितजबमुरलीमनोहर रुक्मिणीको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसतरह हरलेगये और यहसमाचार शिशुपालनेसुना तब ज
रासन्ध व दन्तबक्र आदिकसबबरातवाले राजाअपनी २ सेना
साथलेकर श्यामसुन्दरकेपीछेचढ़दौड़े व आपसमें कहनेलगे कि
बड़ेलज्जाकीबातहै हमलोगोंके रहनेपरभीयादवकाबेटा रुक्मि
णीकोबरजोरी हरलेजावै जबइसीतरहकी चर्चाआपसमेंकरतेहु
येनिकटरथ श्यामसुन्दरकेपहुँचे तबउनलोगोंने ललकारकरक
हा तुमदोनोंभाई कहांभागेजातेहो खड़ेहोकर हमारेसाथलड़ाई
करोजोशूरबीरक्षत्रियहैं वहयुद्धबिषेपीठनहींदिखलाते यहबचन
सुनतेही बलरामजीने अपनीसेनासमेत फिरकर उनलोगोंसेऐसा
युद्धकिया किदोनोंओरसे अनेकशस्त्रचलकर नदीरूपी रुधिरब
हिनिकला ऐसाभारी युद्धदेखकर रुक्मिणी घबड़ागई औरबड़े
शोचसे मनमेंकहनेलगी देखोमेरेवास्ते श्याम व बलरामइतना
दुःखपातेहैं हेपरमेश्वर यहसबशत्रुकबतक लड़ैंगे व इतनीसेना
किसतरह मारीजावैगी जबरुक्मिणीइसीतरह अनेकबातैं बिचा
रकरमारेडरके कांपनेलगी तबबैकुण्ठनाथअन्तर्य्यामीने उससे
कहातूमेरीमहिमा जानबूझकर इतनाक्योंडरतीहै धैर्य्यरखअभी
एकक्षणमें यहसबशत्रु इसतरहमारेजावैंगे जिसतरहसूर्य्यनिक
लनेसेतारेदिखलाई नहींदेते जबमुरलीमनोहरकेसमझानेपरभी
राजदुलारीका डरनहींछूटा तबउन्होंने आपलड़नाउचितनहीं
जाना व रथअपनारणभूमिसेअलगलेजाकर खड़ाकरदिया और
युद्धकाकौतुक देखनेलगे ॥

दो० यादव असुरन से लड़त दोउ महासंग्राम । ठाढ़े देखत कृष्णहैं करत युद्धबलराम ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उससमय बलरामजीने क्रोधित होकर हल व मूशलअपना उठालिया व बड़े २ शूरबीर व हाथी व घोड़ोंकोउससे मारनेलगे जिसतरह किसानलोग खेतकाटडालतेहैं उसीतरह बलभद्रजीने क्षणभरमें बहुतसीसेना शत्रुओंकी मारगिराई जबजरासन्धआदिकराजोंने यहदशाअपनीसेनाकीदेखी तबरणभूमिसेभागकर शिशुपालके पासचलेआये इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षितउससमयदेवताअपनेबिमानों परसे बलरामजीपर पुष्पबर्षाकर उनकी स्तुतिकरनेलगे जबशिशुपालने यहदुर्दशा अपनेसाथी राजोंकीदेखी तबमारेशोच व लज्जाके मुखउसका पीलाहोगया औरजरासन्धसे रोकरकहा महाराजरुक्मिणीको श्रीकृष्णचन्द्र बरजोरी उठालेगये व लड़ाईमेंभी हमलोगोंसेकुछ नहीं बनपड़ा इसलियेलज्जाबश मुझसे अपनामुखकिसीकोदिखलायानहींजाता औरयहकलंक मेराजन्मभर नहींछूटैगा इससेकहोतो मैंभी लड़करमरजाऊं॥

चौ० नाहिं इत रहौं करौं बनबासा। लेइहौं योग छांड़ि सब पासा॥

यहबातसुनकर जरासन्धनेकहा महाराज आपऐसेज्ञानीको मैंक्यासमझाऊं बुद्धिवान्लोगहानि व लाभमेंहर्ष व विषादनकरके सब बातोंकोपरमेश्वरके अधीनसमझतेहैं जिसतरहकाठकीपुतलीको मदारीनचातेहैं उसीतरहसबजीवोंके कर्त्ता धर्त्ता नारायणजीहोकरजोचाहतेहैं सो होताहै इसलियेदुःख व सुखकोएक समानजानकरसंसारीव्यवहारस्वप्नवत् समझनाचाहियेदेखोइसीतरहमेंभीसत्रहबेर इनसेहारगयाथा परकुछउदासनहींहुआ जब अ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ठारहवींबेर यहदोनोंभाई मेरेसामनेसेभागगये तबमैंने कुछह
भीनहींकिया नमालूम यहदोनों कौनअवतारऐसेबलवान् व प्रता
पी हैं जिनसेकोई जीतनेनहींसक्ता ॥

दो० सुखपाछे दुखहोतहै यही जगतकी रीति। कबहूं रणमें हारिहै कबहूं लीजै जीति ॥

इसलिये यहसमयटालदेनाउचितहै जिसतरहअठारहवींबे
मेरामनोरथमिलाथा उसीतरह आपभीजीतेरहैंगे तो एकदिनतु
म्हारी इच्छापूर्णहोजावैगी जब इसतरहसमझानेसेशिशुपालको
धैर्य्यहुआ तबवह और सबराजेउसकेसाथी सेनासमेतजोजीते व
घायलबचगयेथे अपने २ देशको चलेगये व यादवबंशियोंने सब
बस्तुलूटकी द्वारकामेंभेजदी ॥

दो० लज्जितहोके फिरचल्यो हारमानिशिशुपाल। सबराजनको जीतिकै कूचकियो नँदलाल ॥

जबरुक्म्यग्रजने जरासन्धआदिकके भागआवनेकासमाचार
सुना तबबहुतक्रोधितहोकर अपनीसभामेंआनबैठा व सबलोगों
को जो वहांनेवताकरनेआयेथे बड़ेशब्दसेसुनाकरकहनेलगा यह
कौनबातहै जोमेरीबहिनकोबरजोरी कृष्णचन्द्रउठालेजावैं जब
तक मेरेतनुमेंप्राणहै तबतकरुक्मिणीको नहींलेजानेदूंगा अवमैं
यहप्रणकरताहूं कि अभीजाकर दोनोंभाइयोंकोमारने या जीत
पकड़नेउपरांत रुक्मिणीको न लेआऊं तो अपनानामरुक्मन
खकरकुंडिनपुरमें किसीकोअपना मुँहनदिखलाऊं ऐसाकहकर
एकअक्षौहिणी दलसे उनकेपीछे चढ़दौड़ा औररास्तेमें अपने
नापतियोंसे कहा तुमलोगयादवबंशियोंको मारो मैं अपनारथ
आगेकोबढ़ाकर कृष्णको जीतापकड़लेआवताहूं यहबचनसु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेहीसेनाउसकी यदुबंशियोंसे जोबलरामजीकेसाथमेंथे लड़नेल
गी व रुक्मनेरथ अपनाआगेबढ़ाकर श्यामसुन्दरसेललकारकेक
हाहेयादव कहांभागाजाताहै तुझेसामर्थ्यहो तोएकक्षणठहरकर
मेरेसाथयुद्धकर मुझेशिशुपाल व जरासन्धआदिकमतसमझना
जिसतरहगोकुल व वृन्दावनमें अहीरियोंकागोरसचुराकरखाया
करतेथे उसीतरहमुझकोभी ब्रजबासीअहीरसमझकर मेरीबहिन
चुरालेभागे तुझेइसबातकाकुछभयनहींहुआ कि रुक्मिणीमुझ
ऐसेशूरबीर व प्रतापीकीबहिनको बरजोरीउठालेचला आजतक
तुमने राजाभीष्मककानामभीनहींसुनाथा जो ऐसीअनीतिकी
जो लोगतुम्हारे सन्मुखसेभागगयेहैं वहक्षत्रीनहींथे अबमेरेसाम
नेसे तुमकोजीतेबचकरजाना बहुतकठिनहै जब इसीतरहकी अ
नेकबातैं अभिमानपूर्वक रुक्मनेकहकरबहुतसेतीर श्यामसुन्दर
परचलाये तबद्वारकानाथने अपनेबाणसे वहसबतीरकाटडालेफि
रकेशवमूर्त्तिनेचारबाणसेचारोंघोड़ा और उसकेरथकोमारकर ए
कतीरसेसारथीको अचेतकिया व एकबाणसे रथकीध्वजागिराकर
दूसरेतीरसे धनुषउसकाकाटडाला जब रुक्मनेछोटे २ गदाआदि
कअनेकशस्त्र मुरलीमनोहरपरचलाये व उनअस्त्रोंकोभी श्याम
सुन्दरनेअपनेबाणोंसेकाटडाला व कोईअस्त्रउसकामोहनप्यारेके
नहींलगा तबइसतरहक्रोधकरके ढालतलवारहाथमेंलियेहुयेरथ
सेकूदकर वृन्दावनबिहारीपरझपटा जिसतरहपतंगआपसेजलने
वास्ते दीपकपरजागिरताहै याजैसेबौड़हागीदड़हाथीपरझपटै तब
मुरलीमनोहरने उसकीढालतलवारभी बाणसेकाटकरगिरादिया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० तेहिअवसरकोपितभये माखनप्रभु ब्रजनाथ। रुक्महतनकेकारणे लियोखड्गनिजहाथ॥

जब श्रीकृष्णचन्द्रनेनंगीतलवारलियेहुये रथसेकूदकर रुक्म काशिरकाटनेचाहा तबरुक्मिणीयहदशा अपनेभाईकी देखका डरती व कांपतीहरिचरणोंपरागिरपड़ी व रोतीहुई हाथजोड़का बोली॥

चौ० मारो मति भाई है मेरो। छांड़ो नाथ तुम्हारो चेरो॥
मूरख अन्धकहायहजानै। लक्ष्मीपतिकोमानुषमानै॥
नहिंजानैकोइतुम्हरोअन्त। भक्तहेतु प्रकटे भगवन्त॥
यहजड़कहातुम्हैंपहिचानै। दीनदयालुजगतुम्हैंबखानै॥

सोमैंदीनहोकरकहतीहूं हेदीनानाथ जिसतरह आपबलभद्र जीको प्याराजानतेहैं उसीतरहमेराभाई मुझकोभीप्याराहै जिस तरह ज्ञानीलोगबालक व बौड़हे व मूर्खकेअपराधपर कुछध्यान नहींकरते दुर्बचनउनकोकुत्तेके भूंकनेसमानसमझतेहैं उसीतरह आपभी मेरेभाईकोमूर्खसमझकर इसकाप्राणमुझेदानदीजिये कदाचित् आपइसकोमारडालैंगे तो मेरेपिताको जोतुम्हाराभक्त है बड़ादुःखहोगा और यहबातसंसारमेंप्रकटहै कि जहांतुम्हारेच रणजातेहैं वहांसबकोसुखमिलताहै सो यहबड़ा आश्चर्यसमझ नाचाहिये कि भीष्मकतुम्हाराश्वशुरहोकर पुत्रकाशोकउठावे॥

चौ० बन्धु भीख प्रभु मोको दीजै। इतनो यश तुम जगमें लीजै॥
दो० जोतुमयाको मारिहौ माखनप्रभु ब्रजराज। तोमोको सबसृष्टिमें अपयशहूवै है आज॥

हेराजन्यहबातसुनने व रुक्मिणीकीदशादेखनेसे श्यामसुन्द रनेप्राणलेना रुक्मकाछोड़कर जैसेसारथीकोसैनमेंबतलाया वैसे उननेरुक्मकीपगड़ीउतारकरभुजा उसकीबाँधमूछ व डाढ़ी व शि रकेबालमूड़कर सातचोटीरखनेउपरांत उसेअपनेरथमेंबांधलिया इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित उधर श्रीकृष्ण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चन्द्रजीने रुक्मकीयहदुर्दशाकी इधरबलरामजीसेना उसकी मार व भगाकरयदुबंशियोंकोसाथलिये इसतरहबड़ेहर्षसे केशव मूर्त्तिकेपासपहुंचे जिसतरहऐरावतहाथी कमलबनकोरौंदकरतो ड़ताचलाआवताहै जब रुक्मकोबांधादेखकर सबयदुबंशीहँसने लगेतबबलभद्रजीने मुरलीमनोहरसेकहा हेभाईरुक्मसेतो भूल हुईथी परआपनेभीअच्छानहींकिया जो अपनेसालेका शिरमुड़ वाकर उसेबांधरक्खाहै इसतरहकेजीनेसे रुक्मकामरनाउत्तमथा कदाचित्यहयुद्धविषे सन्मुखमाराजाताते अप्सराहाथोंहाथइसे उठाकरस्वर्गमेंलेजातीं अबतुम्हारीसरहजभी इसकासंगप्रसन्न तासेनहींकरैगी ॥

चौ० बांध्यो याहि करी बुधि थोडी। फिर तुम कृष्ण सगाई तोड़ी ॥
यदुकुलको तुम लीक लगाई। अब हमसे को करै सगाई ॥
दो० अब याकीगति देखिकै मनमें आवै त्रास। नारि आपनी होय जो सोउ न आवैपास ॥

इसलिये जिससमय रुक्मतुम्हारेसामनेलड़नेआयाथा उसी समय उसकोसमझाकर बिदाकरदेनाउचितथा इष्टमित्र व सम्बन्धियोंको अपराधकरनेपरभीमारना व बांधनानचाहिये सोआपने प्राणलेनेसेभी अधिकदण्डइसकोदिया अबइसेबांधकररखनेसे क्यागुणनिकलेगा यहबचन अपनेभाईकासुनतेही श्रीकृष्णजी ने रुक्मकोछोड़दिया तब बलदाऊजीने उसेबहुतसंतोषदेकरजा नेवास्तेकहा व रुक्मिणीजीसेबोले ऐराजकन्यातुम्हारेभाई की जो यहगतिहुई इसमेंकुछदोष श्यामसुन्दरकानहींहै यहसब इस केपिछलेजन्मकेकर्मोंकाफलथा क्षत्रियोंकायहधर्म है कि पृथ्वी व द्रव्य व स्त्रीकेवास्ते आपसमेंझगड़ाकरतेहैं जबदोमनुष्यलड़ेंगे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तौ उसमेंसेएकजीतकर दूसराअवश्यहारेगा कर्मकालिखाहुआ किसीतरहनहींमिटता जो २ कुछ रुक्मकेभाग्यमेंलिखाथासोहु आ व संसारमेंजिसनेजन्मपाया वहअवश्यदुख व सुखउठावताहै व जीवात्मासदाअमररहकरकभीनहींमरता औरयहशरीरसदाव नताबिगड़तारहताहै इसवास्ते अज्ञकीदुर्दशाहोनेसेजीवात्माकी निन्दानहींहोती इसलिये तुमरोना अपनाछोड़करयहसबदुःख रुक्मकेप्रारब्धाधीनसमझो यहबातसमझानेसे रुक्मिणी अपने मनकोधीर्यदेकरचुपहोरही व रुक्मविदाहोतेसमय शिरअपना ऊपर चरणश्यामसुन्दरकेरखकर विनयकिया हेदीनानाथमैं तु म्हारीमहिमानहींजानताथा इसलिये मुझसेअपराधहुआ अब दयालुहोकर उसेक्षमाकीजिये जबब्रह्मा व महादेवआदिक देवते आपकोनहींपहिचानसके तो मेरीक्यासामर्थ्यहै जो तुम्हारीम हिमाजाननेसकूं इसीतरहबहुतविनती व स्तुतिकरके रुक्मवहां से बिदाहुआ॥

दो० कहैसुन्दरीसैनमें किये जेठकीलाज। अबविलम्बक्योंकरतहौ हांकोरथ ब्रजराज॥

यहमनसारुक्मिणी की समझकर श्रीकृष्णजीने रथ अपना द्वारकाकीओर हांकदिया व रुक्मअपनी प्रतिज्ञानुसारराजमंदि रपरनहींगया व कुण्डिनपुरकेनिकटभोजकटनाम दूसरानगरब साकरवहांरहा व राजाभीष्मकसे मनमेंशत्रुता रखकरअपनीस्त्री व पुत्रोंको वहांबुलाभेजा जबरामकृष्णद्वारकापुरीके निकटपहुं चे तबराजाउग्रसेन व बसुदेवआदिक बड़ेहर्षसे नगरकेबाहरआ नकरसन्मानपूर्व्वक उनकोलिवालेगये व सब द्वारकाबासियों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने अपने २ द्वारेपरमंगलाचार मनाकरउनकी आरतीकी ॥

दो० प्रियासहित श्रीद्वारका यदुपतिपहुँचेआय। पुरबासी प्रफुलितभये आनँदउरनसमाय ॥

जबकेशवमूर्त्ति इसीतरह सबकोसुखदेतेहुये अपनेद्वारेपरपहुँ
चेतबदेवकीजीने बहुतस्त्रियोंसमेत वहांआनकरअपने कुलकीरी
तिकी व रुक्मिणीकी सुन्दरताई देखतेहीबड़ेहर्षसेउसे व मोहन
प्यारेकोमहलमेंलेगईं व राजाउग्रसेन व वसुदेवजीने उसीदिनग
र्गपुरोहितको बुलाकरबिवाहका मुहूर्त्तपूछाजब गर्गमुनिनेशुभल
ग्न बिवाहकाबतलायातबराजाउग्रसेनने अपनेमंत्रियोंको बिवा
हकीतैयारी करनेवास्तेआज्ञादेकर दुर्योधनआदिक अनेकराजों
केयहांनेवता भेजदिया जबराजाभीष्मकने जोअपनी कन्याश्या
मसुन्दरको बिवाहनेचाहताथा द्वारकामेंबिवाहहोनेकी तैयारी
सुना तबउसनेबड़ेहर्षसे अपनेमनमें कन्यादान संकल्पकिया व
बहुतसेरत्नादिक व भूषण व वस्त्र व हाथी व घोड़े व रथपालकी
व दासी व दासअपनेपुरोहित सहितद्वारकापुरीमें बसुदेवजीकेपा
सभेजदिया व बिनतीअपनी कहलाभेजा जबद्वारकामें उधरदे
श २ केराजानेवता करनेवास्ते आनकर इकट्ठेहुये तबइधरसेयह
ब्राह्मण सबबस्तुदहेजकी लेकर वहांपहुँचातोऐसीभीड़ व शोभा
द्वारकामेंहुई जिसकाहाल बर्णननहींहोसक्ता जबबिवाहवालेदि
नकेलोंकेखम्भागाड़कर मखमलीचँदवा रत्नजटित बांधागया
बसुगन्धितपुष्प व नौरत्नकी बन्दनवारबांधकर मोतियोंसेचौक
पुरावनेउपरांत मड़वातैयारहुआ तबराजाउग्रसेन आदिक मोह
नप्यारे व रुक्मिणीको व उत्तम२भूषण व बस्त्रपहिनाकरजड़ाऊ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौकीपर बैठालदिया जबबड़ेबड़े यदुबंशी व नातेदारराजालोग वहांआनकरचारोंओरबैठे व ब्रह्मा व महादेव व कुबेरआदिकसब देवते अपना२ रूपबदलकर वहमंगलाचारदेखनेवास्ते उसजगह इकट्ठेहुये तब गर्गपुरोहितने शास्त्रानुसारबिवाह श्यामसुन्दरका रुक्मिणीकेसाथकरादिया और दोनोंकोभांवरिफिराया॥

चौ० पण्डित तहां बेदध्वनि करैं। रुक्मिणि सँग प्रभु भांवरि फिरैं॥
ढोल नफीरी बहुत बजावें। हरषैं देव सुमन बरसावें॥
सिद्ध साध्य चारण गन्धर्ब। अन्तरिक्ष ह्वै देखैं सर्ब॥
चढ़ि बिमान सब माथ झुकावें। देवबधू सब मंगल गावें॥
हाथ धरे प्रभु भांवरि पारी। बाम अंग रुक्मिणि बैठारी॥
खोलत कंकण कृष्ण मुरारी। ऐसे रस्म रीति सब कारी॥
अति आनन्द रचो जगदीशा। हर्षि हर्षि सबदेहिं अशीशा॥
कृष्ण रुक्मिणी जोड़ी जीवें। यह चरित्र सुनि अमृत पीवें॥

उससमयस्त्रियां मंगलाचारगीत गायकर व अप्सराआकाश में बिमानोंपरनाच २ केप्रसन्नहोतीथीं व गन्धर्बगाना सुनाकेदेवतालोग अनेकतरहके रत्नजटितभूषण दुल्लह व दुलहिनकोपहिनाकर आनन्दमचातेथे जबबिवाहहोचुका तबराजाउग्रसेनने ब्राह्मणोंको बहुतसादान व दक्षिणादेकर सन्मानपूर्बक बिदाकिया व याचकों व मंगनोंकोमुहमांगा द्रव्यादिक इतनादानदिया किउनकोदूसरीजगह मांगनेकीइच्छा नहींरही व सबयदुबंशी व राजालोगोंनेरुपया व अशरफी नेवतादेकर उत्तमउत्तमभूषणव बस्त्ररुक्मिणीको पहिनादिया व राजाउग्रसेननेसबनेवतहारीराजे व कुंडिनपुरवासीब्राह्मणोंको यथायोग्यसन्मानपूर्बक बिदाकियाइतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् उसदिनद्वारकापुरी व तीनोंलोकमें ऐसाआनन्दसबकोप्राप्तहुआ जिसका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हालवर्णननहींहोसक्ता व रुक्मिणीजीके द्वारकामें आनेसे सब छोटेबड़ोंकेघरमें लक्ष्मीजीका बासहोगया व सबराजे उनकेअधीनरहकर अपने २ देशकोसौगात श्याम व बलरामको भेजने लगे जोकोई यहकथा रुक्मिणीमंगलकी सच्चेमनसेकहै व सुनै उसकोभक्ति व मुक्ति सबतीर्थस्नानकरनेका फलमिलताहै॥

पचपनवां अध्याय॥

कथाप्रद्युम्नके जन्मकी॥

इतनीकथासुनकर परीक्षितने पूछा हेमुनिनाथ कामदेवको शिवजीनेकिसतरहजलादियाथा वहकथाबर्णनकीजियेशुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित एकदिन महादेवजी कैलासपर्वतपरबीच ध्यानपरमेश्वरकेबैठेथे उससमयअचानकमें कामदेवनेआनकर उन्हैं ऐसासताया कि ध्यानउनकाखुलगया तबउन्होंनेक्रोधसे अपनीतीसरीआंख खोलकर कामदेवकी ओरदेखातो वहजलकर राखहोगया॥

दो० कामबलीजबशिवदहेउलबरतिधरतनधीर। पतिबिनुअतितलफतखड़ीबिह्वलबिकलशरीर॥

चौ० कामनारि यौं लोटत फिरै। कन्त कन्त कहि चाहत मरै॥

जबशिवजीने यहदशाउसकीदेखी तबप्रसन्नहोकरकहा हेरति तूशोचमतकर कुछदिनबीते कामदेव कृष्णअवतारमें रुक्मिणीकेगर्भसे उत्पन्नहोकर सम्बरासुरके घरआवैगा सोतू सम्बरदैत्यकेयहांजाकररसोई बनानेवास्तेरह वहांतेरास्वामीतुझे मिलकर सुखदेवैगा जबयहसुनकररतिकोधीर्यहुआ तबवहमायावतीनाम वृद्धास्त्रीकारूपधरकर उसदैत्यकेयहां चलीगई व रसोई बनानेवालोंमेंमुखियाबनकर अपनेपतिके मिलनेकी आशामेंरहनेल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गी व परमेश्वरकीआज्ञानुसार कामदेवने रुक्मिणीकेगर्भ से ज
न्मलियासो वहबालक श्रीकृष्णजीके रूपसमान ऐसासुन्दरर
त्पन्नहुआ जिसेदेखकर सूर्यदेवता लज्जितहोजातेथे जबराजा
उग्रसेन व बसुदेवजीने ज्योतिषियोंसे जन्मलग्नका हालपूछा
तबपण्डितोंने जन्मकुण्डली उसकीबनाकरकहामहाराज हमा
रेबिचारमें ऐसामालूमहोताहै कि यहबालकसुन्दरताई व बलव
गुणमें श्रीकृष्णऐसाहोगा औरकुछदिनजलवासकरने व शत्रुको
मारनेउपरांतअपनेमाता व पितासेआनमिलैगाजबब्राह्मणलोग
उसबालककानामप्रद्युम्नरखकर दक्षिणालेनेउपरांतअपने२घर
चलेगये तबबसुदेवजीने अपनेकुलकीरीतिकरकेमंगलाचारमना
यातबपरमेश्वरकीइच्छानुसार नारदमुनिनेसम्बरदैत्यसेजाकरक
हातूनहींजानता कामदेवतेरेशत्रुने प्रद्युम्ननामसे कृष्णचन्द्रकेय
हांजन्मलिया है बारहवर्षकीअवस्थामें वहतुझेमारेगा जबनारद
मुनिऐसाकहकर ब्रह्मलोककोचलेगये तब सम्बरदैत्यनेबिचार
किया मैं अभी प्रद्युम्नकोउठालेआकरसमुद्रमेंडालदूं तो मेरेमन
कीचिन्ताछूटजावे ऐसाविचारतेही सम्बरासुरहवारूपबनकर द्वा
रकामेंआया व रुक्मिणीकेमंदिरमेंजाकर बीचसौरीकेघुसगया
और प्रद्युम्नको जो अठारहदिनकाथा वहांसेउठाकरलेउड़ा पर
किसीस्त्रीने जो सौरीमेंबैठीथी उसेलेजातेनहींदेखा जबरुक्मिणी
अपनाबालक शय्यापरन देखकररोनेलगी तबसबस्त्रियोंने इस
बातकाआश्चर्यमाना व सम्बरदैत्य प्रद्युम्नको समुद्रमेंडालकर
अपने घरचलाआया व श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार प्रद्युम्नको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एक मछलीने निगलकर तीनवर्षतक पालनाकिया जबएकके
वट उसी मछलीको जालमें फंसाकर सम्बरदैत्य के यहांभेटले
गया तबउसने वहमछली अपनेरसोई बनानेवालोंके पास भेज
दिया जबउन्होंने उसमछलीकापेट चीरा तबउसमेंसे एकबाल
कश्यामरंग बहुतसुन्दरजीताहुआ निकला जबवहलोग अच
म्भामानकर उसेमायावतीके पासलेगये तबउसनेबड़े हर्षसे बा
लकको लेलिया व सम्बरदैत्यसे छिपाकर उसेपालनेलगी कु
छदिनबीते सम्बरासुरने भी उसेदेखा तो उसकीसुन्दरताई पर
मोहितहोकर मायावतीसे कहातूइसे अच्छीतरहपालनकरउन्हीं
दिनोंनारदमुनिमायावती केपासजाकरबोले यहबालककामदेव
नामतेरापतिहै औरइसकीमातारुक्मिणी और पिताश्रीकृष्णजी
द्वारकामेंरहतेहैं व सम्बरासुरने इसकोसौरीमेंसे चुराकर बीचसमु
द्रकेडालदियाथा सो महादेवजीके आशीर्वादसेतेरेपासपहुंचा है
अपनाबालापनयहां बिताकर सम्बर दैत्यको मारनेउपरांत तुझे
द्वारकामें लेजायगा यहबातकहकर नारदमुनिचलेगये व रति
यहहालसुनतेही बहुतप्रसन्नहोकर बड़ेप्रेमसे उसकोपालनेलगी
ज्यों २ वहबालकसयानाहोताथा त्यों २ रतिकोअपनेपति मिल
नेकीचाहना बढ़कर यों कहतीथी॥

दो० ऐसोप्रभु संयोग बनायो। मछली माहिं कन्तमें पायो॥

जबप्रद्युम्न पांचवर्षकाहुआ तबरति उसको उत्तम २ भूषण व
वस्त्रपहिनाकर उसेदेख २ अपनीआंखोंको सुखदेनेलगी व प्रद्यु
म्नउसको अपनीमाता समझकर लड़कों की तरह मैयामैया क

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हताथा व मायावती उसकेसाथ कन्तभावरखकर दुलार व प्यार करतीथी ॥

दो० ऐसेही पालत रही बहुतदिना चितलाय। भयो तरुण सुन्दर महा शोभा कही न जाय॥

जब प्रद्युम्ननवदशबर्षकाहोकर सबभला व बुरासमझनेलगा तब उसनेएकदिनमायावतीसे जो अपनाशृङ्गारकरके उसकेसाथ कटाक्षकरतीथीकहा तुमहमारीमाताहोकर मुझेपतिभावसेदेख तीहो यहबातसुनकररतिमुसकरातीहुईबोली ऐकन्ततुमयहक्या बातकहतेहो मैं रतितुम्हारीस्त्रीहूं॥

दो० जन्मलियो श्रीद्वारका सम्बर लियोचुराय। और अवस्था जो हती सो सबकही बुझाय॥

जबप्रद्युम्ननेमायावतीसेसबहाल अपनेजलने व अवतारलेने व समुद्रमेंडालने व मछलीनिगलनेकासुना तब उसनेरतिको अ पनीस्त्रीजानकर सम्बरासुरकोअपनाशत्रुसमझा उससमयमाया वतीबोली हेकन्त शिवजीकेआशीर्वादसे मैंतो अपनेमनोरथको पहुंची पररुक्मिणीमातातुम्हारी ऐसादुःखपावतीहै जैसेबछड़े केबिछुड़नेमें गौकोसुखनहींमिलता इसवास्तेअबतुम्हेंसम्बरदैत्य कोमारकर द्वारकामेंचलकेअपनेमाता व पिताकोसुखदेनाचाहि ये परयहदैत्यमायायुद्धबहुतजानताहै व तुमनेअभीतक युद्धकी विद्या कुछनहींपढ़ी इसलिये वहविद्यामुझसेसीखलेव॥

दो० मैं याकी विद्यासकल तुमको देउँ बताय। जाते सम्बरसुर बली तुमसों जीतो जाय॥

जब प्रद्युम्ननेबारहवर्षकीअवस्थातक सबबाणविद्या व माय युद्धमायावतीसे सीखलिया तब अपनेमनमेंयुद्धकरनेकीसाम पाकर सम्बरदैत्यको दुर्वचनकहनेलगाजिसमेंउससे युद्धहोज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकदिनप्रद्युम्नखेलताहुआशम्बरासुरकीसभामेंचलागया तबउ
सदैत्यने किसीदूसरेसेकहा मैंनेइसबालकको अपनाबेटाकरकेपा
लाहै यहबचनसुनकर प्रद्युम्नतालठोंककरबड़े क्रोधसेबोलामुझे
अपनालड़कामतसमझो मैंतुम्हाराशत्रुहूं मुझसेलड़करमेराबल
देखलेव यहबचनसुनकरशम्बरासुरहँसताहुआ अपनेसभावालों
सेबोला देखोभाईजैसेमैंनेदूधपिलाकर सांपकोपाला वैसेयहमेरे
वास्तेदूसरा प्रद्युम्नउत्पन्नहुआ ऐसाकहकरशम्बरदैत्य प्रद्युम्न
सेबोलाऐबेटातुम्हारी क्यामृत्युआईहै जोऐसीकठोरबातैं मुझसे
कहतेहो उसनेउत्तरदिया कि मेराहीनामप्रद्युम्नहै तुमनेतो मुझ
कोसमुद्रमेंफेंककर मेराप्राणलेनेचाहाथा परनारायणजीकीदया
से जीताबचकर आजतुमसेअपनाबैरलेनेआयाहूं जिसतरह तुम
नेअपनाकालघरमेंपालाथा उसीतरह अबमुझसेलड़ाईकरो कोई
किसीकाबाप व बेटानहींहोता संसारकीगतिसदासे इसीतरहपर
चलीआतीहै यहबातसुनकर शम्बरासुरबड़ाशोच व क्रोधकरके
अपनीसेनासमेत प्रद्युम्नसेलड़नेवास्ते नगरकेबाहरनिकला व
गदाहाथमेंलेकर प्रद्युम्नसेललकारकेबोला देखैं अबतेराप्राणकौ
नबचाताहै जबऐसाकहकरशम्बरदैत्यनेउनपरगदाचलाईप्रद्युम्न
ने अपनीगदामारकर उसकीगदागिरादी तबशम्बरासुरने अग्नि
बाण उसकेऊपरछोड़ा जबउसेभी प्रद्युम्ननेजलबाणमारकर बु
झादिया तबशम्बरासुरनेझुंझलाकर अनेकतरहकेशस्त्र उसपर
चलाये जबप्रद्युम्ननेवहभीसबकाटकरगिरादिये तबदोनोंमनुष्य
रूपसेंलपटकर मल्लयुद्धकरनेलगे जबकुश्तीमें प्रद्युम्ननहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हारा तबशम्बरदैत्यमंत्रकीविद्यासे उसपरपत्थरबरसानेलगा जब
प्रद्युम्नने अपनेमंत्रसेपत्थरबरसाना बन्दकरदिया तबशम्बरासुर
मायाकेबलसे प्रद्युम्नकोउठाकरआकाशकीओरलेउड़ा उससम
य प्रद्युम्नने क्रोधकरकेएकतलवार शम्बरदैत्यके ऐसीमारी कि
शिरउसकाभुट्टासा कटकरपृथ्वीपरगिरपड़ा वक्षणभरमेंउसकीसे
नाभीकाटडाली तबदेवतोंनेप्रसन्नहोकर आकाशसे उनपरफूल
बरसाये व संसारीलोग जो उसकेडरसे यज्ञ वहोमनहींकरनेपाते
थे आनन्दहोगये वप्रद्युम्नकी बहुतस्तुतिकरकेबोले श्रीकृष्णजी
बैकुण्ठनाथका सामनाकोईनहींकरसक्ता अबउनकापुत्रभीऐसा
बलवान्उत्पन्नहुआ जिसकेबराबर कोईदूसराशूरबीर संसारमें
दिखलाई नहींदेता॥

दो० जो ऐसे बलदेखते निजसुतको भगवान। करते मनमें मुदितहवे तिहूंलोकको दान॥

जबप्रद्युम्नने शम्बरासुरकोमारकर श्यामसुन्दरकीदुहाई उस
नगरमें फेरदी तबमायावतीनेप्रसन्नहोकर निजरूप अपनारति
कामहासुन्दरबारहवर्षकीअवस्थाकाबनालिया व उड़नखटोलने
पर अपनेपतिसमेत बैठकर द्वारकाकोगई उससमयप्रद्युम्नश्याम
रंग वरतिचन्द्रमुखी दोनोंआकाशमें कैसेसुन्दरमालूमदेतेथे जै
से कालीघटामेंबिजुली शोभादेतीहै जबवह रुक्मिणीकेआंगन
में उड़नखटोलने से उतरकरखड़ेहुये तबसबस्त्रियां श्यामसुन्द
की जोप्रद्युम्नकेहरने उपरांतब्याहीगईथीं प्रद्युम्नको जो केश
मूर्त्तिके रूपसमानथा देखकर चौंकउठीं व उनकेमनमें इसबा
कामदेवहुआ कि मुरलीमनोहर यहनईसुन्दरी और कहींसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

येहैं तबउन्होंने उसकीसुन्दरताई देखनेवास्ते चारोंओरसे आन कर घेरलिया और यहभेद किसीनेनहींजाना कियहप्रद्युम्नहैउस समय श्रीकृष्णकुमारने सबस्त्रियोंसेपूछा कि हमारेमाता व पिता कहांहैं जबयहबातसुनकरसबस्त्रियोंको अचम्भामालूमहुआतब उन्होंने प्रद्युम्नकीओर आंखउठाकर देखातो चिह्न भृगुलताका उनकीछातीपर नहींदिखलाईदिया तबउन्होंनेसमझा कि यह श्रीकृष्ण न होकर कोईदूसरापुरुषहै और रुक्मिणीने प्रद्युम्नका मुखारविन्ददेखकर अपनीसहेलियोंसेकहा बड़ाभाग्यउसस्त्रीका समझनाचाहिये जिसनेऐसासुन्दरपुत्रजना औरयहस्त्रीभीसुन्द रताईमेंइसबालक की बराबरहै मेराबेटाभी जोकोईचुरालेगयाइ सीरूपकाथापरमेश्वरकी दया व मेरेभाग्यसे जीताहोकरयहवही बालकआयाहो तो आश्चर्य्यनहीं मेराबेटाभीरहता तो इसीअव स्थाकाहोता ऐसाविचारकर रुक्मिणीने प्रद्युम्नसेपूछा॥

दो० जन्म भयो केहिगांवमें कहा तुम्हारोनांव। कौन तुम्हारे मातुपितु क्यों आयो यहिठांव॥

यहवचनकहतेही रुक्मिणीको प्रेमहुआकिउसकी छातीसेदू धवहानिकला व बायांअंगफड़कनेलगा तबउसेविश्वासहुआ कि यहमेरापुत्रहै यहबातसमझतेही रुक्मिणीनेचाहा कि मैं उसको गोदमें उठाकरप्यारकरूं परबिनाआज्ञा अपनेस्वामीकी ऐसाउ चितनजानकर मनमेंशोचबिचार कररहीथी कि उसीसमयवसु देव व देवकी व कृष्णचन्द्रनेवहां पहुँचकरयहहालदेखा जबश्या मसुन्दरनेसबभेद जाननेपरभीकुछ हालप्रद्युम्नका किसीसेनहीं कहातबउनकीइच्छानुसार उसीक्षण नारदमुनिने वहांआनकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबहालप्रद्युम्नका ज्योंकात्यों कहसुनाया व रुक्मिणीसेबोलेय
हतेराबेटाहै यहबचनसुनतेही रुक्मिणीने दौड़कर प्रद्युम्नको गो
दमेंउठालिया व शिर व मुखउसका चूमकरबलायेंलेने लगी जि
सतरहबिछुड़ेहुयेबेटा मिलनेसेमाता व पिताकोहर्ष होताहैउसीत
रहरुक्मिणीको आनन्दप्राप्तहुआ व उसनेरतिको अपनेगोदमें
बैठाकरबहुतसा प्यारकिया॥

दो० देखिपुत्र प्रफुलितभईं या बिधि रुक्मिणिमाय। हर्ष न जाके चित्तकी धर्षणकहो न जाय॥

श्रीकृष्णजीभी अपनेपुत्र व पतोहूकोदेखकर बहुतप्रसन्नहुये
श्यामसुन्दरअन्तर्यामीसबहालजानतेथे किमेराबेटाशम्बरासु
केयहांहै परइतने दिनतकउन्होंने यहभेद रुक्मिणीसेनहीं कहा
था जबप्रद्युम्नने शिरअपनाऊपरचरण माता व पिता व दादा व
दादीआदिककेरखकर अपनेबड़ोंकोपहिंचाना तबसबोंने उसको
आशिषदेकर प्यारकिया व बहुतसाद्रव्यादिक उसकेहाथसेदान
व दक्षिणादिलवाया व सबस्त्री व पुरुषद्वारका बासीअपने २ घर
मंगलाचारमनाकर कहनेलगे वसुदेवनन्दनकाबड़ाभाग्यहै जो
खोयाहुआ पुत्रएकस्त्री महासुन्दरीअपनेसाथलेकर उनकेघर
लाआया॥

दो० नरनारी मोहेसबै देखिप्रद्युमन रूप। बिनु देखेक्षण ना रहैं ऐसो रूप अनूप॥

वसुदेवजीने शुभलग्नमें बड़ेधूमधामसे बिवाहप्रद्युम्नकारि
केसाथकरदिया इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले हे राज
इसतरह कामदेवने प्रद्युम्नजन्मलेकर रतिअपनी स्त्रीको
दियाथा॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छप्पनवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका जाम्बवती व सत्यभामासे विवाह करना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जिनदिनोंप्रद्युम्नशम्बरासुरके यहांथा उन्हींदिनोंसत्राजित यादवनेपहिले श्रीकृष्णजीकोमणि कीझूंठीचोरीलगाया पीछेसेलज्जितहोकर अपनीकन्या उन्हें विवाहदिया यहसुनकर परीक्षितनेबिनयकिया हेकृपानिधान स त्राजितने वहमणिकहांसेपाकर किसतरहश्यामसुन्दरको उसकी चोरीलगाई व फिरक्योंकर अपनीकन्या उन्हेंविवाहदी शुकदेव जीबोले सत्राजितनाम यादवद्वारकापुरीमेंरहताथा जबउसने ब हुतदिनतक सूर्यदेवताकातप व ध्यानसच्चेमनसेकिया तबसूर्य भ गवान्ने प्रसन्नहोकर उसकोदर्शनअपनादिया व स्यमन्तक ना मणि उसेदेकर बोलेतुमइसमणिको मेरेसमानजानकर नित्य विधिपूर्वक इसकापूजनकरना तो सुखसेरहोगे व जिसनगर व घर मेंयहमणिरहैगी वहारोग व दरिद्रकिसीको न होकर महँगीअना जकीनहींपड़ैगी व जोकोई सच्चेमनसेइसकीपूजाकरैगा उसकेघर ऋद्धिसिद्धिबनीरहैगी ऐसाकहकर सूर्यदेवता अंतर्द्धानहोगये व सत्राजितवहमणि गलेमेंडालकर अपनेघरचलाआया व ज्योति षीसे शुभमूहर्त्तपूछकर उसमणिको बहुतअच्छेजड़ाऊ सिंहास नपररक्खा व अपनेनेम व धर्मसे रहकरविधिपूर्वक प्रतिदिन उस कापूजनकरनेलगा व प्रभाव उसमणिकायहथा जोकोई शास्त्रा नुसार उसकीपूजाकियाकरै उसेबीसमनसोनावहमणि नित्यदेती थी जबसत्राजितयादव उसमणिपूजनके प्रतापसे थोड़ेदिनोंमें ब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ड़ाधनाढ्यहोगया तबद्रव्यके अभिमानसे किसीकोअपनेबराबर
नहींसमझनेलगा एकदिनवहअभिमानपूर्वक स्यमन्तक मणि
अपनेगलेमें पहिनकर श्रीकृष्णजीकी सभामें चला जबयदुबंशि
योंने जोवहां बैठेथे उसमणिकाप्रकाश सूर्यकेसमानदेखा तबवह
लोग उसेसूर्यसमझकर बोले ऐद्वारकानाथ आपकाप्रताप वयश
सुनकरसूर्यदेवता तुम्हारेदर्शनवास्ते आवते हैं यहवचनयदुबंशि
योंकासुनकर श्यामसुन्दरने कहायहसूर्य देवतानहींहैं सत्राजित
यादवने सूर्यभगवान्का तपकरके स्यमन्तकमणि उनसेपायाथा
वहीमणिअपनेगलेमेंबांधेहुये चलाआवताहै जबसत्राजितसभा
मेंपहुंचकरजहांपरयादवलोग चौपड़खेलरहेथेबैठा व केशवमूर्ति
व यदुबंशी उसमणिकीओर देखनेलगे तबवहमनमें कुछसमझ
कर तुरन्त अपनेघरचलागया इसीतरहकभी२सत्राजितवहमणि
अपनेगलेमें पहिनकर वहांजायाकरताथा एकदिनयदुबंशियोंने
मुरलीमनोहरसे कहामहाराज यहमणिसत्राजितसेलेकर राजा
उग्रसेनको देदीजिये उसेशोभा नहींदेती यहसुनकर किसीसमय
श्रीकृष्णजीनेसत्राजित कीपरीक्षालेने वास्ते हँसते २ उससेकह
राजालोगसबमें श्रेष्ठहोतेहैंइसलिये जिसकेपासजो अच्छापदा
होउसेवहवस्तुउन्हेंभेंटदेनाचाहियेऐसीबात करनेसेलोकवपरल
कदोनोंबनताहै इसलियेतुमयहमणि राजाउग्रसेनको जिन्हें
भीअपनाबड़ाजानतेहैं भेंटदेकरसंसारमें यशाउठालेवयहबातसु
तेहीसत्राजितयादव लालचवशउदास होगया व इसबातकाकु
उत्तरनदेकरचुपहोरहावउन्हेंदरएडवत्करकेअपनेघरचलाआ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोवृन्दाबनबिहारीकी इच्छानुसार किसूर्य व चन्द्रमाआदिकस
बदेवतोंकेवही मालिकथेउसीदिनसे जितनागुणउसमणिमें था
वहजातारहा व सत्राजितने घरजाकरप्रसेन अपने भाईसेकहाश्या
मसुन्दरनेमुझेयहमणि राजाउग्रसेनको देनेवास्ते कहाथासोमैंने
नहींदियायहवचनसुनतेही प्रसेनमूर्खने द्वारकानाथ अन्तर्यामी
परक्रोधकियाऔर वहमणिसत्राजितसे लेकरअपने गलेमेंबांध
लिया व घोड़ेपरचढ़कर बनमेंअहेरखेलने चलागयावहां एकह
रिणकेपीछेघोड़ा जोदौड़ायातोअपने साथवालोंसे बिलगहोकर
पहाड़की कन्दरापास जिसमेंएकशेर रहताथाजापहुँचा जैसेशेर
नेघोड़ेकीटापसुना वैसेबाहरनिकलकर प्रसेन कोघोड़े व हरिण
कोमारडालाजब वहशेरप्रसेनके गलेसेमणिलेकर अपनीकंदरा
मेंघुसनेलगा तबरामचंद्रजीकाभक्तजाम्बवन्तभालूनेवहांपहुँच
करउसशेरकोकन्दराकेद्वारेपरमारडालाऔरवहमणिले लिया॥

बो० वाकी इककन्याहती महासुन्दरी रूप। ताके खेलनको दियो सोमणि महाअनूप॥

उसमणिकेप्रकाशसेस्थानजाम्बवान्का जोअँधियारीकंदरा
मेंथा आठोंपहरदिनकेसमान उजियालारहनेलगा जब प्रसेनके
साथवालोंने आनकरसत्राजितसेकहा तुम्हारेभाईने बनमेंएकह
रिणकेपीछे घोड़ादौड़ाया तो फिर उसकापताबहुत ढूंढ़नेपरभी
नहींमिला इसलिये हमलोगलाचारहोकरचलेआये यहबातसु
नतेही सत्राजितनेबड़ाशोचकरके मनमेंसंदेहकिया कि श्यामसु
न्दरने स्यमंतकमणि राजाउग्रसेनकेदेनेवास्ते मुझसेकहाथा सो
मैंननहींदिया इसलिये उन्होंनेमेरेभाईकोबनमेंमारकर वहमणि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लेलियाहोगा सत्राजित इसबातकासोच अपनेमनमेंरखकरदिन रातउदासरहनेलगा पर श्रीकृष्णजीकेभयसे यहबातकहनहींसक्याथा एकदिनरात्रिकोशय्यापर सत्राजितकी स्त्रीने उसेउदास देखकरपूछा ॥

दो० कहा कन्त मन शोचत भारी । मुझसे भेद बतावो सारी ॥

यहबातसुनकर सत्राजितनेकहा ऐप्राणप्यारीस्त्रीकेपेटमेंकोई बातनहींपचती वहसबहाल अपनेघरकादूसरेसेकहदेतीहै व अपनाभला व बुरानहींसमझती इसलियेअपनेमनकाभेदजिसबात मेंखटकताहो स्त्रीसेकहनानचाहिये यहबचनसुनतेही वहझुंझला करबोली मैंनेकौनसीबात तुम्हारीसुनकर बाहरकहदी थी जो ऐसाकहतेहो क्यासबस्त्री एक तरहकी होती हैं जबतकतुमअपनेमनकाहालमुझसे न बतलावोगे तबतकमैं अन्नजलनहींकरूंगी यहबातसुनकर सत्राजितने लाचारीसेकहा झूंठसचकाहाल तो परमेश्वरजाने परमेरेमनमें एकबातकासंदेहहै सोतुझसेकहता हूँतूकिसीकेसामने इसबातकी चर्चामतकीजियो जबउसने कहा बहुतअच्छाकिसीसे नहींकहूँगीतबसत्राजित बोलाएकदिनश्याममुन्दरनेमुझसे स्यमन्तकमणि राजाउग्रसेन कोदेनेवास्तेकहाथासोमैंनेननहींदिया इसलिये मुझेऐसामालूम होताहैकिउन्होंने प्रसेनकोबनमें मारकरवहमणि लेलियाहोगा दूसरेकीसामर्थ्य नहींहैजोमेरे भाईकोमारनेसक्का सत्राजिततो यहबातअपनीस्त्रीसे कहकर सोरहापरउसकीस्त्री रातभर शोचविचारमें जागतीरहकर जबमालूमपड़ीतबउसने अपनीसखी व दासियोंसे कहाश्रीकृ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्राजीनेप्रसेनकोमारकर स्यमन्तकमणिलेलियाहै यहबातरात कोमेरेस्वामीनेमुझसे कहीथीपरन्तु तुमलोग किसीकेसामने यह चर्चामतिकरनाहैराजन्स्त्रियोंकेपेटमेंकोईबातनहींपचतीइसलिये जबयहचर्चाहोते २ फैलगई तबश्यामसुन्दरके महलमेंकिसी स्त्रीनेजाकरकहा ऐसीबातसत्राजितकीस्त्री कहतीथीजबयहझूंठा कलंकसुनकर मुरलीमनोहरकी स्त्रियांआपसमेंयहचर्चावशोच करनेलगीं तबउनमेंकिसीने वृन्दावनबिहारीसेकहा महाराजआपकोसत्राजित व उसकीस्त्रीप्रसेनकेमारने व स्यमन्तकमणिलेनेकाकलंकलगावतेहैं॥

दो० चहुंदिशि फैली बात यह जानत राजारंक। सो उपाय अब कीजिये जामें मिटै कलंक॥

श्यामसुन्दरयह झूंठाकलंकसुनकरपहिले अपनेमनमेंउदास होगये फिर कुछशोचविचारकर राजाउग्रसेनकेपास जहांपरबसुदेव व बलरामजीआदिक अनेकयदुवंशीबैठेथे जाकेकहामहाराजसबलोग यहझूंठाकलंकलगाते हैं कि कृष्णनेप्रसेनकोबनमें मारकर स्यमन्तकमणिलेलियाहै आपआज्ञादीजिये तो मैं प्रसेन व उसमणिकापतालगाकर कलंकअपनाछुड़ाऊं जबउग्रसेन यहबातसुनकर कुछनहींबोले तबश्यामसुन्दरदशपन्द्रह यादव वंशी व प्रसेनकेसेवकोंको जो अहेरखेलतीसमयउसकेसंगथे अपनेसाथलेकर उसेढूंढनेनिकले जहांप्रसेननेहरिणकेपीछे घोड़ादौड़ाया वहांघोड़ेके पैरकाचिह्नदेखतेहुये चले जब उसजगहजहां प्रसेन व घोड़ेकीलोथपड़ीथी पहुँचेतबवहांशेरकेपांवकाचिह्नदेखकर मालूमकिया कि शेरनेउसकोमारडाला पर उसमणिकापता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहांनहींमिला इसलिये मोहनप्यारे यदुवंशियोंसमेत शेरकेपैर
काचिह्नदेखतेहुये जबउसकन्दराकेद्वारेपरजहां जाम्बवन्तरहता
था पहुंचे तबवहांक्यादेखा कि शेरमराहुआ पड़ाहै परमणिवहां
दिखलाईनहींदी यहअचम्भादेखकर यदुबंशियोंने श्यामसुन्द
रसेकहामहाराज इसबनमें ऐसाबलवान्मनुष्य व पशुकहांसेआ
याजोशेरको मारकेमणिलेकर इसकन्दरामें घुसगयाहमलोगोंने
अपनेसामर्थ्यभर ढूंढ़ा प्रसेनकेमारनेका अपयशइससेशेरकोलगा
अबतुम्हाराझूठकलंक छूटगयाइसलिये फिरचलिये यहसुनकर
दैत्यसंहारणनेकहा चलोइसकन्दरामें घुसकर देखैंशेरकोमारकर
मणिकौनलेगया यदुबंशीबोले महाराजहमैं इसअँधियारीसे डर
कामुखदेखनेसे भयमालूमहोताहै इसमेंजाकर अपनाप्राण क्यों
देवैं आपसेभीविनय करतेहैं कि इसभयानकगुफामेंनजाकरद्वार
काको चलिये हमसबकोई वहांचलकर कहैंगे कि प्रसेनकोशेरने
मारकरस्यमन्तकमणि लेलिया व उसशेरको न मालूमकौनमा
रकरवहमणि कन्दराके भीतरलेगया यहहालहमलोग अपनी
आंखसे देखआये हैं इसबातकेकहनेसे तुम्हाराकलंक छूटजाय
गाजबमारेडरके कोईउसगुफामें नहींगया तबश्यामसुन्दरने अ
पनेसाथियोंसेकहा मेराचित्त स्यमन्तकमणिमें लगाहै इसलिये
मैं किसीका कुछडरनरखकर अकेलाइसी कन्दरामें जाताहूं तुम
लोगबारहदिनतक मेरीआशा यहांदेखना इसअवधितक कन्
रासे बाहरआयेतो अच्छाहै नहीं तोयहांकाहाल घरपरजाकर
हदेना ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० द्वादश दिनकी अवधिकरि गये तहां यदुराय। यादव जितने संगथे रहे द्वारपर छाय॥

हेराजन् केशवमूर्त्तिने उसअँधियारीकन्दरामें थोड़ीदूरजाक र क्यादेखाकिएकस्थान व बाग़बहुतअच्छा जाम्बवन्तके रहने का वहांबनाहै व जाम्बवती महासुन्दरीकन्या उसकीवहमणि हाथमेंलियेहुई पालनेमेंझूलरहीहै व जाम्बवन्तसोयाहोकर एक दासीउसपालनेकेपास बैठीहुई दिखालाईदी जैसेकृष्णचन्द्रने हाथबढ़ाकर स्यमन्तकमणिलेनाचाहा वैसेदासीनेजाम्बवन्तको पुकारा सोजाम्बवन्त नींदसेजागकरमुरलीमनोहरकेसाथकुश्ती लड़नेलगा सत्ताईसदिनतकबराबर दिनरात जाम्बवन्तने श्याम सुन्दरसे मल्लयुद्धकरके अनेकदांव व पेंचअपनेकिये जबकोई दांव उसकाबृन्दाबनबिहारीपरनहींलगा व लड़ते २ मारेभूख व प्यासकेसबबल उसकाघटगया तबदैत्यसंहारणने एकमूकाऐसा जाम्बवन्तके मारा किवहघुटनेकेबल बैठगया उससमयवहअ र ने मनमेंबिचारकरनेलगा सिवायरामचन्द्र व लक्ष्मणजीकेकोई संसारीमनुष्य इतनीसामर्थ्यनहींरखता जोसत्ताईस दिनतकमेरे साथलड़कर मुझसेजीतसकै इसलिये मेरेजानमें यहश्यामरूप रामचन्द्रजीकाअवतारमालूमहोताहै जिनकेसाथलड़नेसे मेरी यहदशाहोगई इतनी कथासुनाकर शुकदेवजी बोले हेपरीक्षित जबजाम्बवन्तकेहृदयमें ज्ञानकाप्रकाशहोकरउसे बिश्वासहुआ कियहरामचन्द्रजीकाअवतारहैं तबश्यामसुन्दर भक्तहितकारी अन्तर्य्यामीनेप्रसन्नहोकर उसीसमयरघुनाथरूपधारणकरके ध नुषबाणलियेहुये उसकोदर्शनअपनादिया जाम्बवन्तयहस्वरूप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखतेहीसाष्टांगदण्डवत्करके हरिचरणोंपरगिरपड़ा व परिक्रमा
लेकर उनकेसामनेखड़ाहोगया व बड़ेप्रेमसे आंखोंमेंआंसूभरेहुये
हाथजोड़करविनयकिया हेदीनानाथसबजगत्केउत्पत्ति व पाल
नकरनेवाले अन्तर्यामीआपनेबड़ीदयाकी जोपृथ्वीकाभारउतार
नेवास्तेअवतारलेकर मुझेअपनादर्शनदिया नारदमुनिमुझसेक
हगयेथे कि रामचन्द्रजीबासुदेव अवतारधरकर तेरेस्थानपरआवैं
गे इसलियेमैंत्रेतायुगसेयहांरहकर तुम्हारेदर्शनोंकीआशादेखता
था सोआज अपनेमनोरथकोपहुँचा आपतीनोंलोककेउत्पन्न व
पालनकरनेवालेहोकर सबसेपहिलेथे व महाप्रलयहोनेउपरान्त
भीसिवाय तुम्हारेकोईदूसरास्थितनहींरहेगा आपराजादशरथके
पुत्रअयोध्यापुरी व सबजगत्केराजाहैं तुम्हाराआदि व अन्तवेद
भीनहींजाननेसक्ता व शंख व चक्र व गदा व पद्म आपकेशस्त्रहैं
व सबतरहकासुखतुम्हारी कृपासेजीवोंकोभासहोताहै व आपसदा
आनन्दमूर्त्तिरहतेहैं किसीबातकाशोच आपकोनहींव्यापता व
आपसबकामनोरथपूर्णकरनेवाले हैं तीनोंलोकमें किसीकोऐसी
सामर्थ्यनहींहै जो तुम्हारीमाहिमा व भेदजानसकै व आपसीता
पति लक्ष्मण व भरतशत्रुघ्नके बड़ेभाई ऐसेसुन्दरहैं कि कामदेव
भीतुम्हारे रूपपरमोहितहोजाताहै व तुमसदाशेषनागकी छाती
पर शयनकरतेहो व आपनेराजादशरथ अपनेपिताकीआज्ञासे
राज्यछोड़कर लक्ष्मण व सीताजीसमेत चौदहवर्षतक बनवास
किया व वनमेंअनेकराक्षसोंकोमारकर ऋषीश्वर व हरिभक्तोंको
सुखदिया जबआपनेशूर्पणखाकी नाककाटकर खरदूषण व त्रि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिराआदिकको मारडाला तबरावणयोगीका बेषबनाकरपंचव
टीमेंआया व सीताजीकोअकेलीदेखकर छलसेहरलेगया औरउ
सनेअपनेपैरमें आपबसूलामारा जबसुग्रीवबांदरजो बालिअपने
भाईके डरसेविकलथा तुम्हारेशरणआया तबआपनेबालिबांदर
अधर्मीकोमारकर सुग्रीवकीइच्छापूर्णकी व हनुमान्जीकोअप
नाभक्त व सेवकसमझकर उन्हैंयशदिया जबआपबड़ीभारीसेना
भालू व बांदरोंकीअपनेसाथलेकर समुद्रके किनारेपहुँचे तबबि
भीषणरावणका भाईतुम्हारेशरणआया सो आपनेउसे लंकाप
तिकहा जबसमुद्रअज्ञान व अभिमानकीराह तुम्हारेपास नहीं
आया तबआपके क्रोधकरनेसे समुद्रकापानी सूखनेलगा और
सबजलकेजीव व्याकुलहोगये यहदशादेखतेहीसमुद्र बिनयपू
र्वक तुम्हारेचरणोंपरआनकर गिरपड़ा व अपनाअपराधक्षमाक
रानेवास्ते हाथजोड़करबोला महाराजआपनेदर्शनदेकर मुझेकृ
तार्थकिया यहदीनवचनसुनकर आपउसपरदयालुहुये फिरआप
समुद्रमें पुलबँधवाकरभालू व बांदरोंकीसेनासहितपारउतरगये
रावणकोकुलपरिवार व सेनासमेतमारकर बिभीषणकोलंकाका
राज्यदिया व सीताकोसाथलेकर अयोध्यापुरीमेंआये और ग्या
रहहज़ारवर्ष वहांकाराज्यकिया उनदिनोंत्रेतायुगथा तबसेआज
मैं तुम्हारादर्शनपाकर जो ब्रह्मादिकदेवतोंको जल्दीध्यानमेंनहीं
मिलता अपनेबराबर किसीदूसरेकाभाग्यनहींसमझता सो हेदी
नानाथ जिसतरहआपदयाकरके अपनेचरणयहांलेआये उसी
तरहदयालुहोकर आवनेकाकारणबतलाइये यहबचनसुनकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्यामसुन्दरनेकहाहेजाम्बवन्तहमतेरीस्तुतिसुननेसेबहुतप्रसन्न
हुये जो मणितेरीकन्याहाथमेंलियेहुईखेलतीहै इसीमणिकीचो
री मुझेसत्राजितयादवनेलगाई इसलिये मैं अपनाकलंककुड़ाने
वास्ते यहीमणिलेनेआयाहूं सोमुझेदेव यहबचनसुनतेहीजाम्बव
तने मनसाबाचाकर्मणासे प्रसन्नहोकरविनयकिया हेमहाप्रभुमे
रेयहांएकस्यमन्तक व दूसरीजाम्बवती कन्यादोमणिहैं सोयहदो
नोंतुम्हारेभेंटकरताहूं आपदयाकरकेअंगीकारकीजिये जिसमेंम
राउद्धारहो यहसुनकर केशवमूर्त्तिबोलेबहुतअच्छा मैंनेतेराकह
नामाना जैसेयहबचन जाम्बवन्तनेसुना वैसेहर्षपूर्वक अपनीक
न्या श्रीकृष्णजीकोब्याहकर वहमणिदहेजमेंदिया इतनीकथा
सुनकर शुकदेवजीबोले हेपरीक्षितइधरतो मोहनप्यारेसत्ताईसदें
दिनजाम्बवन्तसे बिदाहोकर स्यमन्तकमणि व जाम्बवतीकोसा
थलियेअपनेघरचले उधरयदुबंशी चौबीसदिनतकउनकीआशा
देख फिरनिराशहोकर वहांसेरोतेपीटतेद्वारकामेंआये जबराजाउ
ग्रसेन व बसुदेवजीआदिक द्वारकाबासियोंनेयहहालसुना तबसब
छोटेबड़े स्त्री व पुरुषअन्नजलछोड़कर अतिबिलापकरनेलगे व
सबोंने सत्राजितकोगालियांदेकर अनेकदुर्वचनकहा और बहुत
लोगोंने सत्राजितकोमारनेचाहा परबलरामजीने उन्हैंमारनेस
बर्जकरसमझायातुमलोग कुछचिन्तामतकरो दैत्यसंहारणस्यम
न्तकमणिलियेहुयेआवतेहैं तीनोंलोकमेंकोईऐसानहींहै जोउ
कोदुःखदेने व मारनेसकै जब उनकेसमझानेपरभी किसीको
र्य्यनहींहुआ तबरुक्मिणीआदिक सबस्त्रियां कृष्णचन्द्रकोरोते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घबड़ाकर अपनेमहलसे बाहरनिकलीं व आपसमेंइकट्ठीहोकर द्वारकाबासियोंसमेत मोहनमूर्त्तिको ढूंढ़नेचलीं॥

दो० माखनप्रभु बलबीरबिनु धरैंनहीं मनधीर। सबमिलकर खोजनचलीं व्याकुलमहाशरीर॥

हेराजन् नगरकेबाहरजो देवस्थान उन्हैं दिखलाईदेताथा वहां मानतामानकर आगेचलीजातीथीं जबनगरसे एककोश बाहर देवीकेमन्दिरपरपहुँचीं तबबिधिपूर्वक पूजाकरनेउपरांत हाथजोड़कर बोलीं हेअम्बिकामाता तुमसबकीइच्छापूर्णकरतीहो इस लिये हमलोगतुमसे यहबरदानमांगतीहैं जिसमेंहमारेप्राणनाथ जल्दीअपना दर्शनदेकर हमलोगोंकादुःखहरैं जिससमयद्वारका नाथ की स्त्रियांदेवीजीसे यहबरदानमांगरहीथीं व राजाउग्रसेन यदुबंशियोंसमेत अपनीसभामेंबैठेहुये शोचकररहेथे उसीसमय मुरलीमनोहर स्यमन्तकमणि व जाम्बवतीको अपनेसाथ लिये हँसतेहुये राजाउग्रसेनकीसभामें जाकर खड़ेहोगये उनका चन्द्र मुखदेखतेही बसुदेवआदिकने अतिप्रसन्नहोकर बहुतद्रव्यादि क उनकेहाथसेदान व दक्षिणादिलवाया और यहसमाचारसुन कर रुक्मिणीआदिकस्त्रियां बड़ेहर्षसेगावती व बजावतीअपने२ मन्दिरमेंआईं व एकयदुबंशीने हँसीकीराहमोहनप्यारेसेकहा॥

दो० मणिकारण कछुकहिगये जाम्बवन्तकेधाम। ब्याहकरनपहुँचे वहां माखनप्रभुघनश्याम॥

केशवमूर्त्तिने यहबातसुनकर हँसदिया व उसीसमयसत्राजितकोबुलाभेजा व स्यमन्तकमणि उसेदेकरकहा तुमनेहमकोझूठाकलंकलेनेमणि व मारनेप्रसेनका लगायाथा सोतुम्हारे भाई को शेरनेमारकर मणिलेलिया व उसशेरको जाम्बवन्तभालू

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मारकरमणिलेगयाथा सो जाम्बवन्तने अपनीबेटी मुझेब्याहि
कर यहमणिदहेजमेंदियाहै सोअपनामणितुमलेव जबसत्राजि
तनेवहमणिदेखकर सबहालसुना तबअतिलज्जितहोगया उसस
मयतोवहश्यामसुन्दरकी आज्ञानुसारमणिलेकर अपनेघरचला
आया परमनमेंबहुतउदास होकर कहनेलगा देखोमैंनेबड़ापाप
कियाजोझूठाकलंक बैकुण्ठनाथको लगाया अबमुझेउचितहै
कि सत्यभामाअपनीकन्या उन्हेंब्याहकर यहमणिदहेजमेंदेडा
लैंतोमेराअपराध छूटजावै ॥

दो० यह कन्या जगमोहनी सुन्दर महा अनूप । श्रीयदुपतिको दीजिये ऐसी रत्न स्वरूप ॥

जबऐसाबिचारकर सत्राजितने अपनीस्त्रीसेपूंछा तबवहबोली
हेस्वामी तुमने बहुतअच्छाबिचाराहै सत्यभामाश्रीकृष्णजीको
देकर जगत्मेंयशलीजिये यहबचनसुनतेही सत्राजितनेशुभल
ग्नठहराकर सबबस्तुतिलककी अपनेपुरोहितसेबसुदेवजीकेयहां
भेजदिया जोराजाउग्रसेनने वहतिलकबड़ेहर्षसेलेलिया औरधू
मधामसेबरात साजकरश्यामसुन्दरको ब्याहनेआये तबसत्राजि
तनेशास्त्रानुसार अपनीकन्या मुरलीमनोहरकोब्याहकर वहीम
णि व अनेकरत्नादिक दहेजमेंदियासो श्रीकृष्णचन्द्रनेऔरसब
दहेजकोलेलिया परवहमणिउसेफेरकरकहा यहमणिहमारेका
मकीनहींहै हमसेइसकी पूजानहींबनपड़ेगी यहमणितुम अपने
यहांरक्खो जबतुमने अपनीकन्याहमकोबिवाहदी तबसबधनतु
म्हारेघरकाहमाराहुआ व जोतुमने हमैंकलंकलगायाथा उसबा
तकाभीकुछअपने मनमें शोचमतिकरो अबहमतुमसे कुछखेद

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहींरखते जिसकीवस्तुखोजातीहै उसकासंदेहअनेकमनुष्योंपर होताहै यहसुनतेही सत्राजितने लज्जितहोकर वहमणिलेलिया व श्यामसुन्दर सत्यभामाको साथलेकर बाजेगाजेसमेत अपने घरआये इतनीकथासुनकरपरीक्षितनेपूंछा हेस्वामी कृष्णचन्द्र बैकुण्ठनाथको झूठाकलंक क्योंकरलगा शुकदेवजीबोलेमुरली मनोहरने भादोंसुदीचौथका चन्द्रदेखाथा इसलियेउनको झूठी चोरी लगीथी॥

दो० भादों शुक्लाचौथको चन्द्रनिहारै जोय। यह प्रसंग श्रवणनसुने तौ कलंकनाहिंहोय॥

सत्तावनवां अध्याय॥

सत्राजित व शतधन्वाका माराजाना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षितजिसतरहशतधन्वायादवनेसत्राजितकोमारकर स्यमन्तकमणि उसकीलेलिया व मुरलीमनोहर केभयसेद्वारकाछोड़कर भागाथा वहहालकहते हैं सुनोएकदिन किसीनेद्वारकामेंआनकर श्याम व बलरामसे यहसंदेशाकहा कि युधिष्ठिरआदिक पांचोंभाइयोंको दुर्योधननेलाक्षागिरिकेकोटमें रखकर आधीरातको चारोंओरसे आगिलगवादी सो वहलोगअपनीमातासमेतजलगये यहहालसुनतेही दोनोंभाईको ऐसा शोचहुआ कि उसीसमयरथपर चढ़कर अपनीफूफू व भाइयोंकी सुधिलेनेवास्ते हस्तिनापुरचलेगये जबश्याम व बलरामराजादुर्योधनकी सभामेंपहुँचे तबक्यादेखा किराजादुर्योधन व धृतराष्ट्रआदिक सबछोटेबड़े उदासबैठेहैं व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्यकी आंखोंसेआंशबहिरहाहै व गांधारीआदिक कौरवोंकी स्त्रियां

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पांचोंभाइयोंकोयादकरके रोरहीहैं जबयहदशादेखकरश्याम व
बलरामजीभीउनकेपासजाबैठे वयुधिष्ठिरकाहाल उनसेपूछातो
किसीनेकुछउत्तरनहींदिया परन्तुबिदुरने श्यामसुन्दरके निकट
जाकर धीरेसेकहदिया कि दुर्योधनआदिकने तो पांचोंभाइयोंके
प्राणलेनेमें कुछधोखानहींकियाथा परतुम्हारीदयासे वहलोगब
चगयेहैंयहहालसुनकरकेशवमूर्त्ति वहांसेबागमेंअपने डेरेपरचले
आये इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जबश्याम
व बलराम हस्तिनापुरचलेगये तबउनकेपीछेद्वारकामें यहहाल
हुआ कि शतधन्वा यादवद्वारकाबासीकेयहां जिससेपहिलेसत्य
भामाकी मँगनीहुईथी अक्रूर व कृतबर्मानेजाकरकहा एकतोस
त्राजितने झूठाकलंक मणिचुरानेका द्वारकानाथकोलगाया दूस
रेअपनीबेटीकी मँगनीपहिले तुमसेकरके फिरश्रीकृष्णकोबिवाह
दी इसलिये तुम्हारीनामधराईजात भाइयोंमेंहुई इनदिनोंश्याम
व बलरामहस्तिनापुरगयेहैं सो तू उसेमारकर अपनाबैरक्यों नहीं
लेता हमारेनिकट यहबातउत्तमहै कि रातकोहमतीनोंमनुष्य स
त्राजितकेघरपरचलकर उसेमारडालैं व इतनेदिनोंतक उसने जो
सोनास्यमन्तकमणिके प्रतापसेइकट्ठाकियाहै वहछीनलेवैं यह
बात मानकर शतधन्वारातको अक्रूर व कृतबर्माकेसाथ सत्राजि
तके स्थानपरगया व अक्रूर व कृतबर्माको द्वारेपरखड़ा करदिया
और आपअकेलाघरके भीतरजाकर सत्राजितको जो नींदमेंसो
याथामारडाला व स्यमन्तकमणि व जोकुछसोना उसकेघरमें
था लेकरबाहरचलाआया जबसत्राजितकोमारकर तीनोंमनुष्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपने२घरचलेआये तबशतधन्वा अकेलाअपनेघरबैठकरशोच करनेलगा देखोमैंनेअक्रूर व कृतबर्माकाकहनामानकर श्रीकृष्ण जीबैकुण्ठनाथसेबैरकिया अबनमालूम वहमेरीक्यादशाकरैंगे॥

दो० कृतबर्मा अक्रूरमिलि मतादियो म्वहिंबाय। साधुकहै जो कपटकी तासोंकहा बसाय॥

जब सत्राजितकीस्त्री यहदशाअपनेपतिकीदेखकररोनेपीटने लगी व सत्यभामानेयहहालसुनतेही वहांजाकर अपनेपिताकी यहगतिदेखी तब उसनेपहिलेबड़ाबिलापकिया फिर अपनीमाता को धैर्य्यदेकरलोथ सत्राजितकीतेलमेंरखवादिया व उसीसमय आपरथपरचढ़कर दैत्यसंहारणकेपास हस्तिनापुरकोगई॥

चौ० देखतही उठिबोले हरी। धरहै कुशल क्षेम सुन्दरी॥
सत्यभामाकहजोरे हाथ। तुमबिनकुशलकहा यदुनाथ॥

हे महाप्रभु शतधन्वाराजिको अधर्मकीराह सोतीसमय मेरे पिताकोमारकर स्यमन्तकमणिलेगया॥

चौ० धरेतेलमें श्वशुर तुम्हारे। दूरकरो सब शोच हमारे॥

ऐसाकहकरजबसत्यभामा श्याम व बलरामकेसामने अति बिलापकरनेलगी तबद्वारकानाथने भी बलरामसमेत आंखों मेंआंशूभरकर सत्यभामासेकहा तूअपने मनमेंधैर्य्यधर जोकुछ होनाथासोहोचुका अबतेरापिताजीने तोनहींसक्का परजिसनेतेरे बापकोमाराहै उसेहममारकरबदलालेवैंगे व जबतक शतधन्वा कोनमारूंगा तबतकदूसराकामनहींकरूंगा जबयहबात सुनकर सत्यभामाको कुछधैर्य्यहुआ तबवृन्दाबनबिहारी उसीसमयबल रामजी व सत्यभामाको साथलेकर द्वारकाकीओरचलेजबशत धन्वानेसुनाकिश्याम व बलरामहस्तिनापुरसेआते हैं तबवहरह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने जोबलरामजीसे प्रीतिरखताथा यहहालसुना किइनदिनोंबल
भद्रजीकृष्णचन्द्रसे खेदमानकर जनकपुरमांटिकेहैं तबवहांमिथि
लापुरीमेंआया व बलरामजीके पासजाकर उन्हैंबड़ेआदरभावसे
अपनेडेरेपरलिवालेगया व बिनयपूर्वक हाथजोड़करबोला मुझे
बड़ेभाग्यसे आपकादर्शन प्राप्तहुआ अबमेरेमनमें यहइच्छाहैकि
आपकृपाकरके थोड़ेदिनयहां रहिये व मुझको अपनाचेलाबना
करगदायुद्धसिखलाइये यहबात सुनने व उसकीसच्चीप्रीतिदेखने
से बलदाऊजी दुर्योधनकोचेलाबनाकर वहांगदायुद्ध सिखानेल
गे व श्यामसुन्दरने द्वारकामेंपहुँचकर सत्यभामासेकहा किसत्रा
जितकेबदलेशतधन्वाको मैंनेमारडाला परवहमणिउसके
नहींमिली सत्यभामाको इसबातकाबिश्वास न होकर मनमेंयह
संदेहहुआ कि मुरलीमनोहर वहमणि बलरामजीकोदेकर मुझ
सेबहानाकरतेहैं जबअक्रूर व कृतबर्मानेशतधन्वाके मारेजानेका
हालसुना तबवहभीअपनेप्राणकाडरमानकर द्वारकासेभागेव
तबर्मादक्षिणदिशामेंचलागया व अक्रूरजीप्रयागक्षेत्रमेंचले आ
ये और स्नान व दानकरने उपरांतगयाजीजाकर पितरोंकाश्राद्ध
किया व वहांसेकाशीजीमें आनकररहनेलगे व अक्रूर प्रतिदिन
बीसमनसोना स्यमन्तकमणिसेपाकर दानादिक शुभकर्म मेंख
र्चडालताथा श्यामसुन्दरअन्तर्यामी यहसबहालजानतेथे पर
न्होंने यहभेद किसीसेनहींकहा कि अक्रूर स्यमन्तकमणिलेक
काशीजीमेंटिकेहै सबद्वारकाबासी यहसमझतेथे कि अक्रूर व
तबर्मानेसत्राजितकेमारनेवास्ते सम्मतिकियाथा इसलिये श्री

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्यों बीचध्याननारायणजीके मग्नबैठारहा तबहिरण्यकशिपुने यहमहिमादेखकरमनमेंकहा देखोबड़ाआश्चर्य है जोप्रह्लादऐसे उपायकरनेपरभी नहींमरता अबमैंनेप्रह्लादसे अधिकशत्रुताउत्पन्नकी इसलियेनारायणजी उसकीरक्षाकरनेवास्ते अवश्यआवेंगे तबउन्हींकोमारकर हिरण्याक्षकाबदलालूंगा ऐसाविचारकर हिरण्यकशिपुने सण्डा व मर्कसे कहा कि हमनेप्रह्लाद को बहुत दण्डदियाहै अबतुम्हारी आज्ञानुसार पढ़ैगा यहबातसुनतेही प्रह्लादनेप्रसन्नहोकर मनमेंकहा अबमैं पाठशालाकेबालकों को ज्ञानसिखलाऊंगा जबगुरुहिरण्यकशिपुकी आज्ञासे फिरप्रह्लाद को पाठशालेमेंलेआया तबउसनेपूछा हेप्रह्लाद तुझेबनमें जाकर हरिभजनकरना किसनेउपदेशदियाहै या तैंनेअपनेमनसे यहबातकहाथा तबप्रह्लादनेउत्तरदिया हे गुरुजी जोलोग मायारूपीगृहस्थीके अँधियारेकुयें में पड़ेरहकर परमेश्वरसे विमुखहैं उनको ज्ञानप्राप्तनहोकर हरिचरणोंकीभक्ति नहीं मिलती उन्हैं गदहे व कुत्तेआदिक पशुकेसमानसमझनाचाहिये जबतकसंसारीमनुष्य संत व महात्माकेचरणोंपर शिरअपनारखकर उनकीसेवामनसा वाचा कर्मणा से नहींकरता व परमेश्वरकीकथा व कीर्त्तन नहीं सुनता तबतकउसको ज्ञाननहींप्राप्तहोता बिनादया व कृपा परमेश्वरकी ज्ञानामिलनाबहुतकठिनहै सो मैंनेश्यामसुंदरकी दयासे ज्ञानपाकर यहबातकहीथी इतनीकथासुनाकर नारदजीबोले हे युधिष्ठिरदेखो संडा व मर्क शुक्राचार्यमहात्माके पुत्र ज्ञानी व पण्डितहोकर दैत्योंकी संगतिकरने व उनका अन्नखानेसे नाराय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हेबेटा अपनाधर्मछोड़कर दूसरेकाधर्मकरना व बालकोंको साधु
व संतकीसंगतरखना अच्छानहींहोता इसलियेतुम साधु व वैरा
गीकाकहना न मानकर अपनेगुरुकी आज्ञानुसार पढ़ाकरो यह
सुनकर प्रह्लादनेकहा मैं उसपरमेश्वरको नमस्कारकरताहूं कि
जिनकीमायासे तुमअपने व दूसरोंमें भेदजानतेहो बिनाकृपा व
दयाईश्वरकी किसीकोज्ञाननहींमिलता जोकोईशास्त्रपढ़कर पर
मेश्वरकीभक्ति न रखताहो उसकापढ़नावृथाहै यहवचन ज्ञान
भराहुआ सुनतेही हिरण्यकशिपुने बड़ेक्रोधसे कईदैत्योंकोबुला
करकहा कि विष्णुभगवान् दैत्यकुलकेवास्तेकुल्हाड़ाहै व प्रह्लाद
मेराबेटा उसकुल्हाड़ेका बेंटउत्पन्नहोकर मेराकहना नहीं मान
ता व मेरेशत्रुका नामजपकर उसकी बड़ाई करताहै सो बृहस्पती
ग प्रथमसेऐसा कहगये हैं कि जिसअंगमें रोगहोकर और अंग
काउससे खटकारहै तो उसअंगको काटडालनाचाहिये इसवास्ते
ऐसेपुत्रका मारना उत्तमसमझकर तुमलोग इसको मारडालो
यहवचन सुनतेही दैत्यलोगप्रह्लादको वहांसे खींचतेहुये बाहर
लेजाकर तलवार व तीर व त्रिशूल व गदासेमारनेलगे प्रह्लादआं
खबन्दकिये मनअपनाहरिचरणोंमें लगाये चुपचापबैठारहाजब
परमेश्वरकीदयासे किसीशस्त्रकाघाव प्रह्लादके अंगपर नहीं लगा
तबउनदैत्योंने प्रह्लादकोपर्वतकेऊपर लेजाकर वहांसेढकेलदिया
तिसपरभी उसकेशरीरमें कुछचोटनहींलगी फिरदैत्यों ने प्रह्लाद
कोबहुतलकड़ियोंके मध्यमेंबैठाकरआगलगादिया जबसबलक
ड़ीजलकरभस्महोगई व ज्वालासुन्दरकी कृपासे प्रह्लादज्यों का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj,Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भी सिवायलेने नामराम व नारायण व विष्णुके व हिरण्यकशि
पुकानाम मुखसेनहींलिया तबगुरुनेउसके पिताकेपासजाकर स
बवृत्तांतकहदिया इसलियेहिरण्यकशिपुने एकदिनप्रह्लादकोअ
पनी गोदमेंबैठाकरपूछा हे बेटा जो तुमने अपनेगुरुसेआजतकप
ढ़ाहो वहहमैंसुनाओ प्रह्लादबोला होपिता मैंनेसिवायरामनामके
जिनकाचर्चा व भजनआठोंपहरकरनाचाहिये और कुछनहीं प
ढ़ाहै मेरेजानमें साधु व महात्मोंका सत्संग उत्तमहै और मैं नव
धाभक्तिपरमेश्वरकी अच्छीतरहजानताहूं व नामउसनवधा भ
क्तिकायहहै श्रवण परमेश्वरकीकथासुनना कीर्त्तन ईश्वरका गु
णानुवादवर्णनकरना स्मरण भगवान्कानामजपना पादसेवन
नारायणकाचरणपूजना अर्चन ठाकुरकीमूर्त्तिको विधिपूर्वक पू
जकर भोगलगाना वन्दन परमेश्वरको बारम्बार दण्डवत्करना
दास्य ईश्वरकीभक्तिरखकर भजनगाना सख्य परमेश्वरसे मित्र
ता व प्रीतिरखना आत्मनिवेदन अपनातनमनधन सबभगवान्
को अर्पणाकरके साधु व सन्त व महात्मोंकी संगत व सेवाकरना
सबवेद व शास्त्रकासारयहीहै जो हमनेतुमसेकहा व गृहस्थीमें र
हनेसे सिवायदुःखके सुखनहींहोता बनमेंजाकरहरिभजनकरना
सबबातोंसे उत्तमसमझनाचाहिये प्रह्लादकीबातसुनतेही हिरण्य
कशिपु क्रोधितहोकरबोला हे मूर्ख तू नहींजानता कि नारायण
ने वाराहअवतारधरकर हिरण्याक्ष मेरेभाईको मारडालाथा सो
तू मेरेशत्रुकानामलेकर उसकीस्तुतिकरताहै अभी तू बालक अ
ज्ञानहोकर मेराकहनानहींमानता सयानेहोनेपर क्यादशाहोगी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विलासकरताथा व ऋषीश्वर व मुनि व गो व ब्राह्मण उसकेहाथ
सेबहुतदुःखपातेथे इसीतरहकुछदिनबीते तबहिरण्यकशिपुकेच
रपुत्रउत्पन्नहुये सो तीनबालक दैत्योंकाकर्मकरतेथे व चौथापु
त्र प्रह्लादनाम सबसेछोटा चलन व स्वभावअपना देवतोंकेसमा
नरखकर आठोंपहरसन्त व महात्मोंकीसेवा व हरिभजनमें रहता
था व सबजीवोंमें परमेश्वरकाचमत्कार एकसाजानकर किसी
जीवकोदुःखनहींदेताथा व इन्द्रीजित् व सत्यवादीहोकर छोटों
कोपुत्रसमान व बड़ोंकोपिता व ईश्वरतुल्यजानताथा व बालकों
केसमान न खेलकर सत्संगमें अतिप्रीतिरखताथा इसलिये महा
त्मालोगउसकीबड़ाई करतेथे ऐसेपुत्रसे हिरण्यकशिपुका शिरो
धहोगया इतनीकथासुनकर युधिष्ठिरनेपूछा कि हे मुनिनाथपूत
कपूतहोते हैं परमातापिता अपनेबेटेकाअनभल नहींचाहते इस
विपरीतकाकारण बतलाइये ॥

पांचवां अध्याय ॥

प्रह्लादको पढ़नेके वास्ते हिरण्यकशिपुका बैठालना ॥

नारदजीनेकहा हेयुधिष्ठिर शुक्राचार्यकेपुत्रसण्डा व मर्क ना
म हिरण्यकशिपु व दैत्योंके लड़कोंको पढ़ायाकरतेथे जबप्रह्लाद
पांचवर्षकाहुआ तबहिरण्यकशिपुने उसेउनकोसौंपकरकहा कि
हमनेतुम्हारेपितासेपढ़ाथा प्रह्लादको तुमहमाराधर्म सिखलाओ
जबप्रह्लादवहां और लड़कोंकेसाथ पढ़नेलगा तबसण्डा व मर्क
ने हिरण्यकशिपुकी आज्ञानुसार प्रह्लादसेकहा कि तू नाम हिर
ण्यकशिपुका जपाकर जबप्रह्लादने गुरुकेसमझाने व डाटने पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ष्णकेडरसे वहदोनोंभागगयेहैं जबबलरामजी कुछदिनबीतेदुर्यो
धनको गदायुद्धसिखलाकर द्वारकामेंआये तबमुरलीमनोहरने
यदुबंशियोंकोसाथलेकर लोथसत्राजितकीतेलमेंसेनिकलवाया
वदग्धक्रियाकर्मउसकाआपकिया इतनीकथासुनाकर शुकदेवमु
निबोले हेराजन् अक्रूरजीजिसदेश व गांवमेंरहतेथे उसजगहहरि
इच्छासे प्रजाकीचाहनानुसार पानीबरसकर अन्नमहँगानहींहो
ताथा और वहांपरकुछरोग महामारीआदिकका न होकर सबछो
टेबढ़े आनंदपूर्वकरहतेथे जबबैकुण्ठनाथको यहइच्छाहुई किफि
र अक्रूरको बुलानाचाहिये तबद्वारकापुरीमें अबर्षणहोकर रोग व
महँगीसे प्रजालोगदुःखपावनेलगे यहदशाअपने देशकी देखते
ही यदुबंशियोंने घबड़ाकर श्यामसुन्दरसेकहा ॥

चौ० हमतो शरण तुम्हारे रहैं। महा कष्ट अब क्योंकर सहैं ॥

महाराज न मालूम परमेश्वरकी क्याइच्छाहै जोपानीनहींब
र्सता हमलोगतुम्हैंछोड़कर अपनादुःखकिससेकहैं आपदयाकर
केकोईऐसाउपायकीजिये जिसमेंहमारादुःखछूटजाय यहअधी
नबचनसुनकर द्वारकानाथने कहाकि जिसजगहसे साधु व महा
त्माचलाजाताहै वहांकेलोग अनेकतरहका दुःखपावतेहैं जबसे
अक्रूरद्वारकाछोड़कर चलेगये तबसेयहां अन्नकीमहँगी व रोग
कीआधिक्यताहै यहबचनसुनकर यदुबंशीबोले हेकृपानिधान
आपनेसच्चकहा हमलोगभी यहबातसमझतेहैं परतुम्हारेडरसेक
हिनहींसकतेथे अक्रूरजी यदुबंशियोंमेंश्रेष्ठहोकर तुम्हारेडरसेभागे
हैं जबतकवह द्वारकामेंरहे तबतकहमलोगोंने दुःखनहींपायासो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आपदयाकरके अक्रूरको यहींबुलाइये जिसमेंसबकोई सुखपावै यहबातसुनकर श्रीकृष्णजीनेकहा बहुतअच्छा तुमलोगअक्रूरकोढूंढ़करसन्मानपूर्वक यहांलिवालेआओ यहबचनसुनतेहीपचसातयदुबंशी मिलकर अक्रूरकोढूंढ़नेनिकले जबकाशीजीमेंपहुँचकरपताउनकापाया तबउनकेपास जाकरबिनयकिया हेअक्रूरजीतुम्हारेबिना द्वारकाबासियोंने बड़ादुःखपाया मुरलीमनोहरकेरहनेपरभीवहां अबर्षणहोकर अकालपड़ा इसलिये श्यामसुन्दरने तुमकोबुलाकर कहाहै कि मेरीभक्तिरखतेहो तोनिस्संदेह चलेआओ॥

चौ० साधुनके बश श्रीपति रहैं। तिनसे सबसुख संपति लहैं॥

यहबातसुनतेही अक्रूरजीबड़ेहर्षसे उसीसमय स्यमन्तकमणि लेकरयदुबंशियोंकेसाथ द्वारकाकोचले जबअक्रूरजी नगरकेनिकटपहुंचे तबश्याम व बलरामआगेसेआनकर उनकोसन्मानपूर्बकलिवालेगये जैसेअक्रूरद्वारकापुरीमेंपहुँचे वैसेपरमेश्वरकीइच्छानुसार पानीबरसा व अन्नसस्ताहोकर सबकिसीकारोगछूटगया एकदिनवृन्दाबनविहारीने अक्रूरकोबुलाकरकहा अयचा अबतुमउदासीछोड़कर प्रसन्नरहाकरो हमनेतुम्हारा अपराधक्षमाकिया औरतुम्हारेपासजो स्यमन्तकमणिहै उसेकिसीकेसमने हमारेपासलेआओ जिसमें बलरामजी व सत्यभामाकासदेहछूटजावै जिसकीवस्तुहोउसकोदेनाचाहिये जबवह न रहै तोउसकेपुत्रको दीजिये व बेटाभीनहोतो उसकीस्त्रीकोदेवै व स्त्रीभीन होवै तो कन्याके पुत्रकोदेवै वहभी न होतोउसके भाईकोदेडालै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जबभाईभीनरहै तोउसकेकुलपरिवारमें जोकोईहोउसेदेनाचाहि
येजिसकेकुलमें कोईभीनहो तोउसके गुरूकोदेडालै वहभीनहो
तोउसके गुरूकेपुत्रको सौंपदेवै जबवहभीनरहैतो वहवस्तुब्राह्मण
कोदेदेवेदूसरेका धनकभीनलेनाचाहिये सोसत्राजितकेपुत्रनहीं
है इसलिये सत्यभामाकावेटा यहमणिलेगा यहवचनसुनतेहीअ
क्रूरनेवहमणि राजाउग्रसेनकी सभामें वहांपरबलभद्रआदिक
सबयदुबंशीबैठेथे लाकरश्यामसुन्दरके सामने रखदिया व हाथ
जोड़कर विनयकिया हेदीनानाथ यहमणिलेकरमेरा अपराधक्ष
माकीजिये आजतकजितना सोना इसमणिने मुझकोदियाथाव
हसबमैंनेशुभकर्ममें खर्चकरडाला जबवहदेखकर बलरामजी व
सत्यभामा कासंदेहछूटगया तबवहदोनों बहुतलज्जितहोकरमो
हनप्यारेके चरणोंपर गिरपड़े व बलदाऊजीने रोकरकहाहेदीना
नाथमुझसेबड़ा अपराधहुआ जोतुम्हारे ऊपरझूठासंदेहकियाइ
सलिये बनमेंजाकर मरजाऊंगा अबमैंइसयोग्यनहींरहा जोअप
नामुँहआपको दिखलाऊं जबयहदशा बलभद्रजीकी गोपीनाथ
नेदेखातबउनको अपनीछातीसे लगालिया व बहुतधैर्य्यदेकरक
हातुमकिसीबातकी चिन्तामतकरो मैंनेतुम्हारेसन्देहकरनेसेकुछ
खेदनहींमाना संसारमें मायारूपीस्त्री व द्रव्य दोनोंबहुत बुरीहो
करस्त्री व पुरुष व पिता व पुत्रमें बिरोधकरादेतीहैं इसलियेज्ञानी
मनुष्यको इनदोनोंसे अधिकप्रीतिरखना न चाहिये जब श्याम
सुन्दरने इसीतरहउन्हें बहुतधैर्यदेकर स्यमन्तकमणि सत्यभा
माको सौंपदिया तबउसकेमनका शोचछूटिगया इतनीकथासु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Luckhow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नकर परीक्षितनेपूछा हेमुनिनाथ जब अक्रूरऐसागुण रखताथा तो सत्राजितउसकेसामने क्योंमाराजाकर वहआपकिसवास्ते भागगया शुकदेवजीनेकहा हे राजन् जिसदिनसे अक्रूरने शत धन्वाको सत्राजितके मारनेवास्ते सम्मतादिया उसीदिनसबगुण उसकाजातारहा यहबातसुनकरपरीक्षित बोलेमहाराजआपनेस च्चकहाकुसंगतिकरनेमें सिवायहानिकेकुछलाभनहींहोता अक्रू कासुलक्षण जातारहा तो कौनआश्चर्यहै परआपयहकहियेकि अक्रूरमें यहसबगुण किसतरहप्रकटहुयेथे शुकदेवजीनेकहा हेरा जन्एकसमयकाशीजीमें अवर्षणहोकर बड़ीमहँगीपड़ी व उन्हीं दिनोंसुफलकयादवबड़ा धर्मात्मा व सत्यवादी व हरिभक्तकिसी संयोगसे वहांजापहुँचा जबउसकेजातेही हरिइच्छासे बड़ापानी वर्षकरसबलोगोंने सुखपाया तबकाशीनरेशने प्रसन्नहोकर गा दिनीनामअपनी कन्या उसकोबिवाहदी सोउसीकन्यासे अक्रूर उत्पन्नहोकर सुफलकका गुणउसमेंप्रकटहोगया ॥

दो॰ मणिलीला अद्भुत महाकहै सुनै जो कोय। ताको कबहूं जगतमें कुछकलंक नहिंहोय॥

अट्ठावनवां अध्याय॥

श्यामसुन्दर को कालिन्दी व सत्या व भद्रा व लक्ष्मणा आदिसे विवाह करना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित श्यामसुन्दर सत्राजितकामरना सुनकरयुधिष्ठिर आदिकोबिनादेखे हस्तिनापुरसे चलेआयेथे सो मनउनका अर्जुन आदिकसे भेंटकरनेवास्ते चाहताथा व हालयु धिष्ठिरआदिकका इसतरहपरहै जबराजादुर्योधननेपांचोभाईपा एडवन व कुन्तीउनकीमाताको लाखके कोटमेंरखकरआग लग वादी तबवहलोगसुरंगके राहजोविदुरजीने पहिलेसे बनवारखा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थाबाहरनिकलआये औरसंन्यासी वेषमें अपनेको छिपाकरक
हींरहनेलगे व एकभिल्लिन अपनेपांचबेटों समेतजोउसीकोटमें
जलकरमरगईथी उनकी हड्डीदेखनेसे दुर्योधनको बिश्वासहुआ
कि युधिष्ठिरआदिक जलगये व उन्हींदिनोंमें राजाद्रुपदनेअपनी
कन्याका स्वयम्बररचा सोवहांपर दुर्योधनआदिक सबपृथ्वीकेरा
जाइकट्ठेहुये व वेदव्यास व धूम्रऋषीश्वरके कहजानेसेअर्जुनआ
दिकपांचोभाईभी अपनीमाताको किसीजगह छोड़करसंन्यासी
वेषबनायेहुयेउसस्वयम्बरमेंपहुँचे जिससमयद्रौपदीचन्द्रमुखीसो
लहोंशृंगारकियेअँग२ परगहनाजड़ाऊपहिनेफूलोंकागजराहाथ
मेंलियें वहांपरजहांसबराजा बैठेथे आनकरखड़ीहुई तोउसकीसु
न्दरताई देखकर सबछोटेबड़े मोहितहोगये उससमयधृष्टद्युम्न
द्रौपदीकेभाईनें पुकारकरकहा जोकोई कड़ाहेमें मछलीकी पर
छाहींदेखकर शिरनीचेकियेहुये बाणसेमच्छको बेधैउसेयह क
न्या बिवाहदेऊँगा यहबचनसुनतेही राजाशिशुपालने उठकर व
हधनुष जोमछलीबेधनेवास्ते राजाद्रुपदने वहांरखवायाथा उठा
नेचाहा जबवहधनुषउठाने नहींसका और लज्जितहोकर फिर
आया और वहीदशाराजा जरासंधकीभीहुई तबकर्णने उसधनु
षकोचढ़ाकर मच्छबेधनाचाहा उससमयद्रौपदीकर्णसे बोली तू
सूतपुत्रहोकर ऐसीसामर्थ्यनहींरखता जोमुझेबिवाहलेजावे यह
बचनसुनतेहीकर्णने द्रौपदीकी ओर देखकर वहधनुषपृथ्वीपरध
रदिया व अपनीजगहआनबैठा जबयहदशा उनलोगोंकी देखक
र और दूसरेराजामच्छ बेधनेसे निराशहोगये तबअर्जुनने युधि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ष्ठिर बड़ेभाईकी आज्ञालेकर जैसेउसमच्छको अपनेबाणसे बेध
डाला वैसेद्रौपदीनेजयमालउनकेगलेमें पहिनादिया यहहालदे
खतेही दूसरेराजोंनेडाहसे आपसमेंकहाबड़ेशोच व लज्जाकीबा
तहै जोहमलोगोंकेसामनेसे यहसंन्यासीराजकन्याकोलेजावै ज
ब ऐसाबिचारकरमूर्ख राजोंने अर्जुनकासामनाकिया तबपांचो
भाई पाण्डवाउन्हैंयुद्धमेंजीतकरद्रौपदीकोअपनीमाताकेपासले
आये व कुन्तीमाताकीआज्ञानुसारअर्जुनआदिकपांचो भाइयोंने
उसेअपनीस्त्री बनाकररक्खा जबयहहाल दुर्योधनको मालूमहु
आकियुधिष्ठिरआदिकपांचोभाईनहीं जलेऔर जीतेबचिगयेहैंत
बविदुरकोभेजिकर उन्हैंबुलाया व आधाराज्यअपना उनकोबांट
दिया जबयुधिष्ठिरआदिकपांचो भाइयोंनेआधाराज्य अपनाप
या तबवह हस्तिनापुरकेनिकट इन्द्रप्रस्थनाम एकनगरबहुतअ
च्छाबसाकर आनन्दपूर्बक राज्यकरनेलगे व अनेकराजोंकोजी
तकरअपनेवशमें करलिया यहसमाचारपातेही मोहनप्यारे कई
यदुबंशियोंको साथलेकर इन्द्रप्रस्थकोगये जबदेवकीनन्दनउस
नगरकेनिकटपहुँचे व युधिष्ठिरआदिक पांचोभाई यहसमाचारसु
नतेंही आगेसेआनकर सन्मानपूर्बक उन्हैंराजमन्दिरपरलिवाले
गये व श्रीकृष्णजीने कुन्तीकेपासजाकर उसकेचरणोंपर शिरअ
पनारखदिया तबकुन्तीने श्यामसुन्दरको गोदमेंबैठाकरबहुतसा
प्यारकिया जबद्रौपदी कुन्तीकीआज्ञानुसार घूंघुटकाढ़ेहुयेहरि
चरणोंपरागिरपड़ी तबमुरलीमनोहरने उसकेशिरपरहाथरखकर
उसेअशीषदिया फिरकुन्तीने श्यामसुन्दरकोजड़ाऊ चौकीपरबै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ठाकरप्रसन्नतासे उनकीआरतीकी व छत्तीसव्यंजन बनाकरउन्हेंखिलाया जबश्यामसुन्दरभोजन करकेपान व इलायचीखानेलगे उससमय कुन्तीने बसुदेव व शूरसेन व बलरामजीआदिककीकुशलपूछकर उनसेकहा महाराजतुम्हारीकृपाका हालमैं कहांतकबर्णनकरूं पहिलेअक्रूरको मेरीसुधिलेनेवास्तेभेजकरदूसरीबेर आपआये॥

दो० जबतुम प्यारे प्रीतिकरि पठयो श्रीअक्रूर। तबहीं मन धीरजभयो गयो कष्टसब दूर॥

हेदीनानाथ उसीदिनसेमैंनेजाना कि आपमेरेसहायकहैं जब आपऐसेत्रिलोकीनाथमेरी रक्षाकरनेवालेहैं तो मैंकिसीका डर न हींरखती मुझेइसबातका विश्वासहै कि जोकोईतुम्हारेशरणआया उसेकुछदुःखनहींहोता जिसतरहतुमअपने भक्त व तीनोंलोकका दुःखछुड़ादेतेहो उसीतरहमेरे बेटोंकोभी अपने शरणागत जानकर उनकीरक्षाकरो॥

चौ० जब जब बिपत परी हरि भारी। तब तब रक्षाकरी हमारी॥
अहोकृष्ण तुमपर दुख हरणा। पांचौ भाय तुम्हारी शरणा॥

जिसतरहहरिणी अपनेझुण्डसे बिलगहोकर भेड़ियेकाडररखतीहै उसीतरहमेरे पांचोपुत्रदुर्योधनआदिकसे अपनेप्राणकाभय रखतेहैं जबकुन्ती यहकहचुकी तबयुधिष्ठिरने श्यामसुन्दरकेआगेहाथजोड़करबिनयकिया हे त्रिलोकीनाथमैंजानताहूं कि पिछले जन्ममें कोईशुभकर्म मुझसेहुआथा जिसकेप्रतापसे तुम्हारे चरणजिनकादर्शन ब्रह्मादिकदेवतोंको जल्दीध्यानमें नहींमिलता सोमेरेघरआये॥

दो० जिनचरणनकी रेणुसों ममघर भयोपुनीत। केहि मुखसों बर्णनकरों माखनप्रभूसुनीत॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हेमहाप्रभूहमलोग अनाथहोकर सिवायतुम्हारादया व कृपा के दूसरेकाभरोसा नहींरखते मुझेऐसीसामर्थ्य नहींहै जोआपबैकुं ण्ठनाथकी स्तुतिबर्णनकरने सकूं जिसतरहआपने मुझकोअप नादासजानकर दयाकीराहयहांकृपाकी उसीतरहचारमहीने वा सातभरयहांरहकर अपनेदासोंकोसुखदीजिये यहदीनबचनकुंती व युधिष्ठिरकासुनकर वृन्दाबनबिहारी भक्तहितकारीने उनको हुतधैर्यदिया व चारमहीने वहांरहकरप्रतिदिननये२सुखउन्हैंदेने लगे एकदिन श्यामसुन्दर व अर्जुनराजायुधिष्ठिरसे आज्ञालेकर रथपरबैठके बनमेंअहेरखेलने वास्तेगये सोअर्जुननेकईशेर व ची ता व भालूशूकर व हरिण व साबर व रीछआदिकका शिकारमा रा व मांसहरिण व साबरका राजमन्दिरपरभेजादिया जबबहुतप रिश्रमकरनेसेमुरलीमनोहर व अर्जुनकोप्यासमालूमहुई तबदो नोंने यमुनाकिनारे जाकरपानीपिया व वृक्षकीछायामेंसोगये॥

दो० श्रीयमुना शोभित महा जामें उठैंतरंग। शीतल पवन बहै सदा फूले कमल सुरंग॥

जबअर्जुनथोड़ीदेरसोकर टहलताहुआयमुनाकिनारे गयातब उसनेक्यादेखाकियमुना जलमें सुनहला जड़ाऊमंदिरबनाहोक र उसमेंएककन्या महासुन्दरी बैठीहुईतपकरतीहै यहचरित्रदेख तेही अर्जुननेउसकन्यासे पूछातुमकिसकीबेटी कौननामहोकर यहां किसकारण अकेलीबैठी तपकरतीहो॥

दो० यहसुनकर बोली तभी महामनोहर बाम। पिताहमारे सूर्यहैं कालिन्दी ममनाम॥

जिनदिनों कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दवृन्दाबनमें विहारकरते थे तभीसे मैंउसमोहनीमूर्त्तिपर मोहितहोकर उन्हैं अपनापति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बनायाचाहतीहूं व मैंनेमनसाबाचा कर्मणासेयहप्रणाकियाहैकि सिवायबैकुण्ठनाथके दूसरेसेबिवाह नहींकरूंगी सूर्यदेवतानेमेरी इच्छाजानकर यहमन्दिररहनेवास्ते बनवादिया सोअपनेपिता कीआज्ञानुसार दिनरात यहांरहकर हरिचरणोंकाध्यान व स्मर णकरतीहूँपरमैंनेसुनाहैकि श्यामसुन्दरपर अनेकस्त्रियांमहासुंद री मोहितहोकर आठोंपहरउनकी सेवामेंरहतीहैं इसलियेमुझे गरीब बिचारीको उनकेपासद्वारकामें पहुँचनाबहुत कठिनहैक दाचित् वहदयालुहोकर अपनादर्शन देवैं तो मेरीकामना पूर्ण होसक्ती है॥

चौ० वह सबके मनकी गति जानैं। दासनकी विनती नितमानैं॥
जबलों नहिं पूजैं ममआशा। तबलों जलमें करों निवासा॥

अर्जुनयहबातसुनतेही वहांसेहँसताहुआ श्यामसुंदरकेपासआ नकरबोला महाराजयमुनाजलमें एकमहासुन्दरी तुम्हैंअपनाप तिबनानेवास्ते तपकरतीहै तुमऐसेभाग्यवान्हौ कितुम्हारेपीछे२ महासुन्दरीस्त्रियां दौड़ाकरती हैं यहसुनतेही श्यामसुन्दरवहांसे उठकरयमुनाकिनारे चलेगये व अर्जुननें पहिलेसे जाकरउसच न्द्रमुखीसेकहा जिन्हैंतुमअपना पतिबनायाचाहतीहौ वहीद्वार कानाथ अबिनाशीपुरुष यहांआतेहैं जैसेयहबचन कालिन्दीने सुनावैसेमारेहर्षके आगेदौड़कर हरिचरणोंपरगिरपड़ी व परिक्र मालेनेउपरांत हाथजोड़कर सन्मुखखड़ीहोगई जबमुरलीमनो हरने उसकीसच्चीप्रीति देखकरहँसतेहुये उसकाहाथपकड़लिया तबकालिंदीने बिनयपूर्वक कहाहेप्राणनाथ मैंमनसाबाचाकर्म

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

णासे आपकीदासीहोकर तुम्हारेसाथ चलनेको तैयारहूँपरसंसा
रीव्यवहार व मर्यादवेद वशास्त्रजोकुछ आपनेबनादियाहैउसको
अनुसारचलनाचाहिये यहबचन सुनकर केशवमूर्त्तिने उसीसम
य सूर्यदेवताकेपासजाकर कहा तुमअपनीकन्या हमैंदेवजबसूर्य
देवतानेउसीक्षण वहांआनकर वहकन्या श्रीकृष्णजीको संकल्प
दी तबश्यामसुन्दर उसेरथपरचढ़ाकर इन्द्रप्रस्थमें आयेवहांपर
बिश्वकर्माने पहिलेसे बैकुण्ठनाथकी इच्छानुसार एकस्थानबहु
तअच्छा बनारक्खाथा उसीमें कालिंदीको उतारकर एकरूपसे
पना उसकेपासरक्खा व दूसरेस्वरूपसे अर्जुनकोसाथलियेहुयेधु
न्तीके घरचलेगये एकदिनराजायुधिष्ठिरने केशवमूर्त्तिसे बिनय
किया हे महाप्रभूऐसी दयाकीजिये कि जिसमैंमेरे रहनेवास्तेए
कस्थानबहुतअच्छा यहांतैयारहोजावै यहबचन सुनतेही गोपी
नाथने बिश्वकर्माको आज्ञादी तोउसने द्वारकापुरीमें ऐसेउत्तम
अनेकस्थानतुरन्त युधिष्ठिर आदिकके रहनेवास्तेबनादिये जब
पांचोभाई उसमेंहर्षपूर्वक रहनेलगे तबएकदिनरातको जहांमुर
लीमनोहर व अर्जुनबैठेथे अग्निदेवताने आनकर कृष्णचन्द्रसे
बिनयकिया महाराजमुझे अजीर्णकारोग उत्पन्नहुआहै सोकि
सीतरहनहींजाता मैं नन्दनबनको जहांअनेकजड़ी व बूटीगुण
वान्लगीहैं जलादेऊं तोमेरारोग छूटजावेश्यामसुन्दरने कहा
हुतअच्छा तुमजाकर उसेजलादेव अग्निहाथजोड़करबोलेहेदी
नानाथ उसबागकीरक्षा इन्द्रकरताहै मैंअकेलाजाऊं तोइन्द्र
नीबरसाकरमेरी ज्वालाठण्ढीकरदेगा यहबातसुनकरलक्ष्मीपि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने अर्जुनसेकहा हेभाई तुम अग्निकेसाथ जाकरनन्दनबन इसे
जलानेदेव जिससेइसकारोग छूटजावै अर्जुनउनकीआज्ञानुसा
र धनुषबाणउठाकर अग्निकेसाथचलागया व उसबागमेंपहुँच
कर अग्निसेकहा तुमअपनी इच्छानुसार यहबागजलादेव मैंतु
म्हारी रक्षाकरनेवास्ते खड़ाहूँ जबअग्निदेवता आम व इमिली
व बेर व पीपर व पाकर व महुआ व जामुन व खिरनी व कचनार
व गूलरआदिक वृक्षवहांके चारोंतरफसे जलानेलगे व सबपशु व
पक्षीआदिकवहांके अपना २ प्राणलेकर जिधरतिधरभागे और
धुवांआकाशमेंपहुँचा तबराजाइन्द्रने मेघपतिको बुलाकर आ
ज्ञादी तुमअभीजाकर ऐसापानी नन्दनबागपर बरसाओ जिस
मेंसबअग्निबुझजाय व कोईपशु व पक्षीजलने नपावै जबयह
आज्ञापातेही मेघराजने दलबादलकी सेनासाथलियेहुयेनन्दन
बागपरजाकर पानीबरसाया तबअर्जुन ने पवनबाणमारकरसब
बादलको इसतरहजहांतहांउड़ादिया जिसतरहहवासे रुईकेफूहे
उड़जातेहैं व अपनेबाणोंसे नन्दनबागके चारोंओरऐसापिंजरा ब
नादिया जिसमेंकोईपशुपक्षीवहांका बाहरनजावे व पानीकीबूँद
उसजगहपहुँचने नसकेजबअग्निदेवता आनंदपूर्वक बाग़जलाते
हुयेनिकटस्थानमयनाम दानवकेपहुँचे तबउसदानवने जलनेके
डरसे अर्जुनकेपास आनकरबिनय किया हेराजकुमार मुझेअप
नीशरणागतसमझकर मेराप्राण इसअग्निके हाथसेबचाओ यह
दीनबचन सुनतेही अर्जुनने प्रसन्नहोकर अग्निसे कहदिया तु
ममयदानवकाघर मतजलाओ जबअग्निदेवता ने अर्जुनकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आज्ञासे मयदानवकास्थान छोड़कर औरसब नन्दनबागकोज
लादिया तबमयदानवने अर्जुनका उपकारमानकर उससेमित्र
ताईकी व अपनीमायासे एकस्थानसभाका बहुतउत्तमयुधिष्ठिर
आदिकके बैठने वास्ते इन्द्रप्रस्थमेंबनादिया जिसेदेखकरहमलो
गमोहित होजातेथे उसमेंकईजगह ऐसेकुण्ड बिल्लौरके सायूब
नेथे जिसको देखकरपानीभराहुआ मालूमहोताथा व किसीज
गह पानीभरेहुये कुण्डसूखेदिखलाई देतेथेएकादिन राजादुर्योध
नवहस्थान देखनेवास्तेगया जबपानीमें भीगनेके सन्देहसेअप
नाजामाउठाया तबभीमसेन हँसनेलगा इसलियेदुर्योधनबहुत
लज्जितहोकर अपनेघरचलाआया व उसीदिनसे दुर्योधननेपा
डवोंकेसाथ अधिकशत्रुतामनमें बढ़ाई जबअग्निदेवताकारोग
अर्जुनकीसहायता करनेसेछूटगयातब उसनेबहुत प्रसन्नहोकर
गांडीवनाम धनुष व दिव्यकवच व एकरथचारघोड़े श्वेतवर्ण व
दोतरकसजिसकेबाण कभीनहींघटतेथे व एकतलवार व ढालअ
ति उत्तम अर्जुन को दिये॥

दो० कालिन्दी सुखदेनको पांडुसुतनके काज। अग्निभार उपजायके रहे तहां यदुराज॥

जब श्यामसुन्दरनेचारमहीने इन्द्रप्रस्थमेंरहिकर राजायुधि
ष्ठिरसेविदाचाही तबपांचोंभाई पांडव व कुन्ती व द्रौपदीआदिक
बहुतउदासहोगये इसवास्तेबसुदेवनंदनउन्हैं धीर्य्यदेनेउपरांत
र्जुन व कालिन्दीकोसाथलेकर जबकईदिनमेंआनन्दपूर्वक द्वा
कापुरीपहुँचे तब उनकेदर्शनसे सबछोटेबड़ोंनेसुखपाया कईदि
बीते कृष्ण चन्द्रजीनेराजा उग्रसेनसे कहा महाराजकालिन्दी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Prayagraj Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवताकीबेटी जो हमारेसंगआई है उसकाबिवाह मेरेसाथकरदी
जिये यहवचनसुनतेही उग्रसेनने शुभलग्नमेंश्यामसुन्दर व का
लिन्दीकाबिवाहबड़ेधूमधामसेकरदिया इतनीकथासुनाकरशुक
देवजीबोले हे परीक्षित जिसतरहमुरलीमनोहर मित्रबिन्दाको
बिवाहलायेथे उसकाहालसुनो श्यामसुन्दरकीफूआ राजदेवीना
म उज्जैनकेराजासेबिवाहीगईथी जबउसकी मित्रबिन्दाकन्या
अतिसुंदरी व चंद्रमुखीउत्पन्नहोकर बिवाहनेयोग्यहुई तबराजा
मित्रसेन उसकेभाईने स्वयम्बरउसका रचकर सबजगहनेवताभे
जा सो अनेकदेशकेराजा वहांआनकर इकट्ठेहुये यहहालसुनक
र बसुदेवनंदनअंतर्यामीभी जिनकीचाहना व भक्तिवहकन्या हृ
दयमेंरखतीथी अर्जुनसमेतउज्जैनकोगये और वहांपरदेश २ के
प्रतापीराजा स्वयम्बरमेंबैठेथे वहांजाकरखड़ेहुये उसीसमयमित्र
बिंदाने सोलहोंशृङ्गारकिये हाथमेंजयमालालिये उसस्थानपर
आनकर जैसेमोहनीमूर्त्तिकोदेखा वैसेउनपरमोहितहोकर वहमा
ला उनकेगलेमेंडालदी यहहालदेखकर सबराजाअपनेअपनेम
नमेंपछतानेलगे व राजादुर्योधनजो अपनेभाइयोंसमेतवहांगया
था मनमेंडाहउत्पन्नकरके मित्रसेन व विन्दसेनराजकन्याकेभा
इयोंसेबोला सुनोयार कृष्णतुम्हारे मामाकाबेटा राजकन्याको
बिवाहलेजायगा तो इससंसारीकेलोग तुम्हारीहँसीकरेंगे इसलि
ये तुमअपनीबहिनकोजाकर समझादो कि वहइनसेअपनाबिवा
ह न करै नहींतो सबराजोंमेंतुम्हारीहँसीहोगी यहवचनसुनतेही
जैसे मित्रसेन अपनीबहिनकोसमझाया वैसेवहश्यामसुन्दरके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निकटसेहटकरअलगखड़ीहोगई तबअर्जुननेझुककर श्रीकृष्ण जीके कानमेंकहा महाराजइससमयआप किसीकासंकोचकरेंगे तोबातबिगड़जायगी जोकुछकरनाहो सो तुरन्तकीजिये यहबात सुनतेही वृन्दाबनबिहारीने झपटकर स्वयम्बरकेबीचमें मित्रबिंदाका हाथपकड़लिया व उसकोअपनेरथपर बैठाकरद्वारकाकोच लेयहहालदेखतेही दूसरेराजाजोवहांथे अपने २ रथ व घोड़ोंपर चढ़कर उनकेपीछेदौड़े व अनेकरङ्गकेशस्त्रलियेहुये उनकोचारों ओरसे घेरलिया जबदैत्यसंहारणनेदेखा कि बिनालड़े यहलोग नहींपीछाछोड़ेंगे तबउन्होंने कईबाणऐसेमारे किसबराजा जिधरतिधरभागगये व वृन्दाबनबिहारीने आनन्दपूर्वक द्वारकामें पहुँचकर शास्त्रानुसार उसकेसाथ अपनाबिवाहकिया ॥

दो० ताके अंगप्रसंगते मुदितभयो यदुराय। महिमावाके भाग्यकी कासों बरणी जाय॥

इतनीकथा सुनाकरशुकदेवजीबोले हेपरीक्षितअबजिसतरह श्यामसुन्दरने सत्यानामराजकुमारीसे बिवाहकियाथाउसकाहाल सुनो नग्नजितअयोध्याकेनृपतिने सत्याअपनीकन्याकास्वयम्बररचकरयहप्रणकियाथा जोआदमीमेरेसातोंबैलोंकीनाकएक बेरमेंनाथडालै उसकोअपनीबेटीबिवाहदूंगा इसलियेजोराजास्वयम्बरकाहालसुनकर वहांजातेथे वहलोग उनबैलोंकास्वरूप देखकर कोईउनकीनाकछेदना अङ्गीकारनहींकरताथा यहहालसुनतेहीमुरलीमनोहर अर्जुनको सेनासमेतसाथलेकर राजकन्यासे बिवाहकरनेवास्ते अयोध्यापुरीमेंगये जबउनकेआवनेका हाल राजानग्नजितनेसुना तबवह आगेसेजाकर हरिचरणोंपरगिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पड़ाव अनेकबस्तु उन्हैंभेंटदेकर सन्मानपूर्वकअपनेघरलिवाला याव जड़ाऊचौकीपर बैठाकरचरणधोनेउपरांत चरणामृतलिया व बिधिपूर्वकपूजाकरके बहुतअच्छाभोजन उनकोखिलाया व मोतियोंकीमाला पहिनाकर पीताम्बरओढ़ाया व सच्चेमनसे हाथ जोड़कर इसतरहपरविनयकिया हेमहाप्रभु आपसबगुणोंसेभरे होकर कुछअवगुणनहींरखते व तुम्हारेचरणोंकी धूरि ब्रह्मादिक देवता व योगी व ऋषीश्वरअपनेशिरपर चढ़ावतेहैं जबशेषनाग जी दोहजारजिह्वासे आपकीस्तुतिनहींकरनेसक्के तोदूसरेकोक्या सामर्थ्यहै जोतुम्हारेगुणबर्णनकरनेसकै लक्ष्मीदिनरात तुम्हारा पांवदाबकर नारदजी आठोंपहर आपकागुणगाया करतेहैं हेबै कुण्ठनाथ सबजगत तुम्हारीछायामेंरहताहै आजमेराबड़ाभाग्यथा जोआपकेचरणतीनोंलोककेतारनेवाले मेरेघरआये व मैं नेउनचरणोंको अपनेहाथसेधोया इन्हींचरणोंका धोवनगंगाजी हैं जिनकी महिमाकाबर्णन नहींहोसक्ता जिस २ जगह आपने चरणकमल अपनारक्खाहै उसपृथ्वीपर नेवछावरहोजाताहूं॥

दो० चरणाम्बुजहरिके चहैं शिव बिरंचि मुनिईश। धन्यभाग्य जोधरतहैं उनचरणनपरशीश॥
उदयभयो सबभायके आजहमारो भाग। माखनप्रभु दर्शन दियो कियो बहुत अनुराग॥

जबराजाने इसीतरह बहुतस्तुतिकरके उसदिन मुरलीमनोहरको अपनेयहांटिकाया तबसत्यानाम राजकुमारीजोअतिसुन्दरी व चन्द्रमुखीथी मोहनीमूर्त्तिको देखतेही उनपरमोहितहोकर अपनेमनमें कहनेलगी हे परमेश्वर मुझसेकोईशुभकर्मपिछले जन्ममेंहुआहोतो कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दको स्वामीपाकरअप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाजन्नस्वार्थकरूं ऐसाविचारकर उसनेअपनीसखियोंसेकहाहे प्यारियो मेरामनइस श्याममूर्त्तिने मोहितिया॥

चौ० यद्यपि ये त्रिभुवनके स्वामी। सकल विश्वके अन्तर्यामी॥
सदारहैं बिरक्त मनमाहीं। जिनकी इच्छा कछु नाहीं॥
तद्यपि जो इनसे मन लावै। प्रेमरीति की प्रीति लगावै॥
तासों प्रीति करत सुखदाई। हरिजूकी यह रीतिसदाई॥
जब मैं हरि चरणनको पाऊं। हरि दासनमें नाम धराऊं॥

दो० जिनके मनमें प्रीतिहै सो सबदेव अशीश। श्रीयदुपति मोकोबरैं सब ईशन के ईश॥

जबदूसरेदिन प्रातसमयश्यामसुन्दर उठे तबराजानग्नजित ने हाथजोड़करविनय किया हेकरुणानिधान मुझसेकुछटहलतु म्हारी नहींबनपड़ी इसलियेलज्जितहूँ औरजोआज्ञादीजियेसो अपनीसामर्थ्यभर तुम्हारी सेवाकरूं श्यामसुन्दर अन्तर्यामीको सच्चाप्रेम उसकन्याका मालूमहुआथा इसलियेउन्होंने हँसकर कहा हेराजनूतुम्हारीस्तुतिसुनकर हमारामन भेटवास्तेबहुतचा हताथा सोतुम्हेंदेखकरबड़ासुखपाया क्षत्रीवर्णको मांगनाधर्मन हींहै परन्तुतुम्हारीभक्ति व प्रीतिदेखकर मैंचाहताहूं किसत्याना मअपनीकन्या जोगुण व शीलसेभरीहै वहमैं बिवाहदेव यहव चनसुनकर राजाबड़ेहर्षसे विनयकिया हेबैकुण्ठनाथजहांलक्ष्मी जीआठोंपहर तुम्हारीसेवामें रहतीहैंवहां मेरीबेटी उनके सामने क्यावस्तुहै जोआपचाहना करैं केवल मेरीभक्तिदेखकरदयाकी राहआपऐसाकहतेहैं सो मेराबड़ाभाग्यहै जोमेरीकन्याआपकी दासियोंमेंरहै परमैंनेइसकन्याके विवाहवास्तेयहप्रणकियाहैकि जो आदमी मेरेसातबैलोंको एकबेरनाथदेवे उसेअपनीबेटीबिवा हदूं सोअनेकराजकुमारोंने आनकर ऐसीइच्छाकी परकिसीसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहकामपूरानहींहुआ उनमेंकितने बैलोंकेसींगसे घायलहोकर अपनेघरचलेगये व बहुतराजकुमार अभीतकयहां घायलपड़ेहैं आपसेमेराप्रण पूराहोसके तोयहकन्या बिवाहलेजाइये मेरेनिकट सिवायतुम्हारे दूसरेसेयहकामनहींहोगा यहसुनकरश्यामसुन्दरनेकहा बहुतअच्छा मैं सातोंबैलोंकी नाकछेदकर उन्हैंनाथ दूंगा यहवचन सुनतेही जबराजा उनसातोंबैलोंको जोहाथीकेसमानबलवान् थे उनके सन्मुखलेआया तबश्यामसुन्दरने उठककमरअपनी बांधली व सातरूप अपनेइसतरह पर जोदूसरेको दिखलाई न देवैंधारणकरके सातोंबैलोंकी नाकएकबेरमें छेददीवउन सातोंको एकरस्सीमें नाथकरखड़ाकरदिया॥

दो० माखनप्रभु ज्ञानीमहा कीन्हों चरित अनूप। सातवृषभके कारणे धरयो सप्त निजरूप॥

हेपरीक्षित देखोजिनकीआज्ञामेंतीनोंलोकके जीवरहतेहैं उनकेनिकटसातबैलोंकाएकबेरमें नाथलेनाकौनकठिनहै जबराजा नग्नजित यहचरित्र देखकर बहुतप्रसन्नहुआ व इच्छा राजकन्याकी पूर्णहुई तबसबछोटे व बड़नगरबासियोंने यहचरित्र देखकर अचम्भामाना व स्तुतिद्वारकानाथकी करनेलगे व राजानेउसीसमय उपरोहितसे शुभलग्नपूंछकर अपनेयहांबिवाहकीतैयारी व शास्त्रानुसार सत्या अपनीकन्या मुरलीमनोहरको बिवाहदीवदशहजारगौ व तीनहजारदासी अतिसुन्दरभूषणव बस्त्रसमेतनवलाखहाथी व नवकरोड़घोड़ा व नवलाखरथ व नब्बेहजारदास व असंख्यरत्न व द्रव्यादिक दहेजमेंश्यामसुन्दरकोदेकर अपनीकन्यासमेत बिदाकिया परदूसरेराजा जोउसस्वयम्बरमेंइक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ट्टेहुयथे क्रोधितव लज्जितहोकरआपसमेंबोले इसयादवकोक्या सामर्थ्यहै जोहमारेऐसेप्रतापीराजोंकेसामने राजकुमारीको ले जावे जबवहलोग ऐसाबिचारकर अपनी २ सेनासमेतचढ़दौड़व उन्होंने चारोंओरसेआनकर द्वारकानाथको राहमेंघेरलिया तब अर्जुननेगाण्डीव धनुषचढ़ाकर उनराजोंको ऐसेबाणमारेकिव हलोगहारमानकर जिधरतिधरभागगये जबकेशवमूर्त्तिआनन्द पूर्व्वक द्वारकामेंआये तबराजाउग्रसेनआदिक सबछोटेबड़ेआगे से आनकरगाते व बजाते उनकोराजमन्दिरपर लिवालेगये॥

दो० तहांबहुत उत्सव भयो कासों बरणोंजाय। नरनारी हर्षेसभी आनँद उर न समाय॥

जबदहेजकीबस्तुदेखकर सबद्वारकाबासीराजानग्नजितकीबड़ा ईकरनेलगे तबश्यामव बलरामने उसीसमयवहसबदहेजजोनग्न जितसेपायाथा अर्जुनकोदेकर संसारमेंयशाउठाया इतनीकथासु नाकर शुकदेवजीबोले हेपरीक्षितजिसतरह वसुदेवनन्दनभद्रा को बिवाहलेआयेथे अबउसकाहालसुनो गयनामनगरमें राजा ऋतुसुकृतने भद्राअपनीबेटीकास्वयम्बररचकर बहुतसेराजोंको इकट्ठाकिया तबमोहनीमूर्त्तिभी अर्जुनको साथलियेहुये वहांजा करखड़ेहोगये जबचंद्रमुखीराजकन्या जयमालहाथमेंलियेसब राजोंकोदेखतीहुई श्यामसुन्दरके निकटआई व उसने सांवली मूरत पर मोहितहोकर उनकेगलेमें जयमालडालदी तबराजाऋ तुसुकृतने बड़ेहर्षसे अपनीकन्या मुरलीमनोहर को बिवाहदी व बहुतसादहेज उन्हेंदेकर अपनीकन्यासमेत बिदाकिया जबश्री कृष्णजीभद्राकोलेकर द्वारकामेंआये तब घरघरमंगलाचारहोने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratgahj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगा इतनीकथासुनाकरशुकदेवजीबोले हे परीक्षित जिसतरह
श्रीकृष्णजीने लक्ष्मणाकोंबिवाहा था वहकथासुनो भद्रदेशकेरा
जाबड़प्रतापीने लक्ष्मणा अपनीकन्याकास्वयम्बर रचकरबहुत
सेराजोंको नेवताकहलाभेजा जबचारोंओरकेराजा अपनी २से
नासाथलिये बड़ीधूमधामसे वहांआनकर इकट्ठेहुये व बृन्दाबन
बिहारी भीअर्जुनको साथलेकर उसीस्वयम्बरमेंपहुँचे तबराजकु
मारीने सोलहोंशिंगारकिये जयमालालियेराजसभामें आनकर
जैसे बसुदेवनन्दनकोदेखा वैसेउनपर मोहित होकर वहमालाउ
नकेगलेमें पहिनादी राजानेयहहालदेखतेही बड़ेहर्षसेअपनीक
न्याउन्हैंबिवाहदी व बहुतसादहेजदेकर कन्यासमेत बिदाकिया
पदूसरेराजाजो उसकेस्वयम्बरमेंआयेथे डाहकीराहअपनीसेना
साथलिये द्वारकाकेराहपर जाखड़ेहुये जबश्रीकृष्णजीलक्ष्मणा
कोसाथलेकर अर्जुनसमेत द्वारकाकोचले तबउनराजोंने उनसे
युद्धकिया उससमयदैत्यसंहारन व अर्जुननेऐसेबाणचलाये कि
सबराजा हारमानकरभागगये व श्यामसुन्दर हर्षपूर्वकद्वारकामें
पहुँचे व द्वारकाबासियोंने अपने २ घरमंगलाचारमनाया हेपरी
क्षित इसीतरह श्यामसुन्दरअपनाबिवाह करकेआठोंपहर रानि
योंसमेतआनन्दपूर्वक द्वारकापुरीमें रहनेलगे व सबस्त्रियांप्रेमपूर्ब
उनकीटहल करतीथीं उनआठोंको जोअष्टनायका व पटरानी
कहलातीथींयहनामथा रुक्मिणी, जाम्बवती, सत्यभामा, कालि
न्दी, मित्रबिन्दा, सत्या, भद्रा, लक्ष्मणा॥

नं. मावनप्रभुकी नायका नामों सहित सुखसागर सुखसागर Harvard-Yenching Library

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनसठवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरका भौमासुरको मारना व बिवाहकरना अपना सोलह हजार एकसौ राजकन्यासे ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित एकदिननारदमुनिने फूलकल्प
बृक्षका जिसकीसुगन्धबहुतअच्छीहोतीहै नन्दनबागसे लेआक
र श्यामसुन्दरकोदिया जबमुरलीमनोहरने वहफूल रुक्मिणी
कोदेडाला तबनारदमुनिसत्यभामाके पासजाकर बोले आजमु
झेमालूमहुआ किबसुदेवनन्दन तुमसे रुक्मिणीकाअधिकप्यार
करतेहैं इसलियेउन्होंने कल्पवृक्षकाफूल जोराजाइन्द्रकेबागमें
होताहै रुक्मिणीकोदेदिया उनकोतेरीप्रीति अधिकहोतीतोतुझे
देते जब यहझगड़ालगाकर नारदमुनि चलेगये तबसत्यभामा
उदासहोकर कोपभवनमें जाबैठी जबमुरलीमनोहरने उन्हें म
नाकर यहकरारकिया किमैं कल्पवृक्षको इन्द्रलोकसे लेआकरते
रेआंगनमें लगादूंगा तबसत्यभामा प्रसन्नहोकर उनकेसाथबि
हारकरनेलगी हेराजन् एकसमयपृथ्वी स्त्रीरूपबनकर तपकरने
लगी तबब्रह्मा व बिष्णु व महादेवउसेदर्शनदेकरबोले तैंनेइतना
दुःखउठाकरकौनमनोरथ मिलनेवास्ते तपकियाहै स्त्रीरूपधरती
नेउनतीनोंदेवताओंकोदण्डवत्करके बिनयकिया महाराजदया
करकेमुझेएकबेटा ऐसाबलवान् व प्रतापीदीजिये जिसका साम
नातीनोंलोकमें कोईकर नसकै व किसीकेहाथसेवह मारानजावै
यहबात सुनतेही तीनोंदेवताओंने प्रसन्नहोकरकहा तेरापुत्रन
कासुरनाम जिसेभौमासुर लोगकहैंगे बड़ाप्रतापीउत्पन्न होगा
सबपृथ्वीकेराजोंको लड़ाईमेंजीतलेगा व स्वर्गलोकमेंजाकरके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवतोंको जीतनेउपरांत अदितिके कानोंकाकुण्डललेकरआप पहिनेगा व इन्द्रकाछत्र अपनीभुजाकेसामर्थ्यसे छीनकरअपने शिरपरधरेगा व संसारीराजोंकीसोलहहजार एकसौकन्याअति सुन्दरीबरजोरीसेलेआकरबिनाबिवाही अपनेघररक्खेगाजबश्री कृष्णजी बैकुण्ठनाथ उसकेसाथ लड़ने आवैंगे औरतू अपनेमुँह सेकहैगी कि मेरेबेटेकोमारो तबवहउसेमारकर सबराजकन्या द्वारकापुरीमें लेजावैंगे यहबरदानदेकर तीनोंदेवता अन्तर्द्धान होगये व पृथ्वीने बिचारकिया कि मैंअपनेपुत्रको मारनेवास्ते क्योंकहूंगी कि वहमाराजायगा यहबरदानपाकर पृथ्वीने तप करना छोड़दिया कुछदिनबीते उसके नरकासुरनाम बालकब ड़ाबलवान् उत्पन्नहोकर प्राग्ज्योतिषपुरमें सातकिलेकेभीतर राज्यकरनेलगा व सबपृथ्वीके राजोंकोजीतकर अपनेआधीन करलिया और सोलहहजारएकसौ राजकन्याबिनाबिवाही जि समें एकसेएकसुन्दरीथी चलतेफिरते खातेपीतेबरजोरी उठाले आया व अपनेवहांएकस्थानमेंरखकर ऐसाप्रणकिया जबबीसह जारकन्यापूरीहोंगी तबएकसाथउनसे अपनाबिवाहकरूंगा सो एकदिन सबकन्याआपसमेंबैठकररोनेलगीं उसीसमयपरमेश्वर की इच्छानुसार नारदमुनिनेवहांजाकरउनसेकहा तुमलोगकुछ चिन्तामतिकरो श्यामसुन्दर त्रिलोकीनाथतुम्हैं यहांसेछुड़ाकर तुम्हारेसाथ अपनाबिवाहकरैंगे यहबचनसुनतेही सबराजकन्या प्रसन्नहोकर उसदिनसेनित्यहरिचरणोंका ध्यानकरनेलगीं एक दिन भौमासुरक्रोधकरकेभूपबिमान जो लंकासेलेआयाथा उस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परबैठकर इन्द्रादिकदेवतोंसे युद्धकरनेवास्तेगया जबस्वर्गमेंजा
कर देवतोंकोदुःखदेनेलगा व देवतालोगउसकेहाथसेअपनेप्राण
काबचावनदेखकर जिधरतिधर भागगये तबउसने अदितिकाकु
एडल व इन्द्रके शिरका छत्रछीनलिया व अपनेनगरमेंआनकर
ऋषीश्वर व हरिभक्तोंकोदुःखदेनेलगाजबदेवतावहरिभक्तआदि
क उसकेहाथसेबहुतदुःखीहुये तबएकदिन राजाइन्द्रद्वारकापुरी
मेंबीच सभाश्यामसुन्दरके आनकर हरिचरणोंपरागिरपड़ावपरि
क्रमालेने व स्तुतिकरनेउपरांत हाथजोड़कर बिनयकियाहेदीना
नाथभौमासुरदैत्यऐसाबलवान्उत्पन्नहुआजिसनेमेरीमाताका
कुण्डल व मेराछत्रछीनकर सबदेवतोंको स्वर्गसेबाहर निकालदि
याव हरिभक्तोंको दुःखदेताहै इसलिये तुम्हारेशरण आनकरचाह
ताहूं कि आपउसेमारकरदेवता व हरिभक्तोंकी रक्षाकीजिये सिवा
यतुम्हारेदूसरेका भरोसानहींरखता जोउसकेशरणजाऊं यहदीन
बचनसुनतेही वसुदेवनन्दनने इन्द्रकोधैर्यदेकर कहातूअपने स्था
नपरजा मैं भौमासुरकोमारकर तेरादुःखहरूंगा जबइंद्रमुरली
मनोहरको दण्डवत्करके अपनेस्थानपरचलागया तबदैत्यसंहा
रनगरुड़परचढ़कर सत्यभामासेबोले चलतुझको भौमासुरकायु
द्धदिखालावैं व इन्द्रलोकसे कल्पवृक्षलेआकर तेरेआंगनमेंलगा
देवैं तू मुझेउसबृक्षकेसाथ नारदमुनिकोदानकरदीजियो फिरगो
व सुवर्ण आदिकशास्त्रानुसार उन्हेंदेकर मुझकोउनसेमोललेली
जियो तबमैं तेरेवशरहिकर सबस्त्रियोंसे तेरीअधिकप्रीतिकरूंगा
इसीतरहइन्द्राणीने इन्द्रको व अदितिनेकश्यपजी अपनेपतिको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दानदेकर फिर मोललेलियाथा जबयहबचनसुनतेही सत्यभामा बड़ेहर्षसेचलनेको तैयारहोगई तबश्यामसुन्दरने उसेअपनेपीछे बैठाकर गरुड़कोउड़ाया॥

दो० याबिधि सत्यभामा सहित माखन प्रभुयदुराय। भौमासुर के नगरको क्षणमें पहुंचेजाय॥

हेराजन् भौमासुरकानगरछःकिलेकेभीतर इसउपायसेबनाथा पहिलेकिलापहाड़का तैयारहोकर उसकेभीतरदूसराकिलाअग्नेकशस्त्रोंसेबनाथा तीसराकिलापानीसेभराहोकर चौथेकिलेमेंचारोंओर आगिजलतीथी पांचवांकिलावायुकाहोकर छठवांकिलारस्सोंकेजालकाबनाथा व सातवें अष्टघातीकिलेमें नरकासुरकेरहनेकास्थानथा सो श्यामसुन्दरकीआज्ञानुसार सुदर्शनचक्र व कौमोदकीगदा व गरुड़जीनेक्षणभरमें पहाड़ व पत्थर व शस्त्रोंको तोड़करपानीसुखाडाला व आगिबुझाने व बायुउड़ानेउपरांत रस्सोंकेजालकाटकररास्तावनादिया जबवृन्दाबनबिहारीसातवें किलेके द्वारपरपहुंचे तबलाखशूरबीर द्वारपालकयुद्धकरनेवास्ते उनकेसामनेआये सो गरुड़जीनेउनको अपनेपंख व चोंचसेमारकर गिरादिया व दैत्यसंहारननेकिलेकेभीतरजाकर पञ्चजन्य शंख अपनाबजाया॥

दो० भौमासुरके श्रवणमें शब्दपरयो जबजाय। तबहीं सोवतसेजग्यो मनमें बहुत रिसाय॥

हमनेतीनोंलोकमें किसीकोऐसानहींछोड़ा जो मेरेसाथ लड़नेकीसामर्थ्यरखताहो यहकौनपुरुषहै जिसनेयहांआनकर आजमुझेनींदसे जगाया उसेचलकर देखाचाहिये जिससमयभौमासुर यहविचारकररहाथा उसीसमयमुरनामदैत्य उसकेसंघीने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वारपालकोंका मरनासुनतेहीनरकासुरके पासजाकर विनयकि
या महाराजमेरेरहते आपकोपरिश्रमकरना उचितनहींहै मैं जा
कर देखताहूं जोहालहोगा वहसबतुमसेकहूंगा ॥

दो० तुमसों कौनमहाबली तिहूंलोकमें आज । कौनकाजश्रमकरतहौ सबराजनके राज ॥

यहबातकहिके मुरवहांसे बिदाहुआ व त्रिशूलहाथमें लेकर
श्यामसुन्दरकेसामनेआया व क्रोधसेलालीलालीआंखैंनिकाल
कर दांतपीसताहुआ बोलादेखूं मुझसेकौनबलीहै जोयहांलड़ने
आयाहै जबऐसाकहकर उसनेकेशवमूर्त्तिपरत्रिशूल व गदाआ
दिक अनेकशस्त्रअपनेचलाये व बसुदेवनन्दनने उसकेशस्त्र सुद
र्शनचक्रसेकाटडाले तबवहदैत्यजो पांचशिरकाथा झुंझलाकर
अपनेपांचो मुंहबायेहुआ इसइच्छासे उनकीओर दौड़ा जिसमें
बैकुण्ठनाथ को निगलजाऊं उससमय त्रिभुवनपतिने सत्यभा
माको घबराईहुई देखकर सुदर्शनचक्रसे पांचोशिर उसकेकाटडा
ले उसीदिनसे संसारमेंमुरारि उनकानामप्रकटहुआ जबमुरदैत्य
केताम्रआदिक सातोंबेटोंनेअपने बापकामरनासुना तबवहलोग
अनेकतरहके शस्त्रबांधेहुये बहुतसीसेना साथलेकर मोहनप्यारे
केसामनेआये व अपनाशस्त्रउनपर चलानेलगे तबवृन्दाबन बि
हारीने सुदर्शनचक्रसे इसतरह उनलोगोंकोभी सेनासमेत एक
क्षणमेंमारकरगिरादिया जिसतरहकिसानलोगजुवारकाखेतका
टडालतेहैं जबभौमासुरने सुनाकिमुरदैत्य मेरामंत्री अपनेसातों
बेटों व सेनासमेतमारागया तबवहक्रोधितहोकर बहुतसेशूरवीरों
व हाथीसाथलियेहुये श्यामसुन्दरपर चढ़दौड़ा ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमनेकुब्जासेकहाथा कि कंसकोमारकर तेरेघरआवैंगे सोअभी सकवहबचनपूरानहींहुआ इसलिये वहांजानाचाहिये ऐसा बिचारतेही उद्धवकोसाथलेकर कुब्जाकेघरगये ॥

चौ० जब कुब्जा जान्यो हरिआये। पीताम्बर पांवडे बिछाये ॥
अति आनन्द गई उठि आगे। पूरबजन्म पुण्य सबजागे ॥

जबश्रीकृष्णजी सूर्यसेअधिकतेजवान्रूपबनायेहुये बीचमन्दिरकुब्जाकेपहुँचे तब उनकेप्रकाशसे वहरत्नजड़ितस्थानजगमगानेलगा व कुब्जानेबड़ीभक्ति व प्रीतिसे उनकोजड़ाऊचौकीपरबैठाला व उद्धवकोबैठनेवास्ते आसनदिया और कुब्जाकमलरूपीचरण मोहनप्यारेकेगोदमेंलेकर बड़ेप्रेमसेदाबनेलगी ॥

दो० आसपास सजसाजिके महाराज के काज। आनँदसों मनमें कहै धन्यभागहै आज ॥

फिर कुब्जानेचरणकेशवमूर्त्तिके अपनेहाथधोकरचरणामृतलिया व बहुत उत्तमभूषण व वस्त्र जोबनवारक्खेथे उन्हैं पहिनाकरइतर व चन्दन उनकेअंगमेंमलदिया व छत्तीसव्यंजन उनकोखिलाकरपान व इलायचीसामनेरक्खा फिर श्यामसुन्दरकोशीशमहलमें रत्नजड़ितपुष्पोंकी शय्यापरलेजाकर बैठाला ॥

दो० फिर कुब्जाअस्नानकरि पहिरेउचीर सुरंग। रत्नजड़ित भूषणसजे नखशिखलौं सबअंग ॥

जबवह सोलहोंशृंगारकरके बड़ेप्रेमसे श्यामसुन्दरकेनिकटआई तब श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्दसबका मनोरथपूर्णकरनेवाले कुब्जाकाहाथ प्रीतिपूर्व्वकधरकर अपनी शय्यापरलेटालिया व उसकीइच्छापूर्णकरके लोक व परलोक दोनोंजगहका सुख उसेदिया ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० टेढ़ीसे सीधीकरी दियोरूप अभिराम । दासीसे रानीभई पूजी सबमनकाम ॥

हेराजन् देखो जिसपदवीको योगी व ऋषीश्वरबड़ेतप व जप करनेसेभी जल्दीनहींपहुँचनेसक्के वहफल कुब्जानेएकदिनकेच न्दनलगावनेसे सहजमेंपाया जो लोगनित्यविधिपूर्व्वक नाराय णजीका पूजनकरतेहैं उनकोनमालूमकैसीपदवीमिलैगी अपन मनोरथप्राप्तहोनेउपरांत कुब्जाने श्यामसुन्दरसेहाथजोड़कर वि नयकिया हे त्रिलोकीनाथ तुम्हारी मोहनीमूर्त्ति देखनेकी मुझे आठोंपहर अभिलाषाबनीरहतीहै इसवास्तेमैंचाहतीहूं कि कुछ दिन यहांरहकर मुझेसुखदीजिये केशवमूर्त्ति बोलेतूधैर्यरख जब मुझे यादकरैगी तब मैं तेरेघरआयाकरूंगा ॥

चौ० फिर उठि उद्धवके ढिगआये । भये लाजवश नयन नवाये ॥

जब मोहनप्यारे उद्धवसमेत अपनेस्थानपरगये तब मथुराबा सियोंने यहहालसुनकर कुब्जाकेभाग्यकीबड़ाई की ॥

चौ० धनि धनि कुब्जा हरिकी रानी । धनिधनि कृष्ण प्रीति करिमानी ॥
सदा रहै हरिकी यह रीती । मानत एक भक्त से प्रीती ॥
धनिधनि चन्दन अंगलगायो । धनिधनिभवन जहां हरिआयो ॥

फिर एकदिनकेशवमूर्त्तिने उद्धवसेकहा तुमस्त्रीकी भक्तिदेख चुके अबचलो एकपुरुषकाप्रेमदिखलावैं ऐसाकहकरमोहनप्यारे बलरामजीसेबोलेहेभाईहमने अक्रूरकेघरजानेवास्ते करारकिया था सो आजतक नहींगये अब वहांचलकर अक्रूरको हस्तिनापुर भेजके युधिष्ठिरआदि अपने भाइयोंकी सुधि मँगवानाचाहिये ऐसाकहकर बलभद्र व उद्धवसमेत अक्रूरके स्थानपरगये उन्हें देखतेही अक्रूर आगेसे आनकर शिरअपना हरिचरणोंपर रखदि या व मुरलीमनोहरने शिरउसका उठाकर अपनीछातीमें लगा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लिया फिर अक्रूर अपनाभाग्यउदय समझकर बड़े प्रेम व भक्ति से श्याम व बलराम व उद्धवको घरकेभीतर लिवालेगये और दोनोंभाइयोंको जड़ाऊ चौकीपरबैठाकर चरणउनके धोये व अपनी स्त्रीसमेत चरणामृत लेकर विधिपूर्व्वक पूजाउनकीकी व सुगन्ध उड़नेवास्ते अगरआदिक को अपने घरमें जलादिया व छत्तीसव्यंजन सोनहुली थालियोंमेंलाकर उनकेसामनेरक्खा जब श्यामसुन्दरने भक्ति व प्रीति उसकीसच्चीदेखकर बलरामजी व उद्धवसमेत आनन्दपूर्व्वक भोजनकिया तब अक्रूरपान व इलायची उनके सामनेरखकर दोनोंभाइयोंके चमरहिलानेलगा उस समय मोहनीमूर्त्तिको टकटकीबांधकर देखने से अक्रूरको ऐसा प्रेम उत्पन्नहुआ कि वहचरण वृन्दाबनबिहारीकापकड़कर अपनीआंखोंमें मलनेलगा जिसतरह परमदरिद्री बहुतधनपाकर प्रसन्नहोताहै उसीतरह अक्रूरको मोहनप्यारे के आनेसे परमहर्ष प्राप्तहोकर प्रेमके आंशू बहनेलगे॥

दो० तब अकूर करजोरिकै अस्तुतिकही सुनाय। तुमतो पुरुष प्रधान हौ माखनप्रभुयदुराय॥

फिर अक्रूरने हाथजोडकर विनयकिया हे दीनानाथ तुम उत्पन्नहोने व मरनेसे रहितहोकर तुम्हारे आदि व अन्त व भेद व लीलाको कोई जाननेनहींसक्ता सो मेरीदण्डवत् आपकोपहुँचे तुमरजोगुणसे संसारकी उत्पत्ति व सतोगुणसेपालन व तमोगुणसे नाशकरके कुछइच्छा नहींरखतें व तीनोंलोकका व्यवहार अपनीमायासे प्रकटकरके आपउससे बिलगरहतेहैं व संसारीमायामोहमें फँसनेवाला मनुष्यभवसागरपार नहींउतरता व बिना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कृपातुम्हारी मुक्तिमिलना बहुतकठिनहै नारदमुनि व सनकादि क ऋषीश्वर व ध्रुव व प्रह्लाद व अम्बरीषआदि हरिभक्तकेवल तुम्हारीदयासे इतनीबड़ी पदवीको पहुँचे हैं व गरुड़सबपक्षियों केराजा तुम्हाराबाहनहोकर आपसदा शेषनागके मस्तकपर बि राजतेहैं व गंगाजी तुम्हारे चरणका धोवनहोकर तीनोंलोकको तारती हैं व पांचोंतत्त्व तुमसे उत्पन्नहोकर चारोंवेदतुम्हाराश्वा सहैं सो बिनादयाआपके तुमकोकोई पहिंचानने नहींसक्ता तुम नेकेवल पृथ्वीकाभार उतारनेवास्ते अपनीइच्छासे सगुणअवता रलेकर अनेकदैत्य व राक्षसोंकोमाराहै व अबभी बहुतसे दैत्य व अधर्मीराजोंको सेनासमेत मारोगे सो मेरीदण्डवत्लीजिये मैं तुम्हारेपूजन व स्तुतिकरनेकी सामर्थ्यनहींरखता परअपनेभा पर न्यवछावरहोताहूं जो आपनेदयाकी राहआनकर मुझेदर्शन दिया व इसझोपड़ीको अपनेचरणोंसे पवित्राकिया जो कोई वि क्तहोकर तुम्हाराध्यान व स्मरण साथप्रीतिकेकरताहै उसपरतुम दयालुहोकर अर्थ धर्म काम मोक्ष उसे देतेहौ ॥

दो० माखन प्रभु गोपाल सों जो राखत है हेत। अपने चारोंहाथसों चारपदारथ देत ॥

जैसे कुब्जाकेरूपको देखकर उसकीइच्छा पूर्णाकिया वैसेमु झपरभी दयालुहोकर ऐसाज्ञानदेव जिसमें आठोंपहर तुम्हारेच रणोंका ध्यानरखकर आवागमनसे छूटजाऊं जबयहस्तुति सुन कर केशवमूर्त्तिने अक्रूरसे वरदान मांगनेवास्ते कहा तबवहहाथ जोड़कर बोला महाराज मैं यहीचाहताहूं कि स्त्री व पुत्रोंकीप्रीति मेरीमनसेछूटकर तुम्हारेचरणोंमें भक्तिउत्पन्नहो श्यामसुन्दरने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसे इच्छापूर्वक वरदानदेकरकहा साधु व महात्माकी संगतिकर नेसे तुम्हाराचित्त शुद्धहोजायगा फिरमोहनप्यारे अपनीमायासे अक्रूरकाब्रह्मज्ञान हरकरबोले हेचचातुमयदुकुलमेंश्रेष्ठ व हमारे पिताकेतुल्य होकर इतनीविनय हमारी क्योंकरतेहौ तुम्हारीटह ल व स्तुतिकरना हमकोउचितहै और मैं आपके दर्शनवास्ते आ या जबयह मायारूपी बचनसुनकर अक्रूरकाज्ञान भूलगया तब उसने श्याम व बलरामको वसुदेवजीकापुत्र जानकर बड़ेप्रेमसे गोदमेंउठालिया व बड़ेहर्षसे उन्हैंप्यार करनेलगा तबमोहनीमू र्तिबोले हेचचा तुम्हारेपुण्य व प्रतापसे दैत्यलोगमारेगये परएक बातका शोचमुझे बनाहै सो आपदयाकीराह छुड़ादीजिये मैं सु नताहूं जबसेराजापाण्डु हमारेफूफा बैकुण्ठको सिधारे तबसेरा जादुर्योधन युधिष्ठिरआदिक मेरेभाइयों व कुन्ती मेरी फूफूको बहुत दुःखदेताहै सो आपहस्तिनापुरजाइये और उनकोधैर्यदेक रवहांकी कुशललेआइये हमारामन उनकेवास्ते बहुतउदासरह ताहै जब अक्रूरउनकी आज्ञानुसार हस्तिनापुरको गया तबश्या म व बलराम उद्धव समेत अपनेघरआये ॥

उनचासवां अध्याय ॥

अक्रूरका हस्तिनापुरमें पहुँचना व पांडवोंका समाचार लेआना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जबश्यामसुन्दरने बहुतसीबस्तु कुन्ती व युधिष्ठिरआदिककेवास्ते देकर अक्रूरको बिदाकिया तब वह रथपरबैठकर कईदिनमें हस्तिनापुरमें पहुँचे व नगरकेबाहर तालाब व बावली व बाग व देवस्थान बनायाहुआ राजापाण्डु व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनके पुरिखोंका देखकर बहुतप्रसन्नहुये जबवह रथसेउतरकर राजा दुर्योधनकीसभामें जहांपरधृतराष्ट्र व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य व कर्ण व अश्वत्थामा व विदुरबैठेथे गये तब सबकि सीने अक्रूरको यादवकुलमें श्रेष्ठ समझकर सन्मानपूर्वकबैठाला उससमय दुर्योधन अभिमानीने व्यंग्यकीराह अक्रूरसे पूछा॥

चौ० नीके सूरसेन बसुदेव। नीके हैं मोहन बलदेव॥
उग्रसेन राजाके हेत। और न काहूकीसुधिलेत॥
बेटामारि करतहै राज। तिन्हैं न काहूसेहै काज॥

यहसुनकर अक्रूरचुपहोरहा व उसने मनमेंबिचारा इनअ धर्मियोंकी सभामें मुझसे दुर्योधनका कठोरबचन नहीं सहा जायगा इसलिये यहांबैठना न चाहिये ऐसाबिचारकर अक्रूर व हांसे उठखड़ाहुआ व विदुरजीकोसाथलेकर युधिष्ठिरकेघरचल गया तो क्यादेखा कि कुन्ती राजापाण्डुअपनेपतिकेशोचमें उ दासबैठीहै अक्रूरने कुन्तीकेचरणोंपर शिररखकर सौगातभेजी हुई श्यामसुन्दरकीसामनेधरदी व युधिष्ठिरआदिक पांचोभाइ योंको गोदमेंउठाकरबहुतप्यारकिया व जबकुन्तीनेआदरपूर्वक अक्रूरको अपनेपासबैठाला तब अक्रूरने कुन्तीसेकहा अयमाता विधातासे कुछ किसीकाबशनहींचलता व सदाकोई अमरनहीं रहता संसारमेंजन्मलेकर दुःख व सुखदोनोंभोगनापड़ताहै इस लिये शोचकरनेसेकुछलाभनहोकर केवलशरीरदुःखपावता है यहसुनकरकुन्तीने अपनेमनकोधैर्यदिया व बसुदेवआदिक की कुशलपूंछकर बोली हे अक्रूरकभी श्याम व बलराममुझे व युधि ष्ठिरआदिक अपनेपांचोभाइयोंको यादकरतेहैं या नहीं मेरेबेटों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीरक्षा जो यहां दुःखसागर में पड़े हैं कब आनकर करेंगे ॥

दो० मम पुत्रनको तेजबल बर्णतसबसंसार। दुर्योधन सुनिके कुढ़े दुर्मति अधम गवांर ॥

इसलिये अबमुझसे अन्धे धृतराष्ट्रका दुःखदेना जो दुर्योधन अपनेपुत्रके सम्मतसे कामकरताहै सहानहींजाता व दुर्योधन दिनरात मेरेबेटोंके प्राणलेनेके उपायमें रहताहै एकबेर उसने भीमसेनको विषकालड्डू खानेवास्ते भेजा फिरउन्हैं लाहके कोटमें रखकर आगलगवादी परनारायणजीकी दयासे दोनोंबेर उनका प्राणबचा जबकौरवलोग इसतरह मेरेबेटोंसे शत्रुतारखतेहैं तोवह उनकेहाथसे किसतरह जीतेबचेंगे यहीशोच आठोंपहर मुझेलगारहताहै जिसतरह बकरी भेड़ियोंके गोलमें अपनेप्राणकोडरा करती है वहरिणीअपने झुण्डसे बिलगहोकर सुखनहींपाती व सांपघरमें रहनेसे भयबनारहताहै वहीदशा मेरीरहकर यहांसेभागनेभी नहींसक्ती श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथने सबजीवोंका दुःख दूरकरनेवास्ते सगुणअवतार लियाहै फिरमेरेपुत्रों का दुःखजो बिनाबापकेहैं क्योंनहींहरते हैं आजतक अपनेको बिनावारिसके समझतीथी परअब श्यामसुन्दरके सुधिलेनेसे मुझे मालूमहुआ कि मेराभी कोईसहायकहै जिसतरह मोहनप्यारेने कंसादिकअधर्मियोंको मारकर अपनेमाता व पिताको सुखदिया उसी तरह मेरीरक्षाभी वहीकरैंगे हे अक्रूरअपना दुःखकहना किसीसे अच्छा नहींहोता मैं तुमको अपनाजानकर सबहाल कहतीहूं जिस तरह ग्रहण लगतीसमय राहु व केतु चन्द्रमा व सूर्यको ग्रसिलेते हैं उसीतरहमेरेपुत्र दुर्योधनआदिक अधर्मियोंकेघेरेमेंपड़े हैं हे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अक्रूर तुममेरीओरसे कृष्णचन्द्रआनन्दकन्दको आशीषदेकर कहदेना यहबड़ेशोचकीबातहै जो मैं तेरे ऐसाभतीजा रखकरसं सारीदुःखसेछुट्टीनपाऊं मुझेमहादुःखी व दीनजानकर मेराकष्ट हरो॥

दो० मेरी औ ममसुतनकी तुमहींकोहै लाज। और शरण सूझैनहीं माखनप्रभु ब्रजराज॥

हेराजन् अक्रूर हरिभजनकेप्रतापसेहोनहारकेजाननेवाले यह बातसुनतेही आँखोंमेंआंशूभरकरबोले अयमाता तुम किसीबात काशोचमतकरो तुम्हारेपांचोपुत्र श्रीकृष्णजीकीदयासे अपनेश त्रुओंकोजीतकर बड़ेप्रतापीराजाहोंगे व श्याम व बलरामनेयह संदेशा तुम्हेंकहाहै कि फूफूकिसीबातकी चिन्तानकरैं मैं जल्दी उनकेपास आताहूं॥

दो० कुन्ती सोंयाविधिकह्यो शोचोमाति मनमाहिं। माखनप्रभु जाओरहैं ताको भयकछुनाहिं॥

जब अक्रूर इसीतरह कुन्ती व युधिष्ठिरआदिकको धीर्यदेकर वहांसेबिदाहुये व बिदुरकोसाथलियेहुये हस्तिनापुरबासियोंसे च लन व व्यवहार युधिष्ठिरआदिक पांचोभाइयोंकापूंछनेलगे तो सबकामतयहपाया जिसमेंराजगद्दीयुधिष्ठिरकोहो फिर अक्रूरने बिदुरसमेत धृतराष्ट्रकेपासजाकरकहा महाराजतुमने कौरवकुल में श्रेष्ठहोकर अपनीबड़ाई क्योंखोदी व राजापाण्डुअपनेभाईकी गद्दीलेकर युधिष्ठिरआदिक अपनेभतीजोंको जो बिनाबापके हैं किसवास्ते दुःखदेतेहो औरतुमज्ञानवान् होकर दुर्योधनआदिक अपनेअधर्मी बेटोंकेसम्मतसे क्यों ऐसापापकरतेहो मनुष्य अके ला उत्पन्नहोकर मरतीसमय कोई उसकेसाथ नहींजाता जिनके

CC-0.In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वास्ते यहसबपाप बटोरतेहो वहपरलोकमें तुम्हारेकाम न आवेंगे और इसअधर्मकरनेकेबदले तुम्हेंनरक भोगनापड़ैगा॥

चौ० लोचन गये न सूझै हिये। कुल बहिजाय पाप के किये॥

हे धृतराष्ट्र तुमने नहींसुना जोराजा अपनेप्रजा व परिवारको समान न देखकर सबकापालन बराबरनहीं करता वह अवश्य नरकभोगताहै व संसारीव्यवहार स्वप्नेकेसमान झूठाहोकर मरनेउपरांत केवलभलाई व बुराई रहजातीहै जो लोग संसारीव्यवहार झूंठा समझकर किसीजीवको दुःखनहींदेते वहीलोग जगत् में यशपाकर अन्तसमय मुक्तहोतेहैं इसलिये तुम्हें अपनेबेटे व भतीजोंमें कुछभेद न समझकर युधिष्ठिरआदिकको दुःख देना चाहिये तुम्हारेबेटे तुमको स्वर्गमें न लेजाकरभतीजेनरकमें न पहुँचावेंगे नरक व स्वर्ग अपनीकरणीसे मिलताहै मैं तुम्हारे कल्याणवास्ते धर्मकीबात कहेदेताहूं इसीकेअनुसार करनेमें तुम्हारायशहोगा कदाचित्ऐसा नहींकरोगे तो पीछेसे तुम्हैंपछताना पड़ैगा॥

दो० यातेतजो अधर्मसब चलो धर्मकी रीति। जिनकी नीतिअनीतिहै तिनकीहोय न जीति॥

यहसुनतेही धृतराष्ट्र अक्रूरकाहाथपकड़कर बोले हे भाई तुम यहअमृतरूपी व मंगलकारीबातहमारेलिये बहुतअच्छीकहते हो और मैं भी समझताहूं कि श्रीकृष्णजीनेपृथ्वीकाभार उतारनेवास्ते जन्मलेकर सबभला व बुराकरनेकीसामर्थ्य अपनेबश रक्खीहै जोवहचाहैंगे सो होगा उनकीइच्छाप्रबलहै परमैं क्या करूं तुम्हाराउपदेश हृदयमेंनहींठहरता बिजुलीकी तरह च

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करनिकलजाताहै व दुर्योधनआदिकमेरे बेटेहमाराकहना नमान
कर अपनीबुद्धिकेप्रमाणकामकरते हैं इसलिये मैं उनकीबातोंमें
कुछ नहींबोलता अकेलाबैठाहुआ परमेश्वरकाभजनकरताहूंतु
ममेरीदण्डवत् श्रीकृष्णजीकोकहदेना यहसुनकर अक्रूरनेकहा
हे धृतराष्ट्र परमेश्वरकीमायाबड़ीबलवान्है जो मेराउपदेशतुम्हें
नहींलगता नमालूमबैकुण्ठनाथकी क्याइच्छाहै ऐसाकहकर अ
क्रूरधृतराष्ट्रकोदण्डवत्करकेउठखड़ाहुआ व कुन्तीकेघरपरचला
गया और उसेधैर्यदेकर रथपरचढ़बैठा ॥

दो० बिदुरभक्तसे बिदाह्वै कुन्तीसों करजोर। पाण्डुसुतनको देखिकै चले मधुपुरी ओर ॥

अक्रूरने मथुरामेंपहुंचतेही राजाउग्रसेन व बसुदेवजीकेसामने
श्याम व बलरामसेहाथजोड़कर बिनयाकिया हे दीनानाथ मैं
हस्तिनापुरमें जाकरदेखा तो तुम्हारीफूफू व युधिष्ठिरआ
पांचोभाइयोंको दुर्योधनकेहाथसे बहुतदुःखीपाया अधिक
क्या कहूं आपअन्तर्यामी सबहालजानते हैं कौरवोंका अधर्म
कुछ आपसे छिपानहीं है जब ऐसाकहकर अक्रूर अपनेघरचला
गया तबश्रीकृष्णचन्द्र बैकुंठनाथसंसारीमनुष्योंकीतरह पहिलेउ
दासहोगये फिरबलभद्रजीसेसम्मतकरके उससमयप्रणकिया कि
महाभारतकराके पृथ्वीकाभारउतारूंगा इतनीकथासुनाकर शुक
देवजीबोले हे राजन्जोमैंने बृन्दाबन व मथुराकीलीला तुझको
सुनाई यहपूर्वार्द्धकथा कही है अबउत्तरार्द्धकथा श्रीद्वारकानाथ
की कृपासे सुनाऊंगा ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पचासवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दर व जरासन्धसे युद्धहोना ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जिसतरह श्यामसुन्दरने जरासन्धकीसेना मारकर कालयमनका नाशकिया व राजामुचकुन्दको भवसागरपार उतारकरद्वारकामेंजाबसे वहहालकहताहूंसुनो राजा उग्रसेनधर्मपूर्वक मथुराकाराज्यकरनेलगे श्याम व बलरामभक्तहितकारी उनकी आज्ञापालनकरतेथे व उसराज्यमें कोई दुःखीनहींथा परअस्ति व प्राप्तिनामदोनोंस्त्रीराजाकंसकी अपने पतिकेशोचमेंबहुतउदासरहाकरतीथीं सोएकदिनदोनोंबहिनआपसमेंरोकरकहनेलगीं अबयहांअनाथपड़ेरहनेसे अपनेपिताकेघरचलकररहनाउचितहै यहबिचारकरतेही दोनोंबहिनरथपरचढ़कजरासंधकेघरचलीगईं व जिसतरह श्याम व बलरामनेराजाकंसकोदैत्योंसमेतमारकर उग्रसेनकोराज्यदियाथा वहसबहालरोकर अपनेपितासेकहा यहसमाचार सुनतेहीजरासन्ध अभिमानीबड़ाक्रोधकरके अपनेसभावालोंसेबोला ऐसाकौनबीरयदुकुलमेंउत्पन्नहुआ है जिसनेकंसऐसेमहाबलीको दैत्योंसमेतमारडाला अबमैंयहप्रणकरताहूं कदाचित् कंसकेबदलेमथुरापुरीको यदुबंशियोंसमेतजलाकरराम व कृष्णको जीताबांध न लेआऊं तो अपनानाम जरासन्ध न रक्खूं ऐसाकहकर जरासन्धअभिमानी जो श्याम व बलरामकीमहिमानहींजानताथा बोला यदुबंशीलोग इसयोग्यनहीं हैं जो मैं सेनासाथलेकर उनसेलड़नेजाऊं इसीजगहसे एकगदाफेंककर उन्हेंमारडालूंगा ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० रामकृष्णको मारिकै बैर कंसका लेउँ। कोऊ यादववंशके कुलमें रहन न देउँ॥

जरासन्धवरदानपावनेकेप्रतापसे जैबेरगदाशरके चारोंओर घुमाकरजहांफेंकताथा उतनेहीयोजनपरवहगदाजाकर शत्रुओं को मारताथा जब जरासन्धने उसीघमण्डसे हज़ारमनकी गदा सौबेर घुमाकर मथुरापुरीपर जो चारसौकोश मगधदेशसे थी फें की तब श्यामसुन्दर अन्तर्य्यामीने अपनीगदा चलाकर उसकी गदा मथुरापुरीके निकट गिरादिया जब वहगदा बिनाकामकिये मगधदेशमें फिरआई तब जरासन्धने अचम्भामानकर मनमें कहा जिसनेमेरीगदाको रोकदिया वहबिनायुद्धकिये नहीं मारा जायगा ऐसाविचारकर उसने सबराजोंको जो उसकीआज्ञामें र हतेथे बुलाभेजा व तेईस अक्षौहिणीसेना साथलेकर मथुरा पर चढ़आया जब दशहज़ार आठसौहाथी व तीसहज़ारआठसौ सत्तररथ व छासठहज़ार घोड़ेकेसवार व एकलाख नौहज़ार सा ढ़ेतीनसौ पैदलसिपाही इसतरह सबदोलाख आठहज़ार तीस म नुष्योंकीसेना इकट्ठीहो तब एक अक्षौहिणीदल कहलाताहै॥

श्लोक अयुतंचनागास्त्रिगुणीरथानां लक्षैकयोधा दशलक्षवाजिनाम्॥
पदाति संख्यापट्त्रिंशकोटयः अक्षौहिणीतां मुनयो वदंति॥

सोजरासन्धने इसीहिसाबसे तेईस अक्षौहिणीदल व बड़े २ शूरबीरोंकोसाथलियेहुये कईदिनमें वहां पहुँचकर मथुरापुरीको चारोंओरसे घेरलिया तबदशोदिग्पाल व सबदेवता मारेडरके कांपउठेव पृथ्वीकम्पायमानहोगई इतनीभारीसेना देखतेही सब मथुराबासी अपनेप्राणकेडरसे घबरागये व श्यामसुन्दरसे विनय किया हेदीनानाथ जरासन्धने आनकर नगरकोचारोंओरसेघेरलि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याअबहमलोगकहांभागकरजावैं जिसमेंप्राणबचैं जबयहसुनक
रमुरलीमनोहर अपनेमनमें कुछविचारकरनेलगे तबबलरामजी
बोले हे महाराज आपनेपृथ्वीकाभारउतारने व हरिभक्तोंकोसुख
देनेवास्ते अवतारलियाहै सो अग्निरूपधरकर दैत्योंकीसबसेना
जलादीजिये यहबातसुनकर बैकुण्ठनाथनेकहा हे भाईइनलोगों
का मारनाकुछकठिननहीं है परन्तुमुझेबहुतसेकाम संसारमेंकर
नेहैं इसलिये जरासन्धकेबधकाउपाय पीछेकियाजायगा ऐसा
कहकर श्यामसुन्दर बलरामजीसमेत राजा उग्रसेनकेपासचले
गये और बोलेमहाराजमुझेआज्ञादीजिये तो जरासन्धसेजाकर
लड़ूं व आप यदुवंशियोंकोसाथलेकर नगरकीरक्षाकीजिये उग्र
सेनेकहा बहुतअच्छा श्याम व बलराम उनसेआज्ञापातेही न
गरकेबाहरआये उससमय उनकीइच्छानुसारदोरथजड़ाऊ अति
उत्तम सूर्य व चन्द्रमाकेसमानचमकतेहुये आकाशसे उतरकर
श्याम व बलरामकेसामनेखड़ेहोगये मुरलीमनोहरकेरथपर सुद
र्शनचक्र व शार्ङ्गधनुष व तरकशबाणोंसेभराहुआ व नन्दक तल
वार व कौमोदकीगदारक्खीहोकर ध्वजापरगरुड़कीमूर्त्तिबनीथी
शैव व सुग्रीव व मेघपुष्प व बलाहकनामचारघोड़ेअतिसुन्दरउसर
थमेंजोतेहोकर दारुकनामसारथीउसपरथा व बलभद्रजीकेरथपर
हल व मूशलउनका रक्खाहोकर ध्वजामें ताड़के बृक्षका चिह्न
बनाथा उसे देखतेही दोनोंभाई अपने २ रथपर चढ़बैठे व थोड़ी
सीसेना साथलेकर रणभूमिमेंआये जैसेश्यामसुन्दरने जरासन्ध
की सेनामें मारूबाजा बजतेसुनकर पांचजन्य शंखअपना बजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

या वैसे पृथ्वी व आकाश मारेडरके कांपउठा व जरासन्धके शूर बीरोंकाहृदय धड़कनेलगा जबजरासन्धरथ अपनाबढ़ाकर श्री कृष्णजीकेसामने लेआया तबश्याम व बलरामभी अपनारथब ड़ेबेगसे उसकेसामने लेगये तबजरासन्धने अभिमानकी राह श्री कृष्णजीसे कहा अयबालक तू अपनेमामाको मारकर मेरेसाम ने लड़नेआयाहै इसलिये तेरेऊपर शस्त्रनहीं चलाऊंगा तू यहांसे भागजा इसीमें तेरा कल्याणहै ॥

बौ० महाअधम पापी जग माहीं। तेरो मुख देखत हमनाहीं ॥
जिन अपने मामाको मारेउ। पापपुण्य कछु नहीं बिचारेउ ॥
तासों युद्ध कवनविधि कीजै। जासों नेम धर्म सबछीजै ॥
दो० तोहिं बालकसों युध करत आवत है मोहिंलाज। याते हमबलभद्रसों युद्धकरैंगे आज ॥

जरासन्ध यहबचन मुरलीमनोहरसे कहकर बोला हे ब द्रतुझे अपनाप्राणप्यारा न हो तो मेरेसाथ लड़ अभीतुझकोमैं रूंगा तू नहींजानता कि मैंजरासन्धहूं तेरामारना मेरेनिकटक्य बड़ीबातहै यहबचनसुनकर श्यामसुन्दरबोले हेजरासन्धअज्ञान अपनीबड़ाई आपकरना अच्छानहींहोता शूरबीर अपनीस्तुति आपनहींकरते सबसे अधीनरहकर समयपर अपनापुरुषार्थ दि खलातेहैं जो अपनीबड़ाई आपकरताहै उसेजगत्में कोई भला नहींकहता इसलिये तेरीभुजामें जोकुछ सामर्थ्यहो सो दिखला व तैंने अभीतक बलभद्रका पराक्रमनहींदेखा जिसकी मृत्युनि कटआवतीहै उसे भलीबुरीबात कहनेकाबिचार नहींरहता और तू मुझको मामाकामारनेवाला जो कहता है सो जिसतरह वह अपने अधर्मकरनेके दण्डकोपहुँचा उसीतरह तेरीभी गतिहोगी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहवचन सुनतेही जरासन्धबड़ेक्रोधसे अपनीसेनामपना दुःखसुना व बलरामपर दौड़ा व उन्हेंबाणमारताहुआ पुकारकौनऐसा चैतन्य तदिनतक तुम्हाराप्राणबचा अबमेरेआगेसे जीतेफिरखोंसे नहींबहा पावोगे जहांराजाकंस व सबदैत्यगयेहैं वहांसबयदुगया तब जड़से तुमकोभी भेजूंगा यहबातकहकर जरासन्ध व उसबों की यहदशा ने ऐसेबाण व अनेकतरहके शस्त्र श्याम व बलरा भूलगया जब जैसेसावन भादौंकी बूंदें बरसती हैं उससमय राम पर चढ़कर हांक इसतरहसे छिपगये जिसतरह सूर्यबदलीमें दिखड़ालिया व बड़ीक जबमथुरानगरकी स्त्रियां जोअपनी २ अटारियोंपहमलोग अबल युद्धकाकौतुकदेखतींथींश्याम व बलरामकारथ नत्याचाहतेहो हमें हीकर रोनेलगीं ॥ । राजा कंसके दे

दो० माखनप्रभु परतापते जीतत सबसंसार। ताप्रभुसों जीतो चहै मूरख राज छोड़कर उ

जब जरासन्धआदिकने मोहनप्यारेकीसेनामर हमाराप्राण राम व कृष्णअपना २ रथदौड़ाकर उसकीसेनापन जावतो कं तरह सिंहहाथियोंकेगोलमेंझपटताहै जबश्याम व फिरजाय केसमान रथअपनाघुमाकर युद्धकरनेलगे तब शूशाथी दूस मारकहकरप्राणदेते व कादरलोगमारेडरके पीछेरेप्राण प तेथे उससमयघेरेरहना सेनाचारोंओरसे घटारूपेवोंगी ॥ कुराडलदोनोंभाइयोंके बिजुलीकेसमानचमकते काशसे यहकौतुकदेखकर मुरलीमनोहरकी दि इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित ज अन्तर्यामीने मथुराबासियोंको अपनेवास्ते चिन्तमब्रजगोकुल के

राम
काल
होने
न्दजी
ोने ज
। हमने
रदतमोहिंयोंजा
। नँदनन्द बिनु ॥ परइ
। पिरि बढ़ी है शरं
ोर भरी येरीबीर जरि
के हजूर में ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

या वैसे पृथ्वी र ऐसाएकबाण छोड़ा कि वह प्रभुकीमायासे छुटती
बीरोंकाहृदय तीरहोकर जरासन्धकी सेनामेंशूरबीर व दैत्योंके
कृष्णजीकेसा ामने महाक्रोधसे हल व मुशलअपना उठाकरमा
ड़ेबेगसे उसके किया जब दोनोंभाइयोंने जो अपनीभृकुटीफेरनेसे
कृष्णजीसे कह नाशकरनेसक्थे मनुष्य तनधरनेकेकारण अढ़ाई
ने लड़नेआया। जरासन्धकीबाहनोंसमेतमारडाली व सिवायज
भागजा इसीम र कोईजीतानहींबचा तब उसरणभूमिमें लोहूनदी
थियोंकेशरीर व मस्तकसेरुधिरबहतहुआ कैसा

चौ० जैसेकालेपहाड़ोंमें झरनाझरतेहैं व रथियोंकेमारे
रथउजड़ेहुये घरमालूमहोकर नौकाकेसमान उसी

दो० तोहिं बालक श शिरकटाहुआ शूरबीरोंका कछुयेकी तरहबन
जरासन्ध य ांप व मछलीके समानदिखलाईदेतेथे व हाथिय
द्रतुझे अपनाप्र सामालूमहोताथा व धनुषगिरीहुईलहरकेसमान
रूंगा तू नहींज टूटेहुयेपहिये भँवरऐसेमालूमहोतेथे व रत्नजड़ि
बड़ीबातहै यह तियोंकेअंगका गिराहुआ ऐसाचमकताथा जैसे
अपनीबड़ाई अ लूचमकती है॥
आपनहींकरते

खलातेहैं जो अ लबहु टूटपड़ीं तेहिखेत। वहसब थाविधि देखिये ज्यों जलभीतर रेत॥
नहींकहता इसी शवमूर्त्तिको रणभूमिमें महादेवजी सेनाभूत व
व तैंने अभीतक थालिये मुण्डोंकीमाला पहिनेहुये दिखलाईदिये
कटआवतीहै उ केभूतिनियां व योगिनियांखप्परभरकरलोहूपीती
तू मुझको माम वे व गीदड़लोथोंपरबैठेहुये मांसखाकर एकदूसरे
अपने अधर्मक सिमय कृष्णचन्द्रआनन्दकन्दकीमहिमासेक्षए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हे दुःखभंजन परमेश्वरके नामपुकारकर उन्हैं अपना दुःखसुना
तीथीं उससमय उनका रोना व बिलापदेखकर कौनऐसा चैतन्य
जीव वहांथा कि जिसने आंशूकीधारा अपनीआंखोंसे नहींबहा
या जब जड़रूपवृक्षोंसेभी उनकादुःख नहीं देखागया तब जड़से
डालीतक मारेशोचके हिलनेलगे व अक्रूरउनसबों की यहदशा
देखकर राजाकंसकी आज्ञा व अपने तनुकीसुधि भूलगया जब
उनकाबिलाप उससेनहीं देखागया तबउसने रथपरचढ़कर हांक
नाचाहा उससमय ब्रजबालोंने दौड़कर रथ पकड़लिया व बड़ीक
रुणासे बिनयकिया हेगोपीनाथ तुमकिसवास्ते हमलोग अबल
अनाथको अपनेबिरहसागर में डुबाकर प्राणलियाचाहतेहो हमें
भी अपनेसाथ लेचलो तो धनुषयज्ञका उत्सव व राजा कंसके दे
खआवैं हमलोगोंनेअपनाकुल परिवार व लोकलाजछोड़कर तु
से प्रीतिलगाई तिसपर तुमक्योंऐसे निर्दयीहोकर हमाराप्राण
तेहो तुम अक्रूरकेसाथ जो रथसाजकर आयाहै न जावतो कं
हारा क्याकरैगा अक्रूरअपना मुखकालाकरके फिरजाय
राजन् उसीसमय एकओरतो गोपियोंकी यहदशाथी दूस
सेयशोदा रोतीहुई आनकर बोलीहेअक्रूर तुममेरेप्राणप्
किसवास्ते लेजातेहो इनकेबिनामैं किसतरहजीवोंगी ॥

दो० कहाधनुषयहदेखिहैं बालक अति अज्ञान। कियो नृपति कछुकपटयह पठतमोहिंयोंजा
सो० मैंनहिं देहौंजान मो निर्धन के श्याम धन। लेहिंकंस बरुप्राण को जीवे नँदनन्द बिनु ॥
क० प्राणके अधारे मेरेबारे ये पधारे चाहैं भूपके अखारे जहां भारे सजे शूरमें। पीर बढ़ी है शरी
वियोग नीर कैसे कैसे धरौं धीर प्रेमके अधीर में ॥ डारैबरु कंस कारागारमें जंरीर भरी येरीबीर जरि
नधामचूरमें। जोपै ये कन्हैया बलभैया दोऊलाल मेरे खेलैं करि मैया बैननैनके हजूर में ॥

व रोहिणीरोकरकहनेलगी श्याम व बलरामब्रजगोकुल के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जीवनआधारहैं इनकेजानेसे हमलोगकैसेजीवैंगी फिरयशोदाब
हुतबिलापकरकेबोली अयमोहनप्यारे तुमहमारी प्रीतिछोड़कर
क्योंजातेहो मैं तुम्हारेऊपरन्यवछावरहोकर कहतीहूं किअपनी
जननीकोछोड़कर मतिजावतुम्हारे देखेबिनामुझसे एकक्षण न
हींरहाजायगा जबयशोदाके यहसबकहनेपरभी केशवमूर्त्तिरथ
से नहींउतरेतबवह पृथ्वीपर गिरपड़ी व अतिबिलापकरकेकहने
लगी अयप्राणप्यारे तुम कठोरहोकर मेराप्राण लियाचाहते हो
अक्रूर मुझेमारनेवास्ते वृन्दाबनमें आनकर मेरे बुढ़ौतीसमयकी
लकुटियाछीनकर लियेजाता है अयबेटा तुमकोभी कुछदया न
हींआवती जो मुझे इसतरह छोड़कर चलेजातेहो हे राजन् जब
सीतरह यशोदा व रोहिणी व गोपियां रथपकड़कर रोने
ब मोहनप्यारे हँसतेहुये रथपरसे उतरकरबोले तुमलोग भ
रुंश्न्ताकरो एकमनुष्य तुम्हारेपासभेजूंगा उससमय यशोदाश्या
बड़ीन्दरको गलेलगाकर बड़ीकरुणासेबोली अयबेटा तुमजल्दी
अपनयज्ञ देखकर यहांचलेआवना वहांकिसीसे प्रीतिलगाकरअ
आपन्जननीको भूलिमतिजाना यहसुनकरमुरलीमनोहरने यशो
खलात्बहुतधीर्यदिया व श्रीदामाग्वालसेकहा कि तुम गोपियोंसे
नहींकरु शोचनकरैं मैं फिरमिलूंगा जब मोहनप्यारे इसीतरह
व तैंने धीर्यदेकर व माताकोदण्डवत्करके रथपरचढ़े तब नन्दजी
कन्यशोदा व गोपियोंसेकहा तुमलोग उदासमतिहो मैं श्याम
बलरामको धनुषयज्ञ दिखलाकर अपनेसाथ लेआऊंगा परमु
इसबातकाडरहै कि राजाकंस बलराम व कृष्णसे कुछकपटक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्रव्यादिक न्यवछावरकरके ग़रीबोंको दिया व आनन्दमचातेहुये
अपने२ घरआये उसीदिनसे वे तीर्थराधाकुंड व श्रीकृष्णकुंडनाम
से प्रसिद्धहोकर आजतकबृन्दावनमें हैं इतनीकथा सुनाकरशुक
देवजीबोले हेराजन् जब समाचार मारेजाने वृषासुरका कंसको
पहुँचा तब उसने बहुतउदासहोकर बिश्वास करकेजाना कि मैं
इसबालकके हाथसे अवश्य माराजाऊंगा सो श्यामसुन्दरकी इ
च्छानुसार एकदिन नारदजी कंसकेपासआये जबउसने बड़ेआद
रभावसे बैठाला तबनारदमुनिबोले हेमूर्ख तैंने कुछजाना कि वृ
षासुर आदिक बड़े २ दैत्योंको किसनेमाराहै तू मेरावचन बिश्वा
स करकेमान तैंने जो कन्यादेवकीकी पत्थरपरपटककर मारीथी
वह कन्यारूपी योगमाया यशोदाके उत्पन्नहोकर श्रीकृष्णने दे
वकीसे जन्मलियाथा व वसुदेवजी अपनाबालक रात्रिको नन्द
केघर पहुँचाकर उसकेबदले वहकन्या उठालेआयेथे व बलराम
भी वसुदेवकाबेटाहै जिसको योगमायाने देवकीकेपेटसे निकाल
कर रोहिणीके गर्भमें धरदियाथा व वसुदेवने तुझसे गर्भपातहोने
काहाल कहा व उन्होंने तेरेडरसे रोहिणी अपनीस्त्रीको नन्दजी
के यहां गोकुलमें भेजकर रक्खाथा उसीजगह बलभद्रजीने ज
न्मलियाहै जब देवकीके प्रथमबालक उत्पन्नहुआ तभी हमने
तुझसे कहदियाथा कि तू वसुदेवके सन्तानसे चैतन्यरहियो परइ
समें तेराक्याबशहै भाग्यका लिखाहुआ मिटनहींसक्ता नीनको
तेरापर तेराशत्रु है जो कुछ तुझसेबनपड़ै आगेकेवास्ते उपायकर
यह वचन सुनतेही पहले कंसभयसे काँपनेलगा फिर उसने क

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धित होकर वसुदेव व देवकीको अपनेसामने बुलाकरकहा ॥

दो० प्रथमदियो सुतल्यायकै मनपरतीत बढ़ाय । ज्यों ठगकछू दिखाइकै सर्बसलेभगिजाय ॥

चौ० मिलारहा कपटी तू मुझे । भला साधु जानामै तुझे ॥
कृष्ण नन्द घर तू पहुँचाय । देवीहमैं दिखाई आय ॥
मनमें कछूकहै मुख और । आजतोहिंमारोंयहिठौर ॥
मित्र सगा सेवकहितकारी । करैकपटसो पापीभारी ॥

दो० मुखमीठा मनविषभरा रहैकपटके हेत । आप काज परद्रोहिवा उससे भला जो प्रेत ॥

जब ऐसाकहकर कंसबसुदेव व देवकीकोमारनेवास्ते नङ्गीतल वारलेके दौड़ा तबनारदमुनिनेहाथ उसकापकड़करकहा हेराजन् इनकेमारनेसे तेराअर्थनहींनिकलैगा जिनसेतुझको अपनेप्राण काडरहै उनकेमारनेका उपायकरनाचाहिये यहसुनकरकंसनेउन कोप्राणसेनहींमारापरबेड़ी व हथकड़ीडालकर फिरउन्हैं कै[illegible] या जबनारदजीवहाँसेचलेआये तबकंसने केशीनामदैत्यको [illegible] बड़ाबलवान्था बुलाकरबिनयपूर्वक उससेकहा हेकेशीयहसमय सहायताकरनेकाहै ॥

चौ० महाबली तू साथी मेरा । बड़ाभरोसा मुझको तेरा ।
एकबार तू ब्रजमें जावै । रामकृष्णहतिमुझेदिखावै ॥

जब केशीदैत्य यहवचनमानकर बृन्दाबनकोचला तब कंस नेचाणूर व मुष्टिक व शल व तोशलबड़े २ पहलवानोंको बुला करकहा हमश्याम व बलरामवसुदेवकेपुत्रोंको किसीबहानेयहाँ बुलातेहैं तुमलोग कुश्तीलड़कर उन्हें मारडालो तो तुमकोबहुत द्रव्यदेवैंगे ऐसाकहकरकंस अपनेमंत्रियोंसेबोला तुमलोगकोई ऐसा उपायकरो जिसमेंराम व कृष्ण मारेजावैं तब उन्होंनेकहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महाराज आप ऐसेप्रतापी व बलवान्होकर क्यों डरतेहो हमारा सम्मतयहहै कि तुम एकरंगभूमि बहुतउत्तमबनाओ व धनुषयज्ञ के बहानेसे नन्दादिकको रामकृष्णसमेत यहां बुलाओ तो कोई मल्ल या कुबलयापीड़ हाथी दोनों भाइयों को मारडालैगा यह सम्मत कंसनेमानकर कार्त्तिकसुदी चतुर्दशीको मुहूर्त्तधनुषयज्ञ महादेवका ठहराया व अपनेसेवकोंको आज्ञादिया कि तुमलोग तुरन्त एकस्थान बहुतउत्तम रंगभूमिका पहलवानोंके लड़नेवास्ते बनवाओ व उसमें एकमचान बहुतऊंचा व चौड़ा मेरे बैठने को ऐसा तैयारकराओ जिसमें किसीकाहाथ न पहुँचै व उसीतरह का दूसरामचान भी मेरे इष्टमित्रोंके बैठनेवास्ते बनवाओ कि वेलोगभी हमारेपास बैठैंगे व पहिले डेवढ़ीपर धनुषमहादेवजी को रखवाओ व बिधिपूर्वक उसेपूजकर नगरमें ढिंढोरा पिटवादेव कि राजमन्दिरपर धनुषयज्ञकीपूजाहै जबरामकृष्ण धनुषकेपास पहुँचैं तब हमारेशूरबीर उनदोनों बालकोंसे कहैं कि बिनाधनुष चढ़ाये भीतर न जानेपावोगे जबवह अहंकारसे धनुष चढ़ानेवास्ते उठावैं तब मेरेशूरबीर उनको मारडालैं जो उनकोमारैगा उसको मुंहमाँगा धनदेऊंगा व उनको मारनेसे मुझे अपनीमृत्युका खटका मिटजावैगा व दूसरेद्वारपर कुबलयापीड़ गजपतिको जो दशहज़ारहाथीका बलरखताहै वास्ते मारनेउनलड़कोंके खड़ाकररक्खो कदाचित् वह पहिलेडेवढ़ीसे जीतेबचकर भीतरआयेतो वहहाथी एकझपटमें उनको पैरतलेदबाकर मारडालैगा और तीसरीडेवढी रंगभूमिके स्थानपर मेरेमंत्री व शूरबीरअनेकप्रका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लियेहुये चैतन्यबैठेरहैं जिसमेंदोनोंबालकभीतर न आनेपावैं रा
जाकंस यह आज्ञादेकर सभामें आनबैठा व सबकीओर देखकर
बिचारनेलगा कि रामकृष्णके बुलानेवास्ते किसेभेजैं जबउसको
अक्रूरसे अधिकबुद्धिमान्दूसराकोईनहीं दिखलाईदियातबउसने
अक्रूरको अकेलेमें लेजाकर उनकीबड़ाईकरकेकहा हेअक्रूर मैं
तुमको बड़ाबुद्धिमान् व अपनामित्रजानकर मनकीबातकहताहूं
मुझे श्याम व बलराम बसुदेवकेबेटोंसे दिनरात अपनेप्राणकाडर
लगारहताहै यहहाल तुम्हेंभी मालूमहोगा जिसतरह विष्णु भग
वान्ने देवतोंकेवास्ते तीनपगपृथ्वी राजाबलिसे दानलिया व उस
को पातालमेंभेजकर सदाइन्द्रकी रक्षाकरते हैं उसीतरह तुमको
भी हमारीसहायता करनीचाहिये अच्छेलोग आपदुःख उठा
दूसरेका उपकारकरते हैं इसलिये तुममेरे भलेवास्ते वृन्दावन
जाव आकाशबाणीहोने व नारदमुनिके कहनेसे मैंजानताहूं कि
आठवांबालकदेवकीका अवश्यमुझेमारेगा परमनुष्य को अपने
सामर्थ्यभर रोगछूटने व प्राणबचानेवास्ते औषध करनीचाहिये
आगे होनहार किसीतरह मिटनहींसक्ता ॥

दो० कहतकंस अक्रूरसों मैं जानत मनमाहिं । तुमसमान यालोकमें और दूसरोनाहिं ॥

इसवास्ते तुमश्याम व बलरामको नन्द व उपनन्दसमेत धनु
पयज्ञकेबहानेसे अपनेसाथ लिवालाओ मैं तुम्हाराबड़ा उपकार
मानूंगा व तुममेरे चढ़नेकेरथपर बैठकर चलेजाव धनुषयज्ञके उ
त्सवकाहाल सुनकर वेलोग अवश्यआवैंगे व मैंने उनदोनों बाल
इंके मारनेवास्ते जो उपायबिचाराहै उसेभी सुनलेव मेरे निक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहिली डेवढ़ीमें धनुषचढ़ावतीसमय मेरे शूरवीरोंके हाथसे मारे
जावेंगे कदाचित् वहांवचगये तो दूसरेद्वारपर कुबलयापीड़ हाथी
उनको अपनेपैरोंसे रौंदकर मारडालेगा वहांसेभी बचकर रंगभू
मिमें पहुँचे तो चाणूर व मुष्टिक कि हाथी दिग्पालभी उनका सा
मना करनहींसक्के उन्हें अवश्यमारडालैंगे जो उनसेभीबचे तो
मैं अपनेहाथसे श्याम व बलरामकोमारकर अपनाकाम सवांरूं
गा व उन्हैंमारने उपरान्त बसुदेव व देवकी को जो वही बिषकी
मूलहैं उग्रसेन आदिक यदुबंशियों समेत मारडालूंगा व हरिभ
क्तोंकीजड़ संसारसेउखाड़कर जरासन्ध अपनेश्वशुर व बाणासुर
व दन्तवक्र आदिक राजोंसमेत जो मेरेमित्रहैं आनन्दपूर्वकराज्य
करूंगा सो तुमनन्दजीसेकहदेना कि वहबकरा व भैंसाआदिक
अपने यज्ञकरनेवास्ते भेंटलेकर वहांतुरन्तलेआवैं व मैंभी इष्ट
मित्रोंको इसीबहानेयहांबुलाताहूं यहवचन अभिमानभराहुआ
कंससेसुनकर अक्रूरनेकहा हेराजन् आपक्रोधकरके बुरा न मानें
तो मैं कुछाविनयकरूं कंसबोलाबहुतअच्छाकहो हमखेदनलावैं
गे तब अक्रूरनेकहा महाराज आपनेजोआज्ञादी सोकरूंगा परंतु
इन्द्रवज्रनामशस्त्ररखने व रावणमृत्युको बांधेरहनेपरभी कालसे
नहींबचे जो कोई उत्पन्नहुआ है वहएकदिन अवश्यमरैगा व म
नुष्य अपनेकल्याणकेवास्ते अनेकउपायकरके मनमेंकुछबिचार
लेहै और परमेश्वरकीइच्छानुसारकर्मोंकेफलसे उसकेबिपरीतहो
कर उनमेंतिलभरघटनेबढ़नेनहींसक्ता जिसतरह अज्ञानमनुष्य
यहसब देखनेपरभीनहींसमझते कि होनहारप्रबलहोकर मेरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया कुछनहींहोगा उसीतरह तुमनेभी आगमबांधकर यहउपा
यबिचाराहै इसमेंनमालूमपरमेश्वरकी इच्छानुसार तुम्हारेवास्ते
कैसाहो जिसतरह सबजीवमरतीसमय हाथ व पांवपटकतेहैं वही
हालतुम्हाराभी मुझेमालूमहोताहै मैं तुम्हारी आज्ञानुसार राम
व कृष्णकोलेआऊंगा पर उनदोनोंबालकोंसे शत्रुताकरने में तु
म्हाराप्राणनहींबचेगा॥

दो० मैं वृन्दावन जातहौं मेरोभल कछुनाहिं। यहकहिआयो धामको कंसगयो घरमाहिं॥

सैंतीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णजीका केशी व व्योमासुर दैत्यको मारना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जिसतरह श्यामसुन्दरने केशी
दैत्यकोमारा व नारदजीने आनकर मोहनप्यारे की स्तुतिकी व
व्योमासुरनन्दलालकेहाथसे मारागयाथा वहकथावर्णनक
सुनोजब केशीदैत्यको कंसने श्याम व बलरामके मारनेवास्ते
जा तबवह स्वरूपअपना घोड़ेकेसमान बहुतलम्बा व चौड़ाबना
कर प्रातसमय वृन्दाबनकोचला व अपनेस्वामीको पालनकरने
वास्ते बड़ेहर्षसेपूंछफटकारे व आंखैंलाल२निकाले टापोंसेपृथ्वी
खोदताहुआ वृन्दाबनमेंपहुँचा उसकारूप देखतेही गोपी व ग्वा
लोंने बहुतभयमानकर जाना कि हमलोगोंके वास्ते महाप्रलय
आई इसघोड़ेके हाथसे हमाराप्राण नहींबचेगा जब यहदशा अ
पनी ब्रजबासियोंने देखी तब श्रीकृष्णजीके पासजाकर सबवृत्ता
न्त कहा॥

दो० ब्रजआयो केशीअसुर जानिलियो नँदलाल। सन्मुख उसके हर्षसे चले कंसकेकाल॥

श्यामसुन्दरने चलतीसमय सबब्रजबासियोंसेकहा तुम लो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुछमतडरो मैं अभी उसकोमारकर तुम्हाराशोचछुड़ादेताहूं ऐसा कहकर मोहनप्यारेनेकाछा अपनाबांधलिया व केशीकेसन्मुख जाकर ललकारा हेकपटरूपराक्षस जो तू मेरेमारनेवास्ते आया है तो औरोंकोक्योंडराकर धमकाताहै मुझसेआनकरलड़तो तेरा बल व पराक्रमदेखूं जिसतरहदीपककेऊपरपतंगे आपसेआनकर जलमरतेहैं उसीतरह तूभी यहांमरनेवास्तेआया है अब मेरेहाथ सेजीताबचकरनजावेगा यहबचनसुनतेही केशीदैत्यक्रोधितहो कर मोहनप्यारेकी ओरदौड़ा और जब उसनेदोनोंपैर अगिलेउठा कर उनकोटापमारनेचाहा तब मुरलीमनोहरने दोनोंपांव उसके पकड़लिया और इसतरह घुमाकरफेंका जिसतरह गरुड़जीसर्प उठाकरफेंकदेतेहैं जबवहघोड़ा दोसौ पगपरजागिस व थोड़ी देरअचेतरहकरचैतन्यहुआ तबवहअपनामुखफैलाकरइसइच्छा से नन्दलालजीपरझपटा कि उनकोनिगलजावे उससमय मो हनप्यारेने अपनाहाथ लोहेकेसमान कड़ाबनाकर इसतरह उस केमुखमेंडालदिया जिसतरहसांप बिलमेंघुसजावे जबबहुतकाट नेपरभी गिरिधारीलालकेहाथमें कुछघावनहोकर सबदाँत उस घोड़ेकेटूटगये तब श्यामसुन्दरने अपनाहाथ उसकेमुखमें ऐसा मोटाकिया कि उसेश्वासलेनेकी जगहनरहकर प्राणनिकलने लगा उससमय केशीदैत्यनेमनमेंकहा देखो जैसेमछली बंशीको निगलकरप्राणदेती है उसीतरहमैंने केशवमूर्त्तिकाहाथपकड़कर अपनाप्राणखोया ऐसाबिचारकर केशीनेश्यामसुन्दरकाहाथ अ पनेमुखसेनिकालनेवास्तेबहुतचाहाजबहाथउनकानहींनिकला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब वहघोड़ा चिल्लाकरपृथ्वीपरगिरपड़ा जबपेट उसकाखरबूजे के समानफटकर प्राणनिकलगया व रुधिरनदीकी तरह बहने लगा तब देवतोंने उसकेमारेजानेसे प्रसन्नहोकर श्यामसुन्दरपर फूलबरसाये व वृन्दाबनबासी यहआनंददेखकरबोले हे नंदलाल तुमनेबड़ेदुष्टकोमारकर हमलोगोंकेप्राणबचाये व नन्द व यशोदाने मोहनप्यारेको गोदमेंउठाकर उनकामुखचूमलिया व बहुत सादान व दक्षिणा उनकेहाथसेदिलवाया ॥

सो॰ बलमोहन दोउभाय चिरंजीव जोडी युगल । देतअशीश मनाय ब्रजबासी प्रभुको सबै ॥

जब राजाकंसनेहाल मारेजानेकेशीकासुना तबवह मारेशोचके अचेतहोगया व श्रीकृष्णजीकपटरूप घोड़ामारने उपरांत थोड़ीदूरआगेजाकर कदमकेनीचे खड़ेहुये तबउसीसमय नारदजीनेवहांआनकर इसतरहपर स्तुतिउनकी की हे त्रिलोकीनाथ बहुतअच्छाहुआ जोआपनेकेशीको जोकि सबदैत्योंसे बलवान् थामारडाला हेजगदात्मापरब्रह्मपरमेश्वर हे ज्योतिस्वरूपअलखभगवान् हेआदिपुरुषनिरंजन निराकारचाणूर व मुष्टिक व शलवतोशलपहलवान व राजाकंस अपनेभाइयों समेत व दन्तवक्र आदिकउनकेमित्रमुझेमृतक दिखलाईदेतेहैंमेरीदण्डवत् आपकोअङ्गीकारहो हे दीनदयालदुष्टदलन हे केशवमूर्त्तिभक्तवत्सल आपमराहुआपुत्रसांदीपन अपनेगुरूका यमपुरीसेफेरलेआवेंगे मेरानमस्कार तुम्हैंपहुँचै हे जगन्नाथजगजीवन हेमाधवमुकुन्दअविनाशी हेवैकुण्ठनाथ लक्ष्मीरमण जरासन्ध व शिशुपाल आदिकअधर्मीराजा व राक्षसोंको आपमारकर अठारहअक्षौहि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

णीदलका महाभारतमें नाशकरावेंगे मेरीदण्डवत् अङ्गीकारकी
जिये हेकल्याण केशव गिरिधारी हेदीनदयाल गोपीनाथ आप
समुद्रमें द्वारकापुरी बसाकर पाण्डवों को लोक व परलोकका सु
खदेंगे मेरानमस्कार लीजिये हे दीनदयाल दैत्यसंहारण काल
यमन व भौमासुर आदिको आपमारेंगे और सोलहहज़ार एक
सौकन्या जोउसने अपनाबिवाह करनेवास्ते इकट्ठीकियाहै उन्हें
बिवाहेंगे व रुक्मिणीकी इच्छापूरी करनेवास्ते शिशुपालआदि
राजोंको जीतकर उससेबिवाहकरेंगे व आजके तीसरेदिनराजा
कंसको तुम्हारे हाथसे मराहुआ देखूंगा व इन्द्रपुरीसे आपपारि
जातकका वृक्षलाकर सत्यभामा अपनीस्त्रीकेघर बैठालेंगे व रा
जानृगको गिरिगिटानकी योनिसे छुड़ाकर मुक्तिदेवेंगे व स्यमन्त
कमणि जाम्बवती कन्यासमेत जाम्बवान् भालूकेयहांसे लाकर
उसकेसाथ अपनाबिवाह करेंगे हेमहाप्रभु अबकंसके अधर्मकर
नेसे सब यदुबंशी व गौ ब्राह्मणको पृथ्वीपर बड़ादुःखहोता है सो
कृपाकरके पृथ्वीकाभार उतारिये हे सीतापति मैं तुम्हारी दयासे
आपकोपहिंचानकर शरणागतहुआ नहींतो आपकीलीला अ
परम्पारका चरित्रकोई नहीं बर्णनकरसक्ता परमैं तुम्हारीदयासे
इतनाजानताहूं कि आपहरिभक्तोंको सुखदेने व गौ व ब्राह्मणकी
क्षाकरने व दैत्य अधर्मीराजोंको मारनेवास्ते बारम्बार संसारम
सगुण अवतारलेकर पृथ्वीकाभार उतारते हैं॥

चौ० याबिधिसे तुमको पहिंचानी। निशिदिन शरण तुम्हारी जानी॥
सदा फिरों तुम्हरे रँगराता। हित सों गुण गावों दिन राता॥
कृपाकरो मेरो भ्रम टारो। भवसागर ते पार उतारो॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बारबार बहु विनती कीन्हो। नमस्कार करि आयसु लीन्हो॥
दो० कालरूप शिशुपालके माखनप्रभुगोपाल। नितनवलीला करतहैं ब्रजमें मोहनलाल॥

जब इसीतरहनारदजी तीनोंकालके जाननेवालेने बहुतस्तु
तिश्यामसुन्दरकी की और उनसेविदाहोकर ब्रह्मलोक को चले
गयेतबवृन्दाबनबिहारी ग्वालबालोंकोसाथलिये भाण्डीरबटके
नीचेबैठकर आपराजाबने व बाजेग्वालबालोंको मन्त्री व किसी
को दीवान व बाजेको सेनापति व किसीकोसिपाहीबनाकर फल
बुझौवल खेलनेलगे वराजाकंस जब चैतन्यहुआ तबउसने व्यो
मासुरको बुलाकरकहा सुनोमित्र मुझे श्याम व बलरामसे
पनेप्राणका खटकादिनरात रहताहै सोमैंने जितनेदैत्य उनके
रनेवास्ते भेजे सबको उन्होंनेमारडाला अबतुम्हारेसमान का
दूसराशूरबीर मुझे दिखलाई नहींदेता इसलिये तुम मेरेवास्ते
न्दावनमेंजाकर श्याम व बलरामको मारआवो तो तुम्हारावड़ा
उपकारमानूंगा यहसुनकर व्योमासुर बोला महाराज मैं अपना
तनु तुम्हारेऊपर न्यवछावरसमझकर अपनीसामर्थ्यभर तुम्हारी
आज्ञापालनकरूंगा जो सेवकअपनेस्वामीकी आज्ञापालनकरे
उसकालोक व परलोकदोनोंबनताहै ऐसाकहकर व्योमासुरकंस
पकेविदाहुआ व ग्वालरूपधरकर जहांकेशवमूर्त्तिखेलतेथे आय
व उसनेहाथजोड़कर मोहनप्यारेसेविनयकिया महाराज मैं
तुम्हारेसाथ खेलनेचाहताहूं यहवचनसुनतेही श्यामसुन्दर अन्
र्य्यामीने उसकपटरूपी ग्वालकोपहिंचानकरकहा तुम अपना
देहछोड़कर जिसखेलवास्ते कहो वहीखेल हम तुमसेखेलें क

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रूपीग्वालबोला जिसतरहभेड़िया अपनीपीठपर भेड़ी उठाकर भागजाताहै उसीतरह एकलड़का दूसरे बालकको पीठपर चढ़ा करदौड़े यही खेलखेलो मुरलीमनोहरने कहा बहुतअच्छा जब मोहनप्यारे व्योमासुरको साथलेकर फलबुझौवल व आंखमुंदौ वल खेलनेलगे तबवह कपटरूपी ग्वाल बहुतलड़कोंको जो उसे नहीं पहिंचानतेथे छिपतीसमय एकएकको उठाकर पर्वतकी कं न्दरामें रखआया व उसकन्दराके द्वारेपर शिलाधरदी जबसब ग्वालोंकोकन्दरामें छिपाआया व श्यामसुन्दर अकेलेरहगये तब कपटरूपी ग्वाल ललकारकरबोला हे मोहनप्यारे आजतुमको यदुवंशी व ब्रजबासियों समेत मारकर राजाकंसकी आज्ञा पालन करूंगा जब व्योमासुर ग्वालतनछोड़कर अपने निजरूप श्रीकृष्णजीको मारनेवास्ते झपटा तब दैत्यसंहारणने उसका गला दबाकर पशुकीतरह लात व मूकोंसे मारडाला व ग्वालबा लोंको कन्दरामेंसे निकाललाये उससमयदेवता व विद्याधरों ने श्यामसुन्दरपर फूलवर्षाकर बड़ा आनन्दमचाया सन्ध्यासमय केशवमूर्त्ति गौ व ग्वालबालोंसमेत मुरलीबजाते आनन्दमचा तेहुये अपनेघरआये उसीदिनरातको नन्दरानीने ऐसास्वप्नदेखा कि आज श्याम व बलराम वृन्दावनमेंनहीं हैं कहींचलेगये यह स्वप्न देखतेही पहिले नन्द व यशोदाने बड़ा शोचकिया फिर स्व प्नेकी बात झूठीसमझकर अपनेमनको धीर्यदिया॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अड़तीसवां अध्याय॥

अक्रूरका लेजानेवास्ते श्याम व बलराम के वृन्दाबनमें पहुँचना॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षितकार्त्तिकबदीद्वादशीकोकेशी व
व्योमासुर दैत्यमारेगये व उसीदिनप्रातसमय जब अक्रूरकंसके
रथपरचढ़कर वृन्दाबनकोचलेतबवहराहमेंबिचारकरनेलगेदेखो
इसजन्म तो मुझसेकोई शुभकर्म्मनहींहुआ आजतक मेराजन्म
कंस अधर्मीकीसंगतमेंबीता पिछलेजन्मनमालूम कौनऐसायज्ञ
व तप मैंनेकियाथा जिसपुण्यसे उनचरणोंकादर्शन जिसकीधो
वन गंगाजीहोकर तीनोंलोककोतारतीहैं पाऊंगा जिनचरणोंक
ध्यानब्रह्मादिक देवते व सनकादिकऋषीश्वर आठोंपहर अति
हृदयमेंधरकर उनकी रजमिलनेवास्ते दिनरातचाहनारखते हैं
वहीधूर अपनेमस्तकपरचढ़ाकर भवसागरपार उतरजाऊंगा॥

दो० शिलाशाप मोचनकरन हरण भक्तउरपीर। आजदेखिहौं वहचरण सकलसुखनकेछीर॥

जिसतरह पापीलोगसत्सङ्गकरनेसे कृतार्थहोजाते हैं उसीतरह
मेराभाग्यभी उदयहुआ जोकंसने मुझे श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द
कन्दकेलेनेवास्ते भेजा इसीबहानेमैंभीमोहनीमूर्त्तिकी छबिदेख
तेही अनेकजन्मकेपापोंसेछूटकर लोचनोंकाफलपाऊंगा नहीं
तो मुझेऐसीपापी संसारीमायाजालमेंफँसेहुये लोभीको उनपर
ब्रह्मपरमेश्वरकादर्शन कहांमिलता यहसबउन्हीं बैकुण्ठनाथकी
कृपासेसंयोगहुआहै राजाकंसनेमेरेऊपरबड़ीदयाकी जोइसकाम
केवास्ते मुझेभेजा जिसआदिपुरुषभगवान्ने कालीनागकोनाथ
कर उसकेमस्तकपर नृत्यकिया व उसकीगौचराकर गोपियोंके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साथ रासमण्डलखेला व देवतोंकेवास्ते तीनपगपृथ्वी राजाबलि सेदानलिया व देवलोककाराज्य इन्द्रादिकदेवतोंकोदेडाला वही बैकुण्ठनाथ अपनाबालचरित्र ब्रजबासियोंकोदिखलाकर अनेक तरहकासुख उन्हैं देतेहैं जिनचरणोंके दर्शनवास्ते लक्ष्मी व नारदमुनि व मार्कण्डेय व अम्बरीषआदिक बड़े २ ऋषीश्वर व महात्माचाहनारखतेहैं उनचरणोंका दर्शन व स्पर्शसहजमें ग्वालबाल व गोपियोंको प्राप्तहोताहै इसलिये वृन्दावनबासियों का बड़ा भाग्य समझनाचाहिये॥

॥स॥

दो० निराकार निरलेपको भेद न जानैकोय। जो करता सबजगतके माखनप्रभुहैं सोय॥

आजमुझको अच्छे२ सगुन दिखलाईदेकर हरिणमेरेदाहिनी ओरसे बायें चलेआवतेहैं इसलिये अवश्यमुझेनारायणजीकादर्शनमिलेगा हे मन वहआदिपुरुष अविनाशी सबसे पहिलेथे व महाप्रलय होनेउपरांतभी वही स्थिररहैंगे कदाचित् तुझे इसबातका सन्देहहो कि आदिज्योति भगवान्ने किसवास्ते संसारमें जन्मलिया तो कभी ऐसा मतिसमझना उन्होंने केवलवास्ते सुखदेने अपने भक्त व भवसागरपार उतारने संसारीजीव व मारने दैत्य व अधर्मी व भारउतारने पृथ्वीके अपनी इच्छासे जन्मलियाहै उनकेभेद व महिमाको कोईपहुँचने नहींसका वह अन्तर्यामी सबभले व बुरेके उत्पन्नकरनेवाले होकर संसारीमायासे रहितहैं उनको सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण नहींव्यापता और वृन्दावनकी महिमा बैकुण्ठसे अधिकजानकर ग्वालबालों को ब्रह्मा व महादेवसे छोटा न समझनाचाहिये॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क० एकरजरेणुकापै चिन्तामणि वारिडारों लोकनको वारों सेवाकुंज कै विहारपै। लतन के पातनपै कल्पवृक्ष वारिडारों रामहूंको वारिडारों गोपिनके द्वारपै। व्रजके पनिहारिनपै शचीरची वारिडारों कुण्ठहूको वारिडारों कालिन्दी के घाटपै। कहैं अभयराम एकराधाजू को जानतहों देवन को वारिडारों नन्दके कुमारपै॥

व दैत्यलोगोंको बड़ाभाग्यमान समझकर परमेश्वरकीदया उ
नपरभी जानना चाहिये किसवास्ते कि जब नारायणजी उनका
बधकरतेहैं तब वहस्थान बैकुण्ठमें रहनेवास्तेउन्हैं मिलताहै वहां
हज़ारोंवर्ष तपस्या लिपरभी मनुष्य नहींपहुँचनेसक्ता और रा
वण व हिरण्याक्षकीकथा जो उनकेहाथसे मारेगयेथे इसबातकी
साक्षीहैं किसवास्ते कि श्यामसुन्दरके डरसे उनके शत्रुओंको भि
नरात अपनेप्राणकाभय रहकर किसीक्षण उनकारूप चित्तसेन
हींउतरता इसीकारण वहलोग मुक्तिपातेहैं देखो मेराभाग्य उदय
हुआ जिसरूपको देखनेवास्ते बड़े २ योगीश्वर व महात्मातीनों
लोककी चाहनारखतेहैं उसमोहनीमूर्त्तिकोदेखकर अपनाजन्म
स्वार्थकरूंगा व पहिलेग्वालबालोंको जो दिनरातश्यामसुंदरका
दर्शनकरते हैं दण्डवत्करूंगा फिरशिरअपना उनचरणोंपर धर
करवहरज अपनेमस्तकपरचढ़ाऊंगा जो धूरब्रह्मादिक देवतों को
जल्दीनहींमिलती जबवहदीनानाथ जगत्केमुक्तिदेनेवाले दया
से अपनाहाथ मेरेमस्तकपरधरकर मुझेउठावैंगे तबअपनेबराबर
किसीतपस्वी व ज्ञानीकाभाग्यनहींसमझूंगा परमैंएकबातसे बहु
तडरताहूं कदाचित् मुझे कंसकाभेजाहुआ जानकरऐसा न करैं
सो यहसंदेहकरना न चाहिये जिसतरहमैं मनसा बाचा कर्मणा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेउनकीभक्तिरखकर उन्हैं अपनास्वामीजानताहूं उसीतरह वह अन्तर्यामीभी मुझेअपनादास जानकरदयाकरैंगे ॥

दो० हरिदासन को दासहौं मनमेंकरि बिश्वास। कंसदूतनहिं जानिहैं माखनप्रभु सुखरास ॥

जबवहकरुणानिधान मेराहाथपकड़कर घरमें लेजावेंगे तबमैं अपनेसमान किसीको नहींसमझकर सबहालकंसका सच्चा २ उनसेबतलादूंगा संसारीजीवोंको मायारूपीरस्सीमें बँधेरहनेसे मुक्तिहोनाकठिनहै परवही दीनदयाल मुझे अपनाजातिभाई समझकरअवश्य भवसागरपारउतारदेवैंगे जिससमयवहअपनीकृपासेमुझेचाचाकहकर पुकारैंगे उससमय बड़े २ महात्मा मेरे ऊपर डाहकरैंगे ॥

दो० हेमन तू मतिशोचकर है उनहीं को लाज। आपुहि काजसवाँरिहैं माखनप्रभु ब्रजराज ॥

जब अक्रूर इसीतरह बिचारकरताहुआ तीनकोशरस्ता दिनभरमेंकाटकर सन्ध्यासमय वृन्दाबनकेनिकटपहुँचा और उसने वहांपृथ्वीपर श्रीकृष्णजीके चरणोंकाआकार जिसमेंगदा व पद्म व शंख व चक्र व ध्वजाके चिह्नथे देखा तबरथते उतरकर उनचरणोंकीधूर अपनेशिर व आंखोंमें लगाई व उसजगह दण्डवत् करकेबोला जहांपर तुम्हारे चरणोंका आकाररहताहै वहांबड़े २ ज्ञानी व ऋषीश्वर सदा दण्डवत्किया करतेहैं जब अक्रूरकोइसी बिचारमें प्रेम उत्पन्नहोकर आंखोंसे आंशू बेपरवाह बहनेलगे तब सबगोप व ग्वाल सच्चीप्रीति उसकीदेखकर अपने २ प्रेमका घमण्डभूलगये पर अपनाबड़ाभाग्य समझकर आपसमें कहनेलगे देखोजिन चरणोंकीधूर अक्रूर अपनेमस्तकपर चढ़ातेहैंउन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चरणोंकीसेवा हमलोगदिनरातकरतेहैं इतनीकथा सुनाकर शुक देवजीबोले हे राजन् उसीसमय मुरलीमनोहर पीताम्बर पहिने फूलोंका गजरागलेमें डाले बलरामजी व ग्वालबालोंसमेत बन से गौचराकर हँसतेहुये वृन्दाबनके निकट पहुँचे॥

दो० माखनप्रभु मुखदेखिके रोम रोम सुखपाय। प्रेमभावसे मगन ह्वै परेउ चरणपरधाय॥

हेपरीक्षित अक्रूरने कभीश्याम व कभी बलरामके चरणोंपर शिररखकर इसतरह आंशूसेचरणउनका धोया जिसतरहसंसारी जीव ऋषीश्वर व महात्माके आनेसेपांव उनकाधोतेहैं जबथोड़ी देरबीते रोनाअक्रूरका कमहुआ तबउसने हाथजोड़के बिनयकि या महाराज मैंअक्रूरयादव तुम्हारादासहूं यहवचनसुनतेही श्रीकृ ष्ण मसुन्दर उसेअपनाबड़ा समझकर शिरउसका पैरपरसेउठानेलगे परवह उनकेप्रेममें ऐसामग्नथा कि उसको अपनेतनकी सुधिन हींरही शिरकौनउठावे इसलिये श्याम व बलरामने प्रीतिपूर्वक अपनेहाथोंसे उसकाशिर पकड़कर उठाया और उसकोचाचाक हकरबड़े आदरसे भीतरलेगये व नन्दरायअक्रूरकेगलेमिले जब मोहनप्यारे बड़ेप्रेमसे आसनपर बैठाकर अपनेहाथ उनका चरण धोनेलगे तबवह लज्जावशहोकर पैरअपना मुरलीमनोहरकी ओरसे खींचनेलगा पर श्यामसुन्दर पांवउनका न छोड़करबोले हेचाचातुम हमारेपिताकी जगहहौ इसलिये तुम्हारी सेवाकरना हमकोउचितहै ऐसाकहकर श्रीकृष्णने अक्रूरका चरणधोया व उनके शरीरमें अतर व चन्दनलगाकर बड़ेप्रेमसे छत्तीसव्यंजन खिलाया व हाथधुलाकरपान व इलायचीदिया जबअक्रूरभोजन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करके पलँगपरलेटे तब श्याम व बलरामउनकापांवदाबनेलगे व नन्दउपनन्द आदिकने अक्रूरजीकेपास आनकरपूछा कहो बसुदेव व देवकीकैसेहैं व राजाकंस किसतरह प्रजाकापालन करताहै हमारेजानकारीमें जबतककंस अधर्मीजीवेगा तबतक गौ व ब्राह्मण व प्रजाको उसकेहाथसे सुखनहींमिलैगा जहांका राजानिर्दयी व अधर्मीहो वहांकीप्रजा सुखसेनहींरहती जिसकंसने छःबालक अपनी बहनके बिना अपराध मारडाले उसको बधिकसे अधिक समझना चाहिये यहसुनकर अक्रूरबोले जबसेकंस उत्पन्नहुआ तबसे यदुबंशी व प्रजालोग दुःखपातेहैं जिसतरह बकरीके गोल में एकभेड़िया रहनेसे उनकोअपनेप्राणका डरलगारहताहै उसी तरह मथुराबासियोंको कंसकेजीनेतक सुखनहींमिलैगा उसका हाल सबतुम्हैं मालूमहै और हमक्या कहैं॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

अक्रूरके साथ श्याम व बलराम का मथुरामें जाना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जबनन्द व उपनन्द अक्रूरसे मथुराकाहाल पूछकर अपनेअपने स्थानपरगये तबश्याम व बलराम जैसा बिचारराहमें अक्रूरजी करतेजातेथे वैसासन्मान करके पूछा अयचाचाआपदया व प्रीतिकीराह हमकोदेखनेवास्ते आये होसो आपबहुतअच्छाकिया परतुमने हमारेचरणोंपरजो तुम्हारे लड़कोंकेसमानहैं किसवास्ते गिरकर हमैं दोषलगाया हमको तुम्हारी सेवाकरना चाहिये भला यहतो बतलाओ मथुराबासियों का दिन किसतरह कटताहै व बसुदेव व देवकी हमारे मातापिता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अच्छीतरहहैं व राजाकंसमेरा मामाबड़ापापी यदुकुलमें उत्पन्न हुआहै जो गो ब्राह्मण व यदुबंशियोंको दुःखदेकरनाशकरता है व हमैंवसुदेव व देवकीके फिरक़ैदहोनेका समाचार सुनकरबड़ा शोचहुआ सच्चपूंछो तो वहलोगहमारेवास्ते इतनादुःखपाते हैं हमकोगोकुलमें लेआकर नछिपाते तोइतनाकष्ट क्योंपाते जब वे हमारीयादकरतेहोंगे तबउनकोबहुत दुःखहोताहोगा बड़ाआश्चर्यहै कि देवकीके छःपुत्रमारने व इतनापापबटोरनेपरभीकंस कामनअधर्मकरनेकी ओरसेनहींफिराऔर यहबतलाइयेकिआपकाआना यहांकिसकारणहुआ व तुम्हैंचलतेसमयराजाकंसने क्याकहायहवचनसुनतेही अक्रूरनेखड़ेहोकर हाथजोड़के विनयकिया हेबैकुंठनाथअन्तर्यामी कंसके अनीतिकरने काहालआपकोमालूमहै मैंक्याकहूं कंसबसुदेव व उग्रसेनकाप्राणलेनेवास्ते नित्यइच्छाकरताहै परवहलोग आजतकतुम्हारी कृपासेबचेजाते हैं व कंसकाहाल जो कुछआपने सुना उसीतरहपर है जबवृषभासुरदैत्य आपकेहाथसे मारागया तबनारदमुनिने आनकरकंससेकहा तेरीमृत्यु श्रीकृष्णजीकेहाथहै और वहनन्द व यशोदाके बालकनहोकर बसुदेव देवकीकेपुत्र हैं यहहाल सुनकरकंसने वसुदेव व देवकीको फिरक़ैदकिया व उसीदिनसे तुम्हारे प्राण मारने के उपायमें रहकर धनुषयज्ञकेबहाने तुमदोनों भाई व नन्दजी आदिकको मुझे बुलानेवास्ते भेजाहै यहबातसुनतेही श्यामसुन्दरने बलरामजीकीओर देखकर हँसदिया व नंदरायसेकहा अयबाबाअक्रूरजी यदुकुलमें बड़ेमहात्माहोकर कंसकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आज्ञानुसार धनुषयज्ञकाउत्सवदेखनेवास्ते हमलोगोंको बुलाने आये हैं इनकेसाथजानेमें बहुतअच्छाहोगा सो तुमभीगोप व ग्वालोंसमेत घी व दही व माखनआदिकभेंटलेकर चलो॥

दो० माखनप्रभुकी बातयह सुनिकैगोपीग्वाल। गयेसकल मुरझायतनु भयेविकलत्याहिकाल॥

हे राजन् नन्दराय श्रीकृष्णजीकेबचनकी कईबेरपरीक्षालेचुकेथे इसलिये उनकेबचनकादुलखना उचितनहींजाना व नन्द व यशोदा स्वप्नकीबातयादकरके शोचकरनेलगे परश्यामसुंदर की इच्छानुसारनन्दजीने वृन्दाबनमेंढिंढोरापिटवाकर सबग्वाल बालोंको कहलाभेजा किराजाकंसने धनुषयज्ञकाउत्सव देखने वास्ते हमलोगोंकोबुलायाहै सो कल्हिप्रातसमय सबग्वालबाल दूध व दही व घी व माखनआदिकलेकर मथुराकोचलैं जबयह समाचार गोपियोंनेसुना कि श्यामसुन्दरमथुराकोजातेहैं तबवह सब मोहनप्यारेकावियोगसमझकर मृतककेसमानहोगईं व उन केघरोंमें ऐसारोना व पीटनाहोनेलगा कि जैसे किसीकाप्राणी मरजावे॥

दो० ठौरठौर ऐसी दशा कहतन आवैबैन। बढ़ीश्याम बिछुरन व्यथा द्रुत उमँगि जल नैन॥
सो० फिरतविकलसबग्वाल पूंछतएकहिएकसों। चलनचहतनँदलालमनमलीनव्याकुलसबै॥

फिरसबगोपियां ठौरठौर बैठकरआपुसमें कहनेलगीं देखोयह क्याभलयहमारेऊपरआई एकक्षणाबिरहमोहनप्यारेका हमसेसहानजाकर उनकेदेखेबिनाचैन नहींपड़ताथा सोअबवेमथुराजाते हैंउनकेवियोगमें हमाराप्राण कैसेबचेगा इसअक्रूरमूर्खको क्याप्रयोजनथा जो हमलोगोंकाप्राणलेनेवास्तेआया सच्चपूछो तो श्रीकृष्णजीने हमारीप्रीतिसे मनअपना खींचलियानहीं तो उनको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मथुराजानेका क्याप्रयोजनहै व नन्दलालजीनजावैं तोराजाकं सउनकाक्याकरैगा तबदूसरीगोपीबोली परमेश्वरकी दयासेआ जकोई बड़ामनुष्य वृन्दाबनमें मरजाता या कोई दूसराकारण होकर हमाराचित्तचुरानेवाला कल्हिमथुराको न जाता तोबहुत अच्छाहोता दूसरीअपनीछातीपीटकरकहनेलगी बड़ाशोचहै जो प्राणप्यारा मुझसे अलगहोगा॥

चौ॰ अबहरि जब मथुराको जैहैं। तनु बिनुप्राण कौन बिधि रैहैं॥

दूसरीगोपीबोली मुझे केशवमूर्त्तिके देखनेसे तीनोंलोकका सुखप्राप्तहोताथा अबबिनादेखे उनकेकिसतरहचैनपड़ेगा दूसरी बोली जबवहएकबेर आंखउठाकर मेरीओरदेखतेथे तब मैंबहुत आनन्दहोकर अपनेबराबर किसीकोनहींसमझतीथी उनकेजा नेउपरान्त मेरीक्यादशाहोगी दूसरीनेकहा हेब्रह्मा तुमबड़ेकठोर हौ जो पहिले मोहनप्यारेसेप्रीतिलगाकर अबउनके बिरहसागर में मुझेडुबानाबिचारकियाहै जिसतरहदूरसेकोईप्यासापानीदेख कर पीनेवास्तेजावै और वहांपहुंचकर उसेबालूदिखलाई देवे वही गति हमारीहुई राम व कृष्णदोनों नेत्रहमारेचलेजायँगे तो हम लोगबिना आंखजीकरक्याकरैंगी श्याम व बलरामबिना एक क्षण हमाराजीनाकठिनहै॥

दो॰ जो राजनकेराजहैं माखनप्रभु ब्रजराज। अबजीवैं कैसेसखी वह छूटत हैं आज॥

हेराजन् इसीतरह सबब्रजबाला बिरहकीमातीहुई अपने २ मनकाहाल एकदूसरीसेकहकर बिलापकरतीथीं जबरातभरउन कोमछलीकेसमानतड़पतेबीतगई तबप्रातसमयसबगोप व ग्वाल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वृन्दाबनबासियोंने गोरसआदिक गाड़ी व बैलोंपरलदवादिया व भैंसा व भेंड़ा व बकराभेंटकेवास्ते लेकरनन्दजीकेद्वारपरआये व जिसजगह अक्रूरजी श्याम व बलरामको अपनेआगेबैठाकर तय्यारी चलनेकी करतेथे वहांपरसबस्त्री व पुरुषबालक व बड़े जानकर मोहनप्यारेके बियोगमें अपनी २ आंखोंसे जलकी धारा बहानेलगे व इतनारोये कि उनके आंशूबहनेसे पृथ्वीवहां की कीचड़के समानहोगई और उनलोगोंने आपुसमें कहा दे खो कंसअधर्मी के राज्यमें सुख व आनन्द स्वप्न होगया व सब ब्रजबाला उनके चौगिर्दखड़ी होकर बड़ीकरुणासे कहनेलगीं हे ब्रजनाथ तुम किसवास्ते हमलोग अबला अनाथनको अपने बि रहसागरमें डुबाकर प्राणलिया चाहते हौ सब वृन्दाबन बासियों का जीना तुम्हारे आधीनहै जिसतरह हाथकीलकीरैं कभी नहीं मिटतीं उसीतरह भलेमनुष्यकी प्रीति कभीनहींघटती जैसेबालू कीभीति नहींठहरती वैसे मूर्खकीप्रीतिनहीं निबहती हेगोपीनाथ हमलोगोंने तुम्हारा क्या अपराधकिया जो हमें पीठ दिखाकर चलेजातेहौ॥

दो॰ एकसखी ऐसेकहै मैं शोचत मनमाहिं। ये सुत यशुदानन्दके हमें छोडिहैं नाहिं॥

गोपियां ऐसा श्रीकृष्णजीको कहकर अक्रूरसेबोलीं हे अक्रूर तुम हमलोगोंकादुःख न जानकर जिसके आधीन हमाराप्राणहै उसे अपनेसाथ लेचले अबहमारा जीवनकैसेहोगा क्योंऐसा कर तेहो ऐसे जीनेसे तुमहमारा बधकरडालते तो अच्छाथा व अक्रूर दयावन्तको कहतेहैं सो तुम अपनेनामके बिपरीतकठोरताई कर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेहौ जैसादुःख राजाकंसने हमलोगोंको दिया उसकादण्ड श्या
मसुन्दरसे पावैगा दूसरीनेकहा देखो ब्रह्माहमको स्त्रीकातनुदेकर
हमारेऊपर कुछ दयानहींकरते भँवररूपीआंख हमलोगोंकी क
मलरूपी मुखारबिन्द मोहनप्यारे का देखनेवास्ते दिनरातचाह
नारखतीथीं कहो अबकिसतरह इननयनों को बिनादेखे सांवली
सूरति मोहनीमूरतिके चैनमिलेगा ॥

दो॰ माखनप्रभुको रूपरस पियतरहीं जो नित्त । अबखारीजल कूपको केहिविधि आवैचित्त ॥

दूसरीसखीबोलीसच्चपूंछोतोब्रह्मा व अक्रूरकाक्यादोषहैयहसब
कठोरताई श्यामसुंदरकी समझनाचाहिये कि उनकाचित्तभीश
रीरकेसमानकालाहै हमलोगोंनेकुल व परिवारकीप्रीतिछोड़कर
अपनाप्रेमउनसे लगायाथा सो अबवहहमैंइस दुःखसागर में छो
डकर चलेजातेहैं मथुरानगरकी स्त्रियांदिनरात मोहनप्यारेकेभेंट
होनेकीइच्छा मनमेंरखकर परमेश्वरसेवरदानमांगतीथीं सोअब
नारायणजीनेविनयउनकीसुनी व दूसरीनेकहावहाकी स्त्रियांरू
प व गुणसेभरीहैं श्यामसुंदर उनकीप्रीतिमेंफँसकरवहांरहजावेंगे
व हमलोगोंको भूलकरयहांक्योंआवेंगे उनस्त्रियोंकाबड़ाभाग्यहै
जो मनहरणप्यारेकेसाथ सुखउठावेंगी न मालूमहमारेतपमेंक्या
भूलपड़ीकि हमसेनन्दलालजी बिछुड़ते हैं दूसरीबोलीआजअ
च्छेशकुनमथुराकी स्त्रियोंको हुयेहोंगे कि वेलोगश्यामसुन्दरका
दर्शनपाकर अपनेलोचनोंकाफल प्राप्तकरेंगी दूसरीनेकहाश्रीकृ
ष्णको किसीनेमथुरामें नहींबुलाया उनका मनवहांकी स्त्रियां
देखनेवास्ते चाहताहै इसीवास्ते यहबहानाकरके जातेहैं दूसरीने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा इसचित्तचोरने हमलोगोंकेसाथ कौनभलाईकीहै कि वहां की स्त्रियोंसे करैंगे रूपवान्लोग अपनी सुन्दरताई के अभिमान मे किसीको कुछवस्तु नहींसमझते दूसरी ब्रजबालाबोली वृन्दा बन बासियोंके बुरेदिनआये और मथुराबासियोंका भाग्य उदय हुआ इसीवास्ते मोहनप्यारे वहांजाते हैं दूसरीनेकहा यह अक्रूर हमारेवास्ते यमराजका दूतबनकरआयाहै जिसतरह किसीभूखे के आगे ग्रास उठातीसमय कोईथाली भोजनकी खींचलेवै उसी तरह श्यामसुन्दरको हमसे बिलगकरताहै यहकौनन्यायकीबात है जो मछलियोंको पानीसे निकालके गरमबालूपर डालदेवे क दाचित् हमैं दुःखदेनेसे उसको कुछ मिलताहोगा इसलिये ऐसा करता है॥

दो० जो दुख देवै जीवको महाकष्ट वहपाय। बोवै बीज बबूलको आम कहांते खाय॥

दूसरीनेकहा हेप्राणप्यारी इसमें किसीकादोषदेना न चाहिये हमारेखोटेदिन आनेसे प्राणप्यारेजातेहैं हमाराभाग्य अच्छाहो ता तो अक्रूर क्योंआवता जिससमय गोपियां अपने २ बिरहका दुःख एकदूसरीसे कहरहीथीं उसीसमय श्याम व बलरामचलने केवास्ते रथपरचढ़े तब ब्रजबालोंने कहा देखतीहौ श्रीकृष्णजी हमारेरोने व बिलापकरनेपर कुछदया न करके मथुराजानेको त यार होगये॥

दो० मावनप्रभु आनन्दसों चढ़बैठे रथमाहिं। बहुतभलोहै सारथी अबहूं हांकत नाहिं॥

दूसरीबोली हमसब अपने कुल व परिवारकी लज्जा छोड़चु कीहै जबरथयहांसे चलै तब श्यामसुन्दरकी पेंटपकड़कर रोंक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रक्खो जिसमें वहजाने न पावैं यहसुनकर दूसरीनेकहा प्यारी तू सच्चकहतीहै जब प्राणमेरा केशवमूर्त्तिने हरलिया तबउन्हैं किस तरह जानेदेंगी जिसलाजकेमारे परमेश्वरका बियोगहो उसे भर साईंमें डारदें इससमय लज्जाकरनेमें बहुतदुःख उठानापड़ैगा दूसरीबोली हमलोग बौरहीहोकरपड़ीरहैं औरवह मथुराकी स्त्रियों सेजाकर चैनउड़ावैं यहबात कैसेहोनेपावैगी हमें लाजसे कुछकाम न होकर अपनाअर्थ साधनाचाहिये दूसरीनेकहा हमलोगोंको इसमोहनीमूर्त्तिके देखनेसे सुख मिलताथा सोअब जातेहैं भला दिनभरतो हम समझैंगी कि गौचरानें बनमेंगयेहैं सन्ध्याको बिनाचाँदनी उनकेहमारा प्राणकैसेबचेगा दूसरीबोली हे सखी उस दिन देखोरातकीबातमुझेयादहैयानहींजबश्यामसुन्दरनेहमलोगोंकेसाथ रासलीला करके हमैंसुखदियाथा दूसरीनेकहा हेसखी जो कोई इनकीलीला भुलादेवे उसेपशुसमझना चाहिये दूसरी बोली जब सन्ध्यासमय बृन्दाबनबिहारी बनमें गौचराकर घर आवतेथे तबउनके घूंघुरवालेबालोंपर धूरिपड़ीहुई कैसीशोभा देतीथी व हमलोग मार्गमें बैठकर उनकादर्शनपातीथीं तब उनकी छबिदेखने व बंशीसुननेसे कैसा आनन्द मिलताथा बताओ अब वह सुख किसतरह प्राप्तहोगा हे राजन् इसीतरह सबब्रजबाला बौरहोंकेसमान अपने अपने बिरहकाहाल श्याम व बलराम व अक्रूरको सुनाकर बिलाप करतीथीं व लाजछोंड़कर बारम्बार कहतीथीं हे माधव हेमुकुन्द हे गोबिन्द हे दीनदयालु हे केशवमूर्त्ति हे गोपीनाथ हे श्यामसुन्दर हे मुरलीमनोहर हे कृष्ण हेब्रजनाथ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहबात सुनकर एकबूढ़े मनुष्यज्ञानीनेकहा अयनन्दजी श्याम सुन्दर परब्रह्म परमेश्वरका अवतारहोकर इन्होंने पृथ्वीका भार उतारनेवास्ते जन्मलियाहै यहराजाकंसको क्यासमझतेहैं काल कीभी मृत्युइनकेहाथहै यहबचनसुनकरनन्दादिककोधीर्यहुआ इतनीकथासुनकर परीक्षितने पूंछा हेमुनिनाथ बड़ा आश्चर्य है कि अक्रूरने यहदशायशोदा व गोपियोंकी देखकरउन्हैं कुछधीर्य नहींदिया शुकदेवजीबोले हेराजन्उससमय अक्रूरने इतनागोपियोंको कहाथा कि श्यामसुन्दरफिरभेंटकरके तुम्हैं सुखदेवैंगे जब अक्रूरने सबको रोतेछोड़कर रथश्याम व बलरामका मथुराकी ओर हांका व नन्दजीग्वालबालोंसमेत गाड़ीआदिकपर बैठकर उसकेसाथ चले तबयशोदाबड़ेबिलापसे कहनेलगी॥

चौ० मोहन इधर देख तो लीजै। बिछुरत लाल हमैं कछु दीजै॥
लेहु निहार जन्म को खेरो। बहुरि बिरज में होत अँधेरो॥
यहकहि ग्वाल सखन को फेरो। अपनी गाय जाय कै घेरो॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई। कियेयत्न बहु प्राण न जाई॥
तलफतबिकल राममहतारी। अतिव्याकुलसबब्रजकीनारी॥

दो० देखि दुखित ब्रजलोगसब और यशोदामाय। तबहरि यहकहिसुख दियो बहुरिमिलैंगेआय॥

जबतकरथकीध्वजा व धूरउड़तीहुई यशोदा व ब्रजबासियों को देखपड़ी तबतकउन्हैं आशाबनीथी कि अबभीहमारे प्राण नाथ फिरआवेंगे इसलिये वहरथकीओरटकटकी बाँधकरदेखती रहीं जबदूरजानेसे धूररथकीनहींदिखलाईदी व तनगोपियों का तनमेंरहकर मनधूरकीतरहउड़ताहुआ श्यामसुन्दरके पीछे २ चलागया तबअचेतहोकर यशोदासमेतगोपियाँ गिरपड़ींजबफि वह चैतन्यहुईं तबरोतीपीटती घरकोचलीं पर उन्हैं मारेबिरह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केशवमूर्त्तिके राहनहींसूझतीथी तबएकसखी यशोदासे बोली ॥

सो० कहाकरैं व्रजजाय मनहरिलेगयो सांवरो । परतन आगे पांय पाछेही लोचन लखत ॥
दो० यों व्रजतिय पछितायसब देखियशोदादीन । सबआईं अपनेघरन किरशितबदनमलीन ॥
सो० सबव्रजपरमउदासबिरहिनदुखसम्पतिसपन । रहेप्राणयहिआसश्यामकह्योमिलिहैं बहुरि ॥
क० कुटिल अक्रूरक्रूर बैरी काहूजनमनको चेटकसीडार सरलैके व्रज मूरिगो । व्याकुल बिहालबाल
वंशीधरश्यामबिनुमीनसीतलफमानो प्रेमरसभूरिगो ॥ चरण उठाय चकित चितवत ऊँचेधामचढ़ि चिन्ता
मणि चैनसबचूरिगो । बारबारकहत बिसूरि जलपूरिनैन धूरि नाउड़ात आली अब रथदूरिगो ॥

हेराजन् इसीतरह यशोदा व गोपियांश्यामसुन्दरके विरहमें व्याकुलरहकर उनकीचर्चामें दिनअपनाकाटनेलगीं व अक्रूरने आवतीसमयमनमें उदासहोकरकहा देखो मैंनेराजाकंसअधर्मी केकहनेसे बहुतबुराकामकिया कि श्याम व बलरामकेमारेजाने का उपायसुनने व देखनेपरभी इन्हैं अपनेसाथलेजाताहूं मेरेबरा बरकोईदूसरा पापीसंसारमेंनहोगा जबकंसबलराम व कृष्णको मारडालेगातबसबव्रजबाला जिनकोमैंरोते वबिलापकरते छोड़ आयाहूँ वहबहुतदुःखपावेंगी इस अधर्मकरनेकेबदलें नमालूम मुझेकौननरकभोगनापड़ैगा श्यामसुन्दरअन्तर्यामीने अक्रूरके मनकाहालजानकर बिचारा देखो अक्रूरऐसाज्ञानी मुझेलड़का समझकर मेरेमारेजानेका शोचकरताहै इसलिये अपनीमहिमा दिखलाकर यहशोच इसकाछुड़ादियाचाहिये जब अक्रूरयमुना किनारेपहुँचे और रथ अपनावृक्षकेनीचे श्याम व बलरामसमेत खड़ाकरकेनहानेगये तबमोहनप्यारेनेनन्दरायसेकहा तुमग्वाल वालोंकोसाथलेकर आगेचलो अक्रूरजीस्नान व पूजाकरलेवें तो मैं भी पीछेआनपहुँचताहूँ यहबातसुनकरनन्दजी ग्वालबालन मेत [illegible] तामारा वैसेन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लालजीकोपानीकेभीतरदेखा जबआश्चर्यमानकर शिरअपना
बाहरनिकाला तबवहरथपरबैठेदिखलाईदिये दूसरीबेरफिरगोता
मारा तो वहीहालदेखकर जबतीसरागोतालगाया तबक्यादेखा
कि श्रीकृष्णजीसांवलीसूरत लक्ष्मीसमेतजड़ाऊगहनाअंग२ पर
पहिनेकेसर व चन्दनकातिलकलगाये कौस्तुभमणि व बैजयन्ती
माला व बनमालागलेमंडाले पीताम्बर व जनेऊकाजोड़ापहिने
व उपरनारेशमीओढ़े चतुर्भुजीस्वरूपसे शंखचक्रगदा पद्मधार
णकियेहुये शेषजीके ऊपरबिराजते हैं व शेषजीश्वेतवर्णहोकर
अपने हजारमस्तकपर जड़ाऊमुकुटबाधे व नीलाम्बरपहिनेहुये
बहुत शोभायमानदिखलाई दिये व श्यामसुन्दर घूंघुरवालेबा
लोंपरकीटमुकुट जड़ाऊसाजे व मकराकृतकुण्डलपहिने सुन्द
रनासिका व कपोल कमलनयन तिरछीचितवन दांतबिजुली
केसमान चमकते मन्द २ मुसकाते व भुजा व छाती अतिबिशा
ल व गहरीनाभी पतलीकमर व जंघा मोटी पांवकेनखचमकते
हुये ऐसे महासुन्दर दिखलाईदिये जिसकाबर्णननहीं होसक्ता
व आकार जव व अंकुश व बज्रादिक पैरकेतलवेमें दिखलाई दे
करक्या दृष्टिपड़ाकि ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व बरुण व कुबेरआ
दिकदेवते व नव योगीश्वर व नारदमुनि व मार्कण्डेय व भृगुआ
दिकऋषीश्वर व सनकादिक व गरुड़ व आठबसुदेवता व काल
चौबीसतत्त्व व ध्रुव व प्रह्लादआदिकभक्त व बेदव्यास व उनचास
पवन व आठोंदिक्पाल व सातोंद्वीप व अग्नि व सातोंसमुद्र व बार
हसूर्य व चन्द्रमा व बालखिल्यऋषीश्वर व धर्मराज व कामधेनु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व कामदेव व सातोंपुरी व विद्याधर व सिद्ध व गन्धर्ब व दिव्यपितर
व गङ्गा व सरस्वतीआदिकनदियां व अरुन्धती व बशिष्ठ व यक्ष व
राक्षस व कंस व देवकन्या व सबव्रत व तीर्थ व कल्पवृक्ष आदिक
अपना २ रूप धारणकिये श्रीकृष्णजीकेसामने हाथजोड़हुयेस्तु
ति करते हैं व अप्सराउन्हैं नाचदिखाकरगन्धर्बगानासुनातेहैं व
ब्रह्मादिकदेवते स्तुतिकरने उपरान्त केशवमूर्त्तिके तेजसेकुछ बो
लनेकीसामर्थ्य न रखकर चित्रकारीसे चुपचापखड़े उनकामुख
निहारते हैं जिसकी ओर नन्दलालजीने आंखउठाकर दयासे
देखा वहप्रसन्नहोकर उनकागुणानुबादगानेलगा उनमेंबाजेमो
हनप्यारेको चँवरहिलाते व बाजे उनकेधूपदीप करके सुगन्धित
फूलोंका गजरा पहिनाते व बाजे अनेकतरहकी बस्तु उन्हैं भेंट
देकर बारम्बार दण्डवत् करतेथे ॥

दो० माखनप्रभु ब्रजनाथ के सभीदेवतासाथ । हाथजोड़ि अस्तुतिकरैं धरेचरणपर माथ ॥

जब अक्रूरको यहसबमहिमा श्यामसुन्दरकी यमुनाजलमें
देखकर बिश्वासहुआ कि श्रीकृष्णपरब्रह्मपरमेश्वरका अवतारहै
तबवहशोच अपनाछोड़कर चतुर्भुजीरूपकेपासचलागया व च
रणोंपरगिरके हाथजोड़कर बिनयकिया ॥

दो० तनमन रहोभुलायके देखिरूपअभिराम । माखनप्रभु घनश्यामको लाग्यो करनप्रणाम ॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् जो कोई इस
अध्यायकोप्रीतिसेकहै व सुनै जानों उनकोश्यामसुन्दरके दर्शन
प्राप्तहुये ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चालीसवां अध्याय ॥

अक्रूरका श्रीकृष्णजी चतुर्भुजीरूपकी यमुनाजलमें स्तुतिकरना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जबअक्रूरने यमुनाजलमेंमहिमा श्रीकृष्णजीकी देखकर उन्हें पूर्णब्रह्मजाना तब उसीजगह इसत रहपरस्तुति उनकीकी हेनाथनिरंजनआपतीनोंलोकके मालिक होकर आवागमनसे रहितहैं व कोई ऐसीसामर्थ्य नहींरखता जो तुम्हारीलीला व आदि व अन्तकाभेद जाननेसकै सो मेरीदण्डव तआपकोपहुंचै यहबातसुनकर परीक्षितनेपूछा हेमुनिनाथ जब परब्रह्मपरमेश्वरके भेदको कोईनहीं पहुंचसक्ता फिर उनकीमहि मा जाननेवाला किसको कहनाचाहिये शुकदेवजीबोले हेराजन् उनकीमहिमाजानना बहुतकठिनहै परतुमजितनेजड़ व चैतन्य जीव देखतेहौ सबमें उन्हींके तेजकाप्रकाशसमझो व जो कुछ सं सारमें दिखलाईदेताहै वहसब परमेश्वरकी इच्छा व महिमासे उ त्पन्नहोकर उन्हींकारूपहै संसारमें कोई २ ज्ञानी व तपस्वी पर मेश्वरके स्मरण व ध्यानकरने के प्रतापसे कुछ २ भेद उनका जाननेसक्के हैं ॥

दो० माखनप्रभु कर्त्तारको जानो याबिधिलोग । घटघटमें व्यापकसदा हैं सबकरनेयोग ॥

हेराजन् अक्रूरने श्रीकृष्णजीसे यमुनाजलमें बिनयकिया म हाराज आपब्रह्मा व महादेव आदिकदेवते व तीनोंलोकके मालि कहैं जिसतरह सबनदी व नालोंकापानी बहिकर समुद्रमें मिल जाताहै उसीतरह संसारीमनुष्य व पूजा व दान व स्मरण दूसरेदेव ताँकेनामपरकरतेहैं वहसब आपकोपहुंचताहै व मरनेउपरांतसब जीव तुम्हारेरूपमेंसमाजातेहैं अलखअगोचर जहांब्रह्मादिकदेव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेआपकेगुण व महिमाकोनहींपहुंचनेसके वहांदूसरेकोक्यासाम
र्थ्यहै जो तुम्हारीमहिमाजाननेसकै सो मेरीदण्डवत्लीजिये ह
आदिपुरुष निराकारचारोंवेद आपकाश्वासाहोकर तुम्हाराआदि
व अन्तनहींजानते व आपघटने व बढ़नेसेरहितहोकर अपनी
स्तुतिकराने की कुछइच्छानहींरखते जैसे गूलरकेफलमेंमच्छड़
व जलचरजीव अपनाहालनहींजानते वैसेसबब्रह्माण्डकेजीवम
तोगुण व रजोगुण व तमोगुणसे उत्पन्नहोकर मायावशतुम्हैंनहीं
पहिंचानते व तुम्हारेविराट्रूपके रोम २ में अनेकब्रह्माण्डहैं जि
सतरह गूलरकेवृक्षमेंफललगारहताहै सो मैं उसी बिराट्रूपको
नमस्कारकरताहूं हे पूर्णब्रह्म निर्म्मलरूप आपचौदहों भुवनके
कर्त्ता व धर्त्ताहोकर केवलगौ व ब्राह्मण व हरिभक्तों के उद्धारकर
ने व सुखदेने व अधर्मियों के मारनेवास्ते संसारमें अवतारधारण
करते हैं॥

चौ० हंसरूप धरके अवतारा। नीरक्षीर तुम करो नियारा॥

हेज्योतिस्वरूपदीनानाथ आपनेमत्स्यरूपधरकर वेदको
पातालसेनिकाला व हयग्रीव अवतारलेकर मधुकैटभ दैत्यको
मारा और वास्ते मथनेसमुद्र व निकालने चौदहोंरत्नकेकच्छप
अवतारधरकर मन्दराचलपहाड़को अपनीपीठपर उठाया व बा
राहअवतारलेकर हिरण्याक्षदैत्यको मारनेउपरांत पृथ्वीपाताल
से निकालले आये व नृसिंहरूपधारणकरके हिरण्यकशिपुको
मारकरप्रह्लाद अपनेभक्तकी रक्षाकी व देवतोंकेभलेवास्ते बामन
अवतारलेकर तीनपगपृथ्वी राजाबलिसेदानलिया व परशुराम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवतारधरकर क्षत्रियोंकाबधकिया व रामचन्द्रअवतारसे अध
मीरावणकोमारकर बिभीषणकोलंकाकाराज्यदिया व गंगाजी
तुम्हारेचरणकाधोवनहोकर तीनोंलोककेजीवोंकोतारतीहैं वबल
भद्र व प्रद्युम्न व अनिरुद्धतुम्हारेरूपहैं इसलिये मैं तुम्हारेसबअव
तारोंकोदण्डवत्करताहूं इतनीकथासुनकर परीक्षितनेपूछा महा
राज उससमयतक अनिरुद्ध व प्रद्युम्न उत्पन्ननहींहुये थे अक्रूर
उनकानाम किसतरहजाना शुकदेवजीबोले हेराजन् उद्धव व अ
क्रूर श्रीकृष्णजीकेभक्तोंमेंहोकर उनकीदयासे तीनोंकालकाहाल
जानतेथे जिसतरहनारदमुनिकोभूत व भविष्य व वर्त्तमानकाहा
लमालूमरहताहै उसीतरह हरिभक्तलोगभी तीनोंकालकाहाल
जानतेहैं फिर अक्रूरनेकहा आपबौद्धअवतारलेकर दैत्योंकोयज्ञ
करनेसेबरजैंगे व कलियुगकेअन्तमें कलंकीअवतारधरकर नये
शिरेसे धर्मसतयुगकाप्रचारकरैंगे व कोईमनुष्य आपकातप व
ध्यानकरनेसे भवसागरपार उतरजातेहैं व किसीकोआपसंसारी
मायाजालमें फँसाकरकौतुकउनका इसतरहदेखतेहैं जिसतरह
कोई मनुष्य अपनामुखशीशेमेंदेखे बिना कृपातुम्हारी इसमाया
जालसे छूटनाबहुतकठिनहै व पूजाआपकी कईजगहपरहोकर
बाजेमनुष्य तुम्हारीमूर्त्तिबनाकरपूजतेहैं व कोई तुम्हारेरूप व च
रणोंकाध्यान अपनेहृदयमेंरखतेहैं व बाजेतुम्हारेनामपर यज्ञ व
होमकरतेहैं व ज्ञानी आपकोसबजीवोंमें एकरूपदेखताहै व बाजे
मनुष्यबिरक्तहोकर बनमेंतुम्हारा तप व ध्यानकरते हैं व कोईगृह
स्थीमेंरहनेपरभी मनसेतुम्हारास्मरण व ध्यानरखकर भवसागर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पार उतरजाताहै व बाजेलोग सिवायतुम्हारे दूसरेदेवतासेप्रीतिन रखकरबारम्बार तुम्हैं दण्डवत्करकेसंसारीव्यवहारको स्वप्नवत् समझते हैं तुम्हारीपूजास्मरण व गुणोंकावर्णनबड़े२ योगीश्वर व ज्ञानी व शेष व महेश व शारदा व गणेशनहींकरनेसक्के मुझत्र ज्ञानकोक्यासामर्थ्य है जो तुम्हारीमाहिमावर्णनकरनेसकूं आप कानामदीनदयालुहै इसलिये मुझेदीन व अपनादासजानकर अज्ञान व अभिमानकीकाटि जो मेरेहृदयमेंजमीहै उसकोज्ञान रूपी अग्निसेजलादीजिये व मुझेआठोंपहर अपनेचरणोंकेपास रखकर ऐसा ज्ञानउपदेशकीजिये जिसमेंआपकोअपनाउत्पन्न करनेवालाजानकर तुम्हारीसेवा व चर्चामें दिनरातलीनरहूं ॥

दो० मैं अजान तुमशरणहौं माखनप्रभुभगवान। ऐसीबुधिमोहिं दीजिये तुम्हैंसकौंपहिंचान ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

अक्रूरका श्याम व बलराम समेत मथुरामें पहुंचना।

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जबश्रीकृष्णजीने यमुनाजल में यहसब स्तुतिअक्रूरसे सुनकरचतुर्भुजी स्वरूप अपनादेवतों स मेत अन्तर्द्धानकरलिया तबअक्रूरइसबातकाअचम्भा मानकर पानीसे बाहरआया व श्याम व बलरामको रथपरबैठेदेखकरडर ता व कांपताउनकेपासपहुंचा यहदशाउसकी देखकर केशवमू र्तिनेपूंछा हेचाचातुमइससमय घबरायेक्योंहो व नहातीसमय शिरपानीसे बारम्बारनिकालकर हमारीओरक्यादेखतेथे व चल नेका शोचभूलकरइतनी देरतक तुमक्याकरतेरहे तुमने यमुना जलमेंकुछआश्चर्यकीबातैं तो नहींदेखीं यहबचनसुनतेहीअक्रूर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने हाथजोड़कर बिनयकिया हेनाथनिरंजन अन्तर्यामी जो कुछ पानीकेभीतर मैंने तुम्हारीमहिमादेखी सो बर्णननहींहोसकती ॥

चौ० भलोदरश दीन्हों जलमाहीं। कृष्णचरितको अचरजनाहीं ॥
मोहिं भरोसो भयो तुम्हारो। बेगिनाथ मथुरा पग धारो ॥
दो० अब मोसों पूछत कहा तुम त्रिभुवन के नाथ। कर्त्ता हर्त्ता जगत के सकल तुम्हारे हाथ ॥
माखन प्रभु करतारकी लीला कही न जाय। सर्व जीव संसार के जामें रहे लुभाय ॥

यह सुनतेही श्रीकृष्णजीने हँसकरकहा आवोरथपरचढ़ो रास्ताचलनाहै तबअक्रूरने पहिलेशिरअपना उनकेचरणोंपर रखदिया फिरबैठकररथचलाया व नन्दादिकग्वाल जोआगेगये थेमथुराकेनिकट बागमेंडेराकरके श्याम व बलरामकीआशादेखनेलगे तबश्रीकृष्णजीभी वहांपहुँचकर रथसेउतरे तबअक्रूरने हाथजोड़कर उनसेबिनयकिया हेदीनानाथ मैंचाहताहूं कि आजकीरात मेरीकुटी अपनेचरणोंसे पवित्रकीजिये जिसकेघरआपकेचरणजावें उसकेपुरुषा स्वर्गकोपहुँचते हैं जिनपावोंनेअहल्या गौतमऋषीश्वरकीस्त्रीको शापसेछोड़ाया व बलिकोसुतललोककाराज्यदिया व जिनचरणोंकाधोवन गंगाजीकोभगीरथ बड़ेतपसे अपनेपुरुषोंके तारनेवास्ते मर्त्यलोकमेंलाये व शिवजीने अपनेमस्तकपररक्खा वहीचरणधोकर चरणोदकपीने व शिरपरचढ़ावनेसे अपनेकुल व परिवारसमेत कृतार्थहुआ चाहता हूं ॥

चौ० ऐसे चरण सरोज तुम्हारे। तिनको सदा प्रणाम हमारे ॥
दो० माखनप्रभुके नामगुण कहै सुनै ज्याहि ठौर। सुर नर रज उस ठौर की धरैं शीश ज्यों मौर ॥

हेमहाराज मैंतुम्हारादास इनचरणोंकोछोड़करकहींन जाऊंगा यहबातसुनतेहीश्यामसुन्दरने हाथअक्रूरका बड़ेप्रेमसेपकड़

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करउनसेकहा हेचाचाआज रातकोहमयहांरहैंगे कल्हिराजाकंस को मारकर पीछेसेबलरामसमेत तुम्हारेस्थानपरआवेंगेआजसव को यहांछोड़करजाना उचितनहीं है जबअक्रूरने यहसुनातबउन से बिदाहोकर राजाकंसकीसभामें चलागया कंसने बड़ेआदर से अपनेपाससिंहासनपरबैठाकर पूछाजहांगयेथेवहांकाहालकहो॥

चौ० सुनि अक्रूरकहै समुझाई। ब्रजकी महिमा कही न जाई॥
कहा नन्दकी करौंबड़ाई। बात तुम्हारी शीश चढ़ाई॥
राम कृष्ण दोऊ हैं आये। भेंट सबै ब्रजबासी लाये॥

सोआजवहबहुतग्वालबाल संगरहनेसे नगरकेबाहर टिके हैं कल्हिराजसभामेंआवैंगे यहसुनकर राजाकंस बहुतप्रसन्न हुआ औरबोला हेअक्रूरजी आजतुमनेहमारा बड़ाकामकिया जोराम व कृष्णकोलेआये अबअपनेघरजाकर आरामकरो अक्रूरयहआ ज्ञापातेही अपनेस्थानपरआये व कंसश्याम व बलरामकेमारने काउपाय बिचारनेलगा इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षितजबनन्दादिक डेरालेकर सुचित्तहुये तबश्याम व बल रामनेपूछा हेबाबातुम्हारीआज्ञाहो तो हममथुरापुरीदेखआवें न न्दरायने कुछपकवान व मिठाई दोनोंभाइयोंको खिलाकरकहा बहुतअच्छा तुमजाकरदेखआवो परबिलंबमतकरना यहबचन सुनतेही उसीरोज़चारघड़ी दिनबाक़ीरहे श्याम व बलराम ग्वाल बालोंकोसाथलेकर चले मथुरानगरमें किला व स्थान बिल्लौर केबनेहुये बहुतउत्तमदिखलाईदिये व सोनहुले रत्नजटित द्वारों परमोतियोंकीझालरैं बँधीथीं व झरोखे व खिड़कियोंमेंअनेकम णिजटितहोकरकिलेकेचारोंओर ऐसीगहरीखाईखुदीथी जिसमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बारहोंमहीने पानीभरारहताथा व किलेकी दीवारपरताख व झरोखोंमेंकबूतर व तूती व कोकिला आदिक अनेकरंगकेपक्षी रहकरमीठी २ बोलियांबोलतेथे व सबगली व सड़क उसनगरकीकूड़ा व धूरआदिकसेसफाहोकर गुलाबजल व रगड़ेहुये चन्दनकाछिड़कावबहांहोरहाथा व दीवारेंमहलोंकी ऐसीचमकतीथीं जिनमें मुखदिखलाईदेताथा व सबस्थानोंमेंछोटे २ व नगरकेचारोंओरबड़े २ बहुतबाग और उनमेंउत्तम २ फूल व फललगेहोकर अच्छा २ स्थानवहां बैठनेकेवास्ते बनाथा और वृक्षोंपर अनेकरंगकेपक्षीबोलतेथे व अच्छे २ तड़ाग व बावली व कुण्डोंमेंमोतीकेसमानपानीभरारहकर कमलफूलाथाव उनफूलोंपर भवँरेगूंजकरतालाबकिनारेअनेकरंगकेपशु वपक्षीआपसमेंकलोलकरतेथे वफूलोंकीक्यारियां कोसोंतकफूलकरमंदसुगन्धहवाबहतीथी व पानकीपनवाड़ियाँ लगीरहकरकुयें व बावलियोंपर रहँट व पुरवट चलताथा व मालीलोगमीठे २ स्वरोंसेगायकर पेड़ोंकोसींचतेथे व नगरकीरक्षावास्ते जोचारोंओर अष्टधातुकी दीवारबनीथी उसमें व सबस्थानोंपरसोनहुलेजड़ाऊ कलशेऐसेबनेथे जिसकीचमकसेआंखसामनेनहींठहरतीथी सबमथुरावासियोंकेद्वारपरकेला व बन्दनवार बाँधकर गावना व बजावनामंगलाचार होरहाथा॥

दो० शोभामथुरानगरकी कासों बरणीजाय। जहां श्यामत्रिभुवनपती जन्मलियोहै आय॥

जबश्याम व बलराम ऐसीशोभादेखतेहुये मथुरापुरीमें पहुँचे तबउनकादर्शनपाकर मथुरावासी अपने २ लोचनोंकाफलप्राप्त करनेलगे॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ० जो जो छबि देखैंमगमाहीं । सो करुणाकरिकै पछिताहीं ॥
असुरकंसहै बड़ो कसाई । अब इनको होइ है दुखदाई ॥

दो० बड़ीधूम मथुरानगरआवत नन्दकुमार । सुनिधाये पुरलोगसब गृहकेकाज बिसार ॥

जबमथुराकीस्त्रियोंने श्याम व बलरामकेआवनेका हालसुना तबउनमें बहुतसीवृन्दाबनबिहारी के देखनेवास्ते घरसेबाहर नि कलआईं व अनेकस्त्रियांअपने २ कोठे व खिड़की व झरोखोंप आनबैठीं ॥

दो० माखनप्रभुआवतसुने मनमें भयोहुलास । मारगमें ठाढीभईं हरिदर्शनकी आस ॥

व बहुतस्त्रियां आपसमेंगोलबाँधकरसड़क व गलियोंमें एक दूसरीसे यहकहतीथीं यहीश्याम व बलरामहैं जिनकोअक्रूरलेने गयेथे इसमोहनीमूर्त्तिको अच्छीतरह देखकरअपनी २ आंखैं ठीकरो ॥

चौ० यहि बिधि जहां तहां खड़ि नारी । प्रभुहि बतावैं हाथपसारी ॥
नील बसन गोरे बलराम । पीताम्बर ओढ़े घनश्याम ॥
सुनतहतीं पुरुषारथ जिनको । देख्योरूप नयनभरि तिनको ॥

यहीदोनोंबालककंसकेभानजे हैं जिन्होंनेकेशीआदिक सब दैत्योंकोमारकर अनेकलीलागोकुल व वृन्दाबनमेंकीथीं पिछले जन्महमलोगोंनेबड़ेशुभकर्मकियेथे जिसकेप्रतापसेबैकुण्ठनाथ कादर्शनपाया जो २ स्त्री उनकासमाचारपाती थी वहसबउलटी पलटा शृंगारकरके अपनेगोदकाबालकरोताछोड़कर इसजल्दी से बाहरचलीआतीथी कि उसकोअपने तन व वस्त्रकीकुछ सुधि नहींरहतीथी ॥

दो० माखनप्रभुके दर्शको यहिबिधि दौड़ींनारि । ज्योंसरितासागरमिलन चलतवेगिसोंबारि ॥

जब मथुरावासीस्त्रियां मोहनीमूर्त्तिकारूपरस आंखोंकीरा पीनेलगीं तबकेशवमूर्त्तिने अपनीसदमुसकान व तिरछीचितव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेमन उन्होंकाहरलिया औरवहस्त्रियां श्यामसुन्दरको देखते ही उनपरमोहितहोगईं ॥

दो० कहतसकल बड़भागिहैं वृन्दाबनकी नारि। जोसुख पावतहैं सदा माखनप्रभुहि निहारि ॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् इसीतरह सब स्त्री व पुरुष मथुरा बासी मोहनप्यारेकेदर्शनसे प्रसन्नहोकर अनेकतरहपर बालच रित्रनन्दलालजीका आपसमेंकहतेथे व ब्राह्मणलोग श्याम व बलरामकेमाथेपर तिलकलगाकर उन्हैं आशीर्बाददेतेथे जिस गली व सड़क व चौराहेमें श्याम व बलरामजाते वहांपर सबस्त्री व पुरुषउनकेदर्शनसे अपनाजन्मस्वार्थ करतेथे व मोती व रत्ना दिक न्यवछावरकरके अक्षत व लावा व फलउनपर बरसातेथे उ सनगरकी शोभा व बहुतभीड़देखकर केशवमूर्त्तिने अपनेसाथी ग्वालबालोंसेकहा कोईराहमतभूलना कदाचित्भूलजानातोज होंडेराहै वहांचलेजाना उससमयमोहनप्यारेने राहमेंक्यादेखा कि राजाकंसकाधोबी जोकपड़ोंकोरँगताभीथा मदिरापानकिये कई लादीकपड़ालियेकंसकायशगाताहुआ उसीओर चलाआ ताहै उसकोदेखकर श्यामसुन्दरने बलरामजीसेकहा कहोतो इ सकेकपड़े छीनकर हम व तुम दोनोंभाई ग्वालबालोंसमेत पहि नलेवें और जोकुछबचैंउन्हैं लुटादेवें बलरामजीनेकहा जोआप कीइच्छाहो सो कीजिये यहबचनसुनतेही श्रीकृष्णजीने जोसब धोबियोंमें मालिकथा उससेकहातुम कुछकपड़े हमैंपहिरनेवा लेदेव तो राजाकंससे भेंटकरके तुम्हैंफेरदेवेंगे व जोकुछ राजाके यहांसे मुझेमिलेगा उसमेंसे तुमकोभी देवेंगे ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० हँस्यो बचनसुनि श्यामके कह्यो गर्बकरि बैन । बलिकेबकराह्वैरहे आयेहौ पटलैन ॥
सो० राखीघरीबनाय ह्वैआवो नृपद्वारसे । तबलीजो पटआय जोभावै सो दीजिये ॥

ऐसाकहकर वहधोबी केशवमूर्त्तिसेबोला तुमलोग गवाँरमनुष्य बनकेरहनेवाले सदा इसीतरहकाकपड़ा पहिनाकरतेथे जोमाँग नेआयेहौ तुमनहींजानते कि यह सबकपड़े राजाकंसके हैं ऐसी बात फिरकहोगे तोराजातुम्हैं दण्डदेगा ॥

चौ० बनबन फिरत चरावत गैया । अहिरजाति कामरी उढ़ैया ॥
नटको वेष बनाकर आये । नृप अम्बर पहिरन मन भाये ॥
जुरिकै चले नृपतिके पासा । पहिरावन लेने की आसा ॥
नेक आश जीवन की जोऊ । खोवन चहत अभीतुमसोऊ॥

यहसुनकर मोहनप्यारेनेकहा हम सीधीतरहवस्त्रमाँगते हैं तुम उलटीपलटीबातैं क्योंकहतेहो मँगनीकपड़ा देनेमें तुम्हारी कुछ हानि न होकर सदातुम्हारा यशसंसारमें बनारहैगा यह सुनते ही वहधोबी क्रोधसेबोला हेबालकतैंने अभीतक राजाकंसकोन हींदेखा परउसकेप्रतापकाहाल भीनहींसुना गवाँरलोग राजसी व्यवहारनहींजानते तेरामुख यहकपड़ेपहिरनेयोग्यहै ऐसी तृ ष्णाछोड़कर मेरेसामनेसे चलाजा नहींतोअभी तुझकोमारडा लताहूं जबश्यामसुन्दरने यहदुर्बचन धोबीकासुना तबक्रोधित होकर दोनोंअँगुली अपनी तिरछेहाथसे उसकेगलेमेंमारा कि शिरउसका भुट्टासाकटकर गिरपड़ा यहदशामालिक धोबी की देखतेही उसकेसाथी लादी व पेटारीआदिक छोड़कर भागगये व राजाकन्सके पासजाकर सबवृत्तान्तकहदिया व मोहनप्या रेने अपने व बलरामजी व ग्वालबालोंके पहिरने वास्ते कपड़े निकालकर बाकीसबतुरतदिये ग्वालबाल वस्त्रपहिरना नहींजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नतेथे इसलिये दामनमेंहाथ व अँगरखेमें पांवडालनेलगे व के शवमूर्त्तिनेभी उलटापलटा कपड़ापहिनलिया इतनीकथासुना कर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित कदाचित् तुझेइसबातका संदेह हो कि सबबस्तुकाज्ञान श्रीकृष्णजीकीकृपास उत्पन्नहुआहै वह कपड़ापहिरने क्योंनहींजानतेथे सो उनकेभेद व लीलाका हाल कोईजानने नहींसक्ता और वहपरब्रह्म परमेश्वर संसारीसुखकी कुछइच्छा नहींरखते परउनकेभक्त व सेवकप्रीतिसे जो कुछउन्हैं भोगलगाकर भूषण व बस्त्रपहिनादेतेहैं उसेवहदयाकीराह अंगी कारकरतेहैं इसलिये वहअपनेको बस्त्रपहिरनेसे अज्ञानबनाकर चाहतेथे कि कोई भक्तमेरा आनकर आपसे मुझेपहिना दे सो उनकी इच्छानुसार उसीजगह बायकनाम दरजी हरिभक्त आ नपहुंचा व श्यामसुन्दरसे हाथजोड़कर बोला महाराजप्रकट में मुझे राजाकन्सकासेवककहतेहैं परमैं अपनेमनसे आठोंपहर तुम्हारेचरणोंकाध्यानरखताहूं मुझे आज्ञादीजिये तो सब किसी को अच्छीतरहवस्त्रपहिनादूं मुरलीमनोहरने उसे अपनादासजा नकरकहा बहुतअच्छायहबचनसुनतेही उसदरजीनेबड़ीप्रीतिसे छोटेबड़े कपड़ोंकोकाटछांटकर श्याम व बलराम व सब ग्वाल बालोंकोपहिनादिया व हाथजोड़के उनकेसामनेखड़ाहुआ तब मुरलीमनोहरबोले हे बायकहमतुमसेबहुतप्रसन्नहुये तू सदा भक्तिपूर्वकधनी यात्ररहिकर मरनेउपरांतमुक्तिपावेगा व तेरेबंशमें सबहरिभक्तउत्पन्नहोंगे ऐसाबरदानदेकरफिर केशवमूर्त्तिने उस दरजीसेकहा हे बायकजैसीटहल तैंनेमेरीकी वैसाफलमैंने तुझ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोनहींदिया इसलिये तुझसेलज्जितहूं इतनीकथासुनकर परीक्षितनेपूछा महाराजथोड़ीसेवाकरनेकेबदले श्यामसुन्दरने उसको ऐसावरदानदिया फिरलज्जितरहनेकाकारणक्याथा शुकदेवजीबोले हेराजन् बैकुण्ठनाथनेसमझाकि कपड़ेपहिनावतीसमय इसनेसबतरहसे मनअपनाबटोरकर मेरेकाममेंलगाया व बिना इच्छाहमारीसेवाकी इसलिये मैंने जो इसकोदिया सो उसटहल कीबराबरीनहींरखता हे परीक्षितदेखो एकबेरकपड़ापहिनावनेके बदले वहदरजी इसपदवीकोपहुँचा जो लोगनित्य श्रीकृष्णजीको भूषण व वस्त्रपहिनाकर उनकीपूजा व सेवाकरतेहैंवहनमालूम कैसाफलपावैंगे जबश्याम व बलराम वहांसे आगेचले तबसुदामानाममाली हरिभक्तआनकरकेशवमूर्त्तिके चरणोंपरगिरपड़ा व बड़ेप्रेमसे श्याम व बलरामको ग्वालबालोंसमेत अपनेघर लेजाकर उत्तमआसनपर बैठाला व चरणउनकाधोकर चरणामृतलिया और विधिपूर्वक पूजाउनकीकी व सुगन्धित फूलोंकागजरा पहिनाकर इसतरहपर स्तुतिउनकी की ॥

चौ० दयासिन्धु तुम दीन दयाला। कृपावन्त सबके प्रतिपाला ॥
ऐसे चरण सरोज तुम्हारे। मित्र शत्रु जन सबै उधारे ॥
मोपर कृपाकरो हरि देवा। आयसु देव करौं कछु सेवा ॥

जबवृन्दावनबिहारीने यहस्तुतिमालीसेसुनी तबउसकीसच्ची भक्ति व प्रीतिदेखकर कहा हे सुदामा हमतेरेऊपर प्रसन्न हैं जो इच्छाहो सो वरदानमांग यहवचनसुनकर मालीने विनय किया मैं यहीचाहताहूं कि तुम्हारेचरणोंकीभक्ति सदामेरेहृदयमें बनी रहकर मुझे ज्ञानी व ऋषीश्वरोंका सत्संगरहै श्यामसुन्दरने उसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुखमांगा बरदानदेकरकहा तू सदा धनीपात्र व सुखसे रहैगा व तेरेवंशमें भी सबधनवान्होकर मेरीभक्ति करैंगे यहकहकर श्री कृष्णजी वहांसे उठे ॥

दो० या विधि दयाजनाइके माली कियो सनाथ। आनँदसों आगेचले माखन प्रभुव्रजनाथ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरका महादेवजी का धनुषतोड़ना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दरसुदामामाली को बरदानदेकरबाजारमेंगये तबक्यादेखा कि कुब्जामालिनिक टोरियोंमें चन्दनरगड़ाहुआ भरकरथालीमेंरक्खेहुये चलीजाती है श्यामसुन्दरने उसेदेखकरहँसीकीराहपूंछा कि तुमकिसकीस्त्री बहुतसुन्दरीहोकर यहचन्दनकहांलेजातीहो हमैंदेवगी यहबचन सुनकर कुबड़ीनेविनयकिया हे मोहनीमूर्त्तिमैं कुब्जानामराजा कंसकीदासीहोकर नित्यचंदन उसकेलगानेवास्तेलेजातीहूं और वह इससेवाकरनेसेबहुतप्रसन्नहोकर मेरापालन अच्छीतरहकर ताहै परतुम्हारेचरणोंकाध्यानसदा अपनेहृदयमेंरखकर आपका गुणानुवादगायाकरतीथी सो आजतुम्हारादर्शनपानेसे मेराजन्म सुफलहोकर लोचनोंकाफलमिला राजाकंसकोचन्दनलगानेसे मेरापरलोकनहींबनता इसलिये अबमुझेयहइच्छाहै कितुम्हारी आज्ञापाऊं तो अपनेहाथसे तुम्हारेचन्दनलगाकर कृतार्थ हो जाऊं ॥

दो० माखनप्रभुसों कूबरी यहिविधि कहतसुनाय। मोहनमूरति श्यामकी मनमेंरही लुभाय ॥

नन्दकुमारने कुब्जाकीभक्ति व प्रीतिसच्चीदेखकर उससेकहा बहुतअच्छा यहवचनसुनतेहीकुबड़ीनेबड़ेप्रेमसेश्याम व बलराम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केमस्तक व अंगपरबिधिपूर्वक चन्दनलगाया तबश्यामसुन्दरने प्रसन्नहोकर बलरामजीसेकहा कि इससेवाके बदले कुब्जाका अंग सीधाकरदेनाचाहिये ऐसाकहकर श्रीकृष्णजीने अपनापांव कुबड़ीकेपैरपर रखकर दो अँगुली अपनेहाथकी उसकी ठोढ़ी मेंलगाके उसे उचकादिया तो कूबड़उसका छूटकर वहसीधी व अतिसुन्दरीहोगई ॥

सो० कोकरिसकै बखान जाहिबनाई आपहरि। भई रूपगुणखान कुब्जामन आनन्द अति॥

हे परीक्षित जबकुबड़ीने अपनेकोमहासुन्दरीदेखा तबवहअं चलसे मुखअपना ढांपकरमुसकरातीहुई बिनयपूर्वकबोली हे प्री तम जिसतरहतुमने दयालुहोकर मुझेरूप व तरुणाईदी उसीतर ह मुझदासीके घरचलकर मेरीइच्छा पूर्णकीजिये यहबचन सुन तेही मोहनप्यारेने हाथउसका पकड़कर प्रेमपूर्वक कहा तू धीर्यर ख जिसतरह चन्दनलगाकर तैंनेहमारीछाती ठंढीकी उसीतरह हमभी तेरीइच्छा पूर्णकरैंगे॥

दो० कंसनृपतिको देखिकै हमऐहैं तुवधाम। यह कहकर आगे चले माखनप्रभु घनश्याम॥

कुब्जाने यहबरदान पावतेही आनन्दसे अपनेघर जाकरकेस रिव चन्दनका चौकपुरवाया व स्थानअपना अच्छीतरह अलं कृत करकेमोहनप्यारे के आनेकीआशा देखनेलगी जबमथुराबा सी स्त्रियां यहहालसुनकर उसकेघरगईं तबउसका रूप व तरुणा ई देखकरबोलीं॥

चौ० धनि धनि कुब्जा तेरो भाग। जाको बिधना दियो सोहाग॥
ऐसो कहा कठिन तपकीन्हों। गोपीनाथ भेंटभुज लीन्हों॥

हे कुब्जारानी जबश्यामसुन्दर तेरेघरआवैं तबहमकोभी उन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का दर्शनकराना इसीतरह मथुराबासीस्त्रियां कुब्जाकीबड़ाई क रतीथीं व श्याम व बलराम ग्वालबालोंसमेत हँसतेहुये चलेजा तेथे बाज़ारमें जोमनुष्य जिसबस्तुका रोज़गारकरताथा वहलोग रत्न व बस्त्र व पान व मिठाईआदिक सोने व चांदीकी थालियों में रखकर उन्हैं भेंटदेतेथे व श्रीकृष्णजी उनकाक्षेमकुशल पूंछ कर अपनीमीठीमीठी बातोंसे उन्हेंप्रसन्न करतेथे॥

चौ० मारगमें जो दर्शन पावैं। रामकृष्णकी कुशल मनावैं॥
काम स्वरूप श्यामतनु सोहैं। मथुराकी कामिनिसबकोहैं॥

व मथुराकीस्त्रियां अपना २ गहना व कपड़ा श्यामसुन्दरपर न्यवछावरकरके कहतीथीं इनकेबियोगमें न मालूम गोपियोंकी क्यादशाहुईहोगी जबइसीतरह घूमतेहुये श्याम व बलरामरंगभू मिकेपहिलेद्वारेपर जहांमहादेवकाधनुषरक्खाथापहुँचेतबराजा कंसके दशहजार शूरबीरोंनेजोधनुषकी रखवारीकरतेथे श्यामसु न्दरको देखतेही दूरसेललकारकरकहा यहांमतिआवो दूरखड़ेर होमोहनप्यारे उनकेबर्जनेपरभी न मानकरबेधड़कवहां चलेगये व धनुष महादेवका जो तीनताड़लम्बा व मोटा व भारी ऊंचेचबू तरेपर रक्खाथा बायेंहाथसेउठाकर इसतरह सहजमें दोटुकड़े कर दिये जिसतरह हाथीऊषको तोड़डालताहै जबधनुषटूटनेका श ब्दतीनोंलोकमेंपहुँचकर राजाकंसनेभी सुना तबश्रीकृष्णजीको अतिबलवान् समझकर उनकेडरसे कांपनेलगा और जबवहसब शूरबीर राम व कृष्णसे लड़नेआये तबदोनोंभाइयोंने उसीधनुष के टुकड़ोंसेमारकर उन्हैंगिरादिया उससमय देवतोंने प्रसन्नहो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर श्याम व बलरामपर फूलबरसाये जबकोई उनके सामनेलड़
नेवाला नहींरहा तबकेशवमूर्त्तिने बलरामजीसेकहा हमलोगों
को डेराछोड़े बहुत बिलम्बहुआ नन्दबाबा चिन्ताकरतेहोंगे सो
चलनाचाहिये ऐसाकहकर श्यामसुन्दरग्वालबालोंसमेत अपने
डेरेपरआये व मथुराबासी धनुषतोड़ने व शूरबीरोंके मारेजानेका
वृत्तान्त सुनकर आपसमें कहनेलगे यहदोनोंबालक मनुष्य न
होकर कोई देवता मालूमहोते हैं जो ऐसे २ काम इन्होंने किये
देखो होनहारप्रबलहोकर राजाकंसने घरबैठे अपनी मृत्यु आप
बुलाई है इनकेहाथसे वहजीता नहींबचैगा व नन्दरायने श्याम
व बलरामआदिकको अच्छे २ कपड़े पहिनेदेखकर जाना कि
कन्हैयाने यहसबकिसीसे छीनलियेहैं ऐसासमझकरबोले हेबेटा
तुम यहांभी उत्पातकरतेहौ यहवृन्दाबन हमारागांव नहीं है जो
ग्वालिनियोंकादहीछीन व चुराकर खाजातेथे मथुरापुरीमें ऐसी
उपाधिकरोगे तो अच्छा न होगा यहसुनकर श्यामसुन्दरबोले हे
बाबा हमनेनगरमें बहुतउत्सवदेखा अबभूखलगी है भोजनदेव
यहबचन सुनतेही नन्दजीने दूध व दही व माखन व पकवान व
मिठाईआदिक निकालदिया॥

दो० बिबिधभांतिभोजन कियो सबग्वालनकेसाथ। रैनगवांई चैनसों माखन प्रभुब्रजनाथ॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जबकंसने अ
पने शूरबीरोंके मारेजानेका हालसुना तबवहमनमें बहुतउदास
होकर कहनेलगा मुझे बड़ेबलवान् शत्रुसे कामपड़ा है अबमेरा
प्राणनहींबचैगा इसीशोचमें राजाकंस भीतर २ जलकर इसतर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हनिर्बलहोगया जिसतरह काठघुनोंकेखाजानेसे भीतरखुखला होकर ऊपर ज्योंकात्यों बनारहताहै परमारेलज्जाके अपनेमन काहाल किसीसे न कहकर उसीचिन्तामें पलँगपरजाकर लेटर हा जबकरवटलेते २ पहररातरहे उसकीआंखलगगई तबउसे स्व प्नेमें शरीरअपना बिनाशिर मालूमहोकर चन्द्रमा दोटुकड़े दि खलाईदिये व अपनीपरछाहींमें छेदमालूमहोकरसूर्यकाप्रकाश झरोंखोंमेंसे देखपड़ा व सोनेकेसमान वृक्षदिखलाईदेकर लालि तफूलोंकाहार अपनेगलेमेंदेखा व अपनेकोनंगेशरीर रेतमेंनहा ते व तेलअंगपरमले गदहेपरचढ़े श्मशानपर भूत व प्रेत साथलि ये मुर्दोंसेगले मिलतेदेखकर वृक्षोंमें अग्निलगीहुई दिखलाईदी यहबुरास्वप्न देखतेही कंसघबड़ाकर उठबैठा तोफिरउसेमारेडरके शवमूर्त्तिके नींदनहींआई तिसपरभी वहप्रातसमय सभामेंबैठ कर अपनेसेवकोंसेबोला कि रंगभूमिमेंबिछावनआदिक बिछवा कर सबराजोंको जो धनुषयज्ञदेखनेआयेहैं बुलाओ औरनन्दा दिकब्रजवासी व यदुवंशियोंको बुलाकर यथायोग्य सबको बैठा ओ व अखाड़ा कुश्तीलड़नेका तैयारकरो मैंभी वहांपहुँचताहूं॥

दो॰ योधासभी बुलायकै तिनसों कहेउ सुनाय। अबहीं रचो बनायकै रंगभूमि तुम जाय॥

यहआज्ञापातेही उनलोगोंने रंगभूमिकीरचनाकरके सब कि सीकोबुलाभेजा औरयथायोग्य स्थानपर उन्हैंबैठादिया व चाणू र व मुष्टिक व शल व तोशल व कूटआदिक पहलवान अपने २ चेलोंसमेत अखाड़ेमेंआनकर इकट्ठेहुये व घमण्डसेढोलबजाक र तालठोकनेलगे व राजाकंसभी अभिमानपूर्वक वहांआनकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुतऊंचेमचानपर जहां जड़ाऊसिंहासनबिछाथा बैठगया व नन्द व उपनन्दआदिक राजाकंसको भेंटदेकर ग्वालबालोंसमेत एकमचानपरबैठे उससमयकंसने चाणूर व मुष्टिकआदिकपहलवानोंकोबुलाकरकहा आजतुमलोग श्याम व बलरामकोकुश्ती लड़करमारडालो तोहमतुम्हें बहुतसाद्रव्यदेवेंगे पहलवानोंनेहाथजोड़करबिनयकिया महाराजहमलोगसामर्थ्यभर धोखानकरेंगे इतनीकथासुनाकर शुकदेवस्वामीबोले हेराजन् उससमय ब्रह्मा व महादेवआदिकदेवता बैकुण्ठनाथकादर्शनकरने व बिजय देखनेवास्ते अपने २ बिमानोंपरचढ़कर आकाशमें आनपहुँचेव मथुराबासी स्त्री व पुरुष इतनेवहांइकट्ठेहुये जिनकीगिनती नहीं होसक्ती॥

दो० माखन प्रभुके दर्श की सबके मनमें चाय। परफुल्लित ठाढ़े भये रंगभूमि में आय॥

तेंतालीसवां अध्याय॥

श्याम व बलराम का कुबलयापीड़ हाथीको मारना॥

शुकदेवजीनेकहा जबप्रातसमय राजाकंस रंगभूमिमेंजाकर बैठा व सबलोग वहांआनकर इकट्ठेहुये तबश्याम व बलराम भी ग्वालबालोंसमेत रंगभूमिकेद्वारेपर जहांकुबलयापीड़ हाथी झूमिरहाथा पहुँचे॥

चौ० देखि मतंग द्वार मतवारो। गजपालहि बलराम पुकारो॥
सुनो महावत बात हमारी। लेहु द्वारते गज तुम टारी॥

यहबात हमतुमको पहिलेसे कहतेहैं कि हाथीअपना हटाकर हमें राजाकंसकेपास जानेदेव नहींतोअभी हाथीसमेत तुझेमारडालेंगे तू श्यामसुन्दरको बालक न जानकर तीनोंलोकका मालिकसमझ दुष्टोंकोमारने व पृथ्वीकाभारउतारनेवास्ते इन्होंने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जन्मलियाहै यहबचनसुनतेही हाथीवान्हँसकरबोला तुम गौ चरानेसे त्रिभुवनपति न होकर शूरबीरोंकीतरह बातैंकरतेहो मैं जानताहूं कि तुमको दैत्योंकेमारने व धनुषतोड़नेसे अभिमान उत्पन्नहुआहै जबतकइसगजसे जो दशहज़ारहाथीका बलरख ताहै न लड़ोगे तबतक राजसभामें न जानेपावोगे तुमऐसेसुन्दर होकर क्यों अपनाप्राण देनेवास्ते यहांआयेहो किसीशूरबीरको ऐसी सामर्थ्यनहींहै जो इसहाथीसे लड़नेसकै इन्हींदिनोंकेवास्ते कंसनेयहहाथीपालरक्खाथा आजइसकेहाथसे तुम्हाराप्राणबच नाकठिनहै यहबातसुनतेही केशवमूर्त्तिने बालोंकाजूड़ालपेटकर उपरनारेशमी कमरसे बांधालिया॥

दो० तभीकोपि हलधर कह्यो सुनुरे मूढ़कुजात। गजसमेत पटकौंअभी मुखसम्हाल कहुबात॥

यहसुनतेही जैसेगजपालने हाथीकोअंकुशदेकर बलरामकी ओरभोंका वैसेकुबलयापीड़ बादलकेसमानगर्जताहुआ उनपर दौड़ा उससमयबलभद्रने एकमुक्का ऐसाउसहाथीकेमारा कि वह डसिकोड़कर चिल्लाताहुआ पीछेकोहटगया ऐसाबलरेवतीर मणका देखतेही बड़े २ शूरबीर जोवहांखड़ेथे अपनेमनमेंहारमा कर कहनेलगे इनदोनोंबालकोंको कौनजीतनेसकैगा व गज पतिभी डरकेबिचारकिया जोयहलड़के हाथीसेनहींमारेजावैं तो तोराजाकंस मुझेजीता न छोड़ैगा ऐसासमझतेही गजपालने हाथीकोबड़ेजोरसे अंकुशमारकर श्याम व बलरामपरडटाया जबहाथीने झपटकर मोहनप्यारेको शूंडसेलपेटलिया व पृथ्वी पर पटककर दोनोंदातोंसेदबाया उससमय देवता व ग्वालबाल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व मथुराबासी यहहालदेखकर परमेश्वरसे श्यामसुन्दरकी कु
ल मनावनेलगे तबकेशवमूर्त्तिने छोटारूपबनाकर दोनोंदांतों
बीचमें चलेजानेसे अपनेकोबचालिया और वहांसेकूदकर सन्
खखड़ेहोगये वतालठोंककर हाथीकोललकारा यहफुरतीश्याम
सुन्दरकी देखतेही सबछोटेबड़े बेडरहोकर हँसनेलगे जबहाथी
ललकारसुनकर फिरउनकीओरदौड़ा तबवृन्दाबनबिहारी पेट
तलेसे निकलकर पीछेचलेगये व उसकीपूंछपकड़कर सौपगत
इसतरह हाथीकोपीछेघसीटा जिसतरहगरुड़जी सर्प्पकोघसीट
लेजातेहैं जबवहहाथी मुरलीमनोहरकीओरफिरा तबबलराम
जीने उसकीपूंछपकड़कर खींचलिया फिरदोनोंभाईउसहथीका
कभीपूंछ कभीशूंड व कभीमुक्कामारके ऐसेखिलावनेलगे जैसे
बिल्ली चूहेकोखेल खिलाकरमारतीहै जबवहहाथी एकभाईपर
झपटता तबदूसराभाई उसेमुक्कामारकर छिटकजाताथा कभी
श्याम व बलराम उसकेनीचे व कभीपीछे व कभीदोनोंदांतों
बीचमें व कभीसामनेजाकरमुक्का व तमाचामारके अलगहो
तेथे व कभीदोनोंदांत उसकेपकड़के पीछेहटादेते व कभी पू
पकड़कर खींचलेजातेथे ॥

दो० यद्यपि धावै कोपिकै मूंड हिलावतजाय। माखन प्रभु गोपालसों तदपि न कछू बसाय॥

जबवहहाथीदौड़ता व मुक्का तमाचाखाते २ निर्बलहो गया
तबश्यामसुन्दरने शूंड़पकड़कर ऐसाझटकामारा किहाथीमूर्च्छि
तहोकर पृथ्वीपरगिरपड़ा उससमयश्यामसुन्दरने उसकीछातीप
रपांवरखकर दोनोंदांत उसकेउखाड़लिये और वहीदांत ऐसेहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थीकेमस्तकपरमारे किवहमरगया तबएकदांत आपलेकर दूसरा बलरामजीकोदेदिया यहहालदेखकर जबहाथीवान् व राजाकंस केशूरबीर लड़नेवास्ते सन्मुखआये तबश्याम व बलरामनेउन्हीं दांतोंसे उनकोभीमारडाला उससमय देवतोंने आकाशसे दोनों भाइयोंपर फूलबरसाये व मथुराबासियोंने प्रसन्नहोकरकहा कंस अधर्मीने बिनाअपराध इनदोनोंबालकोंके मारनेवास्ते हाथी खड़ाकियाथा सो बहुतअच्छाहुआ जो हाथीमारागया ॥

दो० जो भूपति मनसाकरी सो कछु ह्वैहै नाहिं। प्रकटकंसके कालहैं आये मथुरामाहिं।

उससमय हाथीके लोहूका छींटा श्याम व बलरामके कपड़ों परपड़ाहुआ कैसासुन्दर मालूमहोताथा जैसेबरसातमेंबीरबहूटी पृथ्वीपर शोभादेतीथी व पसीनाउनके मुखारबिन्दपर ऐसा दिखलाईदेताथा जिसतरह कमलकेफूलोंपर ओसकीबूंदैं रहती हैं जबश्याम व बलराम हाथीकेमारनेउपरांत ग्वालबालोंसमेत हँसतेहुयेधीरे २ बीचरंगभूमिके जाकरखड़ेहुये तबउससभावालों ने जोलाखोंमनुष्यवहांथे मोहनप्यारेकोअपनी२इच्छानुसारदेखा

चौ० जाकी रही भावना जैसी। प्रभुमूरति देखी तिन तैसी ॥

हे परीक्षित श्रीकृष्णजीने गीतामें अर्जुनसेकहा मेरेजिसरूप का ध्यानकोईकरै मैं उसीरूपका दर्शन उसकोदेताहूं सो चाणूर आदिक पहलवानोंको श्याम व बलराम महाशूरबीर दिखलाई दिये व मथुराकी स्त्रियोंको कामरूप अतिसुन्दरदेखपड़े व ग्वाल बाल उनकेसाथियोंने अपना मित्र व भाईबन्धुजाना व नन्दादि क ग्वालोंने अपनालड़कासमझा और जोराजाकंसके मित्रवहां ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परथे वहलोगश्याम व बलरामकोशत्रुरूपदेखकरडरगये व राज
कंस उन्हैं अपनाकालजानकर भयसेकांपनेलगा व यदुबंशिये
ने उनको अपनीरक्षा करनेवाला समझा व योगी व ज्ञानियोंको
पूर्णब्रह्मदिखलाईदिये व दूसरेलोगोंने केशवमूर्त्तिको देखकरजा
ना यहवहीबालकहै जिन्होंनेछोटी अवस्थामें पूतनाराक्षसीको
मारकर दोवृक्ष यमलार्जुन जड़से उखाड़डाले व गोबर्द्धनपहाड़
अपनीअँगुलीपरउठाकर राजाइन्द्रका अभिमानतोड़ा व अघासु
र व धेनुक व प्रलम्ब व केशीआदिक दैत्योंकोमारकर कालीना
गको यमुनासेनिकालदिया व गोकुल व वृन्दाबनमें ऐसे २ कठि
न कामकिये जिसकाहालसुनकर आश्चर्य मालूमहोताहै आज
कुबलयापीड़हाथीको लड़कोंके खेलकेसमानमारडाला व बाजे
उनको बालकदेखकर शोचकरकेकहतेथे कंसबड़ानिर्दयी व बड़ा
अधर्मी है जो छोटे २ बालक कोमलबदनको बरजोरी पहलवा
नोंसे कुश्तीलड़ाकर इनकाप्राण लियाचाहताहै यहांसे उठचलो
यह अधर्म न देखनाचाहिये॥

दो० रीति अनीति निहारिकै कहैंपरस्परलोग। अब यहठौर अधर्मकी नहीं बैठने योग॥

जब ऐसाविचारकर बाजेउनमेंसे उठगये व बाजे अपनाअंच
ल फैलाफैलाकर परमेश्वरसे यों वरदान मांगनेलगे जिसतरह
श्यामसुन्दरने धनुषमहादेवका तोड़कर हाथीकोमाराहै उसीतर
ह ये पहलवानभी इनकेहाथसेमारेजावैं इतनीकथासुनाकर शुक
देवजीनेकहा हे राजन् जिससमय मोहनप्यारे उसअखाड़ेमेंजा
कर खड़ेहुये उससमयचाणूर व मुष्टिक आदिक पहलवानोंने अ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेकरङ्गका जांघियापहिनेहुये चारोंओरसेआनकरउन्हैंघेरलिया व चाणूरपहलवानने निकटजाकर बैकुण्ठनाथसेकहा आजमेरे राजाका चित्तउदासहै मनबहलानेवास्ते मुझेतुम्हारेसाथ कुश्ती लड़ाकरदेखाचाहतेहैं इसीवास्ते तुम्हैंयहांबुलायाहै व नौकरोंको अपनेमालिककी आज्ञामाननीचाहिये सोआवो हम व तुम कुश्तीलड़कर राजाकोप्रसन्नकरैं॥

दो० रीतिधर्म अरु नीतिकी सबजानतमनमाहिं। स्वामिकाजते जगतमें औकछुउत्तमनाहिं॥

औरहमनेसुनाहै कितुमकुश्तीलड़ना अच्छाजानतेहो बन में ग्वालबालोंकेसाथ लड़ाकरतेथे सोआजमैंतुम्हारेबलकी परीक्षालियाचाहताहूं किसीबातकाडर अपनेमनमेंमतरक्खो यहसुनकर श्यामसुन्दरनेकहा हेचाणूर हमऐसेप्रतापीराजोंको क्या प्रसन्नकरैंगे परतूअपने स्वामीकीआज्ञा पालनेचाहताहै तो मैं तेरेसाथलडूंगा॥

चौ० यद्यपि तू बलको अधिकारा। मैं अहीर बालक सुकुमारा॥
तद्यपि एकबार मैं लड़िहौं। युद्ध बिषे तोसों नहिं टरिहौं॥

तुम्हारेराजाने बड़ीदयाकरके मुझेबुलायाहै परन्याय सबकिसीकोकरनाचाहिये तुम्हाराराजाअधर्मी व बेदर्दहोकर तुमउससे अधिकनिर्दयी मालूमहोतेहौ किसवास्ते कि मुझबालकसे तुमको कुश्तीलड़ना जोतरुण व बलवान्हो शोभानहींदेता बैर व प्रीति व बिवाह व कुश्तीबराबरवालेसे करनाचाहिये परराजा कंससे हमाराकुछबशनहींचलता इसलियेतुमसेलड़ेंगे परहमकोबचाकर कुश्तीलड़ना जोरसेपटककर मेराहाथ व पैरमततोड़डालना जिसमेंहमारा व तुम्हारा दोनोंमनुष्यकाधर्म बनारहै व राजाकंसभी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रसन्नहोवैं यहबातसुनकर चाणूरबोला देखनेमें तुमबालकदिख लाईदेतेहौ परतुम्हारीकीर्त्ति व कामसुनने व कुबलया पीड़हाथी कामारना देखनेसे आपकोईअवतार मालूमहोतेहैं इसलिये मुझे तुम्हारेसाथ किसीतरह कुश्तीलड़ना उचितनहींहै परक्याकरूं अपनेस्वामीकीआज्ञानमानूं तोमेराधर्मजाताहै॥

चौ॰ फिर चाणूर कहेउ हरषाई। तुम्हरी गति जानी नहिंजाई॥
तुम बालक मानुष नहिं दोऊ। कीन्हे कपटरूप सुर कोऊ॥
खेलत धनुष खण्ड द्वै करे। मारेउ तुरत कुबलया तरे॥
तुमसे लड़े हानि नहिं होय। ये बातें जानैं सब कोय॥

चवालीसवां अध्याय।

मारना श्याम व बलराम का चाणूर आदिक पहलवान व राजाकंस को॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जबऐसीबातेंकहकर मोहनप्यारेचाणूर वबलभद्रजी मुष्टिकपहलवानसे कुश्तीलड़नेलगे तबमथुरावासियोंने बालक व जवानकीकुश्तीदेखकर आपसमेंकहा राजाकंसको इसकुश्तीलड़ानेसेमनाकरैं तोवहअधर्मी हमैंमारडालैगा व इसजगहबैठेरहनेमें हमाराधर्म नहींरहता इसलिये यहांसेउठजाना उचितहै॥

दो॰ जो अनीति देखैंनहीं ताको पाप न होय। जो जैसी करणीकरै वह फल पावतसोय॥

हेराजन् जोमनुष्य श्यामसुन्दरको बालकजानतेथे वहऐसाबिचारकर वहांसेबाहरचलेगये व जातीसमय कंसकोशापदेकर कहनेलगे यहअपनेअधर्मकादण्ड अवश्यपावैगा व मुरलीमनोहरने लड़तीसमय अपनीमहिमासे अपनाशरीर हीरेकेसमान ऐसाकड़ाबनालिया जिसेकोईअस्त्रभीकाटनेनसकै जबश्यामसुन्द

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रने हाथसेहाथ शिरसेशिर छातीसेछाती ठोढ़ीसेठोढ़ी पैरसेपैरचा णूरसे मिलाथा तबचाणूरने अनेकदांव व पेंचलगाकर श्यामसु न्दरकोपकड़नेचाहा परवह उसकेहाथ नहींआये तबचाणूरने उ दासहोकरकहा देखो हमनेबहुतपहलवानोंको एक दांव व पेंचसे मारडालाथा न मालूमइसबालकके कितनाबलहै जिसपरमेराकु छबशनहींचलता और यहलड़का एकअँगुलीभीमुझे मारता है तो मैं घबड़ाजाताहूं इतनीकथा सुनाकरशुकदेवजीबोले हे राज न् जिसपरब्रह्मपरमेश्वरको महादेवव ब्रह्मानहींपकड़नेसक्के व जि न्होंने अपनेदोपगमें चौदहोंलोक नापलियेथे उनकोचाणूरपह लवान किसतरह पकड़नेसक्काहै चाणूर व मुष्टिक श्याम व बल रामकी महिमा नहींजानतेथे परउन्होंने पिछलेजन्म बड़ातप कियाथा जिसकेप्रतापसेउनकाशरीरबैकुंठनाथकेअंगमें स्पर्शहो ताथा यहबात ब्रह्मादिकदेवतोंको भी जल्दी नहींप्राप्तहोती जब चाणूरअपनेछल व बलसे केशवमूर्त्तिपर झपटताथा तबवहपीछे कूदकरबचातेथे॥

दो० मोहनमुखपर शरमजल सोहै अतिसुखदाय। ज्यों फूलनकेपातपर रहैओस लपटाय॥

जबचाणूरने पीछेहटकर एकमुक्का श्यामसुन्दरकी छातीपर बड़ेजोरसेमारा और उनकेअंगपर फूलसीभी चोटनहींलगी तब नन्दलालजीने दोनोंहाथ उसकेपकड़कर अपनेशिरकेचारोंओर घुमाया और ऐसापृथ्वीपर पटका कि शरीरउसका अखाड़े की मिट्टीमेंधँसकर प्राणनिकलगया व जिसतरहबालक चिउँटीको पकड़कर मारडालै उसीतरह बलरामजीनेभी मुष्टिकपहलवान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को कुश्तीलड़कर मारडाला व चैतन्यात्मा दोनोंपहलवानोंका बैकुंठमें पहुँचा जबउनके मारनेउपरांत शल व तोशल व कूट प हलवान खड्गलेकर श्यामसुन्दरसे लड़नेवास्तेआये तबकेशव मूर्त्तिने बायेंपैरसे लातमारकर शल वतोशलको व बलरामजीने बायेंहाथकेमुक्कासेकूट पहलवानकोमारडाला इनपांचोंके मरते ही बाक़ीपहलवानजो उनकेसाथी व चेले वहांथे अपना अपना प्राणलेकर भागगये यहदशादेखतेही मथुराबासी व हरिभक्तलो ग प्रसन्नहोकर आपसमें कहनेलगे बड़ाभाग्य उसपृथ्वीका सम झनाचाहिये जहां इनलड़कोंका चरणपरताहै व गोप व ग्वाल बालोंकी बराबरी कोईनहींकरनेसक्ता जो इनकेसाथ दिनरातरह कर अपनाजन्मस्वार्थकरते हैं और गोपियांधन्यहैं जो आठोंपह रमोहनीमूर्त्तिकाध्यान अपनेहृदयमेंरखकर इनकेसाथप्रीतिकर तीहैं व जो जीव ब्रजगोकुलमें जन्मलेकर श्यामसुन्दरका दर्शन करताहै उसकोदेवतोंसे उत्तमसमझनाचाहिये ॥

दो॰ ब्रजबासिनके भाग्यकी महिमाकही न जाय। जिनकेचितमें नितबसैं माखनप्रभु यदुराय॥

राजाकंसने पापीहोनेपरभी हमारेसाथ बड़ीभलाईकी जिस के बुलानेसे हमलोगोंने बैकुंठनाथका दर्शनपायानहीं तो इनका दर्शन मिलना देवतोंकोकठिनहै हे राजन् उससमय मथुराबासि योंने इसीतरहपर बहुतस्तुति श्याम व बलरा की की व देवतोंने आकाशसे उनपर फूलबरसाये व मथुरापुरीमें यहसमाचार सुन कर सबछोटेबड़े आनंदहोगये व सिवाय राजाकंस और जितने लोग रंगभूमिमेंथे सबोंने प्रसन्नहोकर रामकृष्णकीजयजयकार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केसमानधूमते तब उनकोपृथ्वी व आकाशधूमताहुआ मालूमदे
ताथा व कभी एकग्वालदूसरे बालककेहाथपर तालीमारकरभा
गताथा वह उसेपकड़नेवास्ते दौड़ाताथा व कभीकभी आपसमें
आंखमुंदौला आदिकखेलकर अनेकतरहकेरागगातेथे व अपने
मुखसे अनेकरंगकाबाजाबजाकर बाघ व गिद्ध व लोमड़ी आदि
ककीबोलीबोलतेथे व कभी २ केशवमूर्त्तिबंशीबजाके अपनागा
नाग्वालोंको सुनाकरप्रसन्नकरतेथे ॥

दो० कबहूं सारस कोकिला हंस मोरकी भांत। ग्वालबाल बोलैं कभी साखनप्रभु मुसकात ॥

हेराजन् ऐसेआनन्दमें प्रलम्बराक्षसभेजाहुआ राजाकंसका
वास्ते मारनेश्यामसुन्दरके ग्वालरूपबनकरवहांआया व सिवाय
केशवमूर्त्तिके दूसरेकिसीनेनहींपहिंचाना जबउसनेबहुतसे ग्वाल
बालोंको उठालेजाकर पहाड़कीकन्दरामें छिपादिया तब श्याम
सुन्दरने आंखकीसैनसेबलरामजीको दिखलाकरकहा अयभाई
इसग्वालको अपनासाथीमतसमझो यहप्रलम्बासुरकपटरूपग्वा
लबनकर मेरेमारनेवास्ते आयाहै इसेमारनेकाकोई उपायकरना
चाहिये ग्वालरूपयह नहींमाराजायगा किसवास्तेकिग्वालरूप
मेरेसखा व भाईबन्धुहैं जबयहराक्षसरूपधरै तबइसकोमारडाल
ना श्यामसुन्दरनेबलरामजीको ऐसाकहकर उसकपटरूपग्वाल
कोअपनेपास बुलाया उसकाहाथपकड़कर हँसतेहुये बोले हेमित्र
हमैं तुम्हारावेष सबसे अच्छा मालूमहोताहै जो लोग मेरेसखा
हैं वह कपटनहींरखते व कपटीमनुष्यको मैं अपना सखा नहीं
जानता ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० सखाबुलायेनिकटसब तिन्हैंकहेउनँदलाल। फलबुझायअबखेलिये मुदितभयेसबग्वाल॥

फिरश्यामसुन्दरने प्रलम्बासुरको आधेग्वालबालसमेत अप
नीओरलेलिया व आधेग्वालबाल बलरामजीकेसाथ देकरफल
बुझौवलखेलनेलगे और यहकरारआपसमें ठहराया जो लड़का
फलबूझनेनसकै उसतरफकेसबग्वालबाल दूसरेओरकेलड़कोंको
अपनीपीठपर चढ़ाकर भाण्डीरबनतकलेजावें व उसीतरहचढ़ा
येहुये जहांपर दोनोंबालकफलबुझानेवाले बैठेहों फिरआवें सो
एक २ ग्वालबालदोनोंगोलका अवस्थामेंबराबर जोटठहराया
और श्यामसुन्दरने अपनाजोट श्रीदामाग्वाल व बलभद्रजीका
जोट प्रलम्बासुरकपटरूपी ग्वालसे बांधा जबखेलतीसमय बल
रामजीनेजीता व श्रीकृष्णजीहारगये तब बलभद्रजीकपटरूपी
ग्वालकीपीठपरचढ़े व श्रीदामा श्रीकृष्णजीकी पीठपरचढ़ा इसी
तरह सबबालकश्यामसुन्दरकेसाथी बलरामजीकीओरवाले ग्वा
लबाल अपनी२ जोड़ीकोपीठपर चढ़ाकरभांडीरबनकोचले तब
वह ग्वालरूपराक्षस सबलड़कोंसे आगेबढ़करबलरामजीको आ
काशकीओरलेउड़ा व एकयोजनकेप्रमाण अपना राक्षसीरूप
बनालिया सो उसकेकालेशरीरपर बलभद्रजीका गोरातनु कैसी
शोभादेताथा जैसाश्यामघटामेंचंद्रमा व कानोंकाकुंडलबिजली
केसमान चमककरपसीना शरीरकापानीकी तरहबरसताथा उस
काराक्षसीतनुदेखतेही बलदाऊजीनेअपनाशरीरऐसाभारीकिया
कि प्रलम्बासुर वहभारउठानेनसककर उनकोलियेहुये पृथ्वीपर
गिरा जबउसने बलरामजीकोमारनेचाहा तबसंकर्षणनेएकमुक्का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसकेशिरमेंमारा तो इसतरहमस्तक उसकाफटगया जिसतरह इन्द्रकेवज्रसेपर्वतटूटजावे जब उसकेमस्तकसे धाराप्रमाण लोहू बहनेलगा तबवहराक्षस चिल्लाकरमरगया व उसकीलोथगिरने से तीनकोशतकके वृक्षदबकर टूटगये ॥

दो० ग्वालबाल चक्रितभये दौड़गये बलपास। मृतक असुर तनदेखके सबको भयो हुलास ॥
सो० धन्यधन्य बलराम धन्यतुम्हारे मातपितु। बड़ोकियो यहकाम कपटरूप मारयो असुर ॥

हेराजन् ग्वालबालोंने प्रसन्नहोकर बहुतबड़ाई उनकीकी व देवतोंने आकाशसे बलरामजीपर फूलवर्षाये व जिनग्वालोंको वहराक्षसकन्दरामें छिपायाथा उन्हेंश्यामसुन्दर निकाललाये॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

ग्वालोंका मूंजके बनमें आग लगने से विकलहोना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् जबग्वालबाल उसलोथकातमाशा देखनेलगे तबसबगौ चरतीहुई मूंजकेबनमें चलीगईं जबदूरतक श्रीकृष्णआदिकने पताउनकानहींपाया तबसबग्वालबाल अलगअलग टोलीबांधकर गौवोंकोढूंढ़नेलगे व वृक्षोंपर चढ़िचढ़िकर दुपट्टाघुमायघुमाय गायोंकानामलेके पुकारतेथे उसीसमय एकग्वालने आनकरमुरलीमनोहर से कहा हे भाईसब गौ मूंजकेघोरबनमें चलीगईं और ग्वाललोग उनकेखोजमें भटकते फिरतेहैं यहसुनतेही श्यामसुन्दरने कदमकेवृक्षपर चढ़कर ऐसीमुरलीबजाई किउसकाशब्द सुनतेही सबगायें व ग्वालबाल मूंजबनको चीरते फाड़तेहुये इसतरह श्यामसुन्दरकीओरचले जिसतरह बर्षाऋतुमेंनदी व नालेकाजल बेगसेबहताहै उसीसमयएकराक्षसभेजाहुआ राजाकंसका वास्तेमारने केशवमूर्त्तिके उसबन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेंआया और उसनेअपनीमायासे ऐसीआंधीचलाई कि चारों ओर धूरसेअँधियारा छायगया तबउसने बनमें आगलगादी जब उस अग्निकेतेजसे ग्वालबाल व गौवोंकाशरीर जलनेलगा तब उन्होंने व्याकुलतासे श्यामसुन्दर व बलरामजीकी शरण२पुकारकरकहा अयवृंदाबनबिहारी हमलोगजलनेचाहतेहैं हमाराप्राणबचाइये जब२ हमको संकटपड़ताहै तब२ तुमरक्षाकरतेहो सिवायआपके दूसराकोईहमारा सहायक नहींहै जिसतरह नारायणजी संसाररूपीअग्निसे अपनेभक्तोंको बचाकर उद्धार करते हैं उसीतरह तुमभी हमलोगोंको इसआगसेबचाओ यहदशाअपने सखा ग्वालबालोंकी देखकर केशवमूर्त्तिने बलरामजीसेकहा॥

दो० शरणगही जिनआपकी तातमातु बिसराय। हमओ तुमहैभायबिन इनके कौनसहाय॥

ऐसाकहकर श्यामसुन्दरने ग्वालबालोंको पुकारकेकहा तुम लोग अपनीआंखैं बन्दकरलेव तबइसअग्निसेबचोगे जबउनकी आज्ञानुसार सबग्वालबालोंने अपनीआंखैं बन्दकरलिया तब श्यामसुन्दरने उसराक्षसको मारडाला उसकेमरतेही सबअग्नि बुझकर आंधीजातीरही औरवैसे आंख बन्दकियेहुये सब ग्वालबालगायेंसमेत श्यामसुन्दरकीमाहिमासे भाण्डीरबनकेपासचले आये तब केशवमूर्त्तिनेकहा तुमलोगआंख अपनीखोलदेव जैसे उन्होंने आंखखोली तो क्या देखा कि सब अग्नि व आंधीजाती रही व हमलोग भाण्डीरबनकेपासचलेआये यहचरित्र देखकर सब ग्वालबालोंको बड़ाअचम्भा मालूमहुआ फिरसबोंनेबृन्दाबनबिहारीकेसाथ यमुनाकिनारेजाकर जलपिया व सन्ध्यासमय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घरकोचले बस्तीकेनिकटपहुँचकर मनहरणप्यारेने बंशीबजाई तब मुरलीकी ध्वनिसुनतेही सबब्रजबाला अपने २ घरकाकाम काजछोड़केराहमेंआनखड़ीहुईं व केशवमूर्त्तिकादर्शनकरके अ पनीआंखैंठएढीकीं सबगोपियोंकायहप्रणथा कि बिनादेखे सांव लीसूरतादिनभरब्रतरहकर सन्ध्यासमयमाधुरीमूर्त्तिकादर्शनकर केपारणाकरतीथीं जब श्रीकृष्णजी अपनेघरपरगये तब यशोदा ने उनकोगोदमें उठाकरबहुतप्यारकिया व ग्वालोंसेपूंछा आज बिलम्बकिसवास्तेहुई तब उन्होंनेसबहालमारने राक्षस व लगने आगकाकहिदिया तब यशोदा व रोहिणीबहुतप्रसन्नहुईं और यहसमाचारपाकर सब बृन्दाबनबासीश्याम व बलरामकोदेखने आये व उनकीबड़ाईकरके कहनेलगे हेश्यामसुन्दरतुम्हारी कृपा सेहमारेबालकबचेनहीं तो आज सब अग्निमेंजलकरमरचुकेथे फिरसबोंने अपने २ बालकोंसेदान व दक्षिणादिलवाया व परमे श्वरकीमायासे इसबातकाबिश्वास किसीकोनहींहुआ कि यहच रित्रश्यामसुन्दरनेकियाहै इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हे राजन् इसीतरहकेशवमूर्त्ति नित्यनईलीलाकरके सबकोसुखदे तेथे व सबब्रजबाला मोहनप्यारेपर ऐसीमोहित थीं कि बिनासां वलीसूरत देखेचैननहींपड़ता था पानीभरने व दहीदूधबेंचने के बहाने यमुनाकिनारे व बनमेंजाकर श्यामसुन्दरकादर्शनकरके अपनेहृदयकीतपनबुझावती थीं व समझानाअपनीसासु व माता का उनको अच्छानहींलगताथा व मनहरणप्यारे अन्तर्यामीभी अपने चितवन व मुसकानसे उनको सुखदिया करते थे एकदिन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केशवमूर्त्ति अपनानटवररूपधरे सबसखोंकोसाथलिये यमुनाकि
नारे कदमकेनीचे खड़ेहोकर मुरलीबजानेलगे उसीसमय राधा
प्यारी अपनीसखियोंसमेत जलभरनेकेबहाने मोहनप्यारेकोदेख
नेचलीं जबयमुनातीर ग्वालोंकी भीड़ उसने देखी तब खड़ीहो
कर सखियोंसेबोली माखनचोर राहमेंखड़ाहै हमलोगोंको अव
श्यछेड़ेगा जबश्यामसुन्दर उसके दिलकाहाल जानकर अपने
सखासमेत राहछोड़केदूसरीओरचलेगये तबराधिकाने सहेलियों
समेत यमुनाकिनारेजाकर जलभरा व अपनाअपनाघड़ा शिरप
रलेकर घरकोचलीं उससमयराधाप्यारी सखियोंकेझुण्डमें हंस
रूपी चालसे चलीआतीथी उसीसमय मोहनीमूर्त्तिने गोपियोंके
गोलमें आनकर राधाकीगगरीमें एककंकरीमारी व अपनी मुस
कान से राधा आदिक सबसखियोंका मनहरलिया तबश्यामा
सखियों से बोली ॥

सो० कियो दृगनमेंधाम सुन्दरनटनागर सुखद। जितदेखौं तितश्याम पंथमोहिं सूझैनहीं॥

उनमेंजोब्रजबाला चतुर थीं उन्होंनेकहा हे मोहनीमूर्त्तिहम
नेतुम्हाराक्याबिगाड़ाहै जो अपनीमुसक्यान व चितवन से प्राण
व ज्ञानदोनोंहमाराहरलेतेहो व तुम्हारामोहनीरूपदेखने व बंशी
कीध्वनि सुननेसे हमाराचित्त ठिकानेनहींरहता तुमनेमनचुरा
काउद्यम कबसेसीखाहै यहप्रीतिभरीहुई बातसुनकर श्यामसुन्
रबोले जिसतरह तुमलोगोंने अपनीछबिदिखलाकर मेरामन
रालियाहै उसीतरहमुझेभी कहतीहो तबगोपियोंने रुखाईसेकह
तमकिसीका चीरखींचके धक्कादेकर गिरादेतेहो किसीकी गग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कंकरीमारकर फोरडालतेहो तुम्हारेमारेकोई यमुनाजल भरने नहींपाता हमलोगयशोदाके पासजाकर तुम्हैंफिरऊखलमें बँधवावेंगी ॥

दो० यहसुनिहरि रिसकरिउठे इँडुरीलई छिनाय। कहोजायबबमातसों लीजोमोहि बँधाय ॥
सो० मोहिंकहतठगचोर आपभई साहुनि सबै। डारी गगरीफोर कहतजाउ चुगुली करन ॥

जबश्यामसुन्दरने ऐसाकहकर इँडुरीयमुनामें बहादीतब गोपियोंने यशोदाके पासजाकरकहा नन्दलालजीके मारेहमलोग यमुनाजल भरनेनहींपावतीं वहहमलोगोंकी ऐसीदुर्दशाकरते हैं कि उसकाहाललज्जाकेमारे कहानहींजाता यहसुनकर यशोदा बोलीजैसाकहो वैसामैंकरूं जबमैंने उसकोऊखलसे बांधाथातब तुम्हींलोग उसकीसिफारिशकरतीथीं अबजबकन्हैयाघरआवेगा तबमैंउसेमारूंगी तुमलोगमेरेसंकोचसेआजअपराधउसकाक्षमा करो इसतरहपरसमझाकर यशोदानेगोपियोंको बिदाकिया जब मोहनप्यारे चुपचुपातेडरतेहुयेघरआये तो ओटमेंखड़ेहोकरक्या सुनाकियशोदागोपियोंकेउलहनेकाहाल रोहिणीसे सुनाकरकहतीथींआज कन्हैया घरपरआवेगा तो उसेमारूंगी यहबातसुनकर मनहरणप्यारेबोले हेमातातुमहमैंमारने कहतीहो गोपियोंका चरित्रतुम्हेंनहींमालूमहैजोवेकहतीहैं उसेसचमानलेतीहो गोपियां मुझेकदमकेनीचेसेबरजोरीपकड़लेजाकरमेरेगालमेंमुक्कामारती हैंऔरजचमटककरचलनेसेगगरीउनकीगिरकेटूटजातीहैतबझूठी निन्दामेरीतुमसेआनकरकहतीहैंयहमीठावचनसुनकरजैसेयशोदानेमोहनीमूर्तिका चन्द्रमुखदेखावैसेक्रोधभूलकरकहनेलगी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० कहांश्याम मेरोतनिक वे सबयोबनजोर । अबउरहनलै आवहीं तबपठवहुंसुखतोर ॥
सो० तू क्योंउनढिगजात मैं बरजतमानतनहीं । लावतझूठीबातवहसबढीठगुवालिनी ॥

ऐसाकहकरयशोदा मोहनप्यारेको गोदमेंउठाकेप्यारकरने लगी इसीतरह केशवमूर्त्तिप्रतिदिननईलीलाकरके सबब्रजबासियोंकोसुखदिया करतेथे ॥

दो० यहलीलासबकरतहरि ब्रज युवतिन के हेत । कृष्णभजे जाभावजो वाकोतसफल देत ॥

हेराजन् राधाप्यारी पूर्वजन्मके संस्कारसे श्यामसुन्दरपरबड़ी प्रीतिरखतीथी इसलिये बिनादेखे माधुरीमूर्त्तिके व्याकुलहोकर सखियोंसे बोली हेबहिनयमुनाकिनारे जलभरनेवास्ते फिरचलो जिसमें मोहनप्यारेको देखकरआंखैं ठंढीकरूं जबमैंवहांजातीहूं तबवहअपनी मुसकान व चितवनसे मेरामनमोहिलेताहै व उस मोहनीमूर्त्तिके देखेबिना मुझे चैननहींपड़ता व लोकलाजकेडरसेमैं कुछबोलनेनहीं सक्तीबाहर निकलोतोमाता व पिताकाभय सतावताहै व घरमें बैठनेसे तनयहांरहकरमनमेरा श्यामसुन्दरके पीछेदौड़ताहै मैं अपने चित्तकोबहुत समझातीहूं परउसचित्तचोर की ओरसे नहीं फिरता ॥

क० एकसखी मनमोहनकीमधुरी मुसकान देखायदईरी । वह सांवरीसूरतचैनमई सबहीचितई हमाई चितईरी । सबसखियां अपने २ गृहखेलत कूदतबाटलईरी । मैंबपुरीतृषभानलली घरआवतपौरपहाड़भईरी ।

सोअबआलीअब मैंनेमनमेंयहबात ठानलिया किकेशवमूर्त्ति से प्रकट प्रीतिकरूंगी इसमेंचाहै कोईमेरीनिन्दाकरै या स्तुतिउस सांवलीमूर्त्तिके सामने मुझे लोकलाज व कुलपरिवारकुछअच्छा नहींलगता जबमेराप्राणउसके बिरहमें निकलजावेगा तबमैं त ज्जाकोलेकर क्याकरूंगी इसलिये अबमैंमोहनप्यारेको अपना बनायाचाहतीहूं इसमेंतुम्हारा क्यासम्मतहैयहबातसुनकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लिताआदिकसखियोंने किवहभीश्यामसुंदरपरमोहितथींकहा॥

दो० कहुप्यारी कैसेचलैं वा यमुनाकी ओर। गैलनछांडतसाँवरो रसिया नन्दकिशोर॥

अयराधाहमलोग अपनेमनका हालतुमसे क्या बतलावें जो गतितेरीहै वहीदशाहमारीभी समझनाचाहिये उसकीछबिदेखने से हमारा चित्त ठिकानेनहींरहता व बांसुरीकी ध्वनिहमैं अधिक अचेत करदेतीहै न मालूमउसने कैसीमोहनी हमलोगोंपर डाल दीसो तैंनेबहुत अच्छाबिचारा संसारमें कौनऐसा जीवजड़ व चैतन्यहै जो उनकीछबिदेखने व मुरलीसुननेसे मोहि न जावे वह हमारेपति होकर हमैं अंगीकारकरें तो लाज भाड़में पड़ै॥

सो० मेटि लोककी कानि पतिव्रत राखो श्यामसों। यहीवनी अवआनि भलोवुरो कोऊकहै॥

हे राजन् राधाआदिक सब ब्रजबालोंकीयहदशाथी कि दिन अपना उनकेबिरह व मिलनेकेउपायमें काटकरसंध्यासमय उन कादर्शनकरके अपनेहृदयकी तपनबुझावतीथीं व कहना व समझाना अपनेघरवालों का उनकोअच्छानहीं लगताथा॥

बीसवां अध्याय॥

वृन्दाबन की स्तुति॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् जबगर्मीअधिकहोनेसे संसारी जीवदुःखीहुये तब राजाबरसात कृपा व दयाकीराह अपनीसेना दल व बादलकोलेकरवास्ते सुखदेने सब जीवजड़ व चैतन्य व युद्धकरने राजागरमीकेसाथ धूमधामसेचढ़आया उसकीसेनामें गर्जना बादलकामारूबाजेकेसमानहोकर अनेकरंगकी घटा शूर वीर ऐसीमालूमदेतीथी व चमकना बिजुलीकानंगीतलवारऐसा होकर करखागावनेवालोंकी जगहमोरबोलतेथे व बरसना बन्दूं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काबाणकेसमानहोकर भाटोंकेकवित्तपढ़नेकीजगह मेंडुकबोल तेथे व उड़नाश्वेतवर्ण बकुलोंकाध्वजाकेसमान मालूमदेताथा ऐसीभारीसेना देखतेही राजागर्मीकाहारमानकरभागगया व ज लबरसनेसेपृथ्वी व वृक्षआदिकसबजीवजड़ व चैतन्यनेसुखपाया व आठमहीने तक जो जलसूर्यने सोखाथा वह इसतरहबरसाया जिसतरहराजालोगगर्मी व जाड़ेमेंप्रजासेदेनलेकरबरसातमेंउन कीपालनकरतेहैं व पृथ्वीने जो बीचबिरहजल अपनेपति सुख देनेवालेके आठमहीनेतक दुःखउठायाथा सो उसकाशोच ज लबरसने से छूटगया व अनेकरंग के फल व फूल वृक्षोंमेंलगगये॥

दो० वेलिबिबिधलपटी ललित फूलरहेबहुरंग। शोभित सहसशृँगाराजिमिं नारिपुरुषकेसंग॥

पृथ्वीपर हरिआली उत्पन्नहोकर नदी व नालोंमेंजलउमँग सेबहनेलगा व उसकेकिनारे अनेकरंगकेपक्षीमीठी २ बोलीबोल नेलगे हे राजन् वृन्दाबनमें ऐसीशोभामालूमदेतीथी जिसका बर्णननहींहोसक्ता॥

दो० शोभा वृन्दाविपिनकी बरणिसकै कविकौन। शेशमहेशगणेश बिधि पार न पावत तौन॥
सो० महिमा अमित अपार श्रीवृन्दाबनधामकी। जहँनित करतविहार परब्रह्म भगवानहरि॥

हेराजन् उससुहावनेबनमेंगोपी व ग्वाललोग अनेकरंगकेवस्त्र पहिनेहुये झूलाझूलतेथे व गोपियांमलारआदिक बरसातकेगीत गावतीथीं और उनमें श्याम व बलराम उत्तम २ भूषण व बस्त्र पहिनेहुये अनेकलीलाकरकेसबकोसुखदेतेथे जब इसीतरह आन न्दपूर्बक बरसातबीतकर शरदऋतुआई तबएकदिनश्यामसुन्दर बलरामजी व श्रीदामाआदिक ग्वालबालोंसमेत वृन्दाबिपिन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मँजाकर गौवोंकोचरनेवास्ते छोड़दिया व वृक्षकेनीचे बैठकर कहा अयबलदाऊजी अबशरदऋतु अच्छेदिनआये ॥

दो० जल अकाश निर्मलभयो बर्षाऋतुके अन्त। जैसे उज्ज्वल चितसदा माखनप्रभुके सन्त ॥

इनदिनों भोजनकीबस्तुमें स्वादमालूमहोकर सबछोटेबड़ों को अनेकतरहकासुखमिलताहै व गृहस्थाश्रमको अपनेघररहने में सुखप्राप्तहोकर राजा इन्हींदिनों शत्रुपरचढ़ाईकरतेहैं व ब्यापारियोंकोमाललादने व साधुवैष्णबको तीर्थयात्राकरनेमें बहुत सुखप्राप्तहोताहै हे भाई मुझेबृन्दाबनका ऐसा सुखतीनोंलोकमें नहींमिलता इसवास्तेमनुष्यतनधारणकरके ब्रजमेंरहकर बृन्दाबनको बैकुण्ठसेप्याराजानताहूं सो तुमयहांकेबृक्षोंको कल्पतरु सेकममतसमझो किसवास्ते किबृन्दाबनबासीसबजीवजड़ व चैतन्यमेरीभक्ति व प्रीतिअपनेप्राणसेअधिक रखते हैं ॥

दो० जाकेबशमें रहतहूं अपनी प्रभुता त्याग। प्रेम भक्ति सा लहत नर बृन्दाबन अनुराग ॥

यह सुनकर बलभद्रजीबोले हेदीनानाथमैं इतनाबरदानतुमसेमांगताहूं जहांआपजन्मलेना वहांमुझेभी अपनीसेबाकरने वास्ते साथरखना यहसुनकरकेशवमूर्त्तिनेकहा हे भाई मैं कभी एकक्षण तुम्हें अपनेसाथसेनहींछोड़ूंगा तुम्हारेकारणतो हम नर तनधरकर ब्रजमेंलीलाकरते हैं ॥

दो० मधुरवचनसुनि श्यामके सखाबृन्द सुखपाय। प्रेमपुलकतन मुदितमन रहे सबै गहिपाय ॥
सो० धनिधनिधनितुमश्यामधनिब्रजधनिबृन्दाबिपिन। तुम्हरे गुण अभिरामहमसबकछुजानैंनहीं ॥

इसीतरहबहुतसीस्तुतिकरके ग्वालबालोंनेश्यामसुन्दरसेकहा हे मोहनप्यारे इससमयहमलोगोंका मनमुरलीसुननेवास्ते बहुत चाहताहै यहवचनसुनकर केशवमूर्त्तिने लकुटियाहाथकीधरली

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व ऐसेप्रेमसे मुरलीबजाई जिसकीध्वनिसुनतेही सबजीव व जड़ चैतन्यमोहितहोकर मृगादिकउनकेचारोंओर आनकरखड़े हो गये व यमुनाजलबहनेसेथँभिरहा व पक्षियोंको उड़नाभूलगया व गायेंघासचरनाछोड़करचित्रकारीसीखड़ीहोगईं व झरनोंमेंसे पानीगिरना बन्दहोगया व मनहरणप्यारेबंशीमें छः राग व छत्ति सरागिनीगाकर ग्वालबालोंकानामउसमेंलेनेलगे व मुरलीबजा तीसमयअपनीआंख व भौंसे ऐसाभावबतलाया कि देखनेवाले मोहितहोगये उससमय देवते अपनी २ स्त्रियोंसमेत बिमानपर आकाशमेंआये व उन्होंनेमुरलीसुननेसे अतिप्रसन्नहोकरश्याम सुंदरपरफूलबर्षाये औरकहा धन्यभाग्यब्रजबासियोंकाहै जोऐसा सुखदेखतेहैं परमेश्वरहमलोगोंको बृन्दाबनमें बृक्षादिककाजन्म देते तो परब्रह्मपरमेश्वर बैकुण्ठनाथकी सेवाकरके अपनाजन्म स्वार्थ करते ॥

दो० कारणकरणअनन्तगुण निगमभेद नहिंपाव । सो ग्वालनसँग गावहीं देखोभक्तिप्रभाव ॥
सो० सुन्दरश्यामसुजान देतपरमसुखसबनको । वारततनमनप्रानधन्यधन्य कहि ग्वालसब ॥
दो० सोधुनिसुनिकर गोपिका लाजकाज बिसराय । माखनप्रभुके दरशको घरसेनिकलींधाय ॥

हेराजन् जबब्रजबाला बंशीकीधुनि सुनतेही मोहितहोकर वन की ओरचलीं व राहमें बैठकर आपसमें यहकहनेलगीं जब ब्रज नाथजीकादर्शनमिलैगातबहमारीआंखैंठंढीहोकरमनकी इच्छा पूर्णहोगी अभी तो हमाराचित्तचोर बनमेंग्वाल व गायों के साथ नाचतागावताहोगा यहसुनकर दूसरीगोपीनेकहासुनोसखी जब इनप्यारासंध्यासमय बंशीबजाताहुआ आवैगा तब मैं उस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोहनीमूर्त्तिकीछबिदेखकर अपनाहृदयठंढाकरूंगी तीसरीसखी बोली सुनोप्यारियो इसबांसमें न मालूमक्यागुणभराहै जिसबांसुरीको मोहनप्यारे हमसेसुन्दर व उत्तमसमझकर आठोंपहर अपनेमुखारबिन्द व छातीमेंलगायेरहतेहैं और वहबंशीश्यामसुन्दरकेहोंठोंका अमृतपीकर बादलसमानबोलतीहै चौथीब्रजबालानेकहा मेरेसामनेयहबांस बोयागयाथा जिसकीयहमुरली बनीहै सोइसकाऐसाभाग्य चमका कि मेरीसवतिहोकर केशवमूर्त्तिकी छातीपर दिनरातचढ़ीरहतीहै जिससमय गोपियां चर्चाआपसमें कररहीथीं उसीसमय बृन्दाबनबिहारी ग्वालबाल व गायोंको साथलिये मुरलीबजातेहुये वहांपहुंचे उसमोहनीमूर्त्तिकीछबि देखतेही सबब्रजबाला प्रसन्नहोकर आपसमेंकहनेलगीं॥

क० घ० मोरन के मुकुटमाथे हाथेमें लकुट राजे साजे गुंजमाल गले ललित लरनते। सुन्दर कपोल श्रुति कुंडलकी झलकराजे जुलफ अमोल भरे गोरज केनकते। गौवनके आछे पाछे काछे काछनीके काछ रागमोरी गावत गवावत सखनते। आनँदके कन्द ब्रजलोचन चकोरचन्द मन्दमन्द आवत गोबिन्द बृन्दावनते १ जरीदारचीरामें चुन्निनकी चमकचारु हारमुकता के लरपावनलौं परसत। कुण्डलकी चमक पीत पट लपटाने कटि दीपक दमकद्युति दामिनीसी दरसत। नैननको फलले लोचन सुफलकरो यहछबि निहारिवे को क्योंनजीव तरसत। मन्द मन्द आवत बजावत मधुरबेणु कुंजनते आवत रसिक रूप बरसत २॥

दूसरीसखीनेकहा देखोयहमुरली बीचहोंठ केशवमूर्त्ति के कैसीसुन्दर मालूमहोतीहै जिसकाअमृतरूपीशब्द कानोंकीराह होकेसे मुर्दजीउठते हैं और इसमुरलीकाबांस जिसबनमें उत्पन्न हुआथा वहांकेवृक्ष अपनेकोबड़ाभाग्यमानजानकरकहते हैं कि अहहमारीबांसुरी जातिभाई है इसबंशीकीधुनि देवतोंकीस्त्रियां अपनेबिमानोंपरसेसुनकर ऐसामोहजातीहैं किघुंघुरूउनकी कमरकाखुलकर गिरपड़ताहै व उन्हेंसुधिनहींहोती व गौवोंकोचरना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भूलजाताहै व हरिणआदिक चित्रकारीकेसमान खड़ेहोकर उ
कीधुनिसुनते हैं व बछड़ेदूधपीनाभूलकर वृक्षोंमेंसे मदबहनेल
ताहै दूसरीसखीबोली ऐप्यारी पहिले इसवंशीने बांसकेतनमें ज
न्मलेकर धूप व पानी व सरदीकादुःख अपनेऊपरउठाया व एक
पांवसे खड़ीरहकर परमेश्वरकातपकिया फिरइसने पोर २ अपन
कटवा २ कर आगकीगर्मी अपनेऊपरउठाया तबटेढ़ीसेसीधीहु
इससेअधिक क्याकोईभगवान्की तपस्याकरेगा यहसुनकरदूसरी
ब्रजबालाबोली परमेश्वरहमाराजन्मभी बांसमेंदेतेतो मैंभी अ
ठोंपहर मोहनीमूर्त्तिकेमुखसे लगीरहती व उनकेहोंठोंकाअमृ
पीकर सुखपावती हेराजन्नित्यजबतक केशवमूर्त्ति बनसेगौचर
कर नहींआतेथे तबतक यहीदशा गोपियोंकी रहतीथी॥

दो० जाबन धेनु चरावहीं माखन प्रभुचितचोर। तहां आयठाढ़ीरहैं हरिसन्मुख करजोर॥
बंशीधुनि सुनिकैसदा सुखपावैंतबलोग। माखनप्रभुमुखसोंलगीक्योंनहिंहोसुखयोग॥

इक्कीसवां अध्याय॥

गोपियों की प्रीतिका वर्णन करना॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् उन्हींदिनों फिरएकदिन ब्रजबाल
ने जो केशवमूर्त्तिसे सच्चीप्रीति रखतीथीं वहबांसुरीसुनकर हा
अपना घरकेकामकाजसे खींचलिया व उसमुरलीकीधुनिपरम
हितहोकर आपसमें कहनेलगीं इसबनकेजीवोंका बड़ाभाग्य
जो प्रतिदिन श्यामसुन्दरकीछबिदेखकर आनन्दहोतेहैं व मंस
में आंखमीचनेकाफल उन्हींकोप्राप्तहै जोलोगगौचराते व बंश
बजाते व बनबिहारकरतीसमय केशवमूर्त्तिका अमृतरूपीस्वरू
आंखोंकीराहपीकरध्यानउससांवलीसूरतका अपनेहृदयमेंरख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैं व जो हरिणियां अपनेहरिणोंसमेत मुरलीसुनकर मोहनप्यारे की छबि टकटकीलगाकेदेखती हैं उनकाभाग्य देवकन्याओंसे अधिकसमझनाचाहिये व बड़ाभाग्य उनगायबछड़ोंकाहै जिन्हें मुरलीमनोहर आपप्रेमसेचराते हैं व वृन्दाबनकेपक्षियोंका बड़ा भाग्यसमझनाचाहिये जो वृक्षोंपर बैठेहुये केशवमूर्त्तिकी छबिदेखने व मुरलीसुननेसे अपनाजन्मस्वार्थकरके उनकोअपनीसोहावनीबोलियां सुनातेहैं व धन्यभाग्ययहांकीभिल्लियोंकासमझो जो केसर व चन्दनछूटाहुआ अंगमुरलीमनोहरका घासछीलती समय अपनेमस्तकपरचढ़ावती हैं व गोबर्द्धनपर्बत गायेंचरतीसमय बृन्दाबनबिहारीका दर्शनपाकरकहता है मेरेबराबरदूसरेका भाग्यनहींहोगा किसवास्ते कि वे बैकुण्ठनाथ अपनाचरण मेरे ऊपरधरते हैं और कन्दमूलादिक से श्यामसुन्दर व ग्वालबाल व घाससे गौवोंकासन्मानकरता है व धन्यभाग्य बृन्दाबनकी नदी व नालोंकाहै जो बांसुरीकीधुनि सुनतेही बहनाअपनाभूलकर ठहरजातेहैं व यमुनाअपनीलहरसे केशवमूर्त्तिकाचरणछूककृतार्थहोतीहै व उसमेंमनहरणप्यारे नित्यजलबिहारकरते हैं व क्या उत्तमभाग्य उनबृक्षोंकाहै जिनकीछायामें नंदलालजी बैठते हैं व बड़ाभाग्य उसघास व पृथ्वीका समझनाचाहिये जिसपर केशवमूर्त्ति अपनाचरणधरके चलतेफिरते हैं व हमलोगों काभी बड़ाभाग्यसमझो जो मोहनीमूर्त्तिकी प्रीति आठोंपहरहमारेहृदयमें लगीरहतीहै हे राजन् गोपियां अपनेज्ञानसों केशवमूर्त्तिको परमेश्वरका अवतार जानतीथीं पर नारायणकीमाया जब उ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को व्यापतीथी तबउन्हें यशोदाकापुत्रसमझती थीं इसतरहसब
स्त्री व पुरुष बृन्दाबनबासी श्यामसुन्दरसे प्रीतिरखकर दिनरात
उन्हींका यशगायाकरतेथे व आठोंपहर उनकेचर्चा व ध्यानमेंम
ग्नरहतेथे इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन्कोईजीव
ऐसीसामर्थ्य नहींरखता जो उनकेभेद व महिमाको पहुँचनेसके
जिसपरवह दयाकरते हैं वही उनकीमहिमा कुछ जानसकाहै॥

बाईसवां अध्याय॥

चीरहरण लीला॥

इतनीकथा सुनकर परीक्षितनेकहा हे शुकदेव स्वामी श्रीकृ
ष्णजीने किसतरह उनसब ब्रजबालोंकी इच्छा पूर्णकियाथा उ
सकाहाल कहिये इसलीला सुनने से मेरा चित्त बहुतप्रसन्नहो
कर सबशोच छूटजाताहै यहबचन सुनकर शुकदेवजीबोले हे रा
जन् जब अगहन व पूसकामहीना आवनेसे सरदी अधिक पड़ने
लगी तब एकगोपीने सब ब्रजबालोंसे कहा मैंने बड़े व बूढ़ोंके मु
खसे ऐसासुनाथा कि अगहनकेमहीनेमें प्रातसमय यमुनास्नान
करनेसे अनेकजन्मका पापछूटकर मनोकामना मिलतीहै सो
हम सबकोई नेमबांधकर यमुनास्नानकरैं तो उसकेप्रतापसे मोह
नप्यारे हमारेपतिहोवेंगे यहबात राधाआदिक गोपियोंने प्रसन्न
करके अगहनबदी परिवासे यमुनानहाना आरम्भकिया नि
प्रातसमय राधाआदिक सब ब्रजबाला उत्तम २ भूषण व बस्त्र
हिनकर स्नानकरनेजातीं व नहानेउपरांत सूर्यदेवताको अर्घदे
मूर्त्ति पार्वतीजीकी मट्टीसे बनावतीं व धूप दीप नैवेद्य आदिक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विधिपूर्वक पूजन व दण्डवत् व ध्यानकरके हाथजोड़कर यह वर दान मांगतीथीं॥

क०स० गोपसुताकहैं गौरी गोसांइन पायँपरों बिनती सुनिलीजै। दीनदयानिधिदासीके ऊपर नेकुसों चित दयारस भीजै। देइ जो व्याह उछाहसे मोहन मातपिता कुछहू नहिं कीजै। सुन्दरसांवरो नन्दकुमार बसै उर जो बर सो बर दीजै॥

इसीतरह नित्यपूजाकरने उपरान्तादिनभर व्रतरहिकरसन्ध्या समयदहीचावलभोजनकरके पृथ्वीपरसोरहतीथीं वमनसाबाचा कर्मणासे यह इच्छाउन्हेंरहतीथी जिसमें जल्दीहमारा मनोरथ मिलै हे राजन् जब राधाप्यारीने सोलहहजार ब्रजबाला छोटी अवस्थाकेसाथ कि उनमेंचारतरहकीगोपियां एकजनकपुरवाली स्त्रियां व दूसरीदण्डकबनकी ऋषिपत्नियां जो रामावतारमें बैकुंठनाथपर मोहितहुई थीं तीसरी वेदकीऋचा व चौथी गोलोक कीस्त्रियां जिन्होंने बीचतनगोपियोंकेजन्मलिया था इसीतरह अगहनभर पूजा व व्रतकिया तबकेशवमूर्त्ति अन्तर्यामी उनपर दयालुहुये॥

दो० देख नेम यह प्रेममें गोपिनको गोपाल। भयोप्रसन्न कृपाल चित जनहित दीनदयाल॥

हे राजन् एकदिनजिससमय सबब्रजबालायमुनाजलमें स्नानकरके केशवमूर्त्तिकी चर्चा आपसमेंकरतीथीं उसीसमयमनहरणप्यारे भी अपने सोलहहजाररूपसे यमुनाजलमें सब गोपियोंकीपीठपीछेखड़ेहोकर मलनेलगे तबसबब्रजबाला उन्हेंदेखतेही प्रसन्नहोकरमनमेंकहनेलगींजिनकेमिलनेवास्तेहमलोगध्यान पूजाकरतीथीं उन्होंने दयालुहोकर दर्शनदिया फिरअपनाअंग पानीमें छिपाकर मोहनप्यारेसेकहनेलगीं तुमकोहमें नंगीदेखने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लज्जानहींआती व श्यामसुन्दरकीमायासेकिसी गोपीको दूसरी ब्रजबालाका हालनहीं मालूमहोताथा कि उसकेपीछेभी केशव मूर्त्तिहैं इसलिये सब गोपियां अपने २ मनमें आनन्दहोकर अप नाहाल दूसरीसखीसे नहीं कहतीथीं ॥

दो० जो माखनप्रभुको भजै प्रेमभक्तिके रंग। दयाकरैं पाछे फिरैं छायासम तेहिसंग॥

इसीतरह श्यामसुन्दर जलबिहार करके बाहरनिकल आये व गोपियोंका कपड़ा व गहना जो यमुनाकिनारे रक्खाथा उसे फार तोड़कर फेंकदिया जबगोपियोंने जाकर यहहाल यशोदासे कहा तब नन्दरानी बोली ॥

दो० तुम चाहतहो गगनते गहन तरैयाबाम। सो कैसे बर पाइहो तुम लायक नहिं श्याम॥
सो० मैं बूझी सबबात तुम हमसे कहियो कहा। वृथा फिरत अठिलात मष्टकरो सुनिहै जगत॥

तुम्हैं ऐसीबात कहतेहुये लज्जानहीं आवती और मेरेअज्ञा न बालकको पापकी आंखसे देखतीहो यहबात सुनकर सब ब्रज बाला हर्षपूर्वक अपनेअपनेघर चलीआईं जब दूसरेदिन फिरसब गोपियां यमुनानहाने गईं॥

दो० धरे उतारि उतारि सब तटपर भूषणचीर। नग्न होय अस्नानहित पैठीं यमुना नीर॥

तब केशवमूर्त्ति दीनदयालुने बिचारकिया कि मेरेमिलनेवा स्ते इन्होंने बड़ादुःख उठाया ऐसाबिचारकर उसदिन श्यामसुं रने बलरामजीसेकहा हेभाई आजतुमगायें बनमेंचराने लेजावो मैंपीछेसेकलेवालेकर वहांआऊंगाजबबलरामजीसबसखासमेत गौलेकरजाचुके तबवृन्दाबनविहारीने यमुनाकिनारेचुपचापज और क्या देखा कि सबब्रजबाला अपना २कपड़ा व गहनाकिना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धरकर यमुनाजलमें नहातीसमय बैकुण्ठनाथका चरचाकररही हैं केशवमूर्त्तियहप्रीतिउनकी छिपे २ देखकर बहुतप्रसन्नहुये हे राजन् जिससमय सबब्रजबाला सूर्यकोअर्घदेकर आंखबन्दकिये हुयेउनकाध्यानकरनेलगींउसीसमयश्यामसुन्दरने ऐसाविचारा कि इनलोगोंको यमुनामें नंगीहोकरनहानेसे दोषलगता है इस लिये आगेके वास्ते इन्हें ज्ञानसिखलाना चाहिये॥

दो० प्रेममगन युवतीसबै रहीं ध्यानमनलाय। हरिसब भूषणबसनलै चढ़े कदमपर जाय॥

और सबकपड़ोंकी मोटरीबांधकर अपनेसामनेधरलिया व उसीजगहखुशहोकर बैठरहे जबगोपियां स्नानकरके बाहरनि कलीं व उन्होंनेकपड़ा व गहनाअपना यमुनाकिनारेनहींदेखा तब चारोंओरढूंढ़कर आपसमेंकहनेलगीं अयसखीयहां तो चिड़िया कापूतभीनहींआया न मालूमकौनहमाराभूषण व वस्त्र उठाले गया सिवायमाखनचोरके और कौनहमारी बस्तुलेजायगा ऐसा कहकर दीनबचनसेपुकारनेलगीं कहींश्यामसुन्दरहोवैं तोदर्शन अपनादेवैं यहबचनसुनतेही केशवमूर्त्तिने एकबेरधीरेसेबांसुरीब जादी तब एकसखीने उसशब्दकीओर आंखउठाकर क्यादेखा कि मुरलीमनोहर मुकुटपहिने लकुटियालिये केसरकातिलक दिये बनमालागलेमेंडाले पीतांबरबांधे कदमकेबृक्षपर छिपेहुये बैठेहैं यहहालदेखतेही उससखीने सबब्रजबालोंसे पुकारकरकहा कि इधर तो देखो माखनचोर धोतियांचुरायेहुये मोटरीबांधकर कदमपरबैठाहै यहबातसुनकर जैसे सबब्रजबालोंने श्यामसुन्दर को बृक्षपर बैठेदेखा वैसे लज्जितहोकर गलेभरपानीमें चलीगईं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व हाथजोड़कर विनयपूर्वकबोलीं हे दीनदयालु दुःखहरनेवाले धोतियां हमारीदेडालो॥

दो० माखनप्रभुघनश्यामजू तुम्हैं उचितयहनाहिं। हमदासीबिनदामकीसमझोतुममनमाहिं॥

यहबात सुनकर मोहनप्यारेबोले तुमलोगअपना २ गहना व कपड़ाफेंककर स्नानकरनेलगी थीं सो मैंने उसकीरखवारीकिया है बिना चौकीदारीदिये कपड़ानहींपाओगी गोपियोंनेकहा हम लोगोंको जलमेंजाड़ामालूमहोता है तुमकोदया नहीं आती॥

दो० तन मन धन अरप्योतुम्हें जोहै तुम्हरेपास। अब अम्बर दीजैहमैं जानि आपनी दास॥
सो० तबहँसिकह्योकन्हाय जो तनमनमोंकोदियो। लेहुवसन हयांआय जोमानोमेरोकहेउ॥

तुमसब एक २ सुन्दरीजलसेनिकलकर मेरेपासआवो तब तुम्हारेवस्त्रदूंगा नहीं तो बाबानन्दकी सौगन्दहै जो बिना ऐसा किये धोतियां अपनीपावो यहवचनमनहरणप्यारेका सुनकर राधिकाबोली हमतरुणस्त्रियां तुम्हारेसामने नङ्गीकिसतरहआवें यहनया ज्ञानतुमकोकिसनेसिखाया जोहमैं नंगीदेखाचाहतेहो॥

दो० छांड़िदेवयह टेकहरि बरुभूषणतुमलेव। शीत मरत हमनीरमें चीरहमारो देव॥
सो० दूषण होतअपार जो त्रियअँगदेखै पुरुष। ताते नन्दकुमार नंगीनारि न देखिये॥

जबइतनी विनयकरनेपरभी मोहनप्यारे ने वस्त्रउनका नहीं दिया तबसब ब्रजबाला रुखाईसे बोलीं नन्दकहींके राजानहीं हैं जो उनकीदोहाई फिरगई हो तुमधोतियां हमारीचुराकर सबको नंगीदेखाचाहते हौ यहचलन तुम्हारा हमको अच्छानहीं लगता अभीहमलोग अपने २ पिता व भाईसेजाकर तुम्हारा हाल कहैं तो वहलोग आनकरतुम्हैं चोरीमेंपकड़ैं व नन्द व यशोदाके पासलेजाकर तुम्हारादण्डकरावैं यहकठोरवचन गोपियोंकासुन श्रीश्यामसुन्दरने क्रोधितहोकरकहा अबतुमलोगतभीधोतियां

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पावोगी जबअपने हिमायतीकोलेआवोगी उन्हैं क्रोधमेंदेखतेही सब ब्रजबालाडरती व कांपतीहुई बोलीं हेदीनदयालुहमारीपाति रखनेवाला सिवायतुम्हारेदूसराकौनहैजिसे हम अपनासहायकबु लावेंतुम्हारेचरणकी दासीहोनेवास्तेतोहमलोगयमुनास्नान व ब्र तव पूजनकरतीहैं सोतुमनिर्दयताछोड़करअपनीदासियोंपरदया करो व चीरहमारेदेडालो व आपत्रिलोकीनाथ हैं तुम्हारे ऊपर कुछहमारावशनहीं चलतानमालूम तुमनेकौनसीमोहनीहमपर डालदी जो तुम्हारीसांवलीसूरतिदेखेबिना हमलोगोंको अपना घरदुवार व कुलपरिवार कुछअच्छानहीं लगता हमैं अबलाअ नाथसमझकरदयाकरो यहदीनबचनसुनतेही केशवमूर्त्तिनेक्रोध क्षमाकरकेकहा जो तुमलोगअपनेसच्चेमनसे मेरेमिलनेवास्तेब्रत व स्नानकरतीहो तो लज्जा व कपटकोयमुनाजलमेंडुबाके वहां सेनंगीमेरेपासआनकर धोतियां अपनीलेजाव बिनाअंगादिख लाये चीरनहींपावोगी यहबचनसुनतेही सबगोपियोंने आपसमें कहा एकमनहरणप्यारे हमैंनंगीदेखैं वहअच्छीबात है या सारा गांवदेखै वहउत्तमहोगा और यहहमारेअन्तःकरणका सबहाल जानतेहैं इनसे लज्जाकरना न चाहिये ॥

दो॰ कहत परस्पर मिलिसबै हरिहठ छांड़तनाहिं। चीरबिना कैसेबनै कौनभांति घरजाहिं ॥
सो॰ चलो लीजिये चीर इनहींको हठराखिके। मनमोहन बलबीर जो कछुकहैं सो कीजिये ॥

ऐसाकहकर सबगोपियां एकहाथसेअपनीभग व दूसरेहाथसे कुचोंकोछिपाकर यमुनाजलसेबाहरनिकलीं व केशवमूर्त्तिकेसा मनेजाकर शिरनीचेकरकेखड़ीहोरहीं तब मुरलीमनोहरनेकहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अभीतक तुम्हैं मुझसेकपटबना है कपटी जीव मेरे पास नहीं पहुँचते तुमलोग एक २ सामने खड़ीहोकर सूर्य्यदेवताको हाथ जोड़ो तबतुम्हारे चीरदेऊँ किसवास्ते कि तुमने व्रतमेंनंगी स्नान करके सूर्यदेवता का अपराधकिया है यहबात सुनकर गोपियोंने कहा हेनन्दलालजी हमलोग सीधी भोली ब्रजबालासे क्यों कपट करते हो॥

दो० माखन प्रभु सों सब कहैं हम आईं तुमहेत। यही तुम्हारो सांचहै अबहूं बस्त्र न देत॥

हमलोग तुम्हारे आधीनहैं जोकहो सो करैं जबऐसा कहकर सब ब्रजबाला छातीपरका हाथ उठाकर एकहाथसे सूर्यको दण्डवत् करनेलगीं तब केशवमूर्त्ति बोले एकहाथसे दण्डवत् करना दोष होताहै दोनों हाथसे प्रणामकरो॥

दो० जो कहियो करिहैं सबी हँसिबोलीं ब्रजबाम। लैहैं पलटो हमकभूं सुनो श्याम अभिराम॥

जब ऐसाकहकर सबगोपियां मोहनप्यारेके प्रेममें मग्नहोगईं व लज्जा छोड़कर दोनोंहाथसे सूर्यदेवताको दण्डवत्किया तब श्यामसुन्दर निष्कपट भक्ति व प्रीति उनकीदेखकर बहुतप्रसन्न हुये व वृक्षपरसे उतरके सबधोतियां अपनेकांधेपर धर गोपियोंसे कहा अबतुम्हाराबोझा मैंने अपनेऊपर उठालिया मनुष्यके तन में जन्मलेनेका यहीफलहै जो दूसरेका उपकार करे॥

दो० सुभग शरीर निहारिकै माखनप्रभु बलबीर। प्रेमप्रीति रसवश भये दिये सबनके चीर॥

हे राजन् सब ब्रजबाला अपना २ भूषण व बस्त्र पहिनकर केशवमूर्त्तिके प्रेममें ऐसीमग्नहोगईं कि उनकामन घरजानेवास्ते नहींचाहताथातबमोहनीमूर्त्तिनेकहा तुमलोगइसबातमेंखेदमत मानना तुम्हैं आगेकेवास्ते मैंने ज्ञानसिखलादिया जलमेंबरुण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवताकावासहोताहै इसलियेनंगीहोकर जलमेंस्नानकरनेसे सब धर्म व पुण्यबहिजातेहैं सो अबतुम्हैं यमुनास्नान व व्रतकरनेका फलप्राप्तहुआ तुमलोगमुझे बहुतप्यारीमालूमहोतीहो कुआर सुदी पूर्णमासीको मैं तुम्हारेसाथ रासलीलाकरकेमनोरथ तुम लोगोंकापूर्णकरूंगा अब अपने २ घरजाकर व्रतरखनाछोड़देव यहवचनसुनतेही सबव्रजबालाप्रसन्नहोकर अपने २ घरचली गईं व आठोंपहरश्यामसुन्दरके ध्यानमेंलीनरहिकर कुआरसुदी पूर्णमासीका दिन गिननेलगीं॥

दो० देखिचरित नँदनन्दके सबीबालमतिभोर। सुधिबुधिमनकछु थिरनहीं कहत औरकी और॥

केशवमूर्त्तिवहांसे बंशीबटमेंजाकर ग्वालबालोंकेसाथ गौच रानेलगे इतनीकथासुनकर परीक्षितनेपूछा हेस्वामी श्रीकृष्णजी नेपरब्रह्मकाअवतारहोकरजिन्हैंसबजगत्कापरदाढांपनाचाहिये उन्होंने शास्त्रकेविपरीत परस्त्रीको क्योंनंगीदेखा यहसन्देह मेरा छुड़ादीजिये शुकदेवजीबोले हेराजन् स्त्रीकोनंगीहोकर नहानेसे बड़ापापहोताहै जबतक उसीतरहजलमें से नंगीहोकर दुसरेपुरुष केसामने न जावे तबतक वहदोष उसकानहींछूटता इसलिये मुर लीमनोहरने शास्त्रानुसार ऐसाकरके उनकापाप छुड़ादिया॥

दो० प्रकटशीत दुखपायके सबमिलरहीं लजाय। अन्तर्गत अतिसुखभयो आनँद उर न समाय॥

हे राजन् जब श्यामसुन्दर बनमें पहुँचे तबवृक्षोंकी ठंढीछाया देखकर श्रीदामाआदिक ग्वालोंसेकहा देखो यहसब वृक्षसर्दी व गर्मी व बरसातको दुःख अपनेऊपरउठाकर एकपांवसे खड़ेरहते हैं व अपनीछाया व फल व फलसे सबजीवोंको सुखदेतेहैं व कोई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनुष्य उनसे बिमुख नहींजाता व मनुष्यलोग सुखपानेपरभी
नकी डाली व पत्तातोड़लेतेहैं तबभीयहबुरा नहींमानते व फल
व फूललगेरहनेकेसमय राही व बटोहियोंका सन्मानकरतेहैं ज
इनमें फल व फूल नहींरहते तबलज्जासे शिरझुँकाकर कहतेह
हमसेकुछ सेवातुम्हारी नहींबनपड़ती इसलिये हमलज्जितहैं
प्रीतिअपनीधनपात्र व कंगालदोनोंसे बराबररखकर योगीश्वर
केसमानतपकरते हैं संसारमें उसीकाजन्मलेनासुफलहै जोअप
ने ऊपरदुःख उठाकर दूसरोंका उपकारकरै ॥

दो० महिमा ऐसे द्रुमनकी कापै बरणीजाय। प्राणबड़े दातान के इनमें बैठे आय ॥

इसतरहवृक्षोंकीबड़ाई करतेहुये मनहरणप्यारे ग्वालोंसमेत
अपने घरआये ॥

तेईसवां अध्याय ॥

ग्वालों का मथुरा के चौबों से भोजन मांगना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् श्याम व बलराम एकदिनगौचरा
नेवास्ते बनमेंजाकर ग्वालोंकेसाथ आनन्दपूर्वकखेलतेथे उससम
मयग्वालोंने वृजनाथजीसेकहा महाराजजीकलेवा हमलोग
अपनेघरसेलायेथे सोखागये परभूखहमारीनहींगई इसलियेकुछ
खिलाइये यहबात सुनकरश्यामसुन्दर अन्तर्यामीनेविचारा कि
मथुराबासी ब्राह्मणोंकीस्त्रियां मेरेदर्शनवास्ते इच्छारखतीहैं सो
आजउनकामनोरथ पूर्णकियाचाहिये ऐसाविचारकरनन्दलाल
जीनेग्वालबालोंसेकहा देखोवनमेंजहांधुआँउठताहै वहांपरम
रिया ब्राह्मणराजाकंसके डरसेछिपकर यज्ञ व होमकरते हैं तु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोगोंमेंसे पांचचारबालक वहांजावो व दण्डवत्करके मेरानाम लेकर उनसेभोजनमांगलावो यहबातसुनतेही कई ग्वालोंनेवहां जाकर बिनयपूर्वक उनसेकहा ॥

दो० हाथजोरि ठाढ़ेभये ग्वालबाल यकसाथ। भोजन मांगत हैं कहेउ माखन प्रभुव्रजनाथ ॥

हे राजन् उनब्राह्मणोंने जो अपनेअज्ञान व कर्मके अभिमान सेश्याम व बलरामकीमहिमानहींजानतेथे यहबचनसुनकर ग्वालबालोंसेकहा तुम मूर्खलोगनहींजानते कियहसबभोजनहमने देवतोंकेनामपर यज्ञकरनेवास्ते तैयारकियाहै जबतक यज्ञपरमेश्वरकासम्पूर्णानहींहोगा तबतकभोजननहींपावोगे यज्ञहोनेउपरांत तुमकोभी प्रसादमिलैगा व श्याम व बलरामअहीरोंकेघरपालनहुये उनसे हमब्राह्मणलोग उत्तमकुलहैं यहकठोरबचन ब्राह्मणोंका सुनतेही सबग्वालबाल निराशहोकर पछतातेहुये केशवमूर्त्तिकेपासजाकरबोले हेव्रजनाथ हमलोगअपना मानछोड़कर तुम्हारेकहनेसे भीखमांगनेगये तिसपरभी भोजननहींपाया अब क्याकरें भूखबहुतसतावतीहै यहबातसुनतेही केशवमूर्त्तिने हँसकर बलरामजीसेकहा कि वहब्राह्मणलोग बिनाभक्ति हमारे भेदकोनहींजानते कि स्वामीयज्ञ व होमकाकौनहै अपनेकर्मकेअभिमानमें अन्धेहोरहेहैं बहुतउत्तमहै जोवहलोग इसीतरह अपनेअज्ञानमें पड़ेरहें फिरश्यामसुन्दरने ग्वालबालोंसेकहा कि अबतुमलोग उनकीस्त्रियोंकेपास जोबड़ीधर्मात्मा व हरिभक्तहैं जाकरकहो कि श्याम व बलरामने जोवनमें गौचरावनेआयेहैं भूखेहोकर तुमसे भोजनमांगाहै वहस्त्रियां तुमको बड़ेआदरभावसे भोजन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवेंगी यहसुनतेही ग्वालबालोंने चौबाइनोंसेजाकरकहा हेमाता श्रीकृष्ण व बलरामजीने तुमसे भोजन मांगाहै सो तुम क्या कहती हो॥

दो० ग्वालनके सुनिबचनसब हर्षेउठीं ब्रजबाम। कहतहमारो भाग्यधनि भोजनमांग्योश्याम॥
सो० करतरहींनितध्यान सुनिसुनिजिनकेगुणश्रवण।सुफलजन्मनिजजानि तिनकोभोजनलेचलीं॥
दो० अति बड़भागी जीवहैं जिनको ब्रजमें बास। माखनप्रभुके दर्शते पावत परम हुलास॥

उनस्त्रियोंके सदामनसाबाचासे यहइच्छारहतीथी किकोईऐसा दिनभीहोगा जोहमैंदर्शन केशवमूर्त्तिकेमिलैंगे इसलियेउन्होंने बड़ेप्रेमसेमेवा व मिठाई व पकवान व पूरी व कचौरी व दूध व दही व माखनआदिकसोने व चांदीकीथालियोंमेंरखकर ग्वालोंकोदिया और कुछअपनेहाथमेंलेकर जिसस्थानपर मुरलीमनोहरथे ग्वालबालोंकेसाथ वहांकोचलीं उससमय उनकेपतिआदिकनेबहुतमनाकिया कितुमलोग ग्वालोंकेसाथ मतिजाव परउन्होंने जोपरमभक्तिथीं किसीकाकहना नहींमाना॥

सो० जिनकेउर नँदलाल बसैंलकुट मुरलीलिये। तिन्हैं न भय यमकाल कौनभांति रोकीरुकै॥
चौ० तब ग्वालन से पूछत बाला। केतिक दूर अहैं नँदलाला॥
चलो आज हम दर्शन देखैं। जीवनजन्म सुफलकर लेखैं॥

यहबचनसुनकर ग्वालबोले हेमाताथोड़ीदूरहैं जिससमयवहलोग बीचप्रेमदर्शन मोहनीमूर्त्तिके आनन्दसे चलीजातीथींउसीसमय एकमथुरियाब्राह्मण बर्जोरी अपनीस्त्रीको राहमेंसे पकड़लाया तबउसनेकहा हमकोश्यामसुन्दरका दर्शनकरने जानेदेव अपनेऊपर अपयशमतलेव मुझेउनकेदर्शनकी बड़ीलालसा है और वह परब्रह्म परमेश्वर पृथ्वीकाभार उतारने वास्ते अवतारलेकर संसारीमनुष्यकीतरह लीलाकरतेहैं तुमलोग वेदपढ़कर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यज्ञ व होमकरतेहो परउनको अपनेअज्ञानसे नहीं पहिचानते ॥

दो० कोजन जाने भेवयह यज्ञकरत केहिकाज। भोजन मांगत हैं वही माखनप्रभु ब्रजराज ॥

हेस्वामी मेराप्राण तोनन्दलालजीसेजामिला इसझूठेशरीर को रोककरक्याकरोगे मेरेमरनेउपरांत सिवायपछतानेके तुमको और कुछहाथनहींलगेगा जिसमनुष्यको परमेश्वरसे प्रीति न हो वहकिसीकामकानहींहोता यहसबज्ञानकहनेपरभी उसमथुरिया ने नहींमानकर अपनीस्त्रीको कोठरीमें बन्दकरके तालादेदिया तबउसीसाइत प्राणउसका बीचध्यान केशवमूर्त्तिके निकलकर इसतरह सबस्त्रियोंसेपहिले वहांजापहुँची जिसतरह पानीतुरन्त बहिकर नदी व समुद्रमें मिलजाताहै ॥

सो० कठिन प्रेमका पंथ जहां नेमकी गतिनहीं। कहत सकल यह ग्रंथ प्रेमभावके बसहरी ॥

हेराजन् जबपीछेसे वहसबस्त्रियां बड़ेप्रेमसे भोजनलियेहुये जहांपर केशवमूर्त्ति बीचछायावृक्ष एकसखाकेकांधेपरहाथदिये बांकीसूरतबनाये कमलकाफूल हाथमेंलियेखड़ेथे जापहुँचीं तब चरणउनकाचूमकर थालियांभोजनकी सामनेधरादिया व उस मोहनमूर्त्तिको देखतेहीप्रसन्नहोकर आपसमेंकहनेलगीं हेसखी यहीनन्दलालजीहैं जिनकीबड़ाई हमलोग सदासुनकर ध्यान कियाकरतीथीं आजहमारेभाग्य उदयहुये जोइनकादर्शनपाया अबइनचन्द्रमुखकी शीतलताईसे अपनी २ आंखैंठंढीकरो व संसारमें जन्मलेनेकाफलउठावो हेराजन् मुरलीमनोहरकीकृपासे उससमय उनस्त्रियोंकी दिव्यदृष्टिहोगई तबउन्होंने मोहनप्यारे को पूर्णब्रह्मजानकर हाथजोड़करविनयकिया हेदीननाथ बिना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कृपातुम्हारी इससांवलीमूरतिकादर्शन किसीकोनहींमिलता न
मालूमकौनजन्मकेपुण्य हमारेसहायकहुये जोतुम्हारादर्शनपा
या व अनेकजन्मकेपाप हमारेछूटगये व हमलोगोंके पतिआदिक
अपने अज्ञान व अभिमानसे संसारीमायामोहमें डूबकर ऐसेअ
न्धेहोगये जोपरमेश्वर बैकुण्ठनाथको जिनकेनामपर यज्ञकरते
हैं मनुष्यसमझकर मांगनेपरभीभोजननहींदिया तन व धनवही
उत्तम समझनाचाहिये जोतुम्हारेकामआवै जोलोगमनुष्यका
तनपाकर तुम्हारीभक्ति व सेवाकरतेहैं उन्हींका जन्मलेनास्वार्थ
है व यज्ञ व तप व ध्यान व ज्ञान वहीउत्तमहोताहै जिसमेंतुम्हा
रा नामआवे ॥

दो॰ जो जन मनबचसे करैं माखन प्रभुसे हेत। चार पदारथ देतहैं पाप दुःख हरिलेत ॥

यहवचन प्रीति व भक्तिसेभराहुआ सुनतेही केशवमूर्त्ति उन
की कुशलपूछकरबोले मैंनन्दमहरकाबेटाहूं तुमलोग ब्राह्मणी
होकर मुझेदण्डवत् मतिकरो इसमेंमुझको दोषलगैगा जो लोग
ब्राह्मण या उनकीस्त्रियोंसे अपनाकाम व टहललेतेहैं वहसंसारमें
कुछबड़ाई नहींपाकर पापकेभागीहोतेहैं तुमनेहमेंभूखाजानकर
दयाकीराह बनमेंआनके भोजनदिया सो मैं इसकेबदले तुम्हारा
क्यासन्मानकरूं वृन्दावन मेराघर यहांसेदूरहै कदाचित् अपने
घरपरहोते तोयथाशक्ति तुम्हारा आदरभावकरते सोयहांमुझसे
तुम्हारा कुछशिष्टाचार नहींबनिपड़ा इसबातका पछताव मरमें
नमेंरहगया। तुमलोगोंको यहांआये बहुतबिलम्बहुआ अबअप
ने २ स्थानपरजाव ब्राह्मणलोग तुम्हें जोहतेहोंगे किसवास्ते वि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्त्री अर्द्धांगी होतीहै बिनातुम्हारेगये देवतेयज्ञ व होम ब्राह्मणोंका अङ्गीकार नहींकरेंगे ॥

सो० सुना बचन निरबान कर्म धर्म बाणीसुखद। द्विज त्रियपरमसुजान बोलीं सबकरजोरिकै ॥

हे बैकुण्ठनाथ आपका दर्शनकरने व तुम्हारे चरणकमलकी भक्ति व प्रीति रखने से संसारीमाया छूटगई अबहमें घरदुवार व कुल परिवारका कुछमोहनहीं रहा सिवाय इसकेहमलोग बिना आज्ञा अपनेपति आदिकके तुम्हाराचरण देखनेआईहैं कदाचित् वहलोग हमको अपनेघरमें न रक्खैं तो हमकहांजावैंगी इससे यहबात उत्तमहै कि हमसब आपकेचरणों के पास बनीरहैं व तुम्हारीसेवा व टहलकरके अपनापरलोकबनावें व हेमहाप्रभु एक स्त्री तुम्हारेदर्शनोंकी इच्छासे हमारेसाथ आवतीथी सो उसकापति बर्जोरीउसेपकड़कर राहमेंसे फेरलेगया न मालूमउसकी क्या गतिहुई यहबातसुनकर मोहनीमूर्त्तिने हँसादिया व उसस्त्रीकास्वरूप सबको दिखलाकरकहा देखो यहस्त्री तुमलोगोंसे पहिलेमेरेयहां आनपहुँची जो कोई परमेश्वरमें प्रीतिरखता है उसकाना श कभीनहींहोता हे राजन् उसस्त्रीको केशवमूर्त्तिकी सेवामेंदेखकर पहिलेसबको आश्चर्य्यमालूमहुआ फिर सबस्त्रियोंनेमुरली मनोहरसे विनयकिया हे ब्रजनाथ आप अर्थ धर्म काम मोक्ष चारोंपदार्थके देनेवालेहोकर हमको अपनेचरणोंसे अलग न कीजिये तुम्हारा चरणछोड़कर अबहम जांईनहीं सक्तीं यहसुनकर केशवमूर्त्तिबोले सुनो तुमलोग परमेश्वरके प्रेममें लीनहो परगृहस्थको वेदकेअनुसार सबकामकरना चाहिये शास्त्रमें ऐसालिखा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है जो स्त्री अपने पतिको परमेश्वरतुल्यजानकर उसकीआज्ञा पा
लनकरै व दूसरेपुरुषको पापकीआंखसे न देखै उसपतिव्रताकोयो
गी व ज्ञानीसे उत्तम समझनाचाहिये वहस्त्री जो कुछ शुभ या अ
शुभ अपने मुखसे किसीको कहै वहबात सच्चहोजाती है औरउस
को चारोंपदार्थ अपने स्वामीसे मिलसक्ते हैं ॥

दो० यहि विधि जो निश्चयकरै जेहिनारी मनमाहिं। चारिपदारथ सोलहै यामें संशयनाहिं॥

इसलिये तुमलोग अपने पतिकेपासजाव वहतुमसे खेद न कर
के प्रसन्नहोंगे यहवचन सुनतेही सबचौबाइनोंने अमृतरूपी नट
वरवेष केशवमूर्त्तिको आंखोंकीराह अपनेहृदयमेंपीलिया व उन
से भक्ति वरदान लेकर दण्डवत्करके अपनेस्थानपर चलीं व जि
सब्राह्मणने अपनीस्त्रीको कोठरीमें बन्दकरदियाथा उसने ताला
खोलकर देखा तो अपनी स्त्रीको मरीहुई पाकररोने पीटनेलगा
जिससमय उसकीलोथ जलानेकाउपाय कररहाथा उसीसमयस
बस्त्रियां अपने स्थानपर पहुँचीं॥

दो० माखन प्रभुको दर्शले आईं सुघर सुजान। तिनके दर्श प्रतापते बिप्रनपायो ज्ञान॥

हे राजन् जातीसमय ब्राह्मणलोग अपनीस्त्रियोंपर क्रोधितहु
येथे जब वहकेशवमूर्त्तिका दर्शनकरके फिरआईं तब उनकामा
था चमकताहुआ देखकर ब्राह्मणलोग कहनेलगे देखो जिनका
दर्शन ब्रह्मादिक देवते व ऋषीश्वरोंको जल्दी ध्यानमें नहींमि
लता उनपरब्रह्म परमेश्वरका दर्शन इनस्त्रियोंने करके अपनाज
न्मसुफलकिया वहमलोगोंने अपनेअज्ञानसे नहींपहिचाना कि
स्वामी यज्ञ वहोमका कौनहै हमने वेद व पुराणमें ऐसा सुनाथा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि परब्रह्मपरमेश्वर यदुकुलमेंअवतारलेकर नन्द व यशोदाको
बाललीलाकासुखदिखलावैंगे सो यही बैकुण्ठनाथ बाललीला
करते हैं उन्होंने ग्वालबालोंको भोजनमांगनेवास्ते हमारेपासभे
जाथा सो हमसेबड़ीचूकहुई जो सच्चिदानन्दको भोजननदिया
व जिनकेप्रसन्नहोनेवास्ते हमलोग यज्ञ व होमकरतेहैं उन्हैंमनु
ष्यसमझकर उनकेसन्मुखनहींगये व अपनेअज्ञान व अभिमान
से हमारेमनमें दयाभीनहींआई सो हमारे यज्ञ व तप करनेपर
धिक्कारहै कि हमनेपरमेश्वरको नहींपहिंचाना हमलोगोंसे इन
स्त्रियोंको अच्छासमझनाचाहिये जिन्होंने बिनाजपतपकिये व
कथा पुराणसुने अपनेज्ञानसे परमेश्वरकोपहिंचानकर भोगल
गाया व उनकादर्शनकरके अपनेनेत्रोंकासुखपाया इसीतरहब्राह्म
णोंनेबहुतपछताकर अपनी २ स्त्रियोंसे बिनयपूर्वककहा तुम्हारे
बराबर दूसरोंकाभाग्यनहोगा जो परब्रह्मपरमेश्वरकेदर्शन तुमको
मिले फिरब्राह्मणोंने श्यामसुन्दरको ध्यानमेंहाथजोड़कर बिनय
किया हे दीनानाथ हमलोगोंकाअपराधक्षमाकीजिये व हमारे
हृदयमें अज्ञानताकी काटिजोजमीहै उसकोज्ञानरूपी अग्निसे
जलादीजिये जब इसीतरहपरबहुतस्तुति व बिनतीब्राह्मणोंनेकी
तब केशवमूर्त्तिने अपराध उनकाअपने हृदयसेक्षमाकरदिया व
सबस्त्रियोंने लोथ उसचौबाइनकीदेखकर उसकेपतिसेकहा हमने
तेरी स्त्रीको नन्दलालजीकीसेवामेंदेखाथा यहबचनसुनतेही वह
मथुरिया रोकरबोला मैंभी अपनीस्त्रीको तुम्हारेसाथजानेदेतातो
किसवास्ते वहमरती ऐसाकहकर वहमथुरियारोताहुआ केशव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मूर्त्तिकेपास दौड़ागया व अपनीस्त्रीको वहांचतुर्भुजीरूप देख कर जबश्यामसुन्दरके सामने अतिबिलाप करकेरोनेलगा तब ब्रजनाथजीनेकहा अपनीस्त्रीकेभक्तिकरनेसे तूभी चतुर्भुजी स्व रूपहोजा सोनन्दलालजीने स्त्रीपुरुषदोनोंको विमानपरबैठाकर बैकुण्ठमेंभेजादिया व जो कुछपदार्थब्राह्मणकीस्त्रियांदेगईथीं उस को बांटकरग्वालोंसमेत आनन्दपूर्वकभोजनकिया उससमयश्री दामानेकहा हे नन्दलालजी गायेंचरतीहुईं दूरचलीगईं उनको बहोरनाचाहिये यहबातसुनतेही केशवमूर्त्तिनेऐसीमुरलीबजाई कि सबगायें आपदौड़कर वहांचलीआईं ॥

दो० या बिधिमुरली टेरके घेरलईं सबगाय । सांझसमय घरकोचले हलधरजूके भाय ॥

जब केशवमूर्त्ति बंशीबजातेहुये वृन्दाबनकेनिकटपहुंचे तब सबब्रजबाला उनकीछबिदेखनेसे प्रसन्नहोकर बोलीं ॥

दो० प्रेममगनआनन्दभरि कहतसकलब्रजबाम । देखोसखियशुमतिसुवन शोभितअतिबलराम ॥
कहतमुदितमनयुवतिजन धनिधनिसखिवहमोर । जिनकेपंखनकोमुकुट कीन्होंनन्दकिशोर ॥

हे राजन् जिससमयवैकुण्ठनाथजी गायोंकेपीठपरहाथफेर कर अपनेपीताम्बरसे उनकाशरीरपोंछतेथे उससमय स्वर्गमें का मधेनुगौ पछताकरकहतीथी परमेश्वरहमाराभी जन्मवृन्दाबन में देते तो केशवमूर्त्तिहमारेऊपरभीहाथफेरकर मेरादूधदुहते ॥

दो० धनिधनि ब्रजकीधेनुयह चारत त्रिभुवननाथ । भारतपोंछत दुहतनित हितकर अपनेहाथ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दर का गोवर्द्धनपहाड़की पूजा करना ॥

शुकदेवजीने कहा हेराजन् जिसतरहश्यामसुन्दर ने गोवर्द्धन पहाड़अपनी कानीअंगुलीपर उठायाथा वहकथाकहते हैं सुन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोकुल व वृन्दावनमें बर्षवें दिनब्रजबासीलोगकार्त्तिकबदी चतु र्दशीको छत्तीसव्यंजनबनाकर राजाइन्द्रका विधिपूर्वकपूजन कियाकरतेथे जबवह दिनआया तबवृन्दाबनबासियोंने अनेक तरहकापकवान व मिठाई आदिकइन्द्रकी पूजावास्ते अपने २ घरबनवाया व यशोदाबड़ीपवित्रतासे सबपदार्थ बनाकररखती थीं जिसमेंकोईजूठा न करदेवे ॥

दो० सैंत सैंत अतिनेमसों धरत अछूते जाति। श्याम कहूंपरसें नहीं यहमन माहिं डेराति ॥
सो० शंककरत मनमाहिं सुरपतिपूजाजानिजिय। यशुमतिजानतिनाहिं सबदेवनके देवहरि ॥

हेराजन् केशवमूर्त्तिने घरघरयह तैयारीदेखकरमनमें ऐसावि चाराकिइन्द्रकीपूजा छुड़वाकरगोबर्द्धनपहाड़को पुजवानाचाहि येऐसाविचारकर यशोदासे पूछा हेमैयाआज सबब्रजबासियोंके घरपकवान व मिठाई तैयारहोनेका क्याकारण है यशोदाबोलीं हे बेटाइससमय मुझेबातकरने कीछुट्टीनहींहै तू अपने पितासेजा करपूछले यहबातसुनकर मोहनप्यारे बलरामजीसमेत नन्दराय केपासगये।

दो० तब हरि बोले नन्दसों मधुर मन्दमुसुकाय। करतपुजाईकौनकी बाबा मोहिं बताय ॥

हेबाबावहकौनदेवताहै जिनकीपूजाकरनेसेभक्तिवमुक्तिमिलती हैउनकानाम वगुणमुझसेवर्णनकीजिये बड़ोंकोउचितहै किअप नेकुलकीरीतिछोटोंकोबतलादेवैं लड़कपनकीसीखीहुई बातयाद रहिकरकभीनहींभूलती यहसुनकरनन्दजीबोले हेबेटा अबतक तुमने इसपूजाका हालनहींसुनायहसब सामग्रीवास्ते पूजाकरने इन्द्र जोसबमेघोंकाराजा है बनतीहै उनकेपूजनेसे बर्षाअच्छीहो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करघास व अन्नउपजताहै जिसकेउत्पन्नहोनेसे सबजीवसुखपा
वते हैं व यहपूजाहमारेकुलमें बहुतदिनसे होती है ॥

दो० मावनप्रभु बोले तभी तातबात सुनलेह । जहँपूजननहिं होतहै तहँ बरसत नहिं मेह ॥

हे बाबाआजतकजोकुछहमारे बड़ोंनेजान या अजानमेंपूजा
इन्द्रकीकिया सो अच्छाहुआ परतुमलोगजानबूझकर धर्मकी
राहछोड़के कुराहपरक्योंचलतेहोकिसवास्ते किसंसारमेंतीनतरह
काधर्म व कर्म्महोताहै एकवेद व शास्त्रकेअनुसार दूसरालोकव्य
वहार तीसराअपनेमनसेसोवेदकेप्रमाणकरनेसे फलउसकामिल
ताहै भलातुम्हींबतलाओ इन्द्रकीपूजाकरनेसे क्यामिलैगा वह
किसीको भक्ति व मुक्ति व ऋद्धि व सिद्धि व बरदाननहींदेसका व
इन्द्रआपसौयज्ञकरके इन्द्रासनपावताहै तबदेवतेउसेअपनाराजा
करकेमानते हैं इससेवहपरमेश्वर नहींहोसका जबवह दैत्यों से
लड़ाईमें भागकरकहींजाय छिपताहै तबनारायणजीसहायता
करके फिर उसेइन्द्रासनपर बैठालदेतेहैं ऐसे निर्बलकी तुमलोग
पूजनक्योंकरतेहौ अपनाधर्म पहिचानकर परमेश्वरकीपूजाक्यों
नहींकरते इन्द्रकाकिया कुछनहींहोसका और जोलोग अपनेअ
ज्ञानसेनारायणजीको जो इन्द्रादिक सबदेवतोंके मालिकहैं छो
ड़कर दूसरेदेवतोंकी पूजाकरते हैं उन्हें मूर्खसमझना चाहिये कि
सवास्ते कि हर्ष व शोचपरमेश्वरकी इच्छासेहोताहै बिनाइच्छा
नारायणजीके एकपत्ताभी वृक्षकानहीं हिलसका इन्द्रभीउन्हीं
की कृपासे इसपदवीको पहुँचाहै व जोबात बिधाताने सबकेकर्म
में लिखदिया वहीहोकर उसमेंतिलभर घटबढ़नहींसका सु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सम्पति व परिवारआदिकअच्छी वस्तुअपने धर्म व कर्म्मसेमिल
ता है व हालबर्षाका इसतरहपरसमझो कि आठमहीनेतक सूर्य
देवताजोजलपृथ्वीकासोखते हैं वहीजलचारमहीनेवर्षातमें वर्ष
कर उसीसे अन्न व घास आदिकसबउत्पन्नहोतेहैं व ब्रह्माने जो
चारवर्ण ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य व शूद्र संसारमेंबनायेहैं उनके
पीछे एककर्म्म इसतरहपरतगादियाहै कि ब्राह्मणवेद व विद्या
पढ़ैं व क्षत्रीसबकीरक्षाकरैं व वैश्यखेतीव्यापार व शूद्र इनतीनों
वर्णकीसेवाकरैं सोहोपिताहमारावर्ण वैश्यकाहै व हमारेयहांबहुत
सीगौइकट्ठीहैं व ब्रजगोकुलजन्मभूमिहमाराहै इसवास्तेगोप व
ग्वालहमलोगोंकानामपड़ा सो हमारायहकर्म्महै कि खेती व
व्यापारकरकेगौब्राह्मणकीसेवाकरैंववेद व शास्त्रकीभीऐसीआज्ञा
है कि अपनेवर्णकाधर्म न छोड़ैंजोलोग अपनाधर्मछोड़कर दूसरे
वर्णकाकर्मकरते हैं उनको ऐसासमझनाचाहिये जिसतरहकुल
वन्ती स्त्री अपनेपतिकोछोड़कर दूसरेपुरुषकेपासरहै सो हेनन्द
बाबा सुझबालककाकहनासचमानो तो आपलोगइन्द्रकीपूजन
छोड़कर गोवर्द्धनपहाड़ व गौब्राह्मण व बनकीपूजाकीजिये किस
वास्तेकि गोवर्द्धनपहाड़यहांकाराजाहैवइसपहाड़ व बनमेंचरनेसे
सबगौ व बछवेहमारेपालनहोतेहैं व उन्हींकादूध व घी आदिक
बेचनेसे हम्लोगोंकीजीविकाहोतीहै जो अपनीपालनकरै उसे
अपनाराजासमझकर पूजनाचाहिये इसवास्तेयहसबपकवान व
मिठाई आदिकभोबनाहै सो गोवर्द्धनपहाड़पर लेचलकर उनकी
पूजनकरो व सबपदार्थउन्हें भोगलगाकरगौ व ब्राह्मण व कंगालों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोखिलादेव और सालसेइससंवतमें अधिकवर्षाहोगी यहबचन केशवमूर्त्तिकासुननंद व उपनन्द व वृषभानआदिकपरमेश्वरकी इच्छासेयसन्नहोकर बोले ॥

दो० ताते सोई कीजिये कृष्ण कही जो बात। सबब्रजवासी पूजिये गोबर्द्धनउठिप्रात ॥

जबयहसम्मतआपसमें ठीकहोगया तबनन्दरायने गांवमेंढि ढ़ोरा पिटवादिया कि कार्तिकशुदीपरेवाको हमचलकर गोबर्द्धन पहाड़कीपूजाकरैंगे सोसबकोई पकवान व मिठाई व सामग्रीलेकर गौवोंसमेतचलना हेराजन् यहआज्ञानन्द व उपनन्दकीसुनकर सबलोग प्रसन्नहोगये व गोप व ग्वालोंनेअपने २ गौ व बछवेका अनेकरंगसे पूंछ व सींगचित्रकारीकरके गले में घंटाबांधदिया व कार्तिकशुदी परेवाको प्रातसमय ब्रजवासियों ने स्नानकरकेसब सामग्रीगाड़ी व बैलोंपरलदवालिया और सबस्त्री व बालकउत्तम उत्तमभूषण व वस्त्रपहिनकरनन्द व वृषभानकेसाथ बाजे बजा तेहुयेगोबर्द्धनपर्वतको पूजनेचले ॥

दो० माखनप्रभु अतिचावसों भूषणवस्त्रमँगाय। गिरिगोबर्द्धन लेचले गोधन सबे बनाय ॥
नन्दमहरउपनन्दसब श्यामरामदोउभाय। पहुँचेगोबर्द्धननिकट निरखिशिखर सुखपाय ॥
सो० उतरेसहितसमाज चहूंओरब्रजलोग सब। मध्यशोभित गिरिराजकोटि कामशोभासरस ॥

जबश्रीकृष्णजी कीआज्ञानुसारसब किसीनेपूजन गोबर्द्धन प हाड़कीधूप व दीपआदिकसे बिधिपूर्वककिया व इतनापकवान व मिठाई वहांइकट्ठाहुआ कि जिसकाढेरदूसरा पहाड़मालूमहोता था और अनेकरंगके माला व फूल व कपड़ेचढ़ानेसे शोभागो बर्द्धनपहाड़कीऐसी दिखाईदेतीथी जिसकावर्णनहींहोसक्ताउस समयमोहनप्यारेने ब्रजबासियोंसेकहा तुमलोगआंखेंबन्दकरके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ध्यान गोवर्द्धनजीकाकरो तो वहप्रत्यक्षदर्शन अपनादेकरभोजन करैंगे तब मुरलीमनोहरके कहनेसेनंदजीआदिक सबव्रजवासी हाथजोड़करखड़ेहोगये व आंखैंबन्दकरकेध्यान गोवर्द्धनपहाड़ काकिया तबश्यामसुन्दर अपनेएकचतुर्भुजीबिशालरूप अति सुन्दर व तेजमानसे उत्तम २ भूषण व वस्त्रपहिने गोवर्द्धनपहाड़ परप्रकटहुये उससमय अपने श्रीकृष्णरूपसेनन्दादिक व्रजबासि योंकोकहा तुम्हारीभक्ति व प्रीति सच्चीदेखकर गोवर्द्धनजी तुम लोगोंकोदर्शनदेनेवास्ते प्रकटहुयेहैं सो अच्छीतरहदर्शनकरो यह वचनसुनतेही व्रजबासियोंनेआंखखोलकर देखा तो उसस्वरूप केदर्शनपावनेसे बहुतप्रसन्नहुये व उनकोदण्डवत्करके आपस मेंकहनेलगे जिसतरहआज गोवर्द्धनजीनेदर्शनदिया इसतरह इन्द्रकादर्शनकभीनहींहुआ था नमालूमहमारेपुरुषे ऐसेप्रत्यक्ष देवताकी पूजनछोड़कर इन्द्रकोक्योंपूजतेथे॥

दो॰ कहेउ कृष्ण तब नन्दसों भोजनलेव मँगाय। गिरिआगे सब राखिकै अपौं विनय सुनाय॥

यहवचनसुनतेही गोप व ग्वालजल्दीसेपरात व थाली भोग की उठाकर उनकेनिकटलेगये तबगोवर्द्धननाथजी हाथफैला २ करभोजनकरनेलगे॥

दो॰ देखनको धायेसभी व्रजके नर अरु बाम। भयो देवता गिरिबड़ोताहि पुजावत श्याम॥
सो॰ बड़े महरउपनन्द नन्दआदि ठाढ़े सबै। कहतजो कछुनँदनन्द करत सकल सोई तहां॥
दो॰ इतहिनन्दको करगहे गोपिनसों बतलात। उतअपनी धरिचारभुज रुचिसों भोजनखात॥
सो॰ श्रीराधासुखपाय मुदितबिलोकतिश्यामछबि। भक्तनकेसुखदाय नितनवकरतबिनोदब्रज॥
दो॰ प्रीतिरीतिके भावसों भोजन सबकोखाय। होइप्रसन्न अतिनन्दसों तबबोल्यो गिरिराय॥
सो॰ खेवनन्द वरदान अबजो तुमहमसोंचहौ। मैं लीन्होसुखमान बहुतकरीतुम भक्तिमम॥
दो॰ नन्दगोप अरुनन्दसुत श्रीवृषभानु समेत। बारबार गिरिराजके चरणपरत अतिहेत॥
सो॰ करितबको सन्मान देप्रसादनिजहाथसों। सबनकही घरजान होइप्रसन्न गिरिराजतब॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० प्रकट देत हैं दरशगिरि सबकेआगे खात। परमहर्षनरनारि सबसबके मुखयहबात॥
सो० महिमाअमितअपार श्रीगोवर्द्धन अचलकी। जेहिपूजतकरतार शारदविधिनहिं कहिसकें॥

उससमयललितासखीने राधासेकहा यह सबलीलामनहरण प्यारेकी है जोदूसरास्वरूप अपनापहाड़में प्रकटकरकेपकवानव मिठाई चखतेहैं हे राजन् जबगोवर्द्धननाथजी भोजनकरकेअंत र्द्धानहोगये तबनंदजीने वहांहोमकरने उपरांतपरिक्रमाकरब्राह्म णोंको बहुतसासोना व गो आदिकदानदिया व पहिलेब्राह्मण व गो व कंगालोंको भोजनखिलाकर पीछेसे आपसबब्रजबासियों समेतभोजनकियाव श्रीकृष्णजीनेएकग्रासअपने हाथसेउठाकर खायासो ब्रह्मा व महादेव व विष्णुआदिक सबदेवता व तीनोंलोक केजीवोंका पेट भरगया॥

दो० माखनप्रभुहरिदेवहैं सबदेवनको मूल। मूलहिसींचे होतहैं हरषात फलफूल॥

हे राजन् उसदिनब्रजबासी रातको उसीजगहटिककर बड़ेआनं दसे रातभरगाते बजातेरहे दूसरेदिन उसीतरहआनन्दमचातेहुये गो व बछड़ेसमेतअपने घरआये उसीदिनसे अन्नकूटकी पूजासं सारमें प्रकटहुई॥

सो० खेलतनवनितख्यालभक्तपालनँदलालब्रज। दुष्टनकेउरसालसुरनरमुनिमोहित निरखि॥

पच्चीसवां अध्याय॥

गोवर्द्धन पहाड़को अपनी अंगुलीपर श्रीकृष्णजीका उठाना॥

शुकदेवजीने कहाहेराजन् जबउससालब्रजबासियोंने इन्द्रकी पूजानहींकी तबइन्द्रने जोश्यामसुन्दरकी महिमानहींजानता अपनेसभावाले देवतोंसेपूछाकल्हब्रजमें किसनेकौनदेवता की पूजाकियाहै यहवचनसुनकरकोई देवतावोलाब्रजवासी लोग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साल तुम्हारीपूजा करतेथे इससंवतमें कृष्णबालक नंदमहरके कहनेसे ब्रजबासियोंने तुम्हारापूजन छोड़कर गोवर्द्धन पहाड़को पूजाहै यहबातसुनतेही इन्द्रने क्रोधकरकेकहा ब्रजबासियों को धनअधिकहोनेसे अभिमानउत्पन्नहुआ जो उन्होंने हमारीपू जाकरना छोड़दिया इसलियेमैं उन्हें कालकेमुखमें डालकर द रिद्रीकरदूंगा कृष्णछोकड़ाजो हमाराशत्रुहै उसकेकहनेसे ब्रजबा सियोंने मेराअपमान किया सो मैं उसबालककागर्व तोड़देता हूं आजतक ब्रजबासियोंका मैं मालिकथा अबउन्होंने कृष्णको अ पना स्वामी समझाहै॥

दो॰ ऐसे सुरपति क्रोधकरि मनमें गर्व बढ़ाय। प्रलयकाल के मेघसब लीन्हें तुरत बुलाय॥

जब मेघोंकाराजा डरता व कांपता इन्द्रकेपासआनके हाथ जोड़कर खड़ाहुआ तबइन्द्रने उसेआज्ञादिया तुमइसीसमय सब मेघोंकोसाथलेकर ब्रजमण्डलपरजाव व इतनापानी व पत्थरबर सावो जिसमें सबब्रजवासी गोवर्द्धनपहाड़समेत बहजावें॥

दो॰ और ठौर सबछांड़िकै ब्रजमहं बरसोजाय। ब्रजबासी गोधन सहित जलसें देवबहाय॥

व इन्द्रने उनचासोंपवनको भी मेघोंकेसाथकरदिया जिसमें सरदी व पानीसे कोई जीतानबचै यहआज्ञापातेही मेघराजा उन चासोंपवनसमेत बड़े २ मेघोंको साथलेकरब्रजमण्डलपरचढ़दौ ड़े उनके आतेही आंधीचलने व बदलीछाजानेसे वृन्दावनमें अँ धियाराहोगया व घड़ेकेसमान बूंदबरसंकर बिजुलीचमकनेलगी सवायआंधी व पानी व बिजुलीके और कुछ वहां दिखलाईनहीं देताथा तबकेशवमूर्त्तिने हँसकर बलरामजीसे कहा देखो इन्द्रअ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पनीपूजा न पावनेसेक्रोधकरके महाप्रलयकापानी बरसाताहैयह क्रोधउसका हमारेसाथ समझनाचाहिये किसवास्ते कि मेरेकहने से ब्रजबासियोंने उसकीपूजा छोड़कर गोबर्द्धनपहाड़को पूजाथा इसलिये उसका गर्ब तोड़ना उचितहै और यहदशा देखकर नन्द व यशोदा आदिक सबब्रजबासी घबरागये॥

दो० देखिदेखि ब्रजकीदशा नन्दमहर पछितात। कियो निरादर इन्द्रको मनमें बहुत डरात॥
सो० श्यामराम दोउभाय लिये निकट शोचतमहर। जुरे गोपतहंआय मनहींमन मुसुकातहरि॥

हे राजन् जबसबब्रजबासी ऐसेप्रलयके पानी बरसनेसे मारेसरदीकेबहुतदुःखीहुये तबभीजते व कांपतेहुये श्यामसुंदरकेशरणमें आनकर पुकार २ कहनेलगे हे गोकुलनाथ इसप्रलयकेपानीसेहमाराप्राणबचाइये व तुमने इन्द्रकीपूजा छुड़वाकर हमलोगोंसेगोबर्द्धनपहाड़को पुजायाइसीवास्ते इंद्रक्रोधकरके महाप्रलयकापानी बरसाताहै अबजल्दी गोबर्द्धनपहाड़को बुलाओ जो आनकर इसपानीबरसनेसे हमारीरक्षाकरै नहीं तो एकक्षणमें सबमनुष्य गौवोंसमेत डूबकर मरनेचाहते हैं॥

दो० जबजबगाढ़परीहमें तबतुमलियो उबार। यहि अवसर अबराखियो मोहननन्दकुमार।
सो० ब्रजजनके सुखदानि देखि बिकल ब्रजलोग सब। हंसिबोले तबकान्ह धरौधीरउरडरौमत॥

तुमलोग अपनी २ वस्तु व गो व बछवाआदिक अपनेसाथलेकर गोबर्द्धनपहाडकेपास चलो वहतुम्हारीरक्षाकरके इन्द्रका अभिमान तोड़देंगे जबश्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार सबब्रजबासी अपनी अपनीवस्तु व गो वं बछवासमेत गोबर्द्धन पहाड़के निकट गये तबब्रजनाथजीने पीताम्बरकीकछनी बांधकर मुरलीकमरमें खोंसलिया व गोबर्द्धनपहाड़को अपने बायेंहाथकीकानीअंगुल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परफूलके समानउठालिया और सबब्रजबासी व गो आदिक को उसकीछायामें खड़ाकरके सुदर्शनचक्रको आज्ञाकी कितुमचारों ओरइसपहाड़के फिरतेरहो जितनापानीबरसै सबअपनेप्रकाशसे सोखतेजाव जिसमेंपृथ्वीपरएकबूंदपानी न गिरै वैसाहीसुदर्शन चक्रनेकिया उससमयसबब्रजबासी केशवमूर्त्तिकी प्रभुतादेखकर आपसमेंकहनेलगे श्रीकृष्णजीपरमेश्वरका अवतारमालूमहोते हैं नहीं तो मनुष्यकीसामर्थ्यनहींहै जोपहाड़को फूलकेसमानअँगुलीपर उठानेसकै व श्यामसुन्दरपहाड़उठायेहुये मधुर २ शब्द से मुरलीबजाकर सबकोप्रसन्नकरतेथे जिसमेंकोई घबरावेनहीं व यशोदाअपने प्राणप्यारेके प्रेममेंघबड़ाकर नन्दजीसेकहती थी तुमनेअपनेअज्ञानसे इंद्रकापूजनछोड़करगोबर्द्धनपहाड़कोपूजा या अभीकहीं पहाड़मोहनप्यारे परागिरपड़ै तो क्याकरूंगी ॥

दो० दाबति भुजा यशोमतिमैया । बारबार मुखलेत बलैया ॥
लखिपहाड़मन अतिदुखपावै । पुनिपुनिगोबर्द्धनहि मनावै ॥
नाथआपनो भार सँभारी । करियो कान्हाकी रखवारी ॥
पयपकवान मिठाई मेवा । बहुरि पूजिहौं तुमको देवा ॥

फिर यशोदाने बलरामजीसेकहाकन्हैया तुम्हारीसहाय किया करताथा इससमयतुमभी कुछउसकीसहायताकरो इसतरहनन्दरानीअपनेकुलदेवता व परमेश्वरकोबारम्बारदण्डवत्करके यहमनावतीथीजिसमेंमनहरणप्यारेकोपहाड़उठावनेमेंदुःखनपहुँचै॥

दो० माखनप्रभुके कारणे जायवारनो माय । ताके मनकी कल्पना केहिविधिवर्णी जाय ॥

जबश्यामसुन्दरने अपनीमाता व पिताको दुःखीदेखातबउनको धैर्य्यदेनेवास्ते यह उपायकिया ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ० कहेउ नन्दसों निकट बुलाय। तुमहूं सबामिलिकरो सहाय॥
लैलै लकुट राखिगिरि लेहू। मतराखो उर में सन्देहू॥
गोवर्द्धनगिरि भये सहाय। आपकहेउ मोहिं लेहु उठाय॥

दो० यहसुनिजहँतहँ गोपसबरहेलकुटगिरिलाय। कहतश्यामतबनन्दसों भलोलियोउचकाय॥
सो० ठाढ़ेढिगबलराम देखिदेखिलीलाहँसत। कौतुकनिधिसुखधाम करतचरितसन्तनसुखद॥

उससमय गोपियांहँसीकीराह मोहनप्यारेसे कहतीथीं तुमनेस
ध्या सवेरेबहुतसादूध व माखनआदिकहमाराचुराकर खायाथा
उसीकेबलसे इतनाभारीपहाड़ उठायाहै सो आजवहदूध वमाख
न तुम्हाराखानासुफल हुआ॥

चौ० श्रीवृषभानु सुतातहँ आई। कुँवर कान्हके अतिमनभाई॥
गोरअंगसुन्दर सुकुमारी। श्यामसंग खेलत नितप्यारी॥
सुनतबोल हँसिउठे मुरारी। तबहीं डोलगयो गिरिभारी॥
नरनारिनको अतिभयभाई। धाइ छिपाय राधिका लाई॥

जबब्रजबाला पहाड़गिरनेकेडरसे राधिकाकोपकड़करकीर्त्ति
उसकीमाताके पासलेगईं तबकीर्त्तिने उसपर क्रोधकरके उसेअप
ने पासबैठालरक्खा व फिरकेशवमूर्त्तिकेपासनहींजानेदिया शुक
देवजीनेकहा हेराजन्इधर श्यामसुन्दर पहाड़कोउठाकर ब्रजबा
सियोंकी रक्षाकरतेथे व उधरराजामेघ मूशलधारपानी व पत्थर
बरसाताथा व बिजलीचमकने से आंखसबकी ढपजातीथी व सु
दर्शनचक्र इसफुरतीसे चारोंतरफगोवर्द्धन पहाड़केघूमकर सबपा
नीको अपनेतेजसे सोखलेताथा कि एकबूंदपृथ्वीपर नहींगिरता
था राजाइन्द्रयहहाल सुनकर आपभी मेघराजको सहायताकर
नेवास्ते चढ़आया व उसीतरहसातदिन व सातरातपानी बरसता
रहापर किसीजीवको कुछदुःखनहींहोकर सबकोई आनन्दसे गो
वर्द्धनपहाड़के नीचेघरकीतरहबैठरहे व श्यामसुंदरहरसाइत प्रे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूर्वकगोप व गोपियोंसेपूछतेथे कि हमारेमाता व पिता व सखा लोगकिसतरहहैं कुछशोचनकरैं वहलोगउत्तरदेतेथे कि सबकोई तुम्हारीकृपा व दयासेआनन्दपूर्वकरहकरपानी व बदलीकाकौतु कदेखतेहैं सातदिनतकहरसाइत सबब्रजबासी केशवमूर्त्तिका अ मृतरूपी मुखारबिन्दआंखोंसेपीतेथे इसलिये किसीकोकुछभूख वप्यासनहींलगी जबमेघराजाकासबपानीचुकगया तबउननेयह हाल इन्द्रसेकहावहमेघराजाकीबातसुनतेही इन्द्रबहुतलज्जित होकर उनलोगोंसमेत अपनेस्थानपरचलागया जब इन्द्रनेयह सबहालदेवतोंसेकहा तबदेवते बोले॥

दो० तुमजानतप्रभुभूमिजब दुखितपुकारीजाय। कहेउलेनअवतारतब सोइबिहरत ब्रजमाय॥
लो० कहेउइन्द्रपछताय मैंभूल्यो जान्योनहीं। कीन्हीं बहुताढिठाय भयकरिमन व्याकुलभयो॥

हे राजन् देवतोंकावचनसुनने व ऐसी २ महिमा श्रीकृष्णाजी की देखनेसे इन्द्रकोविश्वासहुआ कि नन्दलालआदिपुरुषका अवतार हैं नहीं तो दूसरेकोक्यासामर्थ्यथी जो पहाड़को अपनी अंगुलीपरउठाकर ब्रजमण्डलकीरक्षाकरता ऐसाविचारकर इंद्र अपनेकर्त्तबसे शोचकरकेपछतानेलगा व जब मेघोंकेचलेजानेसे वर्षा बन्दहोकर धूप निकलआई तबब्रजबासी बोले हे ब्रजनाथ तुम्हारेडरसे सबमेघराजाभागगये अबगिरि अपनीअंगुलीपरसे उतारदीजिये यहवचनसुनकर मोहनप्यारेने गोबर्द्धनपहा[illegible] उसीस्थानपररखदिया उससमय देवतोंने आकाशसे उनपरफूल बरसाये व अप्सरोंने अपनेविमानोंपरसे नाचदिखलाकर गंधर्वों गानासुनाया और ऋषीश्वरोंनेस्तुतिकिया व यशोदाने केशव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मूर्त्तिकोगोदमेंउठाकर बड़ेप्रमसेमुख उनकाचूमलिया व उनका हाथ व अंगुलीबारम्बार मलकरचटकानेलगी व रोकरअपनेप्राण प्यारेसेपूछा हे बेटा सातदिनतकपहाड़ अंगुलीपरउठावनेसे तेरा हाथदुखताहोगा तब नन्दलालजीबोले हे मैया गोबर्द्धनपहाड़ अपनीप्रसन्नता से तुमलोगोंकीरक्षाकरनेवास्ते छायाकिये रहा मैं तो अपनीअंगुलीकाथोड़ासाआश्रयदिये था इसकारणमेरा हाथकुछनहींदुखता व श्रीदामाआदिक ग्वालबालोंने मोहन प्यारेसेगलेमिलकरपूछा हे भाई ऐसेकोमलहाथपर तुमनेकिस तरहपहाड़ उठाया हमेंबड़ा अचम्भामालूमहोताहै श्यामसुन्दर बोले तुमलोग जो अपनी २ लकुटियासेपहाड़ को उचकाये थे इसलिये मुझे उसकाकुछ बोझानहींमालूमदेताथा व सब ब्रज बाला मोहनीमूर्त्तिकी महिमादेखकरबहुतप्रसन्नहुईं व उसीदिन से श्रीकृष्णजीकानाम गिरिधारीप्रकटहुआ और उससमयनन्द किशोरने ब्रजबासियोंसे कहा॥

दो० अबगिरिको पूजोबहुरि सबसे कहेउसुनाय। बूड़ततेराख्यो ब्रजहि कीन्ही बहुतसहाय॥
लो० यहसुनहर्षबढ़ाय फिरिपूज्योगिरिकोसवन। अतिहर्षितनँदराय दियोदान विप्रनबहुत॥
दो० दूरभयोदुख शोचसब प्रकटे तब आनन्द। नन्दसंग घरकोचले माखन प्रभु ब्रजचन्द॥

नन्दजीश्याम व बलराम व सबब्रजबासी व गायोंसमेतआनन्दपूर्वक अपने २ स्थानपर आये॥

दो० घरघरब्रज आनन्दसबगावतमंगलचार। आयेसुरपति जीतिहरि गिरिधरनन्दकुमार॥

छब्बीसवां अध्याय॥

ब्रजबासियोंका श्यामसुन्दरकी स्तुतिकरना॥

शुकदेवमुनिनेकहा हेराजन् जबनन्दलालजीने गोबर्द्धनपहाड़ उठाकर ऐसीमहिमा अपनीदिखलाया तबसबगोप व ग्वालआ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इचर्यमानकर आपसमेंकहनेलगे उठावनापहाड़का जिसतरहहा
थी कमलकेफूलको उठालेवे मनुष्यकाकामनहींहै सो आठवर्ष
की अवस्थामें नन्दकिशोरने इतनाभारीपहाड़अपनी अँगुलीपर
उठाकर सातदिनबराबर खड़ेरहे यहपरमेश्वरका अवतारमालूम
होते हैं जिन्होंने महाप्रलयके जलबरसनेसे ब्रजबासियोंका प्राण
बचाया इनकोहमलोग किसतरह नन्दजीकापुत्रकहैं लड़काअप
ने माता व पिताकेस्वभावपर उत्पन्नहोताहै सो नंद व यशोदामें
ऐसापराक्रमनहींहै जो श्रीकृष्ण ऐसाप्रतापीपुत्रउनसे उत्पन्नहो
इससेमालूमहोताहै कि यशोदासेकिसीदेवता या दैत्यनेभोगकि
याहोगा इसलिये ऐसाबलवान् व प्रतापीपुत्र उसकेउत्पन्नहुआ
है नन्दरायकेवीर्यका यहबालक नहींमालूमहोता सो नन्द व य
शोदाको जातिसे बाहरकियाचाहिये ऐसाविचारकर उपनन्दआ
दिक सबग्वालइसबातकी पंचाइतकरनेवास्ते नन्दजीकेस्थानपर
गये व उसमेंजोलोगबड़ेथे उन्होंने पहिलेनन्द व यशोदासे बहुत
स्तुतिकेशवमूर्त्तिकी करकेकहा हेनन्दराय श्रीकृष्णपरमेश्वरकी
कृपासेसर्वदाअमररहैं जोबिपत्तिमेंहमारीरक्षाकरतेहैं परन्तुतुम्हारे
पुत्र यहहमकोनहींमालूमहोते किसवास्ते किजबयहबहुतछोटेथे
तबइन्होंने पूतनाराक्षसीको दूधपीतीसमयमारडाला व एकवर्ष
की अवस्थामें तृणावर्त्तकोमारगिराया और जबयशोदाने इनको
ऊखलसेबांधा तबइन्होंनेयमलार्जुनदोनोंवृक्षजड़से उखाड़डाले
व वत्सासुर व बकासुर व अघासुरराक्षसकोमारकर कालीनागको
यमुनाजलसे बाहरनिकालदिया व धेनुक व प्रलम्बराक्षसकोमा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रकरब्रजबासियोंको अग्निमेंजलनेसे बचाया व इतनाभारीपहा
ड़ कुकरौंधेकेसमान पृथ्वीपरसे उखाड़कर अपनीअँगुलीपर उठा
लिया व महाप्रलयकेजलसे ब्रजबासियोंकी रक्षाकरके इन्द्रका
अभिमान तोड़ा व जितनीप्रीतिमोहनप्यारेकी हमलोगोंकोरहती
है उतनीहमें अपनेप्राण व बेटी व बेटेमेंनहीं यहसबआश्चर्यकी
बातें देखनेसे हमलोगोंको उत्पन्नहोना श्यामसुन्दर का तुम्हारे
वीर्यसे विश्वासनहींआता सो तुमसचबतलाओ यशोदानेकौन
देवता या दैत्यकेवीर्यसे उनकोउत्पन्नकियाहै जो वहऐसेप्रतापी
बलवान् परमेश्वरकेअवतारसमान होकरलीलाकरतेहैं नहीं तो
हमलोग तुम्हें जातिसेबाहर निकालदेवेंगे ॥

दो० मालिक तीनोंलोकके तुम्हरोपुत्र न होय । जन्ममरणजाको नहीं माखनप्रभुहैं सोय ॥

यहवचनअपने जातभाइयोंका सुनतेहीनन्द व यशोदानेघब
राकरकहा सुनो भाइयो श्रीकृष्ण मेराबेटाहै इसमेंकुछसन्देह मत
समझो परजोहालगर्गजीमथुरासे आनकरकहगयेहैं उसमेंएकबा
त मैंने छिपाईथी सो आजकहताहूं गर्गमुनिने केशवमूर्त्तिकेनाम
कर्णके समय ऐसाकहाथा कि तुमइन्हें अपनाजनाहुआ मत
समझो तुम्हारेपिछलेजन्मकेतपकरने से परब्रह्मपरमेश्वर अव
तारलेकरयहांआयेहैं प्रतिदिन अपनीलीलायह तुमकोदिखला
वेंगे यहसबबातें अबहमको आंखोंसेदिखलाई देतीहैं सो मैं भी
बिश्वासकरकेजानताहूं कि मेरा बेटा परमेश्वरका अवतारहै कि
सवास्ते कि जो जो कामश्यामसुन्दरनेकियेहैं वहमनुष्यनहींकर
नेसक्ता व इन्होंनेजन्म व मरणसेरहितहोकर केवलपृथ्वीकाभार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उतारने व हरिभक्तोंको सुखदेनेवास्ते अपनीइच्छासे अवतार लियाहै व जन्म व मरणतीनोंलोकजीवोंकायह अपनेअधीन रखतेहैं व गर्गजीनेयहभीकहाथा किएकबेरइन्होंने बसुदेवजीके यहांजन्मलियाहै इसलिये इनकानामवासुदेवभीप्रकटहोगाऔर यहशोच व दुःख गोपग्वालोंकानिवारणकरैंगे जो कोई इनका दर्शनकरैगा या इनकीलीला व नामकाचर्चा आपसमें रखकर इनकेचरणोंमें ध्यानलगावेगा उसे निस्संदेह मुक्तिमिलैगी॥

दो० माखनप्रभु घनश्यामको जो चितधरिहैं नाम। प्रेमभक्तिके धाममें नितकरिहैं बिश्राम॥

पिछले युगोंमेंइनकारंगश्वेत व ललितथा इसबेरश्यामरूप से इन्होंने अवतारलियाहै जबयहबातसुनकर ब्रजबासियोंकेमन कासंदेहमिटगया तबउन्होंने श्रीकृष्णजीकोआदिपुरुषजानकर बड़ीभक्ति व प्रीतिसे उनकीपूजाकी व बड़ाईभाग्यनंद व यशोदा कीकरनेलगे और आगे जो जो बातश्यामसुन्दरकी बालकलोग कहतेथे वहाकिसीकोबिश्वासनहींहोताथा सो उनबातोंको सबोंने सचजाना॥

दो० जो माखनप्रभुकी कथा कहै सुनै दे चित्त। प्रेम नेमको पद लहै रहै क्षेम सों नित्त॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

इन्द्र का श्रीकृष्णजीकी शरण में आना॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित इन्द्रनेश्यामसुन्दरकेसाथ ढिठाई करनेसे बहुतलज्जितहोकर मनमेंकहादेखो मैंने क्याबुराकाम किया जोपूर्णब्रह्मको मनुष्यसमझकर उनसेबैरबढ़ाया अब वहां चलकरउनसे अपनाअपराधक्षमाकराऊं जिसमेंमेराकल्याणहो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसाविचारतेही राजाइन्द्र ऋषीश्वरोंकोसाथलेकर ऐरावतहाथी
परचढ़ा व अपनाअपराधक्षमाकरानेवास्ते कामधेनुगोको आगे
लियेहुये वृन्दाबनकोचला जबनंदलालजी अन्तर्यामीने जो
बनमेंगोचरातेथे जाना कि इन्द्रअपनाअपराधक्षमाकरानेवास्ते
देवतोंसमेतमेरेपास आवताहै तब ग्वालबालोंसेअलगहोकर एक
ओरबनमेंजाबैठे जबराजाइन्द्रने वहांआनकर मुरलीमनोहरको
दूरसे बैठेदेखा तबहाथीपरसे उतरपड़ा और देवताँकोसाथलिये व
कामधेनुकोआगेकियेनंगेपावँगलेमेंदुपट्टाडाले व दांतोंमें तिनुका
दाबेसाष्टांग दण्डवत्करता व कांपताहुआ श्रीबृन्दाबनबिहारीके
चरणोंपरजाकरगिरपड़ा व बड़ीअधीनतासेरोकरविनयकियाहेदी
नानाथनिरंजन व निरंकारमेरीहजारोंदण्डवत् आपकोपहुँचैं मैंने
अपनीअज्ञानतासे आपकोमनुष्यसमझकरतुम्हारीपरीक्षालीथी
सो अपनेकियेकोपहुँचा जिसतरहअज्ञान बालकशीशेमें अपनी
परिछाहीं देखकर उसेपकड़नेचाहताहै व धरनहींसक्ता उसीतरह
जो कोई तुम्हराभेदजानाचाहै उसे अज्ञानबालककेसमान सम
झनाचाहिये वहीहालमेराहुआ जहांब्रह्मा व महादेवआदिकदेव
ते व ऋषीश्वर तुम्हारेभेद व बड़ाईकोपहुँचनेनहींसक्ते वहांमेरी
क्यासामर्थ्यहै जो आपकीमहिमाजाननेसकूं मैंने राज्य व धनके
अभिमानसे अन्धाहोकर ब्रजबासियोंकाप्राणमारनेवास्ते महा
प्रलयकापानी ब्रजमण्डलपरबरसायाथा सो आपनेगोबर्द्धनपहा
ड़ उठाकर उनलोगोंकी रक्षाकिया व मेरे अहंकारको तोड़दिया
मैंनेअपनेकर्तवसे बहुतलज्जितहोकर अपनाअपराधक्षमाकरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वास्ते कामधेनुगोकेपीछे २तुम्हारीशरणआयाहूं सो हेब्रजनाथ मुझअज्ञानका अपराधदयाकरकेक्षमाकीजिये किसवास्ते कि आपसबकेईश्वर व गुरु व परमात्मा हैं सिवायतुम्हारेदूसरा कोई मालिक तीनोंलोकमेंनहींहै व ब्रह्मा व महादेवभी तुम्हारीदीहुई बड़ाईपाकरदिनरात आपकेचरणोंकाध्यान अपनेहृदयमेंरखते हैं व आपसबजगत्के पिता व उत्पन्न व पालनकरनेवाले होकर लक्ष्मीजी तुम्हारेचरणोंकीदासी हैं और आपनेवास्ते भारउतार नेपृथ्वी व रक्षाकरनेहरिभक्त व मारने दुष्ट व अधर्मियोंके अपनी इच्छासे अवतारलियाहै और जब जबपृथ्वी अधर्मीलोगोंकेपाप करनेमें दुःखीहोती है तबतब आपसगुणअवतारलेकर पृथ्वीका भारउतारतेहैं और मैंभी आपकीकृपा व दयासेदेवलोकराजा हुआ हूं पर तुम्हारेभेदको नहींजानता दूसरेकी क्यासामर्थ्य है जो तुम्हारीमहिमाजाननेसकै और यह अपराधमेराबड़ा दण्ड करनेयोग्यहै पर आप ऐसेदीनदयालुहैं कि जो मनुष्यतुम्हारी शरणमेंआया वहकैसाही अपराधकियेहोक्षमाकरदेतेहो व दूसरे ऋषीश्वरोंका अपराधकरनेवाला अपनेदण्डकोपहुंचताहै मुझे इसअपराधनेभी तप व जपकाफलदिया जिसकेकारण तुम्हारे चरणोंकादर्शनपाया दयाकरकेमेराअपराध क्षमाकीजिये॥

सो० कहतविहारीवार तुमगति अगम अगाधप्रभु। मैंभूल्योंसंसार जान्यो ब्रज अवतारनहिं॥
दो० माखनप्रभु सन्मुखभये सदासबै सुखहोय। जो यहसुखसेहै बिमुख भवदुखपावे सोय॥

व कामधेनु गोनेमुरलीमनोहरकेसामने हाथजोड़कर विनय किया हे कमलनयनमैं ब्रह्माकीभेजीहुई तुम्हारेपासआईहूं सो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छोटोंका अपराधबड़ेलोग सदासेक्षमाकरतेआये हैं सो आपदीन दयालु कृपालुहोकर इन्द्रकाअपराध जो तुम्हारीशरणआया है क्षमाकरदीजिये व तीनोंलोकमेंकिसेसामर्थ्यहै जो तुम्हारेभेदको पहुँचनेसकै और आपसबगौ व जीवोंकेमालिकहैं इसलिये मैं अपनेदूधसे तुम्हैं स्नानकरानेआईहूं व ऐरावतहाथी अपनीशुंड में आकाशगंगाकाजलभरकर तुम्हारेस्नानकरानेवास्ते लायाहै आज्ञाहोतो स्नानकरावैं जबराजाइन्द्र व कामधेनुनेबड़ी आधी नतासेयहस्तुति गिरिधरमहाराजकीकिया तबकृपानिधाननेदया नुहोकरकहा हेइन्द्र तू कामधेनुगौको अपनेआगे लेकरहमारी शरणआया इसलिये मैंने तेराअपराधक्षमाकिया सुनो अभि मानकरनेसेधर्मछूटकर शरीरमेंअज्ञानआवताहै व मूर्खताईकरने से पीछेसिवायदुःखके सुखनहींमिलता व मनुष्यलोग थोड़ासा भी हाकिमी व धनपावनेसे अपनेकोभूलजातेहैं तुमतो अर्बखर्ब से अधिकधन व इन्द्रासनका राज्यरखतेहो तुमने ऐसाकिया तो कौनबड़ीबातहै और मैंने दयाकीराहराज्य व धनका अभिमान तोड़नेवास्ते तेरायज्ञबन्दकराके गोवर्द्धनपहाड़को पुजवायाथा जिसपर मेरी कृपाहोतीहै उसकाअहंकार मैं तोड़देताहूं॥

दो० व्याकुलदेखि सुरेशअति दीनबंधुयदुराय। अभयकियो करमाथधरि भुजगहिलियोउठाय॥
सो० लीनो हृदयलगाय देखिदीनता इन्द्रकी। शिरनाहिं सकतउठाय बारबार परसत चरण॥

जब केशवमूर्त्तिनेइंद्रकामस्तक अपनेचरणपरसेउठाकर उस कोबहुतधीर्यदिया तबइंद्रनेप्रसन्नहोकर विनयकिया॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० धन्यबडाई नाथकी हों अनाथ भ्रमसाथ। कमल हाथप्रभु माथधरि कीन्हों मोहिंसनाथ॥

फिर कामधेनु गायने अपनेदूध व ऐरावतने गंगाजलसे श्री कृष्णजीको स्नानकराया व राजाइन्द्र ने चरणउनकाधोकर चरणामृतलिया व पूजाउनकी धूपदीप नैवेद्यआदिकसे बिधिपूर्वक किया व कामधेनुने मनहरणप्यारेको गोबिन्द नामपुकारकरचौदहों भुवनका राजाकहा उससमय देवतोंने श्यामसुन्दरपर फूल बरसायेवनारदमुनिआदिकऋषीश्वरोंनेप्रसन्नहोकरस्तुतिकिया व अप्सरोंनेअपने २ बिमानोपर नाचदिखलाकर गन्धर्वोंनेगाना सुनाया व सबपृथ्वीमें फूललगकरयमुनाजल प्रसन्नतासे लहरानेलगा उससमयतीनोंलोकमें इसतरहका आनन्दहोगयाजिसत रहश्यामसुंदरके अवतारलेनेकेसमय चौदहोंभुवनमें खुशीहुईथी व पूजाकरनेउपरांतजबइंद्रबैकुंठनाथके सामनेहाथजोड़करखड़ा हुआ तबगिरिधारी महाराजने इन्द्रसेकहा तुमकामधेनुगौसमेत अपनेस्थानपरजाव फिरकभी मेरीलीला व कामोंमेंअपनाप्रवेश मतकरना सो इंद्र व कामधेनु व ऐरावतहाथी व देवताव ऋषीश्वर आदिक सबलोग केशवमूर्त्तिको दण्डवत्करके अपनेस्थानपर चलेगये॥

दो० माखन प्रभुके अंगपर वारतकोटि अनंग। सहसनयन देखतचले कामधेनु केसंग॥

जबवृन्दाबन बिहारीइन्द्रको बिदाकरके संध्यासमयग्वालबाल व गौवोंसमेत मुरलीबजाते व मधुर २गावतेहुये अपनेघरआये तबनन्द व यशोदा व गोपियोंने मोहनीमूर्त्तिकी छबिदेखकरअपनीआंखैंठंढीकियाहेराजन्यहगोबिन्दअभिषेककीकथासुननेसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अर्थ धर्मकाममोक्षचारों पदार्थमिलते हैं औरग्वालबालोंकोइन्द्र के आनेकाहालकुछनहींमालूमहुआ॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णजीका वरुणलोकमें जाना॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् कार्त्तिकशुदीदशमीको नन्दजी नेसन्ध्याकरके एकादशीव्रतनिर्जलरक्खा सो दिनभरपूजा व भजनमें विताकररातकोजागरणकिया दूसरेदिन केवलएकघड़ी द्वादशीथी इसलियेपारणकरनाव्रतका द्वादशीमें अवश्यजानकर पहररातिरहेनन्दजीउठे व उसीसमयअकेले यमुनास्नानकरनेचलेगये जब यमुनाजलमेंस्नानकरनेपैठे तब जलकीरखवारी करनेवालोंनेजाकर वरुणदेवतासेकहा महाराजएकमनुष्य यमुनाजलमेंनहाताहै यहबातसुनतेही वरुणनेआज्ञादिया उसेजाकर पकड़लावो सोदूतलोगनन्दजीको यमुनाजलमें जपकरते हुये नागफांसमें बांधकरलेगये उससमयनन्दजीनेश्याम व बलरामकानामलेकर बहुतपुकारा पर उन्होंनेकुछनहीं माना॥

दो॰ जलके नीचे ठांवहै जहांवरुणको बास। माखनप्रभुके तातको लैराख्यो तिनपास॥

जबनन्दजी वरुणदेवताकेपासपहुंचे तबवरुणउनको बैकुण्ठनाथकापितापहिचानतेही यहसमझकरबहुतप्रसन्नहुआ कि श्रीकृष्णजीअन्तर्यामी अपनेपिताकोलेनेवास्ते अवश्ययहांआवेंगे तो इसीबहाने उनकादर्शनमिलैगा ऐसाबिचारकर बरुणदेवताने नन्दजीको अपनेमहलमें लेजाकरसन्मानपूर्वक बैठाला व एक सिंहासनबहुतउत्तमश्यामसुन्दरकेवास्ते बिछाकरउनकेआनेकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आशा देखनेलगा व बरुणकीस्त्रियोंने नन्दरायकी स्तुतिकरके कहा हे नंदजीतुम्हाराबड़ाभाग्य है जोसच्चिदानंदपरमेश्वरतुम्हारेपुत्रकहलाते हैं यहां तो नंदरायकाआदरभाव देवकन्याकरती थीं और वहांजबनंदजीस्नानकरके घरनहींआये तबयशोदा ने घबराकर ग्वालोंको उनकीसुधिलेनेवास्ते यमुनाकिनारे भेजा जबग्वालोंने उनकोवहां न देखकरधोती व झारीउनकी उठाला ये तबयशोदा रोकरकहनेलगी रातकोनहातेसमय कोई घड़ियाल आदिक उनकोखागयाहोगा ॥

दो० अतिव्याकुलयशुमतिभई उठीरोयअकुलाय। सुनिधाये ब्रजलोगसब नन्दहिखोजतजाय॥
सो० यमुनातटपुनिगांव नन्दनन्दटेरतसबै। ढूंढ़िफिरे सबठांव भयेबिकल ब्रजलोगसब॥

हेराजन् जबग्वालोंकेढूंढ़नेपरभी नन्दजीकापताकहीं न लगा तबयशोदा व रोहिणीआदिक अतिबिलापसे रोनेलगीं उससमय श्यामसुंदरने यशोदासेकहाअयमैया तू मतरोमैं अभीजाकरनंद बाबाकोढूंढ़लाताहूं जबउनकेकहनेसेयशोदाआदिककोकुछधीर्य हुआ और बैकुण्ठनाथ अन्तर्य्यामीने जाना किनंदजीको बरुण देवताकेदूतपकड़लेगयेहैं और बरुणमेरेदर्शनोंकी इच्छासेनंदजी को बैठालेहैं तबबरुणलोकमेंचलेगये उससमयमुखारबिंद उन कासहस्र सूर्यकेसमानचमकनेलगा जब बरुणदेवताने श्रीकृष्ण जीकोआतेदेखा तबदेवता व ऋषीश्वरोंसमेतदण्डवत्करताहुआ आगेसेगया और राहमेंपीताम्बर बिछावताहुआ बड़ेआदरभावसे अपनेघरलिवालाया वरत्नजड़ितसिंहासनपर बैठाकरचरण उन कोधोया व चरणामृतलेकर बिधिपर्वक उनकीपूजनकिया ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० धूपदीप नैवेद्यकरि प्रभुपर पुष्पचढ़ाय । करी आरतीप्रेमसों घंटा शंख बजाय ॥
सो० प्रभुपद नायोमाथ करिप्रदक्षिणा दण्डवत । तुम त्रिभुवनकेनाथ जोरिहाथ स्तुतिकरत ॥

हे महाप्रभु आजमेराजन्मसुफलहुआ जो आपनेदयाकीराह कृपाकरके अपनेचरणोंकादर्शनादिया व इसीलाभवास्ते मैं नंद जीको अपनेयहांबैठालेरहा नहींतो उसीक्षणउनको स्थानपरपहुं चादेता हमलोग आपको तीनोंलोकका पिताजानकर तुम्हारा बापकिसीकोनहींसमझते मेरेदूतनंदजीकोनहातेसमय अनजान मेंयहांपकड़लायेथे सो उन्होंनेदंडपानेयोग्य अपराधकिया पर मैंने उनकाबहुतगुणमाना जिसकारण आपकादर्शन मुझेप्राप्त हुआ मेरीदण्डवत् आप व नंदरायको पहुंचै ॥

सो० मैं कीन्हों अपराध सो प्रभुउरनाहिं लाइये । तुमहो सिंधुअगाध क्षमाकरो निजजानिजन ॥

वबरुणकीस्त्रियोंनेदण्डवत् करनेउपरांतहाथजोड़कर मुरली मनोहरसेकहा नंदवयशोदा व ब्रजबासियोंकाबड़ाभाग्यहैजिन केयहांपरब्रह्मपरमेश्वर लीलाकरते हैं ब्रजगोकुलकीबड़ाई कोई वर्णननहींकरसका फिर बरुणदेवता नंदराय को श्यामसुन्दरके पास लेआये तब वहउन्हें देखतेहीप्रसन्नहोगये ॥

सो० हर्षउठे नँदराय देखि श्यामको शिशुवदन । लाखिउनकी प्रभुताय रहेमुदित चकितहिये ॥

जब नंदजीनेमोहनप्यारेकीमाहिमा इसतरहपरदेखी कि देव तालोग अपनाशिरउनकेचरणोंपरधरके स्तुतिकरतेहैं तबवहमनु मेंकहनेलगे मेराबड़ाभाग्यथा जो बैकुण्ठनाथने मेरेयहांअवतार लिया जबबरुणदेवताने बहुतसेमणि व रत्नादिक श्यामसुन्दर नन्दरायकोभेटदेकर अपराधअपना क्षमाकराया तबकेशवमूर्ति नन्दजीसमेतअपने स्थानपरआये उससमय यशोदाआदिकसब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बासियोंको बड़ाआनन्दप्राप्तहुआ और यशोदानेनन्दरायसेकहा तुम मेरेबर्जनेपरभी रातकोनहानेचलेगयेथे सो परमेश्वरने आज तुम्हाराप्राणबचाया नन्दरायबोलेअरीबावरी तूक्यापछताती है मैं त्रिलोकीनाथकापिताहूं मुझेकोईनहींदुःखदेसक्ता फिर नन्द जीनेबहुतसादान व दक्षिणादिया व यशोदाने अपनेजातिभाइयोंमेंमिठाई बटवाकरखुशीमनाया जबउपनंदादिकने भेंटकरने वास्ते आनकरनंदरायसेपूछा तुमकोकौनपकड़लेगयाथा तबनंद जीबड़ेहर्षसेबोले मुझे बरुणदेवताकेदूतरातको नहातेसमयपकड़ लेगयेथे सो मोहनप्यारेकेपहुँचतेही सब देवतोंनेचरणोदकलेकर उनकीपूंजनकिया बड़ेभाग्यसे परब्रह्मपरमेश्वरने मेरेघरअवतार लियाहै जिनकेप्रतापसे देवतोंकादर्शनमैंनेपाकर रत्नादिकभेंट उनसेलिया जो बातगर्गमुनिकहिगयेथे वहसब आंखोंसेदेखा॥

दो० नन्दकहत हरिनेहमें हमलेहैं वहधाम। जन्ममरण जहँ भयनहीं रहत सदा बिश्राम॥

यहसुनकर ब्रजबासियोंनेकहा हेनन्दरायहमलोग उसीदिन श्रीकृष्णजीकोपरमेश्वरका अवतारसमझेथे जिसदिन उन्होंने गोवर्द्धनपहाड़ उठाकरब्रजमण्डलकीरक्षाकियाथा हमारेतुम्हारे पिछलेजन्मकेपुण्यसहायहुये जो सच्चिदानन्दपरमेश्वरने तुम्हारेयहां अवतारलिया ऐसाकहकर वृन्दावनबासी केशवमूर्त्तिके पासचलेगये व हाथ जोड़करबिनयाकिया हे महाप्रभु आजतक हमलोग तुम्हारीमहिमानजानकर अपनेअज्ञानसे तुमकोनन्द महरकापुत्रसमझतेथे अबहमें बिश्वासहुआ कि आपआदिपुरुष सबजगत्के उत्पन्नकरने व सुखदेने व दुःखहरनेवाले त्रिलोकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाथहैं इसीतरहबहुतस्तुतिकरके उन्होंनेमनमेंविचारा जिसतरह मुरलीमनोहरने अपनेपिताकोबरुणलोकादिखलाया उसीतरह हमलोगोंकोभी बैकुण्ठकादर्शनकराते तो अच्छाहोता नंदकुमार अन्तर्यामीने उनकीयहइच्छाजानकर रातकोजबसब ब्रजबासी सोये तबलोगोंपर अपनीमाया ऐसीफैलादी कि उन्हैं दिव्यदृष्टि होकर स्वप्नेमें इसतरहपर बैकुंठकादर्शनहुआ किवहां पृथ्वीसोने कीहोकर सबस्थानरत्नजड़ितबनेहैं व बहुतउत्तम२ तड़ागवबाग आदिक बनेहोकर सब स्त्री व पुरुषमहासुन्दरभूषण व वस्त्रसंयुक्त चतुर्भुजीदिखलाई दिये व एकबहुतबड़े उत्तमस्थानमेंरत्नजड़ित सिंहासनपर श्यामसुन्दरको चतुर्भुजीस्वरूपसे लक्ष्मीजीसमेत बैठे व पार्षदोंको चारोंओरखड़े व अप्सरोंको उनकेसामनेनाचते व गन्धर्वोंको गावते व वेदोंको अपनारूपधारणकिये व तेंतीस करोड़ देवतोंको उनके सन्मुखहाथजोड़कर स्तुतिकरतेहुये देखा यहसुख बैकुंठकादेखकर ब्रजबासियोंनेचाहा कि हमलोग मोहन प्यारेकेसिंहासनकेपासजाकर उनसेकुछबातैंकरैं पर किसीने उन कोवहांतक जानेनहींदिया तब ब्रजबासियोंने मनमेंकहा इसबैकु ण्ठसे हमारा वृन्दाबनबहुत अच्छास्थानहै जहांपरदिनरात ब्रज नाथजीकेसाथरहिकर उनसेहँसतेखेलतेहैं यहांतो उनकेसिंहासन तकभी कोईहमको जानेनहींदेता॥

दो० अकुलाने दृगसवनके देखनको तेहिकाल। मोरपंख माथेधरे मुरलीधर गोपाल॥
सो० ब्रजबासिनकोध्यान नटवरभेष गोपालको। अमितरूप भगवान तदपि उपासन रीतियह॥

हेराजन जैसे ब्रजबासियोंने ध्याननटवररूप मोहनप्यारे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कियोवैसेउनकी निद्राखुलगई तबवहलोग अपने २ घरसेउठकर केशवमूर्त्तिकेपास चलेगये व बैकुण्ठनाथ कादर्शनकरनेसेउनके हृदयमें ज्ञानउत्पन्नहुआ तबसबब्रजबासी नन्दकिशोरके चरणोंपरगिरपड़े व हाथजोड़कर इसतरहपर उनकीस्तुति करनेलगे हेदीनानाथ तुम्हारीमाहिमा अपरम्पारहै हमलोगऐसीसामर्थ्यन हींरखतेजो उसकीबड़ाईकरसकैं परन्तुतुम्हारीकृपासेआजहमको इतनामालूम हुआ कि आपपरब्रह्मपरमेश्वरहैं व पृथ्वीकाभारउतारनेवास्ते तुमनेजन्मलिया यहबातसुनतेही श्यामसुन्दरनेफिर अपनीमाया उनपरऐसीफैलादी किवहज्ञान भूलकर उन्होंनेइस बात कोस्वप्नेकेसमानसमझा और सबब्रजबासी प्रसन्नहोकर अपने २ घरचलेआये ॥

दो० श्रीबैकुंठदिखायके मोहनप्रभुब्रजराय। निजमायाविस्तारके दीन्हेंगोप भुलाय॥

व नन्दजीनेभी बरुणलोकमें जानेकाहाल स्वप्नवत्समझकर केशवमूर्त्तिकोअपनापुत्रजानावह सबब्रह्मज्ञानउनकोभूलगया॥

दो० करतचरित्रबिचित्रप्रभुब्रजबासिनकेमाहिं। लखिलखिशिवब्रह्मादिसुरमुनिजनमनहिंसिहाहिं॥
सो० प्रतिआनँदब्रजलोग हरिकेनितनवचरितलखि। सबकोसबसुखयोग ब्रजवासीप्रभुनन्दसुत॥

हेराजन् श्यामसुन्दर अन्तर्यामीने गोपियोंका सच्चाप्रेमदेखकरश्रीदामा आदिक अपनेसखोंसे कहासबब्रजबाला सोलहोंशृंगारकिये वृन्दाबनकीराहसे मथुरामेंगोरसबेचनेजाती हैं सोबनमें रोंककर उनसेदूधदहीकादानलेना चाहिये॥

सो० सबइनसंग बिहार करौंदान दधिखाइकै। यहमन कियोबिचार हरिब्रजमोहन लाडिले॥

जबयहसम्मत ग्वालबालोंने प्रसन्नकिया तबनन्दलालजी श्रीदामाआदिक पांचहजार सखासमेत प्रातसमयबीचबनकेजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करवृक्षोंकेओटमें छिपरहेऔर उसीसमय सबब्रजबाला सोलहों शृंगारकिये मथुराको गोरसबेंचनेचलीं॥

दो॰ हँसतपरस्पर आपमें चलीजायँ सबभोर। पाइघातमें सखनतब घेरलईं चहुँओर॥
सो॰ देखिअचानकभीर चकितरहीं चहुंदिशिचितै। सहमीकछुकशरीर कितनेआये ग्वालसब॥

उससमयनन्दकुमारने ब्रजबालोंसेकहा तुमलोग नित्यगो रसबेंचनेजातीहौ सोहमारा दानदेदेव तब जानेपावोगीयहवचन सुनकरगोपियांबोलीं दण्डलेना राजोंकाधर्महै हमऔरतुमदोनों राजाकंसकीप्रजाहैं तुमक्योंहमसे दण्डमांगतेहो नन्दजोतुम्हारे पितानेआजतक कभी ऐसीबातनहींकी कल्हकी बातहै तुमगो रसहमाराचुराकरखातेथे औरजबकोई पकड़ताथा तबरोकरभाग जातेथे आजबनमेंस्त्रियोंको घेरकर राहलूटतेहो यहबातअच्छी नहीं है॥

चौ॰ चोरी करि नहिं पेट अघायो। अब बनमें दधि दान लगायो॥

यहसुनकर केशवमूर्त्तिने कहातुमलोगोंने लड़कपनमेंहमको बहुतखिझायाथा अबहमसयानेहुये बिनादण्डलिये नहींजाने देवेंगे॥

दो॰ तबतोहम लड़काहते सहीबात अनजान। अबसूधेकहुं समुझिकै छांड़ि देहु अभिमान॥
सो॰ हममांगतदधिदान तुमउलटी पलटी कहत। करत नन्दकीआन बिनादिये नहिंजाइयो॥

यहसुनकर गोपियोंने कहाकदाचित्तुमदही व दूधकेभूखेहोतो थोड़ा २ हमसेलेकरखालेव परदानहमसे नहींदियाजायगाछोटे मुख बड़ीबातकहना अच्छानहीं होता अभी हमलोग राजाके सके पासजाकरयहहाल कहैं तोवहतुमको पकड़करदण्डदे हम कौनसालवंग व इलायचीलादे हैं जो तमको दण्डदेवें॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो० लेवदही बलिजाउं हमको होत अबेर अब। लियेदानको नाउं एकबूंद नहिंपाइहो॥

यहबचनसुनकर मोहनप्यारेबोले तुमलोगराजाकंससे मुझे क्याडरावतीहो मैं उसकोकुछनहींसमझता सीधीतरहदानदेवगी तो अच्छाहै नहींतो सबदूध व दहीतुम्हाराछीनलूंगा तो रोतीहुई यशोदापासजावोगी बहुतदिनोंतकतुमनेचोरीसेदानहमारापचा याहै आज सबदिनकीकसरलेकर तुम्हें जानेदूंगा॥

दो० दानलगत यहश्यामको सो अबलेवचुकाय। तबमें देहों जानसब मोको नन्ददुहाय॥
सो० दधिलेजात प्रभात आवतहो निशिबेचिके। दानमारिनितजाति भलीकरत यहबातनहिं॥

यहबातसुनकर गोपियांबोलीं जो तुम्हारेबड़ोंने कभीनहीं किया वहकरनेलगे तो किसतरहहमलोगोंकायहांरहकर निर्बाह होगा॥

दो० हमैं कहतहो चोट्टी आप भयो हो साह। बड़ेभये चोरीकरत अबलूटतहो राह॥

यहबातसुनकर मोहनप्यारेबोले तुम्हारेधमकानेसेमैं कुछनहीं डरता तुमबृन्दाबनछोड़कर चलीजावगीतोक्याहोगा मैं अपना दण्ड छोड़दूं॥

दो० गांव हमारो छांड़िकै बसियो कापुर माहिं। ऐसो को तिहुंलोकमें जो मेरे बशनाहिं॥

हे राजन् इसीतरहकुछदेरतकसबब्रजबाला मोहनप्यारेसेप्रकट में झगड़ाकरतीरहीं परअन्तःकरणसे उनकी छबिदेखकरप्रसन्न होतीथीं जब केशवमूर्त्तिने सबगोपियोंकागोरसछीनकर ग्वाल बालोंसमेतखालिया व बानरोंकोखिलाकर शेष पृथ्वीपरगिरा दिया व मटुकीतोड़कर बस्त्र उनकाधक्काधुक्कीकरकेफाड़डालातब सबगोपियोंने यशोदाकेपासजाके अपनेफटेहुये बस्त्रदिखलाकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा तुमनेअपनेबेटेको अच्छाउद्यमासिखलायाहै कि वह ग्वाल बालोंकोसाथलियेहुये बनमेंसबगोपियोंकोरोककर दही व दूधका दान मांगतेहैं हमलोगोंने नईबातसमझकर दण्डनहींदिया इसी वास्ते सबगोरसहमाराछीनलिया व अंचलपकड़कर बस्त्रहमारा फाड़डाला आजतक तुम्हारेकुलमें कोईऐसानहींहुआ था जिस ने दही व दूधकादण्डलिया हो ॥

दो० सुनतग्वालिनिनके बचन बोलीं यशुमतिमात । मैं जानी तुमसबनके उरअन्तरकी बात ॥

तुमलोग मोहनप्यारेका पीछा नछोड़कर उसेपापकी दृष्टि से देखतीहो व अपनेहाथकपड़ाफाड़कर झूठाउलहना मुझेदेने आवती हो ॥

दो० धन्यधन्य तुम कहतहौ मोको आवत लाज । माखनमांगत रोयहरि दोषदेतबिनकाज ॥

यहबातसुनकर ब्रजबालोंनेकहा यशोदामाता तुम्हेंऐसा उचितनहींहै जो विनासमझे हमैं दोषलगावतीहौ दशगौ अधिक रखनेसे तुमकुछबढ़नहींगई हमतुमजातिमेंबराबरहैं यहचलन तुम्हारा बेटाकरैगा तो हमयहगांवछोड़कर निकलजावैंगी मोहन प्यारेकाहाल तुमनहींजानती जबबनमेंचलकरदेखो तबतुम्हैंमालूमहो ॥

सो० सुनो महरि तुमबात हरिसीखे टोनाकछू । बनहिं तरुणहूवैजात बालकहूवै आवतघरै ॥

यशोदाने उनकोउत्तरादिया तुमलोगगांवछोड़नेकेवास्ते मुझे क्याधमकातीहो जहांतुम्हारामनचाहै वहांजाकरबसो तुम्हारे वास्ते मैं अपनाबेटानहींनिकालदेऊंगी ॥

दो० कहाकरौं तुम आयसब कहती अटपटबात । मोको यहभावैनहीं तरुणिन इहैस्वहात ॥

यहबातसुनतेही ब्रजबालालज्जितहोकर अपने२घरचलीआईं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

औरवृन्दाबनमें यहचर्चा घरघरफैलगई कि नन्दकुमारने गोरस कादएडगोपियोंपरलगायाहै यहसुनतेही सबब्रजबालोंको यहइ च्छाहुई किहमलोगभी दहीदूधबेचनेकेवास्तेजावें तोनन्दकिशो रकीछबि बनमेंदेखकरअपनी २ आंखैंठएढीकरैं जबदूसरेदिनरा धाआदिक सोलहहज़ार गोपियां गोरसबेचने मथुराकोचलीं तब मोहनप्यारेने सखासमेत जोवृक्षोंपरचढ़ेहुयेछिपेथे बनमें ब्रजबा लोंकोघेरकरकहा आजदानदेकर जानेपावोगी ॥

दो० हँसिबोलीराधाकुँवरि कहाबनिज हमपास। कहोश्याम सो नामधरि देहिंदानहमतास ॥

यहबचन अपनीप्यारीकासुनकर नन्दलालजीबोले आज तुम्हारेयौबनकादान लेऊंगा हेराजन्जबइसीतरह कुछबेरतकसब ब्रजबालामोहनप्यारेसे झगड़ाकरतीरहीं तबश्यामसुन्दरने ऐसी मायाअपनी उनपरफैलादीकिसबगोपियांकामरूप मदमेंमतवा लीहोगईं ॥

दो० व्याकुलह्वै सबमदनमें नैनमूंदि धरिध्यान। कहतकान्ह अबशरणहम लीजैसर्बसदान ॥
सो० ऐसोकहि मनमाहिं देहदशा भूलींसबै। लेहुश्याम बलिजाहिं यहधनतुमसबआपनो ॥

यहदशागोपियोंकी देखकर बैकुण्ठनाथ भक्तहितकारीने उन लोगोंकी इच्छापूर्णकरने वास्ते अनेकरूप अपनेजोकिसीकोदि खलाईनदेवैं धारणकरलिये व सबब्रजबालोंसे ध्यानमें भेंटकरके कामरूपीरोगउनकाछुड़ादिया तबउन्होंनेहँसकरकहाहेप्राणप्या रेतुमनेहमारेयौबनका दानभीलिया अबआज्ञादेवतोअपने२ घर जावें यहबचन सुनकर केशवमूर्त्तिबोले तुम्हारेयौबनकादानमैंने पायादही व दूधकादण्डचुकादेव तोअपने२ घरजावयहवचनसुन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेही ब्रजबालोंने प्रसन्नहोकर दही व दूधअपनाश्यामसुन्दर को ग्वालबालोंसमेत खिलादिया परमोहनप्यारेकीमायासेबर्त्तनउन का ज्योंकात्योंभरारहा जिससमय गोपियांश्यामसुन्दरको ग्वालबालोंसमेत बैठाकरदही व दूधखिलातीथीं उससमयदेवतालोग अपने २ बिमानोंपरसे यहआनन्ददेखकर ब्रजबालोंकी बडाई करकेकहतेथे कि धन्यभाग्यब्रजकीस्त्रियोंकाहै जिनसेपरब्रह्मपरमेश्वर त्रिलोकीनाथ गोरसमांगकरखातेहैं व गोपियांउनकीसेवा करकेजन्मअपना स्वार्थकरतीहैं दहीखातीसमय मनहरणप्यारे बोले मैंनेसबके गोरसकास्वादपाया परराधाप्यारीका दहीनहीं चीखा यहवचनसुनतेही राधानेहँसकर अपनादही अपनेहाथसे नन्दकिशोरके मुखमें खिलादिया॥

सो॰ प्यारीको दधिखाय बोलेयों मोहनविहँसि। मधुरेकहोसुनाय मीठोंहै यहलखनतें॥

हेराजन्गोरसखाने उपरांतमोहनीमूर्त्तिने अपनीचितवन वमुसकानसे उनकामन हरलिया और बोलेआजअपनादानलेकरहम तुमसे बहुतप्रसन्नहुये इसलिये अबतुमसे घाटबाटपरकोई रोक नहींकरैगा अबअपने २ घरजाव बिलम्बहोनेसे तुम्हारेघरवाले चिन्ताकरते होंगे यहवचनसुनकर गोपियोंनेकहा हेमोहनप्यारे दानमांगतीसमयहमने तुमकोकठोरवचनकहाहै उसकाअपराध क्षमाकीजिये और तुम्हारी मोहनीमूर्त्ति देखेबिना हमेंचैननहीं पड़ता घरकिसतरहजावें तुम्हारीप्रीति बिनाधन व परिवार मबहथाहै यहबातसुनकरनन्दकिशोरबोले मैंतुम्हारा ऐसाप्रेमदेखकर एकक्षणतुमसे बिलगनहींरहता व तुम्हाराकठोरवचन मुझेबुरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहींमालूमहोता मैंतुमलोगोंको प्रसन्नकरने वास्ते बैकुण्ठ छो ड़कर तुम्हारा दुर्बचनअपनीइच्छासे सुनताहूं तुमने अपनामन देकरमुझेपायाहै जबअपनाचित्त मुझसेफेरलेवगी तबमैं तुमसे अलगहोजाऊंगा॥

दो० तुमकारण बैकुण्ठतजि प्रकटतहौं ब्रजमाय। वृन्दाबन तुम्हरो मिलन यह न बिसारो जाय॥

ऐसाकहकर श्यामसुन्दर ग्वालबालोंको साथलियेहुये दूस रीओरबनमें चलेगये व सबब्रजबाला अपने २ घरनजाकर बौर हींकीतरह वृक्षोंसेपूंछनेलगीं तुमगोरसमोललेवगे व कभीदही व दूधकेबदले मोहनप्यारे व श्रीकृष्ण व नन्दलालकानाम बेचने वास्तेपुकारकरकहतीथीं॥

दो० लीने गोरसदानहरि तुमकहँरहे छिपाय। डरनतुम्हारे जातनहिं तुमदधिलेतछिनाय॥
सो० लेहु आपनोदान तुमरिसकर उठिधाइहौ। हमैं न देइहोजान बनमें हमठाढ़ींसबै॥
दो० श्यामबिना यहकोकरै लायोदधिकोदान। तनसुधि भूली तबहिंसे बांकीमृदुमुसुकान॥
सो० मनहरिलीन्होंश्याम ताबिनबनियेकौनबिधि। ऐसेकहिसबबाम घरकोचलनबिचारहीं॥

हेराजन् इसीतरह विपरीतबातेंकहतीहुई गोपियांअपने २ घर पहुँचीं पररूपश्यामसुन्दरका आठोंपहरउनके हृदय व आंखोंमें बनारहताथा यहदशादेखकरघरवाले बहुतसमझातेथे परकहना किसीकाउन्हें अच्छानहींलगताथा॥

दो० प्रकट्यो पूरण नेहउर जितदेख्यो उतश्याम। समझाये समझैनहीं सिखदेयाक्योग्राम॥
ऐसोसिखवतमातुपितु सो न करतकछुमान। लागतहैंतिनकेवचनउर में बाणसमान॥
सो० उन्हैंकहतमनमाहिं धिकधिकउनकीबुद्धिको। जिन्हेंश्यामप्रियनाहिं तिन्हेंबनेत्यागेभले॥

हेराजन् श्यामसुन्दर राधाप्यारीपर लक्ष्मीजीका अवतारहो नेसे अतिप्रीतिरखतेथे इसलिये राधिकाभीउनकेऊपर अधिक मोहितरहिकर जबदूसरेदिन गांवमेंदहीबेचनेगई तबमटुकीशिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Prayagraj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परलिये चौगिर्दमकान नन्दजीके घूमकरबौरहोंकेसमान लो
से पूछनेलगी मेराचित्त चुरानेवालानन्दकुमार कहांबसताहै
उसेबड़ीदूरसे ढूंढ़नेवास्तेआईहूं उसकाघर इसगांवमेंहै या नहीं

दो० जिन्हेंकहत मोहिंनन्दघर कहाँसो देवबताय। जहांबसत वहसांवरो मोहनकुँदरकन्हाय॥

जबराधिकालज्जा छोड़कर दहीकेबदले नन्दकुमार व नन्
किशोर व श्रीकृष्ण व श्यामसुन्दरका नामपुकारनेलगी तब यह
दशाउसकी देखकरगोपियोंनेपूंछा हेराधिका तूक्याबेचतीहै
धाबोली॥

दो० मोहनमूरतिश्यामकी मोतनरही समाय। ज्यों मेंहदीकेपातमें लालीलखी न जाय॥

यहसुनकरएकसखीने किवहभी केशवमूर्त्तिकी चाहनारखती
थी कहा ऐराधिकातूबुद्धिमान्होकर दूसरोंकोज्ञान सिखलावती
थी सो आजक्यादशाहुई ऐसीनिर्लज्जताकरना तुझेनचाहिये
इसमेंसबगांववाली स्त्रियांतुझेगवाँरीकहिकर बदनामकरैंगी वतें
माता व पितासुनकर तुझकोमारैंगे तू केशवमूर्त्तिऐसे रूपवान्
रुषकोपाकर अपनीप्रीतिक्यों प्रकटकरतीहै॥

दो० कृष्णप्रेम धन पाइकैप्रकट न कीजैबाल। राखोयों उरगोइकै ज्योंमणिराखतव्याल॥

यहबचनसुनकरराधिकाबोली तू मुझेक्योंसमझावतीहै मेरा
मन मोहनीमूर्त्तिनेहरकर मेरेहृदयमें अपनाबासकरलिया इस
लिये माधुरीमूर्त्तिदेखेबिना मुझेचैननहींपड़ता हाथमेरावशमें
नहींहै घूंघुटकौनकाढ़े यहबातसारेब्रजमें फैलचुकी कि मैं श्याम
सुन्दरकेहाथबिककर उनकीदासीहोगई॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ० मन मान्यो मोहनपरमेरो। जग उपहासकरै बहुतेरो॥
बार बार तू कहत क्या मैंनहिं समुझतबात। मोहिंदगनमेंबासिगयोवायगुमतिको तात॥
कहत न मेरी आन अपनीसी मैं करथकी। तूतौ बड़ीसुजान कहादेत सखिदोष मोहिं॥

खी मैंने अपनाप्रेमनन्दकिशोरसेलगाया इसलिये मुझे
कीलाजनहींरही अबमेरेहृदयमेंयहबातठनगई जिसतरह
नीमें मिलजाताहै उसीतरहनन्दलालसे मिलकरसंसारमें
व श्यामा अपनानामधराऊं॥

मेरोमन हरिसँगलग्यो लोकलाज कुलत्याग। औरताहि सूझतनहीं भयोजहाजकोकाग॥

खी तू मेरीबड़ीप्यारीहै कदाचित् तुझसेहोसकै तो दया
रे चित्तचोरसे भेंटकरादे नहींतोमेराप्राण उसके बिरहमें
नेचाहताहै ऐसाकहकर राधाप्यारी अतिविलापकरके पु
नगी हे यशोदाकेलाल अपनादर्शनदिखलाकर दहीका
जाव अब तुम्हारेबियोगका दुःख मुझसे नहींसहाजाता॥

ऐसेसखीसुनाय मौनगही पुनिनागरी। देहदशा बिसराय मगनभई रसश्यामके॥

उससखीनेदेखा किराधाप्यारीके रोमरोममें श्यामरूप
ा मेराकहना व समझाना इसेकुछगुणनहींकरता बिनाभें
यामसुन्दरके इसकादुःखनहींछूटेगा तबउससखीनेदया
केशवमूर्त्तिसे जाकरकहा हेमोहनप्यारे एक सुन्दरीचन्द्र
ारीनीली सारी पहिने मटुकी दहीकी शिरपरलिये तुम्हा
लेलेकरचारोंओरपुकारती व ढूंढ़तीहुई अभीबंशीबटको
ईहै जल्दीजाकर उसबिरहनीकीअग्नि अपनीअमृतरूपी
ढीकरो नहींतो वहआपके बिरहमेंबौराकर मरजावेतोआ
तिसमझो केशवमूर्त्तिने यहहाल अपनीप्यारीकासुनते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ही व्याकुलहोकर तुरन्त उससखीकोबिदाकरदिया व आ
समयबंशीबटमेंपहुंचकर राधाकीइच्छापूर्णाकी ॥

दो० परमहर्ष दोऊमिले राधानंदकुमार। कुंजसदन शोभित मनो तनुधरि छबि शृंगार

जब श्यामाकाचित्त श्यामसुन्दरके मिलनेसे ठिक
तब उसनेकहा हे प्राणप्यारे जिसदिनतुमनेमेरीगौ खरक
दियाथा उसीघड़ीसे मेरामनऐसामोहिलिया कि तुम्हारी
सूरत देखेबिना मुझेएकक्षण चैननहीं पड़ता व गांववा
को तुम्हारेसाथ बदनामकरतेहैं सो मेरेचित्तमें अब ऐसा
किमातापिताआदिक अपनेकुलपरिवारकोछोड़कर तुम
प्रकटप्रीतिकरूं ॥

सो० मैं लीन्हों दृढ़नेम सुनो श्यामसुन्दर सुखद। तुमपद पंकजप्रेम यहीबात अबरा

यहबचनसुनतेही गिरिधर महाराजनेहँसकरकहा
म्हारीपिछलेजन्मकीप्रीतिहै उसकोप्रकटकरनानचाहि
तेरेमातापिताकेनिकट हमारीबदनामीनहोवे संसारील
नामनधरैं मैं तेरेसाथअकेलेमें भेंटकरकेतेरीइच्छा पूर्ण
करूंगा ॥

सो० सुनतश्यामकेबैन हर्षभई मननागरी। भयोहिये अतिचैन प्रीति पुरातन जा
दो० कहत श्याम अबजावघर तुमको भई अबार। प्रीतिपुरातनगुप्तउर करिये जगव्य
सो० परमप्रेमउरलाय घरपठई हरिभावती। चलीमहासुखपाय फिरफिर चितवतश्य
दो० कृष्णराधिकाकेचरितअतिपवित्रसुखखान। कहतसुनतभवभयहरण रसिक जनन

हेराजन् जबराधिकाअपना मनोरथपाकर घरकोचली
तबराहमेंवहीसखी जिसनेउसकाहाल केशवमूर्त्तिसेकह
मिली उसनेश्यामाका मुखारविन्दप्रसन्नदेखकर अप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नलिया कि यहअपनी मनोकामनापाआईहै ऐसाविचारकर सखी ने राधिकासे पूछा ॥

दो० फिरतहती व्याकुलअभी जिनकेदर्शनलागि। कहांमिलेनँदनन्दसो धनिधनितेरो भागि ॥
दो० नहिं पावतहैं जाहि योगीजन जपतप किये। वशकरिपायो ताहि तें कैसे कहु नागरी ॥

यहबातसुनतेही राधानाक व भौं चढ़ाकरबोली तू मुझेवृथा नामकरतीहै कदाचित् यहबातकोईजातिभाईसुनपावे तो मेरा काना न लगै ॥

चौ० को नँद नन्द कहत तू जिनको। मैं कछूं देख्यो नहिं तिनको ॥

यहचरित्र राधिकाकासुनकर उससखीनेकहा हमतुमदोनों मेंरहतीहैंतुम्हारीचतुराई हमसेनहींछिपैगीदोघड़ीहुई तूगली न्दलालजीका नामलेकर रोतीफिरतीथी अबकहती है किमैं को नहींजानती ऐसासयानपनतैंने अभीकहांसेसीखलिया ॥

दो० निपुणभई उनकोमिली वहसुधिगईभुलाय। आवत है बनकुंजते बातेंकहत बनाय ॥
दो० रीझे श्यामसुजान कहेदेत अँगकी पलक। मोसोंकहत सयान सँगपगरहे सनेह जल ॥

जबराधाप्यारीने बहुतपूछनेपरभी उससखीसेमोहनप्यारे की होनेकाहालनहींबतलाया तबवह ब्रजबालाहँसकरबोली बहु च्छा तू मेरेसामनेकीछोकरीहोकर मुझसेछलकरतीहै अबतू नेघरजामैंतेराझूठ व सत्यप्रकटकरदेऊंगी यहबातकहकर वह अपनेघरचलीगई व श्यामा अपनेस्थानपरआई ॥

चौ० सकुच सहित वृषभानुदुलारी। गई सदन गुरुजन डर भारी ॥

उसेदेखकर कीर्त्तिनेकहातूदिनभर दहीबेचने के बहानेकहां हैं आजतेराभाई कहताथा कि राधामोहनप्यारेका पेमरख नकेपीछेफिराकरतीहै तुझकोकुछलज्जानहींआतीसबगांव तुझे श्यामसुन्दरकेसाथ बदनामकरते हैं ऐसीबातमतिकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसमेंतेरे मातापिताकी हँसीहो यहवचनसुनकर राधाबोली ॥

दो० खेलनको मैं जाउँनाहिं कहाकहतरी मात। मुझसे जाती सहिनहीं यहसबझूठीबात॥
सो० घरघरखेलनजात गोपनकी सबलड़किनी। तू मोको रिसियात उनके मात पितानहीं॥

ऐसी २ झूंठ सत्यबातकहकर राधाने अपनीमाताकोप्रसन्न करलिया व अपनेमनकाभेदकिसीसेनहींबतलाया और उससखी नेजाकरललिता आदिक सबब्रजबालोंसेकहा कि आजराधिका ने श्यामसुन्दरसेभेंटकरके अपनीइच्छापूर्णकी जबवह बंशीवट से अपनामनोरथपाकरआतीथी तबमैंने उसकामुखारबिंद प्रसन्न देखकरभेंटहोनेका हालपूंछा तबवहसुनकर बोली॥

दो० मोसों तबलागी कहन को हरि काको नांव। कै गोरे कै सांवरे बसत कौन से गांव॥
सो० मैंतो जानतनाहिं लेतनाम तुमकौनको। लख्योनस्वप्नेमाहिं सांचीकहत कि हँसततुम॥

यहबातसुनकर ललिताआदिकनेकहा हमारेसामने राधिका कीसामर्थ्यनहीं है जोमुकरनेसकै तबवहसखीबोली अबवैसीराधि कानहीं है जो पहिलेथी भेंटकरनेसे उसकाहाल तुम्हें मालूम होगा॥

दो० बड़ेगुरूकी बुद्धिपढ़ि काहू नहिं पतियात। एको बात न मानिहै सौ सौगन्दै खात॥

जब ललिताआदिकसखियां इकट्ठीहोकर यहीबातपूछनेके वास्ते राधिकाकेस्थानपरआईं तबश्यामा उनकेमनकाहालजान गई कि यहमेराभेदपूछनेआईं हैं॥

दो० काहूको कीन्हों नहीं आदरकरि चतुराय। मौनगही बोलतनहीं बैठिरही निठुराय॥

उसकीयहदशादेखतेहीं ललिताआदिक आपसमेंउसकेपास बैठकर जबइधरउधरकीबातेंकरनेलगीं तबएकसखीनेराधासेकहा तुमनेमौनव्रत कबसेधारणकियाहै उसकाहालहमें भी बतलाओ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कौनगुरूसे यहमंत्र सीखा है हमलोगभी वहधारणकरनाचाह तीहैं॥

दो० अब तुमहीं को हमकरैं गुरूदेव उपदेश। हमहूं राखैं मौनव्रत करैं तुम्हैं आदेश॥
सो० हमकोकियोअजान चतुरभईतुमलाडिली। कहँसीख्योयहज्ञान ऐसीबुधिलागीकरन॥

यहबातसुनकर राधानेकहा सुनोललिता हमारेतुम्हारेबीचमें कुछभेदनहींहै जोमैंतुमसेकोई बातछिपाती परझूठीबात मुझसे सहीनहींजाती कल्हिराहमें मुझसे इससखीने कहा कितेरीभेंट श्यामसुन्दरसेहुईहै मैंनेआजतक कभीकेशवमूर्त्तिको स्वप्नेमेंभी नहींदेखा औरयह मुझको वृथापापलगातीहै सोमुझेयह ठिठो लीकीबातअच्छी नहींलगती इसमेंमेरे वास्तेबदनामी समझना चाहिये बिनादेखे कोईबात नहींकहना होता मुझेइसने नन्दला लसेकबभेंटकरते देखाथाजोऐसीबातकही अभीकोई जातिभाई सुनैतो मेराठिकाना नलगै॥

दो० औरकहैतोमोहिंकछु नहिंव्यापैमनमाहिं। तुमहिंकहोजोबातयह तोदुखहोयकिनाहिं॥
सो० तुमपररिसमोहिंगात यातेआदरनहिंकियो। सुनप्यारीकी बातरहसिबै मुखतनचितै॥

तबललिता बोली हेराधा मुझसेइससखीने कुछनहींकहाक दाचित् यहमुझसेकुछकहती तोमैंइससे झगड़ाकरती व तेरी अ लोनीदेहींपर हमलोग क्योंलोनलगावैं तूबड़ीपतिव्रताहै तेरेश्या मकोइसने कहांदेखाहोगा बिनाभाग्य उनका दर्शनमिलनाबड़ा कठिनहै तेरेबराबर हमलोगोंकाभाग्य कहांहै जोकेशवमूर्त्तिका दर्शनहमेंमिलै यह सुनकर राधिका बोली॥

दो० वृथाझौंड मोसोंकरत कहिकहि झूठीबात। भलोनहीं उपहासयह मैं सकुचत दिनरात॥

यहरुखाईश्यामाकी देखकर ललिताने कहा॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो० जब आवैं इतश्याम तबहमतोहिं बताइहैं । तोहिंदेखिहैं बाम हमहूंहैंअभिलाषअति ॥
दो० ऐसेकहसब हंसिउठीं प्यारीबदननिहारि । आईंधीं अति गर्बकरि चलींसखीसबहारि ॥
सो० कहत परस्पर जात निडरभईअबराधिका । कबहूंतो हमघात पडि हैं दोऊ आइकै ॥
दो० सबब्रजगोपिनकोबसी यहीबात मनआन । हरिराधा दोऊमिलैं निशिवासर यहध्यान ॥
सो० सब सन्मुख यहबात औरकछू चरचानहीं । नन्दमहर कोतात सुतामहरवृषभानुकी ॥

जबबहुतपूछनेपरभी श्यामाने मोहनप्यारेके भेंटहोनेकाहा लसखियोंसे नहींबतलाया तबवहलोगवहांसे अपने २ घरआन करइसखोजमें लगीं किराधा व मोहनकोभेंट करतीसमय पकड़ नाचाहिये जिसमेंश्यामाका झूठबोलनाप्रकटहोजावे औरराधि का व कृष्णमेंऐसी प्रीतिबढ़ी किएकक्षण दोनोंकोबिनादेखे चैन नहींपड़ताथा सोश्यामाने दूसरेदिन मोहनीमूर्त्तिकोदेखनेकीइ च्छासे ललिताआदिक सखियोंके घरजाकरकहा चलोबहिनय मुनास्नानकरआवें जब सखियोंनेबड़े आदरभावसे राधाकोबैठा लातबवहबोली आजमैं तुम्हारेघरक्यानये शिरसेआईहूं जोइत नाआदरकरतीहो ललिता बोली जैसा अपनेगुरूकामंत्रपढ़कर तुमनेहमारे जानेसे मौनसाधलियाथा वैसाहमलोगोंकोनहींआ वताजैसेसदाहमसब तुम्हारा सन्मानकरतीथीं वैसेआजभीकिया यहबात सुनतेही राधानेहँसकरकहा उसदिनका बदलाआजतुम लोगोंनेमुझसे लियायहसुनकर सबसखियांहँसनेलगीं ॥

दो० यहिबिधिहासहुलासकरिसखिनसंगसुकुमारि । चलिनहाययमुनानदीश्रीवृषभानुदुलारि ॥
सो० सकल रूपकरिरास नवनागरि मृगलोचनी । भरी अनन्दहुलास कृष्णप्रेममें एकचित ॥

जबश्यामासखियोंसमेत यमुनाजलसेस्नानकरके बाहरानि कली तब उसनेक्यादेखा कि केशवमूर्त्ति नटवररूपसाजेकदमके नीचेखड़ेहुये बंशीबजाते हैं उस मोहनीमूर्त्तिकोदेखतेही राधाने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोहितहोकर लज्जाछोड़दिया व नन्दकुमारकोटकटकी बांधकर देखनेलगी॥

दो० श्यामा नटवर रूप को देखतही सुखपाय। चित्र पूतरी सी रही देह दशा बिसराय॥
सो० उतवहरहेलोभाय नागर नवलाकिशोरवर। प्यारीमुखदृगलाय नयननहीं भटकतकछू॥

यहदशादेखकर ललिताआदिकसखियोंनेराधासेकहा कल्ह तू मोहनप्यारेकीभेंटकरनेसे मुकरकरकहतीथी कि मैंने उनको स्वप्नेमेंभीनहींदेखा आज क्यादशातेरीहुई जो सांवलीसूरतको टकटकीबांधकर देखरहीहै अच्छीतरहइनकोदेखलेव जिसमेंयह मोहनीमूर्त्ति तुम्हैं न भूलैतेरेदिखलानेवास्ते केशवमूर्त्तिको हम नेयहांबुलादिया है॥

चौ० राखो चीन्हि इन्हें अब नीके। यह हैं मनभावन सबहीके॥
दो० भलेशकुन आईइहां भयो तुम्हारोकाज। अबकछु हमको देवगी मिले तुम्हें व्रजराज॥

यहबातसुनतेही राधामनमेंपछताकर कहनेलगी देखो कल्ह मैं सखियोंसेमुकरगईथी आज प्राणप्यारेकीछबि देखकरमेरीयह दशाहोगई अबमेरीचोरी सखियोंनेपकड़लिया इनलोगोंसे मैं बहुतलज्जितहुई जबऐसा बिचारकरराधाकामुखमलीनहोगया तब ललिताबोली प्यारीतुममतपछताओ॥

दो० कियोदरशतुमश्यामकोघरचलिहौकीनाहिं। चीन्हिलेहुमिलिहैंबहुरियहकहिसबमुसकाहिं॥
सो० तब सखियनके साथ चली सदनको नागरी। उरमें धरि व्रजनाथ प्रेममगन बोलै नहीं॥

जबराधाप्यारी नटवररूपमोहनप्यारेका अपनेहृदयमें रख करघरकोचली तबसखियोंने उससेकहा ऐप्यारी तू अपनेमनमें चोरीप्रकटहोनेका कुछ शोचमतकर यहनटवररूप इसीतरहकाहै जिसकेदेखनेसे किसीब्रजबालाका चित्तठिकानेनहींरहतापिछले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जन्मकेपुण्यसे तेराबड़ाभाग्यहै जो त्रिलोकीनाथ तुम्हैंऐसाप्यार करते हैं व तैंने उनको अपनेवशकरलिया है यहसुनकर राधामन में बहुतप्रसन्नहुई परलज्जासे कुछनहींबोली॥

सो० सखिनकह्योमुसक्याय क्योंप्यारीबोलतनहीं। कीहमसेरिसिआय लियोमौनव्रतआजपुनि॥

यहवचनसुनतेही राधानेहँसकरकहा श्यामसुन्दरकास्वरूप कैसाथा मैंने तो अच्छीतरहनहींदेखा इसकाक्याकारणहै जोतुम्हें दो आंखसे उनकासाराअंगदेखपड़ा मेरीदृष्टितोउनकीभृकुटीपर गई सोवहछबिछोड़कर दूसरेअंगपर न जानेसकी जो मैं उसमो हनीमूर्त्तिका साराअंगदेखती॥

दो० मैं तबते अपनेमनहिं यहीरही पछिताय। देखनको छविश्यामकी ललचत नयनबनाय॥
बिनपहिंचानेकौनविधि करोंश्यामसोंप्रीति। नहिंवहरूप न भाववह क्षणक्षण औरैरीति॥
सो० मैं जानी यहबात हैंअनन्द के खानि हरि। पहिंचाने नहिं जात कहाकरौं दो लोचनी॥

यहसुनकर गोपियांबोलीं हेराधा तेरेबड़ेभाग्यहैं जो तू ऐसी प्रीति बैकुण्ठनाथसेरखतीहै संसारमेंदूसरेका भाग्यऐसानहागा॥

दो० धनिधनि तेरे मातपित धन्यभक्ति धनिहेत। तैं पहिंचाने श्यामको हमसब बालअचेत॥
सो० धनियोबन धनिरूप धनि धनि भाग सुहागतुम। तुममोहन अनुरूप चिरंजीवजोड़ीअचल॥

इसतरहसबगोपियां श्यामासेहँसतीव बोलतीहुई अपनेअपने घरचलीआईं परउन्हें राधा व मोहनकीप्रीतिदेखकर सबतियां डाहसे आठोंपहर उनकारूपआंखोंकेसामने बसारहताथा एक दिनराधिका श्यामसुन्दरकेविरहमें व्याकुलहोकर अकेलीपानी भरनेवास्ते यमुनाकिनारेचली राहमेंमोहनप्यारेकोदेखतेही उन काहाथपकड़कर बोलीतुमनेमेरामन क्यों चुरालियाहै उसेफेरदे तनमेराघरमेंरहकर मनचंचल दिनरातुम्हारे पीछे २ फिरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताहै प्यारीकाबचनसुनतेही नन्दकुमारने उसकोगलेसेलगाकर कहा मैंभी तेरेदेखनेवास्ते आठोंपहर ब्याकुलरहताहूं जिससमय श्यामा व श्याम यहप्रीतिभरीहुई बातैं आपसमेंकररहेथे उसी समय ललिताआदिकसखियां वहांपरआनपहुँचीं उनकोदेखते हीकेशवमूर्त्ति अपनेग्वालोंको पुकारतेहुये दूसरीओरचलेगये व ललिताने राधासेकहा आज तो तेरीचोरीपकड़ीगई तू नित्यहम लोगोंको झूठाबनाकर एकान्तमें सुखउठावतीथी ॥

दो० कहतरही जबतबयही हरिसँग देखो मोहिं। तब कहियो जो भावही लीजो बेसरखोहि ॥

सो० अब हमलई छोड़ाय बेसर देहौ कै नहीं। कै करिहौ चतुराय और कछू हमसे अभी ॥

यहबातसुनतेही राधिकालज्जितहोकर अपनेघरचलीआई परमन उसकामोहनप्यारेकेभेंटवास्ते ब्याकुलरहा इसलिये उस कोरातभर तारागिनतेबीतगई प्रातसमय उसनेमोतियोंकाहार अपनेगलेसे उतारकरधोतीके अंचलमेंबांधलिया व कीर्त्तिअपनी मातासेकहा कल्ह यमुनाकिनारे मेराहारकहींगिरपड़ाथा सो न मालूमकौन सखीनेउठालिया ॥

दो० नेकुनींद नहिं निशिपडी तेरीसौं सुनमात। याही डरसे आज मैं उठी बडेपरभात ॥
सुनराधा तेरीनहीं अब पतियारी मोहिं। चौकीहार हमेलकछु नहिंपहिरावोंतोहिं ॥

यहसुनकर श्यामाबोली तुमक्रोधितक्योंहोतीहौ मैं उसेढूंढ़ने जातीहूं मुझकोदेरलगै तो घबरानामत ऐसाकहकरराधा अपने घरसेनिकली व पिछवारेस्थाननन्दजीके झूठमूठ ललितासखी कानाम पुकारकरबोली मैं बंशीबटमेंजातीहूं तूभीजल्दआव उस समयनन्दलालजीने रसोईखानेवास्ते बैठकरपहिलाग्रास उठा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यथा जैसेश्यामाकाबोलसुना वैसेउठखड़ेहुये यशोदानेपूछा तु
मघबराकरकहांचले तबउनसेकहा एकग्वालमुझसेकहगयाथा
किबनमेंगौके बछियाहुई है सोमैंवहांजाताहूं ऐसाकहकर मोहन
प्यारे बंशीबटकोचलेगये तब उनकेसखोंने जोवहांबैठकरखातेथे
यशोदासेकहा बनमेंबछिया नहींहुई है वहांराधाप्यारीगईहोगी
इसकारण मोहनप्यारेभी उससेभेंटकरनेवास्ते बिना भोजनकिये
चलेगये यशोदाने उनकीबातका बिश्वासनहींकिया पर केशव
मूर्त्तिके भूखे चलेजानेसेपछताकर शोचकरनेलगी व श्यामा व
श्यामने बंशीबटमेंजाकर आनन्दपूर्बक भोग व बिलासकिया॥

दो० नबलकुंज नवनागरी नवनागर नँदनन्द। प्रेमसिन्धु मर्यादतजि मिलेउमँगि आनन्द॥

सो० यहमचरजकी बात कोमानै को काहिसकै। गोपसुताके साथ रमत ब्रह्म द्रुमकुंजतर॥

जब संध्यासमय मोहनप्यारेनेराधासेकहा अबतुम अपनेघर
जाओ तबश्यामाबोली मुझसेतुम्हैं छोड़कर घरजायानहींजाता
तुम्हारेवास्ते अपनेमातापिताकीगाली व मारनित्यसहतीहौं नंद
लालजीनेकहा तेरेलियेहम अपनेहाथकाग्रासफेंककरचलेआये
इसीतरहदोनों मनुष्यप्रीतिभरीहुई बातेंकरते अपनेघरपरगये व
राधानेहारमोतीका अपनीमाताको देकरकहा जिसकेवास्ते तू
शोचकरतीथी वहमैंयमुनाकिनारेसे ढूंढ़करलेआई सोअपनाहा
ले कीर्त्तिने मनमेंसमझा कि राधाने श्यामसुन्दरकी भेंटकर
वास्ते यहझूठा चरित्रहारका कियाथा श्रीकृष्णजीपरमेश्वरक
अवतार हैं इसलिये राधाआदिक ब्रजबालोंको उनकेदेखेबिन
चैननहींपड़ता शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षितनन्दकिशोरको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राधिकाकी इतनीप्रीतिबढ़ी कि नित्य किसीजगहपर उससेभेट करके अपनाचित्त प्रसन्नकरतेथे सो एकदिन श्यामसुन्दर उत्तम २ भूषण व वस्त्रपहिनकर घड़ीरात्रिबीते राधाके स्थानपरगये और रातभर उसकेसाथ आनन्दपूर्वक बिहारकरके प्रातसमय अपनेघर चलेआये ॥

दो० बारबार जियलाड़िली यही शोच पछितात। गयोश्याम आलसभरे तनिक न सोयेरात ॥
सो० देखैं सखी न कोय श्यामगये मोसदनते। मैं राख्योहैगोय अबलग पहरस सखिन से ॥

जबललिताआदिक सखियोंने जो आठोंपहर राधाकृष्णाके पकड़नेकी घातमेंरहतीथीं श्यामसुन्दरको राधाकेघरसे निकलते देखा तबउनलोगोंको बड़ीडाह उत्पन्नहुई केशवमूर्त्तिके जानेउपरांत श्यामानेभी अपनेद्वारेपर आनकरदेखा तो चारोंओर उसे सखियांखड़ीहुई दिखलाईपड़ीं तबउसको बिश्वासहुआ किइन लोगोंने मेरेघरसे निकलतीसमय मोहनप्यारेको अवश्य देखा होगा ऐसा बिचारकर उसकोलज्जामालूमहुई तबउसने मनमें कहा अभीतक नन्दलालजीसे मेरीप्रीति छिपीथी सोआजप्रकट होगई नित्यसखियोंसे मुकरजातीथी आजइन्हें क्याउत्तरदूंगी ॥

दो० ऐसे शोचत लाड़िली कबहूं प्रभुहि मनाय। कबहूंप्रभुको सुखसमुझि प्रेममगन ह्वैजाय ॥

उसीसमय ललिताआदिक सखियां राधाकेघरपरगईं उनको देखतेही राधाप्यारीने चतुराईसे बिनापूछेकहा हे ललिताआज प्रातसमय वृन्दाबनबिहारी मेरेद्वारेपरसे होकर न मालूम किधर जातेथे उन्हेंदेखकर तभीसे मैं ब्याकुलहोरहीहूं सखियोंने यहबात सुनतेही आपसमें कहा देखो यहबड़ी चतुरीहै हमारेपूछने से पहिले इसने यहबात बनाकरकहा जिसमें हमकछु पूछ न सकैं ऐ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साकहकर सखियांबोलीं हे राधा तू बड़ीसयानीहोकर अपनेमन का भेद हमलोगोंसे नहींकहती रातभरमोहनप्यारेकेसाथ बिहार किया इससमय हमलोगोंको बहकातीहौ ॥

दो० कछुदिनते तेरी प्रकृति अरी पड़ी यहकौन । निठुरभई मोसों रहत जबतब साधै मौन ॥
सो० अपने मनकी बातकछु हमसों भाषत नहीं । ऐसेकाहि भुसकात प्यारी सों ब्रजनागरी ॥
दो० सुनिसुनिबानीसखिनकी प्यारीजियअनुराग । पुलकरोम गदगदहियो समझआपनोभाग ॥
सो० बचन कहेउनहिंजाय प्रीतिप्रकट चाहतकियो । हरिउररहे समाय बाहरलखतप्रकाशनहिं ॥

जब सखियोंकीबातसुनकर राधिकाने हँसदिया तबललितास वतियाडाहसे रूखीहोकर बोली ॥

स० तुमजानतीहौजु अजानभईकाहि आगसे उत्तरधावती हौ । बतलाती कछूओ कछूकहती अनुरा की आंखें दुरावतीहौ । हमैं काहपड़ी जो मनेकरिहैं कबिबोधाकहैं दुखपावतीहौ । बदनामीकी गैल बचायेस लो बढ़ेबापकी बेटी कहावती हौ ॥

तबराधिकाने उत्तरदिया ॥

स० हमसे मनमोहनसों हितहै चुगुलीकरि कोऊ कहाकरिहै । अबतो बदनाम भई ब्रजमें गुरुलोगनजा निकहाडरहै । कहैंठाकुरलालके देखिबेको ब्रजभूलो सबै बिसरोधरहै । तुमआपनेकाम ते कामकरो कोउमा पनेजान कुवांगिरिहै ॥

यहबात राधिकाकीसुनकर सखियांअपने २ घरचलीगईं व धिकाके मनमें इसबातका अहंकार उत्पन्नहुआ कि श्यामसुन्द रमुझको बहुतप्यारकरतेहैं अबवह किसीदूसरीसखीसे बोलैंगे तो मैं उनसेझगड़ाकरूंगी जिससमय राधिकाअपनेघर बैठीहुई य बिचाररहीथी उसीसमय केशवमूर्त्तिवहांजाकर झरोखेमेंसे कनेलगे तबराधानेउन्हेंकहातुमको घरघरझांकनेकीकुचालपड़ी हैयहबातमुझेअच्छीनहींलगती ऐसाकहकरराधिकाअपनेआ मानसे बैठीरही व मोहनप्यारेको उसने नहींबुलाया तबश्रीकृष्ण जी गर्वप्रहारी अन्तर्यामीउसकेमनकीबात जानकरवहांसे अ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घरचलेगये जबराधाने देखा कि मोहनप्यारे भीतरनहींआये तब अपने अभिमानकरनेसे लज्जितहोकर द्वारेतक दौड़आई जबउनको वहांपर नहींदेखा तबबिरहसागरके बीच अचेत होगई ॥

दो० भईबिकल अतिनागरी बिरह बिथाकीपीर । खानपान भावै नहीं सुधिबुधितजी शरीर ॥
सो० घरबाहरनसुहाय सुखसबदुखदायकभये । रहेउशोच उरछाय ब्रजबासी प्रभुमिलनको ॥

जब उसनेदेखा कि बिनाभेंटमोहनीमूर्त्तिके चित्तमेराठिकाने नहींहोगा तबवह ललिताआदिक सखियोंकेघर इसइच्छासे दौड़ीगई जिसमें वहलोग केशवमूर्त्तिको समझाकर मेरेपास बुलालावें ललिताने उसेउदासदेखकरपूछा कहोप्यारी आजतुम किसचिन्तामें हौ राधाने मुसकराकरकहा ॥

दो० छिपतछिपाये कौन विधि सखि तुमसों यहबात । देखेबिननँदनन्दके धीरजधरत न गात ॥
नयननते क्षणटरतनहिं नीकेलख्योनजात । कहाकहौं तुमसों सखी यहअचरजकी बात ॥
सो० मिलेमोहिं जबश्याम सुनोसखी तुमसों कहों । करिकै उरमें धाम तबसे मनमेराहरेउ ॥
दो० नहिंजान्योहरि क्या कियो मन्दमन्दमुसुकाय । मनसमुझतरीझतनयन सुखकछुकहोनजाय ॥
सो० तबसे कछु न स्वहाय कासों कहिये बातयह । अमल परेउ दृगआय देखनको सुन्दरबदन ॥

हेबहिननन्दकुमार मुझकोबहुतप्यार करतेथे सोआजवहमेरे घरआनकर झरोखेसेमुझेदेखनेलगे परमैंनेअपने अभिमान व अज्ञानसे उनकोभीतर नहींबुलाया इसीवास्तेवहखेदमानकर चलेगये सोतुमलोग कोई ऐसाउपायकरो जिसमें उनकादर्शनमुझकोमिलै नहीं तोमेराप्राण उनकेबिरहमें निकलनेचाहताहै यहबातसुनकर ललिताआदिकसखियोंने सबतियाडाहसे राधाको कहा जोमोहनप्यारे तुझसेबिनाभेंटकियेचलेगये तो तुमभीमानकरकेघरबैठरहो कदाचित् उनको तेरीचाहनाहोगी तो फिरतेरे घरआवेंगे यहबातसुनकर राधानेकहाएकबेर अभिमानकरकेमैंने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहफलपाया कि उनकेबिरहमें मेरीयहदशाहुई अबमुझेमानकर नेकीसामर्थ्य नहींहै जोफिर उनसे मानकरूं॥

दो० पुनि पुनि सिखवत तुमसखी मानकरनकोमोहि। मनतोमेरेहाथनहिं मानकौनविधिहोहिं॥
सो० उमँगयही दिनरात श्यामगहो अभिलाषकरि। मननहिं मानत बात मानकरों कैसेसखी॥
क० घरतजों बनतजों नागरनगरतजों बंशीरामसबतजि काहूपैनलजिहौं। देहतजों गेहतजों नेहकहो कैसे तजों आजकाज राजबीच ऐसी साजसजिहौं। बावरेभयेहैं लोग बावरीकहतमोकों बावरी कहेसे मैंहूंका हूनबरजिहौं। कहैया औ सुनैयातजों बाप और भैयातजों दैयातजों मैयापैकन्हैया नाहिं तजिहौं॥

ऐसाकहकर राधाजबअतिबिलाप करके रोनेलगी तबसखियोंने उसपर दयाकरके आपसमेंकहा इसकादुःखछुड़ाना चाहियेनहींतोश्यामसुन्दर के बिरहमेंयह मरजावेगी॥

सो० लीन्हीं सखियनजान हरिरँगराती काढ़िली। सुन्दरश्यामसुजान रोमरोम याके रमे॥

ऐसासमझकर ललितासखीने राधासेकहातूधीर्यधरकर यहां बैठीरह मैंतेरेचित्तचोरकोलाकर तुझेमिलादेतीहूं ऐसाकहकरललितावंशीबटमें चलीगई व केशवमूर्त्ति के पासपहुँचकर बोलीहे प्राणप्यारेराधाने प्रेमबश तुमसे अभिमानकियाथा सो अपराध उसका क्षमाकरो इससमय वहतुम्हारे बिरहकी अग्निमेंजल रहीहै तुमजल्दी चलकर अपनेचन्द्रमुखकी शीतलताईसे उसका हृदय ठंढाकरो॥

दो० चलोश्याम सुन्दरनवल छैलछबीलेलाल। तुम्हें मिलनको नवलवह अतिव्याकुल यहिकाल॥
मैं आई तुमसों कहन चलो देखाओ नैन। देखि परमसुख पाइहो जो मानो मोबैन॥
सो० भरि भरि लोचननीर श्यामश्याम मुख कहिउठत। चलोहरो यहपीर मैं आई लखिधायके॥

यहबात सुनतेहीनन्दलालजी व्याकुलहोकरउठे व ललिताकेघरपहुँचकर क्यादेखाकिराधिका अपनेकर्त्तबसे लज्जितहोकररोरहीहै यहदशाउसकी देखतेहीकेशवमूर्त्ति ने उसकाघूंघटउठा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर मोहनीमूर्त्ति अपनीउसको दिखलादिया वैसेराधाभी प्रेमव शहोकरउनसे लपटगई ॥

दो० वहचितवनि वहहँसिमिलनि वहशोभासुखभारि।भईविवशलालितानिरखियकटकरहीनिहारि ॥

जब ललिताने अपनेसाथी सखियोंको बुलाकर उनदोनोंका प्रेमदिखलाया तबवहलोग ऐसीप्रीतिश्याम व श्यामाकीदेखकर बड़ाईभाग्य राधाकीकरनेलगीं व केशवमूर्त्तिकी छबिदेखतेही स बोंने अपना२हृदयठंढाकिया उससमयमोहनप्यारे राधापरऐसे मोहितहोगये कि अपनाभूषण व वस्त्र व मुरलीउसपर बारम्बार नेवछावर करनेलगे व उसीप्रेममें श्यामसुन्दरने सबगहना राधा प्यारीका उतारकर आपपहिनलिया व उसकेआंखोंमें से अंजन निकालकर आपअपने नेत्रोंमें लगालिया व सारी अपने पीता म्बरकी पहिनकर स्त्रीकेसमान अपनारूपबनालिया व राधाप्या रीकिरीट व मुकुट श्रीकृष्णजीका पहिनकर कन्हैयाजीकेसमान बनगई औरबोली हेश्यामसुंदर तुमस्त्रीकीतरह मानकरकेबैठोह मतुम्हें बिनतीकरकेमनावें जबस्त्रीरूपमोहनप्यारे रूठकरबैठे तब कृष्णरूपराधा बारम्बार उनकेचरणोंपर गिरकर मनानेलगीं पर श्यामसुन्दर न मानकर उससमय ऐसीमाया अपनीराधापर फै लादिया कि उसकोइसबातका ज्ञान नहींरहा कि मैंस्त्रीहूं तबवह मोहनप्यारेके चरणोंपर शिरधरकर रोनेलगी यहदशा उसकी देखतेही वैकुण्ठनाथने अपनीमाया हरकर राधासेकहा मैं तेरे कहनेसे रूठकरबैठाथा तूकिसवास्ते घबड़ागई जबराधाकाचित्त ठिकानेहुआ और उसनेअपनामुख शीशेमें देखा तबलज्जित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होकर किरीटमुकुटआदिक उतारडाला व स्त्रियोंकागहना व कप
ड़ापहिनलिया जब थोड़ासादिनरहा तबश्याम व श्यामा दोनों
स्त्रीरूपसे बंशीबटको चले ॥

दो॰ चलेहरषि वनकुंजको युगलनारिकेरूप। यकगोरी यकसांवरी शोभा परमअनूप ॥

जबराहमेंचन्द्रावली सखीसेभेंटहुई तब उसनेपहिंचाना कि
यहश्याम व श्यामा स्त्रीरूपबनकर बंशीबटमेंबिहार करनेजातेहैं
तबचन्द्रावलीनेहँसकर श्यामासेपूछा कहोप्यारी यहनईसखीसां
वलीसूरत मोहनीमूर्त्तिकहांसेआई जो तेरेसाथबिहारकरनेजाती
है तब राधाबोली यहसखीमथुरामेंरहतीहै मैंललिताकेसाथ वहां
दही बेचनेगईथी सो मेरी व इसकीजानपहिंचानहोगई उसीकारण
मेरे भेंटवास्ते यहांआई है उससमय मोहनप्यारेने यहसमझकर
कि चन्द्रावलीकेपहिंचानलेनेसे सबसखियां मेरीहँसीकरैंगी घूं
घटसे अपनामुखछिपालिया तब चन्द्रावलीबोली हेराधा तू इस
सखीकोभी मथुरासेबुलाकर अपनेघरकेपास टिकादे तोतुम और
यहदोनों जोमहासुन्दरी व तरुणाहो श्यामसुन्दरसे प्रीतिकरके
उनकोसुखदेना और यहस्त्रीऐसीमोहनीरूपहै जिसेदूसरी अपना
को देखकर मोहितहोजावै टुक इसकामुखारबिन्द मुझेभी तो
अच्छीतरहदिखलावो जिसमेंमेरी आंखैंठंढीहों ॥

दो॰ ऐसेकहिचन्द्रावली गहेउ श्यामकरजाय। यह अबलों कहिनासुनी त्रियसोंत्रियशरमाय ॥

फिर चन्द्रावली मोहनीमूर्त्तिकाघूंघट उठाकरबोली तुमसुभ
से क्यालज्जाकरतीहौ मैं तुम्हैं आगेसेपहिंचानती हूं जब चन्द्रा
वलीसखीरूप श्यामसुन्दरसे मिलकर उनकागालमलने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगी तब केशवमूर्त्तिने लज्जितहोकर आंखनीचीकरालिया यह हाल उनकादेखकर चन्द्रावलीबोली हेराधाप्यारी जबसेतैंने इस सखीसे प्रेमलगाया तबसेहमलोगोंकी प्रीतिछोड़दिया तुमदोनों वृन्दाबनके कुंजमेंजाकर सुखबिहारकरो तुम्हैंअपनेस्वारथकेसिवायदूसरेकासुख अच्छानहींलगता जब मोहनप्यारेने समझा कि यह मुझेपहिंचानगई अब इससेछिपाय रखनावृथा है तब हँसकर चन्द्रावलीको अपनेगले लगालिया व दहिनेचंद्रावली व बांयेंतरफ़ राधाकाहाथ पकड़ेहुये आनन्दसे बंशीबटको चले गये व रातभर वहां राधाप्यारीसेभोग व बिलासकिया प्रातसमय केशवमूर्त्ति पुरुषरूपबनकर अपनेस्थानपरचलेआये व राधा व चन्द्रावली अपने २ घरगईं॥

दो॰ अतिविचित्रनँदलालकी लीलाललितरसाल। जोसुखदुर्लभशिवसनक सोलूटतब्रजबाल॥

एकदिन राधाप्यारी सोलहोंशृंगार करके अपनामुखशीशे में देखनेलगी सो श्यामसुन्दरकी मायासे उसने अपनीपरछाहीं देखकर यहसमझी कि कोईदूसरी चन्द्रमुखी कहींसेयहां आई है जो यह ब्रजमेंरहैगी तो मोहनप्यारे मुझे छोड़कर इससेप्रीति करैंगे॥

दो॰ यहभाई केहिलोकते महासुन्दरी नारि। ब्रजमें तो ऐसी नहीं कोई गोपकुमारि॥

ऐसा बिचारकर राधाने अपनी परछाहींसे कहा तुमकहांसे आई हौ तुरंत अपनेघर चलीजाव इसगांवमें मोहनप्यारा अति ढीठरहकर सबब्रजबालोंको नंगीकरदेता है यहांरहकर उसकेहा थसे बहुतदुःख पावोगी॥

CC-0. Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० तेरे हितकी कहतहौं मानघाह मतिमान । बिरजबसे दुखपाउगी सुनतू सुघरसुजान ॥
सो० ऐसो ढीठ न आन त्रिभुवनमें कोऊकहूं । जैसो ब्रजमें कान्ह मनभायो सबसों करत ॥
दो० यहतो बोलत है नहीं अति गरबीली बाम । देखतहीं यहि रीझि हैं छैलछबीले श्याम ॥
सो० भईसवतियहआय अब हरियाकेवशभये । मोरमरणभो आय उपजायो उर बिरहदुख ॥

जिससमय राधायहबातैं बौरहोंकेसमान अपनीपरछाहीं से कहरही थी उसीसमय केशवमूर्त्तिनेभी वहां आनकर झरोखे में से यहहाल उसकादेखा व राधाको उनकाआना नहींमालूम हुआ ॥

सो० देखि झरोखेलाय रहे श्याम यकटक निरखि । उरआनन्दबढ़ाय देखत प्यारी की छबैं ॥
कहतरसीलीबात ज्यों २ तियप्रतिबिम्बसों । त्यों २ सुनि हर्षात ब्रजबासी प्रभुसांवरो ॥

जबवहपरछाहीं राधाकाकुछ उत्तरनदेकर वहांसेनहींगई तब राधा उसको अपनीसवातिसमझकर चिन्ताकरनेलगी व मोहन प्यारेयहहाल श्यामाकादेखकरचुपचाप उसकेपीछेचलेगये व अपनेदोनोंहाथोंसे आंखें उसकीबन्दकरके शीशाउलटदिया ॥

सो० लीन्हेंसन्मुखआन पाणिपकडके लाडिली । भलीकरीतुमकान्ह मैं सखियन धोखेरही ॥

जबशीशा उलटदेनेसे वहस्त्री राधाकोनहींदिखलाईदी तब उसे परछाहीं समझकरप्रसन्नहोगई और श्यामसुन्दरकेसाथ बि हारकरनेलगी जबकुछबेरबीते तबमोहनप्यारे अपनेघरचलेगये और ललिताआदिक सखियांराधाकेमकानपरआईं जबराधाने उन्हें बड़ेआदरभावसे बैठाला तबललिताबोली अयप्यारीआज तुझेश्यामसुन्दरमिलेहैं जो इतनाआदरहमाराकरतीहो यहबात सुनकर राधाहालआने श्रीकृष्णजी व उलटदेनेशीशेका कहकर बोली हेललितायहसबसुख मुझेतुम्हारी कृपासे मिलताहै यहसु नकर ललिता उसकेभाग्यकीबड़ाई करनेलगी जिससमययहसम

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रेमभरीहुईबातैं राधासखियनसेकररहीथी उसीसमयफिरमोहन प्यारे अपना शृंगारकरकेनटवररूपसाजे बनमालाबिराजेमुरली बजातेहुये राधाप्यारीको देखनेआये परसखियोंका यमघटदेख कर भीतरनहींगये ब्रजबालोंसे आंखैंलड़ाते नयनमटकातेहुये दूसरी तरफ़ जानिकले ॥

दो० छबिसागरसुखकीअवधि गुणमन्दिररसखान। मोहिलियोमनतियनको रसिकनरेशसुजान ॥
सो० मुरली मधुर बजाय प्यारी प्यारी नामकहि। सबको चित्त चुराय गये सदन आनन्द घन ॥

जब सखियोंकामनउन्होंने अपनी चितवनसे मोहि लिया तबवह सब कामातुर होकर कहनेलगीं यहसब दोषहमारी आंखोंकाहै जो श्यामसुन्दरकी छबिदेखतेही मोहितहोगईं व हमाल कुलपरिवार व लोकलाज छुड़ाकर ब्रजगोकुलमें हमैं बदनामकिया आपजाकर उनकीछबि देखनेसे प्रसन्नहोती हैं व हमैं दिनराति उनकेबिरहमें सिवायदुःखके कुछ सुखनहीं मिलता ॥

दो० अब यहलोचन श्यामके सखी हमारे नाहिं। बसेश्यामरस रूपयह श्यामबसे इनमाहिं ॥
सो० कहाकरैं सखिश्याम नयननहींको दोषयह। हठकरिभये गुलाम नेक मन्दमुसकानपर ॥
दो० लालचवश ज्यों मीनमृग आष बँधावतआय। रूपलालचीनयनहूं भयेश्यामवशजाय ॥
दो० अब हमतलफत उनबिना मृत्युभई अफसोस। पैसो खोटो आपनो परखैया क्यादोष ॥

ऐसीऐसीबातैं सबब्रजबाला आपसमेंकहतीहुईं श्यामसुन्दरका नटवररूप हृदयमेंराखिकर अपनेअपने घरचलीगईं परआठोंपहर स्वरूप मोहनीमूर्त्तिका उनकीआंखोंमें बसारहताथा ॥

दो० प्रेमभरे छबिसोंभरे भरेआनन्द हुलास। युगल माधुरी रसभरे ब्रजमें करत बिलास ॥
सो० करतअनेकबिहार रूपराशिगुणनिधियुगल। राधानन्दकुमार ब्रजबासीजन सुखकरन ॥

उनतीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी का मुरली बजाना ॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् जिसतरह श्यामसुन्दरने कामदेवका अभिमान तोड़नेवास्ते गोपियोंकेसाथ रासलीलाकियाथा

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहकथा अपनीबुद्धिप्रमाण तुमसेकहतेहैं चित्तलगाकरसुनो जब से बृन्दावनबिहारीने चीरहरनेकेसमय गोपियोंसे शरदपूनोको रासलीलाकरनेकेवास्ते कहाथा तबसेसबब्रजबाला उसीइच्छामें एकदिनको बर्षभरकेसमान समझकरकहतीथीं किजल्दीकुवार कामहीनाआवे तोहमलोग प्राणप्यारेसे रासलीलाकरके अपना जन्मस्वार्थकरैं जबबर्षाबीतकर शरदऋतुआई तबमोहनप्यारेने बिचारा किअपनेवचनप्रमाण गोपियोंसे रासलीलाकरनाचाहि ये ऐसासमझतेही कुवारकीपूर्णमासीको तीनघड़ीरातबीते मुर लीमनोहर किरीटमुकुटसाजे बनमालाबिराजे अङ्ग २ परगहना जड़ाऊपहिने पीताम्बरकीकछनीकाछेनटवररूपबनाये अपनेघर सेनिकलकर बनमेंचलेगये तो क्यादेखा कि इससमयचन्द्रमा एककलाअपनी जोमहादेवकेपासरहतीहै वहभीलाकर सोलहों कलासे प्रकाशकियेहै व यमुनाजल मोतीकेसमान निर्मलहोक र कमलफूलरहाहै और हरियाली घटाटोप बृक्षोंकी चांदनी में अतिशोभायमान होकर आकाशमेंतारे खिलरहेहैं व शीतल मन्द सुगन्ध हवाबहकर यमुनाजी लहरैंलेरही हैं॥

दो॰ श्रीवृन्दाबन धामकी शोभा परमपुनीत। बर्णिसकैकबि कौनबिधि मनबुधिवचनसुनीत॥
सो॰ और सकलसुखधाम बैकुण्ठादिक श्यामके। यहबिचार बिश्राम यातेअति सुन्दरसुखद॥

हेराजन् उससमय मोहनप्यारे ऐसेसुन्दरमालूमदेतेथे जिन केऊपर हजारोंकामदेवको न्यवछावरकरिडालैं वहशोभादेखते हीनन्दकिशोरने एकऊंचेबृक्षपरबैठकर योगमायासंयुक्त मुरली प्रेमसेबजाई और उसकीध्वनिमेंराधा व गोपियोंकानामलेलेकर

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उन्हें अपनेपास बुलानेलगे उससमय ऐसीमाया केशवमूर्त्तिने करदिया किजिनब्रजबालोंने उनकोपतिबनावनेकीइच्छासे व्रत व पूजनकियाथा उन्हींको वहमुरलीसुनपड़ी और दूसरेकिसीने नहींसुनी व मोहनप्यारेने बंशीमेंमनहरने व काम बढ़ावनेवाला ऐसारागगाया जिसकाशब्द सुनतेहीश्यामाआदिक सोलहहज़ार ब्रजबाला कामातुरहोकर मोहितहोगईं व लाज व काज छोड़ कर उलटापलटा शृङ्गारकरके इसतरहवृन्दाबनकोदौड़ीं जिसतरह श्रावण व भादौंमेंनदी व नालोंकापानी समुद्रादिकमें बेगसे बहजाता है॥

दो० अधर मधुर मुरलीधरे मुरलीधर सुखदैन ध्वनिसुनि मोहन गोपिका तनमनप्रकटेमैन॥
सो० रहेउ न मनमेंधीर बाजीबाजी कहिउठीं। व्याकुल महाशरीर सुनिमुरलीब्रजकीतरुणि॥
क० बाज़ीबौरानी बाजी देखिबेको द्वारधाईं बाजी अकुलानी सुनिबंशी बंशीधरकी। बाजीनापहिरैंचीर बाजीनाधरैंधीर बाजिनके उठीपीर विरहानल भरकी। बाजीनाबोलें बाजी संगलागि डोलें बाजिनकोबिसरिगई सुधिबुधिघरकी। बाजीकहैं बाजी बाजीकहैं कहांबाजी बाजीकहैं बंशीवाजी साँवरे सुँदरकी॥

हे परीक्षित जो गोपीगौदूहतीथीं बर्त्तनदूधका उनके हाथसे गिरपड़ा व जो भोजन करतीथीं उन्होंनेहाथभी नहींधोया व जो रसोई बनावती व दूधआगपर चढ़ायेथीं उन्होंने उसीतरह चूल्हे परछोड़दिया व जो सुरमा व काजललगावतीथीं वहलोगदूसरी आंखमें बिनालगाये उठदौड़ीं व जो अपनेपतिकेपास अचेतसो ईथीं वह उसीतरहनंगीचलीगईं व जो बालककोदूध पिलावती थीं वहउसेरोताछोड़कर चलनिकलीं व जो अपनेपतिको भोजनकरावतीथीं वह बिना खिलाये उठचलीं व जो ब्रजबाला मोहनप्यारेकी चर्चा करतीथीं वह उसे छोड़कर उठभागीं व घबडा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हटसे एकने दूसरीकाहाल नहींपूंछा कि तू कहांजातीहै व व्या कुलतासे हाथका गहनापावँमें व गलेकाभूषण भुजापर बांधि लिया व लहँगाकीजगहपर चादरपहिनकर सारीओढ़लिया व मारेजल्दीके चोलीहाथमें लियेहुये उठधाई व अपने घरवालों का कहना किसीने नहींमाना॥

दो॰ प्रीतिलगी हरिनाथसों तनमनकी सुधिनाहिं। जितने भूषण बांहके पहिरे जांघनमाहिं॥
याबिधि जोजाबिधिहतीं सुधिबुधिसबैबिसार। भाजिचलीं ब्रजराजपहँ लाजकाजधरिद्वार॥

जब एकगोपी अपने पतिकेपाससोईथी उठकरभागचली व उसकेपुरुषने उसेबरजोरीपकड़करनहींजानेदिया तबवह ब्रजबा लाबीचध्यान मुरलीमनोहरकेतनु अपनाछोड़कर दिव्यरूपसे सबगोपियोंकेपहिले श्यामसुन्दरकेपासजापहुँची बैकुंठनाथजी ने उसकीप्रीति व भक्ति देखकर उसेमुक्तिदिया इतनीकथा सुनकर परीक्षित बोलेमहाराज उसगोपीने श्रीकृष्णजीकोपरमेश्वर जान करप्रीतिनहींकिया कामदेवकेवशहोकरअपनाप्राणदियाथा फिर किसतरह मुक्तिपाया यहवचनसुनतेही शुकदेवजीक्रोधितहोकर बोले हे राजन् कईबेर मैंने तुझेसमझाया पर तू बिश्वासनहींरख ता सुनोपरमेश्वर निर्गुणरूपसबजीवोंके मालिकहोकर सदाएक रसरहते हैं जिसतरह पारसपत्थरसेलोहाजान या अजानमेंछूकर सोनाहोजाताहै व अमृतपीनेसेजीनहींमरता उसीतरह परमेश्वर कीओरमनलगावनेवाला जीवमुक्तहोताहै देखोजिसशिशुपाल नेपरमेश्वरको ऐसादुर्वचनकहा व जोपूतना व बत्सासुरआदिक दैत्य उनकाप्राणमारनेआयेथे उन्हें परमेश्वरने कैसीगतिदिया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नारायणशत्रुता वमित्रतासेकुछप्रयोजननरखकर केवलअपनी ओर मनलगायेरहनेसेप्रसन्नहोते हैं कामक्रोधमोहलोभ किसी तरहपर उनको यादकरै व जो कोई उनकाध्यान व स्मरणमरते समय करताहै उसकी मुक्तिहोनेमें कुछसन्देह नहीं रहता॥

दो॰ जो शिशुपाल महाअधम हरिको निन्दनहार। ताहूको निजपुर दियो ऐसे अधमउधार॥

जोमनुष्य प्रकटमें छापातिलकलगाकर लोगोंको दिखलाने वास्ते जप व भजनकरतेहैं व अन्तःकरणसे प्रीतिनहींरखते उन की मुक्तिहोनाकठिनहै सच्चेमनसेभक्ति व प्रीति रखनेवाले मुक्ति पदवीपर पहुँचतेहैं व जो लोग श्रीकृष्णजीकी दयासे भवसागर पार उतरगये थोड़ासा उनकाहालसुनो नन्द व यशोदाने मोहन प्यारे को अपना पुत्रजाना व गोपियोंने उनको महासुन्दर देख कर अपनापति बनानेचाहा व राजाकंसने अपनाशत्रु प्राणलेने वाला समझा व ग्वालोंने मित्रजाना व पाण्डव और यदुवंशियों ने अपनानातेदार व भाईबन्द जानकर योगी व मुनीश्वरों ने पर मेश्वरभाव समझाथा उनसबको नारायणजीने कृतार्थकिया एक गोपी उनसेप्रीति लगाकरमुक्तहुई तोक्या आश्चर्यकीबातहै यह वचनसुनतेही परीक्षितने विनयकिया महाराज अबमेरा सन्देह छूटगया अबकृपाकरके आगेकथासुनाइये शुकदेवजीबोले हेपरी क्षित जब राधाप्यारी आदिक सोलहहज़ार व्रजबाला बड़े उमंग से केशवमूर्त्तिकेपासजापहुँचीं उससमयशोभामनहरणप्यारेकी कैसी मालूमदेतीथी जैसे तारोंमें चन्द्रमारहतेहैं व मोहनीमूर्त्ति की छविदेखतेही सबगोपियांउनपर मोहितहोकर जबआंखोंकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राह रूपरसपीनेलगीं तबवृन्दावनविहारीने पहिले कुशलउनकी पूंछकर फिररुखाईसेकहा तुम्हारेआवनेसे मैंप्रसन्नहुआ जो कुछ कहो सोकरूं पररात्रिमें भूत व प्रेतकी डरावनी समयहै तुमलोग तरुण२ स्त्रियां अपनेकुल व परिवारकी प्रीतिछोड़कर उलटापल टाशृंगारकिये बौरहोंकेसमानघबड़ाईहुई यहांक्याकरनेआईहो॥

दो॰ तुमअपनोघर छोंडिकै क्यों आई बनमाहिं। रैनिसमय घरकी बधू घरतजि कहूंनजाहिं॥

तुम्हारेघरवाले तुमको ढूंढ़तेहोंगे कदाचित् तुमको चांदनी रातमें भोग व विलासकी इच्छाहुईथी तो अपने २ पतिकेसाथ करतीं जो प्रेमकीराह मुझेदेखनेआईहो तो मैं भी अपनेसाथ प्री तिकरनेवालेसे नेहरखताहूं परस्त्रीको अपनेपतिकी आज्ञापालन करना व लोकलाजका डररखना जप व तपके बराबरहोताहै वेद व शास्त्रमें ऐसालिखते हैं कि जोस्त्री अपने पतिको अन्धा काना कुबड़ा कोढ़ी कुरूप लूला लँगड़ा व निर्द्धन कुटिल लम्पटजुवारी रोगी कैसाही अवगुणोंसेभराहो परमेश्वर तुल्य समझकर प्रेमपू र्वक उसकी टहलसेवाकरतीहैं वह संसारमें मनोकामनापाकर अ न्तसमय मुक्तहोतीहैं और उन्हें सबकोईकुलवन्ती कहताहै और जो स्त्री अपनेपतिको परमेश्वरकेतुल्य न जानकर उसकीनिन्दा करतीहैं या उसे दुर्वचनकहकर सेवामें नहींरहतीं या दूसरेपुरुषसे प्रीति रखतीहैं उनको लोकनिन्दाकाडर लगारहकर मनवांछित फल नहींमिलता व मरनेउपरांत नरकमेंजाकर दुःखभोगना ड़ताहै और जैसाहम दूरसेतुम्हारीभक्ति व प्रीतिकरनेमें प्रसन्न वैसा यहांआनेमें खुश नहींहुये किसवास्ते कि रातको यहां च

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आवनेमें तुम्हारे घरवाले खेदमानकर सबव्रजवासीहमें व तुम्हें बदनामकरैंगे भला जोकुछ तुमनेकिया सो अच्छाहुआ अबचांद नीववन वयमुनाकीशोभा देखचुकीं इसलियेघरजाकर अपने२ पतिकीसेवा व टहल प्रेमपूर्वककरो जिसमें तुम्हाराकल्याणहो॥

दो० निजपतितजिपरपतिभजेतियकुलीननहिंहोय। मरेनरकजीवतजगतभलोकहहिनहिंकोय॥
सो० युवतिनको पति देव कहतवेद मैंभी कहौं। करो उन्हींकी सेव जो तुमचाहतसुखलहन॥

हेराजन् यहवचन ज्ञानरूपी सुनतेही सबव्रजबाला शोचित होकर यहदशा उनकीहोगई कि शिरनीचाकरके ठएढी २श्वास लेकर नखसे पृथ्वीखोदनेलगीं व चुपचाप चित्रकारीसी रहकर विरहसागरमें डूबगईं व आँसू बेपरवाह गिरनेसेसुरमा व काजल आँखोंकाबहकर गालोंपरचलाआया व कोईव्रजबालाकी बेसर टूटकर गिरपड़ी व पहिलेमारेखुशीके जो मुखारविंद उनका लितथा सो पीलाहोगया॥

दो० निठुरवचनसुनि श्यामकेयुवति उठीं अकुलाय। चकितभईं मनगुनिरहीं मुखकछुवचननआय॥

उनमें जो व्रजबाला चतुरीथीं वहाविरहकी अग्निमें जलकर योंबोली हे श्यामसुन्दर तुम बड़ेठगहौ पहिले तुमने मुरलीबजा तीसमय सबकिसी का नामलेकर अपनेपास बुलाया व अचान कमेंज्ञान व ध्यान व तन व मन हमारा तुम्हारी मोहनीमूर्त्ति व वंशीकीध्वनिने हरलिया अबतुम कठोरताईसे वेदशास्त्र समझा कर हमाराप्राणलिया चाहतेहो हे मोहनप्यारे जैसेरातको तुमने हमें बुलाथाहै वैसे हमारीइच्छापूर्णकरो हमलोग मर्य्याद वेद व शास्त्र व लोकलाज व प्रेम व कुलपरिवारको छोड़कर तुम्हारे च रणोंमें जिनकाध्यान देवता व ऋषीश्वर करतेहैं प्रीतिलगाया है

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदिपुरुष परमेश्वरको छोड़कर ऐसाधर्म्मनहींसीखतीं जो सं
सारी मायाजालमें फँसकरनष्टहोवें संसारीमाया में फँसेरहने से
किसीका कल्याणनहींहोता व मनहमारा तुम्हारे प्रेममें उलझ
रहाहै इसलिये बीचकामगृहस्थीकेनहींलगता तुम्हारेचरणछोड़
कर एकपगजानाहमें कठिनहै इतनीदूर घरपरकिसतरहजावें॥

दो॰ अबतुमको यहउचितनहिं सुनोश्यामसुखराश। मनहमरोअपनायकै हमकोकरत निराश॥
सो॰ पापपुण्यकहनाथ यहतोहमजानैंनहीं। बिकीं तुम्हारे हाथ अधरामृतके लोभसे॥

हे महाप्रभु हमलोग अबलाअनाथ कुछझूठ व कपट न जान
कर तुम्हें अपनापति मनसा वाचासे समझतीहैं आपकी मृदुमुस
कानने सबव्रजबालोंको मोहिलिया दूसरे तुम्हारीसहाय मुरली
ऐसीमिलीहै जिसकीध्वनिसुननेसेचित्तहमाराठिकानेनहींरहाव
तुम्हारेचरणोंकी प्रीति करनेवाला मनुष्य कुलपरिवारका प्रेम व
लोकनिंदाका कुछडरनहींरखता सोहेअन्तर्य्यामीव्रजराजशरण
आयेकी लाज तुम्हारेहाथहै वहमनेबड़ोंके मुखसेऐसासुनाथाजो
कि तुमसेप्रीतिरखताहै उसकेसाथ तुमभीप्रेमकरतेहो सो अबयह
वचनझूठा मालूम हुआ किसवास्ते किहमलोग तुम्हारेस्नेह से
इससमयवनमेंआईं औरतुम अपनेपाससे हमेंखेदतेहो व ऐसाभी
लोगकहतेहैं किएकमनकाहाल दूसरामनुष्य जिससे वहप्रीतिक
रैजानताहै सोयहभी तुमनेकहनेवास्तेबनादियाहै नहींतो हमारे
दर्दकी प्रीतिका हालतुमजानते सिवायइसकेवेद व शास्त्रकेअनु
सारजबतक तुम्हाराचाहनेवाला संसारी मायासे अपनामनविर
क्तनहींकरता तबतक तुम्हारेपास उसकापहुंचना कठिनहै व उसी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शास्त्रके प्रमाणसे हमलोगभी अपने घरवालोंकी प्रीति छोड़कर तुम्हारेशरण आईहैं कदाचित् तुम शास्त्रको झूठाकरके हमारे चाहनेपर भी हमलोगोंसे प्रीति नहींरखते तो हमारामन जो तुमने हरलियाहै सो फेरिदेव नहींतो अपनीदासी हमैं बनाओ कदाचित् प्रकटमें हमैं छोंड़दोगे तो हमारावश नहींचलता पर हमारेहृदयमें जो तुम्हाराबास आठोंपहर रहताहै वहांसे भागकर कहां जावेगा॥

दो० कर छटकाये जातहौ अबल जानिकै मोहिं। हृदयनसे जबजाहुगे मर्द बखानों तोहिं॥

जिसतरह तुम्हारे चरणोंकी सेवा लक्ष्मीजी वैकुण्ठमें करती हैं उसीतरह हमको तुम्हारे चरणारबिंद प्यारेहैं जिन चरणनकी धूरि मिलनेवास्तेब्रह्मा व महादेव आदिकसबदेवता चाहनारखते हैं वे चरणकमल हम किसतरह छोंड़देवें इसमोहनीमूर्त्तिकी हम लोग दासीहोकर अपना तनमनधन इसपरन्यवछावर समझती हैं तीनोंलोकमें कौन ऐसाजीव जड़ व चैतन्यहै जो तुम्हारीछबि देखने व बंशीकीध्वनि सुनने से मोहित न होजावे हे ब्रजनाथ तुम्हारानाम दीनदयालुहै हमसेअधिककोई दूसरा संसारमेंदीन न होगा इसलिये दयालुहोकर हमारीइच्छा पूर्णकीजिये नहीं तो तुम्हारेबिरहकी अग्निसे अपनातनु जलाकर मरतीहैं व मरतेसमय यहइच्छा करैंगी कि सौजन्मतकतुम्हारी दासीहोकर सेवा किया करैं तब हमारेमरनेका तुम्हें दोषहोगा॥

दो० बिरहबिकललखिगोपियन कृपासिंधुभगवान। उमँगिउठेहृगभरिलिये दीनवचन सुनिकान॥

जब केशवमूर्त्तिने सच्चीप्रीति गोपियोंकी देखी तब बड़ेप्रेमसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब ब्रजबालोंको अपनेपासबैठाकर कहा कदाचित् तुम्हारीऐसी
इच्छाहै तो मेरेसाथ रासमण्डलकरो यहवचन सुनतेही सबगोपि
यां इसतरह प्रसन्नहोगईं कि जिसतरह मछलीको गर्मबालूपरसे
उठाकर कोई पानीमेंडालदेवै फिर वृन्दाबनबिहारीने योगमाया
को बुलाकर आज्ञादिया कितुमहमारी रासलीला करनेकेवास्ते
एकस्थान बहुतअच्छा यमुनाकिनारे तय्यारकरके वहां बनीरहो
व इन ब्रजबालोंको भूषण व वस्त्रआदिक जिसबस्तुकी इच्छाहो
सो देव यहवचन सुनतेही योगमायाने उससमय जब एकचबूत
रागोल व बहुतबड़ा रत्नजटित तय्यारकरादिया व उसके चारोंओ
र केलेकास्तम्भ गाड़कर मोती व फूलोंकीझालर उसमेंलगाया
तब मोहनप्यारेने राधाआदिक गोपियों समेत वहांजाकर देखा
तो उस चबूतरेकीशोभा चांदनीसे चौगुणी दिखलाईदी व चारों
ओरबालू यमुनाजीकी सफेद बिछावनकेसमानहोकर एकओर
हरियाली बृक्षोंकी बहुतसोहावनी दिखलाईदेतीथी जबउस चबू
तरेकेनिकट हरिइच्छासे अनेकतरहकेभूषण व वस्त्र व बाजनका
ढेरलगगया तब ब्रजबालोंने योगमायाकी आज्ञानुसार वहां जा
कर इच्छापूर्वक गहना व कपड़ा पहनलिया व सोलहोंशृङ्गार क
रने उपरांत अनेकतरहके बाजालेकर श्यामसुन्दरके पासआईव
कामवशहोकर उसचबूतरेपर गानेबजानेलगीं तब श्रीकृष्णाजीने
राधाप्यारीके साथ बीचमेंअपने निजरूपसे रहकर और सबदोरे
गोपियोंमें अपना एक २ रूप प्रकटकरादिया उससमय केशवमू
र्त्ति गोपियोंके बीचमें इसतरह सुन्दर मालूमदेतेथे जिसतरह सु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हली मालाके दानोंमें नीलमणिरहतीहै जब श्यामसुन्दरने ब्रज बालोंकेगलेमें हाथडालकर मुखचूमने व गालछूने उपरांत उन्हें छातीसे लगाया व बंशीबजाकर अनेकराग व रागिनी उनको सुनाया तब गोपियोंका कलेजा बिरहकी अग्निसे जलरहाथा मो हनप्यारेके चन्द्रमुखके स्पर्शकरनेसे शीतलहोगया जब घूमतेस मय वृन्दाबनबिहारी ब्रजबालोंके पीछेपीछे परछाहींकीतरह फि रतेथे तब श्यामाआदिक गोपियां उनकीछबि व सुन्दरताईपर मोहितहोजातीथीं व कभी मुरलीमनोहर अपनीआंख व भौंह मटकाकर उन्हें प्रसन्नकरते व कभी उनकागाना व बजानासुन कर आपआनन्दहोतेथे व कोईब्रजबाला उनकी मुरलीछीनकर आपबजाती व कोई स्वरमिलाकर गानेलगती थी॥

दो० हँसे जभी सुखपायकै चन्द्रमुखिन की ओर। प्रेम प्रीति रसवश भये प्रीतम नवल किशोर॥

हे राजन् उससमय वहांऐसाआनन्द होरहाथा जिसे ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता देखकर कहतेथे बड़ाभाग्य ब्रजबासियों का है देखो जिसपरब्रह्म परमेश्वरका दर्शन हमलोगोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता वह बैकुंठनाथ सबब्रजबालोंके साथ रास व बिलास करते हैं॥

दो० धनि धनि कहि बर्षैं सुमन मुदित सकल सुरनारि। धनि मोहन धनि राधिका धनिहैं गोपकुमारि॥

हे परीक्षित जब गोपियोंने ऐसीकृपा मनहरण प्यारेकी अपने ऊपर देखी तबअभिमानसे कहनेलगीं हमारे बराबर सुन्दरकोई दूसरी स्त्री न होगी इसवास्ते नंदकिशोर हमलोगोंके वशहोकर हमें बहुतप्यार करते हैं त्रिलोकीनाथको हमने तालीबजाकर न

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चायदिया अब बिनाआज्ञा हमारे कुछनहींकरैंगे ऐसा बिचारक
बाजीगोपी कटाक्षकरकेबोली हे नन्दलाल मेरेपांव नाचतेनाचे
दुखनेलगे व कोई उनका हाथपकड़कर बैठगई व कोई कन्धाय
भकर खड़ीहोरही ॥

दो० याहीबिधिब्रजसुन्दरिन देतपरमसुखश्याम। लखि पति गति आधीन अति भईंगर्वितबाम॥
सो० परमप्रेमकी खान रूपशील गुणआगरी। क्यों न करैं अभिमान जिनके वश त्रिभुवनपती॥

इतनी कथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जबगोपि
यां लज्जा व धर्मछोड़कर मुरलीमनोहरको पापकीदृष्टिसे देखने
लगीं तबगर्वप्रहारी भगवान्ने बिचारा यहसबब्रजबाला अज्ञान
कीराह मुझेअपनापति समझकर अंगसेलपटातीहैं व मुझे अपने
भक्तोंकी सबबात उत्तममालूमहोकर अभिमान अच्छानहीं
गता इसलिये मैं इनको अकेलीछोड़कर अन्तर्द्धानहोजाऊं तब
गर्व इनका टूटजावेगा देखो मेरेजाने उपरान्त यहलोग बनमें
क्या करती हैं ॥

दो० उनजान्यो हरिवशकियो लाईं मन अभिमान। प्रभु अन्तर्यामी भये क्षणमें अन्तर्द्धान॥
सो० यहबिचारि जियजान लै वृषभानुकुमारि सँग। ह्वैगये अन्तर्द्धान ब्रजवासी प्रभु संगते॥

तीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी का गोपियों करके खोजना ॥

राजापरीक्षित इतनीकथा सुनकरबोले श्यामसुन्दरके अन्त
र्द्धानहोने उपरांत गोपियोंकी क्यादशाहुई शुकदेवजीने कहा हे
राजन् जब रासमण्डलमेंसे केशवमूर्त्ति श्यामासमेत अन्तर्द्धान
होगये तबसब गोपियोंकासुख व बिलास स्वप्नकेधनसमान जा
तारहा और सबब्रजबाला इसतरह व्याकुलहोगईं जिसतरह ही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

णी अपनेझुण्डसे बिलगहोनेमें घबड़ाजाती हैं जबचित्तठिकाने हुआ तबआपसमें कहनेलगीं॥

क० बंशीकी धुनिसुनि आईं तजिलाजकाज सोईब्रजराज साजसमय बितैगये। मन्दमुसकायकैलोभा-यमन हायहाय रूपरसप्याय प्रेम चितवन चितैगये। कहैं बलदेव नीचबानसी है मारीतान लेके तुम प्रान लाजहमरी रितैगये। टोहनामिलत कछु चाहना हमारीश्याम मोहनीदिखाय रूप मोहन कितैगये॥

दूसरीगोपीबोली यहचित्तचोर इसीवृन्दाबनके कुंजों में कहीं छिपाहोगा यहबचनसुनतेहीसबब्रजबाला श्यामसुन्दरकानामले लेकर चारोंओर यमुनाकिनारे व बनमेंपुकारकेकहनेलगीं हेप्राण पति हमेंछोड़कर तुमकहांचलेगये जबगोपियां उनकीखोजमें दौ ड़ते २थकगईं व रोते २आंखोंमें अँधेराछागया तबउनकीयहदशा होगई जिसतरह सांपमणिखोजानेसे घबड़ाजाता व मछलीबिना पानीके तड़फने लगतीहै॥

दो० यहिबिधि सबखोजतफिरैं बिरहातुर ब्रजबाल। भईंबिकल पावतनहीं कितखोजैंनँदलाल॥

उसमहादुःखकीसमय एकगोपीबोली ऐसखीमनहरणप्यारे मुझेछटकाकर कहांचलेगये अभीतो मेरेगलेमें बांहडालेखड़ेथे तुमलोगोंमें किसीनेउनकोजातेदेखाहै यहसुनकर दूसरीब्रजबा ला जोबिरहकीअग्निमें जलरहीथी हायमारकहनेलगी अरीबा वरी मैंउनकोदेखती तोकिसवास्तेजानेदेती हमलोगतो उनकीसे वा मनसा बाचा कर्मणासेकरतीथीं न मालूम कौनऐसाअपराध हुआ जोआधीरातको इसबनमें अकेलीछोड़कर चलेगये इसीत रह सबब्रजबाला अपना२दुःख एकदूसरीसेकहकर बहुतबिलाप करबोलीं हेब्रजनाथ हमलोग अबलाअनाथको तुमकिसवास्ते इतनादुःखदेतेहो हमनेअपनातनमन दोनोंतुम्हारेऊपर न्यवछा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वरकरदियाहै इसलियेहमलोगोंको बिनादामकीदासी समझकर
जल्दीअपनादर्शनदेव जबबहुतढूंढ़ने व बिलापकरनेपरभी कहीं
कुछपता मोहनप्यारेकानहींमिला तबबड़ेशब्दसे रुदनकरकेबो
लीं हेपरमेश्वर हमलोग अबलाअनाथ कहांजाकर उन्हैंढूंढ़ें व
किससेअपनादुःखकहैं व कौनऐसाउपायकरैं जिसमेंहमाराचित्त
चुरानेवाला मिलजावे यहांतो कोईबटोहीभी नहींदिखलाईदेता
जिससेउनकापतापूंछैं जिससमय गोपियां इसीतरह बिलापकर
रहीथीं उसीसमय एकसखीबोली सुनोप्यारियो इसबनमें जितने
वृक्ष व पशु व पक्षी देखतीहो यहसबपिछलेजन्मके ऋषि व मुनि
होकर उन्होंने कृष्णलीलाका सुखदेखनेवास्ते ब्रजमेंजन्मलिया
है इनलोगोंने श्यामसुन्दरको अवश्यदेखाहोगा इनसेउनकाहाल
पूंछो तोमालूमहोनेसकाहै यहसुनकर सबब्रजबाला बौरहोंकेस
मान पशु व वृक्षोंसेपूंछनेलगीं अभीश्रीकृष्ण हमारा मनचुराकर
मारेडरके भागगये हैं तुमनेदेखाथा दूसरीब्रजबालाबोली हेगूलर
व बट व पीपर व कटहर व बेर व पाकर व मौनासिरी व जामुन व
आम व अमिली व कदम व बेल व फालसाआदिकके वृक्ष परोप
कार करनेवास्ते तुमलोगमृत्युलोकमेंजन्मलेकर अपनीछाया व
फल व फूलोंसेसबकोसुखदेतेहो सोहमलोगोंकामनहरकर नंदला
लजी अन्तर्द्धानहोगये तुम्हैंदिखलाई तोनहींदियेथे दूसरीनेकहा
हेनींब व कचनार व चम्पाकेवृक्षतुमनेकहीं नन्दकुमारकोदेखाहै
सरीनेपूछाहेतुलसी तुमश्यामसुन्दरको बहुतप्यारीहोकरबैठेरहो
नाभोजननहींकरते इसलियेउनकाहालतुझेअवश्यमालूमहोगा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० श्रीतुलसीको देखिकै जियकी कहतसुनाय। माखनप्रभुकी प्राणप्रिय प्रीतमदेवबताय॥

दूसरी ब्रजबालाने कहा हेअनार तेरेदांत निकलेरहनेसें मुझे मालूमहोताहै तैंने नन्दलालको अवश्य देखाहोगा दूसरीबोली ऐ केला तेरेनरम २ पत्तोंपर सदा मनहरणप्यारे भोजनकिया करतेथे उन्हैं देखाहोतो दयाकरके बदलादे अबउनके बिरहका दुःखहमसे नहींसहाजाता दूसरीकहनेलगी ऐ अशोकके वृक्षतेरा नामपरमेश्वरने इसीवास्ते अशोकरक्खा जिसमेंदूसरोंका शोक मिटादेसोहमलोग श्रीकृष्णके बिरहसागरमें डूबरहीहैं तैंने नन्दकिशोरकोदेखाहो तोबतलाकरहमारा शोचछुड़ादे नहींतोआज सेअपना नामअशोक मतरखदूसरीनेकहा ऐचन्दनतुझे नन्दकुमारबहुतप्यारा जानकरअपने अंगमें लगातेथेतू उन्हैंजानताहो तोबतलाकरयश उठाले॥

दो० माखनप्रभु जिनदुमनसों परसत श्यामशरीर। तिनको भेंटत गोपिका भेटतउरकी पीर॥

दूसरीबोली ऐ जुही व मालती व नेवारी व चमेलीकेफूल तुमने इसतरफ़ कन्हैयाको जातेदेखाथा तुम्हारारूप देखनेसेमालूम होताहै कि वे अपनाहाथतुमपर फेरतेगयेहैं इसलिये तुमलोग प्रसन्नतासेफूलेहुये हमारीहँसीकरतेहो दूसरीबोली ऐ केतकी के फूलतेरी सुगन्धलेनेवास्ते अनेकदेशकेभौंरेआते हैं सोहम दुखियारियों परदयालुहोकर उनसेश्यामसुन्दरका पतापूंछकेहमें बतलादे दूसरीनेकहा हेपृथ्वीतेरेऊपर केशवमूर्त्ति सदासबड़ीप्रीतिकरतेआये हैं जबतुझकोहिरण्याक्ष दैत्यपातालमेंलेगया तबवहबाराहरूपधरकर अपनेदांतोंपर उठालायेथे व वामनअवतारलेकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुझे राजाबलिसेदानालिया था इसलिये तेरेबराबरदूसरेकाभाग्य नहींहोसक्ता तुझे उनकापताचरणधरनेसे अवश्यमालूमहोगा हमैं अपने ऊपरन्यवछावर समझकर बेग उनकाहालबतलादे॥

दो॰ चरणकमल जगदीशके सदारहैं तुमशीश। माखनईश बताइके हमसे लेहु अशीश॥

हे राजन् जब बहुतपूछनेपरभी किसीनेकुछपता श्यामसुन्दर का नहींबतलाया तब और अधिक बिलापकरके चारोंओर उन्हैं खोजनेलगीं उनकीदशादेखकर सबपशु व पक्षी व बृक्षउस बनके इतनाशोचकरतेथे जिनकाहाल वर्णन नहींकियाजाता उसीसमय एकगोपीने श्रीकृष्णजीकेपांवका चिह्न देखकरसब ब्रजबालोंको दिखलाया तोवहआकार देखतेहीसबोंने वहांकी धूरउठाकर अपनी आंखोंमेंलगाया व उसपृथ्वीकोचूमकर बोलीं भला उसचित्तचोरकापता तोमिला किइसीओरकोगयाहै फिर सबगोपियां उसचरणका पतादेखतीहुई आगेचलीं जबथोड़ीदूर और बढ़ींतब एकस्त्रीके पांवकाचिह्नभी दिखलाईपड़ा जबउसे देखकरउन्हैं और अधिक डाहउत्पन्नहुई तबबड़ीकरुणासे आप समें कहादेखोश्यामा उन्हैंबहुत प्यारीथी जो उसेअपने साथलेगयेहैं उसने पिछलेजन्ममहादेव व पार्बतीका बड़ातप कियाथा जोअकेलेमें श्यामसुन्दरकेसाथसुखउठाती है और हमलोग उनकेबिरहमें रातकोभटकती फिरतीहैं दूसरीसखीबोली श्यामसुन्दरका ध्यान व स्मरणकरनेवाला मुक्तिपदवीपाता है श्यामाकी बराबरीवहभीनहींकरने सक्तींजो नन्दकुमारकामुखचूमकर आजन्म स्वार्थ करतीहैं॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो॰ वह ऐसी बड़भाग्य हैं सुन्दरि सुघरि सुजान। माखन प्रभुके संगमें अधरकरैं मधुपान॥

इसीतरहशोचकरतीहुई थोड़ीदूर और आगेजाकर क्यादेखा कियहांराधा प्यारीके पांवकाचिह्न होकरकेवल श्यामसुन्दरके चरणोंका आकार दिखलाई दियातब आपसमें कहनेलगींमालू महोताहै कियहांसे मोहनप्यारे श्यामाको स्नेहबशकन्धेपरचढ़ा करलेगये हैं तब थोड़ीदूर और आगेपहुँचकर घास जमीरहने से कुछ चिह्नपांवका पृथ्वीपरनहींदिखलाईदिया तब अधिकव्या कुलहोकर वहांसेफिरनेलगीं तो एकजगहनरम २ पत्तोंकेबिछा वनेपर राधाप्यारीका जड़ाऊशीशापड़ाहुआपहिचानकर एकगो पीनेकहा हेसखी मनहरणप्यारेने यहांबैठकर राधाकाशृङ्गारकर नउपरान्त उसकीचोटीफूलोंसे अपनेहाथगूंधाथा उससमयपीछे बैठनेसे केशवमूर्त्तिकामुखारबिन्द श्यामाकोनहीं दिखलाईदिया तब उसनेइसकारण शीशालेकरदेखाथा जिसमेंउनकी मोहनीमू र्त्तिमुझेदिखलाईदेकरमेराचंद्रमुख उन्हैंदेखपड़ैयहबातसुनतेहीस बब्रजबालासवतियाडाहसे और अधिकव्याकुलहोकरजबमोहन प्यारेकोढूंढ़तीहुईथोड़ीदूरऔरआगेगईंतोक्यादेखाकिराधाप्यारी बनमेंअकेलीखड़ी हाथपसारेऐसारोरहीहै जैसेसांपमणिखोजाने सेविकलहोजावै उसकाबिलापदेखकरसबपशु व पक्षी व वृक्ष उसब नकेरोतेथेवश्यामारुदनकरकेकहतीथीहेप्राणप्यारेरातकोमुझेबन मेंअकेलीछोड़करकहांचलेगये अपनीदासीसमझकरमेरीसुधिले व राधाकोदेखतेही सबब्रजबाला ऐसीप्रसन्नहुई कि जैसे किसी कागयाहुआ धनआधामिलजावै॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० जितततेधाईसबैं ब्रजसुन्दरिअकुलाय। व्याकुललखिअतिलाडिली लीन्होंकण्ठलगाय॥
सो० कहां गये गोपाल बारबार पूंछत सबै। मुर्च्छिपड़ी तेहि काल मुखते बचन न आवही॥

जबललिता आदिक गोपियोंके देखनेसे राधाका रोनाकुछ थोड़ाहुआ तबठंढी सांसलेकर बोली॥

दो० क्यापूंछो मुझसों सखी मोहनकी निठुराय। नहिंजानों वह कितगये मोहूंकोछटकाय॥

शुकदेवजीने कहाहेपरीक्षित कारणछोड़जाने राधाका यहहै जबकेशवमूर्त्ति ने राधासमेत अन्तर्द्धान होकरअनेकगहना फू लोंका बनाकर श्यामाको पहिनाया व उसकोभोग व बिलासकर के बहुतसुखदिया तबराधाने अभिमानकी राहबिचारा किमेरेब राबरकोईदूसरी स्त्रीसुन्दरनहोगी मोहनप्यारेको मैंनेबशकरलि याउन्होंने केवल मेरीचाहनाकेवास्ते ब्रजबालोंको बुलाकररास मण्डलकियाथा इसीवास्ते सबको छोड़कर मुझे अपनेसाथ ले आयेहैं ऐसासमझकर श्यामाबोली हेमनहरणप्यारेमेरेपांवनाच ने व राहचलनेसेदुखनेलगे इसलिये मुझसेपैदलनहींचलाजाता मुझे अपनेकन्धेपर चढ़ाकरलेचलो यहबचनसुनतेही गर्वप्रहारी भगवान्नेजाना कि इसनेमेरीमहिमानजानकर अभिमानकिया इसलिये कुछदण्ड इसकोकरनाचाहिये ऐसाबिचारकर श्यामसु न्दरने अपनीपीठझुकादी व मुसकराकर राधासेकहाआवो मेरे कन्धेपरचढ़ो जैसे श्यामानेहाथपसारकर कांधेपर बैठनेचाहा वैसे ब्रजनाथ अन्तर्द्धानहोगये तबवह उसीतरहहाथपसारे खड़ी रहगई॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० चकितभई जबनागरी गये कहां भजिश्याम। मनहींमन पछितात अति भूली तनसुधिधाम॥
सो० मैं कीन्हों अभिमान नारि बुद्धि ओछीसदा। वह प्रिय परमसुजान जानलई समजीयकी॥
दो० माखन प्रभुके बिरहदुख कासों बरणीजाय। अपनो दोष बिचारकरि बारबार पछिताय॥

हे राजन् जबगोपियोंने धीर्यदेकर राधासेपूछा तबउसने अपने अभिमान करने व श्यामसुन्दरके अन्तर्द्धानहोनेकाहालज्यों कात्यों कहसुनाया तबब्रजबालोंने श्यामाकोभी अपनेसमानबिरहअग्निमें जलतेहुयेदेखा तब अतिबिलापकरकेबोलीं हे ब्रजनाथ तुम्हारेवियोगमें हमकोएकक्षण कल्पकेसमान मालूमहोकरप्राण निकलनेचाहताहै इसलिये दयालुहोकर दर्शनदेव जबबहुत ढूंढ़नेपरभी कहीं पताउनकानहींमिला तब निराशहोकर अतिबिलाप करनेलगीं॥

क० बिरहानल डाढ़ीसब ठाढ़ीसी गिरीं भूमि गाढ़ीपीर बाढ़ी निजहाथ धुनें माथहीं। मोहन के हंत में अचेत ह्वै पुकारउठीं अबसुधिलेत न हमारी प्राणनाथहीं॥ कैसी गति कीनदीन सुखद प्रवीन कान्ह कहै बलदेवमीन जैसे बिनपाथहीं। दुसह समोईदोऊ दीननसे खोईं अति बिरहमें भोईं गोपीरोईं एकसाथहीं॥

उससमय एकगोपी जो चतुरीथीबोली सुनोप्यारियो इसरोने व दौड़नेसे कुछअर्थ नहीं निकलता जबवही करुणानिधान दयालुहोकर अपनादर्शन देवैं तबवह मिलनेसक्ते हैं नहीं तो उनका पता लगनाकठिनहै इसलिये सबकोई एकजगह बैठकर उनका ध्यान व स्मरणकरो तो बिश्वासहै कि वहदुखभंजन दयालुहोकर दर्शन अपनादेवैंगे यहबचन सुनतेही सबब्रजबाला यमुनाकिनारे जहांश्यामसुंदरसे बिलगहुईथीं जाकरउनकीचर्चा आपसमें करनेलगीं व उसचबूतरे सुखस्थानको देखकर बोलीं हे मनहरणप्यारे जबसेतुमने ब्रजमेंजन्मलिया तबसे सदाहमारी रक्षाकरके हमें सुखदिया आज क्योंइतनेकठोरव निर्दयीहोकरदुःख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सागरमें डुबावतेहौ कदाचित् हमाराप्राण तुमकोलेनाथा तो गो
बर्द्धनपहाड़ हमारेऊपर क्योंनहीं गिरादिया ऐसे जीनेसे मरना
अच्छा है फिरगोपियोंने योगमायाको जो अनेकतरहकारूपधा
रणकरलेतीथी अपनेसाथ लेलिया व आपसमें बाललीला श्या
मसुन्दरकी करनाआरम्भकिया उसमेंएकब्रजबालाने आपश्री
कृष्णबनकर योगमायाको पूतनाबनाया व दूधपीतीसमय छा
तीकीराह प्राणउसका निकाललिया जबदूसरीगोपी यशोदाबन
कर दहीमथनेलगी व कृष्णरूप ब्रजबालाने बर्त्तन दही व मट्ठे
का तोड़कर ग्वालरूप गोपियोंसमेत माखनखानाआरम्भकिया
तबयशोदानेक्रोधकरके उन्हें ऊखलसेबांधदिया उससमयकृष्ण
रूपगोपीनेयमलार्जुनदोनोंवृक्ष जो योगमायाबनीथीं उखाड़डा
ला जबइसीतरह योगमायाने बत्सासुर व बकासुर व तृणावर्त्त व
अघासुर राक्षसबनकर कृष्णरूपी ब्रजबालाको मारनेचाहा तब
श्यामरूपगोपीने उसेमारगिराया फिरयोगमायाने बहुतसी गौ
वहांप्रकटकरदिया तो कृष्णरूपगोपी उसेचरानेलगी जबयोगमा
याने कालीनागबनकर फुफकारमारना आरम्भकिया तबकेशव
रूपब्रजबालाने उसकोनाथडाला दूसरीगोपीने बहुतकपड़ा लपे
टकरगोवर्द्धनपहाड़ बनादिया तो कृष्णरूपब्रजबालाने उसे अँ
गुलीपर उठालिया व पानीकीजगह उसपहाड़पर वृक्षोंकापत्ता
बरसाया जबवृक्ष हिलने व पत्तोंके गिरनेसे शब्दहोताथा तबस
बब्रजबाला उसेखटकापाँव मनहरणप्यारेका समझकर कहती
थीं हे श्यामसुन्दर देखो तुम्हारीयाद व चर्चा करके हमलोग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपनेमनको धैर्यदेती हैं अबतुम जल्दी अपनी मोहनी मूर्त्ति दिखलाओ ॥

दो० माखनप्रभुके रूपगुण ध्यानधरे जो कोइ। मन्दहोय दुखशोचसब बहुसुखपावै सोइ ॥

हे राजन् उससमय गोपियों ने बालचरित्र श्रीकृष्णजीका करके ऐसामन उसमें लीनकरलिया कि अपनेतनु व वस्त्र की सुधि भूलगई ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

केशवमूर्त्ति के विरहमें गोपियोंका बिलापकरना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब फिरगोपियोंका चित्त ठिकाने हुआ तबयमुनाकिनारे बैठकरकहनेलगीं हे प्रीतम जबसे तुम ब्रजमें आये तबसे नित्यनये सुख हमलोगोंको दिखलाये जिनहाथोंसे तुमनेलक्ष्मीकादानलेकर उन्हैं अपनेचरणोंमेंबास दियाहै वही हाथअपनी दासियोंके मस्तकपर रक्खो ॥

क० जाही हाथधनुषचढ़ायो है सीतापति जाहीहाथरावण सँहारिलंकजारी है। जाही हाथ तास्यो पांउबास्यो हाथहाथीगहि जाहीहाथ सिंधुमथि लक्ष्मीकोनिकारी है ॥ जाहीहाथ गिरि उठाय गिरिवर गिरिधारी भयो जाहीहाथ नन्दकाज नाथ्यो नागकारी है। होंतो अनाथ हाथ जोरि कहौं दीनानाथ वाही हाथ मेरोहाथ गहिबेकी पारी है ॥

जिसदिनसे हमलोगोंने तुम्हारी मोहनीमूर्त्तिदेखीहै उसीदिनसेहमाराध्यान व प्राण तुम्हारेचरणोंकेपासरहकर संसारीव्यवहारमेंनहींलगता सोहमैं महादीन व दुखीजानकर अपनाचन्द्र मुखदिखलावो हमारीआंखैं जोरोते २ जलरहीहैं उन्हेंठण्ढीकरौ कदाचित् तुम्हें हमलोगोंको अपनेबिरहमें मारनाथा तो राक्षसों केहाथ व दावानलअग्नि व कालीनागके विष व इन्द्रकेकोप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सक्योंबचाया कदाचित् तुमनन्द व यशोदाकेबेटाहोते तो ऐसी कठोरताईन करते न मालूम किसकेजनेहौ तुम्हारेबिरहमेंहमारा हृदयजलरहाहै इसलिये दुःखीहोकर यहकठोरबचन तुमकोक हतीहैं हमारेमनकाहाल तुम्हेंअच्छीतरहमालूम होगा॥

दो॰ दही दूध लेजातथे माखन प्रभुब्रजराज। तबहूंतो बरज्यो नहीं बैर करत क्यहि काज॥

यहवचन सुनकरदूसरीगोपी बोलीसुनो प्यारियोउनकोताना मारनेसे कभीनहींपावोगी केवलबिनयकरनेसेवे प्रसन्नहोंगेकि सवास्ते कि उनकानामदीनदयालुहै॥

दो॰ तब उनसब गोपिनकहयो नाहीं औरउपाय। माखनप्रभु बिनती करौ तबैंमिलेंगे आय॥

यहबात विचारकरसब ब्रजबालोंनेकहा हे श्यामसुन्दरतुमको बलनन्द व यशोदाकेपुत्रनहींहौ आपकोब्रह्मा व महादेवआदिक देवतापृथ्वीका भारउतारने व संसारी जीवोंकी रक्षाकरने वास्ते क्षीरसागरमेंसे प्रार्थना करकेलिवालाये हैं सोहेप्राणनाथ हमलो गोंकोएकबड़ा अचम्भामालूमहोताहै जबहमारी ऐसीअबलाव दुखियारियोंकाप्राणलेतेहो तोरक्षाकिसकीकरोगे क्याहमस्त्रियों काप्राणमारनेवास्ते आपनेमूर्खताई पकड़ीहै हे मनहरणप्यारे तुम्हारे मन्द २ मुसुकान व तिरछीचितवन व भौंहकीमटक व गर्दनकीलटक व बातोंकीचटक जबहमलोगोंको यादआवतीहै तबचित्तहमाराठिकानेनहींरहता जबतुम बनमेंगोचरानेजाते थे तबचारपहरदिन तुम्हारेबिरहमें हमकोचारयुगकेसमानबीततेथे फिर सन्ध्यासमय तुम्हाराचन्द्रमुखदेखकर अपनी आंखेंठण्ढी करकेकहतीथीं ब्रह्माजीबड़ेमूर्खहैं जिन्होंने आंखोंपरपलकबना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दीकिपलक भांजनेसे उतनीदेरतक तुम्हारी मोहनीमूर्त्ति नहींदि
खलाईपड़ती हेजगत्पालन जिनचरणोंकाध्यान ब्रह्मा व महादे
वआदिकदेवता आठोंपहर अपनेहृदयमें रखतेहैं उन्हींचरणोंका
दर्शनदेकर हमारी इच्छापूर्णाकरो वे चरणकैसे हैं जिनके देखने
व दण्डवत् करनेसे अनेकजन्मकोपाप छूटजाताहै व लक्ष्मीजी
अपनेहाथ उन्हेंदाबतीहैं हेश्यामसुन्दर जबतुम्हारेबिरहमें हमारा
प्राणनिकलजावैगा तबपीछेसे अमृतपिलाकर क्याकरौगे अबत
ककेवल तुम्हारेमिलने की आशापर प्राणअपनाराखेहैं सो अप
नीछबि दिखलाकर कामरूपी दुःखहमारा छुड़ावो व बंशीसुना
कर चिन्ताहमारीमिटावो रातसमय स्त्रियोंको कोईअकेला नहीं
छोड़देता जिसतरह तुमलक्ष्मीजीको दिनरातछातीमें लगाये
रहतेहो उसीतरहहमलोगोंको भी अपनेचरणोंसे अलगमतकरो
निर्दयताछोड़कर वेगअपनादर्शनदेव तुम्हारानामसंसारमें गोपी
नाथप्रकटहै सो अपनेनामकी लज्जाकरो या अपनानाम गोपी
नाथमतरक्खोतुमअपने श्यामरंगकेसमानमनभीकालाकरकेऐ
सीनिर्दयताकरतेहो जोहमैंबिरहसागरसेबाहरनहींनिकालते औ
र तुम्हेंढूंढ़तीसमय हमारेपांवमेंकांटेचुभतेहैं तिसपरभी दयातुम्हें
नहींआवती हमलोगोंको अपनेदुःखपावनेका तो इतना शोचन
हींहै परतुम्हारे कमलरूपीचरणमें रातकोभागतीसमय जोकांटे
चुभतेहोंगे वहहमारेकलेजेमें सालतेहैं किसवास्ते कितुम्हारेचर
णोंकावास हमारेहृदयमेंरहताहै इसलिये तुमजल्दीयहांचलेआ
ओतोतुम्हारेकोमलचरणोंको नरम २छातियोंपरमलकर अपना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कलेजाठंढाकरैं यातुमकहीं बैठकर रातबितादेव जिसमेंतुमको दुःख न होवै तुम्हैंकष्टपहुंचनेसे हमाराप्राणनिकलजावैगा अपने जानकारीमें हमलोगोंने कुछ अपराध तुम्हारानहींकिया फिर किसवास्ते खेदमानकर इतनीकठोरताईकरतेहो कदाचित् इस वास्ते हमारेऊपरक्रोधकियेहो किबिनाआज्ञाअपनेपतियोंकेतुम लोगरातकोमेरेपास क्योंचलीआईं सो इसबातमें भी हमलोगों कादोषनहीं है किसवास्ते कि तुम्हारी बन्शीसुनकर देवता व ऋषीश्वर आदिकका चित्त ठिकानेनहीं रहता व उसकी ध्वनि सुननेसे देवकन्यामोहितहोकर अपनेको नहीं संभालनेसक्तीं हमलोगोंकी क्यासामर्थ्यहै जोमुरलीसुनकर अचेत न होजावें कदाचित् आपऐसाकहैं कितुम्हारीकामरूपीअग्नि अपनेरपति से भेंटकरनेमें बुझेगी सोऐसा न समझिये हमारी अग्निउनसे बुझनेयोग्यहोती तोहमअपनेपतिको छोड़कर तुम्हारेपास क्यों आतीं सो हेदीनानाथ कदाचित् हमलोगोंकी प्रीति मनसाबाचा कर्मणासेतुम्हारेचरणोंमेंहो तोअपनादर्शनदेकरहमाराद्ुःखहरो

दो० अंग अंग सबदृगभवे मोरपंखकी भांति। माखन प्रभु जो आ मिले सुन्दर मुख मुसकाति॥

हे राजन् जब यहसबबिनती व बिलापकरनेपरभी केशवमू र्त्तिका दर्शन नहींमिला तबसबब्रजबालोंने व्याकुलहोकर मिल नेका भरोसाछोड़दिया व मूर्च्छितहोकर पृथ्वीपरगिरपड़ीं व अति बिलापसे रोदनकरके कहनेलगीं हे माधव हे मुकुन्द हे मोहन प्यारे हे नन्दलाल हे केशवमूर्त्ति अबहमलोग तुम्हारोबिरह में अपनाप्राण देतीहैं जैसा उचितजानों वैसाकरो॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोपियों के मध्य में श्यामसुन्दर का प्रकटहोना॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जब इसीतरह सबब्रजबाला बिलापकरते २ मरणातुल्यहोगईं तबउनकीसच्चीप्रीतिने श्यामसुंदर के अन्तःकरणमेंप्रवेशकिया जब केशवमूर्त्तिनेदेखा कि अब ये मेरेबिरहमें मरनेचाहतीहैं तबअचानकउसीजगह श्यामसुन्दरने पीताम्बर व बैजयन्तीमालापहिनेहुये इसतरहप्रकटहोकरदर्शन दिया जिसतरहनटलोग अपनेकरतबसे अन्तर्द्धानहोकर फिरप्रकटहोजाते हैं॥

क० राखैंगी न प्राण यह जानिके कुंवरकान्ह प्रकटेसुजान बीचतान बानमारे हैं। लखतही गोपिनके वृन्दमें अनन्दबढ़ी मन्दमुसुकात ब्रजचन्द यों निहारे हैं। भनै बलदेव कहैं बानी सुधासानी सुनो सकल सयानी तुम सबै दुख भारे हैं। गले मालडारे मुख पीतपटधारे पियकहत पुकारे हम ऋणियां तुम्हारे हैं॥

हे राजन् अपनेचित्तचोरकोदेखतेही सबब्रजबालासचेतहोकर इसतरह उठखड़ीहुईं जिसतरहमुर्दकेतनुमें प्राणआजावे उस समयजैसीप्रसन्नता ब्रजबालोंको मोहनप्यारेकादर्शनपानेसेहुई उसकाहालवर्णननहींहोसक्ता उस आनन्दकासुखवहीमनुष्यकुछजानताहै जिसकाबिछुड़ाहुआमित्र बहुतदिनोंपरआनामिलै वैसेगोपियांकामरूपी सांपकेडसजानेसेकुंभिलागईथीं जिसतरह किअमृतपड़नेसे सूखेवृक्षहरेहोजातेहैं उसीतरहमोहनीमूर्त्तिकेअमृतरूपीदृष्टिपड़नेसे उनकेतनुमेंप्राणआगया जैसेरातकोकमलकाफूल मलीनरहकर प्रातसमय सूर्यकेप्रकाशसेफूलजाताहै वैसे गोपियांजोमुर्झाईहुईथीं वृन्दाबनबिहारीका सूर्यरूपीकुंडल देख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेही खुशीसेफूलगई जिसतरहडूबताहु आमनुष्यथाहपाकरखुशी होताहै इसीतरह ब्रजबालोंने जोबीचबिरहसागर केशवमूर्त्तिके गोताखारहीथीं उनकोदेखतेही किनारेलगगईं व मोहनीमूर्त्तिको चारोंओरसे घेरलिया॥

दो० कामताप से बामयक लगी श्यामउरजाय। ज्यों चन्दन के वृक्षमें रहत सर्प लपटाय॥

हेराजन् इसीतरह किसीब्रजबालाने केशवमूर्त्तिकेअंगसेलपट कर अपनीछातीठंढीकिया व किसीने उनकामुखचूमकर अपने मनोरथकेफलोंसे झालभरलिया उससमयश्यामाबोली हेप्राण नाथ हमलोग तुम्हारेप्रेममें लोकलाजतजकरयहांआईं सो तुम हमेंअकेलीछोड़कर अन्तर्द्धानहोगये यहकौनन्यायकी बातहै वृन्दाबनबिहारीनेकहा तुम्हेंरातको अपनेघरसेबनमें चलाआव नाउचितनहींथा तुमलोगवहांबैठीहुई मेराध्यान व स्मरणकर ती तोमैं बहुतप्रसन्नहोता ऐसाकहकर मुरलीमनोहरने राधाप्या रीको गलेसेलगालिया व मीठी २ बातैं सुनाकर सबब्रजबालों को प्रसन्नकिया तब एक गोपीने फूलकमलका मोहनप्यारेके हाथसेछीनालिया दूसरी ब्रजबाला उनकाहाथपकड़कर बड़ेप्रेम सेबोली हेचितचोर इतनी देरतकतुमकहांरहे दूसरीगोपीने अप नामुंहचन्द्रमुखसेमिलाकर उनकाजूठापान प्रेमकीराहखालि या दूसरीब्रजबाला चित्रकारीके समान खड़ीहोकर उनकारूप रस आंखोंकीराहपीनेलगी दूसरीगोपी ने श्यामसुन्दरके मुख काचुम्बालेतीसमय उनकाओठ अपनेओठसे दबादिया दूसरी सखीबोली तुमबहुतभागकरचलेजातेथे अबमेरेहृदयसे बाहर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जावोगे तो मैं जानोंगी कि बड़ेबलवान्हो दूसरीब्रजबालाअपना
हाथमोहनप्यारे केकन्धेपर रखकर उनकीछबिदेखनेलगी जब
यहदशाब्रजबालोंकी देखकरश्यामसुन्दर उन्हैंयमुनाकिनारेले
गये तबएकगोपीनेअपनीओढ़नी बिछाकरबड़ेप्रेमसे केशवमूर्त्ति
को उसपरबैठालाऔर सबब्रजबालोंने उनकोइसतरहचारोंओर
सेघेरलिया जिसतरहचन्द्रमाके आसपासतारेरहतेहैं व कोईगोपी
क्रोधसेबोली तुमकपटकीराहपरायातन व मनहरकर किसीकागु
णनहींमानते आजहमारीइच्छापूर्णकरो नहींतोअपनाप्राणतुम
परदेवेंगी जबऐसाकहकर सबब्रजबालोंने उसचांदनीकीशोभा
देखने व शीतलमन्दसुगन्ध हवाबहनेसे कामातुरहोकरश्याम
सुन्दरसेभोगकी इच्छाकिया तबबैकुण्ठनाथअन्तर्यामीभक्तहि
तकारीउनकामनोरथसिद्धकरनेवास्ते जितनी गोपियांथींउतने
रूपहोगये उससमयब्रजबालोंने अपनीअपनी ओढ़नीउतारकर
बालूपरबिछादिया व उसकोमल बिछौनेपर मोहनप्यारेकोबैठा
करकामरूपीबात उनसेकरनेलगीं तबश्यामसुन्दरने पहिलेबाल
लीलाका सुखउन्हैं दिखलाकर फिर किशोरअवस्थाअपनीबना
लिया व सबगोपियोंसेअलगअलग गन्धर्व बिवाहकरकेउनकीम
नोकामनापूर्णकियाउससमयबड़े आनन्दमेंएकब्रजबाला जोति
रछीचितवनसेदेखतीथीबोलीहेप्राणनाथतुमबड़ेकपटी व निर्दयी
हो और सबब्रजबालासीधी व भोलीतुम्हारेछलमें आनकरधोखा
खातीहैं व मेरामनतुमसे बोलनेकोनहींचाहता परक्याकरूंतुम्हा
रीमोहनीमूर्त्तिदेखकर बिनाबोले रहानहींजाता देखोजबतुम अं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तद्धानहोगयेथेतबहमलोगोंने तुम्हारेबिरहमेंकितनादुःखउठाया
फिर इसतरहप्रकटहुये जानोंकहींनहींगयेथे सोतुम्हें मनमेंकपट
खना व गुणकोछोड़कर अवगुणकीओरदेखना उचितनहींहै यह
बचनसुनकर दूसरीगोपीबोली अयप्यारीतुमचुपरहो अपनेकहने
सेकुछशोभानहींहोती देखोमैंश्रीकृष्णके मुखसे उनकीकठोरता
ईकाहाल कहलादेतीहौं ऐसाकहकर उसगोपीमहाचञ्चलने मु
सकराकरपूछा हेमोहनप्यारे संसारमेंचारतरहके मनुष्यहोतेहैंए
कवह जैसे दोमनुष्यआपसमें प्रीतिरखकर एकदूसरेकेसाथ नेकी
केबदले भलाईकरै दूसरेवहएकओरसे प्रीतिहोकर दूसराप्रेम न र
क्खैतीसरेवह कि बुराईकरनेवालेके साथभीभलाईकरताहै चौथा
वह कि नेकीकरनेपरभी जानबूझकर उसकेसाथबुराईकरै बतला
ओ इनचारोंमें कौनभलाहोकर किसकोबुराकहनाचाहिये ऐसा
सुनकरश्यामसुन्दरनेकहा तुमनेबहुतअच्छीबात ज्ञानबढ़ावनेवा
लीपूछीहै मैंआपचाहताथा कि संसारीमनुष्योंका हालतुमसेक
हूं अब अपनेप्रश्नकाउत्तर मनलगाकरसुनो जोमनुष्यआपसमें
नेकी के बदले भलाईकरते हैं उनकोसंसारमें अच्छासमझनाचा
हिये जैसेसंसारीलोग विवाहआदिकमें एकदूसरेकेघर बैना वभा
जी देतेहैं परयहप्रीति सदास्थिरनहींरहती दूसरेयह कि एककी
ओरसे प्रीतिहोकर दूसरामनुष्य उनकेसाथप्रेम न रक्खै जैसेमाता
पितापुत्रको बहुतप्यारकरतेहैं परन्तु पुत्र उतनाप्रेमनहीं रखता
तीसरे जोमनुष्य बिनाइच्छासबकेसाथ भलाईकरताहै उसे बर्षा
केसमान समझनाचाहिये जिसतरहपानी बर्षकर सबछोटे बड़े

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को सुखदेताहै और उसकेबदले किसीसेकुछ नहींचाहता यहीहा लपरमहंस व महात्मालोगोंका भी समझो कि वहलोगअपनी सामर्थ्यभर दूसरेकाभलाकरके उससेकुछचाहना नहींरखते चौ थे जोमनुष्यभलाईकेबदले जानबूझकरउसकेसाथ बुराईकरतेहैं उन्हैं शत्रुसमझनाचाहिये और वहमनुष्यकृतघ्न व अधर्मीकह लातेहैं यहबचनसुनतेही सबव्रजबाला आपसमेंएकदूसरेकामुख देखकरहँसनेलगीं व एकगोपीने दूसरीसखीसे सैनमेंबतलायाकि श्रीकृष्णजी चौथे मनुष्यकीतरहहैं तबमोहनप्यारेबोले तुमलोग मुझे हँसकरक्याकहतीहो मैं निर्गुणरूप आत्माराम इनचारोंसे रहितरहकर किसीकेसाथ कुछप्रीतिनहींरखता मुझसे जोकोई जिसबातकी चाहनाकरताहै उसकीइच्छापूर्ण करदेताहूं व विश्व म्भरनामसेसबजीवोंकोपालनकरके एकक्षण किसीजीवकोनहीं भुलावता व किसीसेकुछ इच्छानरखकर केवलसच्चाप्रेम उनका चाहताहूं व अबगोपियो तुमलोग मुझसेप्रीतिरखतीहो इसलिये यहबातकहताहूं जिसतरहसंसारीमनुष्यगाड़ेहुये धनकोआठोंप हर यादरखकर उसकाहाल किसीसेनहींकहता इसीतरहजो मनु ष्यमुझसे गुप्तप्रीति रखकर मेरेचरणोंमें अपनामनलगायेरहता है उसेमैं बहुतप्यारकरताहूं ॥

दो० माखनप्रभु गोपालसों यह बिधिराखो हेत। ज्योंनिर्द्धन धनपायके भेद न काहू देत ॥

कदाचित् तुमऐसाकहो कि मनसावाचा कर्मणा से हमलोग तुम्हारेचरणोंमें ध्यानलगायेरहतीहैं फिरतुमक्योंहमें छोड़कर अन्तर्द्धानहोगयेथे तो इसकायहकारणहै हमनेतुम्हारी प्रीतिकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परीक्षाकीलियाथा तुमलोग इसबातका कुछबुरानमानकर मेरा कह
ना सच्चाजानों मैं प्रेमबढ़ावनेवास्ते तुमलोगोंमेंसे अन्तर्द्धानहो
गयाथा जिसतरह जाड़ेमेंधूपअच्छीमालूमहोतीहै उसीतरहअप
ने मित्रसेअलगरहनेमें प्रेमअधिकहोताहै अयगोपियोतुम्हारेप्रेम
व ध्यानकरनेसे मैं बहुतप्रसन्नरहताहूं परतुमलोग अपनेकुल व
परिवारकीलज्जाछोड़कर रातको जोयहांचलीआईं यहअच्छी
बात नहींकिया ऐसाकरनेमें न हमप्रसन्नहुये न दूसरेकोयहबात
अच्छीमालूमहोगी जबतक मनुष्यजन्मलेकर जीतारहै तबत
क कोई खोटाकामउपहासका न करे कदाचित् मनउसकाअशु
भकर्मकरनेवास्तेचाहै तौभीज्ञानकी राहअपनेमनको रोकै जि
समेंकोई उसेबुरा न कहै और यहभी मैंजानता व समझताहूं का
मरूपी प्रेमबढ़नेसे बेड़ीलज्जाकीटूटजातीहै व उसको किसीका
समझाना कुछगुणनहींकरता तुमलोगोंकीप्रीति व विलापकरने
का हालमैंआंखोंसे खड़ाहुआ देखताथा तुमलोगोंने मायारूपी
बेड़ीसंसारकी जोकभीपुरानी नहींहोती तोड़कर मेरेसाथऐसीस
च्चीप्रीतिकियाहै जैसेपरमदरिद्री बड़ाधनपावे इसलिये मैं तुमसे
उऋण नहींहोसक्ता ॥

चौ० जैसे आई मेरे काज । छांड़ी लोक बेद की लाज ॥
ज्यों बैरागी छांड़ैगेह । मन दै हरि सों करै सनेह ॥
मैंक्यातुम्हरीकरौंबड़ाई । हमसेपलटोदियोनजाई ॥

हेप्राणप्यारियोअह्माकेआयुर्दा प्रमाणजीकर एकएक गोपि
यों की सेवाजन्मभर करों तौ भी तुमसेउद्धार नहीं होसक्ता इ
सवास्ते तुम्हारा ऋणियाहूं ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो॰ अब तुमरहो उदास माते मनमेंकरो हुलास। महारास अवसाजिके पूरणकरिहों आस॥

तैंतीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णजीका गोपियों के साथ महारास करना॥

शुकदेवजीने कहा हेपरीक्षित जबश्यामसुन्दरने यहबचन प्रेमभराहुआकहकर गोपियोंकोधीर्यदिया तबसबब्रजबाला बड़े आनन्दसे हाथश्यामसुंदरका पकड़कर नाचनेलगीं इतनीकथा सुनकर परीक्षितनेपूछा महाराज रासलीलामें जिसगोपीकाहाथ मुरलीमनोहरपकड़ेथे उसकाअङ्गमोहनप्यारेसे स्पर्शहोता था और सबब्रजबालोंकी कामनाकिसतरह पूरीहुईथी शुकदेवजी बोले हेराजन्परब्रह्मपरमेश्वरकी महिमाकोई नहींजानसक्ता मुरलीमनोहरने दो २ गोपियोंकेबीचमें एक २ रूपअपनाप्रकट करके दाहिने व बायेंदोनोंगोपियोंकाहाथपकड़ेहुये मण्डलबांधकर रासलीलाकियाथा परउनकीमायासे सबगोपियांअनेकरूप धारणकरनेका हाल न जानकरयहसमझतीथीं कि केशवमूर्त्ति हमारेसाथनाचतेहैं और इसआनंदरूपी नाचमेंहाथ व पैरकोठो कर देकरअंगसे अंगरगड़ना व आंख व भौंमटकाकरकटाक्षकरना व गर्दनटेढ़ीकरकेकुण्डलहिलावना जो २ बातैंरास व विहार में चाहिये वहसबमुरलीमनोहरब्रजबालों केसाथ व गोपियां वृन्दावनविहारीसेकरतीथीं उससमयशोभाश्यामरंग मोहनप्यारे की गोरी २ गोपियोंमें कैसीमालूमदेतीथी जैसेसुनहलेदानों की मालामें नीलमणिरहताहै व नाचतीसमय उनकेकानोंकाकुण्ड ल कैसीशोभादेताथा जैसेश्यामघटामें बिजुलीचमकतीहै उसी समयब्रह्मा व महादेवआदिकदेवता व ऋषीश्वरोंने ध्यानपरमे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वरका छोड़दिया व रासलीलाका सुखदेखनेवास्ते अपनी स्त्रियोंसमेत बिमानोंपरबैठकर वृन्दाबनमेंआये व आकाशमार्ग से श्यामसुन्दर व ब्रजबालोंपर फूलबरसाकर ब्रजबासियोंकेभाग्यकी बड़ाईकरनेलगे व गंधर्वोंने अनेकतरहका बाजाबजाकर गानाआरम्भकिया व देवकन्या व अप्सरारासलीलाकी शोभा देखतेही कामरूपीमदमें ऐसीमोहित व अचेतहोगईं कि उनके कमरकाघुंघुरूखुलकर गिरपड़ा व तनमनकीसुधिजातीरही॥

दो० देवराज शोभित सरल इन्द्राणीकेसंग। माखनप्रभुके दरशको हँसतनयन सबभंग॥

चन्द्रमा व तारागण वहआनन्ददेखतेही चित्रकारीसेखड़े रहे गये और उन्हेंआगे चलनेकीसामर्थ्यनहींरही व चंद्रमानेप्रसन्न होकर अपनेकिरणसे रासमण्डलपर अमृतबरसाया सोचंद्रमा के खड़ेरहनेसे वहरातछःमहीनेकेबराबरहोगई परनारायणजीकी महिमासे रातबढ़नेकाहालकिसीने नहींजाना इसलियेउसरात्रि का नामसंसारमें प्रेमरात्रिप्रकटहुआ हेराजन्नाचनेकेपरिश्रम से ब्रजबालोंकेमुखपर पसीनानिकलकर बिथरेहुये बालोंमें कैसी शोभादेताथा जैसेकाले २ सांपओंकीबूंदचाटनेआयेहों उस समयश्यामसुंदर अपने पीताम्बरसेपसीना उनकापोंछदेतेथे वह ई गोपीनाचते २ थककर केशवमूर्त्तिका हाथपकड़ेहुये पृथ्वी बैठजातीथी परनाचना ताल व स्वरनहींबिगड़ताथा बाजी बालाअपनाहाथ मोहनप्यारेके शिर व कन्धेपररखकरकहती नाचते २ मेरापावँ दुखनेलगा तनिकसुस्ताकर फिरनाचूंगी ब्रजबाला मोहनप्यारेकी मालाचूमकरकहतीथी अयप्राणा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हारेगलेमें यहहार बहुतसुंदरमालूमहोताहै व बाजीगोपीघूम ते २ थककर श्यामसुंदरके गलेसेलपटकेकहतीथी मैं तुम्हारेशर णआईहूं मुझेकभी अपनेचरणोंसे अलगमतिकरना व कोई स खी मोहनप्यारेकेहाथसे कमलकाफूल छीनकर उन्हैं कहतीथी मेरेकलेजेपरहाथरखकर देखोकैसाधड़कताहै आठोंपहरतुममेरे हृदयमेंरहतेहो इसलियेमैंडरतीहूं कि कलेजाधड़कनेसे तुमको कुछदुःख न पहुँचै॥

दो० नखशिखसे भूषणसजे ब्रजभूषणकेहेत। गानकरत अतिचावसों निरतत अतिछबिदेत॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् इसीतरहश्याम सुन्दर ब्रजबालोंकेसाथ अनेकतरहका बाजाबजाकर छःराग व छत्तीसरागिनीअलापके रास व बिलासकरतेथे व कभीबंशीमें अनेक तरहकीउपजबजाकर मनब्रजबालोंका अपनीओर मोह लेतेथे उसआनन्दरूपी नाचमें गोपियांकामदेवकेमदमें ऐसीमो हितहोगई कि उनकोअपनेतनु व मनकीकुछसुधिनहींरही कभी घूमतीसमयअंचल ब्रजबालोंकाउड़जाताथा तो कुचोंकीसुन्दर ताईदेखकर देवता मोहिजातेथे व कभीनाचतीसमयमुकुटश्याम सुन्दरका खुलकरगिरनेलगताथा तबगोपियां अपनेहाथसे उसे बांधदेतीथीं व कभीमोतियोंकाहार ब्रजबालोंकेगलेसेटूटकर गि रजाता व बनमालाश्यामसुन्दरका खुलकरगिरपड़ताथा उसके उठानेकी सुधिकोईनहींरखताथा कभीकोईसखी मुरलीमनोहर केसाथ गाकरऐसास्वरमिलादेतीथी कि वृन्दाबनविहारी उसके गानेसेमुरलीबजाना भूलजातेथे॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० माखनप्रभुघनश्यामसँगसुन्दरिब्रजकीबाम। दामिनिज्यों शोभितमहा निरततगति अभिराम॥
निरततहांहुलाससों माखनप्रभुसुखरास। आसपासबनितासबै सुभगसुबास निवास॥

हेराजन् जिसतरहबालक अपनामुख शीशेमेंदेखकर भूल जाताहै उसीतरह सबब्रजबाला राग व रंगकेमदमें मोहितहोकर अपनागहना व कपड़ा एकदूसरीपर न्यवछावरकरतीथीं उससम य राग व रागिनीकाऐसा सामाबँधाथा जिससुनकर यमुनाजल बहनेसे थम्हिरहा व हवाचलनेसे ठहरगई व सबपशु व पक्षी उस बनके वहलीला देखकरमोहितहुये कि चरना व उड़नाभूलकर चित्रकारीसे खड़ेहोगये केशवमूर्त्ति वराधाप्यारी जोबीचमेंनाच तेथे उनकीसुन्दरताईपर सबब्रजबाला बलायेंलेकर आपसमेंप्रस न्नहोतीथीं उससमयएकब्रजबालाने आपनंदबनकर दूसरीसख को वृषभानुबनाया व श्रीकृष्णका बिवाहराधिकासेकरके समाध यौंकेसमान आपसमें शिष्टाचारकिया व श्यामाकेहाथमें कंकण बांधकर श्यामसुन्दरसेकहाखोलो जबवहकंकणनहींखुला तब सबब्रजबाला हँसनेलगीं व राधाश्रीकृष्णकी बिधिपूर्वक पूजा करके बोलीं॥

दो० तहँनँदनन्दन लाडिली श्रीवृषभानुकुमारि। दुल्लहदुलहिनिराजहीं शोभाअमितअपारि॥
सो० दुल्लह नन्दकुमार दुलहिनि श्रीराधाकुँवरि। सन्तन प्राणअधार अचल रहै जोड़ीसदा॥

हेराजन् यहचरित्रदेखकर राधा व कृष्ण बहुतप्रसन्नहोते व नाचतीसमय गोपियोंके अंगसे जोफूलटूटकरगिरपड़तेथे उन रऋषीश्वर व मुनीश्वर भँवररूपधरकर रासलीला सुखदेखने स्ते गूंजतेथे और शब्दघुंघुरू पायजेब व करधनी ब्रजबालों सुनकर वहभौंरे उड़नाभूलगये इतनीकथासुनाकर शुकदेव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोले हेराजन् किसेसामर्थ्य है जोगोपियोंकीबड़ाई बर्णानकरने सकै अन्तसमय सबब्रजबालोंने आपमुक्तिपाकर तीन२ पीढ़ी अपने माता व पिताकोकृतार्थकरदिया व परमात्मापुरुषने अपने भक्तोंकामनोरथ पूर्णकरनेवास्ते ब्रजबाला रूपजीव आत्मासे सचीरासलीलाकरके जैसासुख उन्हें दिया वह आनन्दकाहाल कहानहींजाता जिसतरहबालक अज्ञान शीशेमें मुखदेखकर अपनीपरछाहींसे खेलताहै वहीगतिकेशवमूर्त्तिनेकिया जबअंग के स्पर्शसे गोपियोंकेशरीरकाकेसर व चंदन मोहनप्यारेके तनु व बैजयंती मालामें लगजाताथा तब वृन्दाबनबिहारी गोपियोंसे कहतेथे मैंने केसर व चन्दन नहींलगाया यह सबतुम्हारे शरीर का मेरे अंगमें लगकर सुगन्धउड़ती है जबगोपियां नाचती व कूदतीहुई गिरपड़तीथीं तबवृन्दाबनबिहारी अनेकरूपसे उनका हाथपकड़कर अपनेपासखींचलेतेथे देवतालोग वह सुखदेखकर डाहकीराह कहतेथे हेश्यामसुन्दर हमारा जन्मभी बृन्दाबनमें देतेतो तुम्हारेसाथ रासलीलाकरके जन्म अपनास्वार्थकरते ॥

दो० धनिवृन्दाबनधन्यसुख धन्यश्यामधनिरास। धनिधनिमोहनगोपिका नितनवकरतहुलास ॥

हेपरीक्षित रासलीला करते २ मोहनप्यारेकेमनमें कुछतरंग आगई तोसबब्रजबालोंको साथलियेहुये जागनेकीगर्मी मिटाने वास्ते यमुनाजलमें पैठगये जिसतरहमतवालाहाथी हथिनियों को साथलेकर जलक्रीड़ाकरताहै उसीतरह अलग २ रूपधरकर राधाआदिक गोपियोंसे जलबिहारकिया जबस्नानकरनेसे जाग ने व नाचनेकीगर्मी मिटाकर बाहरनिकले तबयोगमायाने सब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्रजबालों व अनेकरूप श्यामसुन्दरकेपहिरनेवास्ते उत्तमभूषण व बस्त्र वहांलादिया व इतरआदिक सुगन्ध अंगमेंलगाकर एक एक गजरा सबकेगलेमें ऐसापहिनाया जिसकाफूल कभी न कुम्हिलावै जबबृन्दाबनबिहारी श्यामाआदिक गोपियोंको संगले कर बनबिहारकरनेलगे तबदेवतोंने उनपरफूलबरसाये व उतारी हुई गीलीधोतियां उनकीआपसमें प्रसादोंकेसमान टुकड़े२ बांट लिया जबबनबिहारकरचुके तबश्यामसुन्दरने गोपियोंसे कहा स्नानकरनेसे तुम्हारीमांदगी छूटगई अबचारघड़ी रात्रिबाकी है सोअपने २ घरजाव यहबचनसुनतेही सबब्रजबाला उदासहोकर बोलीं हेब्रजनाथ तुम्हाराचरणछोड़कर अपनेघरकैसेजावैं बैकुंठ नाथनेकहा जिसतरह योगी व ऋषीश्वरलोग मेराध्यान करतेहैं उसीतरह तुमलोगभी अन्तःकरणसे मेरीयादरक्खो तोआठोंपह र तुम्हारेपास मैं बनारहूंगा यहबातसुनतेही सबब्रजबाला मनको धैर्यदेकर श्यामसुन्दरसे बिदाहुईं और अपने अपनेस्थानपरआईं व घरवालोंकोसोयाहुआ देखने व अपनीअपनी मनोकामनापा वनेसे बहुतप्रसन्नहुईं व परमेश्वरकीमायासे यहबातउनकेघरवा लोंनेनहींजाना किहमारीस्त्रियां रात्रिसमयकहींबाहरगईथीं इस लिये मोहनप्यारेसे किसीग्वालने कुछबुरानहींमाना इसतरहक भी २ नन्दलालजीगोपियोंकेसाथ रासलीला व बनबिहारकरते थे इतनीकथासुनकर परीक्षितनेपूंछा हेमुनिनाथएकसंदेह मुझेहै सोछुड़ादीजिये श्रीकृष्णजीने पृथ्वीकाभार उतारने व धर्मकेबढ़ा नेवास्तेअवतारलेकर विपरीतवेद व शास्त्रपरस्त्रियोंसे क्यों बिहार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया यहबचनसुनकर शुकदेवजीबोले हेराजन् मैं तुमसेपहिले गोपियोंकेजन्मलेनेका हालकहिचुकाहूं कि वहसबवेदकीऋचा थीं व लक्ष्मीजीने राधाकाअवतारलेकर श्रीकृष्णजीकेसाथसंसार मेंलीलाकियाथा इसलिये उनकोश्यामसुन्दरसे अलगसमझना नचाहिये औरजोअनेकरूपबृन्दाबनबिहारीका सबगोपियोंकेपा सथा उसबातकीमहिमा कोईनहींजाननेसक्ता और जिसकाममें बुद्धिकाप्रवेश न हो उसबातमें दोषलगाना न चाहिये बिषखाना महादेवकाकामहोकर दूसरेको ऐसीसामर्थ्यनहींथी जो उसकी गर्मीसहनेसक्ता परमेश्वरनिर्गुणरूप संसारीबातोंसेकुछप्रयोजन नहींरखते इसलिये उन्हैंदोषलगानाअधर्महोताहै वेद व शास्त्र काबचनसचामानकर उसीकेप्रमाणकरनाचाहिये व वैकुण्ठना थकी लीलामेंसंदेहकरना उचितनहीं है व जिनपरमेश्वरकानाम लेने व ध्यानकरनेसे बड़े २ योगी व मुनिकृतार्थहोजातेहैं उनआ दिपुरुष परमेश्वरको मनुष्यसमझकर दोषलगाना बड़ापाप है अग्निमें जिसतरहअशुद्ध वस्तुभीजलनेसे पवित्रहोजातीहै उसी तरहसमर्थलोग क्यानहींकरते और यहसबलीला नारायणजीने संसारीजीवोंकोभवसागरपार उतरनेवास्ते जगत्मेंकियाथाजिस केपढ़ने व सुननेसे कलियुगबासीलोग मुक्तिपावैं और वहपरब्रह्म परमेश्वर अपनेसुखवास्ते कुछनहींकरते जोकोई उनकाभजन व स्मरणकरके जिसवस्तुकी चाहनारखताहै उसकामनोरथपूर्ण करते हैं यहस्वभावउनकासदासे चलाआताहै व संसारीव्यवहार से रहितहोकरसबबस्तुमें बर्त्तमानरहते हैं परज्ञानप्राप्तहुये बिना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किसीको नहींदिखलाई देते व गोपीनाथका यशगावनेवाले मनुष्यपरमपदको पहुंचतेहैं व श्यामसुन्दरकी लीलासुननेका फल सबतीर्थस्नानकरनेके बराबरहोताहै व ब्रजबालोंके जोपतिथेउनकेशरीरमेंभी श्यामसुन्दरकाप्रकाशथा इसलिये सबगोपियोंके पतिश्रीकृष्णजीको समझनाचाहिये और यहपंचाध्याई कीकथा बांचने व सुननेवालेजीव सबपापोंसेछूटकर मुक्तिपदार्थपातेहैं परमेश्वरकीकथामें किसीबातकासंदेह न रखकर वेद व पुराणकेबचनपर विश्वासकरनाचाहिये ॥

दो० मोमनमें अचरजवडो तुमतों ज्ञानीहोय। माखनप्रभुकी कथामें भरममानिये तोय ॥

हेपरीक्षितआजसे ऐसासंदेहचित्तमेंकभी मतिलेआना अज्ञान मनुष्यकोक्यासामर्थ्य है जो परमेश्वरकेकामोंमेंअपनी बुद्धिमिलानेसकै ॥

दो० माखनप्रभुगोपालकी लीला परमपुनीत। भाग्यउदय जगमेंवही जोसुनिये करिप्रीति ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

नन्दजीकी आधीटांग को अजगर सांपका निगलजाना ॥

शुकदेवजीबोले हेराजन्जिसतरहश्यामसुन्दरने सुदर्शन विद्याधरको सांपकीयोनिसे छुड़ाकर शंखचूड़दैत्यकोमाराथा उसकी कथाकहतेहैं सुनों नन्दजीने एकदिनसबग्वाल व गोपियोंसे कहा हमने श्रीकृष्णजीकेजन्मतेसमय यहमानतामानीथी कि जबमोहनप्यारे बारहवर्षकेहोंगे तबमैंअपनेसबजातिभाईव बाजे गाजेसमेतजाकर पूजाअम्बिका देवीकीकरूंगा सोमहारानी की कृपासे यहदिनमुझे दिखलाईदिया इसलिये सबकोचलकरपूजा उनकीकरनाचाहिये यहवचनसुनतेही वहलोगप्रसन्नहोगये तब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकदिन नन्दयशोदा कृष्ण व बलराम व सबग्वालबाल व गोपी व छोटेबड़ोंको साथलेकर बड़ेहर्षसे गातेबजाते चले व दूध व दही व मेवा व मिठाई आदिक सामग्री पूजाकी गाड़ी व बैलोंपर लद वायेहुये सरस्वती किनारे पहुंचकर स्नानकिया व पुरोहित को बुलाकर बिधिपूर्व्वक देवीजीको पूजा और हाथजोड़करबोले हे अम्बिकामाता तुम्हारीकृपासे मेरी मनोकामनापूरीहुई फिर नंद जीने बहुतसी गोबिधिपूर्बक व सोनादानदेकर हज़ारब्राह्मणोंको अच्छीतरह भोजनखिलाया उसदिन महादेवभी देवतोंसमेत द र्शन करने आये थे जब पूजाकरने व परिक्रमालेने व ब्राह्मण खि लानेमें सारादिनबीतकर सन्ध्याहुई तबनन्दजी आदिक सबलो ग तीर्त्थ ब्रतरखकर रातको वहींसोरहे॥

दो॰ ऐसीबिधि सोयेसभी सुधि न रहीतनुमाहिं। बारम्बारपुकारिये तबहूंजागतनाहिं॥

हेराजन् उसी निद्राकेसमय जब आधीरात को एक अजगर आनकर नन्दरायकी आधीटांग निगलगया व उन्होंने जागकर अपनेको कालके मुखमें फँसेदेखा तब श्रीकृष्णको अपनी रक्षा वास्ते पुकारा नन्दरायका बोल सुनतेही सबग्वालबाल व गोपि योंने उठकर उजियाला करकेदेखा तो मालूमहुआ कि एक अ जगर नन्दजीकी आधीटांग निगलेहुये पड़ाहै यहदशा देखतेही वहलोग जलतीहुई लकड़ियोंसे उससांपको मारनेलगे पर उसने नन्दजी का नहींछोड़ा तबसबोंने हारमानकर श्रीकृष्णजी को जगाया जब श्यामसुन्दरने बालकोंकी तरह आंखमलतेहुये उ ठकर जैसे अंगूठा अपनेबायेंपांवका छुवाया वैसे उस अजगरने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नन्दजीकापैर छोड़दिया व जमुहाईलेकर मनुष्यरूप बहुतसुंदर भूषण व वस्त्रपहिने राजोंकेसमान होगया व नन्दलालजीको दं एडवत् करके उनकेसामने खड़ाहोकर स्तुतिकरनेलगा यहहाल देखकर नन्दआदिक गोप व गोपियोंने अचम्भामाना तबश्याम सुन्दरने उस मनुष्यसे पूंछा॥

दो॰ तुवस्वरूप सुन्दरमहा उपमाकही न जाय। सर्परूप काहेधरेउ हमसे कहौबुझाय।

यहवचन सुनतेही वह हाथजोड़कर बोला हेवैकुण्ठनाथ आ प अन्तर्यामीसे कोईबात छिपीनहींहै परंतु तुम्हारी आज्ञानुसार अपनाहाल कहताहूं सुनिये मैं सुदर्शननाम विद्याधर हंसपुरमेंर हकरधन व सुन्दरताई व बुद्धिके अभिमानसे अपनेसामने किसी को कुछबस्तु नहीं समझताथा व देवतालोग भी मेरासन्मान ब हुतकरतेथे सोएकदिन बिमानपर बैठकर सैरकरनेवास्ते निकला जब राहमें अंगिराऋषीश्वरका कुरूप जो कुबड़े थे देखकर मुझे हँसीआई और मैं ठट्ठेकीराह कईबेर अपनाबिमान उड़ाताहुआ उनपर लेगया तब ऋषीश्वरने बिमानकी परछाहीं ऊपरपड़नेसे क्रोधितहोकर मुझे ऐसाशापदिया कि तू अजगरसांपहोजा जब यहशापसुनकर मैंने अपनाअपराध क्षमाकरानेवास्ते अतिबिन ती उनकीकी तब उन्होंनेकहा मेरावचन फिरनेतो नहींसक्ता पर कुछदिनों में श्रीकृष्णजीका चरणछूनेसे तुझे फिर विद्याधरका तनु मिलेगा सो मैं तभीसे अजगरहोकर तुम्हारेचरणोंकी इच्छा रखताथा इसीवास्ते आजमैंने नन्दजीका पांवपकड़ा जिसमें तु म्हारादर्शन मुझे प्राप्तहो सो आपने दयाकीराहमुझे अपनादर्श

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नदेकर कृतार्थकिया जिनचरणकमलका दर्शन ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रादिक देवतोंको ध्यानमें जल्दी नहीं मिलता उन चरणों कोआङ्गिरा ऋषीश्वरके प्रतापसे छूकर मैं पवित्रहुआ॥

दो० ताहि शाप कैसे कहौं वह तो भई अशीश। जेहि प्रताप जगदीशके पगलागे ममशीश॥

इसलिये उनऋषीश्वरकेउपकारसे मैंजन्मभरउऋणानहींहोस का किसवास्ते कि उन्होंनेबुराईकेबदले मेरेसाथभलाईकी जोअ च्छेलोगहैं वहाकिसीकीबुराईनहींचाहते यहस्तुति व दण्डवत्कर नेकेउपरांतवहाविद्याधरविमानपरबैठकेअपने लोकको चलागया तबब्रजबासीलोगोंने अचम्भामानकर यहनिश्चयकिया कियह परब्रह्मपरमेश्वरका अवतारहैं प्रातसमयनन्दआदिक गोप व गो पियाँ अम्बिकादेवीकादर्शनकरके अपनेघरआये हेराजन् एकदि न श्याम व बलरामचाँदनीरातमें ब्रजबालोंकेसाथयमुनाकिनारे रास व बिलासकरकेबाँसुरीबजातेथे सो केशवमूर्त्तिने मुरलीकी ध्वनिसेब्रजबालोंकामन ऐसा मोहिलिया कि गोपियांबाँसुरीके शब्दपर मोहितहोकर श्यामसुन्दरकेपीछे २ इसतरहगाती फिर तीथीं जिसतरहपरछाहींसाथ नहींछोड़ती उससमयब्रजबालोंका चित्तऐसाअचेतहोगया कि अपनेतनु व वस्त्रकीकुछसुधिउन्हैं न हींरहीथी सोअचानक उसीसमय शंखचूड़नामयक्ष कुवेरदेवता का सेवकअतिबलवान् व मित्रतृणावर्त्तआदिकदैत्योंका जिसके शिरमेंबहुतबढ़ियामणिथी घूमताहुआ वहांपरआया तो उसने क्यादेखा किश्याम व बलरामबाँसुरीबजारहेहैं और बंशीकी ध्व निपर सबब्रजबाला मोहितहोरहीहैं यहआनन्दउससे देखानहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गया इसलियेकुछगोपियोंको अपनेकमन्दमेंफँसाकर उत्तरओर लेचला जबतकबांसुरीकीध्वनि गोपियोंकेकानमें पहुँचतीरही तबतकवहसब ऐसीअचेतथीं कि उन्हैं अपनेफँसनेकी कुछसुधि मालूमनहींहुई जबदूरतकखींचलेजाने से उन्हैं बंशीकाशब्दसु नाई न दिया तबवहसबचैतन्यहोकर अपनेकोकमन्दमेंफँसेदेख तेही चिल्लानेलगीं

चौ० पूरण ब्रह्म प्रीतिरस पागीं। कृष्ण कृष्ण करि टेरनलागीं॥
हेभगवन्त सन्त हितकारी। बेगिआय सुधिलेव हमारी॥

यहदीनबचनसुनतेही श्याम व बलरामनेदोवृक्षउखाड़लिये और जिसतरहसिंहहाथीकोमारनेवास्तेझपटताहै उसीतरहदोनों भाई दौड़कर गोपियोंकेपासजापहुँचे व पुकारकरकहा अब तुम लोग कुछचिन्तामतकरो॥

दो० तुम्हरे करुणा बचनसुनि मैं आयाहूंधाय। शंखचूड़ शिरचूरकरि तुमको लेबछुड़ाय॥

जबउनकी ललकारसुनतेही वहयक्ष ब्रजबालोंकोछोड़कर भागा तब केशवमूर्त्तिने गोपियोंकीरक्षाकेवास्ते बलरामजीको वहांछोड़दिया व आपहवा व बिजुलीकीतरह दौड़कर शंखचूड़ को ऐसामुक्कामारा कि वहमरगया तबमुरलीमनोहरने उसकेशि रकीमणिनिकालकर बलरामजीकोदेदिया व ब्रजबालोंकोसाथ लेकर आनन्दपूर्वक अपनेघरआये इसीतरहश्रीकृष्णाजी नित्य नई २ लीलाकरके वृन्दाबनबासियोंको सुखदेतेथे॥

पैंतीसवां अध्याय॥

गोपियोंके बिरहकी कथा॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षितएकदिन श्रीकृष्णाने ग्वालोंकेसंगगौ चरातीसमय वृन्दाबनमेंबंशीबजाकर ऐसाराग व रागिनीगाय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसकाशब्द सुनतेही ब्रह्मा व महादेवआदिक देवता अपनी स्त्रियोंसमेत मोहितहोगये जैसाराग व रागिनीबाँसुरीमेंगातेथे वैसागाना ब्रह्मा व महादेव व नारदआदिककिसीसे नहींबनपड़ता था व राधाप्यारीआदिक ब्रजबालाअपनेपरिवारवालोंके डरसेकेशवमूर्त्तिके पासबनमें न जाकर नित्यउनकेविरहमें व्याकुलरहतीथीं व घरमेंएकक्षणचित्त उनकानहींलगताथा इसलिये अपनी२ गोलबांधकर कुछब्रजबाला राहमें व कोई झुंडयशोदाकेपास व बाजीगोलगांवमेंबैठबीचयाद व चर्चामोहनप्यारेकेदिनअपनाकाटतीथीं उनमेंकोईब्रजबालासूर्यकेसामने हाथजोड़करबिनय पूर्वककहतीथी महाराजतुमजल्दी अस्तहोजाव तोसंध्यासमय मोहनप्यारेघरपरआवैं तबमैंउनकारूपरसपीकर अपने कलेजेकी तपनबुझाऊं व बाजीगोपीकेशवमूर्त्तिकी सुन्दरताई वर्णनकरकेउनकेध्यानमेंअचेतहोजातीथी व कोई ब्रजबालानँदलालजीकायशगाकरमनअपनाप्रसन्नकरती व बाजीगोपीकेशवमूर्त्तिके बिरहमेंघबड़ाकर रोनेलगतीथी तबज्ञानवान्गोपियां उसेसमझाकरकहतीथीं सुनोप्यारी इसघबड़ाने व रोनेसेक्यामिलैगा उत्तमयहहै कि हमलोग बीचस्मरण व चर्चामनहरणप्यारेके दिनअपनाकाटैं जबसबब्रजबाला यहबातमानकर बीचचर्चाबालचरित्र श्रीकृष्णजीके लीनहुई तबएकगोपीबोली हेसखियोबाँसुरीकावड़ाभाग्यसमझो जो श्यामसुन्दरकेहोठोंसेलगीरहतीहै व मोहनप्यारेअपनाहाथलगाकर उसमेंऐसीउपजनिकालतेहैं किजिसशब्दकेसुननेसेकिजीवजड़ व चैतन्यकाचित्तठिकानेनहींरहता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० जारसकोहमतपकियो षटऋतु सबब्रजबाम। सोरसमुरलीलेनअब सहजैवशकरिश्याम॥
सो० गावतमीठीतान मुरलीसँग अधरनधरे। अब याकेवशकान्ह अवरनवश वह करिरही।

दूसरीसखीनेकहा किसवास्ते बांसुरीकी ऐसीबड़ाईनहो जि
किसीकाहाथश्यामसुन्दरपकड़ें वहतीनोंलोककामालिक हो
क्काहै मनुष्योंकीक्यासामर्थ्य हैं जो बंशीकीध्वनि सुनकरअचे
न होजावें उसकेशब्दपर ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वरमोहितह
कर यह इच्छारखते हैं कि हमलोगोंको परमेश्वर मनुष्यका
न्म बृन्दाबनमें देते तो आठोंपहर श्यामसुन्दरकादर्शनकरने
मुरलीसुननेसे आनन्दहोकर हरिचरणोंकी धूरि अपनेशिर
आंखोंपरलगाते उसीतरह देवतोंकीस्त्रियां अपने २ पतिकेसा
रहनेपरभी उसबांसुरीकेबोलपर मोहितहोजाती हैं॥

दो० माखनप्रभुकीबांसुरी श्रवणनसदासुहाय। जाकीध्वनिसुनिकैसबै सुरमुनिरहत लुभाय॥

दूसरीसखीबोली कदाचित्मनुष्य व देवता जो ज्ञानवान् हैं
बांसुरीकीध्वनिपरमोहितहोगये तौकौनबड़ीबातहै उसमुरलीका
शब्दसुनतेही पशु व पक्षीचरना व पागुरकरना व उड़नाभूलका
चित्रकारीसेखड़ेरहजातेहैं व किसीसेनहींभड़कते॥

दो० एकसखी यहिबिधिकहै सुरनरकी मतिशुद्धि। पशुपक्षीबशहोतहैं जिनकी शुद्धि न बुद्धि॥

दूसरीनेकहा हेप्यारियोमुरलीकेशब्दमें ऐसागुण है कि कोई
कैसीही चिन्तामेंबैठाहो उसकाबोलसुनतेही प्रसन्नहोजाताहै

दो० फिरिये याकेसंगलगि लोकलाज घरत्यागि। जबजबसोजहँबाजिहै मोहनकेमुखलागि॥
सो० करिहै नाना रंग यह जानत टोना कछू। या मुरली के रंग देखो हरि कैसे भये॥

दूसरी ब्रजबालानेकहा वहबांसुरीबड़ीचतुरी व कुटनीहै जि
समय श्रीकृष्णजीको किसीकीचाहनाहोतीहै उससमयवहबांसु
बजाकर उसे अपनेपासबुलालेतेहैं व यमुनाजलभी वहशब्दसु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर बौरायजाताहै इसीवास्ते बेड़ियांलहरकी उसकेपांवमें पड़ीहैं व वृक्षोंकीडाली जो नीचे ऊपरलिपटीरहतीहैं वहभीबांसुरी सुन नेसेअचेतहोगई हैं नहीं तो चैतन्यमनुष्य किसीसेनहींलिपटता व कमलकाफूलभी उसीशब्दपरमोहितहोकर मतवालोंकीतरह आठोंपहर शिर अपनाहिलाताहै व बादल उसीध्वनिपर मोहित होकर विरहियोंकीतरह रोकर आंखसेपानीबरसाताहै॥

सो० हरिकोकरि बशमाहिं मुरलीलूटै अधररस। उर डरमानतनाहिं हमसबते बोलतनिठुर॥

दूसरी गोपीबोली मैं जानतीथी श्यामसुन्दरकेवल लड़कपन केखेलमें बड़ेचतुरहैं पर अब मुझेमालूमहुआ कि गाने व बजाने में भी कोई उनकीबराबरीनहींकरसक्ता दूसरी ब्रजबालानेकहा ब्रह्मा व महादेवआदिकदेवतों व बड़े २ ऋषीश्वरों व ज्ञानियोंका ध्यानभी बंशीसुनकर इसतरहछूटजाताहै जिसतरहकोई नींदसे जागउठै दूसरीगोपीबोली मुरलीहमारीसवति श्यामसुन्दरको ऐसीप्यारी है कि दिनरातउसको अपनीछातीसे लगायेरहते हैं पिछलेजन्ममुरलीनेबड़ाभारी तपकियाथा जिसकेप्रतापसे मो हनप्यारेकोअपनेवशकरलिया॥

दो० जैसे हैंगे हरिनिठुर बंशीभई सहाय। अबमुरली अरु श्यामकी जोड़ीमिली बनाय॥
सो० भेटत पिछलेदाग जो बशकरिपायोपिया। धनिधनिमुरलीभाग अबगरजत अधरनचढ़ी॥

दूसरीसखीनेकहा हेप्यारियो मुरलीकाक्याअपराधहै यहसब कठोरताई नन्दलालजीकी समझनाचाहिये कि उन्होंने नारी नीतिछोड़दिया व बंशीनीचजातिको अपनीरानीबनाकररक्खाहै दूसरी ब्रजबालाबोली कि मुरलीबांसकेतनुमेंजन्मपाकर एकपैर खड़ीरहीबरसात व गर्मी व सर्दीकादुःख अपनेऊपरउठाकर पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेश्वरकातपकिया फिर अपनापोर २ कटवाया व अग्निकीगर्म ऊपरसहकर अङ्ग २ में अपनेछेदकराया इतनादुःख उठाकरउस ने त्रिलोकीनाथको अपनेवशकिया है इसीवास्ते तीनोंलोकके जीव उसकेशब्दपर मोहितहोजातेहैं हमलोगोंकोक्यासामर्थ्यहै जो उसकीबड़ाई व बराबरीकरसकैं जब उसकेसमान तुमलोगभी तपकरो तब मोहनप्यारे तुम्हारेसाथभी वैसीप्रीतिकरसक्ते हैं उन कापाना सहजमतिसमझो देखोजबहमलोगोंनेभी श्यामसुन्दर केमिलनेवास्ते व्रतकिया तब उन्होंने हमारेवास्ते चीरछिपाकर हमकोनंगी देखाथा यह अपने २ भाग्यकाफलहै ॥

दो० मुरलीकी सरमतिकरो कहोहमारो मान। धनिधनिवाहि बखानिये सुनिवाको यशकान ॥
सो० रहैविश्वभरिजीति मोहनमुखलगिबांसुरी। मेटिसकल श्रुतिनीति रीतिचलावत आपनी ॥

दूसरीगोपीने कहा मुरलीसे प्रीति रखनेमें हमारेवास्ते भी अ च्छाहोकर उसकेसाथ वैरकरनेमें कुछफल नहींमिलैगा इसलिये बंशीसे डाहकरना न चाहिये हमलोग केशवमूर्त्तिकेसाथ बाला पनसे प्रीति रखतीहैं उनके चरणोंका स्मरण व ध्यानकरने से तु म्हारा अर्थभी सिद्धहोगा ॥

सो० हमकोहै यहआश वहहैं अन्तर्यामिहरि। करिहैं नहीं निराश उरअन्तरकी जानिकै ॥

दूसरीब्रजबालाबोली बंशीश्यामसुन्दरकेओठोंकाअमृतपीक र अमरहोगई इसीवास्ते अपनाबोलसुनाकर हमलोगोंकोज्ञान सिखलातीहै यहबचनसुनतेही राधाप्यारी श्रीकृष्णके बिरहमें डूबकररोनेलगी तबदूसरीगोपीने उससेकहातूउदास मतिहो श्री कृष्णजी तेरेऊपरमोहितहोकर तेरानामबाँसुरीमें बजातेहैं व तू रानीहोकर मुरलीतेरीदासीहै हमलोगवृथाबाँसुरीको सवतिजान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर उससेबैररखतीहैं मोहनप्यारेने मुरलीको सबगुणनिधानसम झकर उससेप्रीतिलगाई है ॥

दो० अबमुरली छूटैनहीं याके बशभयेश्याम। प्रकटकियो सबजगतमें मुरलीधर निजनाम ॥

दूसरीगोपीनेकहा हेसखीमोहनप्यारा चित्तचोर वृन्दाबनमें ग्वालोंके कन्धोंपर हाथरक्खेहुये गौचरावताफिरताहोगा व बंशी कीधुनिसुनिकरसबगौ इकट्ठीहोगईहोंगी दूसरीसखीबोलीमोहन प्यारेऐसेसुन्दरहैं जिनकेमुखसे हँसतीसमयफूलझड़तेहैं उसका मोहनीरूप देखने व बंशीसुननेसे हमाराकामदेव बशनहींरहता व बाँसुरीका शब्दसबजीवोंके पैरमेंऐसीबेड़ीडालदेताहै किकिसी कोचलनेकी सामर्थ्यनहींरहती ॥

दो० धनिधनिबंशी बांसकी धनियाके मृदुबोल। धनिल्याये गुजर्जाचिके बनतेश्यामअमोल ॥

हेपरीक्षित इसीतरहसबगोपियां बीचचर्चाश्यामसुन्दरके दिन अपनाकाटकर संध्यासमयराहपर आनबैठतीथीं व केशवमूर्त्तिअन्तर्यामीकी प्रीतिजानकर संध्यासमय बलरामजी व गौ व ग्वालों को साथलिये व मोरपंखकी टोपी शिरपरधरे व कुण्डलजड़ाऊ कानोंमेंपहिने बाँसुरीबजातेहुये इससुन्दरताईसे घरआतेथे कि उनकादर्शनकरने से सबछोटे व बड़ोंकामनप्रसन्नहोजाताथा व गोपियां बड़ेप्रेमसे आगेदौड़कर श्रीकृष्णचन्द्रकेमुखकी शीतलताईसे अपनेहृदयकी अग्निठण्ढीकरतीथीं व श्यामसुंदरके पग कीधूरि अपने २ अञ्चलसेझाड़कर परिक्रमालेनेउपरांत अपने घरआवतीथीं ॥

दो० हरिस्वरूपके सिंधुमें गोपीकूदीं धाय। नयनन पावैंदरश रस मनकी तृषाबुझाय ॥

जबश्याम व बलरामअपनेघरपहुँचतेथे उससमययशोदा व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रोहिणी बड़ेप्रेमसेउपटन व फुलेलमलनें व स्नानकरानेउपरांत छत्तीसव्यंजन खानेवास्तेदेतीथीं तबवहग्वालबालोंकेसाथ प्रसन्नहोकर भोजनकरतेथे नित्ययहीनेमउनकारहताथा एकदिन बृन्दाबनबिहारीने ऐसाबिचारकिया कि हमनेरासलीलामेंअन्तर्द्धानहोकर श्यामाआदिकगोपियोंको अपनेबिरहका बहुतदुःख दियाथा उसकेबदले अबमुझेउचितहै कि राधाप्यारीको जो लक्ष्मीजीका अवतारहैं मानकराऊं औरमैं उसकेपांवपकड़कर उसे प्रसन्नकरूं व सबब्रजबालोंका दुर्बचनसुनकर उन्हैंदुःख देनेके बदलेमैं उऋणहोजाऊंसो एकदिनराधाप्यारी सोलहोंशृङ्गारकिये अपनेघरबैठीथी जबमोहनप्यारेने अपनी इच्छानुसार उसके स्थानपरजाकर श्यामाको अपनेगलेलगालिया व उसकीसुन्दर ताईपरबलायें लेनेलगे तबकेशवमूर्त्तिकीमायासे श्यामानेअपने मुखारविन्दकी परछाहीं बीचजड़ाऊगहने मुरलीमनोहरके जो गलेमेंपहिनेथे देखकरक्यासमझा कि इसदूसरीसुंदरीसे नन्दलालजीने प्रीतिकरके उसकोछातीमेंलगारक्खाहै सो मुझको दिखलानेवास्तेलेआये हैं जबऐसाबिचारकर राधाप्यारीको सवतिया डाहहुई तबउसनेरोनीसूरतबनाकर कहा ऐ मोहनप्यारे मैंने जानातुमप्रकटमें मेरेसाथप्रीतिकरके अन्तःकरणसे इसमहासुन्दरी को ऐसाचाहतेहो कि आठोंपहरअपनीछातीसेलगायेरहकर एक क्षणअलगनहींकरते इससखीका बड़ाभाग्यसमझनाचाहिये जो रातदिन तुम्हारेहृदयमेंबसती है अबतुम इसकेसाथप्रीतिकरो मैं तुम्हारेयोग्यनहींहूं यहबचनसुनतेही ज्योतिस्वरूप उसकेसामने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हाथजोड़करबोले ऐप्राणप्यारी तुम्हारेसिवायकौनहै जिसको ह
मचाहतेहैं तुमहमारीबातका बिश्वासरखकर ऐसामतबिचारो इ
सीतरह बहुतबिनतीकरके नन्दलालजीने श्यामाकाहाथ पकड़
कर अपनेपास बैठालनेचाहा परवह सवतियाडाहसे नहीं बैठकर
बोली ऐ केशवमूर्त्ति अपनीप्यारीसे जिसको हृदयमें रखतेहो
बोलो अबहमको तुमसे कुछ प्रयोजननहीं है ऐसाकहकर राधा
अपनी परछाहींको गालियां देनेलगी तब मोहनप्यारेने कईबेर
समझाकरकहा यहदूसरीस्त्री न होकर मेरेजड़ाऊ गहनेमें तेरीपर
छाहीं दिखलाईदेतीहै पर श्यामाको सवतियाडाहसे उनकीबात
का बिश्वासनहींहुआ उसीसमय एकसखी वहां आई व दोनोंको
उदास देखकर बोली॥

दो० वह हरिसे पूछतभई कहो न मोहिं बताय। आजदशा कैसी लगत बैठे कहा गवांय॥
सो० क्योंतनरह्योभुलायअतिव्याकुलदेखततुम्हैं। रहोबदनकुम्हिलाय ऐसोशोच कहापरो॥

यह सुनकर श्रीकृष्णजीनेकहा ऐसखी मैंने तो कुछ अपराध
राधाकानहींकिया इसने अपनीपरछाहीं मेरेजड़ाऊ गहनेमेंदेख
कर उसे दूसरीस्त्रीसमझाहै इसकारण मुझसे रूठकरनहींबोलती
तू किसीतरह इसकासंदेह मिटाकर प्रसन्नकरदे जब यहबात क
हकर श्यामसुन्दरने आंखोंमें आंशूभरलिया तब उससखीने मु
रली मनोहरसेकहा तुम वृन्दाबनमेंचलो मैं राधाप्यारीको वहां
लिये आतीहूं यहसुनकर मोहनप्यारे वृन्दाबनकी कुंजमें चले
गये तब उससखीने राधाकेपास जाकरकहा तुम्हें गोपीनाथने ब
लायाहै श्यामाबोली तूनहींजानती नन्दकुमारने दूसरीसुंदरीसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रीति करके उसको अपनेहृदयमें बसायाहै अबवहमेरी चाहना नहींरखते मैं उनकेपासजाकर क्याकरूं तबफिर वहसखीबोली हेराधा तू जिनकीबस्तु मँगनीलेआईहै वहतेरेबदले मोहनप्यारे को बनमें घेरेखड़ेहैं और तुमयहांमचलाकर बैठीहो ऐसा न चाहि ये श्यामानेकहा मैंकिसीकीबस्तु मँगनीनहींलेआईहूं जोघेरेहों उनकानाम बतलादेव तबवहसखीबोली हिरणीकीआंख व चीते कीकमर व हाथीकीचाल व अनारकेदांत तू मँगनीलाईहै वेलोग नन्दलालजीसे तगादाकरते हैं तबयहबात प्रीतिभरीहुई सुनकर राधानेहँसदिया तबवह सखीबोली हेप्यारी तू बड़ीअज्ञानहोकर मोहनप्यारेसे वृथाखेद मानतीहै जिसतरह आगे एकदिन तैंने शीशादेखकर अपनीपरछाहींकोसवतिसमझा व उसीतरह आज भी नंदलालजीके जड़ाऊगहनेमें अपनीपरछाहींको दूसरीस्त्री जानकर मोहनप्यारेसेखेदमाना इसलिये वहतेरेबिरहमेंव्याकुल होकर राधा २ पुकारतेहैं सो तूजल्दीचलकर उनकीचिन्ताछुड़ा दे जबयहबचनसुनकर श्यामाकाचित्तठिकानेहोगया तबवहपछ ताकरकहनेलगी हेसखी तुममोहनप्यारेसेजाकरकहदे मैं शृङ्गार करके अभी आतीहूं जबवहसखी श्यामसुन्दरकेपास यहसँदेशा कहनेगई तो क्यादेखा कि वृन्दाबनबिहारी राधाप्यारीकेबिरहमें व्याकुलहोकर वृक्षकेतले लोटरहे हैं ॥

सो० बैठत उठत अधीर कोऊसुधि पावत नहीं। बढ़त बिरह की पीर श्रीराधाराधा रटत ॥

यहदशा उनकीदेखकर वहसखीबोली हेप्राणप्यारे तुमकिस वास्ते इतनाशोचकरतेहो अभी एकक्षणमें श्यामाआपहुँचतीहै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहबचनसुनतेही मुरलीमनोहर उठबैठे व फूलोंकीशय्या बिछा या और चारोंओर चौंक २ कर ताकनेलगे जबश्यामाकेआवने मेंकुछदेरहुई तब फिरवहसखीराधाकेपास जाकरबोली ऐ श्यामा मनहरणप्यारे तेरोविरहमें रोरहेहैं तू क्योंनहींचलती ॥

सो० मुखनहिं बोलत बैन अतिव्याकुल तेरोबिरह। भरभर डारतनैन कहाकहों उनकी दशा ॥

राधा यहबचनसुनतेही बहुतप्रसन्नहोकर उससखीकेसाथ बनमेंजापहुँची श्यामसुन्दरने प्यारीकोदेखतेही आनन्दहोकर उससखीकीबड़ाई की व श्यामाको अपनेहृदयमेंलगाकर काम देवकी अग्निबुझाया ॥

सो० परमप्रेम दोऊ मिले श्रीराधा नँदनन्द। गुण आगर नागर युगल छविसागर सुखकन्द ॥
गयोश्याम श्यामासदन सखीसहितसुखपाय। मनचरित्ररस खेलकर ब्रजबासिन सुखदाय ॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित देखो जिस त्रिलोकीनाथ का दर्शन ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व ऋषी श्वर जल्दीध्यानमें नहींपावते वह परमेश्वर ब्रजकी स्त्रियोंके वा स्ते ऐसाशोचकरतेथे उनकीलीला कौनजानसक्ताहै ॥

सो० जो प्रभु अगमअपार वेद भेद जानत नहीं। सो ब्रज करतबिहार मरम न वाको पावहीं ॥

एकदिन श्यामसुन्दरने बृन्दाबनकी गलीमें ललितासखी को आवतीहुई देखकररोंका तब ललिताबोली तुम झूंठीप्रीति मेरेसाथरखिकर कभी मुझगरीबिनीकेघर नहींआवते यह सुन कर नन्दलालजीने कहा ॥

दो० तुमकैसे बिसरत प्रिया हँसिबोले घनश्याम। आजु आय सुखलेहिंगे रैन तुम्हारे धाम ॥
सो० सुनहर्षीब्रजबाम चलीसदन मुसकायके। लखि सुखपायो श्याम मुदितगये अपनेसदन ॥

हेराजन् ललिताने बड़ेहर्षसे अपनेघर आनकर सोलहों शृं गारकिया व स्थान व शय्याकीतैयारीकरके आशाआवने श्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मसुन्दरकी देखनेलगी जब आधीरात बीतनेपरभी श्रीकृष्णजी वहां न आनकर शैलासखीकेघर चलेगये तब ललिताने उदास होकरकहा ॥

दो॰ कहतश्याम आयेनहीं होनलगी अधरात। गये आशदे मोहिंपुनि कहाधरों जियबात॥
सो॰ वेबहुनायकश्याम जायलोभाने अनतकहुं। मनमन शोचतबाम कारणक्या आयेनहीं॥

जबललिताको इसीशोच व बिचारमेंसारीरातजागतेबीतगई तब प्रातसमयनन्दलालजी अपनावचनयादकरके ललिताके घरपहुँचे॥

दो॰ तबबोली मुसुकायप्रिय कहाकान ममधाम। ताहीके घरजाइये बसेजहां निशिश्याम॥
सो॰ प्रात देखावन मोहि आये रंगबनायके। मैं सुख पायों जोहि भले बनेहौ लाल अब॥

जबयहबचनसुनकर श्यामसुंदरनेमुसकरादिया तब ललिता ने उन्हैं स्नानकराया॥

दो॰ रुचि भोजनदे सेजपर पौढ़ाये घनश्याम। रसबशकरि नबनागरी कियेसुफल मनकाम॥

थोड़ीदेर केशवमूर्त्ति वहांरहिकर उसकी इच्छापूर्णकरनेउपरांत अपनेघरचलेआये इसीतरह मोहनप्यारेकभीश्यामा व कभी चन्द्रावली व कभी सुखमाआदिक गोपियोंकेस्थानपर रातभर रहिकर उनकीइच्छापूर्णकरतेथे जबएकब्रजबालासेबचनहारकर दूसरी सखीकेघरचलेजाते और वहब्रजबालाहठकरमानकरती तबबहुत बिनतीकरके उसेमनाते इसीतरह मोहनप्यारे एकरूप अपनानन्द व यशोदापासरखते और अनेकरूपधरकरकभीकभी ब्रजबालों की मनोकामनापूर्णकरतेथे॥

दो॰ कबहुँकहतहरिआइहैं उरमेंहर्ष बढ़ाय। कबहुँ विरह व्याकुलजरत अतिआतुरअकुलाय॥
सो॰ कबहुँकहत सुखपाय बहुतनारि राखैंपिया। बसे अनतकहुँ जाय मोसोंझूठी अवधिकरि॥

एकरातश्यामसुन्दर किसीसखीकेघररहिकर जब प्रातसमय राधाकेपासगये तबवहखेदमानकरकेबैठी इसलिये मोहनप्यारे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने बहुतबिनतीकरके सौगंदखाई कि हे प्राणप्यारी अबमैं दूसरी गोपीकेघरकभीनहींजाऊंगा तबवहप्रसन्नहुई पर त्रिलोकीनाथ नेजो सबकी इच्छापूर्णकरनेवालेथे सौगंदखानेपरभी ब्रजबालों केघरकाजानानहींछोड़ा सोएकदिन श्यामसुंदरकौमुंदासखीके घरपररहे व प्रातःकालवहांसेआवनेलगे उसीसमय अचानकमें राधाप्यारी कौमुन्दासखी को यमुनास्नान करनेवास्ते बुलाने गई जैसेश्यामाने केशवमूर्त्तिको उसकेघरसेनिकलते देखा वैसे क्रोधितहोकर बिनानहाये अपनेघरचलीआई ब नन्दलालजी उसेदेखतेही भयमानकरमनमेंकहनेलगे आजहमारीचोरीराधा नेपकड़लिया जब मुरलीमनोहरसे बिनाभेंटकिये राधाप्यारीके नहींरहागया तबकई सखियोंकोसाथलेकर उसेमनावनेगये उन्हैं देखतेही श्यामा क्रोधसेबोली॥

दो० घरघरडोलतफिरतनिशिबोलतलगतनलाज। आयदिखावैंप्रातमोहिं निशिबासरकेसाज॥
सो० मैं आई अबवाज जितचाहो तितहू फिरौ। इनको यहां न काज राजकरैं ब्रजमें सदा॥

जबश्यामसुन्दरके बिनतीकरने व सखियोंके समझानेपरभी राधाने क्रोधअपना क्षमानहींकिया तबकईसखीबोलीं हेश्यामा चारदिनके जीवनपर मतअभिमानकर वृन्दाबनबिहारी तेरेखेद करनेसे उदासहोकर अपनाअपराधक्षमाकरानेवास्ते तुम्हारेपास आयेहैं सोतुमहँसबोलकर इनकाशोचछुड़ादेव॥

दो० आदरकरि बैठाइकै पिय को कंठ लगाय। घर आंये नहिं कीजिये ऐसी विधि निठुराय॥
सो० है तू नागरि बाम मनमें क्या ऐसी धरी। वै ठाढ़े हैं श्याम तू मुखसे बोलत नहीं॥

श्यामायहसुनकरबोली जिसकेघर श्यामसुन्दर रातभररहे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैं वहांजावैं मेरेसाथ अबइनको क्याकामहै अभीचारदिनहुआ इन्होंने मुझसेसौगन्दखाईथी किअबकिसीसखीकेघर न जाऊंगा सोआजमैंनेअपनीआंखसे इनको कौमुन्दागोपीकेयहांसे निकलतेदेखा इसलिये मैंइनकेयोग्यनहींहूं लम्पटमनुष्यसे प्रीतिकर के कौननष्टहोवे॥

दो० ऐसोगुण हरिको सखी निपट कपटकीखानि। अबइनसों मोसों कभी नहीं बनैगी जानि॥
सो० हैं हरि कपटनिधान बहुनायक सँगरसिरहे। तिनकोकरतबखान जोबामनह्वैबलिछल्यो॥
दो० ऐसो कहि चुपहोरही मुरबैठी रिसगात। मधुरे वचननसे कहत निपट सखिनसों बात॥
सो० आयेहैं करिगौन चतुरनारिसँग निशिजगे। इनसों मिलिहै कौन विरहअग्निमें जलनको॥
सखीकहेउ मुसकाय नहिंमानत मेरोकह्यो। श्याम मनावैजाय में जान्यों तब मानि है॥

जब सखियोंके समझानेसे राधानेनहींमाना तबउन्होंने श्यामसुन्दरसे कहा हमलोग समझाते २ हारगईं परराधा नहींमानती तुम आपउसे समझाकर मनालेव॥

दो० मानतजैनहिं लाडिली थाकीं सबै मनाय। नेकयत्न कुछ कीजिये रचिये आप उपाय॥
चलेबनैहै लालअब और यत्न नहिंकोय। काछकाछिये जौनविधि नाचनाचिये सोय॥
सो० आपकाजमहँ काज बडेनकही है बातयह। तजोश्याम उरलाज करिबिनतीप्रियसोंमिलौ॥

जब ऐसाकहकर सबसखियां अपने २ घरचलीगईं २ तब नन्दकुमारभी वहांसेबाहर चलेआये परमनउनका नहींमाना तब स्त्रीरूप बनगये व श्रीकृष्णजीकी ओरसे राधाजीकेपासजाकरय हसंदेशाकहा मैं इससमय तेरेदेखनेवास्ते वृन्दाबनके कुंजमें गई थी सो तुझेउसजगह नहींपाया पर श्यामसुन्दरतेरे खेदमाननेसे वहां अतिविलापकरते हैं उन्होंने मेरे पांवपकड़कर बहुत बिनती से तुझे बुलायाहै सो तू मानछोड़कर मोहनप्यारेके पासचल यह बात कहकर गोपीरूप मोहनप्यारे श्यामाके चरणोंपर गिरकर बिनती करनेलगे॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० क्षण २ परसत चरणकर क्षण २ लेतबलाय। कहतप्रिया अबमानतजि पुनि २ हाहाखाय॥

जबराधाप्यारी उसस्त्रीकेबिनतीकरनेसे प्रसन्नहोकर चलने वास्ते तैयारहुई तबश्यामसुन्दरने अपनारूपधरकर श्यामाको गलेसे लगालिया तबदोनोंनेबड़ेहर्षसे एकथालीमें भोजनकिया व अपने २ कामदेवकीअग्नि भेंटरूपीजलसेबुझाया इसीतरह मोहनप्यारे राधाआदिक गोपियोंका मनोरथपूर्णकिया करतेथे॥

दो० यहलीला आनन्दमय सकल रसनकोसार। भक्तनहित हरि करतहैं गाइ तरत संसार॥
सो० घर २ करतबिहार ब्रजयुवतिनके संगहरि। गावत हैं श्रुतिचार ब्रजबासी हरि की कथा॥

बत्तीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णजीका वृषासुर राक्षसको मारना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जबवर्षाऋतुआई तबराधाप्यारीने श्यामसुन्दरसेकहा तुमहिंडोलाझूलनेकीलीलाकरो तोहमसबसखियां तुम्हारेसाथझूलाझूलकर बरसातकेगीतगावैं यहवचनसुनतेही श्यामसुन्दरनेजड़ाऊझूलाकुंजोंमें डलवादियातब राधाप्यारीआदिक ब्रजबाला उत्तम २ भूषण व अनेक २ रंगके वस्त्र पहिनकर श्यामसुन्दरकेसाथ झूलने व गानेलगीं उससमय वृन्दावन बिहारीने मुरलीसुनाकर व अनेकरागरागिनी गायके उन्हैं अतिप्रसन्नकिया वह आनन्द देखनेवास्ते ब्रह्मादिकदेवता व गन्धर्व अपनी २ स्त्रियोंसमेत बिमानोंपर चढ़कर वृन्दावनमें आये और बड़ेहर्षसे राधाकृष्णपर फूलबर्षाये व ब्रजबालोंके भाग्यकी बड़ाईकरने लगे इसीतरह बरसातभर राधाआदिक गोपियोंकेसाथ बिहारकरके उन्हैं सुखदिया जबफागुनका महीनाआया तब श्यामाआदिक ब्रजबालोंने मोहनप्यारेसे हाथ जोड़कर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिनयकिया महाराज हमलोगों के साथ होलीखेलो यहवचन सुनकर नन्दलालजीबोले तुमलोग अपने २ घर जाकर तैयारी करो मैंभी अपनेसखों को साथलेकर वहांहोलीखेलने आऊंगा जबसबब्रजबालोंने अपने २ घरजाकर होली खेलनेकी तैयारी की तब नन्दकुमारने ग्वालबालों को बुलाकर केसरिया कपड़ा पहिनाया व रंग अबीर व इत्रआदिक अपने २ शरीरपरडालकर सुगन्धित फूलोंके गजरे गलेमें पहिनलिये व डफ बांसुरी खंभरी बजाकर फगुवा गावते व ब्रजबालोंको गालियांदेते व अबीरउड़ावते व अनेकतरहके स्वांगबनाये लड़कों को नचावतेहुये ब्रजमें होलीखेलने निकले जो गोपीराहमें दिखलाईदेतीथी उसपर रंग की पिचकारियां मारकर हँसतेथे और सब ब्रजबाला अपनी २ खिड़की कोठोंपरसे मोहनप्यारे व ग्वालबालोंपर रंग व अबीर व कुमकुमाआदिकडालकर गालियांसुननेसे प्रसन्नहोतीथीं जब इसीतरहवृन्दाबनविहारी होली खेलतेहुये राधाप्यारी के स्थान पर बरसानेगांवमें पहुँचे तबश्यामा अपनीसखियोंसमेतसोलहों शृंगारकिये रंगकीपिचकारियांलिये गलीमें जाकर मोहनीमूर्त्ति के सामनेखड़ीहुई जबदोनों ओरसे पिचकारियां चलकरअबीरउड़नेलगातबश्यामा सखियोंसेबोली आजअपनेचित्तचोर को पकड़कर चीरहरनेका बदलालेना चाहिये ॥

दो० ललितादिकब्रजनागरी सबसुन्दरिकोसाज। तिनमें श्रीराधा कुँवरि सबगोपिन शिरताज॥
सो० कर्म्मरूप को रास गुणआगर नवनागरी। राजतभरी हुलास मन मोहन मनभावती॥
दो० ग्वालबाल के झुंडमें शोभित यों ब्रजनाथ। ज्यों चन्दा आकाश में तारागण लिये साथ॥

जबरंग व अबीरउड़नेसे अँधियाराछागया तबश्यामाने सखि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

योंसेकहा मनहरणप्यारेको किसीउपायसेपकड़ो यहवचनसुनते ही एकसखीनेबलरामजीका वेषबनाकर धोखेमेंकेशवमूर्त्तिको पकड़लिया औरराधाआदिक ब्रजबालोंने उन्हेंघेरकर कहा तुम नेयमुनाकिनारे चीरछिपाकरहमकोबड़ादुःखदियाथा आजउस दिनकाबदला लियेबिना न छोड़ैंगी ऐसाकहकरएकगोपीनेश्या मसुन्दरकापीताम्बर छीनलिया व दूसरीनेआंखोंमें काजलदेक र माथेपरसिंदूर व बेंदीलगादिया व किसीने भूषण व वस्त्र पहि नाकर उन्हैं स्त्रीरूपबनाया॥

दो० गयेभागि मोहनतभी सखियनको छिटकाय। आयमिलेनिजसखनमें रहींनारि पछिताय।
सो० करमींजत पछितात कहत परस्पर बातसब। भलीमिली थी घात दावँलेन पायो नहीं॥
दो० भाजे भाजे कहति सब ताली दे ब्रजबाल। जो तुम जाये नन्द के ठाढ़े रहो गोपाल॥

जब उन्हैं स्त्रीरूपदेखकर सबग्वालबाल हँसनेलगे तबमुरली मनोहरने एकग्वालको सखीरूपबनाकर राधाके गोलमेंभेजा व अपना पीताम्बर किसीउपायसे मँगालिया उससमयश्यामा बो ली हे प्राणनाथ आजतुम चतुराईकरके उचकिगये फिरपकड़ैंगी तो मालूमहोगा॥

सो० पकड़ नचावें तुम्हैं मुरारी। तब कहियो हमको ब्रजनारी॥

यहबात सुनकर ब्रजनाथने सखियोंसे कहा मैं तनिकश्यामा का संकोचकरताहूं नहींतो अपनेग्वालोंको लगाकर अभी तुम्हा री दशादिखादूं यहसुन गोपियां मुसकराकरबोलीं तुमको नन्द की सौगन्दहै जो ऐसा न करो तब मोहनप्यारे अपने सखासमेत पिचकारियां रंगकी ब्रजबालोंपर मारकर अबीर उड़ाने व फगुआ गाकर उन्हैं गालियां देनेलगे व श्यामाने भी सखियोंसमेत मोह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नप्यारे आदिकसे अच्छीतरह होलीखेली वह आनन्द देखनेवा
स्ते देवता व गन्धर्वअपनी २ स्त्रियोंसमेत बिमानोंपर बैठकरवहां
आये व राधाकृष्णपर फूल बर्षाकर आपसमें कहने लगे देखो
जिस वैकुंठनाथके चरणोंकादर्शनब्रह्मादिक देवतोंकोजल्दीध्या
नमें नहींमिलता वहीपरब्रह्मपरमेश्वर ग्वालबाल व गोपियों के
साथ होलीखेलकर उनकोसुखदेते हैं जबसंध्यातक राधाकृष्ण
होलीखेलचुके तब ललितासखीने आनकर केशवमूर्त्तिसे वि
नयकियाकल्हहमलोगभी तुम्हारेगांवमें होलीखेलनेआवेंगी॥

सो० घरआयेघनश्याम सखनसंगगावतहँसत। गईप्रियानिजधाम सखिनसहित आनँदभरी॥

उससमय राधिका सखियोंसे बोली॥

क० धाये नँदलाल वो गुलालदोऊ एकसंग झुमटिगयो जो दृगआननमढ़ैनहीं। धोयधोयहारो पचमा
कर तिहारी सौंह अबतो उपाय कोऊ चितपै चढ़ैनहीं॥ कहाकरैं कहांजायँ कासों कहैं कौन सुनै कीजिये
उपाय जामें दरद बढ़ैनहीं। एरी मेरी बीर जैसे तैसे इन आंखिनसे कढ़िगो अबीरपै अहीरको कढ़ैनहीं॥

दूसरेदिनप्रातसमय राधाप्यारीने सखियोंसमेत सोलहोंशृंगा
रकिया व सोनेचांदीकेबर्त्तनोंमें रंग व अबीर व गुलाब व इत्र भर
वाकर बड़ीतैयारीसे होलीखेलनेचली जबश्यामा गाती व बजा
ती रंग व अबीरउड़ातीहुई नन्दगांवमेंजाकर यशोदाकास्थान घे
रलिया तब श्याम व बलराम भी अपनेसखोंसमेत फगुआगातेहु
ये बाहरनिकले व रंग व अबीरसे राधाआदिकके साथ होलीखेल
नेलगे जब रंग व अबीरउड़नेसे चारोंओर लालहोगया तबल
लिताआदिककईसखी मोहनप्यारेको पकड़नेवास्तेदौड़ींपरनंद
कुमार फुरतीकरके भागगये इसलिये बलरामजीको पकड़लेआ
ई तबश्यामा आदिकने उनकोरंग व अबीरसेनहलाकर आंखोंमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काजल व माथेपर बेंदीलगादिया व उनसे बिनती कराके छोड़ा तब बलरामजीका रूप देखकर श्यामसुन्दर व सखालोग हँसने लगे उससमयगोपियोंने घातलगाकर मोहनप्यारेको भी पकड़ा और जब उन्हैं अपनीगोलमें लेगईं तब चन्द्रावलीबोली हेचित्त चोर चीरहरनेके बदले आज तुम्हैं नंगाकरके छोड़ूंगी ॥

दो० लैआईं प्यारीनिकट हँसत कहत ब्रजबाल। कहौलाल कैसे फँसे बहुत करतरहे गाल ॥

उससमय ललिताउनकी मुरलीछीनकर बजानेलगी व एक सखीने मोहनप्यारेको रंग व अबीरसेनहलाकर आंखोंमेंकाजल व माथेपर बेंदीलगाया व दूसरीनेउनका पीताम्बर छीनकर उन्हैं लहँगा व सारी व अँगियापहिनाया व एकसखीने मोतियोंसे मांगगूंधा व स्त्रीरूपबनाकर राधाकेपास बैठालदिया तब श्यामाने बड़े हर्षसे अपनेहाथसे उनकेगालोंपर इत्र व अबीर लगाकर उनका मुख चूमलिया ॥

दो० निरखिबदनप्यारी हँसी श्यामरहे सकुचाय। गहि प्यारी निजहाथसों दीन्हो पानखिलाय ॥
सो० सखियांकरतकलोल गांठिजोरि अंचलदई। ब्रजमें रहै अमोल यहजोड़ी युगयुग सदा ॥

जब ब्रजबालोंने राधाकृष्णको गांठिबन्धन कियेहुये बीचमें बैठाकर रंग व अबीरसे नहलादिया व उनकीछबि देखकर प्रेमसे गावनेलगीं तब यशोदाने ललिताको घरमें बुलाकरकहा रसोईं खानेका समयहुआहै इसलिये तू सबकोभीतर बुलाले जबललिता श्यामाआदिक सखियोंको भोजन करनेवास्ते भीतर लिवालेगईं व श्यामसुन्दर ब्रजबालोंसे छूटकर अपनेगोलमें चलेआये तब ग्वालबालोंने बलरामजीको बुलाकरउनकारूप दिखलाया व मोहनप्यारेको सौगन्दधराकर जब उसीतरह उनकाहाथ प

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कड़ेहुये नन्द व यशोदाके पासलेगये तबवह अपनेलालको स्त्री रूपसे देखतेही बड़े हर्षसे लिपटाकरबोले अयबेटा तुम्हारा यह रूप किसनेबनाया नन्दकुमारने कहा अयबाबा ललिता आदिक राधाकी सखियोंने यहभूषण व वस्त्र मुझे पहिनायाहै फिर यशोदाने श्यामाआदिक ब्रजबालोंको छत्तीसव्यंजन खिलाये व पान इलायचीदेकर अपनेयहांसे उत्तम२ भूषण व वस्त्र राधाको पहिनाये॥

सो० रह्यो नन्दघरछाय होरीको आनन्द अति। कहतयशोमतिमाय फगुआ कहासोदीजिये॥

यहसुनकर ब्रजबालोंनेकहा हे नन्दरानीजी हमलोगफगुआ केबदले मोहनप्यारेकोलेवैंगी तबनन्दमहरि ब्रजबासियोंसमेत हँसनेलगी व श्यामसुन्दरनेलहँगा आदिकउतारकर अपनामुकुट व पीताम्बरपहिनलिया व सब ग्वालबाल व ब्रजबालोंकोसाथ लेकर यमुनास्नानकरनेगये जब केशवमूर्त्तिने नहाकरफूलडोल लीलाकिया तबदेवतोंने आकाशसे उनपरफूलबरसाये इसीतरह केशवमूर्त्ति नित्यनईलीलाकरके ब्रजबासियोंकोसुखदेतेथे एक दिन राजा कंसनेवृषासुर दैत्यकोबुलाकर बिनयपूर्वककहा हम तुमकोसबदैत्योंसे बलवान्समझकर अपनापरममित्रजानते हैं सो तुमनन्दकेबेटे कृष्ण व रामकोमारडालो तौ मैं तुम्हाराबड़ा उपकारमानूं यहवचनसुनतेही वृषासुरबैलरूप बहुतबड़ापर्वतके समानहोंगया व दोनोंसींग अपनेबड़े२ कंगूराऐसेबनाकर बादल कीतरह गर्जता व लाललालआंखनिकाले पूंछफटकारेहुआ सन्ध्यासमय वृन्दाबनमेंआनपहुँचा व मारेक्रोधके मुखसेझागनि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कालकर एकबारऐसाचिल्लाया कि उसकाशब्दसुनकर स्त्रियों कागर्भगिरपड़ा व खुरोंसे पृथ्वीखोदके सींगोंपरपहाड़उठाकरउ लटनेलगा व बृक्षोंकासींगसेउखाड़कर श्यामसुन्दरको खोजता फिरताथा यहदशादेखकरादिग्पाल व देवताडरगये व पृथ्वीकांप नेलगी व ग्वाललोग उसे अपनाकालसमझकर श्रीकृष्णजीकी शरणपुकारनेलगे व सबोंनेकिवाड़ अपनेबन्दकरालिये उससमय श्याम व बलराम भी ग्वालोंसमेतगोचराकर जैसे गांवकेनिकट पहुँचे वैसेगो व बछवेमारेडरकेभागकर जिधरातिधरचलेगये व ग्वालबाल बृषासुरकोदेखकररोनेलगे जबमाहनप्यारेने यहदशा ग्वालबाल व ब्रजबासियोंकी देखी तब उन्हैं धैर्यदेकरबोले तुम लोग शोचमतिकरो देखो मैं अभी इस दुःखदायी को मारेडाल ताहूं ऐसाकहकर बृषासुरके सन्मुख चलेगये और ललकारकर बोले कपटरूपीदैत्य तू गोपी व ग्वालोंको किसवास्ते डराकर धम काताहै हमारेसामनेआव तेरेऐसे बहुतराक्षसोंको मैंने मारडाला है उन्हें देखतेही बृषासुरने प्रसन्नहोकर मनमेंकहा कि जिसके मारनेवास्ते मेरी इच्छाथी बहुतअच्छाहुआ जो वहबालक आ पसेमेरेसामने चलाआया अभी इसकोमारकर राजाकंसकेपास जाताहूं ऐसा विचारकर बृषासुर विजुलीके समानकेशवमूर्त्तिपर दौड़ा व उसने अपनेसींगपृथ्वीमें गड़ाकर ऐसाचाहा कि वैकुण्ठ नाथको तीनोंलोकसमेत उठालूं तब श्यामसुन्दरने उसकासींग पकड़करउसे अठारहपगपीछे हटादिया फिरवहभी बलकरके मो हनप्यारे को हटानेलगा॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० वहआवे हरिओर को प्रभुपाछे लेजाहिं । या विधि जो आयो गयो रहीशक्ति कछुनाहिं ॥

जब इसीतरह बलकरते २ वहदैत्यथकगया तब मुरलीमनो हरने एकबेर उसकोपृथ्वीपरपटकदिया जबफिर उसनेबड़ेक्रोधसे मोहनप्यारेको दोनोंसींगों में अड़ाया तबकेशवमूर्त्तिने फुरती सेनिकलकर दोनोंसींग उसकेधरलिये व ऐसाढकेला कि वहअ चेतहोकर पृथ्वीपरागिरपड़ा उससमय श्यामसुन्दरनेसींग व पैर पकड़कर इसतरहशरीर उसकाउमेंठाजिसतरहकोई गीलाकपड़ा निचोड़ताहै तब उसकेमुख व नाक व मूत्रकीराहसे लोहूबहिकर वहदैत्यमरगया यहहालदेखतेही देवतोंनेआकाशसे मुरलीमनो हरपर फूलबरसाये व सब वृन्दाबनबासीबड़ेहर्षसे उनकीस्तुति करके बोले अयमोहनप्यारे हमलोगोंने इसदैत्यकोबैलसमझा था बहुतअच्छाभया जो मारागया॥

सो० दुष्टदलन गोपाल मुदितकहत नरनारि सब । भक्तनके रक्षपाल ब्रजबासी नँदलाड़िले॥

उससमय राधिकाबोली अयमोहनप्यारे बैलरूपदैत्यमारने से तुमकोपाप्लगा इसलियेसबतीर्थस्नानकरो तबकिसीकोछूना यहवचनसुनतेही नन्दकुमारने दोकुण्डगोवर्द्धनपहाड़केपास खुदवाकरकहा अयराधाप्यारी मैं इसीजगह सबतीर्थोंकोबुलालेता हूं सो उनकीइच्छानुसार उसीसमयगंगा व यमुना व सरस्वती आदिक सबतीर्थ अपने २ रूपसेवहांआये व अपनानाम बतलाकर जबदोनोंकुंडमें जलडालके चलेगये तबश्यामसुंदरने उस मेंस्नानकिया व बहुतसीगो व सोनादेकरवहाँपरब्राह्मणोंकोभोज नखिलाया व नंदजी व वृषभानुआदिकने नंदकुमारपरबहुतसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की व बजानिये अनेकतरहका बाजा बजानेलगे व श्याम व बल राम बड़ेहर्षसे ग्वालबालोंको दांवपेंच बतलानेलगे व राजाकंस चाणूर आदिक पहलवानोंके मारेजानेसे बहुतउदासहोकर मथुरावासियोंको कहनेलगा तुमलोग श्रीकृष्णजीकी विजयहोनेसे प्रसन्नहोकर बाजाबजवातेहौ जबउसकी बातका उत्तर किसीने नहींदिया तबउसने क्रोधसेचिल्लाकर अपनेसाथीदैत्य व बीरों को जो मचानपर बैठेथेकहा कि तुमलोग इनलड़कोंको बाहरले जाकर खड्गसे मारडालो व बाजाबन्दकरके गोप व ग्वालोंको बांधलेव व वसुदेव देवकीको उग्रसेनसमेतमारकर रंगभूमिकाफाटक भीतरसे बन्दकरदेव यहवचनसुनतेही जबउन्होंने नंगीतलवार लिये श्याम व बलरामको जाकरघेरलिया तबदोनोंभाइयों ने एकक्षणमें बहुतसेदैत्य व बीरोंकोलड़कर मारडाला व बाक़ी दैत्य इसतरह मुरलीमनोहरके प्रकाशसे अपनाप्राणलेकर भाग गये जिसतरह प्रातसमय सूर्यके निकलनेसे तारेछिपजाते हैं व जबवसुदेव व देवकीने श्याम व बलरामके कुश्ती लड़नेवास्ते अनेकाहाल सुना तबवहदोनों व्याकुलहोकर परमेश्वरसे उन की कुशल मनानेलगे॥

दो॰ बारबार करुणाकरैं धरैं चरणिपरशीश। ममपुत्रनको दूजियो रक्षपाल जगदीश॥

जब मोहनप्यारे (हरि) अन्तर्यामीने मातापिताको दुःखीजानकर कंसकायहबचनसुना तबऐसा प्रणकिया कि आजकंसकोमारकर वसुदेव व देवकीकोछुड़ानाचाहिये ऐसाविचारतेही श्यामसुन्दर ने अपना छोटारूपबनालिया व इसतरहकूदकर मचानपरजहां

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजाकंस खड्गलिये बड़ेअभिमानसे बैठाथाचढ़गये जिसतरह बाजकबूतरपर झपटताहै उन्हैंदेखतेही पहिलेकंसने बिचारा कि भागजाऊँफिरमनमें धीर्यधरकरजब उनपरखड्ग चलानेलगात बनन्दलालजीउसकावारबचाकरउसेखेल खिलानेलगे उससम यदेवतोंने बिमानोंपर चढ़हुयेआकाश में से बिनयकिया हे परब्र ह्मपरमेश्वर कंसमहापापीको तुरन्तमारडालो क्योंइसकेमारनेमें बिलम्बकरते हो यहबातसुनतेही श्यामसुन्दरने ऐसाप्रकाशअ पनेशरीर में प्रकटकियाजिसकी चमकदेखना न सहकरकंसनेअ पनीआंखैंबन्दकरलीं तब मोहनप्यारेनेपैरके ठोकरसेमुकुट उस का गिरादिया व शिरकाबाल पकड़के मचानसेपृथ्वीपरपटककर तीनोंलोककाबोझा अपनेशरीरमेंलियेहुये उसकेऊपर कूदपड़े॥

दो० जब धरणीमें आइकै परयो उतानोभूप। उरऊपर दर्शनदियो श्याम चतुर्भुज रूप॥

हेराजन् बैकुंठनाथके कूदतेहीकंसका प्राणनिकलगयापरआ ठों प्रहरसोते व जागते व बैठते व उठते व खाते व पीते व चलतेव फिरते श्यामसुन्दरका रूप उसकीआंखोंमें बसारहताथा इसलि ये मुक्ति पदवीपर पहुँचा॥

दो० माखनप्रभुके रूपकी महिमा अगमअपार। जाकेसुमिरनध्यानतें तरतसकल संसार॥

देखो क्या बड़ाभाग्य उनमनुष्योंकाहै जो लोग नित्यपरमे श्वरका स्मरण व ध्यानकरतेहैं जबकंसको मारादेखकरआठभाई उसके अपना अपना हथियार लियेहुये गोपीनाथको मारनेवा स्ते दौड़े व बलरामजीने हल व मूशलले उनसबको मारडाला तब सब दिशा से बड़े शब्दसे श्याम व बलरामका जयजयकार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया यहसमाचारसुनकर सबछोटेबड़ेमथुराबासीप्रसन्नहोगये व देवतोंने दुन्दुभीबजाकर नन्दनबाग़केपुष्प दोनोंभाइयोंपरब रसाये व नेवतेवाले हरिभक्त राजा कल्याणरूपको दण्डवत्कर के अपने २ स्थानपरगये व नन्द व उपनन्दआदिक यहसबचरित्र स्वप्नवत्समझकर अपनेडेरेपरचलेआये व केशवमूर्त्ति मारे क्रोधके अपनेहाथ कंसकेशिरकाबाल पकड़कर इसतरह उसकी लोथ सड़कमेंघसीटतेहुये यमुनाकिनारेलेगये जिसतरह हाथी कोमार सिंहघसीटलेजाताहै कंसने वसुदेव व देवकीको क़ैदरख कर बहुतदुःखदियाथा इसीवास्ते मोहनप्यारेनेउसकीलोथघसीटा व लोथखींचलेजानेसे वहांकंसखारनाला प्रकटहोकर अबतकमथुरामें बाजीसमय कंसकीखाल दिखलाईपड़ती है व दूसरा कारणघसीटनेलोथका यहसमझो जिसमेंमथुराकी रज लगने से शरीर उसअधर्मीकापवित्रहोजावै यमुनाकिनारे लोथपहुँचा कर थोड़ीदेर मुरलीमनोहर उसजगहबैठेथे इसलिये वहांकाना म बिश्रामघाटप्रसिद्धहुआ जबयहसमाचार रनिवासोंमें पहुँचा तबकंसकी रानियां व भौजाइयां व नातेदार स्त्रियां रोतीपीटती हुई यमुनाकिनारेपहुँचीं ॥

दो० सबधाईं सुधिपायके आईं जहां नरेश। तोड़ेहार शृंगारसब छोड़े शिरके केश ॥

हेराजन् उनस्त्रियोंने अपने २ पतियोंकामुख देखतेही उनका शिर गोदमेंरखलिया व अतिबिलापसे रोकर यों कहनेलगीं हे कंस तू ऐसाप्रतापी राजाहोनेपरभी इसदुर्दशासेमाराहुआ पृथ्वी परपड़ाहै जो तू श्यामसुंदर व बड़ोंसे बिना अपराध वैर न करता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तो किसवास्ते तेरीयहगतिहोती हरिभक्त व महात्मोंकोदुःखदेना अच्छा नहींहोता यहसब हाथी व घोड़े व द्रव्यअपना छोड़कर तू चलाजाताहै व हमारीदशा व रोनेपर कुछध्यान नहींकरताते रेवियोगसे हमलोगोंकी क्यागतिहोगी संसारमें अपनेबराबर तू किसीको नहीं समझताथा अबवहसब घमण्डतेरा क्याहुआ जो इसतरह पृथ्वीपर बिनाकफ़नकेपड़ाहै तेरेसोने व बैठनेवास्ते शीशमहल व रंगमहलकी अटारियां जो बनीहैं उनमें अबकौन बैठे व सोवेगा व तेरेजड़ाऊ सिंहासनपर कौन बैठकर मथुरावासियों का न्याव करैगा॥

दो० यहमन्दिर सुन्दरमहा जिनके समनहिं और। तुमबिन ऐसो कौनहै जो बैठै यहिठौर॥

जब इसीतरह अनेकबातैं कहकरसबरानियां व स्त्रियां महा बिलाप करनेलगीं तबश्यामसुंदर करुणानिधान उनपर दयालु होकर बोले हे मामीजी जो कुछभाग्यमें लिखाहोताहै वहकिसी तरह नहीं मिटता जैसेपापकंसने किये वहसबतुमने देखे हैं परमेश्वरकीइच्छा इसीतरहपर जानकरधीर्यधरो मैं तुम्हारी आज्ञा अच्छीतरह पालनकरूंगा अब इनलोगोंकी क्रिया व कर्मकरना उचित है॥

दो० मामीसुनो शोक नहिं कीजै। मामाजी को पानी दीजै॥
सदा न कोऊ जीतारहै। झूठा वह जो अपना क[illegible]

श्यामसुन्दरके समझानेसे सबस्त्रियोंने अपने २ पुरुषांकीलो थजलाकर क्रिया व कर्म्मउनकाकिया व श्यामसुन्दरने कंसका क्रिया व कर्म्म [illegible] कराया॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० कंसहतन लीलासुनै मन चितदे जो कोय। माखनप्रभुके नेहमें ताको भय नहिंहोय॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

श्यामसुन्दरका उग्रसेनको राजगद्दीपर बैठालना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जबकंसआदिककी लोथजला कर सबअपने २ घरगये तबश्यामसुन्दर बलरामजी व अक्रूरको साथलेकर क़ैदखानेमें बसुदेव देवकीकेपासआये जबमाता व पिताकीबेड़ी व हथकड़ीकटवाकर दोनोंभाइयोंने शिरअपनाउनके चरणोंपररखदिया तबदेवकी रोकरबोली ऐप्राणप्यारे तुमबारह वर्षतककहांरहे मैंनेआजतक कभीतुमको गोदमेंनहींखिलाया॥

दो० सुनिजननीकेवचनप्रभु कृपासिन्धुयदुराय। भयेप्रेमवशदुखितलखि बोलेअतिसकुचाय॥

हेमाता व पितामैं कैसाअभागी तुम्हारेयहां उत्पन्नहुआ जो मेरेकारण तुमलोगोंने इतनादुःखउठाया इसमेंहमारा कुछअपराधनहीं है किसवास्ते किजबसे आपहमकोगोकुलमें नन्दजीके घरपहुँचायआये तबसे मैंपरवशथा इसलिये तुम्हारेपासनहीं आनेसका और मुझेसदायहइच्छा बनीरहतीथी किजिसकेपेटमें दश महीनेरहकर हमनेजन्मलिया उसनेबालचरित्रहमारानहींदेखा और हमनेलड़कपनमें माता व पिताका कुछसुखनहींपाया दूसरेकेघररहकर वृथाइतनेदिनगँवाये जिन्होंनेहमारेवास्ते इतनादुःख उठाया उनकीकुछसेवा हमसेनहींबनपड़ी हमेंतुम्हारीसेवाकरना व बाललीलाका राज्यव सुखदिखलाना उचितथा सोयहसबसुख नन्द व यशोदाको प्राप्तहुआ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० सबैजीव सन्तानसे सुखपावत दिनरैन। तुम्हैं हमारेजन्मसे बहुतैभये कुचैन॥

हेमाता जिसपुत्रसे उनकेमा व बाप दुःखपातेहैं वहबेटा अवश्य नरकभोगता हैं संसारमेंउन्हींको सामर्थीपुरुष समझनाचाहिये जो अपने माता व पिताकी टहल मनसाबाचाकर्मणासे करतेहैं मनुष्यतनमें जो कोई अपने मा व बाप व गुरू व बड़े वृद्धों की सेवा व स्त्री बालकोंकापालन नहींकरता उसकेलोक व परलोक दोनों बिगड़जातेहैं॥

दो० तात मात सों प्राणधन कपटकरै जो कोय। ताको तीनोंलोकमें कभी भलो नहिं होय॥

हेपिता मैं ब्रह्माकी आयुर्दापाकर जन्मभर तुम्हारीसेवाकरूं तौभी आपसे उऋण नहींहोसक्ता इसलिये तुम्हाराऋणियां होकर यहविनयकरताहूं कि मेरा अपराधक्षमाकीजिये और सब दुःख व सुख अपने कर्मानुसार समझिये हे माता अब तुम शोच छोड़कर आनन्दमनाओ मैं तुम्हारी आज्ञानुसार स्वर्ग व पाताल जानेसे नहींडरूंगा व अष्टसिद्धि नवनिद्धि तुम्हारी दासी बनी रहैंगी॥

दो० यद्यपि हमअवगुणभरे प्रकटे महाप्रसाद। तथपिसुतहित जानिकै क्षमाकरौ अपराध॥

जबयहबातसुनकर बसुदेव व देवकीको ज्ञानप्राप्तहुआ तब उन्होंने समझा कि यहहमारे पुत्र न होकर त्रिभुवनपति हैं उन्होंने अपनीइच्छासे पृथ्वीकाभार उतारनेवास्ते अवतारलेकर जो २ कामकियाहै वहमनुष्यनहीं करनेसक्ते तासमझकर वह दोनों मोहनप्यारेकी स्तुतिकरनेलगे परश्रीकृष्णजी और बहुत सीलीला संसारमें करनाचाहतेथे इसलियेउन्होंने वह ब्रह्मज्ञान उनकाहरलिया तबबसुदेव व देवकीउन्हैं अपनाबेटाजानकर गोद

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में बैठाकर प्यारकरनेलगे व उनकामाथा व मुखचूमनेसे प्रसन्न होकरपिछलादुःखभूलगये व श्याम वबलरामकोसाथलेकर बड़े हर्षसे अपने घरपरआये ॥

चौ० परम हुलास नयन उर पेखैं। अपनो जन्म सुफल करि लेखैं ॥
अति आनन्दभयो मनमाहीं। सोलिखि सकत शारदा नाहीं ॥

हेराजन् वसुदेवजीने घरपहुँचकर उसीसमय दशहज़ार गौबि धिपूर्वक जोश्यामसुंदरकी जन्मतीसमय मनमेंसंकल्पकियाथा ब्राह्मणोंकोदानदिया व दोनोंभाइयोंको ग्वालबालोंसमेत छत्ती सव्यंजन भोजनकराके उत्तम २ भूषण व वस्त्र पहिनाया तबमुर लीमनोहरने बलरामजीसेकहा बिनाराजाके प्रजाकोदुःखहोगा व वसुदेवको राजगद्दीपर बैठालनेसे संसारीलोग ऐसाकहैंगे कि राज्यलेनेकेलालचसे कंसकोमारडाला इसलियेउग्रसेनको जि नकाराज्य कंसनेछीनलियाथा राज्यदेनाचाहिये ऐसाबिचारकर श्यामसुंदर बलराम व वसुदेवजीसमेत उग्रसेनकेपासचलेगये व उन्हैंदण्डवत्करनेउपरान्त बहुतसाधीर्यदेकर बोले ऐनानाजी आपराजसिंहासनपरबैठकरप्रजाकोपालनकीजिये वहमैंअपना दासजानकरकिसीबातकासन्देह मनमेंनलाइये सबपृथ्वीकेराजा अपने २ देशकारुपयादेकर तुम्हारेअधीनरहैंगे ॥

चौ० जोजन तुम्हरी आन न मानैं। क्षणमें तिन्हैं बांधि हम आनैं ॥
निर्भय राज्यकरो जग माहीं। अब तुमको संशय कछुनाहीं ॥

यहवचनसुनतेही उग्रसेनहाथजोड़कर विनयपूर्वकबोलेमहारा जआपनेबहुतअच्छाकियाजोराजाकंस वउसकेभाइयोंकोकिवह महापापी व अधर्मीथे मारकरयदुबंशियोंका दुःखछुड़ायाजिसत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहतुमनेदैत्य व राक्षस व अधर्मियोंकोमारकरहरिभक्तोंकोसुखदि या उसीतरहराजसिंहासन परबैठकर प्रजाकापालनकीजिये यह बातसुनकर मोहनप्यारेबोले आपनेसुनाहोगा कि राजाययाति के शापदेनेसेयदुआदिक उनकेबेटोंने राजगद्दीनहींपाईथी व ह मभी उसीकुलमें उत्पन्नहुये हैं इसलियेमुझे राजसिंहासन पर बैठना न चाहिये॥

सो० करौ बैठि तुम राज दूरिकरो सन्देह सब। हमकरिहैं सबकाज जो आपसु दीजै हमें॥

हेनानाजी आपसिंहासनपर बैठकर गौब्राह्मण व हरिभक्तोंको सुखदीजिये व जो यदुबंशी कंसकेडरसे मथुरापुरी अपनीजन्म भूमि छोड़कर दूसरेदेशमें जाबसेहैं उनकोबुलाकर यहांबसाइये व प्रजासे अधिककरलेनेका लोभ न रखकर किसीकोबिनाअप राधदण्ड न दीजिये जबउग्रसेनने कहनाश्यामसुन्दरका अपना भाग्यउदयसमझकर मानलिया तबश्रीकृष्णजी भक्तहितकारी ने उग्रसेनको राजसिंहासनपर बैठाकर विधिपूर्वक तिलक राज गद्दीकालगादिया व श्याम व बलरामने अपनेहाथसे उनको चँ वरहिलाया व सब छोटे व बड़ोंने मंगलाचारमनाया व मथुराबा सी आनन्दितहोकर श्यामसुन्दरकीस्तुति करनेलगे व देवतोंने आकाशसे उनपरफूलबरसाये व राजाउग्रसेनके कहलाभेजनेसे सबयदुबंशी जोभागगयेथे फिरमथुरामेंआनबसे जबमोहनप्यारे ने उन्हैं बहुतदुःखी व कङ्गालदेखा तब द्रव्य व वस्त्र व भूषण व गांव व स्थानआदिक जिसकोजिसबस्तुकी चाहनाथी उसेवही पदार्थदेकर ऐसाप्रसन्नकरदिया कि उनकोफिरकुछ इच्छानहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रही व वसुदेव व देवकी परमआनन्दहुये व जो यदुबंशी बूढ़े व निर्बलथे वहलोग श्यामसुन्दरकी अमृतरूपीदृष्टि पड़नेसे तरुण व बलवान्होगये॥

दो० उग्रसेनके राज्य में सुखको सदा समाज। सभी काम कीन्हें जहाँ माखनप्रभु ब्रजराज॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवस्वामीबोले हेपरीक्षित श्यामसुंदरने इसीतरहसब किसीकोसुखदेकर बलरामजीसेकहा यशोदा ने हमदोनोंभाइयोंको बड़ीप्रीतिसे पालनकरके इतनाबड़ाकिया सोवहहमारेवास्ते बहुतशोचकरतीहोंगी व नन्दरायब्रजबासियों समेत मेरेचलनेकीआशासे जो बागमेंटिके हैं चलकर उनकोबिदाकरनाचाहिये॥

चौ० बहुत हेत हमसों उन कीन्हों। बिविधभांति हमको सुख दीन्हों॥
सकुचतहौं अपने मनमाहीं। उनसे उऋण कबहुं मैं नाहीं॥
पलटो नहीं उन्हें जो दीजै। अब चलि बिदा उन्हें ब्रज कीजै॥

ऐसाकहकर मोहनप्यारेने बहुतसाद्रव्य व रत्न व भूषण व बस्त्र अपनेसाथ लिवालिया व राजाउग्रसेन व बसुदेवजीकोसंगलेकर जहांपरनन्दादिकटिकेथे वहांकोचले जिससमयनंदजीअपनेडेरे पर बैठेहुये यहबिचारकररहेथे किकईदिन वृंदाबनसेआयेहोचुके श्याम व बलरामआवैं तोचलैं॥

तो० अबकैसेब्रजजाहिं बलमोहनदोऊबिना। अतिव्याकुल उरमाहिं कबलौंनयनन देखिये॥

उसीसमयमोहनप्यारेने वहांपहुँचकर नन्दजीकेचरणोंपरशिर अपनाधरदिया तबनन्दनेशिरउनकाउठाकर छातीमेंलगालिया व बसुदेव व राजाउग्रसेन प्रेमपूर्वक नन्दरायकेगलेमिलकर जब सबकोई वहांबैठे व नन्दराय मनमेंसमझे किअबश्यामसुन्दर ह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मारेसाथ वृन्दाबनकोचलैंगे तबकेशवमूर्त्तिने सबबस्तु जोवहांले गयेथे नन्दरायकेसामनेरखकर बिनयकिया अयबाबा मैं तुमसे किसीतरह उऋणनहींहोसक्ता आपनेमेराबड़ाप्रतिपालकियाहै॥

दो॰ चौंकिउठेनँदरायसुनि तूक्याकहतगोपाल । मोसोंकहतकिआनसों किनकीन्होंप्रतिपाल ॥

यहवचनसुनतेही केशवमूर्त्तिने कहा अयबाबा हमकोकहते हुये संकोचमालूमदेताहै आपने गर्गपुरोहितका कहना सच्च न मानकर मुझेअपनेबेटासमान पालनकरके बड़ासुखदिया मैं क हींरहूं परतुम्हाराकहलाऊंगा व हमारेपिताने रोहिणीमेरीमाता को बड़ीबिपत्तिमें तुम्हारेघरपहुंचादियाथा सोतुमनेसन्मान पूर्व क उसकोअपनेयहांरक्खा व मैंनेगोरसआदिक ब्रजबासियों का खाकर अनेकउपद्रवकिया सोसबआपने दयाकीराह क्षमाकरदि या व राजाकंसमेरेशत्रुसेतुमलोगोंने नहींडरकर मेरापालनकिया व यशोदाने मुझे पुत्रजानकरपाला सोअबतुम्हैं व यशोदाको अ पने माता व पितासे अधिकजानकर तुमसेउऋण नहींहोसक्ते प र एकबातकहताहूं तुम कुछखेदमतमानना अबहम थोड़ेदिनम थुरामें यदुबंशीआदिक जातिभाइयोंकेसाथरहकर अपनेमाता व पिताको सुखदेवैंगे आजतकउन्होंने हमारेवास्ते बड़ादुःख पा याहै जोवहहमकोतुम्हारेयहां न पहुंचाते तोक्योंइतनादुःख उठा ते सोतुमघरपरजाकर यशोदा माता व सब बृन्दाबनबासियोंको जोमेरेवास्ते शोचकरतेहोंगे धैर्यदेव व यशोमतिमैयासे कहिदेना जिसतरह मेरेवास्ते माखनरखछोड़ाकरतीथीं उसीतरहअबभी धररक्खाकरैं प्रकटमेंहमतमसे बिलगहोते हैं परअन्तःकरण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सदा तुम्हारेपास रहैंगे सोमेरेऊपर दयारखकर कभी मुझे मति भूलना ॥

चौ० मैया से पालागन कहियो। हम से प्रेम करे तुम रहियो ॥
होंगीदुखित यशोमतिमैया। मोहिंबिनुब्रजतिरिया सबगैया ॥
नाते बेगि गमन ब्रज कीजै। जाय सबन को धीरज दीजै ॥
मोरी सुरति न उरते टारो। मैं तुमसे कबहूं नहिं न्यारो ॥
दो० निठुरवचनसुनिश्यामके भयेबिकलअतिनन्द। उमँगिनीरनयननचले पडगयेदुखकेफन्द ॥

यहबात श्यामसुन्दरकेमुखसे निकलतेही नन्दरायइतनाबिलापकरके रोये कि उनकोहिचकीलगगई व अचेतहोकर गिरपड़े व ग्वालबाल उदासहोकर आपसमेंकहनेलगे हमारेनिकट नंदकिशोर हमलोगोंसे कपटकरके यहांरहिजायाचाहतेहैं नहींतो ऐसाकठोरबचन न कहते ऐसाबिचारकर श्रीदामाग्वालने कहा हेमोहनप्यारे अबमथुरामें तुम्हाराक्याकामहै जोऐसे निर्दयीहोकरअपनेबूढ़ेबापरोतेहुयेकोबिदाकरके यहांरहनाचाहतेहो राजा कंसकोतुमनेमारा तोअच्छाकिया अबवृन्दाबनमें चलकर वहां काराज्यकरो मथुराकीराजधानीदेखकर लोभकरना न चाहिये हाथी व घोड़ा व द्रव्य व राज्य देखकरमूर्खलोग लोभकरते हैं तुमकोवृन्दाबन ऐसासुखजहांसदाबसन्तऋतु बनीरहती है कहीं न मिलैगा हेभाई तुमबृन्दाबनछोड़कर दूसरीजगहमतिरहो कदाचित् निर्दयीहोकर यहांरहिजावोगे तोराधाआदिक सोलहह जारगोपियां जोदिनरात तुम्हाराचन्द्रमुखदेखकर अपनीआंखैं सुफलीकरतीथीं व पांचहज़ार ग्वालबाल जोतुम्हारेसाथ गौचरा समय मुरलीकीध्वनिसुनकर अपनाजन्मसुफलजानतेथेवहस तुम्हारेबिना कैसेजीवैंगे हेनन्दकिशोर तुम मेरा कहना न मान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर हमलोगोंकी प्रीति छोड़दोगे तोयहांरहनेमें तुमकोक्यायश मिलेगा जिसउग्रसेनको तुमनेराज्यदियाहै रातदिन उसकीसेव काईकरनीपड़ेगी यहअपमानतुमसे किसतरहसहाजायगा इस लिये वृन्दाबनकोचलो ॥

चौ० ब्रजबन नदी बिहार बिचारो। गायनकोमनते न बिसारो ॥
नहिं छोड़ैं तुमको ब्रजनाथा। चलिहैं सभी तुम्हारे साथा ॥

इसीतरहग्वालबालोंने अनेकबातैंश्यामसुन्दरसेकहीं परउन्हों ने नहींमाना तबकुछग्वालबाल श्याम व बलरामकेसाथ मथुरा में रहनेवास्ते तय्यारहोकर नंदरायसेबोले आपनिश्चिन्तहोकर घरपरचलिये हमलोगपीछेसे इनकोअपनेसाथलेकर वृन्दाबनमें पहुँचतेहैं यहवचनसुनतेही नंदजीबिरहसागरमेंडूबकर चित्रसे चु पचापखड़ेहोकर मोहनप्यारेका मुखदेखनेलगे व मारेशोचकेऐ साघबड़ागये जिसतरहसांपकाटनेसे मनुष्य ब्याकुलहोजाताहै॥

दो० बिरहव्यथा कष्टितमहा जानतहैसबकोय। जासोंबिछुड़त प्राणपति ताकीगति कहहोय ॥

यहदशा उनकीदेखकर बलरामजीने नंदरायसेकहा आपइ तनाशोच क्यों करतेहैं थोड़ेदिनमें हमलोग यहांकाकाम करके तुमसेआनमिलैंगे ॥

चौ० हरि प्रकटे भूभार उतारण। कह्यो गर्ग तुमसों सब कारण ॥
मातु पिता हमरे नहिं कोऊ। तुम्हरे पुत्र कहावैं दोऊ ॥

हेबाबा वृन्दाबनकाऐसा सुखदूसरीजगह मिलनाकठिन है इसलियेतुम्हाराघर छोड़करकहीं न जाऊंगा हमारीमाता अके लीवहां ब्याकुलहोतीहोगी इसवास्ते आपकोयहांसे बिदाकरते हैं जिसमेंतुम्हारेजानेसे उनकोधीर्यहो यहबचनसुनतेही नन्दजी महाब्याकुलहोकर श्यामसुन्दरके चरणोंपरगिरपड़े औररोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोले अयबेटा एकबारतुमदोनोंभाई मेरेसाथचलकर अपनीमा ताआदिक सबकिसीको धीर्यदेकर फिरचलेआवना मैंतुम्हाराच रणछोड़कर बृन्दाबननहींजानेसक्ता तुम्हारीमाता माखनरोटी तय्यारकरके बैठीहुई राहदेखतीहोगी मैं उससेजाकर क्याकहूंगा तुम जल्दी घरपरचलो॥

चौ॰ क्यों जीवें विन दर्शन पाये। भये निठुर मथुरा क्यों आये॥

अयबेटा हमने बारहवर्षतक पालनकर तुमको सयानाकिया परतुम्हारेप्रताप व महिमाकोनहींजाना अबबसुदेवजीके बेटाहो करतुमने गर्गजीका बचनसच्चाकिया जबजबहमपरदुःखपड़ता था तबतबतुम हमारीरक्षाकरतेथे कदाचित् तुमकोअपनेवियोग में हमलोगोंको मारनाथा तोउसीदिन गोबर्द्धनहमारेऊपर क्यों नहींगिरादिया जिसकेतले हमसबकोई दबकरमरजाते तोआज यहदशाहमको क्योंदेखनीपड़ती॥

दो॰ देखि प्रीति अतिनन्दकी बसुदेवमनहिं सिहात। सकुचिरहेसबप्रेमबशकहिनसकतकछुबात॥

जब इसीतरहनन्दादिक रोने व बिलापकरनेलगे व मोहन प्यारेने उनकीदशादेखकर बिचारा कियहलोग हमारेवियोगमें जीतेनबचैंगे तबअपनीमायाको जिससे सबसंसारकोभुलारक्खा है उनपरफैलादी वहँसकरकहा ऐबाबा तुमकिसवास्ते उदासहोते हो मैंतुमसेकहींदूरनजाकर तीनकोसपर यहांरहूंगा यशोदा मेरी माता व सबस्त्री व पुरुष बृन्दाबनबासी हमारेवास्ते शोचकरतेहों गे इसलियेउनकोधीर्यदेनेवास्ते तुमकोबिदाकरताहूं जबपरमेश्व रकीमाया व्यापनेसे नन्दरायको कछुधीर्यहुआ तबवहहाथजोड़

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करबोले हेजगन्नाथ तुममथुरामें रहनेचाहतेहो तोमेराक्याबश है हमतुम्हारी आज्ञासे वृन्दाबनको जातेहैं पर ब्रजबासियों को मति भूलना ॥

दो० मेटिदियो सन्तापसब कियो सुकृतकी खान । भरसाखी चौदहभुवन सुरमुनि वेदपुरान ॥

यहवचनसुनतेही वसुदेवजी बहुतद्रव्य व रत्नादिक नन्दराय कोदेकर बिनयपूर्वकबोले हेनन्दजी जोउपकार तुमनेमुझपर किया है उससे मैंउऋणनहींहोसक्ता इनदोनोंबालकोंको अपनाजानकर यहांवहांरहनेमें कुछभेदमतसमझना हेराजन् यहबातसुनकर नन्दरायने श्यामसुन्दरको दण्डवतकिया व पांचसात ग्वालबालोंको वहांछोड़दिया औरसबको साथलेकर रोतेपीटते वृन्दाबनकोचले परसबकोई मथुराकीओर पीछेसे देखतेजातेथे ॥

चौ० चले सकल मग शोचत भारी । हारे सर्वस मनहुँ जुवारी ॥
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं । लटपटचरणपरतमगमाहीं ॥

जबश्यामसुन्दर नन्दजीआदिकको बिदाकरके राजाउग्रसेन व वसुदेवसमेत राजमंदिरपरपहुंचे तबयदुबंशीलोग ब्रजबासियोंकीप्रीतिदेखकर आपसमें उनकीबड़ाई करनेलगे व रास्ते में नन्दजी मोहनप्यारेकीमहिमा यादकरके ब्रजबासियोंसे कहते जातेथे देखोहमने बड़ाअपराधकिया जोपरब्रह्मपरमेश्वरसे अपनीगौवैं चरवाईं व थोड़ासा दही व मक्खन गिराने व खिलाने के कारणयशोदाने उनको ऊखलसेबांधदिया तिसपरभी उन्होंने अपनीबड़ाई नहींछोड़ी गोबर्द्धनपहाड़ उठाकर ब्रजबासियोंकी रक्षाकी व मेरेलेनेवास्ते बरुणलोकमें दौड़ेगये व हमलोगोंने अपनेअज्ञानसे उन्हैंनहींपहिंचाना जबनन्दराय ऐसी २ बातैं अप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने साथियोंसे कहते व पछितातेहुये वृन्दाबनके निकटपहुँचे त बमोहनप्यारेके बिरहमें अचेतहोकरगिरपड़े जबयशोदाने जोआ ठोंपहर मथुराकीराह निहाराकरतीथी देखा कि गोप व ग्वाल बृन्दाबनकी ओर चलेआतेहैं तबवहबड़ेहर्ष से इसतरह दौड़कर श्याम व बलरामको देखनेचली जिसतरहबछड़े को देखकरगौ दौड़ती है ॥

दो० धाई प्रति हर्षितभई सुनतरोहिणीमाय। दर्शआशधाईसबै ब्रजतिरियांहुलसाय ॥

जबउन्होंनेनन्दरायकेपास पहुँचकर श्याम व बलरामको न हींदेखा तबयशोदाने घबड़ाकरनन्दजीसेपूछा अयकन्ततुम मेरे राम व कृष्णाकोकहांखोकर उनकेबदले यहगहना व कपड़ा ले आये जिसतरह अंधामनुष्यपारसपत्थर पड़ापाकर उसेनहींपहिं चानता और जबउसे फेंककर पीछेसेगुणाउसका सुनता है तबसि वायरोने व पछतानेके कुछहाथनहींआता उसीतरहतुम मेरेअन मोललालको अपनेहाथसे खोकर यहसबकांच उठालायेहो उन केबिना यहसबद्रव्य व रत्नलेकर क्याकरोगे हे मूर्ख जिनकेक्षणा भर अलगहोनेसे छातीफटतीथी अबउनकेबिना हमारा दिन कै सेकटैगा मेरेबर्जनेपरभी तुमउन्हैंबरजोरी लिवालेगये अबउन के बिना हमलोग अन्धेहोकर किसतरहजीवैंगे यहवचनयशोदा कासुनतेही नन्दजीआंख नीचेकियेहुये रोकरबोले हेप्रिया सत्य है यहसबभूषण व बस्त्रादिक श्रीकृष्णाने मुझेदिये परयहसुधि नहींरखता कि किसनेलिये श्यामसुन्दरकीबातैं तुझसे क्याकहूं उनकीकठोरताईसुनकर तुझेबड़ादुःखहोगा जबवहकंसको मार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर मेरेपासआये तबअपनेको वसुदेवजीकाबेटा बतलाकर प्रीति हरणाबातें कहनेलगे उनकावचन सुनतेही जबमैं अचम्भामान कर रोनेलगा तबमुझेबहुतधीर्यदेकर बिदाकरदिया हे प्रिया हम नेतो तभीगर्गमुनिके कहनेसे उनकोनारायणजानाथा पर माया बशहोकर उनकोपुत्रसमझतेथे सो अबपुत्रभावछोड़कर परमेश्व रसमान उनकाभजन करनाचाहिये जबयशोदाने यहसबहाल नन्दरायसेसुना तबवह और अधिकमायावशहोकर रोनेलगी व श्यामसुन्दरको अपनाबेटाजानकर नन्दरायसेबोली हेकंत तुम को धिक्कारहै जो उनकेमुखसेआधीबातसुनकर चलेआये व श्या मबलरामको मथुरामेंछोड़कर यहांमुखदिखलातेहो राम व कृ ष्णबिनाजीकर क्यासुखपावोगे॥

चौ॰ मारग सूझिपरयो केहि भांती। बिदाहोत फाटी नहिंछाती॥
दो॰ कैसेप्राणरहे हिये बिछुरत आनँदकन्द। सुनीनहीं दशरथकथा कहूं श्रवण मतिमन्द॥
सो॰ मैं मथुरामें जाय रहिहौंहरिकी धायबनि। लीजै ठोंकबजाय अबअपनो ब्रजनन्दयह॥

हेमूर्ख तुममेरे दोनोंप्राणप्यारोंको कहांछोड़आये मैं अभागी अपनेलालकेसाथ न जाकर तुमलोगोंके कहनेसे घरबैठरही मैं भी साथजाती तो किसवास्ते उनकोछोड़आवती॥

चौ॰ जीवन प्राण सकल ब्रजप्यारो। छीन लियो बसुदेव हमारो॥
सुफलकसुत बैरीभयो भारी। लैगयो जीवनमूल हमारी॥
पूछत बिलखि यशोमतिमैया। कहौनन्द क्या कह्योकन्हैया॥
तुमको बिदाब्रजहि जबकीन्हो। फिरिकछुमोहिं सँदेशो दीन्हो॥
तुमकछुहरिसों विनय न भाखी। कहाश्याम मनमें यहराखी॥

यहसुनकर नन्दजीबोले॥

दो॰ मैं अपनेसों बहुकियो वे प्रभु त्रिभुवननाथ। जो चाहैं सोईकरैं कहाबसै मेरेहाथ॥
सो॰ कहिकै तोहिंप्रणाम बहुरिश्याम ऐसेकह्यो। करिकैकल्पसुरकाम मिलिहौं तुमसेमायब्रज॥

व बलरामजीने ऐसाकहा है कि मेरीमाता दुःखीहोने न पा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वैतुमजाकरउसको धीर्यददेना कुछदिनोंमें हमभी आनकर उस
सेमिलैंगे यशोदायहसँदेशा अपनेलालका सुनतेही शोचमें डूब
गई व नन्द व यशोदा आदिकसबब्रजबासी मुरलीमनोहरका
बालचरित्र यादकरकेरोते व पीटतेहुये अपने २ घरआये परबि
नाश्याम व बलराम उनकोबृंदाबन उजाड़सामालूम देताथा व
नन्द व यशोदाकभी गोपीनाथको अपनाबेटाजानकर उनकेया
दमें रोते कभीईश्वरभावसमझकर उनकेचरणोंका ध्यानकरतेथे
व केशवमूर्त्तिकेबिरहमें सबपशु व पक्षी व ग्वाल व गौआदिकब्या
कुलरहकर फल व फूलकुंजोंकेकुम्हिलागये जबश्यामसुन्दरनेउ
ग्वालबालोंको जो मथुरामेंरहिगयेकुछदिनउपरान्तभूषण व ब
स्त्रादिकदेकरबिदाकिया औरउनलोगोंने वृन्दाबनमेंआनकरसब
चरित्रनन्दलालजीकाजोउन्होंने कुब्जाआदिककेसाथकियाथा
ब्रजबासियोंसेकहा तबगोपियोंने कुबड़ीकासमाचार सुनतेही सब
तियाडाहसेबड़ाशोचकिया व विश्वासमाना किअबनंदलालजी
वृन्दाबननहींआवैंगे यहबातसमझतेही ब्रजबालाआपसमें इक
ट्ठीहोकर एकने दूसरीसेकहा देखोश्यामसुन्दरने त्रिलोकीनाथ
होकर ऊंचनीचजातिका कुछबिचारनहींकिया और कुब्जाको
सुन्दररूपदेखकर अपनीरानीबनालिया दूसरीबोलीकुब्जानेमो
हनप्यारेको ऐसाबशमेंकियाहै कि बिनाआज्ञाउसकी कोईकाम
नहींकरते अबकिसवास्ते वहउनको यहांआनेदेगी अक्रूरनेआक
र हमारेचितचोरसे कुबड़ीकासन्देशाकहाथा इसीवास्तेवहमथुरा
जाकरबसेहैं दूसरीनेएकगोपीसेपूछा तैंनेकुब्जाकोदेखाहै यानहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहबोली मैंदहीबेचनेमथुरागईथी तबउसकोदेखाथा वहमालिन कीबेटी बहुतटेढ़ीथी उसकोदेखकर सबस्त्री व पुरुषहँसाकरतेथेसो श्यामसुन्दरनेलाज व धर्मछोड़कर दासीको अपनीरानीबनाया यहबातसुनकर हमलोगोंकोलज्जाआवतीहै दूसरीबोली हेसखी तुमने यहबातनहींसुनी॥

चौ० कुब्जा सदा श्यामकी प्यारी। वह भर्त्ता उनकी वहनारी॥
रूप रत्न कूबड़में राख्यो। ज्योंमोती सीपन से भाख्यो॥
ब्रजबनिता छांड़ी अबयातें। बूझी सकल श्यामकी बातें॥

दूसरीनेकहा हेप्यारीवहदिन नन्दलालजीको भूलगये जब राजाकंसकेडरसे भागकर ब्रजमेंआये व ग्वाल भेषबनाकरयहां छिपेथे व घरघरमाखनचुराकरखाया॥

दो० देवमनावत दिनगये बड़े होनकी आश। बड़े भये तब यह कियो बसे कूबरीपास॥
सो० यशुमतिलाड़लड़ाय बारे ते सेवाकरी। ताहूको बिसराय भये देवकी पुत्रअब॥

दूसरीनेकहा जैसेकोयलकाअण्डा कौआसेवै तोबच्चाउत्पन्न होकर अपनेजातिभाइयोंमें मिलजाताहै वैसे मोहनप्यारे नन्द व यशोदा व हमलोगोंकी यहदशाकरके बसुदेव व देवकीकेपास चलेगये दूसरी सखीबोली अबवहराजाकेपास सिंहासनपर बैठतेहैं इसलिये उनको ब्रजबासी व मुरलीकानामलेने व मोरपंख देखनेसे लज्जाआवती है॥

दो० भयो नयो अबराजवह नयेमातु पितु गेह। नईनारि कुब्जा मिली नये सखा नवनेह॥
सो० भूलेब्रजकी बात कुंज केलि रासरासको। भये अपनीघात दिनदिनसुख दूनोभयो॥

दूसरीनेकहा अबतुमलोग उनकीचर्चा क्याकरतीहो अपने मनमें बिचारकर देखो तो वहहमारे जातभाईनहीं हैं आगे उनकानाम यहांगोपीनाथ व नन्दलाल व कन्हैया व श्रीकृष्णाथा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोवहां वासुदेवप्रकटहुआ थोड़ेदिनकेवास्ते उन्होंनेब्रजबासियों से प्रीतिकरके पानीबरसने व आगलगनेसे सबकीरक्षाकी हेराज नू जिसतरह मछली बिनापानीकेतड़पतीहैं उसीतरह सबब्रजबा ला दिनरात ब्याकुलरहकर चर्चामोहनप्यारेकी आपसमेंरखके कहतीथीं ॥

दो० देखोनहींसुहातकछु घर बन बिननँदनन्द। बिरहव्यथा जारतनहीं भयो तपनअतिचन्द ॥
कहँलगिकहिये हेसखी मनमोहनके खेल। उनबिनयोंगोकुलभयो ज्यों दीपकबिनतेल ॥
सो० रहतनयन जलछाय सुमिरि २ गुणश्यामके। कहिये किससुनाय भयेपराये कान्ह अब ॥

दूसरीगोपीबोली कोईमनुष्य मथुरामेंजाकर मोहनप्यारेसेक हता किसबब्रजबालातुम्हारेबिरहसागरमेंडूबरहीहैं सोतुमजल्दी पहुँचकर उन्हैंअथाहजलसे बाहरनिकालो और तुमवृन्दाबनमें फिरआनकरबसो तुमसेगौचरानेवास्ते कोईनहींकहैगा व तुम्हैंमा खन व दहीचुरानेसे नहींबर्जैंगी ॥

दो० मांगतदान न बर्जिहैं अब नहिंकरिहैंमान। आयदर्शपुनि दीजिये तुमबिननिकसतप्रान ॥
सो० ऐसे कहि गहि पांय लावैं फेरि मनायहरि। बसैं बहुरि ब्रजआय तब नँदनन्दनसांवरो ॥

दूसरीनेकहा अबमोहनप्यारेको क्याप्रयोजनहै जोराजसीसु ख व बिलासछोड़कर यहांग्वालकहलावैं व हाथी व घोड़ा व सुख पालकीसवारीतजकर यहां गौचरावें दूसरीनेकहा हेप्यारियो वह मोहनीमूर्त्ति मुझेएकक्षण नहींभूलती ॥

दो० सपनेहूमें देखिये नींदपड़त जो नैन। कीन्हों बहुतउपाय मन खांखखुलत नहिं चैन ॥

दूसरीबोली हेसखीश्यामसुन्दरबिना मुझे अपनाघर व गांव उजाड़ मालूमहोकर वृन्दाबनकी कुञ्जदेखनेसे रोनाआताहै व वहांके जोफल अमृतकास्वाददेतेथे वहअबविषसमान मालूम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होतेहैं व जिनपक्षियोंका शब्दसुनकर मनप्रसन्नहोताथा उनका बोलना अबहृदयमेंगांसी ऐसालगताहै ॥

चौ० जबसे बिछुरे कुवँरकन्हाई। तबसे भये सबै दुखदाई ॥

हेराजन् इसीतरह सबब्रजवाला आठोंपहर बौरहोंकेसमान ब्याकुलरहकर जोपथिक उसराहसेजाताथा उसकेपांवपकड़कर कहतीथींहेबटोही श्यामसुन्दरहमलोगोंकामनचुराकर मथुरामें जाकेराजाहुयेहैं उनसेयहसन्देशा हमाराकहदेना कि जिनब्रज बालोंकाप्राण तुमनेइन्द्रकेपानीबरसानेसे गोबर्द्धनपहाड़उठाकर बचायाथा वहसबउसीतरह तुम्हारेबिरहमें आठोंपहरअपनीआं खोंसे आंशूजलकेसमान वरसातीहैं और जैसेउससमय आंधीब हतीथी वैसेउनकाऊर्ध्वश्वास चलताहै सोफिरवहलोग उसीबिरह सागरमेंडूबकर मरजानेचाहतीहैं केवलतुम्हारेमिलनेकी आशा परअबतकजीतीहैं सोतुमउनको दीन व अपनीदासीजानकर ज ल्दीचलेआवो और हमदुखियारियोंको डूबनेसेबचाकर हमारे हृदयकीतपन अपनीअमृतरूपीदृष्टिसेबुझावो जबबिरहसागरमें हमलोग डूबकरमरजावैंगी तोपीछेसे आनकर क्याकरोगे ॥

दो० एकवार फिरिआनकर दीजै दर्शनश्याम। तुम बिनब्रज ऐसोलगत ज्यों दीपकबिनधाम ॥

दूसरीसखीनेकहा हेबटोहियो तुम्हैंनारायणजीकी सौगन्दहै जोऐसा न कहो और यहभीमोहनप्यारेसेकहदेना कि राधाप्या री तुम्हारेबियोगमें ऐसीदुबली व निर्बलहोगईहै जो उठने व बैठ नेकी सामर्थ्य न रहकर पहिंचानीनहींजाती दोचारदिनमेंमरजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वै तोआश्चर्यनहीं भलापिछली प्रीतिसमझकर तो उसका प्राण बचाओ ॥

दो० सुधिबुधि सबतनुकी गई रहेबिरहदुखछाय। मरणनिकटपहुँचीअभी वेगिखबरिल्योआय ॥
सो० ऐसे निजनिज हेत कहतसँदेशो श्यामको। पथिकचलननहिंदेत होतसांझताकोवहां ॥

जबपपीहा वृन्दाबनमें बोलताथा तबउसकी बोलीसुनकर व हसबबिरहिनी कहतीथीं अरेहमलोग इसीतरहअपने दुःखमेंव्या कुलहैं तिसपर तू ऐसाशब्दबोलकर क्योंहमारेहृदयकी दबीदबा ईअग्निसुलगाताहै ॥

चौ० करत कहा इतनो कठिनाई। हरि बिन बोलत ब्रज में आई ॥
उपजावत बिरहिनि उर आरत। काहे अगिलो जन्म बिगारत ॥
एक कहत चातक से टेरी। हे पक्षी मैं चेरी तेरी ॥
लेटे होंय जहां सुखदाई। ऊंची टेर सुनावो जाई ॥
दो० मानैंगे तेरो कहो तेरे हित घनश्याम। लेहु सुयश चातक बड़ो लै आवो सुखधाम ॥

जिसतरहपपीहा स्वातीकेबूंदवास्ते चाहनारखताहै उसीतरह सबब्रजबाला मोहनप्यारेकेमिलनेवास्ते व्याकुलरहतीथीं ॥

दो० कोऊ ऐसे कहिउठत ब्रज में बोलत मोर। रह्यो पड़तनहिं टेरसुनि बिन श्रीनन्दकिशोर ॥
सो० बोलत करत बिहाल मोर सखी बैरी भये। बसे बिदेश गोपाल यह बनसे मारे टरैं ॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् इसीतरहसबवृन्दावनबासी श्याम सुन्दरकेध्यान व चर्चामें दिनअपनाकाटतेथे ॥

चौ० धन्य जन्म जो हरिके दासा। सबबिधि धन्य जिन्हैं हरिआसा ॥
दो० नन्दयशोमति गोपिकन निशिबासरयहध्यान। ब्रजबासी प्रभु दर्शकी आशलगी रहै प्रान ॥
सो० बिसरे सब व्यवहार अवर न दूजी गतिकछू। अन्धलकुटआधार एकसुरतिनँदनन्दकी ॥

हेराजन् मुझेऐसीसामर्थ्य नहींहै जोब्रजबासियोंके बिरहका सबहालवर्णनकरसकूं इसलिये अबमथुराकीबातकहताहूं सुनो जबश्याम व बलराम नन्दजीआदिकको बिदाकरके अपनेघरप रआये तबबसुदेव व देवकीने दोनोंकोदेखकर ऐसासुखपाया जै से कोईतपकरनेवाला अपनामनोरथपाकर प्रसन्नहोताहै व मथु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रापुरीमें उसीदिनसे मंगलाचारहोनेलगे और वसुदेवजीनेदेवकी सेकहा श्याम व बलराम अहीरोंकीसंगतमें रहनेसे अपनेजाति व कुलकाव्यवहार नहींजानते सो इनका यज्ञोपवीतआदिकरना चाहिये देवकीबोली बहुतअच्छा जबवसुदेवने गर्गपुरोहित व अपनेजातिभाइयोंको बुलाकर सबहालकहा तबगर्गजीबोले इनकोगायत्रीमंत्रदेकर क्षत्रियबनानाचाहिये ॥

दो० यातेइनको प्रीतिकरि दीजेयज्ञोपवीत। जाते सीखैंसकलबिधि जो यदुकुलकीरीति ॥

यहबचनसुनतेही वसुदेवजीने इष्टमित्र व यदुबंशियोंकोनेवताभेजकर अपनेयहांबुलाया व सबतीर्थोंकाजल मँगाकर श्याम व बलरामको स्नानकराया व शास्त्रानुसार दोनोंभाइयोंको यज्ञोपवीत पहिनाकर पुरोहितने गायत्रीमंत्रउपदेशकिया तबवसुदेवजीने बहुतसीगौ विधिपूर्वक सोना व रत्नादिक ब्राह्मणोंको दानदिया औरअपनेजातिभाई व ब्राह्मणोंको छत्तीसव्यंजनखिलाकर सन्मानपूर्बक बिदाकिया औरजो मंगलामुखी व कंगाल लोग वहांआयेथे सबकोमुहमांगाद्रव्यदेकर धनीपात्रबनादिया उससमयदेवतोंने आकाशसे राम व कृष्णपर फूलबरसाये व स्त्रियोंने मंगलाचारगीतगाया व बैकुंठनाथकीइच्छा व दयासे मथुरामें लक्ष्मीकाबासहोकर सबछोटेबड़े धनवान्होगये ॥

सो० अन्त न पावैंशेश वेदव्यासजाकी सकल। ताहिदियो उपदेश गायत्री गुरुगर्गमुनि ॥

हेराजन् बसुदेवजीने श्याम व बलरामकाजनेऊ करनेउपरान्त दोनोंभाइयोंको रथपरबैठाकर सांदीपन पण्डितसम्पूर्ण विद्यानिधानकेपास जो काशीपुरी अपनेदेशसे उज्जैनमें जाबसेथे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिद्यापढ़नेवास्ते भेजदिया राहमें केशवमूर्त्तिने सुदामाब्राह्मण कोदेखकर पूछातुम कहांजातेहो उसनेकहा बिद्यापढ़ने जाताहूं तबमुरलीमनोहरने उसकोभी रथपर बैठालिया व उज्जैनमें सान्दीपन पण्डितकेपास जापहुंचे औरहाथजोड़कर उनसे बिनय किया॥

चौ० हमपर कृपाकरोमुनिराय। बिद्यादान देहु मनलाय॥

जबदोनोंभाइयों ने इसतरह आधीनहोकर गुरूसेकहा तबपण्डितजीबड़ी कृपा व दयासेश्याम व बलरामको अपनेघरमेंरखकरबिद्यापढ़ानेलगे एकदिनपण्डिताइनने श्यामसुंदर व सुदामाकोचनाकलेवा देकर लकड़ी तोड़नेवास्ते बनमेंभेजा सोश्रीकृष्णजीके हिस्सेका कलेवाभी सुदामा अपनेपासबांधेथा जबवहदोनों बनसेलकड़ीका बोझा लेकर आवनेलगे तबआंधीचलकरऐसापानीबरसा किघरतक नहीं पहुंचकर रातको बनमेंरहगयेजब सुदामाको बहुतभूख मालूमहुई तबउसने श्यामसुंदरका कलेवा भीउन्हें न देकरआपखालिया व चनाखाती समयकुटुर २ शब्द सुनकर केशवमूर्त्तिने सुदामासे पूछा हेभाईतुमक्या खातेहोहमें भीदेवतोअपनी भूखमिटावें सुदामाने लालचकीराह परब्रह्मपर मेश्वरसे झूठकहा किमैं कुछनहींखाता मारेशरदीके हमारादांत बोलताहै इसीझूठबोलनेकेपापसेसुदामा महादरिद्री हुआथा व श्यामबलरामने अपनी सेवासे गुरूको ऐसाप्रसन्न किया किचौंसठदिनमें चारोंवेद व छःशास्त्र व अठारहपुराण व राजनीति व मंत्र व यंत्र व तंत्र व ज्योतिष व वैद्यक व कोक व बाणबिद्याआ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिक सबगुणदोनोंभाइयोंको यादहोगये तबसांदीपनगुरूने मन
मेंकहा मनुष्यबर्षदिनमेंभी एकबिद्या नहींपढ़नेसक्ता सोयेदोनों
बालककोईअवतार मालूमहोते हैं दोमहीने चारदिनमें चौदहों
विद्या व चौंसठकला पढ़लिया इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबो
ले हेराजन् देखोजिसपरब्रह्म परमेश्वरके श्वाससे चारोंवेद उत्प
न्नहुये उन्होंने सबबिद्या तीनोंलोकके मालिकहोकर गुरूसेपढ़ा
था उनकीलीला व महिमाकोईनहीं जाननेसक्ता जब बिद्यापढ़
नेउपरांत केशवमूर्त्तिने गुरूसेहाथजोड़कर बिनयकिया किआप
की दयासेमैं सबबिद्यापढ़कर अपनेमनोरथको पहुँचकर हमअने
कजन्मअवतारलेकर तुम्हारीसेवाकरें तोभी बिद्यापढ़ानेकेबदले
से उऋणनहींहोसक्ते हमारीसमाई देखकर जोकुछआज्ञाकीजि
ये वहगुरुदक्षिणा तुम्हारीभेंटकरैं व आपकाआशीर्बादलेकर अ
पनेघरजावैं जिसमेंबिद्यापढ़नेकाफल हमौंमिलै यहवचनसुनकर
सान्दीपनगुरूनेकहा मुझे तो कुछइच्छा नहीं है परतुम्हारी गुरु
आइनसे पूछैं उसेजोचाहनाहो वहवस्तु तुमसेमांगैं ऐसाकहकर
सान्दीपन अपनीस्त्रीके पासजाकरबोले यहराम व कृष्ण दोनों
बालक जिन्होंनेचौंसठदिनमें सबविद्यामुझसेपढ़लिया परमेश्व
रकाअवतार मालूमहोते हैं इनसेजो गुरुदक्षिणामांगीजावे इन
को देनासहजहै तबपण्डिताइनने हाथजोड़कर कहा हे स्वामी
यहबालक नारायणके अवतारहैं तो मेराबेटा जो समुद्रमें डूबग
याहै उसकोलादेवैं जिसकेशोचसे मैंसदादुःखीरहतीहूं यही गुरु
दक्षिणाउनसे मांगो ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० सम्पतितो तबहीं भली जो सुतहो घरमाहिं। सम्पतिले क्या कीजिये जो घरमें सुतनाहिं॥

जबसान्दीपनको भी यहबातभलीमालूमहुई तबस्त्रीपुरुषदो नों मनुष्योंने श्याम व बलरामके पासजाकरकहा हे बैकुंठनाथ हमअपनेबेटाकेसिवाय उसकेदूसरापुत्र हमारेनहीं है एकपर्व में साथलेकर समुद्रकिनारे स्नानकरनेगयेथे जबहमलोग जलमें पैठकर नहानेलगे तबवहबालक समुद्रमेंडूबगया तभीसे एकक्ष णाउसकाशोचनहींभूलता जोतुमहमारीइच्छापूर्वक गुरुदक्षिणा दिया चाहतेहौ तो वहीबेटाहमारालादेव यहबचनसुनतेही श्या मसुन्दरलादेना उसबालकका अंगीकारकरके उसीसमयदोनों भाई रथपरचढ़े व सांदीपन व पण्डिताइनकोदण्डवत्करके जब एकक्षणामें क्रोधसेभरेहुये समुद्रकिनारेपहुँचे तबसमुद्रमनुष्यका रूपधरकर डरता व कांपता पानीसेबाहर निकला व बहुतसाम ग्री व रत्नादिकश्यामसुन्दरको भेंटदेकर दण्डवत्करके विनय किया हेपरब्रह्मपरमेश्वर उत्पन्नकरनेवाले चौदहोंभुवनके मेरी दण्डवत् आपको पहुँचे गंगाजीतुम्हारेचरणका धोवनहोकर ती नोंलोकको कृतार्थकरतीहैं व तुमअपनीदया व कृपासेनित्यराजा बलिकेद्वारेपरबनेरहकर पृथ्वीकाभारउतारने व हरिभक्तोंको सुख देनेवास्ते सगुणअवतार धारणकरतेहौ व आपशेषनागकी छाती पर सदाशयनकरके सबगुण व बिद्याजानतेहौ व शेषनाग दो ह जार जिह्वासे दिनरततुम्हारीस्तुति करते हैं तिसपरभी आपका आदि व अन्त नहींजानते औरगरुड़जी आपकेवाहनहैं ज्ञानी व ऋषीश्वर व वेदभी तुम्हारी महिमा व भेदको नहीं पहुँचसके मे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

री क्यासामर्थ्य है जो आपकी स्तुतिकरनेसकूं मेरेबड़ेभाग्यहैं जो तुमने दयालुहोकर दर्शन अपनादिया व तुम्हारे चरणदेखने से मैं कृतार्थहुआ ॥

दो० आज्ञाहो सो कीजिये मनाचीतदे बहकाज। सबदासनको दासहौं तुमराजनके राज ॥

यहस्तुतिसुनतेही केशवमूर्त्तिने प्रसन्नहोकर समुद्रसेकहा कि सांदीपन हमारेगुरू अपनेकुटुम्बसमेत यहांस्नानकरने आये थे सो तू अपनीलहरसे उनकाबेटाबहालेगया है जल्दीलादे गुरूकी आज्ञासे मैं उसेलेनेआयाहूं समुद्रहाथजोड़कर बोला हेमहाप्रभु अन्तर्यामी वहबालक मेरेपासनहींहै परन्तुपांचजन्यनाम दैत्य बड़ाबलवान् शंखरूपसेपानीमें रहिकर सबजीवोंको बहुतदुःख देताहै वहउसबालकको नहातेसमयउठालेगयाहो तोमैंनहींजानता यहवचनसुनतेही श्रीकृष्णाजी बलरामसमेतपानीमें कूदपड़े जबशंखासुरकेमारने परभी उसबालकका पतानहींपाया तबपछ ताकर बलरामजीसेकहा अयभाई हमनेवृथाइसदैत्यको मारा व उसबालकका ठिकानानहींलगा यहबातसुनकर बलरामजी बो ले हे दीनानाथ यहचिन्ताछोड़कर इसदैत्यकाउद्धारकर दीजिये तबकेशवमूर्त्तिने उसेमुक्तिदेकर शेषरूपी तनुउसका अपनेबजा नेवास्ते उठालिया व उसीसमय यमपुरीकेद्वारेपर जाकरवहशंख बजाया जैसे वहशब्द नरकबासियोंनेसुना वैसेवहलोग नरकसे निकलकर बैकुण्ठको चलेगये धर्मराजदौड़हुये बाहरआनकर हरिचरणोंपरगिरपड़े व बड़ेआदरसे श्याम व बलरामको अपने घरलेजाकर उन्हाऊसिंहासनपर बैठाला व चरणाउनका धोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बरणामृतलिया व विधिपूर्वक पूजाउनकीकी व सुगन्धफूलोंके
गजरा व मोती व रत्नादिककीमाला दोनोंभाइयोंको पहिनाया
और परिक्रमालेकर उन्हैं चँवरहिलानेलगा व बड़ेप्रेमसे हाथजो
ड़कर इसतरहस्तुति श्यामसुन्दरकी की हेपरब्रह्मपरमेश्वर आप
सदाहँसते व आनन्दमूर्त्तिरहतेहैं तुम्हैंकभीकुछ चिन्तानहीं ब्या
पती व लक्ष्मीजी आठोंपहर तुम्हारीसेवामें बनीरहकर आपहरि
भक्तोंकी सबइच्छापूर्ण करते हैं व बैकुण्ठतुम्हारा देवलोकसेऊं
चाहोकर आपनेमुझऐसे बहुतअधर्मियोंको मुक्तिदिया है व तु
म्हारीनाभिसे कमलकाफूलनिकलकर उससेब्रह्माउत्पन्नहुये व
आपकीदयासे ब्रह्माने तीनोंलोककी रचनाकिया परतुम्हारेभेद
व आदि व अन्तकाहाल वहभी नहींजानसके व तुमने सबजीवों
के उत्पन्न व पालनकरनेवाले होकर अपनीइच्छासे अपनाबा
लकरूप प्रकटकियाहै सो मेरीदण्डवत् आपकोपहुँचै जहां शेष
व महेश व गणेश तुम्हारीस्तुति नहींकरनेसके वहांमुझे क्यासा
मर्थ्यहै जो तुम्हारागुण बर्णनकरनेसकूं जिसतरहपिछलेजन्मके
पुण्यउदयहोनेसे आपनेदयालहोकर मुझकोदर्शनदिया उसीत
रह अपनेआवनेकाकारण बर्णनकीजिये यहसुनकरश्यामसुन्दर
बोले मेरेगुरूकाबेटा जो समुद्रमेंडूबकर मरगयाहै उसे फेरदेना
चाहिये कदाचित्तुमऐसा कहोकि मराहुआजीव यमपुरीसेफिर
कर नहींजाता सो यहमर्यादभी मैंनेबांधाथा इसलियेतुझे मेरी
आज्ञापालना चाहिये यहबचनसुनतेही धर्मराजने सांदीपनका
पुत्र वहांलाकर बिनयकिया हेदीनानाथमुझेपहिलेसे मालूमथा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि आपगुरुपुत्रलेनेवास्तेआवैंगे इसलियेइसबालकको हमनेआ
जतक बड़ेयत्नसे रखकर दूसरेतनमें जन्मनहींदिया यहबचनसु
नतेही मुरलीमनोहर धर्मराजको भक्तिबरदानदेकर बलरामजी
व उसबालकसमेत वहांसे अन्तर्द्धानहोगये व गुरूकेपास वहबा
लक लाकरबोले आपनेबड़ीदयाकरके हमैंविद्यापढ़ाया वहमसे
कुछसेवा नहींबनपड़ी और जो कुछआज्ञाकीजिये सो करैं सांदी
पन अपनाबेटा देखतेही श्यामसुन्दरको परब्रह्मअवतार समझ
कर बहुतस्तुतिकरकेबोले हे त्रिलोकीनाथ जिसकिसीके तुम्हारे
ऐसा चेलाहो उसे कौनइच्छाबाकीरहैगी परमैंप्रसन्नहोकर तुम्हैं
यहआशीर्बाद देताहूं कि विद्यातुम्हारी सदानईबनीरहकर संसार
में यशतुम्हारा छायारहै जबसांदीपन व पण्डिताइनने श्याम व
बलरामको आनन्दपूर्बक बिदाकिया दोनोंभाई उन्हैं दण्डवत्
करके मथुराको आये उनकेआनेका समाचार पातेही बसुदेव व
राजाउग्रसेन यदुबंशियोंसमेत आगेसेहोकरगाते व बजाते सन्मा
न पूर्वक उन्हैंराजमन्दिर परलेगये व सबछोटेबड़ोंने मंगलाचार
मनाया ॥

दो० गुरुकी आज्ञा पायकै माखनप्रभु ब्रजचन्द । आये मथुरानगरमें सबके आनँदकन्द ॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् देखोगुरुकेवास्ते
श्रीकृष्णजी बैकुण्ठनाथहोकर यमपुरीमें चलेगयेथे गुरुकीइतनी
बड़ीपदवी समझनाचाहिये संसारमेंतीनतरहकेगुरुहोतेहैं एकजो
मंत्र उपदेशकरै दूसराजोविद्यापढ़ावै तीसराजोधर्मकीबात सिख
लावैइनतीनोंकोईश्वरसमानमानकरउनकीसेवाकरनाउचितहै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छियालीसवां अध्याय॥

गोपियों के ज्ञान सिखलाने के वास्ते उद्धवको श्रीकृष्णजी का भेजना॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् जिसतरहश्यामसुन्दरने नन्द व यशोदा व ब्रजबालोंको ज्ञानसिखलानेवास्ते उद्धवकोभेजाथा वह कथाकहतेहैं सुनोजबकभीमुरलीमनोहर नन्द व यशोदा व श्यामाआदिक गोपियोंकीबातें उद्धवसेकहतेथे तबवह अपनेज्ञानके अभिमानसे मित्रताकीराह उनकाठट्ठाकरतेथे इसवास्ते गर्वप्रहारीभगवान्ने एकदिनरासलीलाआदिक ब्रजबासियोंकीचर्चाछोड़कर बलरामजीसेकहा अयभाई मैंनेअपनेबचन प्रमाणकोई मनुष्य बृन्दावनमें नहींभेजा इसलिये वहलोग मेरेवास्ते चिन्ता करतेहोंगे सोकिसीकोभेजकर उन्हेंधैर्यदेनाचाहिये॥

चौ॰ कहां नवल ब्रजगोपकुमारी। कहँ राधा वृषभानुदुलारी॥
दो॰ कहां यशोदानन्दसे सुखद तात औमात। कहँवहसुखब्रजधामको नहिंबिसरतदिनरात॥
सो॰ कहां सखनकोसंग कहां खेल वृन्दाबिपिन। कहँ वह प्रेमतरंग बंशीबट यमुना निकट॥

जबबलभद्रजीको यहबातभलीमालूमहुई तबकेशवमूर्त्तिने मनमेंबिचारा किउद्धवको अपनेज्ञानका बड़ाअभिमान रहताहै इसलियेगोपियोंको ज्ञानसिखलानेवास्ते उसकोभेजकरदेखैं कि ब्रजबालोंको मेरीप्रीतिकेसामने ज्ञानप्रवेशकरताहै यानहीं व उद्धवकाअभिमानभी वहांजानेसे टूटजावैगा॥

दो॰ ऐसे हरि बैठेकरत अपने मन अनुमान। उद्धवके मनसे करौं दूरज्ञान अभिमान॥
सो॰ आयगयेतेहिकाल उद्धवजीहरिकेनिकट। बिहँसिमिलेनँदलाल सखासखाकहिअंकभरि॥

उसीसमय श्यामसुन्दरने उद्धवसेप्रेमपूर्वककहा हेमित्रजबसे मैंनेश्यामाआदिकब्रजबालोंकेसाथ रासलीलाकियाथा उससमय महादेवआदिक देवतोंको ऐसाकामदेवनेसताया कि शिवजी गोपेश्वर व चन्द्रमा चन्द्रकलारूपधरीहोकर मेरेसाथरासमण्डल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खेलनेआयेथे व उसीतरह अनेकदेवतोंने स्त्रीकातनुधरकर वहांसु खउठायाथा सोनन्दयशोदा व राधाआदिक सबब्रजबाला मेरेबि रहमें बड़ादुःखपातेहैं व हमउनसेकहआयेथे किवृन्दाबनमें फिर आवैंगे उसीआशापर उनकाप्राण आजतकबचाहै ॥

दो० वेसब मेरेबिरहमें प्रतिहैं महामलीन । कल न परत क्षण रैनदिन जैसे जलबिन मीन ॥

सोहेमित्रमेरामनभी उनकी सच्चीप्रीतिदेखकर यहांनहींलग ता और ब्रजकासुख एकक्षणभीनहींभूलता इसलियेतुमकोबड़ा ज्ञानी व शान्तस्वभाव व अपनापरममित्रजानकर वृन्दाबनमें भेजाचाहताहूं सोतुमवहांजाकर नन्द व यशोदा व गोपियोंकोऐ साज्ञानसमझावो किजिसमेंवहलोग मेरेबियोगकाशोचछोड़कर धैर्यधरैं व रोहिणीमाताको अपनेसाथलेआओ यहसुनकरउद्धव ने मोहनप्यारेको समझाया हे दीनानाथ संसारी झूठीप्रीतिस्वप्न वत् समझकर परमेश्वर अविनाशीपुरुषका ध्यानकरना उचित है यहज्ञानभरीहुईबात सुनतेही मुरलीमनोहर हँसकरबोले हे उ द्धव जोबात तुमनेकही सो सच्चहै परक्याकरूं गोपियां मेरेबिरहमें बड़ादुःखपातीहैं सो तुमऐसाज्ञान उनको उपदेशकरना जिसमें कन्तभाव छोड़कर परमेश्वरसमान मेराभजनकरैं व पहिले नन्द यशोदाको इसतरह समझाना कि वहमुझे पुत्रभावतजकर ईश्व रसमानसमझैं ॥

दो० यकप्रवीन अरुसखामम तुमसों ज्ञानीकौन । सो कीजै जो ब्रजबधू साधन सीखैंमौन ॥
सो० ज्योंसुखपावैं नारि ज्ञानयोग उपदेशसे । डारैं मोहिंबिसारि ब्रह्म अलख परचो करैं ॥

यह वचनसुनकर उद्धवने विनयकिया बहुतअच्छा मैं तुम्हा रीआज्ञानुसार वहांजाकर सबको ज्ञानसमझाऊंगा परवहलोग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेरेकहनेसे न मानैं तो लाचारहूं यहसुनकर श्यामसुन्दरबोले

दो० वचनकहतहीं समझिहैं वहहैं परमप्रवीन। ह्वैहैंशीतल बिरहसे ज्यों जलपाये मीन॥

ऐसाकहकर श्याम व बलरामने अनेकतरहकाभूषण व बस्त्र नन्द व यशोदा व ग्वालबाल व राधाआदिक ब्रजबालों के देने वास्ते उद्धवकोदिया और एकचिट्ठीमें बड़ोंको दण्डवत् व छोटों को अशीश व ब्रजबालोंको योग व ज्ञानलिखा और वह चिट्ठी उद्धवको देकर बोले तुमआपपढ़कर इसकाहाल सबकोसुनादेना व जैसे बनिपड़ै उन्हैं धैर्यदेकर जल्दी चलेआना॥

दो० उद्धवब्रजमें जायकै बिलमि न रहियोजाय। तुमबिन हमअकुलाहिंगे श्यामकरत चतुराय॥
सो० तुमहौसखाप्रवीन बारबार सिखवों कहा। जिये ज्यों जलबिनमीन सोई मताबिचारियो॥

फिरगोपीनाथ ने अपनेपहिरनेका भूषण व बस्त्र उद्धवको पहिनाकर रथपरबैठायकै वृन्दाबनको बिदाकिया व चलतीसमय आंखोंमेंआंशूभरकर बोले हेउद्धव तुमइतनासन्देशा औरयशोदामातासे कहदेना॥

चौ० नीकी रहां यशोमतिमैया। कछुदिनमें ऐहैं दोउ भैया॥
दो० कहाकहौं जादिवससे जननी बिछुरेउँतोहिं। तादिनसे कोऊनहीं कहतकन्हैया मोहिं॥
सो० कहो सँदेश न जात अति दुखपायोमातुतुम। अबमोको निजतात बासुदेव देवकिकहत॥
क० कामरी लकुटमोहिं भूलत न एकोपल घुंघुची न बिसारैं जोपैलालउरधारे हैं। जादिनतेछाकैं छूटगईग्वालनकी तादिनतेभोजननपावतसकारेहैं॥ भनैयदुबंशयहनेह नन्दबंशसों बंशीनबिसारैं जोपैबंश बिस्तारेहैं। उद्धवब्रजजाइयो मेरोलाइयोचौगानगेंदमैयातेकहियो हमऋणियां तुम्हारेहैं १ कौन बिधिपावै षटकर्म बलवान उदयछाछछछुआकी ब्रजभामिनिकोभातहैं। मुक्तहूपदारथसो देचुकेबाकी को अबदेजनमीको कहायातेपछितातहैं॥ बिधिनेबनाई आह कौनबिधिमेटैताह ऐसेकरिशोचत रहतदिनरात हैं। उद्धव ब्रजजैयो मेरीमैयासेबुझाय कहियो जापैऋणबाढ़ै सो बिदेशउठिजातहैं २॥

व बलभद्रजी रोकरबोले अयउद्धव मेरीओरसे नन्द व यशोदासे हाथजोड़कर कहदेना ब्रजकासुखहमैं कभीनहींभूलता इसलिये वहांआनकर तुमसेभेंटकरूंगा हमदोनोंभाईको अपनापुत्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानकर कभी मतभूलना और जबवसुदेवजीने उद्धवकेजानेका
हालसुना तबबहुतसीसौगात नन्द व यशोदाकेवास्ते देकर ऐसी
चिट्ठी लिखदी कि तुमने हमारेबेटोंको जो पालनाकियाहै इसउप
कारकेबदले से मैं अनेकजन्मनहीं उऋणाहोनेसका तुमश्यामव
बलरामकेवास्ते वहांक्यों चिन्ताकरतेहो यहांआनकर देखनहीं
जाते जिससमय उद्धवजी मथुरासे वृन्दाबनकोचले उसीसमय
ब्रजबालोंने अन्तःकरणकीशुद्धतासे मालूमकिया कि आज मो
हनप्यारेका संदेशालेकर कोईआदमीआवताहै या वहआवैंगे ऐ
सा बिचारतेही एकगोपी अपनेआँगनमें कौवा बोलता हुआ दे
खकर कहनेलगी ॥

दो॰ जो हरि गोकुलआवहीं तो तू उड़रेकाग। दूधदही तोहिं देहिंगे भरुअंचलकी पाग॥

दूसरीगोपीनेकहा आजमुझेबाईंआंख फड़कनेसे मालूमहो
ताहै कि मोहनप्यारे चित्तचोर यहांआयाचाहते हैं सो तुमलोग
शोचअपनाछोड़कर हर्षमनाओ मोहनप्यारेका चन्द्रमुखदेखक
र अपनी २ आंखैं ठंढीकरना ॥

दो॰ घरघर शकुन बिचारहीं ब्रजतिरिया बड़भाग। ब्रजबासी प्रभुदर्शको सबकेमनअनुराग॥

हे राजन् संध्यासमय उद्धवने वृन्दाबनमेंपहुँचकर क्यादेखा
कि घने २ वृक्षोंपर अनेकतरहकेपक्षी सोहावनीबोली बोलकर
धवरी धूमरी कालीपीली गायें चारोंतरफ घूमरहीहैं ॥

दो॰ बृन्दाबन शोभितमहा यमुनाजल चहुँओर। द्रुमबेली प्रफुलितसदा बोलतकोकिलमोर॥

सच्चहै जिसस्थानपर बैकुंठनाथने आपबिहारकियाहो वहां
क्योंनहीं ऐसीशोभारहै अबतकभी वहस्थानदेखनेसेचित्तमोहि
जाता है उद्धवने उसबनको स्थानलीला करने श्यामसुन्दरका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समझकर दण्डवत्किया जबवह सबआनन्द देखतेहुये उद्धवगां वकेनिकट पहुँचे तबनन्दरायआदिक दूरसे रथ व भेष श्यामसु न्दरका देखतेही उनको मुरलीमनोहर समझकर मिलनेवास्ते दौड़े व केशवमूर्त्तिको न देखकर मनमें उदासहोगये परउद्धवको भेजाहुआ मोहनप्यारेकाजानकर बड़ेआदरभावसे अपनेघरलि वालाये व पांवउनकाधोकर छत्तीसव्यंजन खिलवाये व पानइ लायचीदेकर उत्तमशय्या उनकेआराम करनेवास्तेबिछादी जब उद्धव थोड़ीदेरतक सोकरउठे तबनन्द व यशोदाने बसुदेव व देव की व श्याम व बलरामकीकुशल उनसेपूंछकरबोले॥

दो० नन्दगोप करजोरकै पूंछत शीशनवाय। माखनप्रभु गोपालकी कहौकथासमुझाय॥
करत हमारीसुधिकभी कहुउद्धवबलबीर। पुलकगात गदगदबचन पूंछतनन्दअधीर॥
सो० चूकपड़ी अनजान कहपछताने आजुके। घरआये भगवान जानेहमन महरिकर॥

अयउद्धव बसुदेव व देवकीकाभाग्य बड़ाबलवान्है जोश्याम व बलराम उनकेबेटेबनकर हमैंबिरानासमझते हैं बहुतअच्छाहु आ जो कन्सअधर्मी अपने भाइयोंसमेत मारागया व बसुदेव व देवकीने क़ैदसे छुट्टीपाई भलायहतो बतलाओ कि कभीराम व कृष्ण मुझे व यशोदाको यादकरतेहैं या नहीं जिसदिनसे मोहन प्यारेने मुझे बिदाकरदिया तबसे मेराखाना व पहिरना व हँसना व बोलना सबसुखजातारहा व उसीदिनसे यशोदादिनरात उन्हीं केचर्चा व ध्यानमें रहकर माखन व रोटी लियेहुई उनकी आशा देखाकरती है॥

सो० जेहिबिधितबखेलतहते ग्वालबालकेसाथ। सो कबहूंसुधिकरत हैं माखनप्रभु ब्रजनाथ॥

हे उद्धव मैं नित्य इच्छाकरताहूं कि मथुराजाकर उन्हैं देख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आऊं परक्याकरूं संसारीकामसे छुट्टीनहींमिलती जबबनमेंजा कर मोहनीमूर्त्तिके चरणका चिह्न पृथ्वीपरदेखताहूं तबमुझेय हसन्देहहोताहै कि वहकहीं कुंजोंमें भूलगयेहैं जबढूंढ़तेसमय उ नको नहींपाता तबहारमानकर घरचलाआताहूं व उनकीमुरली व लकुटिया देखकर जो दशामेरीहोतीहै वहहाल वर्णननहींकर सक्ता व मदनमोहनने मुझसेफिर वृन्दाबनआनेका कराराकिया था सो बतलाओ यहां आवैंगे या नहीं देखैं हमाराभाग्य उदय होकर कबउनका दर्शनमिलताहै हे उद्धव मैं श्यामसुन्दरको अ पनापुत्रजानताथा और वहमुझे पिताकहतेथे परउन्होंने बड़े २ आपदकालमें ब्रजबासियोंकी रक्षाकी ॥

दो० सहसनयन दुखमानिकै कोप कियो जेहिकाल। हमकारण गिरिनखधरयो माखनप्रभुगोपाल॥

हे उद्धव उन्होंने लड़कपनमें पूतनाराक्षसी व बत्सासुरआदि क बड़े २ राक्षसोंको मारकर कालीनागको यमुनाजलसे निका लदिया व गोपियोंकागोरस चुराकर उनकेसाथरासलीलाकी व अनेक बालचरित्र अपना हमलोगों को दिखलाकर बड़ासुख दिया बतलाओकभी इनबातोंकी चर्चा बसुदेव व देवकीसे करते हैं या नहीं ॥

दो० उद्धव तुमसे क्याकहैं मनमोहनकीबात। जो लीलाब्रजमेंकरी सो बरणीनहिंजात॥

हे उद्धव मैं गर्गमुनिके कहनेसे जानताहूं कि वहपरब्रह्म परमे श्वर हैं व पृथ्वीकाभार उतारनेवास्ते अपनी इच्छासे उन्होंने अ वतार लियाहै ॥

दो० याते यह निश्चयकियो हमषपने मनमाहिं। आदिपुरुष भगवान हैं पुत्रहमारे नाहिं॥

व यशोदा रोकर उद्धवसे बोली ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ० कुशल हमारे सुतकी कहौ। जिनके साथ सदा तुमरहौ॥
कबहूं वहसुधिकरत हमारी। उनाबिनहमदुख पावतभारी॥
सबहिनसे आवन कहिगये। बीती अवधि बहुत दिनभये॥

हेउद्धवजिन आदिज्योति नारायणजीका दर्शन ब्रह्मादिकदेवतोंको जल्दीध्यानमें नहींमिलता वहहमारेघरआये औरहमने अपनेअज्ञानसे उनको पुत्रजाना॥

चौ० फाटतनहीं बज्रकी छाती। अबयह समुझि हृदय पछताती॥
वैसो भागि कभी अब पैहौं। फेरि श्याम को गोद खिलैहौं॥
दो० ग्वाल सखा सँगजोड़अब गौवैं को लेजाय। को आवै सन्ध्यासमय बनतेगऊचराय॥

हेउद्धवअबमैं अपनेअंचलसे किसकीधूरझाड़कर छातीमेंलगाऊं व किसकामुख चूमकर बलायेंलेऊं क्षणभर वंह सांवलीमूर्त्तिमुझेनहीं भूलतीकैसे धीर्य्यधरौं भलातुमसच्चकहो मनहरण प्यारेवहांकिसतरह सीधेरहतेहैं यहांतो ब्रजबालोंकेसाथ अनेक उपाधि कियाकरतेथे वहांकिसकेसाथ खेलतेहोंगे मुझेतोउनके बिनादेखे एकक्षण युगसमान बीतताहै वहइतनेदिन मेरेबिना क्योंकर वहांरहे व मैंगोबर्द्धनपहाड़आदिक उनके लीलास्थान देखकरसमझतीहूं किअभी आयाचाहतेहैं सोबतलावो कबतक यहांआवैंगे जबइसीतरह नन्द व यशोदा अनेकबातैं कहकरमोहनप्यारेके विरहमें रोते २ व्याकुलहोगये तबउद्धवउन्हैंधीर्य्यदेनेवास्तेबोले तुमलोगउदास मतहो पीछेसे श्यामसुन्दरभी आतेहैं जबयहबचनसुनतेही वहदोनों प्रसन्नहोगये तबउद्धवने मुरली मनोहर व वसुदेवजीकी सौगातभेंजीहुई उनकेसामने रखकर चिट्ठी पढ़के सुनादी॥

दो० नन्दगोप तबकें महा माखनप्रभुकेहेत। बुद्धिमान उद्धवतिन्हैं या विधि उत्तरदेत॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हे नन्दराय जिनकेघरआदिपुरुष भगवान्ने आनकर बाल लीलाका सुखदिखलाया उनकीस्तुतिकौन वर्णनकरसकाहै सो तुम बड़ेभाग्यमानहौ जो आठोंपहर तुम्हैंयाद व प्रीतिवैकुंठनाथ की बनीरहतीहै इसलिये वहभी एकक्षणतुमसे बिलगनहींहोते सो मैं तुमको जीवन्मुक्त समझताहूं ॥

दो॰ माखन प्रभु को रैन दिन ध्यानधरै जोकोय। प्रभुतातीनोंलोककी ताको प्रापत होय॥

यशोदा बड़ेप्रेमसे वहाचिट्ठी शिर व आंखोंमें लगाकर रोतीहु ईबोली हे उद्धव यहज्ञानभरीहुई बातैंछोड़ सचबतलाओ मोहन प्यारे यहांकबआवैंगे भलामुझको अपनीमायसमझकरएकबार फिर दर्शन देजाते तो उनका बड़ाउपकार मानती ॥

दो॰ उद्धवयद्यपि हमैंसब समझावत ब्रजलोग। उठतशूल तद्यपि निरखि माखनप्रभु सुखयोग॥

हे उद्धव मैं नित्यप्रातसमय माखनरोटी अपनेकन्हैयाको खि लातीथी वहांयहहाल जानेबिना कौनउसे सबेरेभोजन देताहो गा और वहलज्जाबश किसीसे न मांगकर भूखेरहतेहोंगे इसबा तकी चिन्तामुझे अधिकलगीरहतीहै कि वहखानेबिना दुःखपा कर दुबलाहोगया होगा यहबातसुनकर उद्धवनेकहा तुमलोग श्यामसुन्दरको आदिपुरुष जानकर मेरीबातका बिश्वासमानो जिसतरहआगलकड़ीमें छिपीरहकर दिखलाई नहींदेती उसीत रह उननिर्गुण रूपकाप्रकाशसबके तनमेंहोकर वहजगत आत्मा सबजगह बनेरहतेहैं परज्ञानभक्तिहुयेबिनादिखलाई नहींदेते इस लिये तुमलोगभीउन्हैं आठोंपहरअपने निकटजानकरउनकेवा स्ते चिन्तामतिकरो वहकेवलअपनेभक्तोंकोसुखदेने व पृथ्वीका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भार उतारनेके कारण सगुणअवतारलेकर संसारीमनुष्योंको धर्मकारास्ता दिखलानेवास्ते लीलाकरतेहैं जैसेभृंगी कीटको देखकर दूसराकीड़ा उसीकेरंग होजाताहै वैसेप्रीतिपूर्वक परमेश्वर से ध्यानलगानेवाले उन्हींकारूपहोजातेहैं सो तुमलोगभी उनको घटघटव्यापक एकसासमझकर अपने अन्तःकरणमें उनकाध्यानलगाओ तो उन्हींकेसमान तुम्हारास्वरूपभी होजायगा और वह किसीके पुत्रनहोकर कोई माता व पिताउनकानहींहै तुम्हारे पिछलेजन्मका पुण्यसहायहुआ जो उनके साथ इतनी प्रीति रखते हो॥

दो० पहिले ब्रह्मा वेषधरि सिरजत सबसंसार। बिष्णुरूपसे पालकर शिव ह्वै करत संहार॥

इसलिये तुम जितने स्त्री व पुरुष पिता व पुत्रआदि संसार में देखतेहो सबमें उन्हींका प्रकाशसमझो॥

दो० मति जानो सुतकरितिन्हें वहसबके करतार। तातमात तिनके नहीं भक्तनहित अवतार॥
सो० हमसब हैं अज्ञान प्रभुमहिमा जानैं नहीं। वहप्रभु पुरुष पुरान जन्म मरणसे हैं रहित॥

हे नन्द व यशोदा तुममोहनप्यारे अन्तर्यामीको ईश्वरजानकर भजो तो वहअपना दर्शन ध्यानमें देकर तुम्हारा दुःख छुड़ा देवेंगे यहवचनसुनकर यशोदाबोली उद्धव मैं अपनेमनको बहुत समझातीहूं परचित्तमेरा नहीं मानता॥

दो० नन्द यशोदा गोपसों माखनप्रभुकीबात। ऐसीबिधि उद्धवकहत बीती सगरी रात॥

जब चारघड़ीरातरही तबउद्धव नंदरायसे पूछकर यमुनास्नानकरनेगये तो राहमें क्यादेखा कि सबगोपियां वृन्दावनबासी अपने२घरमें दीपकजलाकर बालचरित्र व गुणानुवाद श्रीकृष्णजीका गातीहुई दहीमथनकरतीहैं सो उद्धव जिसजिसद्वारेपर होकर चलेजातेथे उसद्वारके स्त्री व पुरुषोंको श्यामसुन्दरकी चर्चा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करतेसुनकर उन्हैं बड़ाहर्ष होताथा जबउद्धवजी यमुनाकिनारे पहुँचकर स्नानकरनेउपरांत नित्यनेम पूजाकरनेलगे तबप्रातस मयगोपियां चौकाझाड़ू आदिकगृहस्थीके कामकाज से छुट्टी पाकर यमुनाजल भरनेवास्ते घड़ा लियेहुई झुण्डकाझुण्ड नि कलीं उससमय आपसमें इसतरहपर मोहनप्यारेकी चर्चा कर तीहुई चलीं॥

चौ० एक कहै मोहिं मिले कन्हाई। एककहै वह छिपे लुकाई॥
पीछे से पकड़ी मोरि बांह। वह ठाढ़े हरिबटकी छांह॥
कहत एक गो दूहत देखे। बोली एक भोरही पेखे॥
एक कहै वह धेनु चरावें। सुनो कान दै बीन बजावें॥
या मारग हम जायँ न माई। दानमांगिहैं कुँवर कन्हाई॥
एक कहत हरि कीन्हो काज। बैरी मारेव लीन्होराज॥
काहे को वृन्दावन आवें। राजछांड़ि क्योंगायचरावें॥
छांड़ो सखी अवधिकी आश। चिन्ता छूटे भयेनिराश॥
एक नारि बोली अकुलाय। कृष्णआश क्योंछोड़ीजाय॥
ऐसी कहत चलीं ब्रजनारी। कृष्णबियोगबिकलतनभारी॥

दो० दुखसागरयह ब्रज भयो नाम नाव निरधार। डूबे बिरह बियोगजल श्यामकरैंकबपार॥

इसीतरह सबब्रजबाला श्यामसुन्दरकी चर्चाकरतीहुई यमुना किनारे चलीजातीथीं राहमें नन्दजीके द्वारेपर रथखड़ादेख करबोलीं मालूमहोताहै अक्रूरफिरआया एकबेर तो उसने हमारे प्राणनाथको अपनेसाथलेजाकर राजाकंसको मरवाडाला अब क्या हमारीलोथलेकर उसकापिंडापारैगा दूसरीसखी बोली क दाचित् मनहरणप्यारेने हमारीसुधिलेनेवास्ते किसीकोभेजाहो॥

दो० तिनसों और सखीकहै तुम्हैंनहीं कुछज्ञान। अबहमसों अरु कान्हसों काहेकी पहिंचान।

जबइसीतरह सबगोपियां आपसमें बातैं करतीहुई यमुनाकि नारे पहुँचीं तबउद्धवजी उनकीप्रीतिभरीहुई बातैंसुनकर मनमें कहनेलगे॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ० जिनके प्राण प्राणपति पाहीं। लाजकाज पतिकी सुधिनाहीं॥
दो० माखनप्रभुको बिरहदुख कासों वरणोजाय। जासों बिछुरेप्राणपति ताको कहासुहाय॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

उद्धवका गोपियों को ज्ञान सिखलाना॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जबउद्धवपूजासे सुचित्तहोकरनंद केघरआनेलगे तबगोपियोंने जोजलभरनेवास्ते यमुनाकिनारेग ईथीं उद्धवकोश्यामसुन्दरका पीताम्बर व मुकुट व बनमालापहिने देखकर आपसमेंकहा मोहनप्यारे मथुराजातीसमय एकमनुष्य भेजनेवास्ते कहिगयेथे सोयहउन्हींकाभेजाहुआ मालूमहोताहै जबयहहालबूझनेवास्ते गोपियां एकवृक्षकेनीचे निरालीजगह खड़ीहोगईं तबएकसखीबोली यहमनुष्य मुरलीमनोहरका वेष बनाये हमारीओर देखताआताहै दूसरीनेकहायहउद्धवजीकल्ह से मोहनीमूर्त्तिका संदेशालेकर नंदरायकेघरटिकेहैं यहबचनसुन तेही जबराधाआदिक गोपियोंनेउद्धवको भेजाहुआ श्यामसुन्द रकाजानकर बड़ेआदरसेबैठनेवास्तेकहा और वहभीउनलोगोंकी सच्चीप्रीतिदेखकरबैठगये तबसबब्रजबाला उनकेचारोंओरबैठक र कुशलपूछने उपरांतबोलीं हेउद्धवहमैंमालूमहुआ कि तुमको वृन्दाबनबिहारीने नन्द व यशोदाकेधीर्यदेनेकेवास्तेभेजाहै॥

चौ० भलीकरी उद्धव तुम आये। समाचार माधव के लाये॥
पठयो मात पिता के हेत। औरनकाहू की सुधिलेत॥
सर्बस दीन्हों उनके हाथ। उरझे प्राण चरण कंसाथ॥

एकसखीनेकहा ऐउद्धव उन्हैंहमलोगोंकीदयाक्योंहोगी जो हमारीसुधिलेंवे कदाचित्ऐसाकहो कितुमलोगउनकी चर्चाक्यों करतीहो तोइसकायहकारणहै॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो॰ हरिके सुमिरन ध्यानमें रहत सकल संसार। याते हमहूं करतहैं देखि जगत व्यवहार॥

दूसरीगोपीबोली हेउद्धवमोहनप्यारा बड़ाकपटी व निर्दयीहै जिसतरहवेश्यास्त्री द्रव्यलेनेसेप्रयोजनरखकरसचीप्रीतिपुरुषकी नहींकरती व पक्षीफूले २ वृक्षपरबैठकर सूखे वृक्षसेकुछप्रयोजन नहींरखते व भवँराफूलोंकारसलेकर उड़जाताहै व दण्डीभिक्षा लेनेउपरांत देनेवालेकेपास खड़ानहींरहता व प्रजालोग नयेहा किमकीआज्ञामानकर पुरानेहाकिमका कुछडरनहींरखते व चे लाविद्यापढ़नेउपरांत फिरगुरूकेपास नहींरहता व यज्ञकरानेवा लाब्राह्मण यजमानसेदक्षिणालेकर फिरउससे कुछप्रयोजननहीं रखता व हरिणआदिक पशुहरेबनमेंरहिकरजलेहुयेबनमेंनहींठ हरते व पुरुषभोगकरनेकेपहिले जितनीप्रीतिस्त्रीकी करताहै प्रस गकरनेउपरांत उतनाप्रेमनहींरखता उसीतरह श्यामसुन्दरभीम र्त्यलोकमेंजन्मलेनेसे संसारीमनुष्यकेसमानजबतकयहांरहकर हमारेसाथ रास व बिलासकरतेथे तबतकउन्हैंहमलोगोंकाप्रेमथा अबउनकोक्याप्रयोजनहै जोहमारीसुधिलेवैंजैसेउनकीमृदुमुस कान व तिरछीचितवन व अमृतरूपी मीठी२ बातोंपरलक्ष्मीजी व देवकन्यामोहिजातीहैं वैसे हमलोगोंकी भवँररूपी आंखैंभी कमलरूपचंद्रमुख मोहनीमूर्त्तिका रसपीकर उसीमदमें आठों पहर मतवाली बनीरहती हैं॥

दो॰ लीलामोहनलालकी सदाचैन सुखदैन। ताही सुमिरन ध्यानमें जीवतहैं दिनरैन॥

हे राजन् श्यामसुन्दरकी चर्चामें गोपियां ऐसी लीनहोगई कि उनको अपनेतनु व वस्त्रकी सुधिनहींरही उससमय एकभवँर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्यामरंग उड़ताहुआ वहांआया उसेदेखकर एकगोपीबोली हे सखियो जो संदेशा उद्धवसे कहतीहो वहीसमाचार इसभवँरेसे जो श्रीकृष्णजीके समानकालाहै उन्हैंकहलाभेजना चाहिये जोबातें गोपियोंने मधुकरसे कहीथीं उसको भवँरगीत कहतेहैं ॥

दो० माखन प्रभुके बिरहमें गोपिनको नहिंचैन। भवँरसुनाकर कहत हैं उद्धवसे सब बैन ॥

उसब्रजबालाकी बातसुनकर दूसरीने उत्तरदिया प्यारी तुझे बिश्वासहोताहै किभवँराहमारादूतहोकर संदेशामोहनप्यारेको पहुँचावेगा सोमेरेनिकट जितनेश्यामवर्णहैं उनसेअपनेस्वार्थकी आशा न रखनाचाहिये ॥

दो० कहै एकत्रिय सुनसखी कारे सबयकतार। इनसे प्रीति न कीजिये कपटिनको टकसार॥
सो० देखाकरि अनुमान कारेअहि कारेजलद। कबिजनकरतबखान भवँरकाग कोयलकपट ॥

दूसरीबोली हेभवँरा मुझेकिसीश्यामरंगका बिश्वासनहींआवता परक्याकरूं उसचित्तचोरकीबातैं व सुंदरताई यादआवनेसे चित्तमेरा ठिकानेनहींरहता ॥

दो० मृदुमुसकनि बिषडारके गये भुजँगलौं भाग। नन्दयशोदा यों तजे ज्यों कोयल सुतकाग ॥

जबवहभँवरासुगन्धशरीरगोपियोंकी जोचंदन व केशर व इत्र मलेहुयेथीं सूंघकरउनकेपासआया तबएकसखीनेकहा हेभवँरा तूहमारेनिकट मतिआव जोतेरेसमान श्यामवर्णहोकर मथुराकी स्त्रियोंसे बिहारकरताहै वहांजा ॥

दो० कामिनिमथुरानगरकी माखन प्रभुके हेत। बिबिधसुगन्धलगावहीं वहसुबास नहिंलेत ॥

दूसरीबोली इसभवँरेकीनाक मथुराबासीस्त्रियोंकेअंगकीसुगंधसूंघकरभरगईहै इसलिये बेपरवाहरहकर कहींनहींबैठता दूसरीनेकहा हेभवँरातूमथुरामेंजाकर यहसंदेशाहमारेचित्तचोरसेकहिदेना किअपनेचाहनेवालोंकी प्रीतिछोड़कर उन्हैंदुःखदेना कौन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्यायहै जिसतरहभवँरा एकक्षणसेअधिक किसीफूलपर नहींबै
ठता वहीहालतुम्हारा भी समझनाचाहिये व लक्ष्मीजी तुम्हारा
स्वभाव न जानकर अपनी अज्ञानतासेतुमपर मोहितहैं वहतुम्हा
रेकठोरताईका हालजानतीं तोकभी तुमसे प्रीति न करतीं व मथु
राकीस्त्रियांभी तुम्हारे निर्दयीपनकाहाल न जानकरमायाजाल
में फँसीहैं॥

दो॰ नातो तुमसांची कहो जो जानत सबकोय। माखनप्रभुके नेहमें कैसेलागत सोय॥

दूसरीनेकहा जो हमाराप्राण हरकरचलागया औरकुछसुधि
नहींलेता ऐसे कपटीको तू क्या संदेशाभेजती है दूसरीनेकहा हे
भवँरा तुमहमारीओरसे मथुराकी रानियोंको कहिदेना कि अभी
तक तुमको श्यामसुन्दरकी कठोरताईका हालनहीं मालूमहै प
रमेश्वर तुम्हारीप्रीति व उनका निर्दयीपन प्रतिदिन अधिककरै
जिसमें हमारीसीगति तुम्हारीभी होजावे दूसरीबोली हे सखियो
श्यामसुंदर सर्वगुणोंमेंभरेहोकर जैसीसुन्दरताई वहरखतेहैंवैसा
रूपवान् तीनोंलोकमें कोई न होगा इसलिये सबस्त्री स्वर्ग व म
र्त्यलोककी उनपरमोहिजातीहैं हमगवांरियोंकी कौन गिन्ती है
दूसरीने कहा ऐ भवँरा तैंनेमाधवके चरणकमलका रसपिया इस
से तेरानाम मधुकरहुआ सो तू मोहनप्यारे कपटीका मित्र व दूत
होकर हमारेपासआयाहै सोश्यामवर्ण सबकपटी होतेहैं इसलिये
तू हमको मतिछू दूसरीनेकहा ऐभवँरा तू कुब्जाके अंगका केशर
अपनेमस्तकपर लगाकर श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार जो मुझे
लेनेआयाहै सोमैं केवलतेरेविनती करनेसे जानेनहींसकी जबमैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुबड़ी दासीके बराबरभी नहींहूं फिरवहांजाकर क्याकरूं इसलि येतुम मथुरामें जाकर उन्हींकेसामने कृष्ण व कुबड़ीका यशगा ओ जिसतरह बहेलिया अलगोजाबजाकर हरिणाको बनमेंपक ड़लेताहै उसीतरह मोहनप्यारेनेमुरली बजाकर हमलोगोंकोभी अपनेप्रेमके जालमें फँसालिया॥

दो० जो मैं ऐसाजानती प्रीतिकिये दुखहोय। नगर ढिंढोरा फेरती प्रीतिकरे जनिकोय॥

जिससमय वहगोपी यह बातैं भवँरेसेकहरहीथी उसीसमयल लितासखीबोली सुनोप्यारियो श्रीकृष्णजीने कुछइसीजन्ममें कठोरपन नहींकिया यहसदाइसीतरह कपटकरते आये हैं रामा वतार में बालिबानरको बिनाअपराध मारकर शूर्पणखा रावण कीबहिन जो उनपरमोहितहुईथी नाककटवालिया व बामनअ वतारमें राजाबलिकेपास जाकर तीनपगपृथ्वीदानमांगी जबउस ने ब्राह्मणसमझकर संकल्पदिया तब बिराटरूपधरकर दोपगमें चौदहोंभुवन नापलिया व तीसरेपगकेबदले राजाबलिऐसे धर्मा त्माको बांधकर पातालमें भेजदिया सिवायइसके और जोकाम कपटका उन्होंने कियाहै वहहालकहांतक तुझसे कहूं जिसकी कुछ गिनतीनहींहोसक्ती कदाचित् तू कहै कि ऐसेकपटी मनुष्य से प्रीतिकरके क्यों इतनादुःख उठातीहै सोसुन मैं किस गिनतीमें हूं बड़े २ राजा उनकीस्तुति व कथासुननेसे घरद्वार व राजपाट व स्त्री व पुत्रोंकी प्रीतिछोड़कर मुक्तहोनेवास्ते बनमेंचलेजाते हैं व उसमोहनीमूर्त्तिकी छबिदेखकर देवकन्याओंका चित्तठिकाने नहींरहता यहसबहाल तुमअपनीआंखोंसे देखचुकीहो दूसरीने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहामैं नहींजानती कि श्यामसुन्दरको अपनेवियोगमें हमारे प्राणलेनेसे क्यागुण निकलैगा जो ऐसाकरते हैं दूसरीनेकहा हे भवँरा हमलोगोंने मोहनप्यारेसे इसवास्तेप्रीतिलगाईथी जिसमें कुछरोज निबहैगी सो वहअपना मृदुमुसकानसे मनहमलोगों का चुराकरइसतरह बिलगहोगये जानोकभीकी जानपहिंचान नहींथी कदाचितमैं उनको ऐसाकठोरजानती तो कभीप्रीति न करती दूसरीबोली हेसखीतैंने नहींसुना जोकुब्जा दैत्योंका जूठा खाकर दासीकहलावतीथी उसेअब श्यामसुन्दरने पटरानीबना या है यहबातसुनकर हमलोगोंसे लज्जाबश किसीको मुखनहीं दिखलाया जाता ॥

दो॰ भवरखेलत दोउलाजतजि बारहमासीफाग। खोंड़ीकी दौंड़ीबजी हांसी भो अनुराग॥

दूसरीनेकहा देखो जिसेनारायण व दीनदयालुकहतेहैं वहध र्म्म व दयाभुलाकर ऐसानिर्दयीहोगया कि तीनकोश राहचल कर हमारादुःख छुड़ानेवास्ते नहींआता केवलसंदेशाभेजकर ह मदुखियारियोंके घावपर नोनछिड़कताहै ॥

दो॰ एकसखी या बिधिकहै पगी श्यामके प्रीति। हमहूंसीखा आजते पत्रलिखनकी रीति॥

दूसरीसखीबोली ऐ भवँरा तू अवश्य उसचित्तचोरसे पूछियो भलायहकठोरताई छोड़कर कभीअपना दर्शनदेवेंगे या नहीं दू सरीने पूछा हे उद्धव श्याम व बलराम बालापनकीप्रीति समझ कर कभीहमलोगोंको यादकरतेहैं या नहीं यहसुनकर दूसरीगो पीने उसेउत्तरदिया हे सखी अब श्याम व बलराम मथुराबासी महासुन्दरी व चतुरस्त्रियोंकेवशहोकर वहांबिहारकरतेहैं हमगवां

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रियोंको किसवास्ते यादकरेंगे हमलोग पहिले ऐसाजानती तो क्यों वहां उनको जानेदेती॥

दो॰ आछे दिन पाछेगये हरिसे कियो न हेत। अबपछिताये होत क्या चिडियां चुनिगइँ खेत॥

जिसतरह आठमहीनेतक पृथ्वी व बन व पर्वत मेघकी आशा पर तपनेका दुःख अपनेऊपरउठाकर बैठेरहते हैं व बरसातमेंमेघ राजा पानीबरसानेसे उनकोठण्ढा करताहै उसीतरह श्यामसुन्दरभीआनकर अपनेचन्द्रमुखकी शीतलताईसे हमारे हृदयकी तपनबुझावेंगे दूसरीबोली हेसखियो इनवृथाबातोंसे कुछप्रयोजननहीं निकलता तुम्हैंउद्धवसे यहांआवनेका कारणपूछाचाहिये यहबचनसुनकर दूसरीबोली हेउद्धवतुम किसवास्ते यहांआयेहो कभीवहभी इसओर आवनेचाहते हैं या नहीं दूसरीने कहा यह क्योंनहीं पूछती कि राम व कृष्णाने गुरुकेयहां सिवायकपटकेकुछ धर्म व दयाभी पढ़ाहै या नहीं दूसरीबोली हे प्यारियो वसुदेवजीने श्याम व बलरामको यहांअहीरोंकी संगतिमेंरहनेसे तीर्थजलसे स्नानकराके उन्हैं जनेऊपहिनाया अबवह किसवास्ते उनको यहां आनेदेंगे दूसरीगोपी जो बिरहसागरमें डूबरहीथी झुंझलाकरबोली जबवह निर्दयी हमारीसुधिनहींलेता तो तुमलोग किसवास्ते बारम्बार उसकाहालपूछतीहो यहकठोरबचन सुनकर दूसरीबोली हे उद्धव इसगँवारीके मुखमें आगलागै जो ऐसीबात कहतीहै तुम सच्चबतलाओ वहकबयहां आवेंगे॥

चौ॰ तादिन उइहैं भाग्य हमारे। जादिन मिलिहैं नन्ददुलारे॥

दूसरीबोली हेउद्धव तुमहमारे प्राणनाथकेभेजेहुये यहांआये

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हो इसलिये जहां तुम्हारेचरणपड़ते हैं वहांकीधूर हमलोगों को अपनीआंखोंमें लगानाउचितहै उद्धवयहदशा गोपियोंकी देख कर मनमें कहनेलगे देखोसंसारमें इनकेबराबर दूसरे किसीको भक्ति व प्रीति बैकुंठनाथकी न होगी ऐसासमझकर उद्धव आनन्दरूपने राधाप्यारीको जो अलगखड़ीहुई यहसबबातैंसुनतीथी दण्डवत्कियाव रत्नोंकीमाला जो श्यामसुन्दरने भेजाथा उसे देकर कहा हेगोपियो तुम्हारेसमान दूसरेकाभाग्य होनाबहुत कठिनहै जो आठोंपहर ऐसीप्रीति श्यामसुन्दरसे रखतीहोपिछले जन्मके पुण्यसेमैंने तुम्हारा दर्शनपाया संसारीमनुष्यवेद व पुराणसुनकर यज्ञ व होम व दान व ब्रत व तीर्थइसीआशापरकरते हैं जिसमेंहरिचरणोंकी भक्तिउत्पन्नहो परतुम्हारेसमानवह पदवी नहीं पानेसक्के इसलिये मुझको ऐसाआशीर्व्वाददेवजिसमें मुझे भीतुम्हारेसमान हरिचरणोंमें प्रीतिहो॥

दो० महिमा तुम्हरे भाग्यकी कासों बरणी जाय। जिनके चितमें नितबसैं माखनप्रभुयदुराय॥

हेब्रजबालो श्रीकृष्णजीने मेरेऊपरबड़ीदयाकरके यहांभेजा किमैं तुम्हारादर्शन पाकरकृतार्थहुआ अबजोचिट्ठी व संदेशाप्राणनाथकालायाहूं मनलगाकर सुनो जबउद्धवने श्याम व बलरामकी कुशलकहकर चिट्ठी गोपियोंकोदी तब राधाप्यारीआदिक सबब्रजबालोंने उसे अपनीअपनी छातीमें लगाया॥

दो० प्रतिहितपातीश्यामकीसबमिलिमिलिसुखपाय। उद्धवकरदीन्हीबहुरिदीजैवांचिसुनाय॥

जबउद्धवजी चिट्ठीखोलकर पढ़नेलगे तबगोपियोंने क्याहै खाकिचिट्ठीमें कुब्जानामलिखकर हरतालसे मारनेउपरांतवहां

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोपिकाबनाया हुआथा यहदेखकर गोपियांबोलीं देखो मोहन
प्यारेकामन आठोंपहर कुब्जामें लगारहताहै इसीवास्ते उन्होंने
गोपिकाकी जगह उसकानाम लिखकरउसपर हरताल ऐसाल
गाया मानो पीताम्बरअपना उसको ओढ़ायाहै हेराजन्उद्धवचि
ट्ठीसुनाकर गोपियोंसेबोले कि श्यामसुन्दरने मुझकोतुम्हारेपास
आत्मज्ञानसमझानेवास्ते भेजकर ऐसाकहाहै कितुमलोगमुझ
सेभोगकी आशा छोड़कर योगसाधोतो तुम्हें वियोगका दुःख न
होगातुमलोग मेराध्यान जो दिनरातकरतीहो इसलिये मैंतुम्हा
रेसमान दूसरेको प्यारानहींजानता सो ऐगोपियोतुम्हें श्रीकृष्ण
जी आदिपुरुषको जो तीनोंलोकके उत्पत्ति व पालन करनेवाले
हैं अपना पतिसमझनान चाहिये सुनोहवा व पानी व मिट्टी व अ
ग्नि व आकाश पांचतत्त्वसे शरीरमनुष्यकाबनकर उसतनुमें उ
नहींकाप्रकाश रहनेसे मनुष्यकोचलने व फिरने व बोलने व शुभ
अशुभकर्म करनेकी सामर्थ्यरहतीहै परनारायणजीकीमायासे व
हरूपउनकाकिसीको दिखलाईनहींदेता इसवास्ते निर्गुणरूपका
स्मरण व ध्यानकियाकरो तोवहआठोंपहर तुम्हारे पासबनेरहेंगे
सगुणारूप पासरहनेसेज्ञान व ध्यानमें बिघ्नसमझकरश्यामसुंद
तुम्हारे कल्याणवास्तेमथुराजाकरअलगबसेहैं सोतुमलोगमोह
प्यारेकाचमत्कारस्त्री व पुरुष व गृहस्थ व ब्रह्मचारी व वानप्रस्थ
व संन्यासी व ग्वाल व गायोंमें एकसाजानकर सबजीवजड़ व चैत
न्यको उन्हींकारूपसमझो जोमनुष्यइसतरहआदिपुरुषभगवान्
कोसब जगहव्यापकजानताहैउसेकुछवियोगकादुःखनहींहोता॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ० योगसमाधि ब्रह्म चितलावै। परमानन्द तबहिं सुखपावै॥

दो० आतमही से देखिये परमआतमारूप। सबमें पूरण एकरस अद्भुत महा अनूप॥

हे गोपियो वह उत्पन्नहोने व मरने व घटन व बढ़नेसे रहित होकर आकाशसमान सब जगत्पर अपनीछाया रखते हैं जिस तरह किसीस्त्रीका पुरुष परदेशगयाहो और वह अपनेपतिको सोते व जागते उठते व बैठतेखाते व पीते ध्यानमें अपनेपास देखती रहै तोउसको पुरुषसेअलग कहना न चाहिये उसीतरह तुमलोग भी जो ऋषीश्वर व योगीश्वरोंसे अधिकपदवी रखती हो उनके ध्यानमेंलीनरहकर उन्हैं अपनेसेविलगमतसमझो तोवियोगका दुःखतुम्हैं न होगा॥

दो० ताहीसुमिरणध्यानमें रहो सबहिचितलाय। याहीविधि तुमसोंकहेउ माखनप्रभुसमुझाइ॥

और यहभी केशवमूर्त्तिने कहाहै जब तुमलोगोंने रासलीला करतीसमय पुरुषभाव समझकर पापदृष्टिसे मुझे देखा तब मैं अन्तर्द्धानहोगया जब तुमने ज्ञानकीराह मुझे परमेश्वरजानकर मेरा ध्यानकिया तब मैंने तुम्हारी भक्ति देखकरफिर तुमकोदर्शनदिया सो उसीतरह मेरे निर्गुणरूपका ध्यानकरो तोआठोंपहर तुम्हारे पास बनारहूंगा॥

दो० सुनतहि उद्धवके वचन रहींसबै शिरनाय। मानहुँ मांगत सुधारस दीन्हो गरलपियाय॥

यह ज्ञानभरीहुई बातैं सुनकर श्यामानेकहा हे उद्धव जहांसे यहसब रत्नादिक व मोतीकीमाला लेआयेहो वह अनमोललाल मेरा कहांहै उनकेबिना हमैं तीनोंलोककी सम्पत्ति अच्छी नहीं लगती इसलिये यहसबगहना उसीकोजाकर फेरदेव मेरेकामका नहीं मैं केवल उसमोहनीमूर्त्तिका दर्शन चाहतीहूं॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क० धर्म्मके सँघाती एकबाती न कहतबनै थिरमें थहराती जो लहाती हितरामके। जाके पूतनाती करै प्रीति अविहाती यहकाहू न सोहाती बशभये ऐसे बामके॥ मोहनकुजाती कुबिजाती संगजाती अब हमसों कहाती वे हमारे कौनकाम के। छाती दाहिबेको यहपाती ले सिधारेऊधो बातीकरी तुमहूं सँघाती सखाश्याम के॥

दूसरी गोपीबोली हेउद्धव यहकौन न्यायकीबातहै जोहमलोगों को योगसाधने वास्ते कहकर आपकुब्जा आदिक मथुराकी स्त्रियोंसे भोगविलास करते हैं भला यहतो बतलाओ कभी उस आनन्द व खुशीकीसभामें हमारी चर्चाभीहोतीहै या नहीं॥

दो० यहसबदोष लगैहमैं कर्मरेखको जान। प्रेमसुधारस सानिकै अब लिखिपठयो ज्ञान॥

दूसरीनेकहा हमलोग दिनरात मोहनप्यारेके ध्यानमेंरहकर सिवायरोनेके दूसरा कुछकाम नहींकरतीं तिसपर वहयोग व वैराग्य लिखकर हमारे कलेजेकी दबीदबाई अग्नि सुलगाते हैं॥

चौ० ज्ञान योग बिधि हमैं सुनावें। ध्यान छोड़ि आकाश बतावें॥
जिनको मन लीला में रहै। उनको को नारायण कहै॥
बालकपनसे जिन सुखदयो। सो क्यों अलख अगोचरभयो॥
जो तनुमें प्रिय प्राण हमारे। सोक्यों सुनिहैं वचन तुम्हारे॥
एकसखी उठि कहै बिचारी। उद्धव की करिये मनुहारी॥
इनसेसखी कछूनहिं कहिये। सुनिकरवचन मौनधरि रहिये॥
एक कहै अपराध न याको। यह आयो भेजो कुब्जा को॥
अबकुब्जा जो जाहि सिखावै। सोई वाको गायो गावै॥
कबहूं श्याम कही नहिं ऐसी। कही आय ब्रजमें इन जैसी॥
ऐसी बात सुनै को माई। उठतशूल सुनि सही न जाई॥
कहत भोगतजि योगअराधो। ऐसी कैसे कहिहैं माधो॥
जपतपसंयमनियम अचारा। यहसब बिधवाको व्यवहारा॥
युगयुग जीवें कुंवर कन्हाई। शीश हमारे पर सुखदाई॥
हमको नियम धर्म व्रत येहा। नँदनन्दन पद सदा सनेहा॥
उद्धव तुम्हैं दोषको लावे। यह सब कुब्जा नाच नचावे॥

दो० रहन देव ऐसे हमैं अवधिआशाकी थाह। फिरि हमको पावैं नहीं डारैं सिन्धु अथाह॥
दो० लायोयुवतिनयोग जोयोगिनकेभोगतुम। हमतनुभरयोवियोग नयोअधिकदुखश्रवणसुनि॥

उसीसमय राधिकाबोली॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स० जोहरि मथुराजायबसे हमरेजिय प्रीतिबनीरहिसोऊ। ऊधोबडोसुख येहूहमें अरु नीकेरहैं वेमूरतिदोऊ॥ हमरेही नामकी छापपड़ी अरु अन्तरबीच कहै नहिं कोऊ । राधाकृष्ण सबै तो कहैं अरु कूबड़ी कृष्ण कहै नहिंकोऊ ॥

दूसरीबोली हेउद्धवअबतक हमलोगोंको श्यामसुन्दरके आवनेकीआशाबनीथी सोतुमने यहयोग व वैराग्यकासंदेशा सुनाकर हमैंनिराशकिया हमगवांरी अहीरियां सिवायगोरसबेचनके योगसाधनेकाहाल क्याजानैं तुमदयाकीराह हमैंअबलाअनाथ समझकर अपनेसाथ श्यामसुन्दरकेपासलेचलो ॥

दो० अधरअरुण मुरलीधरे लोचनकमल बिशाल । क्योंबिसरतउद्धवहमैं मोहनमदनगोपाल ॥

क० ऊधौ तुमसुघर सिखावतहौ नीके योग होंतो गतिचाहत न काशी अविनाशीकी । ब्रह्माकीइन्द्रकी उपेन्द्रकी न चाहोंभूति तोपनिधि धनेशकी दिनेशकी न पाशीकी ॥ तनमन नयनमें पूरिरहे प्यारेलालबा- लकहा जानैं गति शंकर उदासीकी । नाशी लोकलाज वृन्दाबनके मवासीसंग मेरीमति दासीभई कान्ह ब्रजबासीकी ॥

उद्धवब्रजबालोंका बचनसुनतेही अपनेज्ञानका अभिमान भूलकर उन्हैंउत्तर देनेनहींसके ॥

दो० योगकथा युवतिनकही मनहींमन पछिताय । प्रेमवचनतिनकेसुनत रहिगयेशीशनवाय ॥

सो० तबलीन्हों मनमान येगुणहैं सब श्यामके । भेज्योसुघर सुजान याही कारणके लिये ॥

उद्धवने फिरज्ञानकीराहकहा हेब्रजबालो जिसतरहपानीपर रेखाखींचदेनेसे स्थिरनहीं रहती उसीतरह संसारी व्यवहारस्वप्न केसमान झूठाहोताहै इसलिये तुमलोगोंको चाहिये कि अपनी अपनीआंखें बन्दकरके हृदयमेंध्यान एकफूलकमल व चतुर्भुजी रूप नारायणजीका मनलगाकर करो तोउसपुष्पके बीचमें तुम को दर्शन परमेश्वरका प्राप्तहोयगा यहबात सुनकर एकगोपी ने कहा हेउद्धव कदाचित् नन्दलालजीरूप व रेखानहीं रखतेथे तो यशोदाने उनको किसतरहजानकर पालनेमें झुलाया व ऊखल से क्योंकर बांधेगयेथे व हमारागोरस किसतरह चुराकरखाया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

म्हारे झूठे ज्ञानकोलेकर ओढ़ैं या बिछावैं तुम अपने अज्ञानसे हमसब अबलाअनाथिनोंको योग व वैराग्य सिखलावतेहो तुम्हैं कुछ लज्जा नहींआती दूसरीबोली हेउद्धव एकतो हमआप श्यामसुन्दरके विरहमें ब्याकुलहोरहीहैं दूसरे तुमऔर ऐसी २ झूठी बात सिखलाकर हमारे घावपर नोन छिड़कतेहो मोहनप्यारेने हमलोगोंको इसतरह तजदिया कि जिसतरह सांप केंचुलिछोंड़ कर फिर उससे कुछ प्रयोजन नहींरखता दूसरीने कहा हेउद्धव कन्हैयाने दावानल व इन्द्रके कोपव दैत्योंकेहाथसेहमारा प्राण बचाकर यहां अनेकलीलाकीं देखो उन्होंने परब्रह्म परमेश्वरका अवतारहोकर राजाकंसकी दासीको अपनीरानीबनाई यहबात सुनकर हमलोगोंको लज्जा आती है ॥

चौ० उद्धव कहां कंसकी दासी। यहसुनि होत सकल ब्रजहासी ॥
दो० गावत सबजग गीतअब वाचेरीके काज। उद्धव यह अनुचितबड़ो चेरीपति ब्रजराज ॥
सो० हमैं देतबैराग आपुतो दासी वशभये। चतुर चिचोड़त आग उद्धव यहअचरज बड़ो ॥

दूसरीबोली हेउद्धव कदाचित्मोहनप्यारेको कूबड़प्याराहोतो हमलोगभी कुबड़ीबनकर मथुरामेंचलैं व अपनीटेढ़ीचाल दिखलाकर उन्हैंफिरयहांलेआवैं जिसमेंकुबड़ीउनसेछूटै हेउद्धवफिर कोई ऐसादिनहोगा जोमोहनप्यारे यहांआनकर हमलोगोंका दुःखछुड़ावैंगे दूसरीबोली अबमुझे वृन्दाबन आवनेकी आशा जातीरही ॥

दो० यहां चरावतथे सदा नन्दमहरकी गाय। वहांजाय राजाभये माखनप्रभु यदुराय ॥

दूसरीनेकहा हेउद्धव जबमोहनप्यारेने हमगोपियोंको छोड़ दियातोअपनानामगोपीनाथ किसवास्तेधराया और जबउन्होंने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुबड़ीसेप्रीतिकी तवफिर जगदिखानेवास्ते चिट्ठी व संदेशाभेज कर हमारेहृदयकी दबीदबाईआग क्योंसुलगातेहैं॥

सो० उद्धव कहियोजाय अबहूं चेरीको तजो। यहदुख सह्यो न जाय सवाति कहावतिकूबड़ी॥

हेउद्धव इतनीबात मेरीओरसे कुब्जाको अवश्यकहदेना कि श्यामसुन्दरकी नईप्रीतिपर तूमोहितहुईहै परउनकी कठोरताई काहालभी सुनरख॥

क० जाकी कोखजायो ताको केदकरवायभायो धायकर मारीनारि निठुर मुरारिहैं। जेती ब्रजनारी तेती मिलिमिलिमारी अनमिलिहूं मारी जो मिलिहैं ताहि मारिहैं॥ सुनरी ए चेरी मैं तेरी सौं कहतहौं वेतो हरि सरसनयन आंसुवनि ढारिहैं। बड़े हैं शिकारी पर इन्हें न सँभारीनारि मारिबे को नवल कन्है या तलवारिहैं॥

दूसरीबोली हेउद्धव हमलोग अपनादुःख तुमसे कहांतककहैं कदाचित् वहप्रथमसे वसुदेव व देवकीके पास रहकर यहां न आवते तो हमलोगोंको क्यों इतनादुःख उठाना पड़ता॥

चौ० करिकै ऐसी प्रीति कन्हाई। अब चितधरी महा निठुराई॥
जबसे ब्रजतजि गये बिहारी। तबसे ऐसी दशा हमारी॥

हेउद्धव उसीदिनसे हमलोगों का खानापीना हँसनाबोलना सबसुख छूटगया दिनभरउनके आनेकारास्ता देखते व रातको तारेगिनते बीतकर सिवाय चर्चा व ध्यान उसमोहनीमूर्त्तिके दूसरीबात हमें अच्छीनहींलगती ऐसे जीनेसे हमलोग मरजातीं तो उत्तमथा॥

दो० कहँलगिकहिये निजव्यथा औहरिकी निठुराय। तापरलायेयोगतुम अबलनकरन सहाय॥
सो० कठिन बिरह की पीर जेहिव्यापै सो जानिहै। क्योंधरिहैं मनधीर सुनिकरि वचनभयावने॥

दूसरीबोली हे उद्धव पहिले अक्रूर आनकर श्यामसुन्दरको यहांसे मथुरामें लेगया सो उनके बिरहमें हमलोगोंकी यहगति हुई अबतुमयोगरूपकी पीतिलगाकर इसतरह निर्गुणरूपका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ध्यान करनेवास्ते हमैं सिखलातेहो जिसतरह कोई भूखेके आगे से थाली भोजनकी छीनकर उसे मिट्टीखानेको कहै जो श्यामसुन्दरको ज्ञानसिखलानाथातो किसवास्ते आधीरातकोबंशीबजाकर हमलोगोंको घरसे बुलाया व रासबिलास करके हमारातन व मनहरलिया अबमथुरामें जाकर ज्ञानीहुयेहैं जबतुम्हारा व श्यामसुन्दरका एकसम्मतहै तब तुमहमारीसहायता क्यों करोगे॥

दो० मनकी मनहीमें रही कहिये कहा बिचार। हमगोहार जितते चहैं उतते माईधार॥
सो० जानतहै सबकोय जैसीहमसेवाकरी। हम सहिलीनो सोय पावोगे अपनो कियो॥

दूसरीनेकहा हेउद्धव शास्त्रानुसार गुरू अपनेचेलोंके कानमें मंत्रोपदेश करते हैं दूसरेसे मंत्रनहींकहलाभेजते कदाचित् उन्हैं हमलोगोंसे योग सधवानाहै तो आप यहांआनकर वृन्दावनके कुंजोंमें ज्ञान सिखलावें॥

दो० तबखेलत सौगन्ददे राख्यो कछु न बचाय। अबसीखे यहयोगकहैं उद्धव कहियोजाय॥
सो० हमको निर्गुणज्ञान जहँ स्वारथ तहँ सगुणहैं। लिखिभेज्यो निरबान चाटैंसहतलगायकर॥

दूसरीबोली ऐउद्धव जिनसखियोंके बालोंमें श्यामसुन्दर अपनेहाथसे फुलेल डालकर फूलोंसे शिरगूंधते व अच्छा २ गहना व कपड़ा पहिनाकर उनके अंगपर अतरलगातेथे उन्हींलोगों के अंगमें भस्मलगाने व शिरपर जटारखने व योगसाधनेवास्ते कहलाभेजाहै जिनकानोंमें अपनेहाथ जड़ाऊकर्णफूल व बाली व पत्तापहिनाकर प्रसन्नहोतेथे उन्हींकानों में अब मिट्टीकी मुद्रा डालनेको कहाहै जिसतनुपर हमलोगोंको गोटे व किनारीकी रँगीहुईसारियां पहिनावते थे उसीअंगपर गेरुवावस्त्र पहिरनेवास्ते कहाहै जिसगलेमें श्यामसुन्दर अपनाहाथडालकर गलेलगाते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थे उसगलेमें अबसेल्ही पहिरने को आज्ञादीहै यह कौनन्याय करते हैं॥

दो० वहिगोकुल वहिकुंजबन वहीसखा वहिठौर। यक उद्धव ब्रजराजबिन भई औरकी और॥

क० याहीकुञ्ज कुञ्जनतर गुञ्जत भँवरभीर याहीकुञ्ज कुञ्जनतर अबशिरधुनतहैं। याही रसना ते करी रसकी रसीली बातें याही रसनाते अवगुनगन गिनतहैं॥ आलम बिहारीबिन हृदयहूं अचेतभये येहोदई हितकहत कैसे बनतहैं। जेहीकान्ह नयननके तारेहुते निशदिन तेहीकान्ह काननकहानी सुनतहैं॥

दूसरीनेकहा॥

क० ओढ़िबेको कन्था अरु भसमरमाइबेको काननके कुण्डलकर टोपियां बनावैंगी। हाथमें कमण्डलु अरु खप्परभराइबे को आदेश आदेश करि शृंगियां बजावैंगी॥ ऋद्धिदीनी कुब्जाको सिद्धिदीनी गोपिन को फिरैंगी द्वार द्वार अलख जगावैंगी। एकबात उद्धवजी मनमें बिचारिदेखो येती ब्रजबाला मृगछाला कहां पावैंगी॥

दूसरीबोली ऐउद्धव जिसतरह ठगलोग पहिले बटोहियों के साथ लगकर बिनयपूर्वक उससेप्रीतिकरके पीछे सबधनउनका लूटलेतेहैं उसीतरह मोहनप्यारेने प्रथम हमलोगोंसे प्रीतिलगा कर तनु व मन हमारा हरलिया अबयोग व वैरागकी छुरी मार कर हमाराप्राण लियाचाहते हैं॥

दो० हरि हमसे ऐसीकरी कपटप्रीति विस्तार। सुखसे कछु नाहिंकहिसकें समुझतबारम्बार॥

दूसरीबोली ऐउद्धव एकतो श्यामसुन्दर पहलेसे बड़े निर्दयी थे दूसरे तुम्हारे ऐसे कठोरसखामिले फिरकिसवास्ते वहऐसा संदेशा न भेजें और तुमहमलोगोंको ज्ञानविज्ञानसमझाकर योगसाधनेवास्ते जो कहतेहो सो हमें इनबातोंसे क्या प्रयोजनहै यहकर्म योगियोंको चाहिये और यह जो तुमनेकहा कि सबकेतनुमें उन्हींका प्रकाशरहताहै इसकारण तुमभी वहीहौ फिर जिसतरह श्रीकृष्णजीने गोबर्द्धन पहाड़ अपनीअँगुलीपर उठायाथा उसीतरहतुमभी यहपर्वत उठाकर मुरलीबजाओ जबतुमऐसानहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करनेसक्के फिर किसतरह तुमको उनकेसमान जानकर तुम्हारा ज्ञानउपदेश सच्चामानें इसलिये हमलोग अच्छीतरह जानती हैं कि उनकेसमानकोई दूसरानहींहै तुमकिसवास्ते झूठकहकर हमलोगोंको धोखादेतेहो तुमसे होनेसकै तो उस चित्तचोरको यहां लिवालावो हमाराहृदय उस मोहनीमूर्त्तिके प्रेमसेभररहा है दूसरी बस्तुयोग व ज्ञानकीवहां समाने नहींसक्की इसलिये हम लोगोंसे योग व वैराग्य साधानहीं जायगा यहचिट्ठी जहांसे ले आयेहो उन्हींकोजाकर बरदेव योग व वैराग्य वही साधकरयह सबज्ञान कुब्जा रानीको पढ़ावें जिसमें उसकी शोभाहो जिसत रह अन्धेकोशीशा देखने व ज्वरकेरोगीको भोजनकरनेसे कुछ सुख व गुण नहींहोता उसीतरहहमको योगसिखलानेसे तुम्हारा कुछ अर्थ नहीं निकलैगा॥

सो० देखुमूढ़ चितलाय कहँ परमारथ कहँ बिरह। राजरोग कफजाय ताहि खवावतहौ दही॥

दूसरीबोली हेउद्धव पहिले तुमब्रजबालोंकी दशादेखकर तब उन्हें योग व वैराग्यसिखलाओ जिसतरह डूबताहुआमनुष्य पा नीपरकीफेन पकड़नेसे नहींबचता उसीतरहहमलोगोंकोजोबीच बिरहसागर मोहनीमूर्त्तिके गोता खारहीहैं तुम्हारा ज्ञान उपदेश अच्छा नहीं लगता॥

दो० हम बिरहिन बिरहाजरीं तुम मतिजारो अंग। सुखतो तबहींपाइहैं जब नाचैं हरिसंग॥

क० आयोआयो भयो ऊधो अब ब्रजमण्डलमें रागमेंकुराग योगरीतिकहि सुनायोहै। झोली झण्डा गुदरी औ भस्ममुद्रा काननमें हाथनमें खप्पर यहस्वांगले दिखायो है॥ संयम नेम ध्यान धारणाहढ़ावतहो ब्रह्मको प्रकाश रसरास दर्शायो है। कुबरीपै पढ़िआयो वेदको पढ़ायआयोरथचढ़िआयो अनरथगढ़िलायोहै॥

दूसरीसखी बोली हेउद्धवजी तुमयोग और ज्ञानकी गठरीबां धकर मथुरासे जो अपनेशिरपर यहांलेआयेहो सो ब्रजबासियों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को योग व ज्ञानलेनेकी इच्छानहीं है तुमयहगठरी काशीमें ले जाकर वहांके लोगोंको जो मुक्तिकी चाहनाबहुतरखते हैं देव॥

चौ० क्या हम करैं मुक्तिले रूखी। अबला श्याम संग की भूखी॥

जिसतरहपियासामनुष्य जबतकपेटभर पानीनहींपीता तब तकउसकीपियास ओसचाटनेसेनहींजाती उसीतरहबिनादेखेमो इनप्यारेके हमारीआंखनहींमानती॥

चौ० फिर वह रूप प्रकट जब देखैं। जीवन सुफल तभीकरि लेखैं॥

हेउद्धव जबयहएकमनहमारा श्यामसुन्दरकेचरणोंमें अटक गयातबयोग व वैराग्यकौनसाधै मैंतुमकोमोहनप्यारेका भक्तजानतीथी परतुम्हारेज्ञान सिखलानेसे जोसगुणरूप व लीलाछोड़ करनिर्गुणरूप व आकाशपातालकाहालबतलावतेहो मुझेजान पड़ा कि तुमको श्रीकृष्णजीकी कुछभक्ति व प्रीतिनहींहै॥

चौ० उद्धवहरिहैं ईश हमारे। सो अब कैसे जात बिसारे॥

दो० योगदीजिये लै तिन्हैं जिनकेमन दशबीस। कितडारत निर्गुणयहां उद्धव ब्रजमेंखीस॥
योगकथा अब मतिकहो उद्धव बारम्बार। भजै और नँदनन्द तजि वाको है धिक्कार॥

जिसतरहहाथी कमलकीडालमें नहींबांधाजाता उसीतरहस मुद्ररूपीहमाराविरह चिनगारीरूप तुम्हारेज्ञानसे सूखनेनहींस क्ता देखोजहांछःमहीनेकीरात रासबिलासमेंश्यामसुन्दरकेसाथ पलभर मालूमहुईथी वहांअबएकक्षण उनकेबियोगमें युगसमा नबीतताहै हमसेउन्होंने वृन्दाबनआवनेकेवास्ते कहाथा उसी आशापर हमलोगजीती हैं॥

चौ० उद्धवहृदय कठोर हमारे। फटे न बिछुरत नन्ददुलारे॥

हमसे मछलियोंको उत्तम समझनाचाहिये जो पानीसे बिछु इतेही अपनाप्राण छोड़देती हैं॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० कहँलगि कहिय आपनी उद्धव तुमसे चूक। श्याम बिरहतनु जरतहै सुनत न कोई कूक॥
सो० उद्धवकहिये जाय मोहनमदनगोपालसों। नयनन देखैं आय एकबार ब्रजकी दशा॥

इसीतरह अनेकबातैं कहकर गोपियोंने आंशुओं से उद्धवका चरणधोया व बिलापकरके कहनेलगीं हेश्यामसुन्दर अबतुम्हारे बिरहका दुःख हमसे सहानहींजाता इसलिये अपनी मोहनी मूर्त्ति दिखलाकर हमारी चिन्ताहरो नहीं तो हमलोगोंका प्राण लेलेव आशादुःखदायी होकर निराश होजाने से शोचनहीं रहता ऐसाकहकर गोपियोंने उद्धवकाहाथपकड़लिया व सबस्थान रासमण्डल लीलाकरने श्यामसुन्दरका उन्हें दिखलाकरबोलीं हेउद्धव यहसबस्थान देखकर हमैं एकक्षण वहमोहनीमूर्त्ति नहीं भूलती सो तुम इतनासन्देशा हमारा विनयपूर्वक मोहनप्यारेसे कहदेना कि तुम्हारे बिरहसागरकी लहरसे शरीररूपी घरहमारा गिरनेचाहताहै सो जल्दी आनकर रक्षा इसकी करो॥

दो० तुमतौ महा प्रवीणहौ कहैं कहा समुझाय। माखनप्रभुसे सबनकी विनती कहियो जाय॥

जबयह सन्देशा कहतीहुई सब ब्रजबाला बौड़हों के समान अचेतहोगईं तबउद्धव यहदशा देखतेही उन्हेंदण्डवत्करकेबोले हे ब्रजबालाओ मनुष्यतनुपानेकाफल तुम्हींको प्राप्तहै जोआठों पहरउनआदिपुरुष जिनके चरणोंकाध्यान ब्रह्मादिकदेवता अपनेहृदय में रखतेहैं करतीहौ तुम्हारी बड़ाई कोईनहींकरनेसक्ता वेद व शास्त्रमें स्त्रीको निषिद्धकहतेहैं परतुम्हारा ज्ञानदेवतोंसेभी उत्तमहै बैकुण्ठनाथ जितनीप्रीतितुमलोगोंकी रखतेहैं उतनीलक्ष्मीजीपरनहींकरते॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० जाविधि सुख तुमकोदियो वृन्दाबनकेमाहिं। स्वप्नेहूं में लक्ष्मी वह सुखपावतनाहिं॥

हेब्रजबालाओ परमेश्वर मुझेभी एकगोपीका जन्मदेते तो क्याअच्छी बातहोती अबमैंबृक्षादिक का जन्मलेकर यहांरहा चाहताहूं जिसमेंतुम्हारेचरणोंकी धूरिमेरेशिरपर चढ़ाकरै तुम्हा राप्रेमदेखकर देवतामोहितहोजातेहैं मेरीक्यासामर्थ्यहै जोतुम्हा रीस्तुतिकरनेसकूं जिसतरह श्रीकृष्णजीको परमेश्वर समानजान ताहूंउसीतरह तुमलोगोंको भी बूझकर उनसेबिलगनहीं समझ ता जोपदवीब्रह्मादिकदेवता बड़ेपरिश्रमसे पावतेहैं वहतुमलोगों कोसहजमें प्राप्तहुई इसलिये तुम्हेंउन्हींका रूपसमझनाचाहिये॥

दो० महाधन्यतुमगोपिका धन्यतुम्हारो नेम। माखनप्रभुगोपालसों जिनको बाढ़ो प्रेम॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेपरीक्षितइसबातमें कुछ संदेहमतसमझोजोमनुष्यअपनामनप्रेमपूर्वकपरमेश्वरमेंलगावे वहउन्हींकारूपहोताहै देखोगोपियांबीचकुलब्राह्मण बक्षत्रीकेन होकरकभीउन्होंनेवेद व पुराणनहींसुना वकिसीतीर्थकास्नानकर केकभीतप व जपभीनहींकियाकेवलश्रीकृष्णजीकेचरणोंमेंप्रीति रखनेसे इतनीबड़ीपदवीको पहुँचगईं जिसतरह बड़ाढेररुई व ल कड़ीका एकचिनगारी आगसेजलजाताहै उसीतरह उद्धवकाज्ञा नब्रजबालोंकेसामनेभूलगया तबउद्धवबारम्बार शिरअपना गो पियोंकेचरणपर रखकरकहनेलगे मैंतुम्हारेदर्शनसे कृतार्थहुआ मनुष्यएकक्षण श्यामसुन्दरका स्मरणकरनेसे मुक्तिपाताहै तुम लोग तो आठोंपहरउनकेयाद व ध्यानमेंरहतीहो मैंतुमकोज्ञान बतलानेआयाथा सोतुमसेपरमभक्तिसीखचला मुझेअपनादास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समझकर मेरीसुधिकरतीरहना हेराजन्उससमय उद्धवप्रेममेंडूब कर ब्रजभूमिपरलोटनेलगे व बृन्दाबनकेबृक्षोंसे गलेमिलकरक हातुमसबबृक्ष व पक्षी आदिककाबड़ाभाग्यहै जोतुमनेयहांजन्म पाया जिन परब्रह्मपरमेश्वरकादर्शन ब्रह्मा व महादेवको जल्दी ध्यानमेंनहींमिलता सोउन्होंनेब्रजभूमिमेंआनकर तुमलोगोंको बाललीलाकासुखदिखलाके अपनादर्शनदिया इसीतरहउद्धव जी गोपियोंकेसाथ जहां २ बृन्दाबनबिहारीने लीलाकीथी वहां परदो २ चारचारदिन हरिचर्चामेंमग्नरहे॥

दो० ऊधोमन आनन्द अति लखिके प्रेमबिलास। आयाथा दिनदोइको बीतगये षटमास॥
सो० तबउपज्योमनशोच वचनरुष्णकेयादकरि। मनमेंभयोसँकोच श्यामबुलाये बेगिम्वहिं॥

यहसुनकरगोपियोंनेकहा हेउद्धव तुमनेहमारेभलेवास्तेज्ञान सिखलाया व हमलोगोंने प्रेमबशतुमको दुर्बचनकहा सोबड़ेलो ग छोटोंपर सदासेदयाकरतेआयेहैं इसकारण हमाराअपराध क्ष माकरके ऐसाउपायकरना जिसमेंश्यामसुन्दर अपनादर्शनदेवें और हमलोगोंकीदशा तुमअपनीआंखोंसे देखजातेहो जैसाउ चितजानना वैसाकरना और यहभीमोहनप्यारेसेकहदेना हमा राअपराध क्षमाकरके बांहपकड़ेकीलज्जारक्खें॥

दो० प्रभुदीननपति दीनहित यहीहमारी आस। कबहूं दर्शदिखाइके हरिहैं लोचनप्यास॥

ऐसाकहकर जबराधाआदिकगोपियां उद्धवकोबड़ेप्रेमसे अप नेघर लिवालेआईं तबउद्धवनेभी सच्चाप्रेम उनकावैकुण्ठनाथमें देखकर उनकेघरभोजनकिया उससमय गोपियांबोलीं हेउद्धव तुमवहांजाकर श्यामसुन्दरसेकहना आगेआपदयाकीराह हमा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राहाथपकड़कर वृन्दाबनकीकुंजोंमें लियेफिरतेथे अबराजगद्दी पाकर कुब्जाकेकहनेसे हमैंयोग व वैराग्यलिखभेजाहै हमलोग आजतकगुरुमुखभी नहींहुई योग व ज्ञानकाहालक्याजानैं॥

चौ० उनसे बालापन की प्रीति। जानैं कहा योगकी रीति॥
उद्धव यों कहियो समुझाय। प्राणजातहैं राखैं आय॥

सो० ऐसेकहि ब्रजवास भई बिरहसागरमगन। उद्धवकरि परणाम आये यशुमति नन्दके॥

फिर उद्धवनेनन्द व यशोदासेकहा तुम सबब्रजबासी धन्यहो जोत्रिलोकीनाथ ने तुमको बाललीलाका सुखदिखलाया व मैं भीतुमलोगोंका प्रेमदेखकरइतनेदिन यहांरहाअबमुझेबिदाकरो तोवहांजाकर तुम्हारासंदेशा मोहनप्यारेसे कहूं यहबचन सुनते हीयशोदा माखन व घी व मिठाई आदिक अनेकबस्तु श्याम व बलरामके वास्ते देकरबोली हेउद्धवतुमदेवकीबहिनसेयों कहना किमेरेराम व कृष्णको फुसलाकर वहांरखनछोड़ैं जल्दीयहांभेज देवैं मैंउनके देखेबिना दिनरातब्याकुलरहतीहूं व मोहनप्यारेको बहुत आशिषदेकर मेरीओरसे यह कहदेना तुम्हारे बिना यशो दाबड़ा दुःखपावती है॥

चौ० इतनी दया मातुपर कीजे। एकबार फिर दर्शनदीजै॥

सो० दई यशोमतिमाय मुरली ललित गोपालकी। उद्धवदीजोजाय प्यारीयहअतिलालकी॥

नन्दजीनेकहा हेउद्धव तुमआपबुद्धिमानहोकर यहांकीदशा देखेजातेहोआधिक हम क्याकहैं परमेरीओरसे इतनामोहनप्यारे अन्तर्यामीसेकहदेना कि एकबेर अपनादर्शनदेकरब्रजबासियों का दुःखहरैं॥

दो० मातुयशोदानन्दजू तनिकधरत नहिंधीर। कहतसँदेशो श्यामको भरत नयनमें नीर
नन्ददोहनी भरिदई कहेउनयनभरिनीर। वा धवरीको दूधयह जो भावत बलबीर।

जबयहसंदेशा सुनकर नन्द व यशोदारोनेलगे व उद्धवउन्हें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धैर्यदेनेउपरांत रोहिणीको साथलेकर वहांसेचले तबसब ग्वाल बाल व गोपियोंने राम व कृष्णकेवास्ते अनेकवस्तुदेकरज्ञानकी राहकहा हेउद्धव तुमहमारी ओरसेदोनों भाइयोंको हाथजोड़क रइतनासँदेशा कहदेनाकि आठोंपहर प्राणहमारा तुम्हारेचरणों में लगारहताहै इसलियेदयालुहोकर ऐसाबरदानदीजिये किज न्मजन्मांतर हमारेहृदयसे तुम्हाराध्यान न छूटे यहसुनकरउद्धव बोले हेब्रजबासियो तुम्हैं ऐसी सच्चीप्रीति व भक्ति परमेश्वरकी है कि संसारी मनुष्य तुम्हारानाम लेने व दर्शनकरने से भवसागर पार उतरजावें व तुम्हारी मुक्तिहोनेमें कुछसंदेहनहीं सोतुमलोग जीवन्मुक्तहौ जब इसीतरह उद्धवजीसबछोटों बड़ों को समझाय बुझाय आशाभरोसादेकर मथुरामें पहुँचे व मोहनप्यारेको दण्डवत्करके मुरलीआदिक सबवस्तु उनकेसामनेरखदी तबश्याम व बलराम उनकोदेखतेही उठखड़ेहुये व बड़ेप्रेमसे गलेमिलकरक हा हेउद्धव तुमने वृन्दाबनमें बहुतदिन लगाये कहो सब ब्रजबा सीआनन्दरहकर कभी हमारी यादकरतेहैं या नहीं॥

चौ० नन्दबबा अरुयशुमतिमाय। कहौ कौन विधि देख्योजाय॥
बसतप्राण मेरे में जिनके। कैसे दिन बीतत हैं तिनके॥
कहो दशा ब्रजगोपिनकेरी। जिनकी प्रीति निरन्तर मेरी॥
उद्धवसमुझत ब्रजकी बाता। भये प्रेमवश पुलकित गाता॥

यहसुनतेहीउद्धवने श्यामसुन्दरसेहाथजोड़कर बिनयकिया हेवैकुण्ठनाथ वृन्दाबनकीमहिमा व ब्रजबासियोंकाप्रेम मुझसे कुछकहानहींजाता आपनेबड़ीदयाकरके मुझेवृन्दाबनमें भेजा सोउनकादर्शनपाकरकृतार्थहोआयासबगोपी व ग्वालआठोंपहर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हारेचरणोंकाध्यान अपनेहृदयमेंरखकर केवलअवधिकीआ शापरजीतेहैं हेदीनानाथ जबमैंसंध्यासमय वृन्दाबनमें पहुँचात बग्वालबाल दूरसेमेरारथदेखतेही तुम्हैंसमझकर दौड़हुयेमेरेपास आये जबमुझेरथपरबैठेदेखा तबआंखोंमें आंशूभरकर चुपहोरहे व यशोदा तुम्हारेबिरहमें आठौपहरयही पछितावती है कि मैंने श्यामसुन्दर त्रिलोकीनाथको नहींपहिंचानकर ऊखलसे बांध दियाथा सो अबमनहरणप्यारेबिना साराब्रजसूनाहोगया॥

चौ० दशरथ प्राणतजे सुतलागी। मैं देखतही रही अभागी॥

दो० यद्यपिमैं बांध्यो बहुत तुमबिन कछु न सोहात। उनकीदशा बिलोकि म्वहिं युगसमबीतीरात॥

जब प्रातसमय यमुना किनारे स्नानकरनेगया तब राधा आ दिक गोपियोंनेमुझे आपकासेवकसमझतेही बड़ेआदरसे बैठाल कर तुम्हारी कुशलपूंछी और मैंने तुम्हारी चिट्ठीसुनाकर उनको ज्ञान व योग अच्छीतरह समझाया पर उन्होंने मेराकहना सच्च न मानकर सबदोष कुब्जाको लगाया और सबब्रजबाला तुम्हारे प्रेममेंडूबकर इसतरह बौरहोंके समान रोनेलगीं कि सबज्ञान व योग मेरा उनके सामनेभूलकर प्रेमभक्ति मैंने उनसे पाई॥

दो० गही एकहीबात उन मेटि वेदविधि नीति। गोपभेष भजि सांवरे रहैं विश्वभर जीति॥

सो० नहिं सीखे कछुज्ञान जो बिधिजाहिं सिखावने। तुमहूंबडेसुजान वहांजाव तो जानिहौ॥

जिसतरह हरिणअपनेगोलसे अलगहोकर चौकड़ीभूलजाता है उसीतरह उनकाप्रेमदेखकर मेरेज्ञानकाअभिमान टूटगया मैं नेछःमहीनेरहकर वहांकाहालदेखातोसबवृन्दाबनबासियोंकोतु म्हारेध्यान व चर्चामेंलीनपाया वहांजानेसे मैंभीउनकेसमानहो करयहांकाआवनाभूलगया हेबासुदेवमहाराज आपनेकिसवास्ते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसीकठोरताई उनसेकीहै तुम्हारीमायाको सिवाय कोईजाननेनहींसक्ता ॥

दो० निगमकहत वशभक्तके पूरणसबसुखसाज। करि सुदृष्टि ब्रजदेखिये बाहँगहेकी लाज ॥
सो० बहुतदुखित तनुक्षीण ब्रजबासीतुमबिरहवश। तुमतनमनहरिलीन रटतबातकीलौंसबै ॥

हे महाप्रभु राधिकाकीदशा आपसेक्या कहूं वहसब शृंगार छोड़कर मैलीधोती पहिनेहुये दिनरात तुम्हारेबिरहमें रोयाकर तीहै व महादुबलीहोकर पाँहिंचानीनहींजाती व बौरहोंके समान कभी श्रीकृष्णपुकारकर कभीनखसे पृथ्वीखोदतीहै उसकेघरवा ले अनेकतरह समझातेहैं परकिसीका कहना उसको प्रवेशनहीं करता उसकाप्राण निकलनेमें संदेहनहीं परतुमजो कहिआयेहो कि हमफिरआवेंगे उसीआशापर वहआजतक जीतीहै ॥

बो० अचरज मोहिं बडो यह आवे। प्रभु तुमका कैसे यह भावे ॥
करुणामय प्रभु अन्तर्यामी। भक्तन हित धारेउ तनुस्वामी ॥
बेगिकृपाकरि दर्शनदीजै। ब्रजजन मरत जिला सब लीजै ॥
दो० यहमुरलीदै बिलखिकै कहेउ यशोमतिमाय। एकबार हित नन्दके दर्शदिखावो आय ॥
सो० जिनगौवनको श्याम आपचराईप्रीतिकरि। बहुरिनआईधाम बिड़री कुञ्जनमेंफिरत ॥

हे दीनदयालु मैं अधिककहांतक कहूं आपअन्तर्यामी सबके मनकाहाल जानतेहैं जबयहबात सुनकर श्यामसुन्दरको ब्रजबासियोंकीप्रीतियादआई तबआंखोंमें आंशूभरकर रोनेलगे ॥

दो० ब्रजबासिनकेप्रेममें माखनप्रभु बलवीर। भरत उश्वास उदास चित भरे नयनमेंनीर ॥

केशवमूर्त्तिने मुरलीकोउठाकर छातीसेलगालिया व आंखें बन्दकरके बीचध्यान ब्रजबासियोंकेडूबगये फिरब्रजकानाम ले लेकरठण्ढीश्वासैंलेते व पीताम्बरसे आंशूपोंछतेहुयेबोले हेउद्धव तुमअच्छीतरह सबकोज्ञानसिखाआये ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हारेचरणों शापरजी बग्वाल

मनमें यों प्रभु कियो बिचारा। ब्रजभक्तन ममरूप अधारा॥
मेरे मुक्ति बड़ी निधि जोई। सो ब्रजबासी लेत न कोई॥
ताते जो जिनके मनभावे। सोई मोहिं करत बनिआवे॥
भक्ताधीन जो परम हमारे। ब्रजबासी हमको अति प्यारे॥
सदाबसत याते ब्रजमाहीं। इनसम मोहिं और हितनाहीं॥

त्र दो० मनकरिहरि ब्रजमेंरहैं मिलिब्रजवासिनसाथ। तनुधरि देवनकाजहित भये द्वारकानाथ॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन्उससमय ब्रह्माने नारदसेकहा देखोजिसपरब्रह्मपरमेश्वरकेदर्शन शिवजीकेध्यान मेंजल्दीनहींमिलते वहीत्रिलोकीनाथ ब्रजनारियोंकेवास्ते रोते हैं वेदकीऋचाओंने आनकरगोपियोंकाजन्मलियाथा॥

दो० परसै उनकी चरणरज वृन्दाबनकेमाहिं। सोऊगति उनकीलहै यामें संशय नाहिं॥

हे राजन्उनकाबड़ाभाग्य समझनाचाहिये जोलोगबृन्दाबन कीरज अपनेमाथेपरचढ़ावतेहैं जबब्रजकाहालसुनकर श्यामसुन्दर व बलरामउदासहोगये तबउद्धवश्यामसुन्दरसे बिदाहोकर बासुदेव व देवकीकेपासपहुँचे व नन्द व यशोदाकासंदेशाउनसेकहकर अपनेघरगये व रोहिणीजीश्याम व बलरामसेभेंटकरकेराजमन्दिरमेंगईं व राम व कृष्णने उसदूध व मक्खनआदिकको जोनन्द व यशोदानेभेजाथा बड़ीप्रीतिसेखाया व उद्धवजीकोभीउसमेंसेभेजवादिया॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

कुब्जा और अक्रूरके घरपर श्यामसुन्दर का जाना॥

शुकदेवजीबोलेहेपरीक्षित जिसदिनसे मुरलीमनोहरनेकुब्जाके घरजानेका करारकियाथा उसीदिनसेवहनित्यफूलोंकीशय्या बिछाकर मोहनप्यारेकीआशा देखाकरतीथी सोएकदिन श्रीकृष्णजी भक्तबत्सल अन्तर्यामीने उसकाप्रेम देखकर बिचारा कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुनरेश आये वहि ठाहीं। बड़ो गर्व जिनके मन माहीं॥
त्यहिकारण कुण्डिनपुर आये। उन्हैं भगाय तुम्हैं हरिलाये॥
नातो मैं विरक्त मन माहीं। कबहूं मोह होत मम नाहीं॥
सदा उदास रहौं चित माहीं। नारिनकी कछु इच्छा नाहीं॥

हे रुक्मिणी तेरेबुलाभेजनेसे वहांजाकर तेराप्रणपूराकिया सो परमेश्वरने इतनेराजोंकेसामने मेरीलज्जारक्खी व बलराम जीने वहांजैसापराक्रमकिया वहतैंनेअपनीआंखोंसेदेखा मैंतुझे अपनीइच्छासेनहींलाया इसलियेतुझे आज्ञादेताहूं अबभीमन तेराचाहे तो मुझेछोड़कर किसीतिलकधारीराजाकेपास जो उस समानकुलीनहोजाकररहो मैंकुछबुरानहींमानूंगा॥

चौ॰ नारिन में सोइ नारि सुभागी। जाको पुरुष होय बड़भागी॥
या कारण ढूंढ़ो तुम सोई। जामें लोक कहा यशहोई॥

यहकठोरवचनसुनतेही रुक्मिणीरोनेलगी व मुखउसका लालहोगया व श्यामसुन्दरकीबातोंका कुछउत्तर न देकर अतिशोचसे शिरअपनानीचेकरलिया व नखसेपृथ्वीखोदनेलगी व चित्त उसकाठिकाने न रहकर शरीरकांपनेलगा॥

चौ॰ चिन्ता बहुत बढ़ी उरमाहीं। काहू बिधि समझै मननाहीं॥
दो॰ ऐसीबिधि अकुलायके पड़ी धरणिमुरझाय। तनुकी सुधिभूली उसे मरणनिकट भइजाय॥

जबवृन्दाबनबिहारीनेदेखा कि अतिशोचसे प्राणप्यारीमरने चाहती है तबउसेउठाकर अपनीसेजपर बैठालिया व चतुर्भुजी रूपधरकर एकहाथसे जो उसकेबालबिखड़गयेथे सँवारनेलगे व दूसरेहाथसे उसकेआंशूपोंछकर तीसरेहाथसे पंखाहिलाना आरम्भकिया व चौथाहाथअपना कमलकेसमान उसकेहृदयपररख कर उसेगलेमेंलगालिया जबउनका प्रेमदेखकर रुक्मिणीका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चित्त कुछठिकानेहुआ तबकेशवमूर्त्तिबोले हेप्राणप्यारीगृहस्थों केपास कुछपृथ्वीआदिकरहनाअवश्यचाहिये जिसमें वहआनन्दपूर्वक अपनाकुटुम्बपालैं सोमेरेपासकुछनहीं है इसलिये तुमसे हँसीकीथी सो तैंनेसत्यमानकर इतनादुःखउठाया मैं तुमसे अधिक किसीकाप्यारनहींकरता तू यहबातसच्चमानकर उदासी छोड़दे तेराअंगअतिकोमलहै इसलिये घबड़ागई व तैंनेजाना ये मैंछोड़देंगे सो तुमधैर्यधरकर हमसेहँसोबोलो॥

दो० मृदुल बैन सुनायकै माखन प्रभुयदुराय। लीन्हों प्रिया मनायकै दीन्हीं रिस बिसराय॥

हे राजन्सुन्दरकी प्रेमपूर्वकबातसुननेसे रुक्मिणीवह[illegible] कीरज अपनेमाथेको श्यामसुन्दरकीगोदमेंदेखकर[illegible]र श्यामसुदर व बलरामउदासहोगये विनयकिया हे बैकुण्ठना[illegible]दाहोकर बसुदेव व देवकीकेपासपहुँचे व नन्द केकहा मैंअपनेकेशाउनसेकहकर अपनेघरगये व रोहिणीजीश्याम आपमुझे मिलेंटकरकेराजमन्दिरमेंगईं व राम व कृष्णने उसदूध व मक्खनआदिकको जोनन्द व यशोदानेभेजाथा बड़ीप्रीतिसेखाया व उद्धवजीकोभीउसमेंसेभेजवादिया॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

कुब्जा और अक्रूरके घरपर श्यामसुन्दर का जाना॥

शुकदेवजीबोलेहेपरीक्षित जिसदिनसे मुरलीमनोहरनेकुब्जाके घरजानेका करारकियाथा उसीदिनसेवहानित्यफूलोंकीशय्या बिछाकर मोहनप्यारेकीआशा देखाकरतीथी सोएकदिन श्रीकृष्णजी भक्तवत्सल अन्तर्यामीने उसकाप्रेम देखकर बिचारा कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छोड़कर तुम्हाराभजनकरके भवसागरपारउतरजाते हैं व तुम रजोगुण व तमोगुणसे कुछप्रयोजन न रखकर आठोंपहरक्षीर सागरमेंशयनकरतेहो जबदैत्योंके अधर्मकरनेसे पृथ्वीदुःखीहो करतुम्हारेशरणाजातीहै या गो ब्राह्मण व हरिभक्तलोग दुःखपाते हैं तबआपसगुणअवतारसे पृथ्वीकाभारउतारकर गो ब्राह्मणको सुखदेतेहैं मुझेऐसीसामर्थ्यनहींहै जो आपकागुणबर्णनकरसकूं आपनेकोईदोष मुझमेंदेखकर ऐसावचनकहाहै इसलिये चाहती हूंकिआपदीनदयालु जगत्केपर्दाढांकनेवाले मेराअवगुणछिप[illegible] उस [illegible] हरि [illegible] तद् [illegible] क [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible]

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगाया सोआजतक उनकायशछारहाहै औरजोतुम गृहस्थो
हमकुछचाहना न रखकर तेरीइच्छासे तुझकोयहांले वहआन
सच्चहै जहांलक्ष्मीजी तुम्हारीदासीहोकर दिनरातसेवनये तुझ
वहांमेरीकौनगिनतीहै जो आपकेयोग्यहोऊं आपदीनैं तुझसे
मुझेदीनजानकर मेरीइच्छापूर्णकिया हेजगत्पालक उदासी
चँदेलीकाराजाभी तुम्हाराउत्पन्नकियाहै तुम्हारीसेवाछा ये
सेअंगीकारकरती तोआवागमनमेंफँसीरहती जिसतर
है बरीषआदिक हरिभजनकरकेमुक्तहुयेहैं उसीतरहमैं॥
दो० हे णधोकर भवसागरपारउतरजाऊंगी व तुम्हारीदयासे मेराना
भीगो सदास्थिररहेगा॥

दो० जैसी विधि शोभारची नगर द्वारकामाहिं। देश चँदेली को कहै स्वर्गलोकमें नाहिं॥

हे बैकुण्ठनाथ जोस्त्रियां तुम्हारेभजन व कथासे विमुखहोवैं
कहैं शिशुपाल व दन्तवक्रादिकपतिमिलैं जिसतरहअम्बानाम
मियाकाशीनरेशकी राजाशाल्वको चाहतीथी इसीकारण वि
चित्रवीर्य्यने उसेछोड़दिया उसीतरह आपनेभीविचारकिया कि
यह राजाशिशुपालकोचाहतीहै सोमनसाबाचा कर्मणासे तुम्हा
रीदासीहोकर उसेअपनाशत्रुसमझतीहूं जोस्त्रीकिनिष्कपट अप
ने पतिकीसेवाकरती है उसकीमनोकामना संसारमेंमिलकर अ
न्तसमयमुक्तहोतीहै हे प्राणनाथ जैसेराजाइन्द्रदमनकीकन्या
ने तपकरके शिखण्डीकाजन्मलेकर भीष्मपितामहसे बदला
लियाथा वैसामैंनहींकरसक्ती किसवास्ते कि मैं तुम्हारीअनेकज
न्मकीदासीहौं व आपनेयहकहा कि तैंनेयाचकोंकेमुखसेसुनकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रामसुन्दर हे ज्योतिस्वरूप मैं तुम्हारेशरणागत होकर दण्डव
त करताहूं जल्दी मेरीसुधिलेव जैसेत्रिलोकीनाथने यह दीनवच
न उस दुखियारेकासुना वैसेसुदर्शनचक्रसमेत गरुड़परसे कूदकर
चलदौड़े और वहांपहुँचतेही सुदर्शनचक्रसे ग्राहकामुखचीरकर
डारडाला व हाथीको तालाबमेंसे खींचकरबाहरनिकालदिया॥

चौथा अध्याय॥

ग्राहका गन्धर्वतन पाना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिससमयग्राहमारागया उस
समय देवतोंने आनन्दपूर्वक दुन्दुभीबजाकर पुष्पोंकीबर्षा हरि
भगवान्परकी ऋषीश्वरआदिक उनकीस्तुतिकरनेलगे और वह
ग्राह परमेश्वरके स्पर्शकरतेही एकपुरुष महासुन्दर राजसीभूषण
व वस्त्रपहिनेहुये आनकरनारायणजीके चरणोंपर गिरपड़ा व उ
सने स्तुति व परिक्रमाकरके हाथजोड़कर विनयकिया महाराज
मैं पिछलेजन्म हूहूनामगन्धर्वथा सो एकदिन अपनीस्त्रियों को
विमानपर बैठाकर विहारको निकला व बनमेंएकतालाब बहुत
अच्छादेखकर स्त्रियोंसमेत उसमें जलबिहार करनेलगा उसीज
गहदेवलऋषिभी नहातेथे सो मैंनेअपनीअज्ञानता व स्त्रियों के
कहनेसे उनऋषिका उपहासबिचारकर स्नानकरतेहुये गोतामा
रा व पैर ऋषीश्वरकापकड़कर पानीकेभीतर खींचलेगया जबव
हगिरपड़े तबपैरउनका छोड़कर तालाबसेबाहर निकलआया व
अपनीस्त्रियोंसमेत हँसनेलगा तब देवलऋषिने क्रोधितहोकर मु
झेशापदिया कि हे गन्धर्व तैंनेहँसीसे हमारापैर ग्राहकेसमान प

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कड़कर खींचाथा इसलियेपरमेश्वरसे चाहताहूं कि तू ग्राहतनमें जन्मलेकर पशु व मनुष्योंका पैरजलकेभीतर पकड़ाकर यहशापसुनतेही मैंने अतिलज्जितहोकर उनसेकहा मैंनेअपनेकियेका फलपाया पर अबयहबतलाइये कि इसशापसे मेराउद्धार कबहोगा तबऋषीश्वरबोले कि तू कईहजार बर्षतकग्राहयोनिमेंरहकर एकादिन गजेन्द्रका पैरपकड़ेगा जबबैकुंठनाथ वास्तेछुड़ानेहाथीके आनकरतुझे सुदर्शनचक्रसे मारैंगे तब फिर गन्धर्वतनपावेगा सोउनऋषीश्वरकी कृपासेआजआपका दर्शन जो ब्रह्मा व महादेव आदिकको जल्दी नहीं मिलता सोमैंपाकर कृतार्थहुआ अब आज्ञादीजिये तो अपनेलोककोजाऊं जबवहगन्धर्व परमेश्वरसे बिदाहोकर दण्डवत्करके बिमानपरबैठकर अपनेलोकको चला गया तबहरिभगवान्की आज्ञासे उसगजनेभी वहतनछोड़करमुक्तिपाई व इन्द्रदमन राजाकास्वरूप चतुर्भुजीहोगया और दण्डवत् व स्तुतिकरने व परिक्रमालेने उपरान्त हाथजोड़कर बोला कि हे दीनानाथ मैं पूर्वजन्म इन्द्रदमननाम राजाहोकर दिनरात हरिचरणोंमें ध्यानलगाये राजकाजकरताथा एकदिनजप व ध्यान न करतेसमय अगस्त्यमुनिमेरेघरआयेथे सो मैं अपनेअज्ञान से उनका आदर न करके ज्योंकात्यों बैठारहा तबअगस्त्यजीको धकरकेबोले हेराजाकिसशास्त्रमें ऐसालिखाहै कि जबब्राह्मण व ऋषीश्वर व वैष्णव किसीकेस्थानपरआवै और मालिकघरका उ नकाआदर व सन्मान न करके मतवालेहाथीकीतरह बैठारहै इस लिये परमेश्वरसे मैंचाहताहूं कि तू हाथीकातनपावै यहशापसु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नतेही मैंने लज्जितहोकर उनसे विनयकिया हेमुनिनाथ मैंने
अपने करतब का फलपाया परयहबतलाइये कि उसतनुसे मेरी
छुट्टीकबहोगी यहसुनकर मुनिनेकहा कि जबग्राह तेरापैरताला
बमें पकड़ेगा तबवैकुण्ठनाथ तेरीसहायताकरनेआवैंगे और ग्राह
को मारकर तुझेमुक्तिदेंगे सोमैं अगस्त्यमुनिकीदयासे तुम्हारादर्शनपाकर कृतार्थहुआ जबइसतरहबहुतसीस्तुति इन्द्रदमननेहाथजोड़करकिया तबनारायणजी प्रसन्नहोकरबोले हेइन्द्रदमन
जो कोई मुझे व तुझे इसपर्वत व क्षीरसमुद्र व कौस्तुभमणि व शंख व चक्र व गदा व पद्म मेरेशस्त्र व मत्स्य व कच्छप आदिकमेरे
अवतार व गंगाआदितीर्थ ध्रुव व प्रह्लादादिकजोमेरेभक्तहैं उनको
पिछलीरातउठकर ध्यानकरे उसे अशुभस्वप्नेकाफलनहीं होगा
व जो संसारीजीव इसगजेंद्रमोक्ष स्तुतिका मेरेनिमित्तकरैंगे उन
को मैं अन्तसमय इसीतरहमुक्तिदूंगा कि जिसतरह तेराउद्धारकियाहै ऐसाकहकर हरिभगवान् ने इन्द्रदमनको अपनेगरुड़पर बैठालिया व शंखबजाकर वैकुण्ठमेंचलेगये इतनीकथा सुनाकर
शुकदेवजीबोलेकि हेपरीक्षित जिसतरहहाथीको ग्राहनेपकड़ाथा
उसीतरहसबसंसारीजीव कालरूपीमुखमेंपड़ेहैं जबगजेंद्रने दीन
होकरनारायणजीकोपुकारा तबपरमेश्वरने उसेग्राहकेमुखसे छुड़ाया उसीतरहजबमनुष्यपरमेश्वरकाध्यान व स्मरणकरैं तबजन्ममरणसेछूटकर भवसागरपार उतरनेसक्ताहै व जोकोई विपत्ति
में गजेंद्रमोक्षकथाका ध्यानकरेगा नारायणजी उसकादुःख अवश्यदूर करेंगे ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पांचवां अध्याय॥

शुकदेव जीका कच्छप अवतार की कथा कहना॥

शुकदेवजीबोलेकि हेपरीक्षित हरमन्वन्तरमें जो इकहत्तर चौकड़ीयुगपरहोताहै नारायणजीएकअवतारलेकर धर्मकीरक्षा करतेहैं चौथे मन्वन्तरमें हरिअवतारहुआ यह उसकीकथा तुमकोसुनाया और पांचवांमनुरैवतनाम तामसकाभाईहुआ उसमें बलिबिंध्यादिकमनुकेबेटे व विभवनामइन्द्रव ऊर्ध्वबाहु आदिक देवता व हिरण्यरोमादिकसप्तऋषिहुये व शुभरऋषीश्वरकी वैकुंठनामस्त्रीसे वैकुंठभगवान्का अवतारहुआ और सुमेरुपर्वतपर सत्यलोककेसामने दूसरावैकुण्ठलक्ष्मीजीके रहनेवास्तेबनाया उसअवतारके गुणकोकोई वर्णननहींकरनेसक्ता छठवां चाक्षुप नाममनुहुआ उसमेंपुरआदिक मनुकेबेटे व मित्ररूपनाम इंद्रव अभूआदिदेवते व हर्य्यश्वदेव आदिकसप्तऋषिहुये व विराजकी देवसम्भूता नामस्त्रीसे अजितनामअवतार परमेश्वरका हुआ जिन्होंने चौदहरत्ननिकालनेवास्तेदेवता व दैत्योंसे समुद्रकामथनकराया व आपकच्छपका अवतारधरा व मन्दराचलपर्वतको जो मथानीबनानेसे डूबाजाताथा अपनीपीठपरउठाया इतनी कथा सुनकरपरीक्षितनेपूंछा हेशुकदेवस्वामी भगवान्ने किस तरहपहाड़ अपनीपीठपरलेकर समुद्रमथनकराया व उससेचौदह रत्ननिकालकर देवतोंकोअमृतपिलाया सोकथादयाकरके सुनाइये मनमेराहरिचरित्रसुननेसे तृप्तनहींहोता यहसुनतेहीशुकदेवजीने अतिप्रसन्नहोकरकहा हेराजनदेवता व दैत्यदोनोंभाईकश्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पजीकेपुत्रहोकर आपसमें शत्रुतारखतेहैं कभीइन्द्र दैत्योंकोजी
तकर देवतोंसमेत राज्यकरताहै व कभी दैत्यलोग देवतोंकोजीत
कर तीनोंलोककाराज्यकरतेहैं जिसतरहयहां संसारीजीव पृथ्वी
परचलतेहैं उसीतरह देवलोकादिकमें भी धरतीहोकर ऋषीश्वर
व महात्मालोग आकाशमार्गसे वहांचलतेफिरतेहैं सो एकसमय
जब इन्द्रराजासिंहासनपरथा ऐरावतपरचढ़कर कहींकोचलाजब
रास्तेमें दुर्वासाऋषीश्वरको जोअपनेचेलोंसमेतचलेआतेथे देख
करइंद्रनेदण्डवत्किया तबऋषिनेबड़ेहर्षसे एकपुष्पकीमाला जो
गलेमेंपाहिने थे उतारकर इन्द्रकेपासभेजदिया जब उसकाचेला
मालालेकरइंद्रकेपासगया तबइंद्रनेवहमाला उससेलेकर हाथी
केमस्तकपरधरदिया व अभिमानसेयहबोला कि इससेसुगंधित
और उत्तमपुष्प देवलोकमेंहोतेहैं व हाथीनेवहमाला सूंड़सेगिरा
करपैरकेनीचेमलडाला जबउसचेलेनेजाकर यहबात ऋषीश्वर
सेकहदिया तबदुर्वासाक्रोधकरकेबोले हेइन्द्रतैंनेराज्य व धनके
मदसेमेरीमालाका निरादरकिया इसलिये तेराराज्य व धननष्ट
होजावैजबदैत्योंने दुर्वासाऋषीश्वरके शापदेनेकासमाचार सुना
और युद्धकरके उनकाराज्यछीनलिया तबइंद्रनेदेवतोंसमेत भाग
करब्रह्माजीसेविनयकिया हेमहाप्रभुदुर्वासाकेशापसेमेराराज्य व
धनजातारहा कुछसहायताकीजिये ब्रह्माजीबोलेमैं रक्षाकरनेकी
सामर्थ्यनहीं रखता चलोनारायणजीसेविनतीकरैं उनकीदयासे
तुम्हारादुःखछूटेगा यहवचनकहने पर ब्रह्मानेइंद्रादिकदेवतों को
अपनेसंगलेलिया औरक्षीरसमुद्रकेतटपर जाकरयहस्तुति परमे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वरसेकी किहेदीनानाथमैंतुम्हारीकृपासेसबजीवोंको उनकेकर्मा नुसार चौरासीलाखयोनिमें जन्मदेताहूं परआपअपनी इच्छासे देवता व ब्राह्मण व हरिभक्तोंकादुःख छुड़ानेवास्ते अवतारलेते हैं उसमेंमेराकुछवशनहींचलता सोइनदिनों दुर्वासाऋषिकेशापसे देवतोंकाराज्य दैत्योंनेछीनलिया इसलियेसबदेवते दुःखीहोकर तुम्हारेशरणआयेहैं आपदयालुहोकर इनकादुःख निवारणकी जिये सिवायतुम्हारे कोई दूसरामालिक व बड़ानहींहै जिससेजा कर अपनादुःखकहैं संसारमेंआपकानाम दीनदयालुप्रकटहै सो उन्हेंदीनजाकर दयालुहूजिये व शरणआये की लाजरखकर सहायता कीजिये ॥

छठवां अध्याय ॥

परमेश्वर का ब्रह्मादिक देवतों को दर्शन देना ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जब ब्रह्मादिक देवतोंकेस्तुतिकर नेसे वैकुण्ठनाथप्रसन्नहुये तबउन्होंनेहजारसूर्यकेसमान तेज वान्रूपसे गरुड़परआनकर देवतोंकोदर्शनदिया वहप्रकाशदेख तेही सिवायब्रह्माके और सबदेवतोंकी आंखेंझपगईं व सुदर्शन चक्रादि आठोंशस्त्रउनके अपनाअपना रूपधारणकिये चारों ओरखड़ेथे सोब्रह्मानेदण्डवत् व परिक्रमाकरके हाथजोड़कर वि नयक्रिया हेदीनानाथजल व थल व अग्नि व वायु व आकाश सबआपही हैं हम व महादेव व दक्षप्रजापति आदिदेवतातुम्हारे सामने चिनगारीसमानहोकर कुछ सामर्थ्यनहींरखते व आपस वेदा आनन्दमूर्तिरहतेहैं कौनरूपसेहै जोतुम्हारेआदि व अन्त व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महिमाकावर्णनकरसके जिसमेंदेवतोंकाकल्याणहो वहकीजिये तबपरमेश्वरने जलविहारकरना विचारकरकहा हेब्रह्माइनदिनों दैत्योंकीदशाबलीहोकर दुर्वासाकेशापसे देवतोंकेदिन निर्बलहैं अबमेरेनिकट यहउचितहै कि सबदेवता दैत्योंकेपासजाकर उन से प्रीतिकरके क्षीरसमुद्र मथें व मंदराचलपर्वतकी मथानीबना कर उसमेंवासुकिसर्पकी रस्सीलगावैं उससमुद्रमेंसे अमृतआदि चौदहरत्न अतिउत्तमनिकालकर वहअमृतदेवतोंको पिलाऊंगा कि उसकेपीनेसे देवताअमरहोकर दैत्योंकोजीतके अपनाराज्य पावैंगे यहबातसुनकर देवतोंनेविनयकिया महाराज दैत्यलोग ह मसेबलवान्हैं जबअमृतछीनकर पीलेवेंगे तबहमारा क्यावशच लैगा परमेश्वरबोले कि तुमलोग धैर्यरक्खो हमकिसीउपायसेअ मृत तुम्हैं पिलादेवैंगे दैत्योंको सिवायपरिश्रमके कुछलाभ न हो गा तुमउनसे प्रीतिकरके अपनाअर्थ निकाललेव जिसतरहसर्पने जालमें फँसकर चूहेसेमित्रताकरके अपनाकार्य सिद्धकियाथाउ सकाइतिहासमहाभारतमें विस्तारपूर्वकलिखाहै जो लोग परमे श्वरकीशरणमेंरहतेहैं उनकासबमनोरथसिद्धहोताहै जोबातदैत्य लोगकहैं उसेमानलेना अधिकलोभ न करना जिसमेंतुम्हारीउन कीप्रीतिबनीरहै यहआज्ञादेकरनारायणजी वैकुण्ठको पधारे व जब देवताउनकीआज्ञासेबलिकेपास जो उनदिनोंदैत्योंकाराजा थापहुंचे तबराजाबलिनेमनमेंकहा कि देखोइंद्र व वरुण व कुवेरा दिकदेवता जोमेरेसाथसदा शत्रुतारखतेथे आजबिनाशस्त्रगहे मे रीशरणआयेहैं इसलिये जो बातयहलोगकहैं वहमाननीचाहिये

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसाविचारकर राजाबलिनेदेवतोंसेपूंछा कि तुमलोग किसइच्छा सेयहांआयेअपनावृत्तान्तकहो तबइन्द्रबोला कि हमतुमदोनोंदे वता व दैत्यकश्यपजीकेपुत्र आपसमेंभाईहैं सोमैंनेविचारा कि को ईऐसाउपायकरैं जिसमेंवृद्धापन व मृत्युनआवै और बहुतसन्तान उत्पन्नहों इसीइच्छासे मैं ब्रह्माकेपासगयाथा ब्रह्माहमलोगोंको नारायणजीके यहांलेगये उन्होंनेहमारी विनयसुनकरकहा कि तुमलोग राजाबलिआदिक अपने भाइयोंको साथलेकर क्षीरस मुद्रकोमथनकरो व मन्दराचलकी मथानीबनाकर वासुकिनाग कीउसमेंरस्सीलगावो जिसतरह दहीमथनेसे घीनिकलताहै उसी तरह क्षीरसमुद्रमथनकरनेसे अमृतआदिक चौदहरत्न निकलैंगे सो तुमलोगोंको वहअमृतपीनेसे बुढ़ापा व मृत्युकाखटका छूट कर सदातरुणाई बनीरहैगी इसीवास्तेहमलोगआयेहैं कि इसका ममें तुमलोगभी हमारेसाथप्रीतिरखकरसहायताकरो कि जिस में देवता व दैत्यदोनोंभाई अमृतपीकर अमरहोजावें हे राजाब लि तुमसबदेवतोंके मालिकहोकररहना हमलोग तुम्हारेआधी नरहेंगे यहसुनकर राजाबलि व दूसरेदैत्योंनेकहा कि इसकाम में हमलोग तुम्हारासंग देंगे पर अमृतआदि जो बस्तु समुद्रसे नि कलै उसको बांटलेवैंगे देवता बोले बहुतअच्छा तुम्हारा कहना हमैंअङ्गीकारहै फिरसबदेवता व दैत्योंनेजाकर बड़ेपरिश्रमसे म न्दराचलकोउखाड़ा जबउसेंसमुद्रकिनारेलेचलेतबकईदेवता व दैत्यघायलहोकरमरगये तबउन्होंने हारमानकर पर्वतकोरास्तेमें धरदिया व देवता व दैत्योंने अपना अभिमानदटनेसे परमेश्वर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काध्यानकरके विनयकिया हे वैकुण्ठनाथ बिनादयाकरने व आ
वनेआपके यहपर्वतहमलोगोंसे समुद्रतकनहींपहुंचसक्ता जैसेभ
गवान्अन्तर्यामीने उनकादीनवचनसुना वैसेगरुड़परबैठकरवहां
आये तब देवता व दैत्योंने दण्डवत् व स्तुतिकरकेकहा कि महा
राज हमलोगोंसे यहपर्वत क्षीरसमुद्रतकनहींपहुंचनेसक्ता थोड़ी
दूरलेआनेमें कईदेवता व दैत्य घायलहुये व मरगये यहवचनसुन
तेही परमेश्वर दीनदयालुने अमृतदृष्टिसे देखकरघायल व मरेहु
ओंको अच्छाकरकेजिलादिया व बायेंहाथसे मन्दराचलकोउठा
कर गरुड़कीपीठपरधरलिया व सबदेवता व दैत्योंकोभी उसीगरु
ड़परबैठाकरएकक्षणमें समुद्रकिनारे जापहुंचे जबपर्वतउतारकर
वहांसेगरुड़कोबिदाकियातबदेवता व दैत्यउनकीस्तुतिकरनेलगे॥

सातवां अध्याय॥

क्षीर समुद्र का मथना॥

शुकदेवजीबोले कि हे परीक्षित जबपरमेश्वरने समुद्रकिनारे
पहुंचकर देवता व दैत्योंको वासुकिनागके लानेवास्ते आज्ञादी
तबउन्होंनेपातालमेंजाकर उनसेकहा कि नारायणजीकी आज्ञा
से मन्दराचलमें तुम्हैंलपेटकर समुद्रमथाजावेगा सो तुमको बु
लाने आयेहैं चलो यहसुनकर वासुकिनागबोला कि पर्वतमें लपे
टनेसे मेरेकोमलअंगको दुःखहोगा इसलिये मैं नहींचलसक्ता दे
वता व दैत्योंने उत्तरदिया परमेश्वरनेबुलायाहै सो उनकीआज्ञा
मानकरअवश्य चलनाचाहिये यहवचनसुनतेही जबवासुकि ना
ग लाचारीसे नारायणजीके पासगया तबवैकुण्ठनाथ बोले हेवा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुकिनाग तुमकुछशोचमतकरो तुम्हैंकुछदुःख न होगा व अमृत
निकालनेमें तुमभीभागपावोगे जबदेवता व दैत्यों ने वासुकिना
गसे पर्वतलपेटकर समुद्रमेंडालदिया व मन्दराचल पानीपर न
हींठहरकर डूबनेलगा तबदेवता व दैत्योंने परमेश्वरसे विनय कि
या हेमहाप्रभू पहाड़पानीमें डूबाजाताहै हमारावलकुछकाम न
हींकरता समुद्रकिसतरहमथें यहवचनसुनतेही नारायणजीने ए
करूपअपना कच्छपअवतार लाखयोजनलम्बा व चौड़ा समुद्र
में धारणकरकेवहपर्वत अपनीपीठपर उठालिया जबवहपहाड़
जलपरठहरगया तबभगवान्जीने देवता व दैत्योंसेकहा कि पहि
लेतुमलोगगणेशजीका पूजनकरलो जिसमेंतुम्हारामनोरथ सि
द्धहो व उत्पत्ति गणेशजीकी इसतरहपरहै कि एकदिनपार्वतीजी
बैठीहुई महादेवके पंखाहांकतीथीं सोउनकेबालक उत्पन्नहुआ
सो पार्वतीजीउसपरप्रेमसे देखनेलगीं तो पंखाहाथसेगिरपड़ाइसी
कारणशिवजीने उसेक्रोधितहोकर एकत्रिशूल उसबालकको ऐ
सामाराकि शिरउसका कटकर न मालूम कितनीदूरगिरा यहद
शादेखकर पार्वतीजीने कहा कि यहमेरापुत्रथा तुमनेक्योंमारा
अबफिरइसकोजिलादो नहींतोमैंभी अपनातनुछोड़दूंगी यहव
चनसुनकर महादेवजीबोले कि इसबालककामस्तक बहुतदूरच
लागया वहनहींआसक्ता उत्तरदिशाशिरकरके जोजीवमरापड़ा
हो उसका शिरलेआओ तो मैं इसे जिलादूं खोजनेसे एकहाथी
उत्तरशिरकियेमरा महादेवकेगणलेआये जैसेउसबालकके धड़
मेंवहशिरजोड़कर महादेवजीबोले उठबैठवैसेवह बालकजीका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उठखड़ाहुआ तबशिवजीने उसकानाम गणेशजीरखकर ऐसाव
रदानदिया किआजसेतीनोंलोकमें जिसकेयहां शुभकार्यहो वह
प्रथमगणेशजीको पूजकरपीछेदूसरा कामकरै तो कार्यउसकाअ
च्छीतरह सम्पूर्णहोगा उसीदिनससबलोग गणेशजीकोपूजते हैं
सोश्यामसुन्दरकी आज्ञापाकर देवता व दैत्योंनेभी पहलेगणेश
जीकीपूजाकी फिर नारायणजीकीआज्ञासे देवतोंनेशिरवासुकि
नागकापकड़कर दैत्योंसेपूंछधरनेवास्तेकहा तबदैत्यलोग अभि
मानसेबोले किहमाकिसबातमें तुमसेकमहैं जोअशुद्धअंग पूंछको
पकड़ैं यहसुनकर परमेश्वरने देवतोंसेकहा तुम्हींलोगपूंछपकड़ो
सोदैत्यलोगशिर व देवता व नारायणजीपूंछ वासुकिनागकीपक
ड़कर समुद्रकोदहीकेसमान मथनेलगे उससमयघूमना मन्दरा
चलका कच्छपरूपभगवान्को कैसामालूमहोताथा किजैसेकोई
पीठमेंखुजलाताहै जबदैत्यलोग समुद्रमथतेसमय शिरवासुकि
नागकाखींचनेलगे तोउसकेफुफकारसे ऐसीज्वालानिकली कि
शिरउनकाजलनेलगा तबदैत्योंनेफिरचाहा किहमलोगपूंछपक
ड़ें उससमयनारायणजीबोले कि जोबाततुमने अपनी इच्छासे
अंगीकारकिया वहछोड़ना न चाहिये जबदेवता व दैत्य समुद्र
मथते २ थकगये तबउन्होंने नारायणजीसे विनयकिया कि हे
त्रिलोकीनाथ अबहमैंसामर्थ्यनहींरही जोसमुद्रमथनकरैं यहव
चनसुनतेही जबपरमेश्वरने कुछबलअपना उनकोदेकर धैर्यदि
या तब वे लोग नवीनबलपाकर फिरसमुद्रमथनेलगे सोप्रथम ऐ
रावतहलाहल समुद्रसेनिकला किजिसकीगरमीपाकर सबजल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चर समुद्रकेव्याकुलहोगये व देवता व दैत्योंनेभी घबड़ाकरकहा कि हेवैकुंठनाथ इसविषरखनेकाकहींठिकानाकीजिये नहींतोहम लोगइसकीगर्मीसे मराचाहतेहैं तबभगवान्‌जीबोले इसगरलको सिवायमहादेवजीके दूसराकोई अंगीकार नहींकरसक्ता तुमलोग उनकीविनतीकरो यहवचनसुनतेहीदैत्य व देवतोंनेमहादेवजीसे हाथजोड़करकहा हेमहाप्रभु इसविषसे तीनोंलोककेजीव जलच रमरनेचाहतेहैं इसकोअंगीकारकीजिये सिवायतुम्हारे दूसरेमें ऐ सीसामर्थ्यनहीं है किजोविषकीगर्मीसहनेसकै यहबातसुनकरशि वजीनेविचारा किमैंवैष्णवहूं जोकोईदूसरेकादुःख देखकर उस काकष्ट न निवारणकरे उसेवैष्णवकहना न चाहिये इसलिये इन काकष्टछुड़ानाउचितहै यहशोचकर शिवजीने पार्वतीकीओर दे खा तबपार्वतीजीबोलीं हेस्वामीदेवतालोग शरणआयेहैं जिसमें इनकाकल्याणहो सोकीजिये व नारायणजीनेभी शिवजीसे क हा सबकोईदेवहोकर आपमहादेवहैं इसलियेप्रथमजोबस्तुसमुद्र सेनिकलीहै वहआपको भेंटचाहिये सोतुमइसेअंगीकारकरो सब जीवोंकादुःखहरना आपकोउचितहै तबमहादेवजी प्रसन्नहोक रबोलेसचहै इसगरलको सिवायमेरेदूसराकोई पीनेनहींसक्ताइसे पेटमेंउतारजाऊं तोरामचन्द्रजीको जोमेरेहृदयमें रहतेहैं दुःखप हुंचेगा इसलियेकण्ठमें इसविषकोरक्खेरहना उचितहै ऐसाकह कर शिवजीने वहविषजोफेनकेसमान समुद्रसेनिकलाथा एकी बेरसबमुंहमेंडाललिया सोखातीसमय थोड़ासाविष पृथ्वीपरगिर पड़ाथा उसीसेसिंगिया व बच्छनागआदिक उत्पन्नहोकर आज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तक संसारमें प्रकटहैं व महादेवजी वहज़हरअपने कंठमें रक्खेरहे इसीकारणगला उनकाबाहरसे नीलारहकर नीलकंठनामप्रसिद्ध हुआ व नारायणजीने अमृतदृष्टिसे देवता व दैत्योंको देखा तो सब गर्मीज़हरकी उनकेअंगसेदूरहोगई व देवतोंने शिवजीकी बहुत स्तुतिकी ॥

आठवां अध्याय ॥

कामधेनु गौ व अमृत आदिका समुद्र से निकलना ॥

शुकदेवजीबोलेकि हेराजन् जबफिरदेवता व दैत्यपरमेश्वरकी आज्ञासे समुद्रको मथनकरनेलगे सोदूसरीबेर कामधेनुगौ अति सुन्दर समुद्रसेनिकली तब नारायणजीने कहाइसगायसे संसारी वस्तुजो माँगो सो मिलतीहै यहसुनकर देवता व दैत्योंने उसगौ को लेनेचाहातब बैकुंठनाथबोले यहगऊब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको देनीचाहिये वहलोग बनवासकरके कन्दमूलादिक खाकर दिन रातहरिभजनकरते हैं और व्याह व यज्ञादिक में उनको राजा से भिक्षामाँगनीपड़ती है यहगायउनके पासरहेगी तो वहलोग निश्चिन्त रहकर परमेश्वर काध्यान करेंगे वेद व शास्त्रमेंभी ऐसा लिखाहै किजबमनुष्यकोई कामअपने अर्थवास्तेकरै तोपहलेउसलाभमेंसेब्राह्मणकोअवश्यकुछदेनाचाहिये जिसमेंउसकामनो रथसिद्धहो यहवचनकहकेभगवान्जीवहगौवशिष्ठ व दुर्वासाआदिकऋषीश्वरोंको देकर बोलेकितुमइसगौको देवलोकमेंरक्खो जबब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको किसीवस्तुकीचाहनाहो तो गायको अपने स्थानपरले आकरउससे वह जो पदार्थ लेवैं व फिरगौ को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहांपहुंचादेवैं गौ देकरजबफिरसमुद्रमथने लगे तबनारायणजी ने कहाअब जो समुद्रसेनिकले उसमें एकबस्तुदैत्य व एकदेवता लेवें तीसरीबेर उच्चैःश्रवानाम घोड़ाश्वेतवर्णअतिसुन्दर निकला सो दैत्योंने कहाकि यहघोड़ा राजाबलिके चढ़ने योग्यहै नारायणजीने वहघोड़ादैत्योंको देदिया जो चौथीबेरऐरावतहाथीश्वेतवर्णचौदन्तप्रकटहुआवह देवतोंकोदियातबदैत्योंनेकहाकिहाथी हमकोदीजिये देवताहमसे घोड़ाफेरलेवैं श्यामसुंदरबोले जोबात ठहरगई उससे फिरनानचाहिये पांचवींबेरकौस्तुभमणिअतितेजमानऔर महासुन्दर निकली उसे देखकर नारायणजी बोलेयह हमलेवेंगे जबदैत्यों व देवतोंने प्रसन्नहोकरकहा बहुत अच्छातब त्रिलोकीनाथ ने वहमणिपिरोकरगलेमें पहनलियाछठवींबेरपारिजातकनामएकवृक्ष निकला तबनारायणजी बोले इसवृक्षसे जो मांगो सोदेगा उसेदैत्योंने लिया कदाचित् कोई कहे किवह वृक्षइन्द्रलोकमें किसतरहगयासो जाननाचाहिये कि जबचौदह रत्नसमुद्रसे निकलने उपरांतदेवता व दैत्योंमें युद्धहुआतब देवता दैत्योंकोजीतकर वहवृक्षदेवलोकमें लेगये सातवींबेररम्भानाम अप्सरामहासुन्दरी क्षीरसागरसे निकलकर किसीको नहींमिली वेश्याहोकररहीआठवींबेर लक्ष्मीजीअतिसुन्दरी व तेजमान उत्तमभूषण व ललितवस्त्रपहिने व दहिनेहाथमें कमलकापुष्प व बायें हाथमें मालालिये समुद्रसे निकलींउनका रूप देखतेही सिवाय नारायणजी के सबदेवता व दैत्योंने उनपरमोहितहोकर मथना समुद्रकाछोड़दिया व उनकेलैनेकरचाहा कि इन्हैंलेलेवैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तबलक्ष्मीजीबोलीं मुझेबजोरी कोईनहींलेसक्ता जिसमेंसबगुण होंगे उसकेपास मैंअपनीइच्छासेरहूंगी मेरेनिकट देवता व दैत्य दोनोंएकसेहैंतुमसबदेवता व दैत्य व तपस्वी व ऋषीश्वर व ब्राह्मण व गन्धर्वादिक अपनी २ पांतिबांधकरबैठो उनमें जिसपरमेरा मनचाहेगा उसकेगलेमेंजयमालडालकर उसेपतिबनाऊंगी जब उनकीआज्ञानुसार वे सबपांतिबांधकर बैठे तबपहले लक्ष्मीजी दैत्योंको देखकरबोलीं राज्यइनलोगों का सदास्थिरनहीं रहता और ये लोगअभिमानमें भरेरहकरपापकरते हैं इसलिये इनकी संगतिकरनानचाहिये फिरतपस्वी व ऋषीश्वरोंको देखकरकहा ये लोगमहाक्रोधीहोकर थोड़ाअपराधकरनेपरभी बड़ाभारीशा पदेतेहैं फिरज्ञानियोंकोदेखकरबोलीं येलोगनियम व आचारसे न रहकरअपने मनमाना कर्मकरतेहैं फिरदेवतोंको देखकरकहा ये लोगनिर्बलहोकरजब इन्हैं कुछविपत्तिपड़तीहै तबनारायण जीकेशरणमेंजाकर उनसे सहायतालेते हैं इसलिये इनकोअंगी कारकरनाउचितनहीं है उसीसमयपृथ्वीनेअतिउत्तम रत्नजटित सिंहासनलाकरउसपर लक्ष्मीजीको बैठाला व गंगायमुना व नर्म दाआदिकतीर्थ स्त्रीरूपहोकरस्वर्णके कलशोंमें अपना २ जलले आये व कामधेनुगौने दूध व दही व गोबर व गोमूत्र व घृतमिलाकर पंचगव्यबनाया तबपृथ्वीने पंचगव्य व तीर्थोंकेजलसेलक्ष्मीजी कोस्नानकराया व अतिउत्तमभूषण व वस्त्रपहिनाकरयथायोग्य उनकाशृङ्गार किया तबलक्ष्मीजी ब्रह्माको देखकरबोलीं ये बूढ़ेहैं फिरइन्द्र व वरुण व कुबेरदेवतोंको देखकरकहा इनकोआठोंपहर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपनीपदवीबढ़नेकी इच्छावनीरहतीहै फिरलोमशआदिकऋ
षीश्वरोंको देखकरबोलीं इनलोगोंकी इतनीबड़ीआयुहोहै कि
कितनेब्रह्माइनकेसामने मरजाते हैं सोदीर्घआयु होनेमें निर्बल
होकरअशुभकर्मकरनेसे नहींडरते व मृत्युकाभयनहींरखते कि
जोमनुष्यमरनेसे डरताहैउससेकुकर्मनहींहोताफिरलक्ष्मीनेनारा
यणजीकेसन्मुखजाकेउनका रूप व तेज औरबल व गुणकोदेख
करकहा ये त्रिलोकीनाथ सबगुणोंसे जैसामनमेरा चाहताथा भरे
हैं परएकदोषइनमेंभीहै किसंसारीबस्तुकीइच्छा व किसीकामोह
नहींरखते व कृपाव दयाइनकीकुछ जप व स्मरणकेआधीननहींहै
देखोउद्धवभक्त जोजन्मभरइनकीसेवामेंरहा उसकोइन्होंने आ
ज्ञादीकितुमबदरिकाश्रममेंजाकरतपकरो तबतुम्हारीमुक्तिहोगी
और वहकेवटजिसनेइनकेपैरमें बाणमाराथा उसको विमानपर
बैठाकरउसीसमयवैकुण्ठमें भेजादिया येसबदोषहोनेपरभीइनसे
उत्तमत्रैलोक्यमेंदूसराकोई नहींहै इसवास्ते मैं इन्हींकाचरणक
मलदावकर अपनाजन्मस्वार्थकरूंगी यहकहकर लक्ष्मीजी ने
वहीमाला जोहाथमेंलियेथींवैकुण्ठनाथकेगलेमें डालदियातब
भगवान्जीबोले तू आठोंपहरहृदयमेंबसीरहैगी यहदेखतेही दैत्य
ताव दैत्योंनेअतिहर्षसेकहा हेलक्ष्मीजी तुमनेबहुतअच्छाकिया
जो नारायणजीकेगलेमें मालाडालीउसीसमयसमुद्रने मनुष्य
रूप होकर वेदानुसारलक्ष्मीजी का बिवाह नारायणजीसे क
दिया व विश्वकर्माने आभूषण व पृथ्वीनेमोती व रत्नकीमाला
नागोंनेकुण्डलालाकर लक्ष्मीजीको पहिनाया व ब्रह्मा व महादे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दैत्यमहाबलीइंद्रसेलड़नेआये उन्होंनेइंद्रकोदुर्वचनकहकर इत
नेबाणमारेकिइंद्ररथसमेतइसतरहछिपगया जिसतरहसूर्यबदली
मेंदिखलाईनहींदेते जबयहदशादेखकर देवताघबड़ागये तबइंद्र
नेअपनेवज्रसेबलि व पाकदोनोंदैत्योंकोमारकर फिरवहीवज्रनमु
चिपरचलाया व उसवज्रसे नमुचिकाशिरनहींकटा तबइन्द्रनेबहु
त घबड़ाकर मनमेंकहादेखो जिसवज्रसे मैंनेवृत्रासुरको मारकर
पहाड़ोंकी भुजाकाटीथीं उसवज्रसे नमुचिकामस्तक नहींकटा
इससे मालूमहोताहै कि मेरेवज्रकी सामर्थ्यजातीरही यहीशोच
विचार इन्द्रकररहाथा उसीसमययह आकाशवाणीहुई हेइन्द्र
नमुचिको वरदानहै कि किसीगीली या सूखीवस्तुसे यहनहींमरे
गा कोईदूसराउपाय इसकेमारनेकाकरो यहआकाशवाणीसुनते
ही इन्द्रनेसमुद्रकाफेनवज्रमें लपेटकर उसपरचलाया तो उसका
शिरकटगया जबइसीतरहदूसरेदेवतोंनेभीदैत्योंकोमारा तबब्रह्मा
जीनेविचारा किदेवता व दैत्यदोनों मेरीसन्तानहोकर देवतासब
दैत्योंको माराचाहतेहैं ऐसासमझकर नारदजीसेकहा तुमजाकर
देवतोंकोसमझादो कि अबनलड़ें उसीसमयनारदमुनिने जाकर
देवतोंसेकहा तुमने सेनापतियों को मारडाला अब सब दैत्योंको
किसवास्ते मारतेहो और दैत्योंको समझायाअभी दिन तुम्हारे
खोटेहैं मतलड़ो जबनारदमुनिके समझानेसे देवता और दैत्योंने
लड़नाछोड़दिया तबइन्द्रादिकदेवतोंने परमेश्वरकीदयासे विज
य पाकरदुन्दुभीबजाई और अप्सरोंने नाचदिखलाकर गन्धर्वों
ने गानासुनाया जबनारायणजी वैकुण्ठकोगये तबसबदेवता पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेश्वरकायशगातेहुये अपने२लोकमेंजाकरसुख व आनन्दकरने लगेव इंद्र अपनेराजसिंहासनपरबैठा व जबनारदमुनिकीआज्ञासे दैत्यलोग व राजाबलिजिनदैत्योंकाशिरपड़ाथा और सबघायल दैत्योंकोउठाकरअस्ताचलमें शुक्राचार्यकेपासलेगये तबशुक्रने संजिवनीविद्यासे सबदैत्योंकोजिलाकर राजाबलिको बहुतधीर्य दियातबराजाबलिनेहँसतेहुयेहाथजोड़करकहामहाराजआपकी दयासे मैंकुछशोचनहींरखता कभीहमारीजयहोतीहै व कभीदेव तोंकीअबदेवतोंकेदिनअच्छेहैं इसलियेउनकीविजयहुई जबहमा रीदशाअच्छीआवैगी तबहमलोगभी तुम्हारेआशीर्बादसे देवलो कका राज्यपावैंगे यहसुनकर शुक्रजीने राजाबलिकेधीर्य व ज्ञान की बड़ाईकी इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन्तुमने कथाअमृत निकालने व पिलानेकीजो पूंछीथीसो हमनेसुनाई॥

बारहवां अध्याय॥

शुकदेवजी का परीक्षित से मोहनी रूपकी सुन्दरता वर्णन करना॥

इतनीकथा सुनकर परीक्षितने पूछा हेशुकदेवस्वामी मोहनी रूपकैसासुन्दरथा कि जिसेदेखकर सबदेवता व दैत्य ऐसामोहित होगये कि दैत्योंको अमृतपीना भूलगया शुकदेवजीने कहा हे राजन् हमउसरूपका वर्णनकहांतक तुमसेकरें वहमोहनीरूपऐ सासुन्दरथा कि जिसेदेखकर महादेवजीभी जिन्होंने कामदेवको भस्मकियाथा मोहितहोगयेथे देवताऔर दैत्य औरमनुष्यादिक कौनगिनतीमें हैं जो अपनेको सम्हालसकैं यहकथा इसतरहपर है एकदिनपार्वतीजीने शिवशंकरसेकहा विष्णु भगवान्ने जिस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्त्रीरूपसेदैत्योंको मोहलियाथा उसरूपको मैं देखाचाहतीहूं यह सुनतेही शिवजीपार्वतीसमेत नन्दीगणपरचढ़कर वैकुण्ठमें नारायणजीके पासगये तबविष्णुभगवान्ने आदरपूर्वकउन्हैं बैठाकरपूंछा आजकिधरचले तबमहादेवजीने उनकीस्तुतिकरकेविनयपूर्वक कहा हे दीनानाथ जिसस्वरूपसे आपनेदैत्योंको मोहलियाथा उसमोहनीरूपको मैंभी देखाचाहताहूं वैकुंठनाथबोले हेमहादेवजी मोहनीरूपके देखने से कामवशहोकर विह्वलहोजावोगे शिवशंकरनेउत्तरदिया दैत्यलोगअपनेमन औरइंद्रियोंकेआधीनरहकर कामदेवके वश्यहोरहेथे इसवास्तेउनकी वहदशाहुई व मैं अपनीइंद्रियोंको वश्यरखताहूं इसलिये मोहनीरूपदेखकर उसपरमोहितनहूंगा व पार्वतीभीउसरूपको देखनाचाहतीहैं जिसतरहआपहमारीविनतीसदामानतेथे उसीतरहयहइच्छाभीपूर्णकीजिये यहसुनकरज्योतिस्स्वरूपबोले हेभोलानाथतुमहमारेनिर्गुणरूपके चाहनेवालेहोजोघटने व बढ़ने व खाने वपहिरनेसे रहितहोकर किसीकोदिखलाई नहींदेता सोतुमउसीरूपकोदेखाकरो व सगुणरूपमेराउसेदेखनाउचितहैजिसेनिर्गुणरूपदेखनेकाज्ञाननहो जिसमेंसगुणरूपदेखकर निर्गुणरूपसेप्रीतिउत्पन्नकरै औरजोअज्ञानीमेरे निर्गुणरूपकोनहींदेखने सक्ता उसेमैं अपनेसगुणरूपकादर्शनदेकर ज्ञानीबनाताहूं किवहथोड़ासाप्रेमकरनेसे अपनामनोरथपावे जबयहसबबातसुननेपरभीशिवजीने मोहनीरूपदेखनेवास्ते हठकिया तबवैकुंठनाथ हँसकर बोलेकि तुम व पार्वती दोनोंओटमेंजाकरबैठो हमतुमकोमोहनी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रूपदिखलावेंगे परचैतन्यरहना यहकहकर नारायणजी वहांसे
अन्तर्द्धानहोगये जबमहादेव व पार्वतीआड़मेंजाकरबैठे तबइन्द्र
मसुन्दरकी इच्छासे उसजगह एकबाग अच्छाकुंड व बावली व
अनेकरंगकेपक्षी संयुक्तप्रकटहोगया उससमय शिवजी व पार्वती
बड़ीअभिलाषासे चारोंओरदेखकर आपसमेंकहतेथे देखाचाहि
येकिवहरूपकिधरसे प्रकटहोताहै व पार्वतीजीअपनीसुन्दरताके
सामने दूसरीस्त्रीको तुच्छसमझतीथीं इसलिये वहमोहनीरूप
देखनेकी अतिचाहना रखकर यहविचारतीथीं कि देखूंवहरूप
मुझसेअच्छा है यानहीं इसीइच्छासेपार्वती बारम्बार उठकर
बागमें चौगिर्ददेखतीथीं जिससमयमहादेव व पार्वती मोहनी
रूप देखनेके वास्ते बहुत आशारखतेथे उसीसमय अकस्मात
एकदिशासे मोहनीरूप स्त्री अतिसुन्दर उत्तमभूषण व वस्त्र
पहिने प्रकटहुई व मुखारविन्दउसका बिजुलीके समान चम
कताथा व जड़ाऊकरधनी घुंघुरूदार कमरमें पहिने गेंदकपड़े
का बहुतअच्छा व गोल रेशमसेसियाहुआ जिसेलड़के लोग
खेलतेहैं अपनेहाथमेंलिये आकाशमेंउछालकर फिररोंकलेती
थीसोगेंदउछालते व आकाश व पृथ्वीनीचेऊपर देखनेके समय
अनारफलसदृश छातीउसकी दिखलाईदेतीथी तबदेखनेवालों
कामन चलायमान होजाताथा सोवहमोहनी उसबागमें चारों
ओरगेंदखेलतीफिरतीथी जैसेमहादेवजी और उसकी आंखसन्मु
खहुईव उसमोहनीने नयनमटकाकरमुसुकरादिया वैसेशिवजी
उसकारूप व चितवनदेखतेही कामातुरहोकर उसपरमोहित हो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गये और मृगछाला जोपहिनेथे उसेउतारकरफेंकदिया व पार्वती जीको वहांअकेली छोंड़कर उसमोहनीरूपके सन्मुख नंगेचले गये और वहरूपवती महादेवपर कुछस्नेह न रखकर आगेकोच लीतबशिवशंकर उसमोहनीरूपकेपीछे इसतरह विह्वलहोकर दौड़िकि जिसतरहसांड़गायकेपीछे दौड़ताहै व कामदेवने अपना अवसरपाकर शिवजीसेबदलालिया जबमहादेवजी मोहनीरूप केनिकटपहुँचे व उसनेघूंघटकाढ़िकर अपनामुंहछिपालिया तब भोलानाथमुंहछिपालेनेसे अतिव्याकुलहोकर मनमेंकहनेलगे देखोमुझसेबड़ीभूलहुई जोइसकेनिकटआया कि मुखारविंददेख नेसेभी विमुखरहा व पार्वतीजीनेभी वहांजाकर उसस्त्री कीसुन्द रताईदेखीतो अपनेरूपकोउसकेसामनेहजारभागमें एककेतुल्य नहींपाया व पांवउसमोहनीका मोतीकेसमान चमकतादेखकर अतिलज्जासे मनमेंकहा ऐसीसुन्दरी मैंनेकभीनहींदेखीथी इस केसामने मेरीकुछगिनतीनहीं है जबमहादेवजी कामातुरहोकर अतिव्याकुलहुये व बागज्ञानकीहाथसेछूटगई तबशिवजीनेदौड़ कर उसमोहनीको अपनेगलेसेलगालिया सो वहछिटककर आ गेकोचली जबगोदमेंलेनेसे शिवजीअतिविह्वलहोगये तबउसके पीछेपकड़नेकेवास्ते दौड़ेपरवहमोहनी इसतरहचमककर निकल जातीथी कि दौड़नेपरभी शिवजीकाहाथ उसकेअङ्गतक नहीं पहुँचताथा उसीसमयवहसुन्दरी एकबेरमहादेवजीकी दृष्टिसे अंतर्द्धानहोकर एकक्षणमें फिरप्रकटहुई तबशिवजीने झपटकर उसेपकड़लिया परवहमहादेवकोझटककर फिरबिलगहोगई जब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसखींचा खींचीमें वस्त्र मोहनीरूपका ढीलाहोकर गिरपड़ा तब शिवजीनेउसेनंगेदेखा औरकामवशहोकर उसेगोदमेंउठालिया व मोहनीभगवान्की इच्छानुसार उसेगोदमेंलियेहुये उसीतरह ऋषीश्वर व मुनीश्वरोंके स्थानपर भटकाकिये जब शिवजी बहुतदौड़नेसे थककरऋषीश्वर व मुनीश्वरों के निकट अतिलज्जितहुये व मोहनीरूपको गोदमेंलेनेसे ज्ञान व धैर्य्यउनका छूटकरवीर्य्यगिरपड़ा तबमोहनीभगवान् यहदशाउनकीदेखकर वहांसेअन्तर्द्धानहोगये सोजहां २ महादेवजीका वीर्य्यगिराथा व हांसोना व चांदी व पारेकीखानिउत्पन्नहुई व वीर्य्यगिरने व अन्तर्द्धानहोने मोहनीरूपसे महादेवअतिलज्जित व उदासहोकर एकबृक्षकेनीचेबैठगये औरयहइच्छाकरनेलगे किकदाचित्फिर वहमोहनीप्रकटहोवे उसीसमयपार्वतीजीवहींपहुँचगईं उन्हेंदेखतेही महादेवनेअतिलज्जितहोकर मनमेंकहा किदेखोमैंकाम व क्रोध व मोह व लोभकोअपनेवशजानकर हजारोंवर्षसमाधिमें बैठाथासो इसमोहनीरूपके देखनेसेसबज्ञानभूलकर विह्वलहो गयाऔर उसकेपीछेबौड़होंके समानदौड़तारहा व अपनाधैर्य व बड़ाईछोड़करमुनि व ऋषीश्वरोंकेनिकट अपनाउपहासकराया इससेमुझेमालूमहोताहै कि मैंनेकामदेवको अपनेवशरखनाकहकर नारायणजीसे मोहनीरूपदेखनेकाहठकियाथा इसीवास्ते गर्वप्रहारी भगवान्ने ज्ञानहरकरमेरीयहदशाकी संसारमें जोलोग अपने ज्ञानकागर्वरखते हैं उनकोमूर्खसमझनाचाहिये परमेश्वरकीमाया ऐसीप्रबलहै कि जिससे कोईनहींछूटनेसक्ता ऐसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विचारकरमहादेवजी अतिचिन्ताकरनेलगे जबपरमेश्वरनेदेखा कि भोलानाथ मेरेपरमभक्तअतिलज्जितहोकर उसीशोचमें अपनातनु छोड़नाचाहतेहैं तबविष्णुभगवान् चतुर्भुजी स्वरूप से शिवजीकेपास आनकरप्रकटहुये व महादेवकाहाथपकड़कर आदरपूर्वकबोले हेसदाशिव तुमकुछचिन्तामतकरो यहमोहनीरूप देखनेसेयोगी व मुनिआदिक किसीकाज्ञान एकाठिकानेनहीं रहता व मायारूपी स्त्रीकी चाहनासे बड़े २ ऋषीश्वर व महात्मा व संसारीजीवअपनाधर्म व कर्मछोड़देतेहैं तुमसंसारीजीवोंसे बिलगहो नहींतोइसमायारूपी समुद्रमेंचैतन्यरूपकौन नहींडूबा इस सागरसेकोई बाहरनहींनिकलनेसक्ता देखोशुम्भनिशुम्भ दैत्यदोनोंभाई कैसेबलवान्थे जबभवानीरूपीमेरीमाया उनकेपासगई व उनदोनोंभाइयोंने चाहा कियहसुन्दरीहमारेपासरहे तबमायारूपीभगवतीने उनदोनोंसेकहा कि तुमदोनोंमें जो अधिकबली हो उसकेपासमैंरहूंगी सोदोनोंभाई मायारूपीभवानीके वास्ते आपसमें लड़करमरगये सिवायउनके और बहुतसेदेवता व दैत्य व मनुष्य व ज्ञानीलोगोंने कामदेवकेमदमें नष्टहोकर कामरूपी शत्रुसेहारमानीहै इसलिये स्त्रीरूपीमायाको अतिप्रबलसमझना चाहियेपर तुमकोमेरीमायानहींव्यापैगी किसवास्ते कितुमसदा मेरीचर्चा व ध्यानमेंरहतेहो कदाचित्तुमकहो किइससमयमोहनीरूपमायाक्यों मेरेऊपरव्यापी उसकायहकारणहै कितुमनेमेरे निर्गुणारूपकाध्यानछोड़कर अपनेकोहमसे बिलगसमझा व मेरीमायाकाकौतुकदेखनाचाहा इसलिये तुम्हारीयहगतिहुई अब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमधैर्य्यरक्खो फिरमेरीमायातुमकोनहींव्यापैगी जबनारायण जीने इसतरहशिवजीका बोधकिया तबवहधैर्य्यधरकर वैकुंठना थको दंडवत्करकेबिदाहुये वकैलासपर्वतपरआनकर पार्वतीजी सेकहा तैंनेनारायणजीकी मायाकाचरित्रदेखा मैं इन्हींज्योति स्वरूपकाध्यानजो मेरेइष्टदेवहैं आठोंपहरकरताहूं इतनीकथा सुनाकरशुकदेवजीबोले हेराजन्जो मनुष्यसमुद्रमथनकी कथा सुनकर कोईउद्यमकाआरम्भकरै तो उसव्यापारमें उसकामनोर थ पूर्णहोताहै॥

तेरहवां अध्याय॥

शुकदेवजी का आठ मन्वन्तरों की कथा राजा परीक्षित से कहना॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित एकमन्वन्तर इकहत्तर चौकड़ीयुग पर्यंत इन्द्रराज्यकरताहै व हरमन्वन्तरमें परमेश्वर एकअवतार धारणकरते हैं व दुःखदायी और अधर्मियों को मारकर धर्मकी रक्षाकरतेहैं व चिरञ्जीव ऋषीश्वरकीआयुर्बल एकमन्वन्तरहो कर ब्रह्माकेदिनमें चौदहइन्द्र राज्यभोगतेहैं सोछःमन्वन्तरकी कथा हमनेतुमसेवर्णनकी अबसातवांमनु विवस्वान्कापुत्र श्राद्ध देवनाम जोवर्त्तमानहै इसमन्वन्तरमें इक्ष्वाकुआदि मनुकेदशबे टे व आदित्य आदिक देवता व अगस्त्य व अत्रि व वशिष्ठ व वि श्वामित्र व गौतम व जमदग्नि व भरद्वाजसप्तऋषि व पुरन्दरना मइंद्रहोकर कश्यपजीके अदितिनाम स्त्रीसेबामनअवतार परमे श्वरकाहुआथा उसकीकथाहमपीछेसे विस्तारपूर्वककहैंगे आठ वांसावर्णिनाम मनुनिर्मेकादिक उसकेपुत्र सुतपालादिकदेवता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व बलिनामइन्द्र व दीप्तनामआदिक सप्तऋषीश्वरहोंगेऔर नारायणजी सार्वभौमनामअवतारलेकर राज्यइन्द्रलोकका इंद्रसे छीनिकै राजाबलिकोदेवेंगे नवांदक्षसावर्णिनाममनु व भूतकेतु आदिउसकेपुत्रमारीचिआदिकदेवता व अभूतनामइंद्र व द्युति आदिसप्तऋषिहोंगे औरऋषभनाम भगवान्का अवतारहोगा दशवांब्रह्मसावर्णिनाममनु व भूषणआदिकउसकेबेटे हविष्मन्त आदिकसप्तऋषीश्वर वसत्यादिकदेवता व स्वायम्भूनामइन्द्रहोकरपरमेश्वरअमूर्तिनाम अवतारलेवेंगे ग्यारहवांधर्मसावर्णिनाममनु व अनागतआदिक उसकेपुत्र व बिहंगमआदिदेवता वबैधृतनाम इन्द्र व अरुणादिक सप्तऋषीश्वरहोकर नारायणजी धर्मसेतुनाम अवतारधारणकरैंगे बारहवां रुद्रसावर्णिनाम मनु व देववामनआदिक उसकेबेटे व राजधामा इन्द्र व हरितआदिक देवता व तपमूर्त्तिआदिक सप्तऋषीश्वरहोकर सुधानाम भगवान् काअवतारहोगा तेरहवां देवसावर्णिनाममनु व चित्रसेनआदिक उसकेबेटे व सुकर्मआदिदेवता व दिवस्पतिनाम इन्द्र व निर्मेकआदिक सप्तऋषिहोकर परमेश्वर योगीश्वरनाम अवतारलेवेंगे चौदहवां इन्द्र सावर्णिनाममनु व उरुगम्भीरआदिउसकेबेटे व पवित्रआदिकदेवता व शुचिनामइन्द्र व अग्निबाहुसप्तऋषीश्वर होकर वृहद्भानुनाम परमेश्वरका अवतारहोगा हेराजन् येचौदह मन्वन्तर ब्रह्माकेएकदिनमें भोगकरतेहैं उनकीकथा हमनेतुमसे वर्णनकी व सबकल्पोंमें यहीमनुअदलबदलकर राज्यभोगतेहैं॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौदहवां अध्याय ॥

इन्द्रादिक देवतों की कथा ॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर शुकदेवजीसेपूछा किमहा राज आपनेबहुतअच्छीकथा परमेश्वरकीमुझेसुनाई अबदयालु होकर यहकहिये किमनुआदिक अपनेराज्यमें क्याकामकरतेहैं शुकदेवजीबोले हेराजन् हरमन्वन्तरमें मनु व मनुकेबेटे परमेश्व रकीआज्ञानुसार पृथ्वीपर दिग्विजय व धर्मकाप्रचारकरतेहैं व दे वतालोग यज्ञोंकाभाग व आहुति व पूजालेतेहैं व राजाइंद्र दैत्यों कोमारकर तीनोंलोककेजीवोंकी रक्षाकरते हैं व सप्तऋषीश्वर योगसाधकर जोवेदगुप्तहोजाताहै उसेसंसारमेंप्रकटकरतेहैं व भग वान् आपअवतारधारणकरके दुष्ट व अधर्मियोंकोमारकर गौब्रा ह्मण व हरिभक्तोंकीरक्षाकरतेहैं व चौदहोंमन्वन्तरमें यहीबातेंहो तीहैं और यज्ञप्रलयमें वहीपरमेश्वरकालरूपहोके सबजीवोंको मारडालतेहैं व संसारीमनुष्यअपनेबड़े व छोटेकामरनादेखनेपर भी ईश्वरकीमायामेंलपटकर अपनीमृत्युकाविचारनहींकरतेजि सतरहतालाबकापानी प्रतिदिनसूखाजाताहै व मालूमनहींहोता उसीतरहआयुर्दामनुष्यकी घटतीजातीहैपरवेअपनेमरनेसेनिडर रहकर परलोककाशोचनहींकरते इसलियेमनुष्यकोउचितहैकि दिनरातअपना मरनाविचारकरकुकर्मनकरै व परमेश्वरकाध्यान व स्मरणकरतारहै जिसमेंउसकापरलोकबनै इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् जोलोग इनचौदहोंमन्वन्तरकी कथा सुनकर प्रातःसमय उनकोयाद व ध्यानकरतेहैं उनकोधर्म व ज्ञान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्राप्तहोताहै व देवताआदिपरमेश्वरकीशक्तिहैं उनकाध्यानकरने सेभी पापछूटजाता है ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

राजा वलिको शुक्र गुरूकी कृपासे इन्द्रलोक का राज्य छीनलेना ॥

राजापरीक्षितइतनीकथा सुनकरबोले हेस्वामीप्रथमआपने कहा कि नारायणजीनेबामनअवतार धारणकरके राजाबलिसे भीखमांगी व राज्यउसकाछलसेलेकर देवतोंकोदिया इसबात का मुझेबड़ासंदेहहै कि राजाबलिको ऐसीसामर्थ्यथी जोपरब्रह्म परमेश्वरनेउससे भिक्षामांगकरदानलिया व दानलेनेउपरान्त फिरकिसवास्ते यज्ञकरतेसमयउसेबांधा इसकोविस्तारपूर्वक कहिये शुकदेवजीबोले हेराजन्जबनारायणजीकीकृपासे देवतोंने अमृतपीकर दैत्योंको लड़ाईमेंजीतलिया और अपनीराजगद्दी पाई व राजाबलिने दैत्योंसमेत अस्ताचलमें रहकर बहुतदिनों तकसेवाटहल अपनेगुरूकीप्रेमपूर्वककी तबशुक्राचार्यगुरू अति प्रसन्नहुये और राजाबलिको प्रयागक्षेत्रमें लाकरउससे विश्वजितनामयज्ञकराया यज्ञसम्पूर्णहोतेही अग्निकुण्डमेंसे एकरथ सुनहरा व चारघोड़े व एकशंखकीध्वजा व एकधनुष व तर्कस जिसकेतीरनहींघटतेथे व खड्ग व दिव्यकवच निकला व एक मालाफूलकी प्रह्लादभक्तने राजाबलिअपने पोतेकोदी व शुक्राचार्य गुरूनेएकशंख राजाबलिको देकरकहा तुझेअपनेयोगबल सेवरदानदेतेहैं कितुमइन्हींघोड़ोंको इसरथमेंजोतो और यहीध्वजालगाकरचढ़ो और यहदिव्यकवच अपनीभुजापरबांधकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहीधनुषबाणउठालो और यहमाला पहिनके मेरा दियाहुआ शंखबजाकर देवतोंपर चढ़ाईकरो नारायणजीकीदयासे तेरीवि जयहोगी राजाबलि यहवरदानपाकर अतिप्रसन्नहुआ और शुक्राचार्यकी आज्ञानुसार शुभसाइतिमें अपनेगुरू व दादाको दण्डवत्करके उसीरथपरचढ़ा व अनेकशूरवीरों को संगलेकर बड़ीधूमधामसे इन्द्रपुरीकोघेरलिया हेराजन्इन्द्रकीअमरावती पुरीमें अतिउत्तमस्थान व बाग व तड़ागादिक सोनहुले रत्नजटि तरहकर सबस्त्री व पुरुष सोलहवर्षके किशोरअवस्था बनेरहते हैं और वहांकेसबजीव नीरोगितरहकर बहुतअच्छाभूषण व वस्त्र पहिनतेहैं व सबस्त्री व पुरुषआपसमें आनन्दपूर्वकभोग व विला सकरके जड़ाऊविमानोंपर चारोंओरसैर व विहारकियाकरतेहैंहे राजन् उसस्थानकीबड़ाई कहांतककहूं वहांकावृत्तान्त देखनेसे मालूमहोताहै परलालची व क्रोधी व कुकर्मी व अहंकारी व अ पनाशरीरपालनकरने व मांसखानेवालेमनुष्य वहांजानेनहींस क्के जबराजाबलिने वहांपहुँचकरवहीशंखबजाया तबइन्द्रादिक देवता वहशब्दसुनकर मारेभयके कांपउठे परलाचारीसे जबरा जाबलिके सन्मुखलड़नेवास्तेआये तबउसकेतेजसे देवतोंका अ ङ्गजलनेलगा सोदेवतालोग अमृतपीनेपरभी दैत्योंसेहारमान करभागगये व राजाबलि तीनोंलोककाराज्य देवतोंसे छीनकर इंद्रासनपर बैठा व देवतोंनेजाकर बृहस्पति गुरूसेपूछा महाराज हमलोगोंकीपराजय किसवास्तेहुई बृहस्पतिबोले शुक्राचार्यके आशीर्वाद व वरदानदेनेसे दैत्योंनेविजयपाईहै तुम्हारेऐसे सोईंद्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इकट्ठेहोकर राजाबलिकासामनाकरैं तोउसशंखकेप्रतापसे हार जावेंगे सिवायपरब्रह्म परमेश्वरके दूसराकोई उसकासामनानहीं करसक्ता जोकोईगुरू व ब्राह्मणकीसेवा विधिपूर्वककरताहै उसके सबमनोरथ पूर्णहोतेहैं यहवचन सुनतेही देवता अधैर्य्यहोकर मुरैला व हरिणआदिककारूपधरकेवहांसेभागे व किसीजगहछिपकरअपनेदिनकाटनेलगे जबराजाबलि तीनोंलोककाराज्यपाकर अतिप्रसन्नहुआ तबउसनेअपनातेज व बलबढ़ानेकेवास्ते भरतखण्डमें यज्ञकरना विचारकर शुक्राचार्य गुरूसे विनयपूर्वक कहा महाराज आपकोई ऐसाउपायकरैं जिसमेंसदामेरा राज्य स्थिररहै शुक्रजीबोले हेराजाबलि तुमसौवर्षतक बराबरयज्ञकरो व बीचमेंकिसीसाल विघ्न न होकर सौयज्ञअच्छीतरह सम्पूर्ण होजावें तबतुम्हाराराज्य सदास्थिररहनेसक्ताहै बिनासौयज्ञकिये इंद्रभीदेवलोककाराज्यनहींपाता यहवचनसुनतेही राजाबलिने गुरूकीआज्ञानुसार हरसालयज्ञकरनाआरम्भकिया जबनिन्नानबेयज्ञ अच्छीतरहहोकर सौवांयज्ञ सम्पूर्णहोनेकेनिकट पहुँचा तबराजाबलि बहुतप्रसन्नहुआ व उसने इतनादान व दक्षिणा ब्राह्मण व कङ्गालोंकोहरयज्ञमेंदिया किकिसीकोकुछइच्छानहीं और कोईमंगनउसकेद्वारसे विमुखनहींफिरा व संसारमें बड़ीकीर्ति उसकी फैलिगई॥

सोलहवां अध्याय॥

अदितिको इन्द्रके राज्यपानेवास्ते अपने पति कश्यपजीकी सेवा करना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जबइन्द्रने यहसमाचारपाया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि राजाबलि अपनाराज्यसदा स्थिररहनेकेवास्ते सौयज्ञकरना चाहताहै तब उसेबड़ाशोचहुआ व अदितिदेवतोंकीमाता अपने बेटोंकाराज्यछूटजानेसे सदाचिन्तामें रहाकरतीथी जबउसनेदेवतोंसेवृत्तान्त सौयज्ञकरने राजाबलिकासुना तबउसको अधिक शोचउत्पन्नहुआ सो एकादिनवह उसीचिन्तामेंडूबीहुई कश्यप जीअपने पतिकेपास चुपचापबैठीथी उसेउदासदेखकर कश्यप जीनेपूछा हेअदितिआजहम तुझेबड़ेशोचमेंदेखतेहैं इसकाक्या कारणहै तेरेद्वारेपरसेकोईमंगन व अतिथिभूखातो फिरकरनहीं चलागया या तैंनेकिसीब्राह्मणको दानदेनेकहाथा सो नहींदिया इसलियेतेरामुखमलीनहै यहवचनसुनतेही अदितिहाथजोड़कर बोली हेस्वामीमेरेद्वारेसे कोई अभ्यागतभूखा फिरकरनहींगया परमैं अपनेबेटोंकाशोच जिनकाराज्य दैत्योंनेछीनलिया व उन कीस्त्रियांभागकर पहाड़ोंकीकन्दरामेंछिपी हैं दिनरातशोचकर तीहूं उसीकारण मेरातेजहीनहोगयाहै सो आपदयालुहोकरकोई ऐसा उपायकीजिये जिसमेंदेवताफिर अपनाराज्यपावें तबकश्यपजीबोलेदेवता व दैत्यदोनोंमेरी सन्तानहोकर अपनेअज्ञानसे यहनहींसमझतेकि जोनारायणजीचाहतेहैं सोहोताहै मेराकिया कुछनहींहोसक्ता कोई किसीकाबाप व बेटानहोकर यहसब परमेश्वरकीमायासमझनाचाहिये देवतोंकेराज्यभोगनेकेसमय दितितेरीसवतिरोतीहै व जब दैत्यलोगराजाहोतेहैं तब तू उदासहोती है मुझेकिसीतरहछुट्टीनहींमिलती सो तू बीचशरण परमेश्वरके जाकर उनकाव्रतरख तो तेरामनोरथपूर्णहोगा यहबात सुनकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अदितिने विनयकिया महाराजमुझेव्रतलादोपरमेश्वरकाव्रत किसतरह कर नाहोगा तबकश्यपजीबोले तुमफाल्गुनसुदीप्रतिपदासे नित्यशिव व्रतजो ब्रह्मानेमुझे बतलायाथा रखकरब्रह्मचर्यरहोसि वायदूधके और कुछभोजन न करकेपृथ्वीपरसोयाकरो व शूकर कीखोदीहुई मिट्टीप्रतिदिनअङ्गमें लगाकेस्नानकियाकरो व उसी मिट्टीकीमूर्त्तिनित्यबनाके वासुदेवमंत्रसे विधिपूर्वकपूजाकियाकरो और एकसौआठआहुति खीरसेअग्निमें होमकरके उसीखीरकाभोगलगाय बारहदिनतकयहव्रतरखकर दिनरातनारायणजीकेचरणोंका ध्यानकियाकर फाल्गुनसुदीद्वादशीकोउद्यापन उसकाकरके ब्राह्मणोंको अच्छे २ पदार्थखिलाय व बहुतसादान व दक्षिणाआचार्य व ब्राह्मणपूजा व होमकरानेवालेकोदेव व आनन्दपूर्वक उसेबिदाकरके रातकोजागरणकरो तबतुम्हारीकामनापूर्णहोगी यहव्रतसबयज्ञादिकोंसे उत्तमहोताहै ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

अदितिका कश्यपजीकी आज्ञानुसार व्रत आरम्भ करना ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित अदितिने उसीतरहव्रतरखकर शुद्धअन्तःकरणसे परमेश्वरके चरणोंकाध्यानकिया तबव्रतसम्पूर्णहोनेउपरांत आदिपुरुष भगवान्ने प्रसन्नहोकर चतुर्भुजीरूपसेजड़ाऊमुकुटपहिने वैजयन्तीमालागलेमेंडाले मन्द २मुसकराते हुये उसको दर्शनदिया जबअदितिने उसमोहनीमूर्तिको देखतेही अतिहर्षसे दण्डवत् व पूजा व परिक्रमाकरकेस्तुतिकी तबनारायणजीनेकहा तूक्या चाहतीहै जोकछइच्छाहोसोवरदानमांग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदतिहाथजोड़करबोली हेमहाप्रभुअन्तर्यामी मुझेयहीअभि
लाषाहै जिसमेंदैत्योंसे राज्यछूटकर इन्द्रादिकदेवता मेरेबेटोंको
इंद्रासनमिले वहउपायकीजिये यहबातसुनकर नारायणजीने
कहा हेअदितितूचाहतीहै किजिसतरह इंद्राणी आदिकतेरीपतोहू
दुःखपातीहैं उसीतरहदैत्योंकी स्त्रियांभीकष्टपावें सोराजाबलिने
सौयज्ञकरके मुझेप्रसन्नकिया और वहगुरु व ब्राह्मणकी भक्ति
रखताहै इसकारणमैं उसकाराज्य बरजोरीछीनकर नहींलेसक्ता
धर्मात्मा व हरिभक्तोंपर मेराकुछवशनहींचलता परतैंनेभी मेरा
व्रतरखकर मुझेअतिप्रसन्नकियाहै इसलियेतेरेवास्ते छलकरके
राजगद्दीदैत्योंसेलेकर देवतोंकोदेवेंगे यहवचनसुनकर अदितिने
विनयकिया महाराजमैं चाहतीहूं तुममेरेगर्भसे अवतारलेकर
देवतोंकीसहायताकरो जिसमेंवेलोगअपनाराज्यपावैं आदिपुरुष
बोले बहुतअच्छा तेरामनोरथपूर्णहोगा ऐसावरदानदेकर अन्त
र्द्धानहोगये व उसीदिनअदितिके कश्यपजीसे गर्भरहकरमुखार
विन्दउसका सूर्यकेसमान चमकनेलगा जबदशवेंमहीने बालक
होनेकासमय निकटपहुंचा तबब्रह्मा व महादेवादिक देवतोंने अ
दितिके स्थानपरआकर गर्भस्तुतिकरके विनयकिया हेवैकुण्ठ
नाथ आपदेवतोंके छुड़ानेवास्ते अवतारलेतेहैं सिवायतुम्हारे
और कौनउनकी सुधिलेनेसक्ताहै यहस्तुति सुनतेहीआदिपुरुष
भगवान्ने भादौंसुदीद्वादशी मध्याह्न समयमें चतुर्भुजीरूपसे
प्रकटहोकर अपनेमाता व पिता व देवताआदिक जोलोगवहां
थे सबकोदर्शनदिया उनकोदेखतेही सब छोटेबड़े प्रसन्नहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दण्डवत् करनेलगे फिरउसीसमय परमेश्वरने वामनरूपअपना अतिसुंदरछोटाअङ्ग जिसतरहकोई बालकब्रह्मचर्यहोकर अपने घरसे विद्यापढ़नेवास्ते बाहरनिकलै उसीतरहधारण करलिया जबकश्यप व ब्रह्माआदिकदेवतोंने उनकावामनतनुदेखा तब उन्होंनेकोपीन व अँगौछा व करधनी व दण्ड व कमण्डलु व छत्रादिकसबवस्तु ब्रह्मचर्यकीवहांलादीं व ब्रह्मानेवेदानुसारउन कायज्ञोपवीतकिया व देवतोंसमेतस्तुति व परिक्रमाकरके उन परफूलवर्षातेहुये अपने २ स्थानकोचलेगये व अप्सरोंनेअपने २ विमानोंपरआनकर आकाशमेंसेनाचदिखाया व गन्धर्वोंनेगाना सुनाया और कश्यपजीने उनकीबहुतस्तुतिकी उससमयतीनों लोकमें आनन्द व मङ्गलाचारहोगया॥

अठारहवां अध्याय॥

बामनजीका राजाबलिकी यज्ञशालामें जाना व तीन पग पृथ्वीदान उनसे मांगना॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित वामनभगवान्ने यज्ञोपवीतहोने उपरान्तस्वरूप अपनाब्रह्मचारीकेसमानबनालिया व दण्डकमं डलुहाथमेंलेकर कश्यप व अदितिकेस्थानसे बाहरनिकले पृथ्वी दानलेनेकी इच्छारखकर नर्मदाकिनारेको जहांपरराजाबलिय करताथाचले उससमयपृथ्वी यहविचारकरकांपनेलगी देखो परमेश्वरत्रिलोकीनाथ चौदहभुवनकेमालिकहोकर आपपृथ्वी मांगनेकेवास्तेजातेहैं जबवामनभगवान् अतितेजवान्रूपसे य ज्ञशालामेंपहुँचे तबबड़े २ ऋषीश्वर व ब्राह्मण वराजाबलि व शु क्राचार्यादिक जितनेलोगवहांबैठेथे उनकाप्रकाशदेखकर उठख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ड़ेहुये व इससूरतकानाटामनुष्यकभीउन्होंनेनहींदेखाथा इसलि
ये वामनरूपकोदेखकर आश्चर्यकरनेलगे व राजाबलिनेवामन
जीको जड़ाऊसिंहासनपर बैठाकरहाथजोड़के विनयकिया हे ब्र
ह्मचारीमहाराजमैंनेगुरु व ब्राह्मणकेआशीर्वादसे निन्नानबेयज्ञ
सम्पूर्णकिये और यहसौवांयज्ञकरताहूं बहुतअच्छाहुआ जोइस
यज्ञमें आपऐसेमहापुरुषकेचरणआये व तुम्हारादर्शनपानेसे मे
राभाग्यउदयहुआ और पितृलोगकृतार्थहुये सोहेबालकरूप ब्र
ह्मचारी जिसतरहआप बिनाबुलाये दयालुहोकर यज्ञमेंपधारे हैं
उसीतरहआपको गो व स्थान व बाग़ व हाथी व घोड़ा व द्रव्य व
रथ व पालकी व गांव व पृथ्वी व नगरआदिकजिसवस्तुकीइच्छा
हो सोकहिये मैंतुम्हारेभेंटकरूं व तुम्हैंबिवाहकीअभिलाषाहो तो
अच्छेकुलमेंबिवाहकरादूं व हेब्रह्मरूप तुम्हाराअङ्गछोटादिखला
ईदेताहै पर मुखारविंदकेप्रकाशसे आपमुझेमहापुरुषमालूमहो
तेहैं जोकुछमांगोसोदेसकताहूं अपनेप्राणतक देनेमेंभी लोभनहीं
करूंगा यहवचनसुनकर वामनजीबोले हेराजन्तुम्हारीबुद्धिव
ड़ाईकेआगे यहसबबातकौनकठिनहै तुमप्रह्लादभक्तके वंशमेंजा
कश्यपजीकापोताथा उत्पन्नहोकरशुक्राचार्य ऐसामहात्मागु
रखतेहो क्योंकरतुमधर्मात्मानहो सो मैंबहुतलोभ न रखकरके
लतीनपगपृथ्वी तुमसेदानलेनेचाहताहूं जहांआसनकुशका दि
छाकरहरिभजनकरूं यहबातसुनतेही राजाबलिहँसकरबोला
ब्रह्मचारीआपने मुझसेक्या थोड़ीबस्तुमांगी किसवास्तेइतनी
मिमांगनहींलेते जिसमें तुम्हारास्थानतैयारहो व खेतीकरके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीभगवान् को वामन का अवतार लेके राजा बलि को छलना और विराट रूप धारण करना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चित्र नं॰ १२ सुखसागर अष्टम स्कन्ध पृष्ठ ५५४

श्रीभगवान्‌जी को मत्स्य अवतार लेना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्नतासे अपनाप्रतिपालकरो और फिरतुम्हेंसंसारमें किसीबस्तु
की इच्छानरहकर दूसरेकिसीसेकुछमांगनानपड़े तबभगवान्जी
बोले हेराजन्अपनेप्रयोजनभरमांगना अच्छाहोकर लोभसेअ
धिकलेना प्रतिग्रहदान समझनाचाहिये सोहमसन्तोषीब्राह्मण
होकरसिवायतीनपगपृथ्वीके और किसीबस्तुकी इच्छानहींरखते
व तुम्हारीगिनतीबड़ेदानियोंमेंहै जोतुमनेमुझे इच्छापूर्वकदान
मांगनेवास्तेकहा नहींतोदूसरेसंसारीमनुष्य अपनीसामर्थ्यप्रमा
ण दानदेतेहैं हेविरोचनकेपुत्र तुम्हारेपुरुषा ऐसेदानी व शूरवीर
हुयेहैं जिन्होंनेकभीदानदेनेसेहाथ व रणभूमिसे मुँहअपनानहीं
फेरा व उसकुलमें कोईलालची व अधर्मीनहींहोकर हिरण्यक
शिपु व हिरण्याक्षतुम्हारेपरदादे ऐसेप्रतापीहुये जिन्होंनेदेवतों
कोजीतकर तीनोंलोककाराज्यकियाथा यहबातसुनकर राजा
बलिबोलातुमब्राह्मणकेबालकहोकर अपनाअर्थसिद्धकरनानहीं
जानते तुम्हारेमुखारविन्दकाप्रकाशदेखने व बातोंसे मैंआपको
बड़ामहात्मासमझताहूं परतीनपगपृथ्वीमांगनेसे तुममुझेदरिद्री
मालूमहोतेहो मेरेद्वारेपर जो ब्राह्मण व मंगनआताहै फिर उसे
जन्मपर्यंतदूसरीजगहजाने व मांगनेकाप्रयोजननहींरहता इस
लियेमुझेतुम्हारे ऐसे महात्मापुरुषको तीनपगपृथ्वीदानदेतेहुये
लज्जामालूमहोतीहै वामनजीनेकहा हेराजन्लोभबहुतनिषिद्ध
होकर अधिकतृष्णारखनेसे ब्राह्मणकातेज व धर्म्मनहींरहता व
सन्तोषरखनेसे ब्राह्मणकातेज व बल व गुण अधिकहोताहै व
लालचीमनुष्य देशविदेशफिरकर करोड़ोंरुपयेकमावै व तीन

CC-0. In Public Domain. Uttar Pradesh State Museum, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोककाराज्यपावै व बहुतसेबेटे व नाती उसकेउत्पन्नहोवैं तिस परभीउसकीइच्छापूरीनहींहोती जिसतरहआगिमें घीडालनेसे अग्निकीज्वालाबढ़ती है उसीतरहलोभीमनुष्य बहुतमिलनेपर भी तृष्णाबढ़तेजातेहैं सन्तोषरखनेसे तीनपगपृथ्वीहमकोबहुत है कदाचित्सन्तोषमुझे न होगा तो सातोंद्वीपकाराज्य मिलनेसे भी मेरीचाहनानहींछूटैगी इसलिये मैं सिवाय तीनपगभूमिके और कुछनहींचाहता व बिनासन्तोषकिये संसारमेंसुखनहींहोता अधिकतृष्णारखना दुःखकीजड़समझनाचाहिये॥

दो॰ अर्ब खर्बलों द्रव्यहै उदय अस्तलों राज। तुलसी जो निज मरणहै तो आवै केहि काज॥

उन्नीसवां अध्याय॥

बलिका वामनजीको तीनपग पृथ्वी दान देनेवास्ते तैयार होना॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित यहबातवामनजीसे सुनकर राजा बलिनेकहाबहुतअच्छा चरणअपनाआगे लाइये मैं उसे धोकर तीनपगभूमि संकल्पदूं जैसे वामनजीने पांवअपनाआगे बढ़ाया वैसे राजाबलिने चरणउनकाधोकर वहजलअपनेशिर व आंखों मेंलगाया व वेदानुसारउसचरणकोसाथ धूपदीपादिकके पूजकर अपनीस्त्रीसे संकल्पकरनेवास्ते पानीमांगा जबरानीविन्ध्यावली झारी गङ्गाजलकीउठालाई व राजातीनपग पृथ्वीदानदेनेवास्ते तैयारहुयेतबशुक्राचार्य्य अपनेज्ञानसे वामनजीकोपहिचानकर उठे व राजाबलिकेपासजाकर कानमेंकहा हेराजन् तुमनेइनको नहींपहिचाना इन्हेंछोटासाब्रह्मचारी मतसमझो येआदिपुरुषभ गवान्देवतोंकी सहायताकरनेवास्ते ब्राह्मण वामन अवतार धरकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेराराज्यलेनेआयेहैं तीनपगदानलेनेके बहानेसे तीनोंलोकले करदेवतोंकोददेवैंगे तू इनकेछलमें मतआव कदाचित् तुमऐसा कहोकि तीनपगभूमिदेनेवास्ते इन्हेंकहिचुकाहूं तो उत्तरउसका यहहै कि राजाजोकुछदेश व धनरखताहोउसमेंपांचभाग होना चाहिये एकवास्ते धर्म व दूसरायश व तीसराअपने प्रयोजन व चौथास्त्री व पुत्रपांचवांसेवकोंकोहोताहै इसलियेपांचवांभाग अ पनेदेश व धनमेंदानकरना उचितहोकर ऐसानहींकहाहै जोसब राज्य व धनदेकरपीछेसेदुःखउठावे यहीबातवामनजीसे कहिदेव नहीं तो अपनेदोपगमें चौदहोंभुवन तेराराज्य येनापलेवैंगे व तू तीसरापगभूमि नहींदेनेसकैगा धनजाने व गो ब्राह्मणकीभलाई होनेकेस्थानपर झूठबोलना अधर्मनहींहोता इसलिये तू अपने वचनसेफिरजा तुझेपापनहोगा यहबातसुनतेहीराजाबलिनेचार घड़ीतक शोचकरकेविचारा किशुक्रगुरुकाकहना न माननामेरे वास्ते अच्छानहींमालूमहोता व ब्राह्मणसेबातहारकरअपनावच नछोड़देना उससेअधिकनिषिद्धहै उन्हींनारायणजीनेहिरण्यक शिपुमेरेपरदादेकोजिसनेमुँहमांगे वरदानब्रह्मासेपायेथे मारकर राज्यउसकाछीनलियासोवहीत्रिलोकीनाथ मेरेघरआनकरतीन पगपृथ्वीभिखारीके समानदानमांगतेहैं इसलियेमुझकोअपना राज्य व धन व प्राणइनकेऊपरनिछावरकरदेनाउचितहै कदाचि तमैं शुक्रगुरुकीआज्ञानुसार दानदेनेमेंवचनछोड़दूंगा तो इनमेंय हभीसामर्थ्यहै किमुझेमारकर सबराज्य व देशमेराछीनलेवैंगे तबक्यागुणकिलैगा और जो नारायणजीकीइच्छाहोगी वैसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होकर उसमेंतिलभरघटने व बढ़नेनहींसक्ता इसलिये जोमैंनेती
नपग पृथ्वीदानदेनेका वचनकियाहै उससेफिरना न चाहिये॥

बीसवां अध्याय॥

राजाबलिका वामनजीको तीनपगपृथ्वी संकल्प कर देना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षितराजाबलियहबात विचारकरशु
क्राचार्यसेबोले महाराजआपकहतेहैं कि तुमइसब्राह्मणकोपृथ्वी
दानमतदेव सो ब्राह्मणसेझूठबोलना बड़ापापहोताहै मैंवास्ते रा
ज्य व धन वसंसारीसुखके जोसदास्थिरनहींरहता किसतरहझूठ
बोलूं किराज्य व द्रव्यअकेला मेरानहोकरइसमेंलड़केबाले वसब
कोंकाभीभागहै मरतीसमयइनलोगोंमेंसे कोईमेरासाथनहींदेगा
औरइसझूठबोलनेकेबदले मुझेनरकभोगना पड़ैगा इसलिये रा
जगद्दीवास्ते किवहमेरेसाथ न जावेगी जोकुछमैंनेवचनहाराउस
से फिरनहींसक्ताचाहै मेराराज्यजावै या रहै देखोहिरण्यकशिपु
मेरापरदादा व प्रह्लादभक्तमेरेदादा तीनोंलोकके राजाहोकरदेव
ता जिनकीआज्ञापालतेथे वहलोगभीस्थिरनहींरहे और राज्य
उनकाजातारहा जिसतरहविरोचनमेराबापराज्य व धनछोड़कर
मरगया उसीतरहमैंभी एकदिनराज्य व द्रव्यछोड़करमरजाऊंगा
फिरकिसवास्तेझूठकहूं आपमुझे इसब्राह्मणको पृथ्वीदानदेनेसे
मनानकीजिये किसवास्ते कि जोमनुष्य शुभकर्मकरतेहैं महाप्र
लयतकनाम उनकास्थिररहताहै व कोईजीवसदाअमरनहीं रह
ता देखोदधीचिने वास्तेकल्याण इन्द्रादिकदेवतोंके अपनेशरीर
कीहड्डी उनको देडालीव राजा शिबिने कबूतरका प्राणबचाकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसकेबदले अपनेअंगकामांसकाटदियाथा सो आजतकउनलो
गोंका यशसंसारमेंछारहाहै इसलियेमैंराजगद्दीजानेया नरकभो
गनेसेनहींडरकर केवलअपयशसेबहुतडरताहूं संसारीलोगकहैंगे
किराजा बलिने वामनजीको दानदेनेकोकहाथा सोलालचकीरा
हवचनअपनाछोड़दियासिवायइसके गृहस्थकायहीधर्महै कि ब्र
ह्मचारी व वानप्रस्थ व संन्यासी जो उसकेद्वारेपरआवैं उन्हैं विमु
ख न फेरै कुछदेकरप्रसन्नकरै सोआपऐसाकीजिये जिससे मेरा
गृहस्थधर्मबनारहै और तुमआपकहतेहो कि येनारायणजीहैं सो
जिनपरमेश्वरके केवलप्रसन्नहोनेवास्ते सबसंसार इतनायज्ञ व
तप व दान व होम करताहै जबवही त्रिलोकीनाथआप मेरेघर
आनकर भिखारीकेसमान तीनपग पृथ्वीदानमांगतेहैं तो किस
तरहनदेवैं इसवास्तेमेरेनिकट इनको दानदेकरआशीर्वादलेना व
अपनेप्राणतकइनपर निछावरकरदेनाउचितहै और येमेराराज्य
लेकरदेवतोंकोदेडालैंगेतोइससेभीमेरायश महाप्रलयतकस्थिरर
हैगा औरलक्ष्मीपति इसशरीर व तीनोंलोककेमालिकहोकरमुझ
सेदानमांगतेहैं इसलियेइनकोबड़ेहर्षसेदानदेकर इनकाहाथनी
चेकरनाचाहिये व लालचीमनुष्यनरकमेंपड़तेहैं इसकारणातुम्हा
रीआज्ञा न मानकरअवश्यदानदूंगा जबशुक्रजीनेदेखा कि राजा
बलि मेराकहनानहीं मानता तबक्रोधकरकेउसे शापदियाकिरा
ज्यधनतेरादोनोंजातारहै जबराजाबलिने उसशापकाकुछभय
नहींमाना और बड़ेहर्षसेवामनभगवान्को संकल्पदेकरविनयकि
या हेत्रिलोकीनाथ तीनपगपृथ्वीआपनापलीजिये तबवामनजी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेस्वस्तिकहकर विराट्रूपअपना इतनालम्बा व चौड़ा धारण
किया कि सातलोक कमरकेनीचे व सातलोक कमरकेऊपरहोग
ये और उसरूपमेंसाराब्रह्माण्ड व देवता व दैत्य व मनुष्य व पर्वत
व समुद्र व नदी व बन व आकाश व पातालादिक तीनोंलोककी
वस्तु दिखलाईदेनेलगीं व शंख व चक्र व गदा व पद्म उनकेहथि
यार व गरुड़जी व नन्द व सुनन्दादिक सोलहपार्षद अपना २
रूप धारणकिये किरीटकुण्डल व मुकुटजड़ाऊपहिने वहांआन
कर प्रकटहोगये व जामवन्तभालूने इक्कीसपरिक्रमा विराट्रूप
कीलेकर दोहाईवामनजीकीफेरदी इतनीकथासुनाकर शुकदेव
जीबोलेहेपरीक्षित जबराजाबलि शुक्रपुरोहितका कहनानमान
कर वामनजीकोपृथ्वी संकल्पदेनेलगा तबशुक्रजी एकरूप अप
ना बहुतछोटाबनाकर बीचटोंटी उसझारीके जोराजाबलि संक
ल्पदेनेवास्ते हाथमेंलियेथा घुसगये व उन्होंने राहगिरनेपानीका
इसइच्छासे बन्दकरदिया किपानी न गिरेगा तोराजाबलि किस
तरहसंकल्पदेगा व वामनभगवान् अन्तर्यामी यहहाल जान
कर जोकुशालियेथे वहीउसटोंटीमेंडालकर उसकाछेदखोलने
लगे जबउसकुशाकीनोकसे एकआंखशुक्राचार्यकी फूटगई तब
शुक्रजी कानेहोकर टोंटीसेबाहरनिकलभागे सोहेराजन्जोलोग
किसीको दानदेनेआदिक शुभकर्मकरनेसेवर्जतेहैं उनकीयहीग
तिहोतीहै व दूसराकारण फोरदेनेआंखका यहसमझनाचाहिये
किपरमेश्वरने दोआंखैंमनुष्यकोइसवास्तेदीहैं जिसमेंएकआंख
सेसंसारीसुखदेखकर दूसरीआंखसे परलोकका भला अनभला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखे सोशुकजी संसारीसुख अच्छाजानकर अन्तसमयकाशोच भूलगयेथे इसलिये परमेश्वरने एकआंखफोड़कर उन्हेंआगेको चैतन्यकरदिया यहबातसुनकर सबकिसीको परलोकका शोच करना चाहिये ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

नापलेना नारायणजीका अपने विराट्रूपसे एकपगमें सातोंलोकऊपरके व दूसरेपगसे सातोंलोक नीचेके ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित वामनजीने अपनाविराट्रूप बहुतलम्बा व चौड़ाबढ़ाकर एकपगसेसातोंलोकऊपरके व दूसरे पगसे सातोंलोकनीचेके नापलिये जबदहिनाचरणनारायणजी का ऊपरकेसातोंलोकनापतेसमय ब्रह्मपुरीमेंपहुंचातबब्रह्मादिक देवता वहचरणदेखतेहीउठखड़ेहुये व विरजानदीकेपानीसे उस को धोकरचरणामृतलिया और वहजल अपनेशिर व आंखों में लगाकर शेषचरणोदक एककमण्डलुमेंरखछोड़ा कि उसीपानी से गंगाजीप्रकटहुईहैं व ऋषीश्वरलोग जो वहांबैठेथे उन्होंनेचर णोदकको अपनीआंखोंमेंलगाकर बहुतस्तुतिकी व सबदेवतोंने अपनामनोरथपाकर बड़ीखुशीमनाई व अनेकतरहके बाजन ब जाकरजयजयकारकिया व उसचरणोदककी विधिपूर्वक पूजा करके आनन्दमनाया व अप्सरोंने बड़ेहर्षसेनाचना व गन्धर्वोंने गानाआरम्भकिया व विप्रचित्तीआदिक दैत्योंनेविराट्रूप वाम नजीको देखतेही घबराकर राजाबलिसे कहा देखोइसब्रह्मचारी नाटेमनुष्यने कैसाछलकिया तुमकहो तो इसेपकड़लें राजाबलिने दैत्योंको उत्तरदिया येपरमेश्वर त्रिलोकीनाथ जो कुछकरेंगे सब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अच्छाहोगाइनसेविरोधकरना न चाहियेयहबातराजाबलिकीसु
नकरअपनेअज्ञानसे सबदैत्योंनेआपसमेंकहा देखोहमाराराजा
धर्म्मात्माबैठाहुआ यज्ञकरताथा सो इसब्राह्मणनेआनकरछल
से सबराज्यउसकालेलिया अबहमाराराजा और हमलोग कहां
रहैंगे राजाबलिने जन्मभरहमारापालनकिया आजइसब्राह्मण
छलीकोमारकर पृथ्वीछीनलेवैं तबराजाबलिके अन्न व जल
सेउऋणहोजावैं राजादानदेचुकेहैं वे लड़नेवास्ते नहींकहैंगे सब
दैत्ययहसम्मतकरके अपने शस्त्रसहितनारायणजीके अंगमेंलिप
टगये तबत्रिलोकीनाथकी आज्ञानुसार सुदर्शनचक्र व पार्षदों ने
दैत्योंको मारकरहटादिया जबदैत्यलोगभागकर राजाबलिके पा
सआये तब उसनेपरमेश्वरकी इच्छा ऐसीसमझके व शुक्राचार्य्य
गुरुकाशापविचारकर दैत्योंसेकहा तुमलोग युद्धमतकरोदुःख व
सुखप्रारब्धसेहोताहै जबतुम्हारी सायतअच्छीआवैगी तबफिररा
ज्य पावोगे इससमय देवतोंकाभाग्य उदयहुआ इसलिये तुम्हा
रालड़नाव्यर्थहोगा यहवचनसुनतेही जब दैत्यलोगलड़ना छोड़
कर भागगये तब नारायणजीबोले हेराजन् तुमसेतीनपग पृथ्वी
दानलियाहै और नापनेमें तुम्हारा सम्पूर्णराज्य मेरेदोपगसे अ
धिकनहींठहरा सो तीसरापग पृथ्वीसंकल्पकरनेका प्रमाणदेव॥

बाईसवां अध्याय॥

वामनजीका राजाबलिको सुतललोककाराज्यदेना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जबवामनजीने तीसरापग पृथ्वी
मांगी व राजाबलि जो वामनभगवानके सामने शिरनीचेकिये

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खड़ाथा मारे डरके कुछनहींबोली तब फिर वामनजीने डाटकर कहाहेबलि कदाचित् तू तीसरापग भूमिनहीं देनेसक्ता तो यही बातकहो किहम न देवैंगे यहवचनसुनतेही राजाबलिने हाथजोड़ कर विनय किया हेत्रिलोकीनाथमैंअधर्मीनहींहूं जोअपनावचन छांडूंतबवामनजीबोले किपहिले तैंनेअहंकारसे यहबातकहीथी जोकुछमुझसेमांगोसोदेऊं कंगालब्राह्मणकेसमान तीनपगपृथ्वी क्यामांगतेहौ सोअब तू तीनपगपृथ्वीनहींदेनेसका राजाबलिवा मनजीकेतेज व डरसेयहनहींकहनेसका किदानमांगनेके समय स्वरूपआपका छोटाथा अबचरणअपनातुमने इतनाबढ़ायाकि सतरहदेवैं जबथोड़ीदेरतकराजाबलिने कुछउत्तरनहींदिया तब वामनभगवान्ने क्रोधकरके गरुड़सेकहा राजाबलिकोबांधो तो तीसरापगभूमिदेगा जबगरुड़ने राजाबलिको बांधकर पृथ्वीपर गिरादियातबजोलोग वहांपरथे उन्होंने आश्चर्यमानकर कहा देखो राजाबलिने सबराज्य व धनअपना वामनजीको देदिया तिसपर उन्होंने इसकोबांधाहै यहबातअच्छी नहींकी यहसुन कर नारद व सनत्कुमारजी बोले वामनभगवान् दयाकीराह राजाबलिकी परीक्षालेतेहैं कियह अपनेधर्मपरसच्चाहै या नहीं जबफिर वामनजीने एकपग भूमितीनबेर मांगकरकहा हेराजा बलि तू इन्द्रसे ऊपररहने वास्तेचाहना रखताथा सो शुक्राचार्य गुरुके शापसेतुझे नीचेनरकमें जानापड़ैगा तबराजाबलि हाथ जोड़करबोला हेवैकुण्ठनाथ मैं अपनेवचनसे नहींफिरकर दंडव तकरताहूं सोआपचरणअपना मेरेमस्तकपर रखकर शरीरमेरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीसरेपगपृथ्वीकेबदले नापलीजिये व कदाचित् आपयहकहैंकि
चौदहलोक तेराराज्यदोपगनापमेंठहरा केवल तेराअङ्ग एकपग
केबराबर नहींहोसक्ता सोआपदेखिये जिसतरह मनुष्यकासबअ
ङ्गबराबरनहोकर नाकछोटी होनेपरभी बड़ी पदवीरखतीहै उसी
तरह यहअंगमेरा जोमालिकसबधन व राज्य तीनोंलोककाथा
सोएकपग भूमिसे अधिकपदवी रखताहै वहेजगत्पालकतुम्हारा
नामलेनेसे मनुष्यनरकको नहींजाता जबआप साक्षात् ईश्वर
मेरेसामनेखड़ेहैं तबमैंकिसतरह नरकजाऊंगा व तुम्हारादर्शनक
रनेसेसंसारमें मेरीकीर्त्ति अधिकहोगी जिसतरह आप हरिभक्तों
परदयालुहोकर उनको अशुभकर्मोंसेबचाये रखतेहैं उसीतरह
प्रह्लादअपने भक्तकेकुलमें जानकरअहंकारमेरा जोराज्य धन व
सन्तान व बलकेमदमें अन्धाहोरहाथातोड़दिया और कृपा व द
या से अपनाचरणायहांलाकर गुरुकेसमान उपदेशदेकरके मुझे
कृतार्थकिया कदाचित्आजमैं लोभवश अपनाराज्य तुम्हेंदान
नदेता तोमरतीसमययहसब राज्य व धनमेरेसाथनजाकर संसार
में केवलअपयशमुझे प्राप्तहोता और यहभीमेराअज्ञानहै जोआ
पनेकोदानदेनेवाला समझताहूं किसवास्ते किसबयहलक्ष्मी व
पृथ्वीआपकीहोकर बिनाकृपातुम्हारीकोई मनुष्यराज्य व द्रव्य
सम्पन्नहींसक्ता हेपरीक्षित जिससमयराजाबलि यहसबबातवाम
न भगवान्से कहरहाथा उसीसमय प्रह्लादभक्तआकाशसे उतरे
और वामनजीको दण्डवत्करके हाथजोड़करकहा हेत्रिलोकी
नाथआपने बलिराजासे तीनपग पृथ्वीदानमांगा नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोआपकोजो तीनोंलोक वसबसंसारीवस्तुकेमालिकहैं किमीसे
कुछमांगनाक्या प्रयोजनहै व राजाबलिजो कुछतुम्हारादियाहु
आ अपनेपासरखताथा सोसबउसनेआपको अर्पणकिया अबसि
वायअपनेशरीरके और कोईवस्तुउसकेपासनहींरही सोआपदया
करकेइसेअपनासेवक व भक्तजानकर छोड़दीजिये व विंध्यावली
स्त्रीराजाबलिकी हाथजोड़करबोली हेदीनानाथ आपने अच्छा
न्यायकियाजो इन्हेंबांधकरदण्डदिया किसवास्ते कि सबवस्तु
संसारमें तुम्हारीहोकर आप तीनोंलोककी रचनाकेवल अपने
खेलवास्तेकरते हैं इसलिये राजा बलिको अहंकार से यहबात
कहनाउचित नहींथा किजो कुछतुम मांगोसो मैंदूं उसीसमय
ब्रह्माने भी वहांआनकर वामन भगवान्को दण्डवत्करके वि
नयकिया हेपरब्रह्मपरमेश्वर राजाबलिने शुभकर्म करनेसे जो
धन व राज्य पायाथा सोसब आपको दानदेकर यज्ञोंकापुण्यभी
तुम्हारे अर्पणकिया व अपनेधर्मसे न फिरकर बांधनेपरभी कुछ
विषाद नहींलेआया व अपनाशरीरभी तुमकोभेंटदेताहै फिरउसे
बांधकर रखनाकौन न्यायकरतेहो जब आप दीनानाथहोकर
ऐसाकरैंगे तबफिरतुम्हारीशरण कौनआवैगा जोमनुष्य आपको
एकपत्तातुलसी व फल व पुष्प व जल चढ़ाकर गुग्गुल आदिकसुगं
धसेतुम्हारेनामपर अग्निमेंधूपदेताहै आपउसकोअपनाभक्तजा
नकरसंसारी महाजालसे छुड़ाके भवसागरपारउतारदेतेहैं सोरा
जाबलिने सबधन व तनुअपना तुम्हारेअर्पणकिया फिरइसेछुट्टी
क्योंनहींदेते जबप्रह्लादभक्त व विंध्यावली व ब्रह्माने इसतरहवाम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नजीसेविनयकिया तबवैकुण्ठनाथबोले मैंने अपनीकृपा व दया से राजाबलिकी परीक्षालेकर उसकागर्वतोड़दिया व तुमलोगइ सबातकाविश्वासमानो जिसकिसीपर मेरीकृपाहोतीहै उससेइत नीबस्तु छीनलेताहूं एकजात्यभिमान दूसराधन तीसरीविद्या चौथागर्व इसबातकाकिजन्मभरमें उसने जोशुभकर्म दानादिक कियाहो उसेहरसमय स्मरणरक्खै और अपनेबराबर किसीदूसरे कोनहीं समझकर लोगोंकेसामनेकहै कियह शुभकर्ममैंने किया थासुनो राजाबलिका धन व राज्यसदास्थिरनहीं रहता और की र्त्ति इसकीमहाप्रलयतक बनीरहैगी व इसकेउपरांत आठवांमन्व न्तरजोआवैगा उसमें राज्यइन्द्रलोकका हमराजाबलिको देवैंगे मेरेभक्तलोग किसीबातका अहंकारनहींकरते यहकहने उपरांत वामनजीने चरणअपना राजाबलिके शिरपरधरके कहाअबती सरापग पृथ्वी मेरापूराहुआतबबलिनेहाथजोड़कर विनयकिया हेमहाप्रभूतुम्हारानामभक्तवत्सलहै इसलियेआपनेमुझे अपना दासजानकर मेरी प्रतिज्ञापूर्णकी यहवचन सुनतेही वामनभग वान् अतिप्रसन्नहोकर बोले हेराजन् तू उदासमतहो मैंने राज्य सुतललोकका जो पातालमेंहै तुम्हें दिया उसीजगह तूअपने प रिवारसमेतजाके आनन्दपूर्वक बासकर वहां मैंभी वामनरूपसे सदातेरेद्वारपररहकर रक्षाकरूंगा व आजसेतेरीबुद्धि दैत्योंके स मान नहींहोगी ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेईसवां अध्याय ॥

राजाबलिका सुतललोकमें जाना ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित यहवचनवामनजीकासुनतेही राजाबलिबन्धनसे छुट्टीपाकरअतिहर्षितहुआ व वामनभगवान्से हाथजोड़करबोला महाराज आपजोआज्ञादें उसीपरमैंप्रसन्नहूं व जिनचरणोंकादर्शन महादेव व ब्रह्मादिकदेवता व ऋषीश्वरों को ध्यानमेंनहींमिलता वहचरणआपने मेरेशिरपररक्खाउन्हैंमैं दण्डवत्करताहूं और अपनेसमानइन्द्र व कुवेर व वरुणादिक किसीदेवताका भाग्यनहींसमझता यहबातवामनजीसे कहकर राजाबलिने प्रह्लादभक्तको प्रणामकिया तबप्रह्लादनेआंखोंमेंआंशूभरकर राजाबलिअपनेपोतेको गलेलगालिया व उसकेज्ञान कीबड़ाईकी व हाथजोड़कर वामनजीसेकहा हेवैकुंठनाथ राजाबलिकाबड़ा भाग्यहै जैसेराजाबलिपर आपदयालुहुये वैसीकृपा ब्रह्मा व महादेवपरभीनहींकी किसवास्ते किउनसेकभी कोईवस्तु नहींमांगी व तुम्हारेचरणकमलको जिसकाध्यान ब्रह्मादिकदेवता व बड़े २ ऋषीश्वरआठोंपहर हृदयमें रखतेहैं राजाबलिनेअपनेहाथसे वहधोकर चरणामृतलिया नहींतो हमदैत्योंकाजोमांसखाने व मदपीनेवालेअधर्मी हैं ऐसाभाग्यकहां उदयहोसक्ताहै इससे मैंनेजाना आपनीचजातिका विचारनकरके केवल अपने भक्तोंकी कामनापूर्णकरतेहैं व जिसतरहकल्पवृक्ष सबको इच्छापूर्वक फल देताहै उसीतरहआपने त्रिलोकीनाथहोकर अदिति अपनेभक्तकी चाहनापूर्वक भीखमांगनाअङ्गीकारकिया दूसराकौन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसादीनदयालुहोगा यहस्तुतिसुनकरवामनजीबोले हेप्रह्लादहम
ने बलिको सुतललोकराज्यदिया सोतुमभी वहांजाकरउसके
पासरहो औरमैंभी राजाबलिकेद्वारपर गदालिये आठोंपहर बना
रहूंगा हमारामुखारविंददेखने व तुम्हारेसत्संगसे उसकोकुछनहीं
मालूमहोगा कि इतनेदिनकहांबीतगये अबतकतुमहमारादर्शन
ध्यानमेंपायाकरतेथेआजसेमेरी व तुम्हारीभेंटनित्यसम्मुखहुआ
करैगी जबयहवचनसुनकर राजाबलि व प्रह्लादभक्तवामनभगवा
न्कोदंडवत्करके अपनेपरिवारसमेत सुतललोकमें चलेगये तब
शुक्रपुरोहितनेआनकर वामनजीको दण्डवत्करके विनयकिया
हेमहाप्रभू मुझे ब्राह्मण व पण्डितहोनेपरभी संसारीमाया प्रवेश
करनेसे कैसी कुबुद्धिआई कि मैंने राजाबलिको भूमिदान देनेसे
मनाकिया परभाग्यउसकाबलवान्था जोमेराकहना न मानकर
अपनेवचनसेनहींफिरा सो आपमेराअपराधक्षमाकरके आज्ञा
दीजियेतोमैंभी सुतललोकमेंजाकर राजाबलिकेपासरहूं व ऐसा
वरदानदेव जिसमेंफिरमुझे ऐसीकुबुद्धि न आवै यहसुनकरवाम
नभगवान्बोले बहुतअच्छा तुमभीसुतललोक में जाकर राजा
बलिकेपासरहो परफिरकभीऐसीदुर्बुद्धि उसकोमतदेना औरतुम
अपनेचेलेका सौवांयज्ञसम्पूर्णकरलेव तबशुक्रजीबोले हेज्योति
स्वरूप जहांतुम्हारानामलेनेसे यज्ञसंपूर्णहोताहै वहांजब आप
काचरणआया तबउसके संपूर्णहोनेमें क्यासन्देह है परतुम्हारी
आज्ञानुसार पूर्णाहुति यज्ञमेंडालेदेताहूं जबशुक्रजीपूर्णाहुतिदे
करआपभी सुतललोकमें चलेगये तबब्रह्मादिकदेवता वामनभ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गवान्कानाम उपेन्द्ररखकर व उन्हैं विमानपरबैठालकर स्वर्गलो
कमें पधारे व जबवामनजीनेवहांपहुंचकर राज्यइंद्रपुरीका देवतों
कोदिया तबदेवतालोग वामनभगवान् व अदितिकायशगातेहुये
आनन्दपूर्वक अपने २ लोकमेंचलेगये व इन्द्रअपनाराज्य पा
करइन्द्राणीकेसाथभोग व विलासकरनेलगा वामनभगवान्जी
बैकुण्ठकोपधारे इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन्तुम
ने जो वामनअवतारकीकथा हमसे पूंछीथी उसेवर्णनकिया जो
कोई अपनेसच्चेमनसे इसकथाकोकहै व सुनैगा उसेमुक्तिपदवी
मिलैगी ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

मत्स्यावतार की कथा ॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकरबोले हेशुकदेवस्वामी मेरा
मनसुननेकथा अवतारनारायणजीसेनहींभरा इसलिये मत्स्या
वतारकी कथासुना चाहताहूं कि इतनेबड़ेईश्वरने छोटा अवता
र मछली का क्योंलिया शुकदेवजीने कहा हेराजन् आदि पु
रुषभगवान् जन्म व मरणसेरहितहोकर केवलइसवास्तेअवतार
लेते हैं जिसमेंहरिभक्तलोग उनअवतारोंकी लीलाकह व सुनक
रभवसागरपारउतरजावें और जब गौ व ब्राह्मण व देवता व पृथ्वी
व धर्म व हरिभक्तोंपर दुःखपड़ताहै तबवहछोटे व बड़ेजीवका वि
चारनहींरखते व कथामत्स्यावतारकी इसतरहपरहै एकबेरजगत्
प्रलयहोनेमें ब्रह्मारात्रिको अचेतसोयेथे जबउनको दिनमेंजम्हा
ईआई तबहयग्रीवदैत्य उसीसमय वेदउनकेमुखसे निकालकरपा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तालमें लेगया सोब्रह्मानेजानकर नारायणजीसे विनयकियाकि
महाराज हयग्रीवदैत्य वेदचुरालेगया सोविनावेदके संसारीकाम
नहींहोसक्ते और वहदैत्य महाबलवानहै इसलिये हम और देव
तालोग उसेजीतनहींसकैंगे आपवेदलानेवास्ते कुछउपायकीजि
ये व राजासत्यव्रत श्राद्धदेवकेबेटे राजगद्दीछोड़कर दशहज़ारवर्ष
तपकरके महाप्रलयदेखनेकीइच्छाकी तबनारायणजीने ब्रह्माके
विनयकरनेसेलानावेदका व इच्छापूर्णकरना राजासत्यव्रत अप
नेभक्तकी आवश्यकजानकर मत्स्यावतारलियाथा सो एकदिन
राजा सत्यव्रत कीर्त्तिमालानदीमें नहानेगया जबस्नानकरके रा
जानेतर्पणकेनिमित्त जलदोनोंहाथमेंउठाया तबउसेएकमछली
बहुतछोटी अंजलीमेंदिखाई देकरबोली हेराजन्मैं बहुतदुःखी
दीनहोकरतेरेशरणआईहूं कदाचित्तूमुझे फिरजलमेंडालदेगा
तो बड़ी २ मछली मुझे खाजावेंगी इसलियेतुझसे यहचाहतीहूं
कि मुझेनदीमें न डालकर मेरापालनकर राजायहवचनसुनतेही
आश्चर्य मानकरमनमेंकहनेलगा देखोयहमछली मनुष्यसमा
नबोलतीहै इसलिये अवश्यरक्षाकरनीचाहिये ऐसाविचारकरके
राजाने उसमत्स्यको अपनेकमण्डलुमें धरकरकहा तू धैर्यरखमैं
तेरापालनकरूंगा जबराजासत्यव्रत उसमत्स्यको अपनेस्थानपर
रलेआये सो क्षणभरमें वहमत्स्यबढ़कर कमंडलुमेंफँसगई तब
फिर उसनेकहा हेराजन् कमंडलुमें मुझेदुःखमालूमहोताहै कहीं
चौड़ीजगहरक्खो जबराजाने कमण्डलुतोड़कर मछलीको घड़े
मेंरक्खा व एकहीपहरबीतेभोजनकरके फिरजाकरदेखा तोमछ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लीवहांभीबढ़कर फँसीहुईबोली हेराजन् इसघड़ेमेंभी मेराअङ्ग
नहींसमाता फिरराजानेएकबड़ेमटुकेमेंउसेरक्खा वहांपरमछली
और अधिकबढ़ी तबएकगड़हाखुदवाके पानीसेभरवाकर रखदिं
या जबगड़हाभी मत्स्यकेशरीर बढ़नेसेभरगया तबउसेतालाबमें
लेजाकररक्खा थोड़ीदेरमें वहमत्स्यइतनाबढ़ा कि तालाबमेंभी
अङ्गउसकानहींसमाया तबराजानेतालाबको नदीतकखुदवाकर
उसमत्स्यको वहांपहुँचादिया जबदूसरेदिनफिरराजास्नानकरने
गये तोदेखाकिमछलीसे सबनदीभरीहै तबराजाने उसमत्स्यको
बड़ेपरिश्रमसे समुद्रमें लेजाकरकहा हेमत्स्य समुद्रसेबड़ाकोई
स्थान तेरेरहनेवास्तेनहींहै अबतूयहांरह व मुझकोविदाकर जब
उसमत्स्यकाअङ्ग समुद्रमेंभीबढ़कर दशहज़ारयोजन लम्बा व
चौड़ाहोगया तबउसमत्स्यने सत्यव्रतसेकहा हेराजन् तूअपने
कोबड़ाज्ञानी व धर्मात्मासमझके मुझेसमुद्रमेंछोड़कर अपनेघर
चलाजाताहै मुझसेभी जोबड़ी २मछलीहैं वेमुझको खाजावेंगी
यहसुनतेहीराजाने ज्ञानकीराहजाना कियहमत्स्य परमेश्वरका
अवतार मालूमहोताहै किसवास्ते किमछली तुरन्तइतनानहीं
बढ़सक्ती सोइनकीपूजाकियाचाहिये ऐसाविचारतही राजानेबहु
तस्तुतिकरनेउपरांत उसमत्स्यसेहाथजोड़कर विनयकिया हेम
त्स्यरूपभगवान् मैंनेतुमकोनहींपहिंचाना किआपनारायणजी
का अवतारहैं मेराबड़ाभाग्यथा जोतुम्हारादर्शनपाया यहबात
ज्ञानभरीहुईसुनकर मत्स्यभगवान्बोले हेराजन् तैंनेक्यासमझ
करकहाथा किहमतेरापालन व रक्षाकरेंगे इसीवास्ते मैंनेअपना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शरीरबढ़ाकरथोड़ीसीमहिमा अपनीतुझेदिखलाई जिसमेंतूमेरा
पालन व रक्षाकरनेसे हारमाने और अहंकारतेराटूटजावे मनुष्य
कोऐसाउचितहै किकिसीकामको ऐसानकहै किमैंकरदूंगा सब
बातमें ऐसाकहनाचाहिये किपरमेश्वरचाहैंगे तोयहकामहोजावे
गा मेरेभक्तअहंकारकावचननहींबोलते व हेराजन् तूविश्वासकर
केजान जिसबातकोपरमेश्वरचाहतेहैं वहबातहोतीहै बिनाइच्छा
नारायणजीकी मनुष्यकाकिया कुछनहींहोसक्ता यहसुनकरराजा
जानेकहा हेवैकुण्ठनाथ आपनेमछलीकातनु छोटीयोनिमेंकिस
वास्तेधरा तबमत्स्यभगवान्बोले हेराजन् मैंतनुधरने व मरने
दोनोंसेरहितरहकर अपनेभक्त व सेवकोंकीइच्छापूर्णकरनेवास्ते
कभी२सगुणअवतारलेकर अपनानामप्रकटकरताहूं सोइनदिनों
ब्रह्माकीविनयकरनेसे वास्तेलानेवेद व इच्छापूर्णकरने तेरीजो तू
महाप्रलयका कौतुकदेखनाचाहताथा हमनेमत्स्यरूप अवतार
लियाहै और मैंनेवाराह व कच्छप व नरसिंहअवतार जोलियाथा
उससेछोटा न होकर रामचन्द्र व श्रीकृष्णअवतारलेनेमें कुछपदवी मेरीनहींबढ़ी सदासमानरहकर घटने व बढ़नेसेरहितहूं तुझे
महाप्रलयदेखनेकीइच्छाहै तोआजसे सातवेंदिनसंसारमें चारों
ओरपानी दिखलाईदेगा व उसजलमेंएकनौकापर सप्तऋषिबैठे
हुये प्रकटहोके तेराहाथ पकड़कर उसनावमें बैठालेवेंगे व उस
नौकाकेपास पानीपरएकसर्प प्रकटहोगा सोतुमलोग एककोना
रस्सी नौकाकी मेरेसोनेके सींगमें जोदशहज़ार योजनलम्बा
निकलेगा व दूसराटुकड़ारस्सीका उससर्पकी पूंछसेबांधोगे जब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहनौका पानीपरघूमेगी तबतूमहाप्रलयका चरित्रदेखकर सप्त ऋषियोंसमेत मुझसेज्ञानपूछेगा व जोज्ञानमैं तुमलोगोंसेकहूंगा उसज्ञानसुननेकेप्रतापसे तेरीमुक्तिहोगी इससातदिनमें तुम सबऔषधका बीजइकट्ठाकरकेउससमयअपने पासरखनामत्स्य रूपभगवान् यहकहकर वहांसेअन्तर्द्धानहोगये और राजासब ओषधियोंकेबीज अपनेपासरखकर नित्यऊपरकिनारेकृतमाला के महाप्रलयदेखनेवास्ते आनबैठताथा जबसातवेंदिनराजा नित्यनियमकरके वहांबैठा तबउसनेक्यादेखाकि चारोंओरसे नदीकापानीउमड़ाआताहै व आकाशसेभी इतनाजलवर्षा किसंपूर्ण पृथ्वीउसजलमेंडूबकर राजाउसजलमें गोताखानेलगा और घबड़ाकरमनमेंकहा मत्स्यभगवान्ने एकनौकाप्रकटहोनेवास्तेकहाथा सो अभीतक दिखलाईनहींदेती जबमैंडूबकर मरजाऊंगा तबवहनौकाप्रकटहोकर क्याकरैगी इसीचिंतामेंथा किदूरसेएक नावपरसप्तऋषियोंको बैठेहुयेदेखकर राजाबहुतप्रसन्नहुआजब वहनौकानिकटपहुंची तबसप्तऋषीश्वरोंने हाथराजाकापकड़कर उसनौकामें बैठालिया व धैर्यदेकरबोले हेराजन् तूनहींडूबेगा राजानेदंडवत्करके उनसेपूछामत्स्यरूपभगवान् क्योंनहींआये सप्तऋषिबोले तुमपरमेश्वरका स्मरणकरो मत्स्यरूपभगवान् भी तुरन्तआतेहैं जैसे राजानेप्रेमपूर्वक ध्याननारायणजीका किया वैसे मत्स्यरूपभगवान्ने राजाकोदर्शनदिया जबवासुकिसर्प श्यामरंगवहांजलमें प्रकटहुआ व सप्तऋषीश्वर व राजानेएकको नारस्सीनौकाका किवहरस्सीभी सर्पकीथी उसमछलीकेसींगमें व

CC-0. In Public Domain. U.P. State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसराटूकवासुकिनागकीपूछसेबांधा तबवहमछलीउसनावकोपा
नीमें फिरानेलगी वराजानेइच्छापूर्वक महाप्रलयकाकौतुकदेख
कर मत्स्यरूपभगवान् से विनयकिया महाराजआपनेदयालुहो
कर चरित्रमहाप्रलयका मुझेअच्छीतरहदिखाया अबमैंयहचा
हताहूं कि आपमुझको ज्ञानसिखलाकर भवसागरपारउतार दी
जिये जिसमेंजन्ममरणसे छुट्टीपाऊं किसवास्तेकिसंसारीमनुष्य
वहकर्मकरताहै जिसकारणसदा महाजालमेंफँसारहै व जो कोई
तनुपाकर परलोकअपनानहींबनाता वहफिरकुत्ता व शूकरआदि
क चौरासीलाखयोनिमेंजन्मलेकर दुःखपाताहै व संसारीमनुष्य
रात्रिदिनस्त्री व पुत्र व धनकेमोहमें फँसारहताहै औरकिसीसमय
नारायणजीको जोवेड़ाउसकोपारलगावैंगे स्मरणनहींकरता वप
रमेश्वरअपनीदया व कृपासेजिसकामनोरथपूर्णकरतेहैं वहअपने
अज्ञानसेउसकामकोकहताहैकिमैंनेपरिश्रमसेकिया व घर व द्रव्य
व स्त्री व लड़कोंको अपनाजानकर उनकीप्रीतिमें अपनाजन्मअ
कार्थकरताहै और यहनहींसमझता किपूर्वजन्मोंके संस्कारसेसब
जीव अपनावदलालेनेकेवास्ते संसारमेंआकर इकट्ठेहोतेहैं सोहे
दीनानाथछूटनाइसकुबुद्धि व प्राप्तहोनाज्ञानकासिवायकृपा व द
याआपकीहोनहींसक्ती जबतकमनुष्य संसारीमायासे विरक्तनहीं
होता तबतकआवागमनसेनहींछूटता व जिसपरआपदयालुहोक
र ज्ञानदेतेहैं वहभवसागरपारउतरजाताहै नहींतोबारम्बारजन्म
लेकर दुःखपाताहै सोमुझेअपनादासजानकर ऐसाज्ञानदीजिये
जिसमेंभवसागर पारउतरजाऊं यहसुनकर मत्स्यरूप भगवानने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो ज्ञानराजाकोउपदेशकिया वहसबज्ञान व योगसाधने वउत्प
त्तिहोनेदैत्य व प्रश्नोत्तर सप्तऋषीश्वरोंका विस्तारपूर्वक मत्स्य
पुराणमेंलिखाहै वहीज्ञानसुननेसे राजासत्यव्रतपरमज्ञानी हो
गया फिरमत्स्यरूप भगवान्बोले हेराजन् तू आंखअपनीबन्द
करले जैसेराजाने आंखबन्दकरके फिरखोलातो अपनेको उसी
नदीके तटआसनपर बैठेहुयेपाया व जलादिक महाप्रलयका
कौतुकीफिर न दिखलाईदिया औरयहचरित्र व महिमानारायण
जीकीदेखकर आश्चर्यमाना व मनमेंसमझाकि मत्स्यरूपभग
वान्ने अपनीमायासे मेरी इच्छानुसार यह कौतुकदिखलाया
फिरराजासत्यव्रत ज्ञानप्राप्तहोनेसे हरिचरणोंमें ध्यानलगाकर
मुक्तहुआ व मत्स्यरूपभगवान् पातालमेंजाके अपनीगदासेहय
ग्रीव दैत्यको मारकर चारोंवेद लेआये व ब्रह्माकोदेकर वैकुंठको
पधारे इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् चौदहवेंमन्व
न्तरमें जोजोअवतारपरमेश्वरलेते हैं उनकीकथातुमसेवर्णनकी
और चौदहोंमन्वंतरब्रह्माके एकदिनमें बीतजातेहैं व इतनीबड़ी
रातभी उनकीहोतीहै उसीदिन व रातकेप्रमाण से सौवर्षब्रह्माजी
तेहैं व छःमहीनेउत्तरायणसूर्य दिनदेवतोंकाहोकर छःमासदक्षि
णायनसूर्यरातिउनकीहोतीहै व पंद्रहदिनशुक्लपक्ष दिन देवतोंका
वपितरोंकाकृष्णपक्षरातिउनकीसमझनाचाहियेव शुक्लपक्षकोशु
भ और कृष्णपक्षकोअशुभकहतेहैं उसीदिनरातकेप्रमाणसेआयु
दी देवता व पितरोंकी सौवर्षकीहोतीहै इतनीकथासुनकर राजाप
रीक्षितनेविनयकिया हेमहाप्रभुकथा चौदहोंमन्वंतरव अवतार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लेनेपरमेश्वरका जिसकेसुननेसे संसारीजीव भवसागरपार उतर जातेहैंतुम्हारेमुखारविंदसेमैंनेसुना औरआपभूत व भविष्य ववर्त्त मानतीनोंकालकेज्ञाताहैं इसलियेमैंचाहताहूं कि आपकेमुखसे सूर्यवंशी व चंद्रवंशीराजोंकीकथा जो पूर्वमेंहोगयेहैंसुनों शुकदेव जीयहबातसुनकरबोले किहेराजन् तुमनेबहुत अच्छीबातपूछी हमकहतेहैंसुनोकदाचित्कोईऐसाकहै किशुकदेवजीनेवैष्णवहो करसंसारीराजोंकाबृत्तान्त किसवास्तेकहा सो उन्होंनेदोगुणसम झकरयहकथाकही थी एकयहजोपहिले राजाधर्मात्मा व ज्ञानी संसारीमायासे विरक्तहोकरमुक्तहुयेहैं उनकीकथासुननेसे राजा परीक्षितकोराज्यछोड़ने व शरीरत्यागनेकाशोचनहींहोगा दूसरे परब्रह्मपरमेश्वरने रामचन्द्रअवतार बीचकुलसूर्यवंश व कृष्णअ वतार चन्द्रवंशमेंहरिभक्तोंके सुखदेनेकेवास्तेधारणकरके अनेक लीलाकीहैं वहलीला व कथासुनके संसारीलोग सबपापोंसे छूट कर मुक्तिपावैं॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीमद्भागवतमहापुराण

नवां स्कन्ध ॥

सूर्य्यवंशी व चन्द्रवंशी राजाओं की कथा ॥

पहिला अध्याय ॥

श्राद्धदेव मनु की कथा ॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकरबोले हेशुकदेवस्वामी मैंने सबमन्वन्तरोंकीकथा तुम्हारे मुखारविन्दसेसुनी व वृत्तांत राजा सत्यव्रतका जिसेमत्स्यरूप भगवान्ने ज्ञानबतलायाथा सुनकर अतिप्रसन्नहुआ अबमैंयहसुनाचाहताहूं किकिस २ राजानेकौन २ मन्वन्तरमेंराज्यकिया व अबश्राद्धदेवमनु सूर्य्यकाबेटा जो राज्यपरहै उसकेसन्तानकीकथा विस्तारपूर्वककहिये यहबातसुनकर शुकदेवजीबोले किहेराजन् विधिपूर्वक उसकाहालकोईसैकड़ोंवर्षमेंभीनहींकहसक्ता इसलियेसंक्षेपसेमैंउनकीकथा कहताहूं सुनो जबमहाप्रलयहोकर संसारमें चारोंओरपानीभरगया केवल

CC-0. In Public Domain. NP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नारायणजी स्थिररहकर उनकोयहइच्छाहुई कि यहजगत्उत्प
न्नकरकेअपनारूपआपदेखैं तबएकपुष्पकमलका वैकुंठनाथकी
नाभिसेप्रकटहुआ और उसफूलसे ब्रह्माउत्पन्नहोकर नारायण
जीकीआज्ञानुसार मनुनामपुत्रउत्पन्नकिया व मनुकेहृदयसे
मरीचिनेजन्मलिया और उससेकश्यपनाम बालकउत्पन्नहुआ
व कश्यपसेसूर्यनेजन्मपाकर श्राद्धदेवमनु पुत्रउत्पन्नकिया जब
श्राद्धदेवकेयहांसंतान नहींउत्पन्नहुई तबउसनेवशिष्ठ ऋषीश्वर
से विनयकिया किआपकोईऐसाउपायकरैं कि जिसमेंमेरेपुत्र उ
त्पन्नहो वशिष्ठजीबोले यज्ञकरनेसे तेरेसन्तानहोगी जबउसनेव
शिष्ठजीकी आज्ञानुसारयज्ञआरम्भकिया तबमनुकी स्त्री नेवशि
ष्ठजीकेसाथीब्राह्मणसेजो अग्निकुण्डमें घीकीआहुतिडालताथा
कहामैंचाहतीहूं कि मेरेकन्याअतिसुन्दर उत्पन्नहोउसब्राह्मण
ने बेटीउत्पन्नहोनेकेवास्ते मंत्रपढ़कर आहुतियज्ञमेंदी इसलिये
कन्याउत्पन्नहुई जबऋषीश्वरनेइलाउसकानामरक्खा तबश्राद्ध
देवबोलाकिमहाराजमैंनेपुत्रउत्पन्नहोनेकेवास्ते यज्ञकियाथासो
बड़ाआश्चर्य है मंत्रकाफल विपरीतहोकर कन्याउत्पन्नहुई व
शिष्ठजीबोलेहेराजन्तेरी स्त्रीनेबेटीहोनेकेवास्ते इच्छारखकरआ
हुतिदेनेवाले ब्राह्मणसेकहदियाथा इसलियेपुत्रीउत्पन्नहुई जब
यहवचनसुनकर राजामनुचिन्ताकरनेलगातब वशिष्ठजीबोलेहे
राजन्तू उदासमनहो मैंपरमेश्वरसेविनयकरके इसकन्याकोपुत्र
करदूंगायहवचनसुनतेही राजाप्रसन्नहोगया व वशिष्ठनेपरमेश्व
रकाध्यानलगाकर जबअपनेब्रह्मतेज से स्तुतिउनकीकातबवकु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एठनाथदर्शनदेकरबोले तुमक्याचाहतेहो वशिष्ठजीनेहाथजोड़ करकहा महाराजमैं चाहताहूं कियहकन्यापुत्रहोजावे परमेश्वर बोले बहुतअच्छा ऐसाहीहोगा यहवचननारायणजीकेमुखसेनि कलतेही जबवहकन्या सुन्दररूप बेटाहोकरखेलनेलगा तबराजा ने उसकानामसुद्युम्नरखकर बड़ीखुशीमनाई व ब्राह्मण व याच कलोगोंको मुंहमांगा दान व दक्षिणादेकर उसेराजगद्दीपर बैठा दिया जबवहसाथधर्म व प्रजापालनके राज्यकरनेलगा तब एक दिन परमेश्वरकी इच्छानुसार उत्तरदिशा इलाव्रतखण्डमेंअहेर खेलनेगया तो एकहरिणकेपीछे घोड़ादौड़ाताहुआ अम्बिकावन में जापहुंचा वहांपहुंचतेही राजास्त्रीरूपहोकर उसकीसवारी का घोड़ाभीघोड़ीहोगया व जितनेसेवकराजाकेसाथ उसवनमेंपहुंचे थे सबस्त्रीहोगये यहदशाअपनीदेखतेही वहलोगलज्जितहोकर एकदूसरेसे अपनाचरित्रनहींकहसकाथा जबकिसीका कुछ वश नहींचला तबइच्छापरमेश्वरकी इसीतरहपरजानकर सबोंनेधैर्य धराइतनीकथासुनकर राजापरीक्षितनेपूछा हेमुनिनाथ वहलोग उसवनमेंजाकर किसकारणस्त्रीहोगयेथे इसकावृत्तांत कहिये शु कदेवजीबोले हेराजन् एकदिनउसवनमें महादेव व पार्वतीनंगेहो करआपसमेंविहार व क्रीड़ाकररहेथे उसीसमयसनकादिक चारों भाईउनकादर्शनकरने व कथासुननेकेवास्तेवहांजाकर जैसेदोनों को दण्डवतकिया वैसेपार्वतीजीने उनलोगोंको देखतेही महालज्जितहोकरआंखें अपनीनीचीकरलीं सो ऋषीश्वरलोग उदास होकर वहांसेनरनारायणकादर्शन करनेकेवास्ते बदरीकेदारको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चलेतबपार्वतीने महादेवसेकहा किआपकोईस्थान विहारकरने केवास्तेनबनवाकर मुझेवनमेंलज्जितकरतेहैं आजमारेलज्जा केमुझसे अपनामुंह किसीकोनहींदिखलायाजाता यहसुनकर शिवजीबोले हेप्राणप्यारी तुमउदासमतहो हमइसवनको ऐसा शापदेते हैं कि आजसे जो कोई देवता व दैत्य व मनुष्य या पशु आदिकपुरुष इसवनमेंआवेगा वह स्त्री होजावेगा इसीकारण राजासुद्युम्न स्त्री होगया था सो भोलानाथ सदापार्वतीकेसङ्ग वहां विहारकरतेहैं व सोलहहजारसहेली गिरिजादेवीकी सेवा में आठोंपहरबनीरहतीहैं वहांसिवायमहादेवके दूसरापुरुषनहीं जासक्ता जबराजासुद्युम्नस्त्रीहोनेसे मारेलज्जाके अपनेघरजान सका तबअपने साथियोंसमेत व्याकुलहोकर उसीवनमें चारों ओरफिरनेलगा उसवनकेदक्षिण सिवानेपर बुधबेटा चन्द्रमाका बैठाहुआ तपकरताथाजबअचानकमें राजासुद्युम्नस्त्रीरूपफिरता हुआ उसीजगहजानिकला व बुध तपस्वीहोनेपरभी उसकेरूप परमोहितहोगया और सुद्युम्न स्त्रीरूपकाभी मनउसपरचलाय मानहुआ तबदोनोंने आपसमें गन्धर्वबिवाहकरलिया और वहां रहकरभोग व विलासकरनेलगे जबबुधकीआज्ञानुसार सुद्युम्नके साथकीस्त्रियां पर्वतपरचलीगईं तबउन्हेंगन्धर्व उठाकरअपने लो ककोलेगये जब सुद्युम्नस्त्रीरूपके पुरूरवानामबेटाबुधसे उत्पन्न हुआ तबएकदिनसुद्युम्नने वशिष्ठगुरुका ध्यानकरके उन्हें याद किया जबवशिष्ठऋषीश्वर अन्तर्यामीउसकेपास आनकरप्रकट हुये तबसुद्युम्न अपनावृत्तांतउनसेकहकर हाथजोड़केबोला हे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुनिनाथऐसीकृपाकीजिये कि जिसमेंफिरमुझे पुरुषकातनुमिलै यहवचनसुनकर वशिष्ठजीबोले तू धैर्यधर मैंतेरेवास्ते उपायकर ताहूं जबवशिष्ठऋषीश्वर सुद्युम्नपरदयालुहोकर गौरीशङ्करका ध्यानकरकेस्तुतिकी तबभोलानाथ व गिरिजादेवीदर्शनदेकरबड़े हर्षसेबोले तुमक्याचाहतेहो वशिष्ठजीने दंडवत्करके विनयकी हेमहाप्रभुआप कृपाकरके सुद्युम्न को फिरपुरुषबनादीजिये यह वचनसुनकर पार्वतीजीबोलीं कि सुद्युम्नके पुरुषहोजानेको शाप शिवशङ्करने अम्बिकावनकोदियाहै वहामिटनहींसक्ता पार्वतीकेय हकहनेपरभी शिवजीदयालुहोकरबोले हेवशिष्ठमुनिसुद्युम्नएक महीनापुरुष व एकमहीनास्त्रीरहेगा यहवरदानदेकर महादेवजी पार्वतीसमेतअंतर्द्धानहोगये व राजासुद्युम्नउसी समयपुरुषहोकर पुरूरवाबेटेको साथलियेहुये अपनीराजगद्दी परचलाआया सो एकमहीनापुरुषरहकर राज्यकाजकरता व दूसरेमासस्त्रीरूपरहने सेरोगकेबहानेराजमन्दिरमें रहताथा जबपुरुषहोनेपर सुद्युम्नको अपनीस्त्रीसे तीनपुत्र औरउत्पन्नहुये तबउसनेकुछदिनराजगद्दी कासुखभोगकरमन अपनासंसारीमायासे विरक्तकरलिया व रा ज्यदक्षिण देशका अपनेतीनोंपुत्रोंको जोस्त्रीसेउत्पन्नहुयेथे दे दियाऔर अपनीनिजराजगद्दीपरपुरूरवाबेटेको जोबुधसेउत्पन्न हुआथाबैठाकरआपवनमें चलागया और कुछदिनहरिभजनकर केमुक्तहुआ सोराजापुरूरवासेचंद्रवंशी व सुद्युम्नकेदूसरेबेटासे सू र्यवंशीकुलजगत्में प्रकटहुआहै ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरा अध्याय ॥

श्राद्ध देव के और सन्तानों की कथा ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जबराजासुद्युम्न वनमेंअपना शरीरत्यागकरमुक्तहुआ तबश्राद्धदेव उसकेबापने और सन्तान उत्पन्नहोनेके वास्ते परमेश्वरका तप किया जबपरमेश्वरकी इ च्छानुसार उसकेश्रद्धानाम स्त्री से दशपुत्र औरहुये तबउसने बड़े पुत्रकानाम इक्ष्वाकुरक्खा व दूसराबेटापृषध्रनामहुआ वह व शिष्ठगुरुकी गौवैं दिनकोचराकर रातसमय उनकीरखवारीकरता था एकदिन बरसातमें रातकोबाघने एकगोकोपकड़ा सो गायका चिल्लानासुनकर पृषध्रउठा व उसनेविजुलीकी चमकमें शेरको देखकर तलवारउसपरचलाई सोवहखड्ग बाघकाएककानकाटक र गायकेलगा इसकारण वहगोमरगई प्रातसमय वशिष्ठजीउस गोकोदेखकरपृषध्रसेकहा तैंनेगोतलवारसेमारडाली इसलियेतू शूद्रगोपालहोजा सोगुरुकेशापसे पृषध्रनेवहतनुअपनाछोड़कर अहीरकेयहांजन्मपाया सोउसतनुमें ब्रह्मचर्यरहकर हरिभजन करनेलगा और वनमेंआगलगनेसे अपनीइच्छापूर्वक जलकर मुक्तहुआ व कविनाम तीसराबेटा राजाकापरमहंसहोगया व क रुषनाम चौथेपुत्रसे कारुषजाति क्षत्रियोंनेउत्पन्नहोकरउत्तरदि शाकाराज्यकिया व दृष्टिधृक्नामपांचवेंबेटेकेवंशमें धारिष्टजा तिक्षत्रियउत्पन्नहुये वेलोगअपनीक्रिया व कर्मसेब्राह्मणहोगये व नृगनाम छठवेंपुत्रके वंशमें सुमतआदिकसे अग्निनामतक क्षत्रियरहकर अग्निकेवंशमें ब्राह्मणउत्पन्नहुये व नभगनाम

CC-0. In Public Domain. U.P. State Museum, Prayagraj Collection, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सातवें बेटेकीसन्तानमें नामआदिकसेलेकर कईपीढ़ी उपरान्त मरुत्तनाम ऐसाप्रतापी व चक्रवर्तीराजाहुआ कि जिसकेसमान किसीदूसरेराजानेयज्ञनहींकिया उसकेयज्ञमेंसबबर्त्तन भोजनक रने व जलपीने व वस्तुरखनेकेवास्तेसुवर्णकेबनेथे व उसनेसबदेव ता व ब्राह्मणोंको अपनेयज्ञमें इतनादान व दक्षिणादिया किकि सीके कुछइच्छानरही व उसकेवंशमें तृणाविन्दुनामराजा लम्बु काअप्सराका पतिहुआ व उसीअप्सरासे इड़बिड़ानाम कन्या उत्पन्नहोकर विश्रवाऋषीश्वरको व्याहीगई जिससेकुवेरदेवता उत्पन्नहुये व तृणाविन्दुराजाके शालनामएकपुत्रने वैशाली पुरीबसाई उसकेवंशमें हेमचन्द्र व सोमदत्तादिक बहुतसे धर्मा त्माराजा हुयेथे॥

तीसरा अध्याय॥

श्राद्धदेव मनुसंतान उत्पन्न होनेकी कथा॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षितउसीश्राद्धदेवमनुकापुत्र सर्याति नामराजाथा उसकेयहांसुकन्यानाम एकपुत्री अतिसुन्दर उत्प न्नहुई इसलियेराजा उससेबड़ीप्रीतिरखकर आठोंप्रहरउसकोअ पनेसाथरखताथा एकदिनराजानेअपनी रानी व कन्या समेत अ हेरखेलनेकेवास्तेवनमेंजाकर जहांपर च्यवनऋषीश्वरकास्थान थाडेराकिया जबवहकन्याअपनीसहेलियोंको साथलेकरउसडेरे कीनिकटफिरनेलगी तबउसनेएकढेरमट्टीका जिसमेंदोछेदचमक तेदेखकर लड़कोंकेसमान उनदोनोंछेदोंमें कांटाचुभादियाजब उससेकिवेदोनोंआंख च्यवनऋषीश्वरकीथीं रक्तबहनेलगा तब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजकन्यामारेडरके घबड़ाकरवहांसेसहेलियोंसमेत अपनेडेरेमें चलीआई ऋषीश्वरमहाराजके दुःखपानेसेउसीसमय राजाकी सेनामें सबमनुष्य छोटेबड़े व ऊंट व घोड़ा व हाथीआदिकका म ल व मूत्रबन्दहोगया और पेटमेंपीड़ाहोनेलगी तबराजाने यहद शा सबकीदेखतेही अतिव्याकुलहोकर बनबासियोंसेपूछायहकै सास्थानहै कि हमारीसेनाकेलोग पीड़ितहोरहे हैं वहांके लोगोंने कहा कि यहस्थानरहने च्यवनऋषीश्वरका है यहबातसुनतेही राजाउनऋषीश्वरका स्थानढूंढ़ताहुआ उसजगहजहांपर लोहू बहताथा जापहुँचा तबउसनेरक्तदेखकर अपनेज्ञानसेमालूमकि या कि इसी टीले में शरीरच्यवनऋषीश्वरका मट्टीसेढँपगया है और वेबीचध्यानपरमेश्वरके ऐसेलीनहैं जो अपनेतनुकी सुधि नहींरखते और यहरक्तउनकी दोनोंआंखमें कांटाचुभादेनेसेबह ताहै यहवृत्तान्तदेखकर राजाअपनी सेनावालोंसे कांटाचुभाने काहाल पूछनेलगा तबराजकन्याबोली हे पिता यहअपराध अ जानमेंमुझसेहुआहै राजायहबातसुनकर प्रथमबहुत उदासहुये फिरउसीटीलेकेपासखड़ेहोकर बड़े शब्दसेस्तुतिउनऋषीश्वरकी की व अपनेहाथसेवहमट्टी जिससेऋषीश्वरमहाराजका अङ्गढँप गयाथा हटाया जबच्यवन ऋषीश्वर वहशब्दसुनकर समाधिसे जागे और सावधानहुये तबराजानेउन्हेंदण्डवत्करके हाथजोड़ कर विनयकी हेमुनिनाथ यहअपराधअजानमें मेरीपुत्रीसेहुआ जो उसनेतुम्हारीआंखमें कांटाचुभादिया इसीकारण मैंअपनी कन्याकोतुम्हेंअर्पणकरता आपऐसाआशीर्वाददीजिये कि जिस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में मेरीसेनाकादुःखछूटजाय च्यवनऋषीश्वरनेराजाकेस्तुतिकर
नेसेप्रसन्नहोकर ऐसावरदानदिया कि सबकिसीके पेटकीपीड़ा
छूटगई तबराजाअपनीकन्या च्यवन ऋषीश्वरके पासछोड़कर
वहांसे सेनासमेत राजमन्दिरपरचलेआये व च्यवनऋषीश्वर
फिरबीचध्यान परमेश्वरकेसमाधिलगाकर चौदहवर्षतक आंख
बन्दकियेबैठेरहे व राजकन्या भी उतनेदिन बिनाअन्नजल उन
केसामनेहाथजोड़े खड़ीरही और वहऐसीसुन्दरथी कि इन्द्रने उ
सकेपासआकरकहा कितू यहांकिसवास्तेइतनादुःखसहतीहै मेरे
साथचल हमतुझे इन्द्राणीबनाकर सुखदेवेंगे इसीतरह कुवेरादि
ककईदेवतोंनेआकर उसेअनेकप्रकारसे अपनेसाथचलनेकोकहा
परउसकन्या पतिव्रताने किसीकीओर आंखउठाकर कभीनहीं
देखा च्यवनऋषीश्वरको अपनापति व परमेश्वरसमझकर उन
केचरणोंमें ध्यानलगायेखड़ीरही जबउसको चौदहवर्षखड़े हुये
बीते तबच्यवनऋषीश्वरने समाधिसेजागकर क्यादेखा कि राज
कन्या उसीतरहहाथजोड़े सम्मुखखड़ीहै व उसकेशरीरमें केवल
हाड़ व चामरहगया ऐसापातिव्रतधर्म उसकादेखकर च्यवनऋ
षीश्वरअतिप्रसन्नहुये व उसीदिन परमेश्वरकी इच्छानुसार अ
श्विनीकुमारवैद्यवहांआये और ऋषीश्वरकोदण्डवत्करके विन
यकिया-जो आज्ञाहो सो तुम्हारीटहलकरें च्यवनऋषीश्वर बो
ले हमारीआंखअच्छीकरके मुझेतरुणकरदो तो मुँहमांगीवस्तु
तुम्हैंदेवैं जबअश्विनीकुमारने औषधकाकुण्डबनाकरऋषीश्वर
को उसमेंस्नानकराया तोउसीसमय च्यवनऋषीश्वरकी आंखैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अच्छीहोकर वेअतिसुन्दरबयस सोलहवर्षकीअवस्थाहोगयेतब
राजकन्याउन्हेंदेखकर अतिप्रसन्नहुई व च्यवनऋषीश्वरने आ
दरपूर्वक अश्विनीकुमारसेकहा किजोमांगोसोदेऊं यहवचनसुन
कर अश्विनीकुमारबोले महाराज हमदवाईदेवतोंकीकरतेहैं इस
लिये देवतालोग अपनीपंक्तिमें हमकोभोजनकरनेकेवास्ते नहीं
बैठालते और सोमयज्ञमेंमेराभागनहींदेते सो आपदयालुहोकर
ऐसाकरदीजिये कि जिसमें मैं भी भागपाऊं ऋषीश्वरबोले तूधै
र्यधर तेरामनोरथपूर्णहोगा जबअश्विनीकुमारवरदानपाकर आ
नन्दपूर्वक वहांसेबिदाहुये तबऋषीश्वरने राजकन्यासेकहा मैंत
पस्वीसंसारीसुखकीकुछइच्छा न रखकर सदाविरक्तरहताहूं पर
तेरेपातिव्रतधर्मसे हमअतिप्रसन्नहैं इसलियेसंसारीसुखके सबप
दार्थ संयुक्ततेरेसाथ भोग व विलासकरैंगे ऐसाकहकर ऋषीश्वर
महाराज अपनेयोगबलसे उसीजगहएकमकान सुवर्णका रत्नज
ड़ितबाग व तड़ागादिकसमेत ऐसाप्रकटकिया कि जिसमेंहरि इ
च्छासे सबबस्तुसंसारीसुखकीरक्खीथींतबऋषीश्वरनेराजकन्या
सेकहा कि तू इसतड़ागमेंस्नानकर जैसेउसने तालाबमेंगोता मा
रावैसे सोलहवर्ष की देवकन्यासमानसुन्दरीहोगई व हज़ारदासी
रूपवन्ती भूषण व वस्त्रपहनेहुये उसकेसाथतालाबमेंसे प्रकटहुई
जबउन्होंने राजकन्याको उत्तम२ भूषण व वस्त्रपहनाकरसोरहों
शृङ्गारउसकाकिया तब च्यवनऋषीश्वर राजकन्यासे अपनावि
वाहकरके भोग व विलासकरनेलगे कुछदिनबीतेएकरोज राजा
सर्य्यातिने अपनीसीमे कहा जिसदिनसे हम अपनीप्राणप्यारी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कन्या वनमें ऋषीश्वरको सौंपआयेहैं तबसेकुछसमाचार उसका
नहीं पाया और बिनाप्रयोजन उनको अपनेघर बुलानहींसके सो
मैं चाहताहूं कि अपनेयहांयज्ञकरकेइसबहानेसे च्यवनऋषीश्व
रको कन्यासमेत अपनेघरबुलावैं तो पुत्रीकासमाचारभी मालू
महोवैव उसेदेखकर अपनीआत्माठंढीकरैं जबरानीनेभी यहबात
पसंदकी तबराजायज्ञकी तैयारीकरके आप च्यवनऋषीश्वर को
बुलानेगये और उनकेस्थानपर पहुंचकरक्यादेखा कि वहां कुछ
टीला व झोपड़ी न होकर एकमकानजड़ाऊबागसमेतबनाहैउसे
देखतेहीराजाने आश्चर्यमानकर मनमेंकहा कि देखो इसबनमें
ऐसास्थान किसनेबनाया जिससमयराजा वहांखड़ाहुआ यही
विचाररहाथा उसीसमयराजकन्या दासियोंसमेत तालाबपर
स्नानकरनेवास्ते महलसेबाहरनिकली सो राजाकोदेखतेहीउस
नेबड़ेहर्षसेगले मिलनाचाहा पर राजाने उसकोगले न लगाकर
मनमेंविचारा कि कदाचित् वहऋषीश्वरमरगयाहो व इसनेकोई
दूसरापतिबनाकर यहसबविभवप्रकटकियाहै जबराजाने इससंदे
हसे उसकोअपनेगलेनहींलगाया तबराजकन्याबोली कि हे पि
ता तुमनेमुझे नहीं पहिचाना जो गले न लगाया राजाबोलेतेरे
माता व पिताकाउत्तमकुलहै तैंनेदूसरापतिबनाकर अपनेको क
लंकलगाया यहवचनसुनकरवहबोली आपऐसासन्देह न करैंमैं
ने दूसरापतिनहींकिया यहसबविभव जो देखतेहो ऋषीश्वर म
हाराजने जिसेमुझे सौंपगयेथे अपनेयोगबलसेप्रकटकियाहै यह
वचनसुनतेहीराजाने बड़ेहर्षसे अपनीकन्याको प्यारकिया व ज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बमन्दिरमेंजाकर च्यवनऋषीश्वरकोअश्विनीकुमारकेसमानअ
तिसुन्दर व तरुणदेखा तबआनन्दपूर्वक दण्डवत्करके उनसे वि
नयकिया महाराजमैं सोमयज्ञकरनेकी इच्छारखकर चाहताहूं
कि आपभीदयाकरके उसयज्ञमेंचलिये च्यवनऋषीश्वर यहबा
तमानकर स्त्रीसमेतराजमन्दिरपरगये रानीअपनीबेटी व दामाद
को देखकरहर्षितहुई जबच्यवनऋषीश्वरने राजाकेयहां यज्ञआ
रम्भकिया और सबदेवता व ऋषीश्वर आदिकवहांआये तबच्य
वनऋषीश्वरनेदेवतोंसेकहा यज्ञमेंअश्विनीकुमारकोभीभागदेव
यहवचनसुनकर इन्द्रबोले अश्विनीकुमार वैद्यरोगियोंकोछूते हैं
इसलिये उनकोयज्ञकाभागदेना न चाहिये च्यवनऋषीश्वरबो
ले हेइन्द्र मैं अश्विनीकुमारको यज्ञकाभागदेनेकेवास्ते वचनहा
रचुकाहूं इसलियेउन्हैं अवश्यभागदूंगा यहवचनसुनतेही इन्द्र
क्रोधितहोकरबोले हेऋषीश्वर तुमहमाराकहनानहींमानकर अ
श्विनीकुमारको यज्ञमेंभागदेवोगे तोतुमकोमारडालूंगा ऐसाक
हकर जैसेइन्द्रने च्यवनऋषीश्वरकेमारनेकेवास्ते गदाउठाई वैसे
ऋषीश्वरकीआज्ञा व परमेश्वरकी इच्छानुसार इन्द्रकाहाथउसी
तरहउठाहुआरहगया व उसनेगदामारनेकेवास्ते बहुतचाहा पर
हाथउसकानीचेकोनहींझुका जबइन्द्रअपने करतबसेलज्जितहो
करहाथउठेरहनेमेंदुःखपानेलगा तबसबदेवता व ऋषीश्वरोंने जो
वहांपरबैठेथे इन्द्रसेकहातुमने च्यवनऋषीश्वर महात्मापुरुषसे
जैसाअनुचितकिया वैसादण्डपाया अबतुमउन्हींसे अपनाअप
राधक्षमाकरवावो तबतुम्हाराहाथनीचेकोझुकेगा जबइन्द्रने हार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मानकर इसतरहपर विनयकिया आपमहात्मापुरुषहैं मैंतुम्हारी महिमा न जानकरअपनेफलकोपहुंचा अबदयालुहोकर अपराधमेराक्षमाकीजिये और अश्विनीकुमारको यज्ञमेंभागदीजियेहमसब देवतोंको आपकाकहनाअङ्गीकारहै जबच्यवनऋषीश्वरने इन्द्रकोदीनदेखकर अपनेहाथसे उसकाहाथझुकादिया तबहाथ इंद्रकानीचे झुककरज्योंकात्योंहोगया जबच्यवनऋषीश्वर व देवतोंनेअश्विनीकुमारकाभागयज्ञमेंदेकर उसकोअपनीपंक्तिमेंबैठाकेखिलाया व यज्ञराजाकाअच्छीतरह सम्पूर्णहोकर अश्विनीकुमारअतिप्रसन्नहुये तबसबदेवता व मुनि व च्यवनऋषीश्वरादिक अपने २ स्थानपरचलेगये इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोलेहे राजन् जोकोईबीचशरणपरमेश्वर केजाकरउनकातप व स्मरण करताहै उसेलोक व परलोकदोनोंजगहसुखमिलताहै व कोईदुःखदेनहींसक्ताहै व मनुष्यजोकुछमुखसेकहैया जिसवस्तुकीचाहनाकरै नारायणजी सबवचन व मनोरथउसकासिद्धकरतेहैं सो हे परीक्षितउसीश्राद्धदेवकेवंशमें रेवतनाम राजाबड़ाप्रतापी होकर उसकेयहां रेवतीनाम एककन्याअतिसुन्दरी व बुद्धिमतीउत्पन्न हुई जबराजानेउसकन्याको विवाहनेयोग्यदेखातब मनमेंविचाराजगत्कीरचनाकरनेवालेब्रह्माजीहैं मैंउनसेजाकरपूंछूं जिसराजकुंवरकावह रूपनामबतलावैं उसीसेअपनी कन्या विवाहदूं ऐसाविचारकर राजाअपनीकन्यासमेत ब्रह्मलोकमेंगये तबब्रह्माने उनकोबड़ाराजासमझकर आदरपूर्वकबैठाला उससमयब्रह्माकी सभामेंगन्धर्वलोगगातेथे इसलियेराजाने कुछकहनाउचितनजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नकर विचारकिया जबगानाबन्दहोजावै तबमैं अपनामनोरथक
हूं इसइच्छासे थोड़ीदेरवहां राजा बैठारहा जबगन्धर्वगाचुके तब
राजानेब्रह्मासेविनयकिया जो राजकुमारतुम्हारेजानमें अति सुं
दरहो उसकोबतलादीजिये तो मैं इसकन्याकाबिवाहउससेकरूं
ब्रह्माजीबोले जबसेतुममेरेयहांआये तबसे संसारमेंसत्ताईस युग
बीतगये जो राजातुम्हारेसामने मर्त्यलोकमें थे वे सबमरगये अ
बउनकेवंशमें कोईदूसराराजाधर्मात्माबीचसंसारके न रहाइसवा
स्ते तुमअपनीकन्या वसुदेवजीकेपुत्र बलभद्रनामको जो शेषना
गकाअवतारहैं बिवाहदेव सो राजारेवतने ब्रह्माजीकीआज्ञानुसा
ररेवती अपनीकन्याबलरामजीको बिवाहदिया व राजा आपब
नमेंजाकर हरिभजनकरकेमुक्तहुआ व रेवतीसतयुगकीकन्या इ
क्षीसहाथलम्बीथी इसलियेबलभद्रने अपनेहलसेदबाकर उसका
अंगअपनेबराबर छोटाकरलिया ॥

चौथा अध्याय ॥

राजा अम्बरीष की कथा ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित राजासर्यातिकी सन्तानमेंअम्बरी
षराजाऐसावैष्णव व परमभक्तउत्पन्नहुआ कि जिसपरब्राह्मण
काशापनहींलगा इतनासुनकर राजापरीक्षितने पूंछामहाराज
यहबड़ेआश्चर्यकीबातहै जो ब्राह्मणकाशाप मिथ्याहोवै व परम
वैष्णवराजाको ब्राह्मणने किसवास्तेशापदिया इसकावृत्तान्तक
हिये शुकदेवजीबोले हेराजन् इसकीकथाइसतरहपरहै कि राजा
अम्बरीपइंद्रियोंकासुख छोड़करतप व पूजानारायणजीकी सेवे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनसेकरकेहरिचरणोंमें ध्यानलगायेहुये राज्यकरताथा व उसके यज्ञमेंदेवतालोग ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंकातनुधरकर अपना २भा गलेतेथे और वहदिनरात सुखसेपरमेश्वरका स्मरण व हाथोंसेठा कुरजीकीपूजा व सेवा व आंखोंसेहरिचरणोंका दर्शन व ध्यानमें करकेकानोंसे कथा व लीलाअवतारोंकीसुनकर संसारीव्यवहार स्वप्नवत्जानताथा इसलियेनारायणजी दीनदयालुउसको अप ना परमभक्तजानकर उसकेराज्य व देशकीरक्षा सुदर्शनचक्रसे करतेथे व राजाकीस्त्रीभी परमवैष्णव व पतिव्रताथी सो राजा व रानी दोनोंमनुष्यपरमेश्वरकीभक्ति अपनेहृदयमेंरखकर दशमी को संयम व सब एकादशी निर्जलव्रतकरतेथे व द्वादशीकेदिन राजा साठकरोड़गो विधिपूर्वकब्राह्मणोंकोदानदेकर और उनको भोजनखिलाके आपद्वादशीमें व्रतपारणकरताथा सो एकबेर ए कादशीके दूसरेदिन दोघड़ीद्वादशीथी उसीदिनप्रातसमय दुर्वा साऋषीश्वरने अट्ठासीहज़ार ऋषीश्वरोंको साथलिये वास्ते परी क्षालेनेधर्म द्वादशीको राजाअम्बरीषके मकानपरआकर भोज नमांगा राजानेऋषीश्वरकासन्मानकरकेविनयकिया महाराज भोजनकापदार्थबनाहै दुर्वासाबोले हमस्नानकरआवैं तबभोजन करैं ऐसाकहकरयमुनाकिनारे स्नानकरनेचलेगये और वहांजान बूझकरपूजा व स्नानमेंविलंबकिया जिसमेंद्वादशीबीतजावे जब दुर्वासानआये और द्वादशीबीतनेलगी तबराजानेघबड़ाकर ब्राह्म णोंसेपूछा दुर्वासाऋषीश्वरस्नानकरके नहींफिरे व द्वादशीबीता चाहतीहैत्रयोदशीमेंव्रतपारणनहींहोता सोक्याकरनाचाहिये ब्रा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ह्मणोंनेआज्ञादी द्वादशीमें ठाकुरजीकेचरणामृतसे अपनाव्रतपा
रणाकरलेव चुल्लूभरजलपीना भोजनकीगिनतीमेंनहींहैराजाने
ब्राह्मणोंकीआज्ञानुसार द्वादशीमेंचरणामृतसे पारणाकर लिया
एकक्षणभर जबद्वादशीबीतगई तबदुर्वासाऋषीश्वर स्नानकरके
आये जबराजानेबड़ेहर्षसे उनकोभोजनकरनेवास्ते कहा तब ऋ
षीश्वरबोले हेराजन्तूसदाअपनेव्रतको द्वादशीमेंपारणकरताथा
आजइससमयद्वादशीबीतगई तैंनेपारणाकिया या नहीं राजाने
कहा महाराज मैंनेकुछभोजननहींकरके ब्राह्मणोंकीआज्ञानुसा
रचरणामृतसे पारणाकरलियाहै यहवचनसुनतेही दुर्वासाक्रोधि
तहोकरबोले तैंनेहमको द्वादशीमें भोजन खिलानाकहकर वि
नाआये हमारेव्रतपारणाकरलिया ऐसातुझेनहींचाहियेथा ऐसा
कहकरक्रोधवशदुर्वासाने एकलटअपनी जटासेनोचकर पृथ्वीप
रपटकातो उसीसमयकृत्यानाम स्त्री शस्त्रलियेप्रकटहोकर राजा
को मारनेदौड़ी सो हेपरीक्षितदुर्वासाने विनाअपराध राजाकोमा
रनेचाहा इसलिये नारायणजीने अधर्मदुर्वासाऋषीश्वरका सम
झकरसुदर्शनचक्रकोआज्ञादी कि तू अभीजाकरराजाकीरक्षा व
सहायताकर जिसमेंउसको दुःख न पहुँचे सो उसीसमय सुदर्शन
चक्रवहांआनकरप्रकटहुआ जबसुदर्शनचक्रके प्रकाशसे अंगक
त्याकाजलनेलगा और वहव्याकुलहोकरभागी तबसुदर्शनचक्र
दुर्वासाऋषीश्वरको जलानेचला जबदुर्वासाभी वहांसेअपनाप्रा
णलेकरभागे व सुदर्शनचक्रने उनकापीछाकिया तबवेभागकर
वरुण व कुबेर व इन्द्रलोकादिमें इसडरसेगये कि कोईदेवताह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मारीरक्षाकरै परकिसीदेवताको ऐसीसामर्थ्यनहींहुई जोऋषिश्व
रकोबचासकै जबदुर्वासानेअपनाबचावकहींनहींदेखा तबब्रह्मलो
कमेंदौड़गयेब्रह्माउनकोदेखतेहीबोले हेदुर्वासातुमनेउनआदिपुरु
षभगवान्‌केभक्तका अपराधकियाहै जोईश्वरहमसबके मालिक
होकर पलकभांजतेभरमें तीनोंलोकका नाशकरसक्तेहैं मैं तुम्हा
रीरक्षानहींकरसक्ता तबदुर्वासावहां से भी निराशहोकर महादेव
कीशरणगये तबशिवशंकरबोलेहेदुर्वासा परमेश्वरकीमायासे ह
मसबलोगउत्पन्नहुयेहैं परउनकीमायाकाभेद मैं व नारद व सन
कादिक व ब्रह्मा व कपिलदेवआदिककोईनहीं जानसक्तेतुमउन्हीं
परब्रह्मकेशरणजाव तौ बचौगे मुझेसामर्थ्यनहीं है जो तुम्हारी र
क्षाकरसकूं जबदुर्वासानेदेखा कि सिवायपरमेश्वरके कोई दूसरा
तीनोंलोकमेंमेरारक्षकनहींहै तबवैकुण्ठनाथके शरणगये व स्तु
तिकरके विनयपूर्वककहा मैंनेतुम्हारेभक्तकाअपमान किया इस
लियेसुदर्शनचक्र मुझेमाराचाहताहै सोमैं आपकी शरणआया
शरणआयेकीलाजरखकर मेरीरक्षाकीजिये यहबातसुनकर वैकु
ण्ठनाथबोले हेदुर्वासा हमत्रिलोकेमालिकहैं परंतुअपनेभक्त
परमेराकुछवशनहींचलता उसकेआधीनरहताहूं मुझको अपने
भक्त जैसेप्रियहैं वैसा मैं लक्ष्मीजी व अपनेतनुकोभीप्यारा नहीं
जानता जिसतरहपतिव्रता स्त्री अपनीसेवासेपतिको वशकरलेती
है उसीतरहमैं अपनेभक्तोंकेआधीनरहताहूं व निर्गुणभक्त सब सं
सारीसुखत्यागकर सिवायध्यानहरिचरणोंके दूसरीकुछइच्छा न
हींरखते व मुझेअपनाइष्टदेवमानकर मनसावाचाकर्मणासे चा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हते हैं इसलिये मैं उनकावचनामिटानहींसक्ता व मुझेअपनेवचन टलजानेका कुछशोचनहींहोता परमेरेभक्तकाकहा कोईमिटा नहींसक्ता सो हेदुर्वासा मेरेभक्तबड़ेदयावान्होकर क्रोधकोअपने वशरखतेहैं व किसीकाअनभलानहींचाहते कदाचित्राजाअम्बरीष अपनेअन्तःकरणसे क्रोधकरता तो तुमउसीजगहभस्महो जाते यहांतकनहींपहुँचते हमतुम्हारीरक्षानहींकरसक्ते तुमराजा अम्बरीषमेरेभक्तकीशरणजाव वहीतुम्हारीरक्षाकरैगा नहींतोसु दर्शनचक्रसे न बचौगे ॥

पांचवां अध्याय ॥

राजा अम्बरीषके पास दुर्वासाऋषिका आना ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जबदुर्वासावैकुण्ठनाथसे भी निराशहुये तबवेअतिलज्जितहोकर राजाअम्बरीषकेपास आये और दण्डवत्करकेखड़ेहुये राजायहदशाउनकी देखतेही अपने धर्म व दयासे कि शत्रुकाभी क्लेशनहींदेखसक्तेथे बहुतस्तुति करनेउपरान्त रोकरबोला हेसुदर्शनचक्र ऋषीश्वरको ब्राह्मणाजान करइनकीरक्षाकरौ किसवास्ते कि तुम्हारेमालिक ब्रह्मण्यदेवहोकर मैं भी ब्राह्मणकीभक्तिरखताहूं इसलियेमुझसे ऋषीश्वरका दुःखनहींदेखाजाता व मैंनेआजतक जो धर्मकियाहोउसकेफलसे दुर्वासाकुछदुःख न पावैं यहवचनअम्बरीषका सुनतेही सुदर्शनचक्रने तेजअपनाठंढाकरलिया तबराजाने दुर्वासासे जो आंख नीचेकियेखड़ेथे हाथजोड़करकहा महाराजसबपदार्थबनेहैं चलकरभोजनकीजिये सो दुर्वासाने छत्तीसप्रकारकाव्यंजन बड़ेआ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नन्दसेभोजनकिया हेपरीक्षित दुर्वासासुदर्शनचक्रके भयसे आ
काश व पातालमें एकवर्षपर्य्यन्तभागाकिये व राजाअम्बरीष व
र्षदिनबराबर उसीजगहवैसेहीखड़ारहकर इसबातकीचिन्ता कर
तारहा देखोमेरेवास्ते ऋषीश्वर इतनादुःखपातेहैं सो वर्षदिनतक
वहीभोजन जो दुर्वासाकेवास्तेबनाथा हरिइच्छासेठंढानहींहुआ
जबब्राह्मणोंको भोजनकराके राजानेभीप्रसादपाया तबदुर्वासा
ऋषीश्वरअतिअधीनताईसे बोले हे अम्बरीष मैंआजतक हरिभ
क्तोंकीमहिमानहींजानताथा कि परमेश्वरकेभक्त सबसेप्रबल हैं
तुमधन्यहौ जो मुझअपराधीकेवास्ते वर्षदिनतकखड़ेरहकर चि
न्ताकरतेरहे व सुदर्शनचक्रकी स्तुतिकरके तुमनेमेराप्राणबचाया
मुझेसामर्थ्यनहींहै जो हरिभक्तोंकामाहात्म्य वर्णनकरसकूं जब
दुर्वासाराजासेबिदाहोकरचलेगये तबऔरसबब्राह्मण व ऋषीश्व
रजोवहांथे राजाकीस्तुतिकरनेलगे उनकावचनसुनकर राजाबो
ला मैं कौनगिनतीमेंहूं यहसबपरमेश्वरके सुदर्शनचक्रकाप्रताप
था जिसनेमुझेकृत्याकेहाथसेबचाया देखोपरमेश्वरकी इतनी कृ
पाहोनेपरभी राजाअम्बरीष कुछअभिमान न रखकर भक्तिके तु
ल्यइन्द्रलोककासुख नहींसमझताथा इतनीकथासुनाकर शुकदे
वजीबोले हेपरीक्षित यहथोड़ीसीमहिमा अम्बरीषकी मैंनेतुमको
सुनाईहै उसकीभक्ति व गुणोंकासबवृत्तांत कोई वर्णननहींकरस
का सो कुछकालबीते राजा अम्बरीषने विरक्तहोकर राजगद्दीअ
पने छोटेपुत्रको देदिया व आपवनमेंजाकर हरिभजन करके मु
क्तहुआ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छठवां अध्याय॥

राजाइक्ष्वाकु का अपने पुत्रपर क्रोधकरना॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित अम्बरीषके वंशमेंइक्ष्वाकुनामरा
जाबड़ाप्रतापीहोकर एकदिनससाऊ अपनेबड़ेबेटेसे बोलातू वन
मेंजाकर अहेरमारलेआव तो मैं पितरों काश्राद्धकरूं सो राजकु
मारनेवनमें खरगोशमारकर भूखलगनेसेथोड़ा मांसउसका खा
लिया शेषमांसअपनेबापकेपासलेआया जबराजाश्राद्धकरनेवा
स्तेबैठे तबवशिष्ठऋषीश्वरअपने योगबलसेजानकरबोले हेराज
नूइसमेंसेथोड़ामांसतेरेपुत्रनेखालियाहैइसलिये यहमांस श्राद्धक
रनेयोग्यनहींरहा यहवचनसुनतेही राजानेससाऊको अपनेनगर
से बाहरनिकालदिया तबवहवनमें जाज्वल्यऋषीश्वरकी कुटी
परजाकर हरिभजनकरने लगा जबकुछकालबीते राजाइक्ष्वाकु
मरगये तबवशिष्ठऋषीश्वरने ससाऊको वनसेलाकर राज्यगद्दी
परबैठादिया उसकेवंशमें पुरंजयनामराजाबड़ाप्रतापी व बलवा
नूहुआ सो एकबेरदेवतोंकोदैत्योंने युद्धमेंजीतलिया जबइन्द्रने
जाकरब्रह्मासेअपनेविजयकाउपायपूछा तबब्रह्माजीबोले हेइन्द्र
तुममर्त्यलोकसेराजापुरंजयको अपनी सहायताकेवास्ते बुलावो
तोतुम्हारीविजयहोगी यहवचनसुनतेही इन्द्रनेराजापुरंजयकेपा
सजाकरविनयकिया कि आपको हमारासहायकहोकर दैत्योंसे
लड़नाचाहिये पुरंजयबोला हेइन्द्रमुझेतुम्हारीसहायता करनेमें
कुछसन्देहनहीं है परदैत्योंसे लड़तेसमयमुझे इतनाबलउत्पन्न
होगा कि महाहाथी व घोड़ासेराबोझउठानहींसकैंगे इसलियेतुम

CC-0. Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बैलरूपहोकर मुझेअपनीपीठपरउठाओ तबमैं दैत्योंसेलडूंगाज
बइन्द्रनेअपनेअर्थसाधनेकेवास्ते बैलरूपधरा तबराजाने उसपर
चढ़करदैत्योंकोयुद्धमें जीतलियाजबराजाकी सहायतासे इन्द्रा
दिकनेअपनाराज्यपाया तबपुरंजय फिरमर्त्यलोकमेंआनकर अ
पनाराज्यकरनेलगा उसकेवंशमेंसावस्तनामराजामहाप्रतापीहो
करसावस्तीपुरीबसाई उसकापोताराजा कुबलयाश्व ऐसाबलवा
नूउत्पन्नहुआ जिसनेउतंगऋषीश्वरकीसहायता करकेधुंधनाम
दैत्यकोमारडाला व उसदैत्यके मुखसेऐसीज्वालानिकली जिस
अग्निसे इक्कीसहज़ारपुत्र राजाकुबलयाश्वके भस्महोगये दृढ़हा
सआदिक तीनबेटेउसकेबचेसो दृढ़हासकापुत्रनिकुम्भहोकर उस
केवंशमेंयुवनाश्वनामराजा ऐसाप्रतापी व बलवानूहुआ जिसके
आधीन सातोंद्वीपकेराजारहतेथे परवहसंतानन्होनेससदाउदास
रहताथा एकदिनराजाने ऋषीश्वरोंसेविनयकियामहाराजआप
लोग कोईऐसाउपायकरैं जिसमेंमेरेपुत्रहोसोऋषीश्वरोंने पुत्रहो
नेकेवास्तेराजासेयज्ञकराके एककलशापानीका मंत्रपढ़करयज्ञ
शालामेंइसइच्छासेरक्खा किप्रातःकालरानीकोयहजलपिलवा
वेंगे तोउसकेपुत्रहोगाजबरातकोराजा व ऋषीश्वरलोगउसी यज्ञ
शालामेंसोये और परमेश्वरकीइच्छानुसारराजाको तृषालगीतो
उसने धोखेसेवहजलपीलिया तबप्रातःकाल ऋषीश्वरलोगयहवृ
त्तांतजानकरबोले हेराजन् तुम्हारेभाग्य व नारायणजीकी इच्छा
में किसीकावशनहीं है तेरेपेटसे एकबालकउत्पन्नहोगा राजा य
हवचनसनकर पहिलेउदासहुआ फिरइच्छापरमेश्वरकी इसी त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहजानकर सन्तोषकिया जबपेटराजाका गर्भवती स्त्रीकेसमान प्रतिदिनबढ़नेलगा और दशमहीनेबीते तबऋषीश्वरोंने दहिना कोखाराजाका चीरकर पेटमेंसे लड़कानिकालालिया व धावसी कर हरिइच्छासेराजाकोचंगाकरदिया जबउसबालकने रोकर दू धमांगा तबइन्द्रनेअपनाअंगूठा अमृतभराहुआ उसकेमुखमेंडा लकरचुसाया तो पेटउसकाभरगया व इन्द्रनेअंगूठाडालतेही स मयउसेमान्धातापुकारकरकहाथा कि इसकापालनमैंकरूंगा इ सलियेऋषीश्वरोंने उसकानाम मान्धातारक्खा सो वहसातोंद्वीप का ऐसाप्रतापी व बलवान्राजाहुआ कि जिससे रावणआदिक सबदैत्य व राक्षस डरतेथे व उसनेयज्ञकरके ब्राह्मणोंको बहुतदान व दक्षिणादीइसकारणतेज व बलउसकाअधिकहुआ व मान्धाता केयहां मुचुकुन्दादिकतीनपुत्र व पचासकन्याहुईं सो उसनेपचा सोंपुत्रीअपनी सौभरिऋषीश्वरकोब्याहदीं इतनीकथा सुनकरप रीक्षितनेपूंछा महाराजमान्धातानेपचासकन्याएकऋषीश्वरको क्यों ब्याहदियाथा शुकदेवजीबोले हेराजन् सौभरिऋषीश्वर य मुनाकिनारेजलमेंबैठेतपकरतेथे साठहज़ारवर्ष तपकरने उपरांत एकदिन ऋषीश्वरने मछलीको अपनेबच्चोंकेसाथ यमुनाजलमें क्रीड़ाकरतेदेखा तबवृद्धहोनेपरभीमनमेंयहविचारा किगृहस्थाश्र मबहुतअच्छाहोताहै जबऋषीश्वरको इच्छागृहस्थीकरनेकीहुई तबउन्होंनेराजामांधाताकेपासजाकरकहा हमकोएककन्याअप नीदेवराजानेशापकेभयसेयहउत्तरदिया महाराजमेरेपचासपुत्री हैं आपराजमन्दिरमेंजावैं जो कन्यातुमकोअंगीकारकरे उसका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्याह तुमसेकरदूं यहवचनसुनकर सौभरिऋषीश्वरनेबिचारा कि मुझबृद्धमनुष्यको यहसबराजकन्या किसतरह अंगीकारकरेंगी तरुणास्त्री बृद्धमनुष्यको नहींचाहतीहैं ऐसाविचारकर ऋषीश्वर ने तपोबलसे अतिसुन्दर व तरुणस्वरूपअपनाबनालिया किजि सेदेखकरअप्सरामोहितहोजावैं जबवहऋषिरूपअपनाअश्विनी कुमारकेसमानबनाकर राजमन्दिरमेंगये तो उनकीसुन्दरताई दे खतेही पचासोंराजकन्या लाजछोड़कर उनपरमोहितहोगईं तब राजामान्धाताने बिधिपूर्वकपचासोंकन्या ऋषीश्वरकोब्याह दि या व ऋषीश्वरमहाराजसबकोअपनेस्थानपरलाये और उन्होंने अपनेयोगबलसे पचासबिमानरत्नजटित बाग व तड़ागादिक सब बस्तुसंयुक्तबनादिये और सौभरिऋषीश्वर पचासरूपधरकर ए क २ स्त्रीसे बिलग २ बिमानोंमें भोग व बिलासकरनेलगे वहबि मानऋषीश्वरकीइच्छानुसारउड़कर इन्द्रलोकादिक में चले जा तेथे और उनबिमानोंकी शोभादेखकर देवता व देवकन्या व मा न्धाताआदि ईर्षासंयुक्त उनकीबड़ाईकरतेथे जबइसीतरह सुखव बिलासकरतेहुये उनऋषीश्वरके पचासहज़ारपुत्रहुये व उनकाइ तनाबंशबढ़ा कि जिसकीकुछगिनतीनहींहोसक्ती तबउन्होंनेबहु तदिन संसारीसुखभोगकरके एकदिनमनमेंबिचारा कि देखोइत नेदिनहमनेसुखभोगा तिसपरभी मननहींभरा व मैंने अपने अ ज्ञानसे हरिभजन व स्मरणछोड़दिया और संसारीमायामें फँस करनष्टहुआ कदाचित इसीतरहमायाजालमें फँसाहुआमरगया तो परलोक मेराबिगड़जायगा इसलिये फिरपरमेश्वरका तप व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भजनकरनाचाहिये ऐसाबिचारतेही सौभरिऋषीश्वरनेमन अप
ना संसारीमायासे बिरक्तकरलिया व पचासों स्त्री समेतबनमें च
लेगये व योगाभ्यासकेसाथ अपनातनुत्यागदिया तबपचासोंस्त्री
उनकेसंगसतीहोकर पतिसमेत सत्यलोकमें चलीगईं ॥

सातवां अध्याय ॥

राजा त्रिशंकुमुनि की कथा ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित मान्धाताकेमरनेउपरांत अम्बरी
षनाम बड़ाबेटाउसकीगद्दीपरबैठा उसकेबंशमें हारीतनाम ऐसा
प्रतापीराजाहुआ जिसनेनागोंकीसहायताकरके गन्धर्वोंकोमारा
तबनागोंने बड़ेहर्षसेअपनीबहिन उसकोब्याहकर यहवरदानदि
या जोलोगतुम्हारेनामका स्मरणकरैंगे उनकोकोईसर्प दुःख न
देगा हारीतकेबंशमें त्रिशंकुनामराजा उत्पन्नहुआ और वशिष्ठ
गुरूकेपुत्रोंने उसेऐसाशापदिया किचांडालहोगया व फिरविश्वा
मित्रकेवरदानसे उसकोस्वर्गमिला इतनीकथासुनकरपरीक्षितने
पूंछा हेस्वामी इसकीकथाविस्तारपूर्वककहिये शुकदेवजीबोले हे
परीक्षित त्रिशंकुराजा एकदिनवशिष्ठगुरूसेबोला आपमुझेकोई
ऐसायज्ञकरावें किजिसमेंइसीशरीरसे स्वर्गकोचलाजाऊं यहसु
नकर वशिष्ठजीनेकहा हमकोऐसायज्ञकरानानहींआता जबत्रि
शंकुनेजाकर वशिष्ठकेबेटोंसेयहीबातकही तबउन्होंने उसेशाप
दिया कि तू गुरूकावचनझूठसमझकर फिरहमारेपास पूंछनेआ
या इसलियेचांडालहोजा सोत्रिशंकुजबरातको सोकरप्रातसमय
उठा तोअंगउसकाकालाहोकर कपड़ेनीलेहोगये इसलियेलोगों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने उसकाछूनाबन्दकरदिया तबवहघबड़ाकर बीचशरण विश्वा
मित्र ऋषीश्वरके जो वशिष्ठजी से शत्रुतारखते थे जाकरबोला
महाराजगुरूकेबेटोंने मुझेशापदेकर चाण्डालबनादिया व मेरीइ
च्छास्वर्गमेंजानेकीथी सोपूरीनहींहुई इसवास्तेतुम्हारीशरणआ
याहूं जिसमेंमेरीकामनापूरीहो वैसाकीजिये यहवचनसुनतेहीवि
श्वामित्रहंसकरबोले हेराजन्शापदेनेसेतेरास्वरूप जोचाण्डाल
केसमानहोगयाहै वहाकिसीतरह बदलनहींसक्ता पर मैं तुझको इ
सीरूपसे स्वर्गमेंपहुंचादूंगा ऐसाकहकर विश्वामित्रने सम्पूर्ण पृ
थ्वीके ऋषीश्वरोंको अपनेयहांबुलाया उसमें सौ पुत्र वशिष्ठगुरू
के नहींआये इसलियेविश्वामित्रने उनलोगोंकोशापदेकर डोम
बनादिया व राजात्रिशंकुसेयज्ञकराया जबउसमें किसीदेवता ने
आहुति नहींली तबविश्वामित्रने क्रोधितहोकरअपने कमण्डलु
केपानीसे त्रिशंकुकोस्नानकराकेकहा कि तू मेरेतपोबलसे स्वर्ग
मेंचलाजा सो वहचांडालहोने परभी विश्वामित्रके योगबलसे
स्वर्गकोचढ़गया व इन्द्रासनपरजाकर थोड़ीदेरबैठा जबइन्द्रनेदे
खा कि चांडालमनुष्य इन्द्रासनपर बैठाहै तबएकलातमारकर
उसकोगिरादिया और देवतोंनेत्रिशंकुसेकहा तू चाण्डालहै इस
लिये शिरनीचे व पैरऊपरकरकेगिर चाण्डालका ठिकानास्वर्ग
में नहींहै गिरतीसमयचिल्लाकरपुकारा हेविश्वामित्रमहाराज मु
झेइन्द्रनेलातमारकर इन्द्रासनसेगिरादिया मेरीसहायताकीजि
ये यहवचनसुनतेही विश्वामित्रने त्रिशंकुसेकहा तू उसीजगह र
ह जबऋषीश्वरकीआज्ञानुसार वह उसीस्थानपरठहरगया व वि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वामित्रअपनेयोगबलसे उसके रहनेवास्ते जगहनवीनस्वर्ग त
य्यार करके दूसरेदेवताबनानेलगे तबदेवतोंनेधबड़ाकेविश्वामित्र
कीशरणजाकरविनयकिया महाराजदूसरेदेवताबनानेसे हमलो
गोंकाअपमानहोगा बिनाआज्ञानारायणजीकी नईबातकरनाउ
चितनहींहै यहवचनसुनकर विश्वामित्रबोले मैं त्रिशंकुको स्वर्ग
देनेकेवास्ते वचनहारचुकाहूं इसलियेयहनयास्वर्ग मेराबनाया
हुआ उसकेरहनेवास्ते स्थिररहैगा परदूसरेदेवतोंकीरचना न क
रूंगाजबदेवता हारमानकरबोले बहुतअच्छा तबविश्वामित्र ने
दूसरेदेवतानहींबनाकर अपनास्वर्गबनायाहुआ रहनेदियासोआ
जतक राजात्रिशंकु उसीस्वर्गमेंउलटे लटकेहैं व उसकेमुखसे जो
लारबहतीहै उसीकीकर्मनाशानदीप्रकटहुई जिसनदीमेंपैरडाल
नेसेसबपुण्यमनुष्यके क्षीणहोजातेहैं व त्रिशंकुकीछाया मगध
देशपरपड़तीहै इसलियेमगधको मरनेवास्तेअशुद्धकहतेहैं त्रिशं
कुकापुत्र हरिश्चन्द्रनामराजा बड़ाप्रतापीहुआ और उसनेपुत्रहो
नेवास्तेवरुणदेवताकी मानतामानीथी किमेरेबेटाहोतोउसीबाल
ककातुम्हें बलिदानचढ़ाऊं जबवरुणदेवताकी कृपासे रोहितना
मबेटाउसकेहुआ तबराजानेप्रेमवश उसेबारहवर्षतक बलिदानन
हींदिया जबवरुणदेवतानेबलिदान देनेवास्ते अतिहठकिया औ
रउसबालकनेसमझा कि घररहनेसेएकदिनअवश्य बलिदानदि
याजाऊंगा तबवहअपनाप्राणबचाकर तीर्थयात्राकरनेचलागया
व वरुणने बलिदान न पानेसे क्रोधितहोकर हरिश्चन्द्रके जलंध
रकारोग उत्पन्नकिया जबराजाउसरोगसे मरणतुल्यहोगया तब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रोहितने यहवृत्तान्तसुना कि मेरेपिताबरुणदेवताके क्रोधसेमरा चाहतेहैं तबउसनेकहा मेरेऐसेजीनेपर धिक्कारहै जो मेरापितामेरे वास्तेमाराजावे ऐसाविचारकर जबवहबलिदानहोनेकेवास्तेअप नेघरआनेलगा तबराहमेंउसने सुनःसेफ विश्वामित्रकेभांजे को देखा तबरोहितने सुनःसेफकेमाता व पिताको जो अतिकंगालहो करतीनपुत्ररखतेथे कहा सौ गौ हमसेलेकर एकपुत्रअपना हम को दे देव यहवचनसुनकर अजयकीर्त्ति पिता सुनःसेफकाबोला बड़ाबेटा मुझे बहुतप्याराहै उसे न दूंगा व उसकी स्त्री बोली मैंछो टेपुत्रको बहुतप्यारकरती हूं उसे न बेचोंगी यहवचनअपने मा ता व पिताकासुनकर सुनःसेफ मँझलेपुत्रने कहा मेरामोह मा ता व पितानहींरखते इसलिये मैं रोहितकेहाथ बिकजाताहूं ज बयहबचनसुनकर अजयकीर्त्ति व उसकीस्त्री चुपहोरही तब रो हितने सौ गौ बिधिपूर्वक उन्हेंदेकर सुनःसेफको मोलले लिया व उसेअपनेबदले बरुणदेवताकाबलिदान देनेकेवास्ते साथ ले करघरकोचला तबराहमेंविश्वामित्र ऋषीश्वरमिले जबउन्हों ने अपनेभांजेकोदेखकर अपनेयोगबलसेजाना कियहबलिदान होनेवास्तेजाताहै तबउसेऋचावेदकीबतलाकर कहाकितूइसेनि त्यपढ़ाकर तेरीमृत्युनहोगी सोऋषीश्वरकी आज्ञानुसार उसने वहऋचापढ़नाआरम्भ किया राजकुमारसुनःसेफको साथलिये हुयेराजमन्दिरपरपहुँचा तबहरिश्चन्द्रअपनेबेटेको देखकरअति प्रसन्नहुआ व उसनेविश्वामित्रादिक ऋषीश्वरोंकोबुलाकर बरु णदेवताकाबलिदान देनेकेवास्ते यज्ञआरम्भकिया व मनमें वि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चाराकिराजकुमारकेबदले सुनःसेफको बलिदानदेकर रोहितको बचालूंगा व बरुणदेवता अपनाबलिदानलेकर मुझेभीआराम करदेवेंगे जबयज्ञकरतेसमय सुनःसेफको बलिदानदेनेकासमय आया तबविश्वामित्रने बहुतस्तुतिकरके बरुणदेवताको प्रसन्न किया और अपनेभांजेकोबलिदानहोनेसे बचालिया व बरुणने राजाहरिश्चन्द्रको बरदानदेकरउसकारोगछुड़ादिया जबरोहित वसुनःसेफ दोनोंकेप्राणबचे और बरुणदेवताप्रसन्नहोगये तबविश्वामित्रने हरिश्चन्द्रको ऐसाज्ञानउपदेशकिया जिसकेप्रतापसे वहमुक्तहुआ व रोहितउसकीराज्यगद्दीपरबैठकर धर्मपूर्वकराज्य करनेलगा ॥

आठवां अध्याय ॥

राजा सगरकी कथा ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित रोहितकेबंशमें राजाचम्पकहुआ जिसनेचम्पापुरीबसाई व चम्पककेबंशमें आहुकनामराजा बड़ा प्रतापीहोकर उसनेपुत्रहोनेकेवास्ते हज़ारविवाहअपनेकिये पर हरिइच्छासे किसीरानीकेसन्ताननहींहुई इसलियेराजाआहुक उदासरहताथा सोएकदिननारदमुनिने राजमन्दिरपर आनकर पूंछा हेराजन् तुमउदासक्योंदिखलाईदेतेहो आहुकने हाथजोड़ करविनयकिया कि महाराज मैंआपकोपरमभक्तसमझकर अपनादुःखकहताहूं हज़ारविवाहकरनेपरभी पुत्रनहीं हुआ यहीचिन्तामुझे दिनरातरहतीहै यहवचनसुनतेही नारदजीने दयालुहोकरएकफलआमका जो हाथमेंलियेथे राजाकोदेकरकहा जिस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रानीकोचाहो यहआमखिलादो परमेश्वरकीदयासे बालकहोगा राजानेवहफललेकर अपनीबड़ीस्त्रीको जिसकी उसदिनबारीथी खिलादिया सो रानीके उसीदिनगर्भरहगया परबालकउत्पन्ननहींहुआथा कि उन्हींदिनोंमेंदूसरेराजोंनेजोबलवान्थे राजाआहुकको युद्धमेंजीतकरसबनगरउसका अपनेआधीनकरलिया तबवहअपनीरानियोंसमेतभागकर बनमेंचलागयाव ऋषीश्वरोंकेस्थानकेनिकट झोपड़ीबनाकररहनेलगा सो राजाबड़ीरानीकेगर्भवती होनेसे उसपरअतिप्रीति रखकरआठोंपहर उसीकेपासरहताथा इसलिये राजाकोदूसरीरानियोंने सवतियाडाहसे आपसमें कहनेलगीं देखोअभीबड़ीरानीके पुत्रउत्पन्ननहींहुआ तिसपरभी राजारातदिन उसीकेपास रहतेहैं हमारीओर आंखउठाकर कभीनहींदेखते बालकहोनेपर न मालूमहमलोगों की क्यादशाहोगी इसलिये रानीकोबिषदेना चाहिये जिसमेंवहपेटके बालकसमेत मरजावे जबउन्होंनेयहसम्मतकरके किसीबस्तुमें बिषमिलाकर गर्भवतीरानीको खिलादिया और वहाबिषकीज्वालासे ब्याकुल हुई तबउसनेअवरवऋषीश्वरकीकुटीमें जो उसीजगहरहतेथे जाकरविनयकिया महाराजमैं तुम्हारेशरणआईहूं मेराप्राणबचाइये यहदीनवचनसुनकर ऋषीश्वरबोले हे रानी तूमतडर परमेश्वरकीकृपासे नहींमरेगी व जो बालकतेरेपेटमेंहै वहभीजीताबचकरबिषसमेत उत्पन्नहोगा यहआशीर्बादसुनकर अतिप्रसन्नहुई व ऋषीश्वरकीदया व हरिइच्छासे बिषनेअपनाबलनहींकिया व गर्भभीज्योंकात्योंबनारहा जबकुछकालबीतेराजाआहुकअपमृत्यु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेमरगया व उसकीसबस्त्रियां सतीहोनेलगीं तबअवरव ऋषीश्व
रने गर्भवतीरानीसेकहा तूमतसतीहो तुझसेएकबालक बड़ाबल
वान् व तेजमानउत्पन्नहोकर चक्रवर्तीराज्यकरेगा यह सुनकर
वहरानीनहींसतीहुई और सबरानीराजाकेसाथजलकर सत्यलो
ककोचलीगई व गर्भवतीरानीउसीजगहकुटीबनाकररही दशवें
महीनेउसकेएकबालकअतिसुन्दर व तेजमानउत्पन्नहुआऔर
उसबालककेसाथ वहबिषभी पेटसेनिकला संस्कृतमें बिषको गर
लकहतेहैं इसलिये अवरवऋषीश्वरने उसबालककानाम सगर र
क्खाजबवहबालकबड़ाहुआ तबउसनेसेनाबटोरी और हरिइच्छा
व ऋषीश्वरके आशीर्बादसे दूसरेराजोंको जीतकर अपनेपिताकी
राजगद्दीछीनली व राजसिंहासनपरबैठकर साथधर्म व प्रजा पा
लनके राज्यकरनेलगा व राजा सगर ऐसाप्रतापीहुआ जिसनेता
लजंघ व ववनामआदिक म्लेच्छराजोंको अपनीभुजाके बलसे
युद्धमेंजीतकरमारडाला व अवरवऋषीश्वर अपनेगुरूकीआज्ञा
नुसार बहुतम्लेच्छोंका शिर व डाढ़ी व मूंछ मुड़वाकर यह यश
अपना संसारमें प्रकटकिया व सातोंद्वीपकेराजोंको अपनेआधी
नकरके अपने दोबिवाह किये सो राजा सगरके केशिनीरानी से
असमंजसनाम एकपुत्रहोकरसुमतीनामदूसरी स्त्रीसे साठहज़ार
बेटेउत्पन्नहुये व असमंजसकेएकअंशुमाननामपुत्र बड़ाप्रतापी
व अतिसुन्दर उत्पन्नहुआ सो असमंजस पूर्बजन्मकायोगी था
इसकारणप्रजाकोदुःखदेना आरम्भकिया इसलियेराजासगरने
प्रजाकेकहनेसे असमंजसको बनवासदेदिया और अंशुमानअप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेपोतेको जो धर्मात्माथा पासरक्खा कुछदिनोंउपरांत राजासग
रने सौअश्वमेधयज्ञकरना विचारकर निन्नानवेयज्ञअच्छीतरह
सम्पूर्ण किया जबसौवांयज्ञ आरम्भकरके शास्त्रानुसार श्याम
कर्ण घोड़ाछोंड़ा और साठोंहज़ारबेटोंको उसकीरक्षाकरनेके वा
स्ते संगकरदिया तबइन्द्रनेमनमेंविचारा कि मनुष्यसौयज्ञकरने
से इन्द्रहोताहै सो राजासगर सौवांयज्ञसम्पूर्णकरके मेराइन्द्रास
नछीनलेवेगा व मुझेऐसीसामर्थ्य नहींहै जो राजासेसन्मुख लड़
करश्यामकर्णघोड़ाछीनलाऊं और यज्ञउसका बिध्वंसकरूं इस
लिये छलकरके श्यामकर्णघोड़ालेनाचाहिये ऐसाविचारकरइंद्र
वहघोड़ाकिसीछलसेचुरालेगया औरजहांकपिलदेवमुनिबैठेतप
करतेथे लेजाकरउनकेपीछे बांधदिया व आपइन्द्रलोकको चला
गया जबराजकुमारोंने घोड़ाअपनानहींदेखा तबउन्होंने चौदहों
लोकमेंजाकर वहघोड़ाबहुतढूंढ़ा परकहींपताउसका न पायाजब
खोजनेसे निराशहुये तबराजासगरकेपासजाकर सबवृत्तांत कह
के विनयकिया महाराज आपआज्ञादेवें तो पृथ्वीखोदकरघोड़ा
ढूंढ़ैं राजाबोले बहुतअच्छा खोजनाचाहिये सो उन्होंने अपनेपि
ताकीआज्ञानुसार घोड़ाढूंढ़नेकेवास्ते इतनीपृथ्वीखोदी कि छोटे
छोटे सातसमुद्र औरभरतखण्डमेंप्रकटहुये जबवहलोग घोड़ाखो
जतेहुये कपिलदेवमुनिके स्थानपरगये तो क्यादेखा कि कपिल
देवमुनि बैठेतपकरते हैं और घोड़ाउनकेपीछे बँधाहै तबसाठों ह
ज़ारराजकुमार चिल्लाकरबोले हमनेअपनाचोरपकड़ा जब उन
के चिल्लानेसे कपिलदेवमुनिकाध्यानखुलगया तबउन्होंने आं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खउठाकरक्रोधसे उनलोगोंकी ओरदेखा तो उसीजगह साठों ह
ज़ारराजकुमारजलकरभस्महोगये जबराजासगरने बहुतदिनत
क कुछसमाचार अपनेबेटोंकानहींपाया तबअंशुमान पोतेको बु
लाकरकहा तू जाकर अपनेचाचों व घोड़ेकीसुधिलेआ यहवचन
सुनतेही अंशुमानघरसेनिकला और उनकापतालेताहुआ जहां
परवहजलगयेथे जापहुँचा जबउसने वहांपर कपिलदेवमुनिको
बीचध्यानपरमेश्वरके बैठेदेखा और दण्डवत् व परिक्रमाकरके
स्तुति उनकीकी तबकपिलदेवमुनिप्रसन्नहोकरबोले हेराजकुमा
रतूघोड़ाअपनालेजा परतेरेचाचालोग जोमेरेक्रोधसे जलकरमर
गयेहैं वहअभीमुक्तनहींहोसक्ते जबगंगाजी आनकरअपनेजलसे
उनकीहड्डी व राखबहावेंगी तबउनकाउद्धारहोगा यहवचन कपि
लदेवमुनिकासुनतेही अंशुमानउनकोदण्डवत् करके श्यामक
र्णघोड़ाअपना वहांसेलेकर राजासगरके पासआया व सबवृत्तां
त जो कपिलदेवमुनिसे सुनाथाकहदिया राजासगरने मरनाअप
नेबेटोंका ऊपरइच्छापरमेश्वरकी समझकर सन्तोषकिया व सौ
वांयज्ञअपना सम्पूर्णकरके व ऋषीश्वरोंसेज्ञानसुनकर संसारीमा
याछोड़दिया व अंशुमान अपनेपोतेको राजगद्दीपर बैठाकर बन
में चलागया व हरिचरणोंमें ध्यानलगाकर मुक्तहुआ॥

नवां अध्याय॥

मृत्युलोकमें गंगाजीके आनेकी कथा॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् अंशुमानउनकेपोतेने कुछदिनराज्य
काज साथधर्म व प्रजापालनकेकरके दिलीपनाम अपनेबेटेको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजगद्दीदेदी व आपबनमेंजाकर अपनेचाचोंकीमुक्तिवास्ते गंगा
जीकातपकरते २ मरगया परगंगाजीप्रसन्ननहींहुई कुछदिनउप
रांत राजादिलीपभी गंगाजीकेआनेवास्ते तपकरनेलगा व उसी
इच्छामें उसनेभीतनुअपनात्यागकिया परगंगाजीने दर्शननहीं
दिया राजादिलीपकाबेटा एकभगीरथनाम बालकथा जबउसने
खेलतेसमय अपनेसाथीबालकोंकेमुखसेसुना किमेरेबाप व दादा
गंगाजीकेलानेवास्ते तपकरते २ मरगये तिसपरभी वहनहींआई
तबभगीरथनेकहा प्रथममैंगंगाजीकोलाकर पीछेसेराजगद्दीपरबै
ठूंगा यहबातमनमेंठानकर यहभी बनमेंचलागया व प्रेमपूर्वकह
रिचरणोंकाध्यान करनेलगा तबगंगाजीने प्रसन्नहोकर स्त्रीरूप
से भगीरथकोदर्शनदिया और कहा तू क्या चाहताहै भगीरथने
गंगाजी को देखतेही दण्डवत् व परिक्रमा व स्तुतिकरके हाथ
जोड़कर विनयकिया हेमाता मेरेपुरुषालोग कपिलदेव मुनिके
शापसे जलकरराखहोगये हैं इसवास्ते चाहताहूं तुम मृत्युलोक
में चलकर उसराखको अपनीलहरसे बहावो तब वहलोगकृतार्थ
होवैंगे यहबात सुनकर गंगाजीबोलीं हेराजकुमार मुझेभूलोकके
आनेमें दोबातकासन्देहहै एकतो आकाशसेगिरतीसमय पृथ्वी
मेराभार न सहसकैगी ऐसाहीकोईप्रतापी बलवान्हो जो मेरे ज
लकावेग अपनेशरीरमें लैसकै दूसरेपापी व अधर्मीलोग मुझमें
स्नानकरनेसे मुक्तिपाकर वैकुंठजावैंगे व उनकेपापका अंशमुझे
पहुँचेगा इनदोनोंबातों का उपायकरो तो आसक्तीहूं यहसुनकर
भगीरथबोले हेजगतारिणी मैंशिवजीसे विनयकरताहूं वह तम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को अपनेशिरपरलेवैंगे व हरिभक्त व तपस्वी व मुनि व महात्मा व ऋषीश्वरोंके स्नानकरनेसे पापी व अधर्मीलोगों के नहानेका पाप तुमकोनहींलगैगा यहबातमानकर गंगाजीवहांसेअन्तर्द्धान होगईं व भगीरथ बीचतप व ध्यानमहादेवजीके लीनहुआ जब शिवशंकरप्रसन्नहुये औरभगीरथको दर्शनदेकरबोले तू क्याचाहताहै तब भगीरथने दण्डवत् व परिक्रमाकरके विनयकिया हे महाप्रभू मैंनेवास्ते कृतार्थहोने अपनेपुरुषोंके गंगाजीसे मृत्युलोकमेंआनेको विनयकियाथा सोगंगाजीने कहा कोईमुझे अपने ऊपरलेकरमेरेजलकावेगउठावे तोमैंआऊं इसलियेचाहताहूं कि आपपहिले गंगाजीको अपनेमस्तकपरलेवैं तब उनकावेगपृथ्वी सहिसकैगी महादेवजी ने प्रसन्नहोकर भगीरथकी विनतीमान ली जबजलगंगाजीका आकाशसे गिरा व शिवजीने अपनेशिर परलिया तबकुछकाल गंगाजीशिवशंकरकीजटामेंघूमतीरहीं पृथ्वीपरनहींगिरीं जबभगीरथने फिरस्तुति शिवजीकी वास्तेप्रकट होनेगंगाजीकेकी तबमहादेवजीने एकरथ भगीरथकोदेकर कहा तू इसपरबैठके गंगाजूकेआगे २ जाकर अपनेपुरुषोंकीराह दिखलादे यहकहकर शिवशंकरने अपनी जटानिचोड़के गंगाजीको बाहरनिकाला और उसीरथपर भगीरथचढ़ा जहां कि उसकेपुरुषोंकीराखपड़ीथी वहांगंगाजीको लिवालाया जबगंगाजी उसराखपरहोकरबहीं तबसबपुरुषा उसके देवतारूपसे विमानपरबैठकर स्वर्गकोचलेगये व भगीरथबड़ेहर्षसे राजमन्दिरपरआया व ब्राह्मणव कंगालोंको बहुतसा दान व दक्षिणादेकर राजगद्दीपर बैठा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व उसने बहुतकाल धर्मपूर्वक राज्यकिया उसकेबंशमें राजा ऋतुपर्ण बड़ाप्रतापीराजानलकामित्रहुआ जिसने घोड़ाचढ़ना राजानलसेसीखकर उसेजुआखेलनाबतलायाथा ऋतुपर्णकापुत्र सुदासनामबड़ाप्रतापीराजा एकदिन अहेरखेलनेवास्ते बनमें गया और वहांउसने हिरण्यरूपराक्षसको मारडाला उसराक्षसके भाईने राजासे बदलालेनेकी इच्छाकी पर वहराजासे सम्मुखलड़नेकीसामर्थ्य नहींरखताथा इसलिये वह ब्राह्मणरूपसे राजाके पासजाकरबोला मुझेरसोईबनानीअच्छीआतीहै यहबचन सुनकर जबराजाने उसेरसोईबनानेवास्ते नौकररखलिया और वहराक्षसब्राह्मणरूपवहांरहनेलगा तब एकदिन राजासुदासने वशिष्ठ ऋषीश्वरको नेवतादेकरअनेकप्रकारका व्यंजन व मांसबनवाया तो उसराक्षसने मनुष्यकामांसबनाकर सबपदार्थ समेतवशिष्ठजीके सम्मुखधरदिया वशिष्ठगुरूने अपने योगबलसे वहमांस पहिचानतेही राजापरक्रोधकरकेकहा हेराजन् तू मुझेराक्षस समझकर मनुष्यकामांस मेरेखानेवास्तेलायाहै इसलिये मैं नारायणजीसेचाहताहूं कि तू बारहबर्षतक राक्षसहोजा व मनुष्यकामांस खायाकर ऐसाशापदेकर वशिष्ठजीउठखड़ेहुये उससमयराजानेकिवहभी अपनेतपोबलसे शापदेनेकोसामर्थ्यरखताथा कहामेरीजानकारीमें किसीनेमनुष्यकामांस वशिष्ठऋषीश्वरकेखानेवास्तेनहींरक्खाथा मुझेवृथाऋषीश्वरने शापदिया इसलिये मैंभी उनकोशापदेताहूं जबऐसाकहकर राजानेशापदेनेवास्ते पानी हाथमेंउठाया तबरानीराजाकाहाथपकड़करबोली आपकोब्राह्म

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ण व गुरूसेबराबरीकरना न चाहिये वशिष्ठजीने क्रोधबश शाप
दिया तोअच्छाकिया फिरदयालुहोकर बरदानदेवैंगे तुमइनको
शापमतदेव राजानेरानीकेसमझानेसे वशिष्ठजीकोशापदेना उ
चितनजानकर वहजलहाथका अपनेपैरपरडालदिया सो दोनों
पैरराजाके कालेहोगये उसदिनसे राजासुदासकानाम कल्माष
पादलोगकहनेलगे और सबअंगराजाका ज्योंकात्योंबनारहापर
ज्ञानउसका शापदेनेसे राक्षसोंकेसमानहोगया इसलिये वहमनु
ष्योंकोपकड़कर मांसउनकाखानेलगापर स्त्रीकोनहींखाताथासो
एकदिनराजाने बनमें किसीऋषीश्वरको स्त्रीसमेतदेखकर उसे
खानेकीइच्छाकिया तबवहस्त्रीविनतीकरकेबोली हेराजन्अभी
तक मैंने अपनेस्वामीसे इच्छापूर्वक संसारीसुख नहींभोगा मुझे
सन्तानहोनेकी इच्छाबनीहै इसलियेतूमेरेपतिको मतखा कदा
चित् तूनमाने तोमुझेभीखाले जबराजाने अपनेराक्षसी धर्म्मसे
उसकीविनतीनमानकर ऋषीश्वरको खालिया तबवहब्राह्मणी
हाड़अपनेस्वामीकेबटोरकरसतीहोगई वजलतीसमयउसनेराजा
को यहशापदिया जबतूस्त्रीप्रसंगकरेगा तबमरजावेगा जबबारह
बर्षशापकेदिनबीतगये और ज्ञानराजाका शुद्धहुआ तबवहअप
नाराज्यकरनेलगा एकदिनराजाने रानीसेप्रसंगकी इच्छाकी पर
रानीशापकासमाचार सुनचुकीथी इसलिये उसनेराजाकोबहुत
समझाकरभोगकरनेनहींदिया फिरएकरोज वशिष्ठगुरूनेअपनी
इच्छासे राजमन्दिरपर आनकर राजा व रानीको ऐसाबरदान
दिया कि बिनाभोगकिये तुम्हारेपुत्रहोगा यहआशीर्बाद देकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वशिष्ठऋषीश्वर अपनेस्थानपर चलेगये व उनकीकृपासे बिना प्रसंगकिये उसीदिनरानीको गर्भरहकर सातवेंवर्ष अस्मकनामपुत्रहुआ उससेमोलकनाम बालकहोकर परशुरामजीके क्रोधसेबचा सबक्षत्रियोंकीजड़वहीहै उसकाबेटा राजाखट्वांग ऐसाप्रतापी व धर्मात्माहुआ जिसनेदेवतोंकी सहायताकी और दैत्योंको युद्धमेंजीतकर मुक्तहुआ उसकीकथा विस्तारपूर्वक दूसरे स्कन्धमें लिखीहै ॥

दशवां अध्याय ॥

कथा रामावतारकी ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित खट्वांगकेवंशमें राजादशरथ बड़ेप्रतापी व तेजवान्हुये जिन्होंने अयोध्यापुरीमें धर्मपूर्वक राज्यकिया व उनकेयहांरामचन्द्रजी परब्रह्मकाअवतार कौशल्यारानीसे व लक्ष्मणजी शेषनागकाअवतार व शत्रुघ्नसुमित्रा स्त्रीसे व भरतकैकेयीरानीसे उत्पन्नहुये उन्हींरघुनाथजीकाचरित्रव लीलातुमने ऋषीश्वरोंकेमुखसेसुनाहोगा फिर हम उनकी कथा संक्षेपसेकहतेहैं सुनो जिन्होंनेबालपनमें मारीच व सुबाहुराक्षसको मारकर विश्वामित्र ऋषीश्वरके यज्ञकी रक्षाकी व उन्हींत्रिलोकीनाथनें लक्ष्मणजी अपनेभाईसमेत विश्वामित्र गुरुके साथ जनकपुरमें जाकर जो धनुषमहादेवजीका किसीराजासे नहीं उठताथा उसेऊखकेसमानतोड़कर परशुरामजीका गर्वमिटाया व सीताको व्याहकर अयोध्यामेंलाये और अपनेपिताकीआज्ञानुसार लक्ष्मण व जानकीसमेत चौदहवर्षबनबासकिया जबपंच

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कटीमें शूर्पणखारावणकी बहिनका नाक व कानकाटलिया तब
खर व दूषण व त्रिशिराभाईशूर्पणखाके चौदहहज़ारराक्षस समे
त रामचन्द्रजीसे लड़नेआये सो उनकोसेनासमेत मारडालाजब
रावणने शूर्पणखाके नाक व कान काटने व खर व दूषणआदिक
अपनेभाइयोंके मारेजानेकासमाचार सुना तबवहयोगीका बेष
धरकर सीताजीको हरलेगया जबमार्गमेंजटायु गृध्रहरिभक्तनेरा
वणकोरोंका तबलंकापतिने जटायुसेबड़ायुद्धकरके अग्निबाण
मारकरउसेगिरादिया व सीताजीको समुद्रपारलेजाकर अशोक
वाटिकामेंरक्खा जबरामचंद्रजी मारीचराक्षसको जो मायारूपी
हरिणबनाथा मारकरअपनेस्थानपरआये व जानकीजीको नहीं
देखा तब नरदेहधारणकरनेसे अति विलापकरतेहुये दोनोंभाई
सीताजीकोखोजतेचले जबराहमें जटायुसेसुना कि लंकापतिरा
वणजानकीको हरलेगयाहै तबरघुनाथजीनेगृध्रको परमभक्तजा
नकर उसकासंस्कार अपनेहाथसे किया फिरआगेजाकर कबंध
राक्षसकोमारा व कबंधकेमुखसे सुग्रीववानरकासमाचार सुनकर
जानकीको ढूंढ़नेवास्ते उसकेसाथमित्रताकी औरवालिवानरको
मारकरकिष्किन्धाकाराज्य सुग्रीवकोदिया व उसकीआज्ञानुसार
हनुमान्आदिक करोड़ोंवानर व भालुसीताके खोजनेवास्ते चा
रोंदिशामेंगये व हनुमान्जी लंकामेंजाकर उसपुरीकोजलादि
या और वहांसेआनकर जानकीजीके कुशलानन्दका समाचार
रघुनाथजीकोसुनाया तबरामचन्द्रजीने बड़ीभारीसेना भालु व
वानरोंकीसाथलेकर लंकापरचढ़ाईकी व समद्रकिनारे पहुँचकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नल व नीलवानरोंसे उसमेंसेतुबँधाया जब विभीषण रावणके भाईनेवहांआनकर रघुनाथजीकादर्शनकिया तबरामचंद्रजी ने उसीजगह लंकाकेराज्यकातिलक विभीषणकेलगाया व जब उसीपुलकेराह सेनासमेत पारउतरकर लंकाको घेरलिया तब लक्ष्मणजीसुग्रीव व हनुमान् व अंगद व नल व नील व जामवंत भालुआदिक सेनापतियोंकोसाथलेकर राक्षसोंसेयुद्धकरके उन्हैं मारडाला जबकुम्भकर्णभाई व इन्द्रजीत बेटा रावणकामारा गया व उसनेआपचढ़ाईकरकेरामचन्द्रजीसे बड़ायुद्धकिया तब रघुनाथजीने अग्निबाण रावणकेहृदयमेंमारकर उसेमुक्तपददिया जबविभीषणरामचन्द्रकी आज्ञानुसार रावणका दाहकर्म्मादिककरचुका तबउसेरघुनाथजीने राज्यलंकाकादिया जबविभीषणराजसिंहासनपरबैठा तबवहसीताजीको जड़ाऊसुखपालपर बैठाकर रामचन्द्रजीकेपासलेचला उससमय सबभालु व वानरों की यहइच्छाहुई कि हमलोग जानकीजीका दर्शन करके नेत्रों को सुफलकरते तो अच्छाहोता रघुनाथजी अन्तर्यामीने विभीषणकोआज्ञादी कि जानकीजीसेकहदेव पैदल हमारेपास आवैं यहवचनसुनतेहीसीताजी सुखपालसेउतरकर रघुनाथजीकेपास आईं तबसबभालु व वानरोंनेउनकादर्शनपाकर अपने २ नेत्रोंको सुखदिया जबलक्ष्मणजी सीतामाताके चरणोंपरगिरेतबजानकीजीने उन्हैंआशीर्वाददिया फिर रामचन्द्रजी विभीषण व हनुमान्आदिक सेनापति व सीताजीको अपनेसाथ पुष्पक विमान में बैठाकर लंकासेचले जबतीसरेदिन प्रयागराजपहुंचे तबवहांसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हनुमान्जीको यहकहकर अयोध्यापुरीमें भेजाकि तुमपहिलेसे जाकर भरतजीको हमारेआनेकासमाचारदेव व एकदिन अवधि कारहगयाहै मैं अपनेअवधिपर नहींपहुंचूंगा तोभरतजी अपना तनुत्यागकरदेवैंगे यहवचनसुनतेही हनुमान्जीने अयोध्यामेंजा कर रघुनाथजीका आगमन भरतजी से कहादिया यहसमाचार सुनकरभरतजीको बड़ाहर्षहुआ औरहनुमान्जीको आशीर्वाद देकर वशिष्ठगुरु व पुरबासी व सेनासमेत रामचन्द्रजीकोआगेसे लेनेगये व रघुनाथजी पहिलेवशिष्ठगुरुके चरणोंपरगिरे फिरउठ करभरतजी व शत्रुघ्नको अपनेगलेलगाया औरवहांसेअयोध्या वासी व अपनेसाथियोंको अनेकबाहनोंपरबैठाकर अयोध्यापुरी में पहुंचे व रामचन्द्र व लक्ष्मणजी सीतासमेत राजमन्दिरमेंजा कर अपनीमाताको दण्डवतकिया व वशिष्ठजीकीआज्ञासे शुभ मुहूर्त्तमें राजसिंहासनपरबैठे व धर्मपूर्वक राज्यकरनेलगे उससम यत्रेतायुगथा सोरामचन्द्रजीकेधर्म व प्रतापसे उनकाराज्य सतयुगकेसमानहोगया॥

यारहवां अध्याय॥

सीताजीको वाल्मीकिजीके स्थानपर भेजनेकीकथा॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित रामचन्द्रजीने राजगद्दीपरबैठकर संसारीजीवोंको धर्ममार्गदिखलानेवास्ते अनेकयज्ञकिये और सबद्रव्य व राज्यादिक अपनाब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको संकल्पक रके एकधोती व अँगौछा व एकसारी व सुमंगलानामयंत्र सीता जीकेअंगपर अपनेपासरहनेदियासबनारदजीआदिक ऋषीश्वर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Lucknow. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व ब्राह्मणोंने उनको आशीर्वाददेकरकहा महाराजआपने त्रिलो
कीनाथहोकरअपनेस्वरूपकाध्यान जोहमलोगोंकोदियाहै उसी
मेंहमलोग मग्नरहतेहैं यहराज्यलेकर क्याकरैंगे हमलोगोंको
इसकेबदले गोदानदीजिये किअग्निहोत्रादिककियाकरैं जिसमें
हमाराधर्मबनारहै सोरघुनाथजीने ब्राह्मणोंकोदया व कृपासेउन
को गोआदिक विधिपूर्वकदानदेके फिरदेशअपना ब्राह्मणोंसे ले
लिया और राज्यकरनेलगे सातोंद्वीपकेराजा और सबदेवता व
दैत्यादिक उनकीआज्ञापालतेथे व प्रजालोग पुत्रकेसमानउनसे
पालनहोकर आनन्दपूर्वक हरिभजनमेंरहतेथे एकदिनरात्रिको
रघुनाथजी वेषबदलकर अपनीकीर्त्तिकीपरीक्षा लेनेवास्ते अ
योध्यापुरीमेंनिकले सोएकधोबीने अपनीस्त्रीसे लड़तेहुये यह
कहा तूबिनाकहे मेरेएकरात्रि कहींबाहररहआई सो तू अबमेरेघर
रहनेयोग्यनहींहै इसलियेअपनेयहां न रक्खूंगा जहांतेरीइच्छा
होचलीजा मैंराजारामचंद्रजीनहींहूं जोसीताउनकी स्त्री वर्षादिन
तकरावणकेयहांरहीं फिरउन्हैंअपनेघरमें लाकररख लिया जब
रामचन्द्रजी यहलोकनिन्दा अपनेकानसेसुनकर राजमंदिरपर
आये व उसीचिंतामेंरात्रिभरनिद्रानआई तबप्रातःकाल शत्रुघ्न
सेकहा सीतागर्भवतीको बनमेंलेजाकरछोड़आवो जबशत्रुघ्नय
हवचनसुनतेही अचेतहोगये और उनकीआज्ञा न मानी तबयही
भातरघुनाथजीने भरतसेकही जबउन्होंनेभीयहवचन त्रिलोकी
नाथका पालन न किया तबरामचन्द्रजीने लक्ष्मणको बुलाकर
कहा मैंनेभरत व शत्रघ्नसेसीताजीको बनमेंछोड़आनेकीआज्ञा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दीथी सो नहींमानी तुमयहबातजाकर सीताजीसेकहो तुमने ऋषीश्वरोंकीस्त्रियां व गङ्गाजीकी पूजाकरनेवास्ते मानतामानी थी सो चलकरपूजाउनकी करनाचाहिये जबवेतुम्हारेसाथ जावें तबतुमउनको निकटस्थान वाल्मीकि ऋषीश्वरके इसीबहाने से छोड़करचलेआवो जानकीजीको घरमेंरखनेसे प्रजालोगमेरी निन्दाकरतेहैं हमाराकहना न मानोगे तो मैं मरजाऊंगा जब लक्ष्मणजीने ऐसावचनसुना और उत्तरदेना उचित न जाना तब सीताजीसे जाकरकहा कि तुमहमारेसाथचलकर पूजा गङ्गाजी व ऋषिपत्नियोंकी जो मानतामानीथी करआवो यहवचन सुनतेही सीताजी अतिप्रसन्नहुईं व अनेकप्रकारका भूषण व वस्त्र ऋषिपत्नियोंकेवास्तेलेकर लक्ष्मणजीकेसाथ रथपरचलीं उससमयबहुत अशकुनहुये परजगत्माताने कुछविचारनहींकिया जब लक्ष्मणजी गङ्गापरउतरे वनिकटस्थानवाल्मीकि ऋषीश्वरकेपहुंचकर रुदनकरनेलगे तबजानकीजीने पूंछा हेलक्ष्मण तुम्हारे भाई अच्छीतरहहैं तुमक्योंरोतेहो यहवचनसुनतेही लक्ष्मणजीने अतिव्याकुलहोकर सबवृत्तान्तकहदिया व हाथजोड़कर विनयकिया हेमाता मैं तुमकोयहांबनमें छोड़नेआयाहूं यहबातसुनतेहीजगत्माता अचेतहोकर गिरपड़ीं व अति विलापकरके लक्ष्मणजीसेकहा बहुतअच्छा जो आज्ञारघुनाथजीकी होवै सोतुमकरो मेरीओरसे रामचन्द्रजीको हाथ जोड़करकहदेना मुझसे जो अपराधहुआहो क्षमाकरैं किसवास्ते कि मैं अनेकजन्मकी उनकीदासीहूं फिर लक्ष्मणजीगर्भवती जानकीमाताकोरोतेहुये

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाल्मीकि ऋषीश्वरकेस्थानपरछोड़करचलेआये व ऋषीश्वरनेउ
नको अपनीकन्याकेसमानरक्खा सो कुछदिनबीते उसीजगहसी
ताजीके लव व कुश दो बालक अतिसुन्दर व तेजवान् व प्रतापी
व बलवान् उत्पन्नहुये जबअश्वमेधयज्ञ करतेसमय रघुनाथजी
नेफिरलक्ष्मणको सीताकेबुलानेवास्तेभेजा तबजानकीजीनेलव
व कुश दोनोंपुत्रअपने लक्ष्मणजीकोसौंपदिये व अयोध्यापुरीमें
जाकर उसीजगह पृथ्वीमेंसमागईं यहसुनकर रघुनाथजीने बड़ा
शोच व विलापकिया और सीताकोत्यागनेउपरान्त रामचन्द्रजी
ब्रह्मचर्य्यरहकर यज्ञादिक कियाकरतेथे व ग्यारहहज़ारवर्षतकउ
न्होंने अयोध्यापुरीकाराज्यभोगकर प्रजाकोबड़ासुखदिया व ल
क्ष्मण व भरतजी व शत्रुघ्नके चित्रकेतु व सुबाहुनाम आदिकदो
दो पुत्र उत्पन्नहुये सो रघुनाथजीने जो अपनेभाइयोंका अति
आदरकरतेथे देशउत्तरका भरतजी व पश्चिमका शत्रुघ्न व पूर्व
कालक्ष्मणजीको बांटदियाथा और सब स्त्री व पुरुषअयोध्याबा
सी रघुनाथजीका दर्शनपाकर जैसाप्रसन्नरहतेथे वैसासुख इन्द्र
पुरीमें किसीकोनहींमिलता उनकेराज्यमें पशु व पक्षी आदिक
कोईजीव दुःखीनहींथा इसीतरहराज्यअयोध्यापुरीका धर्मपूर्वक
किया और अन्तसमयअपनेपुत्रकोराज्य अयोध्यापुरीकादेकर
वैकुण्ठमेंपधारे और अयोध्याबासी सबजीवोंको उसीशरीरसेवि
मानपरबैठाकर अपनेसाथलेगये उनरामचन्द्रजीका नामलेनेसे
करोड़ोंजीव भवसागरपारउतरजातेहैं औरविस्तारपूर्वक कथाउन
कीरामायणमें लिखीहै व रामचन्द्रजीके निकट से मद्रमेंसेतुबांध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नावरावण आदिक राक्षसोंका बधकरना कुछकठिननहींथा वहअपनी भृकुटीफेरनेसेएकक्षणमेंचौदहोंलोककीरचना व नाशकरसक्तेथेयहसबलीला व चरित्रउन्होंनेसंसारीजीवोंको केवलगृहस्थाश्रममार्गदिखलानेवास्तेकियाथा देखोजबऐसेईश्वरको गृहस्थी करनेमें स्त्रीकेकारणदुःखहुआतोसंसारमेंस्त्री व गृहस्थीसेसबको दुःखप्राप्तहोगा ॥

बारहवां अध्याय ॥

कुशके वंशकी कथा ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित राजा कुशके वंशमें अतिथि वपुएडरीक व सुदासआदिक कईपीढ़ीउपरान्त मरुनामराजा बड़ाप्रतापीहुआ और वह मरुआजतक उत्तरदिशाकलापग्राममें बैठाहुआतपकरताहै कलियुगके अंतमेंफिरसूर्य्यवंशी धर्मात्माराजाउससे उत्पन्नहोकर अपनावंश चलावैंगे और उसीमरुके वंशमें वृहद्बलनामराजा बड़ाप्रतापीहुआ जिसकोभीमसेन तुम्हारेदादाने महाभारतमेंमाराथा इतनेलोग राजाइक्ष्वाकुके कुलमें बड़े प्रतापीराजाहोचुकेहैं अबजोलोग उनकेवंशमें आगेहोंगे उनकानामसुनो वृहद्बलके वंशमेंसहदेव व सुमन्तआदिक कई राजाप्रतापीहोकर बहुतपीढ़ीतकउनकाराज्य संसारमेंस्थिरहोगा हेराजनू कलियुगमेंयहांतक सूर्यवंशियोंका राज्यहोकर कुलउनका उत्तमरहैगा ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेरहवां अध्याय ॥

राजा निमिको वशिष्ठ ऋषीश्वरका शापदेना ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षितराजानिमि इक्ष्वाकुकेबेटेने एकस मय वशिष्ठऋषीश्वर अपनेगुरुसेयज्ञकरानेवास्तेकहा तबवशिष्ठ जीबोले राजाइन्द्रकेयहांसे हमैंज्ञानयज्ञकरानेका नेवताआयाहै पहिलेवहांयज्ञकराआऊं पीछेसेतुमकोयज्ञकरादूंगाजबऐसाकह कर वशिष्ठऋषीश्वर इन्द्रपुरीमें यज्ञकरानेचलेगये तबराजानि मिने बिचारा देखोजीनेकाएकक्षणभी भरोसानहींरहताकदाचि त् वशिष्ठजीके फिरआनेतकयहतनुमेराछूटजावै तोयहइच्छारह जावैगी ऐसाविचारतेही राजानेगोतमऋषीश्वरको पुरोहितबना कर यज्ञकरना आरम्भकिया उसीसमय वशिष्ठगुरु इन्द्रकोयज्ञ कराके राजमन्दिरपरआये जबवशिष्ठऋषीश्वरने दूसरेपुरोहित को यज्ञकरातेदेखा तबबड़ेक्रोधसे राजानिमिको शापदेकर कहा तू बिनाहमारेआयेयज्ञकरानेलगा इसलियेतनुतेराछूटजावै यह वचनसुनकरराजाबोला हेवशिष्ठजी तुमयजमानकायज्ञ कराना छोड़कर लोभसे इन्द्रकेयहांचलेगयेथे इसलिये तुम्हाराशरीर भी स्थिर न रहै सो वशिष्ठऋषीश्वर व राजा निमि दोनोंने आ पसकेशापसे अपना २ तनुछोड़दिया कुछकालबीते मित्रावरुण देवताका वीर्य उर्वशीअप्सराकारूपदेखकर गिरपड़ा सो वहवीर्य घड़ेमें रखनेसे वशिष्ठ व अगस्त्यमुनि उत्पन्नहुये व राजा निमि के जीनेवास्ते गोतमआदिक ऋषीश्वरोंने फिरयज्ञकिया जबदेव तोंने प्रसन्नहोकरपछा तुमक्याचाहतेहो तबऋषीश्वरोंने विनय

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया आपलोगऐसीदयाकरैं जिसमेंयजमानहमारा जीउठे सो देवतोंने ऐसा आशीर्वाददिया कि राजाके शरीरमें प्राणआगया तबराजा देवता व ऋषीश्वरोंसे हाथजोड़करबोला महाराज अबमुझे यहतनु जिसका एकदिनअवश्यनाशहोगा न चाहिये ऐसीकृपाकरो जिसमेंसदास्थिररहूं यहसुनकरदेवता वब्राह्मणोंने राजाको आशीर्वाददिया कि तुम बिनाअङ्गहोकर सबजीवों के पलकमें रहो यहवरदानदेकर सबदेवताअन्तर्द्धानहोगयेसो उसी दिनसे जीवराजानिमिका सबकेपलकमें रहताहै फिर उनसब ऋषीश्वरोंने शरीरराजाकादहीकेसमानमथकर उसमेंसेएकबालक अतिसुन्दर वतेजमान जनकनामउत्पन्नकिया जिसनेमिथिला पुरीबसाई उसकेवंशमें देवरातआदिक बहुतराजाहोकरकईपीढ़ी उपरांत शीरध्वजनाम बड़ाप्रतापी राजाहुआ जिसको यज्ञशाला जोततीसमय हललगनेसे सीताजीकन्यामिलीं जिनकाव्याह रामचन्द्रजीसेहुआथा शीरध्वजकेवंशमें धर्मध्वजआदिक बहुतसेप्रतापी राजाहुये नाम उनराजाओं का दूसराहोकर वहसब जनकविदेही कहलातेथे सो उनकेवंशमें सबराजा योगीश्वर व ज्ञानी उत्पन्नहोकर धर्मपूर्वक राज्यकरके अन्तसमय मुक्तहुये यहसब सूर्यवंशी राजाओंकीकथा हमने तुमको सुनाई॥

चौदहवां अध्याय॥

चन्द्रवंशी राजाओं की कथा॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् अबहम चन्द्रवंशकुलकी उत्पत्ति कहते हैं सनो नारायणजीके नाभिकमलसे प्रथम ब्रह्मा उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुये व ब्रह्माकेनेत्रसे अत्रिमुनिने जन्मलिया और उनसे चंद्रमा होकर ब्राह्मण व तारागण व औषधी व वृक्षादिकके राजा हुये उन्होंने बृहस्पतिजीको गुरूबनाकर राजसूययज्ञ आरम्भकिया व उसयज्ञमें बृहस्पतिकी स्त्री तारानाम जो अतिसुन्दरीथी छल करके छीनालिया जबताराकेवास्ते दैत्योंने चन्द्रमाकीओर व देव तोंने बृहस्पतिकी ओर सहायकहोकर आपसमें महायुद्धकिया तबब्रह्माकी आज्ञानुसार चन्द्रमाने बृहस्पतिकी स्त्री देडाली सो ताराको चन्द्रमाके बीर्य से गर्भथा जबबृहस्पतिके क्रोधकरने से ताराने अपनालड़का गर्भ से गिरादिया तब उसबालकका रूप देखकर बृहस्पतिने चाहा यहबालक हमलेवें व चन्द्रमाने इच्छा की यहमैंलूं जबउसबालकके लेनेवास्ते फिरबृहस्पति व चन्द्रमा से झगड़ाहोनेलगा तबब्रह्माने तारासेपूछा यहबालककिसकेबीर्य से है सो ताराने चन्द्रमाका बीर्यबतलाया इसलिये ब्रह्माकी आ ज्ञासे वहपुत्र चन्द्रमाने पाकर उसकानाम बुधरक्खा व बुधके इलानामस्त्रीसे पुरूरवानामबेटा बड़ाप्रतापी व तेजवान् व सुन्दर उत्पन्नहुआ सो राजा पुरूरवाके यश व बल व धर्म की बड़ाई उर्वशी अप्सराने इन्द्रकी सभा में सुनीथी जब एक दिन उर्वशी अप्सरा ऊपरस्थान तपकरने मित्रावरुणके जानिकली व उसका रूप देखकरमित्रावरुणका बीर्य गिरपड़ा तब मित्रावरुणने शाप दिया कि तैंने हमारे स्थानपर आनकर मेरेतपमें भंगकिया इस लिये तू मर्त्यलोकमें जाकररह जबवह अप्सराउसशापसे भूर्लोक में आई तबवहराजा पुरूरवाकेपास रहना विचारकर उसकीबाग़

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में गई और एक हिंडोलाजड़ाऊ वृक्षमेंलटकाकर झूलनेलगी व
दो गन्धर्वोंको भेड़ाबनाकर अपनेसाथरक्खा जबराजा मालीसे
उसका समाचारपाकर बाग़मेंआया तब उर्वशी अप्सराका रूप
देखकर उसपर मोहितहोगया जबराजा ने हठकरके उर्वशी को
अपनेपास रहनेवास्तेकहा तब वहमहासुन्दरीबोली हेराजन्तुम
तीनबातकी प्रतिज्ञाकरो तो मैं तुम्हारेपासरहूं राजाबोले जो तुम
कहो सो करूं उर्वशीबोली एक तो मेरे दोनों भेड़े कभी दुःख न
पावैं दूसरे नित्यनवीन घृतभोजनको देना तीसरे कभी अपनी
इन्द्रीनंगेहोकर मतदिखलाना जबइनतीनोंबातमें विपरीतहोगी
तबमैं यहांसेचलीजाऊंगी राजानेतीनोंबातमानकरउसकोअपने
पासरक्खा व आठोंपहर उसकेपास रहकर भोग व बिलास करने
लगा सो छःपुत्रराजाके उर्वशीसे उत्पन्नहुये व उर्वशी अप्सरा
मित्रावरुणकेशापसे मर्त्यलोकमें राजाकेपासरहनेलगी जबमन
देवतों का उर्वशीअप्सराकानाच देखनेको चाहा तबराजाइन्द्रने
गन्धर्वोंको आज्ञादी कि किसीतरह उर्वशीकोयहां लानाचाहिये
जब गन्धर्वोंनेजाकर उर्वशीसेकहा तुझेइन्द्रनेयाद किया है तेरे
बिना इन्द्रकीसभामें शोभानहींहोती यहवचन सुनतेही उर्वशी
बड़े हर्षसे चलनेवास्ते तैयारहुई तबगन्धर्वोंने उर्वशीकी आज्ञानु
सार अपनीमायासे नयाघृतबदलकर पुरानाघृत उर्वशीकोखिला
दिया व रातको गन्धर्वलोग दोनोंभेड़े उर्वशीकेचुराकर आकाश
मेंलेउड़े उससमयउर्वशीने राजापुरूरवाको जो उसकेपाससोया
था जगाकरकहा मेरेदोनों भेड़े कोई चुराकर लियेजाता है तुम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जल्दी छीनलेआवो तुमभी अपनेको शूरवीरजानतेहो तुमसेस्त्री बलीहोतीहैं यहवचन सुनतेही राजाघबड़ाकर भेड़ोंकेपीछे नंगा उठदौड़ा तबउर्वशीने उसकोनंगे देखकर कहा हेराजन् मेरातेरा यहीप्रणथा जबमैं तुझे नंगादेखूंगी या मेरे दोनोंभेड़ दुःख पावेंगे या जिसदिन मुझेनयाघृत खानेको नहींमिलेगा तबमैंतेरेपास न रहूंगी सोआजतीनोंबातैं विपरीतहुई इसलियेअबमैं तेरेपासनहीं रहसकी ऐसाकहतीहुई बिजुलीकेसमान चमककरवहांसेउड़गई सो गन्धर्वोंने उसेइन्द्रलोकमें पहुँचादिया व राजापुरूरवा उसके चलेजानेसे अतिव्याकुलहोकर बन व पहाड़में उसे ढूंढ़नेनिकला सो पैदलचलने व कांटेचुभनेसे ऐसादुःखीहुआ कि उसको अपने तनुकी सुधिनहींरही इसतरह राजा उसकेविरहमें व्याकुलहोकर चारोंओरफिरताथा सो एकदिनाफिरताहुआ कुरुक्षेत्रमेंजाकर से मलवृक्षकेनीचे खड़ाहुआ व उसीजगह उर्वशीअप्सराभी बहुत सखी अपनेसाथ लियेहुई सरस्वतीकुण्डमें स्नानकरतीथी और कोई उन्हैं नहींदेखसकाथा पर अप्सरालोग देवदृष्टिसे उसको देखतीथीं उससमय तिलोत्तमानामसखीने उर्वशीसेपूछा तुममर्त्य लोकमेंआनकर कौनपुरुषकेपासरहतीथी उसको मैंभी देखाचाहतीहूं उर्वशीने राजापुरूरवाको दिखाकरकहा मैंइसीकेपास रहती थी तिलोत्तमाराजाकोदेखकरबोली तुम्हारेविरहमें यहबहुतव्याकुल व मलीन दिखलाईदेताहै एकबेर तुमअपनारूप इसेदिखलादो तो ज्ञान व क्रांतिइसकाअच्छाहोजाय यहबाततिलोत्तमा से सुनकर उर्वशीने अपनारूपराजाकेसामने प्रकटकिया उसेदेख

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेही राजापुरूरवाकाचित्त ठिकानेहोकर रूपउसका इसतरहबद लगया कि जिसतरह मुर्देके तनुमेंप्राणआजावे तबराजाने उर्वशी के सामने बहुतरोकरकहा हेप्राणप्यारी तू मुझे किसवास्ते छोड़ करचलीगई तेरेविरहसे मेरीयहदशाहोकर खानापीना राजपाट सबछूटगया यहवचनसुनकर उर्वशीबोली हेराजन् तुमपुरुषहोक र अपनीइन्द्रियोंकेवश ऐसेहोगये जोमेरी विनतीकरतेहो तुम अ पनी इन्द्रियोंकोवशकरो जो मनुष्यअपनी इन्द्रियोंको आधीन नहींरखता वहमायारूपीस्त्रीके मोहमें फँसकर नष्टहोताहै वही दशातुम्हारीहुई व मैंस्त्री किसीपरमोहित न होकर सिवायअपने सुखके दूसरेकाप्रेमनहींरखती जबतककोईपुरुष मेरेपासरहताहै तबतकउसकी प्रीतिकरतीहूं कदाचित् मैं हज़ारवर्षतक एकपुरुष केपासरहकर जबदूसरेपुरुषके निकटजाऊं तबफिरमुझे पहिले पु रुषसे कुछप्रीतिनहींरहती क्षणभरमें उसेभूलकर उसकाप्राणले नेमेंभी मुझे कुछदुःखनहींहोता और मैं ज्ञानउपदेश किसीका कुछ न मानकर अपने मनमानाकाम करतीहूं इसीतरह सब स्त्रि योंकास्वभाव समझनाचाहिये राजाउर्वशीपर ऐसामोहितथाकि इतनासमझानेपरभी उसे कुछज्ञानप्राप्तनहींहुआ जब राजाने उ र्वशीसे भोगकरनेकीइच्छाकी तबवहदयाकरकेबोली हेराजनूज बवर्षदिनउपरांत दूसरेवर्षकापहिलादिन लगेगा तबतेरेपासआन कर एकरातरहूंगी ऐसाकहकर उर्वशीवहांसे लोपहोगई जबउर्व शीके मिलने व एकवर्षकी अवधिकरनेसे चित्तराजाका सावधा न होगया तबवहराजमंदिरपरआया और रीतिमहल अपना स

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जवाकर अवधिकादिन गिननेलगा जबवर्षवेंदिन वहअप्सरा अ
पनेवचनप्रमाणआई और एकरातराजाकेपासरहकर प्रातसमय
इन्द्रलोककोचली तबपुरूरवा उसकापांवपकड़कर रोनेलगा उ
ससमय उर्वशीबोली हेराजन् मैं यहांरहनहींसक्ती तुझेमेरीचाह
ना अन्तःकरणसेहो तो मैं एकमंत्रबतलादेतीहूं तुमवहमंत्र जप
कर गन्धर्वोंकी तपस्याकरो जब वेप्रसन्नहोकर तुझे यज्ञकरनेवा
ले आज्ञादेंगे और तूउसयज्ञकरनेसे गन्धर्वलोकमें आनकरफिर
मुझेपावेगा तबमैं तेरेसाथआनन्दपूर्वक रहूंगी यहकहके उर्वशी
दो ऋचावेदकी राजाको बतलाकर इन्द्रपुरीको चलीगई व राजा
वहीमन्त्रजपकर गन्धर्वोंका तपकरनेलगा जबवह ऋचाजपनेसे
गन्धर्वोंने प्रसन्नहोकर राजाको दर्शनदिये व एक बटलोही अ
ग्निसमान उसेदेकर यज्ञकरनेकाउपाय बतलाकेवहांसे अन्तर्द्धा
नहोगये तबराजाने उनकीआज्ञानुसार वहबटलोही बनमेंलेजा
कर गाड़दी जबउस बटलोहीमेंसे एकवृक्षपीपल व शमीका मि
लकरउगा व राजाने वे दोनोंलकड़ी रगड़के उसमेंसे आगनिकाल
कर यज्ञकिया तबराजाको इतनाबलहुआ कि वहगन्धर्वलोक में
जाबसा व गंधर्वोंके देनेसे फिरउर्वशीको पाकर उसके साथआनंद
पूर्वक रहनेलगा॥

पंद्रहवां अध्याय॥

पुरूरवाके सन्तानकी कथा॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित राजापुरूरवाके उर्वशीके पेटसे
छः बालक जो राजगद्दीपर उत्पन्नहुयेथे उनमें बड़े पुत्रका नाम

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आयुथा उसकेबंशमें जह्नुनाम ऐसेमहात्माहुये जिन्होंने गंगा जीको अपनीअंजलीमेंउठाकरपीलिया जबदेवतोंनेअतिविनती की तब अपनीजांघचीरकर बाहरनिकालदिया उसीदिनसे गंगा जीकानाम जाह्नवीप्रकटहुआ व राजाजह्नुकेबंशमें गाधिनाम राजाबड़ेप्रतापी व महात्माहोकर उनकेयहां सत्यवतीनामकन्या महासुंदरी व बुद्धिमान् उत्पन्नहुई गाधिऋषिसे ऋचीकनाम ऋ षीश्वरने जाकरकहा तुमअपनीकन्या हमको विवाहदो गाधिबो ला जोकोई हज़ारघोड़ेश्यामकर्ण मुझेलादे उसेमैं अपनीकन्या दूंगा यहवचनसुनतेही ऋचीकऋषि बड़ापरिश्रमकरके हज़ारघो ड़े श्यामकर्ण बरुणदेवताकेयहांसे लाया और वहसबघोड़े गाधि को देकर सत्यवतीसे अपनाविवाह किया तबगाधिकी स्त्रीने ऋ चीकअपनेदामादसे कहा कोई ऐसाउपायकरो जिससे मेरेपुत्र हो और सत्यवतीनेभी अपनेपतिसे सन्तानहोनेकी इच्छाकीसो ऋचीक ऋषीश्वरने अपनीसासु व स्त्रीके सन्तान होनेवास्ते य ज्ञकरके जोशाकल्य यज्ञकरनेसेबचाथाउसमेंएकपिण्डी अपनी स्त्री व दूसरीसासुको बालकहोनेकी इच्छासेबनाकर उनदोनोंको खानेवास्तेदिया और आपऋषीश्वर महाराजस्नान व संध्याकर ने गंगाकिनारे चलेगये तबउनकी सासुने अपनी पिण्डी जिसे संस्कृतमें चरुकहते हैं बदलआनकर बेटीको खिलादी व उसका चरुलेकरआपखालिया जबऋषीश्वरनेअपनेघरआनकर अपने तपोबलसे यहहालजाना तबसत्यवती अपनीस्त्रीसे कहा तुझसे नड़ीचूकहुई जो अपनाचरुमाताकोदेकर उसकाचरु आपखालि

CC-0. In Public Domain. UP State Museums, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

या इसकारण तेरापुत्र महाबली व क्रोधीहोकर तेराभाई बड़ाध
र्मात्मा व ब्रह्मज्ञानी उत्पन्नहोगा यहवचनसुनतेही वह विनय
पूर्वकबोली महाराजआप ऐसाकीजिये जिसमें मेरापुत्र क्रोधी न
हो तबऋषीश्वरने दूसरामंत्रपढ़कर अपनीस्त्रीसे कहा तू धैर्यरख
तुझसे ज्ञानी व धर्मात्मा बेटाहोकर पोता तेरा महाबली व बड़ा
क्रोधीहोगा सो सत्यवतीसे जमदग्निऋषीश्वर बड़ेमहात्माहोकर
उनके रेणुकानामस्त्रीसे चारपुत्रउत्पन्नहुये व उनचारोंमें सबसे
छोटेपरशुरामजी ईश्वरकाअवतार थे जिन्होंने पापी व अधर्मी
क्षत्रियोंको इक्कीसबेर मारकर उनकेकुलका नाशकिया इतनीक
थासुनकर परीक्षितने पूंछा महाराजक्षत्रियोंनेकौन ऐसाअपराध
कियाथा जिसकारण परशुरामजीने उन्हें बधकिया शुकदेवजी
बोले हे राजन् जमदग्निऋषीश्वर परशुरामके पितासे रेणुका
ब्याहीगईथी व सत्यानाम रेणुकाकीबहिनसे सहस्राबाहु अर्जुन
का बिवाहहुआथा व सहस्रार्जुन सातोंद्वीपका ऐसाप्रतापी राजा
था जिसकेयहां आठोंसिद्धि बनीरहतीथीं और वहकर्म व धर्म अ
पना ऋषीश्वरोंके समानरखकर पवनकेसमान क्षणभरमें सब
जगह जानेकी सामर्थ्य रखताथा सो वहअपनी हज़ारों स्त्री साथ
लेकर नर्मदानदी में जलबिहार करनेगया व उसने अपने हज़ार
भुजासेजो तपकरकेपाईथीं नर्मदानदीकापानी बहनेसेरोकदिया
सो वहजल उलटाबहकर जहांपररावण बैठाथा वहांइकट्ठाहुआ
जबरावण वहजलदेखकर अभिमानपूर्वक सहस्रार्जुन से लड़ने
आया तबसहस्राबाहुने अपनेबलसे रावणको पकड़लिया व उसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपनेमकानपर लेजाकर कभीकभी उसकेदशोंमस्तकपर दीपक
जलाकेसबस्त्री व लड़कोंकोदिखलायाकरताथा जबरावणनेबहुत
विनतीकरके उसेअपनामालिकजाना तब सहस्राबाहुने उसको
छोड़दियाइसतरहकीसामर्थ्य उसमेंथीसोएकदिन रेणुकासत्या
अपनीबहिनकेयहां ब्याहादिकमें नेवता करनेगई जब रेणुकाने
अपनीबहिनसे कहा एकबेरतुमभी हमारेयहां आवो तबसत्याअ
भिमानसेबोली तुमकङ्गाल ऋषीश्वरकी स्त्री होकर हमारी से
नाको कहांसे खिलावोगी यहबातसुन रेणुकालज्जासे कुछ न
हींबोली जबस्थानपरआई तबउसने जमदग्नि अपनेस्वामी से
कहा आपएकबेर मेरीबहिनको सेनासमेतबुलाकर मेहमानीकरैं
तो मेरीलज्जाछूटै सत्याने मुझेऐसातानाराथा जमदग्निबो
ले परमेश्वरकी दयासे मेहमानीकरना कुछकठिन नहींहै नाराय
णजी तेरीइच्छापूर्णकरैंगे सो एकदिन राजासहस्राबाहु अहेरखे
लताहुआ उसीबनमेंजहांपरकुटी जमदग्नि ऋषीश्वरकीथी सेना
समेतआनपहुँचा उनदिनों कामधेनुगाय ऋषीश्वरके स्थानपर
थी जबजमदग्निने अपनीस्त्रीकेकहनेसे सहस्रार्जुन व सबहअक्षौ
हिणीदलको जो उसकेसाथमेंथीं नेवतादेकर कामधेनुकेप्रतापसे
इच्छापूर्वक भोजनखिलाया तबसहस्राबाहुने मनमेंविचारा कि
जमदग्निने जिसकामधेनुके प्रतापसे लाखों मनुष्योंको ऐसाइ
च्छापदार्थ भोजनकरायाहै वहगाय ऋषीश्वरसेलेनाचाहिये ऐ
साविचारकर राजाने जमदग्निसेकहा ऐसी गौ ऋषीश्वरको रख
ना न चाहिये यहगाय राजाओंके घरमेंचाहिये सोहै इसलिये तुम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कामधेनु गौ हमको दो जमदग्निने उत्तरदिया हेराजन् यूह गौ मेरी नहोकर मैं इसको देवलोकसे मंगनीमांगलायाहूं फिरवहां पहुँचादूंगा इसकारणतुमको नहींदेसक्ता यहवचनसुनतेही सह स्रार्जुननेक्रोधितहोकर जबअधर्मकीराह वहगौछीनली व अपने देशको लेचला तबकामधेनुभागकर जमदग्निकेपास चलीआई व रुदनकरकेबोली हेऋषीश्वरमेरा क्याअपराधहै जो तुमनेमुझे राजाकोदेदिया जमदग्निने आंशूभरकरकहा हेकामधेनु तुझे राजाबरजोरीलियेजाताहै मैंक्याकरूं यहबातसुनकरकामधेनुने दशहज़ार शूरवीर अपनेअङ्गसे उत्पन्नकिये जबउनवीरोंनेराजा का सामनाकिया तबसहस्रार्जुन अपनेबलसे उन्हें लड़ाईमेंजीत कर कामधेनुको छीनलेगया यहदशादेखतेही जमदग्निने परशु राम अपनेबेटेमहाबलीको जोउससमय कुटीपरनहींथा बुलाकर कहा हेबेटा सहस्राबाहु कामधेनुगौ हमारीकुटीमें से बरजोरीछी न लेगया सो लानाचाहिये यहवचनसुनतेही परशुरामजी महा क्रोधितहोकर अकेले माहिष्मतीपुरी में चलेगये व अपनेभुजा की सामर्थ्य व फरसेसे राजासहस्राबाहुको उसके नवसैबेटे व स वहअक्षौहिणी सेना समेतमारकर कामधेनु गौ अपने पिताके पास लेआये तबजमदग्निऋषीश्वरने उदासहोकर परशुरामजी से कहा हेबेटा तुमने चक्रवर्त्तीराजाको माराहै इसलिये शास्त्रा नुसार तुमको दोषलगा सो तुम एकवर्षतक पृथ्वी परिक्रमा व तीर्थयात्रा करआवो तबतुम्हारा अपराधछूटैगा हमब्राह्मणोंको क्षमाकरनाचाहिये क्षमासेईश्वर प्रसन्नहोतेहैं परशुरामजी यह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वचनसुनतेही पृथ्वी की परिक्रमा व तीर्थयात्रा करने चलेगये॥

सोलहवां अध्याय॥

परशुरामजीका अपनी माता व भाइयोंका मारना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित परशुरामजीने अपने पिताकी आज्ञानुसार वर्षदिन पृथ्वीपरिक्रमा व तीर्थयात्राकरनेउपरांतआ नकर जमदग्निको दण्डवत्किया फिरएकदिन ऐसासंयोगहुआ कि रेणुकामाता परशुरामजीकी गङ्गाकिनारे जलभरनेगई वहां परचित्ररथ गन्धर्वको जो अपनी स्त्रियोंकेसाथ जलक्रीड़ा करता था देखकर मनमेंकहा यहअतिसुन्दरहै जबरेणुकाको उसका ज लविहारदेखनेमें बिलंबहुआ तबवहसमझी कि मेरेपति अग्निहो त्रपर बैठेहैं जलपहुंचानेकीराह देखतेहोंगे जल्दीजानाचाहियेज बवह ऐसाविचारकर जलसमेत कुटीपरपहुंची व ऋषिने बिलम्ब होनेका कारण अपनेयोगबलसे जानलिया कि इसको परपुरुष कीसुंदरताई देखनेसेपानीलानेमें बिलंबहुआ तबजमदग्निनेक्रो धितहोकर अपनेतीनोंबड़ेबेटोंसेकहा तुमलोग इसेमारडालोजब उन्होंने मारनामाताका अधर्मविचारकर रेणुकाकोनहींमारा तब ऋषीश्वरने परशुरामजी छोटेपुत्रसे कहा कितू अपनीमाता को भाइयोंसमेत मारडाल यहसुनकर परशुरामजीने विचारा कि मारनामाता व भाइयोंकाबड़ापाप है परमैंनहींमारता तो पिता क्रोधितहोकर मुझेशापदेवेंगे व मारडालनेमें मेरेपिता अपनेयो गबलसेफिरइनको जिलासक्तेहैं जबऐसाविचारकर परशुरामजी ने रेणुकाअपनीमाताको तीनोंभाइयोंसमेत मारडाला तबऋषी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वर प्रसन्नहोकर बोले हेपरशुराम तैंनेमेरी आज्ञामानकर अप
नीमाता व भाइयोंको बधकिया इससेहमअति प्रसन्नहुये जोवर
दानमांगे सोदूं यहवचनसुनतेही परशुरामअपनेपितासे हाथजो
ड़करबोले महाराज मैं यहीवरदान मांगताहूं जिससे मेरीमाता
व भाईफिरजीउठें व उनकोयहबात न मालूमहो कि हमैंपरशुरा
मनेमाराथा जमदग्निजीबोले बहुतअच्छा परमेश्वरकी दयासे
ऐसाहो यहवचन ऋषीश्वरकेमुखसे निकलतेही वहसबइसतरह
जीकर उठखड़ेहुये जिसतरहकोईसोयाहुआजागे व नारायणजी
की मायासेउनको यहनहींमालूमहुआ कि हमकोपरशुरामजीने
माराथा इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् परमेश्वर
के तप व जपमें ऐसीसामर्थ्यहै कि हरिभक्तलोग मुर्देको जिला
सक्तेहैं फिरपरशुरामजी इसविचारसे किमैंने अपनेमाता व भाइ
योंकोमारा है सोपृथ्वी परिक्रमा करके यहपाप छुड़ानाचाहिये
इसलिये तीनोंभाइयोंसमेत तीर्थयात्राकरने चलेगये कुछदिन
बीते राजासहस्राबाहुके सौबेटोंने जो परशुरामसे भागकर बच
गयेथे बिचारा कि इनदिनों परशुरामजी भाइयोंसमेत कुटी पर
नहींहैं किसीतरहआन अपनेबापका बदला उनसेलेना चाहिये
सोएकदिन राजकुमारोंने आनकर हरिइच्छासे जमदग्नि ऋषी
श्वरको अग्निहोत्रकरते समयमारडाला व मस्तकऋषीश्वरका
काटकर लेगये तबरेणुका अतिविलापकरनेलगी जबउसनेइक्की
सबेर अपनी छातीपीटकर परशुरामजीकोपुकारा तबउन्होंनेमा
ताका चिल्लानासुनतेही कुटीपरआनकर पिताकोमरेहुये देखा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और जबरेणुकासे जमदग्निके मारेजानेका समाचारसुनातब प
रशुरामजीने बड़ाक्रोधकरके सौगन्दखाकर यहप्रणाकिया किमैं
इसअपराधकेबदले पृथ्वीपर किसीक्षत्रीको जीतानछोडूंगा यह
कहकर परशुरामजी माहिष्मतीपुरीमें चलेगये व सहस्राबाहुके
बेटोंको जिन्होंने जमदग्निका बधकियाथा उनकोमारकर अपने
बापकाशिर वहांसेउठालाये व पिताकेधड़से मिलाकर क्रियाक
र्मउनकाकिया व यहीप्रतिज्ञा करनेसे परशुरामजीने इक्कीसबेर
चारोंओर घूमकर क्षत्रियोंकोमारडाला व कुरुक्षेत्रमेंस्नानकरके
सब पृथ्वीको इक्कीसबेर ब्राह्मणोंको दानकरदिया जबअगलेमन्व
न्तरमें राजाबलिइंद्रहोगा तबपरशुरामजी सबऋषीश्वरोंमेंरहैंगे
इनदिनों मन्दराचलपर्वतपर बैठेहुये परमेश्वरकातप करतेहैंजि
नकागुण व यशदेवता व गन्धर्वलोग सदास्वर्गमें गातेहैं औरउन
के अंतको नहींपहुँचते हेराजन् गाधिऋषिकेपुत्र विश्वामित्र ऋ
षीश्वर ऐसे महात्माहुये जिन्होंने अपनेको राजऋषिसेब्रह्मऋ
षीश्वरकहलाया और उनके सौपुत्रहुये उनमें छोटेपचास बेटों
कानाम मधुछंदाथा जबविश्वामित्रने शुनश्शेफ अपनेभानजे
को जो राजाहरिश्चंद्रके बलिदानहोनेसे बचाथा अपनाबेटाब
नाया व उसकानाम देवरातरखकर अपनेबड़ेपचासोंपुत्रोंसेकहा
तुमलोग इसेअपनाबड़ाभाई करकेमानों जबउन्होंने यहबातन
हींमानी तब विश्वामित्रने उनको ऐसाशाप दिया कि तुमलोग
म्लेच्छहोजावो तभीसेसंसारमें म्लेच्छहुयेहैं व फिरविश्वामित्र
ने मधुछन्दाआदिक अपनेछोटेपचासोंपुत्रोंसे वहीबातकही जब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उन्होंने अपनेपिताकी आज्ञानुसार देवरातको बड़ाभाई करके जाना तबविश्वामित्रने प्रसन्नहोकर उनको ऐसा वरदान दिया कि तुम्हारावंश अधिकहो इसलिये विश्वामित्रके वंशमें बहुतसं तानहोकर सबकौशिकगोत्री कहलाते हैं॥

सत्रहवां अध्याय॥

राजा पुरूरवाके वंशकी कथा॥

शुकदेवजीने कहा हेपरीक्षित पुरूरवाकेवंशमें राजानहुष ऐसाप्रतापीहुआ जिसनेदेवलोककाराज्यकिया उसकीकथापहिले होचुकीहै अबहमउसकी संतानकाहालकहतेहैं सुनो राजाययाति उसकापुत्रअतितेजवान् व प्रतापीहोकर एकबेर इन्द्रपुरी का राज्य कियाथा उसकीकथा इसतरहपरहै कि एकदिनराजाइन्द्र गौतमऋषीश्वरकीस्त्री अहल्याको जोअतिसुन्दरी पंचकन्याओं मेंथी देखकर मोहितहोगया व उससेभोगकरने की इच्छाकिया पर गौतमऋषीश्वर महात्माकेडरसे वहांनहींजासकाथा जबइंद्र से बिनाप्रसंगकिये नहींरहागया तबएकदिनरातको काकरूपबन करगौतमऋषीश्वरकेआंगनमेंवृक्षपरजाबैठा व बहुतरातरहेबोल नेलगा जबऋषीश्वरने उसकीबोलीसुनकर जाना अबथोड़ीरात है तबवे स्नान व पूजाकरनेवास्ते उठकरमकानसे बाहरआये उस समय इन्द्रनेघरसूनापाकर अपनास्वरूप ऋषिके समानबनालिया व अहल्याकेपास जाकर उससेभोगकिया जबप्रसंग करनेउपरांत अहल्यानेजाना कि यहमेरापतिनहीं है किसी दूसरेने कपट रूपबनाकर मेरापातिव्रतधर्मबिगाड़दिया तबउसने कहा हे अध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

म्मींचाएडाल तू कौनहै यहांसेचलाजा जबयहवचनसुनकर इंद्र वहांसेबाहर निकलनेलगा व गौतमऋषीश्वर से जो आधिकरात रहनासमझकर फिरेआतेथे डेवढ़ीमेंभेंटहुई तबऋषीश्वरइन्द्रको देखतेही अपनेयोगबलसे उसकेकुकर्म करनेकाहाल जानकरबो ले हेइन्द्र बड़ेलज्जाकी बातहै जो तैंने अनेकअप्सरा वइन्द्राणी महासुन्दरी रहनेपरभी ऐसाअधर्मकिया इसलिये हमतुझे शाप देतेहैं कि तू एकभगवास्ते काकरूपहुआथा सो तेरेअंगमें हजार भग प्रकटहोजावें यहवचन ऋषीश्वरकेमुखसे निकलतेही इन्द्र केशरीरमें हजारभगहोगई जबमारेलज्जाके राजसिंहासनपर न जाकर कमलकेडारमें छिपरहा तबऋषीश्वरोंने इन्द्रासनसूनादे खकर राजानहुषको इन्द्रासनपर बैठाला जब इन्द्राणीका रूप देखकर राजानहुषकामन चलायमानहुआ तबइन्द्राणी पतिव्र ताने वृहस्पतिजीकी आज्ञानुसार नहुषसे कहा तुमने आजतक जो शुभकर्म कियाहो उसेबतलावो जबराजाने अपनेमुखसे वह वर्णनकिया तबपुण्यउसका क्षीणहोकर वहइन्द्रलोकसे गिरपड़ा व वृहस्पतिजीनेजाकर इन्द्रको कमलनालसे बाहरनिकाला व उससे यज्ञकराके ऐसाआशीर्वाददिया किवहहजारभग आंखके समानहोगई तबइन्द्र अपनी गद्दीपर आनकरराज्य करनेलगा इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् अबहमनहुषकेवंस रेवंशकी कथाकहतेहैं सुनोउसकेवंशमें धन्वन्तरिनामवैद्ययज्ञका भागलेनेवाले ऐसेमहात्माहुये जिनकानाम लेनेसे मनुष्यकारो ग व दुःखछूटजावे उनकेवंशमें राजाकुबलयाश्व बड़ाप्रतापीहो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर उसकेमन्दालसानामस्त्री से अलरकआदिक पुत्रउत्पन्नहुये वहराजाअलरक छासठहजारवर्ष राज्यकरके तरुणबनारहा व रानीमंदालसा अपनेबेटोंको बाल्यावस्थामें ज्ञानसिखलाया क रतीथी उसनेमरतीसमय दोश्लोकअपनेपुत्र राजाअलरककोदे करकहा तूइसेयंत्रबनाकर अपनेपासरख जबतेरेऊपरकुछाविपत्ति पड़े तबइसश्लोकको पढ़कर उसीके अनुसारकरना सोराजाअल रकने वहदोनों श्लोक यंत्रबनाकर भुजामें बांधलिये व संसारी सुखमेंलपटकर राज्यकरनेलगा जबदूसरे राजोंने उसेसुख व वि लासमें लिपटेदेखा तबजाकर अपनी सेनासे उसकानगरघेरलि या जबराजा अलरकनेदेखा कि अबमेराप्राण व राज्यबचनाक ठिनहै तबअपनेऊपर विपत्तिजानकर वहदोनोंश्लोक यंत्रसे नि कालकेपढ़ा उनमेंलिखाथा कि सिवायसत्संग और किसीकेसा थ प्रीतिनहीं करना संसारीलोगों से संगति व प्रेमकरनेमें पीछे दुःख होताहै जगत्का व्यवहारस्वप्नवत् समझकर उसमें मन लगाना न चाहिये संसारमें चाहनारखना यहीदुःखकी फांसी है जबवह श्लोकपढ़ने से राजाअलरकको ज्ञान उत्पन्नहुआ तब वह विरक्तहोकर बनकीओर हरिभजनकरने चला उससमयदू सरेराजोंने जो नगरउसकाघेरेथे यहहालसुनतेही राजाअलरक से जाकरपूछा तुम बिनायुद्धकिये हारमानकर बनमेंक्योंजातेहो अलरकने उत्तरदिया राज्यकरनेउपरांत नरकभोगना पड़ताहै इसलिये मैं राज्यनहींकरूंगा तुममेरीराजधानी लेकरआनन्द पूर्वक सुखकरो मुझेलडनेकी इच्छानहीं है जबयहवचनसुनकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरे राजोंकोभी नरकभोगनेकेडरसे ज्ञानउत्पन्नहुआ तबउन्हों
नेराजाअलरकका देशलेनाउचितनहीं जाना और अपनी २ रा
जगद्दीपरचलेगये वराजाअलरक फिरधर्मपूर्वक राज्यकरनेलगा
इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् देखोहरिभजनकाऐ
साप्रतापहै जैसेराजाअलरकने हरिभजनकरनेकी इच्छाकी वैसे
नारायणजीकीदयासे उनकादुःखछूटगया व जोलोग परमेश्वर
कातप व स्मरणकरतेहैं उन्हैंनमालूम कैसासुखमिलेगा उसीअ
लरकके देशमें राजारम्भस ऐसामहात्मा व ज्ञानीहुआ जिसके
कुलमें सबब्राह्मणहोगये व उसकेवंश में राजारजबड़ाप्रतापी व
धर्मात्माहोकर उसकेयहां पांचसौपुत्र अतिबलवान् उत्पन्नहुये
एकबेर इन्द्रादिक देवतोंकाराज्य दैत्योंनेछीनलियाथा जबइन्द्र
ने वृहस्पतिकी आज्ञानुसार राजारजसे सहायताचाही तबराजा
रजने अपनेपांचसौपुत्रसाथलेकर इन्द्रकीसहायताकी जबदैत्यों
को जीतकर इन्द्रासनदेवतोंको देनेलगे तबइन्द्रनेकहा देवलोक
काराज्य आपकीजिये जबराजारज इन्द्रादिक देवतोंके कहनेसे
बहुतादिनतक देवलोकका राज्यकरकेमरगया तबउसकेबेटे इन्द्र
लोककाराज्य बरजोरीकरके यज्ञमेंइन्द्रकाभाग आपलेने लगे
व इन्द्रादिकके मांगनेपरभी देवलोककाराज्य नहींछोड़ा तबदेव
तोंके विनयकरनेपर वृहस्पतिजीने अपने तपोबलसे राजारजके
बेटोंकोमारडाला जबउनमें कोईजीतानहींबचा तबइन्द्रादिकदे
वता वृहस्पतिगुरूकीकृपासे इंद्रपुरीकाराज्यपाकर अपनाअपना
भाग आनन्दपूर्वक लेनेलगे ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अठारहवां अध्याय ॥

राजा नहुष के वंशकी कथा ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षितराजानहुषके ययातिनामआदिक छःबेटेबड़ेप्रतापीहुये जबराजानहुष ऋषीश्वरोंकेशापदेनेसे अजगरसर्पहोकर कुरुक्षेत्रमें गिरपड़ा तबउसके राज्यसिंहासनपर जो मर्त्यलोकमेंथा ययातिनाम उसकापुत्र बैठकर बड़ाधर्मात्मा व चक्रवर्त्तीराजाहुआ व उसने दूसरेदेशका राज्यसमभागकरके अपनेभाइयोंकोबांटदिया व बिवाह अपनादेवयानी शुक्राचार्यकी कन्यासे करके वृषपर्वादैत्यकी शर्मिष्ठानाम बेटीकेसाथ भोग किया इतनीकथासुनकर परीक्षितनेपूछा हे मुनिनाथ राजाययातिने क्षत्रीहोकर शुक्राचार्य ब्राह्मणकीकन्या किसतरह ब्याहीथी यहसंदेहमेरा छुड़ादीजिये यहबातसुनकर शुकदेवजीबोले हे राजन् एकदिन शर्मिष्ठाबेटी वृषपर्वादानवकी जो दैत्योंका राजाथा शुक्रगुरूकीकन्या देवयानीको साथलेकर हजारदासी समेत अपनेबाग़में तालाबपर स्नानकरनेगई जबशर्मिष्ठा व देवयानी व दासीआदिक अपना २ वस्त्र तालाबकिनारे उतारकर जलक्रीड़ा व स्नानकरनेलगीं उसीसमय महादेव व नारदजी घूमतेहुये वहां आगये उनकोदेखतेही सबलड़कियों ने लज्जित होकर अपने २ वस्त्र पहिनलिये व शर्मिष्ठाने जल्दीमें भूलकर जब देवयानी का कपड़ा पहिनलिया तब देवयानी क्रोधितहोकर बोली हे शर्मिष्ठा मेरावस्त्र पहिरनेयोग्य तू नहीं है किसवास्ते कि तेरापिता मेरेबापका चेला है व मैं ब्राह्मण की कन्या हूं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेरावस्त्र तैंने कैसेपहिना जैसे यज्ञकीआहुति कुत्ता उठालेवे या शूद्रहोकर वेदपढ़ै जब देवयानीने शर्मिष्ठाको ऐसादुर्वचनकहा तब उसनेक्रोधकरके उत्तरदिया तू भिखारीकी कन्याहोकर मुझे ऐसीबातकहतीहै तेरे पितानेजन्मभर मेरेबापसे भीखमांग कर तुझेपालनकिया सो तूमेरीबराबरीकरतीहै ऐसावचनकहकर शर्मिष्ठाने क्रोधवश देवयानीको जो नंगीखड़ीथी कुयेंमें ढकेल दिया और आपदासियोंसमेत घरचलीगई उसीसमय हरिइच्छा से राजाययाति अहेरखेलतेहुये वहांआनपहुँचे व अपनेसेवकको पानीलेआनेवास्ते उसीकुयेंपरभेजा जबउसनेएकस्त्री अतिसुन्द री कुयेंमेंगिरीदेखकर राजासे यहसमाचारकहा तबययातिनेआ पजाकरदेखा तोएककन्यारूपवती उसेदेखपड़ी जबउसनेअपना वृत्तान्तकहकर राजासे निकालनेवास्तेकहा तबययातिनेअपना डुपट्टा उसकेपहिरनेवास्ते फेंकदिया व उसकाहाथपकड़करकुयें से बाहर निकाललिया उससमय देवयानीबोली हे राजन् हरि इच्छासे ऐसासंयोगहुआ जोतुमने मेराहाथपकड़ा इसलियेमेरा बिवाह तुम्हारेसाथहोगा कचनाम वृहस्पतिकेपुत्रने मुझेऐसाशा पदियाथा कि तेराबिवाह ब्राह्मणसे न होगा इसलिये मेराबिवाह ब्राह्मणसे नहींहोसक्ता जबराजाने यहबातसुनकर अपनेको भी उसपर मोहितदेखा तबपरमेश्वरकी इच्छा इसीतरह जानकर बि वाह करना देवयानीसे अंगीकारकरके राजमन्दिरको चलागया व देवयानी वहांसेरोतीहुई अपनेघर आनकर शुक्राचार्यसे कहा हे पिता शर्मिष्ठाने तुमको भीखमांगनेवाला अपनेबापका कह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर मेराप्राण मारनेवास्ते कुयेंमेंढकेलदियाथा सोराजाययातिने आनकर मुझेकुयेंसेबाहरनिकाला तबमेराप्राणबचा यहबातसुन तेही शुक्रजीनेक्रोधितहोकरविचारा पुरोहितीकरनेसे खेतमेंका गिराहुआ अन्नचुनकर खानाअच्छाहोताहै जिसमें कोई अप माननकरैसोशर्मिष्ठानेराज्य वधनकेमदसेमेरीबेटीकोकुयेंमेंगिरा दिया इसलिये अबवृषपर्वाकेराज्यमेंरहना न चाहिये शुक्रजीने ऐसाविचारकरदेवयानीकन्यासमेत उसकाराज्यछोड़करनिकल चले वृषपर्वानेयहसुना तब उसनेघबड़ाकरकहा देखो उन्हींके आशीर्वादसे यहसबराज्य व सुखमुझेमिलाहै नहींतोदेवतालोग अबतकमुझकोमार निकालदेते उनकेचलेजानेसे मेराराज्य व धनजातारहेगा यहबातसमझतेही वृषपर्वा दौड़ाहुआ शुक्रगुरू केशरणमेंगया वहाथजोड़करविनयकियामहाराजमेराअपराध क्षमाकरके फिर अपनेमकानपर चलिये यहदीनवचन राजाका सुनकर शुक्राचार्यबोले हे राजन् तुमने मेराकुछअपराध नहींकि या परतुम्हारी कन्याने देवयानीका अनादरकियाहै जिसबातमें वहप्रसन्नहो वहीकामकरो तबफिरतुम्हारेदेशमें चलकररहूं जब वृषपर्वाने देवयानीसे बहुतविनती करके प्रसन्नहोनेवास्ते कहा तबवहसबहाल शर्मिष्ठाका कहकरबोली हे राजा जिसकेसाथ मे रीशादी शुक्राचार्यकरैं वहांशर्मिष्ठा तेरीपुत्री हजारदासी अपने साथलेकर मेरीसेवामेंरहै तो मैं प्रसन्नहोतीहूं यहसुनकर राजाने विचारा कि शुक्रगुरू सदाहमारेकुलकीरक्षा करतेआयेहैं बिनाइ नके प्रसन्नहुये मेराकल्याण न होगा ऐसासमझकर राजाने श

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्मिष्ठासे सबहालकहके पूछा हे पुत्री तेरामोहकरनेमें शुक्राचार्य के क्रोधसे हमारावंश व राज्यकानाश होजायगा और तेरे दासी होनेसे हमाराकल्याण है इसमें क्याकरनाचाहिये यहवचनसुन कर शर्मिष्ठाबोली हेपितामेराशरीरतुमसे उत्पन्न व पालनहुआ है आप जिसेचाहैं उसेमुझकोदेडालैं यहबातसुनकर वृषपर्वा बोला हे देवयानी तुम्हाराकहना मुझेअंगीकारहै जब देवयानीयह बातसुनकर प्रसन्नहुई तबशुक्राचार्य कन्यासमेत फिरअपने स्थानपर आनकर रहनेलगे इतनीकथासुनकर परीक्षितनेपूछा हेमुनिनाथ कच बृहस्पतिकेबेटेने देवयानीको क्योंशापदियाथा इसकीकथासुनाइये शुकदेवजीबोले हे राजन् एकबेर युद्धमें बहुतदैत्य देवतोंकेहाथसेमारेगये तबउन्हैं शुक्राचार्यने संजीवनीविद्यासे जिलादिया जबलड़ाई होनेउपरांत देवतोंने समाचार बृहस्पतिजी से सुना तब इंद्रादिकदेवतोंने बृहस्पतिगुरूसे कहा महाराज आपभी कच अपनेबेटेको शुक्रजीकेपास भेजदीजिये कि वह उनकाचेलाहोकर संजीवनीविद्यापढ़आवै जबबृहस्पतिने देवतों के कहनेसे कचको संजीवनीविद्या पढ़नेवास्ते भेजदिया तबकच ने शुक्राचार्यके शरणमेंजाकर दण्डवत्करके विनयकिया महाराज मैं संजीवनीविद्यापढ़नेआयाहूं जबशुक्राचार्यउसे अपनेघर रखकर संजीवनी विद्या सिखलानेलगे तबदेवयानी व कचसे अतिप्रीति होगई जबदैत्योंने यहसमाचारपाया कि बृहस्पतिकापुत्र हमारेगुरू से संजीवनीविद्यापढ़ताहै तब उन्होंनेआपस में सम्मतिकिया कियहयहां विद्यापढ़कर देवताहमारे शत्रुओंको जिला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दियाकरैगा तोअच्छानहींहोगा इसलिये इसकोमारडालना चा
हिये सो एकदिन कचशुक्रगुरूकी गौचरानेवास्ते बनमेंगया तब
दैत्योंने उसकेअंगका टुकड़ा २ करके एकगड़हेमें फेंकदिया जब
सन्ध्यासमय वहगौचराके नहींफिरा तबदेवजानीबोली हेपिता
कचअबतक गौचराकेनहींआया शुक्राचार्यने योगबलसे विचार
करकहा हेपुत्री उसेदैत्योंने मारडाला वहकिसतरहआवे जबयह
सुनकर देवजानीशोचितहोगई तबशुक्रजीने कचको संजीविनी
विद्यासे जिलादिया यहसमाचारपाकर दैत्योंने आपसमें कहा
कदाचित् शुक्रगुरू इसीतरह उसको जिलादियाकरैंगे तो हमारे
मारनेसे क्यालाभहोगा ऐसाउपाय कियाचाहिये कि जिसमेंवह
जिलाने न सकैं यहविचारकर दैत्योंनेगौचरातीसमय फिर कच
कोमारडाला व उसकेअंगकामदिरा चुवाकर शुक्रगुरूको पिला
दिया जबसंध्यासमय कचफिरनहींआया तबदेवजानीके विनय
करनेसे शुक्राचार्यने ध्यानधरकर तीनोंलोकमें देखा पर उसका
पतानहींपाया जबअपनेआत्मामें ध्यानलगाया तबउसको पेट
में देखकरजाना कि दैत्योंने उसकामदिरा चुवाकर मुझेपिलादि
याहै यहदशादेखकर शुक्राचार्यनेकहा हेपुत्री कचके जिलानेसे
मैं मरजाऊंगा देवजानी हाथजोड़करबोली महाराज ऐसाउपाय
करो जिसमें आप और वहदोनोंजीतेरहैं तबशुक्रजीने मंत्रपढ़कर
अपनेपेटमें कचकोजिलादिया व उसीजगह संजीविनीविद्याउस
को पढ़ाकरकहा हेकचजब तुझेअपनेपेटसे निकालकर मैंमरजा
ऊं तब तू इसी विद्यासे मुझको जिला दीजियो कचबोला बहुत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अच्छा जबशुक्रजीने अपनापेटचीरकर कचको जीता बाहरनि
काला व आपमरगये तबकचने संजीविनीविद्यासे उनको जिला
दिया जबकुछदिन उपरांत कचशुक्रगुरूसे बिदाहोकर अपनेघर
आनेलगा तबदेवजानी उससेबोली तुमअपना बिवाह मेरे साथ
करो कचनेउत्तरदिया गुरूकीकन्या बहिनकेसमान होती है इस
लियेतुमसे ब्याहनहींकरसक्ता इसीबातपर देवजानीनेक्रोधितहो
कर उसकोयहशापदिया जोसंजीविनीविद्या तैंनेमेरेपितासे पढ़ी
है वहतुझे भूलजावै यहवचनसुनकर कचबोला हेदेवजानी धर्म
करतेहुये तैंनेमुझेशापदिया इसलियेतेराबिवाह ब्राह्मणसेन होवै
ऐसाशापदेकर कच अपनेबापके पास चलागया हेपरीक्षित देव
जानीको शापहोनेका यहीकारणथा सो मैंने तुमको सुना दिया
अबदेवजानीके बिवाहकी कथाकहताहूं सुनोजब शुक्राचार्य वृष
पर्वाके देशमेंआनकरबसे तबउन्होंने कुछदिनबीते परमेश्वरकी
इच्छानुसार राजाययातिको बुलाकर अपनीकन्या उसकोबिवा
हदी व शरमिष्ठाको हज़ारदासियोंसमेत दहेजमेंदेकर राजाययो
तिसेकहातुमशरमिष्ठाको अपनीसेजपर मतबैठालना व देवजानी
नेभी इसबातका वचन ययातिसे लेलिया जबराजानेकहा मैंशर
मिष्ठासे भोगनहींकरूंगा तबशुक्रजीने देवजानीको शरमिष्ठा व
हज़ारदासियोंसमेत बहुतसाभूषण व वस्त्रआदिक दहेजमें देकर
बिदाकिया व राजाययाति देवजानीसमेत राजमन्दिरपर आन
कर उसकेसाथ भोग व विलास करनेलगे व शरमिष्ठाको एकस्था
न अतिउत्तम रहनेवास्ते बनवादिया कछदिनबीते राजाययाति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के देवयानी से दोपुत्र यदु व तुर्बसुनाम उत्पन्नहुये एकबेर श
र्मिष्ठा रजस्वलासे शुद्धहुईथी सो उसीदिन राजाययातिभी बाग़
में सैरकरनेवास्ते जा निकले तबशर्मिष्ठाने हाथजोड़कर विनय
किया महाराज मैंभीतुम्हारीदासीहोकर आपसेभोग करने व स
न्तानहोनेकीइच्छा रखतीहूं व राजकन्याहोकर दूसरेसेभोगनहीं
करसक्ती ऐसावचन सुनतेही राजानेशुक्राचार्यका वचनयादकर
के विचारा शर्मिष्ठासे भोगकरने में मेरेवास्ते अच्छानहीं होगा
और यहराजकन्या होकर अपनेमुँहसे रतिदानमांगतीहै इसका
कहना न माननेमें भी मेराधर्मनहीं रहता इसवास्ते अबइसकीइ
च्छापूर्णकरनाचाहिये आगेजो मेरेप्रारब्धमें लिखाहै वहमिटने
नहींसक्ता यहविचारकर राजाने शर्मिष्ठासे भोगकिया फिरइसी
तरह देवयानीसे छिपाकर कभी २ राजाउसकेसाथभोग व बिला
सकरनेलगे कुछदिनयहबात छिपीरही जबद्रुह्य व अणुनाम दो
पुत्र शर्मिष्ठाके राजासे होकर तीसरागर्भ रहा तबएकदिन श
र्मिष्ठा देवयानीकेपंखा हांकती थी उससमयदोबालक शर्मिष्ठा
केवहांआनकर खड़ेहुये सो देवयानीने पूछा हे शर्मिष्ठा तुझेयह
दोनोंपुत्र किसतरहउत्पन्न हुये और तीसरागर्भ किससेरहा श
र्मिष्ठाबोली रातको किसीऋषीश्वरने आनकरमुझसे स्वप्नेमेंभो
गकियाथा उसीसेदोबालक होकर तीसरागर्भरहाहै यहबातसुन
कर देवयानी चुपहोरही परउसकेमनमें खटका हुआ इसलिये
कईदिनबीते एकरोज़ देवयानीने शर्मिष्ठाके मकानपर जाकरउ
नलड़कोंसेपूछा तुम्हारेपिताका क्यानामहै तबउड़बालकने बत

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाया मैं ययातिकाबेटाहूं यहवचन सुनतेही देवयानीमहाक्रोध से राजाकेपास आनकर बोली तुमनेमेरेपिताके मनाकरनेपरभी शर्मिष्ठासे भोगकिया इसलिये अबमैं तुम्हारेयहां नहींरहूंगी जबऐसाकहकर देवयानीक्रोधवश अपनेपिताके घरचली तबययाति उसकेपीछे विनयकरताहुआ पैदलदौड़ागया पर उसने नहीं माना व अपनेबापसे जाकर यहसबहाल कहदिया व राजाययातिभी वहांपहुँचकर खड़ाहुआ जबशुक्राचार्यनेजाना कि मेरेबरजनेपरभी राजाने शर्मिष्ठा से भोगकरके सन्तानउत्पन्न किया है तब क्रोधकरके कहा हेराजन् तैंने बलके अभिमान से मेराकहना नहींमाना इसलिये तुझेशापदेता हूं कि बूढ़ा निर्बलहोकर स्त्रीप्रसंगकरने योग्य न रहै व स्वरूप तेराबिगड़ जावे यह वचन उनके मुंहसे निकलतेही उसीसमयराजा बूढ़ाहोकर दांत उसके टूटगये व बालश्वेतहोकर आंखसे कमदेखनेलगा तबहाथ जोड़कर बोला महाराज अभीतक मेरामनसंसारी सुखसे नहीं भरा एकबेर अपराध क्षमा कीजिये यह दीनवचन सुनकर शुक्राचार्यने अपनीबेटीका सुखबिचारकेकहा हेराजन् मेराशापफिरनेनहींसक्ता परतेरेपांचोंपुत्रोंमें जो खुशीसेतेराबुढ़ापालेकर अपनीतरुणाई तुझेदेवे तब तू फिरयुवाहोजायगा यह आशीर्वाद सुनतेही राजाप्रसन्नहोकर देवयानीसमेत राजमन्दिरपर चले आये उन्हींदिनों शर्मिष्ठासे पुरुनामतीसरापुत्र उत्पन्नहुआ जब राजाने अपनेबड़ेपुत्रसेकहा तुम्हारेनानानेहमकोशापदेकर बूढ़ा बनादिया तुमअपनीतरुणाई हमकोदेदो तोथोड़ेदिन औरसंसारी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुखकरलेवें तबयदुनेसमझाकि हमारीतरुणाईलेकर राजामेरी मातासे भोगकरैंगे तो मुझकोबड़ाअधर्महोगा ऐसाविचारकर उसनेउत्तरदिया मैंने अभीतकसंसारी सुखनहींउठाया इसलिये मैं अपनीतरुणाई नहींदेसक्ता॥

दो० श्वेतोश्वेतोसबभलो श्वेतोभलो न केश। कामिनिरमै न रिपुडरै न आदरकरै नरेश॥

यहबचनबड़ेपुत्रका सुनतेही राजाने तुर्वसुआदिक तीनबालकजोयदुसेछोटेथे उनकोबुलाकरयहीबातकही जबउन्होंनेभी इसीतरह उत्तरदिया तबययातिने पुरुछोटेलड़केसे जो शर्मिष्ठासे हुआथाकहा हेपुत्रतुमअपनी तरुणाई मुझेदेव तेरेचारोंभाइयोंने नहींदिया अब सिवायतुम्हारे दूसरेकाभरोसा मुझकोनहीं है यह दीनवचनसुनतेही पुरुहाथजोड़करबोला हे पितामेरातन आपने उत्पन्न व पालनकिया है इसलियेतरुणाई क्याबस्तु है अपनाप्राणतुम्हारे नेवछावरसमझताहूं कदाचित् मैं सौ जन्म आपकीसेवाकरूं तौभी आपसेउऋणनहींहोसक्ता जोबेटाबिना कहे माता व पिताकीसेवाकरै वहउत्तम व कहनेसेकरै वहमध्यम व कहनेपर चिड़चिड़ाकर आज्ञापालै उसको निकृष्टसमझना चाहिये व जोपुत्रमातापिताकी आज्ञानमानै वहमूत्रकेतुल्यहै॥

दो० जाहिपैंड़ेपूतहै वाही पैंड़ेमूत। रामभजै सो पूतहै नहीं मूत का मूत॥

यहबातपुरुकी सुनकरराजाअतिप्रसन्नहुआ व अपनाबुढ़ापा उसेदेकर उसकीतरुणाई आपलेली व अपनेचारों पुत्रोंको ऐसा शाप दिया कि तुमलोग राजसिंहासन न पावोगे व तरुणाईलेने पर राजानेहजारवर्षतक संसारीसखदेवयानीकेसाथउठाया और

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुतसा यज्ञ व दानवास्ते प्रसन्नहोने परमेश्वरके किया पर मन उसका संसारीसुखसे न भरा ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

राजा ययातिको एकइतिहास बकरी व बकरेका कहना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित बहुतदिनराजाययाति संसारी सुखमें फँसारहा जबयज्ञादिक करनेसे उसकेज्ञान हुआ तबएक दिन ऐसा बिचारकिया देखोहमने पुत्रकीतरुणाई लेकर इतना सुखउठाया तिसपर अभीतक इच्छापूरीनहींहुई देखो मट्टीका घड़ापानी डालनेसेभरजाताहै व इंद्रियांअतिसुख पानेपरभीतृप्त नहींहोतीं वहीदशामेरीहुई इसीतरहसंसारीजालमें फँसेहुयेमरने सेजन्म मेराअकार्थ होगा इसलिये अबपरलोक बनानेवास्तेहरि भजन करनाचाहिये ऐसाबिचारकर राजा ने देवयानीसे कहा हे प्राणप्यारी हमने अहेरखेलतीसमय बनमें एककौतुकदेखाथा वहहाल कहतेहुये हँसीआतीहै जबदेवयानी हाथजोड़कर बोली महाराज मुझेभी वह चरित्रसुनाओ तबराजानेकहा एकबकरी ब्राह्मणके कुयेंमें गिरपड़ीथी उसको एकबकरेने बाहर निकाला सो बकरीने उसबकरेको अपनास्वामी बनाकर बहुतदिन उसके साथ संसारीसुखउठाया जबउसबकरीकेदोपुत्रउत्पन्नहुये तबवह बकरा किसीदूसरीबकरीसे फँसगया इसलिये पहिलीबकरी अना दरहोनेसे अपनेब्राह्मणके यहांचलीगई उसब्राह्मणने अपनीबक रीकी सहायताकरके बकरेकोबधियाकरदिया जबबकरेने ब्राह्मण से अतिविनतीकी व ब्राह्मणने दयालुहोकर फिरउसेज्योंकात्योंब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum Hazratganj, Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नांदेया तबवहबकरा फिरसंसारीसुखमेंफँसगया यहवचनसुनक रदेवयानीबोली महाराजवहबकराबड़ामूर्खथा जोबकरीकेसाथ भ्रष्टहुआ तबराजाबोलेयहीदशाहमारी वतुम्हारीहै हे देवयानी मनुष्यको सबसंसारकाधन व स्त्री व सातोंद्वीपका राज्यमिलैवह जारोंसंतानहोकर सबमनोरथपावैतिसपरभी मनउसकासंसारी सुखसेनहींभरता जिसतरहआगमें घी डालनेसेज्वालाबढ़तीहै उसीतरहप्रतिदिन तृष्णाअधिकहोतीजातीहै इसलिये अबबिर क्तहोकर हरिभजनकरना चाहिये जबयहबचन देवयानीनेपसंद किया तबराजाययातिने पुरुछोटेबेटेको तरुणाईफेरकर अपना बुढ़ापा उससेलेलिया व राजसिंहासनपर उसेबैठाकर दूसरेचारों बेटोंको जोबड़ेथे चारोंदिशाका राज्यबांटदिया व आपदेवयानी स्त्री समेतबदरीकेदारमें चलेगये व तप व ध्यान परमेश्वरकाकर के मुक्तहुये ॥

बीसवां अध्याय ॥

कथा पुरु के बंशकी ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित अबमैं राजापुरुके वंशकीकथाक हताहूं जिसकुलमें तुमने जन्मलियाहै सुनो पुरुकेवंशमें कईपी ढ़ी बीते दुष्यन्तनाम राजा बड़ाप्रतापीहोकर एकदिन बनमें अ हेर खेलनेगया तब उसनेकण्वऋषीश्वरकी कुटीमें एककन्याअ तिसुन्दरीदेखी और उसपरमोहितहोकर पूंछा हेप्राणप्यारी तूदेव कन्याकेसमानकिसकीबेटीहै कोईराजकन्याभीतेरेतुल्य नहोगी इसलिये तेरास्वरूप मेरेहृदयमें बसगया यहवचनसुनतेही शकु

CC-0. In Public Domain. MP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्तला कन्याबोली हेराजन् मैं विश्वामित्र ऋषीश्वर और मेन
काअप्सरासे उत्पन्नहुईहूं इसबातको कण्वऋषीश्वर जानते हैं
आपमेरेस्थानपर टिककर जो आज्ञाकीजिये सो कन्दमूलादिक
व लोटेभर पानीसे तुम्हारासन्मान करूं यहबातसुनतेही राजा
प्रसन्नहोकर बोले कन्याकाभी स्वयम्बरकरना धर्म्महै जबऐसा
कहकर राजाबड़ेप्रेमसे रात्रिको उसकेस्थानपर टिके तबदोनोंने
प्रसन्नतासेआपसमें गन्धर्वबिवाहकरकेभोगकिया सो हरिइच्छा
से उसीदिन उसकेगर्भरहगया जबप्रातसमय राजाशकुन्तलाको
उसीतरह छोड़कर राजमन्दिरपर चलेगये तबकण्वऋषीश्वरने
जाना कि इसकेराजासे गर्भरहाहै दशवेंमहीने एकबालक अति
सुन्दर व ऐसाबलवान् उससेउत्पन्नहुआ जो लड़कपनमें सींक
के धनुषबाणसे बाघोंकोमारनेलगा तबकण्वऋषीश्वरबोले हेश
कुन्तला तू अपनेबालकको राजाकेपासलेजा जब ऋषीश्वरकी
आज्ञासेशकुन्तला अपनाबालकलियेहुये राजसभामें जाकरक
हा हे पृथ्वीनाथ मैं तुम्हारीस्त्री राजकुमारसमेत आईहूं तबराजा
बोले मैंतुझेनहीं पहिंचानतातूकौनहै और यहबालककिसका है
जबदुष्यन्तने जानबूझकर यहझूठवचनकहा तबराजसभामें य
हआकाशबाणीहुई हे राजाशकुन्तलासच्चकहती है यहबालक
तुम्हारेवीर्यसे उत्पन्नहुआहै इसलिये तुमइनदोनों को अपनेघर
रक्खो धर्मात्मा पुत्र अपनेपिताको नरकजानेसे बचालेते हैं जब
यह आकाशबाणी सबसभावालों ने सुनी तबराजाने देवतोंकी
आज्ञासे शकुन्तलाको अंगीकारकिया औरपुत्रसमेतराजमंदिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में भेजदियाउसबालकका नामभरतरक्खा राजाकेमरनेउपरांत वहीलड़का जोपरमेश्वरकाअंशथा राज्यगद्दीपर बैठकरऐसाच क्रवर्त्ती व प्रतापीराजाहुआ जिसनेएकसौ तैंतीसअश्वमेध यज्ञ पृथ्वीपरकिये और बहुतसेरत्नादिक ब्राह्मणोंको दानदिये उसके यज्ञमें कईबेरइन्द्र श्यामकर्णघोड़ा चुराकरलेगया सोराजाभरत अपने प्रताप व बलसेघोड़ा छीनलाया व उसके राज्यमें कोई दूसराराजा अश्वमेधयज्ञकरने नहींपाया व जितनेम्लेच्छ व दुःखदायी राजापृथ्वीपरथे सबकानाश उसनेकिया और सातों द्वीपके राजोंकोअपनीसेवकाईमें रक्खा व अपनेबलसे दैत्योंको जीतकरइन्द्रादिकदेवतोंकोदेवलोककाराज्यदिलादियाउसकेरा ज्यमें पर्वत व समुद्रादिक अनेकतरहकेरत्न व सोना व चांदीआ दिकसदा इसवास्तेप्रत्यक्ष रखतेथे जिसमेंजिसेजोचाहनाहो वह लेजावेइसीतरह सत्ताईसहज़ारवर्ष भरतनेइन्द्रकेसमानचक्रवर्ती राज्यकिया व तपकरनेसे पराक्रमउसका बनारहा व राजाभरतने अपनेतीनविवाह विदर्भदेशके राजाकीबेटीसेकिये जबउसकेहरि इच्छासे कईपुत्रकुरूपउत्पन्नहुये तबरानियोंने इसडरसेकिराजा भरतकहेंगे कि यहबालक हमारेवीर्यसेनहींहुये उनलड़कोंकोगं गामें फेंकवादिया इसलिये राजाभरत संतान न होनेसे चिन्तामें रहाकरतेथे कुछदिनबीते राजानेकण्व ऋषीश्वरसेमंत्रलियातब ऋषीश्वरनेपुत्रहोने वास्ते राजाभरतसे यज्ञकराया उसीसमयदे वतोंनेप्रसन्नहोकर भारद्वाजनाम बालकजो ममतासे हुआथा लाकरभरतकोदियाराजाने वितथनामरखकर उसकापुत्रकेसमा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न पालनकिया औरभरतकेमरनेउपरांत वहराजाहुआ इतनी क
था सुनकर परीक्षितनेपूंछामहाराजभारद्वाजकिसतरहउत्पन्नहु
आथा उसकीकथाकहियेशुकदेवजीबोले हेपरीक्षित एकबेर बृह
स्पतिनेउतथ्य अपनेबड़भाईकी स्त्रीममतानामसे बरजोरीभोग
किया सो उसकेगर्भरहगया तबउसने अपनेस्वामीकेडरसे जोबा
लकपेटमेंथाउसे गिरादिया वहीपुत्र भारद्वाजनामहुआ जबबृह
स्पतिकेसमझानेव आकाशवाणीहोनेपरभी ममताने उसकापा
लननहींकिया तबमरुतदेवताने जिसके नामकायज्ञ भरतने कि
याथा वहबालक लाकरराजाको देदिया इसतरह भारद्वाजकाज
न्महुआ था ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

राजा वितथके संतानकी कथा ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित वितथकेवंशमें कईपीढ़ी बीते रा
जारन्तिदेव ऐसामहात्माहुआ कि राजसिंहासनपर नहीं बैठकर
मन अपना विरक्तकरलिया व अपनीस्त्री व एकपुत्रसमेत बनमें
जाकर तप व ध्यान परमेश्वरका करनेलगा व उसनेभोजन करना
भी परमेश्वरकेआश्रयपरछोड़दिया जब अपनी प्रसन्नतासे कोई
मनुष्य विनामांगे भोजनदेजाताथा उसीको अपनीस्त्री व बेटेसमे
तखाकरबनमें आनन्दसेरहतेथे नहींतो भूखेरहकर आपकुछ क
न्दमूलादिक लानेमें उद्योगनहींकरताथा सो एकबेरऐसा संयोग
हुआ कि भोजन न मिलनेसे अड़तालीस उपास उनकोहोगये
उनचासवेंदिन थोड़ाअन्न कोई उनकोदेगया सो राजानेउसेरसोई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बनाकर तीनभागकरकेजैसेचाहा किभोजनकरैं वैसेनारायणजी बूढ़ेब्राह्मणका रूपधरकर वास्तेपरीक्षालेने धर्मराजके वहांआन करबोले हेराजन् मैंबहुतभूखाहूं मुझेभोजनखिलावयहवचनसु नतेही रन्तिदेवने बड़ी श्रद्धासे अपनाभाग उसे खिलादिया जब वहखाकर नारायणरूप ब्राह्मणबोले अभी मेरापेट नहींभरातब रानी व राजकुमारभी अपना २ भागउस ब्राह्मणको खिलाकर आपतीनों मनुष्यज्योंकात्योंभूखेरहे वब्राह्मणरूपीपरमेश्वरआ शीर्वाददेकर वहांसेअन्तर्द्धान होगये कईदिनऔर उनको बिना अन्नके बीतगये तबफिरथोड़ा किसीनेलाकर उन्हेंदिया जैसेउन तीनोंनेआपसमेंबांटकर भोजनकरने चाहा वैसेएकशूद्रने आन कर कहामैं बहुतभूखाहूं मुझेभोजनखिलाओ राजानेउसेअपना अतिथिसमझकर सम्पूर्णभोजन खिलादिया व आपतीनों मनु ष्यउसीतरहरहगये रानी व राजकुमार बिनाअन्नबहुतदिनबीत नेसे निर्बलहोगयेथे इसलिये राजाउनसेबोला जिसबर्तनमें अति थिने भोजनकियाहै उसमेंकुछअन्नकाअंश लगाहोगा उसके धोकर पीलेव जबरानी व राजकुमारने वह बर्तनपीनाचाहा तब एकडोमकुत्तेको साथलियेहुये वहांआनपहुँचा व भूखसे व्याकु लहोकर राजाकेसामने गिरपड़ा व रोकरकहनेलगा मेराप्राणनि कलाजाताहै सो यहबर्तनकाधोवन आपकेपीनेयोग्य नहींहै यह जूठनमेराभाग समझकरमुझे देवाजिसमें उसेपीकर अपनाप्राण बचाऊं राजानेउसचांडालमेंभी परमेश्वरका प्रकाशसमझकर उसे दण्डवतकिया व रानी व राजकुमार डोमसेबोले हमलोगोंने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुतदिन पीछे यह धोवन पीनेकी इच्छाकी है तुम दयाकरके छोड़देव तो हमपीवें जबचांडालने नहींमाना तबदोनों वहधो वनका पानी भी उसे पिलाकर आपभूखे रहगये जब परमेश्वर ने इसतरहका धर्म व धीर्यउनतीनोंमें देखा तबउसी डोमसे श्या मवर्ण चतुर्भुजीस्वरूप शंख चक्र गदा पद्म लिये प्रकटहोकर राजा व रानी व राजकुमारसेकहा तुम्हैंबड़ाधीर्यहै जब उनतीनों ने परमेश्वरका दर्शनपाकर विनयपूर्वक उनकीस्तुतिकी तबनारा यणजी रन्तिदेवको अपनेगलेलगाकर बोले हे राजन् हमतुझसे अति प्रसन्न हैं जो वरदानमांगो सो देवें रन्तिदेव हाथजोड़कर बोला महाराजयहीबरदान मांगताहूं कि मेरीसबप्रजा सुखपावै और कोई दरिद्री न होकर मेरामनतुम्हारे चरणोंमेंलगारहै परमे श्वरइच्छापूर्वक बरदानदेकर राजा व रानी व राजकुमारकोउसी तनुसे विमानपर बैठाके बैकुंठमें भेजदिया व रन्तिदेवका गर्गना मदूसराबेटाजो राजसिंहासन परथा उसकेबंशमें सबलोगअपनी कृपासे ब्राह्मण होगये व पुरुकेबंशमें बृहत्क्षेत्रराजा होकरउसके वंशमें हस्तीनाम ऐसाप्रतापीराजा उत्पन्नहुआ जिसने हस्तिना पुरनगरबनाया उसकेयहां तीनबेटेअजमीढ़ व पुर्मीढ़ व दुर्मीढ़ नाम बड़ेधर्मात्मा होकर अजमीढ़की सन्तानब्राह्मणहोगये मुद्गलउसके बंशमें ऐसाज्ञानीहुआ जिसकेनामका गोत्रआजतक संसारमेंप्रकटहै व मुद्गलके बंशमेंअहल्यानाम कन्यामहासुन्द रीहोकर गौतमऋषीश्वरको ब्याहीगई जिसकेगर्भसे शतानन्द लड़का होकर उसके सत्यवतीनाम बालक उत्पन्न हुआ जिस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का वीर्य एकादिनउर्वशी अप्सराको देखकरसरकण्डके बनमें गि
रपड़ा उसबीर्यसे कृपाचार्यबालक व कृपीनामकन्या उत्पन्नहुई
जिन्हें राजा शन्तनुजो भारद्वाजके वंशमें थे अहेरखेलतेसमय
बनमेंपड़ाहुआ देखकर अपने घरउठालाये व लड़कोंके समान
उनदोनों कोपाला व राजाशन्तनुके हाथमें यहगुणथा जिसके
मस्तकपरअपनाहाथरखदेवैं उसकारोगछूटजावै इसलियेजो रो
गीउनके पासजातेथे अच्छेहोकर साथचले आतेथे इसकारणसं
सारमें उनकायशप्रकटहुआ किसबकिसीको सुखदेनेवाले राजा
शन्तनुहैं एकबेर उनके राज्यमेंपानीनहीं बरसा व प्रजालोग अ
न्नबिनादुःखपानेलगे तबराजाने ऋषीश्वरोंसेपूछा हमने कौन
अधर्म कियाहै जोमेरेराज्यमेंपानी नहींबरसता ऋषीश्वरोंने वि
चारकरकहा तुमनेदेवापी अपनेभाईका भागछीनलियाथा इसी
वास्तेजलनहींबरसता तुम उसकाभाग देडालो नहींतो अवर्षण
सेतुम्हारीप्रजा अतिदुःखपावैगी यहवचन सुनतेही राजाशन्तनु
ने देवापीसे जोबनमें बैठाहुआ तपकरताथा इसतरह भुलावादे
कर बातचीतकिया जिसमें उसके मुखसेकईवचनदेवसे विपरीत
निकलआये इसलिये देवापीका तपोबलघटगया तब शन्तनुके
राज्यमेंपानीबरसनेसे प्रजानेसुखपाया हेपरीक्षित राजाशन्तनु
ऐसे प्रतापीहुये जिनकायशसंसारमें छारहाहै॥

बाईसवां अध्याय॥

दिवोदासके वंशकी कथा॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित मुद्गलका बेटा राजा दिवोदास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ा प्रतापी हांकर उसकेवंशमें राजाद्रुपद बहुततेजवान्उत्पन्न
हुआ जिसकीकन्याद्रौपदीनामको अर्जुनतुम्हारेदादामत्स्यबेध
कर लेआये और वहअर्जुनआदिक पांचोंभाई पाण्डवोंकी स्त्रीहु
ईथी राजाद्रुपदके धृष्टद्युम्नआदिक कईपुत्र उत्पन्नहोकर उसी
धृष्टद्युम्नने महाभारतमें द्रोणाचार्यका शिरकाटाथा व अजमीढ़
केवंशमें वृहद्रथनामबड़ाप्रतापी राजाहोकर उसके दोस्त्रीथींसोए
करानीके सत्यजित्नाम बालकउत्पन्नहोकर दूसरीस्त्रीसे कोई
पुत्रनहींथाइसलिये राजामहापुरुषोंकीसेवाकियाकरतेथे एकदि
न किसीऋषीश्वरनेप्रसन्नहोकर एकआमराजावृहद्रथको देकर
कहातूयह फल अपनी स्त्रीको खिलादे उसकेपुत्रहोगा राजानेवह
आमलेकरअपनी बड़ीरानीकोदिया सो दोनोंरानियांआपसमें
प्रीतिरखनेसे आधा २ आमबांटकरखागईं सोराजाकी दोनोंस्त्रि
योंकोगर्भरहा और दशवेंमहीने उनके पेटसेआधे २ बालकजिस
तरहकोईखड़े मनुष्यकोचीरडाले उत्पन्नहुये उसेदेखतेही राजा
नेक्रोधितहोकरउसको बनमें फैंकवादियाव आमबांटकरखानेका
हालसुनकरराजादोनों रानियोंपर अतिक्रोधितहुये सो ईश्वरकी
इच्छासे जहांपर वेदोनोंटुकड़े राजानेफैंकवा दियेथे वहांपरजरा
नामराक्षसी जापहुँची व उसनेअपनी मायासेदोनों टुकड़ोंकोमि
लाकरजोड़दिया सो वहबालकपरमेश्वरकी इच्छासेजीउठा तब
वहराक्षसी उसकोराजाकेपासलेगई उसे देखतेही राजाने अतिप्र
सन्नहोकर उसकानामजरासन्धरक्खा और वहबड़ाबलवान् व
तेजस्वीराजाहुआ जिसको भीमसेनने श्रीकृष्णजीकीकृपासे दो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नों टांगचीरकरमारडाला व जरासन्धका बेटासहदेवहोकर उसके बंशमेंदेवापीनामराजा बड़ाप्रतापी व धर्मात्माहुआ जिसनेराज्य सिंहासनछोड़कर मनअपना बिरक्तकरलिया व उत्तराखण्डमें जाकर तपकरताहै वहकलियुगके अन्तमें चन्द्रबंश कुलकोफिर उत्पन्नकरेगाअबराजाशन्तनुके बंशकीकथाजिसकुलमेंतुमहुये हो वर्णनकरतेहैंसुनों राजाशन्तनुकीस्त्रीसे सलउत्पन्नहोकरउस केबंशमें राजादिवोदास कौरवऐसाप्रतापीजन्मा जिसके नामसे कुरुक्षेत्रतीर्थप्रकटहुआ व राजादिवोदासके पूर्वजन्मकेसंस्कार से कोढ़होगयाथा सो एकदिनवहअहेर खेलतेसमय बनमेंजाकर गर्मीसेव्याकुलहुआ सोकुरुक्षेत्रमेंजाकर एकवृक्षकेनीचेबैठावहां एककुण्डपानीकादेखकर जैसेराजाने उसमेंस्नानकिया वैसे उन काकोढ़छूटगया इसलिये वहअतिप्रसन्नहोकरवहकुण्ड व दूसरे जो तड़ाग व कुण्डवहांपरथे सबको अच्छीतरहबनवादिये इसी कारणवहांका नामकुरुक्षेत्रहुआ व उनकेबंशमेंराजादिलीपऐसा प्रतापीहुआ जिसनेदिल्लीऐसानगरबसाया व राजाशन्तनुकी दूसरी स्त्री गंगाजीसे भीष्मपितामहऐसे बलवान् व धर्मात्माहुये जिन्होंने परशुरामजीसे युद्धकिया धनुषविद्यामें उनकेतुल्यकोई नहींथा राजाशन्तनुकी तीसरी स्त्री सत्यवतीनामसे चित्रांगद व बिचित्रवीर्यदोपुत्रउत्पन्नहुये हेपरीक्षितयहवहसत्यवतीथीजिस केसाथ पराशरमुनिहमारे दादानेकुमारपनमें बीचनौकाके भोग कियाथा उसीसे वेदव्यास मेरेपिताउत्पन्नहुये एकदिनाचित्रांगद पुत्र सत्यवतीका अहेरखेलनेवास्ते बनमेंगया तबचित्रांगदगन्ध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्बने उसको इसशत्रुतासे कि मेरेसमान इसने अपनानामक्यों रख
वायाथा मारडाला व भीष्मपितामह अपनेभुजाके पराक्रमसेअ
म्बा व अम्बिका व अम्बालिकानामतीनकन्या काशीनरेशकीस्व
यम्बरमेंसे छीनलायेथे सोउनतीनोंका बिवाह विचित्रबीर्यसेहुआ
उसमें अम्बानाम कन्याअपने मनमेंचाहना राजाशाल्वकीरख
तीथी इसलिये राजाबिचित्रवीर्य ने उसको छोड़दिया व अम्बि
का व अम्बालिकासे इतनी प्रीतिहुई कि दिनरात राजमन्दिरमें
रहकर उनकेसाथ भोग व बिलासकियाकरतेथे इसलिये राजाक्ष
यीकारोग होनेसे बिनासन्तानमरगये तबसत्यवतीने अपनावंश
बढ़ानेवास्ते वेदव्यासअपनेपुत्रको जो पराशरमुनिसे उत्पन्नहुये
थे बुलाकरकहा बिचित्रवीर्यकी दोनोंस्त्रियोंसे एकएकपुत्रउत्प
न्नकरो तबवेदव्यासजी जो परमेश्वरका अवतारथे बोले हेमाता
दोनों स्त्री विचित्रबीर्य की मेरेसम्मुखसे नंगीहोकर चलीजावें तो
मेरे देखनेसे उनकेगर्भरहकर एकएकपुत्रउत्पन्नहोगा जब अ
म्बिकाअपनीसासुकीआज्ञासे नंगीहोकरवेदव्यासकेसामनेचली
तबउसने लज्जावशअपने बालोंसे मुँहछिपाकर आंखबन्द कर
लियाथा इसलिये उसकेधृतराष्ट्रअन्धापुत्र उत्पन्नहुआ व अम्बा
लिकालज्जासे अपनेअंगमेंमट्टी लगाकर उनकेसामने गई थी
इसीकारण उससेराजापाण्डु पिण्डरोगीउत्पन्नहुये व बिलराना
म दासीबिचित्रवीर्यकी नंगीहोकरहँसतीहुई वेदव्यासजीके साम
ने चलीगई सो उसकेपेटसे बिदुरजी परमभागवतने जो धर्मराज
काअवतारथे जन्मलिया व धृतराष्ट्रके दुर्योधनआदिक सौ पुत्र
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गान्धारीस्त्रीसेहुये व राजापाण्डु तुम्हारेपरदादाको एकऋषीश्वर हिरणरूपने जो राजाकेडरादेनेसेभोगकरने नहींपाया ऐसाशाप दियाथा किस्त्रीभोगकरतेसमयतुम मरजावोगे व सिवायइसकेरा जाकेपिण्डरोगहोगयाथाइसलियेउसकेसन्ताननथी जबकुन्तीउ नकीस्त्रीने अपनेपतिकी आज्ञानुसार मन्त्रकेप्रतापसेधर्म व इन्द्र व पवन देवताओंको बुलाकर उनसेभोगकिया तबधर्मसे राजायु धिष्ठिर व इन्द्रसे अर्जुन व पवनसे भीमसेन येतीनपुत्र उसकेहुय फिरकुन्तीने उसीमन्त्रसे अश्विनीकुमार देवताकोबुलाकर नकु ल व सहदेवदोपुत्र माद्री अपनी सवतिसे उत्पन्नकिये और वह पांचोंभाई द्रौपदीसे बिवाहकरके अपनेअपनेपास पारीबांधकर उसकोरखतेथे सो पांचोंभाइयोंके एकएकपुत्र द्रौपदीसे उत्पन्न हुये जिनको अश्वत्थामाने मारडाला व राजायुधिष्ठिरके पौरबी नाम दूसरीस्त्रीसे देवक व भीमसेनके हिडम्बाराक्षसीसे घटोत्कच व सहदेवके सहोत्रापत्नीसेबिजय व नकुलकेकर्णमतीस्त्रीसे निर्मि त्र व अर्जुनकेसुभद्रानाम पत्नी श्रीकृष्णजीकी बहिनसे अभिम न्युपुत्र बड़ाप्रतापीहुआ जो तुम्हारापिताथा व अर्जुनके अलोपा नाम तीसरीपत्नीसे जो नागकन्याथी बभ्रुबाहन व ऐरावत दोपुत्र बड़े तेजवान् उत्पन्नहुये उसमें ऐरावतको मणिपूरपतीनाम उस केनानाने आपने रासबैठाला व बभ्रुबाहनने अर्जुनकेसाथ बड़ा भारीयुद्धकियाथा उसकीकथा अश्वमेधपर्वमहाभारतमें लिखी है और जब अश्वत्थामाने तुझे मारनेकेवास्ते ब्रह्मअस्त्र चलाया तब श्रीकृष्णजीवैकुण्ठनाथजीने उत्तरातेरीमाताकेपेटमेंतुम्हारी

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रक्षाकी व हेपरीक्षित जनमेजयआदिक जो तेरेचारपुत्रहैं उनमें जनमेजय बड़ाप्रतापी व चक्रवर्त्तीराजा सातोंद्वीपका होकर तुम्हाराबदलालेनेवास्ते ऐसायज्ञकरेगा जिसमें बहुतसर्प जलकर मरजावेंगे व शुभकर्मकरनेसे उसकायशसंसारमें प्रकटहोगा व तुम्हारेमरनेउपरांत पच्चीसपीढ़ीतक हस्तिनापुरकाराज्य तेरेवंशमें रहकर फिर हस्तिनापुर यमुनाजीमें डूबजावेगा तबतिमीनाम राजा तुम्हारेवंशमेंहोकर वहांपरसो बस्तीपुरी बसावेगा उसकेपीछे तुम्हारेवंशमें राज्यगद्दी छूटजावेगी और दूसरे राजाहोंगे व वेदव्यासजी हमारेपिताने चारोंवेद व सबपुराण अपनेचेलोंको पढ़ाया पर श्रीमद्भागवत जो सबवेदोंकासारांशहै किसीको न पढ़ाकर मुझेपढ़ायाथा वही अमृतरूपीकथा हमतुम्हें सुनातेहैं सहदेव राजाजरासन्धके पुत्र व ययातिके वंशमें बहुतसे राजाहुये उनकानाम संस्कृतभागवतमें लिखाहै॥

तेईसवां अध्याय॥

यदुवंशियों की कथा॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित अबहम यदुवंशियोंकीकथा जिस कुलमें कृष्णावतारहुआथा कहतेहैं उसकेसुननेसे मनुष्योंको सब मनोरथमिलतेहैं सो तुम चित्तलगाकरसुनो ययातिका यदुनाम बड़ापुत्र जो देवयानीसेहुआथा उसकेवंशमें कईपीढ़ीउपरांत राजा सहस्रार्जुन ऐसा तेजस्वीउत्पन्नहुआ जिसनेपचासीहज़ार वर्ष चक्रवर्त्तीराज्यकिया उसकानाम स्मरणकरनेसे गयाहुआधन मिलताहै उसके हज़ारबेटोंमें नौसौ पंचानबे राजकुमारोंको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परशुरामजीने मारडाला पांचबेटे जो बचेथे उनमें जयध्वजबेटा से तालजंघनाम क्षत्रीहोकर उसकेवंशमें मधुनाम बड़ा प्रतापी हुआ इसीवास्ते श्रीकृष्णजीका नाम माधव कहाजाताहै व मधु कापुत्र वृष्णीथा इसीसे यदुवंशी व वृष्णिवंशी व मधुवंशी कह लातेहैं वृष्णीकाबेटा शिशुविन्दऐसाधर्मात्माहुआ जिसकेपास चौदहरत्नथे व उसने दशलाखस्त्रियोंसे बिवाहअपनाकिया सो हरिइच्छासे दशकरोड़पुत्र उसके उत्पन्नहुये उनमें सबसेबड़ा पुत्र पुरुजित व छोटाबालक जामघनामथा सो राजा जामघ की शैव्यानाम स्त्री बांझथी अनेकउपाय करनेपर भी उसके सन्तान नहीं हुई इसीकारण उदासरहाकरती थी सो एकबेर राजाजामघ विदर्भ देशके नृपतिसे लड़नेवास्ते गया तो वहांसे एककन्याअतिसुन्दरी किसी भोजवंशीकी छीनलाया जबउस बांझस्त्रीने देखा कि मेरास्वामी एकसुन्दरी अपनेसाथ रथपर बै ठाले लियेआताहै तबवहक्रोधसे बोली कि तुमयहकन्या किस लिये लायेहो राजाडरताहुआ अपनीस्त्रीसेबोला मैं तेरेवास्तेयह पतोहूलेलायाहूं ऐसावचनसुनतेही रानीनेहँसकरकहा मेरेपुत्रन हींहै यहपतोहू किसतरहहोगी तबराजाने उत्तरदिया पुत्रहोनेपर इसकन्याका बिवाह उसकेसाथकरूंगा परमेश्वरकीइच्छासे उसी समय ऐसीआकाशवाणीहुई कितूधीर्य्यधर तेरेपुत्र उत्पन्नहोगा यह आकाशवाणी सुनतेही राजा व रानीने बड़ेहर्षसे विश्वेदेवों का पूजनकिया जबउनके आशीर्व्वाद व हरिइच्छासे उसबांझ स्त्रीके एकपुत्र अतिसुन्दर व तेजस्वी उत्पन्नहुआ तबराजानेउस

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कानाम विदर्भरखकर वहीकन्या उसे बिवाहदी व अपनेबेटेको राजगद्दीदेकर स्त्रीसमेतबनमें चलागया और ध्यानपरमेश्वरका करकेमुक्तहुआ व राजा विदर्भ धर्मपूर्वक राज्यकरनेलगा॥

चौबीसवां अध्याय॥

राजा उग्रसेन आदिकका उत्पन्नहोना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित राजाविदर्भसे तीनपुत्र कुश व क्रथ व रोमपादहोकर रोमपादकेवंशमें जयद्रथनाम बड़ाप्रतापी चन्देलीका राजाहुआ जिसकेयहां शिशुपालने जन्मपाया व उसीकुलमें देवावृद्ध व विभु दोनोंपुत्र ऐसेधर्मात्मा व ज्ञानीहुये जिनकेसत्संगसे छःहजारपैंसठ मनुष्योंनेमुक्तिपाई व विभुकेवंश में सत्राजित व प्रसेननेजन्मलिया व विदर्भकीसन्तानमें युयुधान व सात्यकी बड़े बलवान्होकर छवोंयुयुधानके सुफलक पुत्र हुआ व सुफलककेगांदिनीनाम स्त्रीसेअक्रूरआदिक बारहबालक उत्पन्नहोकर येसबवृष्णिवंशीमें कहलाये व यदुकेवंशमें राजा अन्धक बड़ाप्रतापीहोकर उससे दुन्दुभीउत्पन्नहुआ व दुन्दुभी के आहुकनाम बालक व आहुकीकन्याहोकर आहुकसेदेवक व उग्रसेन दोपुत्रहुये व देवकके यहां देववान आदिक चारबाल क व देवकीआदिक सातकन्याओंने जन्मपाया व उग्रसेनकंसा दिक आठपुत्र व आठकन्या उत्पन्नहोकर वहसबकन्या वसुदेव जीके छोटेभाईसे व्याहीगईं व देवकने देवकीआदिक अपनी क न्याओंका बिवाह वसुदेवजीसे करादिया व कुंतिभोज पांचालदे शकाराजा शूरसेनसे बड़ीप्रीतिरखताथा परउसके कोई सन्तान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न थी इसलिये शूरसेनने पृथानामअपनीकन्या उसकेरास बैठा
लदिया इसीकारण पृथाकानाम कुन्तीहुआ व कुंतिभोजनेबेवा
हकुंतीका जोपंचकन्यामेंथी राजापाण्डुसे करादिया व युधिष्ठिर
आदिक उससेउत्पन्नहुये व जबकुंतीने बालापनमें दुर्वासाऋषी
श्वरको अपनीसेवासेप्रसन्नकिया तबऋषीश्वरने एकदेवाहूत मं
त्रकुन्तीको ऐसासिखलादिया जिसमंत्रकेपढ़नेसे देवताचलेआ
वें सोकुन्तीने कुमारपनमें एकदिनसरस्वती किनारेपरीक्षा लेने
वास्ते वहमंत्रपढ़कर जैसेसूर्य्यदेवताका आवाहनकिया वैसेसूर्य्य
भगवान्ने रथपरबैठेहुये वहांआनकरकहा तैंनेमुझेकिसवास्ते बु
लायाहै उनकातेजदेखतेही कुंतीभयसे कांपतीहुई हाथजोड़कर
बोली महाराजमैंने अपनेमंत्रकीपरीक्षालेनेवास्ते तुमकोबुलाया
था सोआपदयालुहोकर चलेजाइये यहवचनसुनकर सूर्य्यदेवता
बोले हेकुंती मेराआनाव्यर्थनहींहोसक्ता अबमैंतेरेसाथभोगकरके
एकबालकतुझेदूंगायहवचनसुनतेहीकुन्तीनेविनयकिया महारा
जअभीमेराबिवाहनहींहुआपुत्रहोनेसेमेरीनिंदाहोगी यहसुनकर
सूर्य्यभगवान्बोले हेकुन्ती तूधीर्यधर तेरालड़कपन ज्योंका त्यों
बनारहैगा ऐसाकहनेउपरांत सूर्यदेवता कुन्तीसेभोगकरके अपने
स्थानपरचलेगये उसीसमय परमेश्वरकीइच्छासे कुन्तीकेएकबा
लक अतिसुन्दर व तेजमान कुण्डलआदिकपहिरे कानकेराह उ
त्पन्नहुआ उसेदेखतेही कुंतीनेआश्चर्य्यमाना व सन्दूकमेंधरक
र बीचगङ्गाकेबहादिया सोवहीपुत्र कर्णनामअतिबलीहोकरमहा
भारतमें दुर्योधनकीओरसे लड़ताथा जिसको अर्ज्जुनतुम्हारे दा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दानेमारा व बसुदेवजीकी एकबहिनपृथानामकीकथा हमनेतुम्
सुनाई अबउनकी और चारोंबहिनोंकासमाचारसुनो दूसरीबहिन
सत्यदेवीकाबिवाह धर्मकारुषदेशके राजासेहुआ सोदन्तबक्रादि
क उससेपुत्रजन्मेथे तीसरीबहिन श्रुतिकीर्तिनामका बिवाह धृष्ट
केतुसेहोकर शववनआदिकने उनकेयहांजन्मलिया चौथीबहिन
राजदेवीकाबिवाह अवन्तीपुरीमें जयसेन राजासेहोकर पांचवींब
हिनश्रुतिश्रवानाम दमघोष राजाचंदेलीकोब्याहीगई जिसकेपेट
से शिशुपालउत्पन्नहुआ व सिवायसातकन्यादेवकके बसुदेवजी
के और ग्यारहस्त्रीहोकर सबसेसंतानहुईथी उनकानामसंस्कृतभा
गवतमेंलिखाहै व देवकीकेगर्भसे श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ व
सातबेटे और सुभद्रानामकन्याने जन्मलियाथा सोहमदशमस्कं
धमें कथाअवतारलेने श्यामसुंदरकीकहेंगे अबद्रौपदीके बिवाह
काहाल संक्षेपमेंकहतेहैं सुनोअर्जुनमत्स्य बेधकरद्रौपदीकोस्वय
म्बरमेंसेलेआया व अर्जुनआदिक पांचोंभाइयोंने उसेअपनेस्था
नपरलेआकर कुंतीसेकहा हमएकबस्तुलायेहैं तबवह उसेखाने
का पदार्थ समझकरबोली तुमपाँचोंभाई आपसमेंबांटलेव इस
लिये माताकी आज्ञानुसार पांचोंभाइयोंने द्रौपदीको स्त्री बना
कर रक्खा जबराजा द्रुपदको यहबात अच्छीनहीं मालूम हुई
तब युधिष्ठिरने उनसेकहा कि हमअपनी माताकी आज्ञाटाल
ने नहींसक्के यह आश्चर्य देखकर राजाद्रुपदने व्यासजीसेपूछा
महाराज मेराप्रण द्रौपदीके बिवाहका अर्जुनने पूराकिया व द्रौ
पदी मेरीकन्याका युधिष्ठिर आदिक पांचोंभाई अपनीस्त्री बना
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ना चाहतेहैं सो आपकेनिकट इसकन्याको किसकीस्त्री होनाचा
हिये व्यासजी ने द्रुपदको अकेले में लेजाकरकहा हे राजाह
म द्रौपदीके पूर्वजन्मकीकथा कहतेहैं सुनो एकबेर देवतोंनेक्या
देखा कि एकपुष्पकमलका बहुतअच्छा गङ्गाजीमें बहाजाताहै
तबइंद्रबोला मैं जाकरदेखताहूं यहपुष्प कहांसे आताहै जबइन्द्र
उसफूलकाहाल मालूमकरताहुआ जहांसे गङ्गाजीका पानीनि
कलाहै वहांपहुँचातो क्या देखा कि एकस्त्री अतिसुन्दरी खड़ी
हुई रोतीहै व उसकेआंशू गंगामें गिरनेसे पुष्पहोकर बहते हैं यह
हाल देखतेही इन्द्रने आश्चर्यमानकर उसस्त्रीसे पूछा तू कौन है
यहसुनकर वहबोली मैं एकजगह चलतीहूं तूभी साथआव तो
मेराहाल तुमको मालूमहोगा यहबातकहकर वहस्त्री आगेकोच
ली तबइन्द्रभी उसकेसाथ एकपर्बतपर चढ़गया तो वहां क्यादे
खा कि एकपुरुष व स्त्री अतिसुन्दर व तेजमान रत्नजड़ित सिंहा
सनपर बैठेहुये आपसमें कुछखेलरहे हैं जबउस पुरुषने इंद्र को
देखकर कुछसन्मान उसका नहींकिया तबइंद्रने आभिमानसे म
नमेंकहा देखो मैं सबदेवतोंका राजाहोकर यहांआया सो मेराकु
छ आदर इन्होंने नहींकिया और उसपुरुषने जो महादेव अन्त
र्यामीथे जैसे इंद्रकीओर देखकर हँस दिया वैसे इंद्र मारेभयके
सूखगया यहदशा उसकीदेखकर शिवजीनेकहा तुमऐसी प्रति
ज्ञाकरो फिर अभिमान न करेंगे तो तुम्हारा प्राणबचेगा जबइंद्र
ने उनकेभयसे वहीप्रतिज्ञाकी तबमहादेव सिंहासनपरसेउतरकर
इंद्रको पर्वतकी कंदरामें लेगये वहां जाकर इंद्रने क्या देखा कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चार औरपुरुष इंद्ररूपीउसजगह बैठेहैं उनकोदेखतेही इंद्रघबरा
कर जहांतक पहुँचाथा उसीजगहपर मारेभयके चुपचाप खड़ा
होगया तबशिवजीने इंद्रसेकहा जिसतरह तैंने गर्वकिया उसीत
रह इनचारों मनुष्योंको भी अहंकारहुआथा इसीकारण यहलो
ग कंदरामें बंदहैं अबमैंनारायणजीसे चाहताहूं कि तुमइनचारों
समेत संसारमेंजाकर जन्मलो यहशाप सुनतेही चारोंमनुष्य
शिवजीके चरणोंपर गिरकर अतिविलापकरनेलगे तबभोलाना
थनेकहा तुमलोग संसारमें जन्मलेकर शुभकर्म करोगे व बड़े
बलवान्होकर तुम्हारेहाथसे बहुतशूरबीर युद्धमेंमारेजावेंगे यह
सुनकर उन्होंने विनयकिया हे महाप्रभो आपकी आज्ञानुसार
जन्महमारामर्त्यलोकमें अवश्यहोगा पर ऐसीदया कीजिये जि
समें देवतोंके वीर्यसे मनुष्यतनपावैं शिवजीने कहा बहुतअच्छा
ऐसाहोगा इसलिये वहपांचों धर्मराज व पवन व इंद्र व अश्विनी
कुमार देवतोंके वीर्यसे युधिष्ठिर व भीमसेन व अर्जुन व नकुल
व सहदेव नाम उत्पन्नहुये व जिसस्त्रीके साथ इन्द्रपर्वतपर गया
था उसमायारूपीस्त्रीसे शिवजीनेकहा तूभी मनुष्यतनमें उत्पन्न
होकर इनपांचोंकीपत्नीहोगी सो हेराजन् वहीस्त्री आनकर तेरे
यहांद्रौपदीनामकन्याहुई और उन्हींपांचोंइंद्रोंनेराजापांडुकेघर
जन्मलियाहै सोतुमइसबातकी कुछचिन्ता अपनेमनमेंमतक
रो यहहालसुनकरराजाद्रुपदका संदेहछूटगया व कोई २ ऋषी
श्वर ऐसा लिखतेहैं कि द्रौपदीने महादेवजीका तपकियाथाजब
शिवजीने प्रसन्नहोकर उससेकहा तू क्याचाहतीहै तब द्रौपदी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने पांचबेर पतिपति अपनेमुखसेकहा इसलिये महादेवजीने उस को ऐसा बरदानदिया कि तूपांचमनुष्योंकीस्त्री होगी यहसुनकर द्रौपदीबोली महाराजमैंने पांचपतिहोनेवास्ते तुम्हारातप नहीं कियाथा तबशिवजीनेकहा तैंनेपांचबेरअपनेमुखसेभर्त्तार२मुझ सेमांगा इसलिये मैंने तुझकोपांचस्वामीदिये कदाचित् एकबार कहती तो हमतुझे एकपुरुषदेते अबजो वचन मेरेमुखसेनिकला वहाफिरनहींसक्ता तू धीर्यरख तेरेपांचोंपति आपसमें झगड़ा नहीं करेंगे व तेरेभाग्यमें इसीतरह लिखाथा व कोई २ महापुरुषों ने ऐसाभीकहाहै कि एकगौरास्तेसे चलीजातीथी उसेदेखकर पांच सांड़कामातुरहोकर उसगौकेपीछेदौड़े सो द्रौपदी यहदशा देख कर हँसनेलगी तबउसगौने द्रौपदीको ऐसाशाप दिया कि तूमुझे देखकर हँसतीहै इसलिये तूभी पांचपुरुषोंकी स्त्रीहोगी इसीका रण द्रौपदीके पांचपुरुष हुयेथे॥

इतिश्रीनवमस्कन्धस्समाप्तः॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीमद्भागवत महापुराण

दशवां स्कन्ध॥

लीला व कथा श्रीकृष्णावतार की॥

दो० जन्ममरणसे रहित हैं नारायण करतार। हरिभक्तनके हेतुसों लेत भूमि अवतार॥
जबपृथ्वीपर होत हैं अधिकपाप विस्तार। तबहीं सगुणै धरत हैं एकरूप अवतार॥
युग द्वापरके अन्तमें कंस कियो जबराज। साधुऋषीश्वरदुखभयो दैत्यनबढ़ेसमाज॥
यज्ञहोमकी हानिकरि परजाको दुखदीन। ऐसो पाप विचारकर भूमिभई आधीन॥
जब सबदेवन जाइकै कीन्हींबहुत पुकार। तबधरि सगुणैरूपको दूरिकियोमहिभार॥

पहिला अध्याय॥

राजा परीक्षित का शुकदेवजीसे श्रीकृष्णावतारकी कथा पूछना॥

जबराजापरीक्षितको नवस्कन्धकथा श्रीमद्भागवत पांचदिन में सुननेसे ज्ञानउत्पन्नहोकर अपनेमुक्त होनेकी राहदिखलाई दी तबउसने हाथजोड़के विनयकिया हे शुकदेवस्वामी महाराज आपने कथासूर्यबंशी व चन्द्रबंशी पिछलेराजा व ऋषीश्वरोंकी जो लोगपरमेश्वरकेतप व ध्यानमें जन्मअपनाबिताकर बैकुंठमें गयेहैं कही वहकथा व श्रीनारायणजीकी महिमासुनकर मेरेमन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को बोधहुआ अबकथा यदुबंशियोंकी जिसकुलमें श्रीकृष्णजी महाराज त्रिलोकीनाथने अवतारलेकर अनेकलीला संसारमें वास्ते मुक्तहोने मनुष्य वसुखदेने हरिभक्तोंकेकीथी सुनाचाहता हूं और आपनेकहाहै कि परब्रह्मपरमेश्वर सदाएकरूप रहकरज न्म व मरणसेरहित हैं सो देवकीजीके पेटसे उन्होंने किसतरहज न्मलिया इसबातकासन्देह मेरेमनमें आवताहै सो छुड़ादीजिये और आपनेयहभी कहाहै कि बलभद्रने देवकीजीकेउदरमें गर्भ वासकिया फिर रोहिणीजीको उनकीमाताक्योंकहतेहैं इसकाहा लभीविधिपूर्वकवर्णनकीजिये मुझकोइसकथासुननेसे आलस्य न आकर प्रतिदिन सामर्थ्य होतीजाती है आपज्यों २ यह कथा सुनातेहैं त्यों २ अधिकप्यासमें अमृत पिलाते हैं जिसपरमेश्वर की स्तुतिकरनेमें ब्रह्मादिकदेवता हारमानगये दूसरेको क्यासाम र्थ्यहै जो उनकागुणानुवाद वर्णनकरनेसके मेरेपुरुषोंने श्रीकृष्ण जीकीदयासेदुर्योधन व कर्णआदिक बड़ेबड़े वीरोंको मारकेराज गद्दीपाई और जिससमय द्रोणाचार्यका बेटा अश्वत्थामा क्रोध करके चाहा कि नाम व वंशपांडवोंका संसारमें न रक्खैं व मेराप्रा ण मारनेवास्ते ब्रह्मास्त्र बीचपेटहमारीमाताकेचलाया उससमय श्यामसुन्दरने मेरीरक्षा की तीनोंलोककीउत्पत्ति व पालनकरने वाले हमारेसहायक व कुलपूज्य वहीश्रीकृष्णजी अविनाशीपुरु षहैं सो आपदयाकरके उनकी कथासुनाइये ॥

दो० सुनिकै शुक बोलेतभी राजा तू बड़भाग। माधव प्रभुमों यासमय बाढ़्यो है अनुराग ॥

हे परीक्षित तुमने श्यामसुन्दरकीकथा पूछकर मुझेबड़ासुख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिया अबहम निर्मलयश श्रीकृष्णजीका तुमकोसुनावेंगे परकई दिनसे तैंने अन्न व जलनहींकिया इसलियेतेराचित्त ठिकाने न होगा सो तुझेसावधानहोकर यहकथासुननाचाहिये यहवचनसु नकर राजाबोले हे स्वामीआपने जोनवस्कन्धकथा अमृतरूपी मुझे सुनाईहै वह अमृतकानोंकी राहपीनेसे पेटमेराभरगया इस लिये मुझेकुछइच्छा क्षुधा व तृषाकीनहीं है शुकदेवजी यहबात सुनकर बहुतप्रसन्नहुये व परमेश्वरके चरणोंमें ध्यानलगाकर उनको दण्डवत्किया व छठवेंदिन सोमवारसे कथादशमस्कन्ध आरम्भकरके कहा हे राजन् द्वापरकेअन्तमें बीचवंश भजमान यदुवंशीके शूरसेननाम बड़ाप्रतापीराजाहुआ जिसने नवखण्ड पृथ्वीके राजोंको जीतकर यशपाया व राजाशूरसेनके मारिष्या नामस्त्रीसे पांचकन्या व बसुदेवादिक दशपुत्र उत्पन्नहुये और बसुदेवजी बड़ेबेटेने पहिला विवाह अपनारोहिणी नाम बेटी राजारोहिणसे किया वहसबसत्रहपटरानी बसुदेवजीकी थीं जब उन्होंने अठारहवींशादी अपनी देवकीनामबेटी देवक व चचेरी बहिन राजाकंससेकिया तबयह आकाशवाणीहुई कि देवकी के आठवेंगर्भसे राजाकंसका मारनेवाला उत्पन्नहोगा जब ऐसी आकाशवाणीसुनकर कंसने बसुदेव व देवकीको क़ैद किया तब परब्रह्मपरमेश्वरने श्रीकृष्णनामसे वहींजन्मलिया इतनीकथासु नकरराजाने पूछा कि महाराज किसतरह कंसउत्पन्नहुआ व क्योंकर श्यामसुन्दर मथुरामें जन्मलेकरगोकुलमेंगये वहकथा विधिपूर्वक वर्णनकीजिये शुकदेवजी बोले हे राजन् उनदिनोंरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाआहुक यदुवंशी मथुरापुरीका राज्य करताथा जब देवक व उग्रसेननाम दोपुत्रउसके उत्पन्नहुये और वहमरगया तबउग्रसे नबड़ाबेटा उसका महाप्रतापी राजाहुआ व पवनरेखारानी उस की अतिसुन्दरी व पतिव्रता आठोंपहर अपनेस्वामीकी आज्ञामें रहतीथी एकदिन रानीपवनरेखा रजस्वलास्नान से शुद्धहोकर अपनेपतिकी आज्ञानुसार सहेलियोंसमेत बनबिहारकरनेगईतो वहांपर अतिउत्तमफल व फूललगेहोकर अनेकरंगकेपक्षी सोहा वनी बोलियांबोलतेथे व ठंढी मंदसुगन्धपवनबहकर एक ओर यमुनाजी पहाड़केनीचे लहरें लेतीथीं ऐसीशोभा देखतेहीपवन रेखा रथसेउतरकर बनबिहारकरनेलगी जबवह घूमतीफिरतीहुई सहेलियोंसे अलगहोकर एकजंगल घटाटोपमें अकेली जापहुँ ची तबहरिइच्छासे अचानकउसजगह द्रुमालिकनाम राक्षस भी घूमताहुआ आनिकला और वह पवनरेखाकारूप देखतेही उस परमोहितहोगया जब उसने भोगकरनेकीइच्छासे अपनास्वरूप राजा उग्रसेनकेसमान बनालिया व सामनेआनकर रानीसेभोग करनाचाहा तबपवनरेखा दिनकोप्रसंगकरना अधर्म बिचारकर बोली महाराज दिनको भोगकरनेमें लज्जा व धर्मछूटकर पाप होताहै इसलिये प्रसंग न करनाचाहिये इसीतरह अनेकबातैं कह कर पवनरेखाने अपनेको बचानाचाहा परद्रुमालिकराक्षसने जो कामके वश होरहाथा रानीका हाथ बरजोरी पकड़ लिया व पृथ्वीपर गिराकर उसकेसाथ भोगकिया व पवनरेखाभी उस को अपनापति समझकर चुपहोरही॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो॰ जैसी हो होतव्यता तैसी उपजै बुद्धि। होनहार हिरदै बसै बिसरिजाय सब सुद्धि॥

हे राजन् जब द्रुमलिक भोगकरनेउपरांत अपना राक्षसरूप बनाकर रानीकेसम्मुख खड़ाहोगया तबपवनरेखा उसको देखते ही अतिलज्जित व शोचितहोकर बड़ेक्रोधसेबोली हे राक्षसअधमीं चांडाल तैंनेयह क्याछलकरके मेरासतखोदिया तेरेमाता व पिता व गुरुकोधिक्कारहै जिसने तुझे ऐसाज्ञान सिखलाया तेरी माता ऐसा कुपूत जननेमें बांझरहती तो अच्छाहोता जो लोग मनुष्यकातनपाकर किसीका सत व धर्म बिगाड़देते हैं उनकोअनेकजन्म नरकभोगनापड़ताहै द्रुमलिक यहवचनसुनकर बोला हे पवनरेखा तू क्रोधकरके मुझेशापमतदे तेरीकोखबन्द देखकर मुझको बड़ाशोचथा सो आजछूटा मैंने अपनेधर्मका फल तुझे दिया मेरेभोगकरनेसे तुझकोगर्भरहकर बड़ाप्रतापी पुत्रउत्पन्न होगा और वह अपनी भुजाकेबलसे नवखण्ड पृथ्वीके राजों को जीतकरअकेलाचक्रवर्त्तीराज्यकरैगा व परब्रह्मपरमेश्वरश्रीकृष्ण नाम पृथ्वीपरअवतारलेकर उससेलड़ैंगे व मेरानामपिछलेजन्म कालनेमिथा लड़तीसमय हनुमान्जी के हाथसे मारागया अब द्रुमलिकराक्षसका जन्मपाकर तुझको बेटादिये जाताहूं तुम किसीबातकीचिंतामतकरो ऐसाकहकर द्रुमलिक अपनेघरचला गया और यहबातसुनकर पवनरेखानेसमझा किइच्छापरमेश्वर की इसीतरहपरथी होनेवालीबात बिनाहुये नहींरहती ऐसा बिचारकर उसनेभी अपनेमनको धीर्यदिया जब सहेलियांरानीको मिलीं तबपवनरेखाकारंग व शृंगार बिगड़ाहुआ देखकर एकसहे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लीबोली अयरानीइतनाबिलम्ब तुमकोकहांलगा व तुम्हारीयह क्यादशाबनीहै यहसुनकर रानीनेकहा जबतुमसबों ने मुझे इस बनमें अकेलीछोड़दिया तबएकबानरने आनकरमुझको ऐसास ताया जिसकेडरसे अभीतकमेराकलेजा धड़कताहै इसी कारण मेरीयहदशाहुई यहबातसुनतेही सबसहेलियांघबड़ागईं औररा नीको रथपरबैठाकरराजमंदिरपरलेआईं दशमहीनेउपरांतमाघ सुदीतेरस बृहस्पतिके दिन जिससमयरानीकेपुत्र उत्पन्नहुआ उससमय ऐसीआंधीचली किपृथ्वीकांपनेलगी वहजारोंवृक्षगिर पड़े औरअँधियाराहोने व बादलगर्जने व बिजुलीचमकनेसे दिन रातकेसमानहोकर तारेटूटनेलगे व राजाउग्रसेनने पुत्रउत्पन्नहो नेकाबड़ाउत्सवकियाव याचकोंको बहुतदानव दक्षिणादियाजब ज्योतिषियोंसे बालककीकुण्डलीका फलपूंछा तबपण्डितोंनेक हा महाराज अपनेपुत्रकानाम कंसरक्खो यहबालकअतिबलवा नहोकेराक्षसोंको अपनेसाथलेकर राज्यकरैगा व देवता व ब्राह्मण व साधु व सन्त व हरिभक्तलोग इसकेहाथसेदुःखपावैंगे व तुम्हारा राजसिंहासन छीनकर प्रजाकोबड़ादुःखदेगा जबइसके अधर्म्म करनेसे पृथ्वीदुःखपावैगी तबपरब्रह्मपरमेश्वर अवतारलेकर इस को अपनेहाथसेमारैंगे यहवचनसुनकर राजापहिले बहुतउदास हुये फिरिइच्छापरमेश्वरकी इसीतरहपरजानकर संतोषकिया व ज्योतिषियों को सन्मानपूर्वक बिदाकरके पुत्रकापालन करने लगे जबकंस पांचछः वर्षकाहुआ तबअनेकतरहका उपद्रवप्रजा परकरनेलगा कभीमथुराबासी लड़कोंको बरजोरी पकड़करबन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में लेजाता व मारकर लोथउनकी पहाड़कीखोहमें रखआवता व जोलोग उससे सयानेथे उनकीछातीपर चढ़के गलादबाकरमार डालता व कभी लड़कोंको नहानेवास्ते अपनेसाथ यमुनाकिना रे लेजाकर पानीमें डुबादेताथा जबइसतरहकापाप कंसकरनेल गा तबमथुराबासी अपने २ लड़कोंकोघरमें छिपाकर रखनेलगे और सबप्रजा उसके हाथसेदुःखीहोकर आपसमेंयहकहतेथे कंस पापी राजाउग्रसेनके वीर्यसे उत्पन्ननहीं हुआ यहकोई पापीध र्मात्मा राजाकेघर जन्मलेकर प्रजाको दुःखदेता है जबराजाने प्रजाके दुःखदेनेकाहालसुना तबकंसको बहुतडाटकरसमझाया कि प्रजाको दुःखमतदे परवहकहना राजाकानमानकर जबप्रति दिन अधिकप्रजाको पीड़ादेनेलगा तबराजाने उसकीयहदशादे खकर बड़ेशोचसे मनमेंकहा ऐसे अधर्मी पुत्रहोने से मैं बिनास न्तानके अच्छाथा जिसके कुपूत सन्तान उत्पन्नहोतीहै उसका संसारमें यश व धर्म नहींरहता इसीतरह बहुत चिन्ताकरकेराजा उग्रसेन पछतायाकरते व कंसपरकुछवश उनका नहींचलताथा जब कंसआठवर्षकाहुआ तबअकेला मगधदेशमें जाकर जरासं धसे जो बड़ाप्रतापी राजाथा कुश्तीलड़ा जबजरासन्धने उसको अपनेसेबलवान् जानकर समझा कि हम इससेयुद्धमें न जीतेंगे तबहारमानकर दोबेटी अपनी कंसको बिवाहदीं जबकंस दोनों स्त्रियोंको साथलेकर मथुरापुरीमेंआया तबराजाउग्रसेन अपने पितासे शत्रुताकरकेकहा तुमरामनामछोड़कर महादेवजी का नामजपाकरो यहसुनकरराजाबोले मेरेकर्त्ताधर्त्ता श्रीभगवान्जी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैं उनकास्मरणछोड़देउँतो भवसागर किसतरहपारउतरूंगा जब कंसने यहवचन पिताकासुना तबक्रोधितहोकर राजगद्दीउनकी छीनली व आपसिंहासनपर बैठकर राज्यकाजकरनेलगा व अपने राज्यमें ऐसाढिंढोरा पिटवादिया किकोईमनुष्य परमेश्वरका नाम न लेवे और यज्ञ व होम व दान व धर्म व तप व जपनारायणजीका न करै जोकोई मेरीआज्ञा न मानेगा उसकोहम मरवाडालेंगे जब ऐसाढिंढोरा पीटनेसे उसकेराज्यमें सबशुभकर्म बन्दहोगये वहराजाकंस गो व ब्राह्मण व हरिभक्तोंको दुःखदेकर दैत्योंके सम्मतप्रमाणराज्यकरनेलगा व उसने पृथ्वीकेराजोंको अपने बलसे जीतलिया तबएकदिन अपनीसेना साथलेकर राजाइन्द्रसे युद्धकरनेचला उससमय एकमंत्रीने जो उग्रसेनकेसमयका नौकरथाकंससेकहा हे पृथ्वीनाथ बिनासौ अश्वमेध यज्ञ किये इन्द्रासनहीं मिलता आपअपनेबलका घमंडनकीजिये देखोरावण व कुंभकर्णको अहंकारने कैसाखोदिया जिनकेकुलमें कोई पानीदेनेवाला नहींरहा यहवचनसुनकर वहइन्द्रसे लड़ने नहींगया इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले हेपरीक्षित जबपृथ्वीपर राजा कंसकेडरसे यज्ञादिक शुभकर्म सबनेकरना छोड़दिया व ब्राह्मण व ऋषीश्वर राक्षसोंकेहाथ से दुःखपानेलगे व पृथ्वीऐसे अधर्मियोंका बोझसहनेनहींसकी तबउसने गोरूपधरकर रोती पुकारती हुई राजाइंद्रकेसामनेजाकर विनयकिया महाराजसंसारमेंकंस व राक्षसलोग बड़ापापकरतेहैं उन्हींके डरसे हरिभजन व यज्ञादिक शुभकर्म कोईनहींकरता मुझेआज्ञाहोतो मर्त्यलोक छोड़

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर पातालको चलीजाऊं यह वचनसुनतेही इन्द्रने देवतोंसमेत ब्रह्माकेपासजाकर सबहालकहा ब्रह्माजी उनसभोंको साथलेकर कैलासपर्वतपर इसइच्छासेगये कि महादेवजी राक्षसोंके दण्ड करनेयोग्यहैं वेउन्हैं मारकर पृथ्वीकादुःख छुड़ावेंगे जैसेब्रह्मावहां पहुंचे वैसे महादेवजी अन्तर्य्यामीबोले हेब्रह्मा इसपृथ्वीके भार उतारनेकी सामर्थ्यमुझे व तुमकोनहीं है इसकादुःख छुड़ानेवाले आदिपुरुष भगवान्जीहैं पृथ्वीका बोझावहीउतारैंगे यहबातकह कर शिवजी ब्रह्माआदिकको साथलियेहुये क्षीरसागरके किनारे चलेगये वहां हाथजोड़कर सबकिसीने यहस्तुति परब्रह्म परमेश्वरकीकी हेकरुणानिधान किसकोसामर्थ्यहै जोतुम्हारीमहिमा वर्णनकरनेसकै आपने मत्स्यरूपधारण करके शंखासुरदैत्यको मारकरवेदसमुद्रसे बाहरनिकाला व कच्छपरूपहोके मन्दराचल पहाड़ अपनीपीठपरलेकर चौदहौंरत्न क्षीरसागरसे प्रकटकिये व वाराहरूपधरकरपृथ्वीकोपातालसे बाहरनिकाललायेऔरवास्ते रक्षाकरनेदेवतोंके वामनरूपहोकर राजाबलिसे पृथ्वीदानलिया व परशुराम अवतारलेकरसबक्षत्रियोंकोबधकिया वसातोंद्वीपकी पृथ्वीउनसेछीनकर ब्राह्मणोंको दानकरदिया व रामचन्द्रअवतार धरकर रावणआदिक राक्षसोंको मारडाला और जबजबपृथ्वी पर दैत्य व राक्षस व पापीराजा गौ व ब्राह्मण व हरिभक्तोंकोदुःख देतेहैं तबतब आपउनकी रक्षाकेवास्ते सगुण अवतारलेकर अधर्मियोंकोमारतेहैं सोइनदिनों पृथ्वीकंसादिकके पापकरनेसेदुःखी होकर तुम्हारेशरणआईहै सो उसपर दयालुहोकर रक्षाकीजिये

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व गौ ब्राह्मण व हरिभक्तोंको सुखदीजिये जबब्रह्मादिक देवतों ने इसतरहपर स्तुति नारायणजीकीकी तबयह आकाशवाणीहु ई हेब्रह्मा मुझे पृथ्वीकादुःख मालूमहुआ इसलिये हम सगुण अवतारलेकर उसका भारउतारैंगे मैंजन्म व मरणसेकुछ प्रयोज ननहींरखता परवसुदेव व देवकीनेपिछलेजन्म मेरातप व ध्यान करके मुझसे ऐसावरदान मांगलिया है किहम उनके पुत्र होवें और इसीतरह नन्द व यशोदानेभी मेरातपकरके यह वरदानमां गाथाकि तुम्हारेबाललीलाकासुखदेखैं इसलियेहमउनकीइच्छा पूर्णकरनेकेवास्ते मथुरामें वसुदेव व देवकीजीकेघर जन्मलेवेंगे और वहांसे गोकुलमेंजाकर बालचरित्र अपना नन्द व यशोदा को दिखलावेंगे व कंसादिक अधर्मीराजोंकोमारकर अपनेभक्तों को सुखदेवेंगे सोतुम देवी व देवतालोग व्रज व गोकुल व मथुरामें पहिलेसेजाव व यदुवंशीकुल व ग्वालवंश हमारीलीलाका सुख देखनेवास्ते जन्मलेवपीछेसे हमभी चारस्वरूपधरकर अवतार लेवेंगे सबदेवता यह आकाशवाणी सुनतेही बड़ेहर्षसे अपने २ घरआयेजबब्रह्मानेहाल आकाशवाणीका पृथ्वीकोसमझादिया तबवहभी आनन्दहोकर अपनेस्थानपर चलीआई व उनकीआ ज्ञानुसार देवता व मुनि व किन्नर व गन्धर्वआदिक अपनी स्त्रि योंसमेत मथुरा व गोकुलमेंजन्मलेकर यदुवंशी व ग्वालबालक हलाये व चारोंवेदकी ऋचानेभी ब्रह्मासेआज्ञालेकर गोपियोंका जन्मलिया इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोलेहेराजन्अबहम देवकीके विवाहकाहाल कहते हैं सनो देवकनाम जो उग्रसेनका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाईथा उसके छःकन्या व चारपुत्रहुये सो उसनेअपनीछवींबेटी बसुदेवजीको बिवाहदीं जब देवकीनाम सातवींकन्या उसकेयहां उत्पन्नहुई तबदेवता अतिहर्षितहुये व राजाउग्रसेनकेयहां कंसा दिक दशपुत्रोंने जन्मलिया जबदेवकी बिवाहनेयोग्यहुई तबदे वकने राजाकंससे आज्ञालेकर शुभसाइतमें उसकेबिवाहका ति लक बसुदेवजीको भेजदिया जबराजाशूरसेन पिताबसुदेवके ति लक लेकर बड़ीधूमधामसे मथुरामें बसुदेवजीको ब्याहने आये तब राजाकंस अपनेबाप व चाचा व सेनाको साथलेकर आगेसे गया व बरातियोंकोबड़ेआदरभावसेजाकर जनवासादिया व सब का शिष्टाचार यथायोग्यकिया व बसुदेवजीकोमड़वेमें लेजाकर देवकीका बिवाह विधिपूर्वक उनकेसाथ करदिया व पन्द्रहहज़ार घोड़ा व चारहज़ार हाथी व अठारहसौरथ व दोसौदासी व दास व भूषण व वस्त्र व द्रव्यादिक बहुतसा दहेज़में देकरबरातियोंको भी सन्मानपूर्वक बिदाकिया ॥

दो० तब चढ़ाय रथदेवकी आप भयो रथवान। पहुँचावन अति प्रीतिसों चल्यो सहित अभिमान ॥

जब कंस बसुदेव व देवकीकारथ हांकताहुआ थोड़ीदूर मथुरा के बाहर गया तबयह आकाशबाणीहुई हे कंस तू जिसको बड़े हर्षसे पहुँचानेजाता है उसकेपेटसे आठवां लड़का तेरामारनेवा ला उत्पन्नहोगा जबयह आकाशवाणी सुनकर कंसमारेडरके कांपनेलगा व घोड़ोंकीरासहाथसे गिरपड़ी तबउसने बिचारा कि कोई कैसाहीनातेदार हो परअपनेप्राणसे प्यारानहींहोता इसलि ये देवकीको अभीमारडालना चाहिये न रहैगी न उसके आ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ठवांबालक मेरामारनेवाला उत्पन्न होगा यहबात बिचारकर
कंस रथकेभीतर घुसगया व देवकीकेशिरकेबाल पकड़कर उसे
नीचे खींचलिया व नंगीतलवार निकालकर क्रोधसे दांतपीसता
हुआ यों कहनेलगा कि जिसवृक्षमें विषसमान फललगे उसको
जड़सेपहिले उखाड़डालनाचाहिये जबवह वृक्ष नहींरहैगा तब
उसमें फूल व फल किसतरहलगेंगे इसलिये अभी देवकीको मार
डालूं तो निर्भय राज्यकरूं यहदशादेखकर जितनेमनुष्य उस
मय वहांथे सबकोई चिन्ता करके रोनेलगे परराजाकंसके डरके
मारे किसीकी सामर्थ्य नहींथी जो कुछ कहनेसकै तबबसुदेवजी
ने बिचारकिया कि कंसअज्ञानको पापऔर पुण्यका कुछविचार
नहींहै इससमय मेरेक्रोधकरनेसे देवकीका प्राणजायगा इसलिये
क्षमाकरना उचितहै किसवास्ते कि जबबलवान्शत्रु क्रोधकरैतब
क्षमाकरके वहअवसर बचाजाना चाहिये जिसतरह ठंढालोहा
गर्मलोहेको काटडालताहै उसीतरह क्षमाकरनेवाले मनुष्यअव
सरपाकर अपनेबैरीको जीतलेते हैं ऐसा बिचारकर बसुदेव ने रा
जाकंसके सामने हाथजोड़कर विनय किया हे पृथ्वीनाथसंसारमें
तुम्हारेसमान कोई दूसरा बलवान् व प्रतापी नहीं है जो आपकी
बराबरी करनेसकै जहांसबलोग तुम्हारीछायामेंरहतेहैं वहांआप
को यह अनुचितहै जो तुम्हारे ऐसाशूरबीर होकर अपनी बहिन
पर बिनाअपराध खड्गचलावै स्त्रीबधका बड़ापापहै ऐसे अधर्म
करनेवालोंके अनेकपुरुषे नरकमें पड़ते हैं जबमनुष्य यहजानै
कि हमनहीं मरैंगे तबपापकरै तो उचितहै संसारमें जो जन्मावह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकदिन अवश्यमरेगा कदाचित् अपनाशरीर रहनेके वास्ते अ
नेक उपायकरै परयहतनु किसीतरह रहनेनहींसक्ता व तरुणाई
व राज्य भी कुछकाम न आनकर केवल यश व अपयश संसार
में रहजाता है ॥

क०। दाताको महीप मान्धाता भौ दिलीप ऐसे जाकेयश आजहूंलौं द्वीप द्वीपछाये हैं । बलि ऐसो बलवान को भयो जहानबॉच रावणसमान को प्रतापी जगजाये हैं ॥ बानकी कलानमें सुजान द्रोण पारथ से जाकेगुण दीनद्याल भारत में गाये हैं । कैसे कैसे शूर रचे चातुरी बिरंचिजूनेफेरचकचूरकर धूरमें मिलाये हैं ॥

दो० अर्ब खर्बलौंद्रव्य है उदय अस्तलौं राज। तुलसी जो निज मरण है तौ आवै क्यहिकाज ॥

यहबात सुनकर कंसबोला हे वसुदेव तुमनेभी तो आकाशवा
णी सुनीहै इसकाउपाय पहिले से करनाचाहिये जिसमें हम न
मरैं जो मैं आज देवकीनहीं मारता तो यह चिन्तामेरी न छूटैगी
और इसकेबदले हम तुम्हाराबिवाह दूसरीकन्यासे कर देवैंगे व
इसको मारकर निश्चिन्तहोजाऊंगा यहवचनसुनकर ब्राह्मण व
ऋषीश्वरों ने जो उसकेसाथथे कंससेकहा वेद व शास्त्रमें बहिन
का मारना बड़ापापलिखाहै ऐसाअधर्मकरना तुमको न चाहिये
जब कंसने ब्राह्मणका समझानाभी नहीं माना तबवसुदेवजी ने
विचारा कि यहपापी राजाअपनीटेकपर है कोई ऐसाउपाय कर
नाचाहिये जिसमें देवकी इसकेहाथ से बचजावै ईश्वरजाने देव
की के कब बालक उत्पन्नहोया इसबीचमें कंसपापी मरजावेइस
समय देवकी जो मारीजातीहै इसलिये इसकाबालकदेनाकरार
करके देवकीका प्राण बचालेनाचाहिये यहअवसर बीतजावै पी
छेसमझाजायगा ऐसाबिचारकर वसुदेवने कंससेकहा महाराज
एक विनती मैं करता हूं सुनिये आकाशवाणी होनेके अनुसार

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आप देवकीके पुत्रसे अपनेप्राणका डररखतेहैं कुछदेवकी से तो खटकानहीं है इसलिये देवकीको बिनाअपराधजानकर छोड़दीजिये इसकेजो बालक उत्पन्नहोगा उसे मैं तुम्हारेपास पहुँचादूंगा इसबातकेसाक्षी सूर्य व चन्द्रमा हैं कंसने यहबातसुनतेहीहोनहारके वशहोकर वसुदेवजीसे बचनलेके देवकीको छोड़ दिया और उनसेबोला इससमय तुमने मुझेअपराधसे बचाया ऐसाकहकर उसीजगहसे वसुदेव व देवकीको बिदाकर दिया और आप राजमन्दिरपर चलाआया व वसुदेवजी देवकीसमेत अपनेस्थानपर पहुँचे जब कुछ दिनोंमें देवकीके पुत्र उत्पन्नहुआ व वसुदेवजीने उसीसमय रोताहुआ बालकलाकर कंसकेआगे रखदिया तबकंसने हँसकरकहा हे वसुदेवजी तुम बड़ेसच्चे हो तुमने हमसे कुछकपट नहींकिया हमारेभलेवास्ते अपनेपुत्रका मोह छोड़कर रोताहुआ बालक मेरेसामने रखदिया इससे मुझे कुछ डरनहींहै तुम अपनेघर लेजाव वसुदेवजी प्रसन्नहोकर उसेअपनेघरले चले पर कंसको अधर्मीसमझकर पीछे देखते व यहबिचारकरते जातेथे कदाचित्बुलाकर मार नडाले जब वसुदेवजी पुत्रलेकर चलेगये तबकंस ने अपनी सभावालोंसे कहा आकाशबाणीके प्रमाण मुझको आठवें बालक से मरनेका डरहै इसे वृथा मारकर किसवास्ते पापलेवैं उसीसमय हरिइच्छासे नारद मुनिवहांआनपहुँचे जब कंसने उनकोबड़े आदरभावसे बैठाला व चरणउनकाधोकर विधिपूर्वकपूजनकिया तबनारदजीनेकहा हेकंस तैंनेवसुदेवकाबालक क्योंफेरदिया यह तू नहीं जानता कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वसुदेवजीकी सेवाकरनेवास्ते सबदेवता व ऋषीश्वरोंने गोकुल व मथुरामें जन्मलिया है व देवकीसे आठवेंगर्भमें पृथ्वीकाभार उतारनेवास्ते श्रीकृष्णजी अवतारलेकर तुमको राक्षसोंसमेतमा रेंगे व तुम्हारे पिताआदिक सबयदुबंशी देवताका अवतारहोकर तुम्हारेबैरी हैं इनको तुम अपनामित्र न समझो ऐसाकहकर ना रदमुनिने आठरेखा पृथ्वीपरखींचदीं व कंसकोदिखलाकर गिना या तो दोनोंओरसे आठवींलकीर अन्तकीठहरी तबनारदजीने कंससेकहा यहनहींजानते कौन आठवेंबालकसे तेरीमृत्युहै जब यहबातसमझाकर नारदमुनिचलेगये तबकंसने उसीसायत वसु देवजीको बालकसमेत बुलाभेजा व लड़कालेकर पत्थरपरपटक के मारडाला व वसुदेवदेवकी को क़ैदकिया व अपने मातापिता के समझानेपरभी न मानकरकहा मैं अपनाप्राणबचानेवास्ते देवकी के पुत्रोंकोमारडालूंगा व कंसने उग्रसेन अपनेबापको भी वसुदेव व देवकीका सहायक व अपनाशत्रु समझकर उनपर चौ की व पहराकरदिया व प्रलम्ब व बकासुर व केशी व अघासुर आदिक राक्षसोंकोबुलाकर आज्ञादी कि नारदजीहमसेकहगये हैं कि सब ऋषीश्वर व देवतोंने मथुरा गोकुलमें आनकर जन्म लियाहै उन्हींलोगोंमें श्रीकृष्णजीभी अवतारलेवैंगे सो तुमलोग जितने यादवबंशीमथुरा व गोकुलमेंपावो सबकोमारडालो॥

दूसरा अध्याय॥

श्रीकृष्णजीका देवकी के उदरमें गर्भवास करना॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित इसीतरह पांचपुत्र और देवकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के उत्पन्नहुये सो वसुदेवजीने अपनेवचनप्रमाण उनकोभी कंस केपास जाकर पहुँचादिया उसनेउनकोभी मारडाला व कंसकी आज्ञानुसार प्रलम्ब व बकासुर आदिक राक्षसोंने मथुरामेंजाकर जितने यदुबंशियोंको खाते व पीते व सोते व बैठते चलते व फिरतेपाया सबकोबांधकर लेआये व कंसने किसीको पानीमेंडुबाकर व बाजोंको आगमेंजलाके व किसीका गलादबाकर मारडाला व जो यदुबंशी उसकेमारनेसेबचे वहलोग अपनेलड़केबालोंसमेत मथुरानगर छोड़कर पांचालदेश आदिकमेंजाबसे व वसुदेवजीने रोहिणीनाम अपनीस्त्रीको नन्दजी अपनेमित्रकेयहां गोकुलमें भेजदिया व नन्दजीने उसकोबड़ेसन्मानसे अपनेयहां रक्खा इतनीकथासुनकर परीक्षितने पूंछा महाराजनारदमुनि ऐसेज्ञानी व हरिभक्तने जो कंसकेपास आनकर अपनेसम्मतसे वसुदेवजीके बालक व यदुबंशियोंका बधकराया यहक्या कारणथा शुकदेवजीनेकहा हे राजन् नारदमुनिने इसवास्ते यहपाप कंसके हाथसे कराया जिसमें अधर्मकरनेसे उसके पिछलेजन्मका पुण्यक्षीण होजावे श्रीकृष्णजी जल्दी अवतारलेकर उसेमारडालें सो हेपरीक्षित जबकंसदेवता व ऋषीश्वरोंकोजिन्होंनेयदुबंशीकुलमेंजन्मलियाथा मारकर अनेकतरहका दुःखदेनेलगा व उसने छःपुत्र वसुदेवजीके व्याधा की तरहमारडाले तबवसुदेव व देवकीने हरिचरणोंका ध्यानकरके बड़ीं करुणासे विनतीकी कि हे महाप्रभो कंस हमको निर्बंश कियेडालता है अबजल्दी सुधि लेकर इस दुःखसे छुड़ाओ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० विपति विनाशन दुखहरण जनरंजन सुरराय। अबहमको कोऊनहीं तुमबिन और सहाय॥

जब इसीतरह वसुदेव व देवकीने अतिविलापकिया तब परब्रह्मपरमेश्वर अन्तर्यामी दीनदयालुने यह बिचारा कि देवता व मुनिआदिक मथुरा व गोकुलमें जन्मलेचुके अबपहिले लक्ष्मण जी बलभद्रनामसे फिर हमबासुदेवनामहोकर भरतजी प्रद्युम्न व शत्रुघ्न अनिरुद्ध व सीताजी रुक्मिणीनामसे संसारमें अवतार लेवें ऐसा बिचारकर उन्होंने गर्भ बलभद्रजीका देवकीके पेटमें स्थिरकरदिया व अपनीआंखसेयोगमाया देवीरूपकोप्रकटकिया जब वह देवीनारायणजीके सामने हाथजोड़करखड़ीहुई तबउस सेकहा तुमभी मथुरापुरीमें जहांराजाकंस मेरेभक्तोंको दुःखदेता है जावो और सातवांगर्भ बलभद्रजीका जो देवकीकेपेटमेंहै सोनि कालकर रोहिणीके उदरमेंधरदेव और यहभेद कोईदुष्ट न जानै इसकामकरनेसे कलियुगमें तेरानाम दुर्गादेवीप्रकटहोकर बड़ा माहात्म्यहोगा व संसारीजीव तेरीपूजा करनेसे अपनामनोरथपा वेंगे व संसारमें बलभद्रजीका नाम संकर्षण व बलरामआदिक व तेरेभी अनेकनाम प्रकटहोंगे यहकाम करनेउपरांत तू यशोदाके गर्भसे जन्मले औरहमभी वसुदेवजीकेघर जन्मलेकर गोकुलमें आतेहैं यहबातसुनतेही योगमायापरब्रह्म परमेश्वरकी परिक्रमा लेकर मोहनीरूपसे मथुरामेंआई व देवकीजीके पेटसेबलभद्रजी का गर्भ निकाललिया व गोकुलमेंलेजाकर रोहिणीके पेटमें धर दिया परयहहाल रोहिणीको कुछनहींमालूमहुआ व योगमाया नेवसुदेव व देवकीकोस्वप्नदिया कि मैंनेतुम्हारा लड़का गर्भसे नि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कालकर रोहिणीके पेटमेंधरादियाहै तुमकिसीबातका शोच मत करना ऐसा स्वप्नदेखतेही वसुदेव व देवकी नींदसेजागकर आपस में कहनेलगे भगवान्ने यहबात बहुतअच्छीकी परगर्भपात होने काहाल कंससेकहलादेना चाहिये नहींतो पीछेसे न मालूम वह क्या दुःखदेवे जबवसुदेवजीने ऐसा बिचारकर एकचौकीदार से गर्भ गिरजानेकाहाल कंसकोकहलाभेजा तबउसने प्रसन्नहोकर चौकीदारसेकहा कि आठवेंगर्भ रहनेकाहाल तुरन्तकहना इतनी कथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् जब श्रावणसुदी चतुर्दशी बुधवारको बलभद्रजीने रोहिणीकेपेटसे गोकुलमेंजन्मलिया व योगमायाने यशोदाकेउदरमेंजाकर गर्भवासकिया व वैकुण्ठना थ जगत् के मंगलकरनेवाले देवकीके गर्भमें आये तबउनका प्रकाश आवनेसे मुखारविन्द वसुदेव व देवकीका सूर्यके समान चमकने लगा॥

दो० साखनप्रभु जू गर्भ में बास कियो जबआय। शिव ब्रह्मादिक आनकर अस्तुति करैं सुनाय॥

अपनेक़ैदहोनेसे पहिले एकदिन देवकीव्रतरखकर यमुनास्ना नकरनेवास्तेगईथी वहां यशोदासे भेंटहुई जबदोनोंने आपसमें कंसके दुःखदेनेकी चर्चाकी तबयशोदाने देवकीसेकहा मैं अपना लड़का तुझेदेकर तेराबेटा पालनकरूंगी यहकरार दोनोंआपसमें करके अपनेघर चलीआईंथी जबदेवकीके आठवांगर्भरहा तब कंसने यहहाल सुनतेही बन्दीखानेमें जाकर बड़ेबड़े राक्षसोंकी चौकी वहां बैठालदी व वसुदेवसेकहा तुमअपनेमनमें कुछ कपट न रखकर आठवांबालक जबउत्पन्नहो उसीसमयमेरेपासपहुँचा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देना तुम्हारे वचनके अनुसार मैंनेदेवकीका प्राणछोड़ दिया था ऐसाकहकर कंसने वसुदेव व देवकीके हथकड़ी व बेड़ीडालके को ठरीमें बन्दकरादिया व तालादेकर अनेकराक्षसोंकी चौकी वहां बैठालकर राजमन्दिरपर चलाआया व उसदिन अतिभयसे उप वास करकेसोरहा दूसरेदिन फिर बन्दीखानेमें जाके वसुदेव व देव कीके मुखारबिन्दका प्रकाशदेखकर कहनेलगा जैसातेजइसगर्भ में दिखलाईदेताहै वैसाप्रकाश औरगर्भोंमेंनहींथा इसलियेजान ताहूं मेराकालइसीगर्भमेंहै जब राजाकंसको देवकीरूप हरिमंदि रका दर्शनकरनेसे ज्ञानप्राप्तहुआ तब उसनेकहा कि देवकी को अभीमारडालता पर संसारके अपयश व पापसेडरताहूं ऐसाप्रता पी राजाहोकर गर्भवतीस्त्रीको क्यामारूं ऐसा अधर्मकरनेसे यश व पुण्य व आयुर्बलकी हानिहोतीहै जो बालकजन्मेगा उसीको मारूंगा ऐसा विचारकर वह अपनेघर चलाआया व रखवारी क रनेवालोंसे कहादिया कि जिसघड़ीबालक उत्पन्नहो उसीसायत मुझे संदेशादेना व चौकी रहनेपरभी अपनेप्राणकेडरसे नितवहां जाकर सुधिलेआताथा व गर्भकातेज देखनेसे आठोंपहर उसको खातेपीते जागतेचलते फिरतेबालरूपी मूर्त्ति श्रीकृष्णजीकीदिख लाईदेतीथी सो उसरूपकेडरसे दिनरात वह व्याकुलरहताथा व वसुदेव व देवकीअपना दुःखदेखकर हरिचरणोंका ध्यानकरते थे जब गर्भके दिनपूरेहुये तब श्यामसुन्दरने यहस्वप्न वसुदेवदेवकी कोदिया तुम शोचछोड़कर धैर्य्यरक्खो मैं जल्दीअवतार लेकर तुम्हारा दुःखछुड़ाताहूं जबयह स्वप्नदेखकर वहदोनोंजागउठे तब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवकीने वसुदेवसे कहा धर्मछूटजावे तौ कुछडरनहीं पर इसबाल
ककी कंससे छिपानाचाहिये यहसुनकर वसुदेवजीबोले हे प्राण
प्यारी इस बन्दीखानेमेंपड़े हैं किसतरहछिपावैं जबयहविचारकर
वहदोनों अतिबिलापकरके रोनेलगे तब उसीसायतब्रह्मा व महा
देव आदिकदेवता इसरूपसेजिसमें उनकोकोई न देखै वहांआये
व हाथजोड़कर वेदमंत्रसेगर्भस्तुति इसतरहपरकरनेलगे हेपरब्रह्म
परमेश्वर सत्यरूप आपतीनोंकालमें सच्चेरहते हैं इसवास्ते हम
लोग तुम्हारेशरणमेंआयेहैं औरयहसंसाररूपीवृक्ष आपकीमाया
से उत्पन्नहोकर तुम्हारेआश्रयपररहता है इसकीरक्षा व पालन
करनेवास्ते आप अनेकरूपधरकर सबजीवोंको सुखदेते हैं और
जो भक्ततुम्हारे नामकास्मरण व स्वरूपकाध्यानकरता है उसके
भवसागरपारउतरने में कुछसंदेहनहींरहता और जो लोग अपने
ज्ञान व तप व यज्ञादिक शुभकर्मकरनेका अभिमानरखते हैं और
तुम्हारीभक्तिनहीं करतेवहमनुष्य अवश्यधोखाखाते हैं व यज्ञा
दिक कर्मकरनेसे मुक्तिनहींहोती व प्रकाशतुम्हारा सबकेतनुमेंबरा
बररहकरगवाहपाप व पुण्यकाहोताहै व आपकिसीकेदुःख व सुख
से कुछप्रयोजन नहींरखते सो हेपरब्रह्मपरमेश्वर आपसगुण अव
तारधारणनकरैं तो संसारीजीव किसनामका स्मरणकरके कौन
लीलाकोगायकर भवसागरपारउतरें आपजन्म व मरणसेरहित
होकर केवलअपनेभक्तोंको उद्धारकरनेवास्ते अवतारलेतेहैं जिस
तरह आपनेमत्स्य व कच्छपआदिक अवतारधारण कियाथा
उसीतरह अबभी पृथ्वीकाभारउतारने व हरिभक्तोंको सुखदेने व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अधर्मी व राक्षसोंको मारनेवास्ते यदुकुलमें अवतारलेकर अप
नीलीला कीजिये देवतालोग यहस्तुतिकरके देवकी व वसुदेवसे
आकाशवाणीकी तरहबोले जिनकेदर्शनवास्ते हमलोग त्रिभुव
नमें घूमतेहैं और उनकादर्शन नहींपाते वहीआदिपुरुषनारायण
तुम्हारेयहां अवतार लेकर सबदुष्टोंको मारेंगे व पृथ्वीकाबोझाउ
तारकर तुमकोसुखदेवेंगे व तुम्हारीकृपासे उनका दर्शन हमेंभी
मिलैगा अबतुमलोग कंससेमतडरो उसकी मृत्यु निकटआई है
जबवसुदेव व देवकीने इसतरह स्तुतिसुनकर किसीको आंखसे न
हींदेखा तबउन्हैं आश्चर्य्यमालूमहोकर यह बिश्वासहुआ किअ
बजल्दीनारायणजी आनकर हमारादुःखछुड़ावेंगे इतनीकथासु
नाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् इसतरह स्तुतिकरके ब्रह्मादिकदे
वता अपने २ स्थानपरचलेगये॥

तीसरा अध्याय॥

श्री कृष्णावतार की कथा॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् जबवैकुण्ठनाथ गर्भमेंआये तब
से सबछोटे व बड़ोंको परमानन्द होगया व सबवृक्षोंमें ऋतु व अ
ऋतुके फूल व फललगकर नदी व नाले पानीसे भरगये व मोर
आदिकपक्षी आपसमें कलोल व विहारकरनेलगे व सबकेघरमें
मङ्गलाचारहोकर ब्राह्मणोंने यज्ञकरनाआरम्भ किया व अग्नि
होत्रकीआग आपसेबरकर साधुओंका चित्तप्रसन्नहोगया व दशों
दिशाके दिग्पाल व देवताआनन्द होकर मथुरापुरीपर फूलबरसा
नेलगे व आकाशमें घटाछागई किन्नर व गन्धर्वोंने बाजनबजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर परमेश्वरका भजनगाना आरम्भकिया व अप्सरा अपने २
विमानोंपर नाचनेलगीं जिससमय ऐसीशोभा चारोंओर फैल
रहीथी उसीसमय भादोंवदी अष्टमी बुधवार रोहिणीनक्षत्रमें आ
धीरातको श्रीकृष्णमहाराजने इसस्वरूपसे अवतार लिया॥

दो० हेमवरण पीताम्बर माथे मुकुट अनूप। शंख चक्र अम्बुज गदा धरे चतुर्भुज रूप॥
चौ० कानन में कुण्डल छबिछाजै। उर मुक्तन की माल बिराजै॥
मुखआभाकछु कही न जाई। भानुकोटि प्रकटे मनुआई॥

हे राजन् श्यामसुन्दर मेघवर्ण कमलनयनने इसस्वरूपसे
वसुदेव व देवकीको अपनादर्शनदिया तबदोनोंने ज्ञानकी दृष्टिसे
उन्हैं परमेश्वरका अवतारसमझा व हाथजोड़कर विनयकिया हे
त्रिभुवनपति अन्तर्य्यामी हमतुम्हारे चरणोंको दंडवत्करतेहैं
जब आपकीस्तुति करनेमें ब्रह्मा व महादेव व शेष व गणेश हार
मानकर तुम्हारेभेद व अन्तको नहींपहुँचनेसके तबहमारी क्या
सामर्थ्यहै जो आपकीस्तुतिकरैं देवता व ऋषीश्वरोंने तुम्हारीकृ
पासे बड़ाईपाईहै और जबजब गौब्राह्मण व हरिभक्तोंके दुःखपा
नेसे पृथ्वीपर बोझाहोताहै तबतब आप एकरूपधरकर पृथ्वीका
भार उतारतेहैं हमारे बड़ेभाग्यथे जो आपने दर्शनदेकर जन्म व
मरणसे उद्धारकिया अब तुम्हारेचरणोंकेप्रतापसे हमारासबदुःख
छूटजायगा जबयहस्तुति कहकर वसुदेव व देवकीने अपनीदुर्दशा
उनसेकही और उनकादर्शन पानेसेप्रसन्नहोगये तबश्रीकृष्णजी
बोले कि अबतुम कुछशोंच मतकरो तुमने पिछलेजन्म हमारा ब
ड़ाउग्रतपकरके मेरेचरणोंकाध्यान कियाथा जबहमने प्रसन्नहो
कर अपनादर्शनदिया तबतुमनेहमसे यहवरदानमांगा कि तुम्हा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीकृष्णजीकोवसुदेवकेगृहमेंजन्मलेना औरवसुदेवकोनन्दगोपकेगृहमेंपहुंचाना औरश्रीदेवीजीको
यशोदाजीकेगर्भमेंजन्मलेना औरवसुदेवजीकोलाककंसकोदेना

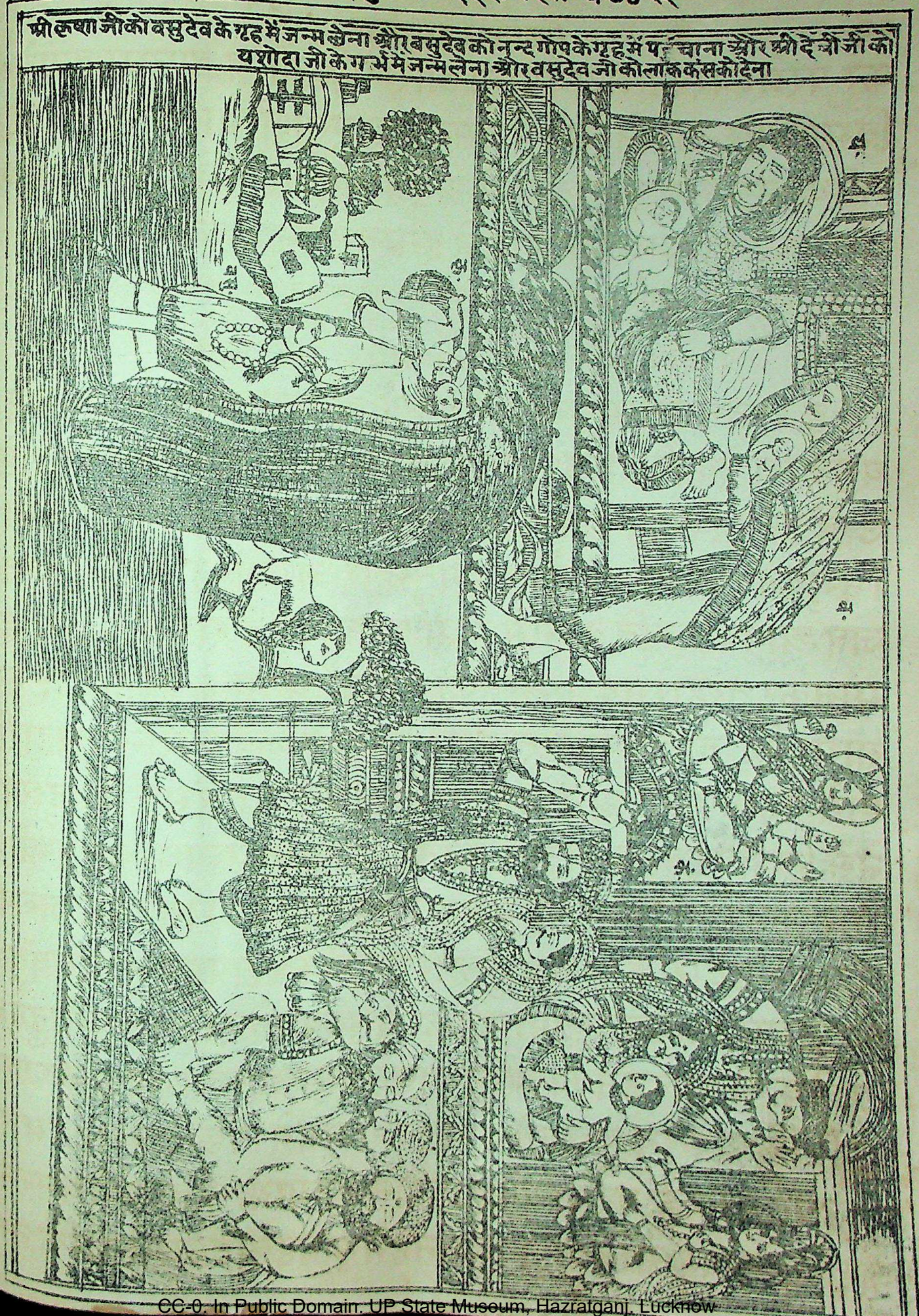

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीकृष्णबलरामजीको अखाड़ेमें जाकर मुष्टिक चाणूरइत्यादि योद्धाओंको पछाड़के नाशकरना और कंसको सिंहासनसेगिराकेवधकरना ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसापुत्र मेरेउत्पन्नहो सो मेरेसमान दूसरानहींथा इसलिये मैं ने तुमदोनोंकी इच्छापूर्णकरने व पृथ्वीका भारउतारनेके वास्ते अवतारलियाहै सो तुमकोअपने पिछलेजन्मका हालभूलगया इसलिये पूर्वजन्मकीसुधि करानेवास्ते इसस्वरूपसे मैंनेतुमको दर्शनदिया अबतुम इसीसमय तुरन्तमुझे गोकुलमें लेजाकर यशोदाके गोदमेंसुलादेव व एककन्यायशोदाके उत्पन्नहुई है उसेलाकर कंसकोददेव नन्द व यशोदानेभी मेरीबाललीलाका सुखदेखनेवास्ते पिछलेजन्म तपकिया है सो थोड़ेदिन बालचरि त्रउन्हैं दिखलाकर फिरकंसकोमारकेआनमिलूंगा तुमधैर्यरक्खो यहसुनकर देवकीबोली हे करुणानिधान यहस्वरूप अपनाअन्त र्धान करलेव ऐसासुनतेही श्रीकृष्णजी बालकहोकर रोनेलगे व उन्होंने अपनीमाया ऐसीफैलादी कि वसुदेव व देवकीने वह ब्रह्म ज्ञान भूलकर उसबातको स्वप्नसमान जाना तब वसुदेवजी पुत्र होने से अतिहर्षितहोकर दशहज़ार गौकासंकल्प मनमेंकिया व श्रीकृष्णजीको गोदमें उठाकरछातीसे लगालिया व वसुदेव व दे वकी ठएढीसांसलेकर चिन्ताकरनेलगे व देवकी ने वसुदेवजीसे कहा कि इसबालकको कहींछिपादीजिये तो कंसकेहाथसे बचजा यतबवसुदेवजीने उसे उदासदेखकर कहा हे प्रिया मैंकहांछिपाऊं जो कुछ हमारेकर्ममें लिखाहै वहीहोगा यहवचन सुनतेही देवकी हाथजोड़कर बोली॥

दो० तबदेवी पतिसों कह्यो नाहीं और उपाव। माखन प्रभुको गोदलै गोकुलमें लेजाव॥

हे स्वामीवहांरोहिणी आपकीस्त्री व यशोदा मेरीमित्राणी व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नन्दजी तुम्हारेसखा रहतेहैं वहलोग बालककीरक्षा व पालनअ
च्छीतरह करेंगे इतनासुनकर वसुदेवजी बोले इसबन्दीखाने से
किसतरह लेजाऊं ऐसाकहतेही परमेश्वरकी इच्छासे बेड़ी व हथ
कड़ी वसुदेवजीकी खुलकर गिरपड़ीं व सबदरवाज़े व तालेखुल
गये व चौकीदार व पहरेवाले नींदमेंअचेतहोकर सोरहे तब वसुदे
वजीने यहमहिमा श्यामसुन्दरकीदेखकर श्रीकृष्णजीको सूपमें
धरके अपनेशिरपर उठालिया व जल्दीसे गोकुलकोचले उस स
मय अँधियारीरातहोने व पानीबरसनेसे राहमेंकांटेपड़तेथे इसलि
ये शेषनागजीने अपनेशरीरकीसड़कबनाकर फनकीछाया बैकुंठ
नाथपर करदी जिसमें वसुदेवकेपांवमें कांटेनचुभैं व श्रीकृष्णजी
पर बूंदनपड़ै इसीतरह वसुदेवजी वृन्दाबनबिहारीको लियेहुये
यमुनाकिनारे पहुँचकर कहनेलगे पीछेसिंहबोलताहै व आगेयमु
नाजी अथाहहैं किसतरहपारउतरूं यहांसे देवकीकेपास फिरचलूं
या कैसाकरूं जब वसुदेवजीपहिले ऐसीचिन्ताकरके फिर हरिच
रणोंकाध्यान धरकर यमुनाजलमें पैठे तबयमुनाजी का पानी
श्यामसुंदरके चरणछूनेकेवास्ते ऊपरको बढ़नेलगातबवसुदेवजी
ने यहभेद नहींसमझकर श्यामसुंदरको दोनोंहाथों से ऊपरउठा
लिया जबयमुनाजल वसुदेवजीकेनाकतकपहुँचा औरवहबहुत
घबराकरचिन्ताकरनेलगे तबश्रीकृष्णजीअन्तर्यामीने वसुदेवको
दुःखीदेखतेही जैसेअपनाचरण यमुनाजलको छुआकर हुंकार
दिया वैसेयमुनाजी थाहहोकर घुटनेबराबर जलहोगया तबवसु
देवजी यहमहिमादेखतेही प्रसन्नहोकर पारउतरगये व गोकुल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मैं नन्दजीके स्थानपरजाकर द्वारउनका खुलापाया व सबको सोताहुआ देखकर बेधड़क घरमेंचलेगये तो क्यादेखा कि एक कन्या उसीसमयकी जन्मीहुई यशोदाकेपास सोईहै व यशोदाने योगमायाके मोहनीडालनेसे कन्याहोनेका हालनहींजाना सोव सुदेवजीनेयशोदाको सोईहुईदेखकर तुरन्तश्रीकृष्णजीको उसके पाससुलादिया व उसकन्याकोलेकर उसीतरह यमुनापारउतरके मथुराको चले और जब देवकीने वसुदेव व श्रीकृष्णजीको अँधियारीरात पानीबरसतेमें गोकुलको भेजदिया तबइसतरह रोकर पछतानेलगी कदाचित् कोई चौकीदार जागउठे व किवांड़ेखुले देखकर कंससेजाकर कहदेवै या राहमें कोई वसुदेवजीको मिल जाय और उनकासमाचार कंससे कहदे तो न मालूम वहहमको कैसादुःखदेगा व यमुनाअथाहमें वहकैसेपारउतरेहोंगे उनकोगये विलम्बहुआ किसवास्तेफिरकर नहींआये ऐसीऐसीतर्कणाकरके जिससमय देवकी बैठी रोरहीथी उसीसायत वसुदेवजी आनपहुँचे और वहकन्या देवकीकोदेकर सबहाल वहांका कहदिया तब देवकी प्रसन्नहोकर बोली अबहमको कंसचाहै मारभीडालै तो कुछ डरनहींहै ऐसेपापीके हाथसे मेराबालकतो बचगया॥

चौथा अध्याय॥

कंसके हाथसे उस कन्याका पटकते समय छूटजाना॥

शुकदेवजीने कहा हेराजन् जबवसुदेवजी गोकुलसे कन्याको लेआये तबफिर ज्योंकात्यों वहकिवांड़ तालेबन्दहोकर बेड़ीव ह थकड़ी उनकेपड़गई और वहकन्यारोनेलगी उसकारोनासुनतेही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौकीदार जागकर बन्दूक़ छोड़नेलगे व उसीसमय अँधियारीरात पानीवरसते में एकचौकीदारने कंसकेपास जाकरकहा महाराज आपकाशत्रु उत्पन्नहुआ यहबातसुनतेही वहघबराकरउठा वगि रता पड़ता नंगेशिर डरताहुआ वसुदेव व देवकीकेपास पहुँचा॥

दो० कन्या ले ठाढीभई देवी अंचल ओड़। भैया तेरे शरण है चाहे मार कि छोड़॥

हे राजन् ऐसावचन कहनेपरभी कंसमहापापीने वहकन्या दे वकीकेहाथसे छीनली तबफिर उसने हाथजोड़कर विनय किया हे भाई छःपुत्र मुझसेहुये सो तुमनेमारडाले अबयहकन्या पेट पोछनी मेरीहै तू इसेछोड़दे संसारमें जिसस्त्रीके बालकनहीं उस का जीनाव्यर्थहै और तुमने छःलड़के जो मेरे मारडालेहैं उनका शोक एकसायत मुझेनहीं भूलता बिनाअपराध इसकन्या को मारकर क्योंपापलेतेहो कंसनिर्दयीने यहसुनकर उससे कहा मैं इसकन्याको जीतीनहीं छोड़नेसक्ता जिससे इसका बिवाह होगा वही मुझे मारेगा ऐसाकहकर कंसउसलड़कीका पांवपकड़ के बाहरलाया और जबउसे घुमाकर पत्थरपर पटकनेलगा तबवह कन्या कंसकेहाथसे छूटकर आकाशमें चलीगई और वहांजाकर उसने कंसको अष्टभुजीरूप अपना त्रिशूल व खड्गहाथमेंलिये उत्तमभूषण व वस्त्रपहिने फूलोंकीमाला गलेमेंडाले ध्वजालगे हुये विमानपर बैठकर देवीजीकेसमान दिखलाया जबकंसवह रूप देखकर घबरागया तबअष्टभुजीमाताने कहा हे कंसपापीतैंने मुझेपटककर वृथापापलिया तेरामारनेवाला व्रजमेंउत्पन्नहोचु कात्रबतू उसकेहाथसे नहींबचनेसक्ता वहतुझेजल्दीमारकरपृथ्वी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का भारउतारैगा तेरामारनेवाला सांपसमान और तू मेढ़कतुल्य है सो मेढ़क ऐसीसामर्थ्य नहींरखता जो सांपकोखानेसकै अबतू चैतन्यरहना वृथा हत्याकरकेक्यों पापबटोरताहै ऐसाकहकर दे वीजी अन्तर्द्धानहोगई व कंसयोगमाया से यहबात सुनतेही बहु तलज्जित व शोचितहोकर कहनेलगा देखो हमने वसुदेव व देव कीको वृथादुःखदिया व उनकेबालकमारके पापलिया व मेरामा रनेवाला भी उत्पन्नहुआ मैं अपनादुःख किससेकहूं इसी तर ह चिन्ता करताहुआ वसुदेव देवकीके पास आया व हथकड़ी व बेड़ी काटकर विनयपूर्वक उनसेकहा मेरेबराबर संसारमें दूसरापा पी नहींहै जो मैंने अपनेशरीरकी रक्षाकरनेवास्ते जिसका एक दिन अवश्यनाशहोगा तुम्हारे छःबेटे बिनाअपराध मारकर पाप बटोरा तिसपरभी मेराअर्थ नहींहुआ यहपाप व कलंक कैसे छूट कर मेरीगतिहोगी तुम्हारे देवतालोगभी झूठेहुये जिन्होंने कहा था देवकीके आठवेंगर्भमें पुत्रहोगा सो कन्याहुई और वहभी मेरे हाथसे छूटकरस्वर्गकोचलीगई सो तुमलोग मेराअपराधक्षमाक रो और यहसमझकर धैर्यधरो कि उनलड़कोंकी आयुर्बल इतनी हीथी कर्म्मका लिखाहुआ कोईमिटानेनहींसक्ता संसारमें जन्म लेकर मृत्युकेहाथसे कोईनहीं बचता जिसतरह नदीमें घास व ति नके न मालूम कहांसे आनकर इकट्ठे होजातेहैं और तरंग उठने में अलगहोकर फिर पताउनका नहींलगता उसीतरह संसारीजी वोंका हालभी समझनाचाहिये ज्ञानीलोग जीने व मरनेको बरा बरसमझतेहैं व अहंकार करनेवालेमनुष्य शत्रु व मित्रमें भेदजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नते हैं सत्यपूंछो तो जीवअमरहोकर कभीनहींमरता यहबातके वल कहनेको बनाई है कि फलानेके मारनेसे फलानामरगया जब ऐसाकहकर कंसने देवकीके चरणोंपर शिरधरदिया औरअ तिविलाप करके रोनेलगा तबदेवकीने क्रोधक्षमाकरके उसका आँशूपोछदिया व वसुदेवजीने कहा महाराज तुमसत्यकहते हो इसमें तुम्हारा दोषनहींहै बिधाताने हमारे कर्ममें इसीतरह लिख दिया था होनेवालीबात बिनाहुये नहींरहती मनुष्य अपनेसुख वास्ते अनेकउपायकरते हैं परंबिनाइच्छा परमेश्वरकी कोईमनो रथ उनकाप्राप्तनहीं होता यहबातसुनतेही कंस बहुतप्रसन्नहोकर वसुदेव व देवकीको अपनेघरलेआया व भोजनकराके और उत्त म उत्तम बस्त्र पहिनाकर उनकेस्थानपर पहुँचादिया सो वसुदेव व देवकीने घरआनकर गौ व अन्न द्रव्यबहुतसा दान व दक्षिणा ब्राह्मण व याचकोंको दिया व कंसने उसकेदूसरेदिन राजसभामें अपनेमंत्री राक्षसोंकोबुलाकर कहा हमसे देवीजी कहगईहैं कि तेरामारनेवाला उत्पन्नहोचुका सो देवतोंने हमसेझूठकहाथा कि देवकीसे आठवांबालक तेरामारनेवाला उत्पन्नहोगा सो उसके आठवें गर्भमें कन्याहुई इसलिये तुमलोग देवतोंको मारडालो यहबातसुनतेही तृणावर्त्त व प्रलम्बआदिक राक्षसबोले हे कृपा निधान देवतालोग जन्मके कंगालहैं उनकामारना क्या कठिन है तुम्हारे क्रोधकरनेसे वहभागजावेंगे उनकीक्या सामर्थ्य है जो आपसे युद्धकरसकेंब्रह्माआठोंपहर पूजा व पाठमेंलीनरहतेहैं वम हादेवजीदिनराति इलावर्त्तमें पार्व्वतीजीसे भोग व बिलासकिया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करतेहैं व इन्द्रऐसीसामर्थ्य नहींरखता जो आपकेसन्मुखलड़स
कैव नारायणवही हैं जिन्होंनेकच्छपरूप धारणकियाथा वहसदा
क्षीरसागरमें लक्ष्मीजीकेसाथविहारकरतेहैं उनकोयुद्धकरनानहीं
आता इनलोगोंकाजीतना कौनकठिन है यह सुनकरकंसबोला
नारायणजीने मेरेमारनेवास्ते कहीं अवतारलिया है उन्हेंकहां
पाऊं जोलड़ाईकरकेमारूं ऐसासुनकरराक्षसोंनेकहा हेपृथ्वीनाथ
यहबात नहींजानपड़ती कि वहबालककहां उत्पन्नहुआ इस
लियेहमारे जानयह उपायकरनाचाहिये कि इनदिनोंमें जहां
जहांबालकउत्पन्नभये हों सबकोमरवाडालो उनमेंवहभी मर
जावेगा कदाचित् इसउपायकरनेसे कहीं छिपकेबचगया और न
मरा तो ब्राह्मण व वैष्णव आदिक जितनेहरिभक्तहैं उनकोजहां
पावो मारडालो ऐसाकरनेसे नारायणभागगये तो अच्छाहै नहीं
तो उनलोगोंको दुःखदेनेसे जबवहउनकी सहायकरनेवास्तेप्रकट
हों तब मारडालनाचाहिये जबयह उपायमंत्रियों से सुनकरकंस
को अच्छामालूमहुआ तब उसनेवास्ते मारनेब्राह्मण व ऋषीश्वर
व छोटेछोटे बालकोंकेआज्ञादी तबवहलोगबहुतसे बीरोंको साथ
लियेहुये हरिभक्त व लड़कोंकोढूंढ़ २ कर बल व छलसेमारने
लगे व उन्होंने यज्ञादिक शुभकर्म्म व हरिचर्चासंसारसे उठादी
साधु व महात्माको दुःखदेनेसे आयुर्दा व धन व बलकानाशहो
जाताहै सो ऐसापापकरनेसे कंसके पिछलेजन्मका पुण्यक्षीण
होगया ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पांचवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका जन्मोत्सव नन्दजी को करना ॥

शुकदेवस्वामीनेकहा हे राजन् जबवसुदेवजी श्रीकृष्णजीको यशोदाकेगोदमें सुलाकर मथुराचलेआये तब यशोदाजागी उसनेबालकका मुखारबिन्द चन्द्रमाकेसमान देखकरनन्दजी को कहलाभेजा तुम्हारेपुत्रहुआ है आनकरदेखो सो उन्होंनेबड़े प्रेमसेजाकर श्यामसुन्दरकोदेखा व नन्द व यशोदानेअतिप्रसन्न होकर अपनाजन्म सुफलजाना व नन्दजीने वेदकेअनुसारनांदी मुख श्राद्धकिया व श्यामसुन्दरके तेजसे नन्दजीकाघर प्रकाशि त होगया व यह आनन्दरूपी समाचार गोपी व ग्वालोंने सुनते ही अपने २ घर मंगलाचारमनाया औरगोदानब्राह्मणोंकोदिया॥

दो० ब्रजवासी टेरतफिरैं कोऊ वन जनिजाय। नन्दरायघर सुतभयो देव बधाई आय ॥

जब प्रातःकाल नन्दजीने ज्योतिषियोंको बुलाकर सायत व लग्न उत्पन्नहोने बालककी पूंछी तब पण्डितोंनेकहा हमारे वि चारमें यहलड़का दूसरापरमेश्वर मालूमहोताहै और यहबालक राक्षसोंकोमारके पृथ्वीकाभार उतारकर गोपीनाथ कहलावेगा व सब संसारीजीव इसकायशगावेंगे यहबातसुनकर नन्दजी बहुत प्रसन्नहुये व दोलक्ष गौ विधिपूर्वक व मणि व रत्नमिलाकरसात भार तिल व चांदी व सोनेकाघड़ा दही व दूध व घीसे भरवाके ब्रा ह्मणोंको दानदिया सिवाय उसके बहुतसाद्रव्य ज्योतिषी व पंडि तोंको देकरसब याचकोंको अयाचककिया व उससमयनन्दजी अति प्रसन्नतासे अपनेद्वारे जड़ाऊचौकीपर बैठके सब मंगल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुखियोंका नाच व रागकराया व उनलोगोंको मुहँमांगी बस्तु दे कर आदरपूर्वक बिदाकिया॥

दो० काहू हीरालालमणि काहू मोतिनमाल। काहू भूषण बसनदे कीन्हों सभी निहाल॥

फिर सबगोपी व ग्वालोंने अच्छा २ गहना व कपड़े पहिन लिये और मेवाआदिक थालमेंलेकर गातेबजातेदही व हल्दीमिला कर लुटातेहुये नन्दजीकेयहां बधावालाये॥

दो० चोली ऊदी कोचकी लहँगा कुसुमी रंग। सारी गोटेतारकी शोभित सुन्दर अंग॥
कंचनथार सँवारके तामें दीपक बारि। माखन प्रभुकी आरती लैआईंब्रजनारि॥
देहिं बधाई नन्दको पडैं यशोदा पांव। कहैं पियारलालको नेकहमें दिखलाव॥

जब ऐसामीठावचन सुनतेही यशोदाने श्यामसुंदरका मुख खोलकर दिखादिया तबसबब्रजबाला सांवलीसूरति मोहनीमूरतिको देखतेही परमानन्दहोगईं व उनपर मोती व रत्नादिक नेवछावरकरके आशीर्वाददेनेलगींहेनन्दरानी तुम्हाराबालकलाखवर्ष जीतारहै गोकुलबासियोंने उसदिन अतिहर्षितहोकर ऐसा दधिकांदोखेला कि सबगली व बाज़ारमें दही २ होगया व गोपियां सोहरगायकर नन्दजीको आनन्दकीगालियां देतीथीं व नन्दराय वहसुनकर परमानन्दहोतेथे व रोहिणी अतिहर्षसे गोपियोंकेसाथ नाचनेलगी उससमय ब्रह्मादिक देवता अपनी २ स्त्रियों समेत बिमानोंपर बैठकर आकाशमार्गसे ब्रजमण्डलपर आये और अप्सरोंने अपने २ विमानोंपर नाचना व किन्नर व गन्धर्वों ने अनेकरंगका बाजाबजाकर गानाआरम्भकिया व देवतोंनेवहां फूल बरसाकर आपसमेंकहा गोकुलवासियोंका बड़ाभाग्यहैदेखो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिन परब्रह्मपरमेश्वरकादर्शन ब्रह्मादिकदेवतोंको जल्दीध्यानमें नहींमिलता उन्होंनेयहां नरतनु धारणकियाहै॥

दो० भरे परम आनंदसुर उपजावत अनुराग। बार बार बर्णन करैं नंद यशोमति भाग॥
गोकुलको आनंद अति कापै बर्णोजाय। जहांपरम आनंदमय लियोजन्म हरिआय॥
ब्रजकोसुखकोकहिसकै उपमाबडीअपार। सुखनिधान भगवानजहँलियोमनुजअवतार॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् उसदिन नन्द जीके स्थानपर जैसाआनंदहुआ वहसमाचार मुझसे वर्णननहीं होसक्ता व नन्दजीने सबग्वालोंको अच्छे २ पदार्थ भोजनकराये व उत्तम २ भूषण व वस्त्र पहिनाकर उनकीइच्छा पूर्णकी व यह आनन्दरूपी समाचारसुनकर उसदेशके सबमंगलामुखी वयाच कनन्दजीके यहांआये सो उन्होंने सबको मुँहमांगी वस्तुदेकर आनन्दपूर्वक बिदाकिया॥

क० पूतसपूत जन्यो यशुदा इतनी सुनिकै बसुधा सबबौरी। देवनको आनंदभयो सुनि धावत गावत मंगनगौरी॥ नन्द कलू इतनो जो दियो घनश्याम कुबेरहुकी मति बौरी। ग्वहिं देखत ब्रजहिलुटाय दियो न बची बछिया छछिया न पिछौरी॥

हे राजन् उन्हींदिनों महादेवजी योगीरूपसे बैकुंठनाथकेदर्श न करनेको नन्दरायके द्वारेपर आये व उन्होंने भिक्षा न लेकर परब्रह्मका दर्शन बड़ेप्रेमसे किया उससमय ब्रजबासियोंने नन्द जी से कहा॥

क० हेहो ब्रजराज कोऊ वेषधारी आज पुत्रको जन्मसुनि आयो तेरेभौनहै। मोती मणिमाणिक पट कंचन न रत्नलेत हयगय भूमिग्राम लेत हमसौनहै॥ नगरअहोटेनाहिं भूमिब्रजलोटे एक अलखही उचारै और निजमौनहै। बालककेपांवलै जटानसों छुवायनाचै योगीतीनिआंखिको कहांसेआयो कौन है॥

सोहेराजन् जबछठीका दिन आया तबनन्दजीने अपना आं गन चन्दन व केसरसे लिपवाकर मोतियों का चौक पुरवाया व पुरोहितको बुलाकर अपनेकुलके अनुसारपूजाकी व यशोदाजी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्यामसुन्दरको पीलाकुरता व टोपी व उत्तमभूषणपहिनाके पूज न करनेवास्ते गोदमेंलेकरबैठीं उसदिनवृषभानु आदिक गोप व गोपियां कुरताटोपी व अनेकरंगका भूषण नन्दजीकेघरदेनेवास्ते लेआये व सबोंने बड़ेहर्षसे ढोलकीबजाकर अच्छे २ गीतगाये व नन्दजीने उसीदिन गोप व गोपियोंका यथायोग्य सन्मान किया व एकपालना रत्नजटित अतिउत्तम श्यामसुन्दरके झूलनेकेवास्तेबनवाया उसीमेंबैकुंठनाथको सुलाकर यशोदाजी बड़ेप्रेम से झुलायाकरतीथीं व लक्ष्मीपतिकी कृपासे सबगोकुलवासियोंके घर इतनाद्रव्यहोगया जिसकीसंख्या कोईनहीं करनेसक्ता सो वह लोग आनंदसेरहकर श्यामसुन्दरका दर्शनकरके अपना २ जन्म सुफल करतेथे जबनन्दजीने यहसुना कि राजाकंसने बालकोंके मारनेवास्ते आज्ञादीहै तबउन्होंने ग्वालोंसे सबवृत्तान्त सुनाकर कहा कि पुत्रहोनेकी कुछभेंटदेकर राजाकंसको चलकर द आवैं जिसमें किसीबातका डर न रहै यहसम्मत आपसमेंकरके नन्दजी माखन व दूध व घी व द्रव्यगाड़ियोंपर लदवाकर ग्वालोंसमेत मथुरामें लेगये व राजाकंसके भेंटकर अपनेघर पुत्रहोनेका हाल उससे कहदिया व राजाने नंदजीको शिरोपांवदेकर बिदा किया जबनन्दजी वहांसे बिदाहोके अपनेघरचले तबवसुदेवजी उनके आनेका हालसुनकर मिलनेवास्ते यमुनाकिनारेआये और उन का कुशलमंगल पूंछकर कहा॥

दो० सुधिआवे जब मित्रकी तब मनआवे चैन। या सुखकी उपमानहीं जो मुख देखै नैन॥

हे नंदजी तुम्हारेसमान कोईमित्रअपना हम नहीं देखते जो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजाकंसके दुःखदेनेसे मैंने अपनीस्त्री गर्भवती तुम्हारेयहां भेज दी व उसकेवहां पुत्रउत्पन्नहुआ तबउसका पालन तुमने हमसे अधिकिया व मैं राजाकंसके डरसे कुछसुधिनहीं लेसका यह बोझा तुम्हारा मेरेऊपरबड़ा है इसकेबदले जन्मभर तुम्हारी सेवा करूं तबभी उऋण नहींहोसका तुम्हारेयहां पुत्रहोनेकाहालसुन कर मुझेबड़ासुख हुआ कहोयशोदा तुम्हारीस्त्री श्रीकृष्णजी बा लकसमेत व सबगौ अच्छीतरहहैं व गोकुलमें घास गौओंकेचरने वास्ते अच्छीउपजीहै यहबात प्रीतिभरीहुई सुनकर नंदजीबोले कि तुम्हारीकृपासे बलराम आदिक सबकोई आनंदसे हैं उनकेउ त्पन्नहोनेउपरांत मेरेभीबालकहुआ परकंसने तुम्हें दुःखदेकर तुम्हारेलड़कोंको मारडाला यहहालसुनकर मुझेबड़ादुःख रहता है क्याकरूं इसमेंकुछ मेराबशनहींचलता ऐसासुन वसुदेवजीबो ले हेमित्र बिधाताने जो हमारेकर्ममें लिखाहै वहाकिसीतरह मि टनेनहींसक्ता संसारमें जन्मलेनेसे कौन नहीं दुःखपाता तुममेरे बड़ेमित्रहो इसलिये मैं अपने व तुम्हारेलड़कों में कुछभेद नहीं जानता परराजाकंस इनदिनों बड़ाअन्धेर कररहाहै कि हालके जन्मेहुये बालकोंको मरवाडालता है तुमयहांआयेहो व राक्षस लोग चारोंओर बालक ढूंढ़तेफिरतेहैं ऐसा न हो कि कोईराक्षस गोकुलमें जाकर कुछउपाधिकरै॥

सो० गई पूतना पाज ब्रजको बालक घातिनी। करिहै कछू अकाज बेगिधाम सुधि लीजिये॥

हेनंदजी तुमपराक्रमभर अपने व मेरे बालककी रक्षाकरते रहना आगेपरमेश्वरमालिकहैं और जबसावकाशमिले तबदर्शन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देना यहबातसुनतेहीनन्दजी वसुदेवसे बिदाहोकर ग्वालोंसमेत गोकुल कोचले व चलतेसमय बोले॥

दो० विनती कीन्ही मित्रसों डारेउ जनि बिसराय। माखनप्रभु जुबुलाइहैं फेरि मिलैंगे आय॥

छठवां अध्याय॥

पूतना राक्षसी का गोकुलमें जाना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित बहुतसेराक्षस लड़कोंके मारने में लगेथे तिसपरभी कंसको श्यामसुन्दरकेडरसे चैननहीं पड़ता था इसलियेउसने पूतनाराक्षसीको बुलाकरकहा इनदिनों जितने बालक मथुरा व गोकुलमें यादवआदिकके कुलमें उत्पन्न हुयेहैं सबको तू मारडाल यहसुनतेही पूतनाकंसकीआज्ञा पालनकरने वास्तेचली व उसनेबिचारकिया कि गोकुलमें नंदजीकेयहां पुत्र हुआहै सोमैं गोपीरूपबनाकरजाऊं तोउसबालकको छलसेमार केचलीआऊंगी यहबातठानकर उसने अपनेको मोहनीरूप गोपी अतिसुन्दरबनालिया व भूषण व वस्त्रादिक सोलहोंशृंगार करके अपनेकुचोंमें बिषलगाकर हँसतीहुई बेधड़क नन्दजीके घर में चलीगई व उसकास्वरूप देखकर किसीडेवढ़ीदारने भीतरजानेसे नहींरोंका जिसतरह आगिराखमें छिपीरहती है व कोईनहीं जानता उसीतरह पूतनाने श्रीकृष्णजीको परमेश्वरका अवतार नहींसमझाथा व यशोदाआदिक स्त्रियोंनेभीउसकारूप व शृंगार देखकर उसे देवकन्याजाना इसलिये बड़ेसन्मानसे अपनेपास बैठालकर उससे बातचीत करनेलगीं॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो॰ एक कहै यह है कोउ रानी। पशुमति के आई हम जानी॥
एक कहै यह कमला बाई। श्रीकमलापति देखन आई॥

हे राजन् उससमय श्यामसुन्दर पालनेपर झूलते थे उन्हों ने उसको देखकर मुसकरादिया और जाना कि यहकपटरूप धरके मेरेमारनेके वास्ते आईहै सो उन्होंने आंखबन्दकरके मन मेंकहा बहुतअच्छाहुआ जो यहमेरेयहां आई अपने दण्डको पहुँचैगी कदाचित् गोकुलमें दूसरेघरजाती तो मेरोमित्र व सखाओं को मारडालती व कपटरूपपूतना ने यशोदासे कहा हे बहिन तुम्हारेयहां पुत्रहोनेकाहाल सुनकर राजाकंस बहुतप्रसन्नहुआ व उसकी आज्ञासे मैं प्राणप्यारे बालकको देखनेआईहूं तबयशोदा बोलीं मेरेललना पलनामेंझूलते हैं यहबातसुनकर वहकपटरूप कहनेलगी तुम्हारालड़का करोड़वर्ष जीतारहै जब ऐसी २ बातें प्रीतिभरीहुई कहकर पूतनापालनेके निकट चलीगई व श्यामसुन्दरको बड़ेप्रेमसे गोदमेंउठालिया और मुखचूमकर दूधपिलाने लगी जबमोहनप्यारेने दोनोंहाथसे स्तनधरकर इसतरह दूधके साथ उसकाप्राणखींचा कि वहव्याकुलहोकर यशोदासेबोली तेरावालक मनुष्यनहोकर यमराजकादूत मालूमहोताहै और मैंने रस्सीके धोखे सांपको पकड़लिया कदाचित् आज इसकेहाथसे जीतीबचकरजाऊं तोफिर गोकुलमेंनहींआऊंगी जबपूतनाऐसी कहतीहुई अधिकव्याकुलहोकर वहांसे आकाशमार्ग को भागी तबश्रीकृष्णजीभी उसकास्तन मुखसे न छोड़कर लटके चलेगये जब वहगोकुलगांवकी बस्तीसे बाहर पहुँची तबनन्दलालजीने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्राणउसका शिरकीगूदी समेतखींचलिया सो मरतीसमय वहरा क्षसी बड़ाभयानक रूपहोकर वज्रकेसमान पृथ्वीपर गिरी उसके गिरनेसे ऐसाशब्दहुआ कि धरती व आकाशकम्पायमान होगया और वहशब्दसुनकर गोकुलवासी डरकेमारे कांपनेलगे और छः कोसके बीचमें पूतनाके गिरनेसे सैकड़ोंवृक्ष टूटगये॥

दो० भाई अद्भुतरूपधरि अति विपरीतिकोभार। कपटहेतु नाहिंसाहिसक्यो तेहिमारयो करतार॥

जब यशोदा व रोहिणीने वह शब्दसुनकर अपने लालको व हांनहींदेखा तबरोती व पीटतीहुई श्यामसुन्दरकोढूंढ़नेनिकलीं॥

दो० माखन प्रभुगोपालको ढूंढ़तगोपीग्वाल। तबहुं पूतना उदरपर खेलतपायो लाल॥

जबयशोदाने देखाकि मोहनप्यारे उसकी छातीपर चढ़ेहुये दूधपीरहे हैं तबउसने दौड़कर उनको उठालिया व गोदमेंलेकर मुख व हाथउनका चूमनेलगीं जिसतरह कोई सांप अपनीमणि खोजानेसे विकलहोकर उसकेमिलने उपरांत प्रसन्नहोताहै उसी तरह यशोदाको आनन्दहुआ॥

सो० कहै यशोमतिमाय फिरफिर लरके पांवपरि। उबरयो आजु कन्हाय तुमपंचनके पुण्यसे॥

जबश्रीकृष्णजीने थोड़ीदेर दूधनहींपिया तबगोपियां गौकी पूंछ छुआकर श्यामसुन्दरको झाड़नेलगीं व यशोदा जल्दीसे नन्दलालको घरपरलेआईं जबगुणीकोबुलाकर झाड़फूंक कराके अपना देवता व पितरमनाया व दूधआदिक उनपर न्योछावरके रके कंगालोंको पिलाया तब वे दूधपीनेलगे व सबब्रजबाला मोहनप्यारेका प्राणबचने से प्रसन्नहोकर बारम्बार परमेश्वरको दण्डवत् करनेलगीं व गोपी व ग्वाल उसलोथके पास खड़ेहोकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आपसमें कहतेथे देखो इसकेगिरनेका शब्दसुनके अबतक हम
लोगोंका कलेजा कांपताहै न मालूम उसबालककी क्यागतिहो
गी उसीसमय नन्दजीने गोकुलकेनिकट पहुँचकर क्या देखा कि
एकराक्षसी बहुतबड़ी मरीपड़ीहै व गोकुलवासी उसको खड़ेहुये
देखरहेहैं जबनन्दजीने लोगोंसे उसकेमरनेका हालपूंछा तबउन
लोगोंनेसबसमाचारकहसुनाया नंदजीयहबातसुनकर कहनेलगे
बड़ीबातहुई जो इसकेहाथसे मेराप्राणप्यारा जीताबचा और यह
भीबहुतअच्छाहुआ जोलोथ इसराक्षसीकीगांवसे बाहरगिरीकर
चितबस्तीमेंगिरती तोइसकेनीचे सबगोकुलबासीदबकरमरजाते
यहबातकहकर नन्दजीवहांसे स्थानपरआये व अपनेलालकोगो
दमेंलेकर बहुतप्यारकिया व छहज़ारगौ दूधदेनेवाली बिधिपूर्वक
श्यामसुन्दरके हाथसे ब्राह्मणोंको दानदिलाया व अन्न व सोना
व चांदी आदिक बहुतसाउनके शिरपर न्योछावरकरके कंगालों
को दिया फिरनन्दजीकी आज्ञानुसार ग्वालोंनेफरसा व कुल्हाड़ों
से शरीरपूतनाका काटडाला व गड्ढाखोदके हड्डीउसकी गाड़
दिया व मांस व चमड़ा उसकाआगमें जलादेनेसे ऐसीसुगन्धउ
ड़ी जिसकेसूंघनेसे सबगोकुलबासी आनन्दहोगये इतनीकथासु
नकर राजापरीक्षितने पूंछा महाराज उसराक्षसी मदिरापीने व
मांसखानेवालीके शरीर जलनेसे सुगन्ध उड़नेका क्या कारण
था शुकदेवजीबोले हे राजन् श्रीकृष्णजीने उसकादूधपीकर उस
की छातीपर अपनाचरण रक्खा व उसको अपनेहाथसेमारकर
पवित्रकरके सद्गतिकिया इसलिये उसकेजलनेसे सुगन्धउड़ीथी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० माखनप्रभुकमलापती सकल सुबास निबास। तिनके अंग प्रसंगते प्रकव्योवास सुबास॥

हेराजन् देखो पूतनापरमेश्वरको बिषपिलाकर मारने आई थी उसने यहगतिपाई जो कोई नारायणजीको प्रेमसेअच्छा अच्छापदार्थभोगलगातेहैं उनको न जानैं कैसीपदवीमिलतीहै जो लोग पूतनामरणकीकथाकहैंगे व सुनैंगे उन्हैं परमेश्वरके चरणारविन्दमें भक्तिप्राप्तहोकर मुक्तिपदवीमिलैगी हे राजन् श्रीकृष्णजीके दर्शनवास्ते देवतालोग अपना २ रूपबदलकर गोकुल में आवते थे व देवतोंकी स्त्रियां सुन्दरताई श्यामसुन्दरकी देखकर मोहजाती थीं॥

सातवां अध्याय॥

कंसका तृणावर्त्त आदिकराक्षसोंको श्यामसुन्दरके मारनेवास्ते भेजना॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर पूछा हे महाराज जिसतरहआपने पूतना व श्रीकृष्णकीलीला सुनाई उसीतरह और कुछ बालचरित उनकावर्णन कीजिये यहमुझको बहुतप्यारा मालूम देता है॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् कंसने पूतनाकीदशासुनकर बिश्वासकरकेजाना कि मेरामारनेवाला गोकुलमेंउत्पन्नहुआ इसीचिन्तासेवह ब्याकुलहोकर गिरपड़ा जबकुछबेरमें चैतन्यहुआ तब सभामें बैठके अपनेमंत्रियोंसेकहा नन्दजीके बालकने पूतनाराक्षसीको मारडाला सो मुझेमालूम होताहै कि उसकेहाथसे मेरा कालहोगा मित्रउसीको समझनाचाहिये जो बिपत्तिमें कामआवे उसबालकको मारकर हमारामलाकरै॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० योधासभी बुलायके बीडाधरयोबनाय। जो यह कारज करिसकै सोई लेय उठाय॥

हे राजन् कंसने सबकिसीसे कहा जो कोई मेराशत्रुमारे उसे मैं बहुतद्रव्यदूंगा उससमय श्रीधरनाम ब्राह्मण जो वहां बैठाथा बोला हे राजन् तू शोच मतकर मैं तेराशत्रु मारके तुझे निश्चिन्त करे देताहूं॥

दो० तब बोले राजा वचन धन्य धन्य द्विजराज। तुमबिन ऐसो कोनहै जो करिहै यह काज॥

यहसुनतेही श्रीधरब्राह्मण बीराउठाकर राजासे बिदाहुआ व पण्डितोंका वेषबनाकर नन्दजीकेयहांगया यशोदानेउसे देखतेही दण्डवत्किया व बड़ेआदरसे बैठालकरपूंछा महाराज आपने किधरकृपाकी तबब्राह्मणदेवता अपनेको पुरोहित बतलाकर बोले तुम्हारेबालककी बड़ाई सबसेसुनकर उसकादर्शन करनेआयाहूं यशोदाने कहा॥

दो० कमलनयन हैं शयन में बैठो द्विज यहिकाज। न्हायआय दिखरायहौं मारवन प्रभु गोपाल॥

जब यशोदा ऐसाकहकर यमुनाकिनारे स्नानकरनेको चली गई तबब्राह्मणने बिचारा कि इसनिरालेसमयमें श्रीकृष्णकोमारकर कंसकेपासजाऊं तो बहुतद्रव्यपाऊं जब ऐसा बिचारकर वह ब्राह्मण जहांपैकुंठनाथ सोतेथे वहांचलागया तबनन्दलालजीने उसकी खोंटीइच्छा समझकर पालनेसे उतरपड़े व श्रीधरकोपकड़कर उसकी जिह्वा मरोरडाली व ब्राह्मणसमझकर प्राणनहींमारा व दहीउसकेमुंहमें लगाकर बर्त्तन दही व दूधका तोड़डाला आप फिरपालनेपर लेटरहे जबयशोदा यमुनास्नान करकेआई तबउसने दही व दूधकाबर्त्तन टूटा व दहीब्राह्मणके मुखमें लगा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखकर जाना कि इसीब्राह्मणने दही व दूधखाकर बर्त्तन तोड़डा लेहैं यहबात बिचारकरयशोदानेकहा महाराजतुमने दही व दूध खाया तो अच्छाकिया परमेरे बर्त्तनक्योंतोड़डाले जबजिह्वामु ड़कने से वहबोलनहींसका तबनन्दलालकीओरहाथउठाके बत लाया कि इसीनेबर्त्तनतोड़हैं यशोदाने उसब्राह्मणके बतलानेका यहबिश्वास न करके उसकोअपनेघरसे निकलवादिया जब वह ब्राह्मण रोताहुआ कंसकेपासआया तबउसने अधिकउदासहोक र बकासुरको वास्तेमारने सांवलीसूरतकेभेजा जैसे वहश्यामसु न्दरके पालनेपर आनके अपनीघातलगाकर बैठा वैसेनन्दलाल जीने उसकागला मरोरकरफेंका तो कंसकेसामने आनकरगिरा और यहहालगोकुलमें किसीने नहींजाना और मरतेसमय उस ने कंससे कहा वहबालक मनुष्य न होकर परमेश्वरका अवतार मालूम होताहै॥

दो० एकहाथसे पकड़ि म्वाहिं फेंकि दियो तुमपास। हूवै है तुम्हरो कालवह मैं कीन्हों बिश्वास॥

यहबात सुनतेही कंसनेशोचितहोकर अपनीसभावालों से क हाकि अभीवहलड़काहै सो नहींमाराजाता तरुणाईआनेमें किस तरह माराजायगा कोई उसेमारता तो मैं बड़ागुणमानता यहव चन सुनतेही शकटासुर वास्तेमारने श्यामसुन्दर के करार करके बिदाहुआ व पवनरूपबनकर गोकुलकोचला इतनीकथा सुनाक र शुकदेवजीबोले हेराजन् जबँश्रीकृष्णजी सत्ताईसदिनके हुये व जिस नक्षत्रमें उनकाजन्म हुआथा वहीनक्षत्र फिरआया तब नन्दजीने ब्राह्मण व गोकुलबासियों का न्योतादेकर अपनेयहां

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बुलाया व अपनेकुलकी रीति व रसमकरके ब्राह्मणों को दान व
दक्षिणादेकर बिदाकिया व ग्वालोंको भोजनकरनेवास्ते बैठाक
यशोदा व रोहिणी अच्छा अच्छा पदार्थ उन्हें परोसनेलगीं व गो
पियोंने बड़ेहर्षसे गाना बजाना आरम्भकिया और वे लोग आ
नन्दपूर्वक खानेलगे हे राजन् उससमय श्रीकृष्णजीको पालनेमें
सुलाकर सबछोटेबड़े अपने २ काममेंलगेथे और उसपालनेकेपा
स एकछकड़ा लटकायाथा सो श्यामसुन्दर नींदसेजागे व मारे
भूखके हाथपैर पटककररोनेलगे उसीसमय वहराक्षस पवनरूप
उड़ताहुआ वहां आनपहुँचा व श्यामसुन्दरको अकेला देखकर
मनमें कहनेलगा कि यहबालक अतिबलवान्है जिसने पूतना
को मारडाला आजइसेमारकर उसकाबदला लेऊंगा यहबातवि
चारकर छकड़ेपरआनबैठा इसीकारण उसकानाम शकटासुरहु
आ जबवहछकड़ा जिसकेनीचे बर्त्तन दही व दूधका रक्खाथाहि
लनेलगा तबश्रीकृष्णजी अन्तर्यामीने उसकेआनेकाहालजान
कर रोते २ ऐसीएकलात उसछकड़ेपरमारी जिसकेलगनेसे शक
टासुरमरकर कंसकीसभामें आनगिरा उसेदेखकर कंससबराक्षसों
समेत घबरागया हे राजन् जबछकड़ागिरने व बर्त्तनटूटने से बड़ा
शब्दहोकर दूध व दही नदीकेसमान बहनिकला तबनन्दजीआ
दिक सबग्वाल व गोपी वहांदौड़आये व यशोदाने श्यामसुन्दर
को उठाकर अपनीछातीं में लगालिया व मुख व हाथउनका चू
मनेलगीं व सबकिसीने आश्चर्यमानकर आपसमेंकहा आकाश
सेवज्रभीतोनहींगिरा न मालूमकिसतरह छकड़ाटूटकरागिरपड़ा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० पलना ढिग खेलत हते कछुक गोपके बाल। तिन्हन कह्यो डारयो शकट पलनासे नँदलाल॥

उनलड़कोंकी बातका किसीने विश्वास न करके आपसमें क हा श्रीकृष्णजीका चरण फूलसेभी कोमलहै इतनाबड़ा छकड़ा उन्होंने लातमारकर किसतरह गिरायाहोगा॥

दो० बहुत भांति करुणाकरी और दियो बहुदान। बारबार नँदलाल के रक्षपाल भगवान॥

हेराजन् जबश्रीकृष्णजी पांचमहीनेके हुये तबकंसने तृणाव र्त राक्षसको उनकेमारने वास्तेभेजा सो वहबवण्डररूप बनकर गोकुलमेंआया उससमय यशोदा मनहरणप्यारेको लिये आंग नमेंबैठीथीं सो श्यामसुन्दर अन्तर्यामीने तृणावर्त्तके आनेकाहा ल जानकर अपनेशरीरको इसवास्ते भारीकरादिया जिसमेंयशो दा अपनीगोदसे पृथ्वीपरउतारदें नहींतो तृणावर्त्त मेरेसाथ इन कोभीउड़ालेजावेगा जबयशोदासे उनकाबोझा नहींउठायागया तबवे श्यामसुन्दरको आंगनमें सुलाकर घरकाकाम करनेलगीं उससमय तृणावर्त्त बवण्डररूपके पहुँचनेसे गोकुलमें ऐसी आं धीआई कि धूरउड़नेसे दिन रात्रिकेसमानहोगया व वृक्षगिरने व लूपर उड़नेलगे तबयशोदा व्याकुलहोकर श्यामसुन्दरको आं गनमेंसे उठावनेआईं परअंगउनका ऐसाभारीहोगयाथा कि उन से नहीं उठसके जबयशोदाने अपनाहाथ उनके शरीर से अलग किया तबतृणावर्त्त श्यामसुन्दरका प्राणलेनेवास्ते उनको उठा कर एकयोजनऊंचे आकाशमेंलेगया व यशोदाने फिरप्राणप्या रेको उठानेवास्ते हाथलपकाया तो उसजगह उनको न पाकर रु दनकरनेलगीं व नन्दजीको पुकारकरकहा तुम्हारालेला आंधीमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उड़गया ऐसा सुनतेही नन्दादिक ग्वाल व गोपी वहां दौड़आये व
श्यामसुन्दरकानाम पुकारकर चारोंओर ढूंढ़नेलगे व यशोदा व
रोहिणीभी गोपियोंसमेत उनको ढूंढ़नेनिकलीं सो अँधेरेमेंठोकर
खाकर व्याकुलतासे गिर २ पड़ती थीं॥

दो० नन्दयशोमति रोहिणी गोपग्वाल ब्रजबाल। माखन प्रभु गोपालबिन सकल बिकल तेहिकाल॥

हेराजन् जबश्रीकृष्णजीने नन्दादिकको अपने विरहमें अ
तिदुःखीदेखा तबतृणावर्त्तका गलादबाकर नन्दजीकेद्वारेपत्थर
परपटका व उसेमारकर मुक्तिदी जबउसके मरनेसे आंधी व अँधि
यारा जातारहा तबनन्द व यशोदाआदिक पटकने का शब्दसुन
कर अपनेस्थानपर दौड़आये तो क्या देखा कि एकराक्षस मरा प
ड़ाहै व उसकीछातीपर नन्दलालजी खेलरहेहैं व गोपियोंने दौड़
कर श्यामसुन्दरको उठालिया व यशोदाजीने उन्हैंगोदमें लेकर
प्यारकिया व सबोंनेकहा आजश्रीकृष्णजीका नयाजन्महुआ॥

दो० क्या जानों क्याहि पुण्यते कोकरिलेत सहाय। कियोकाम बहुपूतना तृणावर्त्त फिरआय॥

उससमय नन्दरायबोले हमसे वसुदेवजीनेकहाथा कि इनदि
नों बहुतउपाधिउठेगी सो वहीबात देखनेमेंआतीहै नन्दजीनेउस
दिनभी बहुतसाद्रव्य व भूषणादिक उनपर न्यवछावर करके ब्रा
ह्मण व कंगालोंको दिया व गोपियोंने यशोदासे कहा तैंने घरका
काम प्राणप्यारेसे अच्छाजाना जो उन्हैं आंगनमें अकेलाछोड़
कर काम करनेलगी यशोदा लज्जितहोकर बोली आज मैंने
अपनी अज्ञानताका दण्डपाया फिरकभी प्राणप्यारेको अकेला
नहीं छोड़ूंगी उसदिनसे यशोदा घरोंमेंहर नन्दलालजी को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छातीमें लगाये रहिकर उनके बाललीलाका सुख देखतीथीं ॥

दो० हलरावत गावतमधुर हरिके बालविनोद। जो सुख सुरमुनिको अगम सो सुख लेत यशोद ॥
कभी झुलावत पालने कभी खिलावतगोद। कभी सुलावत पलँगपर यशुदा सहित विनोद ॥

हे राजन् एकदिन यशोदा श्यामसुन्दरको गोदमेंलेकर बड़े प्रेमसे बारम्बार उनकामुख चूमतीथी उससमय श्यामसुन्दरने मुखखोलकर हँसिदिया तो यशोदाकोउनकेमुखारविन्दमें पृथ्वी व आकाश व सूर्य व चन्द्रमा व पहाड़ व समुद्रआदिकसबसंसारी बस्तु दिखलाई दीं तब यशोदा आश्चर्यमानकर कहनेलगी मेरीबुद्धि बदलतो नहींगई जो यहसब चरित्र मुझे दिखलाईदेता है या मेरेबालकपर किसीदेव व परीकी छायातो नहीं होगई जो यह सबबस्तु उसके मुखमें दिखलाई पड़तीहैं ऐसा विचारके यशोदाने गुणीबुलाकर श्रीकृष्णजीको झाड़फूककरायाव व्याघ्रका नख व भालूके बाल व अनेक यन्त्र श्रीकृष्णजीके गले में पहना दिये ॥

आठवां अध्याय ॥

गर्गाचार्य्यका श्याम व बलराम के नाम रखना व बालचरित श्रीकृष्णजीकी कथा ॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् वसुदेवजीने बलभद्रअपनेपुत्रके जन्मलेनेकाहाल कंसादिकसेनहींबतायाथा इसलियेएकदिन गर्गजी अपनेपुरोहितको बुलाकरकहा रोहिणीकेबेटाहुआहै सो अभीतक राजाकंसके डरसेहमनेउसका नामकरण नहींकिया सो आपगोकुलमेंजाकर उसकानामरखदीजिये यहबातसुनतेही गर्गजी प्रसन्नहोकर गोकुलमेंगये नन्दजीउनका आगमनसुनतेही

Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ग्वालोंसमेत आगेसेजाकर सम्मानपूर्वक उन्हैंअपनेघर लिवाला ये व विधिपूर्वकपूजाकरके उन्हैंआसनपर बैठाला व नन्द व यशो दाने चरणउनकाधोकर चरणामृतलिया व हाथजोड़कर विनय पूर्वकबोले मेराबड़ाभाग्यथा जो आपनेचरणअपना लाकरमुझे कृतार्थकिया यहबतलाइये कि किसकारणयहां आवनेकासंयोग हुआ यहबातसुनकर गर्गजीबोले वसुदेवनेमुझेअपनेपुत्रका नाम करणकरनेवास्ते भेजाहै तबनन्दनेप्रसन्नहोकर कहा आपहमारे भाग्यसेयहांआयेहैं सोएकबालक हमारेभी उत्पन्नहुआ उसका नामभीधरदीजिये गर्गजीनेकहा मुझेउसकेनामरखनेमें यहडर है कदाचित्कोई शत्रुजाकर कंससेकहदे कि गर्गमुनि गोकुलमें नामकरण करनेवास्तेगयेथे तो उसे यहसन्देहहोगा कि वसुदेवने कोईबालक देवकीका नन्दकेयहां पहुँचादियाहै इसीवास्ते गर्ग रोहितउनकानाम रखने गोकुलमें गयेहोंगे यहबातसुनकर न मा लूम तुम्हैं कंस क्यादुःखदेवै इसलिये तुमनामकरणमें कुछधूम धाम न करो साधारणसे घरमेंनामधरालेव नन्दजीउनकाकहना अच्छाजानकर उन्हैंघरकेभीतरलेगये तबगर्गजीने हाथ व जन्म लग्न रोहिणीके पुत्रका देखकर कहा॥

दो॰ राम नाम है राशिको सुख निवास अभिराम। बली होयगो लोकमें सब कहिहैं बलराम॥

सिवायइसके इनकानाम संकर्षण व रेवतीरमण व बलदाऊ व कालिंदीभेदन व हलधर व बलभद्रभी संसारमें प्रकटहोगा व श्रीकृष्णकी जन्मकुण्डली बनाकर गर्गमुनिबोले हेनन्दजीतुम्हा रेपुत्र जो श्यामरंग हैं इनका नाम श्रीकृष्णरक्खो इनके अनेक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नामहैं एकबेर इन्होंने वसुदेवकेयहां जन्मलियाथा इसलिये इन कानाम वासुदेवहुआ व हमारेविचारमें तुम्हाराबालक परब्रह्मपर मेश्वरका अवतारमालूमदेताहै इनकाभेद कोईजाननेनहींसक्ता व तीनोंलोकमें किसीको ऐसीसामर्थ्यनहीं है जो इनकोमारसकै और वह जैसे २ काम संसारमेंकरैंगे तैसा २ नामइनका प्रकटहो गा व अपनीइच्छासे इन्होंने अवतारलियाहै किसीसमय तुमने इनकेबाललीलाका सुखदेखनेवास्ते तपकियाथा उसकेप्रतापसे इनकोपायाहै इन्हैं तुम अपनाजनाहुआपुत्र मतिजानो जो कोई इनकेनामका स्मरणकरैंगे वे लोग संसारमें मनोकामना पाकर अन्तसमय मुक्तिपावैंगे और यहदोनोंबालक चारोंयुगमें एकसा थउत्पन्नहोते हैं यहबातसुनकर नन्द व यशोदा बहुतप्रसन्नहुये और सोना व रत्नादिक गर्गाचार्यकोदेकर विदाकिया व गर्गजीने मथुरामें आनकर वसुदेवजीसे सबसमाचार कहदिया हे राजन् जब श्याम व बलराम अतिसुन्दरमोहनीमूर्त्ति घुंघुवारेबाल शिर परबिखरे अनेकरंगका भूषण व वस्त्रपहिने व खिलौना लिये बा लकोंकेसाथ घुटनियोंचलकर आंगनमें खेलते थे तबयशोदा व रोहिणी व गोपियोंको वहछबिदेखकर जैसासुख मिलताथा वह मुझसे वर्णन नहीं होसक्ता ॥

क० डगमगपवन ते अलख अलेख ज्योति नन्दके हैं जाहिर के योगिनके जपके।
रुन झुन पैंजनियां खेलत हैं रजभरे गभुवारे घुंघुदारे सोहैं बार झप के।
मोहन बलैयालेउँ आवोधूर झारडारों सुनिबात मात गले लागनको लपके।
शारदा गणेश शेष विधिसों न गिनेजात भक्तनके हितके अहीरनके तपके।

चौ० जबहि यशोदा माय बुलावै। बारो लाल घुटुनियों धावै ॥
ताके धावत अति छबि होई। जो देखै सुख पावतसोई ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० बालविनोद बिलोकिकै मुदित यशोदामात। माखन प्रभुहि निहारिकै बारबार बलिजात॥
सो० नितउठिब्रजकीबाम आवैंयशुमतिके सदन। मुदित निरखि घनश्याम लैलैगोद खिलावहीं॥
दो० करत बाललीलाललित परमपुनीत उदार। सुन्दरश्याम सुजानहरि सन्तनके आधार॥
सो० कापैं बरणयोजाय बालचरित नँदलालको। कल्पन सकैं न गाय शेष कोटि शारद सहस॥

हे राजन् देखो जिसपरब्रह्म परमेश्वरकीमहिमा वेद नहींजा नते वह बैकुंठनाथ बालकरूपसे नन्दजीकेआंगनमें खेलकर प्र तिदिनयेसुख नन्द व यशोदाको दिखलातेथे जो आनन्दतीनों लोकमें नहींमिलता वहसुख श्यामसुन्दरकी कृपासे ब्रजबासियों को गोकुलमेंप्राप्तहोताथा जबश्यामसुन्दरकेदांत निकले तब न न्द व यशोदाने शुभसाइतमें खीर व मिश्रीसे उनकाअन्नप्राशन किया व उसदिन व वर्षगांठकेदिन ब्राह्मणोंको बहुतसादान व द क्षिणा देकर अपनेजाति भाइयोंको भोजन खिलाया व गाय ब जायकर बड़ाआनन्दमनाया जबखेलतीसमय श्याम व बलराम छोटेछोटेबछड़ोंकीपूंछपकड़कर खड़ेहोते व गिरपड़ते व फिरउठते व तुतलाकरबोलतेथे तबयशोदा व रोहिणी बड़ेहर्षसे उन्हेंगोदमें उठाकर दूधपिलातीथीं व दोनोंभाईअतिसुन्दरथे इसलियेउनके रूपपर सबब्रजबाला मोहितरहिकर अनेकबहानेसे उनकोदेखने आयाकरतीथीं उन्हींदिनोंएकब्राह्मण नन्दजीकेघरआया तोय शोदाने दूध व चांवल व मीठाउसेदियाजबउसब्राह्मणाने खीरबना करथालीमेंपरोसा व परमेश्वरको भोगलगाकर आंखबन्दकरके ध्यानकिया तबश्रीकृष्णजीजाकर उसकीथालीमें भोजनकरने लगे उसब्राह्मणने उनकोखातेदेखकर वहथालीछोड़दी व यशो दासेकहा तुम्हारेबालकने रसोईहमारीछूदी जबइसीतरहतीनबेर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यशोदानेउसब्राह्मणसे खीरबनवाई औरभोगलगातीसमय नन्द लालजीजाकर उसकीथालीमें खानेलगे तबयशोदानेक्रोधितहो करकहा मैंअपनीइच्छासे ब्राह्मणकोभोजनकरानेवास्ते खीरक रादेतीहूं सो तू जूठी क्योंकरदेताहै मैंतुझेमारूंगी यहसुनकर श्री कृष्णजीनेकहा हेमाता तूमुझको दोषमतलगा जबयहब्राह्मणवि नयपूर्वक भोजनकरनेवास्ते बुलाताहै तबमैंइसकेप्रेमको देखकर खानेलगताहूं यहबातनन्दलालजीकी सुनतेहीब्राह्मणदेवताको ज्ञानउत्पन्नहोगया तबवहबोला हेयशोदा धन्यतेराभाग्यहै कि साक्षात्वैकुण्ठनाथने तेरेयहांआनकर अवतारलिया॥

सो० सुफलजन्मप्रभुआज प्रकटभयोसबसुकृतफल। दीनबन्धुब्रजराज दियोदर्शम्वहिंकृपाकरि॥

उसीप्रेममें वहब्राह्मणमग्नहोकर नन्दजीकेआंगनमें लोटने लगा व श्यामसुन्दरकेसामनेहाथजोड़करविनयकिया हेदीनाना थमेरायहअपराधक्षमाकीजियेव मैंनेकहाथाकिरसोईजूठीकरदी जोकोईतुम्हारे शरणमेंआया वहकृतार्थहुआ आपअन्तर्यामी हैं मुझेअपनीशरण जानिकरदयालुहूजिये श्यामसुन्दरउसब्राह्मण कायहहालदेखकर यशोदाकेपास खड़ेहुयेहँसनेलगे व ब्राह्मण कीप्रेमभक्तिदेखकर बिदाकिया व यशोदाआदिकने यहहालदे खकर आश्चर्य्यमाना इसीतरहश्यामसुन्दर अनेकबालचरित्र क रकेनन्द व यशोदाको सुखदेतेथे एकदिनश्याम व बलरामलड़कों केसाथ अपनेआंगनमेंखेलतेथे सोकन्हैयाजीने मिट्टीको खालि यातबश्रीदामाबालकने यहहालयशोदासे जाकरकहायह बातसु नतेहीयशोदा मारेक्रोधकेहाथमें छड़ीलेकर श्यामसुन्दरकोमार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेदौड़ीजबैवकुण्ठनाथनेअपनीमाताकोक्रोधमेंआतेदेखातबमा
रेडरके मुखअपनापौंछकर खड़ेहोगये व यशोदाने श्रीकृष्णजीसे
कहा तैंनेकिसवास्ते मिट्टीखाई गांववालेमेरीनिन्दाकरेंगे कियह
अपनेपुत्रको कुछखानेवास्ते नहींदेती इसलियेवहमिट्टीखाता है
यहबातसुनकर मोहनप्यारेडरतेहुये बोले हेमैया झूठीयहबात त
मसेकिसनेकही कदाचित् कोईवृथाकलंकलगादे तोमेराक्यादो
षहै तबयशोदाबोली श्रीदामातेरेसाथीने यहबातमुझसे कही है
जबश्यामसुन्दरने श्रीदामाकोडाटकरपूंछा अरेमैंने कबमिट्टीख
ईथी तबवहबोला हेभाई मैंनेतुम्हारीमातासेकुछनहींकहाहै जब
यशोदानेकेशवमूर्त्तिका हाथपकड़कर धमकाया तब बोले हेमै
या कहीं मनुष्यभी मिट्टीखाताहै॥

दो० झूंठ कहत तोसोंसभी मिट्टी मोहिं न सोहाय। नहिंमानै जो बात तू दिखलावों मुखबाय॥

यहवचन सुनकर यशोदाबोली अच्छा तेरी झूठीबातोंका वि
श्वास नहींकरती तू सचाहै तो अपनामुख खोलकर दिखला
यहबात सुनतेही श्यामसुन्दरने अपनामुख खोलकर दिखल
दिया तो यशोदाको उनकेमुखमें तीनोंलोककी वस्तु जिसतर
पहिले देखी थीं उसीतरह फिरदिखलाईदीं तबयशोदानेज्ञानकी
राह मनमेंकहा देखोमेरेसमान कोईमूर्ख न होगा जो त्रिलोकी
नाथको अपनापुत्र जानतीहूं यहबालक मनुष्यनहोकर नारा
णका अवतार मालूमहोताहै किसवास्ते कि मैंने दोबेर इसको
खमें सबसंसारी व्यवहार देखाजबऐसा विचारकर यशोदाउनकी
स्तुतिकरनेलगी तबमोहनप्यारेने समझा अभीमुझे बहुतलीला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करनीहै अपनेको प्रकटकरना न चाहिये जबयहविचारकर अप
नीमाया यशोदापर फैलादी तबउसने नन्दजीसेकहा मैंनेयहसब
चरित्र श्यामसुन्दरके मुखमें देखाहै यहहालसुनकर नन्दरायजी
ले जो बात गर्गजी कहगये हैं सो सत्यमालूम होतीहै ॥

दो० नन्दकहत सुनुबावरी हरि अतिकोमलगात । लै सांटी धावतवृथा पुनिपाछे पछितात ॥
तो० अचरज तेरी बात कोजानै देख्योकहा । कुशल रहैं दोउभ्रात रामश्याम खेलतहँसत ॥

यहवचन सुनतेही यशोदाने नन्दलालको अपनाबेटा समझ
कर गोदमें उठालिया व प्यारकरकेबोलीं हे प्राणप्यारे जो हाथ
मैंने तुझे सांटीमारनेको उठायाथा वहहाथमेरा गलिजावे व जि
नआंखोंसे तुझकोघूराथा वे फूटजावें हेबेटा तुममाखन व मिठाई
छोड़कर मिट्टी क्योंखातेहो ऐसाकहकर यशोदा श्यामसुन्दरको
घरकेभीतर लेगईं एकदिन श्याम व बलराम लड़कोंके साथ खे
लते थे कि आपस में कुछ झगड़ाहुआ तबबलरामजी ने मोहन
प्यारेसे कहा ॥

दो० बोलिउठेबलरामतब इनके माय न बाप । हारजीत जाने नहीं लड़िकन लावत पाप ॥

यहवचनसुनतेही श्यामसुन्दर रोतेहुये यशोदाके पास जा
कर बोले ॥

चौ० मैया म्वहिं दाऊ दुख दीन्हों । मोसों कहत मोलको लीन्हों ॥
कहा करूं या रिस के मारे । मैं नाहिं खेलन जात दुआरे ॥
पुनि पुनि कहत कौन तेरि माता । कोतेरोतात कौनतेरोभ्राता ॥
गोरे नन्द यशोदा गोरी । तुम तो कारे आये चोरी ॥
मोसों कहत देवकी जाये । लै वसुदेव यहां मिसि आये ॥
मोलकछुक बसुदेवहि दीन्हों । ताके पजटे तुमको लीन्हों ॥

हेमाताबलदाऊजीके सिखलावनेसे सबबालकभीमुझे यह
तकहकरचिढ़ावतेहैं सो तूसत्यकह मैं किसकाबेटाहूं यहसुनतेही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यशोदा गोधनकीसौगन्दखाकर बोलीं हेमोहनप्यारे मैं तेरी मा ता व तू मेरापुत्र है ॥

दो० पाछेठाढ़े सुनतसब नन्द श्यामकी बात। लीन्हों गोदउठाय हँसि सुन्दरसांवलगात ॥

केशवमूर्त्ति यहबात अपनीमातासेसुनकर प्रसन्नहुये व फिर लड़कोंमेंजाकर खेलनेलगे जब कभी रातको मोहनप्यारे बाहर खेलनेकी इच्छाकरते थे तब यशोदा उनसे कहती थी कि बाहर मतिजाव वहां हउवा काटि लेगा ॥

दो० रूपरेखजाके नहीं विधिहरअन्त न पाय। हाऊसों डरपायतेहि यशुमति रखतसोवाय ॥

फिर नन्दजीने मोहनप्यारेका मुण्डन व कर्णछेदन करके ब्राह्मण व अपने जाति भाइयोंका सन्मानकिया जबश्यामसुन्दर को पांचवांवर्ष लगा तब ग्वालबालोंकेसाथी ब्रजगोकुलकी गलियोंमें खेलने लगे ॥

दो० जाके गुणगण अगमअति निगम न पावत ओर। सोप्रभुखेलत ग्वालसँग बँधेप्रेमकीडोर ॥

सो० खेलतभई अबेर जननीटेरतश्यामको। आवो धामसबेर सांझसमय नहिं खेलिये ॥

हेराजन् सब ब्रजबाला श्याम व बलरामके रूपपरमोहितरहकर यहइच्छारखतीथीं कि वहकिसीतरह हमारेघरआवें तो हम उनका दर्शनपाकर आंखेंअपनी ठण्ढी कियाकरैं इसलियेश्यामसुन्दर अन्तर्यामी सबकी इच्छा पूर्णकरनेवाले ग्वालबालों समेत उनकेघरजानेलगे सो गोपियां बड़ीप्रसन्नतासे दही व माखन खिलाकर उनकासन्मान करनेलगीं और जो ब्रजबाला घर पर नहींरहतीथीं उनकेसूनेघरमें बेधड़कघुसकर दही व दूध व माखन उसका ग्वालबाल व वानरोंको खिलाकर आपभी खाते थे जब सबकापेट गोरस खाते २ भरजाताथा तब दहीआदिक पृथ्वी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर गिराके हांड़ी व मटुकीको तोड़कर कहतेथे कैसानिकम्मायह दूध व दही है जिसे कोईनहींखाता यहउपद्रव देखकर गोपियांब हुत बरजतीथीं तिसपरभी नहींमानतेथे तबब्रजबाला माखनचो रउनका नाम धरकर हँसीसे पुकारतीथीं ॥

दो० माखन प्रभुगुण देखिकै गोपिन कियो उपाय। दूधदही माखनमही राखें दूर दुराय ॥

सबगोपियां दहीआदिक छींकेपररखनेलगीं जिसमेंउनकाहाथ नपहुँचे तबउन्होंने यहउपाय निकालाकि पहिले ऊखलीकेऊपर पीढ़ारखकर उसकेऊपर एकलड़केको खड़ाकरदेतेथे व उसकेकां धेपर आपचढ़कर छींकेपरसे दूध व माखन उतारकर खाजातेथे जब यहउपाय करनेपरभी बहुतऊंचेरहनेसे वहबर्त्तननहींउतरता था तबमुरली व लाठीसे उसहांड़ीमें छेदकरके दही आदिक को अंजुलीमें रोपिकर खाते व लुटावतेथे जबकोईगोपी यहदशा उन की देखकर गालियां देतीहुई निकटआवती तब मोहनीमूर्त्तिको देखतेही हँसिदेतीथीं व गोपियां माखनदेनेकी लालचसे ताली बजाकर श्यामसुन्दरको नचावतीथीं ॥

सवैया शंकरसे सुर जाहि जपैं चतुरानन ध्यान न धर्म्म बढ़ावें।
नेक हियेमें जो आवतही रसखानि महाजड़ मूढ़कहावें।
जापर सुन्दर देववधू नहिं वारत प्राण अबार लगावें।
ताहि अहीरकी छोहरियां छछियाभरि छाछपैनाचनचावें।

दो० गोरसको चसको लग्यो दिनप्रति आवें लाल। यशुदहिं देनउराहनो आवें सबब्रजबाल ॥

कभीकभी गोपियां यशोदापासजाकर कहतीथीं श्रीकृष्ण तु म्हारेपुत्रने हमारा दूध व दहीआदिक चुराकरखालिया व दूसरे बालक व बानरोंको खिलाकर हमारीमटुकी तोड़डाली हमलोग बहुत छिपाछिपाकर अपना दूध व माखन रखती हैं तिसपरभी उ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सकेहाथसे नहींबचता कहांतकतुम्हारा संकोचकरें कदाचित आ पखाजावें तोहमें संतोषहो दूसरे ग्वालबाल व बानरोंको खिला कर लुटादेताहै और हमारे रसोई व पूजाकास्थान मल व मूत्रक रके भ्रष्टकरताहै सो तुमअपने कन्हैयाकोमनेकरो तब श्रीकृष्णब डीग़रीबीसे कहतेथे हेमाता यहसब गोपियां मुझे झूठाकलंक ल गाती हैं नहींमालूम कौन ग्वालबाल इनकादूध व दही खागया होगा सीधा मेरानाम इन्होंने सीखपाया है जोमतिदिन आनकर तुमसे चुगुली खाती हैं भला यहतो विचारकरो कि मैंने छोटेहा थोंसे किसतरह छींकेपरकी वस्तुउतारीहोगी ॥

दो० मैं अपनो घरछोंड़िकै कभी कहूं नहिंजात। मायसबै ये सुन्दरी वृथाकहत उठिप्रात ॥

हेमाता यहसबब्रजबाला मुझेयमुनाकिनारे व गली व राहमेंसे अपनेघर बरजोरी पकड़लेजाती हैं और उनमें कोई मेरामुख चू मती व कोई कपड़ासींचती व कोई मेरीटोपीउतारलेती व कोई मेरेगालमें मुक्कामारकर कहती हैं तूनाच हेमाता येगोपियांमुझे बड़ादुःख देती हैं तुमयहगांव छोड़कर कहीं दूसरीजगह चलके बसो ऐसी२ मीठीबातैं मोहनप्यारेकी सुनकर यशोदाने गोपियों के कहने का विश्वास नहींकिया ॥

दो० माखन प्रभुहिउठायके मातु लियो उरलाय। गोपिनसों बिनती करी रहीं सबै शिरनाय ॥

उसीतरह सबब्रजबाला उरहना देतीसमय नन्दलालजीकी अनोखीबातैं सुनकर आनन्द पूर्वक अपने २ घर चलीआती थीं व मोहनप्यारे ने यशोदाके समझानेपरभी दही व माखनकी चो रीकरना नहींछोड़ा व अँधेरेघरमेंभी अपने चन्द्रमुखके प्रकाश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से माखनआदिक ढूंढ़करखाजातेथे व यशोदाउरहना देतीसम य गोपियोंसे कहतीथीं कि यहकाम श्यामसुन्दरका नहींहै भला तुमहीं न्यायकरो इसछोटेबालककाहाथ छींकेपर किसतरह पहुँ चाहोगा किसी दूसरे ग्वालका यहकर्म है तुमलोग झूंठाकलंक मेरेप्राणप्यारेको लगातीहो जितनातुम्हारा गोरसआदिक गया हो मेरेयहांसे लेजाव॥

दो० झूठोदोष लगायके नितउठि आवत प्रात। सन्मुख बोलत लाजतजि फेर बनावत बात॥

जो तुमलोग सच्चीहो तो चुरातीसमय उसको मेरेपासपकड़ लाओ यहबातसुनकर सबब्रजबाला अपने २ घर चलीगईं॥

दो० घरघर प्रकटीबातयह सखावृन्दले साथ। माखनचोरी खात हैं नन्दसुवन ब्रजनाथ॥
सो० सबके मन अभिलाख चोरी पकरनपाइये। धरिये माखनराख यहीध्यान सबकोहिये॥

हेराजन् जबकोई ब्रजबाला चोरीकरतीसमय पहुँचकर नन्द लाल से यहकहती कि तुमने हमारेसूनेघरमें आनकर माखन व दहीकी हांड़ीमें क्योंहाथडाला तब उसको उत्तरदेते मैं धोखेसे अपनाघर जानकर यहांचलाआया व दहीमें चिउँटी पड़गई थीं सो निकालताहूं कदाचित् कोईब्रजबाला दहीआदिकखातीसम य आनकरकहती हेमाखनचोर तू हमारादही क्योंखाताहै तब मोहनप्यारे उसगोपीको अपनीआंख सैनसे निकटबुलाकर दूध या दही जो मुखमेंलियेरहतेथे उसकेमुख व आंखोंपर कुल्लाकर देतेथे जबतक वहमुख व आंखिअपनी पोंछती नबतकभागकर अपनेघर चलेआतेथे व यशोदा उनकोनित्य समझायाकरतीथीं हे बेटा नवलाख गौ मेरेदही दूध देनेवालीहैं जितनादूध व माख न तुम्हारा मनचाहै खायालुटायाकरो किसी दूसरेकेघर चुरावने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मतजाव सबगांववाले मुझेकहतेहैं तू अपनेबेटेको भोजननहीं दे ती इसीवास्ते वहसबकेघर माखन व दहीचुराकर खाताहै जबगो कुलवासी तुम्हैं माखनचोर कहकर पुकारतेहैं तब मारे लज्जाके मुझसे किसीको अपनामुख नहीं दिखलायाजाता जबयह सब ग्वालिन हाटबाजारकी दूधदही बेचनेवाली नित्यआनकर तेरा उरहना मुझे देतीहैं तबमैं मारेलज्जाके डूबजातीहूं नन्दजी यह हाल सुनकर तुझे मारैंगे॥

तो० बडेबापके पूत चोर नाम राख्योजगत। उपज्यो पूतसपूत नामधरावत तातको॥

यहसुनकर मोहनप्यारे बोले हेमाता अबमैं ग्वालियों के घर नहीं जाऊंगा ऐसा कहनेपरभी उन्होंने दहीआदिक चुराकर खा नानहींछोड़ा तबसबगोपियोंने आपसमेंसलाहकी कि एकदिन माखनचोरको दहीसमेत पकड़कर यशोदाकेपासलेजाना चाहि ये सोएकदिनमोहनप्यारे किसीब्रजबालाके घरमें माखनआदि क चुराकरखातेथे जबकईगोपियोंने मिलकर उन्हेंपकड़लिया व उनकेसाथी ग्वालबालवहांसे भागगये तबगोपियां केशवमूर्त्तिको पकड़कर यशोदाकेपासलेचलीं उससमय ब्रजनाथजीने अपनी मायासे ऐसाछलकिया किजोगोपीहाथपकड़े जातीथी उसीकेपु रुषका हाथ दहीमुखमेंलगाकर उसेपकड़ादिया और आपवहांसे अन्तर्द्धानहोकर ग्वालबालोंमें खेलनेलगे व उसगोपीनेहरिइच्छा सेयहभेद नहींजाना किमैं अपनेपतिका हाथपकड़ेजातीहूँ व उन कीसाथी गोपियोंने भी उसेनहींपहिंचाना व उसब्रजवालाने गो पियों समेत नंदरानीकेपासजाकरकहा नन्दलालजीकेमारे ब्रज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोकुलका गोरसनहींबचता नित्यहमारादही व माखन चुराकर खाजातेहैं जबदहीखातीसमय इन्हैं कोईपकड़ताहै तबकहतेहैं कि तुमनेबरजोरी मेरेमुखमेंदहीलगादिया इनकेमारेकोईबछराबँधा रहने नहींपाता इनमेंबड़ेचरित्रभरेहैं सिवायमाखन व दहीचुराने के हमारी अँगियाभी फाड़डालीहै इनको तुमबालकमतसमझो हमलोगोंको इनकाहालकहते लज्जामालूम होतीहै॥

दो० करतफिरतउत्पातअति सबब्रजघरघरजाय। नितउठिखेलतफागुरीगरिआवतनलजाय॥

और जबहमलोग उरहनादेनेवास्तेआतीहैं तबतुमभीहमैंझूठी बनातीहो सोआजश्यामसुन्दरको माखनचुराते वखातेपकड़कर तुम्हारेपासलाईहैं जबगोपियां इसीतरहका बहुतउरहना देचुकीं तबयशोदाबोलीं मेरामोहनप्याराकहां है हेबहिनतुम किसेपकड़ करलाईहो तुमअपनेचोरकामुखतोदेखो तबसत्य व झूठतुम्हारा खुलजायगा मेराश्रीकृष्ण तो कल्हसेघरकेबाहरभी नहींनिकला यहबातसुनकरजैसे उसगोपीने जो पकड़ेथी अपने चोरकामुख दे खा तो अपनापति दिखलाईदिया यहचरित्रदेखतेही उसनेउस काहाथछोड़दिया व लज्जितहोकर हँसनेलगी तबयशोदानेसच्ची बनकरगोपियोंसे कहा मेरेबालकको तुमलोगवृथाचोरी लगाती हो मेराकन्हैया पांचवर्षका चोरीयोग्यनहीं है तुममेरे प्राणप्यारे से मतबोलाकरो यहबातगोपियोंसे कहकर यशोदानेमोहनप्यारे से कहा हेबेटा मेरेबर्जनेपरभीचोरी करनानहीं छोड़ता॥

दो० सुनिसुनि लाजन मरतमैं तूनाहिंमानत बात। अबतोहिं राखौं बांधिकै जानीतेरी बात॥
सो० मोपैलीजैश्याम दधिमाखन मेवा मधुर। सबकछुतेरे धाम परघरजाय बलाय तुव॥

यहबात सुनतेही मोहनप्यारे ने तुतलाकरकहा हेमाता तुम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इनलोगोंके कहनेका बिश्वासमतकरो यहसबमेरेपीछे पीछे फिरा करती हैं कभीमुझे दूध व दहीकेवर्त्तन व कभी बछड़ा पकड़ाकर अपने घरका अनेककाममुझसे कराती हैं व मेरी झूठीचुगली आ नकर तुमसेखाती हैं यह मीठावचनसुनकर सबब्रजबाला केशव मूर्त्तिका मुखदेखतीहुई अपने अपने घरचलीगईं फिर एकदिन श्यामसुन्दर किसीब्रजबालाके घरमाखन आदिक चुरानेगये उ ससमयवह गोपी शय्यापर सोईथी नन्दलालजीने उसब्रजबाला की चोटी चारपाईसे बांधदी व उसका माखन व दही ग्वालबालों समेत आनन्दपूर्वकखाया वबर्त्तन व दूध व दही व एकमटुका घी का जो बहुतदिनोंसे उसके घरमेंरक्खाथा तोड़डाला जबवहगो पी बर्त्तनोंका खटकासुनकर चिल्लाई तबअड़ोस पड़ोसकी गोपि योंने आनकर नन्दलालजीको पकड़ लिया व यशोदापास ले जाकर कहा॥

दो० वहीउलहना नित्यको सत्यकरनके काज। मैंगहिलाई श्यामको बांहपकड़के आज॥

हेराजन् उसदिनगोपियोंने सच्चीबनकर यशोदासेकहा अपने पुत्रकेलक्षणदेखो हमारेबर्त्तन तोड़डाले व मेरीचोटी चारपाई से बांधकरसबमाखन व दहीचुराकरखागया और हमलोगोंकाचीर खींचकरनंगीकरदेताहै इसकेमारे रास्तानहींचलनेपातीं यहबात सुनकर यशोदाबोलीं॥

क० प्यारेकी कोमलसुनि कसकी करेजे माहिं जीवनहै मेराकान्ह कहाकर आयोहै।
मोसोंकहौ कोटिक कछू न कहौ बालकसों केतो दुखदेखदेखकैसेकर पायोहै॥
माखनको माठलेके द्वारपरमहरिबैठी तौलितौलिलेवबीर जाको जेतो खायोहै।
गोरसके काजग्वालि गोदह पसारतिहों गारीमतिदेव मोगरीबिनीको जायोहै॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जबयशोदाको गोपियोंकीबातसत्यमालूमहुई तबमोहनप्यारे परक्रोधकरके कहातैंनेअच्छाचलनचोरीका सीखाहै हेबेटा मैंने तुझेबारम्बारसमझाया परतूमेराकहना नहींमानताअबमैंतुझको बांधकरघरमें बैठारक्खूंगी यहबातसुनकर श्यामसुंदरनेकहा हे मैया यहगोपी मुझेबजोरीपकड़कर अपनेघरलेगईव हमसेइसने अपनेघरकाकामकाजकराया अबझूठकलंकलगाकर उलहना देनेआईहै यहबातमोहनप्यारेकी सुनकरयशोदाहँसनेलगी व सब गोपियांअपने२ घरचलीगईं हेपरीक्षितइसीतरहश्यामसुन्दरनई नईलीलाकरके अपनीमाता व पिता व ब्रजबासियोंको सुखदेतथे देखो जो बैकुंठनाथआठोंपहर क्षीरसमुद्रमेंरहते हैं वहगोपियोंका दही व माखनचुराकरखातेथे॥

दो० विश्वभरण पोषणकरण कल्पतरोवर नाम। सो दधिचोरी करतहैं प्रेमविवशसुखधाम॥
धनिब्रजबासिनधन्यब्रजधनिधनिब्रजकीगाय। जिनकोमाखनचोरिहरि नितउठिघरघरखाय॥

देखोजिसपरब्रह्मपरमेश्वरके चरणोंकाध्यान ब्रह्मा व महादेव आदिक देवताआठोंपहर अपनेहृदयमेंकरते हैं व जल्दी उनका दर्शननहींपाते सो उन्हैं ब्रजकीअहीरियां बांहपकड़कर यशोदाके पासलेजातीथीं उनकेलीला व भेदकोकोईनहींजानसक्ता इतनी कथासुनकर राजापरीक्षितनेपूछा हेस्वामीनन्द व यशोदाने ऐसा कौनतपकियाथा जिसकेफलसे परब्रह्मपरमेश्वर उनकेपुत्रकहला ये व उनकोबाललीलादिखलाकर ऐसासुखदिया और यहबात वसुदेव व देवकीको नहींप्राप्तहुई शुकदेवजी बोलेहे परीक्षितपिछ लेजन्म नन्दजीद्रोणनामवसुदेवताहोकर यशोदाधरानाम उन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की स्त्रीथी सो दोनोंने ब्रह्माजीकीआज्ञानुसार बहुतदिनतकपरमे
श्वरका तपकिया सो नारायणजीनेप्रसन्नहोकर ब्रह्मासेकहा तुम
उनको दर्शनदेकर जो बरदानमांगैं सोदेवतबब्रह्माने उनकोदर्श
नदेकरकहातुम्हैं जो इच्छाहोय सोबरदानमांगो तबउन्होंनेदण्ड
वत्करके बिनयकिया किहमैंपरमेश्वरकी भक्तिप्राप्तहो ब्रह्माजी
बोले तुम्हैं ऐसीभक्ति परमेश्वरकीहोगी जो दूसरेको मिलनाक
ठिनहै तुमलोगब्रजगोकुलमेंजाकर मनुष्यकातनुधारणकरो पर
ब्रह्मपरमेश्वर सगुणअवतारलेकर तुम्हैं अपनेबाललीलाका सुख
दिखलावैंगे उसीबरदानकेप्रतापसे द्रोणनेनंदजीका व धरानेय
शोदाजीकाजन्मपाकर परमेश्वरकेबाललीलाका सुखदेखाथा॥

नवां अध्याय॥

यशोदा का श्यामसुन्दरको ऊखलमें बांधना॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् एकदिन प्रातसमययशोदागोपियों
समेतअपने घरमेंदहीमथतीथीं सो मथानीका शब्दमेघरूपीसुन
करमोहनप्यारे नींदसेजागे व मैया २ करकेरोने व पुकारनेलगे
जबमथानीका अधिकशब्दहोनेसे उनकारोना किसीनेनहीं सुना
तबआपउठकर रोवनीसूरतबनायेहुये यशोदाकेपासजाकर तुतु
लातेहुये बोले ऐमैया तूपुकारनेपरभी मुझेकलेवादेने नहींआई
तुझकोअबतक घरकेकाजसे छुट्टीनहींमिली ऐसाकहकरनन्दला
लने यशोदाकीमथानीपकड़ली व चरुईमेंसेमाखन निकालकर
फेंकनेलगे तबनंदरानी झुंझलाकरबोली ऐबेटातुमने यहक्याचा
लनिकालीहै चलउठतुझे कलेवादेऊं यहसुनकर नन्दलालजी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेकहा पहिले तैंने कलेवाक्योंनहींदिया अबमेरीबलाय कलेवा लेवे जबयशोदाने श्यामसुंदरकोफुसलाकर गोदमेंउठालिया व मुखचूमकर माखनरोटीखानेवास्तेदिया तबमोहनप्यारे प्रसन्न होकरखानेलगे व यशोदाअपनेअंचलका ओटकरके खिलानेलगीं व श्यामसुंदरअपनीमाताके जड़ाऊगहने में अपनामुखदेखकरप्रसन्न होतेथे व यशोदाबड़ेप्रेमसे उनकोलियेबैठीथीं उससमय श्रीकृष्णजीने अपनीमायासे दूधजोचूल्हेपरचढ़ाथा उबालदिया तबयशोदा श्रीकृष्णजीकोगोदसेउतारकर आपदूधबचाने चली तबमुरलीमनोहरने क्रोधितहोकरमनमेंकहादेखोमातानेहमसे दूधकोअच्छाजाना जोपृथ्वीपरमुझेपटककर उसेउतारनेचली गई ऐसाविचारकर नन्दलालजीने बर्त्तनफोड़के सबदही व मट्ठा गिरादिया व माखनभरी मटुकीलेकर ग्वालबालोंमें चलेगये व एकउखलीपरजो वहांऔंधीपड़ीथीबैठगये तबउनकेसाथी लड़कोंनेकहा नित्यतुमहमारेघरकामाखन व दहीखायाकरतेथे आज अपनेघरकाहमेंभी तो खिलावो यहबातसुनकर श्यामसुन्दर प्रसन्नहुये व अपनेचौगिर्द सबकोबैठालकरमाखन बांटके खाने लगे जबयशोदाने आनकर अपनेआंगनमें दही व मट्ठेकी कीच ड़देखी तबछड़ी हाथमेंलेकर जहांपर श्यामसुन्दर माखनखारहे थे जापहुँची उसे क्रोधमेंआते देखकर केशवमूर्त्ति ग्वालबालोंसमेत भागचले व यशोदा उनकेपीछे दौड़ी॥

दो॰ आगेसुन्दर श्यामघन पाछे यशुमतिमाय। दामिनि ज्यों दौड़ी फिरै हरिनहिं पकड़ो जाय॥

जब श्यामसुन्दर पकड़ाई नहींदिये तबयशोदा बहुतसी गोपि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौंको साथलेकर पकड़नेवास्ते दौड़ी तिसपरभी वहहाथ नहीं आये हेराजन् जिसपरब्रह्म परमेश्वरने अपने दोपगमें चौदहों लोक नापलियाथा उनको किसकीसामर्थ्यहै जो पकड़सकै जब यशोदाआदिक सब ब्रजबाला दौड़ती २ थकगईं व श्यामसुन्दर के शरीरतकभी किसीकाहाथ नहीं पहुँचा तबदीनानाथ भक्तव त्सलमाताको दुःखीदेखकर अपनीइच्छासे यशोदाके पासखड़े होगये सो यशोदाने उन्हें पकड़लिया व क्रोधवश उन्हें बांधने वास्ते रस्सीमांगकर कहा मैं तुझेसमझाते २ हारगई पर तैंने माखन व दही चुराकर खाना नहींछोड़ा अबतुझे ऊखल में बां धूंगी जब ऐसाकहकर यशोदा श्यामसुन्दर को रस्सीसे बांधने लगी तबगोपियों ने नंदरानी से हँसकरकहा तुमको हमलोगों का कहना झूठामालूम होताथा आजअपनीहानि देखकर तुम्हें भी सत्यमालूमहुआ यह बहुतअच्छीबात है जो माखन चोर को बांधतीहौ जबयशोदा श्यामसुन्दरको रस्सीमें बांधकर गांठ देनेलगी तबबैकुण्ठनाथकीमायासे दोअंगुल रस्सी छोटी होगई उससमय यशोदाने गोपियोंसे रस्सीलेआनेवास्ते कहा यहबात सुनतेही सबब्रजबाला हँसकरकहनेलगीं इन्होंने हमारामाखन व दही बहुतचुराकर खायाहै सो इनकोबांधनेवास्ते हमरस्सी लेआ देतीहैं जब गोपियां अपने २ घरसेरस्सी लाईं और यशोदा सब रस्सियोंमें गांठ देकर दीनानाथको बांधनेलगीं तबभी परमेश्वर की इच्छासे गांठदेतीसमय वहरस्सी छोटीहोगई यहमहिमाश्या मसुन्दरकीदेखकर सबको आश्चर्य मालूमहुआ जब रस्सीपूरी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न होनेसे यशोदा आदिकगोपियां हारमानगईं तबकेशवमूर्त्ति अपनीइच्छासे एकछोटीरस्सीमें बँधिगये तबयशोदानेक्रोधवश गांठदेकर वहरस्सी ऊखलमें बांधदी व सब ब्रजबाला ओंको सौगन्दधराकरकहा इसेकोईमतखोलना औरउसीतरहवैकुण्ठनाथको बँधाहुआ छोड़करयशोदा घरकाकामकरनेलगी इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् देखो जिसपरब्रह्मपरमेश्वरका दर्शनब्रह्मा व महादेवकोजल्दी ध्यानमेंनहींमिलता वहऐसेभक्त आधीनरहतेहैं कि रस्सीमेंबँधिगये व ऐसीमायापरमेश्वरकी बलवान् है कि यशोदानेदोबेर उनकेमुखमें तीनोंलोककाव्यवहार देखाथा तिसपरभी उनकोनपहिंचानकर ऊखलमें बांधदिया॥

दो० आपबँधावत प्रेमवश भक्तन छोडतफन्द। बेद पुकारत रातदिन भक्तबछल नँदनन्द॥

हेराजन्पहिलेतोगोपियां श्यामसुन्दरके बांधतीसमयहँसतीथीं यशोदाकेजानेउपरांत जब गोपियोंने मोहनप्यारेकोबँधेहुये उदासदेखा तबसबब्रजबाला उनकेप्रेममेंरोकर इसतरहपछताने लगीं देखो हमलोगोंने किसवास्ते रस्सी अपनेघरसेलादी जो हमारा प्राणप्याराबांधागया फिर सबगोपियोंने यशोदाकेपास जाकरकहा तुमनेमाखन व दहीखाने व लुटानेकेकारण श्यामसुन्दरकोबांधाहै हमसेअपराधहुआ जो तुमकोआनकरउलहना दिया अबहमारेऊपरदयाकरके उनकोखोलदेव॥

दो० बारबार देखत बदन हिचकिन रोवतश्याम। बज्रहुसे तेरोहियो कठिन अहो नँदबाम॥

यहवचनसुनतेही यशोदानेझुंझलाकरकहा तुमलोग अपनेअपनेघरजाव अबझूंठीप्रीतिदिखलानेआईहौ प्रतिदिन तुम्हींलोग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उलहनादेनेआतीथीं जब यशोदानेगोपियोंका कहनानहींमाना तबसबब्रजबाला उदासहोकररोतीहुई अपने २ घरचलीगई उस समय एकबालकनेजाकर बलरामजीसेकहा कि यशोदाने श्यामसुन्दरको ऊखलमेंबांधाहै सो वे बैठेरोतेहैं बलभद्रजी यहवचन सुनकर दौड़गये व अपनेभाईको बँधेदेखतेही रोकरकहा हेभाई मैं तुमको नित्यसमझाताथा कि गोपियोंकेघर माखनचुरानेमति जायाकरो मातामारेगी सो तुमने हमारा कहना नहींमाना अब मैं तुम्हारेछुड़ानेवास्ते यशोदाकेपास जाताहूं ऐसाकहकरबलरामजी यशोदाके पासगये व उससे हाथजोड़करकहा हेमाता मेरे भाईको छोड़देव उसकेबदले चाहो मुझकोबांधरक्खो न मालूम तुम्हारे कौनजन्मकेतपकरनेसे वहसंसारमेंजन्मलेकर तुम्हेंबाल लीलाकासुख दिखलातेहैं और तुमने उनकोनहीं पहिंचानकर गोरसहानि करने के बदले बांधाहै॥

दो० छूतोतानिकजो और कोउ आजदेखत्योंसोय। तूजननीकछुवशनहीं जोकुछकरो सोहोय॥

यहवचनसुनकर यशोदाबोली हेबलभद्र मेरीबातसुनोआज मुझे श्रीकृष्णकोदण्ड अच्छीतरह करनेदेव मैंने उसेबहुत समझाया तिसपरभी उसनेगोपियोंकेघरजाकर माखन वदहीचुराना नहींछोंड़ा ब्रजबासियोंने उसकानाम माखनचोररक्खाहै भला तुमहींबतलाओ मेरेघरउसे कौनवस्तुखानेवास्ते नहींमिलती जो वहविरानेघरदही व माखन चुराकरखाताहै और मेराकहनाकुछ नहींमानता जबग्वालिन मुझेउलहनादेतीहैं तबमैंमारेलज्जाके डूबजातीहूं और सबजगहजाकर धूममचाताहै घरमें एकसाइत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहींबैठता इसलिये आजमैंने उसको धमकानेकेवास्ते बांधाहै तिसपर तुमभीमुझे कहतेहौ कि तुमकोदूध व माखन कन्हैयासे अधिक प्याराहै यहबात सुनकर बलरामनेकहा हे माता तुमको छोड़कर किससेकहैं दूसरा हमारे मनकारखनेवाला कौनहै व हे मैया गोपियांझूंठाउलहना श्रीकृष्णजीका तुम्हैं देतीहैं सबब्रज बाला श्यामसुन्दरसे प्रीतिरखकर उनको देखनेवास्ते उलहना देनेकेबहाने तुम्हारेपासआवती हैं॥

दो॰ दधिमाखनपय कान्हको कान्हाकीसबगाय। मोकोहै बलकान्हको तू नहिं जानत माय॥

यहबातसुनकर यशोदानेकहा तुमदोनोंभाइयोंका एकसम्मतहै जब बलरामजीकेकहनेसे भी यशोदानेमोहनप्यारेको नहीं छोड़ा तबबलभद्रजी इच्छाश्यामसुन्दरकी इसीतरहपरजानकर वहांसे ब्रजनाथजीकेपासआयेव हँसकरउनसेकहा आपकीलीला तुम्हारेबिना दूसराकौनजानसक्ता है॥

चौ॰ को तुम छोरन बांधनहारा। तुम छोरत बांधत संसारा॥

हे भाई तुमनन्दरानीकीभक्तिसे उसकेहाथबिकगये हौ आप दैत्योंकेमारने व अपनेभक्तोंकादुःखछुड़ानेवास्ते लक्ष्मीपति होकर सदाभक्तोंकेबशरहते हौ इसकारण कुछबलतुम्हाराभक्तोंपर नहीं चलता॥

दो॰ बारबारपद नायशिर बिनती प्रभुहि सुनाय। प्रेममगननिरखतबदन हर्षसहित दोउभाय॥

ऐसाकहकर बलरामजीवहांसे चलेआये तब श्यामसुन्दरने विचारकिया कि नलकूबर मणिग्रीव दोपुत्रकुबेरदेवताके नारद मुनिकेशापदेनेसे नन्दजीकेद्वारपर दोवृक्षआंवलेकेहोकर खड़ेहैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व यमलार्जुनउनकानाम यहांप्रसिद्धहै उनकोउसशापसेछुड़ाकर अपनादर्शनदियाचाहिये उन्हींकेउद्धारकरनेवास्तेतो मैंनेअपनी भुजा बँधवाई है॥

दो० ब्रजबासी प्रभुभक्तहित आपबँधायो दाम। ताही दिनसे प्रकट भो दामोदर अस नाम॥

दशवां अध्याय॥

श्यामसुन्दर का नलकूबर व मणिग्रीव को उद्धार करना॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर शुकदेवजीसे पूंछा महाराज आपविधिपूर्वकहाल दोनोंवृक्षोंका वर्णनकीजिये कि किस वास्ते नारदजीने उनकोशापदियाथा शुकदेवमुनिबोले हेराजन् पिछलेजन्ममें नलकूबर व मणिग्रीव दोबेटेकुबेरदेवताके महादेवजीकी भक्तिकरनेसे धनपात्रहोकर कैलासपर्वतपररहतेथे एकदिन वहदोनों अपनीस्त्रियां साथलेकर बनविहारकरनेगये जबवहां मदिरापीकरमतवालेहुये तब अपनीस्त्रियोंसमेत नंगेहोकर गंगाजीमें जलक्रीड़ाकरनेलगे व उसीसमयअचानक नारदजीवहां आनपहुँचे तब उनकीस्त्रियां नारदमुनिको देखतेही अतिलज्जितहोकर अपना २ वस्त्रपहिरनेलगीं और वे दोनोंमतवालेतरुणाईके अभिमानसे अंधेहोकर उसीतरहखड़ेरहे उन्होंने धनकेगर्व्वसे नारदजीकोदण्डवत्भीनहींकिया और उन्हें नारदमुनिका आनाबुरामालूमहुआ यहदशादेखकर नारदजीनेमनमेंकहादेखो इनकोद्रव्यकाघमंडहुआ इसलियेकाम व क्रोधकेबशहोकर उसेअच्छाजानतेहैं और किसीकोकुछनहींसमझते व मनुष्यधन पावनेसे परस्त्रीगमन व जीव हिंसाकरके जुआखेलताहै व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपने शरीरको अमरजानकर यहनहींसमझता कि एकदिन अ
वश्य इसका नाशहोगा और मरनेउपरांतइसतनको पड़ारहनेसे
कुत्ता व कीड़े खाजावैंगे व जलानेसेराखहोजायगा इसलिये धन
वानमनुष्यको अच्छेबुरेछोटेबड़ेका विचाररखना उचितहै व गरी
बमनुष्यको अभिमान न होकर केवल पेटभरनेसे कामरहता है
और कङ्गाललोग परमेश्वरके भक्तहोतेहैं व धनपात्रसे हरिभज
न नहींबनपड़ता व मूर्खलोग इससंसारीझूंठीमायामोहमें फँसकर
अपनातन व धन व परिवारदेखनेसे प्रसन्नहोतेहैं बुद्धिमान् व हरि
भक्तमनुष्य धनवान् व कंगाल दुःख व सुखकोबराबर जानते हैं
ऐसाविचारकर उनदोनोंकाघमण्ड तोड़नेवास्ते नारदजीने यह
शापदिया कि तुमदोनों भाई आंवले के वृक्षहोकर मर्त्यलोकमें
रहो तब तुमकोधन का अभिमानकरने व मदिरापीने का स्वाद
मिलेगा जबकिसीको कुछरोगउत्पन्नहो तबवह उसकादुःखउठा
कर दूसरेके कष्टकोभी उसीतरहजानताहै जिसकेपांवमें कांटाचु
भाहो वहदूसरेके कांटाचुभने व पीड़ाहोनेका हालजाने॥

चौ० जाके पैर न फटै बिवाई। वह का जाने पीर पराई॥

जबतकमनुष्य दुःखनहींपाता तबतक उसको दूसरेकादुःख
देखकर दयानहीं आती तरुणाई व धनकीशोभा धर्म व शील व
लज्जाहै सो तुमनेछोड़दी इसलिये थोड़ेदिन तुमकोदण्डभोगना
पड़ेगा जब उनदोनोंने यहबातसुनी तबउनको तन व धनकाअभि
मानटूटगया व दोनोंभाई दौड़कर नारदजीके चरणोंपर गिरपड़े
और हाथजोड़कर विनयकिया कि इसशापसे हमारा उद्धारकब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होगा नारदमुनिनेकहा जब श्रीकृष्णजी पृथ्वीकाभार उतारनेवा स्ते मथुरापुरीमें जन्मलेकर नन्द व यशोदाकेघर बाललीला क रैंगे तब तुम्हारा मनोरथ सिद्धहोगा॥

दो० मोदशोनको गुण सरस समझे क्योंन बिचार। कृष्णदर्श तुम पाइकै होइहौ तबउद्धार॥

हेराजन् उसीशापसे वहदोनों गोकुलमेंआनकर यमलार्जुन नाम आंवलेकेवृक्षहुयेथे उससमय श्रीकृष्णजी उनकाशाप याद करकेऊखलको घसीटतेहुये उनवृक्षोंकेपासलेआये व दोनोंवृक्षों में ऊखल अड़ाकर ऐसाझिटकदिया कि वहजड़से उखड़गये व उनवृक्षोंके गिरनेकाबड़ाशब्दहुआ व उनकी जड़मेंसे दोमनुष्य अतिसुन्दर व तेजवान्प्रकटहुये जबमोहनप्यारेनेअपनेचतुर्भुजी स्वरूपका उन्हैं दर्शनदिया तबदोनों भाइयोंने उसमोहनीमूर्त्ति को दण्डवत् व परिक्रमाकरके हाथजोड़कर विनयकिया हेदीना नाथ सिवायतुम्हारे औरकौनहम ऐसे अधर्मियोंकीसुधिलेवै आ पजन्म व मरणसेरहितहोकरके वलहरिभक्तोंके सुखदेनेवास्ते अ पनीइच्छासे अवतारलेतेहैं औरसबसंसार तुम्हारीमायासे उत्पन्न होताहै व ब्रह्मादिकदेवता आप के चरणोंकाध्यान अपनेहृदयमें रखतेहैं सो नारदजीने हमारे ऊपर बड़ीकृपाकरके शापदियाथा जिसकारण आपके चरणोंका दर्शनमिलकर सबदुःख हमारालू टगया जिसतरहसूर्य्य व चन्द्रमाके प्रकाशसे सबवस्तु दिखलाईदे ती है व अँधेरेमेंकुछनहीं सूझपड़ता उसीतरह तुम्हारा भजन व स्मरणकरनेसे ज्ञानकीआंखखुलजाती है और जोमनुष्य आपसे बिमुखहैं उन्हैं अन्धासमझनाचाहिये यहसबस्तुतिसुनकर दीना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाथ बोले नारदमुनिने तुमलोगोंको गोकुलमेंवृक्ष बनादियाथा उन्हींकी कृपासे मेरादर्शन तुम्हें मिला अबजोकुछ तुमकोइच्छा हो वहवरदानमांगो ऐसीकृपा अपनेऊपर देखकर नलकूबर व मणिग्रीव ने विनयकिया हेमहाप्रभु जबआपका दर्शन प्राप्तहुआ तब हमलोगोंको किसीबातकी इच्छानहीं है परइतनाबरदान कृपाकरके दीजिये कि हमारे हृदयमें सदाआपकी नवधाभक्तिबनी रहै ऐसा वचनसुनकर श्यामसुन्दर बहुतप्रसन्नहुये व इच्छापूर्वक उन्हैं बरदानदेकर बिदाकियासो दोनोंभाई बिमानपर बैठकर कुबेरलोकमें चलेगये॥

ग्यारहवां अध्याय॥

नन्दजी का गोकुल छोडकर वृन्दावनमें बसना॥

शुकदेवजीने कहा हेराजन् जबवहदोनोंवृक्ष गिरपड़े तबवृक्षकेगिरनेका शब्दसुनकर यशोदा अतिव्याकुलतासे दौड़ी व जिस जगह श्रीकृष्णको बांधगईथी वहां उनको नहीं देखा तबअधिक घबड़ाकर श्यामसुन्दरकानाम लेके पुकारनेलगी व नन्दजीभी यशोदाका चिल्लानासुनकर दौड़आये व जहां दोनोंवृक्ष गिरेथे वहांपर क्या देखा कि नन्दलालजी उनवृक्षोंके बीचमें ऊखलसे बँधे सिकुड़े बैठेहैं तबनन्दजीनेकेशवमूर्त्तिको ऊखलसे खोलकर गोदमें उठालिया व छातीसे लगाकर रोनेलगे व यशोदापर क्रोध करकेकहा तैंने मेरेप्राणप्यारेको ऊखलमें क्योंबांधाथा आज परमेश्वरने इसकाप्राणबचाया उससमय मोहनप्यारे यशोदाकी ओर कनखियों देखकर अपनीआंख मलतेजातेथे व यशोदा ने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनको नन्दजीके गोदसे लेकर अपनेगले लगालिया जैसे सांप अपनामणि खोयाहुआपावे वैसाहर्ष यशोदाकोहुआ व गोपियां मोहनप्यारेकाप्राणबचनेसे बहुतप्रसन्नहुई व नन्द व उपनन्दआ दिक वहांइकट्ठेहोकर आपसमें कहनेलगे ऐसे पुरानेवृक्ष बिना आंधीआये जड़से क्योंकरउखड़गये इसबातका बड़ा आश्चर्य मालूमहोताहै तब एकग्वालबालने जो चरित्र देखाथा ज्योंका त्यों कहसुनाया परउसबालककी बातका कोईबिश्वास न करके आपसमें कहनेलगे कि मोहनप्यारेसे इतनेबड़ेवृक्ष कैसे गिरेहोंगे तबदूसरेनेकहा कदाचित् ऐसाहीहुआहो परमेश्वरकीगति परमे श्वरजाने दूसराकौन जानसक्ता है इसीतरहसबकोई आश्चर्यकी बातैं करतेहुये मनमोहनप्यारेको घरमेंलेआये व नन्दने दान व दक्षिणा ब्राह्मण व कंगालोंको देकर श्रीकृष्णजीसे पूछा हेबेटा तु मकोभी दोमनुष्य वृक्षमेंसे निकलतेहुये दिखलाईदियेथे ब्रजना थनेकहा हेबाबा हमनेकुछनहींदेखा यहमीठावचन सुनतेही उन कोनन्दजीने अपनेगले लगालिया व उनकेशरीरमें जो धूरलगी थी सो पोंछदिया तबनन्दलालजीबोले ॥

सो० माखनल्यावरिमात भूखलगी मोकोबहुत। आज न खायों प्रात सुनतवचन यशुमति हँसी॥

यहवचन सुनतेही यशोदाने माखनरोटी व मेवा मिठाई आ दिक लेआदिया सो मोहनप्यारेने ग्वालबालोंसमेत बड़ेहर्षसे भो जन किया जबश्रीकृष्णजीके वर्षगांठका दिनआया तबनन्दजी ने अपने जातिभाइयों व ब्राह्मणोंको सन्मानपूर्वक खिलाकर व ईखुशीमनाई और उपनन्दआदिक ग्वालोंसेकहा गोकुलमें नि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्यनया उत्पातउठताहै इसलिये दूसरेस्थानपर जहांघास व जल का सुखहो चलकरबसाचाहिये यहसुनकर उपनन्दनेकहा बृन्दा बनमेंजहां गोवर्द्धनपर्वतहै चलकरबसो तो अच्छीतरह आरामपा वेंगे जब यहसम्मत सबको भलामालूमहुआ तबदूसरेदिन शुभ साइतमें नन्दजी अपनेजातिभाई गोकुलबासी व घरकीसबबस्तु समेत बृन्दाबनकोगये व संध्यासमय पहुँचकर बृन्दादेवीका पूज नकिया और आनन्दपूर्वक वहांबसे सो श्यामसुन्दरकी कृपासे सब बृन्दाबन फूल व फल व घासआदिकसे हराहोगया अनेकरंग के पक्षी बोलनेलगे और सबकोई वहां अपनेरहनेवास्ते अच्छे २ स्थानबनाकर आनन्दपूर्वक उसमेंरहनेलगे व गौ व बछवाआदि कने वहांचरनेका बड़ासुखपाया व सबकोई नित्य नई २ लीला केशवमूर्त्तिकीदेखकर सुखपावते थे॥

दो॰ सुखयशुमति अरुनन्दको को करिसकै बखान। सकल सुखनकै खानि हरि जहांरहेसुखमान॥

हे राजन् जबब्रजनाथजी पांचवर्षकेहुये तबउन्होंने नन्दरानी से कहा हेमैया हमभी बछराचराने जावेंगे तुमबलदाऊसे कहिदे व कि बनमें हमको अकेला न छोड़ैं तब यशोदाबोली हेबेटा ब छरा चरानेवास्ते बहुतसेबालक तुम्हारेयहां चाकरहैं मेरेआंखोंके सामने से तुम अलगमतहो यहसुनकर नन्दलालजीने कहा तुम मुझको बछराचराने व खेलने वास्ते बनमें न जानेदेवगी तो मैं माखनरोटी नहींखाऊंगा जबयशोदा कन्हैयाजी के हठ करनेसे हारगई तबशुभसाइतमें ब्राह्मणोंको कुछ दानदेकर सब ग्वालबा लोंको बुलवाया व श्यामबलराम को सौंपके उनसेकहा तुमलोग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बछरा चराने बहुतदूरमतजाना व सन्ध्याहोनेके पहिले दोनोंभा इयोंको घरपरलेआना व इनकोबनमेंअकेले नछोड़करअपनेसा थलिये रहना जब ऐसासमझाकरश्रीकृष्ण व बलरामको बछरा चरानेवास्ते बिदाकिया तबश्याम व बलराम ग्वालबालोंसमेतय मुनाकिनारे बछराचराकर आपसमेंखेलनेलगे॥

दो० दिये बच्छ बगरायसब चरनआपनेरंग। बच्छचरायत नन्दसुत मिलिग्वालन केसंग॥
सो० उरमुक्तनकीमाल शीशमुकुटकटिपीतपट। हाथलकुटियालाल डोलतग्वालनसंगप्रभु॥
दो० माखनरोटी औरजलशीतलछाकबनाय। दीन्होंजलदीग्वालसँगयशुमतिबनहिपठाय॥

जबकंसनेसुना किनन्दआदिक गोपगोकुलछोड़कर वृन्दाव नमें बसे हैं तबउसने बत्सासुरको बुलाकर विनयपूर्वक श्यामसु न्दरके मारनेवास्तेभेजा जबबत्सासुर बछरारूप बृन्दाबनमें आ या व जोबछरे श्यामसुन्दरचरातेथे उन्हींमें वहभी मिलकर चरने लगा और उसे देखतेहीसबबछरेडरकर जिधर तिधरभागगये तब केशवमूर्त्तिने उसेपहिचानकर आंखकीसैनसे बलरामजीसे कहा हेभाई यहराक्षस कंसकेभेजनेसे बछरारूपबनकर मेरेमारनेकेवा स्तेआयाहै जबबत्सासुर अपनीघात लगायेहुये चरते चरते श्री कृष्णचन्द्रजीके पास आनपहुँचा तब मोहनप्यारेने पिछलापांव उसका पकड़के घुमाकर वृक्षकीजड़पर ऐसापटका कि प्राणउस का निकलसटका उससमयदेवतोंने श्यामसुन्दरपर फूल बर्षाये व ग्वालबालबोले हेनन्दलालजी तुमनेबहुतअच्छा किया जो क पटरूप राक्षसकोमारडाला नहीं तो हमसबको यहखाजाता फिर आपसमें सबकोई प्रसन्नहोकर खेलनेलगे जबराजाकंसने बत्सा सुरके मारनेका हालसुना तबअतिशोचितहोकर बकासुर उसके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाईको भेजा सो वहबकुलारूपसे बृन्दाबनमेंआया व यमुनाकि नारे पर्वतसमानरूपबनके इसघातमें बैठा कि श्रीकृष्णजी आवैं तो मछलीकीतरह उनकोनिगलजाऊं व श्यामसुन्दरने उसकोदेखकरजाना कि यहराक्षसहै और किसी ग्वालबालने नहीं पहिचाना जबग्वालबालोंने मोहनप्यारेसेकहा हे भाई हमने तो इतनाबड़ाबकुला कभीनहींदेखाथा तबश्यामसुन्दरबोले तुमलोग धैर्यरक्खो हमइसको मारैंगे ऐसाकहकर नन्दलालजी ग्वालोंके बर्जनेपर भी उसबकुलेकेपास चलेगये तबवह श्यामसुन्दरको उठाकर निगलगया व मुखअपना बन्दकरके प्रसन्नहोकर मनमें कहनेलगा आजमैंनेबत्सासुर अपनेभाईका बदलालिया और यहहाल देखतेही सबग्वालबाल ब्याकुलहोकर आपसमें कहने लगे हमलोग जाकर यशोदाजीको जिन्होंने अपनापुत्र हमैंसौंप दिया था क्याकहैंगे इससमयबलभद्रजीभी न मालूम कहांपीछे रहगयेहैं ऐसाकहते व रोतेहुये ग्वालबाल मारेडरके वहांसे भागे जबथोड़ीदूरपर बलभद्रजीसे भेंटहुई तबलड़कोंने बलरामजीसे कहा हमारे बर्जनेपरभी मोहनप्यारे बकुलेकेपासचलेगये सोवह उनको निगलगया बलरामजी बोले तुममतडरो नन्दलालजी उसकोमारकर तुमसे आनमिलैंगे जबब्रजनाथने ग्वालबालोंको दुःखीदेखा तबअपनेअंगमें ऐसीज्वाला उत्पन्नकी कि उसबकुलेका पेटजलनेलगा जब उसराक्षसने ब्याकुलहोकर श्यामसुन्दरको उगिलदिया तब नन्दलालजीने एकठौर उस कपटरूप को पांव के नीचे दबाकर व दूसराठौर हाथसे पकड़के चीरडाला तो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वह मरगया उससमय देवतों ने बड़े हर्षसे बाजन बजाये॥

दो० बक्कासुर सुरपुर गयो अधम असुरतन त्याग। सुरहर्षत बर्षतसुमन गगन सहित अनुराग॥

जबमरतीसमय उसबकुलेने बड़ाशब्दकिया तबबलरामजी ने ग्वालबालोंसेकहा कि कन्हैयाने राक्षसकोमारडाला हमलोग भीदेखैं जबसबबालक व बलरामजीवहांपरगये तबनन्दलालजी ने अपने सखालोगोंसे कहा हमने चोंचफाड़कर इसको मारा है यहबात सुनतेही सबग्वालबाल परमेश्वरको मनाकर कहनेलगे कि आज नन्दलालकाप्राण नारायणजीने बचाया और तीनों लोक में कोई इनकामारनेवाला नहींहै जबसे ये उत्पन्नहुये तब से इन्होंने कईराक्षसोंको मारडाला यहहमारा बड़ाभाग्य समझ नाचाहिये जो इनकेसखा कहलावते हैं जबमोहनप्यारे संध्यास मयग्वालबाल व बछरोंसमेतहँसते व खेलतेहुये अपनेघर आये तबमुरलीकी ध्वनि सुनतेही सबब्रजबाला प्रसन्नहोकर अपने २ घरसे बाहर निकलआईं व बनवारीलालकी छबिदेखकर सबों ने अपनी २ आंखैं ठंढीकीं और ग्वालबालोंने अपनी २ माता व य शोदा आदिकसे बकुला व बत्सासुर दोनों राक्षस मारेजाने का हाल ज्योंकात्यों कहादिया॥

दो० मोहनलीला नन्दसों ग्वालनकही सुनाय। देवीदेव मनायकै मात लियो उरलाय॥
सुनिग्वालनके मुखनते बत्सासुरको घात। यशुमति सबके पांवपरि बारबार पछितात॥
सो० भईमहर उरत्रास बचे आजहरि असुरते। मैं न बिगार्यो काह भये सहायक आनिविधि॥

हे राजन् उसदिन नन्दजीने बहुतसादान मोहनप्यारे के हाथ से कराकेकहा हमलोग गोकुलछोड़कर वृन्दाबन आनबसे तिस परभी नित्यनया उत्पात श्रीकृष्णजीकेपीछे उठताहै अबयहांसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छोंड़कर कहांजावैं परमेश्वरकी कृपासे हमारेकुलदेवता सहायक हुये जो श्यामसुन्दरका प्राण राक्षसोंकेहाथसे बचा व यशोदा बहुतपछताकर नन्दलालजीको समझानेलगी ऐबेटा तुम वनमें मतजायाकरो तुम्हारेपीछे अनेकराक्षस लगेरहते हैं तबमोहन प्यारेने कहा ऐ मैया हमकोबनमें ग्वालबाल अकेले छोड़देते हैं और मैंउनकेहाथसे बहुतदुःख पाताहूं अबमेरीबलाय बछड़ाचरानेजावै मुझको तू चकईभवँरा मँगादे हमगांवमें खेलाकरैंगे॥

दो० मोहि लियो मनजननिको मधुरेवचन सुनाय। बत्सासुरका शोचडर क्षणमें दियो मिटाय॥

हेराजन् यशोदाने प्रसन्नहोकर उसीसमय उनको चकई व भवँरा मँगादिया तबग्वालबालोंकेसाथ उसेखेलनेलगे व गोपियां नन्दलालजीकेसाथ अतिप्रीति रखकर एकक्षण विनादेखे उनके नहींरहतीथींइसलियेजबचकईखेलतीसमयकोईब्रजबालाउनके निकटआनकर खड़ीहोतीथी तबनन्दलालजी हँसीकीराह चकई घुमाकर उसके गहनामें जो बीचगलेके पहिनेरहतीथीं फँसाकर उनको छेड़तेथे और वे गोपियां अन्तःकरणसे प्रसन्नहोकर प्रकट में गालियांदेतीथीं और केशवमूर्त्ति किसीसेजामुन व बैरआदिक फल लेकर उसेजोअन्नदेतेथे वहउनकी महिमासे मोतीरत्नहोजाताथा इसलिये अनेकब्रजबाला बेचनेकेबहाने लालचबश उनकेयहांआतीथीं व मनहरणप्यारे इसीतरह नित्यनई लीलाकरके वृन्दाबन बासियोंको सुखदेतेथे॥

दो० धनि २ ब्रजके नारि नर धनियशुदा धनिनन्द। बिहरत जिनके सदन में ब्रह्मसच्चिदानन्द॥
सो० कहि २ देव सिहाय धन्य २ वृन्दा विपिन। जहां चरावत गाय सकलसुरन शिरमुकुटमणि॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीने कहा हे राजन् ग्वालबालों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने पिछलेजन्ममें बड़ापुण्य कियाथा इसलिये परब्रह्मकेसाथ जि
नकादर्शन ब्रह्मादिककोजल्दीध्यानमेंनहींमिलता वहखेलतेथे॥

बारहवां अध्याय॥

श्री कृष्णजी करके अघासुरका माराजाना॥

शुकदेवजीने कहा हेराजन् एकदिन श्यामसुन्दर यमुना कि
नारे खेलनेगये वहांपर केशवमूर्त्ति नटवररूपबनाये पीताम्बरकी
कछनीकाछे किरीटकुण्डल मुकुट पहिने उपरनाओढ़े लकुटिया
हाथमेंलिये एकसखाके कांधेपर हाथधरेहुये खड़ेथे वहांपर राधि
काबृषभानुदुलारी जो लक्ष्मीजीका अवतारअतिसुन्दरि सातआ
ठवर्षकीथी स्नानकरनेगई जबश्यामसुन्दर व राधाकीआंखैंसन्मु
खहुईं तबपिछलीप्रीति यादकरके श्रीकृष्णउसपर मोहितहोगये
व श्यामाकाप्रेमभी उनकेऊपर बहुतलगगया जब दोनोंकी प्रीति
अन्तःकरणसे बढ़ी तब वृन्दाबन बिहारीने हँसकर पूछा तुम्हारा
क्या नाम है और तुम किसकीपुत्री अतिसुन्दरी व गोरीहो हमने
आजतक तुम्हैं कभीनहींदेखा यहप्रीतिभरीहुई बातसुनकर श्या
माबोली मैं वृषभानुकीबेटीहूं व राधिकामेरानाम है मैं अपनेघर
सखियों के साथ खेलतीहूं बाहरनहीं निकलती इसलिये तुमने
हमको नहींदेखाहोगा पर मैंने सुनाथा कि नन्दजीकाबेटा गोपि
योंका माखनचुराकर खायाकरताहै सो आजमैंने देखा तुम्हीं न
न्दकुमारहौ यहसुनकर मोहनप्यारेने कहा मैंने तुम्हारा क्या चु
राया हमारामन तुम्हारेसाथ खेलनेको चाहता है सो तुम घड़ी
दोघड़ी आनकर हमारेसाथ खेलाकरो श्यामसुन्दर की प्यारी २

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बातैं सुनकर श्यामाभी अन्तःकरणसे उनपरमोहित होगई परस खियोंके डरसे प्रेमअपना प्रकटनहीं किया॥

दो० गुप्तप्रीति प्रकटतनहीं दोऊ हृदय छिपाय। मनमोहन प्यारीचली घरको नयन चलाय॥

उससमय तो राधिका यहबातैं करिकै अपनेघरचलीगई पर मनउसका केशवमूर्त्तिमें लगारहा संध्यासमय राधा अपनीमा तासे दूध दुहानेका बहानाकरके खरकामें मोहन प्यारेसे भेंट क रने चली॥

दो० लै मातासों दोहनी चली दुहावन गाय। मन अटक्यो नँदलाल सों गई खरक समुहाय॥
सो० मगमग शोचतजायकित देखोंवहसांवरो। जिनमनलियोचुराय खरक मिलनमोसों कह्यो॥

हे राजन् जबराधाप्यारी व केशवमूर्त्तिसेखरकामें भेंटहुई तब श्यामसुन्दरने अपनीमायासे घटा व बदली उत्पन्नकरके उसी अँधेरेमें उससे प्रेमपूर्वक बातैंकी जबराधाप्यारी बिलम्ब होने से हरबराकर अपनेघरचली तबमोहनप्यारेने उसकीसारी आपओ ढ़ली व अपनापीताम्बर उसे देदिया जबश्रीकृष्णजी वहसारीओ ढ़हुये अपनेघर आये तबयशोदाने उनकोदेखकर बिचारा कि इसने किसीगोपीसे प्रीतिकरके उसकीसारी लेली है मोहनप्यारे अन्तर्यामी यशोदाके मनका हालजानकरबोले हेमैया आजु मैं यमुनाके किनारे गौवोंकोपानी पिलानेगयाथा वहांपर एकगोपी अपनीसारीरखकर स्नानकरनेलगी सो एकगौ वहांसेभागी जब मैं गायबहोरनेगया तबउसगोपीने डरकेमारे जल्दीमें मेरापीता म्बर जोयमुनाकिनारे रक्खाथा पहिनलिया व अपनीसारी छोड़ करचलीगई वहब्रजबाला मेरी पहिंचानीहुईहै अभीजाकर अप नापीताम्बर ले आताहूं ऐसाकहकर वहांसे बाहरचलेआये व अ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पनीमायासे उसीसारीको पीताम्बर बनालिया और फिर यशोदा के पासजाकरकहामैं अपनापीताम्बर बदललाया यशोदाउनकी बातसच्चजानकर चुपहोरही व राधाप्यारी दूधदुहाकर श्यामसुन्दर का पीताम्बर पहिनेहुये अपनेद्वारतक पहुँची व घबड़ाकरअपनीमाताको पुकारा उसकाबोल सुनतेही कीर्त्ति दौड़ीआई और उसने अपनीबेटीको घबड़ाईहुईदेखकर पूंछा हे बेटी अभी तू अपनेघरसे चंगीभली गईथी तेरी क्यादशाहोगई तबराधा ने कहा एकलड़की जिसकानाम नहींजानती मेरेसाथ चलीआवतीथी उसको सांपनेकाटलिया सो वहअचेत होकरगिरपड़ी तबमैंभीडर गई जबनन्दकुमारकेभारनेसे उसकोआरामहुआ तबमैंअपनेघर आई यहबातसुनतेही कीर्त्तिनेराधाको गलेलगाकरकहा तुझेपरमेश्वरने मृत्युसेबचाया मैं तुझकोबारम्बार मनाकरतीहूं तू मेरा कहनानहींमानती कभीबाहरदूरखेलने व कभीयमुनाकिनारेनहाने व कभीखरकामेंदूधदुहावनेजातीहै व खेलतीसमय आकाश की तरफ़देखकर धरतीपरपांव नहींरखतीहै अबतूकहींबाहरखेलने मतजायाकर यहबात अपनीमातासेसुनकर राधिका मनमें कहनेलगी आजमैंने अपनीमातासे अच्छाछलकिया औरउसने ध्यानमोहनीमूर्त्तिका हृदयमेंरखकर अपनीमातासे कहाअब मैं बाहरनजाकर गांवघरमेंखेलाकरूंगी हेराजन् राधाप्यारीकेमनमें नन्दलालजी ऐसेबसगयेथे किबिनादेखे उनकेउसको चैननहीं पड़ताथा इसलियेतीसरेदिन फिरराधिका दूधदुहानेके बहानेश्यामसुन्दरकेस्थानपर आई व द्वारेपरसेमोहनप्यारेकोपुकारा व मारे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लज्जाकेभीतर नहींगई राधाप्यारीका शब्दसुनतेही नन्दलाल जीने यशोदासेकहा हेमैयाकल्हमैंयमुनाकिनारे रास्ताभूलगया था सोएकगोपी मेराहाथपकड़कर गांवमेंपहुँचागई तबमैंघरपहुँचाहूं नहींतो न मालूमभूलकर कहांचलाजातासो वहीब्रजबाला मेरेसाथखेलनेआई है परतुम्हारेभयसे यहांनहींआवती तुमउसकोभीतर बुलाकरदेखो ऐसाकहकर मोहनप्यारेने अपनीमाया ऐसी यशोदापर फैलादी कि उसको श्यामासे प्रीतिउत्पन्नहोगई तबयशोदाने श्यामसुन्दरसेकहा तू उसको भीतरबुलाले यहबात सुनतेही मोहनप्यारे जबराधिकाकी बांहपकड़कर भीतरलेआये तब यशोदाने उसकीसुन्दरताई देखतेही बड़ेप्रेमसे अपनेपास बैठालकर पूंछा कि तू किसगांवमेंरहतीहै मैंने आजतक कभीतुझको नहीं देखा तेरा व तेरेमातापिताका क्यानाम है कल्हमेरा मोहनप्यारा राहभूलगयाथा सो तैंने बहुतअच्छाकिया जो उसको गांवमें लिवालाई श्यामानेकहा मेरानामराधिकाहै ॥

दो॰ मैं बेटी वृषभानुकी तुमको जानतमाय। बहुत बेर मिलनो भयो यमुनाके तट आय ॥

यहसुनतेही यशोदाने कहा मैं जानतीहूं तेरीमाता बड़ी कुलवन्ती व वृषभानु तेरापिता बड़ाखोटा है तबराधाप्यारी हँसकर बोली मेरेबापने तुमसे क्याखुटाईकीथी यहप्रेमभरा वचनसुनतेही यशोदाने राधिकाको अपने गलेलगाकर बहुतप्यार किया व मनमेंबिचारा कि इसकन्याका विवाह मोहनप्यारेसे होतातो बहुतअच्छाथा फिरयशोदाने श्यामाकाशिर गूंथकर शृंगार किया व बहुतअच्छा गहना व कपडा पहिनाकर मेवा व मिठाई व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिलचावली उसके गोदमेंडालकरकहा तू कन्हैयासे जाकरखेल यहबातसुनतेही राधिका प्रसन्नहोकर नंदलालजीकेसाथ खेल नेलगी हेराजन् श्याम व श्यामा ऐसे सुन्दरथे जिनकेस्वरूप का वर्णन शेष गणेशजी नहींकरसके दूसरेकी क्यासामर्थ्य है जो बड़ाई करनेसकै ॥

दो० खेलत दोउ झगड़न लगे भरे परमअहलाद। मानोघन अरु दामिनी करतपरस्परबाद ॥

यशोदाउनदोनोंको खेलतेहँसतेहुये देखकरबहुतप्रसन्नहुई व राधिकासेकहा तू नित्ययहां आनकर मेरेमोहनप्यारेसे खेलाकर व श्यामसुन्दर राधाप्यारी से हँसकर बोले तुमलज्जाछोड़कर हमारेयहां खेलनेआयाकरो तुम्हारेसाथ खेलनेसे मेरामनअति प्रसन्नहोता है राधायहबात मोहनप्यारे की सुनकर मुसकराती हुई अपनेघर चलीगई ॥

दो० परमनागरी राधिका अतिनागर ब्रजचन्द। करत आपनो घातदोउ बँधे प्रेमके फन्द ॥

जबराधाप्यारी शृंगारकियेहुये अपनेघरपहुँची तबकीर्त्ति उस की माताने पूंछा तू कहांगईथी व तेराशृंगार किसने करादिया है राधिकाबोली मैं यशोदाजीके घरगईथी उन्होंने तुम्हारा मेरेपि ताकानामपूंछकरहमकोबहुतसा प्यारकरके मेराशृंगारकरदिया॥

दो० मेरेशिर बेणीगुही बेणी लालबनाय। पहिनाई निज हाथसों सारीनई मँगाय ॥

हेमाता तिल चावली व मेवा मिठाई मेरेगोदमेंडालकर मुझे बिदाकिया व तुमकोठिठोलीकीराह उन्होंनेगालीदी यहबात सुन करकीर्त्तिबहुतप्रसन्नहुई और यहहालबरसानेगांवकी गोपियां सुनकर यशोदाकोठट्ठेकीराह गायबजायकर गालियांदेनेलगीं व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यशोदाके मनकाहालजानकर कीर्त्तिने सबगोपियोंसे कहा मेरी बेटी दामिनी और मोहनप्यारा श्यामघटासा अतिमनभावन दोनों बिवाहके योग्यहैं कीर्त्तिकोभी इसबातकी चाहनाहुई कि राधाप्यारीका बिवाह नन्दलालजीसे होता तो बहुतअच्छाथा ऐसा बिचारकर उसने वृषभानुसे यहबातकही॥

दो० युगलकिशोर स्वरूपबर वृन्दाबनरसखान। नवदूलह दुलहिनि सदा राधाश्याम सुजान॥

वृषभानुभी अपनीस्त्री की बातसुनकर प्रसन्नहुये इसीतरह राधिका नित्यनन्दजीके घर आनकर मोहनप्यारेकेसाथ खेला करतीथी व श्यामसुन्दर भी उसकेसाथ बड़ीप्रीतिरखतेथे व राधाप्यारी जब कभी २ अपनी गौवोंका दूधदुहानेवास्ते मनहरणाप्यारेको कहतीथी तबवह बड़ेप्रेमसे उसकी गो दुहादिया करतेथे॥

दो० धेनु दुहावत लाडिली दुहत नन्दको लाल। सो सुख कासों जात कहि देखतब्रजकी बाल॥

एकदिन राधाप्यारी श्यामसुन्दरसे गो दुहाकर जबदूधलिये हुई अपनेघरचली उससमयमोहनप्यारेने उसकीओर देखकर मुसुकरादिया तबराधा वहमुसुकान देखतेही मोहितहोगई जब राहमें उससे सखियोंने पूछा आजतेरे गो दुहाने वाले ग्वालक्या हुये जो तैंने नन्दलालजीसे दूधदुहाया है राधाश्यामसुन्दरका नामसुनकर ऐसी अचेतहोकर गिरी कि दूधकाबर्त्तन उसकेहाथसे छूटपड़ा व गिरतीसमय सखियोंसे बोली कि मुझको कालेसांपने काटाहै यहवचन सुनतेही सहेलियां उसे उठाकर उसकेघरलेगईं व कीर्त्तिसे सांपकाटनेका हाल कहदिया सो उन्होंने बहुतसेगुणी बुलाकर झाड़ व फूंक कराया पर उसको मोहरूपीसांपने डसाथा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसलिये मंत्र व यंत्रसे कुछगुण न होकर जब वह उसीतरह रही तब सहेलियोंने जो उसकीप्रीतिकाहाल जानतीथीं कीर्त्तिसे कहा नन्दमहरका बेटा बड़ागुणीहै उसे बुलाकर दिखलावो तो इसको आराम होजायगा यहसुनकर कीर्त्तिबोली एकदिन राधिकाने आगेभी मुझसेकहाथा कि किसी लड़कीको सांपकाटने से नन्द किशोरने अच्छाकरदियाथा वहबात यादकरतेही कीर्त्ति दौड़कर यशोदाकेपास जाकरकहा मेरीबेटीको सांपनेकाटाहै सोतुममोहनप्यारेको साथकरदेव कि वहमंत्रपढ़कर उसे अच्छीकरदे यह सुनकर यशोदा बोली अय बहिन मेरा अज्ञानबालक मंत्रयंत्र क्याजानै किसी गुणीको बुलाकर दिखलावो आजतकमैंने कभी उसके मंत्रयंत्र जाननेकाहाल नहींसुनाहै तबकीर्त्तिने कहा मैंने राधिकासे एकलड़कीके सांप काटने व कन्हैयाको अच्छाकरदेने का हाल सुनाथा सो तुम दयाकीराह तुरन्तउसे बुलादेव इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीने कहा हेराजन् जब कीर्त्ति मोहनप्यारेको बुलानेजाचुकी तबललितासखीने जो उसकी प्रीतिकाहाल जानतीथी एकब्रजबालाको मोहनप्यारेकेपास जहांपर वहखेलतेथे समझाकर भेजा तब उसगोपीनेजाकर नन्दलालसेकहा॥

दो० अहो महरिके लाड़िले मोहनश्यामसुजान। कितसीखे यह गोदुहन हमसे कहौ बखान॥

हे नन्दकुमार आजप्रातसमय जिसकीगो तुमने दुहीथी वह इससमय अचेतपड़ीहै केवलतुम्हारानाम लेनेसे आंखखोलदेती है व उसने गिरतीसमय यहकहाथा कि मुझको कालेसांपनेकाटा है सो कोई मंत्र व यंत्र उसको गुणनहींकरता इसलिये तुम चल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर अपनी कृपादृष्टिसे उसकाविष उतारदेव और तुम्हारा श्याम रंग देखकर मैं जानतीहूं यहलहर तुम्हारे मुसुकानकी उसे चढ़ी है जल्दीचलकर उसे चंगीकरदेव और वहतुम्हारे विरहकी आगि में जलरहीहै सो अपनेचन्द्रमुखकी शीतलताईसे उस बिरहिनी की अग्नि बुझाओ कदाचित् तुमउसे न जिलाओगे तो हमलो ग नन्दजीकेद्वारेपर जाकर तुम्हारेऊपर अपना प्राणदेवेंगी कीर्त्ति उसकेदुःखसे ब्याकुलहोकर यशोदाकेपास तुमको बुलानेगई है यहबात सुनतेही मोहनप्यारेने मुसुकराकर उससेकहा कदाचित् राधाप्यारीको कालेभुजंगनेभी डसाहोगा तो मैं उसको अच्छा करदूंगा ऐसाकहकर उससखीको बिदाकिया औरआप अपनेघर चलेआये तबयशोदाने उनसेहँसकर पूंछा अयबेटा तुमकुछसांप काटनेकामंत्रजानतेहो यहसुनकर श्रीकृष्णबोले अयमैया तेरी सौगन्दहै मैं ऐसा मंत्रजानताहूं कि सांपके डसेहुयेको देखनेपाऊं तो वह मरने न पावै यशोदानेकहा अयबेटाराधाको सांपनेकाटा है तुम कीर्त्तिके साथजाकर उसे आरामकरदो श्यामसुन्दर यह आज्ञापातेही प्रसन्नहोकर कीर्त्तिकेसाथ गये जबकीर्त्तिनन्दला लसमेत अपनेघरपहुँची तबराधिकाको अधिक ब्याकुलदेख मो हनप्यारेसे विनयपूर्वक कहा हे नन्दकुमार मुझे अपनेऊपर न्यौ छावर समझकर राधाको अच्छाकरदेव जैसे राधिकाने श्यामसु न्दरके आनेकाहालसुना वैसेउसका हृदय ठण्ढाहोकर प्रेमका आंशू बहनेलगा जबश्रीकृष्णजीने कुछपढ़कर अपनीमुरली रा धाके अंगमेंछुआदी तबउसने चैतन्यहोकर अपनाअंग कपड़ेसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ढांपलिया व श्यामसुन्दरको देखकरउससमय चंगीभली होगई व अपनी मातासे पूंछा आजक्या है जो इतनेमनुष्य यहां इकट्ठे हुयेहैं तबकीर्त्तिनेकहा हेबेटी तू सांपके काटनेसे मरणतुल्य होगई थी सो तुझकोकन्हैयाजीने अपनेमंत्रसेजिलायाहै इनसेतुझेक्या लज्जाकरना चाहिये यहकहकर श्रीकृष्णकोगोदमेंउठालिया॥

दो० उरलगाय मुख चूमिके पुनि पुनिलेत बलाय। धन्यकोख यशुमतिमहरि जहां अवतरयोआय॥
सो० कछु मेवापकवान कहेउ खान घनश्यामसों। बिदाकियो दैपान कीरति श्यामसुजानको॥

हे राजन् श्यामसुन्दरके जानेउपरांत वृषभानु व कीर्त्तिने कहा श्रीकृष्ण व राधिका दोनों आपसमें बिवाहकरनेयोग्यहैं व ललितासखी जो सबभेदजानतीथी मनहरणप्यारेसे बोली तुमबड़े गुणी होगये कि राधिकाका विषतुरंत तुमने उतारदिया यहमन्त्र कभी मतभूलना मैं तुम्हाराभेद अच्छीतरह जानतीहूं तुमनेराधाको मोहनीडालकर उसको अपनेबश करलियाहै यहसुनकर श्यामसुन्दर हँसतेहुये अपनेघरचलेआये व यशोदा राधिकाके आरामहोने का हालसुनकर अतिप्रसन्नहुई व मोहनप्यारेको गोदमेंउठाकर प्यारकरनेलगी॥

दो० कारोसुत नँदरायका जाकी लीला नित्त। उनहीं को ये दसत हैं जिनके उज्ज्वलचित्त॥
सो० धनि धनि ब्रजकी बाल धन्यधन्य ब्रजग्वालसब। जिनकेसँग नँदलाल दुहतचरावतधेनु नित॥

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् एकदिनश्यामसुन्दर प्रातसमय ग्वालबालोंकोसाथलिये कलेवाबांधेहुये बछड़े चरानेबनमेंगये वहांबछड़ोंकोचरनेवास्ते छोड़दिया व खड़िया व गेरूसे ग्वालबालोंसमेत अपने २ अंगपर चित्रकारीकी व अनेक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रंगकेफूलोंकागहना बनाकरपहिनलिया व पशुपक्षीआदिक की बोलियां बोलकर आपसमेंखेलनेलगे॥

दो॰ कबहूं गावत सखनसँग कबहुँ बजावत बेनु। धवरी धुमरी नामले कबहुं बुलावतधेनु॥

हे राजन् उसीसमय अघासुरराक्षसभेजाहुआकंसका श्याम सुन्दरकेमारनेवास्ते वहांआया व अजगरसांपकारूप ऐसालम्बा व चौड़ाबनाकररास्ते में बैठा कि नीचेकाओठपृथ्वीपर व ऊपरका ओठ आकाशमेंजालगा जबअचानकमें श्यामसुन्दरग्वालबालों समेत जहांवहसांपमुखबाये व घातलगाये बैठाथा जानिकले तब मोहनप्यारेने ग्वालबालोंसेकहा जिधरयहपर्वतकी कन्दरासीदि खलाईपड़ती है उधरमतजाना हे राजन् जबग्वालबाल श्याम सुन्दरके मनाकरनेपरभी बछड़ासमेत उसीओरचलेगये औरउस अजगरकोजोचारकोशलम्बा व एककोशचौड़ादेखकर आपसमें कहनेलगे यहपर्वतसाक्यामालूमहोताहै जब इसीतरहबातकरते वबछरेचरातेहुये उसकेपासजापहुँचे तबएकबालकबोला हेभाई यहबड़ीडरावनी खोहदिखलाई देती है इसकेभीतरमतजाव यह सुनकर तोखनामबालकने कहाआवो इसकन्दराकेभीतरचलैं दुःखभञ्जनहमारेसाथहैं हमकोकिसकाडरहै कदाचित् राक्षसभी होगा तो बकासुरकीतरहमाराजायगा जबसबग्वालबालऐसीबातैं करते व पीछेमोहनप्यारेका मुखदेखतेहुये तालबजाकर उससांप के मुखमेंघुसे तब अघासुरनेऐसाश्वासखींचा कि सबग्वालबाल बछड़ोंसमेत उसकेपेटमेंचलेगये उससमयअघासुरनेबिचाराकदा चित आजश्यामबलरामकोमारूं तो बकासुरभाई व पूतनाअपनी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहिनका बदलालेकर उसकेनामपर तर्पणकरूं यहदशा उनकी देखकर श्रीकृष्णजीने कहा ॥

दो० ग्वालबाल बछड़ा सबै पड़े असुरमुखआय। इनसबहिनकी मायसों कहाकहौंगो जाय॥

सिवायमेरे और कोईदूसरा इनकीरक्षा करनेवालानहीं है इस लिये हमैंभी इसराक्षसके मुखमेंजाकर इनकाप्राण बचानाचाहि ये जब ऐसाविचारकर श्यामसुन्दरआपभी उसअजगरके मुखमें चलेगये तबउससांपने अतिप्रसन्नहोकर मुखअपनाबन्दकरलि यायहदशा देखकर देवतेचिन्ताकरनेलगे व राक्षस व दैत्यकंसके मित्रप्रसन्नहुये ॥

दो० माखनप्रभुकीन्होंतभी बालशरीरविशाल। श्वासव्यालको रोकके त्रासदियो तेहिकाल॥

हे राजन् जब मोहनप्यारे के शरीरबढ़नेसे श्वासचलनाबन्द होगया तबप्राणउसकाब्रह्मांडतोड़कर निकलगया व श्यामसुन्दर सबग्वालबाल व बछड़ोंसमेत ज्योंके त्यों बाहरनिकलआये उस समयदेवतोंने अतिप्रसन्नहोकर बृन्दाबनबिहारीपर फूलवर्षाये और राक्षस व दैत्य यहमहिमाकेशवमूर्त्तिकीदेखकर शोचकरने लगे व चैतन्यआत्मा उसअजगरकापहिले आकाशमेंजाकर फिर मोहनप्यारेके मुखमेंसमागया॥

दो० माखनप्रभुपरतापते त्रिबिधताप मिटिजाहिं। ताहिपाप कैसेरहै आपजाहिं मुखमाहिं॥

हेराजन् इसतरहउसराक्षसकीमुक्तिदेखतेही देवतोंनेश्रीकृष्णजी कोपूर्णब्रह्माजानकरउनकीस्तुतिकी व सबग्वालबालश्यामसुन्दर सेकहनेलगे आपनेइसराक्षसकोमारकर हमलोगोंका प्राणबचा यानहींतो आजहमारेमरनेमें कुछसंदेहनहींथा यहसुनकरकेशव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मूर्त्तिबोले अयभाइयो मैंने तुम्हारी सहायतासे इसराक्षसको मा
रा कदाचित् तुमलोग नहोते तो यहराक्षस मुझसेमारा न जाता
ऐसाकहकर श्यामसुन्दर ग्वालबालोंसे खेलनेलगे॥

दो॰ गावत खेलत हँसतसब सखावृन्दले साथ। वृन्दाबन के कुञ्जमें वृन्दाबन को नाथ॥

और शरीर उससांपका सूखकर पर्वतकेसमान उसजगहपड़ा
रहा कभी ग्वालबाल उसखालकेभीतर घुसकर व कभी उसके ऊ
परचढ़कर खेलाकरतेथे व उसराक्षसने मरतीसमय मुरलीमनो
हरकाध्यान कियाथा इसलिये परमपदको पहुँचा हेराजन् यह
बात बिश्वासकरके जानो जो लोगमरतीसमय नारायणजी का
ध्यान करते हैं उनकीमुक्तिहोनेमें कुछ संदेहनहींरहता व केशव
मूर्त्तिने पांचवर्षकीअवस्थामें अघासुरकोमारा वर्षदिनके उपरांत
उसके मरनेकाहाल ग्वालबालोंने अपनेघरकहा इतनीकथा सुन
कर परीक्षितने पूछा हेस्वामी वर्षदिनतक यहहाल नहीं कहनेका
क्या कारण था॥

तेरहवां अध्याय॥

ब्रह्मा का ग्वालबाल व बछड़ोंको चुरालेजाना॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् तूबड़ाभाग्यवान्है किसवास्ते किप
रमेश्वरकी कथामें तुझको प्रतिदिन अधिकप्रीतिहोतीजाती है अ
घासुरके मरनेउपरांत मोहनप्यारेने ग्वालबालोंसेकहा कियमुना
किनारे यह ऊंचाशरीरसांपका बहुतअच्छा पड़ाहै उसकेऊपर च
ढ़कर हमलोगोंकोखेलने व चरतेहुये बछड़ोंकेदेखनेका बड़ासुख
हुआ इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् उनग्वालबा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोंके भाग्यकीबड़ाई किसकोसामर्थ्यहै जो वर्णनकरसके वेलोग दिनरात खाना व पीना व उठना व बैठना वृन्दावनबिहारीकेसाथ रखतेथे और सबकोईबृक्षोंकी छायामें बैठकर अपनाशरीर बैकुण्ठनाथके अंगसे स्पर्शकरतेथे यहपदवी ब्रह्मादिक देवतोंको भी मिलनाकठिनहै व ग्वालबालोंका सुखदेखकर देवते उनपर डाह करतेथे जब श्रीकृष्णजीने अघासुरकोमारा तब ग्वालबाल व बछड़ोंसमेत आगेजाकर यमुनामें स्नानकिया और कदमकेनीचेखड़ेहोकर मुरलीबजाई व ग्वालबालोंसेकहा हेभाइयो यहांअच्छा बिमलस्थानहै इसीजगह बैठकर कलेवा करलेव यहवचन सुनतेही सब ग्वालबाल वहां ठहरगये॥

दो० तहां छाक सबघरनते आईभरिभरिभार। यशुमति पठयो कान्हको ब्यंजन बहुतप्रकार॥

सबग्वालबालोंने ढाखके पत्तेलाकर पत्तल व दोनालगाया व अपना अपना कलेवा निकालकर पत्तलआदिकमें परोस लिया सोबीचमें मुरलीमनोहर व उनके चौगिर्द ग्वालबालखाने वास्ते बैठे व भोजनकरतीसमय श्यामसुन्दरने बांसुरीको कमर मेंखोंसकर लकुटिया बगलमें दबाली जबब्रजनाथजीने पहिले आप ग्रासउठाकर मुखमेंडाला तबपीछे ग्वालबालोंने भोजनकरना आरम्भकिया उससमय मुरलीमनोहर मुकुटसाजे व पीतम्बर पहिने व बनमालागलेमें डाले व लकुटियादबाये अनेकतरहका भोजनबायेंहाथमें रखकर हँसतेहुये अपनाजूठा दाहिनेहाथसे सबग्वालबालोंको खिलावनेलगे व ग्वालबालों के पत्तलरसे उनका जूठाउठाकर आप खातेथे और उसके खट्टे व मीठेका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वाद आपसमेंकहकर ऐसाआनन्दमचाया जिसकाहाल बर्ण न नहीं होसक्ता ॥

दो० ग्वालबालमें बैठके माखनप्रभु ब्रजनाथ। माखनरोटी हाथले खातजात इकसाथ ॥

उसमण्डलीमें मनहरणप्यारे चन्द्रमासे व सबग्वालबाल तारूप शोभायमान दिखलाई देतेथे उससमय देवते अपने २ विमानोंपर बैठेहुये यहसुखदेखकर आपसमें कहनेलगे धन्यभाग्य इनग्वालबालोंकाहै जिनकोसच्चिदानन्द परब्रह्म अपनाजूठा खिलाकर उनकाजूठन आपखातेहैं यहसुख हमलोगोंको स्वप्नेमेंभी नहींप्राप्तहोसक्ता और किसी २ मुनि व देवताने ब्रह्मासेकहा महाराज हमकोबड़ासन्देह मालूमहोताहै किसवास्ते कि हमलोग यज्ञमें बड़ीपवित्रतासे सामग्रीबनाकर परमेश्वरका भोग लगातेहैं तिसपरभी बैकुण्ठनाथ जल्दी वहभोग अंगीकार नहीं करते वं तुम श्रीकृष्णजीको परब्रह्मकाअवतार कहतेहौ सो देखो यहग्वालबालोंका जूठा उठाकरखातेहैं इसलिये हमको तुम्हारे कहनेका विश्वास नहींआता यहसुनकर परमेश्वर की मायासे ब्रह्माकोभी सन्देहउत्पन्नहुआ तबब्रह्मानेकहा मैं अभी ग्वालबाल व बछरेहरकर उनकीपरीक्षा लेताहूं श्रीकृष्णजी सच्चिदानन्दका अवतारहोंगे तो अपनीमायासे दूसरेबछरे व ग्वालबाल बनालेवेंगे ऐसाकहकर ब्रह्मावृन्दाबनमें आये व चरतेहुये बछरोंकोले जाकर पर्वतकी कन्दरामें बन्दकरदिया जबग्वालबालोंने बछरों कोनहींदेखा तबकेशवमूर्त्तिसे कहा हमलोग तो बैठेहुयेकलेवाकरते हैं व बछरेनहीं दिखलाईदेते न मालूमचरतेहुये किधरचलेग

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri. Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ये यहसुनकर मुरलीमनोहरने कहा हे भाई तुमलोग निश्चिन्त
ईसे भोजनकरो मैंजाकर बछरोंको घेरलाताहूं ऐसाकहकरमोहन
प्यारे बछरेढूंढ़नेगये जबबनमेंजाकर बछरोंको नहींदेखा तबपर
ह्मपरमेश्वर अन्तर्यामीने मालूमकिया कि मेरीपरीक्षा लेनेवास्ते
ब्रह्माबछरोंको हरलेगयाहै यहसमझतेही बैकुण्ठनाथब्रह्माकासंद
ह छुड़ानेवास्ते अपनीमायासेउसीरंग व रूपकेबछरेदूसरे बनाकर
वहांलेआयेजब उसकदमकेतले जहांग्वालबालोंकोछोड़गयेथे
ढुंढेतबग्वालबालोंकोभीवहांनदेखकरअपनीमहिमासेजानाकि
ब्रह्मानेउनकोभी हरलेजाकर पर्वतकीकन्दरामेंछिपादियाहै ऐसा
देखकर केशवमूर्त्तिने मनमेंकहा कदाचित्ग्वालबाल अपनेघरन
जावेंगे तो उनकेमाता व पिताको बड़ादुःखहोगा ऐसाविचारकर
त्रिलोकीनाथने अपनी प्रबलमायासे उतनेग्वालबाल उसीरूप
व बोली व ज्ञान व भूषण व वस्त्रकेदूसरे बनालिये जबसन्ध्यासम
य मनहरणप्यारे सब ग्वालबाल व बछरों को जो अपनीमायासे
बनाये थे साथलिये हँसते व खेलतेहुये वृन्दाबनमेंआये तब सब
ग्वालबाल बछरेसमेत अपनेअपनेघर चलेगये व बछरे अपनी
माता व गौवोंका दूध पीनेलगे व ग्वालिनोंने अपने २ बालकोंको
बड़े प्रेमसे उपटन व तेलमलकर स्नानकराया व श्यामसुन्दर की
मायासे किसीको ग्वालबाल व बछरेहरजानेका भेदनहीं मालूम
हुआ व सबग्वालबालों केमाता व पिता व गौवैं अपना २ बालक
व बछराजानकर प्रतिदिन उनसे अधिकप्रीतिकरनेलगे॥

दो॰ माखनप्रभरचनारची तनिकबरीनहिंरेख। वहीभेषतब देखिये परकुछप्रीति विशेष॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हेराजन् ब्रह्माजी ब्रह्म
लोकमेंजाकर ग्वालबाल व बछड़ोंकेहरनेकाहालभूलगये व बृं
दाबनबिहारी नित्यमायारूपी ग्वालबाल व बछड़ोंसमेत बनमें
जाकरनई २ लीलाकरतेथे एकदिनश्यामसुन्दर उन्हींबछड़ोंको
गोबर्द्धनपर्वतकेनीचे चरानेलेगये सो उनबछड़ोंकी मातागौवैंजो
गोबर्द्धनपर्वतपरचरतीथीं उन्हैंदेखतेहीऐसेदौड़ीं जैसेसावनभादों
मैं नदीकाजलबहुतबेगसेबहताहै ग्वालोंनेलाठीसे धमकाकरगौ
वोंकोबहुतरोंकापर वहनमानकर अपने २ बच्चोंकेपासचलीआईं
औरदूसराबच्चा उत्पन्नहोनेपरभी वेमायारूपीबछड़ोंको स्तनपि
लानेलगीं व ग्वाललोगभी अपनेअपने बालकोंकोगोदमें उठा
कर प्यारकरनेलगे यहदशादेखकर बलरामजीने जोबछड़े व
ग्वालबालहरनेकेदिन श्रीकृष्णजीके साथनहीं थे बिचाराहमने
ऐसीप्रीतिगौ व ग्वालोंमेंकभीनहींदेखीथी इसमेंकुछपरमेश्वरकी
माया मालूमहोती है ऐसाविचारकर बलभद्रजीने ध्यानकरके
देखातोग्वालबाल व बछड़ेउनको श्रीकृष्णरूपदिखलाईदिये तब
उन्होंनेश्यामसुन्दरसे पूछा हेभाई पहिलेके ग्वालबाल व बछड़े
क्याहुये येसबग्वालबाल व बछड़ेमुझेकृष्णरूप दिखलाईदेते हैं
यहवचनसुनतेही केशवमूर्त्तिसबवृत्तान्तकहकर बोले हे भैयावर्ष
दिनसे मेरीयहीदशाहै हेराजन् जब इसीतरहवर्षादिन मृत्युलोक
कोबीतगया तब ब्रह्माबालक व बछड़ेहरनेकाहालयादकरके बोले
हेप्रभोमेराअभी एकक्षणनहींबीता व मनुष्योंकावर्षादिन होगया
यत्नचित्तकरदेखाचाहिये बालक व बछड़ेबिनाश्रीकृष्ण व वृन्दाब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नबासियोंकी क्यादशाहोतीहै ऐसाविचारकर ब्रह्मापहिलेउसकंद
लामेंगये तो ग्वालबाल व बछड़ोंको नींदमें अचेतदेखा फिरवहां
से बृन्दाबनमेंआये तो उसरूपके ग्वालबाल व बछड़े श्रीकृष्णके
साथ दिखलाईपड़े तबब्रह्माने आश्चर्य्यमानकर मनमेंकहाकन्द
लामें से ग्वालबाल व बछड़े यहांकिसतरहआये या श्रीकृष्ण ने
अपनीमायासे इन्हैं उत्पन्नकियाहै यहसन्देहछुड़ानेवास्ते ब्रह्मा
फिरकन्दलाकीतरफगये तोउन्होंनेग्वालबालवबछड़ोंकोउसीतर
हसोयेहुयेपाया जबफिर वहांसे बृन्दाबनमेंआये तो बैकुंठनाथकी
मायासेक्यादेखा किजितने ग्वालबाल श्यामसुन्दरकेसाथमेंथे वे
सबचतुर्भुजीरूप बैजयंतीमाला व किरीटमुकुट व पीताम्बरआदि
कपहिने विष्णुभगवान्केसामने विराजतेहैं व एक२ चतुर्भुजीरूप
केसामने ब्रह्मा व महादेव व इंद्रादिकदेवते हाथजोड़स्तुतिकरतेदि
खलाईदिये व आठोंसिद्धियां व गंगाआदिकनदियांअपना२रूप
धारणकिये उनकेसामनेखड़ीहैं व उनमेंकोईब्रह्माचारशिर व कोई
आठमस्तक व कोईब्रह्मासोलहशिरके दिखलाईदिये व इंद्रकीअ
प्सरोंकोनाचते व गन्धर्वोंकोगानासुनाते उनकेसामनेदेखा व ब्रह्मा
को सबपशु व पक्षी व वृक्षवहांकेचतुर्भुजीरूपदिखलाईदिये और
वहांबाघ और बकरी आदिकजीवोंको निर्वैरदेखा हेराजन् यहम
हिमामायारूपी ग्वालबालोंकीदेखतेही ब्रह्मानेघबड़ाकर अपनी
आंखैंबन्दकरलीं व चित्रसेचुपचापखड़ेहोरहे और ज्ञान व ध्यान
व अभिमानअपनाभूलकर मारेडरकेकांपनेलगे जबश्यामसुन्दर
अन्तर्य्यामीनेजाना कि ब्रह्मा अपनेकर्तबसे लज्जितहोकर अति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व्याकुलहुआ तब उन्होंनेमायारूपी ग्वालादिको अन्तर्द्धानकर दिया व आपअकेले कृष्णरूपसे मोरमुकुटपहिने खड़ेरहे ॥

दो० मोहबिकलअतिदेखिकेसुन्दरश्यामसुजान। प्रकटकियोजनजानिनिजविधिकेउरमेंज्ञान ॥
सो० हृदयभयो तबशुद्ध यहपूरणअवतारहरि। धिकधिक मेरी बुद्धिबैरबढ़ायों कृष्णसों ॥

हेराजन् जबबैकुण्ठनाथकीकृपासे ब्रह्माकेहृदयमेंज्ञान उत्पन्न हुआतबवह हंसपरसेउतरपड़ा व अपनेचारोंमस्तकबृन्दाबनाविहारीकेचरणोंपरधरदिये व साष्टांगदंडवत्करकेहाथजोड़करबोला॥

दो० मैं अपराधी हीनमतिपरयोंमोहकेजाल। ममकृतदोषनमानिये तुमप्रभु दीनदयाल ॥
सो० कहजानैं तुवभेवमैं ब्रह्मातुम्हरो कियो। तुम देवनके देव आदि सनातन अजितअज ॥
दो० करुणाकरि रोयोमहा कहासकै गुणगाय। दृगजलसे धोयोमनो माखनप्रभुके पांय ॥

हेराजन् ब्रह्मानेरोकर केशवमूर्त्तिसेकहा हेदीनानाथ आपने कृपाकरके मेराअभिमान दूरकिया ऐसाज्ञानकिसीकोनहींहै जो तुम्हारेचरित्र व लीलाकोजानै सारेसंसारको तुम्हारीमायानेमोहिलिया दूसराकोई ऐसानहींहै जोआपको मोहनेसकै व आपकर्त्ता पुरुषहोकरमेरेऐसे अनेकब्रह्मा व ब्रह्माण्डतुम्हारेएक२ रोममेंबँधे हैं मैं किसगिनतीमेंहूं हेदीनदयालु मेराअपराधक्षमाकीजिये ॥

दो० हौंअसाध्यअतिहीनमतिलुमगतिअगमअगाध। माखनप्रभुपरचोलियोकियोमहाअपराध ॥

जबइसीतरहबहुतसीविनतीब्रह्मानेकी तबब्रजनाथजीनेहँसकर कहा हेब्रह्मातुमसबजगत्की रचनाकरतेहो तिसपरभी मेरीमाया तुम्हैंलगीहै यहसुनकर ब्रह्मानेविनयकिया हेमहाप्रभुतुम्हाराभेद कोई नहींजानसका आपकीमाया ऐसीप्रबल है जिसने किसीको नहींछोड़ा यहदीनवचनसुनतेही श्यामसुन्दरने ब्रह्माकाशिर अपनेचरणोंपरसेउठाकरछातीमें लगालिया व कृपाकरके आंशूब्रह्मा काअपनेहाथसे पोंछदिया ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० यद्यपि लियो उठायकैमाखनप्रभुउरलाय। तद्यपिरहेउ लजायकै दृगअरु शीशनवाय॥

जबब्रह्माने श्रीकृष्णजीकीकृपा अपनेऊपरदेखी तबसबग्वाल बाल व बछड़ोंको वहांलेआदिया॥

चौदहवां अध्याय॥

ब्रह्माको श्यामसुन्दरकी स्तुतिकरना॥

शुकदेवजीबोले हेराजन्जबब्रह्माने श्रीकृष्णजीको अपनेऊपर प्रसन्नदेखा तबअपनाअपराध क्षमाकरानेवास्ते हाथजोड़कर य हस्तुतिकी कि मैंतुम्हारेश्यामघटा ऐसेस्वरूपकोजो बिजुलीकेस मानचमकताहुआ पीताम्बरपहिने व मोरमुकुट व फूलोंकीमाला धारणकिये हो दण्डवत्करताहूं व बांसुरी व लकुटियालिये मो हनीमूर्त्तिपर न्यवछावरहोताहूं व आपजगत्केउत्पन्न व पालन व नाशकरनेवालेवसुदेवजीकेपुत्रहैं व यहशरीरतुम्हारापांचतत्त्व से नहींबना अपनीइच्छासे यहरूपतुमने धारणकियाहै व मैंब्रह्मा होने परभी तुम्हारे इसरूपकी महिमानहीं जानता दूसरेको क्या सामर्थ्यहै जोआपके अनन्तरूपसगुणका भेदजानसकैभक्तिकिये बिनाकोई मनुष्यज्ञानके अभिमानसे तुम्हारीमहिमानहीं जान सक्ता जो कोई मनसावाचा कर्मणासे तुम्हारे शरणमेंहोरहा वहतु म्हारेभेदको पहुंचकर मुक्तिपदवीपाताहै मैंअग्निकीचिनगारीके समानहूं अपनीअज्ञानता से तुम्हारेमाया मोहमें लपटकर मैंने बालक व बछड़ेचुरायेथे औरआप अग्निकासमूहहैं सोमेराअपरा धक्षमाकीजिये चिनगारीको ऐसीसामर्थ्य नहींहैजो अग्निकेढेरसे बराबरीकरसकै व आपसबसे रहितहैं व संसारीवस्तु तुम्हारीमाया से उत्पन्नहोती है व आदि व मध्य व अन्तमें तुम्हारी मायाका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रकाश रहता है और सिवायआपके संसारीवस्तु नाशहोजाती है मैंने अपनीअज्ञानतासे तुम्हारीपरीक्षा लेनेचाहाथा सोबहुतसे ब्रह्मा व महादेवआदिक देवतोंको ग्वालबालों के सामने हाथजोड़े खड़ेदेखकर अपनेदंडको पहुँचा अबतुम्हारे शरणआयाहूं मेराअपराधक्षमाकीजिये जिसतरह अज्ञानबालक अपनेपिताकीगोदमें बैठकर बहुतअनुचित करताहै परपिताउसका प्रेमकीराह बुरानहीं मानता व पेटमें लातमारनेसे माता विरोधनहीं करती उसीतरह मुझअज्ञान अपनेबालकका अपराध आपक्षमाकीजिये किसवास्ते कि तुम्हारे विराटरूपमें चौदहोंलोकका व्यवहाररहताहै और आप अपने छोटेस्वरूपसे चिउँटीकेतनुमें व्यापकरहते हैं मैंने अपनेको जगत्का उत्पन्नकरनेवाला समझाथा इसीकारण लज्जितहुआ व संसारीव्यवहार स्वप्नकेसमान झूठाहोकर आप अविनाशी पुरुष आनन्दमूर्त्ति सदास्थिररहते हैं व तुम्हारीमाया आपको नहींव्यापती सोअपनेचरणोंकीभक्ति मुझेदीजिये व इसब्रजकीगौ व ग्वालिनियोंका धन्यभाग्यहै जिनकादूध आपबालक व बछरा रूपहोकर पीतेहैं यज्ञ व होमसे तुम्हारापेट नहीं भराथा सो ब्रज की गौ व अहीरियोंने अपनादूधपिलाकर भरदिया मेरी क्यासामर्थ्यहै जो ब्रजबासियोंके भाग्यकी बड़ाई वर्णनकरसकूं॥

सो० भक्तनके सुखदान भक्त बछल भगवानहरि। नारी पुरुषसमान प्रेमभावके बश सदा॥

हे महाप्रभु आपऐसे दीनदयालुहैं जिसने अपनीअज्ञानता से तुम्हाराअपराध किया उसपरभी आपदयालुहोकर ज्ञानरूपीदीपक उसकेहृदयमें प्रकाशितकरदिया संसारीजीवोंको तुम्हारे स्म

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रण व भक्तिबिना भवसागर पारउतरनेवास्ते दूसरामार्ग उत्तम हींहै इसलिये सबकोचाहिये कि तुम्हारे सगुणरूपका ध्यान व नामका स्मरणकरके लीला व कथा अवतारोंकी प्रेमसे सुनाकरैं व एकक्षणभी तुम्हैं न भुलावैं तब उसकेहृदयमें ज्ञानकाप्रकाश होगा पर बिनाकृपा व दयातुम्हारी किसीका चित्त आपकेचरणों में नहींलगता इसलियेसदा अपने सच्चेमनसे तुम्हारीदया व कृपा का भरोसा रखनाचाहिये हे परब्रह्मपरमेश्वर वृन्दावनमें जितने जीवजड़ व चैतन्यहैं उनकीबड़ाई कोईनहींकरसक्ता मनुष्य इस वास्ते तप व जपकरते हैं जिसमें हमदेवताहोवें व देवतोंकी यहइच्छा आठोंपहर रहतीहै कि तुम्हारेचरणोंकी सेवाकरैं व दिनरात तुम्हारा चन्द्रमुखदेखकर अपनेनेत्रोंको सुखदेवैं परयहबात देवतोंको प्राप्तनहींहोती जो तुम्हारीकृपासे वृन्दाबन बासियोंको सहजमें मिलीहै और देवतोंको यहसामर्थ्य नहींहै जो ब्रजबासियों की बराबरी करसकैं तुम्हारे आदि व अन्तको वेदनहीं जानता व बड़े २ योगी व मुनीश्वरोंको आपकादर्शन ध्यानमें जल्दी नहीं मिलता और हम व महादेव आदिक देवते व ऋषीश्वर रातिदिन तुम्हारे चरणोंकाध्यान हृदयमेंधरकर यहअभिलाषा रखते हैं कि तुम्हारे चरणोंकीरज मिलती तो उसे अपने मस्तकपर लगाते परहमैं वहजल्दी नहींप्राप्तहोती व यशोदा आपको दिनरातगोदमें खेलाती हैं व ग्वालबालोंके साथ आपबछवेचराकर यह सब लीला हरिभक्त व सबजीवोंके भवसागरपारउतारने वास्ते करते हैं कदाचित् मैं जन्मभरि वृन्दावनवासियों के भाग्यकी बड़ाई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करूं तौभी उसकावर्णन नहींहोसक्ता और सबब्रजबासी अपना तन मन धन आपपर न्यवछावर समझतेहैं केवल मुक्तिदेकर तुम उनकी सेवासे उऋणानहीं होसक्ते किसवास्ते कि मोक्षतो आपने पूतना व अघासुरआदिकको जो तुम्हाराप्राण मारनेआये थे दियाहै कदाचित् आपमुझे ब्रजमें घास औ मट्टीकाभी जन्म देते तो तुम्हारेचरण पड़नेसे कृतार्थहोता॥

दो० श्री वृन्दाबन समनहीं तिहूंलोक में और। माखन प्रभु खेलैं सदा अति छबिसे ता ठौर॥
करिस्तुति गदगदबचन दृगजल पुलकशरीर। परेचरण पंकजबहुरि विधि अतिप्रेमअधीर॥
सो० तबहँसिबोलेश्याम गर्वप्रहारी भक्तहित। जाहु आपनेधाम वचन हमारो मानि अब॥

हे राजन् जबब्रह्माने अतिविनयसे यहस्तुति वृन्दाबन बिहारी की की तबब्रजनाथजीने ब्रह्माकाशिर अपनेचरणोंपरसे उठाया और उससेकहा तुम ब्रजभूमिकी परिक्रमाकरतेहुये अपने लोक कोजावो सो ब्रह्माश्यामसुन्दरसे बिदाहोकर चौरासीकोश ब्रजभूमिको दहिनावर्त्त परिक्रमाकरके ब्रह्मलोकको चलेगये व मनहरण प्यारे पहिले बछड़ोंको साथलिये ग्वालबालोंकी मण्डली में जहां वे कलेवाकररहेथे आनपहुँचे परंतु हरिइच्छासे वर्षदिन बीतनेपरभी किसीग्वालबालोंने अपने हरिजानेका भेदनहीं जाना और वहलोग श्यामसुन्दरको देखतेही कहनेलगे हे भाई तुमबछवे तुरंतखोजकर लेआये हमने तो अच्छीतरह भोजनभी नहीं किया यहसुनकर श्रीकृष्णबोले हे भाइयो सबबछड़े निकटचरते हुये मिलगये सो मैं जल्दीसे उन्हैं बहोरकर लेआया ऐसाकहकर श्यामसुन्दरने ग्वालबालोंकेसाथ भोजनकिया जबसन्ध्या हुई तबउनसे कहा अबघरचलो यहवचनसुनतेही सब कोई घरको

Mu... Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चले उससमय वृन्दाबनविहारीने ऐसी मुरलीबजाई कि सबज ड़ व चैतन्य उसकाशब्दसुनकर मोहितहोगये और सबवृन्दाबन के निकटपहुँचे तबसब ब्रजबाला मुरलीकी ध्वनिसुनकर अपने२ घरसे दौड़आईं मनहरण प्यारेका दर्शनकरके अपने अपने लो चनोंको सुखदिया और दिनभरगोपियोंका यहनेमथा जबवृन्दा बनबिहारी बछवेचरानेजातेथे तबउनका गुणानुवाद व चर्चा आ पसमें करके दिनकाटतीथीं जबसन्ध्यासमयकेशवमूर्त्ति बनसेआ ते थे तब उनके चन्द्रमुखकी चमकदेखकर अपने हृदयकी तप न मिटातीथीं ॥

दो० माखन प्रभुको रूपरस प्रेम सहित सुखपाय। पीवैंब्रजबासी सबै चितवत तृषाबुझाय॥

हेराजन् उसदिनग्वालबालोंने अघासुरकेजानेकावृत्तान्त अप ने माता व पिता व नन्द व यशोदासेकहा यहहालसुनतेही यशो दापछताकरकहनेलगीमेरेबरजनेपरभीकन्हैयाबनकाजानानहीं छोड़ताकईबेर इसकाप्राणराक्षसों के हाथसेबचाहै तिसपर भी नहींडरता ॥

दो० जन्मभयोजबश्यामको तबसे यहीउपाय। कहाहोयहमरेयतन बिधिगति अगमअगाध॥

उसदिनभी यशोदानेबहुतसा दान व दक्षिणाकेशवमूर्त्ति से दिलवाकर बड़ीखुशीमनाई हेराजन्कोई बालचरित्रश्यामसुंदर काजोपांचवर्षकी अवस्थातक कियाथा सच्चेदिलसेकहै व सुनै कभीकोईचिन्ता उसकेपासनहींआसकी व संसारमेंमनोकामना पाकर अन्तसमय मुक्तिपाता है इतनी कथासुनकर परीक्षित ने पूछा हे शुकदेवस्वामी इतनी प्रीति गोप व गोपियोंको श्यामसु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्दरकी किसकारणथी जो अपनेपुत्रोंसेभी उनकोअधिकप्यारे जानतेथे शुकदेवजीबोले हेराजन् संसारमेंसबको पुत्र व धनपरब हुतप्रीतिहोती है परन्तुअपनेप्राणको उनसेभी अधिकप्याराजान तेहैं जिसतरहघरमें आगलगतीसमयमनुष्य अपनीसामर्थ्य भर पुत्र व धनकोबचाताहै जबउसकोबचानेनहींसक्ता तबअपनाप्राण लेकरभागजाताहै उसीतरहश्यामसुन्दर सबजीवोंकेप्राणथे इसी वास्ते सबव्रजबासी उसमोहनीमूर्त्तिको अपनेप्राणसेअधिक प्या राजानतेथे व उन्होंनेअपनीमायासे सबकाचित्त मोहलिया ॥

दो० माखनप्रभुभगवानहैं घटघट व्यापकसोय। सबकेजीवनप्राणहैं क्योंनहिं प्रीतमहोय ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

बलरामजी करके धेनुकराक्षसका बध करना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् जबश्यामसुन्दरको आठवांवर्षलगा तब एकदिन उन्होंनेयशोदासेकहा ऐमैयाअबमैं बनमेंगौचराने जाऊँगा सो तुमनन्दबबासेकहौ कि वे मुझेजानेदेवें जब यशोदा नेयहबातनन्दरायसेकही तबउन्होंने शुभसायतपूंछकरदशहज़ा र गौ श्यामसुन्दरसेदानकराई व कार्त्तिकसुदीअष्टमीको उन्हैं गौ चरानेवास्ते भेजतीसमययहबातकही ऐबेटा तुमबनमें ग्वालोंके साथरहना व ग्वालोंकोबुलाकरसमझादिया हे भाइयोआजसे श्याम व बलरामकोभी गौचरानेवास्ते अपनेसाथलेजायाकरो पर बनमेंउनकोअकेलेनछोड़ना ऐसाकहकर नन्दजीनेदोनों भा इयोंको दहीकातिलकलगाके बिदाकिया जबश्यामसुन्दरग्वाल व गौसमेतवृन्दाबनमेंपहुँचे तबवहांपर एकतालाबपक्का निर्मल

...UP State Muse... Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जलसे भराहुआ अतिशोभायमानदेखकर गौवोंको चरनेवास्ते छोड़दिया और आपग्वालबालोंकेसाथ आनन्दपूर्वकखेलनेलगे कभीग्वालबालोंसेकहते मैंतुम्हारीहथेलीपर अपनाहाथमारकर भागताहूं तुममुझेदौड़करपकड़ो कभीकिसीग्वालबालकोहाथी व किसीकोघोड़ाबनाके उसपरचढ़करकहते तुमहाथी व घोड़ेकी बोलीबोलो व कभी आपगौवोंकेपास बाघकीबोलीबोलकर उन्हें डराते इसीतरहअनेकलीलाकरकेसबकोसुखदेतेथे उससमयबृंदा बनबिहारी ने शोभाउसबनकीदेखकर श्रीदामाआदिक ग्वाल बालोंसेकहा तुमलोगचैतन्यचोलापाकर बलदाऊजीकीमहिमा नहींजानते देखो इससुन्दरस्थानमें बृक्षजड़रूपहोकर झुकेहुये बलरामजीकेचरणोंको दण्डवत्करतेहैं इन्हेंयहइच्छाहै कि जड़ रूपसेछूटकर मनुष्यका चैतन्यचोलापाते तो तुम्हारीसेवाकरके कृतार्थहोते व सदासेसंसारमें ऐसीरीतिहै कि जिसकेपास जोबस्तु उत्तमहोतीहै वह अपनेस्वामीकोभेजदेताहै इसलिये यहसबबृक्ष परोपकारीहोकर अपना २ फल व फूल बलदाऊजीकोभेटदेते हैं और ये भँवरेफूलोंपरगूंजतेहुये जो देखतेहो सो बलदाऊजी का यशगातेहैं व मोरलोगअपना २ नाचदिखलाकर कोकिलाआ दिकपक्षी अपनी २बोलीउन्हेंसुनातेहैं और यहसबबृक्षअपनेफूल व फलोंसेराही व बटोहियोंकी मेहमानीकरते हैं इसवास्ते इनको बड़ादाता व परोपकारी समझनाचाहिये और तुमलोगजितने जीवजड़ व चैतन्यबृन्दावनमेंदेखतेहो यहसबबलरामजीकेचर णोंमें प्रीतिरखनेसे बैकण्ठजानेयोग्य हैं और यहचौरासीकोश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by.Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्रजभूमिधन्यहैं इसकीबड़ाई कोईनहींकरसक्ता व तुम्हारेचरण इसधरतीपरपड़नेसे यहांसदा बसन्तऋतुबनीरहतीहै व बृन्दाबन केसबजीवजड़ व चैतन्यजीवनमुक्त हैं हेराजन् ऐसीबड़ाई बृन्दा बनकीकरके जबश्यामसुन्दर एकऊँचेटीलेपरचढ़कर बैठे व अप नेचौगिर्द उपरनाघुमाकरकालीपीली धौरीधूमरीगौवोंकानामले करपुकारनेलगे तबसबगायेंदौड़ती व हांफतीहुईंकेशवमूर्त्तिकेपास आनपहुँचीं उससमयउनकी ऐसीशोभामालूमहोती थी जैसेरंग बरंगकीघटा चन्द्रमाकेनिकटचारोंतरफसेघिरआवे फिरमनहरण प्यारेने गौवोंकोबनमेंचरनेवास्ते हांकदिया और आपबलरामजी समेत कलेवाकरकेकदमकीछायामें एकसखाकीजंघापर शिरधर करसोरहे जबनिद्राखुली तबबलरामजीसेबोले ऐभाईहम व तुम अलग २ ग्वाल व गाइयोंकी टोलीबांधकर आपसमेंफूलोंसेलड़ें बलभद्रजीनेकहा बहुतअच्छा तबआधे२ ग्वाल व गौ दोनोंभाइ योंनेबांटलिये व अनेकरंगकेफूलतोड़कर अपनी २ झोलीसबोंने भरली व अनेकभांतिकाबाजा अपने २ मुखसेबजा के एकदूसरे कोफल व फूलमारकर आपसमेंखेलकिया कुछदेरतक इसीतरह खेलकर फिर अपनी २ गौ अलगचरानेलगे इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हेराजन् जिसपरब्रह्मपरमेश्वरकादर्शन ब्रह्मा व महादेव आदिकदेवतोंको जल्दीध्यानमेंनहींमिलता वह वैकुण्ठ नाथ मुरैलेकेसंगनाचकर ग्वालबालोंकेसाथ खेलतेथे किसेसाम र्थ्यहै जो उनकीलीला व महिमाबर्णनकरिसकै जब गौ चराती समयबलरामजीसबग्वालबाल व गायोंसमेतएकतरफबनमें चले

...State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गये व श्यामसुन्दरदूसरेबनमेंजानिकले उससमयएकग्वालने ब
लरामजीसेकहा हेभाईयहांसेथोड़ीदूरपरताड़का ऐसाबनहैजिस
मेंअमृतकेसमान मीठे २ फललगेहैं सोवहांपरधेनुकनाम राक्षस
गर्दभरूपसे उनफलोंकी रखवारीकरके इसतरहआपखाता और
न दूसरेकोखानेदेताहै जिसतरहसूमकाधन किसीकेकामनहींआ
वता सोहमलोगतुम्हारीकृपासे वे फलखायाचाहते हैं यहसुनकर
बलरामजीने कहा अभीचलकर खुशीसेवहफलखावो राक्षस
तुम्हारा क्याकरसक्ता है ऐसाबचनसुनतेही ग्वालबेडर हो बल
दाऊजीके साथ उसबनमें चलेगये जबबलभद्रजीने एकवृक्षको
पकड़कर जोरसेहिलादिया व सबफल उसके टूटकर गिरपड़े तब
धेनुकराक्षसफलगिरनेकाशब्दसुनतेही चिल्लाताहुआ दौड़ाउसे
आतेदेखकर सबग्वालबाल मारेडरके भागगये व अकेले बलरा
मजी वहांखड़ेरहे जब उसगदहेने आतेही एकदुलत्ती संकर्षण
को मारी तबबलभद्रजीने उसकीटांगपकड़कर पृथ्वीपर पटकदि
या जब वहफिर लोटपोटकर खड़ाहोगया व धरतीसूंघकर कान
दबायेहुये बलरामजीको दुलत्तियां मारनेलगा तबहलधरजीने
दोनोंटांग उसकीधरकर एकऊंचेवृक्षपर ऐसापटका कि वहउसी
साइत मरगया व वृक्षटूटकर गिरपड़ा उसकोमरादेखतेही बहुतसे
राक्षस उसकेपार्श्ववर्त्ती बलरामजीको मारनेवास्तेआये सो उन
लोगोंकोभी बलभद्रजीने पलभरमेंमारडाला उससमय देवतोंने
बलरामजीपर फूलबर्षाकर बाजनखुशीके बजाये हेराजन् ब्रह्मा
व महादेव आदिक देवते ध्यान व पूजा छोड़कर बैकुंठनाथकाद

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्शन करने वृन्दाबनमें आयाकरतेथे धेनुकराक्षसके मरनेउपरांत ग्वालबालोंने इच्छापूर्वक वे फलखाया व अपनी अपनी झोरी घरलेआनेवास्तेभरली व उसबनमेंनिर्भयहोकर गायचरानेलगे॥

दो० बलमोहन घरको चले जानि सांझकीबेर। लीन्हीं गायें घेरसब मुरली की धुनिटेर॥

हे राजन् जब श्याम व बलराम हँसते व खेलते ग्वाल बाल व गायों समेत घरआये तब ग्वालोंने वहफल ताड़काबृन्दाबनबासियोंको बांटकरकहा आजबलरामजीने बनमें धेनुकादिक बहुतसे राक्षसोंको मारा यहबातसुनकर सबकोई प्रसन्न हुये दूसरे दिन श्यामसुन्दर फिर ग्वालोंकेसाथ गौचरानेगये व बलरामजी उसदिनघरपररहे सोबनमेंचरतीसमय सबगौछिटकगईं जबग्वाल लोग श्रीकृष्णजीसे बिलगहोकर गौवोंकोढूंढ़नोनिकले और धूप मेंब्याकुलहोकर अतिप्यासेहुये तब उन्होंनेगौवोंसमेत यमुनाकिनारे जाकरपानीपिया॥

दो० गोप गाय अँचवतभये कालीदहको नीर। निकसत सब अकुलाय कै बैठगये जलतीर॥
सो० परेसकल मुरझाय जहां तहां बिषझारते। ग्वालबच्छ अरु गाय भये मनोबिन प्राणसब॥

हे राजन् जबसबग्वाल व गौ कालीनागकेबिषसे जो यमुनामें रहताथा अचेतहोकर गिरपड़े व श्यामसुन्दरकेपास देरतक नहींआये तबमनहरणप्यारेने उन्हेंढूंढ़ते व पुकारतेयमुनाकिनारे जाकर क्या देखाकिवह सब कालीकुण्डके किनारेमरेहुये पड़े हैं यहदशाउनकीदेखकरकेशवमूर्त्तिनेविचाराकिकालीदहकाजल पीनेसे यहदशा इनकीभईहै मैं घरपरजाकर इनकेमाता व पिता से क्या कहूंगा इन्हें जिलानाचाहिये ऐसाविचारकर ब्रजनाथ जीने जैसे अमृतरूपीदृष्टि से उनकीओरदेखा वैसेसबग्वालबाल

Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गायोंसमेत जीउठे जिसतरह कोईनींदसे जागे उसीतरह वहलो ग उठकर अपनीआंखैं मलनेलगे व मुरलीमनोहरको वहां देख तेही उनकेगलेमें लिपटगये तबदुःख भंजनने कहा तुमलोगों ने मुझसे विलगहोकर कालीदहका जलपिया इसीकारण तुमअ चेतहोगयेथे सो परमेश्वरने तुम्हारा प्राणबचाया यहसुनकर ग्वा लबालोंने कहा यमुनाजलपीनेसे हमारी यहगति हुईथी सो तुम ने आनकर जिलादिया ब्रजबासियोंकी रक्षाकरनेवाले आप हैं जबसंध्यासमय मनहरण प्यारे ग्वाल व गायोंको साथलिये मु रलीबजातेहुये बृन्दाबनके निकटपहुँचे तबसबब्रजबाला अपने २ घरका कामकाज छोड़कर उनकेदर्शनवास्ते दौड़आईं व उनकी छबिदेखकर अपनी २ आंखैं ठंढीकीं व ग्वालबालोंने घरपहुँच कर नन्द व यशोदा आदिकसेकहा आजहमलोग कालीदहका जलपीनेसेगायोंसमेतमरगयेथेसोश्रीकृष्णजीनेहमैंजिलादिया॥

दो० अबहम काहू डरत नाहिं हरि हैं हमैं सहाय। बलमोहन के बल फिरत बन बन चारतगाय॥
सो० परतगाढ़ जबआय तबतब होत सहायहरि। चिरंजीव दोउभाय यशुमति यह तेरे कुंवर॥

यशोदा व रोहिणी व गोपियां यहहालसुनकर बहुतप्रसन्न हुईं व नन्दजीने कहा कि जोबात गर्गजीकहगयेथे वहआंखों से दिखलाईदेती है श्रीकृष्णजीने कोई अवतारहोकर बड़ेभाग्य से मेरेयहां जन्म लियाहै जबयशोदाने श्यामसुन्दरको शय्यापर सुलाया तबउन्होंने कालीनागको यमुनाजलसे निकालना वि चारकर यशोदासेकहा ऐ मैया मैंने ऐसा स्वप्नदेखाहै जानो किसी नेमुझेयमुनाजलमें गिरादियायहसुनतेही नन्द व यशोदाने मो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हनप्यारेके हाथसें कुछदानकराया स्वमकी वातझूठी जानकरअ
पने मनको धीर्य दिया॥

सोलहवां अध्याय॥

श्रीकृष्णजीका कालीनागको यमुना जलसे निकालना॥

शुकदेवजीबोले हेराजन्श्रीकृष्णजीने यहविचारा किकाली
नागका यहांरखना अच्छानहींहै किसवास्ते किमनुष्य व पशुप
क्षीजोकोई इसदहकाजलपीवेगा वहमरजायगा व यहांकालीना
गके रहनेसे यमुनाको दोषलगता है इसलिये इसको यहांसे नि
कालनाचाहिये उसनागके बिषकी ज्वालासे कालीदहका जल
चारकोशतक खौलता था इसलियेकिसीजीव पशुपक्षीआदिक
कोऐसीसामर्थ्यनहीं थीजो वहांजासके कदाचित् कोईधोखेसेभी
जातातोजलकर उसदहमें गिरपड़ताथा और उसजगहकोई वृक्ष
नहींठहरकर केवल एकबृक्षकदमका अविनाशी उसजगहपरथा
इतनीकथासुनकरराजापरीक्षितनेपूंछा हेस्वामी इसका क्याकार
णहै जो उसबृक्षकानाशनहींहुआ शुकदेवजीबोले हे राजन्बीच
किसीयुगकेउस बृक्षपरगरुड़जी अपनेमुखमें अमृतलियेहुयेआन
बैठेथे सोउनकीचोंचसे एकबूंद अमृतउसबृक्षपरागिरपड़ा था इस
लियेवहबृक्षहरारहकर उसेकालीनागकाविष प्रवेशनहींकरसक्ता
था जबश्यामसुन्दरनेकालीनागके निकालनेकाविचारकियातब
उनकी इच्छानुसारनारदमुनिकंसकेपासगये जबकंसनेबड़ेआदर
भावसे नारदजीकोदण्डवत्करके बैठाला तबउन्होंनेपूंछा हेराज
तुमक्यों उदासमालूमदेतेहो यहसुनतेहीकंसहाथजोड़करबोला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महाराजगोकुलमेंनन्दजीकेयहां दो बालकबड़ेबलवान्उत्पन्न हुये हैं जिन्होंनेअघासुर आदिकराक्षसोंको मारडाला उनसेमुझे अपनेप्राणका खटकादिखलाई देताहै॥

चौ० यहदोउ ब्रजमें नन्दकुमारा। जानि परत हैं कोउ अवतारा॥
कहत जिन्हैं बलरामकन्हाई। तिनकीगति मतिजानिनजाई॥
अबतुममुनिकछुकहौविचारा। जोहिबिधिमारौं नन्दकुमारा॥
मुनि हरिके गुणनीके जाने। सुनिनृपबचन मनहिंमुसकाने॥

दो० तबमुनिबोले नृपतिसों सत्यकहोतुमबात। वेदोऊ अवतारहैं उनगति जानि न जात॥
सो० हैं वे तुम्हरे काल प्रगट भये ब्रजआइके। नन्दगोप के बाल तुमउनको राखो नहीं॥

ऐसाकहकर नारदमुनिबोले हेकंस मैं एकउपाय इसकाबत लाताहूं तुमनन्दजीको वास्तेभेजने फूलकमल कालीदहकेकह लाभेजो जबवहबालक वहांफूललेनेजावैगा तब उसकोकाली नाग डसलेवैगा जबऐसासमझाकर नारदमुनिचलेगये तबकंसने उसीसाइतनन्दजीको यहकहलाभेजा कि कल्हकरोर फूलकमल कालीदहसे मँगवाकरहमारेपासभेजदेव नहींतोहमतुम्हाराघरबा रलूटकर ब्रजसेनिकालदेवैंगे और तुम्हारेबेटोंको कैदकरैंगे श्याम सुन्दर अंतर्य्यामीयहहालजानकर उसदिनगौचरानेनहींगये ग्वा लबालोंकेसाथ खेलतेरहे जबऐसासंदेश कंसकानन्दरायकेपास पहुंचा और उन्होंनेघबराकर उपनन्दआदिक गोपोंसेयहहाल कहा तबसबवृन्दाबनबासी शोचितहोकर आपसमेंकहनेलगेहम लोगोंसेकालीदहकाफूल आनाबड़ाकठिन है हमैं तो अपनेप्राण का कुछडरनहीं कंसमारै चाहैछोड़ै परयहीबड़ाशोचहै किश्याम व बलरामको कैदकरैगा कोई ऐसाठिकाना देखनेमें नहींआता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जहां इनदोनोंबालकोंकोछिपायरखतेएकनेकहाचलो राजाकंस कीबिनतीकरें व जितनादण्डमांगे सो देवैं आजतककंसने ऐसा क्रोध कभी नहीं किया था॥

दो० मेरेसुतदोउ नृपतिउर खटकतहैं दिनरात। आजकहेउ ऐसोबचन बलमोहनपरघात॥
सो० चढ़िहैंब्रजपरधाय काल्हिसबनपरकोपकरि। भयो मरन अबआय कोराखै कितजाइये॥

हे राजन्नन्दयशोदाआदिक उसीशोचमें बैठेरोरहेथे जबमुरलीमनोहर अन्तर्य्यामी सबकोदुखीदेखकरघरपरआये और नंदरानी उन्हैंगोदमें उठाकरअतिबिलापकरनेलगी तबश्यामसुन्दरनेपूंछा ऐमैया तूक्यों इतनारोतीहै यशोदाबोली तूमेररोनेकाहाल जाकर अपनेबापसेपूंछले यहबचनसुनतेही श्रीकृष्णजीनन्दकेपासआये व उन्हैंउदास व रोतेहुयेदेखकरपूंछा ऐबाबातुमक्योंइतनेव्याकुलहो यहबचनअपनेलालका सुनकरनन्दजी बोले हे बेटा जबसे तुम्हाराजन्महुआ तबसेराजाकंसने तेरेमारनेवास्ते कैसे २ राक्षसों को भेजा परहमारे कुलदेवतासहायहुये जो तुम्हाराप्राण बचा॥

दो० कालीदहके फूलअब पठयोभूपमँगाय। तबसे यह गाढ़ी पड़ी अबको करै सहाय॥
सो० जोनहिंआवैफूललिख्योकंसम्वहिंडाटिकै। करोंब्रिरज निरमूल बांधिमँगावोंतुवसुतन॥

ऐबेटा वहांकाफूलआनाबहुतकठिनसमझकर मुझेशोचहुआ हैयहसुनकर श्यामसुन्दरनेकहा ऐबाबा जिसदेवतानेतुम्हारी सहायतापहिलेकीथी उन्हींकाध्यानकरो वह फिर तुम्हारीसहाय ताकरैंगे जबउनकेसमझानेसेनन्दआदिकब्रजबासियोंको कुछधीर्य्यहुआ। तबअपने २ कुलदेवतों का ध्यानहाथजोड़करकिया व श्यामसुन्दर यमुनाकिनारेजाकर ग्वालबालोंसे गेंदखेलनेलगे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जब खेलतीसमय केशवमूर्त्तिने जानबूझकर श्रीदामाकी गेंदको लीदहमें फेंकदी तबउसने श्यामसुन्दरके कमरमें हाथडालकर कहा मेरीगेंदलादेव बिनालिये तुमको नहींछोड़ूंगा दूसरा ग्वालबाल मुझे मतसमझो मोहनप्यारे ने श्रीदामासे कहा मेरी फेंट छोड़देव थोड़ी बस्तुकेवास्ते झगड़ा मतिबढ़ाओ तैंने छोटेबड़ेका विचार न करके मेरीकमरमें हाथडालदिया तूहमारीबराबरी करता है मेरेप्रतापको नहींजानता मैंने तेरेसामने पूतना व बकासुर आदिकराक्षसोंको मारडालाथा तिसपरभी तू हमसे नहींडरता यहबातसुनकर श्रीदामाबोला तुम बड़मनुष्यकेबेटा होनेसेकुछ राजा नहींहोगये यहां हम और तुम दोनोंबराबर हैं बिनागेंद दिये हमारीतुम्हारी नहींबनैगी और तुमने राक्षसोंको मारा तो क्याहुआ अबराजाकंसने कालीदहके फूलमांगेहैं पहुँचाओगेतो मैं जानूंगा जबकंस काल्हितुमको पकड़मँगावेगा तबतुम्हारी सामर्थ्य मालूमहोगी॥

सो० सकल देव शिरताज पार न पावें ब्रह्मशिव। ताहि गेंदकेकाज फेंट पकड झगरत सखा॥

हेराजन् ऐसाकठोर बचनसुनकर बैकुण्ठनाथने कहा तू मूर्ख सम्भालकर बात नहींकरता कंसकाडर मुझे क्या दिखलाता है मैं फूललेनेवास्ते यहांआयाहूं आजकमलकेफूल कंसको भेजकर ब्रजबासियोंका शोच मिटाऊंगा तेरेसामने कंसके शिरकाबाल खींचकर उसेमारूंगा ऐसाकहकर मुरलीमनोहरने क्रोधसे श्रीदामाको धक्कादेदिया व कमर अपनी उससेछुड़ाकर कदमकेवृक्षपर चढ़गये तबग्वालबालोंने हँसीसेतालीबजाकर कहा कि श्यामसु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्दर श्रीदामाकेडरसे भागकर वृक्षपर चढ़गये व श्रीदामा रोकर कहनेलगा मैं जाकर तुम्हारेमाता व पिता से गेंदफेंकदेनेका हाल कहताहूं तबब्रजनाथजी ललकारकरबोले मैं तेरीगेंद लेआनेवा स्ते जाताहूं ऐसाकहकर मनहरणप्यारे कालीदहमें कूद पड़े॥

दो० कोमलतन अति सांवरो साजे नटवरसाज। जलभीतर पैठे तहां जहँ सोवत अहिराज॥

हेराजन् जबश्यामसुन्दर यमुनाजी में पैठगये तबसबग्वाल बाल श्रीदामाको गालियां देतेहुये यमुनाकिनारे हाथफैलाकर रोनेलगे व गौवें चारोंओर मुखबायबायकर चिल्लानेलगीं औरउनमेंसे दोबालक रोतेहुये घरकीओर खबर देनेवास्ते चले और उससमय वृन्दाबनमें अनेकप्रकारका अशकुनहोनेसे नन्द व यशोदा को बड़ाशोचहुआ तब वे केशवमूर्त्तिको ढूंढ़ने निकले और यशोदानेनन्दरायसेकहा आजश्रीकृष्णके साथ बलरामभी नहीं परमेश्वरकी कृपासे मेराप्राणप्यारा कुशलरहै॥

दो० चली रसोई करनमें छींकभई मोहिं आज। आगेहोय बिलारि पुनि गई दूसरे भाज॥

हेराजन् जिससमय नन्द व यशोदा शोचकरते व मनहरण प्यारेको ढूंढ़तेहुये चलेजातेथे उसीसमय उनदोनों ग्वालबालोंने रोतेहुये आनकरकहा ऐ यशोदा माता नन्दलालजी गेंदखेलतेहुये कदमकेवृक्षपर चढ़गयेथे सो वहांसे कालीदहमेंकूदकरडूबगये यहवचन सुनतेही नन्द व यशोदा व्याकुलहोकर गिरपड़े व यशोदाने नन्दजीसेकहा मेरेप्राणप्यारेने जो रातिको स्वप्नदेखा था वहबात सच्चहुई जबवृन्दाबनमें यहसमाचार पहुँचा तब रोहिणी व वृषभानुआदिक सबगोपी व सबग्वाल अपना अपना शिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व छातीपीटते नन्द व यशोदासमेत दौड़ेहुये यमुनाकिनारे पहुँचे और वहांमोहनीमूर्त्तिको न देखकर बालकोंसे उनकाहाल पूछा जब उन्होंने उसजगहकोजहांपर केशवमूर्त्ति कूदेथेदिखलादिया तब नन्द व यशोदा व्याकुलहोकर यमुनाजलमें कूदनेदौड़े सो गोप व गोपियोंने उनको थाम्ह लिया॥

दो० सुखदानी देखे बिना बिलखानी अतिमाय। रानी अररानी परैं पानीमें अकुलाय॥
लोटत अतिव्याकुलधरणि जात गिरन जलधाय। कहतश्यामतुमदियो दुख मोकोसमयबुढ़ाय॥

हे राजन्यशोदा रोतेरोतेव्याकुलहोकर बौरहौं के समानकह तीथी हेबेटातुमनेकहां बिलम्बलगाई तुम्हारेखानेवास्ते माखन रोटीरक्खाहै जल्दीआनकरभोजनकरो॥

चौ० बैठी आनि संग दोउ भैया। तुम जेंवौ मैं लेउँ बलैया॥

हेमोहनप्यारे मैंतेरेबिना कैसेजीवोंगी व किसेमाखनरोटी खिलाकर अपनाकलेजा ठण्ढाकरौंगी ऐलालनजबतूअपनीसां वलीसूरति मोहनीमूर्त्तिदिखलाकर मुझे मीठीमीठीतोतली बातैं सुनावताथा तबमैं तीनोंलोककासुख उसकेबराबर नहींसमझती थी अबमैं किसतरह वहस्वरूपदेखूंगी जब २हमलोगोंपर दुःखप ड़ताथातब २ तुमहमारीरक्षाकरतेथे अबहमलोग तुम्हारोबिरहरू पीसागरमें डूबरहेहैं क्योंनहींआनकरइससे बाहर निकालतेऐसी ऐसी अनेक बातैंकहकर यशोदा बिलाप करतीथी॥

चौ० शोकसिंधु बूड़ी नँदरानी। तनकी सुधि बुधि सबै भुलानी॥
दो० ब्रजयुवतिनसुनिमहरिके बचनप्रेम आधीन। अकुलानीं रोवतसबै भई कठिन उरपीर॥

हेराजन्इसीतरह सबस्त्री व पुरुषबालक व वृद्धवृन्दाबनबासी अपनाअपनाघर अकेला छोड़कर कालीदहके किनारेखड़ेहुयेरो तेथे औरकिसीको तनकी सुधिनहींथी॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बो० ब्रजबासी सब उठे पुकारी। जल भीतर क्याकरत मुरारी॥
मात पिता अतिही दुखपावैं। रोय रोय सब कृष्ण बुलावैं॥

और सबब्रजबाला अपना शिर व छाती पीटकर कहतीथीं हे मनहरणप्यारे तुमहमलोगोंको इसदुःखमें छोड़कर आप जलबिहारकरने चलेगये तुम्हारेबिना साराब्रज सूनाहोगया अबहमारा दही व माखन कौन चुराकर खायगा और हमसब गोपियां किसका उलहनादेने यशोदाके पास जावेंगी तुम्हारेबिरहमें हमलोग मरनेचाहतीहैं जल्दी बाहरनिकलकर हमाराप्राण बचाओ जलके भीतरबैठे क्याकरतेहो व नन्दजीबिलापकरके कहतेथे हे बेटा तू मुझे छोड़कर कहां चलागया तेरेबिना मुझकोजगत् अँधियारा मालूमहोताहै मैं किसतरह जीवोंगा इसीदुःखकेमारे गोकुल छोड़कर वृन्दाबनमें आनबसे थे सो वहांभी तुम्हारेप्राणपर घात लगाये प्राणप्यारे जिसतरह तुमने बड़े २ राक्षसोंको मारकर हमको सुखदियाथाउसीतरह आजभीमेरीबुढ़ाईकीलज्जा रखकरजल्दीअपनीमोहनीमूर्त्ति दिखलाओनहींतोअबमैंमरनेचाहताहूं॥

सो० लोगउठेसबरोय दीनबचन सुनिनन्दके। कहत बिकलसबकोय हरितुम ब्रजसूनो कियो॥

जब यशोदा रोते २ अचेतहोगई तब बलरामजीने उसपर जलका छींटाडाला जब उसे कुछहोशहुआ तब उसने बलरामजीकोदेखतेही रोकरकहा हेबेटा कन्हैया तेरेबिनाएकसाइत अकेलानहींरहताथा तैंने उसको कहां छोड़दिया जल्दीमेरे प्राणप्यारेको बुलालावो वह बहुतभूंखाहै अभीतक उसने कुछनहींखाया जब यहबातकहकर यशोदा कन्हैया २ पुकारनेलगी तब बलरामजीने उसे धैर्यदेकर इसतरहसमझाया हेमाता तुम किसवास्ते इतना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शोच करतीहौ मोहनप्यारे तुमलोगोंको उदासदेखकर कमलके फूल लानेवास्ते कालीकुण्डमें गयेहैं वह अबिनाशीपुरुष त्रिलोकीनाथहैं उनको यमुनाजलमें डूबने या कालीनागके काटनेका कुछडर नहींहै आगे तुम अपनीआंखसे देखचुकीहौ कि पूतना को उन्होंने क्षणभरमें मारडालाथा मैंतुम्हारी सौगन्दखाकर कहताहूं कोई ऐसाजीव तीनोंलोकमें नहींहै जो उनकोदुःखदेनेव मारनेसकै ॥

दो० मोहिं दोहाई नन्दकी अबहीं आवत श्याम। नागनाथले आवहीं तब कहियो बलराम ॥

जब बलभद्रजीके समझानेसे कुछ धैर्यसबकोहुआ तब यशोदाने बलरामजीका हाथ पकड़लिया व उनकोपास अपने बैठाकर बलायेंलेनेलगीं और सब ब्रजबासी यमुनाजीकी ओर टकटका लगायेथे कि देखैं मोहनप्यारे कब यमुनाजलसे बाहर निकलतेहैं शुकदेवजीने कहा हेराजन् उसदिन जैसा शोच नन्द व यशोदा आदिकजड़ व चैतन्य सब वृन्दाबनबासियोंको हुआथा उसकाहाल कहांतक वर्णनकरैं अब नन्दलालजीका हालसुनो जब वह अपनानटवररूप साजेहुये कालीदहमें पहुँचे तबनागिन सुन्दरताई मोहनीमूर्त्तिको देखतेही उसपर मोहितहोकर कहने लगी तुम ऐसे स्वरूपवान् व कोमलतनु किसवास्ते यहांआयेहौ जल्दी भागजाव अभीकालीनाग सोयाहै नहींतो उसके जागतेही तुम्हाराअंग विषसे जलजायगा केशवमूर्त्ति यहवचनसुनकर नागपत्नीसे बोले तू अपनेपतिको जल्दीजगादे हमको राजाकंसने भेजकर करोड़फूल कमलके कालीकुण्डमेंसे मांगेहैं तब ना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गिनबोली तुम कालीनागसे क्याबातैंकरोगे उसके एकफुफकार से तुम्हाराशरीर जलजायगा मुझेतेरासुन्दररूपदेखकर दयामालूमहोतीहै राजाकंसमरजावै जिसने तेरीऐसी मोहनीमूर्त्तिको यहांभेजा और तूमरनेकेवास्ते अपनीखुशीसे यहांआयाहै बालकजानकर तुझेकहतीहूं तेरेमरनेसे तुम्हारीमाता व पिता बड़ादुःखपावैंगे तूबेचारालड़का अपनाप्राणलेकर यहांसेचलाजा यहसुनतेही मनहरणप्यारे बोले॥

दो० अरीबावरी सर्पसों काहडरावतिमोहिं। जैसोमैं बालकप्रकट वहीदेखावों तोहिं॥
सो० क्योंनहिंदेतजगाय देखौंमैं याकेबलहिं। यापरकमललदाय लैंजैहौंयहिनाथिब्रज॥

हेनागिन सोयेहुयेकोमारना अधर्महै इसलिये तुझसे जगानेकेवास्ते कहताहूं यहवचनसुनकर नागपत्नीबोली छोटेमुख बड़ीबात तुझेकहना उचितनहींहै यहकालीनाग गरुड़जीसे लड़ाथाजिसेतुमनाथनेकेवास्ते कहतेहौ मुझेमालूमहुआ तेरीमृत्यु तुझेयहांलेआईहै जोतूमेराकहना नहींमानता तुझेकालीनागसेलड़नेकीसामर्थ्यहो तौउन्हैंआपजगाले यहबातसुनतेही बृन्दाबनबिहारीने उसकोझिड़ककर जैसेअपनेपांवसे कालीनागकी पुच्छदबाया वैसेवहगरुड़जीकेडरसे चौंककर उठखड़ाहुआ जब उसनेदेखा किमेरेसामने एकबालकखड़ाहै तबआश्चर्यमानकर कहादेखोमेरेविषकीगर्मी अक्षयबट नहींसहसका व कोसोंतककेपशुआदिक उसगर्मीसे भस्महोजातेहैं यहकौन ऐसाबालक है जिसने यहांतकजीतेपहुंचकर मुझेनींदसे जगाया ऐसाविचारकर कालीनागक्रोधसे पुच्छपटकताहुआ केशवमूर्त्तिकीओरदौड़ा व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपनेएकसौएक फणसे उनकोकाटनेलगा हेराजन् उसविषकी गर्मीसेयमुनाजल अदहनकेसमानखौलताथा परवैकुण्ठनाथको कुछविषनहींव्याप्ताथा तबउसनागिननेकहा यहबालक बड़ा शूर बीरहोकर कोई मंत्रजानताहै इसलिये इसकोविषप्रवेशनहीं कर ता जब कालीनागनेदेखा कि मेरेकाटनेसे यहबालकनहींमरता तब उसनेमोहनप्यारेको अपनेशरीरसे लपेटकर कसलिया उस समय नागिननेपछिताकर मनमेंबिचारा देखोऐसासुन्दरबालक अपनी खुशीसे कालवशहोकर यहांआया अबइसकाबचनाकठि नमालूमहोताहै व कालीनागने भी अभिमानसे केशवमूर्त्तिसे कहा तुममुझे नहींजानतेमैंसर्प्पोंकाराजाहूं अबयहांसे जीतेबच करजावोगे तोदेखूंगागर्बप्रहारीभगवान् ने यहबचनसुनतेहीअप नाशरीर ऐसाबढ़ाया किअंग२ कालीकाटूनेलगा जबउसनेबहु तदुःखीहोकर मोहनीमूर्त्तिको छोड़दिया व अलगजाकर खड़ा होगया तबमुरलीमनोहरने तुरन्तउसकाफण पांवकेनीचे दबाक रनाकछेदडाला व उसमें डोरीनाथकर उसकेशिरपर चढ़गये॥

दो० माखनप्रभु फणगाहे लियो दियो व्यालफुफकार। चरणकमल माथेधरे निरतत हरी मुरार॥

जब वृन्दाबनबिहारी तीनोंलोकका बोझ अपनेशरीरमें लेक रकालीनागके मस्तकपर बंशीबजातेहुये कूद२ कर नाचनेलगे उससमय देवता व गन्धर्व व अप्सरा व किन्नरआदिक अपने२ बिमानोंपर बैठकर यहआनन्दरूपी नाच देखनेआये व गन्धर्वों ने अनेकतरहके बाजनबजाकर गुणानुवाद वैकुंठनाथका साथ ताल व स्वरके गाना अप्सरोंने नाचना आरम्भकिया व देवतोंने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्यामसुन्दरपर फूलबरसाये हे राजन् उससमय नाचने व गाने व मुरलीबजानेकी ऐसीशोभा मालूमदेतीथी जिसका वर्णान नहीं होसक्ता जब कालीनागके मुखसे मारेबोझ त्रिलोकीनाथके लो हू बहनेलगा तबवह मरणातुल्यहोकर अपने विषकाघमण्ड भूल गया व अपनाफण पटक २ कर मुखसे जिह्वा निकालदिया व अपनेजीनेसे निराशहोकर शिरझुकालिया उससमय कालीना गको बैकुंठनाथकादर्शन मिलने व उनकाचरण माथेपर पड़नेसे ज्ञान उत्पन्नहोकर यहबात स्मरणआई कि मैंने ब्रह्माजीसे सुना था ब्रजगोकुल में कृष्णावतार होगा ॥

दो॰ ते गोकुलमें अवतरे मैं जान्यों निरधार। ये अविनाशी ब्रह्महैं ब्रजक्रीडा अवतार ॥

सो यहबालक वही अवतारहै नहीं तो दूसरेकी क्या सामर्थ्य थी जो मेरेविषसे जीताबचे इनत्रिलोकीनाथकी बराबरी कोईक रनहींसक्ता बहुतबुराकाम किया जो परब्रह्मपरमेश्वरपर फणाच लाया यहबात मनमें समझतेही कालीनाग शरणपुकारकर बो ला हे महाप्रभूमैंने तुम्हारारूप नहीं पहिंचाना अब मुझे जीवन दान देकर अपनीशरणमें लीजिये यहअधीनताई कहकर का लीनाग चुपहोरहा व अपनी कर्त्तव्य की लज्जासे कुछस्तुति करनहीं सका श्री दीनानाथने यहदीनवचन सुनकर समझा कि अब कालीनागका अभिमानटूटगया तब उसे अपना चतुर्भुजी रूपका दर्शनदिया उनकास्वरूप देखतेही कालीनाग की स्त्रि यां अतिविलापसे रुदनकरतीहुई वहांआई व हाथजोड़कर इ सतरह पर उनकीस्तुतिकी हे परब्रह्म परमेश्वर आप तीनोंलोक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व सबजीवोंके उत्पन्नकरनेवाले हैं व तुमनेवास्तेमारने अधर्मी व भारउतारने पृथ्वीके अपनी इच्छासे अवतार लियाहै संसारमें जो कोई तुम्हारा ध्यान या भक्तिश्रुतासे करै वहभी भवसागर पार उतरकर मुक्तिपाताहै जिसतरह अमृतजानकर व अनजान में दोनोंतरह पीनेसे मनुष्य अमरहोकर नहीं मरता उसीतरह तुम्हारे ध्यानका प्रतापभी समझनाचाहिये हमारेपतिने अपनेअज्ञान व अभिमानसे आपको नहींपहिंचाना सो वहअपने दण्डको पहुँचा पर तुम्हारा दर्शनपाकर कृतार्थहुआ किसवास्ते कि जिनचरणोंका दर्शनदान व यज्ञ व जप व तपकरनेसे जल्दीनहीं मिलता सो दर्शन इसनागने सहजमेंपाया हे दीनानाथ आपने बहुत अच्छाकिया कि इसदुःखदायीका घमण्ड तोड़डालावइसने न मालूम पूर्वजन्ममें कैसाभारी तपकियाथा जिस तपस्याके फलसे तुम्हारेचरण इसकेमस्तकपर विराजतेहैं नहीं तो इनचरणोंकी धूरि मिलनेवास्ते लक्ष्मीजी व ब्रह्मादिक देवता व योगी व मुनिचाहना रखतेहैं और जल्दी वह रज उनको नहीं मिलती सो धूरि कालीनागके माथेपरचढ़ी इसकेबराबर दूसरेकी भाग्य होना बहुतकठिनहै व हम ऐसीसामर्थ्य नहीं रखतीं जो उसरज का प्रतापवर्णनकरसकैं नारदजी व सनकादिक उसधूरिकी भक्ति अपने हृदयमें रखनेसे इन्द्रासनगद्दी व अष्टसिद्धि व मुक्तिपदवी व तीनोंलोककासुख उसकेसामने कुछबस्तु नहींसमझते जिसने पारसपत्थरपाया वहसोनेकी चाहना नहींरखता अबयह तुम्हारे भयसे मरणतुल्यहोगया व वीरलोग डरेहुयेको नहीं मारते इस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लियें दयाकरके इसकाप्राणछोंड़दीजिये नहींतो हमकोभीइसके साथ मारडालिये किसवास्ते कि हमपतिव्रताहोकर अपनाप्राण इसकेअधीनजानतीहैं व वेद व शास्त्रमें भी ऐसालिखाहै कि पतिव्रतास्त्री उसकोसमझनाचाहिये जो अपनेपतिकोकोढ़ी व रोगी व दरिद्रीहोनेपरभी ईश्वरसमानजानै व आजसेअपनेस्वामीपरहमैं अधिकविश्वासहुआ कि उसकेप्रतापसे हमने तुम्हारादर्शनपाया जब इसीतरहबहुतस्तुतिनागिनोंनेकी तबमुरलीमनोहरअपराध कालीनागका क्षमाकरके उसकेमस्तकपरसेकूदपड़े तबउससर्पने दण्डवत्करके हाथजोड़करविनयकिया हेदीनानाथ जोअनजानमैंमुझसेअपराधहुआहो सोदयाकरकेक्षमाकीजिये और मैं सांपरूपविषसे भराहुआ तामसीस्वभावथाइसलिये तुम्हारेऊपर अपनाफणचलाया ब्रह्मादिक देवतातुम्हारेभेदकोजल्दी जाननहींसके मैंमूर्खतुम्हैं किसतरहपहिंचानता आपनेमुझे दर्शनदेकरकृतार्थकियासबवेद व पुराणतुम्हारागुणगातेहैं और जोआपन्यायकरकेदेखैं तो इसमेंमेराकुछ अपराधसमझनानचाहिये किसवास्ते कि मेरीजातिकायहीस्वभाव आपनेबनादियाहै कदाचित् कोई मुझकोदूधभीपिलावे तो मेरेशरीरसेविष उत्पन्नहोगा व गौको खालीभूसाखिलानेसेदूधहोताहै मैंने अपनेस्वभावके अनुसारतुम्हारेऊपरफणचलायाअबमुझेअपनीशरणमेंरखियेव मेरामाथा धन्य है जिसपरतुम्हारे चरणपड़नेसे मेरे अनेकजन्मकेपाप छूट गये जिनचरणोंको लक्ष्मीजीआठोंप्रहर अपनेहृदयमें लगायेरहतीहैं व ब्रह्मादिकदेवतादिनरात्रि उनकाध्यानकरतेहैं औरउन्हींच

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रणोंकाधोवन गंगाजीहोकर तीनोंलोकको कृतार्थकरती हैं वह चरणतुम्हारा मेरेशिरपरविराजाशेषनागके एकमस्तकपर आप शयनकरतेहैं सो उसनेइतनीबड़ाईपाई व मेरेएकसौ एकशीशपर आपनेचरणरखकर नृत्यकियाहै इसलिये मैं अपनेबराबर किसी दूसरेकीभाग्यनहींसमझता अबमेराडरछूटगया ॥

दो० जिनपदपंकज परसते गतिपाई मुनिनारि । सुर नर मुनि पूजततिन्हैं सन्तन प्राण अधार ॥
सो० फिरतचरावतगाय श्रीवृन्दावन यहचरण । भक्तनके सुखदाय ब्रजबासी जन दुखहरण ॥

यहस्तुति सुनकरश्यामसुन्दरनेकहा अबतूयहांकारहनाछोड़ कर अपनेकुलपरिवारसमेत रमणकद्वीपमें जाकेरह मैं यहांजल क्रीड़ाकरूंगा व जो कोई कालीदहमेंस्नानकरके पितरोंकोतर्पण देगा उसकेजन्मजन्मान्तर के पापछूटजावेंगे व हमतेराअपराध क्षमाकरके अबतुझसेबहुतप्रसन्न हैं व तेरानाम महाप्रलयतकसंसारमें स्थिररहेगा जोदेवता व मनुष्यमेरीवतेरीकथाकहैं व सुनैंगे औरइसअध्यायकहने व सुननेवालोंको सांपकाटनेकाभयनहींहोगा व राजाकंसनेकरोड़फूल कमलकालीकुंडकेमांगेहैं सोतू जल्दी अपनेऊपरलादकर ब्रजमेंपहुँचादे यहवचनवैकुंठनाथका सुनकर कालीनागनेडरते व कांपतेविनयकिया हे महाप्रभूमैं फूलकमल के अभीपहुँचायेदेताहूं पररमणकद्वीपमेंजानेसे मुझेगरुड़जीखा जावेंगे उन्हींकेडरसे मैं यहांभागआया था यहसुनकर मनहरण प्यारे बोले ॥

दो० चरण कमलकी थाप है तेरे मस्तकमाहिं । अब इसछाप प्रतापते गरुड़ बोलिहै नाहिं ॥

ऐसा कहनेके उपरांत केशवमूर्त्तिने उसीसाइतगरुड़को बुला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर कालीनागका भय छुड़ादिया तबकालीनागने बड़ेहर्षसे अपनी स्त्रियोंसमेत विधिपूर्वक पूजा श्रीकृष्णजीकीकी व बहुतरत्न व मणिकेहार उनको भेंटदिया व तीनकरोड़ फूलकमलके अपने ऊपर लादलिये तब फिर ब्रजनाथ उसकेमस्तकपर चढ़कर नाथ पकड़हुये वहांसे चले॥

सो० फिरि यशुमति उरमाहिं उठी लहरि अतिप्रेमकी। कान्हर आयो नाहिं कहतरोय बलरामसों॥

यह वचनसुनकर बलभद्रजीबोले हे माता तुम थोड़ीदेर और धैर्यधरो अभी तुम्हारेप्राणप्यारे आते हैं बलरामजीके समझाने परभी फिर ब्रजबासी लोग ब्याकुलताते रोकर कहनेलगे ऐ मन हरण प्यारे तुम हमारामोह छोड़कर कहां चलेगये तुम्हारेबिना हमारी यहगतिहोतिहै दो प्रहरसे यमुनाजलमें बैठे क्या करतेहो जल्दी क्यों नहीं निकलआते जिसतरह बिनामणिका सांप तड़फता है वहदशा नन्द व यशोदाकी फिरहोगई तब यशोदारोकर कहने लगी मुझे धिक्कार है जो मोहनप्यारा यमुनामें डूबजावे और मैं जीतीरहूं॥

दो० कहत यशोदा नन्दसों धृक २ बारम्बार। अब केतिकदिन जियोगे मरतनहीं म्वहिंमार॥
सो० करिदेखो मनज्ञान ऐसे दुखमें मरणसुख। नन्दभये बिनप्रान मूर्च्छिपरे सुनिप्रियवचन॥

जबनन्दराय मूर्च्छितहोकर गिरपड़े तबबलरामजीने उन्हें उठाकरकहा हे पिता तुमकिसवास्ते इतनाशोचकरकेप्राणदेतेहो श्यामसुन्दरकोमारनेवाला संसारमेंकोईनहीं है वह अविनाशी पुरुषआठोंप्रहरलक्ष्मीजीको साथलिये क्षीरसमुद्रमेंरहतेहैं उनके यमुनाजलमें कूदनेसे तुमलोगक्योंडरतेहो इसतरह बलरामजी उन्हें समझारहेथे कि उसीसाइतयमुनाजलमें लहरि उठनेलगी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तबबलभद्रजीबोले देखोअब वैकुंठनाथ जलसेबाहरआतेहैं ऐसा वचनसुनतेही सबब्रजबासीयमुनाजीकी ओरदेखनेलगे उसीसम य नन्दलालजी कालीनागकोनाथेहुये जलकेऊपरप्रकटहुये॥

दो० माखनप्रभुगोपालजी बाहरप्रकटेआय। दुःखहरनदानवदलनसन्तन सदासहाय॥

हेराजन् उन्हैं देखतेहीनन्द व यशोदाआदिक ब्रजबासी ऐसे प्रसन्नहोगये जैसेमुर्देके तनमेंप्राणआजावे व कालीनागनेमुरली मनोहरको यमुनाकिनारे उतारदिया॥

सो० तटपरकमल धरायकालीको आयसु दियो। उरगद्वीपअबजाय करोकंसनिर्भयसदा॥

कालीनागउनकी आज्ञानुसार दण्डवत्करके उसीसमयअप ने कुलपरिवार समेतरमणकद्वीपको चलागया व श्यामसुन्दरने सबब्रजबासियोंकोजोदुःखसागरमेंडूबेथे मिलकरउन्हैं सुखदिया उसीदिनसे वहांका यमुनाजलजो विषतुल्य था अमृतके समान होगया॥

दो० धन्यधन्यप्रभुधन्यकहि मुदितसुमन बरषाय। गयेदेवसबनिजसदनहृदयपरमसुखछाय॥

सत्रहवां अध्याय॥

कालीनागके रमणकद्वीप छोंड़ने की कथा॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर पूंछा हेस्वामीरमणकद्वीप उत्तमस्थानछोंड़करकालीनागयमुनाजीमें क्योंआकररहा व गरु ड़जीकाकौनअपराध उसनेकियाथा इसकाहाल विधिपूर्वकवर्ण नकीजिये शुकदेवजीबोले॥

दो० गरुड़बलीके त्रासतेबासकियो ब्रजआय। सो लीला विस्तारसों कहौं सबै समुझाय॥

हेराजन् सुनोकश्यपजी ब्रह्माकेबेटाहैं उनकेबहुतसीस्त्रियांहो कर उनमें एककद्रू व दूसरी बिनतानामथी सो कद्रूकेकालीनाग आदिक बहुतसे सर्पउत्पन्नहुये व बिनताके दो बालक एकगरुड़

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जी परमेश्वरकेवाहन व दूसरा अरुणानामसूर्यदेवताका सारथी हुआसो गरुड़जी व कालीनाग आदिकसर्प रमणकद्वीपमें रहतेथे एकदिन कद्रू व बिनता दोनों सवति बैठीथीं सो कद्रूने बिनतासे पूछासूर्यके रथमें कौनरंगके घोड़ेजुते हैं सोबिनताने श्वेतवर्ण व कद्रूने कालेरंगके बतलाये इसीबातपर दोनोंने आपसमें झगड़ाकरके यह प्रतिज्ञाकी कि जिसकाकहनाझूंठाहो वहसच्चकहनेवालीकी दासीहोकर रहे जबयहसमाचार सर्पोंनेपाया तबकद्रूसे कहा हे माता तुमनेबिनापूंछे हमलोगोंके ऐसीप्रतिज्ञाकी कि सूर्यकेरथमें श्वेतवर्णके घोड़ेजुते हैं तू बिनतासेहारजायगी यहबातसुनकर कद्रू बोली ऐ बेटा मैं बचनहारचुकीहूं अबकोई ऐसाउपायकरो जिसमें मेराकहनासचहो नहीं तो मुझेबिनताकी दासीहोनापड़ैगा तबसांपोंनेकहा हमलोगजाकर उनघोड़ोंकेअंगमें लपटजाते हैं इससे वहकालेदिखलाई पड़ैंगे तबतूजीतजायगी सो काले २ सांपजाकर उनघोड़ोंके शरीरमें लपटगये इसलियेवहकालेदिखलाई देनेलगे उसीसमयकद्रू बिनताको साथलेकरघोड़े देखनेगई सोसांपोंकेलपटेरहनेसे वहकालेदेखपड़े इसलियेबिनताहारगई॥

दो॰ कद्रूबिनतहिजीतिकैलैगै घराहि शिवाय। जाकीनीतिअनीति है तासोंकहाबसाय॥

जबगरुड़जीने यहहालसुना तबकद्रूसेजाकरकहा तुमनेछल करके मेरीमाताको दासीबनानेकी इच्छाकीहै सो ऐसा अधर्म करना तुमकोउचितनहींथा अबजोबस्तुमांगो सो हमउसके बदले लादेवैं परमेरीमाताको दासीमतबनाओ यहबातसुनकर सर्पोंने आपसमेंसम्मतकरके गरुड़जीसेकहा तुमअमृतका कलशा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमैं लायदेव तो उसेदासीनबनावैं गरुड़जीने अपनीसामर्थ्य
उसीसमयअमृतका कलशालाकर सर्पोंकोदेदिया व अपनीमाता
कोसाथलेकरघरचलेआये यहसमाचारसुनकर देवतोंने विचार
किया कि सांपलोगअमृतपीनेसे अमरहोकर सबजीवोंकोअधिक
दुःखदेवैंगे तो किसतरहकोईजीताबचेगा ऐसाविचारकेसबदेवतो
नेआकरगरुड़जीसेकहा तुमअपनेवचनप्रमाण अमृतकाकलश
कद्रूकोदेकर अपनीमाताकोलिवालेआवो जैसाछलकरके तुम्ह
रीमाताको उन्होंनेदासीबनाया था वैसा उपायतुमभीकरो जिस
में अमृतकाकलशा उनसेलेलेव गरुड़जीनेयहबातदेवतोंकीमान
ली और जिससमयसर्पलोग अमृतकाकलशा तालाबकिनाररख
कर इस इच्छासेस्नानकरनेलगे कि पवित्रहोकर अमृतपीवैं उसी
समयगरुड़जीवहांपहुँचकर कलशाअमृतकाउठालाये और देव
तोंकोसौंपदिया सो देवतेअमृतलेकर अपनेलोककोचलेगये जब
सर्पोंने इसीकारणगरुड़से शत्रुताउत्पन्नकी तब एकदिनगरुड़ने
नारायणजीअपनेस्वामीकीबहुत स्तुतिकरकेयहवरदानमांगाकि
कोईसांपहमकोलड़ाईमें न जीतै व सर्पोंकोहमभोजन कियाकरें
उनकाविषहमैंनव्यापै जबपरमेश्वरदीनदयालुने गरुड़कोइच्छा
पूर्वकवरदान दिया तबवह बहुतप्रसन्नहोकर सर्पोंको पकड़के
खानेलगे जबसर्पोंने गरुड़जीसे जीतनेकी सामर्थ्य अपनेमें नहीं
देखी तबब्रह्माजीकेपास जाकर विनयकिया हे जगत्कर्त्ता हमें
व गरुड़ दोनोंको आपने उत्पन्नकियाहै सो गरुड़जीवरदानपाने
के प्रतापसे हमलोगोंको खाजातेहैं ऐसी बरजोरी उनको करने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न चाहिये यहवचन सर्पोंका सुनकर ब्रह्माजीने इसतरहपर दोनों का मेलकरादिया कि महीनवेंदिन एकसांप गरुड़जी अपनेखाने केवास्ते लियाकरैं व सबको दुःख न देवैं जबगरुड़जी इसबातपर प्रसन्नहुये तबसांपलोग आपसमें पारीबांधकर हरपूर्णमासी को एकसांप पीपलकेवृक्षपर रखआनेलगे व गरुड़जीने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार वही सर्पखाकर दूसरेको दुःखदेना छोंड़दिया ज कुछदिन इसीतरह बीतकर कद्रूकेबेटा कालीनागकी पारीआ ई तबवह अपनेविषके घमण्डसे कहनेलगा हम व गरुड़ कश्यप जीकेबेटा होकर दोनोंकी माता आपसमें बहिन हैं जबमैं उनसे डरकर उन्हैंसांपखानेको दूं तो इसमेंमेरीबड़ी हँसीहै इसलियेहम गरुड़जीसे लड़ैंगे यहबिचारकर कालीनागवृक्षपर सांपनहीं रख आया तबगरुड़जी उसकेद्वारपर आये जबकालीनागने गरुड़जी से बड़ायुद्धकिया तबगरुड़जीने उसको अपनेपंख व चोंचसे मार कर गिरादिया और लड़तेसमय गरुड़जीके पंखों से सामवेद व ऋग्वेद व अथर्वणवेद व यजुर्वेदके स्वरनिकलतेथे इस लिये वह शब्दसुनकर सांपोंकातेज हीनहोजाताथा जबकालीनागने अप नेसे गरुड़में अधिकबलदेखा तब वहहारमानकर मनमें कहने लगा अबबिनाभागे गरुड़जीकेहाथसे मेराप्राणनहींबचेगा इस लिये यमुनाकिनारे वृन्दाबनमेंजाकररहूं तो जीताबचूंगा किस वास्ते कि गरुड़जी सौभरि ऋषीश्वरकेशापसे वहांजानहींसक्के ऐसाविचारकरकालीनाग अपनीस्त्री व बच्चोंसमेतरमणकद्वीपसे भागकर यमुनाजलमेंआबसाथा व दूसरेसांपसौभरि ऋषीश्वरके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शापदेनेकाहालनहींजानतेथे और कालीनागने नारदमुनिसे सु
नाथा इतनीकथा सुनकरपरीक्षितनेपूंछा महाराजगरुड़जी वृन्दा
बनमें यमुनाकिनारे क्योंनहींजासकेथे शुकदेवजीनेकहा हेराज
न्किसीसमय सौभरिऋषीश्वरयमुनाकिनारे बैठे तपकरतेथेवहां
गरुड़जीनेजाकर एकमत्स्यबहुतबड़ा यमुनामेंसेखाया यहहाल
देखतेही सौभरि ऋषीश्वरने क्रोधितहोकरकहा हे गरुड़जीजिस
जगहहमपरमेश्वर का भजनकरैं वहांपरकिसीको ऐसी सामर्थ्य
नहींहै जोजीवोंको दुःखदेवे कदाचित् तुमकोमेरेकहनेकाविश्वा
सन होय तो अपनेस्वामीसे जाकर पूंछलेव आजतो तुम्हारा अ
पराधक्षमा कियापरआगेके वास्ते ऐसाशापदेताहूं जो फिरकभी
तुम यहांआवो तो मरजाओगे॥

दो० माखन प्रभुके नेहमें मेरो सहज सुभाय। जो आवे मेरी शरण ताकी करत सहाय॥

हेराजन् इसीशापके डरसेगरुड़जी वहांनहींजासके जबसेका
लीनाग उसजगह आनबसा तबसे वहांकानाम कालीदह हुआ
इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब श्रीकृष्णजी
ने कालीनागको बिदाकरदिया और आपलड़कोंके समान डरते
व कांपते दौड़कर यशोदाकीगोदमें घुसगये तबनन्दरानीनेश्याम
सुन्दरको बड़ीप्रीतिसे गलेलगालिया व मुखचूमनेलगी व रोहिणी
आदिक सबब्रजबाला उन्हेंदेखकर परमआनन्दहोगई व जो गो
व बछवे बिनादेखे श्यामसुन्दरके रोतेथे वहपागुरकरनेलगे उस
समय बलरामजी यहलीला केशवमूर्त्तिकी देखकरहँसे तबनन्द
जी उनको हँसतेदेखकर क्रोधसेबोले बलभद्रबसुदेवजीका बाल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहमाराजातिभाई नहींहै इसलिये दुःखकीसमय हँसी व ठट्ठा करताहै यहसुनकर बलरामजीनेकहा हेपितामेरेहँसनेका यहका रणसमझो देखोजबश्यामसुन्दर यमुनामेंकूदकर ऐसेबलवान् सांपकोनाथलाये तबनहींडरे अबमाताकीगोदमेंआकर कांपतेहैं हेनन्दबाबा केशवमूर्त्तिकिसीका कुछडर न रखकर सबदुःखदाइयोंको दण्डदेनेवालेहैं यहसुनकरनन्दजीहँसनेलगे औरउन्होंने मनहरणप्यारेको गलेलगाकरकहा हेबेटाअबतुमगोचरानेन जाकर मेरीआंखोंकेसाम्हने रहाकरो ऐसाकहकरनन्दजीने बहुत गो सोनाआदिक उनसेदानकराया हेराजनूउसदिन सबब्रजबासियोंने श्यामसुन्दरका नयाजन्महोना बिचारकर ऐसीखुशीमनाई जिसकाहाल मुझसेवर्णननहीं होसक्ता व यशोदाने मोहनप्यारेसेकहा हेबेटा मैंनित्यतुझे मनाकरतीथी कि तू यमुनाकिनारे मतजायाकर सो तैंने मेराकहना नहींमाना व यमुनाजलमें कूदकर हमलोगोंको इतनादुःखदिया तब केशवमूर्त्तिबोले हेमैया रातका स्वप्ना सत्य हुआ ॥

दो० मैंगेंदा खेलतयहां आयों यमुना तीर। मोहिंडारि काहू दियो कालीदह के नीर ॥

हेमाता जबमैं जलकेनीचे चलागया तब सांपकोदेखके बहुतडरा जबमैंनेउससेकहा कि राजाकंसनेमुझे वास्तेलेनेफूलकमलके यहांभेजाहै तबवहराजाकेडरसे मुझेफूलसमेत यहांपहुंचा गया फिर श्रीदामाआदिक ग्वालबालोंने मोहनप्यारेसे गलेमिलकरकहा हेभाईजो कुछतुमने कहाथा सो किया तुम कंसको अवश्य मारोगे अबहमारा अपराधक्षमाकरो यहवचन सुनतेही के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शवमूर्त्ति हँसकरबोले हे भाई तुममेरेसखाहौ हमारीतुम्हारी घड़ी भरकी लड़ाईथी अबमैं तुमसे प्रसन्नहूं फिर श्याम व बलरामय हलीला समझकर आपसमें हँसनेलगे व उसदिन सबवृन्दावन बासी श्यामसुन्दरके बिरहमें भूखेरहेथे इसलिये मुरलीमनोहर ने कहा आजकीरात सबकोई यहां टिकेरहो कल्हघरपरचलेंगे ज बउनकीआज्ञासे सबलोगवहांटिकेतबनन्दजीने वृन्दावनसे पक वान व मिठाईमँगवाकर सबको भोजनकराया व उसीदिन नन्द जीने फूलकमलके गाड़ी व बैलोंपरलदवाकर ग्वालोंकेसाथराजा कंसके पास भेजदिया॥

दो० बहुत बिनयकरि कंसको दीन्होंपत्र लिखाय। कहियो मेरी ओर ते नृपसों ऐसो जाय॥
सो० गयो कमलकेकाज कालीदह मेरो सुवन। तुवप्रतापते राज आपगयो पहुँचाइ अहि॥

हे राजन् जब ग्वालबालोंने फूलकमलके चिट्ठीसमेत कंसके पास पहुँचादिया तबकंस कमलकेफूल देखने व पत्रीबांचने से बहुतडरा व उसको विश्वासहुआ कि श्रीकृष्णजी परब्रह्मका अव तार हैं इनकेहाथसे मेराप्राण नहींबचेगा ऐसा विचारकर मनमें बहुत उदासहोगया परनन्दजीको शिरोपांव देकर ग्वालोंसेबिदा करतीसमय कहा तुमनन्दरायजीसे कहदेना हम एकदिन उसके बेटोंको बुलाकर देखेंगे जबग्वालोंने आनकर वहांका सँदेशाकहा तबनन्दादिक सबवृन्दावनबासी बहुतप्रसन्नहुये॥

दो० कहतश्यामबलरामसों हँसि हँसिकरि यहबात। नृपहमतुमदेखनलिये कहेउबोलावनतात॥
सो० ब्रजजन परमहुलास इकसुख हरि अहितेबचे। मिटोकंसकोत्रास दूजे कमलपठाय नृप॥

जबरातकोसब वृन्दावनबासी यमुनाकिनारेसरहरीके बनमें सो रहे तबराजाकंसने यहहाल सुनके धुन्धकराक्षसकोबुलाकरकहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम आज यमुनाकिनारे जाकर सबब्रजबासियोंको श्याम व बल रामसमेत जलादो तो मैं तुम्हारा बड़ा यशमानूंगा यह वचन सुनतेही उसराक्षसने आधीरातकेसमय वहांजाकर चारों ओरसे आग लगादी॥

दो॰ दावानल अति क्रोधकर लियो चहूंदिशिघेर। उठी अनल ज्वाला प्रबल मानो अचल सुमेर॥

जबपशु व पक्षी व वृक्ष उसआगसे जलनेलगे तबनन्द व यशोदाआदिक ब्रजबासियोंने नींदसेचौंककर क्या देखा कि चारोंओरसे आगदौड़ीचलीआतीहै व कोईराह भागनेकी दिखलाई नहीं देती यहदशा देखतेही यशोदाने घबराकर श्रीकृष्णसेकहा हे दुःखभंजन जबजबहमलोगोंपर दुःखपड़ताहै तबतब तुमसहायता करतेहो अबजल्दी इसअग्निसेबचाओ नहीं तो सबलोगजलकर मरनेचाहते हैं व तुम्हाराशरण छोड़करके अग्निकेडरसे भागन हींसके जबश्यामसुन्दरने अग्निकीज्वालासे सबको बहुतव्याकुलदेखा तबउनको धीर्यदेकर बोले तुमलोग अपनीआंखबन्दकर लेव अग्निबुझजावेगी जबसबोंने अपनी २ आंखैं बन्दकीं तब वैकुंठनाथ अनेकरूपधरकर सबअग्निमुखमें खागये व धुन्धकराक्षसकोमारडाला उसीसाइत परमेश्वरकी इच्छानुसार सब अग्निबुझकर जितनेपशु व पक्षी व वृक्षादिक जलतेथे ज्योंके त्यों होगये जबकेशवमूर्त्तिके कहनेसे बृन्दावनबासियोंने अपनी आँखैं खोलीं तबउन्हें एकचिनगारीभी नहींदिखलाईदी यह चरित्र देखकर सबलोग आपसमें कहनेलगे किसीनेजलसेभी नहींबुझाया यह सबअग्नि क्या होगई तबमनहरण प्यारेने कहा खरकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आग बहुतजलती है फिरउसको बुझते हुये देरनहीं लगती॥

सो॰ श्यामसहायक जाहि ताको डरहै कौनको। यह न बडाई ताहि पांचतत्त्व जिनके किये॥

जब सबब्रजबासी श्यामसुन्दरकीस्तुति करनेलगे तबकेशव मूर्त्तिने अपनीमाया उनपर ऐसीफैलादी कि सबकिसी ने जाना यहअग्नि आपसे बुझगई व कालीनागनाथनेकाहालभी उनलो गोंको स्वप्नसा मालूमहुआ॥

दो॰ माखन प्रभुके नेह में कछुक कहूं डरनाहिं। प्रातहोत आनन्दसों सब आये घरमाहिं॥

उसदिन सबछोटे बड़ोंने अपने २ घरमंगलाचार मनाया व श्यामसुन्दरको बालकजानकर प्रतिदिन उन से अधिक प्रीति करने लगे॥

अठारहवां अध्याय॥

बलरामजीका प्रलम्बराक्षसको वध करना॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दरने ग्वाल बालोंके साथ वृन्दावनमें खेलखेला था वहकहताहूं सुनो जबग्रीष्मऋतु ज्येष्ठ व आषाढ़आया तब सूर्यकेतपनेसे सारासंसार व्याकुल होगया परश्यामसुन्दरकी कृपासे वृन्दावनमें किसीजीवको गर्मीनव्यापकर वहांबसन्तऋतु ऐसासुखबनारहा इसलियेवृन्दावनमें फूलोंपरझुण्डकेझुण्ड भवँरेगूंजकर आमकी डालियोंपर कोयल कूकतीथीं व वृक्षोंके नीचे ठंढीछायामें मोरनाचकरझङ्कारतेथे व मन्दसुगन्धहवा वहकर वनघटाटोपके निकट यमुनाजी लहरलेतीथीं वहांपरवृन्दावनबिहारी व बलरामजी ग्वालबालों समेत गायेंचराकर अनेकतरहका खेलखेलतेथे जबकभीचरखी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पन्द्रहवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीको उद्धवसे अष्टसिद्धियोंका हालकहना ॥

इतनीकथासुनकर उद्धवनेबिनयकिया हेमहाप्रभु आपनेकहा कि योगसाधने व इन्द्रियोंकोबशकरनेसे अष्टसिद्धियांबनीरहती हैं बासेंक्यागुणहै श्यामसुन्दरबोले हेउद्धव आठसिद्धिबड़ी व दश से किसीहोकर उनमेंएकसिद्धि ऐसागुणरखतीहै कि बूढ़ामनुष्य पना बीनेको लड़कावनालेवे व दूसरीछोटेशरीरको बड़ावनाक बल आदीसामर्थ्यरखतीहै कि अपनाशरीर रुईकेसमानहलका सपर भीचाहै वहांउड़ताहुआ चलाजावे चौथीहलकेसे भारी परलोकवसमर्थ्यरखकर पांचवींमें ऐसागुणहै कि हजारोंकोशका काम करता देखलेवेछठीसिद्धिसे हजारोंकोशकीबातसनलत जिन्होंने अहै जोवस्तुजहांसेचाहै मँगवालेवे ह प्रसन्नहो वें व अपना पसहसामर्थ्य आतेंतनु पानेकोफलहै कि आठ पहरमें किसीवेला परमेश्वरको अपने म भुलावे आदमी काचोला कलियुगमें अनेकअपराध व भरारहकर सिवा यबुराईके कोईभलाई इससे जल्दी नहींसीवास्ते परब्रह्म नारायणने वेदव्यासजीका अवतार लेकश्रीमद्भागवतको सबवेदोंकासार निर्माण किया औरश्रीशु महाराजनेयह अमृतरूपीकथा संसारीजीवोंके पापछूटवसागरपार उतर नेकेवास्ते जगत्मेंप्रकटकियाहै जिसतरपीनेसे जीवअम होकरनहींमरता उसीतरहजोकोई इस प्रीतिसे सुने वह आवागमन से छूटकर मुक्तिपदवी पर पहै इसलिये दास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहवींसे जलतीहुईआग व बढ़ताहुआ पानीरोककर जिसेचाहै उ
कोविषकीगरमी प्रवेशकरने न देवे सिवाय इनअठारहसिद्धिके
न्म व औषध व तप व मंत्रचारसिद्धि और योगसाधनेसे मिलतीहै
न्मसिद्धिवाला जहांचाहै वहांजन्मलेवे व औषधसिद्धिवाला जि
जोऔषधदेवे वहअमृतकेसमान गुणकरै व मंत्रसिद्धिवाला
ढ़कर जोबातकहै वहसच्चहोजावे व तपसिद्धिवालेका तप
नहींकरनेसक्ता हे उद्धव यहसबसिद्धि एक २ गुणरखती
सिद्धियोंका फलदेनेवालाहूं व उनसिद्धियोंकेवशकरने
यहै सुनो अग्निमेंगरमी व बीचजलकेसरदी व पृथ्वीप
वाकोस्पर्श व आकाशमेंशब्द यहपांचोंबातैं मेरीकृपा
चोंबस्तुवोंमें मेराध्यानलगाकर सच्चेमनसे मेरी
सिद्धिमिलतीहै व पांचोंभूतात्मा व
बलरामजीके
दूसरीसिद्धिपावै

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दरने ग्वाल बालोंके साथ वृन्दाबनमें खेलखेला था वहकहताहूं सुनो जबग्री ष्मऋतु ज्येष्ठ व आषाढ़आया तब सूर्यकेतपनेसे सारासंसार व्या कुल होगया परश्यामसुन्दरकी कृपासे वृन्दाबनमें किसीजीवको गर्मीनव्यापकर वहांबसन्तऋतु ऐसासुखबनारहा इसलियेवृन्दा बनमें फूलोंपरझुण्डकेझुण्ड भवँरेगूंजकर आमकी डालियोंपर कोयल कूकतीथीं व बृक्षोंके नीचे ठंढीछायामें मोरनाचकरझुका रतेथे व मन्दसुगन्धहवा बहकर बनघटाटोपके निकट यमुनाजी लहरलेतीथीं वहांपरवृन्दाबनबिहारी व बलरामजी ग्वालबालों समेत गायेंचराकर अनेकतरहका खेलखेलतेथे जबकभीचरखी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चित्र नं. १६ सुखसागर ग्यारहवा स्कन्ध पृष्ठ ८०८

यदुवंशियोंका दुर्वासाजीके शापसे आपसमें लड़कर नाश होना और श्रीकृष्णजीको जरा नाम केवटके
ण लगनेसे शरीर त्याग कर परमधाम जाना

बा
से कि
पना बी
र्बल आ
सपर भी
परलोकव
काम कर
जिन्होंने आ ... भुवनपति
... कया है प्रसन्नहो
वें व अपना पर ... मनुष्यतनु पानेकी फलहै कि आठ
पहरमें किसीवेला परमेश्वरको अपने म भुलावे आदमी
काचोला कलियुगमें अनेकअपराध व भरारहकर सिवा
यबुराईके कोईभलाई इससे जल्दी नहींइसीवास्ते परब्रह्म
नारायणने वेदव्यासजीका अवतार लेकश्रीमद्भागवतको
सबवेदोंकासार निर्माण किया औरश्रीशुकी महाराजनेयह
अमृतरूपीकथा संसारीजीवोंके पापछूटवसागरपार उतर
नेकेवास्ते जगत्‌मेंप्रकटकियाहै जिसतरपीनेसे जीवअम
रहोकरनहींमरता उसीतरहजोकोई इस प्रीतिसे सुने वह
आवागमनसे छूटकर मुक्तिपदवी पर पहुँ इसलिये दास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीकृष्णजीका उद्धवको ज्ञानसिखलाना और दत्तात्रेयजीका राजा यदुको ज्ञानसिखलाना और ग्राम्य स्त्रियोंका एकसंन्यासीको पीड़ितकरनातथाउसकोमतीनहोना

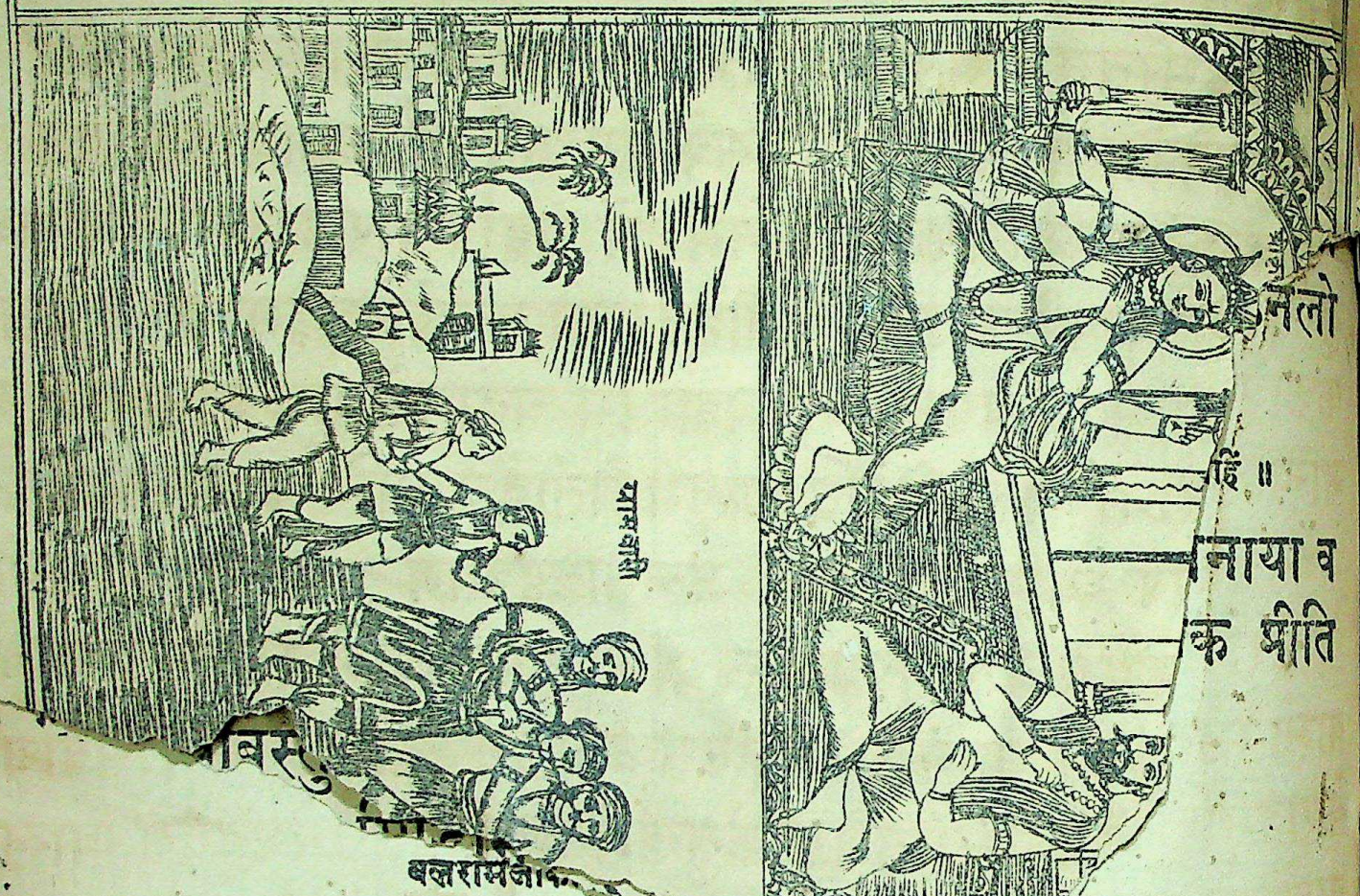

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दरने ग्वाल बालोंके साथ वृन्दावनमें खेलखेला था वहकहताहूं सुनो जबग्रीष्मऋतु ज्येष्ठ व आषाढ़आया तब सूर्यकेतपनेसे सारासंसार व्याकुल होगया परश्यामसुन्दरकी कृपासे वृन्दावनमें किसीजीवको गर्मीनव्यापकर वहांबसन्तऋतु ऐसासुखबनारहा इसलियेवृन्दावनमें फूलोंपरझुण्डकेझुण्ड भवँरेगूंजकर आमकी डालियोंपर कोयल कूकतीथीं व वृक्षोंके नीचे ठंढीछायामें मोरनाचकरझुकरतेथे व मन्दसुगन्धहवा बहकर वनघटाटोपके निकट यमुनाजी लहरलेतीथीं वहांपर वृन्दावनबिहारी व बलरामजी ग्वालबालों समेत गायेंचराकर अनेकतरहका खेलखेलतेथे जबकभीचरवी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है वहांपर चलाजावै व योगाभ्यासकरके अग्निमेंमनलगावै तोअ
पनारूप जैसाचाहैवैसाबनालेवे व अपनेहृदयमें आत्माकाध्यान
रखनेसे दूसरेतनुमें अपनाजीव प्रबेशकरनेकी सामर्थ्यहोजाती है व
सतोगुणका ध्यानकरनेसे जिसकेसंगचाहै उसकेसाथबिहारकरता
बारै व मनुष्यआठोंपहर अपनेमनमें यहबिचारकरतारहै कि सब
से किसमेश्वरकीआज्ञासे होतीहैउसको सबछोटेबड़ेमानते हैं व सा
पना बीभ्यासके अपनाश्वासब्रह्मांडमें चढ़ानेसे भूत व भबिष्य व
र्बल आतीनों कालकीबातैं मालूमहोतीहैं व अग्नि व जलआदिक
सपर भीके ध्यानकरनेवाले जलतीहुईआग व बढ़ताहुआपानी
परलोकके हैं व जोमनुष्यइन्द्रियोंको अपनेबशमें रखकरसच्चेमन
काम करनोंका ध्यानकरताहै उसकेसामने अठ[illegible]भुवनपति
जिन्होंने औंपरउनसिद्धियोंकेसुखमें फँसकेया है प्रसन्नहो
वें व अपना परव जोलोगमनुष्यतनु पानेकीफलहै कि आठ
पहरमें किसीवेला परमेश्वरको अपने म भुलावे आदमी
काचोला कलियुगमें अनेकअपराध व भरारहकर सिवा
यबुराईके कोईभलाई इससे जल्दी नहींसीवास्ते परब्रह्म
नारायणने वेदव्यासजीका अवतार लेकश्रीमद्भागवतको
सबवेदोंकासार निर्माण किया औरश्रीशुी महाराजनेयह
अमृतरूपीकथा संसारीजीवोंके पापछूटवसागरपार उतर
नेकेवास्ते जगत्मेंप्रकटकियाहै जिसतरपीनेसे जीवअम
रहोकरनहींमरता उसीतरहजोकोई इस प्रीतिसे सुने वह
आवागमनसे छूटकर मुक्तिपदवी पर पहै इसलिये दास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

युद्धकरना अंगीकारनहीं किया उससमयमैंने थोड़ीसीमहिमाअ
नी अर्जुनसेकहकर बिराट्रूप अपना उसेदिखलाया और उसका
मोहछुड़ाकर महाभारतकरायाथा वहीहाल तुमसेकहताहूं सुनो
जोमनुष्यअज्ञानवश सबजीवोंमें मेराप्रकाशदेखने न सकै तौइनस
बजगह जोनामहमसुनातेहैं अवश्यमेराचमत्कारसमझै सबजी
में आत्मबोलतापुरुष मैं होकर आदि व मध्य व अन्त सबक
जाननाचाहिये व सूर्य्यदेवताकी बारहकलाहोकर हरमही
अपने नयेस्वरूपसे प्रकाशकरतेहैं उनमें विष्णुनाम स्वरू
चासपवनमें मरीचिनामवायु व तारागणोंमें चन्द्रमा च
सामवेद व देवतोंमेंब्रह्मा व इन्द्र व वरुण व कुबेर व स्वा
[illegible] व रुद्रमेंशंकरनाममहादेव व पांचौंत
[illegible] बस्तु [illegible] मेंकामधेनु दिव्यपितरोंमें
[illegible] व ब्राह्मण व

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् [illegible] हरने ग्वाल
बालोंके साथ वृन्दाबनमें खेलखेला था वहकहताहूं सुनो जबग्री
ष्मऋतु ज्येष्ठ व आषाढ़आया तब सूर्यकेतपनेसे सारासंसार ब्या
कुल होगया परश्यामसुन्दरकी कृपासे बृन्दाबनमें किसीजीवको
गर्मीनव्यापकर वहांबसन्तऋतु ऐसासुखबनारहा इसलियेवृन्दा
बनमें फूलोंपरझुण्डकेझुण्ड भवँरेगूंजकर आमकी डालियोंपर
कोयल कूकतीथीं व बृक्षोंके नीचे ठंढीछायामें मोरनाचकरझुका
रतेथे व मन्दसुगन्धहवा बहकर बनघटाटोपके निकट यमुनाजी
लहरलेतीथीं वहांपर वृन्दाबनबिहारी व बलरामजी ग्वालबालों
समेत गायेंचराकर अनेकतरहका खेलखेलतेथे जबकभीचरखी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्णहोजावे यहपुराण सबवेदोंकासारवास्ते पारउतारने सबजीवों के संसाररूपी समुद्रसे श्रीशुकदेवजीने मर्त्यलोकमें जहाज़बना याहै बिनापढ़ने व सुनने उसकेजन्मलेना वजीनाआदमीका कि यह चैतन्यचोला है संसारमेंअकार्थ समझनाचाहिये कलियुग बासियोंको संसारीमायामोह स्त्री व पुत्र द्रव्य व सुखमें फँसेरहने से किसीसमय जैसाचाहिये वैसासावकाश नहींरहता जो मनअ पना बीचभजन व स्मरणपरमेश्वरके लगावें व कलियुगमेंआयु बल आदमीका बहुतकमहोकर मरनेकाठिकाना नहीं रहता जि सपर भी रातदिन कमानेखानेकी चिन्तामें रहकर अपने मरनेव परलोकका डरनहीं रखता इसलिये मनुष्यतनुपाकर पहिलेवह काम करनाचाहिये जिसमें श्रीकृष्णजी महाराज त्रिभुवनपति जिन्होंने आदमीको अपनीमहिमासे उत्पन्नकिया है प्रसन्नहो वें व अपना परलोकबनै मनुष्यतनु पानेका यहीफलहै कि आठ पहरमें किसीवेला परमेश्वरको अपने मनसे न भुलावे आदमी काचोला कलियुगमें अनेकअपराध व पापोंसेभराराहकर सिवा यबुराईके कोईभलाई इससे जल्दी नहींहोती इसीवास्ते परब्रह्म नारायणने वेदव्यासजीका अवतार लेकर पोथीश्रीमद्भागवतको सबवेदोंकासार निर्माण किया औरश्रीशुकदेवजी महाराजनेयह अमृतरूपीकथा संसारीजीवोंके पापछूटने व भवसागरपार उतर नेकेवास्ते जगतमेंप्रकटकियाहै जिसतरहअमृतपीनेसे जीवअम रहोकरनहींमरता उसीतरहजोकोई इसकथाको प्रीतिसे सुने वह आवागमन से छूटकर मुक्तिपदवी पर पहुँचता है इसलिये दास

Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुरलीमनोहर जलक्रीड़ाकरतेथे व गोवर्द्धनपहाड़ जिसको नन्द
लालजीने अपनीअंगुलीपरउठायाथा व उसबनकोजहांपर मुर
लीमनोहर गौचरातेथे व यमुनाकिनारेकी रेतको जहांपर बांके
बिहारीने रासलीलाकियाथा व उसकदमकेवृक्षको जिसपरश्या
मसुन्दर चढ़कर बैठतेथे और सबसन्त व हरिभक्तोंके चरणोंपर
अपनाशिररखकर श्रीकृष्णदासानुदास मक्खनलाल बेटा गंजन
लालखत्रीपंजाबी रहनेवालाकाशीपुरी मुहल्लामछलीवाल नायब
कोतवालथाने कालभैरव यहइच्छारखताहै कि उल्था श्रीमद्भा
गवत बारहोंस्कन्धका जोपहिलेकेमहात्मा व हरिभक्तोंने भाषा
दोहा चौपाईमें बनायाहै बीचबोली उर्दूके लिखूं कि सब स्त्री व
पुरुष लड़का व बूढ़ा छोटा व बड़ा व ज्ञानी व अज्ञानी उसकेअर्थ
को समझकर परमेश्वरके चरणोंमें प्रीतिलगावें दोहा व चौपा
कि वहबोली ब्रजकीहै सबलोग अर्थकहे बिना समझनहीं सके
जोउसेबूझकर परमेश्वरकेचरणोंमें प्रेमलगावें औरयहदासमही
अज्ञानी संसारीमोहमेंफँसाहुआ इतनी बुद्धि कहांरखताहै जो
सपरब्रह्म परमेश्वरकाचरित्र जिसकेवर्णन करनेमें शेषनाग व
णेशजी व शारदादेवी थकितहैं व उनकेअन्तकोपहुँचनेनहींसके
बारहोंस्कन्धकाउल्था करनेसकूं इसलिये आपसबदेवता व ऋषी
श्वर व महात्माओंके चरणोंपर जिनकेनाम ऊपरलिखे हैं शिर
अपनाधरकर बड़ी अधीनताई से यहबरदान मागताहूं कि आ
पलोग दयाकरके ऐसाआशीर्वाददीजिये कि जिसमें यहपोथी
श्री[illegible]वत बीचबोलीउर्दू जिसतरह इसदासकी इच्छाहै सम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कालरूपी लुहार वह वृक्षकाटनेवास्ते दिनरातउसपर कुल्हाड़ा
चलावता है न मालूम किससमय यहशरीररूपी वृक्षगिरपड़ेगा
इसलिये मनुष्यको संसारीप्रीतिसे बिरक्तरखकर दिनरातिअपनीमृ
त्युयादरखना व मेरेचरणोंका ध्यानकरनाचाहिये जिसमेंउसकी
मुक्तिहो दूसराज्ञानसुनो एकवृक्षपर दोपक्षीखोतालगाकर रहतेथे
जबउसवृक्षको लुहारकाटनेलगा तबएकपक्षीने कहायहां से उड़
चलो दूसरापक्षीबोला बैठेरहोजिसतरह उड़जानेवालापक्षी जीता
बचकरबैठेरहने में दुःखपावताहै उसीतरहसंसारी मायाछोड़देनेसे
मुक्तिप्राप्तहोकर उसकेसाथ लिपटेरहनेमें आवागमनसे नहींछूटता
तीसरेमनुष्यतनु नौकारूपीजानकर गुरूकोमांझीकेसमान समझ
नाचाहिये सो वहनाव समुद्रमेंपड़ीरहकर हवारूपी मेरेचरणोंका
ध्यानउसे किनारेपहुंचावनेवालाहै जो कोईनौकारूपी मनुष्यतनु
पाकर भवसागरपारउतरनेका उपायनहींकरता उसेबड़ामूर्ख व आ
त्मघातीजाननाउचितहै जबतक मनुष्यज्ञानकीराह अपनेमनको
कुमार्गमें चलनेसे नहींरोकता तबतक उसको अनेकतरहके दुःख
प्राप्तहोते हैं इसलियेमनचंचलको कुमार्गकरनेसे धीरे २ रोंकै तो
कुछदिन ऐसासाधनकरनेसे चित्तउसका विरक्तहोजाताहै जबमन
मनुष्यका विरक्तहोकर मेरीओरलगा तबफिरसंसारीमायामें नहीं
लपटता और प्रतिदिनउसे मेरीभक्ति अधिकउत्पन्न होती है जो
कोईअपनेवर्ण व आश्रमकाधर्म व मेरेचरणोंमेंप्रीति रखकरमन
में इसबातकाविश्वासजानै कि हरिचरणोंका ध्यान करनेकेप्रतापसे
संसारीमायाछूटजावेगी वहमनुष्यअवश्यमुक्तहोताहै हेउद्धवभव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सागरपारउतरनेवास्ते भक्तिकेबराबरदूसरा कुछउपाय उत्तमनहींहै व मेरेभक्तमुक्तिकीभी चाहनानहींरखते व चारोंतरहकीमुक्तिमुझसे न लेकरभक्तिको उससेअच्छाजानतेहैं जिसपरमैंबड़ीकृपा करताहूंउसेभक्तिप्राप्तहोतीहै व ब्रह्मादिकदेवता उसकेदर्शनवास्ते चाहनारखतेहैं ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरका उद्धवजीसे भक्तिउत्पन्न होनेका ज्ञानकहना ॥

श्यामसुन्दरनेकहा हेउद्धवजोमनुष्य यहसबसुमार्गभक्ति व ज्ञानकाजोहमने तुमसेकहाहै छोड़कर दूसरीओरमन अपनालगाताहै वहकुकर्मकरनेसेचौरासीलाखयोनि व नरकमेंबहुतदुःखपाकरआवागमनसेनहींछूटता जोलोगमनुष्यतनुपाकर परमेश्वरकाभजन व स्मरणनहींकरते उनकोबड़ाअभागी व मूर्खसमझनाचाहिये व जोमनुष्यआठोंपहर अपनामरनायादरखकर शास्त्रानुसार अपनेवर्णका धर्म्मरखते हैं संसारमेंउन्हींका जन्मलेनासुफलहै व अपनाधर्म्मछोड़नेकेबराबर दूसरापापअधिक नहींहोता जैसा धर्म्मचारोंवर्ण चारोंआश्रमकेवास्ते वेदमेंलिखाहै वैसाकर्म्मकरकेअपनेआचार व चलनसेरहैतो प्रतिदिनज्ञान व धर्म्मबढ़करउसको मेरेमिलनेकीराहदिखलाईदेतीहै व नियम व आचारधनी व कंगाल दोनोंसेनिबहसक्ताहै सामर्थ्यवालामल व मूत्रकरनेउपरांतदूसरीधोतीपहिनलेवे व कंगालमनुष्यजिसकेपास दूसरावस्त्र न होवहगीलीधोतीपहिनकर अपनानियमरक्खै व सूखाअन्नहवालगनेसे पवित्ररहता है वहचांडालके छूनेसेभी अशुद्धनहींहोता व सूती

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कपड़ाधोनेसे पवित्रहोकर रेशमीवस्त्रको जबतकपहिनकर दिशा फिरने न जावे व भोजनकरतीसमय व सूतकमें न पहिनेतबतकशु द्धरहताहै उसेधोनेकाप्रयोजन नहींहोता व तांबे व पीतलकावर्तन खटाई व राखकेमांजने व चांदीधोने व सोनाहवालगनेसे पवित्र होताहै कदाचित्किसीबर्तन याकपड़ेमेंमल व मूत्रलगजावे तो जबतक किदुर्गन्ध व रंग न छूटैतबतक वहपवित्रनहींहोता व शरी रमनुष्यका प्रतिदिनस्नान व सन्ध्या व तर्पण व होमकरनेसे शुद्ध रहताहै व ज्ञानीमनुष्यकोसबवस्तु ठाकुरकोभोगलगाकर भोज नी करनाचाहिये बिनाभोगलगाये कोईबस्तुखाना अपनेमांसकेबरा बरहोताहै व मनुष्यकोभोजनबनावतीसमय अपनानामलेनाउचि तनहोकर यहबातकहनाचाहिये किठाकुरजीके भोगलगानेवास्ते रसोईतय्यारकरो इसतरहकाअभ्यास रखनेमें सबपापोंकीजड़ व अहंकारछूटजाताहै व अज्ञानबालकको नियम व आचाररखनाउ चितनहोकर पांचबर्षकीअवस्थातककुछपाप व पुण्यकिसीबातका उसेनहींलगता व छठवेंबर्षसेलेकर बारहवर्षकीअवस्थातक कुछह त्याआदिकहोजावे तोउसकाप्रायश्चित्त पिताको करनाचाहियेउ सकेउपरांत जोकुछपापकरे तोउसकाप्रायश्चित्त आपकरनाउचि तहै व बिपत्तिपड़नेसे कोईअधर्मकरकेभी अपनापेटपालै तोदोष नहींलगता व सामर्थ्यरखकर धर्म्मछोड़देनेमें पापहोताहै जिसतर हसब धर्म्मोंकाबिचारकरना ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्यउत्तमबर्णको उचितहोकर नीचजातिवास्ते कुछआचार बिचारनहींरहताउसी तरहकोठेपर सोनेवालेमनुष्यको नीचे गिरनेकाडरहोकर पृथ्वीप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बखेड़ा मनकाहोकर मनुष्यसंसारीमायामेंलपटनेसे मुझेनहींपहि
चानता व इसीमनको मेरीओरलगानेसे भवसागरपारउतरजाता
है हेउद्धव मनुष्यमरतीसमय जिसओर अपनामनलगावतेहैं मरने
उपरांत वहीतनु उनकोमिलताहै व हरिचरणोंकाध्यानकरने से अ
न्तष्करण शुद्धहोकर बैकुंठमेंपहुँचतेहैं जोलोगअपनाशरीर पुष्टक
रनेवास्ते जीवहिंसाकरतेहैं उनकोअवश्य नरकबासहोकर चौरा
सीलाखयोनि भोगनीपड़तीहैं देखोसोतीसमय शरीरएकजगह प
रहकर मनकईजगह घूमताहैसेअनेकतरहका स्वप्नादेखताहै व जा
नेमेंभी मनहजारोंकोशोंपर दौड़जाताहै इसलिये मनकोशरीर
से बिलगसमझनाचाहिये जिसनेमायारूपीब्रह्माण्ड बनायाहुआ
समझकर अपनामनवशमेंकिया उसनेइंद्रियादिक सबकोजीतलि
या व अपनेमनके वशरहनेवाले संसारीमायामें लपटकर नष्टहोते
हैं व आत्मामें मेराप्रकाश शुद्धरहकर कुछनहींकरता परउसकोभी
मायाकेसाथ फँसकर संसारउत्पन्न करनापड़ताहै व मैं सतोगुणके
वशहोकर ऋषीश्वर देवता व रजोगुणसे मिलकर दैत्य व मनुष्य
व तमोगुणमें मिश्रितहोकर भूत प्रेत व पशु आदिकको उत्पन्नकर
ताहूं जिसतरह मकड़ीअपनेमुखसे जालानिकालकर फिरखालेती
है उसीतरह हमभीअपनीशक्ति सबकेतनुमें रखकर मरनेउपरांत
खींचलेते हैं जैसेबहतीनौकापर चढ़नेसे किनारेकेवृक्ष चलतेहुये
दिखलाई देतेहैं व घूमतीसमय पृथ्वी व आकाश घूमताहुआ मा
लूमपड़ताहै वैसे सबकर्म शुभ व अशुभसंसारकेमेरीमाया व इच्छा
सेहोकर मनुष्य ऐसाजानतेहैं कि यहकामहमनेकिया इसलियेज्ञा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नीमनुष्यकोअपनापरलोक बनानेवास्तेकाम व क्रोध व मनआदि
ककोअपनेबशरखकर किसीकेगालीदेनेसेखेदमाननानचाहिये ॥

तेईसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी का उद्धव से एक ब्राह्मण का इतिहास वर्णन करना ॥

उद्धवने यहसब ज्ञानसुनकरविनयकी हे महाप्रभुयहबात बहुत कठिनहै जो गाली व कठोरबचनसुनकर क्षमाकरै श्रीकृष्णजीने कहा हेउद्धव तुम सच्चकहतेहो तीर व तलवारकेघाव मलहमलगानेसे अच्छेहोजातेहैं पर कठोरबातकहनेसे जो घावकलेजेमेंपड़जाताहै वह किसीतरहनहींमिटता पर यहसबबात मनकेकारणसेहोती है जिसने अपनेमन व अहंकारकोबशकरलिया उसे इनबातोंक खेदनहींहोता वहसबजीवोंमें परमेश्वरकाचमत्कार एकसादेखक सबबातको ऊपरइच्छा परमेश्वरकेसमझताहै व जो लोगअपनेइन्द्रिय व मनकेवशहोरहे हैं उनकोदुर्वचनकहनेसे क्रोधउत्पन्नहोताहै इसबातका एकइतिहास तुमसेकहतेहैं मनलगाकर सुनो उज्जैननगरमेंएकब्राह्मणबड़ाधनपात्र व्यापारकरनेवालारहकर ऐसासूम व लोभी व क्रोधी व कामीथा कि उसनेकभी अपनेजातिभाई व साधु व ब्राह्मणादिकको मुखसेभोजनकरनेवास्ते नहींकहा व एक कौड़ीवास्ते मित्रकाशत्रुहोकर अपनेखानेपहिरनेमेंभी सूमपनरखताथा इसलिये बहुतधनउसनेबटोरा पर सूमहोनेसे सबपरिवारवाले व स्त्री व पुत्र उससेशत्रुताईरखतेथे संसारीमनुष्यकेपास द्रव्यहोनेसे आत्मावपरिवार व देवता व पितर व अतिथिकोसुखप्राप्तहोताहै सो ये पांचों उसब्राह्मणकेशत्रुथे जबवहब्राह्मणबूढ़ाहोगया व साम

...Ratnani, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्थ्य व्यापारकरनेकी उसमेंनहींरही तब उन्हींपांचौंकेशापसे आगि
लगने व चोरचुरालेजाने व लूटनेराजा व पचालेनेदेनदारोंके सब
धनउसकाजातारहा व जो द्रव्यपृथ्वीमेंगाड़ाथा वह भीटलगया जब
वहब्राह्मणसबधनअपनाखोकरखानेबिनादुःखीहुआ व जातिभाई
लोग उसकोबेआदरकरनेलगे तबएकदिनबैठेहुये उसनेमनमें बि
चारादेखो मैंनेइतनाद्रव्यबटोरकर कोईधर्म व कर्मपरलोक बनाने
वास्ते नहींकिया और न खर्चकरके संसारीसुखउठाया सूमकाधन
इसीतरह व्यर्थजाताहै व तृष्णारखनेसे सबगुणमनुष्यकानष्टहोकर
यशनहींरहता जिसतरह सुन्दरमनुष्यकेमुखपरकोढ़कादागरहनेसे
सुंदरताईउसकीनष्टहोजातीहै उसीतरहलोभीमनुष्यतेजहीनरहक
र उसेकोईअच्छानहींकहता देखोजिसधनकोलोग उत्तमजानतेहैं
वहऐसाबुराहोताहै किपहिले व्यापारकरतीसमयअपने व बिरानेके
साथशत्रुताकरने व झूंठबोलनेसेमिलताहै व रात्रिदिनउसकी रक्षा
करमेमेंचोर व डाकू व राजा व जातिभाइयोंका भयलगारहनेसे अ
च्छीतरहनिद्रा नहींआवती जिसमेंकोई लेनजावे व द्रव्यप्राप्तहो
नेसे वेश्यागमन व जुवा व जीवहिंसा व जातिभाइयोंसे अभिमान
उत्पन्नहोकर अनेकतरहके पापकरनेमें आवतेहैं जिसकारणसंसा
रमेंअपयश उठाकरमरनेउपरांत नरकभोगना पड़ताहै परमेश्वर
नेबहुतअच्छाकिया जो मेरासबधनजातारहा जिसद्रव्य में इतने
अवगुणभरेहैं उसेपाकरशुभकर्ममें खर्चकरडालनाचाहिये द्रव्यइ
कट्ठीकरनेसे सिवायदुःखके कुछसुखनहींमिलता चारदिनकेजीने
में मायारूपीद्रव्य व स्त्रीवास्तेबहुतमनुष्योंसे शत्रुताकरनाउचित
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेहैंउन्हैंअपनाभला व बुरादिखलाई न देकरउनकातेज व बल व ज्ञा
न व धर्मकुछनहींरहता देखो मांसकीपुतलीपर जिसमेंमलमूत्र व
लोहूआदिक भरारहकर सबद्वारोंसेअशुद्धवस्तु निकलतीहै मैंऐसा
ड़हाहोगया किजहां इन्द्रादिकदेवता मेरेसाथलड़नेकी सामर्थ्य
हींरखतेथे वहांएकस्त्रीनेजीतकर अभिमानमेरातोड़दिया व उस
प्रीतिमेंफँसकर ऐसाअपनेकोभूलगया कि उर्वशीकेसमझानेपर
मुझेकुछज्ञाननहींहुआ देखोजिसशरीरकोमाता व पिता व स्त्री
भोजनदेनेवाला व कालचक्रमृत्यु व मालिकतनके अपनासम
तेहैं वह शरीरमरनेउपरांत कुछकामनहींआता और फिरउसेकोई
दिनघरमेंनहींरखसक्ता इसलिये मनुष्यकोउचितहै कि पहिले
सारीमायाछोड़कर हरिचरणोंमेंप्रीतिलगावै ऐसाविचारतेही
पुरूरवा उर्वशीकाप्रेमछोड़कर गंधर्व्वलोकसेपृथ्वीपरगिरपड़ा
चरणोंमेंध्यानलगाकर मुक्तिपदवीपाई हेउद्धवस्त्रीकेध्यानल
नेसे यज्ञ व तप व तीर्थ व व्रत व दानव धर्मआदिककाकरनाकु
हींकरता व बिनासत्संगज्ञानप्राप्तनहींहोताव जोलोगअपने
शं समुद्ररूपीसागरमें गोताखारहेहैं उनको भवसागरकेपार
गरते सत्संगनौकासमझनाचाहिये अन्धेकोसत्संगआंखके
नीकर जिसतरहमाता व पिता अपनेपुत्रकाभलाचाहतेहैं उ
कोभरीमनुष्यके कल्याणवास्ते सत्संगहोताहै जबमनुष्य
तोअन्नेसे ज्ञानप्राप्तहोकर अपनेशरीर व स्त्रीआदिककीप्री
श्यछत्तीबबवहबिरक्तहोकर हरि चरणोंमेंध मनुष्य [illegible] कि [illegible]
र्तिबनाकर [illegible]रूपीस्त्री व द्रव्यकीतृष्णा [illegible]र्जनकामन्त्रअवश्य [illegible]

[illegible] Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्थ व्यापारकरनेकी उसमेंनहींरही तब उन्हींपांचोंकेशापसे आगि
लगने व चोरचुरालेजाने व लूटनेराजा व पचालेनेदेनदारोंके सब
धनउसकाजातारहा व जो द्रव्यपृथ्वीमेंगाड़ाथा वहभीटलगया जब
वहब्राह्मणसबधनअपनाखोकरखानेबिनादुःखीहुआ व जातिभाई
लोग उसकोबेआदरकरनेलगे तबएकदिनबैठेहुये उसनेमनमें वि
चारादेखो मैंनेइतनाद्रव्यबटोरकर कोईधर्म व कर्मपरलोक बनाने
वास्ते नहींकिया और न खर्चकरके संसारीसुखउठाया सूमकाधन
इसीतरह व्यर्थजाताहै व तृष्णारखनेसे सबगुणमनुष्यकानष्टहोकर
यशनहींरहता जिसतरह सुन्दरमनुष्यकेमुखपरकोढ़कादागरहनेसे
सुंदरताईउसकीनष्टहोजातीहै उसीतरहलोभीमनुष्यतेजहीनरहक
र उसेकोईअच्छानहींकहता देखोजिसधनकोलोग उत्तमजानतेहैं
वहऐसाबुराहोताहै किपहिले व्यापारकरतीसमयअपने व बिरानेके
साथशत्रुताकरने व झूंठबोलनेसेमिलताहै व रात्रिदिनउसकी रक्षा
करमेमेंचोर व डाकू व राजा व जातिभाइयोंका भयलगारहनेसे अ
च्छीतरहनिद्रा नहींआवती जिसमेंकोई लेनजावे व द्रव्यप्राप्तहो
नेसे वेश्यागमन व जुवा व जीवहिंसा व जातिभाइयोंसे अभिमान
उत्पन्नहोकर अनेकतरहके पापकरनेमें आवतेहैं जिसकारणसंसा
रमेंअपयश उठाकरमरनेउपरांत नरकभोगना पड़ताहै परमेश्वर
नेबहुतअच्छाकिया जो मेरासबधनजातारहा जिसद्रव्य में इतने
अवगुणभरेहैं उसेपाकरशुभकर्ममें खर्चकरडालनाचाहिये द्रव्यइ
कट्ठीकरनेसे सिवायदुःखके कुछसुखनहींमिलता चारदिनकेजीने
में मायारूपीद्रव्य व स्त्रीवास्तेबहुतमनुष्योंसे शत्रुताकरनाउचित
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रीहोतीहै एकचल व दूसरीअचलमूर्त्तिठाकुरजीआदिक जोसिंह
नपरसेउठाकरस्नानकरानेउपरांत सिंहासनपर बैठालकेपूजते हैं
उसेचलसमझनाचाहियेव जोमूर्त्तिशिवालय व मन्दिरआदिकमें
स्थापनकरदेतेहैं और फिरवहउठनेनहींसकी उसकोअचलजानना
उचितहै सोदोनोंमूर्त्तिचल व अचलकोस्नानकराने व चन्दनलगा
नेउपरान्तभूषण व वस्त्रपहिनाकरधूप व दीप व मालाफूल व तुलसी
दल नैवेद्यसे पूजनकरके अतरमलदेना व शीशादिखलानाचाहिये
चित्रकारीकी मूर्त्तिकोस्नानकराना उचित न होकरकपड़े पोछने
उपरांत पूजनकरनाउचितहै व पृथ्वीपरचबूतराआदिकबनायेहो उ
समेंपहिलेभगवान्का ध्यानकरके बिधिपूर्वक पूजनाचाहिये व जो
कोई मानसीपूजाकियाचाहै वहअपनेमनमें नारायणजीकेस्वरू
काध्यानलगाकर जिसतरह मूर्त्तिकोपूजतेहैं उसीतरह धूप दीप नै
वेद्यआदिकसे ध्यानमें पूजनकरै औरहमारेपूजनकरतीसमय ध्या
नसुदर्शनचक्र व पांचजन्यशंख व गदा व पद्म व धनुषबाण व हल
व मूशलमेरेशस्त्र व बैजयन्तीमाला व नन्द व सुनन्द व पुण्य व सु
शील व गरुड़ व बिशुक व सेन व सुनामनवोपार्षद व दुर्गादेवी व
गणेश व वेदव्यास व इन्द्रआदिक देवतोंकाकरनाचाहिये व जित
नीवस्तुभोजनकी अपनेको बहुतप्यारीहो उसेबनवाकरठाकुरजी
कोभोगलगावै कदाचित् नित्यसबतरहकाभोजन तैयार न होसकै
तोअन्नकूटआदिक पर्वकेदिन ठाकुरजीकोभोगलगानेवास्ते अव
श्यछत्तीसव्यंजनबनवानाउचितहै व जोमनुष्यप्रतिदिन मट्टीकीमू
र्त्तिबनाकरपूजाकरै उसेआवाहन व बिसर्जनकामन्त्रअवश्य

Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चाहिये व ठाकुरपूजनेवालेको वहमन्त्रपढ़ना न चाहिये व होमक
रनेवालेको अग्निमें मेराध्यानलगाना व जल व सूर्यकोभी हमारा
रूप समझनाउचितहै व पूजाकरतीसमय मेरेचरणोंमें मनलगाये
रहै औरपूजाकरनेउपरांत साष्टांगदण्डवत्करके ठाकुरजीसेहाथ
जोड़करकहै हेमहाप्रभु मैंतुम्हारेशरणपड़ताहूं मुझेअपनादासजा
नकरउद्धारकीजिये इसीतरहनित्यपूजनकेउपरांतचरणामृतलेकर
प्रसादठाकुरजीका भोजनकरै व बिष्णुसहस्रनामका पाठपढ़कर
मेरीकथा व लीलासुने व भजन व स्मरणकरनेमें दिनरातलीनरहै
व जिसेपरमेश्वरधनदेवे वहठाकुरमन्दिरके खर्चवास्तेगांव व जा
गीरदेकर बाग़लगवादे जिसमेंअच्छीतरह ठाकुरपूजाहो व अनेक
रंगकेफूलसुगन्धित उनमेंचढ़ाकरैं परउसबाग़ व गांवकोबेचने या
पोत व किरायालेनेकी इच्छा न रक्खै हे उद्धव मैंभक्ति व प्रीति
कीराह जितना केवल जलचढ़ावनेसे प्रसन्नहोताहूं उतनाबिना
भक्तिकरोड़ोंरुपया हरिमन्दिरमेंलगाने व दानदेनेसेराजीनहींहोता
जोमनुष्यसच्चेमनसे प्रतिदिनइसतरह मेरापूजन व सेवाकरता है उ
सकेसामने अठारहों सिद्धिबनीरहती हैं व जितनाफलपूजाकरने
व देवस्थान बनवानेवालोंकोप्राप्तहोता उतनापुण्य उनकोभीसम
झनाचाहिये जोलोगपूजाकरने व देवस्थान बनानेका सम्मतदेक
र उसकाममेंसंगदेतेहैं व जोलोगअपने व दूसरेदानदीहुईपृथ्वीब्रा
ह्मणसे या देवस्थानआदिकका चढ़ायाहुआबाग़ बर्जोरीछीनलेते
हैं व ऐसासम्मत देनेवालोंको साठिहज़ार बर्षतककीड़ाहोकर वि
[illegible]नापड़ताहै ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीराहज्ञानकादीपक मेरेहृदय में प्रकाशितकरकेइसतरह माया
पीअंधेराछुड़ादिया जिसतरहसूर्य निकलनेसे कुहिरानहींरहता व
म्हारीकृपासे मनमेराबिरक्तहोकर स्त्री व पुत्रोंकाप्रेमछूटगया आ
कोदयाकापलटा कोईदियाचाहै तो किसीतरहउऋण नहींहोसक्ता
इसलिये कमलरूपी चरणोंको बार २ दण्डवत्करके यहबरदान
मांगताहूं जिसमें तुम्हाराचरणछोड़कर मनमेरादूसरीओर न जा
वै यहबचनसुनकर श्रीकृष्णजी आनन्दमूर्त्तिने अपनीखड़ाऊं देक
रकहाहेउद्धव तुमयहांसे बदरीकेदारजाकर नित्यगंगास्नानकिया
करो व कन्दमूलखाकर मेरेचरणोंकाध्यानलगावो तुम्हारीमुक्ति
होजावैगी औरअबमैंभी कलियुगबासियोंके उद्धारहोनेवास्ते भाग
वतरूपीमूर्त्ति अपनीसंसारमेंछोड़कर गोलोककोजाऊँगा उसकथा
केपढ़ने व सुननेसेसंसारीमनुष्य भवसागरपारउतरजावैंगे उद्धवजी
यहबचनसुनतेही श्यामसुन्दरका बियोगसमझकरअतिदुःखी हो
गये परउनकी आज्ञाटालनाउचित न जानकरखड़ाऊंकाजोड़ाशि
रपरधरलिया व दण्डवत्करने व परिक्रमालेनेउपरांत मोहनीमू
र्त्तिकास्वरूप आंखोंकीराह हृदयमेंरखकर उनसे बिदाहुआ व बद
रिकाश्रममेंजाकर त्रिभुवनपतिकी आज्ञानुसार स्नान व ध्यानक
रनेलगा सोउसीज्ञानकेप्रतापसे कुछदिनबीते तनअपनासाथयोगा
भ्यासकेछोड़कर मुक्तिपदवीपरपहुंचा इतनीकथासुनाकर शुकदेव
जीने श्यामसुन्दरको ध्यानमें दण्डवत्किया और परीक्षितसेबोले
हे राजन् देखो त्रिभुवनपतिने सबवेदोंकासार अमृतरूपीज्ञान व
भक्ति निकालकर ग्यारहवेंस्कन्धमें उद्धवको पिलायदिया

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहदेवता व दैत्योंने समुद्रमथनकरके चौदहरत्ननिकालेथे उसी
रह वेदव्यासजीने सबवेद व शास्त्रदेखकर उसकासार श्रीमद्भा
गवत बनाया है॥

तीसवां अध्याय॥

सबयदुवंशियोंकाआपसमेंलड़करनाशहोना व श्रीकृष्णजीकेपांवमें जरानामकेवटको बाणमारना॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर विनयकी हेमुनिनाथश्या
मसुन्दरकोशापछुड़ानेकी सामर्थ्यथी फिरकिसवास्तेउन्होंने यदुवं
शियोंपरदयानहींकी शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित बसुदेवनन्दन
परब्रह्मपरमेश्वरके अवतारको जो संसारीमायासे रहितथे यदुवंशि
योंकानाशकरनाथा परआपनेउनकीपालनाकीथी इसलियेअपने
हाथमारनाउचित न जानकर ब्राह्मणसेशापदिलवादिया जबउद्धव
बदरीकेदारकी ओरचलेगये तबश्रीकृष्णजीने ऐसाविचाराकि द्वार
कापुरीमेंशापनहीं व्यापैगा इसकारणयदुवंशियोंको प्रभासक्षेत्रमें
चलनेवास्तेकहा सोत्रिभुवनपतिकीआज्ञानुसार सिवायराजा उग्र
सेन व बसुदेवजीके सबयदुवंशीहाथी व घोड़े व रथोंपरचढ़कर प्र
भासक्षेत्रमेंपहुँचे व स्नान व दानकरने उपरान्त उसदिन तीर्थव्रत
रखकर बहांटिकरहे दूसरेदिन परमेश्वरकी इच्छानुसार सबयदुवं
शीमदिरापानकरके मतवालेहोगये व समुद्रकिनारेबैठकर अपनी
अपनीबड़ाई करनेलगे व इसीबातपर स्नानकरतीसमय पहिलेपा
नीके छीटोंसेलड़नेलगे फिरआपसमें बाण व तलवार व गदाआदि
क अनेकशस्त्रचलनेलगे जिसतरह अधर्मकरनेवाले वेद व शास्त्र
का [illegible] करतेहैं उसीतरहब्राह्मण

CC-0.In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अट्ठाईसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णजीको उद्धवसे ज्ञान विरक्तहोनेका वर्णन करना॥

श्यामसुन्दरनेकहा हेउद्धवज्ञानीको किसीकीस्तुति व निन्दाक रनाउचित न होकर सबजीवोंमें परमेश्वरकाचमत्कार एकसासम झनाचाहिये दूसरेकीनिन्दाकरनेवाले अवश्यनरकभोगतेहैं इसलि येमनुष्यकोउचितहै कि मनअपना एकओरलगायेरखकर ठाकुर कीपूजाकरतीसमय दूसरीओर ध्यान न लगावे व शरीरमेंएकआ त्माजोशुद्धहै उसकाध्यान आठोंपहरकरतारहै व यहबातमनमेंबि श्वासजानै कि नारायणजी मायाकेगुणोंको साथलेकर सबसंसार उत्पन्न व पालन व नाशकरतेहैं जबमनुष्यने ऐसाविचारकर एक परमेश्वरको सच्च व संसारीव्यवहार झूंठासमझा तबमन उसकाबि रक्तहोकर मेरीओरलगजाताहै व जबआत्मा मन इन्द्रियोंके साथ मिलगया तबवहसंसारीप्रीतिमें फँसकर मायाजालसेनहींछूटताजि सतरह मनुष्यस्वप्नेमें अनेकबस्तुदेखकर जागने उपरान्त उसेझूंठा समझताहै उसीतरह संसारीव्यवहार मिथ्याहोकर केवलपरमेश्वर कानामसच्चजाननाचाहिये हर्ष व शोच व क्रोध व लोभ व अहंकार व भय व प्रीति व शत्रुताई व जन्म व मरणयहसबगुणमायाकेहोकर आत्माउनसेबिलगरहताहै औरयहसंसारनट व भानमतीकेखेलस मानझूंठाहोकर न आदिमेंथा न महाप्रलयमेंरहैगा इसलियेमनुष्य को ज्ञानरूपीतलवारसे संसारीप्रीति व मन व इन्द्रियोंकीतृष्णा काटडालनाचाहिये जबउसनेसंसारीमायाछोड़कर अपनेमन व इ न्द्रियोंको बशमेंकिया तबउसकोघर व वनकारहना दोनोंबराबरहैं

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जसतरह सोनेकाअनेकगहनाबनवानेसे नामउनकापृथक् २ हो
ताहै औरवहसबगहना गलवाडाले तोकेवलसोनाकहलाताहै उ
सीतरहसंसारकेआदि व अन्त व मध्यमें कांचनरूपीनारायणजी
रहतेहैं व उनकीइच्छासे अनेकजीव उत्पन्नहोकरबिलग २ नाम
उनकाहोताहै व महाप्रलयहोनेमें साराजगत् नाशहोकरजीवात्मा
सबजड़ व चैतन्यका परमेश्वरकेरूपमें समाजाताहै जैसेसड़कमें
सीपकाटुकड़ा चांदीकेसमान चमकताहुआदेखकर कोईलोभीउ
ठालेवे औरउठातीसमय सीपसमझकर लज्जित होजावै वैसेससं
रीगतिझूंठीसमझनाचाहिये जिसतरहउड़तेहुयेबादलसे आकाश
कुछमिलावटनहींरखता उसीतरहआत्मा चौरासीलाखयोनि में
व्यापकरहनेपरभी सबसेबिलगरहताहै इसलियेमनुष्यको चाहिये
किमनअपनामायाकेगुणोंसे बिरक्तरखकर ऐसाहरिचरणोंमेंध्यान
लगावै कि संसारीवस्तुकी कुछचाहना व प्रीति न रहै जिसतरह औष
धखानेसेरोगशरीरमेंनहींरहता उसीतरह अपनेमन व इन्द्रियोंको व
शरखनेसे संसारीतृष्णा व प्रीतिछूटजातीहै जिसनेमन व इन्द्रियों
को अपनेवशमें नहींकिया उसकातप व स्मरणकरनावृथा है जबम
नमनुष्यकावीचध्यान चरणपरमेश्वरकेलीनहोगया तबउसेअपने
शरीर व संसारकीप्रीतिनहींरहती इसलियेमनुष्य चलतेफिरतेसोते
जागते खाते पीतेमनअपनाआठोंपहरनारायणकीओर लगायेरहै
जिसतरह सूर्यनिकलनेसे अँधियारारातकाछूटजाताहै उसीतरहमे
री भक्तिकरनेसे अज्ञाननहींरहता योग व तपभंगहोनेसे जल्दीगति
नहींहोती व मेरेभक्तसे कुछअपराधभी होजाताहै तो दूसरेजन्ममें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसकाउद्धार करदेताहूं व आत्माशरीरमें रहनेसेसबइन्द्रियोंक चलने व फिरने व बोलनेकी सामर्थ्यरहतीहै व जितनेदेवताप्रक शआपना इन्द्रियोंमेंरखतेहैं सबदेवतोंकोभी वही आत्मासामर्थ्य देकर उनसेबिलगरहताहै इसवास्तेज्ञानी व योगियोंको चाहिये कि आत्माकीओर ध्यानलगाकर संसारीमाया व मोहमें न फँसें ऐसेमनुष्योंपर पिछलेजन्मके अधर्म्मकरनेसे कोईदुःखभी पड़जाताहैतोमैं उनकाकष्ट निवारण करदेताहूं यहबचनमेरा सच्चामान कर नाशहोनेवाले शरीरसेप्रीति न रखना व इन्द्रियोंको सुखदेना उचित नहीं हैं॥

उन्तीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णजीका उद्धवसे मनके रोकनेका ज्ञानकहना॥

उद्धवनेइतनी कथासुनकर बिनयकी हेदीनानाथ आपनेकहा किमनकोरोकनाचाहियेसोहवासेभी अधिकबेगरखनेवाले मनको रोकना बहुतकठिनहैं कोईऐसाउपायबतलाइये जिसमें मनरोका जावे व हरिचरणोंमें प्रीतिउत्पन्नहो सिवायतुम्हारे दूसराकोई इस कायत्न बतलानेनहींसक्ता व आपकीमायाने संसारीजीवोंकों ऐसा भुलारक्खाहै किबिनादया व कृपातुम्हारी कोई इसमायारूपीजा लसे नहींछूटता जहांब्रह्मादिक देवतों को तुम्हाराभेदजाननाकठिनहै वहांसंसारीमनुष्यहरिचरित्र समझनेकी कहांसामर्थ्य रखते हैं यहबातसुनकर श्यामसुन्दरनेकहा हेउद्धव जोकोई संसारमें जन्मलेकर मेरेचरणोंकाध्यान व स्मरणकरताहै तोउसकोधीरेरेसंसारीप्रीतिछूटकर प्रतिदिन हरिचरणोंमें प्रेमबढ़ताहै जहांतीर्थपर मेरेभ

...tgani, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व ज्ञानीलोगरहतेहैं वहांउनकीसंगतिमेंरहकरमेराभजन व स्म
णकियाकरै व सबजीवोंपरदया रखकर चौरासीलाखयोनि में मे
राप्रकाशबराबर समझै व किसीजीवकोदुःख न देकरजहांतकबनि
पड़ैवहांतक मनसाबाचा कर्मणासे दूसरेकाउपकारकरै व मनमें य
हअभिमान न रक्खै किउत्तमजाति व बड़ामनुष्यहोकर कंगाल व
शूद्रको किसतरहपानीपिलाऊँ व उसेछूकरभोजनदूं जबतकमनु
ष्यप्रकाश परमेश्वरकाबीचतन ब्राह्मण व चाण्डालके एकसान
हींसमझता तबतकवह अज्ञानहै व जिसने देवता व दैत्य व मनुष्य
व पशु व पक्षीआदिक चौरासीलाखयोनिमें परमेश्वरकारूपबरा
बरजाना उसेकोईदुःखदेनेकी सामर्थ्यनहींरखता वहअवश्यमुक्त
होताहै हेउद्धवयहसबगुप्तज्ञानहमनेआजतककिसीसे नहींकहाथा
सोतुझेसुनाया इसकोयादरखने से तेरीमुक्तिहोजावेगी व तुमभी
यहज्ञानहरिभक्त व साधु व महात्मालोगोंको सुनाना औरजोमनु
ष्यचोर व लम्पट व पाखण्डी व लोभी व जुआरी व मद्यप व झूठे
हों व जीवहिंसाकरके परायाउपकार नहींमानें उनसेमतकहना जि
सतरह अमृतपीनेवालेको दूसरीऔषध खानेकाप्रयोजननहींरहता
उसीतरह यहज्ञानसमझनेवालोंको अपनेभवसागरपारउतरने वा
स्ते दूसराकुछउपाय करना न चाहिये जो कोई यहज्ञान व हरिक
थासच्चेमनससुनकर दूसरेकोउपदेश करेगा उसकोहमयमराजकी
फांसीसेछुड़ाकर परमपददेवेंगे इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले
हेपरीक्षित उद्धवनेयहसबज्ञानसुनकर आंखोंमें आंशूभरलिया व
श्रीकृष्णजीकेसामने हाथजोड़करविनयकी हेमहाप्रभूआपने दया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केशापसे यदुबंशीलोग श्याम व बलरामकासमझाना न मानक
र जबबलभद्रजीसे लड़नेवास्ते दौड़े तबदोनोंभाई अलगबैठकर
कौतुकउनका देखनेलगे जबलड़ते २ शस्त्रसबकिसी टूटकरहाथी
घोड़ेमारेगये तबउसीपतलीको जोमूशलके चूरसेसमुद्रकिनारे ज
मीथी उखाड़करएकदूसरेकोमारनेलगा सोदुर्व्वासाऋषीश्वरकेशा
पसे वहपतलीमारतीसमय तलवाररूपीघावहोकर सबयदुबंशीम
रनेलगे जैसेकुलवंती स्त्री दूसरेपुरुषकोदेखकर छिपजातीहै वैसेक्रो
धउत्पन्नहोनेसे सबयदुबंशियोंका सतोगुण व ज्ञानशरीरसे जातार
हा जिसतरह बांसकाबन आगिलगनेसे जलजाताहै उसीतरह दुर्बु
द्धिउत्पन्नहोनेसे बापबेटा व भाई २ आपसमेंलड़कर छप्पनकरोड़
यदुबंशीनाशहोगये जबासिवाय श्याम व बलरामके और कोईजी
तानहींबचा तबश्यामसुन्दरने बलभद्रजीसेकहा अबभारपृथ्वीका
उतरगया इसलिये हम व तुमदोनोंभाईकोभी बैकुण्ठमेंजानाचाहि
ये यहबचनसुनतेही बलभद्रजीने सबबस्त्रअपना उतारिडाला व
कोपीनबांधनेउपरांत सिंधुकेतीरबैठकरसाथयोगाभ्यासकेअन्तर्द्धा
नहोगये तबश्यामसुन्दरभी चतुर्भुजीस्वरूप धारणकरके शंख व
चक्र व गदा व पद्मसमेत समुद्रकिनारे नीचेबृक्षपीपलकेजाबैठे जि
ससमय त्रिभुवनपतिवृक्षसेउठंगेहुयेदहिनापैर अपनाबांयेंघुटनेपर
रखकर बैकुण्ठजानेकी इच्छारखतेथे उसीसमय बसुदेवनन्दनकी
इच्छानुसार जरानामकेवट जो बालिबानरका अवतारथा धनुष
बाणलेकर वहांआनपहुंचा व उसनेपैरमुरलीमनोहरका दूरसेचम
कताहुआ देखकर हरिणकेधोखेसे बाणमारा तोवहीतीर जिसमें

Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मछलीकेपेटसे निकलेहुये लोहेकाफलबनाथा आनकर ऊपरचर
ण त्रिभुवनपतिकेलगा जबवहकेवटअपना सौजाउठानेवास्ते नि
कटआया तबश्यामसुन्दरके पांवमेंघावदेखकर पीलाहोगया व डर
केमारेकांपताहुआ हाथजोड़कर बोला हे दीनानाथ मेरेबराबरदूस
राकोई अपराधीसंसारमें न होगा जिसनेलक्ष्मीपतिको तीरमारक
र दुःखदिया इसपापकरनेसे मेराउद्धार किसीतरहनहींहोसक्ता इस
लिये तुममुझेअपनेहाथसे मारडालौ जिसमेंमेरेदण्डपावनेका हा
लसुनकर कोईदूसरासन्त व महात्माकाअपराध न करै व हे महा
प्रभु जबतुम्हारीमायाको ब्रह्मादिकदेवता नहींजानसक्के तबमुझअ
धर्मी व अज्ञानको क्यासामर्थ्यहै जोतुम्हारीमहिमाको पहुंचनेस
कूं जबवह केवटबहुतबिलापकरके ऊपरचरणमुरलीमनोहरके लो
टनेलगा तबश्यामसुन्दरने हँसकरकहा तू कुछ उदासमतहो मेरीइ
च्छानुसारतुझसे अनजानमें यहअपराधहुआहै जिसमेंब्राह्मणका
शापझूंठा न हो तू धीर्यरख तेरेवास्ते बैकुण्ठसेबिमानआताहै यह
बचनमुरलीमनोहरके मुखसेनिकलतेही एकबिमान जड़ाऊ वहां
आनपहुंचा सोत्रिभुवनपतिकी आज्ञानुसार वहकेवटदिव्यरूपहो
नेउपरांत बिमानपरबैठकर बैकुण्ठमें चलागया इतनीकथासुनाक
र शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित देखोजोकोई ऐसेदीनदयालुपरमे
श्वरकीशरणछोड़कर दूसरेका भरोसारखताहै उसेबड़ामूर्खसमझ
नाचाहिये उसकेवटके जानेउपरांत दारुकनाम सारथीनेढूंढ़तेहुये
वहांपहुँचकर जैसेमुरलीमनोहरको दण्डवतकिया वैसे त्रिभुवनप
तिकीइच्छानुसार वहरथघोड़ोंसमेत उड़करआकाशमें चलागया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व श्रीकृष्णाजीने दारुक सारथीसे कहा तुमद्वारकामें जाकरबसुदेव जीआदिकसे यदुबंशियोंकाहालकहिके उन्हैं समझादेना कि अब द्वारकापुरी समुद्रमें डूबजावैगी इसलिये सबलोग अपनी २ वस्तु समेतअर्जुनकेसाथ हस्तिनापुरचलेजावैं व हमारीओरसेअर्जुनको कहिदीजियो कि मेरेबैकुण्ठजानेका कुछशोच न मानकरसबस्त्री व बूढ़े व लड़कोंको अपनेसंगलेजावैं व हमनेजोज्ञानउसको गीता मेंसमझायाहै वहीबातसच्चजानकर मेरेचरणोंकाध्यानकरतारहै व हे दारुकमेराभजन व स्मरणाकरने व अपनाधर्मरखनेसे तेरीभीग तिहोजावैगी यहवचनसुनतेही दारुकसारथी उनसेबिदाहोकररोता व पीटताद्वारकाकी ओरचला॥

इकतीसवां अध्याय॥

श्यामसुन्दरका बैकुण्ठधामकोजाना व बसुदेव आदिकका उनके शोचमेंमरना॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जबदेवतोंने उसकेवटको बिमान परचढ़ेहुये बैकुण्ठकीओरजाते देखा तबब्रह्मा व इन्द्र व कुबेर व ब रुण व गन्धर्ब व विद्याधर व चारण व किन्नरआदिक सबदेवता अ प्सरोंको साथलेकरअपने २ विमानोंपर गाते व बजावते व फूल बरसातेहुये जहांपरश्यामसुन्दरबैठेथे वहांआकाशमें आनकर इ सइच्छासे इकट्ठेहुये किअबद्वारकानाथ बैकुण्ठमें आतेहैं चलकर मोहनीमूर्त्तिकीछबि देखलेवैं नहींतो फिरउस अद्भुतरूपका दर्शन कहां मिलैगा सोहमलोगभी उनकोअपनेस्थानपरलेजाकर दो चारदिन उनकीसेवाकरैंगे ऐसाबिचारकरवहलोग मुरलीमनोहर केचढ़नेवास्ते अपने २ लोकसेदिव्यबिमान लेआयेथे जबश्याम

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुन्दरने देवतोंकोआकाशमेंदेखा तबअपनेशरीरमें परमात्माका ध्यानलगाकर आंखेंबन्दकरलीं व उसीशरीरसे बिजुलीकेसमान चमककर इसतरह बैकुण्ठकोचलेगये किब्रह्मादिक देवतोंकोभी अच्छीतरहउनकास्वरूप दिखलाईनहींदिया इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित बैकुण्ठनाथकीमहिमा व भेदकोपहुँचना बहुतकठिनहै परसबकोई अपनीसामर्थ्यभर उनकागुणगातेहैं देखोजोआदिपुरुष भगवान्कैसे २ बीरोंकोमारकर गुरूकामराहुआबेटा यमपुरीसेलेआयेथे वहीत्रिभुवनपति मनुष्यतनुधरनेकेकारण जरानामकेवटके बाणमारनेसे बैकुण्ठकोचलेगये जब श्रीकृष्णजीकाबंश जगत्मेंनहींरहा तबसंसारमें जन्मपाकरकोई जीता न बचैगा इतनीकथासुनाकर सूतजीनेशौनकादिकऋषीश्वरोंसेकहा जबदारुकसारथीने द्वारकामेंपहुंचकर हालमरनेसबयदुबंशी व जानेश्याम व बलरामकाबैकुण्ठधाममें बसुदेव व उग्रसेन आदिकसेकहा तबसबस्त्री व पुरुषछोटेबड़े जोवहांपरथे रोतेरोतेव्याकुलहोकर प्रभासक्षेत्रकोदौड़े जबउन्होंने रणभूमिमेंपहुंचकर समुद्रकिनारे सबयदुबंशियोंकीलोथ पड़ीहुईदेखी व श्याम व बलरामकादर्शन नहींपाया तबबसुदेव व देवकी व राजाउग्रसेन हायमारकरउसीजगहमरगये व रुक्मिणी व सत्यभामाआदिक आठोंपटरानी मुरलीमनोहर व रेवतीबलरामजीकीस्त्री चिताबनाकर जलमरीं व प्रद्युम्नआदिक सबबीरोंकीस्त्रियां अपने २ पतियोंकेसाथसतीहोगईं जबउससमय अर्जुननेभीवहांपहुंचकर यहदशादेखी व दारुककेमुखसे श्यामसुन्दरकाउपदेशसुना तबउसनेऐसाशोचकि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याजिसकाबर्णान नहींहोसक्ता परश्यामसुंन्दरने जोज्ञानअर्जुनको गीतामेंकहाथा वहसमझकर अपनेमनका धीर्यदिया व सबकिसी ने अपने २ घरवालोंकीलोथजलाकर शास्त्रानुसारक्रिया व कर्म किया व जिनकेकुलमें कोईनहींबचाथा उनकाअर्जुननेदाहकिया जबत्रिरात्री वहांपरहोचुकी तबअर्जुन बज्रनाभ अनिरुद्धकेबेटा व स्त्रीबूढ़े व बालकोंकोजोबचगयेथे अपनेसाथलेकर हस्तिनापुरको चला उससमय सिवायस्थानरहने श्रीकृष्णजीके औरसबद्वारका समुद्रमेंडूबगई अबतकवहांकभीकभी मन्दिरश्यामसुन्दरका बिजुलीकीतरहचमकताहुआदिखलाईपड़जाताहैजबअर्जुननेहस्तिनापुरपहुँचकर यहसबसमाचारकहा तबयुधिष्ठिरआदिकपांचोंभाईने राजगद्दी हस्तिनापुरकी परीक्षितको व राज्यइन्द्रप्रस्थ व मथुराकाबज्रनाभकोजोश्रीकृष्णजीकेकुलमेंबचाथादेदिया व आपपांचोंभाई बिरक्तहोकर उत्तरदिशामेंचलेगये व हिमालयमेंगलकर मुक्तपदवीपरपहुँचे इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हेराजन् जिसदिन श्रीकृष्णजी बैकुण्ठकोपधारे उसीदिनसत्य व धर्मसंसारसेउठकर उनकेसाथचलागया परजोकोई इसस्कन्धकोमनलगाकरपढ़ै व सुनैगा वहअनेकजन्मके पापोंसेछूटकरमुक्तिपावैगा॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीभागवतमहापुराण

बारहवांस्कन्ध ॥

कलियुगबासी मनुष्यों व राजाओंका हालकहना व तक्षक सांपका राजा परीक्षितको काटना व मार्कण्डेय ऋषीश्वरकीकथा ॥

पहिला अध्याय ॥

शुकदेवजीको कलियुगबासी राजाओंका हालपरीक्षितसे बर्णनकरना ॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर विनयकी हे मुनिनाथआप नेकहा जिसदिन श्रीकृष्णाजी बैकुण्ठकोगये उसीदिनसत्य व धर्म संसारसेउठगया क्याउनकेपीछे कोईऐसाधर्मात्माराजानहींहुआ जोधर्मकोस्थिररखता अबयहबतलाइये कि फिरकिसकेबंशमेंरा जगद्दीरहीथी शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित श्यामसुन्दरकेरहनेतक द्वापरयुगथा उनकेपीछेकलियुगमें जोराजाहुये उन्होंनेसच्चाई व धर्मछोड़दियाव थोड़ीआयुर्बलरहनेसेकुछशुभकर्मभीनहींकरसके थे जबश्रीकृष्णजीमहाराज बैकुण्ठधामकोगये तबपांडवोंकेवंशमें तमचक्रवर्तीराजाहुये व सन्धारेएपरीक्षितराजाव जन्मेजयचक्रव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्त्तीराजाहोंगे व जरासन्धकाबेटा जोसहदेवथा उसकेबंशमेंपुरुजित् नामराजाहोगा उसेचाणकमंत्रीमारकर प्रदेवत् अपनेपुत्रकोराज्य देगा उसकेवंशमें तीनसौअड़तीसबर्षतक राजगद्दीरहैगी फिरशिशु नागनामराजाहोगाउसकेकुलमेंकाकौरन व क्षेमधर्माआदिकउत्प न्नहोकरतीनसौसाठबर्षराज्यकरैंगे फिरमहानन्दीराजाके बिन्दना मबेटा शूद्रीसेउत्पन्नहोकर बरजोरीसबक्षत्रियोंका धर्मनष्टकरैगा व उसकेडरसे सबकुलीनक्षत्रीभागकर पंजाबमेंजाबसैंगे व पर्वतकेरह नेवालेक्षत्री शूद्रधर्मरक्खैंगे व राजाबिन्दके आठबेटेराज्यकरैंगे व उनआठोंको चन्द्रगुप्तनाम दासमारकर आपराजगद्दीपर बैठजाय गा व उसकेवंशमेंबारीचारी व देवहूतीआदिकउत्पन्नहोकर हजार बर्षतक वहराजारहैंगे फिरकण्वनाममंत्री देवहूती अपनेराजाको स्त्रीकेबिषयमेंफँसेरहनेसे मारकर आपराज्यकरैगा उसीकुलमेंवसु देव व बंहुमित्र व नारायणनामआदिक उत्पन्नहोकर उनकेवंशमें तीनसौपैंतालीसबर्षतक राज्यरहैगा फिरकनलनाम शूद्रनारायण नाम अपनेराजाकोमारकर आपराजगद्दीपर बैठजायगा उसकेवं शमेंकृष्ण व पूर्णमासआदिक उत्पन्नहोकर तीसपीढ़ी साढ़ेआठ सौबर्षतक राज्यकरैंगे फिरउभरतीशहरकेरहनेवाले सातअहीररा जाहोकर उन्हैंमारनेउपरांत कावोंकाराज्यहोगा व उनकेपीछेचौ दहपीढ़ीतक मुसल्मानराजाहोकर बादशाहकहलावैंगे व एकहजा र निन्नानवेबर्ष उनकाराज्यरहैगा व मुसल्मानोंको जीतकरदश पीढ़ीगोरखड राज्यकरैंगे उनकेपीछे ग्यारहपीढ़ी निन्नानवे बर्षत कमौनका राज्यहोगा इतनेलोग कलियुगमेंनामीराजाहोकरफिर

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अहीर व शूद्र व म्लेच्छराजाहोंगे व कलियुगबासी राजा अपना कर्म व धर्मछोड़करस्त्री व बालक व गौकाबधकरैंगे व दूसरेकाधन व स्त्री व पृथ्वी बर्जोरीछीनकर काम व क्रोध व लोभअधिक रक्खैगे उनकीदशादेखनेसे प्रजालोग अपनेकर्म व धर्मसे न रहकरबहुत पाप करैंगे ॥

दूसरा अध्याय ॥

शुकदेवजीको कलियुगबासियोंका लक्षण कहना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित कलियुगमें प्रतिदिन संसारीमनुष्यदया व सचाईछोड़देने से सामर्थ्यहीनहोजावैंगे और आयुर्बल थोड़ीहोनेमें कुछशुभकर्म उनसेनहीं बनपड़ेगा व राजालोग प्रजाकोदुःखदेकर चारौंभागअन्नका लेलेवैंगे व बर्षाथोड़ीहोकरअन्नकमउत्पन्नहोगा व महँगापड़नेसे सबमनुष्य खानेबिनादुःखपाकर अपने २ बर्ण व आश्रमका धर्मछोड़देवैंगे व कलियुगमेंआयुर्बल मनुष्यकी एकसौबीस बर्षकीलिखीहै परअधर्मकरनेसे पूरीआयुर्दाय न भोगकर उसकेभीतरमरजावैंगे व कलियुगके अन्तमेंबहुत पापकरनेकेकारण बीसबाईसबर्षसे अधिककोईनहींजीवैगा व ऐसा चक्रवर्त्ती व प्रतापीराजाभी कोईनहींरहैगा जिसकीआज्ञासातोंद्वीपकेराजापालनकरैं जिनकेपास थोड़ासाभी राज्य व देशहोगावह अपनेको बड़ाप्रतापीसमझैंगे व थोड़ीआयुर्दाय होनेपरभी पृथ्वी व धनलेनेवास्ते आपसमेंझगड़ाकरैंगे व अपनाधर्म व न्यायछोड़कर जोमनुष्य उनकोद्रव्यदेगा उसकापक्षकरैंगे व पाप व पुण्यका विचार न रक्खैंगे व चोरी व कुकर्मकरने व झूंठबोलनेमें अवस्थाअप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नी बिताकर दमड़ीकीकौड़ीवास्ते मित्रसे शत्रुहोजावेंगे व गायोंका दूध बकरीकेसमानथोड़ाहोकर ब्राह्मणोंमें कोईऐसालक्षणनहींरहैगा जिसेदेखकर मनुष्यपहिचानसकै कि यहब्राह्मणहै पूछनेसेउनकीजातिमालूमहोगी व धनपात्रकीसेवा सबलोगकरैंगे व उत्तममध्यमवर्णका कुछबिचार नहींरहैगा व ब्यापारमें छलअधिकहोगा व स्त्रीपुरुषका चित्तमिलनेसे ऊँचनीचजाति आपसमेंभोगबिलास करैंगे व ब्राह्मणलोग अपनाधर्म्म व कर्मछोड़करजनेऊपहिरनेसेब्राह्मणकहलावैंगे व ब्रह्मचारी व बानप्रस्थजटाशिरपरबढ़ाकरआचार व बिचार अपनेआश्रमका छोड़देवैंगे व कंगालउत्तमवर्णसे धनपात्रमध्यमवर्णको अच्छासमझैंगे व मूर्खमनुष्यझूंठीबातबनानेवालासच्चा व ज्ञानीकहलावेगा व तीनोंवर्णके मनुष्य जप व तप व संध्या व तर्पणकरनाछोड़कर नहाने उपरांत भोजनकरलेवैंगे व केवलस्नानकरना बड़ाआचारसमझकर वहबातकरैंगे जिसमें बीचसंसारकेयशहो व अपनीसुन्दरताईवास्ते शिरपरबालरखकरपरलोककाशोच न करैंगे व चोर व डाकूबहुतउत्पन्नहोकर सबको दुःखदेवैंगे व राजालोग चोर व डाकूसेमेलकर प्रजाकाधन चुरवालेवैंगे व दशबर्षकीकन्या बालकजनैगी और कुलीनस्त्रियां दूसरेपुरुषपरचाहनारक्खैंगी व अपनाकुटुंब पालनेवालेको सबलोगअच्छाजानकर केवलअपनेपेटभरनेसे सबछोटेबड़े प्रसन्नरहैंगे व बहुतलोगअन्न व बस्त्रका दुःखउठावैंगे व बृक्षछोटेहोकर औषधमेंगुणनहींरहैगा व शूद्रकेसमान चारोंबर्णका धर्महोकर राजालोग थोड़ीसी सामर्थ्यर खनेपर सबपृथ्वीलेनेवास्ते इच्छारक्खैंगे व गृहस्थलोगमाता व पि

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताकोछोड़कर ससुर व सांले व स्त्रीकीआज्ञामेंरहैंगे व निकटकेतीर्थों परविश्वास न रखकर दूरकेतीर्थोंमेंजावैंगे परतीर्थनहाने व दर्शनकर नेसे जोफलमिलतेहैं उसपर उनकोनिश्चय न होगा व होम यज्ञआ दिक संसारमेंकमहोकरगृहस्थलोग दो चारब्राह्मणखिलादेनेका बड़ाधर्म समझैंगे व सबकोई धर्म व दयाछोड़कर ऐसे सूमहोजावैंगे कि उनसेअतिथिकोभी भोजन व वस्त्रनहींदियाजायगा व संन्यासी लोग अपनाकर्मधर्मछोड़कर गेरुआवस्त्रपहिरनेसे दण्डीमालूम होंगे इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जबअन्तक लियुगमेंइसीतरह घोरपापहोगा तबनारायणजी धर्मकीरक्षाकरने वास्ते सम्भलदेशमें गौड़ब्राह्मणकेघरकलंकीअवतारलेवैंगे व नीले घोड़ेपरचढ़कर हजारोंराजा व अधर्मी व पापियोंकोखड्गसेमारडा लैंगे जबउनके दर्शनमिलने से बचेहुये मनुष्योंको ज्ञानप्राप्तहो जावैगातबवहलोग पापकरनाछोड़कर अपनेधर्मसे चलैंगे उसके आठसौ बर्षउपरांत सतयुगहोकर सबछोटे बड़े अपनाधर्म करैंगे हे राजन् इसीतरह ब्राह्मण क्षत्री व वैश्य व शूद्रचारोंवर्णका बंशव राबरचलाआताहै सतयुगकेआदिमें राजादेवापी चन्द्रबंशी जोब द्रिकाश्रममें व राजामरु सूर्यबंशी जोमन्दराचलपहाड़परबैठेहुये तपकररहे हैं सूर्यबंशी व चन्द्रबंशीकुलको उत्पन्नकरैंगे व सतयुग केप्रवेशकरनेसे कलियुगकाधर्म जातारहैगा देखोइतनेबड़े२ राजा पृथ्वीपरहोकर मिट्टीमेंमिलगये व सिवायभलाई व बुराईकेकुछउ नकेसाथनहींगया औरयहशरीर मरनेउपरांत कुछकाम न आन करपड़ारहनेसे इसकोकौवे व कुत्तेखाजातेहैं व कीड़ेपड़ने व दुर्गंध

CC-0. In Public Domain. U.P. State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आवनेसे कोईउसकेपास खड़ानहींहोता व जलादेनेसे राखहोजा
ताहै जोलोगनाशहोनेवाले शरीरको पुष्टकरनेवास्ते जीवहिंसाक
रतेहैं उनको बड़ामूर्ख समझनाचाहिये जबऐसेप्रतापीराजा नाश
होकर केवलयश व अयश उनकारहगया तबवहशरीरलाखोंयत्न
करनेपरभी किसीतरह स्थिरनहींरहता इसलिये मनुष्यकोउचित
है किअपनेशरीर व संसारकीप्रीति व अहंकारछोड़कर हरिचरणों
मेंध्यानलगावे व परमेश्वरका भजन व स्मरणकरके भवसागरपा
रउतरजावे मनुष्यतनपानेका यहीफलहै नहींतोपीछेसे बहुतपछ
तावेगा व हेपरीक्षित तुमबड़ेभाग्यमानहौ जो अन्तसमयपरमेश्व
रकीकथा व लीलासुननेमें तुम्हारा मनलगाहै॥

तीसरा अध्याय॥

शुकदेवजीको राजापरीक्षितसे पिछलेराजोंका हालकहना॥

शुकदेवज़ीनेकहा हेपरीक्षित जोनृपतिदूसरेकाराज्य व धनले
नेवास्ते इच्छारखकरपिता व पुत्र व भाई२ में लड़मरतेहैं ऐसेराजों
परपृथ्वी हँसकरकहतीहै देखो यहसबमृत्युकाकलेवाहोकर मेरेमा
लिकहुआचाहतेहैं व अपनेबाप व दादाकामरनादेखनेपरभी संसा
रीतृष्णा नहींछोड़ते व जितनापरिश्रम दूसरेकीपृथ्वी व द्रव्य व स्त्री
लेनेवास्ते उठाकर अपने व बिरानेको मारडालते हैं उतना उपाय
काम व क्रोध व मोह व लोभ बलवान् शत्रुओं को जीतने व अप
ना परलोक बनावनेवास्ते नहींकरते जब राजापृथु व पुरूरवा व
गाधि व नहुष व सहस्रार्जुन व मान्धाता व सगर व खट्वांग व धुन्ध
मार व रघु व तृणाबिन्दु व ययाति व सरयाति व कुवलयाश्व व बलि

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व नृग व हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष व वृत्रासुर व रावण व भौमा
सुर आदिक ऐसे २ प्रतापी व शूरबीरराजा सबगुण व योगाभ्यास
जाननेवाले मेरेऊपररहकर मुझे अपनाकहते२ मरगये परमैंकिसी
केसाथ न जाकर अबकेवलकहानी उनलोगोंकीरहगई तबकलियु
गबासी छोटे २ राजाजो कुछधर्म व पराक्रमनहींरखते वृथामुझेअ
पनाजानकर आपसमेंलड़तेमरते हैं इसलियेमनुष्यतनपाकर यह
चाहिये कि मनअपनासंसारसेबिरक्तरखकर परमेश्वरकी लीला व
कथासुनै व हरिचरणोंमें प्रीतिउत्पन्नकरै हेराजन् तुमकोकुछसंसा
रीचाहना रहगईहो तो इनराजोंकीगतिसमझकर विरक्तहोनेउपरां
त हरिचरणोंमेंध्यानलगावो व संसारीव्यवहारझूठाहोकर सिवाय
फलहरिभजनके औरकुछसाथनहींजाता इतनीकथासुनकर राजा
परीक्षितने विनयकी हेमुनिनाथ चारोंयुगके कौन २धर्महैं व बीच
कलियुगके कौनउपायकरनेसे हरिचरणोंमें प्रीतिउत्पन्नहोती है
शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित सतयुगमेंधर्मकेचारोंपैर सत्य व दया
व तप व दानबनेथे व सब छोटेबड़े अपने २ धर्म व कर्म से रहते थे
व सबलोग आपसमें प्रीतिरखकर कोईकिसीसे शत्रुता नहींरख
ताथा व त्रेतामेंब्राह्मण व क्षत्री व वैश्य व शूद्रअपना २ धर्म्म
रखकर यज्ञआदिककरतेथे परन्तुदूसरेकी स्त्री गमनकरनेसे धर्म
काएकपैर टूटजाताहै व द्वापरमेंसंसारीमनुष्य अपनेयशमिलने
वास्ते यज्ञ व पूजाकरतेहैंपरन्तु दूसरेका धनलेने व परस्त्रीगमनकर
नेसेधर्मके दोचरण टूटजातेहैं व कलियुगमेंतीनअंशपाप व एक
भागपुण्यहोनेसे धर्मकाएकचरणरहकर तीनपैरटूटजातेहैं व कलि
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

युगवासीमनुष्य केवलथोड़ासादानदेना व कुछसचाईरखकरअन्त
कलियुगमें वहभीछोड़देवैंगे इसलियेंबीचकलियुगके संसारीमनु
ष्यलोभी व कुरूप अभागी अधिकउत्पन्नहोकर एकदो रुपयेवा
स्ते मनुष्यकाप्राण मारडालैंगे व कुलीनस्त्रियां अपनेपतिकीप्रीति
छोड़करदूसरेपुरुषसेप्रेमरक्खैंगी व जबतकपतिधनपात्ररहैगा तब
तकस्त्री उसकी आज्ञामेंरहकर बिपत्तिपड़नेसे दूसरेपुरुषके पासच
लीजावेगी व सबलोगअच्छेभोजनं व सुन्दरीस्त्रीकी चाहनारखक
रसंन्यासीआदिक गृहस्थहोजावेंगे व बिपत्तिपड़नेसे सेवकअपने
स्वामीकोछोड़कर दूसरीजगहचाकरी करेगा व सबकोई अपनेस्वा
र्थकी प्रीतिरखकर बुढ़ौतीसमय राजालोग अपनेदासोंको छोड़ादे
वेंगे व बहुतमनुष्यद्रव्य व संतानंकी अधिकचाहनारखकर भूत
व प्रेतोंको पूजैंगे व धनलेनेवास्ते बेटा मा व बापको दुःखदेगा
माता व पिताभी खानेकेलोभसे अपनाबेटा बेचडालैंगे व शूद्रलोग
बैरागी व संन्यासी आदिकका भेषबनाकर दानलेनेउपरांत ब्राह्मणों
को मंत्रउपदेशकरैंगे व आपकथाबांचनेवास्ते ऊँचेसिंहासनपर बैठ
कर ब्राह्मणोंको नीचे बैठालैंगे व इसीतरह अनेकपाप संसारमेंहोक
र हरिभजन व स्मरण कमहोजायगा व चारोंयुगकाफल प्रतिदिन
मनुष्यके शरीरमेंप्रकटहोताहै जिससमय मन जप व ज्ञान धर्मकी
ओरलगै उससमयधर्मसतयुगका समझनाचाहिये व जब लोभ व
तृष्णा मनमें अधिकउत्पन्न हो तबधर्मत्रेतायुगका जानो जिसस
मय अभिमान व कामदेव व प्रेम मनमें प्रकटहो उससमय धर्मद्वा
परकासमझो व जबझूठ व जीवहिंसा व क्रोधमनमें अधिकउत्पन्न

CC-0. Public Domain. KIP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हो वह धर्म कलियुगका जाननाउचितहै राजापरीक्षितनेकलियुग
कालक्षणासुनतेही बहुतडरकरपूछा हे मुनिनाथ जबकलियुगका
ऐसाधर्महै तो संसारीजीव किसतरह उद्धारहोंगे शुकदेवजीने कहा
हे राजन् कलियुगमेंयज्ञ व तप व योगाभ्यास आदिककुछनहीं बन
पड़ता परन्तु एकबातबहुतअच्छीहै दूसरेयुगोंमें संसारीमनुष्य सच्चे
व धर्मात्मा व दयावान् होनेपरभी बहुतदिनोंतकयज्ञ व तप व पूजा
नारायणजीका व तीर्थस्नान करने से मुक्त होतेथे सो कलियुगमें
केवल परमेश्वरकानामजपने व उनकीलीला व कथासुनने व गंगा
नहानेसे भवसागरपार उतरजाते हैं किसतरह अजामिलब्राह्मण
महापापी मरतेसमयनारायणनाम अपनेबेटेको पुकारनेसे बैकुंठ
में चलागयाथा उसीतरहकलियुगबासी परमेश्वरका नामलेतेही
सबपापोंसे छूटकरपवित्रहोजातेहैं दूसरेयुगमें अधर्मकमहोकरजब
किसीसेकुछपाप होजाताथा तबवहप्रायश्चित्त उसकाकरडालतेथे
कलियुगमें बहुतअधर्महोनेसे कोईप्रायश्चित्त नहींकरसकाइसलि
येदीनदयालु परमेश्वरकेवल भगवान्कानामलेनेसे सबपापछुड़ा
करसहजमें मुक्तकरदेतेहैंतिसपरभी कलियुगवासी अज्ञानमनुष्य
दिनरातसंसारी सुखमेंलपटेरहकर एकक्षणानारायणजीको यादन
हींकरते व जिह्वासेवृथाबककर परमेश्वरका नामनहींलेते कलियुग
में केवलभगवान्कानाम लेने व पूजा व ध्यान व भजनकरने व उ
नकीकथा व लीलासुनने व भक्तिरखनेसे संसारीमनुष्योंका सब
दुःख व पाप व अज्ञान छूटजाताहै और जबउनके हृदयमेंनारा
यणजीकी कृपासेज्ञानरूपी दीपकप्रकाशितहोताहै तबवह माया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रूपी अँधियारेसे बाहरनिकलकर मुक्तिपावते हैं व मनुष्य सतयुग में तप व त्रेतामें यज्ञ व द्वापरमेंपूजा व कलियुगमें भजन व स्मरणकरनेसेकृतार्थहोताहै सोहेराजन् तुमभीश्रीकृष्णजीसांवलीसूरत का ध्यानहृदयमेंलगावोतो चतुर्भुजीस्वरूप होजावोगे व तुमनेक लियुगबासियोंके उद्धारहोनेका धर्मजोपूछाथा सोसंसाररूपी समुद्रसेपारउतरनेवास्ते परमेश्वरकी लीला व कथासुनना व पढ़ना सहजसमझनाचाहिये इससेउत्तमकोई दूसराउपाय नहींहै और यहश्रीमद्भागवतपुराणजोब्रह्माजीसे नारदमुनिनेसुनकरवेदव्यास जी कोबतलाया व मैंनेउनसेपढ़कर तुमकोसुनाया जबयहीकथा सूतजी नैमिषार मिश्रिषमें शौनकआदिक अट्ठासीहजार ऋषीश्वरोंकोसुनावैंगे तबयहअमृतरूपीकथा कलियुगमें प्रकटहोकर संसारीमनुष्यको भवसागरपार उतारैगी॥

चौथा अध्याय॥

शुकदेवजीको अग्नि व जल व वायु आदिककाहाल राजा परीक्षित से बर्णनकरना॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित ब्रह्माकेएकदिनमें चौदहइन्द्रराज्यभोगतेहैं सन्ध्यासमय दिनप्रलयहोनेसेतीनोंलोकमें सबजीवोंकानाशहोजाताहै व उनकेदिनकेप्रमाण रातभीहोकर रैनिसमय ब्रह्मासोरहतेहैं और जबब्रह्माकीआयुर्ब्बलपूरीहोकर महाप्रलयहोतीहै तबसैकड़ोंबर्ष पहिलेसे अबर्षणाहोकर कालपड़ताहै सो अन्न न उत्पन्नहोनेसे सबजीव मारेभूखके मरजातेहैं व पातालमें शेषनागजी बिषउगलकर व आकाशमेंसूर्यदेवता अपनातेजप्रकटकर के चौदहोंलोकोंको जलातेहैं फिरमेघपतिके पानीबरसानेसेपृथ्वी

CC-0.In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परासिवायजलकेऔरकुछदिखलाईनहींदेताव जल व अग्नि व वायु आकाशमें व आकाशशब्दमें व यहपांचतत्त्व अहंकारमें व अहंकार महत्तत्त्वमें व महत्तत्त्वमायामें व मायाईश्वरके रूपमें समाजातीहै केवलनारायणजी अविनाशीपुरुष जिनका आदि व अन्त कोईनहींजानता और उनकेपास मन व शब्द व सतोगुण व रजोगुण व तमोगुणआदिक पहुँचनेनहींसक्के बर्त्तमानरहकरजाते हैं यह लक्षण महाप्रलयकेहैं व जागना व सोना व सुषुप्ति व संसारी उत्पत्ति मायाकेगुणोंसे समझनाचाहिये व आदिपुरुष भगवान्को ज्ञानरूपी आंखके देखनेसे मायारूपी संसारझूठामालूम होताहै जिसतरह कपड़ेमें सूतकेतार होतेहैं उसीतरह सबजीवोंमें परमेश्वरकी शक्ति व्यापकरहतीहै जिसनेसूर्यरूपी ज्ञानसमझा उसकेहृदय में काम व क्रोध व मोह व लोभका अँधियारा नहींरहता और वह देवता व मनुष्य व दैत्य व पशुआदिक चौरासीलाख योनिको बराबरसमझकर किसीकेसाथशत्रुता व मित्रता नहींरखता जिसतरह बत्तीजलनेसे दीपककातेल कमहोकर तेलचुकंजानेउपरांत दिया बुझजाताहै व जलनातेलका कुछमालूम नहींहोता उसीतरह कालपुरुषप्रतिदिनतेज व बल व आयुर्दा क्षीणकरते २ मृत्युपहुँचनेसे सबजीवोंको मारडालताहै व अज्ञानमनुष्यमरना अपना याद नहींरखता इसलिये जोकोई कालरूपीमुंहसेछूटनाचाहै वहहरि भजन व स्मरणकरके भवसागरपार उतरजावै ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पांचवां अध्याय॥

शुकदेवजीका राजापरीक्षित से परमेश्वरकी स्तुति वर्णनकरना॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् श्रीमद्भागवतमें सबलीला व चरित्रपर मेश्वरकालिखाहै व भागवतपुराणको उनपरब्रह्मका स्वरूपसम झनाचाहिये जिनकेनाभिसे कमलकाफूल निकलनेसेब्रह्मानेउत्प न्नहोकर महादेवको उत्पन्नकियाथा सोतुमतक्षकसांपकेकाटने व अपनेमरनेका कुछडर न रखकरसबजगहपरमात्मा पुरुषकोबर्त्त मानदेखो व आदि व अन्त व मध्यमेंकेवल परब्रह्मअविनाशी पुरु षकोजो उत्पन्नहोने व मरनेसेरहित हैं सच्चजानो व सबव्यवहार संसारकाझूठासमझो तबतुमकोमालूमहोगा किकौनेकिसकोकाट ताहैंअपनेअज्ञान व परमेश्वरकीमायासे संसारीलोगउत्पन्नहोना व मरनामनुष्यका मालूमकरतेहैं सच्चपूंछोतो आत्मासदाअमररह करकभीनहींमरता औरयहशरीर मायाकेगुणोंसेबनता व बिगड़ता रहताहै जिसतरहपानीभरेहुये बर्त्तनमें छायापड़नेसे दूसरेसूर्यदिख लाईदेते हैं व बर्त्तनतोड़डालनेसे फिरवहछायासूर्यमें मिलजातीहै व बर्त्तनकेतोड़नेसे सूर्यका नाशनहींहोता उसीतरहशरीरउत्पन्न होनेसे जन्मलेना व उसकेनाशहोनेउपरांत मरनाकहाजाताहैइस लियेपरमात्माको सूर्यरूपीजानकर शरीरबर्त्तनकेसमानसमझना चाहिये औरयहशरीर पांचकर्मइन्द्री व पांचज्ञानइन्द्री व पांचत त्त्व व मन व बुद्धि सत्रहवस्तुमिलकर तैयारहोताहै बुद्धिको रथरू पी व मनघोड़ा उसरथकाजाननाचाहिये व उसमनमेंपरब्रह्मका

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्थ्यहोतीहै जबवहप्रकाश शरीरसे निकलकर बिलगहोजाताहैतब शरीरमुर्दाहोकर सिवायगल व सड़जानेकेकुछकामनहींआता व चौरासीलाखयोनिमें नारायणकी शक्तिहोकर बाहरभीवहीपरमेश्वरकालरूपसे रहतेहैं सोतुमअपनाशरीरमायाका बनायाहुआ समझकर परमात्माको तनुसेअलगजानो ब्राह्मणकेशापानुसारतक्षकसांपकेकाटनेसे आजशरीरतुम्हारानाशहोजायगा व जीवात्मा जो शरीरसे बिलगरहताहै वहनहींमरेगा और अबतुम्हारेमरनेका समयनिकटआपहुँचा इसलिये बीचध्यानचरण व स्मरणनामपरमेश्वरके मनलगाकर इसबातका विश्वासजानो किअनेकजन्मकेपापनारायणनामलेनेसेछूटजातेहैं व भागवतपुराण सुननेसेअबतुम्हारीमुक्तिहोनेमें सन्देहनहींरहा जबतुमश्यामसुन्दरकाध्यान जिनकीकथाहमनेसुनाईहै करोगे तबउनकीज्योतिमें लीनहोनेसेइसशरीरछूटनकाज्ञान यादनहींरहैगा ऐसामूलमन्त्र जिसमेंसबगुणपरमेश्वरकोलिखेहैं हमनेतुमको सुनादिया इससेउत्तमकौनवस्तुचाहतेहौ इसअमृतरूपीकथाके सच्चेमनसेपढ़ने व सुननेवालेअवश्यमुक्तिपदवीपरपहुँचतेहैं ॥

छठवां अध्याय ॥

राजापरीक्षित को तक्षक सांपका काटना ॥

सूतजीनेशौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा जबश्रीमद्भागवतसातदिनमें सुनकरराजापरीक्षितका अज्ञानजातारहा व परमात्माको शरीरसेअलग व सबजगह वर्त्तमानदेखनेमें प्रीतिशरीरकी छूटगई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परांत हाथजोड़कर बिनयकी हेमुनिनाथआपनेमेरासंदेह व सोच
छुड़ाकरमुझेउद्धारकिया महात्मा व परोपकारीलोग सदासे अज्ञा
नमनुष्यकोजोवीच अँधियारेकुवां मायामोहस्त्री व लड़कोंकेपड़ार
हताहैज्ञान रूपीरस्सीथँभाकर निकालनेउपरांत भवसागरपारउता
रदेते और यहभागवतपुराण जिसके आदि व मध्य व अन्तमें
श्रीकृष्णजीका माहात्म्य लिखाहै सुनकरमेरामन हरिचरणों में
लीनहोगया इसलिये अबमुझेतक्षकसांपके काटने व अपने मरने
काकुछडरनहींरहा आजसातवेंदिन तक्षककेकाटनेसे मैंयहशरीर
त्यागकरूंगा आपआज्ञादीजिये तोबोलनाछोड़कर श्यामसुन्दर
केस्वरूपकाध्यान लगाऊँ शुकदेवजीनेकहा इससमयतुमको हरि
चरणोंकाध्यान अवश्यकरनाचाहिये जबयहवचनसुनकरपरीक्षि
तआखेंबन्दकरके श्रीकृष्णजीका ध्यानकरनेलगा व शुकदेवजी व
सबऋषीश्वरवहांसेउठकर अपने २ स्थानपरचलेगये तबतक्षकसां
पसहरदिनरहेअपनेस्थानसे ब्राह्मणकारूपधरकर परीक्षितकोकाट
नेचला उसीसमयकश्यपजीकीआज्ञासे धन्वंतरिवैद्य तुमड़ीआदि
कसबऔषधझोलीमेंलेकर परीक्षितको अच्छाकरनेवास्तेघरसेनि
कले जबराहमेंब्राह्मणरूपी तक्षकने धन्वंतरिकोदेखकरपूछा तुम
कहांजातेहो तबउसनेउत्तरदिया आजहस्तिनापुरमें तक्षकसर्प रा
जापरीक्षितकोकाटैगा इसलियेमैंउसका विषउतारनेजाताहूँयहबा
तसुनकर मायारूपी ब्राह्मणनेकहा तुमतक्षकसांपके काटेहुयेको अ
च्छाकरसक्तेहो धन्वंतरिबोले तक्षककयामालहै किसीतरहकासांप
काटै तोमैंअच्छाकरदेसक्ताहूं यहबचनसुनकर उसनेकहातक्षकसां

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्थ्यहोतीहै जबवहप्रकाश शरीरसे निकलकर बिलगहोजाताहैतब शरीरमुर्दाहोकर सिवायगल व सड़जानेकेकुछकामनहींआता व चौरासीलाखयोनिमें नारायणकी शक्तिहोकर बाहरभीवहीपरमेश्वरकालरूपसे रहतेहैं सोतुमअपनाशरीरमायाका बनायाहुआ समझकर परमात्माको तनुसेअलगजानो ब्राह्मणकेशापानुसारतक्षकसांपकेकाटनेसे आजशरीरतुम्हारानाशहोजायगा व जीवात्मा जो शरीरसे बिलगरहताहै वहनहींमरेगा और अबतुम्हारेमरनेका समयनिकटआपहुँचा इसलिये बीचध्यानचरण व स्मरणनामपरमेश्वरके मनलगाकर इसबातका विश्वासजानो किअनेकजन्मकेपापनारायणनामलेनेसेछूटजातेहैं व भागवतपुराण सुननेसेअबतुम्हारीमुक्तिहोनेमें सन्देहनहींरहा जबतुमश्यामसुन्दरकाध्यान जिनकीकथाहमनेसुनाईहै करोगे तबउनकीज्योतिमें लीनहोनेसेइसशरीरछूटनेकाज्ञान यादनहींरहैगा ऐसामूलमन्त्र जिसमेंसबगुणपरमेश्वरकेलिखेहैं हमनेतुमको सुनादिया इससेउत्तमकौनबस्तुचाहतेहौ इसअमृतरूपीकथाके सच्चेमनसेपढ़ने व सुननेवालेअवश्यमुक्तिपदवीपरपहुँचतेहैं ॥

छठवां अध्याय ॥

राजापरीक्षित को तक्षक सांपका काटना ॥

सूतजीनेशौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा जबश्रीमद्भागवतसातदिनमें सुनकरराजापरीक्षितका अज्ञानजातारहा व परमात्माको शरीरसेअलग व सबजगह वर्त्तमानदेखनेमें प्रीतिशरीरकी छूटगई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परांत हाथजोड़कर बिनयकी हेमुनिनाथआपनेमेरासंदेह व शोच छुड़ाकरमुझेउद्धारकिया महात्मा व परोपकारीलोग सदासे अज्ञा नमनुष्यकोजोवीच अँधियारेकुवां मायामोहस्त्री व लड़कोंकेपड़ार हताहैज्ञान रूपीरस्सीथँभाकर निकालनेउपरांत भवसागरपारउता रदेते हैं और यहभागवतपुराण जिसके आदि व मध्य व अन्तमें श्रीकृष्णजीका माहात्म्य लिखाहै सुनकरमेरामन हरिचरणों में लीनहोगया इसलिये अबमुझेतक्षकसांपके काटने व अपने मरने काकुछडरनहींरहा आजसातवेंदिन तक्षककेकाटनेसे मैंयहशरीर त्यागकरूंगा आपआज्ञादीजिये तोबोलनाछोड़कर श्यामसुन्दर केस्वरूपकाध्यान लगाऊँ शुकदेवजीनेकहा इससमयतुमको हरि चरणोंकाध्यान अवश्यकरनाचाहिये जबयहवचनसुनकरपरीक्षि तआखेंबन्दकरके श्रीकृष्णजीका ध्यानकरनेलगा व शुकदेवजी व सबऋषीश्वरवहांसेउठकर अपने २ स्थानपरचलेगये तबतक्षकसां पपहरदिनरहेअपनेस्थानसे ब्राह्मणकारूपधरकर परीक्षितकोकाट नेचला उसीसमयकश्यपजीकीआज्ञासे धन्वंतरिवैद्य तुमड़ीआदि कसबऔषधझोलीमेंलेकर परीक्षितको अच्छाकरनेवास्तेघरसेनि कले जबराहमेंब्राह्मणरूपी तक्षकने धन्वंतरिकोदेखकरपूछा तुम कहांजातेहो तबउसनेउत्तरदिया आजहस्तिनापुरमें तक्षकसर्प रा जापरीक्षितकोकाटैगा इसलियेमैंउसका विषउतारनेजाताहूँयहबा तसुनकर मायारूपी ब्राह्मणनेकहा तुमतक्षकसांपके काटेहुयेको अ च्छाकरसक्तेहो धन्वंतरिबोले तक्षकक्यामालहै किसीतरहकासांप काटै तोमैंअच्छाकरदेसक्ताहूं यहबचनसुनकर उसनेकहातक्षकसां

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पमैंहूंहमयहांएकवृक्षकाकाटतेहैं तुमफेर उसेहराकरदेव तोमुझेवि
श्वासहो किपरीक्षितका विषउतारसकोगे धन्वन्तरिनेकहा बहुतअ
च्छा जैसेतक्षकने उसीजगह बरगदकेवृक्षमेंकाटा वैसेवहवृक्ष एक
लोहारसमेत जोउसपरचढ़ाहुआ लकड़ीकाटताथा तक्षककेविषसे
जलकर राखहोगया धन्वन्तरि ब्राह्मणने आचमनकरनेउपरांत सं
जीवनीमन्त्र पढ़कर जैसेउसराखपर पानीकाछींटामारा वैसे रा
ख से डाली व पत्ता निकलकर दोघड़ीमें फिरवहवृक्ष ज्यों का त्यों
तैयार होगया व लोहारलकड़ी काटनेवालाभी जीउठा यह हाल
देखतेही तक्षकसांपघबड़ाकर धन्वन्तरिसे बोला हे द्विजराज तु
मकिसवस्तुके वास्तेचाहनारखकर परीक्षितका विषउतारने जाते
हौ धन्वन्तरिने उत्तरदिया हमऐसेधर्मात्मा राजाको जिससेबहुत
लोगोंकाभलाहोताहै जिलाकरमुंहमांगा धनपावेंगेतक्षकबोलाम
हाराज तुमकेवलविष उतारनेका मंत्रजानकर और भीकुछज्ञानर
खतेहोयानहीं धन्वन्तरिनेकहा मैंभूतभविष्य वर्त्तमान तीनोंकाल
की बातजानसक्ता हूंयहबातसुनकर तक्षकनेपूछा हेद्विजराजपहिले
तुमविचारो कि राजापरीक्षितकी आयुर्बलपूरीहोचुकीयाकुछ और
भीहै धन्वन्तरिनेअपनी विद्यासे विचारकरकहा परीक्षितकीआयु
र्बलपूरीहोकरअबथोड़ा बिलम्बउसके मरनेमें रहगयाहैयहबातसुन
करतक्षकबोलामहाराजजबऐसाहै तबतुम्हारामंत्र उसकोगुण न क
रैगाकदाचित् कुछउसकीआयुर्बल और होतीतोतुम अवश्य उसेजि
लादेते और तुम्हेंद्रव्यकी चाहनाहै तो मुझसेलेकर अपनेघरचले
जाव धन्वन्तरिने कहाबहुतअच्छा फिरतक्षकने एकबृक्षकेनीचेउ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चित्र नं. १७ सुखसागर बारहवां स्कन्ध पृष्ठ २८

तक्षक सर्प को मार्ग में धन्वन्तरि से वार्त्तालाप होकर हस्तिनापुर जाकर फूल में छोटा रूप करके बैठना और ब्राह्मणों को राजा परीक्षित को फल देना व तक्षक को हाथ में काटना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चित्र नं० १८ सुखसागर बारहवां स्कन्ध पृष्ठ ८३६

श्री विष्णुजी को मार्कण्डेय जी का प्रलय दिखलाना उस प्रलय में मार्कण्डेय जी को जल में डूबना व ऊपर आना और श्री विष्णु जी को एक बरगद के वृक्ष में द्रोणाकार पत्ते में होके दर्शन देना ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सको द्रव्यबतलादियासो धन्वन्तरिवहांखोदकर जितनाउससेउठ
सका उतनाद्रव्यलेकर अपनेघरचलागया व तक्षकहस्तिनापुरमें
जाकरकीड़ारूपसे एकफूलमेंबैठरहाजबब्राह्मणोंने वहफूलउठाक
र राजापरीक्षितको दिया तबकीड़ारूपी तक्षकनेफूलसेनिकलकर
जैसेपरीक्षितको काटलियावैसेशरीर राजाकाजलकर राखहोगया
व चैतन्यआत्मा दिव्यबिमानपरबैठकर बेकुंठमेंपहुंचा व तक्षकसां
पवहांसेउड़कर इन्द्रलोकमें चलागया यहहालदेखकर जितनेलो
गउसजगह बैठेथेरोनेलगे व सबस्त्री व पुरुषनगरवालोंने यहसमा
चारसुनकर बड़ाशोचकिया व जनमेजयने परीक्षितअपनेपिताको
दाहदेकर शास्त्रानुसार क्रिया व कर्मउसकाकिया व मन्त्रियोंकाइ
च्छानुसार राजसिंहासनपर बैठा व जोलोहारवृक्षके साथजलकर
फिरजीउठाथा उसनेहस्तिनापुरमें आनकर सबहालवहांका जो २
बाततक्षकसांप व धन्वन्तरि ब्राह्मणसेहुईथीज्योंकी त्योंसबलोगों
सेकहीयहसमाचारपरीक्षितके मन्त्रियोंनेसुनकर तक्षकसेबहुतबुरा
माना जब जनमेजयको बारहबर्ष राजगद्दीपर बैठेहोचुकेतबउसने
भीमंत्रियोंसे हालमरने अपनेपिता व भेटहोनेतक्षक व धन्वन्तरि
कासुनकर बहुतक्रोधकरके कहादेखो तक्षकनेशृङ्गीऋषिके शाप
देनेसे मेरेपिताको काटातोउसका दोषनहींथा परउसनेधन्वन्तरिबै
द्यको राहमेद्रव्य देकर हस्तिनापुरआनेसे बर्जाइसलिये मैं उसे
अपनाशत्रुसमझकर इसतरहसबसापों को अपनेपिताकेबदले ज
लाडालूंगा जिसमें उनका बीर्यसंसारमें न रहै यहबातबिचारतेही
जनमेजयने ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको बुलाकरउनसेबिनयकी आ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पलोगकोई ऐसायज्ञकराइये जिसमें सबसांपजलकरमरजावैं ब्रा
ह्मणोंनेकहा बहुतअच्छासर्पशत्रुयज्ञकरनेमें सबसांपआपसे आन
कर जलजातेहैं वहीकरो जबजनमेजयने सारस्वतब्राह्मणआचा
र्य्यबनाकर वहयज्ञकरनाआरम्भकिया तबमन्त्रके प्रभावसे हजा
रोंसांप अपनीजगह छोड़करदौड़ेहुये वहांचलेआये व अपनीइ
च्छासे श्रुवामेंबैठकर आहुतिदेतेसमय अग्निकुण्डमें गिरने व ज
लनेलगे जबइसीतरहकरोड़ोंसर्प उसयज्ञमेंजलकरमरगये व तक्ष
कअपनेप्राणकेडरसे इन्द्रकेशरणमें जाछिपा इसलियेयज्ञशाला
मेंनहींपहुंचा तबजनमेजयने ब्राह्मणोंसेपूंछा महाराजसबसांपज
लकरमरेजातेहैं परतक्षकमेराशत्रु अभीतकक्योंनहींआया ब्राह्म
णोंनेउत्तरदिया तक्षकसांपइन्द्रकी रक्षाकरनेसे अबतकयहांआन
करनहींजला यहबातसुनकर जनमेजयने यज्ञकरानेवालेब्राह्मणों
सेकहा महाराज हमारेशत्रुकी रक्षाकरनेसे इन्द्रभीमेराबैरीठहरा
सोतुम्हारामंत्र ऐसीसामर्थ्य नहींरखता जिसमेंतक्षकइन्द्रसमेतय
हांआनकर जलजावै ऋषीश्वरोंने उत्तरदिया परमेश्वरकीदयासे
मन्त्रमेंसबसामर्थ्यहै अबहमलोग तुम्हारेकहनेसे वैसामन्त्रपढ़ेंगे
जैसेब्राह्मणोंने वहीमन्त्रपढ़कर अग्निकुण्डमेंआहुतिडालीवैसेसिं
हासन राजाइन्द्रका जिसकेनीचे वहसर्प बैठाथा तक्षकसमेत उड़ा
यहहालदेखकर आस्तीकनाती वासुकिनागने बृहस्पतिपुरोहितसे
कहाइससमयआपकुछ सहायताइन्द्र व तक्षककी नहींकरतेतोवह
दोनोंअग्निकुंडमें जलकरमरजावैंगे तबबृहस्पतिगुरुने आस्तीक
को साथलियेहुये यज्ञशालामेंजाकर अंगिरस गोत्रीब्राह्मणयज्ञक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रानेवालोंसे जोउनकेकुलमेंथे कहातुमलोग आहुतिदेनेमेंथोड़ीदेर लगाकर यहीपूर्णाहुतिजनमेजयसे दक्षिणामांगलेव जिसमें इन्द्र व तक्षककाप्राणबचजावै जबमन्त्रकेप्रभावसे इन्द्रकासिंहासन त क्षकसमेतउड़ताहुआ यज्ञशालामेंआनपहुंचा तबबृहस्पतिगुरु व आस्तीकने बहुतस्तुतिकरनेउपरान्त जनमेजयसेकहा हेराजन् प रीक्षितकोब्राह्मणकेशापसे मरनालिखाथा इसमेंतक्षककाकुछदोष नहींहै व तक्षकसबसर्पोंकाराजाहोकर अमृतपीनेसे वहमरनेनहींस का और तुमयह जोसमझतेहो कि तक्षककेकाटनेसे हमारावापमरा सो यहबातज्ञानकेबाहर होकरमरना व जीना दुःख व सुखहानि व लाभ परमेश्वरकीइच्छा व अपनेप्रारब्धसे होताहै देखोजिसतरह संसारीलोग आगिसे जलने व पानीमेंडूबने व शस्त्रसे मारने व सां पकेकाटने व बाघकेखाने व स्थानकेगिरने व बिषकेदेने व अनेकरो गादिकसे जैसा जिसकेप्रारब्धमें लिखारहताहै मरजातेहैं परएकब हानाहोकर मृत्युका नामकोईनहींलेता उसीतरहतुम्हारा पिताभी अपनेप्रारब्धानुसार तक्षकसांपके काटनेसेमरकर मुक्तिपदवीपरप हुंचा व तुमने एकतक्षककेबदले करोड़ोंसर्प बिनाअपराधजलाकर मारडाले ज्ञानी व धर्म्मात्माको ऐसा न चाहिये अबक्रोधअपनाक्ष माकरके यहयज्ञमतकरो व मरना परीक्षितका अपनेप्रारब्धसे सम झकर औरसर्पोंको न जलाओ व किसीकेमारनेसे कोईनहींमरता व उनपरमेश्वरको दण्डवतकरनाचाहिये जिनकीमायासे लोगों को यहअभिमान उत्पन्नहोताहै कि हमनेअपनेशत्रुको मारकर जीतलिया नारायणजी केकहनेसे [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
Digitized by eGangotri
CC-0. Kaiser-i-Hind Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व जिलाना सबकाअपनेअधीन रखतेहैं दूसरे किसीको यहसाम र्थ्यनहींहै जोउसमेंदममारसकै जबयहबातबृहस्पतिगुरु व आस्ती कनागमेसुनकर जनमेजयको ज्ञानउत्पन्नहुआ तबउसनेब्राह्मणों सेकहा पूर्णाहुति अग्निमें मतडालो उससमयतक्षकने जनमेजय को ऐसाबरदानदिया कि जोलोगहमारा व तुम्हारानामस्मरणकरें गे उनकोकोईसर्प न काटेगा जबजनमेजयने ऋषीश्वरों व ब्राह्मणों को दक्षिणादेकरबिदाकिया तबबृहस्पतिगुरु जिनकीदयासे इन्द्र व तक्षककाप्राणबचाथाउनकोअपनेसाथलेकरचलेगयेव इतनीकथा सुनाकरसूतजीने श्यामसुन्दरको ध्यानमेंदण्डवत्करके शौनकादि क ऋषीश्वरों से कहाहमने अमृतरूपीभागवतपुराण तुमलोगोंको सुनादिया इसकेप्रतापसे सबपाप छूटकर तुम्हारीमुक्तिहोजावैगी॥

सातवां अध्याय॥

सूतजीका शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे शुभाशुभकर्मोंका फलकहना॥

सूतजीनेशौनकादिक ऋषीश्वरोंसेकहा इन्द्रादिक देवतों को परमेश्वरकी यहआज्ञाहै किजोमनुष्यजैसापुण्य व यज्ञ व तपआ दिककरे उसकोवैसास्वर्गदेनाचाहिये व पापकरनेवालोंकोधर्मराज उनकेकर्मानुसार नरकमेंभेजदेवेंवजोलोग केवलपरमेश्वरका भज न व स्मरणकरतेहैंउनको इन्द्रपुरीसेऊपर ब्रह्मलोकमें जगहामिल तीहै व नारायणजीकीनिर्गुणपूजा व भजनकरनेवाले बैकुण्ठमेंजा करमहाप्रलयतकवहांका सुखभोगतेहैं सोराजापरीक्षितभी भागव तपुराणसुननेसे श्यामसुन्दरके प्रेममेंलीनहोकर बैकुण्ठकोचलागए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कवास्तेचाहने किसीअर्थ व दूसराबिनारखनेइच्छाकेहोताहै सो ह
मने दोनोंतरहकाहाल इसभागवतमें तुमलोगोंको सुनादियाअठा
रहोंपुराणमें श्रीमद्भागवतउत्तमहै यहबातसुनकर शौनकादिक ऋ
षीश्वरोंनेनामअठारहोंपुराणोंकापूंछा तबसूतजीनेकहा ब्रह्मपुराण
पद्मपुराण बिष्णुपुराण शिवपुराण लिङ्गपुराण गरुड़पुराण नारद
पुराण अग्निपुराण स्कन्दपुराण भविष्यपुराण ब्रह्मबैवर्त्तपुराण
मार्कण्डेयपुराण मत्स्यपुराण कूर्मपुराण बाराहपुराण नृसिंहपुरा
ण ब्रह्माण्डपुराण भागवतपुराणहैं इनसबपुराणों में परमेश्वरका
गुण व चरित्रबर्णनकियाहै व किसीपुराणमें सात्विकी व किसी में
राजसी व किसीमें तामसीधर्मलिखाहै व श्रीमद्भागवतमें केवल सा
त्विकीधर्म व भागवतगुण वेदव्यासजीनेबर्णनकिये हैं सोहमने तुम
कोसुनाया अब औरक्यासुना चाहतेहो॥

आठवां अध्याय॥

मार्कण्डेय ऋषीश्वरकी उत्पत्ति को सूतजीका कहना॥

शौनकादिक ऋषीश्वरोंने इतनीकथासुनकरपूछा हेसूतजो आ
पने परमेश्वरकागुण व चरित्र हमलोगोंकोसुनाकर कृतार्थकिया
सोतुमबहुतदिन चिरंजीवरहो और हमलोग अबयह सुनाचाहतेहैं
किहमारेकुलमें मार्कण्डेयऋषीश्वरने परमेश्वरकीमायाकिसतरह
देखकर बैकुंठनाथकादर्शनपाया व व्यासजीनेसबवेदोंकोकिसतरह
अलगअलग बर्णनकिया सूतपौराणिकनेकहा जबब्रह्मानेदेखाकि
कलियुगबासीमनुष्य थोड़ीआयुर्दायहोनेसे सबवेद पढ़नहींसकेंगे
तबब्रह्माकेविनयकरनेसे नारायणजीने वेदव्यासकाअवतारधारण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करके वेदोंकासार निकाललिया व उसकानामबिलग २ रखकर वहसब अपनेचेलोंकोपढ़ाया व जोपुराण वेदोंमेंसेनिकालाथाउस कानाम मार्कण्डेयपुराण रक्खा यहसुनकर ऋषीश्वरोंने पूंछा पहिले यहबतलाइये किमार्कण्डेयने इतनीबड़ीआयुर्बल किसतरह पाईथी सूतजीनेकहा मृकण्डनामएकऋषीश्वरहोकर उसकेकोईपुत्रनहींथा जबउसऋषीश्वरने सन्तानउत्पन्न होनेवास्ते देवतोंके नामपरबहुततप व होमकिया तबदेवतोंने दर्शनदेकरकहा हेऋषीश्वर तेरेभाग्यमें बेटानहींलिखाहै परतप वहोमकरनेकेप्रतापसेतेरे एकपुत्रउत्पन्नहोकर बारहवर्षकी अवस्थामेंमरजायगा यहसुनक रऋषीश्वरने बिनयकी मैंसन्तानउत्पन्नहोनेकी इच्छारखताहूँबा रहवर्षकाहोकरमरजायगा तोमैंसन्तोष करलूंगा जबदेवतोंके आशीर्वादसे मृकण्डके पुत्रउत्पन्नहुआ तबऋषीश्वरने मार्कण्डेय उसकानाम रखकर बड़ाहर्षमनाया जबवहबालक बारहवर्ष का हुआ तब उसकेमाता व पितारोनेलगे मार्कण्डेयने उनको रोते देखकर पूंछा तुमलोग किसवास्ते इतनाबिलाप करते हो उन्हों नेकहा अयबेटा अबतुम्हारे मरनेकादिन निकटआनपहुँचा यही समझकर हमलोग रोदेते हैं यहसुनकर मार्कण्डेयबोले संसारमें कोई ऐसाउपायभी है जिसके करनेसेहमजीतेरहैं उसकेमाता पिताने कहा अयबेटा नारायणजीकी दयासे सबमनोरथ मनुष्यके पूर्णहोतेहैं यहबचनसुनतेही मार्कण्डेय बनमेंजाकर परमेश्वरका तप व ध्यानकरनेलगा जबउसेछःमन्वन्तर तपकरतेबीतगये तब राजाइन्द्रने डरकरबिचारा कि यहब्राह्मण तपकरके मेराइन्द्रासन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छीनलेगा ऐसाबिचारतेही इन्द्रनेकामदेव.व बसन्तऋतु व गन्धर्व व अप्सरोंको मार्कण्डेयकीतपस्या भंगकरनेवास्तेभेजासोउन्होंने हिमालयपहाड़से उत्तरओर भद्रानदीकेकिनारे जहांमार्कण्डेय शिलापरबैठाहुआ तपकरताथा पहुंचकरक्यादेखा कि वहांघने २ वृक्षोंकीछायाहोकर अनेकरंगकेसुगंधितफूल व फललगेहैं व कोकिला व मोरआदिक अनेकपक्षी वहांबैठेहुये अपनीसोहावनीबोली बोलरहेहैं यहशोभादेखकर कामदेवआदिक मोहितहोगये व जबप्रातःकाल मार्कण्डेय अग्निहोत्रकरके वहांपरबैठे उसीसमय अप्सरा उनकेसामनेनाचकर भावबतलानेलगीं व गन्धर्वोंने अनेकबाजाबजाकर छःराग व छत्तीसरागिनीगाये व कामदेवने कोकिलारूपहोकर कामरूपीबाणचलाया व बसन्तऋतुकेमहिमासेबहुतउत्तमबाग़ वहांतैयारहोकर शीतलमंदसुगंध हवाबहनेलगी जब नाचतीसमय एकअप्सराकाकपड़ा हवासेउड़गया तबवहनंगेबदन गेंदउछालतीहुई मार्कण्डेयकेनिकटचलीआई पर मार्कण्डेयका चित्त कुछचलायमाननहींहुआ जबअनेकउपायकरनेपरभी काम देव व अप्सराआदिक का कुछबशउनपरनहींचला तबवहलोग शापदेनेकेडरसे भागकरकांपतेहुये इंद्रकेपासफिरआये व बहुतलज्जितहोकरकहा महाराज हमारापराक्रममार्कण्डेय पर कुछनहीं चलता यहहालसुनकर इंद्रादिकदेवतोंने बहुतआश्चर्यमाना व देवतालोग मार्कण्डेयकेदर्शनवास्तें आपवहांजाकर उनकीस्तुति करनेउपरांतचलेआये जब इसीतरह कुछदिन और मार्कण्डेयको तपकरतेबीते तब नारायणजीगरुड़परबैठकरवहांगये व अपनेचतु

Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भुजीस्वरूपकादर्शन मार्कण्डेयकोदेकरकहा जो कुछ तुझे इच्छा होसोवरदानमांग मार्कण्डेयने वैकुण्ठनाथको देखतेही दण्डवत् किया व परिक्रमालेने व स्तुतिकरनेउपरान्त हाथजोड़करबोला हे दीनानाथ मैं अपनीआयुर्बल अधिकचाहताहूं त्रिभुवनपतिनेक हा तूएककल्पांततक जीतारहैगा ऐसाकहकर लक्ष्मीपति बैकुण्ठ को चलेगये॥

नवां अध्याय॥

नारायणजीका मार्कण्डेय ऋषीश्वरको महाप्रलयका कौतुक दिखलाना॥

सूतजीने शौनकादिकऋषीश्वरोंसेकहा जबमार्कण्डेय ब्रह्माके एकदिनप्रमाण आयुर्बलपावने परभी उसीतरहतप व ध्यानकरता रहातबकुछदिनउपरांत नारायणजीने मार्कण्डेयको फिरदर्शनदे करकहा अबतूक्याचाहताहै मार्कण्डेयहाथजोड़करबोलाहेमहाप्रभुअबमुझेकिसीवस्तुकी चाहनानहींहै परतुम्हारीमायाका थोड़ा साकौतुकदेखनाचाहताहूँ जिसमायासे आपसबजीवोंको उत्पन्न करके फिरनाशकरदेतेहैं वैकुण्ठनाथनेकहा बहुतअच्छा आजके सातवेंदिनहमतुझे अपनीमाया दिखलावैंगे परतुमचैतन्यरहकर मुझेभूलमतजाना भूलनेसे तुम्हारापतानहींलगेगा मार्कण्डेयने विनयकी हे त्रिभुवनपति मैं आपकोकभी न भूलूंगा जबयहबात सुनकरनारायणजी वैकुण्ठको चलेगये तबमार्कण्डेयभी वहांसे अपनेस्थानपर चलाआया जबसातवेंदिन मार्कण्डेयने नदीकिना रेबैठकरतपकरतेसमय महाप्रलयकोदेखनाचाहा तबक्यादिखला ईंदियाकिएकओरसेबड़ीआंधीउठकरमारेधरके अँधियाराछागया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहहालदेखकर मार्कण्डेयने मनमेंकहा हमने आजतक ऐसी आंधी कभीनहींदेखी फिरचारोंओरसे पानीउमड़ाहुआ आनकर जहांवहबैठाथा वहांअथाहजलहोगया व उसपानीमें वह गोताखा नेलगा व कभीगोताखाकर जलमेंडूबजाता व कभीपानीकेवेगसे ऊपरनिकलआताथा व कभीघड़ियालआदि जलचर उसकोनिग लजाते व कभीअपनेमुखसे उगिलदेतेथे जबमार्कण्डेयकीसमझ मेंहजारोंबर्षतक उसकायहहालहुआ तबवहअपनेमनमें बहुतल ज्जितहोकरकहनेलगा देखोमुझसेबड़ीचूकहुई जोऐसावरदानमां गकरइसदशाकोपहुंचा अबपरमेश्वरसे यहइच्छारखताहूं किनारा यणजीदयाकरके मुझकोइसपानीसे जीतावाहरनिकालैं मार्कंडेय को भगवान्जीकाध्यानकरतेही जबमायारूपीजलमें एकटापू व ब रगदकावृक्षदिखलाईदिया तबउसनेप्रसन्नहोकरमनमेंकहाहेपरमे श्वरमुझेकिसीतरहइसटापूतकपहुँचादे तोबरगदकीडालीपकड़कर अपनाप्राण बचालेऊँ जबमार्कण्डेय भगवान्कीदयासे उसवृक्षके पासपहुंचगया तोउसनेक्यादेखा कि एकपत्ताबरगदका दोनेकेस मानबनाहोकर उसमेंएकबालक बारहतेरहदिनकीअवस्थाकाश्या मरंगचन्द्रमुख कमलनयन अतिसुन्दर सोताहुआ अपनेपैरकाअं गूठाहाथमेंपकड़े मुंहमेंडालेचूसताहै जबमार्कण्डेय निकटजाकर उसबालककी छबिदेखनेलगे तबबालकरूपीभगवान्नेअपनाश्वा सकोंचा तोमार्कण्डेय मच्छड़कीतरह उनकेनाकमेंघुसगया और वहांपरपृथ्वी व आकाश सूर्य व चंन्द्रमा सातोंद्वीपनवोंखण्ड दशों दिशा व आठोंलोकपाल व तालाब व वृक्ष व नगर ग्राम व समुद्र व

Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहाड़खानिचांदी व सोना व कुटीऋषीश्वर व मुनीश्वर व अप
नास्थानआदिक सबसंसारीवस्तुओंको उसस्वरूपमें देखकर आ
श्चर्यमाना जबश्वासछोड़तेसमय नाकसेबाहर निकलआया तब
उसनेफेर उसबालकको उसीतरहदेखकरचाहा कि उसेगोदमें उठा
करप्यारकरूं ऐसाविचारकर मार्कण्डेयने जैसेउसबालकको उठाने
चाहा वैसेबालकरूपभगवान् मायारूप पानी व वृक्षसमेत अन्त
र्द्धानहोगये व मार्कण्डेय अपनेसमझमें करोड़ोंवर्षतक मायाका
कौतुकदेखकर जबचैतन्यहोगया तबउसने अपनेको ज्योंकात्यों
नदीकिनारे बैठापाया और बिचारा तो दोघड़ीसे अधिक बिलम्ब
नहीं हुआथा ॥

दशवां अध्याय ॥

महादेव व पार्वतीजीका मार्कण्डेयके पास आना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसेकहा मार्कण्डेयने मायारू
पी महाप्रलयका कौतुकदेखकर ध्यानमें नारायणजीसेबिनयकी
हे त्रिभुवनपति मुझसेबड़ाअपराधहुआ जो आपकीमाया देखने
वास्ते बरदानमांगा जहांतुम्हारीमायाको ब्रह्मादिकदेवता न जान
करबड़े२ऋषीश्वर व मुनि व ज्ञानीभी उसमायामें फँसेरहतेहैंवहां
मेरीक्यासामर्थ्यहै जोतुम्हारीमायाका भेदजानसकूं जिसतरहम
च्छड़ पहाड़उठावनेकीइच्छाराखकरवहकामनहींकरसक्ता उसीतर
हमैंयहबरदानमांगकरलज्जितहुआ मुझेअपनेशरणागतजानक
र अपराधमेरा क्षमाकीजिये मार्कण्डेयजीऐसाकहकर बीचध्यान
परमेश्वरके लीनहोगयेइतनीकथासुनाकरसूतजीबोले हेऋषीश्वर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परमेश्वरकी महिमाजाननेवास्ते सबछोटेबड़े अपनेसामर्थ्यभरप
रिश्रमकरतेहैं परउनकेभेदको पहुंचनहींसके जिसनेभेदजाननेवा
स्ते गोतामारा उसकाआजतक पतानहींलगा अबहममार्कंडेयऋ
षीश्वरकाएकहालऔरकहतेहैं सुनो एकदिनमहादेव व पार्व्वती
दोनोंमनुष्य बैलपरचढ़े बहुतसेगणोंको अपनेसाथलियेहुये चले
जातेथे राहमेंपार्वतीजीने मार्कंडेयको इसतरह बीचध्यानपरमेश्व
रकेलीनबैठेदेखा जिसतरहसमुद्रकापानीगंभीररहकर बिनाचलने
हवाके नहींहिलता तबपार्व्वतीने महादेवजीसे हाथजोड़करबिन
यकी हेमहाप्रभु इसऋषीश्वरको तपस्याकाकुछफलदीजिये महा
देवजीनेकहा इसेकिसीबस्तुकी चाहनानहीं है हमइसको क्यादेवैं
सिवायभक्ति व ध्यानहरिचरणोंके यहमुझकोभी कुछमालमनहीं
समझता परतेरेकहनेसे हमचलकर इसकेसाथदोबातकरते हैं साधु
व महात्माकी संगतिकरनेमें बड़ागुणहोताहै जबमहादेवजी पार्व
तीसमेत मार्कंडेयजीके पासगये तबउनको परमेश्वरकेध्यानमें ऐ
सालीनदेखा कि इनकेजानेकाहाल उसेकुछमालूमनहींहुआ इस
लियेशिवजीने उसकेहृदयमेंप्रवेशकरके जिसचतुर्भुजीमूर्त्ति श्या
मसुन्दरकाध्यान वहकरताथा उसस्वरूपको वहांसेअन्तर्द्धानकर
केअपनाप्रकाशउसजगह प्रकटकिया जबमार्कंडेयको अपनेहृदय
में चतुर्भुजीरूप दिखलाई न देकर एकपुरुष श्वेतवर्ण दशभुजा
व तीनआखवाला शेरकीखाल व मुण्डमालापहिने त्रिशूल व ड
मरू लियेहुये ध्यानमेंदेखपड़ा तबउसनेघबराकर आंखखोलदी
तो महादेवका उसीरूपसे पार्वतीसमेत बहतगणसाथलियेहुये जै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से अपनेसामने खड़ेदेखा वैसेउठखड़ाहुआ व दंडवत् करनेउपरांत परिक्रमालेकर उनको बड़ेआदरभावसे आसनपर बैठाला व विधि पूर्वक उनकीपूजनकरके हाथजोड़कर विनयकी हेदीनानाथ आप सब देवतोंके मालिकहोकर सबगुणोंसे भरेहैं मैं ऐसी सामर्थ्यनहीं रखताजोतुम्हारीस्तुतिकरनेसकूं जिसतरह आपनेदयालुहोकरमुझे अपनादर्शनदिया उसीतरह मेरीहज़ारों दंडवत्लीजिये औ अपने आनेकाकारण बतलाइये यहबातसुनतेहीभोलानाथने हँसकरक हा हेऋषीश्वरजिसमहाप्रलयमेंचौदहोंलोक नाशहोकरकोईजीव नहींरहता उसमहाप्रलयकोतुमनेदेखा इसलिये मैंतुम्हें दर्शनकरने आयाहूंजितना ब्राह्मण व हरिभक्त व साधुमुझेप्यारेहैं उतनाइन्द्रा दिकदेवतोंसेप्रीतिनहींरखता जिसतरह मुझेअपनाभक्तप्यारामालू महोताहैउसीतरह नारायणजीके सेवकोंकोभी जानताहूं ज्ञानीम नुष्यकोहमारे व विष्णुभगवान्केबीचमें कुछभेदसमझना न चाहि येजितनातुम्हारे ऐसेहरिभक्तोंका दर्शनपाकर संसारीमनुष्यशुद्धहो जातेहैं उतनातीर्थस्नानकरने व देवतोंकेदर्शनसे पवित्रनहींहोतेतुम को जोकुछ इच्छाहो वहबरदान हमसेमांगलेव हमारादर्शन निष्फ लनहींहोता यहवचनसुनकर मार्कंडेयऋषीश्वरने महादेव व पार्व तीजीको साष्टांगदण्डवत्करके विनयकी हेमहाप्रभु आपसाक्षात् ईश्वरहोकर मुझअज्ञानको इतनीबड़ाईदेतुहैं जिसतरह कल्पवृक्ष के नीचेजाकर मनुष्यका सबमनोरथ पूर्णहोजाता है उसीतरह तु म्हारादर्शनपानेसे कुछइच्छा न रहकर केवलयहीबरदान मांगता हूं जिसमेंसदा बीचचरण वैकुण्ठनाथ व आपकेमेरीभक्ति बनीरहे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहबातसुनकर शिवजीनेकहा तुमएककल्पतक चिरंजीवरहकर कभीबूढ़ेनहोगे व तुमकोसदामेरी व नारायणजीकी भक्तिबनीरहैगी व अठारहोंपुराणमें एकतुम्हारेनामसे प्रकटहोगा यहबरदानदेनेउपरांत शिवजीवहांसे अन्तर्द्धानहोकर कैलासपर्वतपरचलेगये व सबहालउत्पन्नहोने व तपस्याकरने व वरदानपावने मार्कंडेय ऋषीश्वरका पार्वतीजीसे बर्णनाकिया इतनीकथासुनाकर सूतजीने शौनकादिकऋषीश्वरोंसे कहातुमने मार्कंडेयऋषीश्वरकाहाल जोपूछासो हमनेसुनादिया॥

ग्यारहवां अध्याय॥

शौनकादिक ऋषीश्वरों का सूतजीसे शंख चक्र गदा व पद्म आदिकका हाल पूछना॥

शौनकादिक ऋषीश्वरोंने इतनीकथासुनकरपूछा हे सूतजीपरमेश्वरके पूजनकरनेकी बिधिबर्णनकीजिये और यहबतलाइये कि शंख व चक्र व गदा व पद्म व शस्त्र व वैजयन्तीमाला व पीताम्बर जो आठोंपहर नारायणजी धारणकियेरहतेहैं यहसबकौनबस्तुहैं सूतजीनेकहा तुमलोग बड़ीगुप्तबातपूछतेहौ इसलियेमैं वेदव्यास आपनेगुरूको दंडवत्करकेकहताहूंसुनो यहब्रह्मांड भगवान्कारूप है पृथ्वीपैर आकाश शिर आंखें सूर्य वायु नाक दशोंदिशा कान लोकपाल भुजा चन्द्रमामन यमराजदांत वृक्षशरीरकेरोयें मेघघटाशिरकेबाल पहाड़तनकीहड्डी समुद्र पेट नदियां शरीरकीनसेंहोकर सब्यवहार संसारका बिराट्रूपमेंसमझनाचाहिये जो मनुष्यउसरूपका ध्यानलगाकर सबजीवों में परमेश्वरकीशक्ति ताहै व काम व क्रोध व मोह व

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सीसेशत्रुता व मित्रतानहींरखता व कौस्तुभमणि नारायणजीकी
ज्योति वैजयन्तीमालामाया व पीताम्बर चारोंवेद व जनेऊकाजो
ड़ाओंकार व कानोंकाकुंडल सांख्यशास्त्र व योगशास्त्र मुकुटब्रह्म
लोक व शेषनाग उनकेबैठनेकासिंहासन व पद्मसतोगुण व गदाप
राक्रम व शंखजलतत्त्व व सुदर्शनचक्र अग्नितत्त्व व खड्गआका
शतत्त्व व शार्ङ्गधनुषकालरूप होकर परमेश्वरकेतरकसमें सबजी
वोंकाकर्म भरारहताहै व बैकुण्ठ परमेश्वरकाछत्र व गरुड़वेदरूप
व लक्ष्मीजीशक्ति व नन्द व सुनन्दादिक पार्षद उनकीविभूतिहैंइस
लियेनारायणजी अपनेभक्तोंपर प्रसन्नहोकर अपनाभूषण व वस्त्र
पंहिने व शंखलियेहुये दर्शनदेतेहैं व उनका चरित्र कोईनहींजान
सक्ता हमनेगुरूकीकृपासे यहसबकथा तुमकोसुनाई जोमनुष्यप्रा
तःकाल उठकर नारायणजीकाध्यान शंख व चक्र व गदाआदिकस
त करताहै तुरन्तउसपर प्रस[illegible] करदेते हैं इतनी
कथासुनकर ऋषी[illegible] व परमेश्वरने बाराह अवतार[illegible] करमार
रूप पृथक् [illegible] व कपिलदेव अवतारलेकर सांख्ययोगज्ञानसिख
गेले सूर्यदेव [illegible] हूती हजार व श्रीमद्भागवतपुराण अठारहहजार व
ण पन्द्रहहजारचारसौ व भविष्यपुराण चौदहहजारपांचसौ
ब्रह्मवैवर्त्तपुराण अठारहहजार व लिंगपुराण ग्यारहहजार व
राहपुराण चौवीसहजार व स्कन्दपुराण इक्यासीहजारएकसौ
ब्रामनपुराण दशहजार व कूर्मपुराण सत्रहहजार व मत्स्यपुरा
हूं जिसमेंसदा [illegible] व ब्रह्माण्डपुराणबा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाम अर्यमाहोकर पुलहनाम ऋषीश्वर उरंजानामयक्ष प्रहेती रा
क्षस व पुंजकस्थली अप्सरा व नारद गन्धर्व व कुक्षनीरनाग व ज्येष्ठ
मेंसूर्यकानाम मित्रहोकरअत्रिऋषीश्वर व पौरपेयराक्षस व तक्षक
नाग व मेनकाअप्सरा व हाहागन्धर्व व रथस्वयक्ष व आषाढ़मेंवरु
णनाम सूर्यकाहोकर बशिष्ठऋषीश्वर रम्भाअप्सरा हूहूगन्धर्वस
हजन्ययक्ष सर्वज्ञनाग चित्रसेनराक्षस व सावनमेंइन्द्रनामसूर्यका
होकर बिश्वाबसुगन्धर्व परमलोचाअप्सरा श्रोतायक्षवर्यनामरा
सभादौंमेंविवश्वाननामसूर्यकाहोकरउग्रसेनगन्धर्व व व्याघ्रनाम
क्षस असारनयक्ष भृगुऋषीश्वर निम्लोचा अप्सरा शंखखाल
व कुवारमें त्वष्टानाम सूर्यकाहोकर जमदग्नि ऋषीश्वरकामल
गतिलोत्तमा अप्सरा धृतराष्ट्र गन्धर्व बृहद्वतीराक्षस सत्यजितय
व कार्त्तिकमें विष्णुनामसूर्यकाहोकर अस्वतरनाग व रम्भाअप्
रामनुर्च्याकाउचितहै किजिह्वासे आठमित्रऋषीश्वर घृतापीर
करकानोंसेउनकीकथा व लीलासुनै व नारायणऋषीश्वर त
सरक्खैंगे उनकोसंसारमें रोगादिककादुःख नहीं कबहाशंख
दिककाभयछूटकर अशुभग्रहोंका फलनहींव्यापैगा ॥

दो० चूहामलसुतविमलमति गज्जनलालकुमार। गोब्राह्मणहरिचरणरत माखनलालउदार ॥
सो० विरच्यो माखनलाल श्रीमद्भाषाभागवत। सुनतकटै भवजाल अन्तसमयहरिपुरबसै ॥
जेजन परमसुजान भूलीलेव सुधारिमम। बालबुद्धि अज्ञान वेदशास्त्र जानौं नहीं ॥

इतिश्री क्षत्रियवंशावतंस काशीबासी श्रीकृष्णदास मक्खनलाल
कृत श्रीमद्भागवतभाषा सुखसागरे द्वादशस्कन्धः
समाप्तः ॥ शुभम्भूयात् ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहिले उल्था इसपोथीका सम्वत् १९११ में श्रीकृष्णदासमक्खनलालने काशीपुरीमें बनाकर छपवा थाथा परन्तु उसउल्था में यामिनी भाषा अधिक लिखगईथी इसकारण साधु व महात्मालोग उसे अच्छी तरह नहीं पढ़सक्तेथे इसलिये फिरसे उसपोथीको पण्डित जोखूराम रहनेवाले दरभंगी व जगन्नाथप्रसाद त्रीरहनेवाले काशीजीके सम्मत करके यामिनीभाषा निकालदी है इस देशकी बोली में जो सबसमझसकेहैं लिखा ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust. Funding by MoE-IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow